Inter Disciplinary
International Conference

on

Academic Research and Innovation in Teaching

&

Arising Inclination in Professional Education

(ARIT – AIPE 2019)

27th - 28th December, 2019

Conference Proceeding Editors

EDITOR

Prof. R. D. Chandak

Dr. J. M. Chatur

CO-EDITORS

Prof. Y. M. Patil

Prof. S. S. Kane

Prof. U. R. Kantode

Prof. A. S. Kalekar

Prof. H. A. Bharmal

Prof. S. R. Batulwar

Prof. M. P. Shende

Prof. K. S. Panpaliya

Prof. S. S. Malani

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc; Without prior permission.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
Peer Review and Indexed Journal (IMPACT FACTOR 5.707)
ISSN 2349-638x
Special Issue No.61

Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

Principal
Narayanrao [illegible] havidyalaya
[illegible]

Librarian
Rana Mahavidyalaya
Padnera

CHIEF PATRONS

Hon'ble Shri. Prakash Jajoo

President, Harikisan Jajoo Education Sanstha, Yavatmal

Hon'ble Shri. Jagdishji Wadhwani

President, Yavatmal Zilha Vikas Samiti, Yavatmal

PATRONS

Prof. R. D. Chandak

Principal, College Of Management And Computer Science, Yavatmal

Dr. J. M. Chatur

Principal, Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalay, Yavatmal

MENTORS

Hon'ble Shri. Aashish P. Jajoo

Secretary, Harikisan Jajoo Education Sanstha, Yavatmal

CONVENER

Prof. A. K. Shingarwade (IQAC Coordinator),

Dr. N. D. Nalode

CO-CONVENER

Prof. S. N. Velukar **Prof. A. B. Payghan** **Prof. N. D. Autkar**

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Sr. No.	Name of the Researcher	Title of the Paper	Page No.
1.	Shri Arvind Sambhaji Pazare	The Library's Role in Teaching and Learning	1
2	Mr. Yogesh Marotrao Patil Mr. Umesh R.Kantode	Analysis Of 2D Geometric Transformation In Computer Graphics	4
3.	Mr. Husain Anwarali Bharmal	A Study Of Impact Of Demonetisation On Small Medium Entreprize (SME)	9
4.	Mr. Ritesh D. Chandak	A Need Of Financial Literacy For The Success Of Financial Inclusion	12
5.	Uday N. Manjre Vijay V. Pande	Technology Enhance High Performance And Mass Participation In Sports	16
6.	A.K. Shingarwade Dr. P.N. Mulkalwar P. R. Garudi	Product Recommender Systems For E-Commerce And Their Limitations	18
7.	Mrs. Shital Yogesh Patil Mr. Yogesh Marotrao Patil	Need Of Digital Learning In Rural Areas	25
8.	Anurag Mohod Dr. Mahek Iram Qureshi	CSR Initiatives Of Business Enterprises With Special Reference To Amravati City	29
9.	Dr.Prashant.P.Karekar	Critical Evaluation Of Medical Tourism In India. Opportunity And Threats	35
10.	Prof. Pratiksha D. Kawalkar	A Review On Study Of E-Commerce And Its Impact On Market And Retailers' In Yavatmal	41
11.	Komal S. Panpaliya	A Review On Consumer Attitude And Perception Towards Green Product	45
12.	Surbhi M. Darda	A Review On Formulation Of Strategies For Developing E-Enterprises In Today's Era With Reference To Small Town.	49
13.	प्रा. डॉ. सुनिल एन. देरे	विपणनामध्ये ई–वाणिज्य व ई–व्यापाराचे फायदे	52
14.	Prof. Sudhir N. Velukar	Some Applications Of Boolean Algebra In Switching Circuits	55
15.	Dr.G.P.Urkunde	Role Of Libraries In Higher Education In India	61
16.	Dr. Milind B. Ghangare	Information Use Pattern Of Undergraduate Students Of Aniket College Of Social Work Wardha, Maharashtra	64

268.	डॉ. ज्योति जुनगरे डॉ. आशीष बिल्लौरे	क्रीड़ा चिकित्सा : उपचार व शोध का नया क्षेत्र	882
269.	डॉ. सारीका एन.दांडगे (बोदडे)	स्वयंरोजगार : वाढत्या बेरोजगारीवरील एक उपाय	885
270.	Dr. F. N. Mahajan	E-Commerce, E-Business and Recent Trends in Communication Sector	887
271.	Dr. V. K. Mahulkar	Corporate Social Responsibility And Sustainable Development	893
272.	डॉ. अश्रु जाधव	बालकाव्दारे मोबाईल फोनचा गैरवापर	899
273.	Dr.T. K. Kanthale	New Trends in English Language and Literature	902
274.	प्रा. स्वाती सरकटे	ग्रामीण विभाग में शिक्षा एवं सहकारिता का अभाव	905
275.	Dr. Rajesh G. Maske	ESL Teacher's Role In Teaching Of English Language In Rural Area	907
276.	डॉ. दीपक द. कोटुरवार	पर्यावरणाच्या जाणीव जागृतीबाबत विद्यार्थी व शिक्षक यांच्यात रूजवावयाची मूल्य एक अभ्यास	909
277.	Prof. Ms. Deepa Sathe	A Review On Effect Of Online Games On School Students	912
278.	Dr. Nikhilesh Nalode	New Trends In Music	916
279.	Dr. S. P. Nimbhorkar	Usage of Information and Communication Technology In Teaching and Learning and it's Barriers	920
280.	Dr. Rahul R. Dhuldhule	International & National Standard Open Source Digital Library Software's: An Overview	923
281.	Nilesh Digamber Autkar	Recent trends in English Language Teaching and Learning	928
282.	Dr.Dipak Ulemale	Peter Handke's linguistic Ingenuity	932
283.	प्रा. डॉ. संतोष बनसोड	रासायनिक और जैविक युध्द और उसका विश्व की राजनिती, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर परिणाम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	934
284.	Bhavna Wasnik	Scope In Food Science and Nutrition: Innovations and Emerging Technologies	940
285.	Dr.Anjali Chandrakant Pande	Need and Scope of Innovation in Home Economics	942
286.	Ravindra D. Kene Dr. P. N. Mulkalwar	Bank and ATM (Automatic Teller Machine) Security: An overview	944

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

रासायनिक और जैविक युध्द और उसका विश्व की राजनिती, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर परिणाम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड
विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग
श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

विश्वयुध्द के दौरान साम्राज्यवादी, पूँजीवादी, **शोषक** ताकतों ने **बडे** व्यापक **पैमाने पर** रासायनिक एवं जैविक हथियारों का इस्तेमाल किया। जैविक हथियार किसी भी मुल्क की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को बहुत बडी चोट पहुँचा सकते है। और इसका विश्व की राजनिती, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर जो अत्यंत गहरा प्रभाव पडा। और यह आज तक जारी है। जिससे साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद का आतंकवादी चरित्र उजागर होता है। उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करना प्रस्तुत शोध निबंध का मूल उद्देश है।

दुनियाँ के सभी जंग पूँजीवादी लूट–खसोट के लिये हुए थे। शोषकों ने ही किया रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल!

जर्मन वैज्ञानिक फिट्झ हेबर (Fritz Haber) ने प्रथम विश्वयुद्ध के समय रासायनिक हथियारों की तरक्की में अहम किरदार निभाया। 22 अप्रैल 1915 को बेल्जीयम में उसके साथ लड़ रही फ्रेंच और अल्जिरियन सेना पर जर्मन सेना ने 5730 क्लोरिन गॅस के सिलेंडरों के वॉल्व खोल दिये जिससे 180 टन क्लोरिन गॅस फैली। पहले दो दिनों में 5000 दोस्त मुल्कों की सेना के जवान मारे गए, 10,000 अपाहिज हुए जवानों मे से आधे हमेशा के लिए अपाहिज हुए। 31 मई 1915 को हेबर ने पूर्वी मोर्चे पर रूसियों के खिलाफ क्लोरिन हमला करवाया। ब्रिटिश सेना ने बेल्जियम के लुस नामक जगह पर क्लोरिन गॅस का हमला किया जिसमें 5500 सिलोंडरों का इस्तेमाल किया गया। 14 अक्तूबर 1918 को ब्रिटिश सेना ने मस्टर्ड गॅस का इस्तेमाल जर्मन सेना के वरविक नाम के बेल्जियम के गाँव पर किया। इसमें एक लाख लोग मारे गये और दस लाख जख्मी हुए। ॲल्डॉफ हिटलर इस गॅस के असर में आया और जर्मनी ने फौरन युद्धबंदी लागू कर दी। सन 1919 में जर्मनी ने हेबर को उसके रसायनशास्त्र में योगदान के लिये नोबेल प्राईज का ऐलान किया।

युद्धो में गॅसों की तीन किस्मों का इस्तेमाल हुआ है। (1) Asphyxiants क्लोरिन और फोसजिन (**चिवेहमदम**) फेफडों पर असर करती है, (2) Blistering agent इनमें अलग अलग तरह की मस्टर्ड गॅस शामील है, (3) Blood agents इनमें हायड्रोजन सायनाईड शामिल है जिसे 'प्रुसिक एसिड' या हायड्रो सायनिक एसिड भी कहा जाता है। यह रक्त में ऑक्सिजन को रूकावट करता है। ब्रिटेन ने आरर्सेनिक पर आधारित गॅस "ब।" बनाई। यह गॅस गॅसमास्क से भी छनकर जिस्म में पहुंचकर इन्सान को भयानक दर्द पहुंचाती थी। जर्मनी ने 'वेरफर 1918' नामक गॅस बनाई। अमेरिका ने चमडी पर छाले लाने वाली गॅस "**लेविसाईट**" बनाई। जर्मनी के हेबर ने "पेस्ट कंट्रोल" के प्रयोगों के नाम पर जहरीली गॅसों की खोज जारी रखी। हेबर ने एक ऐसा पदार्थ बनाया जो प्रुसिक ॲसिड गॅस छोडता था। इस पदार्थ को 'झिकलॉन बी' (**zyklon B**) नाम दिया गया।

जर्मन नाजीयों ने इसका इस्तेमाल 20 साल बाद अपने "एक्सटरमिनेशन कॅम्पस" में कत्लेआम के लिये किया। रूस के गृहयुद्ध में जहरीली गॅसों का इस्तेमाल किया गया। ब्रिटेन ने अफगानिस्तान और अपने दिगर उपनिवेशों की जनजातियों की बगावत दबाने के लिये इसका इस्तेमाल किया। जपानियों ने भारी तादाद में मस्टर्ड गॅस और लेविसाईट, रासायनिक बम, सायनाईड गॅस छोडने वाले टँक विरोधी बम, दिगर हथियार और आदमियों के लिये ही नही बल्कि जंग में उनके घोडों, उंटों और कुत्तों के बचाव के उपकरण बनाये।

जर्मन केमिस्ट गेरहार्ड स्च्राडर (ळमतींतक *बीतंकमत) ने दिसंबर 1936 में घातक 'ऑरगॅनो फॉस्फेट कम्पाउंड' (**Organo Phosphate Compound**) बनाया जिसका नाम उसने 'टॅब्युन' (**Tabun**) रखा। जब इसकी एक बुँद नीचे गिर गई और उसकी पुतलियाँ सिकुडकर सुई की नोंक बराबर रह गई और उसे सांस लेने में बेहद दिक्कत हुई। अगर कुछ और बुंदे गिर गई होती तो उसका बचना मुश्किल था। टॅब्युन को 'नर्व्ह गॅस' कहा गया क्योंकि ये 'नर्व्ह सायनॅप्सेस' पर असर करती थी। इसकी बेहद कम तादाद इन्सान की जान लेने के लिये काफी है। गॅस मास्क भी इससे बचाव नही कर पाता क्योंकि यह गॅस चमडी से सोख ली जाती है। सन 1938 में स्च्राडर ने इससे भी खतरनाक गॅस की खोज की जिसे 'सॅरिन' (**Sarin**) के नाम से जाना गया।

Principal

Librarian

इस दौरान इटली ने अपने ॲबिसिनिया (अभी का नाम इथोपिया) की मुहिम में 'मस्टर्ड' गॅस को हवाई जहाजो से गॅस बमों के रूप में इस्तेमाल किया। सन 1937 में जपानियो ने जहरीली गॅसों का चीनियों के खिलाफ इस्तेमाल किया। द्वितीय विश्व युद्ध में चर्चिल ने बडे ही बेमन से रासायनिक हमले की योजना की कुर्बानी दी क्योकि इसके लिये जरुरी हवाई जहाज उसके पास नही थे। हिटलर ने इस डर से रासायनिक हथियारों को इस्तेमाल नही किया कि दोस्त मुल्क उससे भी बडा रासायनिक हमला कर सकते थे।

अमेरिका ने इतने गॅस हथियार पैदा किये जितनों का सभी मुल्कों ने मिलकर प्रथम विश्वयुद्ध में इस्तेमाल तक नही किया था। जर्मनी ने अपने टॅब्युन, सॅरीन और सोमन गॅस के सांकेतिक नाम **GA, GB व GD** रखे थे। ब्रिटिश सेना ने सन 1940 के आखिर मे और 1950 की शुरुवात मे अमेरिका ने बनाई '245टी' नामक फसल को **खत्म करने वाले रसायन का इस्तेमाल मलाया के कम्युनिस्ट विद्रोहियों के खिलाफ किया। ब्रिटिश सेना ने** कम्युनिस्ट विद्रोहियों के इलाकों की सभी वनस्पतियों पर **'245टी'** का विमानों से छिडकाव किया। सन 1960 के दशक में अमेरिका ने ब्रिटेन की मलाया में मिली कामयाबी को देखकर कम्युनिस्टों के खिलाफ बडे पैमाने पर 245टी का इस्तेमाल किया जिससे व्हिएतकांगो को जंगल मे छूपना, जंगल में फसल उगाना नामुमकिन हुआ। इन रसायनों के ड्रमों पर हरा, गुलाबी, सफेद, जामुनी, निला और ऑरेज रंग के संकेत शब्द दिये गये थे। गुलाबी रसायन 245टी और कम तादाद मे डायऑक्सिन **(dioxin)** का मिश्रण था। व्हिएतनाम में सन 1968 में इतना ज्यादा वनस्पती विरोधी रसायन **(herbicide)** इस्तेमाल किया गया कि अमेरिका मे खेती के लिये ओर बेकार पौधों के खात्मे के लिये रसायन कम पड गए। बड़े पैमाने पर ऑरेज रसायन के इस्तेमाल से व्हिएतनामी बच्चों में जन्म से खराबियाँ पैदा हुई। **इस रसायन की जद में आये लोगों मे कॅन्सर पैदा हुआ। अमेरिका ने चमडी पर भयानक** जलन पैदा करने वाले **"CS"** नामक रसायन का इस्तेमाल व्हिएतकांगो को उनके घूपने के ठिकानों से बाहर निकालने के लिये किया।

अमेरिका ने व्हिएतनाम के देहाती इलाके में सन 1961–71 के दौरान 42 मिलियन लीटर जैवरासायनिक पदार्थ छिडके जिसकी वजह से 50 मिलियन व्हिएतनामी नागरिक आज तक प्रभावित है। उनमें से 6 लाख लोग संगीन बिमारियों के शिकार है। अमेरिकी जैविक और रासायनिक कार्यकम के मुताबिक दक्षिण अफ्रिका के काले अवाम के खिलाफ अमेरिका ने जैविक और रासायनिक हमले किये।

केन्ट की इनवायरनमेंटल फाउंडेशन और एज्युकेशनल फाउंडेशन ऑफ अमेरिका के डॉ. सुजेन मार्शल के अध्ययन के मुताबिक अमेरिका के पास चार अहम रासायनिक हथियारों के भंडार है

(1) **मस्टर्ड गॅस या एजन्ट एच** जिससे दम घुट जात है और इससे बच गए लोगों को कॅन्सर हो सकता है।

2) **जीबी या सॉरिन गॅस** जिससे आँखो में तेज जलन, डायरिया, सांस रुकना और फिर अचानक मौत हो जाती है।

(3) **वी.एक्स गॅस** जो सूंघने पर जी.बी. गॅस से दो गुना, मुँह के भीतर जाने पर दस गुना, और त्वचा के छिद्रों से जिस्म में जाने पर 170 गुना ज्यादा जहरीली साबित होती है।

(4) **वी.जेड गॅस** से याददास्त गुम होने और पागलपन से लेकर दिल का दौरा तक पड सकता है।

अमेरिका ने दिये रासायनिक हथियारों का इराक ने इरान के खिलाफ अपने 1980 के दशक की जंग में इस्तेमाल किया। इरान की 1988 मे हार की वजह इराक ने रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल करना था। इरान जंग के बाद सद्दाम हुसैन ने इसका इस्तेमाल कुर्द बागियों के खिलाफ किया जिसमें हजारों कुर्द मारे गए। खुद अमेरिकी सिनेट की 1994 की रिपोर्ट के मुताबिक कम से कम सन 1985 से 1989 तक अमेरिकी कंपनियों ने इराक को अमेरिका ने ही सद्दाम हुसैन को हर तरह के रासायनिक और जैविक हथियार मुहैया कराये थे। धीरे धीरे भयानक मौत देने वाले सामूहिक विनाश के इन हथियारों में (1) बॅसिलस ऐन्थ्रसिस (Bacillus anthracis) जिससे एन्थ्रेक्स होता है। (2) हिस्टोप्लाजमा कॅप्सूलाटाम (Histoplasma Capsulatam) जो फेफडों, मस्तिष्क, स्पाईनल कार्ड (रीढ के मज्जादंड) और दिल पर असर करता है, (3) क्लोस्ट्रिडियम बोटूलिनम (Clostridium botulinum) जो एक टॉक्सिन है। (4) ब्रूसेला मेलिटेन्सिस (Brucella Melitensis) ऐसा जीवाणू है जो जिस्म के अहम अंगो को तबाह करता है, (5) क्लोसिट्रडियम परफ्रिजेन्स (Clostridium Perfringens) बेहद घातक टॉक्सिन है जो खास बिमारी को पैदा करता है, (6) क्लोस्टेडियम टिटॅनी (Clostridium tetani) बेहद घातक टॉक्सिक है, भेजे गए। इसके अलावा इस्चेरिचिया कोली (Escherichia Coli – (E.Coli)), अनुवांशिक पदार्थ (Genetic materials), इन्सानी और जीवाणू डिएनए (Human and Bacterial DNA) और दिगर दर्जनों विषाणू और जीवाणू इराक भेजे गए। सिनेट रिपोर्ट के मुताबिक इन सभी से इनकी दोबारा पैदावार की जा सकती थी। इन जैव–रासायनिक हथियारों की पैदावार और इसके जंग में इस्तेमाल के लिये जरूरी उपकरण भी भेजे गए।

अमेरिकी हिमायत से दक्षिण अफ्रिका की वंशवादी रंगभेद हिमायती सरकार को जैव रासायनिक हथियार बनाकर इसका इस्तेमाल अफ्रिका के काले अवाम के खिलाफ किया। काले सैनिको पर प्रयोग किये गये। इससे काले सैनिकों में स्वाभाविक लगने वाला हार्ट अटॅक पैदा होता था। पानी में विषाणू और जीवाणू को मिलाया गया। तरह तरह की ऐसी गॅसों का इस्तेमाल किया गया जो दक्षिण अफ्रिका और उसके करीब के मुल्कों के दूश्मनों को लकवे का शिकार बनाकर मार डालती है।

शोंषकों ने ही किया जैविक हथियारों का इस्तेमाल!

वंशवादी अमेरिका अन्यों से भी नए–नए जैविक हथियार खरिदने की कोशिशें करता रहा है। नस्लभेद विरोधी कार्यकर्ताओं और उनके हिमायतीयों ने काले लोगों को ठिकाने लगाने के लिए जैविक हथियार जमा किए थे। दक्षिण अफ्रिका की नस्लभेदी सरकार ने जैविक हथियारों को पैदा करने की गुप्त परियोजना 'प्रोजेक्ट कोस्ट' शुरू की थी, जो 1990 के दशक में उजागर हुई थी। डॉन गुसेन को 1981 में प्रोजेक्ट कोस्ट की रूडप्लाट लेबोरेटरी का डायरेक्टर बनाया गया। इस प्रोजेक्ट के मिलिट्री कमांडर वाटर बेसन थे। अक्तूबर 2001 में गुसेन की मुलाकात सीआईए के एक पूर्व एजन्ट डॉन मायस से हुई। उसने गुसेव से कहा कि वह चाहे तो जैविक हथियार और उसके प्रतिरोधक अमेरिका को बेचकर अच्छा पैसा कमा सकता है। गुसेन की शर्त थी कि एफबीआई उसे 50 लाख डॉलर नगद, उसे और उसके 20 साथियों के परिवारों के लिए अमेरिका में बसने की इजाजत दिलाए। एफबीआई को यह कबूल था। मई 2002 में गुसेन ने मायस के हाथों टूथपेस्ट के ट्युब में रखकर घातक ड्राई बॅक्टेरिया के नमुने अमेरिकी गुप्तचर संस्था एफबीआई को भेजे। योजना के मुताबिक डरबन से 600 कि.मी. दूर एक एअर पोर्ट पर अमेरिका का एक प्राईवेट विमान उतरना था, जिसके एक ट्रेलर पर दो कंटेनर लाद दिये जाने थे। इन कंटेनरों में 20 लिटर एंटीसिरम और कांच की 200 बोतलों में ऐसे बॅक्टेरिया थे, जिन्हे मनुष्य और पर्यावरण के लिए बेहद खतरनाक बताया गया था। इसमें इन्टेस्टाईनल बॅक्टेरियम ऐस्केरिकीया कोली की टॉक्सीन प्रोडयुसिंग जीन क्लास्ट्रीडियम परन्फिन्जेन्स से संकरित किया गया था। इसकी वजह से खतरनाक गैस गॅगरेन नामक बिमारी हो जाती है। लेकिन एक गलतफहमी की वजह से एफबीआई के अफसरों ने यह बात दक्षिण अफ्रिका के अफसरों को बता दी जिससे सौदा नही हो सका।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने अपने उपनिवेशों को बढाने के लिये इलाकाई जनजातियों में जिवाणूओं से संकमित ब्लॅकेट और कपडे बाँटे थे। इन जनजातियों में इन रोगों का मुकाबला करने की कुव्वत नही थी इसलिये बडे भारी पैमाने पर उनकी मौतें हुई।

माना जाता है कि सन 1944 में जर्मनी में आलू की पैदावार को जो भारी नुकसान पहुंचा था वह इन जैविक हमलों की वजह से था। उसी तरह सन 1945 में जापान में चॉवल की पैदावार की भारी बर्बादी हुई थी।

जापानियों ने औरों के बराबर आने के लिये और चीन के जिन इलाकों को वे अपनी कॉलनी बनाना चाहते थे वहां के चिनियों का खात्मा करने के लिये जैविक हथियार बनाये। इशिई (**Ishii**) नामक जापानी वैज्ञानिक ने पिंगफॅन इंस्टिट्युट में "जल शुद्धीकरण प्रकल्प 731" की आड में जैविक हथियारों की पैदावार की। इस इन्स्टिट्युड का इलाका तीन स्वेअर किलोमीटर फैला था जिसमें हवाईपट्टी, बैरकें और प्रयोगशालाएं थी।

एन्थ्रॅक्स (**Anthrax**) के जीवाणू बेहद विपरित हालत में भी जींदा रह सकते है और बेहद घातक होते है जिससे शहर की पूरी आबादी को खत्म किया जा सकता है और उस इलाके को पीढीयों तक रहने के लिये नाकाबिल बनाया जा सकता है। प्लेग Yersinia Pestis नामक जीवाणू से फैलता है। इसके जीवाणू तीन तरह के होते है – 1) ब्युबोनिक प्लेग (Bubonic Plague) जो मच्छर इ. उडने परजीवी कीटों के काटने से फैलते है। 2) न्युमोनिक प्लेग (Pneunomic Plague) के जीवाणू में सांस के जरीये से इन्सान के फेफडों में जाते है। 3) सेप्टिसमिक प्लेग Septicemic Plague जीवाणू के ताल्लुकात से फैलता है। गॅस गॅन्ग्रीन (Gas gangren) में जीवाणू Clostridium Perfringens bacterium से जख्म सडने लगते है। तेजी से फैलने वाली ब्रुसेलोसिस (Brucellosis) बीमारी का शिकार इन्सान हप्तों तक नाकाम हो जाता है। ग्लंडर्स (Glanders) बीमारी Bacterium Pseudomonas Mallei नामक जीवाणू से होती है। इसमें नाक और साँस की नली की म्युकस त्वचा को यह जिवाणू खा जाता है और इन्सान की लिम्फॅटिक सिस्टिम (Lymphatic System) पर हमला करता है। Salmonella and Clostridium botulinum bacteri यह दो जीवाणू खाने में बेहद घातक बायोटॉक्सिन छोडते है। बोटुलिजम टॉक्सिन की बेहद कम व्यादाद भी बेहद घातक होती है।

Tularemia खरगोशों और इन्सानों पर असर करता है। इन्सानों को यह कई हप्तो के लिये बीमार बनाता है। प्रोडक्शन युनिट 723 सांस से या मांस के सुप (broth) से भरी ट्रे में इन जीवाणू की पैदावार करते थे। सडे

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

भास की बदबू नाकाबिले बर्दाश्त होती थी। माना जाता है की पिंगफैन प्रयोगशाला में हर महिने कई टन जीवाणू पैदा किये जाते थे।

जापानी अपने प्रयोगों की जांच के लिये चीनी इलाकों में जाकर अमूक महामारी फैली होने का प्रचार करते थे। फिर जापानी सैनिकों की टोलियाँ चीनी इलाकों के कुँओं में और दिगर जलाशयों में जीवाणू डालती थी। बिमारी फैलने के बाद वे मरिजों को बेहोश कर उनके जिस्म से नमूनों के तौर पर जरा सा मांस निकालकर जिस्म को फिर से सी देते थे। मरे लोगो को कुएं में डाल देते थे। जापानी सिपाही संक्रमित गाँवो को जला भी देते थे। ये प्रयोग पूरी गोपनीयता से चीनी कैदियों पर किये गए। जापानियों ने चीनी कैदियों के जिस्म पर ही इन रोगों के जीवाणू की पैदावार करनी शुरू की। जापानीयों का सोचना था कि जो जीवाणू जीन्दा चिनियों के जिस्म की प्रतिरोधी कुव्वत का मुकाबला करते हुए पैदा होगे वे और भी ज्यादा खतरनाक साबित होंगे। 3000 कैदियों का कोटा पूरा करने के लिये कईयों को सडकों पर चलते हुए ही कैद कर लिया गया था। चीनियों को खुले में खंबे से बांधा जाता था। विमान से उनपर जीवाणू छिडके जाते वक्त उन्हे अपनी निगाहें आकाश की ओर करने पर मजबूर किया जाता था। लगातार अध्ययन किया जाता था कि वे किस तरह बिमारी से मर रहे है। कुछ कैदियों को Stakes or panels से बांधकर उसके पास Clostridium Perfringens bacteria को छोडने वाले बमों का विस्फोट किया जाता था। इन कैदियों के घाव ओर जिस्म गैन्ग्रीन से कैसे सड रहे है इसका बाकायदा रिकॉर्ड रखा जाता था। जब उनके जिस्म में इन जीवाणुओं की पैदावार हो जाती तो इन कैदियों की क्लोरोफॉर्म से बेहोश कर उनके जिस्म का सारा खून निकाल लिया जाता था। जब जिस्म से रक्त का प्रवाह धिमा पड जाता तो जापानी सैनिक कैदियों के छाती पर कूदते थे ताकि जिस्म का एक एक कतरा खून भी निकल आए। इस दौरान शेकडों जापानी सैनिक भी जीवाणुओं के असर से मर गए। इसके बावजूद ये प्रयोग जारी रहे। इशीई ने 18 और नए केन्द्र कायम कर लिये। जापानी आत्मसमर्पण के बाद ईशिई ने अपने जैव हथियारों की रिपोर्ट अमेरिकी सरकार के हवाले की। उसे और उसके साथियों को जंग अपराधों के इल्जामों से आजाद किया गया और 'युनिट 371' के काले कारनामों पर पर्दा डाल दिया गया।

लंदन के 'इंम्पैक्ट इंटरनैशनल जर्नल' में यह इल्जाम लगाया गया है कि पश्चिमी गोरे वंशवादियों ने एड्स की महामारी को जैविक हथियार की शक्ल में काले अफ्रिकी लोगों के खिलाफ इस्तेमाल किया है। केन्या के नोबेल शांति पुरस्कार विजेता वांगारी मथाई ने भी इल्जाम लगाया है कि गोरे वंशवादियों ने कालों का जनसंहार करने के लिये एड्स महामारी पैदा की है। एड्स के विषाणुओं को पश्चिम की किसी प्रयोगशाला में पैदा किया गया। पश्चिमी देशों ने यह दलील दी की एड्स का विषाणू सबसे पहले अफ्रिकी मुल्कों मे बंदरों से लोगो में फैला जबकि काले लोग हजारो सालों से बंदरो के बीच रहते आये है। काले लोगों को एड्स के उपचार के नाम पर जो विषाणु दिये गए उनका असर भी किसी महामारी से कम नही है।

सन 1993 के वसंत में इटली में hoof - and - mouth नामक बीमारी से 4000 जानवरों की मौत हुई। बाद में पता चला कि युगोस्लाविया से जो जानवर मंगाये गये थे उनमें इस रोग से ग्रस्त जानवर की वजह से बिमारी फैली थी। युरोपियन कम्युनिटी के बीच "गाय–युद्ध" शुरू हुआ जब उन्होने पूर्वी युरोप के 18 मुल्कों और सोवियत युनियन से गाय जैसे सभी जानवरों से बनी पैदावार पर पाबंदी लगा दी। जैविक हथियार किसी भी मुल्क की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को बहुत बड़ी चोट पहुंचा सकते है। सन 1951 में अमेरिकी वायू सेना के लिये फसल विरोधी जैव हथियारों की पैदावार की गई। अमेरिका ने 30 टन Wheat rusts की पैदावार की जो सारी धरती के गेहूँ को तबाह करने के लिये काफी थी। इसका अहम निशाना सोवियत संघ के उक्रेन की फसलें थी। अमेरिका ने एक टन Rice blast disease के जीवाणूओं की पैदावार की। इसका मकसद चीन की धॉवल की फसलों को बर्बाद करना था।

विश्वयुद्ध के समय इस्तेमाल किये गये हथियार एवं उसका परिणाम :

1) क्लस्टर बम – हर क्लस्टर बम 200–700 छोटे बमों से बना होता है। छोटे बमों का विस्फोट होने पर लगभग 300 फौलादी तुकडे उडते है जिसकी जद में आनेवाला खून के लोथडे में तब्दील हो जाता है। इन्हे लडाकू हवाई पोत से छोडते ही तयशुदा समय पर उसके छोटे बम बाहर फेंके जाते है। हर छोटे बम के साथ एक पैराशुट लगा होता है जिससे उसके नीचे आने की रफ्तार कम हो जाती है जिससे वे दूर दूर तक फैल जाते है और उनके विस्फोट से ज्यादा से ज्यादा इलाके में तबाही होती है। उनके विस्फोट के समय को टाला भी जा सकता है ताकि वे टाईम बम या बमों की खानों के रूप में तब्दिल हो जाए। ऐसे बमों की तादाद लगभग 5–30 फीसदी तक रखी जाती है। मिट्टी, पौधे, या लताएं उगकर इन्हे अपने में छीपा सकती है। कोई बच्चा, इन्सान, जानवर या वाहन उससे टकराते ही उसका जबर्दस्त विस्फोट होता है। जैसे जैसे समय बितता है वे कभी भी फट पडते है। इससे हजारो बच्चे, स्त्री, पुरुष अपनी जान गवा चूके है। लोक डर के मारे उस इलाके में काम नही

करना चाहते जहाँ ये क्लस्टर बम छोडे गये थे। इस तरह क्लस्टर बम फसल और जमीन के इस्तेमाल को अगले कई सालों तक के लिये रोक देते है। अमेरिकी गठबंधन सेना ने युगोस्लाविया, अफगानीस्तान, व्हिएतनाम, लाओस, कंबोडिया आदी मुल्कों मे लाखों की तादाद में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल किया गया। अमेरिकी सरकार बमों की सफाई के आंतर्राष्ट्रीय समझौते पर दस्तखत नहीं करना चाहती क्योंकि ऐसा करने के बाद अमेरिका क्लस्टर बमों का इस्तेमाल नही कर पाएगा।

2) CBU - 72 Fuel - Air Explosive – इस क्लस्टर बम के विस्फोट के बाद भयानक आग फैलती है। घेरे में आये हुए लोग, जानवर और पेड–पोधें जलकर राख हो जाते है और बंकरों में छुपे लोग दम घूटने से मर जाते है। फटते ही वह हवा में ज्वलनशील पदार्थ के बादल को बडी तेजी से फैला देता है। जैसे ही ये धूंए के बादल जमीन पर उतरते है इस बम की प्रणाली उसे "इग्नाईट" कर देती है। जिससे बडा विस्फोट होता है। नागरिक जीन्दा जल जाते है। उनके जिस्म एक बडे इलाके तक कुचले जाते है। जब इसकी चपेट में स्कुटर, मोटर, गाडियाँ आती है तो उनके इंधन का भी विस्फोट होता है।

3) MOAB Massive Ordnance Airburst Bomb – मोआब यह CBU-72 Fuel-Air Explosive बम है। इस बम का असर एक छोटे परमाणु बम जैसा ही है लेकिन इससे रेडिएशन पैदा नही होता। इन क्लस्टर बमों में तीन बडी बॅरलों में ethylene g भरी होती है। हर बॅरल में 100 पाउंड गॅस होती है। हर बॅरल में 75 पाउंड ethylene oxide होता है जिसका व्यावसायिक इस्तेमाल glycol ethylene जैसे बेहद जहरिले पदार्थों को बनाने में होता है। इसका फ्युज 30 फिट की उँचाई पर इसे इग्नाईट कर देता है जिससे बॅरल खुल जाती है और हवा के साथ जहरिले विस्फोटक धुंए के बादल पैदा होते है। बिना इग्नाईट किये भी यह खतरनाक है क्योंकि इसका जहरिला धुंआ अंडरग्राउंड बंकरों के अंदर तक पहुंच सकता है। इस धुंए से फेफडों को नुकसान होता है, सिरदर्द और उल्टीयाँ होती है, सांस लेने में तकलीफ होती है, कॅन्सर और जन्म संबंधी विकृतियाँ भी पैदा हो सकती है। यह बेहद विस्फोटक गॅस है और इसके विस्फोट से हवा के बर्स्ट होने से जो दबाव पैदा होता है वह 30 किलो प्रति स्केअर सेंटिमीटर यानि परंपरागत बमों से 30 गुना ज्यादा है। इससे 2700 डिग्री सेल्सियस गर्मी पैदा होती है जो तीन किलोमीटर प्रति सेकंद की रफ्तार से यानि आवाज की रफ्तार से भी तेजी से फैलती है। इससे ताकतवर हवारहित इलाका (**Vacum**) पैदा हो जाता है जो हवा और खुली पडी चिजे अपनी ओर खींच लेता है। नतीजे में मस्तिष्क हिलने लगता है जिससे अंधापन ओर फेफडों का काम करना बंद हो जाता है, कान के ईअरड्रम और जिस्म के अंदरूनी हिस्से फट जाते है। इसके तुफान में उडती चिजों से इन्सान को चोट पहुंचते रहती है। इसके अलावा **ethylene oxide** फेफंडो में जाने के नतीजे अलग है। इस बम का इस्तेमाल अमेरिका ने सन 2003 में इराकी नागरिकों के खिलाफ किया।

ब्रिटिश सैनिकों के डेपलेटिड युरेनियम (डि;) बमों से पैदा हुई रेडियो एक्टीविटी से कॅन्सर का खतरा पैदा हो गया है। अध्ययन मे बसरा के अबु खासिब में रेडियो एक्टीविटी का स्तर सबसे ज्यादा पाया गया। रेडियो एक्टीव धूल से कॅन्सर और नवजात शिशुओं मे विकृतियाँ पैदा हो गई है।

समग्र रूप से देखा जाए तो विश्वयुध्द के दौरान विश्व के कई देशों ने लाखों की संख्या में जनबल को खोया। इसके अतिरिक्त विश्व की सामाजिक, राजनीतिक एवं अर्थव्यवस्था पर व्यापक परिणाम देखे गए। इसका प्रभाव भारत पर भी हुआ। संक्षेप में कहा जा सकता है कि युध्द के दौरान अर्थव्यवस्था ने कई मायनों में भारत में पूँजीवाद को बढावा दिया। उपरोक्त शोध निबंध साम्राज्यवाद के आतंकवादी चारित्र को उजागर करता है।

Consolidated Bibliograhy :

1. The History of Chemical and Biological Warfare by Greg Goebel.totse.com
2. News From China : Human Rights Record of The United States in 1999.
3. American Corporations Sold Chemical and Biological Weapons Material to Iraq : From Rogue State by William Blum.
4. दैनिक भाष्कर, अप्रैल 21, 2003.
5. Dalit Voice, April, 16-30, 2005.
6. The History of Chemical and Biological Warfare by Greg Goebel.totse.com, Robert P. Kablec : Battlefield of Future; : Biological Weapons For Waging Economic Warfare, www.totse.com
7. नवभारत, दिसंबर 16, 2003.
8. र. F. Haber, The Poisonous Cloud : Chemical Warfare in the First World War Oxford University Press : 1986.
9. Hersh S (1968) : Chemical and biological warfare ; America's hidden arsenal.

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

10. WHO : Health Aspects of Biological and Chemical Weapons.
11. Miller J (2001) – Biological Weapons and America's Secret War. New York : Simon & Schuster. ISBN 978-0-684-87158-5.
12. "Vietnam's war against Agent Orange", BBC News, June 14, 2004. on January 11, 2009. Retrieved April 17, 2010.
13. Orent W (2004). Plague, The Mysterious Past and Terrifying Future of the World's Most Dangerous Disease. New York, NY : Simon & Schuster, Inc. ISBN : 978-0-7432-3685-0.
14. Verdourt B, Trump EC, Church ME (1969), "Common poisonous plants of East Africa", London : Collins : 254.
15. Biological Warfare – National Library of Medicine. Retrieved May 28, 2013.
16. USAMRIID U.S. Army Medical Research Institute of Infectious Diseases.
17. CBWInfo.com (2001) – A Brief History of Chemical and Biological Weapons: Ancient Times to the 19th Century. Retrieved November 24, 2004.
18. Cordette, Jessica, MPH (c) (2003). Chemical Weapons of Mass Destrucion. Retrieved November 29 2004.
19. Croddy, Eric (2001), Chemical and Biological Warfare, Copernicus, ISBN 978-0-387-95076-1.
20. Smart, Jeffery K., M.A. (1997), History of Biological and Chemical Warfare. Retrieved November 24, 2004.
21. United States Senate, 103d Congress, 2d Session. (May 25, 1994). The Riegle Report. Retrieved November 6, 2004.
22. Gerard J Fitzgerald. American Journal of Public Health. Washington : April 2008. Vol. 98, ISS. 4.
23. Official website of the Organisation for the Prohibition of Chemical Weapons (OPCW).
24. Medical Aspects of Biological Warfare. Government Printing Office, 2007, P. 3, ISBN : 978-0-16-087238-9.
25. Croddy E, Wirtz J J (2005), Weapons of Mass Destruction, ABC-CLIO. P.171, ISBN : 978-1-85109-490-5.
26. Franz D. "The U. S. Biologicl Warfare and Biological Defense Programs" (PDF), Arizona University. Archived (PDF) from the 19 February 2018, Retrieved June 14, 2018.
27. Leitenberg, Milton; Zilinskas, Raymond A. (2012). "The Soviet Biological Weapons Program" : A History. Harvard University Press.
28. Mangold T, Goldberg J (1999). "Plague Wars : a true story of biological warfare". Macmillan, London. ISBN : 978-0-333-71614-4.
29. Rule 74. The use of chemical weapons is progibited. – section on chemical weapons from Customary IHL Database, an "updated version of the Study on customary international humanitarian law conducted by the Internation Committee of the Red Cross (ICRC) and originally published by Cambridge University Press."
30. Jirj Janta, Role of Analytical Chemistry in Defense Strategies Against Chemical and Biological Attack, Annual Review of Analytical Chemistry, 2009.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF)
ISSUE No- (CCCXVIII) 318 (A)

ISSN-2278-9308
September-2021

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

Thoughts and Works of Dr. Babasaheb Ambedkar



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director

Editor
Dr. Pramod S. Meshram
I/c Principal,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

INDEX-A

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता आणि सद्यस्थिती — प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड	1
2	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची सिध्दांतवादी सामाजिक चळवळ — डॉ. प्रमोद एस. मेश्राम	7
3	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि दलित साहित्य — डॉ.विकास शंकर पाटील	12
4	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची राष्ट्रवाद संकल्पना — प्रा.श्री. अमोल अरूण कुंभार	16
5	बाबासाहेब आणि वर्तमान काळात धर्मांतराची आवश्यकता — डॉ. अनंता सूर	21
6	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शेतीविषयक विचार व कार्य — अनिल मधुकर केदारे / प्रा.डॉ. सोंडगे तात्याराम परमेश्वर	28
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या चळवळीतील स्त्रीयांचे योगदान — प्रा. डॉ. अनिल आय. थूल	33
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा शिक्षण विषयक दृष्टीकोन– एक नवा दृष्टीक्षेप — डॉ.अनिता शिंदे	38
9	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषीविषयक विचार आणि सामाजिक न्याय — प्रा.डॉ.गव्हाळे बी.व्ही.	42
10	स्वातंत्र्योत्तर कालखंडातील मराठी साहित्यावर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा प्रभाव आणि परिणाम डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे	47
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शेतीविषयक विचार — भिमराव परमेश्वर वाघमारे	53
12	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्रवादविषयक विचार — प्रा. डॉ. चांगुणा विठठल कदम	56
13	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर — एक असामान्य अर्थतज्ज्ञ — चार्वाक आनंदराव खैरे	61
14	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षणविशयक विचार व कार्य — प्रा.चिन्नना एम. चालूरकर	66
15	डॉ. आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार — प्रा.डॉ.डी डी.जोंधळे	70
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे महिलांविषयक विचार व कार्य — प्रा. दिलीप यशवंत बर्वे	76
17	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचा शैक्षणिक दृष्टिकोन — प्रा.डॉ.जाधव दिलीप रामचंद्रराव	82
18	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धम्मविषयक विचार — प्रा. ज्ञानेश्वर भोसले	85

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675, Issue NO, 318 (CCCXVIII) A
ISSN : 2278-9308
September, 2021

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता आणि सद्यस्थिती

प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड
नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.
मो. नं. ८२७५४१८९८६
ई—मेल : bansodsantosh73@gmail-com

पत्रकारिता हा लोकशाहीचा चौथा स्तंभ आहे. लोकशाही चार महत्त्वपूर्ण स्तंभावर उभारलेली आहे. कायदेविभाग, कार्यकारीविभाग, न्यायविभाग आणि पत्रकारिता हे लोकशाहीचे चार आधारस्तंभ मानले जाते. त्या आधारावरच लोकशाही उभी असते. परंतु आज जर देशाची परिस्थिती पाहिल्यास हे तीनही विभाग एकाच ठिकाणी केंद्रित झालेले दिसतात. म्हणजेच ज्या पद्धतीने आपण स्वातंत्र्यपूर्व काळातील म्हणजेच दुसऱ्या महायुद्धापूर्वीची स्थिती पाहिली तर दुसऱ्या महायुद्धाला कारणीभूत ठरलेली परिस्थिती हि तिन्ही विभाग हातात धरून काम करणारे सत्ताधिश जगाच्या पाठीवर उदयास आलेत आणि पर्यायाने त्यांना रोखण्यासाठी अनेक देशांनी आपले आपसी मतभेद, वाद — विवाद विसरुन एकत्र येऊन त्यांचा पराभव केलेला दिसून येतो. द्वितीय महायुद्धानंतर जगाचे चित्र बदललेले दिसते आणि त्याच पद्धतीने आज जर भारतासंदर्भात बघितलं तर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता यावर लिहीत असताना आजच्या वर्तमान स्थितीचा थोडक्यात आढावा घेणे गरजेचे आहे.

आज आपण भारतातील चित्र पाहिले तर कायदेविभाग, कार्यकारीविभाग आणि न्यायविभाग हे तिन्ही विभाग एकाच ठिकाणी केंद्रित झालेले दिसतात. कारण लोकशाहीमध्ये आपण बघतोय की, लोकशाही बद्दल डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी तेव्हा विचार व्यक्त केला होता की "जर लोकशाही टिकवायची असेल, ती यशस्वी करायची असेल तर ती राबविणारे सत्ताधीश मंडळी कशी आहेत त्यांच्यावरच अवलंबून आसते." म्हणून जर आजचे चित्र बघितलं तर ज्यांची सत्ता आहे तेच कायदे बनवितात, तेच अधिकाऱ्यांची नियुक्ती करतात आणि अधिकारी हे कायदे अमलात आणतात. एवढेच नाही तर त्या पदावर आरूढ झालेली मंडळी आपल्या मर्जीतील न्यायाधीशांची नेमणूक करतात. हे चित्र सध्या भारतातील आहे. आणि त्यामुळेच कायदेविभाग कार्यकारी विभाग आणि न्यायविभाग हे तीनही लोकशाहीचे स्तंभ यांचे चित्र कसे आहेत हे आपल्याला दिसते. म्हणून, पत्रकार बघूंकडे आणि मीडियाकडे हा संपूर्ण भारत देश आशेने बघत आहे. मात्र या पत्रकारितेची स्थिती अतिशय वाईट आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी दि. १८ जानेवारी १९४३ तत्कालीन पत्रकारितेच्या संदर्भात अतिशय उत्तम विवेचन केले होते. त्याला आज ७१ वर्ष पूर्ण झालेली आहे. तरीही आज ७१ वर्षा नंतरही १८ जानेवारी १९४३ चे विधान तंतोतंत लागू होत आहे. हे विधान पुढील प्रमाणे आहेत, "भारतीय पत्रकारिता म्हणजे एखाद्या बँडवाल्यांनी बिदागी घेऊन आपल्या नायकाचा गाजावाजा करण्यासाठी ढोल बजविणे होय" आणि आज तशीच परिस्थिती आपल्याला दिसून येत आहे. परंतु सर्वच पत्रकारासंदर्भात हे विधान सत्य नाही. या परिस्थितीला अपवादही आहेत. काही पत्रकार आपले, लोकशाहीचे मूल्य जपून या ठिकाणी अतिशय उत्तम काम करीत आहेत. परंतु हे अल्पप्रमाणात आहे आणि म्हणूनच आज डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात त्या प्रमाणे, "भारत नायक पूजकांच्या कैफानी आधळा झालेला आहे" आणि त्याचं ही विधान आजच्या भारतातील परिस्थितीला तंतोतंत लागू आहे.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणायचे, पत्रकाराने कधीही वकीलपत्र घेऊ नये, खोटारडेपणा करू नये, पत्रकारितेच्या निमित्ताने धंदे, वसुली, जातीयतेचे विष पेरू नये, आपापसात भेदभाव पेरू नये एवढेच नाही तर नायक पूजा केली जाऊ नये. अशा प्रकारचे विधान डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी १८ जानेवारी १९४३ रोजी केले होते. ते भारतीय स्थितीला यथास्थितीत ही लागू होत आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पत्रकारितेला तोड देणारा मसीहा आजपर्यंत तरी निर्माण झालेला नाही.डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता ज्यांनी सखोलपणे अभ्यासली असेल, त्यांचे अग्रलेख वाचलेले असेल त्यांचे स्फुटलेखन वाचलेले असेल,त्यांच्या वृत्ताची मांडणी असेल, त्यांचा निर्भीडपणा असेल, त्यांचा अभ्यास आणि कोणतेही वृत्त आणि अग्रलेख लिहिण्यापूर्वी त्यांनी केलेले सखोल अध्ययन,संशोधन याचा विचार केल्यास त्यांच्या अध्ययनपूर्ण आणि संशोधनपूर्ण पत्रकारितेला आजही तोड नाही. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पूर्वी सुद्धा अस्पृश्यांच्या संदर्भामध्ये काही अस्पृश्य सुधारक मंडळी कार्यरत होती. ज्यामध्ये विदर्भातील विशेषता कालीचरण नंदागवळी,किसन फागुजी बनसोडे,गणेश आकाश गवई,यवतमाळचे विठ्ठल दसरथ मकेसर,गोपाळबाबा वलंगकर,शिवराम जानबा कांबळे या सर्व मंडळीनी पत्रकारितेच्या संदर्भामध्ये विचार करून काही तत्कालीन काळात वृत्तपत्र सुरु केले होते.ते म्हणजे सोमवंशीय मित्र, हिंदू नागरिक,विटाळ विध्वंस,मजूर पत्रिका आणि अमरावतीचे गणेश आकाजी गवई यांनी सुरू केलेले बहिष्कृत भारत अशा पद्धतीने तत्कालीन काळातील काही वृत्तपत्र अस्पृश्य चळवळी संदर्भात अस्पृश्यांचा उद्धार करण्यासाठी कसोशीने त्यांनी उभे केले होते. जेणेकरून चळवळीला गती देता येईल. मात्र डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचा पत्रकारितेचा उगमच काही वेगळा आहे. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची तल्लक बुद्धिमत्ता ज्यामुळे आपण बघतोय जगातल्या १०० विद्वानांमध्ये त्यांची गणना होते. त्यामध्ये डॉ.बाबासाहेब हे एक व्यक्तीमत्त्व आहे.डॉ.बाबासाहेबांच्या बुद्धीची गणना आजही करता येत नाही. अशा या डॉ. बाबासाहेबांच्या बुद्धीला पत्रकारीतेने स्पर्श कुठे केला हे बघणे महत्त्वाचे आहे. त्यांच्या पत्रकारितेचा उगम कोठे आहे हे जावून घेणे गरजेचे आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कोलंबिया विद्यापीठामध्ये अमेरिकेला उच्च शिक्षणासाठी गेले होते. त्या ठिकाणी गेले असताना ९ मे १९१६ कोलंबिया विद्यापीठामध्ये मानववंश शास्त्रावर एक परिषद भरली होती. या राष्ट्रीय स्तरावरील परिषदेमध्ये डॉ. बाबासाहेबांनी संशोधक म्हणून सहभाग घेतला. ९ मे १९१६ च्या या परिषदेत डॉ बाबासाहेबांनी एक पेपर सादर केला. "भारतीय जाती घडण, उत्पत्ती आणि विकास" हा विषय घेऊन त्यांनी उत्तम असा पेपर सादर केला आणि या पेपरमध्ये त्यांनी भारतीय जातीव्यवस्था ही ईश्वरनिर्मित नसून मानवनिर्मित आहे. धर्माच्या आधारावर उभी झालेली आहे. वेदाचे संदर्भ देऊन डॉ बाबासाहेबांनी ब्राह्मणी घटकांचे जाती व्यवस्थेची लक्तरे लटकविलेले दिसतात. अतिशय उत्तम असा हा पेपर होता. भारतीय मानववंशशास्त्राच्या संदर्भात कोलंबिया विद्यापीठामध्ये अनेक संशोधक होते, ते परिषदेमध्ये सहभागी झालेले विद्वान होते या सर्वांनी डॉ. बाबासाहेबांचे कौतुक केले. त्याचवेळी अमेरिकेमध्ये निग्रोची चळवळ सुरू होती. तेथील एका विद्यार्थ्याने पेपर सादर केला तो मूळचा निग्रो होता. डॉ. बाबासाहेब त्या पेपरकडे आकर्षित झाले. त्यानंतर त्यांनी अमेरिकेच्या निग्रोची चळवळ नेमकी काय आहे. त्यासंदर्भातील माहिती मिळवून अध्ययन केले. त्याच वेळी अमेरिकेमध्ये हार्लेम रिनायसन्स ही निग्रोची नागरी स्वातंत्र्याची चळवळ मोठ्या प्रमाणात गतिमान झाली होती. ही चळवळ गतिमान करण्यासाठी अमेरिकेमध्ये ज्यांनी फार मोठा आधार दिला, गती दिली, प्रेरणा दिली ती तेथील बुद्धीजीवी वर्गाने, बुद्धिजीवी वर्गाला आकलन आणि मांडणी अवगत असते. अशा दोन्ही वर्गाणी ही चळवळ गतिमान केली होती. नागरी चळवळीच्या या हार्लेम रिनायसन्स या लढ्याला न्याय मिळवून देण्याचे काम तेथील काही वृत्तपत्रांनी केले. ते वृत्तपत्र होते 'द क्रायसेसिस, द शिकागो डिफेन्स, निग्रो वर्ल्ड' हे अमेरिकेतील

तत्कालीन काळातील अतिशय महत्त्वपूर्ण वृत्तपत्र होते. या वृत्तपत्रानेच या सर्वांची कैफियत मांडली त्यामुळेच येथील निग्रोची चळवळ गतिमान झाली. अशा प्रकारे डॉ. बाबासाहेबांनी वृत्तपत्राने महत्व जाणले आणि भारतामध्ये परत आल्यानंतर भारतामध्ये मूकनायक वृत्तपत्र स्थापन केले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी आपल्या सामाजिक कार्याचा प्रारंभ साऊथबरो कमिशनला साक्ष देऊन १९१९ ला केला. साऊथबरो कमिशनमध्ये अस्पृश्यांनी कैफियत मांडण्याचे कार्य डॉ. बाबासाहेबांनी प्रामाणिकपणे केले. मात्र या बातमीचा गवगवा, चर्चा झालेली दिसून येत नव्हती. तत्कालीन काळामध्ये आजच्या सारखे तंत्रज्ञान विकसित नसल्याने माहितीच्या आदान प्रदानासाठी वृत्तपत्र हे एकच प्रभावी माध्यम होते. परंतु डॉ. बाबासाहेबांनी दिलेल्या साऊथबरो कमिशनमध्ये दिलेली साक्ष बऱ्याचश्या वृत्तपत्रांमध्ये प्रकाशित झालेली नव्हती. म्हणून डॉ. बाबासाहेबांनी पत्रकारिता ही एक वैचारिक चळवळ, आंदोलन होते. माणगाव परिषदेपासून डॉ. बाबासाहेबांच्या सामाजिक जीवनाला सुरुवात झाली. परंतु मूकनायक वृत्तपत्र मात्र हे या वैचारिक चळवळीचा आरंभ बिंदू ठरले. डॉ. बाबासाहेबांची पत्रकारीता मूकनायकपासून सुरु झाली ते प्रबुद्ध भारतापर्यंत राहिली. मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता, प्रबुद्ध भारत या सर्व वृत्तपत्रातून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे ध्येयनिष्ठ पत्रकार बनून समोर आलेत.

डॉ. बाबासाहेबांच्या पत्रकारितेचे एक विशिष्ट आणि निश्चित असे ध्येय होते. त्यांच्या समोर असलेल्या ध्येयाला अनुसरून त्यांची पत्रकारिता होती. मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता, प्रबुध्द भारत ही बाबासाहेबांनी आपल्या वृत्तपत्राची ठेवलेली नावे सुद्धा मोठी मार्मिक आहे. या वृत्तपत्रातील नावातूनच त्यांनी कोणता ध्यास घेतला होता हे निश्चित होते. स्वजनदाराचे महत्त कार्य करण्याचे मोठे ध्येय त्यांच्यासमोर होते. एक पत्रकार म्हणून अस्पृश्य समाजाचा उद्धार करण्यासाठी त्यांनी प्रामाणिकपणे प्रयत्न केला. डॉ. बाबासाहेब पत्रकार म्हणून कणखर होतेच तसेच संवेदनशील देखील होते, निर्भीड आणि निर्भय सुद्धा होते. म्हणूनच प्रस्थापित चातुर्वर्ण पद्धतीची कुठलीही तमा न बाळगता, भिड मूरवित न ठेवता त्यांनी पत्रकारिता केली. डॉ. बाबासाहेब मूकनायकातून सुरुवातीला आपले मनोगत व्यक्त करतांनाच त्यांनी चातुर्वर्ण समाजावर प्रहार केले आहेत. माणगाव परिषद आणि परिषदेनंतर आरक्षणाचे जनक, बहुजनांचा राजा राजर्षी शाहू महाराजांच्या आर्थिक मदतीने मूकनायक या वृत्तपत्राचा प्रारंभ ३१ जानेवारी १९२० ला डॉ. बाबासाहेबांनी केला. या वृत्तपत्रांमध्ये तत्कालीन काळात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा संताच्या संदर्भामध्ये त्यांनी जे संतांचे कार्य अभ्यासले होते. त्यामध्ये तत्कालीन काळातील संत शिरोमणी संत तुकाराम महाराज होते आणि म्हणूनच डॉ. बाबासाहेबांनी मुकनायक वृत्तपत्रातील पहिल्याच पृष्ठावर संत तुकारामाच्या ओळी दिलेल्या आहेत. तत्कालीन चातुर्वर्ण पद्धतीला तळा देण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य संत तुकाराम यांनी केलेले आहेत. येथील ब्राह्मणी व्यवस्थेला तडा देण्याचे काम संत तुकारामांनी केले. वेदातील सदोष ज्ञान समाजासमोर मांडण्याचे कार्य संत तुकाराम महाराजांनी केले आणि त्यामुळेच संत तुकारामाचा मृत्यू कशा प्रकारे झाला हे सर्वश्रुत आहे.

संत तुकारामाच्या मुकनायकातील त्या ओळी पुढील प्रमाणे आहेत.

"काय करू आता धरूनिया भीड । निशंक तोंड वाचविले॥ नव्हे जगी कोणी मुकियाचा जाण । सार्थक लाजून नव्हे इथे ॥"

या ओळीवरून डॉ. बाबासाहेबांचा संत तुकारामा संदर्भातील असलेला अभ्यास आपल्याला दिसून येतो. डॉ. बाबासाहेब मूकनायक या वृत्तपत्राच्या संदर्भामध्ये असे लिहितात की, "आमच्या बहिष्कृत लोकांवर होत असलेल्या व पुढे होणाऱ्या अन्यायावर उपाय योजना सुचविण्यास व त्यांची भावी उन्नति करण्याचे मार्ग त्यांच्या खऱ्या स्वरूपाच्या चर्चा होण्यास वर्तमानपत्रा सारखी अन्य भूमीच नाही." अशा प्रकारचे वर्तमानपत्राचे महत्त्व मूकनायकामधून ते विशद करतात.

मुंबई इलाख्यात निघत असलेल्या वृत्तपत्राकडे न्यायाकडून बघितल्यास असे दिसून येते की, "त्यातील बरीचशी वृत्तपत्रे ही विशिष्ट जातीची आहे आणि ती आपल्या जातीचे हितसंबंध जोपासणारे दिसतात. ते इतर बहिष्कृत जातीची कोनतीही पर्वा करीत नाहीत त्यांचे हित जोपासतांना दिसत नाही. त्यामध्ये दीनमित्र, जागृत , मराठा, ज्ञानप्रकाश, विजयी मराठा, सुबोध पत्रिका या सर्व वृत्तपत्रांचा ते समाचार घेतात आणि त्यामध्ये ते म्हणतात की, "बहिष्कृत समाजाच्या प्रश्नाची चर्चा वारंवार होते. परंतु ब्राह्मणेतर या संज्ञेखाली मोडत असलेल्या अनेक जातीच्या प्रश्नाचा खल होतो. परंतु बहिष्कृतांना न्याय दिला जात नाही. त्याकरिता स्वतंत्र वृत्तपत्राची गरज आहे." अशा पद्धतीचे महत्त्व डॉ. बाबासाहेबांनी मूकनायकाच्या पहिल्याच अंकात पटवून दिलेले आहे.

मुकनायकातील डॉ. बाबासाहेबांचे अग्रलेख जर पाहिले तर ते अतिशय निर्भिड स्वरूपाचे आहे. तत्कालीन व्यवस्थेवर कठोर प्रहार करणारे आहेत. तत्कालीन जाती व्यवस्थेवर, समाज व्यवस्थेवर तसेच त्यांनी ब्रिटिशांच्या चुकीच्या धोरणावर सुद्धा प्रहार केलेले आहे. त्यांचे मुकनायकातील लिखाण वाचल्यानंतर त्यांच्या लेखनातील निर्भीडपणा, वस्तुनिष्ठपणा, मूल्यधिष्ठिता आपल्याला दिसून येते. म्हणूनच ते असे म्हणतात की, 'स्वराज्याचे सर सूराज्याला नाही' म्हणजेच भारतीय जे स्वत:चे राज्य निर्माण करेल व शासन अमलात आणेल त्याची कणव त्याचे ब्रिटिश सत्तेला म्हणजेच सुराज्याला नाही. 'हे स्वराज्य नव्हे...' हा त्यांचा अग्रलेख अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत. 'हे तर आमच्यावर राज्य...' या संदर्भामध्ये ते आपल्या अग्रलेखात संपूर्ण चातुर्वर्ण व्यवस्थेवर प्रहार करतात. मानवनिर्मित ही चातुर्वर्ण व्यवस्था इथल्या ब्राह्मणी लोकांनी कशी निर्माण केली. या संदर्भातील अतिशय सुंदर विवेचन त्यांनी या लेखांमध्ये केलेले आहेत. 'स्वराज्यातील आमचे आरोहन...' हा सुद्धा अग्रलेख महत्त्वपूर्ण आहे. 'राष्ट्रातील पक्ष...' या लेखामध्ये तर ते भारतामध्ये जे पक्ष आहे हे विशिष्ट लोकांचा, विशिष्ट समाजाचा स्वार्थ घेऊन त्यांच्याच बाबींचा पाठपुरावा करण्याचे कार्य करतात आणि त्यांच्या हितार्थ कार्य करतात. इतकी निर्भीड मांडणी त्यांनी तत्कालीन काळात केलेली आहे. जी आज पत्रकार बंधु करताना दिसत नाहीत. अपवादात्मक स्थितीमध्ये काही पत्रकार करतात. परंतु त्यांचे प्रमाण खूप कमी आहे. त्यांच्यातील तफावत मोठ्या प्रमाणात दिसून येते. या लेखांची मौलिकता लक्षात घेतली तर डॉ. बाबासाहेबांची मूकनायकातून प्रकट झालेली पत्रकारिता दिसून येते. डॉ. बाबासाहेब विदेशातून शिक्षण घेऊन १९२३ ला भारतामध्ये परत आले आणि त्यांनी मूकनायक या वृत्तपत्राची झालेली वाताहत पाहिली, आर्थिक अडचणीमुळे बंद पडलेले वृत्तपत्र पाहिले आणि नंतर त्यांनी १९२४ ला 'बहिष्कृत हितकारणी' सभेची स्थापना केली. ही त्यांची पहिली सामाजिक संघटना. या संघटनेमार्फत त्यांनी महाडच्या चवदार तळ्याचा सत्याग्रह केला. परंतु तत्कालीन वृत्तपत्रांनी त्याला पाहिजे तशी प्रसिद्धी दिली नाही. म्हणून बाबासाहेबांना हे लक्षात आले की आपले वृत्तपत्र असल्याशिवाय आपली चळवळ व्यापक होणार नाही. त्यामुळे त्यांनी ३ एप्रिल १९२७ 'बहिष्कृत भारत' या वृत्तपत्राची स्थापना केली. आणि पुनश्च: हरिओम... या अग्रलेखात आपले विचार व्यक्त करून पहिल्या अंकाची सुरुवात केली. मूकनायक या वृत्तपत्रात संत तुकारामांच्या चार ओळी वृत्तपत्राचे अग्रभागी दिलेल्या होत्या तर बहिष्कृत भारत या वृत्तपत्रामध्ये ज्ञानेश्वरांच्या चार ओळी दिलेलया आहेत. बाबासाहेबांवर संत कबीरांचा प्रभाव होता. संत ज्ञानेश्वरांनी चातुर्वर्ण पद्धतीवर टीका केली होती. त्याच्या दृष्टीने संत ज्ञानेश्वर हे बंडखोर संत होते, या समाजाला न्याय देणारे, बहुजनांचे कैवारी, त्यांना सोबत घेऊन चालणारे संत होते. म्हणून संत ज्ञानेश्वरांचे महत्त्व बाबासाहेबांना पटले होते.

"आता कोदंड घेऊनी हाती । आरुढ पांडुरंग येथे रथी ॥
देई आलींगण वीरवृत्ती समाधानी । जगी किर्ती स्त्रवो स्वधर्माचा मानु वाढवी ॥

या भारापासून सोडवी मेदिनी । आता पाहता नीसुंखी होईल ॥
या संग्रामाचे चित्त देई । येथे हे वाचून काही बोलं नाही ॥"

संत ज्ञानेश्वरांच्या हया ओळी दि. ३ एप्रिल १९२७ बहिष्कृत भारत वृत्तपत्रातील पहिल्या अंकाच्या अग्रणी नमूद केलेल्या दिसून येतात. या वृत्तपत्रातील अग्रलेख पाहिल्यास येथील महाड येथील धर्मसंगर... वरिष्ठ हिंदूंची जबाबदारी... इंग्रज सरकारची जबाबदारी... आणि अस्पृश्यांची कर्तव्य... हे सर्व अग्रलेख अभ्यासल्यास त्यांनी ब्रिटिश सत्तेवर केलेला कठोर प्रहार आपल्याला दिसून येतो. डॉ. बाबासाहेबांनी आपले विचार स्वतंत्रपणे मांडण्याचे कार्य वृत्तपत्रांमधून केले. अस्पृश्यता निवारणाचा पोरखळ... हा अग्रलेख त्यांचा अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत.

डॉ. बाबासाहेबांनी समता हे वृत्तपत्र शुक्रवार दि. २९ जून १९२७ ला सुरू केले. ते १५ मार्च १९२९ पर्यंत सुरू राहिले. ४ सप्टेंबर १९२७ ला समाज समता संघाची स्थापना केली. या संघाला उद्देशून समता हे वृत्तपत्र सुरु केले. या वृत्तपत्राचे संपादक देवराव नाईक हे जातीने ब्राह्मण होते. परंतु ब्राह्मणी वृत्तीचे नव्हते. या वृत्तपत्राने देखील बाबासाहेबांच्या चळवळीला गती व दिशा देण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. यानंतर डॉ. बाबासाहेबांनी जे वृत्तपत्र सुरू केले ते म्हणजे जनता. हे वृत्तपत्र पंचवीस वर्ष सुरू राहिले. हे वृत्तपत्र २४ नोव्हेंबर १९३० का सुरू केले ते २८ जानेवारी १९५६ पर्यंत चालू राहिले. आंबेडकरी विचारांची धारणा घेऊन काम करणाऱ्या तमाम लोकांची कोणती धरोवर असेल तर ती जनता हे वृत्तपत्र आहे. कारण यामध्ये डॉ. बाबासाहेबांचा पंचवीस वर्षांच्या काळातील संपूर्ण प्रवास नमुद आहे. या मधील त्यांचे अग्रलेख, स्फुटलेख, स्तंभलेख हे अतिशय वाचनीय व समाजाला दिशा देणारे आहेत. वृत्तपत्र हे संपादकाच्या आधारावर मोठे होत असते. म्हणून देवराव नाईक, गंगाधर निळकंठ सहस्वबुद्धे, कमलाकांत चित्रे, भास्कर रघुनाथ कद्रेकर, काशिनाथ मेश्राम, सावधकर ही सारी मंडळी जनता या वृत्तपत्राचे संपादक राहिलेली आहेत. त्यांच्या नावावरूनच त्यांच्या कार्याचे स्वरूप लक्षात येते. जनता या वृत्तपत्राचे नाव बदलून बाबासाहेबांनी ४ फेब्रुवारी १९५६ ला "प्रबुद्ध भारत" हे नाव ठेवले. हे वृत्तपत्र १ डिसेंबर १९५६ पर्यंत चालले. डॉ. बाबासाहेबांना तथागत बुद्धांचे विचार समाजामध्ये रुजवयाचे होते, हिंसा घालून अहिंसा प्रस्थापित करायची होती. तिथला हिंसाचार, इथला वाद, माणसाला माणूस म्हणून जगण्याचा, मानण्याचा ज्या धर्मामध्ये माणसाला माणूस संबोधले जाते असा धर्म सर्व लोकांना द्यायचा होता. यासाठी त्यांनी प्रबुद्ध भारत हे वृत्तपत्र सुरू केले. या वृत्तपत्राचे संपादक दादासाहेब गायकवाड, भैय्यासाहेब आंबेडकर, दादासाहेब रूपवते, घनशाम तळवलकर, शंकरराव खरात, ज. वि. पवार ही सर्व मंडळी तत्कालीन काळात या वृत्तपत्राचे संपादक होते. डॉ. बाबासाहेबांच्या या सर्व गोष्टीचा विचार केला. तर त्यांची पत्रकारिता ही खऱ्या अर्थाने आजच्या काळात सर्व पत्रकारांना आणि संपादकांना दिशा देणारी आहे. त्यांची निर्भीड पत्रकारिता ज्या पत्रकारितेतून खऱ्या अर्थाने समाज घडविला, खऱ्या अर्थाने देशाची बांधणी केली, एवढेच नव्हे तर भारताच्या बांधणीमध्ये ज्यांचे महत्त्वाचे योगदान राहीले, ज्या वृत्तपत्रांमुळे त्यांना आपली चळवळ गतिमान करता आली, लोकांपर्यंत पोचवता आली ती वृत्तपत्रामुळेच. त्यामुळेच भारतातील तमाम मंडळी बाबासाहेबांच्या पाठीशी उभी राहिली. आजही डॉ बाबासाहेबांचे चारही वृत्तपत्रे, त्यांचे अग्रलेख, स्तंभलेख हे सर्व समाजाला दिशा देणारे आणि उपयुक्त आहेत. डॉ. बाबासाहेबांनी आपल्या १९२० ते १९५६ या ३६ वर्षाच्या पत्रकारितेमध्ये त्यांनी कधीही नायक पूजेला थारा दिलेला दिसून येत नाही. म्हणून बाबासाहेबांची पत्रकारिता ही आदर्श होती. भारतामध्ये अशा पत्रकाराची गरज आहे. भारतामध्ये खऱ्या अर्थाने लोकशाही नांदवायची असेल तर या ठिकाणी निर्भीड आणि निर्भय पत्रकाराची समाजाला गरज आहे. त्यामुळे सध्यास्थितीमध्ये जी पत्रकारिता सुरू आहे त्यामध्ये परिवर्तन होणे गरजेचे आहेत. काही अपवादात्मक परिस्थितीत पत्रकार वगळल्यास इतर पत्रकारांनी

आपली नीतिमूल्ये जपून वस्तुनिष्ठ पत्रकारिता स्वीकारणे गरजेचे आहे. त्यासाठी डॉ. बाबासाहेबांच्या पत्रकारितेचा स्वीकार करणे ही काळाची गरज आहे.

संदर्भ ग्रंथ –

१.गायकवाड, शा. का. – "महामानव डॉ. बाबासाहेब रामजी आंबेडकर", राजवंश पब्लिकेशन, नवी मुंबई. २००७.

२.घोरमोडे के. यु., – "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची साफल्यता व कृतिप्रवणता", विद्या प्रकाशन, नागपूर. ऑक्टोबर २०१५.

३.नगराळे, शंकरराव – "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विश्वरत्न कसे?", सुधीर प्रकाशन, वर्धा. ६ मे २०१२.

४.नाईक, देवराव, विष्णू (संपादक) – "जनहित प्रवर्तक पाक्षिक पत्र जनता", मुंबई – २४ नोव्हेंबर १९३०.

५.निगम, प्रा. गौतम – "बहुजन उद्धारक", कौशल्य प्रकाशन, औरंगाबाद. २० मार्च २००७.

६.पानतावणे, गंगाधर – "पत्रकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर", प्रतिमा प्रकाशन, पुणे. द्वितीय आवृत्ती १९९६.

७.भटकर, पांडुरंग नंदराम (संपादक) – "मूकनायक", पाक्षिक, ३१ जानेवारी १९२०.

८.मून वसंत ; नरके हरी (संपा.) – "डॉ. बाबासाहेब आबेडकर लेखन आणि भाषणे" खंड १८ भाग–१, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र प्रकाशन समिती, उच्च आणि तंत्रशिक्षण विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई २००२.

९.रघुवंशी, रमेश – "डॉ. आंबेडकरांची भाषणे", सुगावा प्रकाशन, पुणे १९८०.

१०.हिवराळे, सुखराम – "लोकपत्रकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर", प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर. १९८५.

११.शर्मा, वीरेंद्र – "भारतीय सामाजिक व्यवस्था", पंचशील प्रकाशन, जयपुर २००१.



आमचे प्रेरणास्थान व प्रमुख आधारस्तंभ

मा. श्री. मनोहर हरी खापणे (प्रसिद्ध उद्योगपती)

अध्यक्ष, सह्याद्रि परिसर शिक्षण प्रसारक मंडळ, पाचल

श्री. मनोहर हरी खापणे कला व वाणिज्य महाविद्यालय, पाचल-रायपाटण

मु. पो. रायपाटण, ता. राजापूर, जि. रत्नागिरी

वेबसाईट - www.khapnecollege.com, ई-मेल - mhkcollegepachal@gmail.com

We the Research Organization will do provide help for the following works listed below.

Support for Arts, Commerce & Science all Disciplines

- Research Paper Publication
- Book Chapters for Publications
- ISBN Publications Supports
- M.Phil Dissertations Publish
- Ph.D Thesis in Book Format
- ISSN Journals with Impact Factor (7.675)
- Online Book Publication
- Seminar Special Issues
- Conference Proceedings

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Mobile : 9595560278 /

Aadhar Publications

New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604

Mob- 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com

For Details www.aadharsocial.com

issn

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

ISSUE No- (CCCXVI) 317

September -2021

National E-Conference on

Socio-Religious and Political Movements in the Pre-independence Period and Today



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social Research & Development Training Institute Amravati

Executive-Editor
Dr. Nilima D. Deshmukh
Principal
Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist. Buldana

Executive-Editor
Dr. J. B. Devhade
Principal
Late Pushpadevi Patil Art's and Science College, Risod, Dist.Washim

Editors
Dr.Shrihari pitale
Assist.prof.& HOD Department of History
Late Pushpadevi Patil Art's and Science College Risod Dist.Washim

This Journal is indexed in :
- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyala
Badnera

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Women Pioneers Of India: Their Contribution Towardswomen Education In Social Reform Movement,19th& 20thcenturies Ce — Dr. Indira P	1
2	बुलडाणा जिल्हयातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील : एक आढावा — डॉ. संतोष बनसोड	5
3	सत्यशोधक संपतराव भिवाजी शिंगणे — डॉ.किशोर मारोती वानखडे	8
4	महाराष्ट्रातील आर्थिक व सामाजिक स्थिती सुधारण्यासाठी कामगारांचे योगदान — प्रा.सुनिल मदन मनवर	18
5	राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे सामाजिक कार्य — प्रा. डॉ. एस.एन. तुरुकमाने	23
6	कर्मवीर अण्णांच्या वैचारिक वारसदार : प्राचार्या सुमतीबाई पाटील — डॉ.जाधव संतोष हनुमंत	25
7	स्वातंत्र्य संग्रामातील मातृभूमि वृत्तपत्राचे योगदान(सन १९३१ ते १९४७) — प्रा.डॉ.संतोष गोपाळकृष्ण कुळकर्णी	31
8	मातृभूमिच्या संपादिक प्रमिलाताई ओक यांच्या नेतृत्वातील चले जाव आंदोलन — प्रा.डॉ.भास्कर शा.वझिरे	34
9	सावित्रीबाई फुले यांचे शिक्षण विषयक कार्य: ऐतिहासिक चिंतन — प्रा.डॉ. संदिप व्ही. भुरले	37
10	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील धार्मिक, सामाजिक व राजकिय चळवळी व सद्याची परिस्थिती — प्रा. दिवाकर कांबळे	41
11	भारतीय स्वर्तंत्र्य लढयात स्त्रियाचे योगदान — डॉ.राजाराम पिंपळपल्ले	49
12	विधवांच्या उध्दारांसाठी ब्रिटीश काळातील चळवळी — डॉ.विजय रामदास तिरपुडे	55
13	महीला क्रांतीकारी कनकलता बरूआ यांचे भारतीय स्वातंत्र चळवळीतील योगदान — विनोद उखर्डा धर्माळ	59
14	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील सामाजिक चळवळी आणि आज (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या सामाजिक चळवळी) — प्रा. डॉ. आनंद के. भोयर	62
15	प्रांतिक कौन्सिलच्या खामगाव जळगाव खेडेविभाग मतदारसंघाची १९३७ची निवडणूक – एक विश्लेषण — डॉ श्याम प्रकाश देवकर	67
16	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील महिलांचे योगदान — प्रा. रेखा बडोदेकर	71
17	पुनर्विवाह चळवळीचा इतिहास — प्रा.डॉ. भाऊराव रामेश्वर तनपुरे	76
18	स्वातंत्रपूर्व लढयातील बाबूगेनू सैद याची कामगिरी — स्मिता समिर अंध्याल	80
19	स्त्री जातीचे उध्दारक : महर्शी कर्वे — डॉ.आर.यु.हिरे	83

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, (CCCXVII) 317
ISSN : 2278-9308
September, 2021

बुलडाणा जिल्हयातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील : एक आढावा

डॉ. संतोष बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय,बडनेरा जि. अमरावती.

प्रस्ताविक

महात्मा ज्योतीराव फुले यांनी चातुर्वर्ण्य व्यवस्थेविरोधात महाराष्ट्रात सर्वप्रथम आवाज उठवतांना सांधीकरित्या चळवळ सुरू केली. या चळवळीतूनच मानवाला मानवतेची शिकवण देणाऱ्या सत्यशोधक समाजाची स्थापना पुण्यामध्ये दि.२४ सप्टेंबर १८७३ मध्ये झाली. संपूर्ण महाराष्ट्रात अल्पावधीतच या चळवळीचा प्रसार झाला. सत्यशोधक तत्वज्ञान जनसामान्यां पर्यंत पोहोचविण्यासाठी लोकभाषेचा प्रसार केला. एकोणविसाव्या शतकात दंडार, गवळण यांसारख्या समाजप्रबोधन करणाऱ्या कला पथकांचा आधार घेतांना महात्मा फुले यांच्या कालावधीतच सत्यशोधक जलसे सत्यशोधक समाजाचा गावोगाव प्रसार करू लागले. त्यामुळे अल्पावधितच संपूर्ण महाराष्ट्रात सत्यशोधक चळवळीचा प्रचार व प्रसार झाला. या जलस्यांमध्ये भीमराव महामुनी यांनी केलेले कार्य अत्यंत महत्वाचे आहे त्यांच्या कार्यांची प्रेरणा घेऊन संपूर्ण महाराष्ट्रात असंख्य जलसाकार सत्यशोधक समाजाचा प्रचार प्रसार करू लागले. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये बुलडाणा जिल्हयातील शावजी पाटील या जलसाकाराचे कार्यावर प्रकाश टाकला आहे.

शोधनिबंधाचा उददेश :–

१)बुलडाणा जिल्हयातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील यांचे कार्याचा अभ्यास करणे.

२)या जलसाकाराने केलेल्या कार्याचा आढावा घेणे.

संशोधन पध्दती :–

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये ऐतिहासिक संशोधन पध्दतीचा आधार घेतला आहे.

शावजी रावजी पाटील – बिरशिंगपूर, जि. बुलढाणा –

इ.स. १९२३ मध्ये बिरशिंगपूर, जि. बुलढाणा येथे शावजी रावजी पाटील यांनी सत्यशोधक जलसा उभारला होता. हा जलसा बुलढाणा जिल्हयात विविध ठिकाणी सत्यशोधक समाजतत्वज्ञानाचे प्रयोग सादर करित असे. चौथा, तांदुळवाडी, दुधा, महिमळ या बुलढाणा जिल्हयातील खेडयांमध्ये या जलशाचे प्रयोग झालेले आढळतात. तसेच चिखली तालुक्यात देखील या जलशाने मोठया प्रमाणावर समाजजागृती केली होती. जिल्हयातील विविध गावांसह बिरसिंगपूर या स्वग्रामामध्ये देखील जागृतीचे जोरदार काम पाटील यांच्या जलशाने पार पाडले होते.

ऑक्टोबर १९२३ मध्ये वऱ्हाड प्रांतातील दौऱ्यामध्ये या जलशाने चिखली तालुक्यातील पांगरखेड, बुलठाणा, सावरगाव, मालगणी, आंभोडा, हातेडी खुर्द, सागवण, कौलघड, शिरपूर, माळवंडी, केसापूर, देऊळघाट, धाड, चिखली वगैरे गावी मोठया प्रमाणावर समाज जागृतीचे कार्य केले होते. त्यावेळी या प्रांतातील किनगावराजा, जांभोरा, राहेरी, अंबासी, कोलरा, एकलारा, खंडाळे, शेंदुर्जन इत्यादी गावी आनंदस्वामी व पंढरीनाथ पाटील यांच्या जाहीर व्याख्यानांच्या बरोबरीने प्रस्तुत जलशाचे प्रयोग झाले होते. चिखली हे पंढरीनाथ पाटील यांचे कर्मभूमी असल्याकारणाने त्या भागात मोठया प्रमाणावर समाजकार्य करण्यात या जलशाला त्यांचे सहकार्य आणि मोलाचे योगदान लाभलेले होते.

दि. २४ सप्टेंबर १९२३ रोजी बुलढाणा सत्यशोधक परिषद मोठ्या थाटाने पार पाडली होती. या परिषदेच्यावेळी रात्री शावजी पाटील यांच्या जलशाने प्रयोग सादर केले होते. जलशा दरम्यान पंढरीनाथ पाटील यांचे भाषण होऊन मातोळेकरांचा जलसाही सादर झाला होता. परिषदेचे स्वागताध्यक्ष आनंदस्वामी तर अध्यक्ष सीताराम नाना चौधरी हे होते. परिषदेस पाच हजार जनसमुदाय उपस्थित होता. तर जलशाच्या प्रयोगावेळी आठ हजार जनसमुदाय उपस्थित होता. अशा प्रकारे परिषदेचे औचित्य साधून या जलशाने आठ हजार लोकसमुदायास ज्ञानाचे अमृत पाजण्याचे बहुमोल कार्य केले होते. या परिषदेबरोबरच धाड(बुलडाणा) या परगण्यातील लोकांची परिषद भागोजी पाटील यांचे अध्यक्षतेखाली पार पडली होती. त्यावेळी बऱ्याच वक्त्यांची भाषणे झाली होती. यावेळीही या जलशाने तिथे प्रयोग सादर करून समाजकार्य पार पाडले होते. बुलढाणा जिल्ह्यातील ब्राम्हणेतरांच्या विविध परिषदा तसेच सत्यशोधक समाजाचे पुढारी आणि महत्वाचे प्रचारक यांच्याशी या जलशाचा घनिष्ठ असा संबंध येऊन गेलेला आढळतो. त्याच्या माध्यातून या जलशाने आपले सत्यशोधक प्रचार कार्य विविध भागात साध्य केले होते.

बुलढाणा जिल्हा परिसर आणि विशेषत: चिखली तालुक्यातील कार्य करणाऱ्या या जलशास चिखली गावातच सनातन्यांच्या विरोधास सामोरे जावे लागले होते. चिखली येथे ही मंडळी जलसा करण्याकरिता गेली असता तेथील पुरोहीत लोकांनी जलसा न होण्याविषयी अतोनात प्रयत्न केले होते. परंतु येथील सरकारी अधिकाऱ्यांच्या सहकार्यामुळे विरोध मोडीत निघून अधिक दोन दिवस जलशांचे सादरीकरण झाले होते. पुरोहितांच्या विरोधी प्रयत्नांचा परिणाम प्रस्तुत जलशांवर कधीच झाला नाही. तसेच जलशाचा हेतू निर्मळ आणि समाजविधायक असल्याचे कर्तव्यतत्पर अधिकाऱ्यांच्या लक्षात येऊन अधिकारी मंडळींनी जलशाची पाठराखण करण्याचे काम केले होते. परिणामी विरोधकांना निरूतर व्हावे लागत होते.

प्रस्तुत जलशाची परिणामकारकता जलशाच्या चिखली येथील कार्यावरून दिसून येते. जलशाच्या चिखली येथील प्रयोगाच्या निमित्ताने तेथील लोकांत मोठ्या प्रमाणावर जागृती होऊन पुरोहितशाहीबाबत तिरस्कार निर्माण झाला होता. त्याचप्रमाणे धाड येथील श्रीमंत शाहू सावरकार कधी तमाशा न पाहणारे असे गृहस्थ या जलशासमयी हजर होते. त्यांच्या मनावर जलशाचा असा परिणाम झाला होता की, भटजी कोणत्याही ठिकाणी त्यांना सापडो, त्या ठिकाणी त्यांची कानउघडणी करावायाची ते सोडीत नसत. तसेच त्या प्रसंगी भटजीकडून कोणत्याही प्रकारचा धर्मविधी करावयाचा नाही. अशा कित्येकांनी शपथा देखील घेतल्या होत्या. अशा प्रकारचे लोकांच्या आचार–विचारांमध्ये बदल घडविणारे आमूलाग्र परिवर्तन प्रस्तुत जलशाव्दारे साध्य झाले होते.

सारांश :–

शावजी रावजी पाटील यांनी महात्मा ज्योतिराव फुले यांना गुरूस्थानी मानून सत्यशोधक समाजाचा जलशाव्दारे प्रचार केला. आनंदस्वामी, पंढरीनाथ पाटील यांचे सोबत बहुजन हितास झटणाऱ्या चळवळीत उत्साहाने सहभागी झाले. इ.स. १९३० चे कालावधीत पंढरीनाथ पाटील, आनंदस्वामी, गणपतराव शिंगणे, संपतराव शिंगणे यांचा जलसा सार्वत्रिक सत्यशोधक समाजाचा प्रसार करित होता. त्यांचे कार्याची प्रेरणा घेऊन शावजी रावजी पाटील यांनी स्वत:चा जलसा स्थापना करून संपूर्ण बुलडाणा जिल्हयात वगाच्या माध्यमातून जनचळवळीचा प्रचार केला. पर्यायाने सत्यशोधक चळवळ तळागाळापर्यंत पोहोचण्यास मदत झाली.

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -7.675 Issue NO, (CCCXVII) 317

ISSN : 2278-9308 September, 2021

संदर्भ साधने :—

१) दैनिक, विजयी मराठा, दि.५ नोव्हेंबर १९२३.

२) दैनिक, दिनमित्र, दि. २९ ऑगस्ट १९२३.

३) भिंगारदिवे डॉ. गजानन, सत्यशोधक जलसे, परंपरा स्वरूप आणि वाटचाल, शब्दशिवार प्रकाशन, सोलापूर, इ.स.२०२१.

४) बनसोड डॉ. संतोष, पश्चिम विदर्भातील सामाजिक चळवळीचे शिलेदार भाग एक, आधार प्रकाशन, अमरावती.

५) चंदनशीव भस्करराव, सत्यशोधकी आणि आंबेडकरी जलसे प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर इ.स. १९९०.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera



Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist Buldana ,

, Pushpadevi Patil Arts and Science college,Risod and Ambedkarite History Congress.

jointly organised One Day Multi-Disciplinary National Level E-Conference

Socio-Religious and Political Movements in thePre-Independence Period & Today

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Prof./Mr./Mrs.....डॉ. संतोष बनसोड.....

of.....इतिहास विभाग प्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय,बडनेरा जि. अमरावती.....

participated in One Day Multi-Disciplinary National Level E-Conference on topic 'Socio-Religious and Political Movements in thePre-Independence Period & Today' organized on 21th November 2021 by Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist Buldana,Pushpadevi Patil Arts and Science college,Risod and Ambedkarite History Congress. & B.Aadhar Multi-Disciplinary Peer Reviewed & Index Research Journal, Amravati with Impact Factor 7.675 (SJIF) & ISSN: 2278-9308. He/She presented his/her Research Paper entitled.....बुलडाणा जिल्ह्यातील सत्यशोधक जलसाकार.....

in the Paper Reading Session. This certificate is issued in recognition of publication of the research paper.

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande

Principal
Dr.Nilima D Deshmukh

Principal
Dr. J .B Devhade

Editor
Dr.Pramod R.Chavan

Editor
Dr.Shrihari R.

Bodhi-Path Year 2021 July Issue Volume 21 Page No 40-45

New Chapter of Buddhism in Berar

Dr. Santosh Bansod

'Suman Nivas' , Near LIC Colony,

Ram Nagar, Amravati.

Pin – 444606 MO - 8275418986

email – bansodsantosh73@gmail.com

Buddhism is the real physical path to make our life more prosperous and meaningful. It is the real religion which developed human mind towards physical reality. It encourages human to take any decision with your own mind. One should take in his mind that only physical world is global truth and the problems which human being faces in his daily life is arises from the physical causes so the remedy of that problems must be of physical background. India is always the destination to those who have to learn philosophy of spirituality, Lord Buddha is the lighthouse to them all truthseekers. Lord Buddha's philosophy is balance between spiritual and physical life. All other religious paths are one sided developed towards spiritual life only. But Buddha's path is the answer to all problems of physical and spiritual life. That's why the foreign travelers were attracted towards India ; that attraction is only for Lord Buddha. He was the most inchanting personality; having the solution of all problems of human being. So the attraction towards Buddhism and its literature fetches out the scholors to India.

Berar Region – Berar is Western part of Vidarbha region. The eastern part of Vidarbha called as ***'Zadi'*** and The Western part of Vidarbha called as ***Berar***. The Wardha river divided Vidarbha in above mentioned two parts. The name of Berar developed from the name of ***'Varhad'***. The name of ***'Varhad'*** also developed from the name of 'The Wardha' river. The name developed as ***'Vardatat –Vardatah –***

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyal

Vaarad – Varhad - Barar to Berar'. [1]Todays Berar is made of Amravati revenue division. There are five district in that division and they are Amravati, Akola, Yeotmal, Washim and Buldana.

Buddhism and Berar – About Maharashtra ***'Waghali'*** inscription of Jalgaon District suggest us that the Mauryan empire must spread in Maharashtra. The ***'Supparak'*** (Shurparak or Sopara) was the most important trade city of Buddha era. The '***Thergatha***' Mentioned one trademan named ***'Punna'*** or ***'Purna'*** of Thane. He accepted Buddhism from Lord Buddha at ***'Shravasti'***. He built sandle wooden ***'Vihar'*** at ***'Sopara'***.[2] Lord Buddha was invited by this ***'Purna'*** and Lord Buddha visited the Sopara. This incident mentioned in ***'Papanchsuyani'*** and ***'Sarathyappakarini'*** books. The oldest inscription of Vidarbha from was belong to Ashokan period. This inscription found in Deotek village Districts Chandrapur. This inscription engraved by Mahamatya of Ashoka. They have been engraved religious message of Ashoka. There are many no. of inscriptions was found from Adam and Paoni. Mahakshtrapa Rupiamma Pillar Inscription reported from Paoni. These inscriptions related Sunga-Satvahana period. Chandala, Patur, Mohadi in this rock-cut cave also having inscription. Nashik cave inscriptions also related to Buddhism of Vidarbha. Copper plate inscription related to Vakataka period and later Vakatak period. From this copper plate inscription we got information which is useful for study of Vidarbha Buddhism.[3]This revels that the Buddhism was well settle in Maharashtra from the age of Lord Buddha. Vidarbha also have great heritage of Buddhism. Pavani the famous archilogical site revels that the Buddhism was settle down in Vidarbha far ago of 3rd century BC. Berar also have great heritage of Buddhism. There are many famous archilogical sites which reveals that the Buddhism have great heritage in this region. Some points from which we can

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

verify the facts of Buddhism and we can reinvent the new facts about Buddhism in Berar.

1. **Bhon** – This archiological site is in Sangrampur tahasil district Buldana. There found the 3rd Century BC stupa of Mauryan era. This site is most important through the eyes of Buddhism and Indian heritage. This site show that the Buddhism was settled down in this region far ago of 3rd Century BC. Most amazing fact is that the ***Stupa*** was built with stone and bricks. Bhon must be that spot where famous Chinese traveler Hue – en – tsang have visited. He written about that capital and region named Mo – Ho- La- Cha. So the ***Bhon*** must be game changer archeological site of Berar about the view towards Buddhism.[4]
2. **Coins and Trade route** – There found Roman coins at many archioligical sites of Berar. This archiological proof reveals the traderout towards Pavani via Bhon –Kholapur - Kaundinyapur. These coins found at Kholapur, Tadli, Adam, and Sapegaon. Satvahana coins also found at Bhon and many other sites of Berar.[5] One seal found from Mahurzari excavation and this is related to Buddhism. We can conclude that the trade route of Buddhist trade cities must gone through Berar and that trade route connect the Buddhist archeological sites of that time. The trade route may be Bharuch to Bhon via river route and then Bhon – Kholapur – Kaundinyapur – Pavani. The other trade route must be Bhon – Pimpalgaon Raja- Chandol – Bhokardan- Paithan third one route Bhon – Pimpalgaon Raja – Jaipur – Ajanta.
3. **Caves** – Manjari (Amaravati district), Patur(Akola Disrict), Pipalgaon Raja, Savali (Buldhana district), Kalanb, Nibdyarvha (Yeotmal District) etc. cave of Vidarbha region. We need to study all the sites very minutely. Patur caves are of Buddhist period, there found inscription in

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Dhamm Script over the cave. One other inscription found at the cave pillar and architraves.[6] This cave must be of 3rd century BC. The caves must be ruined by the time or must be demolished by any invader of opposite religious side. ***Salbardi*** Caves of Morshi tahasil in Amravati district is related to Buddhism. But today that cave converted into lord Shiva temple and the cut headed sculpture which worshiped as goddess is actually the idol of Lord Buddha.[7] The sangharama mentioned By Hue en Tsang[8] must be the ***Salbardi*** Cave Sangharam and not of Ajanta Caves. Cisterns from the Mailgad fort of Buldana district must be the Buddhist rock cut caves. Chandol tahasil Buldana District Buldana was the famous Buddhist study center of then time.

4. **Mahavans** – The famous Buddhist religious book ***Mahavans*** reveals the names of preachers which was sent after the 3rd ***'Buddha Sangiti'***.[9] In that book the name of Maharashtra and the preacher which was send to Maharashtra was mentioned in it.[9] The line

   महारठ्ठं महाधम्मरक्खितत्थेर नामकं ।

   suggests that ***'Mahadhammarakkhit'*** was send to ***'Maharattha'*** (Maharashtra) as preacher. This Mahadhammarakkhit spread Buddhism in this region.

5. **Inscriptions** – ***Sanchi*** and ***Bharhut*** Stupa of Madhyapradesh are famous Buddhist Stupas have inscriptions of that stupas. The inscription denotes the names of donationars of various places of Berar[10]. Thas places are Bhatkuli (Amravati – The name of Bhatkuli actually mentioned as Bhijakatak) and Bhogwardhan (Now in Jalna District but it was part of Berar for long time). This reveals that the follower of Buddhism was in major numbers in Berar and also those followers seems to be well established community. Because if any community donating

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

for building the stupas in another region that means that community must be well eastablished or they must be trademan and profit gainer of Budhhist trade routes.

6. **Nagarjuna -** Famous Buddhist philosopher Nagarjuna was friend of Satvahan king Yadnyashri Gautamiputra Satkarni (166 AD to 196 AD). Nagarjuna wrote famous letter cum book to named ***'Suhrullekha'*** to preach to the Yadnyashri Gautamiputra Satkarni. This Nagarjuna was from Vidarbha region. He was teacher at Nalanda Buddhist university.[11] He spread Buddhism in Krushna Besin and was living at ***'Srisailam'*** in todays Andhrapradesh. We can imagine that if a person from Vidarbha teaches at Nalanda and written more than 20 books on Buddhism, that Vidarbha was the thinktank of Buddhism then. His 20 books of Buddhism are found in Chinese language. He was the founder of the ***'Shunyatvavad'*** philosophy. He was also the founder of ***'Madhyamika'*** philosophy.
7. **Kaundinya and Purna –** Kaundinya and Purna was mames of Buddhist monks.[12] The name of them have regional reference from Berar. The origin of these name must be from the geographical name of the place and river from Berar.

Conclusion – *Berar was the most important center of Buddhist period. Buddhism established in Berar in the time of Lord Buddha. Now time have come to reinvent the history of Buddhist Berar with these new chapters and visions.*

References –

1. Jarrett H.S. (Translator), ***'Ain – E- Akbari of Abul Fazl- I – Allami' Vol II***, Second Edition,Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta,1949, Page no 237

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

2. Eugene Burnouf , ***'Introduction to the History of Indian Buddhism'***, Chicago University Press Chicago, Feb 2010, Page no 235 to 270.
3. Zopade Nishant Sunil, ***'Archeology of Buddhism in Vidarbha region'***, A thesis submitted to Vishva Bharti University, Shantiniketan, Bolpur, West Bengal, Page no 7.
4. Deokar Shyam Prakash, ***' Historical Visit of Hue en Tsang to Maharashtra'***, paper submitted to South Indian History Congress, Hydrabad, 2019.
5. Zopade Nishant Sunil, ***'Archeology of Buddhism in Vidarbha region'***, A thesis submitted to Vishva Bharti University, Shantiniketan, Bolpur, West Bengal, Page no 7.
6. Hiralal, ***'Discriptive lists of Inscriptions in the Central Province and Berar'*** The Government Printing Press, Nagpur, 1916, Page no 134 & 135.
7. S. V. Fitzgerald & A. E. Nelson, ***Amraoti District, Vol. A, Central Provinces District Gazetters,***Caxtpm Works, Free Road, Bombay, 1911, Page no. 425.
8. Samuel Beal, ***SI-YU-KI, Buddhist Record of The Western World. Vol. II,*** Trubner & Co Ludgate Hill, London, 1884, Page no 255
9. M. S. More, ***' Maharashtratil Buddha Dhammach Itihas (Marathi)'***, Kaushaly Prakashan, Aurangabad, 2nd Edition 2016, Page no 44.
10. Ebid, Page no 66.
11. Bapat P. V., ***' 2500 years of Buddhism'***, Indian Government, 1956, Page no 194.
12. Sonavane Shivaji, ***' Sopara – Bauddha Sanskrutiche Kendra (Marathi),'*** Sugava Prakashan Pune, First Edition, 2012, Page no 28.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

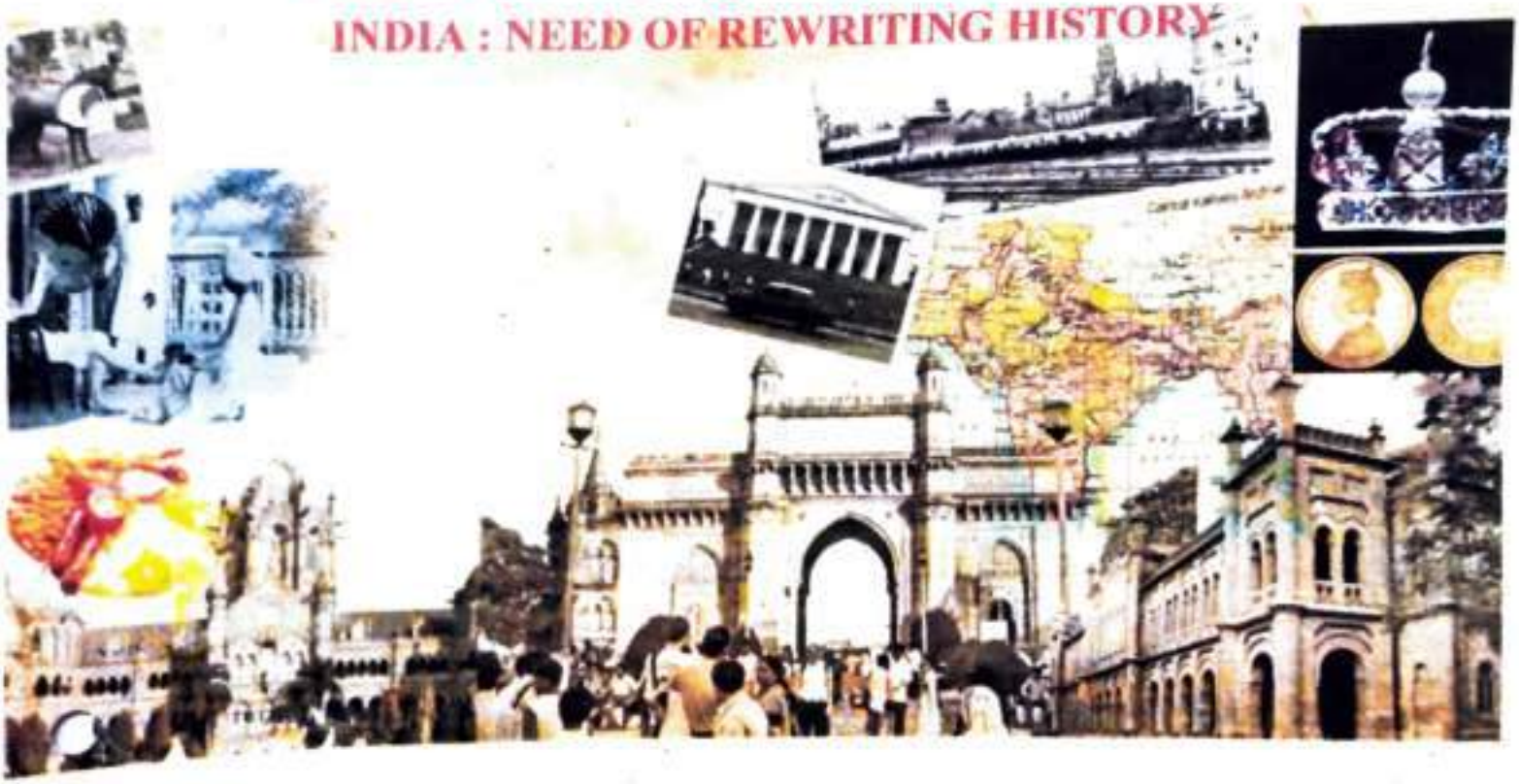
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Bansod,
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

Principal
Narayanrao Rana Mahavidya

'Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675, Issue NO. 321 (CCCXXI)
ISSN : 2278-9308
October, 2021

INDEX-321

Sr. No.	Articles	Page No.
1	ब्रिटिश आक्रमणाचे वऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम — प्रा.डॉ. संतोष बनसोड	1
2	ब्रिटिशराजवटीचे भारतावरील परिणाम — डॉ.उर्मिला क्षीरसागर	4
3	वॉरन हेस्टिंग्ज कालखंडात भारतात झालेल्या बदलाचा ऐतिहासिक आढावा (इ.स. १७७२ - १७८५) — डॉ. शरद गावंडे / पंढरीनाथ पोपट शेजूळ	8
4	वासुदेव बळवंत फडके यांची सशस्त्र चळवळ — डॉ श्रीहरी रंगनाथराव पितळे	11
5	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे सांस्कृतिक जीवनावरील परिणाम — प्रा. अंभोरे अशोक गंगाराम	13
6	भारतातील ब्रिटीश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम — प्रा.सुरेखा रामदास लगड	16
7	भारतावर ब्रिटिश आक्रमणाचे राजकीय जीवनावर झालेले परिणाम एक ऐतिहासिक चिंतनशील अध्ययन — प्रा.डॉ. एन. आर. वर्मा	18
8	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील क्रांतिकारी स्त्रियांचे योगदान — प्रा. डॉ. किशोर शेषराव चौरे	22
9	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे शैक्षणिक जीवनावर झालेले परिणाम — प्रा. डॉ. शरद गावंडे /प्रा. संजय सदाशिव बनकर	25
10	ब्रिटिश कालीन शिक्षण पद्धतीचे भारतीयांवरील परिणाम — डॉ. एस. यु. गावंडे / अमोल विश्वासराव तायडे	28
11	ब्रिटीश कालीन शिक्षणाचे भारतावर झालेले परिणाम — डॉ. प्रमोद ना. घ्यार	31
12	ब्रिटीश साम्राज्यवादाविरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनाची दीर्घकालीन रणनीती — सहा. प्रा. डी.एन. रिठे	37
13	गव्हर्नर जनरल लॉर्ड डलहौसीचे खालसा धोरण एक ऐतिहासिक चिकित्सा १८४८–१८५६ — श्रीकांत पांडुरंग तळेकर / डॉ.शरद गावंडे	40
14	बहिरम यात्रा – एक ऐतिहासिक मागोवा — कु. शिल्पा युगेंद्र अंबळकार	44
15	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव... — डॉ.सोमनाथ लक्ष्मण गुंजकर	47
16	'भारतावरील ब्रिटिश आक्रमण, सामाजिक जीवन व भाषांतर युग' — डॉ.संदीप अर्जुनराव बनसोडे	53
17	ब्रिटिश आक्रमणाने स्त्री जीवनातील सर्वांगावर झालेले परिणाम — प्रा. डॉ. कुसमेद्र गं. सोनटक्के	56
18	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे स्त्री जीवनावरील परिणाम — प्रा. कु. सुषमा जयकुमार फरसोले	58

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO. 321(CCCXXI) | October, 2021

ब्रिटिश आक्रमणाचे वऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम

प्रा.डॉ. संतोष बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख
नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जि.अमरावती ,मो.नं.8275418986

प्राचीन भारताचा शैक्षणिक इतिहास हा प्रलंभ आहे. मात्र या शिक्षण पध्दतीला सुरवात नेमकी कधी झाली हे सांगणे अत्यंत कठीण आहे. मात्र जेव्हा मानवाने एकत्र अर्थात समुहाने राहण्यास सुरवात केली तेव्हापासुन शिक्षणाला सुरवात झाली. भारताच्या इतिहासाचे कालखंड पाडले गेले आहेत. या कालखंडातील वैदिक कालखंडाचा विचार केला असता या काळातील वर्णव्यवस्थेमध्ये शिक्षणाची मक्तेदारी एका विशिष्ट वर्गाकडे होती. ब्राह्मण हा वर्णच फक्त शिक्षण घेवू शकत होता. इतर वर्ण हे अज्ञानाच्या गर्तेत पडलेले होते. इ. स. पुर्व 6 व्या शतकात मात्र गौतम बुध्दाने सामाजिक क्रांतीच घडवून आणली. येवूनच चातुवर्ण व्यवस्थेला तडा दिला. ब्राह्मणाची शिक्षणावरील मक्तेदारी संपुष्टात आणून सर्वांना शिक्षणाची व्दारे खुली करुन दिलीत. परिणामी सर्वच बौध्द विहार व मठामध्ये शिक्षण दिल्या जावु लागले. या विहार व मठात सर्व समुहातील लोक शिक्षण घेवू शकत होते. यामधील काही बौध्द विहार हे जागतीक दर्जाचे केंद्र ठरलेत. अनेक विहारांमध्ये विद्यापीठांची निर्मिती झाली. या मधील उज्जैयनी, तक्षशिला, नालंदा, सांची, वल्लभी, विक्रमशिला इत्यादी सारखे विद्यापीठ ही नावारुपास आलेत विद्यापीठांमध्ये आशिया खंडातील सर्वच घटकातील विद्यार्थी शिक्षण घेवू शकत होते. मौर्य काळानंतर मात्र शिक्षणावर परत हल्लाबोळ झाला. शुंग काळापासून ही शिक्षण व्यवस्था विशिष्ट समाजाची मक्तेदारी ठरली. वऱ्हाडची स्थिती यापेक्षा वेगळी नव्हती.

वऱ्हाड हा अमरावती, अकोला, यवतमाळ, बुलढाणा व वाशिम या पाच जिल्ह्यांपासुन बनलेला आहे. या वऱ्हाडचे क्षेत्रफळ सुमारे 46090 किमी आहे. या वऱ्हाडच्या पुर्वेस नागपूर विभाग पश्चिमेस नाशिक विभाग उत्तरेस मध्यप्रदेश तर दक्षिणेस औरंगाबाद विभाग वसलेला आहे. 20.56उ. 77.47 पु. 20.93 उ. 77.75 एवढ्या भूभागावर वसलेल्या वऱ्हाडाची 2011 च्या जनगणने नुसार 1,012,066,653 एवढी लोकसंख्या होती. या वऱ्हाडवर मौर्य, शुंग सातवाहन, वाकाटक, राष्ट्रकुट, चालुक्य या प्राचीन घराण्याची सत्ता होती. या काळात सुद्धा शिक्षणाचा फारसा विस्तार झालेला नव्हता. शिक्षणाची मक्तेदारी ही ब्राह्मण वर्गाकडे होती. सुलतानशाही व मुघलकाळात सुद्धा फारसा बदल झालेला दिसत नाही. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी या तत्कालीन समाजवेवस्थेला तडा देवून बंड घडवून आणले. त्यांनी योग्यतेनुसार व्यक्तींना आपल्या स्वराज्य निर्मितीच्या प्रकियेत सामवून घेतले. परिणामी बहीर्जी नाईक सारखा रामोशी हा गुप्तहेर विभागाचा प्रमुख बनला. याचे मुळ कारण हे शिक्षणच अभावे. गुप्त बातम्यांचे खुलासे महाराजापर्यंत पोहचविण्याची किमया शिक्षणानेच केली असावी. ही स्थिती मात्र अपवादात्मक होती. एकंदरीत ब्रिटिश आक्रमणाच्या पुर्वी वऱ्हाडची शैक्षिणिक अवस्था ही दयनिय होती.

ब्रिटिशांच्या आक्रमणानंतर वऱ्हाडच्या शैक्षणिक स्थितीत बदल होत गेला. इ. स. 1827 रिचर्ड जोकिन्स यांच्या नागपूर प्रदेशाच्या अहवालामध्ये नागपूरप्रांतात 46 सार्वजनिक शाळा असल्याचा दाखला मिळतो. या शाळांमध्ये 936 विद्यार्थी शिक्षण घेत होते. वऱ्हाड हा भाग सुद्धा नागपूर प्रांताचाच घटक होता. इ. स. 1854 च्या वुडच्या खलित्याने वऱ्हाडला सुद्धा प्रभावित केले. इ. स. 1866 ला वऱ्हाडात शिक्षण खात्याची स्थापना करण्यात

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

आली. या खात्याअंतर्गत वऱ्हाडात डायरेक्टरच्या अधिकारात दोन इनस्पेक्टर, दोन सबइन्स्पेटर पदांची निर्मिती करण्यात आली. वऱ्हाडचे पहिले डायरेक्टर मि. सिंकलेअर यांनी शिक्षणाला भक्कमपणे चालना देण्याचा प्रयत्न केला. या वऱ्हाडात इ. स. 1886 पर्यंत 30 प्राथमिक, 5 मिडल स्कूल कार्यरत होत्या. या शाळांमध्ये 1871 ला पुढील प्रमाणे विद्यार्थ्यांची स्थिती होती.

अ. क्र.	शाळेचा प्रकार	एकूण शाळा	विद्यार्थी संख्या
1	शासकीय हायस्कूल	02	150
2	शासकीय माध्यमिक शाळा	52	3350
3	शासकीय प्राथमिक शाळा	262	3917
4	अनुदानित माध्यमिक शाळा	01	06
5	अनुदानित प्राथमिक शाळा	02	68
6	शासकीय नॉर्मल स्कूल	01	60
7	शासकीय कन्या शाळा	27	456
	एकूण	347	8007

या नंतर शिक्षणाचा विस्तार होत गेला. सन 1879 ला वऱ्हाडात 712 शाळा कर्यरत होत्या. मात्र महाविद्यालय एकही नसल्यामुळे फक्त 11 विद्यार्थी हे महाविद्यालयीन शिक्षण घेत होते. हंटर कमिशनच्या पूर्वी अर्थात1881 ला वऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती खालीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	शाळेचा प्रकार	शाळांची संख्या	विद्यार्थी संख्या
1	शासकिय शाळा	475	26327
2	अनुदानित शाळा	134	2856
3	विनाअनुदानित शाळा	266	3038
एकूण		875	32221

सन 1882 ला हंटर कमिशनच्या अहवालानुसार शिक्षण व्यवस्थेची पुर्ण:मांडणी करण्यात आली. शिक्षणाला चालना मिळाली समाजात शिक्षण घेतलेल्या अनेक नवतरुणांनी शैक्षणिक प्रबोधन सुरू केले. त्या बरोबर ब्रिटिशांनी सुद्धा अनेक विनाअनुदानित शाळांना अनुदान दिले एवढेच नव्हे तर सन 1992 मध्ये शिक्षकांचा जो पगार 15 रु. होता तो 19 रु. करण्यात आला. 4 वर्षाचा असलेल्या वर्नाक्युलर कोर्स हा 6 ते 10 वर्षापर्यंतच्या मुलांकरिता प्रेरणादायी ठरल. परिणामी वऱ्हाडातील प्राथमिक शिक्षणाची स्थिती ही सुधारलेली दिसून येते. वऱ्हाड हा मध्यप्रांत राज्याचा भाग असल्यामुळे या वऱ्हाड व मध्यप्रांताची 1927 ला शैक्षणिक स्थिती पुढीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	शाळांचे प्रकार	शिक्षकांची संख्या 1916-17			शिक्षकांची संख्या 1926-27		
1	शासकीय	220	268	488	329	297	626
2	स्थानिक बार्ड आणि महापालिका	2670	5129	7799	4454	4553	90007
3	अनुदानित	120	591	711	199	608	807
4	विनाअनुदानित	19	389	408	51	356	407
एकूण		3029	6377	9406	5033	5814	91847

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyala

इ. स. 1923 नंतर वऱ्हाडच्या प्रत्येक जिल्ह्यात प्राथमिक शिक्षण देणाऱ्या अनेक शासकीय, अनुदानित, विनाअनुदानित व खाजगी स्तरावर कार्य करणाऱ्या प्राथमिक शाळा निर्माण झाल्यात.

दि. 24 एप्रिल 1922 ला वऱ्हाड मध्यप्रांताचा शैक्षणिक कायदा करण्यात आल्यामुळे वऱ्हाडातील माध्यमिक शिक्षणाला इ. स. 1922 ला शिक्षणाची गती वाढली परिणामी अनेक ठिकाणी माध्यमिक शाळा स्थापन झाल्यात. उदा. मेहकर जि. बुलढाणा येथे 1905 ला न्यु इंग्लिश हायस्कूलची स्थापना करण्यात आली. इ. स. 1935 ला अकोला येथे दि-बेरार-जनरल एज्यूकेशन सोसायटीची स्थापना करण्यात आली. त्यापूर्वी अमरावती येथे 1923 ला 'किंग्ज एडवर्ड' महाविद्यालयाची स्थापना करण्यात आली. हे वऱ्हाडातील पहिलेच महविद्यालय असल्यामुळे याची भव्य दिव्य इमारत उभारण्यात आली.

ब्रिटिशांनी भारतातील सर्वच घटकातील लोकांना शिक्षणाची समान संधी प्राप्त करून दिली. असली तरीही समाजावर ब्राह्मणी विचारांचा पगडा असल्यामुळे ब्राह्मण व्यतिरिक्त इतर शिक्षण घेण्यासाठी पुढे येत नसत. म्हणूनच इ. स. 1951 च्या जनगननेनुसार वऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती बघितल्यास फारसी समाधान कारक नव्हती. ही स्थिती पुढीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	जिल्हा	साक्षरतेचे प्रमाण
1	अमरावती	24.5
2	अकोला	23.1
3	बुलढाणा	20.8
4	यवतमाळ	14

एकंदरीत ब्रिटिशांच्या आक्रमणापूर्वी वऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती ही अतिशय दयनिय होती. ब्रिटिशांच्या आक्रमनानंतर मात्र या स्थितीत बदल होत गेला. इ. स. 1834 ला लॉर्ड मेकॉलेचा जाहिरनामा प्रसिद्ध झाला. येथूनच भारतात वर्ण विरहित, जातविरहित, शिक्षणपद्धतीचा प्रारंभ झाला. या काळात भारतीय समाज हा अज्ञान, अंधश्रद्धा व अंधारात खितपत पडलेल्या होता या समाजाला प्रकाशात आणण्याचे कार्य हे ब्रिटिशांच्या शिक्षणाने केले. शिक्षित तरुणांना आपल्या संस्कृती रुढी व परंपरेतील अनेक उणिवा स्पष्टपणे जाणवू लागल्यात. परिणामी शिक्षित तरुण समाजप्रबोधनाकरिता पुढे आलेत. या मधूनच समाजप्रबोधनाची चळवळ उभी झाली. या चळवळीतून महात्मा ज्योतिबा फुले यांनी शिक्षणाचा पाया रचला. पुढील काळात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी यावर कळस चढविला. त्यांनी शिक्षणाची मुलभूत अधिकारात तरतुद केली. परिणामी आज वऱ्हाडातच नव्हे तर संपूर्ण भारतात शिक्षणाची प्रगती झालेली दिसून येते. या प्रगतीचे मुळ मात्र हे ब्रिटिशांच्या सुधारणावादी भूमिकेतून उदयास आलेले दिसून येते.

संदर्भ सूची :

1. File of the Boarding House at Akola high school National Archives File No. Home Department education August 1875 No 1820
2. State Archives Mumbai File No. SSN/655-18 March 1959, Sr. No. 2647
3. Kunte, B. G. (Edi.) - Gazetter of India Maharashtra State Gazetteers Amravati District 1978.
4. गुप्त, डॉ. नत्थुलाल - प्राचिन भारतीय शिक्षा और शिक्षासंस्थाएँ, साधा प्रब्लिकेशन्स, दरियागंज नई दिल्ली. 2005
5. वझाणी, प्रा. डॉ. नि. आ. - आधुनिक विदर्भ का इतिहास, प्रकाशक श्री. गणेश प्रकाशन, नागपूर 1985
6. बनसोड, प्रा. डॉ. संतोष - यवतमाळ जिल्ह्याचा इतिहास, आधार पब्लिकेशन, अमरावती 2021
7. बनसोड, प्रा. डॉ. संतोष - यवमाळ जिल्ह्याचे आर्थिक आंदोलन, पायगुण प्रकाशान, अमरावती, 2018

S.No: 2249

IRJIF-Impact Factor-5.010 ISSN 2454-9827

Certificate of Publication

Let It Be Know By This Certificate That

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

NAKSHABANIDIA BRANCH OF SUFISM OF BALAPUR

Was Published In Volume 7 Issue 1 January 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Editor in Chief

A Peer Reviewed Refereed Journal

Date of Issue

01/01/2021

Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com , Website: www.nairjc.com

Narayanrao Rana

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue-1 January-202

Index Copernicus Value: 57.07 DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

NAKSHABANIDIA BRANCH OF SUFISM OF BALAPUR

DR. SANTOSH BANSOD

'Suman Nivas', Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606

In Islam religion Sufism is like Bhakti movement of Hinduism. Sufi means one who ***safa*** from his heart, means plain hearted person. Sufis are so humble that one who meets with them one feel like bending for ***Salam*** and he definitely answer for his ***Salam***. Sufi here are four major types of Sufism school in India. Sufis are described as community living with Hajrat Mohammad Paigambar in the cave named ***Safa***. That's why they named as Sufis.[1] The other opinion says that ***safa*** was woolen blanket and one who used that blanket named as Sufis. Purity of soul and ardent emotional attachment towards Allah is required prerequisite in Sufism.[2] It is philosophy like ***'Aham / Bramhasmi'*** means ***'Anhalak'*** in Sufism. There are four types of Sufism in India. They are Chistis, Surhavardis, Kadris and Nakshabandis. Nakshabandi branch of Sufism entered in India in later sixteenth century. It is the branch of Sufism which lastly came in India. [3]

THE PAST OF INDIAN NAKSHABANDIS – The first flow of Nakshabandis came into Deccan. They established their centre at Burhanpur the gateway of south India. The Nakshabandis branch at Burhanpur flourished in the reign of Shahajahan. The Nakshabandi branch of Burhanpur is one of the major spiritual shrine for not only deccan but also for all Indian Nakshabandis. The first Mughal emperor Babur was the follower of Khawaja Aharar and Babur himself translated the book ***Risala E Walidia*** written by Khawaja Aharar. All the next emperors keep healthy relation with this branch. The southern development of this Nakshabandi shrines also made with the help of Mughal dynasty and the foundation of this development was the Nakshabandi shrine of Burhanpur. The founder of this Nakshabandi Shrine of Burhanpur was Mohammad Kishmi who was origin of Badakshan region.[4]

PAST OF NAKSHABANDI SUFIS OF BALAPUR - Amir Sayyadshah Abdullah Husni Al Husaini migrated from Madina to Bukhara. After him his son Amir Sayyadshah Abdul Rahaman Bukhari Alias Shah Mohammad

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

Khalilullah migrated Bukhara to Khujand and he established Sufi Shrine there. Afterwards Amir Sayyadshaha Abdul Rahim alias Sayyadshah Habibullah and his son Hajrat Muflohuddin and Sayyadshaha Muslohuddin and Sayyadshaha Jahiroddin the heredity went on. After some time Sayyadshaha Jahiroddin with his two son Sayyadshaha Moosa and Shaha Toran migrated in 1445 AD to Emnabad near Lahor in Punjab region. He established Nakshabandi Sufi Shrine there. Here Sayyadshaha Moosa, Sayyadshaha Allahuddin Iladad and Sayyadshah Mohommad Nakshabandi maintained the management of Khankaha/Sufi Shrine. After some time Sayyadshaha Mohommad Nakshabandi migrated to Burhanpur with his two son Shekh ul islam Inayat ullah Nakshabandi and Imad ul Kara Hajrat Sayyadshaha Mohommad Said. Sayyadshah Mohommad Nakshabandi died at Solapur and Sayyadshah Indayat ullah Nakshbandi migrated to Balapur by the order of his spirutual master. He established Sufi Shrine/ Khankah at Balapur in 1649.[5]

SPIRITUAL SUFI SHRINE OF BALAPUR - The Nakshabandi sufi shrine of Balapur is famous spiritual shrine among follower of Nakshabandi branch of sufism. This sufi shrine of Nakshabandi was famous from its establishment. The Nizam of Haidrabad, The Nawab of Elichpur, mughal subhedars and all the officers of that time were follower of Inayat Ullah Nakshabandi. Dr Shyam Deokar written in his thesis about the meeting of Chatrapati Shivaji Maharaj and Inayatullah Nakshabandi. he also coucluded that the opinion of Nile Green about Chatrapati Shivaji Maharaj that 'Chatrapati Shivaji Maharaj was the follower of Inayatullah Nakshabandi' is not seems true. But Chatrapati Shivaji Maharaj visited the khankaha and granted one rupee per day incomed inam land to Khankah. Mugal emperor Aurangzeb also granted inam land to Khankah. Nizam of haidrabad aproved income of Begam Bazar of Haidrabad to this sufi shrine. This sufi shrine was the utmost important political centre of deccan. The shrine was known with all the political incidents of that time becaust all the political officers of that time were the follower of the shrine. The devotee of the shrine was not only muslims but they were from various sects, religions and dynestes.[6]

QUTUBKHANA OF THE SHRINE – The term Qutubkhana means library. The qutubkhana of this shrine was established with the khankaha in 1649 AD. This qutubkhana must be oldest one in the nation. This Qutubkhana is most important Qutubkhana in India and worldwide also. Because one who want to study of Indian Sufism; without taking references of this Qutubkhana is in vain. This is the Qutubkhana which was established with among the first Nakshabandi Sufi Branches which came in India. To study the migration and diaspora of Sufis, their literature, their travel rout and the philosophy of Sufis one should have to take references of this Qutubkhana. The researcher from worldwide have visited to this Qutubkhana to study the Sufi literature and history. The khankah with this Qutubkhana was the political and spiritual center at that time so the literature which was written in that period is the faithful document of that time. One who want to study the medieval period

Berar he must have to refer the documents of this Qutubkhana. One who have to study the social, political, economical, philosophical and Sufi literature of medieval period of Berar ; have to refer the rich primary sources of this Qutubkhana. To study the history of Berar and also of south India one should have to refer the documents from this Qutubkhana. The Khankah got ten Nakshabandi Sufi religious leaders from the family of Hajrat Saiyyadshah Inayatullah Nakshabandi. All those Sufi religious leaders of Khankah wrote many literature of Sufi philosophy and other also. This literature is witness of that period. So this literature is most important for the study of that time. Moreover this literature is in the form of manuscript and till unpublished. There are precious manuscripts available in this Qutubkhana and all of it are unpublished. There are many portrait of the Nawab's, Chavaliers, political and religious leaders. There are many ***Farmans*** of that time available in this Qutubkhana. For the Eastern Muslim Studies the researcher from world wide have visited to this Qutubkhana. The researcher from Bangladesh, Japan, Britain, Austrelia and from other countries have visited to this Qutubkhana. There is registration of those all visitors from India and abroad in the visitors book of this library. The importance of this Qutubkhana has been described in the book 'Modern Asian Studies' written by Nile Green. There are many rare books available in this library. Mr Y. K. Deshpande also write a research paper on this Qutubkhana which was published in Indian Historical Record Commission Proceedings of Meeting, 1941, Barora, XVII. In that paper Y. K. Deshpande says that there are 1000 to 1200 manuscripts are available in this Qutubkhana.[7]

This shrine and Qutubkhana is famous among researchers from all over the world. Researchers from Dhaka, Melbarn, Quoto (Japan), London, America visited the shrine and Qutubkhana for research study.

CONCLUSION

This sufi shrine is not only famous for the spiritual ideology but it is famous for the historical documents, and for Kutubkhana. It is lighthouse for the history student and researchers. Researchers from all over the world visited the Shrine for Eastern Muslim studie.

REFRENCES

1. Wakil Alim, ***'Ekach Pathavaril Don Panth Bhakti ani Sufi'(Marathi)***, First Edition, Nashik, Page no 13.

2. Arberry John, ***'The Doctrine of Sufis'*** , The university Pres Cambridege, 1935, Page no 5.

3. Deokar Shyam, ***'Balapur Shaharatil Eitihasik Vastuncha Abhyas' (Marathi)***, Mother India Publication, 2020, Page no 74.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Nile Green, ***'Indian Sufism Since The Seventeenth Century'***, Routledge Tyylor and Francis Group, Londo and New York, First Edition 2006, Page no.11 & 12.

5. Deokar Shyam, ***'Balapur Shaharatil Eitihasik Vastuncha Abhyas' (Marathi)***, Mother India Publication 2020, Page no 125

6. Deokar Shyam, ***'Qutubkhana Khankah E Nakshabandi of Balapur'***, International Journal of Management and Social Science, Volume 7, Issue 1,January 2019, Page no. 244..

7, ***Ibid,*** Page no 245.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

S.No: 2250

IRJIF-Impact Factor-5.010 ISSN 2454-9827

Certificate of Publication

Let It Be Know By This Certificate That

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

Was Published In Volume 7 Issue 2 February 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Editor in Chief

A Peer Reviewed Refereed Journal

Date of Issue

01/02/2021

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com , Website: www.nairjc.com

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

IRJIF I.F. : 5.010
Index Copernicus Value: 57.07

ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue-2 February-202

DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

DR. SANTOSH BANSOD

'Suman Nivas' , Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606

INTRODUCTION – Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of common people of Berar. He was the aggressive social activist of that time. He stired up the social, religious, political and cultural environment of the Berar. He was the first social reformer and the first voice of the social reconstruction of the Berar. Buldana district was actively involved in any stage and time of social reform of the society. Whenever there was need of whistle blower of the movement of justice the soil of Berar fulfilled the demand. This holy soil of Berar was and is always with the movement of justice. This soil always has the glorious past of standing with the justice. When Mahatma Jotirao Phule waged war against the injustice, inequality, exploitation in religious sector, racial hierarchy, apartheid, untouchability and injustice with women that was the real rise of reason of India. Berar also was with him in his movement of justice. Bapuji Shinde was present at the first meeting of the Satyashodhak Samaj held at Poona. Phuleism was the first ideology which challenged the ascedency of Bramhanism in all sectors. Phuleism not only denied the ideology of Bramhanism, but it established the structural framework to fight against the evils. Phuleism demolished the structure of Bramhanism which set up on the base of injustice. Buldana district was actively involved in the ***'Satyashodhak Movement'***. [1]

TERM OF BERAR – Today's Berar is consist of the five districts of Amravati division. But old Berar was not so little. The old Berar was between Kherla Dist Betul M.P. to Pathri Dist. Parbhani from the north to south. And from West it was from Malkapur to Wardha river to the East. The term Berar comes from the name ***'Varhad'***. And the word ***'Varhad'*** developed from the river Wardha.[2] ***'Vardhatat'*** to ***'Varhad'*** and then in Muslim period it

Principal
Narayanrao Ram Mahavidyalaya
Ellichpur

ecame the ***'Barar'*** afterwards the term 'Berar' emerged from the old name of the region ***'Barar'***. Todays Berar is consist of five district of Amravati division.

EARLY LIFE OF PANDHARINATH PATIL – Pandharinath Patil was born on 20th September 1903 at Amboda tq Nandura Dist Buldana. Afterwards his family moved to Pimpri Adhao tq Malkapur Dist Buldana. His family background was of Warkari sect, so little Pandhari also used to actively involved in Kirtan and Bhajan programmes. The economical condition of his family was not so good, so his primary and highschool education was on the basic of earn and learn. As critical minded he argued with many times with preacher who always visit his village. He with his father was present at the All India Maratha Education Conference held at Khamgaon in 1917.[3] Chatrapati Shahuji Maharaj was the Main speaker of the conferemce. Shahuji Maharaj stimulated the movements of justice of the Berar from this conference. Pandharinath Patil also got inspiration from the conference. His ideological structure was built up by the conference.

SATYASHODHAK MOVEMENT AND PANDHARINATH PATIL – The Satyashodhaki Mahaghat Shastri prepared and cultivated the minds of common Berari people of this region. Pandharinath Patil also got inspiration from Mahaghatshastri and his work in Berar. He listerned stories how Mahaghatshastri defeated Bramhins in Shastrartha from his grandfather. His first speech was arranged at Warkhaed Tq Malkapur to talk about the Satyashodhak Movement. The day was 14th of January 1921, But Sanatanis stopped his speech and disturbed the programme. At 19 November 1921 he was presented at Poona for the programme of opening of statue of Shivaji Maharaj by Prince of Walse. He came in contact of Kesharao Jedhe and other Satyashodhak workers of Maharashtra. He visited and live at Jedhe Mansion the center of Satyashodhak Movement of that time. He arrange the first Satyashodhak Conference of Vidarbha at Warkhed Tq Malkapur where his first speech cum meeting was disturbed by Sanatanis. Afterwards he arranged many Satyashodhak conferences in Berar eg- Savatra Tq Mehakar, Savala Tq. Jalgaon Jamod, Hingane Karegaon Tq Khamgaon, Kinhi Mahdeo Tq Khamgaon, Amraoti, Akot etc. All India Satyashodhak conference was arranged at Amraoti in 1925. He argued with the Shankarachary who invited by the Sanatanis for counter attack on the Satyashodhak movement. The programme was arranged at Deulgaon Raja. He and Anandswami argued with Dr Lingesh Mahabhargav Kurtkoti on the issue of Religious, spiritual, social points. This Dharmparishad was thwarted by Pandharinath Patil and Anandswami. The Shankarachary was dismissed by Chatrapati Shahuji Maharaj for the misbehave. That's why Sanatani arranged his programme to counter the movement. Kurtakoti misbehave in the Dharmaparishad so Satyashodhak conferences held at Dodhra, Mandapgaon, Isrul, Hingne karegaon, Savatra, Kinhi Mahadeo, Shendurjan, MolaMoli, Andhera criticized him for his misbehave and passes the resolutions against his misbehave.[4]

Principal
Narayanrao Patil Vidyalaya
Ekurka

Pandharinath Patil and Anandswamiji was actively involved in the programmes of Jalsas. There are many famous Jalsas of Berar which performing for the Satyashodhak movement. Rajanda Dist Akola, Wadegaon Dist Akola, Birsingpur Dist Buldana, Naygaon Dist Amraoti, Belura Dist Amraoti, Kelwad Dist Buldana, Sawargaon Dist Buldana are some famous Jalsas of Berar.[5] Anandswamiji and Pandharinath Patil guieded the programmes of Jalsas of Berar and Maharashtra. Anandswami gave security to the programmes of Jalsas in Berar. CP & Berar Third Satyashodhak Conference was held at Karodi in 8th of April 1928. Pandharinath Patil was the first writer who wrote the biography of Mahatma Phule. He worked hard for that, he collected documents and references for the biography. That's why he was invited from all over Maharashtra and out of states to talk about Phuleism and Satyashodhak Movement. He was invited at Satara for the birth anniversary of Mahatma Phule in 1947 the date was 17th November. He was processioned with 21 bullock carts in that programme. The procession was leading by the elephant having the Photoframe of mahatma Phule.[6]

POLITICAL LIFE – He faught district council elections in 1923 but he defeated by opponent. But he and his Non Bramhanist Party won the distrist council elections all over the Berar in 1924. The real hero of this victory of Non Bramhanist Party was Pandaharinath Patil and Anandswamiji. He also active in Local Board elections. In the local board election held at 23rd June 1934 he and his Non Bramhinast Pary won 16 seats out of 25. He also faught the legislative assembly election in 1936 and won it. He became MLA from Chikhali-Mehakar constituency. After the Non Bramhanist party's immersion in Congress he became the leader of Congress Party.[7] Afterwards he became MLA and MP from the Congress party. He always faught for the common people eg.- Farmers, workers, deprived casts, social conflict etc.

EDUCATIONAL WORK – He established the primary school and Adult education school at Jambuldhaba in 1921. He also established public library at Pimpalgaon and Buldana. He also helped the Chokhamela Boarding of Chikhli run by Laxmanrao Bhatkar. He established the series of school named Shivaji Highschool which merged afterwards into Shivaji Education society. Buldana, Chikhali, Nandura are the some major institutions among them. He also collected economical help for the Shivaji Education Society established by Panjabrao Deshmukh by arranging the programmes at various places in all over the Berar. Panjabrao Deshmukh with Pandharinath Patil visited to Nizam at Haidrabad for economical help for the Shivaji Education Society. Nizam granted twenty thousand rupees as first instalment for the society. As a council member he established government primary school in every village having 500+ population .[8]

NON BRAMHIN MOVEMENT- He arrange the first CP & Berar Non Bramhin Conference at Morshi in 1923. The President of the conference was Bhaskarrao Jadhao Education Minister of Mumbai Region. Nanasaheb Amrutkar and Bhausaheb Gund was the major host of the conference. One other Non Bramhin Conference was

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

arranged at Buldana in same year. The president was Sitaram Nana Choudhari. At 17th August 1924 the meeting of Bramhanetar Sangh held at Jambhuldhaba dist Buldana. The president of the meeting was Sakharam Patil. The second Majlis of All India Non Bramhin Congress held at Amraoti in 1925. The conference was of three days, 25 to 27 December of 1925. The first conference was held at Belgaon Karnataka. He was the editor of the 'Atmodhar' newspaper of Malkapur edition. This newspaper had been publishing from Jalgaon Khandesh. Pandharinath Patil arranged the Khamgaon Taluka Non Bramhin Conference in Kinhi Mahadeo at 14th January 1928. The President of the conference was Annasaheb Kayande. Near about five thousand people were present for the conference. Pandharinath hosted the conference. Bombay region third Non Bramhin Conference was held in Kalyan at 15th July 1928. Pandharinath Patil was present at that conference.Afterwards many conferences was arranged in Berar by him and other members of Non Bramhin movement of Berar eg- Bhatori Dist Akola, Jastagaon Dist Buldana, Wardha, Elichpur, Amraoti etc.[9]

CONCLUSION - Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of Berar. He was active member of Satyashodhak and Non Bramhin movement of Berar. He also social activist and social cum religious reformer of Berar. He tried to demolished the bad traditions flowed with time in society.

KEYWORDS:-

Bramhanetar Movement *– The movement of demanding justice by the rest of Bramhin communities in 19th century Maharashtra. They oppose the system of* ***'Chaturvarna'*** *of Hinduism and ascedency of Bramhins in all sectors.*

Satyashodhak Movement *– (Truth Seekers' Society) This social reform society was founded by Mahatma Jotirao at Phule on 24th September 1873. This movement ran the movement of social justice which generally known as Satyashodhak Movement.*

REFERENCES

1. Deokar S.P., ***'Analysis Of Dr Ambedkar's View About Jalgaon Jamod Issue'***, Ambedkar History Congress, Mumbai. 2020.
2. Jarrett H.S. (Translator), ***'Ain – E- Akbari of Abul Fazl- I – Allami' Vol II***, Second Edition,Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta,1949, Page no 237
3. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 14 – 24

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Ba...ra

4. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 23 – 50
5. Kharat Sambhaji, ***'Satyashodhak Jalse (Marathi)'***, Loksahitya Publication Aurangabad, First Edition 2015, Page no 111 & 142
6. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 43
7. Ibid Page no 51 – 61
8. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 81-125
9. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 162- 180

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

S.No: 2250

IRJIF-Impact Factor-5.010

ISSN 2454-9827

Certificate of Publication

Let It Be Know By This Certificate That

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

Was Published In Volume 7 Issue 2 February 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Editor in Chief

A Peer Reviewed Refereed Journal

Date of Issue

01/02/2021

Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com , Website: www.nairjc.com

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue-2 February-2021

UIF I.F. : 5.010

Index Copernicus Value: 57.07 DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

DR. SANTOSH BANSOD

'Suman Nivas' , Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606

INTRODUCTION – Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of common people of Berar. He was the aggressive social activist of that time. He stired up the social, religious, political and cultural environment of the Berar. He was the first social reformer and the first voice of the social reconstruction of the Berar. Buldana district was actively involved in any stage and time of social reform of the society. Whenever there was need of whistle blower of the movement of justice the soil of Berar fulfilled the demand. This holy soil of Berar was and is always with the movement of justice. This soil always has the glorious past of standing with the justice. When Mahatma Jotirao Phule waged war against the injustice, inequality, exploitation in religious sector, racial hierarchy, apartheid, untouchability and injustice with women that was the real rise of reason of India. Berar also was with him in his movement of justice. Bapuji Shinde was present at the first meeting of the Satyashodhak Samaj held at Poona. Phuleism was the first ideology which challenged the ascedency of Bramhanism in all sectors. Phuleism not only denied the ideology of Bramhanism, but it established the structural framework to fight against the evils. Phuleism demolished the structure of Bramhanism which set up on the base of injustice. Buldana district was actively involved in the ***'Satyashodhak Movement'***.[1]

TERM OF BERAR – Today's Berar is consist of the five districts of Amravati division. But old Berar was not so little. The old Berar was between Kherla Dist Betul M.P. to Pathri Dist. Parbhani from the north to south. And from West it was from Malkapur to Wardha river to the East. The term Berar comes from the name ***'Varhad'***. And the word ***'Varhad'*** developed from the river Wardha.[2] ***'Vardhatat'*** to ***'Varhad'*** and then in Muslim period it

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

became the ***'Barar'*** afterwards the term 'Berar' emerged from the old name of the region ***'Barar'***. Todays Berar is consist of five district of Amravati division.

EARLY LIFE OF PANDHARINATH PATIL – Pandharinath Patil was born on 20th September 1903 at Amboda tq Nandura Dist Buldana. Afterwards his family moved to Pimpri Adhao tq Malkapur Dist Buldana. His family background was of Warkari sect, so little Pandhari also used to actively involved in Kirtan and Bhajan programmes. The economical condition of his family was not so good, so his primary and highschool education was on the basic of earn and learn. As critical minded he argued with many times with preacher who always visit his village. He with his father was present at the All India Maratha Education Conference held at Khamgaon in 1917.[3] Chatrapati Shahuji Maharaj was the Main speaker of the conferemce. Shahuji Maharaj stimulated the movements of justice of the Berar from this conference. Pandharinath Patil also got inspiration from the conference. His ideological structure was built up by the conference.

SATYASHODHAK MOVEMENT AND PANDHARINATH PATIL – The Satyashodhaki Mahaghat Shastri prepared and cultivated the minds of common Berari people of this region. Pandharinath Patil also got inspiration from Mahaghatshastri and his work in Berar. He listerned stories how Mahaghatshastri defeated Bramhins in Shastrartha from his grandfather. His first speech was arranged at Warkhaed Tq Malkapur to talk about the Satyashodhak Movement. The day was 14th of January 1921, But Sanatanis stopped his speech and disturbed the programme. At 19 November 1921 he was presented at Poona for the programme of opening of statue of Shivaji Maharaj by Prince of Walse. He came in contact of Kesharao Jedhe and other Satyashodhak workers of Maharashtra. He visited and live at Jedhe Mansion the center of Satyashodhak Movement of that time. He arrange the first Satyashodhak Conference of Vidarbha at Warkhed Tq Malkapur where his first speech cum meeting was disturbed by Sanatanis. Afterwards he arranged many Satyashodhak conferences in Berar eg- Savatra Tq Mehakar, Savala Tq. Jalgaon Jamod, Hingane Karegaon Tq Khamgaon, Kinhi Mahdeo Tq Khamgaon, Amraoti, Akot etc. All India Satyashodhak conference was arranged at Amraoti in 1925. He argued with the Shankarachary who invited by the Sanatanis for counter attack on the Satyashodhak movement. The programme was arranged at Deulgaon Raja. He and Anandswami argued with Dr Lingesh Mahabhargav Kurtkoti on the issue of Religious, spiritual, social points. This Dharmparishad was thwarted by Pandharinath Patil and Anandswami. The Shankarachary was dismissed by Chatrapati Shahuji Maharaj for the misbehave. That's why Sanatani arranged his programme to counter the movement. Kurtakoti misbehave in the Dharmaparishad so Satyashodhak conferences held at Dodhra, Mandapgaon, Isrul, Hingne karegaon, Savatra, Kinhi Mahadeo, Shendurjan, MolaMoli, Andhera criticized him for his misbehave and passes the resolutions against his misbehave.[4]

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Pandharinath Patil and Anandswamiji was actively involved in the programmes of Jalsas. There are many famous Jalsas of Berar which performing for the Satyashodhak movement. Rajanda Dist Akola, Wadegaon Dist Akola, Birsingpur Dist Buldana, Naygaon Dist Amraoti, Belura Dist Amraoti, Kelwad Dist Buldana, Sawargaon Dist Buldana are some famous Jalsas of Berar.[5] Anandswamiji and Pandharinath Patil guieded the programmes of Jalsas of Berar and Maharashtra. Anandswami gave security to the programmes of Jalsas in Berar. CP & Berar Third Satyashodhak Conference was held at Karodi in 8th of April 1928. Pandharinath Patil was the first writer who wrote the biography of Mahatma Phule. He worked hard for that, he collected documents and references for the biography. That's why he was invited from all over Maharashtra and out of states to talk about Phuleism and Satyashodhak Movement. He was invited at Satara for the birth anniversary of Mahatma Phule in 1947 the date was 17th November. He was processioned with 21 bullock carts in that programme. The procession was leading by the elephant having the Photoframe of mahatma Phule.[6]

POLITICAL LIFE – He faught district council elections in 1923 but he defeated by opponent. But he and his Non Bramhanist Party won the distrist council elections all over the Berar in 1924. The real hero of this victory of Non Bramhanist Party was Pandaharinath Patil and Anandswamiji. He also active in Local Board elections. In the local board election held at 23rd June 1934 he and his Non Bramhinast Pary won 16 seats out of 25. He also faught the legislative assembly election in 1936 and won it. He became MLA from Chikhali-Mehakar constituency. After the Non Bramhanist party's immersion in Congress he became the leader of Congress Party.[7] Afterwards he became MLA and MP from the Congress party. He always faught for the common people eg.- Farmers, workers, deprived casts, social conflict etc.

EDUCATIONAL WORK – He established the primary school and Adult education school at Jambuldhaba in 1921. He also established public library at Pimpalgaon and Buldana. He also helped the Chokhamela Boarding of Chikhli run by Laxmanrao Bhatkar. He established the series of school named Shivaji Highschool which merged afterwards into Shivaji Education society. Buldana, Chikhali, Nandura are the some major institutions among them. He also collected economical help for the Shivaji Education Society established by Panjabrao Deshmukh by arranging the programmes at various places in all over the Berar. Panjabrao Deshmukh with Pandharinath Patil visited to Nizam at Haidrabad for economical help for the Shivaji Education Society. Nizam granted twenty thousand rupees as first instalment for the society. As a council member he established government primary school in every village having 500+ population .[8]

NON BRAMHIN MOVEMENT- He arrange the first CP & Berar Non Bramhin Conference at Morshi in 1923. The President of the conference was Bhaskarrao Jadhao Education Minister of Mumbai Region. Nanasaheb Amrutkar and Bhausaheb Gund was the major host of the conference. One other Non Bramhin Conference was

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

arranged at Buldana in same year. The president was Sitaram Nana Choudhari. At 17th August 1924 the meeting of Bramhanetar Sangh held at Jambhuldhaba dist Buldana. The president of the meeting was Sakharam Patil. The second Majlis of All India Non Bramhin Congress held at Amraoti in 1925. The conference was of three days, 25 to 27 December of 1925. The first conference was held at Belgaon Karnataka. He was the editor of the 'Atmodhar' newspaper of Malkapur edition. This newspaper had been publishing from Jalgaon Khandesh. Pandharinath Patil arranged the Khamgaon Taluka Non Bramhin Conference in Kinhi Mahadeo at 14th January 1928. The President of the conference was Annasaheb Kayande. Near about five thousand people were present for the conference. Pandharinath hosted the conference. Bombay region third Non Bramhin Conference was held in Kalyan at 15th July 1928. Pandharinath Patil was present at that conference.Afterwards many conferences was arranged in Berar by him and other members of Non Bramhin movement of Berar eg- Bhatori Dist Akola, Jastagaon Dist Buldana, Wardha, Elichpur, Amraoti etc.[9]

CONCLUSION - Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of Berar. He was active member of Satyashodhak and Non Bramhin movement of Berar. He also social activist and social cum religious reformer of Berar. He tried to demolished the bad traditions flowed with time in society.

KEYWORDS:-

Bramhanetar Movement *– The movement of demanding justice by the rest of Bramhin communities in 19th century Maharashtra. They oppose the system of* ***'Chaturvarna'*** *of Hinduism and ascedency of Bramhins in all sectors.*

Satyashodhak Movement *– (Truth Seekers' Society) This social reform society was founded by Mahatma Jotirao at Phule on 24th September 1873. This movement ran the movement of social justice which generally known as Satyashodhak Movement.*

REFERENCES

1. Deokar S.P., ***'Analysis Of Dr Ambedkar's View About Jalgaon Jamod Issue'***, Ambedkar History Congress, Mumbai. 2020.
2. Jarrett H.S. (Translator), ***'Ain – E- Akbari of Abul Fazl- I – Allami' Vol II***, Second Edition,Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta,1949, Page no 237
3. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 14 – 24

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue 2, Feb. 2021

Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 23 – 50

5. Kharat Sambhaji, ***'Satyashodhak Jalse (Marathi)'***, Loksahitya Publication Aurangabad, First Edition 2015, Page no 111 & 142
6. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 43
7. Ibid Page no 51 – 61
8. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 81-125
9. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 162- 180

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Buldana

ISSN NO : 2231-4059

विदर्भातील कामगार चळवळीचे ऐतिहासिक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष पी. बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख, नारायणराव कला महाविद्यालय, बडनेरा, जि. अमरावती

प्रस्तावना :

सत्यशोधक चळवळीचे कार्यकर्ते नारायण मेघाजी लोखंडे यांनी महात्मा फुलेंच्या नेतृत्वाखाली गिरणी कामगारांच्या अन्यायाविरोधात आवाज उठवित बॉम्बे मिल हँडस असोशिएशन ही देशातील पहिली कामगार संघटना स्थापना केली. याच संघटनेच्या माध्यमातून आणि 'दिनबंधू' या पत्राच्या माध्यमातून त्यांनी आवाज उठवून कामगारांना साप्ताहिक सुट्टी, दुपारच्या जेवनाची सुट्टी, कामांच्या निश्चित वेळा, सर्वत्र सारखा पगार अश्या विविध मागण्या मान्य करून घेतल्या व कामगारांना त्यांचे अधिकार मिळवुन दिले. जगातल्या युरोपियन देशांच्या तुलनेत भारतातील कामगार चळवळ उशिराच सुरू झाली. भारतात जसाजसा उद्योगधंद्याचा विकास झाला तसतसी कामगारांच्या संख्येतही वाढ झाली. त्यांच्या समस्या सुध्दा वाढत गेल्या आणि त्यातून कामगार चळवळी व संघटन होऊन विविध संघटना निर्माण झाल्या.

कामगार चळवळ ही निषेध चळवळ आहे. भारतातील कामगार चळवळीचा इतिहास हा खऱ्या अर्थाने सुवर्ण अक्षरात लिहीण्यासारखा आहे. प्रथम महायुध्दानंतर जागतिक आर्थिक मंदी आली. त्यावेळी वेतनवाढीसाठी कामगारांमध्ये असंतोष वाढु लागला. याच काळात कामगार वर्ग देशात सुरू असलेल्या स्वातंत्र्य चळवळीशी जोडल्या गेला. पहिल्या महायुध्दानंतर खाणउद्योग, प्लॉटेशन, ज्युट, वस्त्रउद्योग, पोस्टल, संरक्षण या सर्वच क्षेत्रात कामगारांनी बंड केले होते. कामगारांच्या या संघटनांनी भारताच्या स्वातंत्र्य चळवळीलाही मोठी ताकद दिली.

विदर्भ हा कृषीप्रधान प्रदेश आहे. कारण येथील 72 टक्के लोकसंख्या शेतीवर अवलंबून आहे. विदर्भात कापुस जास्त पिकल्यामुळे जिनिंग, प्रेस कापड गिरण्या, विणकर हातमाग उद्योग अस्तित्वात आले. विदर्भात मोठया प्रमाणात असणारी खनिज संपत्ती आणि कापसाचे उत्पादन यामुळे कामगार चळवळीला प्राधान्य मिळाले. विदर्भातील अनेक कामगार नेत्यांनी मजुर आंदोलनाच्या प्रवाहाला राष्ट्रीय आंदोलनाच्या प्रमुख प्रवाहास जोडून राष्ट्रभक्तीच्या भावनेचा परिचय दिला.

शब्दकोश : सत्यशोधक चळवळ, दिनबंधू, विदर्भ, कापूस, खनिज

संशोधनाची उद्दिष्टये :

प्रस्तुत विषयाचा अभ्यास करण्यासाठी संशोधकाने काही उद्दिष्टये निश्चित केली आहेत. त्या उद्दिष्टानुसार प्रस्तुत संशोधन कार्य करण्यात आले असुन ती उद्दिष्टये खालीलप्रमाणे आहेत.

1) स्वातंत्र्यपूर्व काळात विदर्भात उदयास आलेल्या कामगार चळवळीवर क्षेत्रावर प्रकाश टाकणे.
2) विदर्भातील कामगार चळवळीचा उदय, स्थापना व नेतृत्वांच्या कार्याचे विश्लेषण करणे.
3) विदर्भातील महिला कामगारांच्या सहभागाचा व नेतृत्वाचा अभ्यास करणे.
4) विदर्भातील कामगार चळवळीवर झालेल्या परिणामांचा अभ्यास करणे.

संशोधनाची गृहितके :

स्वातंत्र्यपूर्व आणि स्वातंत्र्यानंतर विदर्भातील कामगार चळवळीचा अभ्यास करण्यासाठी जास्तीत जास्त प्राथमिक व दुय्यम साधनांचा वापर करून संशोधनकार्य पूर्ण करण्याचा प्रयत्न केल्यामुळे संशोधनासाठी निश्चित केलेली गृहितके पूर्ण सिध्द झाली असून ही गृहीतके खालीलप्रमाणे आहेत.

1) स्वातंत्र्यूर्व काळात विदर्भात कापूस आणि खनिज संपत्तीचा समृध्द वारसा असल्यामुळे औद्योगिक विकासामुळे कारखानदारीच्या विकासाला गती मिळाली.
2) विदर्भातील अनेक कारखान्याच्या उदयामुळे अनेक शहरांचा विकास होऊन नागरीकरणाला चालना मिळाली व ग्रामीण भागातील असंख्य नागरिक कामगार बनले.
3) विदर्भात कारखानदारीच्या विरोधात अनेक कामगारांची आंदोलने झाली.
4) विदर्भातील कामगार चळवळीत महिलांचा सहभाग होता.
5) विदर्भातील कामगार चळवळीमुळे कामगारांचे हक्क आणि मागण्या बऱ्याच प्रमाणात मान्य झाल्या.

विषयाची व्याप्ती :

विदर्भाला फार मोठा ऐतिहासिक वारसा लाभलेला आहे. प्राचीन, मध्ययुगीन काळात या भागाचा विकास होत गेला. कोळसा, कापड जिनिंग, बिडी कामगार यामध्ये मजुर काम करताना त्यांच्या काही समस्या असतात, त्या सोडविण्यासाठी मालक व मजुर यांच्यात संघर्ष होते. त्यातुन कामगार चळवळीचा उदय झाला. नागपूर, वर्धा, भंडारा, चंद्रपूर, अमरावती, यवतमाळ, अकोला, बुलढाणा या जिल्हयांशी कामगार चळवळी निगडीत आहेत. ही संशोधनाची भौगोलिक व्याप्ती आहे. प्रस्तुत संशोधनात स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्यनंतरची कामगार चळवळ ही कालक्रमाची व्याप्ती ठेवलेली आहे.

संशोधनाच्या पध्दती :

इतिहास हे एक सामाजिक शास्त्र असल्यामुळे सामाजिक शास्त्रातील प्रचलित असलेल्या सर्वच संशोधन पध्दती इतिहास संशोधनासाठी उपयुक्त ठरतात. संबंधीत संशोधनासाठी संदर्भ पध्दत, ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक व सर्वेक्षण पध्दतीचा उपयोग करण्यात आला आहे.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

ISSN NO : 2231-4059

तथ्य संकलन :

तथ्य संकलन ही वैज्ञानिक पध्दतीची पहिली महत्वाची पायरी आहे. प्रस्तुत संशोधनासाठी माहिती संकलनाकरिता प्राथमिक आणि दुय्यम साधनांचा उपयोग करण्यात आला आहे. तसेच सर्व माहिती स्त्रोतांचे अवलोकन करून त्याची पुनःविश्लेषणात्मक चिकित्सा करण्यात आली आहे व प्रस्तुत संशोधन पूर्ण करण्यात आले आहे.

विदर्भातील कामगार चळवळीची वाटचाल :

विदर्भात कापसाच्या उत्पादनाने कायापालट केला आहे. कापूस उत्पादन विदर्भाकरिता वरदान आहे. कापसाच्या पाठोपाठ हळूहळू रूई अलग करण्याचे व्यवसाय तयार झाले. बुलढाणा जिल्हयात 44 जिनिंग फॅक्टरी होत्या. जिनिंग प्रेस बरोबर विदर्भातील नागपूरमध्ये कापड तयार करण्याच्या गिरण्या तयार झाल्या.

नागपूरमध्ये 1877 मध्ये एम्प्रेस मिलची स्थापना, 1870 मध्ये मॉडेल मिल्सची स्थापना, 1885 मध्ये बडनेरा मिल्सची स्थापना, बडनेरा मिल्स स्वातंत्र्यपूर्व काळात 1100 लोकांना रोजगार पुरवित होती. वर्धा जिल्हयात हिंगणघाट व पुलगाव जिल्हयात, अकोला येथे मिल्स स्थापन झाल्या. अशारितीने शेतीप्रधान विदर्भामध्ये औद्योगिकीकरणाला प्रारंभ झाला. औद्योगिक विकास दुसऱ्या महायुध्दांच्या उद्‌भवापर्यंत अतिशय वेगाने घडत होता. नागपूर येथील उमरेड, अचलपूर, अंजनगाव सुर्जी, दर्यापूर, खोलापूर ही गावे विणकरांनी विणलेल्या साडीसाठी प्रसिध्द होती. भंडारा जिल्हयात पवनी येथे हातमागाचे चांगले केंद्र होते. चंद्रपूर व भंडारा जिल्हयात पवनी येथे हातमागाचे चांगले केंद्र होते. चंद्रपूर व भंडारा जिल्हयात सावली व एकोडी या गावात कोसा कापड बनविले जात होते. विदर्भात ठिकठिकाणी खनिज संपत्ती भरपूर प्रमाणात सापडतो. यवतमाळ जिल्हयात वणी तालुक्यात कोळसा सापडतो. त्यावेळी 2100 दश टन कोळसा उपलब्ध असावा असा अंदाज आहे. चंद्रपूर जिल्हयात 1600 चौरस मैलात कोळसा सापडतो. या कोळश्याबरोबर लोखंड सापडते. दररोज 80 टन लोखंड सापडल्याचे उल्लेख सापडतात. विदर्भातील औद्योगिक विकासाला विदर्भातील खनिज संपत्तीने मदत केली आहे. भंडारा जिल्हयात मॅगनिज व लोखंडाचे साठे विपुल प्रमाणात आढळते. काही प्रमाणात नागपूर जिल्हा कोळश्याच्या खाणीसाठी प्रसिध्द आहे.

भारताच्या स्वातंत्र्य चळवळीतून कामगार चळवळ आकारास आलेली दिसते. महाराष्ट्रातील सांस्कृतिक, राजकीय, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रातील बदलाना काही प्रमाणात चालना देण्याचे काम कामगार चळवळीने केले आहे. विदर्भातील गिरणी कामगार स्वातंत्र्य चळवळीत नेहमीच आघाडीवर होते. ज्या ज्या वेळी स्वातंत्र्यलढयात गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, रूईकर जनरल आयारी यांना ब्रिटीशानी तुरूंगात टाकले. त्या त्या वेळी कामगारांनी उत्स्फुर्तपणे संप पुकारला होता. कामगारांना स्वातंत्र्य चळवळीकडे ओढण्याचे काम रूईकरांना जाते. 26 एप्रील 1908 रोजी नागपूरात मिल मजुराची एक सभा भरली. त्यात डॉ. मूंजे, स्वामी शंकरानंद, दत्तोपंत ठेगंडी इत्यादींनी "दारू सोडा व पैसा फंडात पैसा भरा" इत्यादी उपदेशात्मक भाषणे झाली. दत्तोपंत ठेगंडी हे मजुराचे प्रथम पुढारी होते. त्यांनी मजुरांच्या समस्या सोडविण्याचा प्रयत्न केला. त्यानंतर त्यांनी मजुर आंदोलनाचे नेतृत्व रामभाऊ रूईकर यांच्याकडे दिले. रूईकरांचे कार्य इ. स. 1920 पासून सुरू होते. त्यांनी मजुर आंदोलनास मुख्य राष्ट्रीय प्रवाहास जोडले म्हणून त्यांचे नाव विदर्भाच्या मजूर नेत्यांमध्ये प्रसिध्द आहे.

1918 पूर्वी विदर्भात काही कामगार संघटना अस्तित्वात होत्या. परंतू पहिल्या महायुध्दानंतर कामगार चळवळींना खरे उत्तेजन मिळाले. प्रथम महायुध्द काळात कामगारांनी खूप काम केले. त्यामुळे भांडवलदाराच्या पदरात 100 टक्के नफा पडला होता. त्यामुळे कामगारांना 75 टक्के नफा मिळत होता. परंतु युध्दानंतर 20 टक्के बोनस मिळत असे. म्हणून "अखिल भारतीय ट्रेड युनियन कॉंग्रेस" ची स्थापना करण्यात आली. समीउल्लाखान, डॉ. खरे, सर सोराबजी मेहता, सौ. मॉट यांनी विदर्भात संघटना वाढविण्यासाठी खूप प्रयत्न केले. रूईकरांनी 1939 ते 1947 या कालखंडात विदर्भातल्या सर्व गिरणी कामगारांच्या संघटना एकत्रीत आणून गिरणी कामगारांची फेडरेशन बनविली. महागाई भत्यासाठी 1942 ला विदर्भात 40 हजार कामगारांनी संप केला होता.

व्हिटले कमिशन व विदर्भातील नेते :

इ. स. 1928 मध्ये मजुरांची परिस्थिती जाणून घेण्याकरिता भारत सरकारने व्हिटले कमिशन नेमले. या कमिशनवर मध्यप्रदेश शासनाने श्रीमती अनुसयाबाई काळे यांची मध्यप्रदेशतर्फे असिस्टंट कमिशनर म्हणून नेमणूक केली होती. या कमिशनबरोबर काळेनी विदर्भात दौरा काढला. गिरण्यात काम करणाऱ्या स्त्रियांची स्थिती जाणून घेतली. मजुरांची स्थिती सुधारण्याचा प्रयत्न केला. व्हिटले कमिशनसमोर दलित नेते श्री. किसन फागुजी बनसोडे यांनी एकुण मजुरांच्या एकुण स्थितीबद्‌दल निवेदन केलेत. दलित आणि मजुरांची स्थिती सुधारण्याचा त्यांनी प्रयत्न केला. त्यांच्याबरोबर मजुर चळवळीत भाई एन. एम. जोशी, श्री. आंबेकर, रावसाहेब ठवरे आणि श्री. भाऊराव बोरकर यांचा त्यात समावेश होता. नरकेसरी अभ्यंकर यांनी सुध्दा मजुरांच्या प्रश्नात लक्षात घातले होते. परिणामी 1936 मध्ये सरकारकडुन "पेमेंट ऑफ वेजेस ॲक्ट" पारित करण्यात आला. या कायद्याचा मुख्य उद्‌देश मजूर व महिलांना सवलती देण्यात याव्यात यासाठी "मॅटरनिटी बेनिफिट ॲक्ट" पास करण्यात आला.

स्वातंत्र्यानंतर विदर्भातील कामगार चळवळीचे स्वरूप :

कामगारांना प्रत्येक गोष्टीसाठी संघर्ष करावा लागला. त्यातुन कामगार चळवळीला दिशा देण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. मात्र गेल्या काही वर्षात उदारीकरण आणि खाजगीकरणामुळे कामगार चळवळीचे स्वरूप बदलले. आजही कामगार संघटनास संघर्ष करावा लागला. आज कामगार संघटनास संघर्ष करावा लागत आहे. आज कामगार चळवळीचे विघटन झाले. सरकारच्या चुकीच्या धोरणामुळे आज कामगार चळवळीचे नुकसान झाले आहे. विदर्भात असंघटीत कामगारांची संख्या झपाटयाने वाढली आहे. विदर्भाच्या कामगार चळवळीला इतिहास आहे. गिरणी कामगारांचे आंदोलन असो मजुरांचे. त्यावेळी कामगारांचा उठाव होत होता. कामगारांची लढाई कमी झाली असुन ती वाढविण्यासाठी सर्व संघटीत आणि असंघटीत कामगार संघटनानी राजकीय पक्षभेद सारून संघटीत होण्याची गरज आहे तरच कामगार चळवळ टिकेल.

निष्कर्ष :

विदर्भात खाजगीकरणामुळे कामगारांच्या चळवळी कमी झाल्या आहेत. माथाडी कामगार मोठया प्रमाणात असून तो असंघटीत कामगारांमध्ये मोडतो. मात्र त्याची नोंद नाही. त्यामुळे तो विभागला गेला आहे. विदर्भातील सुतगिरण्या कायमच्या बंद झाल्या आहेत. ग्रामीण पंचतारांकीत

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

ISSN NO : 2231-4059

उद्योगधंद्यांना सुध्दा कच्चाच्या प्रमाणात ब्रेक लागलेला आहे. खान उद्योगातील कामगारांचे लढे सुरू आहे. मात्र स्वरूप थोडे वेगळे आहे. असंघटीत क्षेत्रात प्रमाण वाढल्यामुळे कर्मचाऱ्यांची आवश्यकता भासत नाही. वेकोली, पॉवरग्रीड सारख्या सरकारी उपक्रमातही कंत्राटी कामगार यांची संख्या वाढली आहे. त्यातून त्यांचे सामाजिक, आर्थिक, राजकीय शोषण होते. पुन्हा एकदा कामगार चळवळ निर्माण करणे गरजेचे आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

1 डी खांदेवाले विनिवास विदर्भ राज्य संकल्पना विसा बुक्स, नागपूर
2 डी एकबोटे वि आ आधुनिक विदर्भाचा इतिहास मंगेश प्रकाशन नागपूर
3 प्रा डेरा एन डी विदर्भाची अर्थव्यवस्था मंगेश प्रकाशन नागपूर
4 कोलारकर श गो आधुनिक विदर्भाचा इतिहास श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर
5 डी भोसले नारायण महाराष्ट्र वार्षिकी 2008-2009 ८ युनिक अकॅडमी
6 नाथे संजय विदर्भातील जिल्हे नाथे प्रकाशन नागपूर
7 समाजप्रबोधन पत्रिका डिसेंबर 2010 मार्च 2013
8 साधना जानेवारी 2012
9 लोकसत्ता नागपूर वृत्तांत ९ 2015

Principal
Narayanrao
Latur

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

October -2020

SPECIAL ISSUE-CCL(250)



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr. Santosh Bansod
Head Dept.of History,
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyala
Badnera

This Journal is indexed in :
- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**
- **International Impact Factor Services (IIFS)**

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor – 7.675

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October - 2020

ISSUE No –CCL (250)

Dr. Babasaheb Ambedkar Thought

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. Santosh Bansod
Editor :
Head Dept.of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

Aadhar International Publications

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem. — Dr. Santosh Bansod	1
2	Dr Babasaheb Ambedkar and Socialism — Dr. Vasant R. Dongare	4
3	स्त्रियांचे मुक्तीदाते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा.डॉ. कल्पना त्र्यं. मेहरे	8
4	An Advocate of Human Society: Dr B. R. Ambedkar — Satish K. Khode,	11
5	Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar — Dr.Harshal R.Nimbhorkar	15
6	दलित पँथर आणि आंबेडकरवाद — प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे	19
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे उच्चशिक्षणा विषयक विचार — प्रा. डॉ. सिध्दार्थ शिवाजी वाठोरे	24
8	महिला व मजदुरो के विकास मे डॉ. आबेडकर की भूमिका — प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील.	27
9	भारतीय कृषी विकास के संदर्भ मे डॉ. बी. आर. अंम्बेडकर के विचारोका ऐतिहासिक विश्लेषण — डॉ. प्रसन्न प्रकाश बगडे	30
10	वर्तमान परिप्रेक्षातून डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांची विदर्भातील भाषणे (पातुर्डा ते अमरावती) — डॉ श्याम प्रकाश देवकर	34
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सामाजिक चळवळीचा समाजमनावरील प्रभाव :— एक चिकित्सा. — डॉ किशोर मारोती वानखडे.	42
12	समाज क्रांतिकारकबाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय संविधान — जगन्नाथ सावंत	46
13	आंबेडकरी चळवळीतील रावबहादुर सीतारामपंत बोले यांचे योगदान — प्रा. प्रविन एम. राजुरवाडे	52
14	भारतीय स्त्री, पूर्वइतिहास, आजची स्थिती आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर — प्रा.शितल बुधा सोनवणे	56
15	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व योगदान — प्रा. विनय वामनराव तायडे	63
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार — प्रा. डॉ. नितिन उल्हासराव सराफ / गोपाल मधुकर राठोड	67
17	संविधानिक दृष्टिकोनातून महिला सक्षमीकरणामध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका — प्रा. संतोष बन्सीलाल राठोड	72

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 250 (CCL)
ISSN : 2278-9308
October, 2020

Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem.

Dr. Santosh Bansod
'Suman Nivas' , Near LIC Colony,Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606
MO – 8275418986 email – bansodsantosh73@gmail.com

Dr B.R. Ambedkar have solution for all the problems which India was facing at that time. He have that view point by his deeprooted study of each and every subject. He solve all the problems of Indian society, economy, politics and also he also have solution for forgeign policy also. The Indian independence movement was a series of activities whose ultimate aim was to end the British Raj and encompassed activities and ideas aiming to end the east India company rule (1757 – 1857) and the British Raj (1847 – 1947) in the Indian subcontinent. The movement spanned a total of 90 years considering movement against British Empire. The Indian Independence movement includes both protest and militant (peaceful and violent) mechanisms to root out British administration from India. In 1947 India got Freedom from British Government but many states under in Rajeshahi, Nizams, Kashmir under Harising, Goa under Portuguese and many states under local Kings also.

The Portuguese conquest of Goa accurred when the governor of Portugese India Alfonso de Albuquerque Captured the city in 1510. Goa was not among the cities Albuquerque had received orders to conquer. He had only been ordered by the Portuguese king to capture Hormuz, Aden and Malacca.1510 – 1947 Goa under Portuguese government. In 1947 India got freedom from British Government. Many places in India was free but some states under local prince as well as some foreign government like as Goa also. Indian union emerged after the end of British government in India at 1947. The Indian government demanded the Portuguese to hand over their colonies to the Indian union refusal would lead to a conflict.

There had been foreign pockets in India among them was a Goa, ruled by Portuguese government since 1510. The question of talking possessions of Goa was confronting of Indian Political leaders since independence of India. Pandit Javaharlal Neharu being prime minister of India, had made a statement in Loksabha on 25 th August 1954 and expressed basic approach in regard to Goa. Neharuji expressed foreign policies of India in regards to various problems. Neharu and Dr. Babasaheb Ambedkar were emient leaders in India. Sice many years and had their own to settle the problems comforting to India. Gos was such a problem was to be settle using before coming to Dr Ambedkar's foreign policy and view of their eminent members of Rajyasabha. Pandit Neharu mentioned further that British got big part of India and Portuguese got very small part and that was Goa. He considered that Portuguese continued in Goa under shadow of British government otherwise it was impossible to continue for Pandit Neharu also blamed Portuguese that at the time to transfer of power which was going to take place, Hydrabad government and Portuguese government had some discussion between them so that Hydrabad government could get oulets from sea of Goa. As Pandit Neharu rejected the concept of war and believed in peaceful way . He felt

regreated of international observers on occount of it's failure to carry out talks between two countries and should sympathy to the struggle rised by nonGoan people. But advied them not to use any arms.

Now let's come to the foreign policy by the Dr. Babasaheb Ambedkar towards Goa. Which he expressed Rajyasabha during debate on international situations held on 26 th August 1954. He criticize foreign policy of Pandit Neharu and drew the attention of the Rajyasabha members, and suggest policy which gave the proposals to settles the Goa problem. There had been one common fact that both the Pandit Neharu and Dr. Ambedkar wanted Goa to be the part of Indian territory, freedom from Portuguese. Dr. Babasaheb Ambedkar supported Pandit Neharu to get Goa educated. However he recalled this in regard to education of Goa and brought to the notice of prime minister in the debate again. That the question was already brought to the notice of the primeminister. It appears from this thoughts that Dr. Babasaheb Ambedkar would have no objection to adopt the police action against the Portuguese government. If government of India had decided to do so.

Dr. Babasaheb Ambedkar clarified his views towards Goa problems that he did not prefere to accept observers nor did he agree with dominion status to Goa. However he preferred small police action to observers in talking possessions of Goa. Pandit Neharu was found accepted international observers but felt regreated having seen that no meeting was held. It is very important that Pandit Neharu accepted the way which was known as peaceful way. In this context Dr. Ambedkar suggested to valuable method to settle Goa problem. According to Dr. Ambedkar government of Inida and Portugal government would have succeded to settled Goa problem. If the adopted two methods, nobody would have dare to say that the Indian government had adopted any violent way. Thus we became aware of the Dr. Ambedkar's foreign policy towards Goa. That government of India had two ways – first the violent way and that is police action, second to adopt two methods of consisted of purches of Goa or Goa on lease. In said debate 26 th August 1954 held in Rajyasabha members of other mentioned also expressed their thoughts in their respective speeches. We know that Pandit Neharu ruled out the possibility of small police action. He refused this views in speech in Loksabha dated on 26 th July 1955. Pandit Neharu in Loksabha while replying about debate about Goa. Stated about methods to be applied to Goa. He clearly answered to Loksabha members and leaders who present at assembely hall. He ignored till police action or limited war and considerd that small or big actions carries same effect.

The report threw light on Dr. Ambedkar's foreign policy towards Goa. That the scheduled caste federation shall not accept the Satyagraha in Goa. The actrocities of Portugues will not be rulled out by Gandhian satyagraha because it was not applicalble in Goa.

Goa must be assist into India and Portuguese there in must leave Goa immediately , to achieve this aim. There are three solutions-

1) To purchase Goa from Portugal.
2) To take possession of Goa and on lease.
3) To fight war against Portuguese.

If these solutions are not acceptable to government of India, then India must tell the people of India about India's steps to be taken. By these issues Indian

government and Goa government solve the problem in 1961 and Goa became the part of Indian Union.

References –

1) Dongare V.R., *'Dr Babasaheb Ambedkar Ani Itihasmimansa'*, Devyani Prakashan Mumbai, First Edition, 2012.
2) Gaikwad Vijay , *'Dr. Ambedkar's foreign policy and its Relevance'*, Vaibhav Prakasan, Ulhasnagar,First edition 1999.
3) Gaikwad Dnyanraj, *'Mahamanav Dr Bheemrao Ramji Ambedkar'*, Ria Publication, Kolhapur, Fifth edition, 2013.
4) Gajbhiye Sheshraj, *'Dr Babasaheb Ambedkaranche Rajkiy Tatvadnyan' (Marathi)*, S.K. Publication, Nagpur.
5) Kasbe Raosaheb, *'Ambedkar and Marx'*, Sugava Publication, Pune, Second edition, 2006.
6) Moon Vasant (Editor), *'Source Material On Dr Babasaheb Ambedkar and The Movement of Untouchables Volume II'*, Education Department Government of Maharashtra, 1990
7) Nayyar kuldip, *' India : the critical years'*, Vikas publication, Delhi, First edition, 1971.
8) Neharu Javaharlal, *' Indias foreign policy - selected speeches'*, Government of India, August 1961.



Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

SJIFactor Project

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Aadhar Publications For Details www.aadharsocial.com **Price:Rs.500/**
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Mob- 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com

ISSN 0974-2832 1st JUNE-2019, Vol-VI, Issue-125

AN INTERNATIONAL LEVEL PEER REVIEWED REFERRED REGISTERED RESEARCH JOURNAL

Impact Factor-5.901(SJIF)

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

UGC APPROVED
&
LISTED-41004

शोध समीक्षा और मूल्यांकन



Editor
Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ugcjournal.com

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Editor's Office
A- 215, Moti Nagar,
Street No.7
Queens Road
Jaipur- 302021, Rajasthan,
India

Contact - 094 139 70 222
094 600 700 95

E-mail:
www.ugcjournal@gmail.com
dr.kbsingh@yahoo.Com
professor.kbsingh@gmail.Com

मुख्य सम्पादक — डॉ. कृष्णवीर सिंह का मताद्य अंतिम एवं कार्य पूर्णत: अवैतनिक है।
इस शोध पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन एवं मुद्रण में पूर्णत: सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि मानवीय भूल मानी जाये।
शोध पत्र की समस्त जिम्मेदारी शोधपत्र लेखक की होगी। इस सम्बन्ध में सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance **The selection and publication is done after recommendation of subject expert Refree.**
2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper The responsibility of the matter of research paper is entirely of author
3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e. **www.ugcjournal.com**
4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
6. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.
7. The research Journal will be sent by normal post. If the Journal is not received by the author of research paper then it will not the responsibility of Editor and publisher. The amount or registered post should be given by the author of research paper It will be not possible to sent second copy of research journal.

Contents

Law

Procedural Aspect of International
* Vivek Pareek 7-9

Journalism & Mass Communication

डिजिटल हमलों से पूर्व भी भारत एक राष्ट्र था
* डॉ. अंजनी कुमार झा 80-82

मीडिया एक उद्योग के रूप में: एक विश्लेषण
* निशात कुमार ** जय किशन गोस्वामी 94-96

Visual Art

Mandana Art: A Study from Households
* Dr. Nirupama Singh 10-12

Management

A Study of Housing Finance Offered
* Mr. Akhilesh Kumar ** Dr. A.P. Singh 19-20

Marketing

Study of The Effectiveness of Online
* Dr. Anil Tiwari 21-23

Physical Education

Nutritional And Balanced Diet
* Chander Sen Chauhan 33-35

Political Science

उत्तरांचल राज्य की मांग आन्दोलन
* डॉ. सुमित कुमार बंसल 71-72

प्राचीन भारत की न्यायिक व्यवस्था
* कविता महावर 75-76

महासमुद जिले में श्रम पलायन की समस्या
* डॉ. धर्मेन्द्र कुमार साहू 77-79

राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था
* शिवकरण निमल 83-85

2019 का लोकसभा चुनाव और चुनाव सुधार
* डॉ. हरबीर सिंह डागुर 117-118

Geography

Conclusion & Factor That Effect Marital
* Dr Neetu Yadav 44-45

राजस्थान में जलस्वावलम्बन अभियान
* सुनील कुमार ढाका 53-55

History

भारतीय शिक्षा मूल्य की ऐतिहासिक अभिधारणा
* डॉ0 निखिल विक्रम सिंह 48-50

राजे लखुजी जाधवराव – व्यक्ति आणि कार्य
* प्रा.डॉ. शरद आर. डवरे 143-145

पर्यटनाचा इतिहास– एक अभ्यास
* डॉ. एस. पी. बनसोड 146-147

Sociology

Awareness And Practice Regarding
* Sunil Dutt ** Aaradhana Bandhani 30-32

अनुसूचित जाति की महिलाओं की बदलती
* डॉ. सुमित्रा शर्मा 66-68

पंचायत राज और महिला सशक्तिकरण
* जय प्रकाश मीणा 126-127

महाराष्ट्राच्या शैक्षणिक कार्यात राजर्षी शाहु
* उज्वला टेकाडे 141-142

Commerce

Performance of Small Finance Banks
* Sumiran Kumar Rajak 13-15

Activity Based Learning In Commerce
* Dr. Yulendra K. Rajput
*Dr. Madhulika Agrawal 36-39

International Indexed Peer Reviewed, Referred, Research Journal, ISSN-0974-2832 (Print)E-ISSN-2320-5474, Published on 01 June ,2019 ISSUE-125

पर्यटनाचा इतिहास– एक अभ्यास

* डॉ. एस. पी. बनसोड

* सहयोगी प्राध्यापक,नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा

सार : पर्यटनाला प्राचीन इतिहास लाभलेला आहे. पर्यटनाच्या माध्यमातुन विविध ऐतिहासिक शोध लावण्यात मदत होत आहे शिवाय त्यामुळे मनोरंजन आणि शिक्षण ही प्रक्रिया सुध्दा घडीत आलेली दिसते. पर्यटनामुळे पर्यटनाच्या ठिकाणाच्या सोबी सुविधांचा विकास आणि रोजगार संधी निर्माण होतात आणि देशाच्या अर्थव्यवस्थेचा विकास होण्याला सुध्दा पर्यटनाचा हातभार लागत आहे. अशा स्थितीत अधिकाधिक प्रमाणात पर्यटक पर्यटन स्थळी आकर्षित करण्यासाठी त्या पर्यटन स्थळाचा इतिहास काय आहे याचा प्रसार प्रचार होणे काळाची गरज आहे.

प्रवास ही अतिप्राचीन कालापासून चालत आलेली घटना आहे. सुरुवातीच्या काळामध्ये मनात कोणताही उद्देश अथवा जाणीव न ठेवता प्रवास केला जात असे. वर्तमान काळामध्ये प्रवास करतांना विविध पध्दतीचा वापर करावा लागतो अशा पध्दती पूर्वीच्या काळी अस्तित्वात नव्हत्याऋ आजुसध्दा आनंद प्राप्त करण्यासाठी प्रवास करण्यात येतो. प्राचीन काळामध्ये प्रवास करणारे बहुतांश यात्रेकरु नवीन प्रदेशाचा शोध घेण्यासाठी प्रवास करीत असते. याशिवाय व्यापार हा त्या मागील प्रमुख हेतू होता. अशा प्रकारे जगात प्राचीन काळात एका वेगळया हेतूने सांस्कृतीक देवान घेवानीस प्रारंभ झाला.

खिस्तपूर्व 400 मध्ये बॅबीलोनियातील समेरीयानाचा गुप्त खजिन्याचा भोध आणि स्थानिक व दुरच्या ठिकाणची व्यापारातील प्रगती म्हणजे प्रवासाच्या आरंभाचे ऐतिहासिक युग होय. राजशुल्की यांनी या काळात सुरक्षित मार्गाचा विकास करुन प्रवासी व वाटसरु यांच्यासाठी अनेक ठिकाणी विश्रांतगृह बांधली आहेत.

प्रसिध्द कवी होमर यांच्या ओडीसी रचनेत ग्रीकांच्या भटकंती विषयी नोंदी सिध्दनाल. भारत व चीन यांनी केलेला प्रवास व्यापारी स्वरुपाचा होता. तसेच पूर्ण जगातुन पूर्वेकडे झालेले विविध दौरे व्यापारी स्वरुपाचे होते त्यामुळे विविध प्रदेशाचे शोध लागले यानंतर प्रवासाचा हेतू बदलत गेला प्रवास केवळ मनोरंजन म्हणून केला जात असे सर्वप्रथम मनोरंजनासाठी प्रवास करणारे रोमन प्रवासी होय. रोम साम्राज्यातील दळण–दळणाच्या प्रभावी सुविधाच्या उपलब्धतेमुळे पर्यटनास चालना मिळाली विशेषता 18 व्याशतकाच्या मध्यामध्ये युरोम खंडामध्ये भ्रमण करणे, समुद्रात पोहणे इत्यादी कार्यक्रम सुरु झाले असल्यामुळे किनारी भागात विश्रामगृह उभारले गेले व पुढे यातुनच आधुनिक पर्यटन अस्तित्वात आले. 18 व्या शतकात रेल्वे मार्गाचा उदय झाल्यामुळे विविध सेवा सुविधांचा ओघ सुरु झाला. पर्यटनाच्या दृष्टीने रेल्वेस महत्व प्राप्त झाले त्यामुळे नवीन जगाकडे लोकांचा प्रवास अधिक प्रमाणात वाढला. 1869 सुवेझ कालवा, 1914 पनामा कालवा पूर्ण झाल्याने सागरी मार्गाचे महत्व वाढीस लागले तसेच या शतकात इंजीनाचा शोध लागल्यामुळे मोटार व्यवसाय विकसित झाला व पुढे मोटार वाहतुकीमुळे पर्यटनाला चालना मिळाली.

दुस–या महायुध्दानंतर हवाई वाहतुक विकसित झाली त्यामुळे आंतरराष्ट्रीय पर्यटनात झपाटयाने प्रगती झाली. पर्यटन भारतीय संस्कृतीचा अविभाज्य घटक आहे. 'अतिथी देवोभव:' किंवा 'वसुधैव कुटूंबम्' या संकल्पनांचा विकास भारतीय संस्कृतीमध्ये झाला आहे आणि या कल्पनाचा पर्यटनासाठी प्रेरक आहेत. पर्यटन मुख्यत: राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय धार्मिक प्रसार आणि प्रचारावर आधारित आहे. तसेच पर्यटनामुळे आनंद प्राप्ती होते. म्हणुन बहुसंख्य लोक एका ठिकाणाहून दुस–या ठिकाणी भ्रमण करतात. हडप्पा व बॅबीलीयन संस्कृतीत प्रवासाद्ददलचे पुरावे मिळतात. सुमारे 4000 वर्षापूर्वी मानव व्यापारी हेतूने प्रवास करत होता. त्यावेळी जगातील विविध बाबींची माहिती प्रवासाच्या माध्यमातुन प्राप्त केली जात होती.

वंश परंपरागत भारतीय संस्कृतीने दिलेली देणगी म्हणजे पर्यटन होय. प्राचीन भारतात ऋषी व साधूसंत एका ठिकाणी फार काळ वास्तव्य करीत नसत त्यांचे निश्चित थांबण्याचे ठिकाण नव्हते स्थानिक लोकांकडून शिक्षेच्या स्वरुपात अन्न घेत असत व तात्काळ ते ठिकाण सोडुन दुस–या गावी जात असते. हिंदु धर्माचे संस्थापक शंकराचार्य यांनी रामेश्वर बदीनाथ, व्दारकापूरी आणि जगन्नाथपूरी या चार ठिकाणी हिंदू धर्माच्या विकास आणि प्रसारासाठी मठाची स्थापना केली. त्यामुळे हिंदू धर्मातील धार्मिक पर्यटन करण्याची संधी प्राप्त झाली अशाच प्रकारे बौध्द धर्मातील परंपरानुसार भिक्षूक धर्म प्रसारासाठी भारतीय उपखंडात सर्वत्र फिरले त्यामुळे भारताच्या शेजारील देशात धर्म प्रसार झाला. प्राचीन भारतात शिक्षण व ज्ञान घेण्यासाठी जगातुन लोक येत असत त्यात तक्षशिला व नालंदा हे मुख्य केंद्र होते. फहयान व ह्वेनसांग चीनी प्रवासी इबनबतुता व वास्को–द–गामा पार्शियान प्रवासी यानी आपल्या प्रवास वर्णनात अनेक नोंदी केल्या आहेत. भारतीय संस्कृतीमधील अगस्ती ऋषी यांचा प्रवास प्रसिध्द आहे.

अशाप्रकार पर्यटन केवळ मानवामध्येच नाही तर पशू पक्षी आणि जीव जंतु याच्यात सुध्दा दिसून येते कारण वर्तमान काळात सैबेरियन बर्फ प्रदेशातून हिवाळयात पक्षाचे स्थलांतर मध्य आशियाकडे होत असल्याचे दिसून येते. हवामानातील बदलामुळे पुन्हा प्रवास होत असल्याचे दिसून येते. म्हणजेच प्राणी आणि पक्षी याच्यात सुध्दा पर्यटनाची परंपरा दिसून येते. यावरुन

असे दिसून येते की, संपूर्ण जीव जगतात प्राचीन काळापासून पर्यटन परंपरा चालत आलेली आहे.

वास्तविक पर्यटनाचा इतिहास हा मानवाच्या उदय व विकास प्रक्रियेशी जुळलेला आहे. मानव जन्मत: पर्यटक आहे कारण मानव लहान बालकाच्या भूमिकेत असताना निसर्गातील विविध घटनामुळे आकर्षित होतो. यामुळे प्रथमत: घर सोडून बाहेर जाण्यास सतत प्रयत्न करतो. घरासभोवतालच्या वातावरणाचा अनुभव घेतल्यानंतर शिक्षणासाठी मित्रासमवेत विविध खेळ खेळण्यासाठी तसेच आई वडीलासमवेत बाजार, यात्रा, उत्सव व इ विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमात सहभागी होतो. शारिरीक व बौध्दीक विकासाच्या प्रगतीनुसार व आपल्या आवडीनुसार निसर्गाचा आनंद घेण्यासाठी सतत प्रवास करतो. यातुन मंदिर मस्जिद गुरुव्दारा, जलाशय, नदी उद्यान इ. सांस्कृतिक, धार्मिक व नैसर्गिक स्थळापर्यंत पोहचतो. त्यामुळे या घटकांचे ज्ञान झाल्यामुळे त्याचे कुतुहूल वाढते. त्यातुन पुढे पर्वत, पठार, मैदान, गुहा, धबधबे नदीप्रवाह इ. नैसर्गिक घटकांकडे आनंद घेण्यासाठी जातो व त्यातील गुढ शोधण्याचे प्रयत्न करतो.

अनादीकाळापासून मानव जीवन जगण्यासाठी सतत धडपडत आहे अन्न व निवारा यासाठी सतत भटकत आलेला आहे काळाच्या ओघात संस्कृतिचा विकास व मानवाने निसर्गातील विविध घटकांचे ज्ञान घेवुन गरजेनुसार निवारा, मंदिर, मस्जिद इत्यादींची निर्मिती केली व त्यातुन स्थापत्यकला उदयास आली. [illegible] आरोग्यासाठी विविध वनस्पतीचा औशधी म्हणून उपयोग करु लागला त्यामुळे मानवाला वन्यजीवन व उपलब्ध साधनांचे महत्व पटले त्यातुन जगले अभयारण्य, प्राणी संग्रहालय, वृक्ष संग्रहालय, राष्ट्रीय उद्यान इत्यादी निर्माण केले. नैसर्गिक वृक्ष घटकासाठी उद्यान व संस्कृती दृश्य घटकासाठी संग्रहालय, उद्योग व्यवसायाचे महत्व नैसर्गिक साधन उर्जेचे रुप यातुन गरम पाण्याचे झरे, धबधबे इत्यादी व इत्यादी धार्मिक यात्रेचे महत्व निर्माण झाले व त्यातुन पर्यटनाचे मुख्य रुप पुढे आले.

[illegible] पर्यटन विकासात योगदान देणारे महत्वाचे घटक आहे हिंदू बौध्द जैन व शिख धर्म यांचे महत्व देश आहे बौध्द धर्मामुळे श्रीलंका, थायलंड, म्यानमार, इंडोनेशिया, व्हिएतनाम, कोरीया, कंबोडिया इत्यादी देशांची उदरनिर्वाह चालतो आहेत तर हिंदूधर्म हे जगण्याचे तत्वज्ञान म्हणून उदयास येत आहे. हिंदू धर्मात प्रत्येक थोड्या अंतरावर तीर्थ क्षेत्रे आहेत. धार्मिक यात्रेसाठी महत्व असल्यामुळे वेरुळ, वेरुळ, अजिंठा, घारापुरी, [illegible] इत्यादी पर्यटनस्थळे निर्माण झाली. [illegible] किल्ले व स्मारके यांचे विविध प्रकार तसेच पेठा यामुळे पर्यटन विकासाला चालना मिळाली आहे.

संदर्भ ग्रंथ

1. भोसले प्रकाशन प्रवास पर्यटनाचे नवे पैलू, पुणे [illegible]
2. खतीब के. ए. 2016 पर्यटन भूगोल पुणे [illegible]
3. माटे एम एस प्राचीन भारतीय कला
4. Bhatia A. K. Tourism in India. Delhi Sterling Publishers
5. Mahajan L. C. and others, Tourism Business Delhi King Books
6. Anand M. M - Tourism and Hotal Industry in India New Delhi Sterling Publishers
7. Sathyadev T. K and other, Encyclopaedia of Tourism pecific New Delhi Books International
8. Raina A. K. and other, Tourism Destination Management Principles and Practices New Delhi Kanishka Publishers Distributors.
9. www.ugcjournal com






Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:

Dr. N. J. Meshram
Principal
Y.D.V.D. Arts, Commerce &
Science College, Teosa ,
Dist. Amravati.

Executive Editor :

Dr. Kusmendra Sontakke
Head,Deptt.of History
Y.D.V.D. Arts, Commerce &
Science College, Teosa ,
Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalay
Badnera

Shri Shivaji Education Societys Amravati

Y.D.V.D. Arts, Commerce & Science College, Teosa

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

B.Aadhar *International Multidisciplinary Research Journal*
Impact Factor - ((SJIF) -7.675
Special Issue
ISSN : 2278-9308
March 2020

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	The Contribution of Women to the Indian English Novel : A Critical Study	Shrikant Govindsingh Thakur	1
2	The conductometric measurement of [ptcp] and [mtcp] at various molar concentrations	S.O.Mohod[a], D. T. Tayade[b]*, N.J.Meshram, M.S.Lunge.	5
3	Women's Empowerment In India an Analytical Overview	Mr. Chandrakant B. Dhumale.	10
4	Women Empowerment	Dr. Meena K. Rokade	14
5	A Study on Issues and Challenges of Women Empowerment in India	Prof. Rahul G. Mahure.	17
6	Contribution Of Women In Modern Science And Technology	Prof.Suresh N.Gawai	22
7	Role of Libraries on Women Empowerment in Knowledge Society	Ravindra Vijay Patil	28
8	Necessary steps for Empowerment of Women and Girls in India	Dr.Dinesh A. Gundawar	33
9	Women in Development: A New Socio-Economic Perspective	Dr K. R. Nagulkar	36
10	A Study of Self Confidence of Wives and Adult Daughters of Alcoholics	Dr. Mina Kalele	39
11	Women Emporwerment And Co-Operatives	Ku. Ujwala Tekade	43
12	Food Consumption Pattern and Dietary Habits of Overweight Pregnant Women	Sharmila Kubde	46
13	Women Empowerment	Dr. Parag Kukade	50
14	आधुनिक काळात भारतीय कला आणि संस्कृतीत महिलांचे योगदान	प्रा .अमिता मनोज चौधरी	55
15	महाराष्ट्रातील राजकारणातील स्त्री नेतृत्व-दिशा व दशा	प्रा. डॉ.संतोष बन्सोड	59
16	महानुभाव पंथीय आद्य स्त्री आचार्य कमळाऊसा : चरित्र व कर्तृत्व	डॉ. अण्णा वैद्य	62
17	श्रीमति इंदिरा गांधी यांचे भारताच्या विकासातील योगदान एक अध्ययन	प्रा.डॉ. व्ही.जी.वसू	65
18	समाज सेविका मदर तेरेसा	डॉ. विजयसिंग किसनराव पवार	68
19	भारतीय साहित्यातील महिलांचे योगदान	प्रा. विनायक नथुराम तत्रे	70
20	मराठी सिनेसृष्टीतील स्त्री कलावंतांचा सहभाग	प्रा. डॉ. संजय एन. तुरूकमाने	75
21	मराठी विज्ञान कथालेखिकांचे विज्ञान साहित्यात योगदान	डॉ. सुलभा खर्चे / प्रा. रूपा ठाकरे	77

B.Aadhar *International Multidisciplinary Research Journal*
Impact Factor - ((SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
March 2020

महाराष्ट्रातील राजकारणातील स्त्री नेतृत्व-दिशा व दशा

प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड
एल.आय.सी. कॉलनीजवळ, रामनगर

सारांश :

भारतात प्राचीन काळापासून 'स्थानिक संस्था' अस्तित्वात होत्या. मौर्य व गुप्त राजवट तसेच हर्ष कालखंडामध्ये 'ग्रामसभा' व पंचायतीचा विकास झाला. कालांतराने ग्रामसभा व पंचायतीचे रूपांतर गणराज्यात झाले. मुस्लीम कालखंडात पंचायतीराज संस्थांची प्रगती खुंटल्याचे आढळते. १८७० च्या कायद्यानुसार लॉर्ड मेयोने भारतात सर्वप्रथम स्थानिक स्वराज्य संस्था निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला. लॉर्ड रिपन यांना भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा जनक संबोधले जाते. कारण की, ब्रिटीश राजवटीत १८८२ साली केलेल्या ठरावाने भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा कायदा संमत झाला. ब्रिटीश कालखंडात भारतात स्थानिक स्वराज्य संस्थांची केवळ संख्यात्मक वाढ झाली. गुणात्मक झाली नाही. स्वातंत्र्य भारतात बलवंतराव मेहता समितीने लोकशाही सत्तेचे विकेंद्रीकरण केले. १९६२ मध्ये राजस्थानने पंचायती राजचा स्विकार केला. भारतात १९९३ मध्ये महिला राजकीय सबलीकरण करण्याच्या दृष्टीने घटनादुरुस्ती केली. ही क्रांतीकारक घटना होती. यामुळे कधीही उंबरठा न ओलांडणाऱ्या स्त्रिया मोठया प्रमाणात निवडणुका लढवितात. प्रचार करतात राज्य कारभार पाहतात. मात्र लोकसंख्येच्या दृष्टीने महिलांचे राजकारण अल्प प्रमाण आहे.

निसर्गतःच एकुण लोकसंख्येच्या अर्धी लोकसंख्या महिलांची आहे. कायदेशीरदृष्टया त्यांना पुरुषाइतकेच अधिकार असले तरीही वास्तवात त्यांची स्थिती खूप दयनीय आहे. ही स्थिती केवळ आजची नसून प्राचीनकाळापासून महिलांना कनिष्ठ दर्जा देण्यात आला आहे. सामाजिक, आर्थिक, राजकीय दृष्टीकोनातून त्यांचे दुय्यम स्थान परंपरेने आजही दिसल्याचे आढळते. महात्मा फुले, लोकहितवादी, आगरकर, महर्षी कर्वे या समाजसुधारकांनी महाराष्ट्रात स्त्रियांचा दर्जा सुधारण्यासाठी केलेल्या प्रयत्नामुळे मागील शतकाच्या शेवटापासून महिलांना समाजात विशिष्ट स्थान प्राप्त होत आले.

राजकारण हे सर्वसाधारणपणे पुरुषी वर्चस्व असलेले क्षेत्र मानले जाते तरी जागतिक राजकारणात अनेक स्त्री नेत्या प्रसिध्द आहेत. उणीपुरी ७० वर्षांची लोकशाही असलेला भारत देश सुध्दा याला अपवाद नाही. भारतात पंतप्रधान, राष्ट्रपती, मुख्यमंत्री इतकेच नव्हेतर परराष्ट्रमंत्री, संरक्षणमंत्री, अर्थमंत्रीपद भूषविले आहे. अगदी ब्रिटीश कालखंडापासून आधुनिक राजकारणापर्यंत अनेक स्त्रिया अग्रेसर आहेत. त्यांनी घेतलेल्या निर्णयासाठी, धोरणासाठी, नेतृत्व गुणासाठी त्या प्रसिध्द आहेत.

महाराष्ट्रात स्त्री नेतृत्वाची परंपरा आहे. जिजामाता, राणी ताराबाई ते स्वातंत्र्यपूर्व काळापासून समाजसुधारणा चळवळीमध्ये अग्रक्रमाने नाव घेतले जाते. त्या सावित्रीबाई फूले, रमाबाई रानडे, विजयालक्ष्मी पंडित, सरोजीनी नायडू, इंदिरा गांधी, जयंतीबेन मेहता इत्यादी विशेष म्हणजे ज्या काळात स्त्रिया राजकारणात सक्रीय होत्या. त्या काळात स्त्रियांसाठी ३३ टक्के आरक्षण हा विचारही मांडला नव्हता. ७३ व्या व ७४ व्या राज्यघटनेच्या दुरुस्तीनंतर स्त्रियांसाठी ३३ टक्के आरक्षण देण्याची तरतूद केली लोकसभा, विधानसभा आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये हे आरक्षण ५० टक्के असावे या मागणीपर्यंत राजकारण पोहचले. या प्रक्रियेने स्त्रियांना राजकारणात सहभागी होण्याच्या दृष्टीकोनातच केले. पंचायत राज कायद्यामुळे ग्रामीण भागातील राजकीय चित्र बदलु लागले आहे. स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये स्त्रियांचा सहभाग मोठया प्रमाणावर वाढला आहे. ग्रामपंचायतीची सभासद, सरपंच, जिल्हाध्यक्ष, महापौर या पदापासून मंत्री पदापर्यंत महिला पोहचल्या आहेत. आदिवासी दलित स्त्रिया ही राजकारणात सक्रीय सहभागी होत आहेत. गावांचा विकास, पाणी, शाळा, रस्ते, दारूबंदी यासारखे ज्वलंत विषय महिलांनी पुढे आणले आहेत.

शब्दकोष : स्थानिक संस्था, गणराज्य, पंचायत राज, जिजामाता, सावित्रीबाई, आदिवासी, दारूबंदी इत्यादी.

विषयाचे महत्व :

भारतात महाराष्ट्र राज्याची एक वेगळीच छाप आहे. मग ते औद्योगिकीकरण, शैक्षणिक, समाजकारण वा राजकारण असो, सर्वच क्षेत्रात महाराष्ट्र एका उंचीवर आहे. महाराष्ट्रातील स्त्रियांची राजकारणातील घौडदौड महत्वाची आहे. महाराष्ट्रातील सक्षम नेतृत्व म्हणुन योगदान महत्वाचे आहे. मात्र राज्य विधान मंडळात आणि संसदेत त्यांचे प्रमाण नगण्य आहे. ही खरोखरच खेदजनक बाब आहे. प्रस्तुत शोध निबंधातुन वर्तमानकाळातील महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा सहभागाचा शोध व समस्या जाणुन घेण्याचा प्रयत्न केला जाईल.

अध्ययनाचा उद्देश :

१. महिला सबलीकरणाची संकल्पना स्पष्ट करणे.
२. जागतिक पातळीवर भारतीय महिलांचे स्थान अभ्यासणे.
३. महाराष्ट्रातील राजकारणातील महिलांचा सहभागांचा आढावा घेणे.
४. महाराष्ट्रातील ग्रामीण राजकारणातील स्त्रीयांचा सहभाग अभ्यासणे.
५. राजकारणातील महिलांना आपली भूमिका पार पाडतांना अनेक अडचणीला तोंड द्यावे लागते. याचा अभ्यास करणे.

संशोधन पध्दती :

सदर संशोधन महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा अभ्यास हा विषय आहे. त्यासाठी ऐतिहासिक, नोंदी पध्दती, त्यांच्याविषयी नोंदविलेली मते व नोंदी व माहीती पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

विषय विवेचन :

स्वातंत्र्यपूर्व काळात महात्मा गांधीच्या नेतृत्वाखाली कॉंग्रेसने उभारलेल्या स्वातंत्र्य लढयात महाराष्ट्रातील अनेक मराठी कुटुंबातील स्त्रिया सहभागी झाल्या होत्या. अहिल्या रांगणेकर, मृणाल गोरे, प्रमिला दंडवते, कमल देसाई अश्या अनेक तरूणींनी आधी कॉंग्रेस, नंतर सेवा दल, समाजवादी पक्ष, साम्यवादी पक्ष यांच्या माध्यमातून आपली राजकीय कारकिर्द उभी केली. महाराष्ट्रातील या स्त्रियांनी स्वातंत्र्यानंतर लोकशाहीकरणाच्या प्रक्रियेत भाग घेतला. संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ तत्सम अनेक चळवळीत सहभागी होत्या. या स्त्री नेत्यानी वाढती महागाई, घरांच्या समस्या, पिण्याच्या पाण्याचे प्रश्न, कामगारांच्या समस्या, स्त्रियांचे हक्क, हिंदू कोड बिल, गोवा मुक्तिसंग्राम आणिबाणी अश्या विविध मुद्यांवरती ठोस भूमिका घेऊन लोकचळवळ उभी करण्याचा प्रयत्न केला. भाववाढीविरोधात लाटणे मोर्चा, दलित आदिवासींच्या समस्या सोडविण्याचा प्रश्न असे अनेक मुद्दे या काळात गाजले. महाराष्ट्राच्या राजकारणात स्त्री नेत्यांच्या भूमिकेला महत्व प्राप्त होऊ लागले.

स्वातंत्र्योत्तर राजकारणातील महिलांचा सहभाग :

१९६२ च्या निवडणुकीत ज्यांनी विधी मंडळातील महिलांच्या प्रतिनिधीत्वाची मुहूर्तमेढ रोवली, त्यात देशाच्या पहिल्या महिला राष्ट्रपती श्रीमती प्रतिभाताई पाटील यांचे नाव अग्रक्रमाने घ्यावे लागते. संयुक्त महाराष्ट्र बनल्यानंतर १९६२ ला प्रथम निवडणुक झाली. ती २६४ जागांसाठी होती. ११६१ उमेदवार रिंगणात होते. या निवडणुकीत ३६ महिला उभ्या होत्या. त्यापैकी १३ महिला विजयी झाल्या अशी निवडणुक आयोगाकडे नोंद आहे.

१९६२-६७ विधानसभेत ७ महिला आमदार होत्या. १९७२ मध्ये एकुण २८ महिलांनी आमदार निवडून येण्यात उच्चांक गाठला. पुढे महिला आमदारांची संख्या कमी झाली. २००४-०९ मध्ये अवघ्या ११ महिला विधानसभेत निवडुन आल्या. राज्यसभा आणि विधानपरिषदेत ५ आमदार आहेत. एकुण ग्रामपंचायती २७,८९३ आहेत. त्यापैकी महिला सरपंच ९,३२५ ऐवढे आहेत. ३५१ पंचायत समित्यापैकी ११६ महिला अध्यक्ष आहेत. ३३ जिल्हा परिषदेत एकुण ७७ महिला अध्यक्ष आहेत.१९७० च्या नंतर राजकारणातील स्त्रियांचे नेतृत्व आणि कौतुक कमी झाले. महाराष्ट्रातील सहकारी चळवळी स्थळझाल्या.

सामाजिक चळवळी व राजकारण भिन्नता :

राजकारणातील महिलांचा सहभाग आपल्याला तिहेरी पध्दतीने मांडता येते. एक म्हणजे प्रत्यक्ष निवडणुकामध्ये उभे राहणे, निवडुन येणे, दुसरे राजकीय पक्षांमधील, राजकीय घडामोडीबद्दल त्यांचा सहभाग आणि तिसरे म्हणजे प्रत्यक्ष मतदानातील सहभागी भागीदारी आहे. गेल्या काही वर्षात अनेक सामाजिक संघटनांनी राजकारणातील महिलांचा सहभाग संख्यात्मक तसेच गुणात्मक वाढण्यासाठी प्रयत्न केलेले आहे. महिला मतदारामध्ये जाणीवजागृती वाढली आहे. सर्व क्षेत्रात सहजपणे वावरणारी स्त्री-राजकारण-निवडणुका हे माझे क्षेत्र नाही या मानसिकतेतून बाहेर पडली आहे. ती अधिक सजग झाली आहे. स्वत:चे निर्णय घेण्याची क्षमता वाढली आहे. लोकशाहीला अधिक समृध्द आणि परिपक्व करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न करीत आहे.

राजकारणात पैसा आणि गुंडागर्दी वाढल्यामुळे सहकारी साखर कारखाने महाराष्ट्रातील राजकीय सत्तेचे आधार झाल्यामुळे स्त्रियांच्या सहभागाला मर्यादा येऊ लागल. राज्यपातळीवर सहकारी, कामगार चळवळी, शेतकरी चळवळी, संरक्षण, परराष्ट्र व्यवहार पुरुषप्रधान क्षेत्रे मानली जाऊ लागली. स्त्रियांच्या राजकारणातील सहभाग स्त्री प्रश्नापुरता केंद्रीत झाला.

सामाजिक चळवळी व राजकारण हळूहळु वेगळे पडत गेले. महाराष्ट्रातील १९८०-९० दशकात राजकारणाची दिशा बदलली. शेती, गिरणी, कामगार, विकास, दळणवळण, वेगळा विदर्भ, बेळगांव हे ठोस उत्तर नसणारे प्रश्न निवडणुकीच्या काळात मांडले जाऊ लागले. या प्रश्नाच्या बुरख्याआड जाती-धर्माचे प्रश्न पुढे आले. या राजकीय बदलाच्या

काणखंडात स्त्रियांच्या प्रश्नाला, मताला व भूमिकेला स्थान नव्हते. पुढे महाराष्ट्राच्या राजकारणात पंचायत राजव्यवस्थेसाठी स्त्रियांसाठी ५० टक्के आरक्षण लागु झाले. ग्रामीण व शहरी भागातील राजकारणाचा चेहरा-मोहरा बदलला.

महाराष्ट्रातील वर्तमानकालीन स्त्री नेतृत्व :

सध्याच्या महाराष्ट्रात तरूण स्त्री नेतृत्व पुढे आले. सुप्रिया सुळे, पंकजा मुंडे, पूनम महाजन, हीना गावीत, रक्षा खडसे, भावना गवळी, प्रीतम मुंडे, प्रिया दत्त, प्रणिती शिंदे आहेत. परंतु त्यांची राजकारणातील ओळख मर्यादित आहे. त्याचबरोबर रजनीताई पाटील, अनिता चव्हान, डॉ. निलम गोरे, प्रा. फौजिया खान, विमल मुंदडा, मुन्निला मोराळे, मीरा रेंगे, सुर्यकांता पाटील, यशोमती ठाकूर, नवनीत राणा, पुष्पा आत्राम यातील बऱ्याच स्त्रियांची ओळख पद, पक्ष आणि घराण्यापुरतीच आहे. एक स्वतंत्र स्त्री म्हणून ओळख तयार झाली नाही. निवडणुकीत मिळविलेले यश हीच त्यांची ओळख आहे. सक्षम नेतृत्व देण्याची क्षमता अशी ओळख आहे. सक्षम नेतृत्व देण्याची क्षमता अशी ओळख तयार व्हायची आहे.

महाराष्ट्रातील राजकीय क्षेत्रातील महिलांच्या सहभागाचा विचार केल्यास महिलांचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. सध्या डॉ. शोभा बच्छाव, रंजना कुल, कमल ढोले पाटील, शोभा फडणवीस, रेखा खेडकर या धडाडीने काम करीत आहेत. राजकारणासारख्या डावपेचाच्या क्षेत्रात यशस्वीपणे वाटचाल करीत आहे. त्यांनी आपल्या कर्तुत्वाने महाराष्ट्राच्या राजकारणात एक वेगळे स्थान प्राप्त केले आहे.

निष्कर्ष :

१. देशाच्या व राज्याच्या राजकारणात महिलांचा सहभाग वाढला आहे.
२. महाराष्ट्राच्या राजकारणात महिला प्रस्थापित राजकीय नेत्याच्या वारसदार आहेत.
३. सर्वसामान्य महिला नेतृत्व पुढे आले नाही.
४. सर्वसामान्य महिलांचा राजकीय सहभाग वाढविणे गरजेचे आहे.
५. देशाच्या प्रगतीसाठी महिला सक्षम झाला पाहीजे यासाठी प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.
६. महिलांना राजकीय सबलीकरणाकरिता जनजागृती कायदे, प्रसारमाध्यमाव्दारे जागृती, कायद्याव्दारे संरक्षण व विकास करणे गरजेचे आहे.
७. ग्रामीण भागातील सर्वांगीण सदस्यांची सोडवणुक महिलांच्या नेतृत्वामुळे शक्य झाली आहे.

सारांश :

आधीच्या काळातील स्त्री नेतृत्व समाजकारणाकडून राजकारणाकडे तर आताचे स्त्री नेतृत्व राजकीय नाम मिळविण्यासाठी समाजकारण करते. त्यामुळे त्यांचा प्रवास सोयीस्कररित्या राजकारणातून समाजकारणाकडे जाताना दिसत आहे. पुर्वीच्या स्त्री नेतृत्वाने विचारप्रणाली, तत्व, धारणा यांच्या आधारावर राजकारणात प्रवेश केला तर आधुनिक नेतृत्वासाठी पक्षप्रणाली हीच विचारप्रणाली आहे आणि पक्षाची उद्दिष्टये साध्य करणे हाच त्यांच्या राजकारणाचा हेतू दिसतो. परिणामी समाजाचा विचार हा दुय्यम ठरतो. वेगवेगळया पातळीवर काम करीत असतांना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करण्यापेक्षा केंद्रामध्ये संसद सदस्य म्हणून किंवा महिला विकास, बालकल्याण असे खाते मिळविणे हेच उद्दिष्टये आहे. निवडणुकीतील यशामुळे प्रसिध्दी मिळालेल्या या स्त्रिया राजकारणातील पद आणि त्यांच्या घराण्याची किंवा पक्षाची सत्ता गेली तर कदाचित विस्मरणाच्या पडद्याआड जातील हाच खरा धोका आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

१. माधवी, कवी : महिला कल्याण आणि विकास, विद्या प्रकाशन, नागपूर २००८.
२. भागवत विद्युत : स्त्री प्रश्नांची वाटचाल, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे ३०.
३. रानडे, प्रतिभा : एकोणिसाव्या शतकातील स्त्री प्रश्नांची चर्चा, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे २००५.
४. मुळे, अंजली, गिताली वि. म. : स्त्री चळवळ आणि राजकारण, समतेसाठी सत्तासंघर्ष, लोकवाङ्मय गृह मुंबई.
५. गोखे, निलीमा : समाज आणि महिला, पद्मगंधा प्रकाशन पुणे.
६. देवळाणकर, शैलेन्द्र : समकालीन जागतिक राजकारण, विद्या बुक्स पब्लीकेशन, औरंगाबाद, तिसरी आवृत्ती, २०११.
७. पळसुले, वैभवी : २०१९ स्त्री नेतृत्वाच्या बदलत्या दिशा, चतुरंग (लोकसत्ता), २९ ऑक्टो. २०१९.
८. बडे, विलास : महिला राज, दैनिक लोकसत्ता, १९ मार्च २०१०.

तुमच्या Ph.D. प्रबंधाचे पुस्तकात रूपांतर करून मिळेल, व ते जगभर पोहोचेल...

More Details – 9595560278,





Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

Principal
Narayanrao Ram Mahavidyalaya
Baloora

Aadhar Publications For Details www.aadharsocial.com **Price:Rs.500/**
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Mob– 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Special Issue- February- 2020
(Vol- 05

Sahakar Maharshi Late Bhaskaarrao Shingne
Smruti Arogya and Shikshan Prasarak Mandal's

SAHAKAR MAHARSHI LATE BHASKARRAO SHINGE ARTS COLLEGE,

KHAMGAON, DIST.BULDHANA (M.S.)

(Affilliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati.)



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

• Organizes •

One Day Inter Disciplinary National Conference on

HUMANITIES, CULTURE AND SOCIETY

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue-05, February 2020

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne
Smruti Arogya And Shikshan Prasarak Mandal's

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College,

Khamgaon, Dist.Buldhana

Organizes

One Day Interdisciplinary National Conference On

Humanities, Culture And Society

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

14) Culture and Language: Implications for Second Language Learning
Dr. Pravin R. Waghmare, Akola ||60

15) Voice of the Subaltern in Literature
Rahul P Ghuge, Akola ||65

16) Humanism In Tagore's Literary Work
Rupesh Prakash Rede, Wardha ||67

17) Traumatic Impact of Social Turmoil of the Late 1960 on Black Community ...
Shyam M. Gedam, Amravati ||69

18) Agrarian Crisis In Maharashtra And Its Social Effect
Dr. Chetana Vishwanathrao Donglikar, Beed ||73

19) Mahesh Dattani as a Social Critic with Reference to Play 'Seven Steps ...
Dimple D. Mapari, Akola ||77

20) Subaltern Historiography in Indian Context
Dr. Ashwinkumar Rathod, Buldhana ||80

21) Spiritual Humanism of Tagore: An Influence of Upnishadas
Dr. jagruti S. Vyas, Amravati ||84

22) Knowledge Management System In College Library
Dr. V. P. Ubhale, Wanoja ||88

23) Knowledge Management in Academic Libraries
Pravin Anantrao Joshi, Buldana ||93

24) Mahasweta Devi's Draupadi As A Symbol Of Subaltern Aggression
Shrikant Govindsingh Thakur, Ujjain ||97

25) अनुसूचित जातीच्या महिला व मानवाधिकार
डॉ. दिपक रायोजी दामोदर, वाशीम ||101

26) राजा राममोहन रॉय यांचे सामाजिक चळवळीतील कार्य
डॉ. मंजुषा ह. धापुडकर, अमरावती ||103

27) ब्रिटिशांचे आर्थिक धोरण व त्याचा भारतावर झालेला प्रभाव : एक अध्ययन
प्रा. डॉ. संतोष वनसोड, अमरावती ||105

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27

ब्रिटिशांचे आर्थिक धोरण व त्याचा भारतावर झालेला प्रभाव : एक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड
विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग,
श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय,
बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी सरकारच्या काळात आर्थिक क्षेत्रात व व्यापार क्षेत्रातील अनिर्बंध व्यापाराच्या धोरणाने भारतीय उद्योगधंद्याचा नायनाट झाला व औद्योगिक भांडवलशाहीचे वित्तीय भांडवलशाहीत जे रूपांतर झाले आणि ब्रिटिशांनी भारताचे केलेले अमानुष आर्थिक शोषण व यामुळे भारताची ढासळलेली अर्थव्यवस्था व त्याचा आधुनिक भारतावर झालेला प्रभाव याचे विश्लेषणात्मक अध्ययन करणे प्रस्तुत शोध निबंधाचा मुळ उद्देश आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे खालीलप्रमाणे आहेत-

१. भारतातील आधुनिक साम्राज्यवादाचे स्वरूपाचे अध्ययन करणे.
२. आधुनिक काळातील भारतातील साम्राज्यशाहीच्या गतिमान कारणांचे विश्लेषण करणे.
३. औद्योगिक भांडवलशाहीचे वित्तीय भांडवलशाहीत झालेले रूपांतर, त्याची जडणघडण व तिचे परिणाम समजावून घेणे.
४. ब्रिटिशांनी भारताचे केलेले आर्थिक शोषण व त्याचा भारतीय बाजार अर्थव्यवस्थेवर झालेल्या परिणामांचे विश्लेषण करणे.
५. अनिर्बंध व्यापार व औद्योगीक भांडवलशाही ह्यांच्या शोषणाचा आधुनिक भारतावर झालेल्या परिणामांचे विश्लेषण करणे.

शासन आणि शोषण हे सहप्रवासी असतात.
लॉर्ड कर्झन, १९०५

भारताची एकोणिसाव्या शतकात स्पष्टपणे औद्योगिक भांडवलाच्या साहाय्याने जे शोषण केले जात होते, त्यात जुन्या प्रत्यक्ष लूटमारीच्या मार्गांचा समावेश होताच, फक्त ते अधिक प्रभावी करण्यात येऊन त्यांचे रूपांतर करण्यात आले. सरकारी अधिकारी जिला 'देणगी' म्हणून म्हणत, तिच्या रूपाने लाखो रुपये भारतातून इंग्लंडला पाठवले जात होते व कधी तिला 'घरचा खर्च' (Home Charge) म्हणून नाव देत तर कधी खासगी शिल्लक म्हणून ती पाठवली जाई व तिच्या मोबदल्यात इंग्लंडमधून भारतात काहीच येत नसे. हा कार्यक्रम एकोणिसाव्या शतकात सातत्याने व्यापाराबरोबर चालू होता. विसाव्या शतकात व्यापार थोडा कमी झाला होता तरी लुटीची गती वाढली होती.

१८४८ साली पश्चिम व पूर्व इंडिजमधील साखर व कॉफी ह्यांच्या लागवडीसंबंधात हाऊस ऑफ कॉमन्सने नेमलेल्या सिलेक्ट कमिटीसमोर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे एक डायरेक्टर कर्नल साइवस ह्यांनी वरील 'देणगी' ही दरसाल एक्केचाळीस लाख पौंड असते, असे सांगितले. आयातीपेक्षा निर्यात जास्त असल्याकारणानेच भारत एवढी देणगीची रक्कम देऊ शकला. त्याचप्रमाणे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचा एक व्यापारी एन. अलेक्झांडर याने सिलेक्ट कमिटीला असे निवेदन केले की, इ.स. १८४७ पर्यंत भारताची आयात साठ लाख पौंडांची होती, तर निर्यात नव्वद लाख पौंडांची होती. ह्या दोहोंतील फरक म्हणजे जवळजवळ चाळीस लाख पौंड देणगीच्या स्वरूपाने कंपनीने भारतातून आणले.

१८५१ ते १९०१ ह्या काळात कंपनीच्या अधिकाऱ्यांनी खासगी रीतीने इंग्लंडला पाठविलेले पैसे सोडून, 'घरचा खर्च' म्हणजेच इंग्लंडचा खर्च म्हणून जे पैसे पाठविले ते २.५ दशलक्ष पौंडांवरून १७.३ दशलक्ष पौंडांवर गेले होते, म्हणजेच सातपट वाढले होते. त्यांपैकी दोन दशलक्ष पौंड माल खरेदीच्या नावाने राखण्यात होते. १९१३ ते १९१४ च्या सुमारास ही रक्कम १९.४ दशलक्ष पौंडांवर पोहोचली होती. त्यांपैकी फक्त १.५ दशलक्ष पौंड माल खरेदीकरिता दाखवले होते. १९३३-३४ मध्ये सरकारी हिशोबात इंग्लंडमधील खर्च म्हणून २७.५ दशलक्ष पौंड दाखवण्यात आले होते. त्यांपैकी १.५ दशलक्ष पौंड माल खरेदीसाठी होते. रुपयाच्या हुंडणावळीत झालेला फरक आणि भारतातील वस्तूंच्या किमतीत झालेला सुमार ह्यांचा समन्वय घातल्यावर भारतावर जो बोजा पडला, तो १९१४ च्या किमतीत, तीस दशलक्ष पौंडांचा होता.

१८५१ ते १९०१ ह्या काळात भारताच्या निर्यातीतील वाढ तिप्पट झाली म्हणजेच ती ३.३ दशलक्षांवरून अकरा दशलक्ष पौंडांवर गेली. त्यात मालाच्या किमतीतील वाढ ७.२ दशलक्ष पौंडांवरून २७.४ दशलक्ष पौंड एवढी झाली. तथापि विसाव्या शतकात ही वाढ फार मोठ्या प्रमाणात जलदीने होऊ लागली. १९०१ ते १९१३-१४ ह्या काळात ही वाढ अकरा दशलक्ष पौंडांवरून १४.२ दशलक्ष

पौंडांवर गेली. १९१३-१४ हे वर्ष नेहमीच्या मानाने उताराचे ठरले. लढाईपूर्वीच्या पाच वर्षांचा सर्वसाधारण आढावा घेतला तर वार्षिक जादा निर्यात २२.५ दशलक्ष पौंडांची दिसते. म्हणजेच त्या दहा वर्षांत १९०१ च्या पातळीच्या मानाने दुप्पट भरते.

१९३३-३४ ह्या सालात भारताच्या निर्यातीची वाढ ६९.७ दशलक्ष पौंडांवर पोहोचली. ह्यांपैकी २६.८ दशलक्ष पौंड मालाच्या रूपाने आणि ४२.९ दशलक्ष पौंड पैशाच्या रूपाने पाठवले गेले. ही शेवटची प्रचंड रक्कम भारतातील सोन्याच्या रूपाने इंग्लंडमधील पौंडाच्या किंमतीतील स्थिरता सांभाळण्यासाठी नेण्यात आली. सोपी तुलना करायची तर १९३१-३२ ते १९३५-३६ हा काळ तुलनेसाठी घेऊ. ह्यावरून आयात-निर्यातीतील फरक ५९.२ दशलक्ष पौंड होतो, म्हणजे महायुद्धपूर्व काळातील (१९१०-१४) फरकाच्या तीनपट भरतो आणि १९०१ च्या मानाने पाचपट भरतो.

एकोणिसाव्या शतकाच्या मध्यापासून भारताचे इंग्लंडला दिलेल्या प्रत्यक्ष देणगीतील ही वाढ (ह्यांतून भारतीय निर्यात व आयात ह्यांच्या किमतीच्या पातळीतील फरकामुळे होणारी पिळवणूक सोडून) खाली तक्त्याच्या रूपात दिली आहे, त्यावरून आपल्याला चटकन दिसून येते की, इंग्लंडने आधुनिक काळात भारताच्या पिळवणुकीच्या कार्यक्रमात किती झपाट्याने प्रगती केली. एवढे असले तरी, इंग्लंडने एकूण लुटमार किती केली तिच्या एखाद्या भागापेक्षा अधिक भागाचा अंदाज येत नाही.

भारताकडून इंग्लंडने घेतलेल्या देणगीतील वाढ

(दशलक्ष पौंडांत)

वर्षे Year	१८५१	१९०१	१९१३-१४	१९३३-३४
घरचा खर्च (Home Charge)	२.५	१७.३	१९.४	२७.५
भारतीय निर्यात वाढ (Excess of Indian Exports)	३.३	११.०	१४.२	६९.७

किंवा दर पाच वर्षांचे व्यापाराचे संबंध विचारात घेतल्यास

(दशलक्ष पौंडांत)

पाच वर्षांचा काळ	१८५१-५५	१८९७-१९०१	१९०९-१० ते १९१३-१४	१९३१-३२ ते १९३५-३६
जादा निर्यात	४.३	१५.३	२२.५	५९.२

वरील तक्त्यावरून लूटीत पैशाच्या दृष्टीने किती वाढ झाली ह्यापेक्षा पिळवणुकीची चढती कमान सहज स्पष्ट दिसते. त्यावरून पिळवणुकीच्या पद्धतीतील व तिच्या गुणवत्तेतील फरक उघड होतो.

एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात भारताने इंग्लंडला दिलेल्या देणगीत प्रचंड वाढ झाली आणि ह्या वाढीतूनच विसाव्या शतकातील वाढीचा पाठपुरावा केला गेला. तथापि एकोणिसाव्या शतकातील खुल्या व्यापाराच्या तत्त्वाच्या गोंडस पांघरूणाखाली पिळवणुकीची ही नवीन तंत्रे दबा धरून बसली होती.

एकोणिसाव्या शतकातील खुल्या व्यापारी भांडवलाच्या गरजेसाठी ब्रिटिशांच्या भारतातील धोरणाला नवीन वळण देणे भाग पडले.

पहिली गोष्ट म्हणजे, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी बंद करून कंपनी सरकारऐवजी, ब्रिटिश भांडवलदारांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या ब्रिटिश सरकारचे शासन-यंत्र भारतात चालू करणे भाग पडले. १९३३ च्या चार्टर ॲक्टप्रमाणे हा बदल बऱ्याच प्रमाणात घडवून आणण्यात आला. तथापि त्याची अंमलबजावणी १८५८ मध्ये करण्यात आली. दुसरे असे की, वाणिज्यिक घुसवणुकीसाठी भारताचे मुक्त द्वार संपूर्णतया खुले करणे अगत्याचे होते. ह्यासाठी भारतात रेल्वेमार्गांचे जाळे तयार करणे जरूरी होते. त्याचप्रमाणे रस्त्यांची वाढ व ब्रिटिशांच्या राजवटीत ज्या पाटबंधाऱ्यांकडे संपूर्णपणे दुर्लक्ष केले गेले होते त्यांची सुधारणा करणे, ह्या गोष्टी आवश्यक ठरल्या. त्याचप्रमाणे विद्युतप्रवाहावर चालणारी तारायंत्रे व एक पद्धतीच्या पोस्टाच्या व्यवस्थेची गरज होती. शासनाला लेखनिकांची व दुय्यम दर्जाच्या अधिकाऱ्यांची गरज भासणार होती म्हणून इंग्रजी पद्धतीचे शिक्षण देण्याची व्यवस्था करणे ओघानेच आले. पाश्चिमात्य धर्तीवर बँका उघडणेही भाग पडले.

खरोखर आशिया खंडातील मोठ्या सरकारला सार्वजनिक हिताच्या दृष्टीने ज्या सुधारणा करणे अत्यंत अगत्याचे होते त्यांची जवळजवळ शंभर वर्षे हेळसांड करण्यात आली होती, तथापि पिळवणुकीच्या तंत्राला त्या आवश्यक ठरल्याबरोबर त्यांची योजना करणे अटळ झाले. तरी सुद्धा ज्या सुधारणा करण्यास सुरूवात केली गेली होती, तीसुद्धा एकमार्गी व विषमतोल स्वरूपाची होती. परकीय घुसवणुकीला वाणिज्यिक व राजकीय दृष्टीने अत्यावश्यक एवढ्याच बेताने त्या सुधारणा कार्यवाहीत आणल्या गेल्या आणि त्यासाठी सुद्धा लोकांवर जबरदस्त आर्थिक बोजा टाकण्यात आला.

१८५३ साली भारतीय रेल्वेसंबंधात लॉर्ड डलहौसी याने सादर केलेली टिप्पणी उद्बोधक आहे. तिच्या अनुरोधानेच भारतातील रेल्वेमार्गांच्या वाढीला उत्तेजन देण्यात आले. त्यात ब्रिटिशांच्या तयार मालासाठी भारताची प्रगत बाजारपेठ तयार करणे व ब्रिटनला कच्च्या मालाचा सातत्याने पुरवठा करणे शक्य व्हावे, हे व्यापारी उद्दिष्ट स्पष्ट करण्यात आले होते.

"ह्या सुधारणा करण्यात आल्या तर भारताचा आर्थिक व व्यापारी दृष्टीने एवढा प्रचंड फायदा होईल की, त्याची मला कल्पनाच

करता येत नाही. आज भारत जो सर्वसाधारण कापूस तयार करून इंग्लंडला पुरवतो, त्याची ब्रिटिश व्यापारी वाहवा करतात, तथापि भारतीय कापसाला उत्कृष्ट बंदरे व वाहतुकीची साधने उपलब्ध करून देण्यात आली तर प्रचंड प्रमाणात व उत्कृष्ट दर्जाचा कापूस भारत सहज निर्माण करू शकेल. व्यापारासाठी आवश्यक असलेली प्रत्येक गरज भागवण्यात आली व त्यामुळे भारतात दूरवर पसरलेल्या बाजारपेठांतून सुद्धा युरोपमध्ये तयार झालेल्या मालाला प्रचंड प्रमाणात मागणी येऊ लागली. जगाच्या ह्या भागात नवीन नवीन बाजारपेठा आपणासठी उघडत आहेत व त्यांचा फायदा किती होईल याची शहाण्या लोकांना सुद्धा अंधुक कल्पना करता येणार नाही, मग भविष्यकाळात त्याची किती वाढ होईल, ते कल्पनेनेच ठरवलेले बरे."

तथापि ह्या सुधारणा करण्याच्या कार्यक्रमाचा-विशेषत: रेल्वेमार्गांची वाढ करण्याच्या धोरणाचा- मुख्य हेतू म्हणजे भारतात औद्योगिक भांडवलाची वाणिज्यिक क्षेत्रात घुसवणूक करता यावी, हा होता. त्याचप्रमाणे लोखंड, पोलाद व यांत्रिक मालाला मोठी बाजारपेठ उपलब्ध करून घ्यावी असा त्यात बेत होता, त्यातून एक नवीन योजना निर्माण झाली ती म्हणजे, भारतात ब्रिटिश भांडवलाच्या गुंतवणुकीचा विकास, ही होय.

साम्राज्यशाहीच्या विकासपद्धतीत त्या धोरणाला भांडवली-निर्यात असे म्हणतात. तथापि भारताच्या बाबतीत ह्या घटनेला भांडवली-निर्यात म्हणून संबोधने हा शब्दच्छल ठरेल. कारण ब्रिटनने प्रत्यक्षात जे भांडवल निर्यात केले ते अगदीच थोडे होते. १९१४ पर्यंतच्या काळात फक्त १८५६-६२ हा सात वर्षांचाच काळ असा गेला की नेहमीच्या जादा निर्यातीची जागा जादा आयातीने घेतली व त्यामुळे ब्रिटनला २२.५ दशलक्ष पौंडांचे भांडवल सात वर्षांत निर्यात करावे लागले. १९१४ पर्यंत ब्रिटनने भारतात केलेल्या एकूण ५०० दशलक्ष पौंडांच्या भांडवली गुंतवणूकीच्या मानाने वरील भांडवल-निर्यात फार मोठी नव्हती. वरील काळात जे ब्रिटिश भांडवल कितीतरी पटीने जास्त होते. ह्या कार्यक्रमात ब्रिटिश भांडवल म्हणून ज्या पैशाची भारतात गुंतवणूक करण्यात आली ते भांडवल म्हणजे ब्रिटिशांनी भारतीयांची केलेली लूट होती, तिला 'ब्रिटिश भांडवल' (British Capital) असे नाव देऊन त्याचे कर्जात रूपांतर करण्यात आले व कर्जाचे व्याज व लाभांश (डिव्हिडंड) म्हणून दरवर्षी देणे सुरू झाले. भारतात गुंतवलेल्या ब्रिटिश भांडवलाला लोक ऋण म्हणून समजले जाई. ब्रिटिश अल्पाधिपक्षाचा (ऑलिगार्की) भारतीयांना लागलेला तो गळफासच होता. १८५८ साली ब्रिटिश सरकारने जेव्हा भारतीय शासनव्यवस्था आपल्या हातात घेतली तेव्हा त्यांनी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीकडून सत्तर दशलक्ष पौंडांचे कर्जही आपल्याकडे घेतले. भारतीयांच्या मते ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीने देणगीच्या नावाखाली १५० दशलक्ष पौंडांची लूट नेली होती. ह्याशिवाय भारताबाहेर अफगाणिस्तान, चीन वगैरे देशांबरोबर ब्रिटनने केलेल्या युद्धांचा खर्च म्हणून जो पैसा नेला, तो निराळाच. ह्या सर्व देवघेवींचा साकल्याने विचार करता, ब्रिटन, भारताचे कर्ज देणे लागत होते. तथापि त्यामुळे कर्ज अंगावर घेऊन तो आकडा फुगवण्यास ब्रिटनला काहीच अडचण नव्हती.

ब्रिटिशांच्या शासनात हे लोक-ऋण (पब्लिकेटेड) अठरा वर्षांत सत्तर दशलक्ष पौंडांवरून एकशेचाळीस दशलक्ष पौंडांवर गेले म्हणजेच दुप्पट झाले. १९०० सालापर्यंत ते २२४ दशलक्ष पौंडांवर गेले. १९१३ मध्ये तो आकडा २७४ दशलक्ष पौंड झाला. द्वितीय महायुद्धाच्या वेळी १९३९ मध्ये ते ११७९० दशलक्ष रुपयांवर गेले. अशा रीतीने ब्रिटिशांच्या प्रत्यक्ष शासनाच्या ७५ वर्षांच्या अमदानीत, लोक-ऋण बारापटीपेक्षा जास्त वाढले.

इंग्लंडमधील पौंडाच्या रूपाने ह्या लोक-ऋणात झालेली वाढ भयंकर होती. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीच्या अखेरीस म्हणजे १८५६ मध्ये इंग्लंडमधील कर्ज चार दशलक्ष पौंडाखाली होते. १८६० च्या सुमारास हा आकडा तीस दशलक्ष पौंडांवर गेला. १८८० मध्ये तो ७१ दशलक्ष पौंड झाला. १९०० मध्ये १३३ दशलक्ष पौंड, १९१३ मध्ये १७७ दशलक्ष पौंड आणि १९३९ मध्ये ३५१८ दशलक्ष पौंड झाला.

ह्या लोक-ऋणाची मूळ सुरुवात, लढायांसाठी झालेल्या व इतर खर्चांतून झाली आणि त्यानंतर रेल्वेमार्गांची उभारणी व सामाजिक बांधकामे (PWD) ह्यांवर सरकारने जो खर्च केला, त्याची भर पडली. सुरुवातीचे सत्तर दशलक्ष पौंडांचे लोक-ऋण लॉर्ड वेलस्ली ह्याने केलेल्या लढाया, पहिले अफगाण युद्ध, शिखांबरोबरील युद्ध व १८५७ चा उठाव दडपण्यासाठी झालेला खर्च, ह्यासाठी ब्रिटिश सरकारने उभे केले. त्यानंतरचे सत्तर दशलक्ष पौंडांचे लोक-ऋण, जे ब्रिटिशांनी अठरा वर्षांत दुप्पट फुगविले, त्यापैकी फक्त चोवीस दशलक्ष पौंड सरकारी रेल्वेमार्गांची उभारणी व पाटबंधाऱ्यांची कामे यांवर खर्च झाले होते. बाकीचे सर्व लोक-ऋण ब्रिटिशांनी जे निर्माण केले त्याचा खराखुरा भारताशी काडीएवढाही संबंध नव्हता. कारण ह्यात असल्या अघमनून खर्च दाखविण्यात आले होते की, त्यात भारताचा संबंधही नव्हता. उदाहरणार्थ, लंडनमध्ये तुर्कस्तानच्या सुलतानच्या स्वागतासाठी केलेला खर्च, चीन व पर्शिया येथे स्थापन केलेल्या ब्रिटिश वकिलातींसाठी झालेला खर्च, ॲबिसीनियाबरोबरील झालेल्या युद्धाचा खर्च किंवा भूमध्य समुद्रातील

नाविक दलावर झालेल्या खर्चापैकी काही भाग वगैरे. भारतावर अशा प्रकारचे लोक-ऋण सोयीस्करपणे लादण्यात यावे हा गोष्ट लांछनास्पद आहे आणि अशा किती गोष्टी नमूद कराव्या? भारतातील उठावाचा खर्च; कंपनीचे हक्क ब्रिटिश पार्लमेंटकडे सुपूर्द करण्यात आले, त्यासाठी झालेला खर्च; चीन आणि अॅबीसिनिया ह्यांच्यावरांवर एकाच वेळी केलेल्या युद्धांचा खर्च; ज्याचा भारताशी दुरान्वयेही संबंध नाही असा लंडनमध्ये केलेला खर्च, उदा. इंडिया ऑफिसमधील घरकामासाठी ठेवलेला बायकांचा खर्च किंवा जी लढाऊ जहाजे युद्धात भाग घेण्यासाठी पाठविली होती; पण ज्यांना भाग घ्यावा लागला नाही, अशा युद्धनौकांवर झालेला खर्च, किंवा ज्या भारतीय पलटणी युद्धावर पाठविण्यासाठी त्यांना सहा महिने प्रशिक्षण देण्यात आले त्यांचा खर्च- हे सर्व खर्च, ज्या भारताला प्रतिनिधित्वही नव्हते अशा भारताच्या नावावर लादण्यात आले. तुर्कस्तानच्या सुलतानाने १८६८ साली लंडनला सरकारी भेट दिली, त्याच्या सन्मानार्थ इंडिया ऑफिस (लंडन) येथे नृत्याचा कार्यक्रम सरकारी खर्चाने आयोजित केला होता, त्याचा खर्च भारताच्या नावेच दाखवण्यात आला. इथिंगमधील वेड्याच्या इस्पितळाचा खर्च, झांझिबारच्या शिष्टमंडळाला दिलेल्या देणग्या, चीन व पर्शिया येथील ब्रिटिश वकिलातींचा खर्च, भूमध्य समुद्रावरील नाविक दलाच्या कायम खर्चापैकी काही भाग, आणि इंग्लंड व भारत ह्यांमध्ये टाकण्यात आलेला टेलिग्राफ लाइनचा संपूर्ण खर्च, ह्या सर्व खर्चांचा बोजा भारतीय खजिन्यावर १८७० पूर्वी टाकण्यात आला होता. ब्रिटिश सरकारने भारताचे शासनयंत्र आपल्या ताब्यात घेतल्यापासून पहिल्या तेरा वर्षांत भारतीय महसूल, वर्षाला ३३ दशलक्ष पौंडांवरून ५२ दशलक्ष पौंडांवर गेला, ह्यात आश्चर्य करण्यासारखे काहीच नाही आणि १८६६ ते १८७० मधील तुटीचा आकडा ११.५ दशलक्ष पौंडांवर गेला. १८५७ ते १८६० ह्या दरम्यान भारताला ब्रिटनने कर्ज म्हणून ३०,०००,००० दशलक्ष पौंडांचा आकडा दाखवण्यात आला, आणि हा कर्जाचा बोजा हळूहळू वाढत गेला. त्याचबरोबर भारतीय हिशोबात कावेबाजपणे हातचलाखी करून काटकसर व वित्तीय कौशल्य दाखवल्याबद्दल ब्रिटिश मुत्सद्यांची वाहवा झाली.

रेल्वेमार्गांची वाढ काही सरकारी खर्चाने तर काही खासगी कंपन्यांच्या सहकार्याने करण्यात आली. पुढे पुढे तर ती संपूर्ण सरकारी पैशाने करण्यात आली. ह्यामुळे लोक-ऋण प्रचंड प्रमाणात वाढले. रेल्वेच्या विकासासाठी अशी योजना आखली होती की, ब्रिटिश भांडवलदार जे भांडवल ह्या कामात गुंतवतील त्यांना त्यावर पाच टक्के व्याज मिळावे. ह्याचा परिणाम असा झाला की, पैशाची उधळपट्टी करण्यात आली. १८७२ पर्यंत जो पहिला सहा हजार मैलांचा रेल्वेमार्ग तयार करण्यात आला त्याला शंभर दशलक्ष पौंड खर्च झाला ह्याचाच अर्थ दर मैलाला सोळा हजार पौंड खर्च आला. १८७२ साली भारतीय वित्तव्यवस्थेवर (इंडियन फायनान्सवर) विचार करण्यासाठी पार्लमेंटची जी चौकशी समिती नेमण्यात आली होती, तिला रेल्वेच्या माजी लेखापरीक्षकाने (ऑडिटरने) असे स्पष्टपणे सांगितले की, "आर्थिक गुंतवणूक करणाऱ्या इंग्लिश भांडवलदारावर कडक नियंत्रणे घातली जाणार नाहीत, असे सरकार व भांडवलदार ह्यांच्यामध्ये ठरले होते. हिशोबाचे कागद तयार होईपर्यंत, किती पैसा खर्च झाला, ह्या गोष्टीची कोणालाही कल्पना नव्हती." ह्याच चौकशी समितीला एल्व्यू. एन. मॅसे ह्या भारताच्या माजी अर्थमंत्र्यांने सांगितले की, "प्रचंड रकमांची उधळपट्टी करण्यात आली. कंत्राटदाराला काटकसर करण्याचा इच्छाच नव्हती. सर्व पैसा इंग्लिश भांडवलदारांकडून येत होता आणि जोपर्यंत त्याला, त्याने पुरविलेल्या भांडवलावर पाच टक्के व्याज देण्याचे सरकारने आश्वासन दिले होते, तोपर्यंत, ह्याचे भांडवल हुगळी नदीत फेकले जात होते, किंवा त्याच्या साह्याने बांधकाम केले जात होते, ह्या गोष्टीची त्याला काहीच पर्वा नव्हती. मला वाटते, आजपर्यंत कधीही झाली नसेल अशी उधळपट्टी करून ही कामे केली गेली."

एकोणिसाव्या शतकाच्या अखेरीपर्यंत रेल्वेवर २२६ दशलक्ष पौंड खर्च करण्यात आले त्यामुळे फायदा होण्याऐवजी चाळीस दशलक्ष पौंडांचे नुकसान झाले आणि ते भारतीय अर्थसंकल्पावर (बजेटवर) पडले. विसावे शतक सुरू झाल्यावर रेल्वेमधून फायदा काढण्यात आला आणि १९४३-४४ पर्यंत, पौंडांच्या रूपात रेल्वेला असलेले कर्ज जेव्हा इंग्लंडला परत करण्याचे ठरले, तेव्हा ते दरवर्षी दहा दशलक्ष पौंड ह्या प्रमाणात परत केले गेले. जेव्हा रेल्वे, व चहा, कॉफी आणि रबर यांचे मळे सुरू झाले तेव्हापासून म्हणजे एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात ब्रिटिश भांडवल भारतात झपाट्याने येऊ लागले. ह्याच सुमारास, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे प्रभुत्व संपुष्टात आल्यावर व बँकिंगवरील निर्बंध उठल्यावर, खासगी ब्रिटिश बँकांची भारतात प्रगती होऊ लागली. १८७६ च्या प्रेसिडेन्सी बँक्स ॲक्टमुळे तीनही प्रेसिडेन्सी बँकांना सरकारी संरक्षण मिळून त्यांच्या व्यवहारांना व्यवस्थितपणा आणण्यात आला व पुढे १९२१ मध्ये 'इंपिरियल बँक ऑफ इंडिया' ह्या प्रचंड बँकेत वरील तीनही बँकांचे विलीनीकरण करण्यात आले. भारताबाहेर प्रमुख केंद्र असणाऱ्या चलनविनिमय बँकांचा (एक्सचेंज बँका) व्यवहार वाढीस लागला. चार्टर्ड बँक ऑफ इंडिया, ऑस्ट्रेलिया आणि चीन ह्यांना १८५३ साली सनद (चार्टर) मिळाली. ह्याच साली मर्कंटाईल बँक ऑफ इंडियाला सनद मिळाली. नॅशनल बँक ऑफ इंडिया व हाँगकाँग अॅंड शांघाय बँकिंग कॉर्पोरेशन ह्यांनी भारतात बँकिंगचे व्यवहार वाढवले. त्यांनी प्रेसिडेन्सी बँकांशी सहकार्य करून ब्रिटिश संरक्षणाखाली वित्तव्यवस्था (फायनान्स),

नाविक दलावर झालेल्या खर्चापैकी काही भाग वगैरे भारतावर अशा प्रकारचे लोक-ऋण सोयीस्करपणे लादण्यात यावे हा गोष्ट लांछनास्पद आहे आणि अशा किती गोष्टी नमूद कराव्या? भारतातील उठावाचा खर्च; कंपनीचे हक्क ब्रिटिश पार्लमेंटकडे सुपूर्द करण्यात आले, त्यासाठी झालेला खर्च; चीन आणि अॅबीसिनिया ह्यांच्यावरोबर एकाच वेळी केलेल्या युद्धांचा खर्च; ज्याचा भारताशी दुरान्वयेही संबंध नाही असा लंडनमध्ये केलेला खर्च, उदा. इंडिया ऑफिसमधील घरकामासाठी ठेवलेला वायकांचा खर्च किंवा जो लढाऊ जहाने युद्धात भाग घेण्यासाठी पाठविली होती; पण ज्यांना भाग घ्यावा लागला नाही, अशा युद्धनौकांवर झालेला खर्च, किंवा ज्या भारतीय पलटणी युद्धावर पाठविण्यासाठी त्यांना सहा महिने प्रशिक्षण देण्यात आले त्यांचा खर्च- हे सर्व खर्च, ज्या भारताला प्रतिनिधित्वही नव्हते अशा भारताच्या नावावार लादण्यात आले. तुर्कस्तानच्या सुलतानाने १८६८ साली लंडनला सरकारी भेट दिली, त्याच्या सन्मानार्थ इंडिया ऑफिस (लंडन) येथे नृत्याचा कार्यक्रम सरकारी खर्चाने आयोजित केला होता, त्याचा खर्च भारताच्या नावेच दाखवण्यात आला. इंग्लिशमधील वेड्याच्या इस्पितळाचा खर्च, झांझिबारच्या शिष्टमंडळाला दिलेल्या देणग्या, चीन व पर्शिया येथील ब्रिटिश वकिलातींचा खर्च, भूमध्य समुद्रावरील नाविक दलाच्या कायम खर्चापैकी काही भाग, आणि इंग्लंड व भारत ह्यांमध्ये टाकण्यात आलेला टेलिग्राफ लाइनचा संपूर्ण खर्च, ह्या सर्व खर्चाचा बोजा भारतीय खजिन्यावर १८७० पूर्वी टाकण्यात आला होता. ब्रिटिश सरकारने भारताचे शासनयंत्र आपल्या ताब्यात घेतल्यापासून पहिल्या तेरा वर्षांत भारतीय महसूल, वर्षाला ३३ दशलक्ष पौंडांवरून ५२ दशलक्ष पौंडांवर गेला, ह्यांत आश्चर्य करण्यासारखे काहीच नाही आणि १८६६ ते १८७० मधील तूटीचा आकडा ११.५ दशलक्ष पौंडांवर गेला. १८५७ ते १८६० ह्या दरम्यान भारताला ब्रिटनने कर्ज म्हणून ३०,०००,००० दशलक्ष पौंडांचा आकडा दाखवण्यात आला, आणि हा कर्जाचा बोजा हळूहळू वाढत गेला. त्याचवरोबर भारतीय हिशोबात काबेदाजपणे हातचलाखी करून काटकसर व वित्तीय कौशल्य दाखवल्याबद्दल ब्रिटिश मुत्सद्यांची वाहवा झाली.

रेल्वेमार्गांची वाढ काही सरकारी खर्चाने तर काही खासगी कंपन्यांच्या सहकार्याने करण्यात आली. पुढे पुढे तर तो संपूर्ण सरकारी पैशाने करण्यात आली. ह्यामुळे लोक-ऋण प्रचंड प्रमाणात वाढले. रेल्वेच्या विकासासाठी अशी योजना आखली होती की, ब्रिटिश भांडवलदार जे भांडवल ह्या कामात गुंतवतील त्यांना त्यावर पाच टक्के व्याज मिळावे. ह्याचा परिणाम असा झाला की, पैशाची उधळपट्टी करण्यात आली. १८७२ पर्यंत जो पहिला सहा हजार मैलांचा रेल्वेमार्ग तयार करण्यात आला त्याला शंभर दशलक्ष पौंड खर्च झाला ह्याचाच अर्थ दर मैलाला सोळा हजार पौंड खर्च आला. १८७२ साली भारतीय वित्तव्यवस्थेवर (इंडियन फायनान्सवर) विचार करण्यासाठी पार्लमेंटची जी चौकशी समिती नेमण्यात आली होती, तिला रेल्वेच्या माजी लेखापरीक्षकाने (ऑडिटरने) असे स्पष्टपणे सांगितले की, "अर्थिक गुंतवणूक करणाऱ्या इंग्लिश भांडवलदारावर कडक नियंत्रणे घातली जाणार नाहीत, असे सरकार व भांडवलदार ह्यांच्यामध्ये ठरले होते. हिशोबाचे कागद तयार होईपर्यंत, किती पैसा खर्च झाला, ह्या गोष्टीची कोणालाही कल्पना नव्हती." ह्याच चौकशी समितीला एन्ड्यू. एन. मॅसे ह्या भारताच्या माजी अर्थमंत्र्यांने सांगितले की, "प्रचंड रकमांची उधळपट्टी करण्यात आली. कंत्राटदाराला काटकसर करण्याची इच्छाच नव्हती. सर्व पैसा इंग्लिश भांडवलदारांकडून येत होता आणि जोपर्यंत त्याला, त्याने पुरविलेल्या भांडवलावर पाच टक्के व्याज देण्याचे सरकारने आश्वासन दिले होते, तोपर्यंत, ह्याचे भांडवल हुगळी नदीत फेकले जात होते, किंवा त्याच्या साहाय्याने बांधकाम केले जात होते, ह्या गोष्टीची त्याला काहीच पर्वा नव्हती. मला वाटते, आजपर्यंत कधीही झाली नसेल अशी उधळपट्टी करून ही कामे केली गेली."

एकोणिसाव्या शतकाच्या अखेरीपर्यंत रेल्वेवर २२६ दशलक्ष पौंड खर्च करण्यात आले त्यामुळे फायदा होण्याऐवजी चाळीस दशलक्ष पौंडांचे नुकसान झाले आणि ते भारतीय अर्थसंकल्पावर (बजेटवर) पडले. विसावे शतक सुरू झाल्यावर रेल्वेमधून फायदा काढण्यात आला आणि १९४३-४४ पर्यंत, पौंडांच्या रूपात रेल्वेला असलेले कर्ज जेव्हा इंग्लंडला परत करण्याचे ठरले, तेव्हा ते दरवर्षी दहा दशलक्ष पौंड ह्या प्रमाणात परत केले गेले. जेव्हा रेल्वे, व चहा, कॉफी आणि रबर यांचे मळे सुरू झाले तेव्हापासून म्हणजे एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात ब्रिटिश भांडवल भारतात झपाट्याने येऊ लागले. ह्याच सुमारास, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे प्रभुत्व संपुष्टात आल्यावर व बँकिंगवरील निर्बंध उठल्यावर, खासगी ब्रिटिश बँकांची भारतात प्रगती होऊ लागली. १८७६ च्या प्रेसिडेन्सी बँक्स ॲक्टमुळे तीनही प्रेसिडेन्सी बँकांना सरकारी संरक्षण मिळून त्यांच्या व्यवहारांना व्यवस्थितपणा आणण्यात आला व पुढे १९२१ मध्ये 'इंपिरियल बँक ऑफ इंडिया' ह्या प्रचंड बँकेत वरील तीनही बँकांचे विलीनीकरण करण्यात आले. भारताबाहेर प्रमुख केंद्र असणाऱ्या चलनविनिमय बँकांचा (एक्सचेंज बँका) व्यवहार वाढीस लागला. चार्टर्ड बँक ऑफ इंडिया, ऑस्ट्रेलिया आणि चीन ह्यांना १८५३ साली सनद (चार्टर) मिळाली. ह्याच साली मर्कंटाईल बँक ऑफ इंडियाला सनद मिळाली. नॅशनल बँक ऑफ इंडिया व हाँगकाँग ॲंड शांघाय बँकिंग कॉर्पोरेशन ह्यांनी भारतात बँकिंगचे व्यवहार वाढवले. त्यांनी प्रेसिडेन्सी बँकांशी सहकार्य करून ब्रिटिश संरक्षणाखाली वित्तव्यवस्था (फायनान्स),

वाणिज्य (कॉमर्स) आणि उद्योगधंदे ह्यांवर आपली हुकुमत ठेवली. ईंडियन जॉइन्ट स्टेट बँकेने वरील बँकांना मागे टाकण्याचा प्रयत्न केला तथापि तो यशस्वी झाला नाही. कारण ह्या परदेशी बँकांना काही खास सवलती होत्या. १९१३ च्या सुमारास प्रेसिडेन्सी बँकस् व एक्सचेंज बँक्स ह्या परकीय बँकांकडे एकूण बँकांच्या ठेवींच्या २/३ हिस्सा जमा झाला होता. याउलट ईंडियन जॉईट स्टॉक्स बँक्सकडे १/४ पेक्षाही कमी ठेवी होत्या.

१९९१ साली रॉयल स्टॅटिस्टिकल सोसायटीत सर जॉर्ज पैश ह्यांनी एक लिखाण (पेपर) वाचून दाखवले. त्यात त्याने भारत आणि सिलोन ह्या देशांत १९०९-१० सालांत ब्रिटिशांची भांडवली गुंतवणूक ३६५ दशलक्ष पौंड होती, असे म्हटले आहे. त्या गुंतवणुकीचे तपशीलवार स्वरूप खाली दिले आहे.

(भांडवली गुंतवणूक)	(दशलक्ष पौंडांत)
गव्हर्नमेंट अँड म्युनिसपल	१८२.५
रेल्वेज	१३६.५
प्लँन्टेशन्स् (टी, कॉफी, रबर) (मळे)	२४.२
ट्रेम वेज् (ट्रेम्वा)	४.१
माइन्स (खाणी)	३.५
बँका	३.४
ऑईल (तेल)	३.२
कमीशियल अँड इंडस्ट्रियल (वाणिज्यिक व औद्योगिक)	२.५
फिनेन्स, लँड अँड इनव्हेस्टमेंट (वित्तव्यवस्था, शेती व गुंतवणूक)	१.८
मिसलॅनियस (संकीर्ण)	३.३

वरील माहितीपूर्ण यादीवरून एवढे स्पष्ट होते की, ब्रिटिश भांडवलाच्या भारतातील गुंतवणुकीमुळे, भारतातील आधुनिक उद्योगधंद्यांचा विकास झाल्याचे दिसत नाही. १९१४ च्या महायुद्धापूर्वी भारतात ज्या ब्रिटिश भांडवलाची गुंतवणूक करण्यात आली, त्यापैकी ९७ टक्के सरकार, वाहतुकीची साधने, मळे आणि वित्तीय व्यवस्था ह्यांसाठी खर्च करण्यात आले.

ह्याचाच अर्थ भारतात वाणिज्यिक घुसवणुकीला पूरक अशा क्षेत्रात गुंतवण्यात आले. ह्या मार्गाने कच्च्या मालाचा पुरवठा करणारे एक प्रचंड साधन व तयार ब्रिटिश मालाला एक मोठी बाजारपेठ म्हणून भारताचा उपयोग व्हावा, हा त्यामागील हेतू होता. त्यात भारतातील उद्योगधंद्यांचा विकास व्हावा असा हेतू मुळीच नव्हता.

सर जॉर्ज पैश ह्याने केलेले विधान भीत भीत केलेले होते. त्याने काही सहज न कळणाऱ्या गोष्टी उजेडात आणल्या नव्हत्या. १९१४ पूर्वी भारतात इतर क्षेत्रांत झालेली ब्रिटिश भांडवली गुंतवणूक विचारात घेता एकूण भांडवलाचा आकडा ४५० दशलक्ष पौंडांपर्यंत जातो. आणि 'इकॉनॉमिस्ट'च्या म्हणण्याप्रमाणे तो आकडा ४७५ दशलक्ष पौंड झाला होता, असे दिसते.

आधुनिक भारतात बहुराष्ट्रीय कंपन्यांच्या माध्यमातून भारताचे आर्थिक शोषण दिसून येते. इतिहासाची पुनरावृत्ती होऊ नये याची काळजी घेतली पाहिजे. तरच आर्थिक शोषणाला पायबंद घालता येईल.

उपरोक्त शोध निबंध वरील उद्दिष्टांचे पूर्तता करते.

Consolidated Bibliography :

१. "India Today", Rajani Pam Datt, Trans. Y. N. Devdhar (Indian Council of Historical Research, Delhi.) ISBN : ८१-८९७२४-००-२. Edition : First. २००६, Diamond Publication, Pune-४११०३०.

२. "Report Of The Indian Fiscal Commission" : १९२२, P. २०

३. "Minute On Railways", १८५३. Lord Dalhousie, Governor General of India. १८४८ to १८५६)

४. "The Migration of British Capital to १८५७", L. H. Jenks, P. २२३-२४

५. "Journal of The Royal Statistical Society", Vol. ७४, Part-I, January, १९११, P.१८६.

६. "India and The Gold Standard", १९११. H E. Harvard.

७. Article Titled by the "Our Investment Abroad" Published in "The Economist", on February २०, १९०९.

८. "History of Modern India & Indian Culture", Chief Editor : J. K. Chopra Punjab University, Chandigarh, Edition : २००८, Unique Publishers, M-५१, Lajpat Nagar-II, New Delhi-११००२४. ISBN : ८१-८३५७-०६०-७

९. R. C. Dutt and Dadabhai Naoroji cited the "Drain of Wealth Theory". Naoroji brought it to light in his book "Poverty And Un-British Rule in India". R.C. Dutt blamed the British policies for "Economic History of India"

१०. "COLONIALISM AND INDIAN ECONOMY", In review, by Amiya Kumar Bagchi. Oxford University Press.

❑❑❑

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon established in the year 2000, caters predominantly to students from rural areas around khamgaon. Accredited with C grade by NAAC in 2016, we realized the need to take up quality enhancement initiatives in all aspects of our institutlional life. Committed to our vision for providing employability skills to students, the college has also started UGC approved vocational degree courses B.VOC affiliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati. Besides UG & PG Course in Library Science, The college has recognized research centers in English & History.





Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh, Tq Dist Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

ISSN 2319 9318

Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History

17-18 January 2020 Special Issue - 101 Vol. II

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors
Dr. B. G. Gaikwad
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Balasaheb Shankarrao Kshirsagar
Head, Department of History
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Sandeep G. Londhe
Department of History
Shivaji College, Hingoli (MS)

Shri Shivaji Shikshan Prasarak Mandal, Hingoli

SHIVAJI COLLEGE, HINGOLI - 431513 (MS)

NAAC Accredited with 'B' Grade

Affiliated to - Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

Organized by - DEPARTMENT OF HISTORY

Sponsored by - ICSSR, New Delhi

TWO DAY NATIONAL SEMINAR

on

CHANGING RELIGIOUS MOVEMENTS IN PRE-MEDIEVAL INDIAN HISTORY

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badn

Certificate

This is to certify that **Dr.Bansod Santosh** Narayanrao Rana College, Badnera has participated in Two Day National Seminar on **Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History** organized by Department of History, Shivaji College, Hingoli Tq.Dist.Hingoli, Maharashtra, India on 17-18 January 2020. He presented research paper entitled **तथागत बुध्द की सामाजिक क्रांती और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासीक, सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन**

Dr.Balasaheb S. Kshirsagar

Dr.Sandeep G. Londhe
Co-convener

Dr.B. G. Gaikwad
Principal

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal			ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139	Special Issue -101 ,Vol. II	Jan. 2020	Peer Reviewerd

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 101 Vol. II

Title of the issue :

Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History

SHAURYA PUBLICATION

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 300/-

PRINTED BY
Shaurya Offset
Old MIDC , kalamb Road, Latur

EDITION :
17-18 Jan. 2020

PRICE : 300 /-

या अंकाचे सर्व अधिकार प्रकाशकांनी स्वतःकडे राखून ठेवलेले आहेत. लेखाचे प्रकाशन व पुनप्रकाशनाचे अधिकार प्रकाशक आणि संबंधित लेखकाधीन समान असून शोध निबंधातील मते ही संबंधित लेखाच्या लेखकांची वैयक्तिक मते आहेत त्या मताशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139 | Special Issue -101 ,Vol. II | Jan. 2020 | Peer Reviewerd

प्रा.डॉ. शिंदे अनंत नामदेवराव
39. वीर शैव संप्रदाय आणि म. बसवेश्वर — 102
प्रा. आसेगांवकर कैलास कमलाकर
40. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सामाजीक सुधारणा चळवळ — 104
प्रा.डॉ.शिवाजी गाढे
41. मुस्लीम सुफी संतांचे मराठी लेखन — 107
डॉ.शत्रुघ्न जाधव
42. महिलांच्या मानव अधिकाराच्या संवर्धनासाठी करण्यात आलेले अधिनीयम व न्यायालयीन — 109
सक्रीयता : एक अभ्यास
डॉ. डी.ए. पाईकराव
43. जैनधर्म आणि तत्वज्ञान — 112
प्रा.डॉ. नितीन बावळे
44. भारतीय स्वातंत्र्याचे स्वप्न दाखविणारे आद्यक्रांतीकारक - उमाजी नाईक — 115
प्रा.डॉ.गणेश गोविंदराव माने
45. सुफी पंथावर भक्तीमार्गाचा प्रभाव — 117
प्रा.डॉ.अशोक गंगाराम साबणे
46. महात्मा बसवण्णांची धर्मक्रांती : एक चिकित्सा — 119
डॉ. अनिता व्यंकटराव शिंदे
47. संत साहित्याचे धार्मिक चळवळीत योगदान — 121
प्रा. डॉ. श्रीराम मारोतराव कऱ्हाळे
48. मध्यपुर्व काळातील कर्तृत्ववान स्त्रिया — 124
संशोधक. सिंधु लोणकर
49. ऐतिहासिक भक्ती आन्दोलन द्वारा समाज उत्थान — 127
प्रा.वाय.एस.राजपूत
50. "मध्ययुगीन कालखंडातील साहित्य आणि लोकप्रबोधनात्मक जागृती एक — 130
ऐतिहासिक अध्ययन"
डॉ. एन. आर. वर्मा
51. "भक्ति आन्दोलन और महाराष्ट्र धर्म" — 132
डॉ.विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण
52. भारतातील समाज सुधारणांमध्ये विविध संतांचे योगदान : ऐतिहासिक अभ्यास — 137
प्रा.डॉ. नितीन उल्हासराव सराफ
53. संस्कृती संघर्ष- श्रमण और ब्राम्हण — 139
डॉ. मोहन भिसाळ
54. तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक — 142
विश्लेषणात्मक अध्ययन
प्रा. डॉ. संतोष बनसोड

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) - 7. 139 | Special Issue - 101 ,Vol. II | Jan. 2020 | Peer Reviewerd

तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड
विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग,श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

ढाई हजार वर्ष पूर्व 563 ईसा पूर्व में सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का उदय भारत की इस पवित्र भूमी पर हुवा। उन्होंने निर्वाण का जो मार्ग मानव मात्र को सुझाया था, वह आज भी प्रासंगिक है। म. बुद्ध का धम्म मानव-मानव के बीच के संबंधों को दर्शाता है, न की ईश्वर और मानव के। गौतम बुद्ध ने तत्कालीन रूढियों और अन्धविश्वासों का खंडन कर एक सहज मानव धर्म की स्थापना की।

बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को नकारा, बुद्ध ने आत्मा के अस्तित्व को नकारा, बुद्ध ने वेद, कर्मकांड इ. को नकारा। बुद्ध ने चमत्कार इ. अलौकिक शक्ती को नकारा। बुद्ध ने वर्णव्यवथा को ध्वस्त किया और प्रज्ञा, शील, करुणा, स्वातंत्र्य, समानता, बंधुत्व, सामाजिक न्याय इ. तत्वों का प्रचार समस्त जीवन भर किया।

483 ईसा पूर्व में 80 वर्ष की आयु में म. बुद्ध का कुशीनारा (उ.प्र.) में महापरिनिर्वाण हुवा। बुद्ध की सही शिक्षा का विश्लेषण करना प्रस्तुत शोध निबंध का मूल उद्देश है।

तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति

ऐतिहासिक दृष्टि से यदि देखा जाएं तो बुद्ध ने कभी भी जाति व्यवस्था के विरोध मे लडाई नहीं लडी। यह बात लोगों को चौकाने वाली हो सकती है, मगर यह सच है। बुद्ध ने कभी भी जाति व्यवस्था के खिलाफ लडाई नहीं लडी क्योंकि बुद्ध के समय जाति व्यवस्था ही नहीं थी। बुद्ध के समय वर्ण थे, वर्ण व्यवस्था थी। लिखित इतिहास उपलब्ध है जो यह दर्शाता है कि बुद्ध की समुची लडाई वर्ण व्यवस्था के खिलाफ में थी। इस इतिहास को भी जानने की जरूरत है कि बुद्ध गणतंत्र प्रणाली की पैदाइश थे।

बुद्ध गणप्रथा और परंपरा की पैदाइश थे। गणतंत्र और गणप्रथा वर्ण व्यवस्था को मान्यता नहीं देते थे। गणतंत्र को माननेवाले जो लोग थे, वो लोग भी वर्ण व्यवस्था को मान्यता नही देते थे। बुद्ध पर आरोप किया जाता है कि बुद्ध क्षत्रिय थे, मगर बुद्ध वास्तव में क्षत्रिय नहीं थे। जो गणतंत्र और गणप्रथा वर्ण व्यवस्था को मान्यता नही देती थी उस गणतंत्र की पैदाइश बुद्ध क्षत्रिय थे, यह किस आधार पर कहा जाएं?

बुद्ध मूलत: वर्ण व्यवस्था के क्यों विरोधी थे? क्योंकि बुद्ध के पहले जो गणतंत्र था उसकी विरासत बुद्ध ने आगे बढाई। वर्ण व्यवस्था का विरोध बुद्ध का नहीं गणतंत्र का है। गणतंत्र की विरासत को बुद्ध ने आगे बढाया। इतिहास यही कहता है। इसलिए यह समझना बहुत जरूरी है कि बुद्ध का संघर्ष जाति व्यवस्था के विरोध में इसलिए नहीं था क्योंकि बुद्ध के समय में 'जाति' थी ही नहीं। बुद्ध के समय में 'वर्ण व्यवस्था' थी इसलिए बुद्ध की समस्त लडाई वर्ण के खिलाफ में थी और वर्ण व्यवस्था के खिलाफ जो लडाई बुद्ध ने लडी उसके आधार पर बुद्ध ने वर्ण व्यवस्था को ध्वस्त किया और देश में **सामाजिक क्रान्ति** हुई।

सामाजिक क्रान्ति का परिणाम

वर्ण व्यवस्था के विरोध में बुद्ध ने जो सामाजिक क्रान्ति की इस सामाजिक क्रान्ति ने भारत के इतिहास में तीन महत्त्वपूर्ण बातें निर्माण की। 1) ज्ञान और विज्ञान में क्रान्ति हुई, 2) जिन्हें वर्ण व्यवस्था ने शूद्र घोषित किया था, नीच घोषित किया था, उन्होंने अपने अंदर राजा और राज्य पैदा किया। मौर्य सम्राट और साम्राज्य इसी क्रांति के तहत पैदा हुआ। 3) स्त्रीयों को पूर्णत: आजाद किया गया। यह तीन बातें सबसे बडे पैमाने पर बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति ने पैदा की। और इस क्रान्ति की वजह से दुनिया के इतिहास में पहली बार इस देश में विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ।

ज्ञान और विज्ञान भारत में पैदा हुआ। शून्य का शोध भारत में लगा। शून्य भारत से अरब में गया और अरब से युरोप में गया। युरोप ने शून्य को आधार बनाकर गणित शास्त्र विकसीत किया। और उस गणित शास्त्र को हमने युरोप से भारत में लाया। आज की जो तकनिकी है वो गणित शास्त्र पर खडी है। बहुत सारे लोगों को लगता है कि शून्य का कोई महत्त्व नही है। मगर उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो अगर शून्य के पहले एक रखो तो कहना पडेगा दस। इसका मतलब जो एक आप ने बाद में रखा उसकी किमत नऊ हो गई।

उस एक की किमत नऊ उस शून्य की वजह से हुई। यह बात जानने और समझने की है कि बुद्ध की जो सामाजिक क्रान्ति हुई उस क्रान्ति की वजह से भारत सारे विश्व में सबसे समृद्ध और शक्तिशाली बन गया था।

बाबा आम्बेदकर ने **"बुद्ध और उनका धम्म"** नामक ग्रंथ (अंग्रेजी में) लिखकर बुद्ध की सही शिक्षा प्रस्तुत की है जो संक्षेप में निम्नप्रकार से है।

बुद्ध के अनुसार हर चीज परिवर्तनशील है। प्रत्येक परिवर्तन का कोई न कोई कारण जरूर होता है। सृष्टी स्वयं भी उत्क्रांत अवस्था से गुजर रही है इसलिये सृष्टी स्वयं भी परिवर्तनशील है। सृष्टी में होने वाला परिवर्तन कैसा होगा यह सृष्टी के घटकों के बीच विद्यमान कार्य-कारण (Cause & effect) संबंधों के अध्ययन से समझा जा सकता है। मनोविज्ञान ने मानसिक घटकों के कार्य-कारण संबंधो को समझकर जीवन के कई क्षेत्रों जैसे शिक्षा, व्यापार, व्यक्तित्व-विकास, असामान्य व्यवहार का उपचार, बच्चों की परवरिश इ. क्षेत्रों में जीवन को बेहतर बनाया है। उसी तरह समाज घटक प्रक्रियाओं के बीच के कार्य-कारण संबंधों को समझ कर समाज को इच्छित दिशा

देकर बहुजनों के समाज-जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। शोषित-बहुजनों के हित और मन के सच्चे सुख को हासिल करना ही धम्म है। "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के सिवा बुद्ध का **'धम्म'** कुछ भी नहीं है। बुद्ध के अनुसार दुख के कारण है इसलिये दुख है। दुख के कारणों को दुर करने से दुख दुर किये जा सकते है। **लालच तथा आसक्ति न सिर्फ शोषण कि मानसिक बुनियाद है बल्की वह दुखों का मुल कारण भी है।**

बुद्ध के अनुसार ये आसक्तियाँ तीन वर्गों मे रखी जा सकती है।

1) लालच, सुख के पीछे भागने की वृत्ति तथा अनावश्यक लगाव। **2)** अज्ञान, अंधविश्वास, झुठी धारणाओं, भ्रमों को अपने मन में पनाह देना, तथा निबुद्धता। **3)** अनिष्टकारी भावनायें जैसे घृणा, क्रोध, चिड़चिडाहट, या किसी के प्रति असहनीयता की भावना।

मन के सच्चे सुख का अपार धन से कोई संबंध नहीं है। एक छोटा बच्चा मिट्टी के खिलौने से खेलकर अपार खुशी हासिल करता है। आपसी प्रेम, विश्वास, सहयोग और त्याग की भावना तथा मानवी मुल्यों को मन में विकसित करके, समाज को समृद्ध करनेवाले जीवन-दर्शन को अपनाकर ही सबको सच्ची खुशी हासिल होती है। इसके विपरीत अपने बीवी-बच्चों, मित्रों, रिश्तेदारों इ. के प्रति अतार्किक अपेक्षायें रखना, उनपर अपनी इच्छा-अपेक्षायें थोपना, उन पर गैरजरूरी अधिकार जताना इ. आसक्ति के प्रकार है जिनसे अंततः दुख ही निर्माण होता है। आसक्ति के पीछे भागने वाला व्यक्ति अंततः अपनी आसक्ति का गुलाम बन जाता है क्योंकि लालच और आसक्ति कम होने की बजाये लगातार बढ़तेही जाती है। इन्सान अपने पास क्या है इसे पहचानने की बजाये अपने पास क्या नहीं है, दुसरे के पास क्या है यही सोचते हुये अभाव में जीता है। प्रतिस्पर्धा करते हुये रातों की नींद और मन का चैन खो देता है।

अपनी आसक्तियों को समझकर उनपर नियंत्रण हासिल करना ही निर्वाण (सच्ची खुशी) को हासिल करना है। इसका मतलब दरिद्रता को निमंत्रण देना या शरीर को प्रताडित करना नही है। बुद्ध के अनुसार शरीर की आवश्यकताओं को पुरा करने जितनी संपत्ति को अर्जित करना हम सबका कर्तव्य है क्योंकि स्वास्थ्य अच्छा रखकर ही आप अपने मन और शरीर को दृढ, मजबूत तथा मस्तिष्क में ज्ञान की ज्योति को सदा जलाये रख सकेंगे।

लालच और आसक्ति "शोषण-व्यवस्था" को जन्म देती है। लालची व्यक्ति इच्छित चीजों को जैसे भी हो हासिल करना चाहते है। शोषक यह तर्क देते है कि वे सक्षम है इसलिये औरों पर हुकुमत (शोषण) करने के हकदार है। जब प्रकृति में अपने आपको जिन्दा रखने के लिये दुसरों का खुन बहाना जरूरी था तब तो **"Survival of the fittest"** इस नियम की सार्थकता थी लेकिन आज संसाधनों की प्रचुरता के युग में इस नियम की कोई सार्थकता नहीं है क्योंकि शोषित मेहनतकश जनता ने ही सुख सुविधा की सारी वस्तुयें बनायी है।

नैतिकता का उद्देश्य तथाकथित "शोषक सबल-सक्षम" लोगों पर मेहनतकश बहुजन जनता के हित में अंकुश लगाना है। इसलिये प्रजातांत्रिक मुल्यों पर आधारित नैतिकता को समाज में विकसित करना बुद्ध के धम्म का मुल उद्देश्य है। जनतंत्र यह सामाजिक व्यवस्था से भी बडी चीज है, वह मन की वृत्ति तथा जीवन-दर्शन है। शिक्षित और संगठित तो शोषक भी है लेकिन शोषक बहुजन समाज को उनके हक देने का नहीं बल्कि उनके हक छिनने का काम करते है। तेज बुद्धी और अच्छे चरित्र का व्यक्ति निरूपद्रवी इन्सान जरूर हो सकता है लेकिन जरूरी नहीं की वो औरों के काम आये ही। अच्छे चरित्र तथा इन्सानियत का दर्द (करुणा) होने वाला व्यक्ति सेवाभावी बन सकता है लेकिन जरूरी नहीं की उसमें जुल्म को मिटाने की सलाहियत होगी ही। **इसलिये प्रज्ञा, शील और करुणा इन तीनों के विकसित हुये बिना नैतिकता खोखली साबित होती है। इन्ही गुणों के विकास से "सामाजिक प्रजातंत्र" विकसित होता है।** हमारे मुलभुत अधिकार कानून द्वारा नहीं बल्कि अधिकारों के अनुरूप नैतिक मुल्य समाज में विकसित होने से ही सुरक्षित होते है। हमारे मुलभुत अधिकारों का विरोध खुद समाज द्वारा किया जाये तो देश का कानुन, संसद और न ही न्याय-व्यवस्था उन अधिकारों को सुरक्षित रख सकती है। मुलभुत अधिकारों का अमेरिका के निग्रो समुदाय को, तथा भारत के अछुतों को क्या उपयोग हुआ है?

इसलिये हर शोषक अपने शोषण के अनुकुल अंधविश्वास समाज में निर्माण करते रहे है। **शोषक की राजकीय सत्ता को भले ही आप नष्ट कर दे लेकिन उनके द्वारा विधाकत किये समाज में बहुजनवाद, या सच्चे सामाजिक लोकतंत्र के बीज उग ही नही सकते।** इसलिये केवल शोषक बदलते रहे है, शोषकों के चेहरे बदलते रहे है लेकिन आम लोगों का शोषण समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि होने वाले परिवर्तन केवल उपरी सतह के रहे है।

जैसी हमारी सोच बनती है वैसा ही हमारा व्यवहार होता है। हमारा मन मस्तिष्क ही हमे अच्छा या बुरा बनाता है इसलिये बहुजन समाज के हितों की बातों को कायम करने के मकसद के प्रति अपने मन मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना ही सदाचार की ओर पहला कदम बढाना है। **इसलिये बुद्ध के अनुसार तर्क से विकसित समझ (प्रज्ञा), अच्छा चरित्र (शील) तथा इन्सानियत के दर्द की अनुभूति (करुणा) इन तीनों का समाज में विकसित होना जरूरी ही नहीं बल्कि यह अनिवार्य है तभी बहुजन समाज के हर घटक को उसका अधिकार मिलने की नैतिक अनिवार्यता समाज में विकसित की जा सकती है। ऐसे ही लोगों से न बिकने वाला, न झुकने वाला और सबके साथ न्याय करने वाला "बहुजन समाज" बन सकता है।**

हमारे मन की भावनाओं के असर से हमारा माहौल कभी अछुता नहीं रह सकता। इसलिये सही दृष्टिकोण रखना, सही उद्देश्य कायम करना, सही संभाषण करना, जीवनयापन का सही तरीका अपनाना, सही दिशा में प्रयत्न करना, सही मानसिकता निर्माण करना, और सही एकाग्रता रखना 'अष्टांग मार्ग' है जिसका पालन करने की सीख बुद्ध ने दी है। अष्टांग मार्ग से जीवन-यापन करना ही निर्वाण (सच्चा सुख) प्राप्त करना है। बुद्ध का उद्देश्य आम इन्सान को सिर्फ शोषण से मुक्त कराना ही नहीं बल्कि उन्हे एक परिपूर्ण जीवन जीने के लिये हर किस्म की जंजीरों से आजाद करना है। बुद्ध ने हमारी आपके इन्सानों का सपना साकार करने की कोशिश की है। बुद्ध ऐसी समाज व्यवस्था चाहते

देकर बहुजनों के समाज-जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। शोषित-बहुजनों के हित और मन के सच्चे सुख का सामंजस्य करना ही धम्म है। "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के सिवा बुद्ध का **'धम्म'** कुछ भी नहीं है। बुद्ध के अनुसार दुख के कारण है इसलिये दुख है। दुख के कारणों को दुर करने से दुख दुर किये जा सकते है। **लालच तथा आसक्ति न सिर्फ शोषण कि मानसिक बुनियाद है बल्की वह दुखों का मुल कारण भी है।**

बुद्ध के अनुसार ये आसक्तियाँ तीन वर्गों मे रखी जा सकती है।

1) लालच, सुख के पीछे भागने की वृत्ति तथा अनावश्यक लगाव। 2) अज्ञान, अंधविश्वास, झूठी धारणाओं, भ्रमों का अपने मन में पनाह देना, तथा निबुद्धता। 3) अनिष्टकारी भावनाये जैसे घृणा, क्रोध, चिड़चिड़ाहट, या किसी के प्रति अमंगलोपना की भावना।

मन के सच्चे सुख का अपार धन से कोई संबंध नही है। एक छोटा बच्चा मिट्टी के खिलौने से खेलकर अपार खुशी हासिल करता है। आपसी प्रेम, विश्वास, सहयोग और त्याग की भावना तथा मानवी मुल्यों को मन में विकसित करके, समाज को समृद्ध करनेवाले जीवन-दर्शन को अपनाकर ही सबको सच्ची खुशी हासिल होती है। इसके विपरीत अपने बीवी-बच्चों, मित्रों, रिश्तेदारों इ. के प्रति अनावश्यक अपेक्षायें रखना, उनपर अपनी इच्छा-अपेक्षायें थोपना, उन पर गैरजरूरी अधिकार जताना इ. आसक्ति के प्रकार है जिनसे अंततः दुख ही निर्माण होता है। आसक्ति के पीछे भागने वाला व्यक्ति अंततः अपनी आसक्ति का गुलाम बन जाता है क्योंकि लालच और आसक्ति कम होने की बजाये लगातार बढतेही जाती है। इन्सान अपने पास क्या है इसे पहचानने की बजाये अपने पास क्या नहीं है, दुसरे के पास क्या है यही सोचते हुये अभाव में जीता है। प्रतिस्पर्धा करते हुये रातों की नींद और मन का चैन खो देता है।

अपनी आसक्तियों को समझकर उनपर नियंत्रण हासिल करना ही निर्वाण (सच्ची खुशी) को हासिल करना है। इसका मतलब दरिद्रता को निमंत्रण देना या शरीर को प्रताडित करना नही है। बुद्ध के अनुसार शरीर की आवश्यकताओं को पुरा करने जितनी संपत्ति को अर्जित करना हम सबका कर्तव्य है क्योंकि स्वास्थ्य अच्छा रखकर ही आप अपने मन और शरीर को दृढ, मजबूत तथा मस्तिष्क में ज्ञान की ज्योति को सदा जलाये रख सकेंगे।

लालच और आसक्ति "शोषण-व्यवस्था" को जन्म देती है। लालची व्यक्ति इच्छित चीजों को जैसे भी हो हासिल करना चाहते है। शोषक यह तर्क देते है कि वे सक्षम है इसलिये औरों पर हुकुमत (शोषण) करने के हकदार है। जब प्रकृति में अपने आपको जिन्दा रखने के लिये दुसरों का खून बहाना जरूरी था तब तो **"Survival of the fittest"** इस नियम की सार्थकता थी लेकिन आज संसाधनों की प्रचुरता के युग मे इस नियम की कोई सार्थकता नहीं है क्योंकि शोषित मेहनतकश जनता ने ही सुख सुविधा की सारी वस्तुयें बनायी है।

नैतिकता का उद्देश्य तथाकथित "शोषक सबल-सक्षम" लोगों पर मेहनतकश बहुजन जनता के हित में अंकुश लगाना है। इसलिये प्रजातांत्रिक मुल्यों पर आधारित नैतिकता को समाज में विकसित करना बुद्ध के धम्म का मुल उद्देश्य है। जनतंत्र यह सामाजिक व्यवस्था से भी बडी चीज है, वह मन की वृत्ति तथा जीवन-दर्शन है। शिक्षित और संगठित तो शोषक भी है लेकिन शोषक बहुजन समाज को उनके हक देने का नही बल्कि उनके हक छिनने का काम करत है। तेज बुद्धी और अच्छे चरित्र का व्यक्ति निरूपद्रवी इन्सान जरूर हो सकता है लेकिन जरूरी नही की वो औरों के काम आये ही। अच्छे चरित्र तथा इन्सानियत का दर्द (करुणा) होने वाला व्यक्ति सेवाभावी बन सकता है लेकिन जरूरी नही की उसमें जुल्म को मिटाने की सलाहियत होगी ही। **इसलिये प्रज्ञा, शील और करुणा इन तीनों के विकसित हुये बिना नैतिकता खोखली साबित होती है। इन्ही गुणों के विकास से "सामाजिक प्रजातंत्र" विकसित होता है।** हमारे मुलभुत अधिकार कानून द्वारा नही बल्कि अधिकारों के अनुरूप नैतिक मुल्य समाज में विकसित होने से ही सुरक्षित होते है। हमारे मुलभुत अधिकारों का विरोध खुद समाज द्वारा किया जाये तो देश का कानुन, संसद और न ही न्याय-व्यवस्था उन अधिकारों को सुरक्षित रख सकती है। मुलभुत अधिकारों का अमेरिका के निग्रो समुदाय को, तथा भारत के अछुतों को क्या उपयोग हुआ है?

इसलिये हर शोषक अपने शोषण के अनुकुल अंधविश्वास समाज में निर्माण करते रहे है। **शोषक की राजकीय सत्ता को भले ही आप नष्ट कर दे लेकिन उनके द्वारा विधाक्त किये समाज में बहुजनवाद, या सच्चे सामाजिक लोकतंत्र के बीज उग ही नही सकते।** इसलिये केवल शोषक बदलते रहे है, शोषकों के चेहरे बदलते रहे है लेकिन आम लोगों का शोषण समाप्त नही हुआ है क्योंकि होने वाले परिवर्तन केवल उपरी सतह के रहे है।

जैसी हमारी सोच बनती है वैसा ही हमारा व्यवहार होता है। हमारा मन मस्तिष्क ही हमे अच्छा या बुरा बनाता है इसलिये बहुजन समाज के हितों की बातों को कायम करने के मकसद के प्रति अपने मन मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना ही सदाचार की ओर पहला कदम बढाना है। **इसलिये बुद्ध के अनुसार तर्क से विकसित समझ (प्रज्ञा), अच्छा चरित्र (शील) तथा इन्सानियत के दर्द की अनुभूति (करुणा) इन तीनों का समाज में विकसित होना जरूरी ही नही बल्कि यह अनिवार्य है तभी बहुजन समाज के हर घटक को उसका अधिकार मिलने की नैतिक अनिवार्यता समाज में विकसित की जा सकती है। ऐसे ही लोगों से न बिकने वाला, न झुकने वाला और सबके साथ न्याय करने वाला "बहुजन समाज" बन सकता है।**

हमारे मन की भावनाओं के असर से हमारा माहौल कभी अछूता नही रह सकता। इसलिये सही दृष्टिकोण रखना, सही उद्देश्य कायम करना, सही संभाषण करना, जीवनयापन का सही तरीका अपनाना, सही दिशा में प्रयत्न करना, सही मानसिकता निर्माण करना, और सही एकाग्रता रखना 'अष्टांग मार्ग' है जिसको पालन करने को तथागत बुद्ध ने कहा है। अष्टांग मार्ग से जीवन-यापन करना ही निर्वाण (सच्चा सुख) प्राप्त करना है। बुद्ध का उद्देश्य आम इन्सान को सिर्फ शोषण से मुक्त कराना ही नही बल्कि उसे एक परिपूर्ण जीवन जीने के लिये हर किस्म की जंजीरों से आजाद करना है। बुद्ध ने हमेशा आजाद इन्सान का सपना साकार करने की कोशिश की है। बुद्ध ऐसी समाज व्यवस्था चाहते

Narayanrao Bapu Mahavidyalaya

थे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति खुद में जो भी क्षमतायें है उनका विकास करके **"स्व"** के वास्तविकिकरण का आनन्द **(Self Actualization)** अनुभव करेंगे। इसलिये अशोक इ. बौद्ध सम्राटों के शासन में हर व्यक्ति के गुण-कौशल्य को उभारने तथा सामाजिक जीवन को समृद्ध बनाने के प्रयास किये गये, इसलिये अशोक के काल में हर तरह की कलायें विकसित हुई।

दुख की तकलीफ से बचने की प्रेरणा है इसी लिये हम दुख से बचने के लिये सदा प्रयत्नशील रहते है। दुख की संभावना हो न हो तो कुछ भी करने की प्रेरणा नही रहेगी। नेकी-बदी, प्यार-नफरत इ. परस्पर विरोधी चीजों के कारण ही हमारा जीवन परिवर्तनशील है। **वर्चस्व-वृत्ति, शोषण-प्रवृत्ति, मतलब परस्ती, आलस, डर, इ. जन्म से पायी जानेवाली मुलभुत प्रवृत्तियाँ है। जिस तरह हम रोज नहाकर मैल गंदगी से छुटकारा पाकर तरोताजा होते है उसी तरह तर्क की सहायता से सदैव आत्मनिरीक्षण करके हम अपने मन की शोषण-वृत्ती इ. मुलभुत प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रख सकते है, अन्यथा मन में इन समाज-विरोधी वृत्तियों को बढते देर नही लगेगी।** इसलिये बुद्ध ने अपनी बुद्धी-तर्क से अपने मस्तिष्क की आसक्ति, मस्तिष्क में डाले गये धार्मिक - गैरधार्मिक, अंधविश्वासों, अतार्किक प्रेरणा, आसक्तियों, धारणाओं को खोज-समझकर उन्हे त्यागने और खुद में नेक अखलाख (अच्छा चरित्र), इन्सानियत का दर्द, और तर्क से विकसित समझ **(Insight)** विकसित करने को जरूरी बताया है।

सिग्मंड फ्राइड ने भी मनोविश्लेषकों को खुद की अतार्किक अचेतन प्रेरणाओं को समझने की अनिवार्यता जतायी है ताकि वे मनोरोगियों का उपचार करते करते कहीं खुद ही अपनी भावनाओं में उलझ न जाये।

प्रकृति की प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। जब कारण और परिणाम करीब-करीब होते है तब हम उन दोनों के बीच के संबंधो को स्पष्ट रूप से पहचान कर सकते है जैसे आग का जलना और धुयें का निकलना। लेकिन **जब घटना का कारण हमारी नजरों से ओझल रहता है तब हमे वह घटना अद्‌भुत या दैवी शक्ति से घटित हुई जान पडती है।** मानव ने अपनी बुद्धि के सहारे आज तक प्रकृति के अनेक रहस्य खोले है जो हमें कभी अद्‌भुत लगते थे। इसलिये बुद्धि-तर्क के इस्तेमाल से कभी न कभी हम उस घटना का कारण भी जान लेंगे जो आज हमे अचंभित करती है। जादुगरी का व्यवसाय करने वाले जादुगर के कारनामे हमे हैरत में डाल देते है लेकिन जैसे ही उसकी "ट्रीक" (चालाकी) का पता चलता है हमारी हैरानी खत्म हो जाती है। **इसलिये किसी स्पष्ट कारण के अभाव में किसी घटना के पीछे किसी दैवी शक्ति की व्यर्थ ही कल्पना करके उसपर विश्वास कायम करना यानि अपने मन में अंधविश्वास कायम करना है।** जिस चीज को हम सिद्ध ही नही कर सकते उसकी व्यर्थ ही कल्पना करके उसको सच नही मानना चाहिये। इसलिये **ईश्वर पर आधारित धर्म "कल्पना" पर आधारित धर्म है, ऐसे धर्मो ने अंततः अंधविश्वासों की ही निर्मिती की है।**

ईश्वर को किसने बनाया इस का किसी के पास जवाब नही है। सब यह मानकर चलते है कि ईश्वर पहले से ही अस्तित्व में है। जमीन, पथ्थर, आकाश, तारे इ. आप को नजर आते है इसलिये सृष्टि के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये तो आपको कोई भी कठिनाई नही है। **ईश्वर पहले से है ऐसी कोरी कल्पना करने की बजाय "यह सृष्टि पहले से ही अस्तित्व में है" यह बात ज्यादा तर्कपुर्ण लगती है। ज्यादा से ज्यादा कोई इतना ही कह सकता है कि सृष्टि के अस्तित्व का कारण फिलहाल कोई खोज नही पाया है।**

हमें अपनी आँखो से आकाश में जितने तारे दिखायी देते है वह हमारी गॅलेक्सी का मामुली सा हिस्सा मात्र है। हमारी गॅलेक्सी में कई तारे सूर्य से कई गुणा बडे और उससे कई हजार गुणा प्रकाशमान है। प्रकाश की किरण एक वर्ष में जितनी दुरी तय कर सकती है उतनी दुरी को एक प्रकाश वर्ष कहते है। एक प्रकाश वर्ष की दुरी **5,865,696,000,000** मील की होती है। सूर्य गॅलेक्सी के केंद्र मे स्थित है यह मानकर हमारी अपनी गॅलेक्सी के एक छोर से दुसरे छोर का अंतर **60,000** प्रकाश वर्ष में आता है। **(30,000)* 2 = 60,000**यानी हमारी गॅलेक्सी के एक छोर से दुसरे छोर का अंतर **351941760000000000** मील है। एक हजार मील प्रती घंटे की रफ्तार वाले रॉकेट से हमे हमारी गॅलेक्सी के एक छोर से दुसरे छोर तक पहुँचने में **40176,000,000** वर्ष यानी **चालीस हजार एक सौ छहत्तर लाख वर्ष** लग जायेंगे। जैसे सारा समंदर असंख्य रेत के कणों से भरा पडा है उसी तरह सारी कायनात (सृष्टि)असंख्य गॅलेक्सियों से भरी पडी है। जब हमारी गॅलेक्सी एक रेत के कण जैसी है तब आप अन्दाजा लगा सकते है की सारी कायनात कितनी विशाल है? उसकी तुलना में पृथ्वी और उस पर रहने वाले इन्सानों की हैसियत कितनी मामुली है?

इतनी नगण्य हैसियत रखने वाले इन्सानों से मान्यता हासिल करने के लिये, उनसे अपने अस्तित्व को मनवाने के लिये धर्म - ग्रंथों का तथाकथित काल्पनिक ईश्वर इतना परेशान क्यों है? इतना असहाय क्यों है? इससे भी यह साबित हो जाता है की ईश्वर काल्पनिक अंधविश्वास के सिवा कुछ नही है। इसे कई तरह से साबित किया जा सकता है।

हर धर्म का विश्वास है की ईश्वर ने सारे जीव जन्तुओं का निर्माण किया है लेकिन **हकीकत मे जीव जन्तुओं का निर्माण ईश्वर के कारण नही बल्कि प्रकृति में जीव निर्मिती के लिये आवश्यक घटकों तथा विशेष परिस्थितीयों का मौजुद होना है।** दुध को गर्म करके या बहुत अधिक दुध में किंचित सा सोडा डाल देने से दुध फटता ही नही यानी उसमें विशिष्ट जीव-किटाणुओं का विकास होकर दही बन ही नही पाता। दुध में कब जीवन निर्मिती होगी यह ईश्वर के नही आपके हाथ में है क्योंकि आपको इसका **"कार्य-कारण"** संबंध मालुम हो चुका है। **कार्य-कारण** संबंध स्पष्ट होने से ही आजकल अंडों पर बैठने का काम मुर्गियों से नही कराया जाता बल्कि मशीन अंडों से कुछ ही मिनिट में चुजों का निर्माण कर देती है। गर्भ धारण करने में अक्षम स्त्री के अंडकोष को अलग टेस्ट ट्युब में पुरुष शुक्राणु से फलित करके बाद में उसे स्त्री गर्भाशय में पहुँचाकर बच्चे पैदा हो रहे है। पहले पेड-पौधे बीजों से पैदा होते थे। इन्सान ने न सिर्फ पहले पेड को आलों के कलम बनाकर पेडो को उगाना शुरू किया, फिर एक ही पेड पर तरह तरह के गुलाब उगाये, एक ही पेड से तरह तरह के आम उगाये, **"Tissue Culture"** पद्धती से छोटी सी कलम की पोशाक से असंख्य पेड पैदा किये हो। जेनेटिक

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidiciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139 | Special Issue - 101 ,Vol. II | Jan. 2020 | Peer Reviewerd

विज्ञान पैदा होने वाले बच्चे के गुणधर्म तक निर्धारित कर सकता है। समगुणधर्मिय प्रतिरूपी बछडों **(Clones)** को वैज्ञानिक पैदा कर ही चुके है।

इसी तरह जब अनुकूल परिस्थिती और आवश्यक भिन्न-भिन्न रसायनिक घटक उपलब्ध हुये तो अलग-अलग प्रकार के असंख्य एकपेशिय जीवों की निर्मिती हुई है। रोग के जंतुओं को हमारा शरीर प्रतीरोध करता है। लेकिन हमारे पेट में असंख्य कीटाणुओं की बस्ती है। हमारा शरीर इन कीटाणुओं का इसलिये प्रतीरोध नही करता क्योंकि ये कीटाणु हमारे शरीर के लिये आवश्यक विटामिन पैदा करते है। इस तरह जीव यंत्रणा उत्क्रांती की कई यंत्रणाओं से जुडी है। प्रतिकुल माहोल से तालमेल के प्रयासों से शरीर में परिवर्तन होते गये और जीवों की शरीर-यंत्रणा और जटील होती गयी। मानव शरीर-यंत्रणाजटिलतम मानी जाती है।यह जटिलता लाखों-करोडों सालों की उत्क्रांती का नतीजा है। शरीर की प्रणालियों को अपने निरीक्षण और तर्क से समझने के कारण ही मानव ने दिल मे कृत्रिम वाल्व लगाकर, धमनियों के अवरोधों को दुर करके, गुर्दे का प्रत्यारोपण इ. सैकडों तरीकों से शरीर की प्रक्रिया को मौत की बजाय जीवन की ओर मोड दिया है।

अलौकिक शक्ति को नकारने के बुद्ध के तीन उद्देश्य थे। 1) इन्सानों को वे तार्किक-बुद्धि के रास्ते पर लाना चाहते थे, 2) वे इन्सानों को सत्य की खोज के लिये स्वतंत्र करना चाहते थे, 3) उनका मकसद मन के अंधविश्वास को ही समाप्त करना था क्योंकि अंधविश्वास इन्सान की "जानने-समझने" की मुल-प्रवृत्ति की हत्या कर देता है। बौद्धिक-तर्कवाद के सिवा बुद्ध धम्म की शिक्षा में कुछ भी नही बचेगा।

म. ज्योतिराव फुले का मानना है कि मानवता पर आधारीत सारे धर्म ग्रंथ जनता के दुखों के प्रति संवेदनशिल भले इन्सानों ने बनाये है। किसी ईश्वर ने धर्मग्रंथ इ. नही भेजे है। ऐसे भले इन्सानों ने अपनी अभुतपूर्व कामयाबी देखकर कईयों को लगने लगा कि उससे यह सब ईश्वर ही करा रहा है। वह तो जरीया या ईश्वर-दुत मात्र है।

बुद्ध के अनुसार ईश्वर मे विश्वास कायम करना यानि पुजा-अर्चना मे विश्वास कायम करना है जिससे पुजारी वर्ग ही शक्तिशाली होकर उभरता है। पुजारी ही वह धुर्त वर्ग है जिसने अंधविश्वासों की निर्मिती करके व्यक्ति के तार्किक विकास को नष्ट किया है। इसलिये "कल्पनाओं पर आधारित विश्वास" सही रास्ता नही है।

बुद्ध के अनुसार 'आत्मा' के अस्तित्व पर विश्वास करना ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने से भी अधिक खतरनाक है क्योंकि इससे न सिर्फ पंडे पुरोहितों का वर्ग निर्माण होकर अंधविश्वासों की निर्मिती होती है बल्कि आत्मा की कल्पनायें व्यक्ति को जन्म से मृत्यू तक पंडो-पुजारियों के नियंत्रण में कर देती है। इसलिये प्रत्येक धर्म का पुजारी लोगों को बिना कोई तर्क किये आत्मा, ईश्वर इ. के अस्तित्व को मान लेने की शर्त रखता है। स्वर्ग, नर्क, आत्मा पर विश्वास करना याने मन में अंधविश्वास कायम करना है। बुद्ध किसी भी धार्मिक प्रथाओं, उत्सवों तथा कर्म-कांडों के सख्त खिलाफ थे क्योंकि ये कर्मकांड अंधविश्वास के घर या आश्रयस्थान है।

व्यक्ति के स्वभाव मे होने वाले बुनियादी परिवर्तन **(Basic Changes)** से व्यक्ति पुरी तरह बदल जाता है इसलिये यह परिवर्तन व्यक्ति का पुनर्जन्म (बुनियादी परिवर्तन) है। इसमे आत्मा जैसी किसी चीज का प्रश्न ही उपस्थित नही होता। प्रज्ञा, शील, करुणा के विकास के कारण व्यक्ति में होने वाले पुर्ण परिवर्तन को बुद्ध ने पुनर्जन्म माना है **।शरीर और मस्तिष्क के कारण ही हम विभीन्न संवेदनाओं को ग्रहण करते है, विचार, तर्क करते है। मृत्यू के बाद शरीर और मस्तिष्क भी नष्ट हो जाता है। इसलिये मृत्यू के उपरांत किसी भी अनुभूती के होने का प्रश्न ही उपस्थित नही होता। मरने के बाद शरीर के नष्ट होते ही व्यक्ति का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।**

डॉ. आम्बेदकर के अनुसार **मानवता का उद्देश्य पशु-प्रवृत्तियों जैसे कही भी खाना, पीना, सोना, गुस्सा आने पर हिंसा करना, जबरन संभोग करना, दुसरों की वस्तुयें छीनना इ. पर नियंत्रण रखने के लिये नैतिकता, प्रजातांत्रिक मुल्यों पर आधारित व्यवस्था को कायम करके समाज को खुशहाल और समृद्ध बनाना है।** प्रज्ञा, शील और करुणा के विकास से व्यक्ति अपनी पशु प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कायम कर सकता है। समाज को समृद्ध बनाने के लिये यह भी जरूरी है कि हर व्यक्ति को उसके गुणों का विकास करने के लिये उचित खाली समय यानी फुर्सत हासिल हो। ताकि वे अपने उन व्यक्तित्व गुणों और खुबीयों का विकास कर सके जो औरों के काम आते है और समाज को समृद्ध बनाने में मदद देते है। मशीनों के उपयोग से खाली समय उपलब्ध हो सकता है। प्रत्येक जनतांत्रिक समाज का यह कर्तव्य है कि वह अपने हर सदस्य के लिये पर्याप्त खाली समय उपलब्ध कराये।

दरअसल शोषकों ने मशीनों को शोषण और मुनाफाखोरी के साधन के रूप मे इस्तेमाल किया है। इसमे दोष मशीनों का नही बल्कि मशीनों के सामाजिक इस्तेमाल का है। मशीन से काम अगर जल्दी होता है तो कर्मचारी के वास्तविक काम के घंटे कम करके (क्योंकि उत्पाद में तो कमी नही हुयी है) उन्हे अपनी उन खुबीयों के विकास का अवसर देना चाहिये जिससे समाज समृद्ध होता है।

बुद्ध हिंसा के विरोधी थे लेकिन वे न्याय के समर्थक थे और अपने बुनियादी हकों की रक्षा करने, या न्याय प्राप्त करने के लिये जब हिंसा ही एक रास्ता बचा हो तो उन्होने हिंसा को जायज माना है। बुद्ध के अनुसार हमने कभी दुष्ट ताकतों के आगे आत्म-समर्पण नही करना चाहिये फिर चाहे हमे युद्ध ही क्यों ना करना पडे। मगर किया जाने वाला युद्ध व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये नही होना चाहिये।

कठोर दंड या दमनकारी नियमों से समाज में आवश्यक परिवर्तन नही लाये जा सकता। दंड या दमन के डर से व्यक्ति भले ही गलत काम न करें लेकिन जैसे ही उसे गलत काम करके दंड से बचे रहने का अवसर मिलता है वह अपने आपको गलत काम करने से नही रोक पाता। यही हमेशा होता रहा है। **इसलिये शक्ति का उपयोग तत्कालीन होता है। कुछ समय के लिये किसी का दमन भले ही किया जाये**

लेकिन दमन से दोबारा दमन करने की संभावना समाप्त नही होती।धम्म के माध्यम से ही व्यक्ति में मानवतावादी संस्कारो तथा तात्विक मुल्यों को विकसित किया जा सकता है।

वील डुरन्ट के अनुसार बुद्ध के समय राजाओं द्वारा पारंपरिक में रखे गये बड़े बड़े पारितोषिक जीतने के लिये विद्वानों तथा दार्शनिकों में कड़ी प्रतियोगितायें हुआ करती थी जिसमें बाल की खाल निकालने में माहिर विद्वान भाग लेते थे। एक जगह से दुसरे जगह पर घुमते रहने वाले इन लोगों ने अपनेतर्क-कुतर्क से किसी भी बात को सिद्ध करने को अपना पेशा बनाया हुआ था। इसलिये बुद्ध के अनुसार किसी भी शिक्षा को प्रमाण मानने का यह आधार नही है कि उस शिक्षा को किसी धार्मिक किताब से लिया गया है, न ही हमने तर्क की बारीकियों से प्रभावित होना है, न ही उपरी दिखावे से प्रभावित होना है,न ही देखना है कि वे कितने स्वीकार्य है, न ही इस बात पर जाना है कि बतायी जाने वाली बातें सच्ची प्रतीत हो रही है न ही इस बात पर जाना है की बातों को कहने वाले व्यक्ति का ओहदा क्या है। **बल्कि यह देखना है कि बताये जा रहे विश्वास या दृष्टिकोन आम बहुजनों के लिये उपयोगी है या उससे उनका नुकसान होने वाला है?** यानी **"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय"** की कसौटी से बातों की उपयोगिता को जांचना-परखना है।

शोधकों का मकसद शोषण-व्यवस्था को कायम रखना है। सारा शब्दों का जाल, सारा धार्मिक, गैर-धार्मिक दर्शन, तर्कों और कुतर्कों का ताना बाना इसलिये बुना जाता है ताकि बहुजन इसी में उलझकर अपने हकों की बातें भुल जाये। इसका तोड यही है की आप उन्हे अंततः यही सवाल करे कि : "हमारे छीने गये अधिकार हमे वापस करो, हमारा शोषण बन्द करों"। इस बात पर सारा भ्रमजाल टूट जाता है क्योंकि बहुजन अपने हकों की बात अपने दिमाग और ओठों पर नही लाये यही तो उनके इस "ताने-बाने" का मकसद होता है।

बुद्ध के अनुसार किसी सिद्धान्त को मनवाने के लिये उसके निर्माता के नाम के प्रभाव का उपयोग करना पड़े तो वह सच्चा सिद्धान्त या सच्ची सीख नही है। उन्होने खुद की शिक्षा को मानव द्वारा मानव को दिया जाने वाला संदेश बताया और अपना कोई उत्तराधिकारी भी नियुक्त नही किया।

उपरोक्त शील द्वारा नियंत्रित शक्ती ही समाज में नैतिकता स्थापित कर सकती है और इसीसे सच्चा सामाजिक, राजनितिक लोकतंत्र कायम हो सकता है तथा समाज सुखी, समृद्ध और शक्तीशाली बन सकता है।

इसलिये वर्तमान समय में बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति की बहुत जरूरत है।

Consolidated Bibliography

1 Ambedkar, Dr. B. R. "The Buddha And His Dhamma"; Buddha Bhoomi Publication, Nagpur. (Reprinted by The Corporate Body of The Buddha Educational Foundation 11th Floor, 55, Hang Chow S. Rd. Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C. (ENO79-1141.)
2 Encyclopedia of Religion & Ethics, Vol. X.
3 वामन, मेश्राम. "जाति समाज को तोड़ने का वास्तविक हथियार", पृष्ठ क्र.03-05, संस्करण चौथा, प्रकाशक, मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट, 4765/46, तीसरी मंजिल, रैगरपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-05.
4 लभाने, म. वि. आवृत्ती (1982). "बौद्ध तत्त्वज्ञान काळाची गरज", त्रिरत्न प्रकाशन, कृष्ण नगर, नागपूर-27.
5 Ambedkar, Dr. B. R. Vol. 5, P-137.
6 Ibid, P-249-251.
7 Ibid, P-137, 119, 117.
8 David Bergamini.
9 महात्मा फुले. P-501-202.
10 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 11, P-254-255.
11 Ibid, Vol. 11, P-259, 261.
12 Ibid, Vol. 11, P-254.
13 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 9, P-283-284.
14 Ibid, Vol. 11, P-346, Vol. III, P-451.
15 Ibid, Vol. III, P-453.
16 Will Durant, P-417-418.
17 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 11, P-278.
18 The Pali Tripitaka, Pali Texts.
19 Stanford Encyclopedia of Philosophy.
20 Gethin, Rupert, 1998, The Foundations of Buddhism, Oxford University Press.
Access to Insight, Readings in Buddhism.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Peer Reviewed Referred and UGC
Listed Journal (Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA





Volume-IX, Issue-I
January - March - 2020
Marathi Part - III

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Ajanta Prakashan

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

AJANTA

Volume - IX, Issue - I, January - March - 2020
ISSN - 2277 - 5730
Impact Factor - 6.399 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

प्रा. डॉ. [illegible]

In Recognition of the Publication of the Paper Entitled

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Ajanta Prakashan, Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 8390984760 Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta5050@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor : Vinay S. Hatole

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

MARATHI PART - III

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2019 - 6.399

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

Princ
Narayanrao

CONTENTS OF MARATHI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२५	राष्ट्रसंताच्या खंजरी भजनांद्वारे समाजप्रबोधन **प्रा. गजानन एम. लोहटे**	९५-९७
२६	वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज : एक जीवप्रवास **प्रा. डॉ. हरिचंद्र नांगसू नरेटी**	९८-१००
२७	वंदनीय राष्ट्रसंतानी स्त्रीशक्तीचा घेतलेला शोध व बोध **प्रा. डॉ. कोकिळा अनंतराव गावंडे**	१०१-१०५
२८	राष्ट्रसंतांच्या साहित्यातून डोकावणारी जीवनमूल्ये **सहा. प्रा. डॉ. रमेश एम. राठोड**	१०६-१०९
२९	मराठी साहित्यातील अक्षरलेणे ग्रामगीता **प्रा. रेखा दिगबंर अडाव**	११०-११२
३०	वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे संगीत चिंतन **डॉ. अनिरुध्द खरे**	११३-११५
३१	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी **प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड**	११६-११९
३२	राष्ट्रसंताची भाषा व साहित्यविषयक दृष्टीकोन **प्रा. कार्तिक रामदास पाटील**	१२०-१२३
३३	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांची ग्रामस्वराज्य संकल्पना **प्रा. किशोर चौरे**	१२४-१२८
३४	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे दलित चळवळीतील योगदान **प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे**	१२९-१३२
३५	तुकडोजी महाराजांचे जीवन शिक्षण **विशाल शिवाजी इंगळे**	१३३-१३७
३६	राष्ट्रसंतांचे स्त्री सबलीकरण व महिलोन्नती विषयक विचार **प्रा. साजिद के. शाह**	१३८-१४३

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

३१. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी

प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड

सारांश

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज एक युगद्रष्टये संत होते. जनमानसात राष्ट्रधर्माची ज्योत पेटविली. त्यानी सर्वसामान्य माणसाच्या वैयक्तिक भावनांना धक्का न लावता त्यांचे मतपरिवर्तन करण्याचा प्रयत्न केला. त्यांच्यात देशभक्तीची प्रेरणा जागृत केली. स्वातंत्र्याच्या चळवळीतील विमुर, आष्टी, यावली, बेनोडा या गावाचा इतिहास यांची साक्ष आहे.

1920 ते 1948 हा कालखंड गांधीयुग म्हणून ओळखला जातो. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजावर गांधीजीच्या सत्य, अहिंसा, समता, मानवता, प्रेम, वैज्ञानिक दृष्टीकोनाचा प्रभाव होता. त्यांच्याच विचाराने 1936 ते 1942 पर्यंत राष्ट्रसंतानी लोकजागृती कार्याला वाहून व पारतंत्र्यात पडलेल्या समाजाला जागृत केले. लोकांना, देशाला स्वातंत्र्य मिळवुन देण्यासाठी प्रेरीत केले. राष्ट्रसंताची भजने युगसंवाद साधणारी होती. राष्ट्रसंत दररोज हजारों लोकांना आपल्या भजन भाषणातून राष्ट्रीयत्वाची दिक्षा देत होते. राष्ट्रसंताचा भजन प्रभाव स्वातंत्र्यापूर्वी होता तसाच स्वातंत्र्यानंतरही होता. प्रत्यक्ष रणांगणार जावून आपल्या खंजिरी भजनाने जवानात जोश निर्माण करणारे राष्ट्रसंत तुकडोजी एकमेव संत होते. राष्ट्रसंतानी आपली ईश्वरभक्ती राष्ट्रभक्तीकडे वळविली. म्हणून त्यांच्या मुखातून राष्ट्रगिते बाहेर येऊ लागले. त्या काळात विदर्भात संत गाडगेबाबांचा 'खराटा' डॉ. पंजाबराव देशमुखांचा शिक्षा विस्तार करणार 'खडू' आणि राष्ट्रसंताची 'खंजेरी' असे समाजजीवनाचा महामंत्र देऊन गेले.

अल्बर्ट आईनस्टॉईन नावाचा तत्वनेता महात्मा गांधीजीबद्दल असे म्हणत असे की, असा हाडामासाचा माणूस या पृथ्वीतलावावर होऊन गेला यावर पुढील पिढयांचा विश्वास बसणार नाही. गांधीजीचे मोठेपण केवळ शब्दात मांडण्याइतके ते मोठे नव्हते तर एकंदर भारताच्या सामाजिक, राजकीय, आर्थिक क्षेत्राच्या जडणघडणीत गांधीजीचे स्थान एकमेव व्दितीय होते.

Keyword : युगदृष्टये, राष्ट्रधर्म, मानवता, खंजिरी भजन, ईश्वरभक्ती, आईन्स्टीन.

महात्मा गांधी व सत्पुरुषसंताचे विचारातील स्थळे

महात्मा गांधीजीवर जॉन रस्कीन यांच्या 'अन्टू द लास्ट' या पुस्तकांचा आणि रशियन विचारवंत टॉलस्टॉय यांचा प्रभाव कायम होता. ग्रामगितेतील 'भू वैकुंठ' या 39 व्या अध्यायात राष्ट्रसंत तुकडोजी लिहीतात, ग्रामराज्याचे रामराज्य। स्वावलंबन हेचि स्वराज्य। बोलिले महात्मा विश्वपूज्य। विकास त्यांचा सुंदर हा– ग्रामगीता.

गरीब–श्रीमंत दारिद्रय रोगराई, पंथ, पक्ष, जातिभेदविरहीत समाजरचना जेथे परकेपनाची भावना नाही. अशी ग्रामरचना असलेले ग्रामराज्य तुकडोजींना अपेक्षीत होते. त्यासाठी त्यांनी परखड व प्रखर विचार मांडले. अन्न, वस्त्र, निवारा, आरोग्य, शिक्षण यासहीत सर्व जीवनाश्ययक वस्तूंची निर्मिती गावातच झाली पाहीजे. यासाठी ग्रामराज्य ही संकल्पना तुकडोजी महाराजांनी मांडली. त्यानी "चल चल अपुल्या गावाला। राहु नको शहराला।" असा संदेश दिला.

Principal
Narayanrao Ranit Mahavidyalaya

गांधीजीने सुध्दा खेडयाकडे चला असा संदेश दिला. त्यासाठी व्यक्तीगत, आध्यात्मिक आणि राजकीय स्वातत्र्याचा विचार मांडून गांधीजीनी रामराज्य संकल्पना मांडली. सत्याग्रह आणि उपोषण या शस्त्राचा वापर आयुष्यभर त्यांनी केला. सर्व कुटुंब ग्राम–राज्य–राष्ट्र विश्वांचे हित ज्यामध्ये अपेक्षीत आहे. त्यासाठी जबाबदारीने वागण्याची अपेक्षा करतात. गांधीजीनी सुध्दा सर्वोदयवादी विचार मांडला. सर्वानी सर्वासाठी झटावे। सर्वाच्या हितात स्वहित पाहावे। हाच सर्वोदयवादी विचार राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज मांडतात. या दोन महापुरूषांचे विचार प्रत्यक्ष अवलंब केल्यास ग्रामराज्य येऊ शकते. सामुदायिक प्रार्थनेच्या माध्यमातून दोन्हीही महापुरूषांनी सर्वधर्मसमभावाची व प्रेमधर्माची चळवळ जनमाणसात रूजविली. प्रेम आणि मानवता हेच दोन श्रेष्ठ धर्म आहे असे त्यांनी सांगितले. आपण 02 ऑक्टोंबर गांधीजीचा जन्मदिवस आंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस तर 30 एप्रील हा तुकडोजीचा जन्मदिवस ग्रामजयंती म्हणून साजरा केला जातो. कारण गाव हा 'विश्वाचा नकाशा' हे महाराजाना अभिप्रेत होते.

गांधी गितांजली नावाच्या पुस्तकात तुकडोजी महाराजांनी गांधीजीच्या जीवनावर 150 भजने लिहून गांधीजीच्या चौफेर व्यक्तीमत्वाचा चौफेर वेध घेतला आहे. गांधीनी आपल्या उभ्या आयुष्यात सत्य, अहिंसा, समता, सत्याग्रह या मूल्यांचा पुरस्कार करून स्वत: जसे निःस्पृह व निःस्वार्थ जीवन जगले. गांधीजीच्या याच मूल्यांचा संदर्भ देत 'सत्य अहिंसा पर मर मिटने। दे निर्भयता मन में। जग–जग चालक पालकदाता' अशी आळवणी करतात. अन्याये पीडा न होवो कोणास। न व्हावा मुंगीलाही त्रास। या गांधीजीच्या हिंसाविषयक मूल्यांचा ग्रामगितेत पुनरूच्चार करत समर्थन करतात.

सेवाग्राम आश्रम व राष्ट्रसंत तुकडोजी

अमरावती गांधीजींना भेटायला म्हणून तुकडोजी महाराज सेवाग्राममध्ये आले आणि महिनाभर राहीले. या दोघाच्या स्नेहांच्या धाग्यातून राष्ट्रभक्तीचे पवित्र वस्त्र विणले गेले.

अमरावती जिल्हयात मौशी तालुक्यात सातपुडा पर्वताच्या पायथ्याशी सालबर्डी नावाचे प्रसिध्द तिर्थक्षेत्र आहे. तिथे महाराजांनी 5 मार्च 1935 ला महायज्ञ केला. प्रचंड प्रतिसाद मिळाला. त्यानंतर तुकडोजी महाराजांची माहिती बापूना देण्यात आली होती. त्यातूनच बापू आणि राष्ट्रसंताच्या समक्ष भेटीचे नियोजन झाले होते. महात्मा गाधीना संतवचनाविषयी आदर होता. संत तुकाराम महाराजांचे काही अभंग त्यांनी इंग्रजीत भाषांतर केले होते. त्यावेळी तुकडोजी महाराजांचे भजन लोकप्रियतेच्या शिखरावर होते. अवघ्या 27 वर्षाचा तरूण राष्ट्रसंत सेवाग्राम आश्रमात दाखल झाला. 14 जुलै 1937 जमनालाल बजाज हे वीर बाबूराव हरकारे, नारायणराव बोडखे अशी मंडळी घेऊन सेवाग्राम आश्रमात दाखल झाली. जमनालाल बजाज यांनी गाधीना राष्ट्रसतांविषयी माहिती दिली. तुम्ही आमच्यासोबत आदिनिवासात थाबा असे सुचविले.

राष्ट्रसत तुकडोजी महाराज सरहदद गाधीसोबत राहीले. सेवाग्राम आश्रमात ते 13 ऑगस्ट 1936 पर्यंत होते. त्यांची ओजस्वी मूर्ती उर्ध्वदृष्टी सेवावृत्ती सोबत एकतारीवर तल्लीनतेने गायीली जाणारी भजने गाधीना मोहीत करून गेले. महात्मा गाधी त्यांना 'बुवा' म्हणायचे. अनेकजन राष्ट्रसताच्या भेटीला यायचे साहजिकच गाधीकडे लोक विचारत असत. तेव्हा गाधीजी लोकाना सागायचे. "बुवा एखादे देहात मे ग्रामसफाई करते होगे" तुकडोजी महाराजाचा मितव्यय, अपरिग्रह, भजनात तल्लीन होणारी वृत्ती सेवावृत्ती पाहुन गाधीनी त्याचा मुक्काम वाढविला. राष्ट्रसंत

Principal

सेवाग्राम आश्रमात सूतकताई करीत होते. त्यांची देवभक्तीला देशभक्तीची दिलेली जोड, स्वावलबी आचरण गांधीना प्रभावीत करून गेली.

राष्ट्रसंतानी सेवाग्राम आश्रमात राहुन समाजसेवा, सहभोजन, सहकार्य, जातपात न मानने, ग्रामसफाई, सर्वधर्मसमभावाने नित्यकम त्यांनी सुरू केले. त्यांच्यातील अशी लक्षणे पाहुन हा एक आपल्याच मार्गावर चालणारा जनकल्याण करणारा अवलिया संत आहे हे गांधीजीनी ओळखले. एकदा राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज भजन तन्मयतेने गात असताना गांधीजीचे मौन व्रत तुटले होते. भजन होते "किस्मत से राम मिला जिनको, उसने यह जगह पायी" राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या भजनाची मोहिनी जबरदस्त होती. गांधीजी त्यांना म्हणत होते की, "महाराज इस भारत देश में सिर्फ धर्म की भाषा करनेवाले बहुत साधु संत है। लेकीन पंथ, पक्ष और सभी संप्रदायको इक्कठा करने का मानवता को आवाज देनेवाला कार्य आपही मन से कर रहे है। ऐसा विश्वास ही गया।" महात्मा गांधीच्या भेटीला येणाऱ्या देश–विदेशातील लोकांना 'ये हमारे तुकडोजी महाराज है। असा परिचय करून देत असत. राष्ट्रसंताचा गांधीनी डॉ. राजेंद्रप्रसाद, पं. नेहरू, सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री, मौलाना आझाद अशा नामवंत व्यक्तीचा परिचय करून दिला.

सेवाग्राम आश्रमात राज प्रार्थना, भजन योग, जनप्रबोधनात्मक कार्य महाराजांनी केले. "लहर की बरखा" हे पुस्तकही लिहीले. एक महिण्याचा कालावधी संपला. या काळात महात्मा गांधी आणि त्यांच्यातील सहवासाच्या स्नेहसंबंधाची गाठ बळकट होत गेली. महाराज मोझरीत गेले. तेथील भाविकांनी भव्य स्वागत केले. तुकारामदादा, मारोतराव कडींकर, शामराव दादा मोकदम मंडळी हजर होती. गांधीजींच्या सहवासातील सर्व वृत्तांत महाराजांनी त्यांना सांगितला. गांधीजी त्यांच्याविषयी म्हणत "गजब का बूवा है, भजन की ही नही, आचरण सहित की भी मोहनी छोड गया। 30 जानेवारी 1948 मध्ये महात्मा गांधीवरती एका माथेफिरूने गोळया झाडल्या. त्यांच्या स्मृतीला अभिवादन करण्यासाठी त्यांच्या राजघाट या स्मृतीस्थळासमोर भजन म्हटले. ते भजन होते "पूरी करो कामना बापू को। तबही किरत बढे आपकी।। त्यांनी अनेक भजनाची मालीका लिहीली. आकाशवाणीच्या कार्यकमात अनेक भजन म्हटले.

निष्कर्ष

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांनी ग्रामविकास ग्रामोध्दार आणि स्वावलंबनाचा मूलमंत्र समाजाला दिला. तर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यांनी स्वच्छता स्वदेशी आणि गावातून विकासाचा मंत्र देत विदर्भाच्या भूमितून स्वराज्याच्या अहिंसक यज्ञाला सुरूवात केली. या दोन्ही महापुरूषांचे विचार समकालीन वाटतात. दोन्ही महापुरूषांनी देशाला महान मूल्ये दिली. या मूल्यांची जपणुक आणि संवर्धन करता आली पाहीजे. नागपूर येथील गांधीबागला ऐतिहासिकता आहे. देशात जेव्हा तणावाचे वातावरण होते. तेव्हा राष्ट्रसंत आठवडाभर येथे मुक्कामी होते. शांतता प्रस्थापित करण्यासाठी वातावरण निर्माण केले. 30 जानेवारी 1953 ला राष्ट्रसंतानी गांधीजीच्या स्मृतीदिनी नागपूरात स्वच्छता केली आहे. 1500 स्वयंसेवकाच्या मदतीने हा तलाव स्वच्छ केला. या ठिकाणी गांधीपुतळा असावा अशी महाराजांची इच्छा होती. वर्तमानात ही इच्छा पूर्ण होताना दिसते.

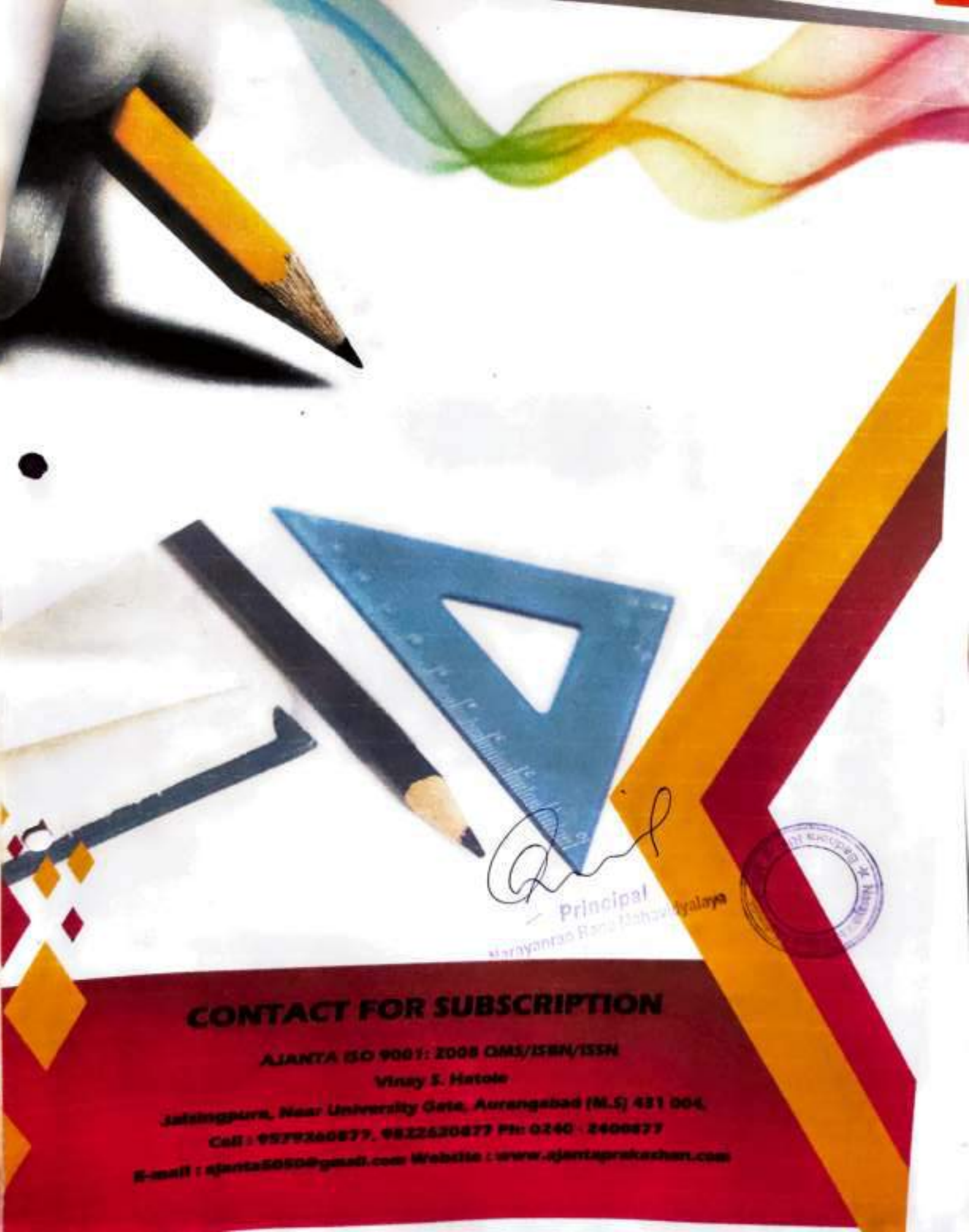
Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

संदर्भ ग्रंथ

1. सिंह ब्रिजेश (संपा) : महाराष्ट्र आणि महात्मा गांधी, माहिती जनसंपर्क, महाराष्ट्र शासन, मंत्रालय मुंबई, 2018.
2. गवाणकर रोहिणी : 1942 च्या आंदोलनातील गांधी मार्गातील तरूण, प्रभात प्रकाशन, मुंबई.
3. शिखरे दा. न. : महाराष्ट्रात महात्माजी भाग 10, महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधी, पूणे.
4. रक्षक ज्ञानेश्वर : जनक्रांतीच्या पाऊलवाटा, नाथे प्रकाशन, नागपूर 2017.
5. श्री गुरूदेव : श्री गुरूदेव प्रकाशन विभाग, अमरावती, जानेवारी 2016.
6. रक्षक ज्ञानेश्वर : राष्ट्रसंताची जनचेतना, नाथे प्रकाशन, नागपूर 2001.
7. श्री गुरूदेव (मासिक पत्रिका) : पुण्यतिथी दिवाळी विशेषांक, श्री गुरूदेव प्रकाशन विभाग, अमरावती, 2014.
8. कामडी, खुशालदास : मानवतेचे महान पुजारी : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, वत्स विनायक प्रकाशन नागपूर 2016.
9. पिंजरकर, सुलभा : वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे शैक्षणिक तत्वज्ञान, नम प्रकाशन, अमरावती 2016.



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Ekona



Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN

Vinay S. Hatole

Jaltimgpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004.

Call : 9579260877, 9822520877 Ph: 0240 - 2400877

E-mail : ajanta2050@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS / OCT-DEC(2018)/VOL-5/ISS-4/A16PAGE NO.88-91
ISSN: 2348- 4349WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

भारतीय संस्कृतीमधील मुलभूत तथ्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन

[1]डॉ. एस. पी. बनसोड
[1]सहयोगी प्राध्यापक,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती महाराष्ट्र

ReceivedNovember05th, 2018; Revised November 25th, 2018; Accepted December30th, 2018

सारांश :

प्रस्तुत संशोधनामध्ये भारतीय संस्कृतीमधील आधारभूत तथ्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन करण्यात आले आहे. भारतीय संस्कृती अनेक प्रकारच्या मुलभूत तथ्यांचे एकत्रीकरण आहे आणि ही तथ्य आज सुध्दा आपल्या संस्कृतीमध्ये दिसून येतात. कालानुरूप संस्कृतिक प्रतिगमनाची प्रवृत्ती समाजव्यवस्थेमध्ये दिसून येते अपरिहार्य असले तरी ज्या मुलभूत तत्त्वावर भारतीय संस्कृतीची निर्मिती झाली ती तत्त्वे आजसुध्दा दृष्टीगोचर होतांना दिसून येतात. शिवाय ज्या बाबी नामशेष होण्याच्या मार्गावर असतांना समाजाच्या बदलत्या जीवनमूल्यामुळे निर्माण झालेल्या समस्यांची सोडवणूक करण्यासाठी या प्राचीन संस्कृतीक तत्त्वांना पुन्हा प्रस्थापित करण्यात येत आहे ही बाब भारतीय संस्कृतीच्या सवंर्धनासाठी महत्वाचा पैलू आहे.

संस्कृती व्यापक स्वरूपामध्ये ज्ञान, कला, साहित्य, विचारधारा, सामाजिक धार्मिक प्रथा, नियम आणि अन्य क्षमता आणि सवयी यांचे मिश्रीत रूप आहे. या सर्व बाबी व्यक्ती आपल्या समाजामध्ये अर्जित करतो. संस्कृती ही एक प्रकारे सामूहिक ज्ञान प्रणाली आहे जी व्यक्तीमध्ये संस्काराची रचना करण्यास मदत करते. आणि या संस्काराच्या माध्यमातुन व्यक्ती आपल्या व्यक्तिगत आणि सामाजिक जीवनामध्ये आदर्श निर्माण करतो.

प्रत्येक व्यक्तीचा आपला एक सामाजिक सांस्कृतिक परीप्रेक्ष्य असतो ज्यामध्ये तो आपला विकास साध्य करतो. व्यक्ती ज्या समाजामध्ये आणि परिवेशामध्ये जीवन जगत असतो ते त्याचे सांस्कृतीक पर्यावरण असते आणि हे संस्कृतीक पर्यावरण व्यक्तीच्या विकासामध्ये महत्वाची भूमीका पार पाडत असते.

संस्कृती ही समाजाचा आत्मा आहे ती व्यक्तीच्या सामाजिक जीवनाचा प्राण आहे यामध्ये मानवी जीवनाचे विविध क्रियाकलाप, आचार विचार तसेच जे महत्वपूर्ण बाबी ज्या मानव समाजामध्ये सार्वत्रिक स्वरूपात असल्या तरी एका विशिष्ट समाजामध्ये त्या विशिष्ट स्वरूपामध्ये दिसून येतात. त्या विशिष्ट समाजामधील व्यक्ती आपल्या जीवनामध्ये त्या उदात्त गुणांवर सर्वाधिक भर देतात कारण हे गुण त्यांच्या समाजाची अमूल्य बाब आहे.

संस्कृती व्यक्तीला संस्कारीत करते आणि या संस्कारामुळे व्यक्ती सामान्य कडून असामान्याकडे वाटचाल करीत असतो. व्यक्ती आणि समाजाचा सर्वांगीण विकास त्यांच्या संस्कृतीमध्ये निहित असतो आणि ही संस्कृती त्यांच्या विकासाची ओळख असते.

संस्कृती आणि संस्कार हे दोन्ही शब्द परस्पर संबंधित आहेत. संस्कृतीला साध्य आणि संस्काराला साधन मानल्या जाते. संस्कृतीमुळे जीवनाच्या पूर्णत्वाच्या बोध होतो. संस्कार एक विधी आधि विधान आहे, जे मनुष्य जीवनाला पूर्णत्वाकडे घेऊन जाते. यावरुण स्पष्ट होते की, संस्कृती ही संसकारांचे संगठन आहे.

यासंदर्भात डॉ. विद्यानिवास मिश्र यांचे विधान महत्वपूर्ण आहे त्यांच्या मते, *"संस्कृति एक प्रकार की संसकारात्मक परिणति है वस्तु हो, मनुष्य हो, मनुष्य का कोई*

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

व्यवहार हो, सबका विशिष्ट उद्देश्य से जब परिष्कार किया जाता है या परिष्कार की संकल्पना की जाती है, तो वह वस्तु, वह मनुष्य या उसका व्यवहार सभी सुसंस्कृत हो जाते है" संस्कृतीची रचना व्यक्तीकडून होते हे जेवढे सत्य आहे तेवढेच संस्कृती व्यक्तीची रचना करते ही बाब सुध्दा सत्य आहे.

संस्कृतीची संकल्पना :

संपूर्ण विश्वामध्ये ज्या बाबी सर्वोत्तम म्हणून ओळखल्या जातात त्या सर्वोत्तम बाबीशी व्यक्तीचा परिचय करून देणे म्हणजे संस्कृती होय. संस्कृती शारीरिक आणि मानसिक क्षमतांचे प्रशिक्षण, दृढीकरण आणि विकास अथवा त्यामुळे निर्माण झालेली अवस्था आहे. जी मन, आचार आणि आवडीची परिष्कृती आहे. सामान्यता समाजामधील सर्व प्रकारचे साहित्यीक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक, अध्यात्मिक तसेच कलात्मक विचार आणि कार्यकलाप यांना संस्कृतीच्या अंतर्गत सहभागी करण्यात येते.

व्यक्ती एक सामाजिक प्राणी असुन व्यक्तिगत आणि सामाजिक प्रगतीसाठी तो सतत प्रयत्न करीत आसतो तसेच आपल्या विचाराच्या माध्यमातुन तो स्वतःला, परिवाराला, समाजाला, समुदायाला, देशाला आणि संपूर्ण विश्वाला कल्याणाच्या मार्गाकडे अग्रेसर करण्याचा प्रयत्न करतो. त्याचे नविन विचार आणि शोध भौतिक आणि अभौतिक जगाची निर्मिती करण्यासाठी प्रवृत्त करतात. इतिहासाच्या आरंभापासूनच व्यक्ती या कर्तव्याचे पालन करून स्वस्थ परंपरांची निर्मीती करीत आला आहे. व्यक्तीचे विचार आणि त्यांव्दारे स्थापित करण्यात आलेली परंपरा, विशिष्ट संस्कृतीला जन्म देते आणि त्याचा विकास करते. थोडक्यात कोणत्या देशातील, समुदायातील, अथवा समाजातील विशिष्ट पुरूषांचे विचार, कार्य, आचार, व्यवहार आणि त्यांच्याकडून स्थापित परंपरा त्या देशाच्या संस्कृतीची निर्मीती करत असते. सामान्यता भौगोलिक दृष्टीने विविध प्रदेशामध्ये राहणा-या व्यक्तींच्या प्रवृत्तीमध्ये सुध्दा एक प्रकारची समानता असते. या प्रदेशामध्ये राहणा-या व्यक्तीमध्ये प्रवृत्तीची ही एकता दिसून येते.

संस्कृतीचे मुलभूत तत्त्व सर्व ठिकाणी आणि कालखंडामध्ये समान भावनांच्या माध्यमातुन अनुप्रित होतात परंतु कालखंड आणि ठिकाण यांच्या विभीन्नतेमुळे त्यांच्यामध्ये भिन्नता दिसून येते. अशा प्रकारे संसकृतीमध्ये वैशम्य दिसून येते विभिन्न देश आणि समुहांचे राहणीमान आणि आचार विचार विभिन्न सांस्कृतीक परंपरांना स्थापित करीत असते. तात्पर्य कोणत्याही देशातील समुदाय अथवा समाजामधील विशिष्ट व्यक्तीचे विचार, आचार व्यवहार, कार्य आणि त्यांच्याकडून स्थापित परंपरा ही त्या देशाची आणि समाजाची संस्कृती होय.

संस्कृतीमधील आधारभूत तथ्य :

- व्यक्ती आपल्या आवडी निवडी सामाजिक आवडी निवडी नुसार निश्चित करतो यावरून स्पष्ट होते की, संस्कृती व्यक्ती आणि समाज यांच्यामधील सर्वकालीन परस्पर संबंध आहे.
- संस्कृती ही मानवी वृत्ती, व्यक्तीचे राहणीमान, आचार विचार, शिष्टाचार, परंपरागत संस्कार आणि जीवन पध्दतीचे एकत्रित प्रतीक आहे.
- संस्कृतीचा संबंध व्यक्तीच्या भूतकाळाशी, त्यांच्या वर्तमानाशी आणि भविष्यकालीन जीवन पध्दतीशी असतो. याला व्यक्तीच्या श्रेष्ठ परंपराशी असलेली त्यांची निष्ठा सुध्दा म्हणतो येते जी व्यक्तीच्या वर्तमान व्यवस्थेला अनुशासित करते आणि भविष्यकाळाला सर्वमंगल भावनांच्या माध्यमातुन अनुप्राणित करते.
- संस्कृतीचा निर्माता मनुष्य आहे आणि मनुष्याची रचना संस्कृती करत असते. मनुष्य आपल्या महान रचनात्मक कार्य आणि विचारांच्या माध्यमातुन सामाजिक परिप्रेक्ष्यामध्ये संस्कृतीच्या तत्त्वाची वृध्दी करत असतो. मनुष्याच्या या योगदानाला समाज आपली स्वीकृती आणि श्रध्दा अर्पन करत असतो. अशाप्रकारे मनुष्य संस्कृती आणि समाज यांचा नियमित संबंध आहे त्यांचा विकास परंस्परांवर निर्भर आहे.
- संस्कृतीचे प्रथम आणि अंतिम ध्येय जीवनाच्या विकासाकरीता आणि प्रगतीकरीता अनुकुल वातावरण निर्माण करणे आहे. ही सार्वजनीक हिताची मानवीदृष्टी आहे जी राष्ट्रीय जीवनाची निर्मीती करत असते.
- संस्कृतीचा सामाजिक जीवनाशी घनिष्ठ संबंध आहे. जेव्हा मनुष्याचा एक समूह अथवा समाज एकाच पध्दतीने काही करीत असेल, एकाच बाबीवर विश्वास ठेवत असेल, एकाच प्रकारचे आदर्श समोर ठेवत असेल, आपल्या पूर्वजांच्या कार्याचा आदर करीत असेल आणि त्यांच्या कार्याचा गौरव करीत असेल तर या बाबी संस्कृतीमध्ये रूपांतरीत होतात. यामुळेच संस्कृतीला मनुष्याच्या सामाजिक जीवनाचा प्राण म्हणून संबोधण्यात आले आहे.

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.com

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

- संस्कृती ही समाजाच्या वैचारीक, सैध्दांतीक आणि व्यवहारीक जीवन शैलीचा असा आरसा आहे ज्यामध्ये आम्ही स्वत:ला पाहू शकतो आणि हा आरसा आमच्या संपूर्ण कार्यामध्ये व्याप्त आहे.

भारतीय संस्कृतीमधील ऐतिहासिक तथ्याचे विश्लेषण :

- भारतीय संसकतीला विशिष्ट असे आधारभूत तत्त्व आहेत जे संस्कृतीच्या स्वरूपाला आणि वैशिष्टयांना प्रतिपादीत करण्याचे कार्य करतात. प्राचीन विद्वनांनी मानवाच्या व्यक्तीगत आणि सामाजिक विकासाकरीत अनेक नियम आणि परंपरांचे निर्धारण केले आहे. त्यांचा उद्देश मानवी जीवनाच्या प्रत्येक अंगाचा त्यामध्ये मानव शरीर, मन आणि आत्म्याचा विकास त्यामाध्यमातुन व्हावा. मानवी जीवनाचा एकांगी अथवा एकपक्षीय विकास त्यांना मान्य नव्हता. त्यांनी एकीकडे भौतिक प्रगतीला प्रोत्साहन दिले त्यामध्ये एकीकडे शरीराचा विकास करण्यासाठी आणि परिवारीक सुखाचा उपभोग घेण्यासाठी विविध साधनांना प्राप्त करण्याचे निर्देश दिले तसेच दुसरीकडे अध्यात्मिक प्रगती आणि धर्म व मोक्ष यांच्याचीही अनिवार्यता सुध्दा प्रतिपादीत केली. भारतीय समाज व्यवस्थेमधील आश्रम व्यवस्था त्याचे उत्तम उदाहरण आहे.
- भारतीय संस्कृतीमध्ये व्यक्तिगत प्रगती आणि विकास याला अंतिम महत्व देण्यात आलेले नाही, तर यांच्याबरोबरच सामूहिक प्रगतीवर सुध्दा भर देण्यात आला आहे. सामूहिक आणि सामाजिक हितासाठी व्यक्ती आणि समूहाचा त्याग यालाही महत्व देण्यात आले आहे. समाजामधील प्रत्येक व्यक्तीला संपूर्ण समाजाच्या भावनाच्या सामूहिक हिताच्या दृष्टीने कार्य केले पाहिजे. परंस्पर सदद्भाव ठेवण्यात यावा. वस्तुत: सामाजिक समानता, सदद्भावना आणि परस्पर विश्वास भारतीय संस्कृतीमधील ऐतिहासिक आधाभूत तथ्य आहेत.
- भारतीय संस्कृती जगातील सर्वात प्राचीन अशी संस्कृती आहे आणि वर्तमान व्यवस्थेमध्ये या संस्कृतीमधील बरी तथ्य सर्वपरी परिचीत आहेत. जगातील अन्य प्राचीन संस्कृतीमध्ये मिस्त्र, बेबीलोन, स्पार्टा, रोम, एथेन्स या देशांची संस्कृती वर्तमान व्यवस्थेमध्ये केवळ इतिहास म्हणून शिल्लक राहलेली आहे. परंतु भारतीय संसकृती आजसुध्दा जिवंत आहे आणि बहुतांश प्रमाणात व्यक्तीच्या आचरणामध्ये व्यवहारामध्ये तीचा प्रत्यय आम्हाला येतो. वर्तमान व्यवस्थेमध्ये मूळ भारतीय संस्कृतीमधील काही तत्त्वाचे अपभ्रंशीकरण झाले आहे त्याठिकाणी पाश्चात्य संस्कृतीला प्रस्थापित करणारा एक वर्ग निर्माण झाला आहे तरी सुध्दा बहुतांश प्रमाणात भारतीय संस्कृतीचा पाया मजबुत आहे आणि दिवसेनदिवस भारतीय संस्कृतीमधील प्राचीन तत्त्वाचे नुतन स्वरूप जगासमोर येते आहे.
- भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये विविध धर्म, जाती, संप्रदाय, वेशभुषा, राहणीमान, प्रथा परंपरा आहेत भौगोलिकदृष्टया सुध्दा त्यामध्ये विविधता आढळून येते असे असतांना सुध्दा विविधतेमध्ये एकता या संस्कृतीमध्ये दिसून येते.
- प्राचीनकाळापासून भारतातील रहिवाश्यांमध्ये एकता विद्यमान होती. परंतु दळणवळण साधनांची मर्यादा आणि त्यांचा अभाव यामुळे संपूर्ण भारतीय परिवेशामध्ये राजिकीय एकता स्थापित झाली नाही परंतु अशोक, समुद्रगुप्त, अल्लाउद्दीन खिलजी, अकबर, औरंगजेब यांनी संपूर्ण देश जिंकुण राजकीय एकता स्थापित करण्याचा प्रयत्न केला. प्राचनीकाळामध्ये भारतीय राजांची इच्छा दिग्विजय करूण चक्रवर्ती सम्राट बनण्याची होती आणि चक्रवर्ती सम्राट तोच होऊ शकत होता ज्याचे साम्राज्य हिमालयापासून समुद्र तटापर्यंत होते. वास्तविकता हीच आहे की, इतके मोठे साम्राज्य भारतीय इतिहासामध्ये केवळ इंग्रजच स्थापित करू शकले आणि इंग्रजांची ही निती आज भारताला प्राप्त झाली यावरूण स्पष्ट होते की, भारतीय हे प्राचीन राजकीय एकतेच्या वातावरणात राहून आलेले आहेत.
- प्राचीन काळापासून भारतीय विचारवतांनी संपूर्ण भारताला एक भौगोलक घटक मानले आले. भारताचा भूखंड उत्तरेपासून हिमालय पर्वत, दक्षिणेपासून कन्याकुमारी, पूर्वेमध्ये बंगालची खाडी आणि पश्चिमेमध्ये अरबी समुद्र या नेसर्गिक सीमामध्ये घेरलेला आहे. पौराणीक कथानुसार प्रसिध्द सम्राट भारत यांच्या नावावरूण या भूभागाचे नाव भारत पडले आहे याव्यतीरीक्त भारतामध्ये राहणा-या सर्व मनुष्यांच्या विचारामध्ये आणि बुध्दिमध्ये एकता दिसून येते जी अत्यंत स्पष्ट आहे.
- प्राचीन भारतीयांनी समाजाची अशी व्यवस्था स्थापित केली ज्यामुळे भारतीय समाजामध्ये एकता टिकून राहील. आश्रम व्यवस्था त्याचे उत्तम उदाहरण आहे

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.com

Principal Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Narayanrao Rana Mahavidyalaya

ज्यामुळे भारतीय समाजामध्ये अराजकता आणि अव्यवस्था निर्माण झाली नाही संयुक्त परिवाराच्या संकल्पनेने भारतीय समाजाला संगठित ठेवण्याचे कार्य केले आहे ते वाखाण्याजोगे आहे.

- भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये प्राचीन काळापासून अनेक धर्म आणि विचार आहेत या धर्मांची आणि विचारांची विचारधारा यामध्ये परस्पर मतभेद आहे परंतु सर्व धर्म आणि सर्व विचार कर्म सिध्दांतावर विश्वास ठेवतात. या धार्मिक मतभेदानंतर सुध्दा त्यांच्यामध्ये काही प्रमाणात का होईना एकता होती.
- भारतीय समाजव्यवस्थेच्या संपूर्ण इतिहासामध्ये सामाजिक आणि सांस्कृतिक एकता टिकून राहलेली आहे याच एकतेमुळे भारतामध्ये वेळोवेळी होणारे राजकीय परिवर्तनामुळे भारतीय संसकृती अप्रभावीत राहलेली आहे शिवाय जी प्रजाती विदेशामधून भारतामध्ये आली ती सुध्दा भारतीय संस्कृतीमध्ये काही प्रमाणात समाविष्ट झालेली आहे.

निष्कर्ष :

भारतीय संस्कृतीमध्ये प्राचीन काळापासून विविध मुलभूत स्वरूपाची तथ्ये होती या तथ्यांच्या आधारावरच भारतीय संस्कृतीचा सतत विकास होत गेला परंतु संसकृतीच्या विकासाबरोबरच काही प्राचीन बाबी नामशेष झाल्या आहेत आणि काही होण्याच्या मार्गावर आहे याला भारतीयांचा जगाशी आलेला संपर्क, दळणवळणांच्या साधनांचा मोठ्या प्रमाणात झालेला विकास, मिडीयाच्या माध्यमातुन जवळ आलेले जग या बाबी जबाबदार आहेत त्यामुळे निर्माण झालेली भारतीय संसकृतीमधील दरी आणि त्याचे वर्तमान भारतीय समाजव्यवस्थेवर पडत असलेले प्रभाव याची प्रचिती आज समाजाला दिसून येत आहे. एकेकाळी आयुर्वेदाच्या माध्यमातुन होणारे उपचार त्यासाठी लागणार वेळ विचारात घेऊन अॅलोपॅथीला महत्व आले परंतु नंतर अॅलोपॅथीचे शरीरावरील दुष्परीणाम विचारात घेता आज भारतीय समाज पुन्हा आयुर्वेदाकडे वळला आहे. अशा किती तरी बाबी आहे ज्या काळाच्या ओघात नामशेष होण्याच्या मार्गावर असतांना त्यांना नवसंजिवनी या आधुनिक युगामध्ये प्राप्त झाली आहे. तात्पर्य हेच की, भारतीय संस्कृती ही अत्यंत प्राचीन अशी अभेद्य संस्कृती असुन या संस्कृतीच्या माध्यमातुन समाजीक कल्याण, सामाजिक विकास, आणि वैश्विक शांती आणि वैश्विक कल्याणाला हातभार लावण्यात महत्वाची भूमीका आहे अशा स्थितीत भारतीय संस्कृतीमधील प्राचीन मूलभूत तथ्यांचे संगोपन करणे ही वर्तमान व्यवस्थेची गरज निर्माण झाली आहे त्यासाठी समाजामधील प्रत्येक घटकाने त्याकडे विशेष लक्ष देण्याची नितांत गरज आहे.

संदर्भ :

सिंह, दिनकर रामधारी. संस्कृति के चार अध्याय. इलाहाबाद

सिंह एवं यादव. प्राचनी भारतीय कला एवं संस्कृती. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.

कृष्णकुमार. भारतीय संसकृती के आधार तत्त्व. दिल्ली : मिनाक्षी प्रकाशन.

दुबे एच. एन. भारतीय संस्कृती. इलाहाबाद

विद्यालंकार' सत्यकेतु. भारतीय संस्कृती और उसका इतिहास. दिल्ली.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

KIJAHSV6 (2019) 129-132

Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences
(A Refereed Blind Peer Review Journal)

प्राचीन भारतीय सामजिक मूल्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन

[1]डॉ. एस. पी. बनसोड
[1]सहयोगी प्राध्यापक,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती महाराष्ट्र

Received: Feb 09, 2019; Revised: Feb 28, 2019; Accepted: Mar 25, 2019

Article Info

ISSN: 2348-4349
Volume -6,Year-(2019)
Issue-01
Article Id:-
KIJAHS 2019/V-6/ISS-1/A26

© 2019 Kaav Publications.

Abstract

प्रस्तुत संशोधनामध्ये प्राचीन भारतीय सामाजिक मूल्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्याच्या संदर्भात करण्यात आले आहे. सामाजिक मूल्य हे समाजाच्या गरजा आणि आवश्यकता यांच्या आधारावर समाज स्वतः त्याचा स्विकार करीत असतो यासंदर्भात नियम अथवा कायदा याचा आधार घेऊन कोणतेही सामाजिक मूल्य रूजवता येत नाहीत त्याकरीता समाजाच्या अंतर्मनाची तयारी आवश्यक असते. कोणत्याही समाजाची सामाजिक व्यवस्था ही मूल्य आधारीत आहे नियम आणि कायद्याच्या आधारावर व्यक्तीच्या वर्तनाला लगाम घालता येत असला तरी त्यामध्ये जोरजबरजस्ती करून सामाजिक मूल्यांचे रोपन करता येत नाही ही वस्तुस्थिती आहे. प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्थेपासुन ही सामाजिक मूल्य एका पिढीकडून दुस-या पिढीकडे हस्तांतरीत होत आलेली आहेत. आजच्या आधुनिक भारतीय समाजामध्ये सुध्दा आमच्या प्राचीन भारतीय समाजामधील काही सामाजिक मूल्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षरीत्या दृष्टीगोचर होतांना दिसून येतात आणि या सामाजिक मूल्यांच्या आधारावर आजची समाज व्यवस्था टिकून आहे.

सामाजिक मूल्य व्यक्तीच्या वर्तन व्यवहारावराला प्रभावित करतात. सामाजिक मूल्यांच्या अनुसारच व्यक्ती व्यव्हार करतांना दिसून येतात. सामाजिक मूल्य हे व्यक्ती आणि समाजाच्या व्यवहाराला नियंत्रीत करीत असतात. ज्यामध्ये आई-वडिलांचा आदर हे गुण प्राचनी काळापासून आजतयागत भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये दिसून येत आहेत. अशाच प्रकारची कार्य हे सामाजिक मूल्य होत जे व्यक्ती आणि समाजाच्या व्यवहाराला निर्देशित आणि नियंत्रित करीत असतात. परंतु समाजामधील प्रत्येक व्यक्ती सामाजिक मूल्यांच्या अनुरूपच कार्य करेल असे म्हणता येणार नाही कारण प्राचीन काळापासूनच समाजामध्ये विविध प्रकारचा विरोधाभास दिसून येतो परंतु सामाजिक मूल्य सामाजिक नियंत्रणाचे महत्वपूर्ण कार्य करते हे सुध्दा तेवढेच खरे आहे.

समाजामधील स्वीकृत व्यवहार ज्यांना सर्वाधिक महत्व दिल्या जाते त्यांना सामाजिक मूल्य म्हणून सबोधण्यात येते. सामाजिक मूल्य हे समाजाचे आदर्श आहे त्यावर समाजामधील सदस्य विश्वास ठेवतात, या मूल्यांच्या प्रती श्रध्दा ठेवतात आणि या मूल्यांच्या अनुरूप कार्य करण्यासाठी तत्पर राहतात. कधी कधी ही सामाजिक मूल्यांच्या संदर्भातील तत्परता निर्धारित सिमेच्या पुढे जाऊन व्यक्ती या सामाजिक मूल्यांचे संरक्षण करण्यासाठी आपल्या प्राणाची आहुती देण्यास सुध्दा तयार होतात प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्थेमध्ये

 Copyright 2019 Kaav Publications

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

अशा प्रकारचे संदर्भ दृष्टिगोचर होतात. यावरून स्पष्ट होते की, प्रत्येक व्यक्ती आणि समाजासाठी सामाजिक मूल्यांचे सर्वाधिक महत्व आहे.

सामाजिक मूल्यांमध्ये व्यक्ती अथवा समाजाची अनुभुती, विचार, क्रिया, गुण, विषय, व्यक्ती, समाज, उद्देश आणि साधने यांचा समावेश होतो. प्राचीन भारतामध्ये विविध कालावधीमध्ये वेगवेगळे मूल्य राहलेले आहे. त्यामध्ये ऋग्वैदिक काळामध्ये संयुक्त कुटुंब प्रणाली, एक वर्णीय समाज व्यवस्था होती परंतु उत्तर वैदिक काळामध्ये वर्णव्यवस्थेचा उदय झाला आणि कालांतरणे जाती प्रथा, अस्पृश्यता या बाबींनी समाजामध्ये प्रवेश केला. मुस्लिक आक्रमनानंतर पर्दाप्रथा आणि बाल विवाह या बाबी उदयास आल्या.

प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये आश्रम व्यवस्थेपासून बाल विवाहा पर्यंत अनेक सामाजिक मूल्य विद्यमान होते या मूल्यांचे त्या विशेष काळामध्ये महत्व राहले असेल कारण कोणत्याही मूल्याला महत्वहीन संबोधणे योग्य होणार नाही तात्कालीन परिस्थितीनुसार ती मूल्य अस्तित्त्वात आली आणि टिकून राहली ती सदासर्वकाळ तशीच टिकून राहतील आणि त्याचे महत्व सर्वकालावधीमध्ये सारखेच राहील हे म्हणता येत नाही अशा स्थितीत कोणत्याही सामाजिक मूल्याची सार्वभौमिकता स्थापित करणे योग्य होणार नाही कारण कोणतेही एक सामाजिक मूल्य ज्याला आपण सर्वाधिक प्रमाणात मान्यता देतो परंतु काही कालावधीनंतर सामाजामध्ये या मूल्यांचे तेवढेच महत्व राहील याची शाश्वती देता येणार नाही. परंतु सामाजिक मूल्य ही एक विस्तृत संकल्पना आहे आणि मूल्यांचा आदर्शाशी घनिष्ठ संबंध असतो. त्यामुळे प्राचीन भारतामध्ये विद्यमान सामाजिक मूल्य तात्कालीन सामाजिक सरंचनेचे निर्णायक तत्त्व राहलेले आहेत.

प्राचीन भारताच्या प्रमुख सामाजिक मूल्यामध्ये संयुक्त कुटुंब व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, जाती व्यवस्था, संस्कार, पुरूषार्थ आणि धर्म यांना प्रामुख्याने सहभागी केलेले आहे आणि या मूल्यांपैकी अपवादात्मक परिस्थितीत काही मूल्यांच्या व्यतीरीक्त अन्य मूल्यांना वर्तमान भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये काही आवश्यक परिवर्तनाच्या स्वरूपात लागु करूण पाहता येते. मानवाची मानसशास्त्रीय आणि सामाजिक गरज विचारात घेऊन या मूल्यांची आरंभ करण्यात आला असेल आणि त्यांचा उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था आणि संगठण यामध्ये स्थापित्व प्रस्थापित करणे होते. यामुळे समाजाची प्रगती झाली आणि त्यामुळेच आर्थिक व्यवस्था सुध्दा संदृढ झाली त्यामुळे समाज समृध्द होण्यास मदत झाली. सामाजिक मूल्यामुळेच साहित्य आणि संस्कृतीची सुरक्षा झाली आणि तीच्या प्रगतीला हातभार लागला आहे.

प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये विद्यमान सामाजिक मूल्यांना पुढीलप्रमाणे वर्गीकृत करण्यात येते. त्यामध्ये प्रामुख्याने आर्थिक मूल्य, नैतिक मूल्य, कला विषयक मूल्य, धार्मिक मूल्य आणि तार्किक अथवा सैध्दांतीक मूल्य यांचा समावेश होतो.

प्राचीन भारतातील प्रमुख सामाजिक मूल्य :

वर्ण व्यवस्था भारतीय संस्कृतीचा सामाजिक मुलाधार आहे. वर्णव्यवस्था हिंदू सामाजिक जीवनाच्या दोन व्यवस्थेचे नाव आहे त्यामध्ये प्रथम वर्ण व्यवस्था आणि व्दितीय आश्रम व्यवस्था. यामध्ये वर्णव्यवस्थेच्या अंतर्गत वर्णासाठी निर्धारित आश्रम व्यवस्था. आपल्या वर्णाच्या नियमाचे पालन करणे या बाबी महत्वाच्या होत्या. सामाजिक व्यवस्थेला प्रभावीपणे कार्यन्वीत होण्यासाठी श्रम विभाजन करणे आवश्यक मानल्या जाते आणि योग्य प्रकारचे श्रम विभाजन नैसर्गिक स्वरूप, गुण आणि प्रवृत्ती या आधारवरच शक्य आहे. यासंदर्भात पी. वी काणे यांनी स्पष्ट केले की, प्राचनी काळामध्ये वर्ण शब्दाचा उपयोग रंग भेदाला स्पष्ट करण्यासाठी केला जात होता. त्यानंतर वर्णाचे विभाजन प्रमुख चार भागामध्ये करण्यात आले आणि हे वर्ण सामाजिक व्यवस्थेचे स्तंभ बनले. तात्कालीन सभ्यता आणि संस्कृतीमध्ये कार्य विभाजनाची निर्मिती झाली आणि त्यामुळे विविध जातीची उत्पत्ती झाली होती.

सामाजिक विकासाच्या संतुलनासाठी सामाजिक संगठणाच्या अंतर्गत आश्रम व्यवस्थेची निर्मिती करण्यात आली होती. त्यामध्ये चारही पुरूषार्थाची पूर्तता करण्यासाठी अशी व्यवस्था करण्यात आली होती. त्यामध्ये ब्रम्हचार्यामध्ये ज्ञानार्जन, गृहस्थाआश्रमामध्ये गृहस्थ जीवन जगणे, वानप्रस्थ आश्रमामध्ये अलिप्त राहणे आणि सन्यासामध्ये वैराग्यी होणे अशी व्यवस्था होती. तात्कालीन परिस्थतीमध्ये आश्रम व्यवस्था आणि त्यामधील नियमांचे पालन करणे हे सामाजिक मूल्य होते. परंतु समाजाचा जसजसा विकास होत गेला दळणवळणाच्या साधनांचा विकास होत गेला आणि पाश्चात्य संस्कृतीच्या प्रभावामुळे आश्रम व्यवस्थेमधील सामाजिक मूल्यांच्या ठिकाणी नवीन व्यवस्थेच्या अनुशंगाने सामाजिक मूल्यांचे [illegible] झाली आहे.

Copyright 2019 Kaav Publications
Librarian Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

मानव जीवनाला संगठित, अनुशासित आणि सुसंस्कृत करण्यासाठी संस्कारांची व्यवस्था करण्यात आली होती त्यामुळे व्यक्ती समाजामध्ये राहून सखमय जीवन व्यतीत करू शकेल यामुळे व्यक्ती आणि समाज या दोहोचे हित साध्य होत होते ही परंपरा आजसुध्दा अस्तित्त्वात आहे. आज सुध्दा संस्कारांचे रोपन करण्यासाठी विविध माध्यमांचा वापर आधुनिक समाज व्यवस्थेमध्ये होतांना दिसून येतो. त्यामध्ये प्रामुख्याने बालकाच्या जल्मापूर्वीचे संस्कार, बाल्यावस्थेमधील संस्कार, अभ्यासाच्या संदर्भातील संस्कार, गृहस्थ आश्रमामधील संस्कार, वानप्रस्थ संस्कार, सन्यासाश्रम संस्कार आणि अंतिम संस्कार यांचा समावेश होतो यापैकी बहुतांश संस्कार आजसुध्दा अवलंबले जातात प्रत्येक सामाजिक व्यवस्थेमध्ये त्याचे स्वरूप मात्र भिन्न आहे.

परिवार ही एक सामाजिक संस्था म्हणून हळू हळू तीचा विकास झालेला आहे व्यक्तीच्या सामाजिक आणि मानसशास्त्रीय गरजांची पूर्तता करणे हे प्रमुख कार्य परिवाराच्या माध्यमातुन होते. याशिवाय विविध धार्मिक आणि सामाजिक कार्य हे सुध्दा त्याचे कार्य आहे. प्राचीन भारतीय व्यवस्थेमध्ये मुख्यतः संयुक्त कुटुंब पध्दती होती परंतु प्रत्येक काळामध्ये या कुटुंब व्यवस्थेची वेगळी वैशिष्टे दिसून येतात. प्राचीन आर्य व्यवस्थेमध्ये संयुक्त कुटुंब प्रथा होती तीचा संकेत वैदिक युगाशी असल्याचे दिसून येते. पूर्व वैदिक काळामध्ये पितृसत्ताक कुटुंब प्रणाली होती परंतु उत्तर वैदिक काळामध्ये पितृसत्ताकाचे अधिकार कमी होऊन संयुक्त कुटुंबाच्या विघटनाचे काही पुरावे मिळतात या विघटनाचे प्रमुख कारणे म्हणजे आर्य समुदायाचा प्रसार झाला त्यामुळे कुटुंबातील विविध सदस्य देशातील विविध भागामध्ये गेले तसेच कौटुंबिक भांडणे यामुळे कुटुंबातील सदस्य संपत्तीचे विभाजन करून स्वतंत्र राहणे पसंत करीत होते. प्रामुख्याने हिंदू कुटुंब हे पितृसत्ताक होते कुटुंबामध्ये अधिकार, जबाबदारी आणि आदर यामध्ये सर्वाधिक महत्वाचे स्थान वडिलांना होते. वडिल कुटुंबाच्या प्रती आपल्या कर्तव्यांचे पालन करीत असे पालन पोषण करीत असे शिक्षण आणि विवाहाची व्यवस्था करीत असे अशाप्रकारे वडिलाबरोबरच आईचे सुध्दा भारतीय कुटुंब व्यवस्थेमध्ये महत्वाचे स्थान राहलेले आहे. कुटुंबाचा प्रारंभ विवाहाच्या माध्यमातुन होतो आणि विवाहाचे मुख्य कारण संतान उत्पत्ती आहे. भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये मुलाचे स्थान सर्वाधिक होते त्यामध्ये तीन ऋणाच्या उत्पत्तीनेसुध्दा मुलाला महत्व दिले आहे. कुटुंब व्यवस्थेच्या संदर्भातील बहुतांश सामाजिक मूल्य आजसुध्दा दिसून येतात काही कौटुंबिक सामाजिक मूल्यांमध्ये काळानुरूप बदल झालेले असले तरी त्याचे महत्व आधुनिक भारतीय समाजामध्ये दुर्लक्षित होऊ शकत नाही.

भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये विधवा स्त्रीयांची सामाजिक स्थितील प्राचीन काळामध्ये इतकी वाईट नव्हती जीतकी ती नंतरच्या काळामध्ये निर्माण झाली. विधवा स्त्री आपल्या इच्छेनुसार आजीवन विधवा राहून संयम आणि सदाचाराचे जीवन व्यतीत करू शकत होती. ती पुनर्विवाहाच्या प्रथेचा आश्रय घेऊन पुन्हा विवाहित होऊन जीवन व्यक्तीत करू शकत होती.

भारतीय परिवेशामध्ये प्राचनी काळापासून चरीत्र निर्माणामध्ये शिक्षणाला सर्वाधिक महत्व दिलेले आहे. त्यासाठी विशेष शिक्षण प्रणाली आणि शिक्षण संस्थांची योजना प्राचीन काळामध्ये होती. आश्रम व्यवस्थेमध्ये राहून ब्रम्हचार्याचे पालन करून या शिक्षण संस्थामध्ये आणि विद्यापीठांमध्ये राहून शिक्षण प्राप्त केले जात होते. ज्ञानाची प्रापत करण्यासाठी शिक्षण याव्यतीरीक्त चारीत्र्य निर्माणासाठी शिक्षण याला सर्वाधिक महत्व देण्यात आले आहे. शिक्षणाला प्राचीन काळापासूनच प्रकाशाचा स्त्रोत म्हणून संबोधण्यात येत होते ज्यामुळे व्यक्ती विविध क्षेत्रामध्ये सत्य मार्गाचे प्रदर्शन करेल. प्राचीन भारतीय विद्यार्थ्यांना प्राचीन भारतीय शिक्षणाचे अध्ययन करणे आवश्यक होते. शिक्षण प्राचीन भारतीय संस्कृतीचा आत्मा मानला जात होता. वैदिक काळामध्ये प्रत्येक व्यक्तीला वैदिक शिक्षण दिले जात होते. या काळामध्ये स्त्री शिक्षणावर विशेष भर देण्यात येत होता. शिक्षणाच्या वेळी मुला सोबतच मुलीचा सुध्दा उपनयन संस्कार होत असे. सुत्रकालावधीमध्ये पुस्तकीय शिक्षणाचे प्रचलन नव्हते विद्यार्थी गुरूगृही राहूनच विद्याभ्यास करीत असत. भारतातील प्रमुख भारतीय शिक्षण संस्थामध्ये तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, विक्रमशिला, काशी, ही शिक्षण केंद्र प्रसिध्द होती.

निष्कर्ष :

प्राचीन काळापासून भारतीय समाज व्यवस्थेला सामाजिक मूल्यांची जोड लाभलेली आहे. व्यक्तीचा सर्वांगीण विकास करण्यासाठी सामाजिक व्यवस्थेच्या अंतर्गत विविध प्रकारच्या संस्थांची स्थापन प्राचीन समाज व्यवस्थेमध्ये झालेली आहे या व्यवस्थेच्या माध्यमातुन विशिष्ट सामाजिक मूल्यांचा विकास व्यक्तीमध्ये करावा जेणेकरून सामाजिक व्यवस्था योग्य पध्दतीने कार्यन्वीत होऊ शकेल हा त्यामागील हेतू होता

Copyright 2019 Kaav Publications

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

तोच हेतू आजच्या सामाजिक व्यवस्थेमध्ये सुध्दा आम्हास दिसून येते आजच्या सामाजिक व्यवस्थेमध्ये सामाजिक मूल्यांच्या अंतर्गत प्राचीन काही सामाजिक मूल्यांचा अंतर्भाव झालेला आहे आज भारतीय व्यवस्थेमध्ये सामाजिक मूल्यांचा आधारा भारतीय संविधान आहे तरी सुध्दा ज्या बाबी लिखीत स्वरूपामध्ये नाही अथवा त्यासंदर्भात काही नितीनिर्देश नाहीत तरी सुध्दा प्रत्यक्षामध्ये ती मूल्य अमलात आणली जातात त्या प्राचीन मूल्याच्या आधारावर आजची समाज व्यवस्था टिकून आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

१. काणे पी. वी., धर्म शास्त्र का इतिहास भाग १ ते ५ लखनऊ

२. पांण्डेय विमलचंद्र, (१९६०), भारत वर्ष का सामाजिक इतिहास, इलाहाबाद

३. शर्मा रामशरण, (१९७५), पूर्वमध्यकालीन भारत मे सामाजिक परिवर्तन, दिल्ली.

४. अवस्थी शशि, (१९९३), प्राचीन भारतीय समाज, दिल्ली.

५. मिश्र जय शंकर, (२००६), प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पटना

६. नयन राजीव, (२००५), भारतीय समाज और संस्कृती, वाराणसी.

७. जैन के. सी. प्राचीन भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाएँ, भोपाल.

८. अहिरवार रामकुमार (२००५), सामाजिक सरंचना के विविध चरण, जयपूर

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED & MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Volume V
Issue II

ISSN : 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR : 4.205

February 2018

A Galaxy of Scholarly Written Research Papers/Articles

IJMMS

Cosmos

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Chief Editor
Dr. V. H. Mane

Executive Editor
Prof. M. P. Shaikh

www.ijmms.in | Email : ijmms14@gmail.com

VOLUME-V, ISSUE-II

ISSN (Print): 2394-207X
IMPACT FACTOR: 4.205

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES



INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Editors: Dr. V. H. Mane, Prof. M. P. Shaikh

Language: Multilingual

Published by

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

Sneh Apartment,
Flat No. 001, Samarth Nagar, New Sangvi,
Pune- 411027

Copyrights: Editors 2014

All rights reserved

ISSN: 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR: 4.205

VOLUME-V, ISSUE-II

February -2018

VOLUME-V (II) Impact Factor: 4.205 ISSN (Print): 2394-207X
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

अनुक्रमणिका

अ.क.	शोध निबंधाचे नाव	नाव	पान नंबर
1.	शिवकालीन आरमार व्यवस्था	प्रा. चारुशिला उत्तम लोखंडे	1-5
2.	शिवकालीन समाज व्यवस्था — प्रोसेसुरल प्रतिमानानुसार अन्वयार्थ	प्रा. डॉ. जाधव बबन भिवसेन	6-12
3.	हिंदवी स्वराज्य स्थापनेत शहाजी भोसले यांचे योगदान	प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड	13-15
4.	सातारचे प्रतासिंह महाराज व ग्रँट डफ संबंध	प्रा.डॉ.आर.व्ही.ढेरे	16-18
5.	छत्रपती शिवाजी महाराजांची लष्करव्यवस्था	प्रा. लबडे अर्चना बाळासाहेब	19-20
6.	मराठेकालीन जमीन महसूल पद्धती : एक अभ्यास	प्रा. देवकाते बी. एन.	21-24
7.	रामचंद्र गणेश कानडे १७६८ ते १७८०	गाभणे हेमा गजानन	25-29
8.	मराठा सरदार ग्वाल्हेरचे शिंदे	प्रा.डॉ.रघुराज मुगुटराव कुरुमकर	30-31
9.	अलिबागचे आंगे घराण्याचा मराठा आरमारातील विकास व विस्तार	कविता कारभारी मते	32-34
10.	फलटणचे लोकदैवत श्रीराम मंदिराचे ऐतिहासिक महत्व	प्रा.डॉ.संतोष तुकाराम कदम	35-38
11.	सरलष्कर सिदोजी नाईक निंबाळकर यांच्या मोहिमा	प्रा.डॉ.एस.पी.शिंदे	39-41
12.	'स्वराज्य स्थापनेत मराठा सरदारांचे योगदान'—पवार घराणे	प्रा. सौ. श्रेया संजीव दाणी	42-43
13.	शिवकालीन व्यवसाय व व्यापार	श्री. जगताप बा.भि.	44-46
14.	शिवाजी महाराजांच्या न्यायनितीचे गुणविशेष– एक अभ्यास	प्रा.तानाजी जाधव	47-49
15.	छत्रपती शिवाजी महाराज आणि सिद्दी	सौ. कविता सु. पाटील	50-52
16.	सरदार गोदाजी जगताप व सरदार सूर्यराव काकडे यांचे स्वराज्य स्थापनेतील योगदान	प्रा.डॉ.देविदास वायदंडे	53-55
17.	स्वराज्य स्थापनेत गुप्तहेर खात्याचे योगदान	[1]प्रा.डॉ.संजय जिभाऊ पाटील [2]प्रा.संजय बाबुराव शिंगाणे	56-58
18.	शिवकालीन मंत्रिमंडळ व मंत्रालय	प्रा. श्री. आर. के. सुर्यवंशी	59-64
19.	मराठेकालीन आरमार : एक अभ्यास	प्रा.डॉ.अशोक कहुभाऊ कानडे	65-67
20.	मराठा सरदार इंदूरचे मल्हारराव होळकर	प्रा.डॉ.मनिषा माणिकराव जगदाळे	68-69
21	स्वराज्य निर्माण कार्यातील बहिर्जी नाईक व त्यांच्या गुप्तहेर खात्याचे योगदान	प्रा. निळे एस व्ही.	70-73
22	स्वराज स्थापनेत मराठा सरदारांचे योगदान	प्रा.महेश वसंत कुलकर्णी	74-75
23	मराठेकालीन तोफखाना व तोफगोळयांच्या अभ्यास	डॉ.नंदकुमार ज्ञानोबा जाधव	76-78
24	मराठी आरमारी सत्तेचा जनक—छत्रपती शिवाजी महाराज	डॉ.विरुदेव महादेव कोकरे	79-82

VOLUME-V (II)
Impact Factor: 4.205 ISSN (Print): 2394-207X
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

हिंदवी स्वराज्य स्थापनेत शहाजी भोसले यांचे योगदान

प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती

भारतातील हिंदवी स्वराज्याची निर्मिती ही मराठी मुलखाचीच नव्हे तर अखिल भारतीय हिंदूना प्रेरणास्थान राहीली आहे. यादव घराण्याच्या पतनानंतर भारतात हिंदूची स्वतंत्र अशी सत्ता नव्हती. सर्वत्र मुस्लिम सत्तेचा अमंल होता. मुळात भारत हा हिंदूचा देश असला तरी २४ जुन १२०६ ला स्वतंत्र मुस्लिम सत्तेची स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक याने केली. इ. स. १२०६ ते १५२६ या ३२० वर्षांच्या कालखंडात अनेक घराण्यांनी शासन केले. याच दरम्यान स्वतंत्र हिंदूची सत्ता विजयनगर येथे स्थापन झाली. या राज्यात हिंदू माणूस सुखावला होता. त्याच्या घरात आर्थिक सुबत्ता होती. स्त्रीया सुदधा मनसोक्त संचार करीत होत्या. मात्र या राज्याच्या पतनानंतर मराठी मानसांची अतिशय वाताहात झाली.

संपुर्ण भारतात मुस्लिम सत्तेचा अमंल असतांना या कठिण व प्रतिकुल परीस्थितीत शिवाजी महाराजांनी हिंदवी स्वराज्याची स्थापना केली. या करीता त्यांना अतिशय कष्ट करावे लागलेत. त्यांनी निर्माण केलेले हिंदवी स्वराज्य हे सामान्य जनतेच्या कल्याणसाठी अतिशय उपयुक्त ठरले. त्यांनी आपल्या स्वराज्यात वतनदार अथवा जहांगिरदार यांच्या सुख–समृध्दीचा विचार केला नाही. त्यांनी साडेतीनशे वर्षांपूर्वी आपल्या साम्राज्यातील प्रशासनात निर्माण केलेले दंडक हे आज भारत लोकशाही प्रधान असतांना सुदधा प्रेरणादायी व आदर्शभूत वाटतात. त्यांच्या या हिंदवी स्वराज्य स्थापनेच्या प्रक्रियेत शहाजी भोसले यांचे महत्वपूर्ण योगदान राहीलेले आहे.

शहाजी राजे भोसले हे छत्रपती शिवाजी महाराजांचे वडील होते. त्यांच्या जन्म दिनांकाबाबत विद्वानांमध्ये मतभेद असले तरी सर्वसाधनांचा अभ्यास केल्यास दि. १८ मार्च १५९४ हा त्यांचा जन्म दिनांक निश्चित होता. या भोसल्यांचे मुळगाव वेरूळ होय. वेरूळ हे मराठवाडयातील औरंगाबाद शहरापासून खुलताबाद–दौलताबाद मार्गे अवघ्या २७ किलोमीटर अंतरावर आहे. २० उत्तर अक्षांश आणि ७५.२० पूर्व रेखाशांवर वेरूळ वसलेले आहे. येथिल शिल्परत्न हे जगप्रसिध्द आहे. शहाजी राजे यांच्या घराण्याचा थेट संबंध हा मेवाडच्या शिसोदे घराण्याची जोडला जातो. शहाजी काळातील जयराम पिंण्डे यांनी आपल्या राधामाधवविलासचंपू या ग्रंथामध्ये शहाजीचे कुळनाम भोसले असल्याचे स्पष्ट उल्लेख केला आहे. तसेच वंशनाम हे शिसोदे असल्योच दर्शविले आहे. या घराण्यातील भोसाजी यांच्या नावावरून त्यांच्या वंशजाना महाराष्ट्रात भोसले हे कुलनाव प्राप्त झाल्याचे मांडलेले आहे.

शहाजीचे वडील मालोजी भोसले यांचा इंदापूरच्या लढाईत मृत्यू झाला. त्यानंतर निजामशहाने २ ऑगस्ट १६०६ रोजी शहाजी राजांना पंचहजारी मनसबदारी दिली. वयाच्या १२ व्या वर्षी त्यांना मनसबदारीची सुत्रे हातात मिळाल्याने त्यांना लहानपणीच राज्य कारभाराची ओळख झाली. एवढेच नव्हे तर ते लष्करी व राजकारण यामध्ये निष्णात झालेत. परीणामी निमाजशाहीचा वजीर मलिक अंबर याने मालोजीची जहागिरी शहाजीकरीता कायम ठेवली. मलिक अंबरचा हा विश्वास शहाजीने कायम ठेवला. कारण मोगलांनी निजामशाहीवर आक्रमण केले असता, भातवडी या ठिकाणी घनघोर युध्द झाले. झालेल्या लढाईत शहाजी राजे यांनी विशिष्ट प्रकारची व्युवरचना करून आदिलशाही व मोगलशाहीचा दारूण पराभव केला. परीणामी शहाजी भोसले यांची प्रतिष्ठा वाढली. त्यानंतर त्यांनी नवरसपूरचा संपुर्ण विध्वंस केला. सोलापूरला वेढा दिला. त्यानंतर त्यांनी आदिलशाही व मोगलशाहीमध्ये सुद्धा चाकरी केली. त्यामुळे त्यांना शिवाजीच्या या तिन्ही शत्रूंचा जवळून अभ्यास करता आला. या अभ्यासाचा फायदा हा शिवाजीला निश्चितच झाला असावा. मलिक अंबर याच्या मृत्यूनतर शहाजीने आदिलशाही सोडून परत निजामशाहीत प्रवेश केला. यावेळेस त्यांना सुपे, पूणे, इंदापूर परगणे व मावळचा काही भाग जहागीर

म्हणून प्राप्त झाला. त्यानंतर त्यांनी कर्नाटकामध्ये आपला जम बसविला. या कर्नाटकामध्ये सुद्धा त्यांना २५ नोव्हेंबर १९३७ रोजी च्या फर्मानानूसार कर्नाटक, कन्हाड व वाई परगण्यातील निम्मेगांवाचा पंचहजारी संरजाम मिळाला.

शहाजी भोसली यांनी कर्नाटक व महाराष्ट्रात जहांगिरी प्राप्त केल्यानंतर शिवाजी महाराजांच्या हिंदवी स्वराज्य स्थापनेकरीता महत्वपूर्ण योगदान दिले. त्यानूसार सर्व प्रथम त्यांनी शिवाजीला शिक्षण दिले. या शिक्षणाकरीता दादोजी कोंडदेव यांची नियुक्ती केली. लष्करी व शैक्षणिक दृष्टया शिवाजीला परिपूर्ण केल्यानंतर अनेक भाषांचे ज्ञान दिले. योग्य असे संस्कार दिलेत. त्यामुळे शिवाजीच्या व्यक्तिमत्वास आकार आला. परिणामी शिवाजी राजे भोसले यांनी शहाजीच्या ९० मैल लांब, १२ ते १४ मैल रूंद अशा जहांगीरीची योग्य अशी राखण केली.

शिवाजी महाराजांनी आपल्या स्वराज्याचा श्रीगणेशा हा १६४३ ला मुरूबंगड जिंकून केला. त्यानंतर तोरणा किल्ला ताब्यात घेतला. त्यांच्या या कार्याने आदिलशाही नाराज झाली. परंतू त्यांनी शिवाजी विरोधात कार्यवाही केली नाही. याचे मुळे कारण आदिलशहास शहाजी राजे भोसले यांची भिती वाटत असावी. त्यानंतर १६४७ ला शिवाजीने आदिलशहाचा पुरंदरचा किल्ला मिळविला. या पुरंदरचा किल्लेदार हा महादजी निळकंठराव सरनाईक हा होता. महादजी सरनाईक व शहाजी राजे भोसले यांचे अतिशय स्नेहाचे संबंध होते. त्यामुळेच महादजी निळकंठराव सरनाईक यांनी पुरंदरचा किल्ला शहाजी पुत्र शिवाजी यास हिंदवी स्वराज्य स्थापनेकरीता दिला असावा. परीणामी आदिलशहावर शहाजीराजांवर संतप्त झाला आणि शहाजी बेसावध असतांना २५ जुलै १६४८ रोजी कैद केले.

शिवाजीचा बंदोबस्त करण्याकरीता आदीलशहाची पत्नी बडी बेगम साहेब हिने अफजलखान यास १०००० सैन्य घेवून शिवाजीवर पाठविले १० नोव्हेंबर १६५९ ला अफजलखानाचा वध करण्यात आला. या मोहीमेमध्ये शिवाजीला शहाजीराजांची फौज घेवून सवराज्यावर झाला तेव्हाच शहाजी भोसले यांनी सतरा हजाराची फौज घेवून सिमेवर कडा पहारा दिला. जेणेकरून अफजलखानाच्या मदतीला आदिलशाहीने आणखी सैन्य पाठवू नये. त्यामुळेच अफजलखानाचा वध होताच शहाजी राजे आपली फौज घेवून पुढील स्वारीवर गेलेले दिसून येतात.

शिवाजी महाराजांच्या जिवनातील मोठया संकटापैकी पन्हाळयाचा वेढा हा प्रसंग अत्यंत महत्वाचा आहे. आदिलशाहीचा सरदार सिददी जोहर या हबशी सरदाने शिवाजी बंदोबस्ताची मोहीम स्वत:हून स्विकारली. या स्वारीचा वृत्तांत हा ९१ कलमी बखरी च्या कलम ३६, ३७, ३८, ३९, ४० मध्ये दिलेला आहे. तसेच इंग्रजाच्या १० जून व १६ डिसेंबर १६६० च्या पत्रव्यवहारात सुद्धा दिसतो. या नूसार सिददी जोज या हबशी अॅबेसिनिसन गुलामासोबत शहाजी भोसले यांचे अत्यंत स्नेहाचे संबंध होते. त्याने शहाजीच्या सल्ल्यानूसारच कर्नाटकातील कर्नुल येथिल जहांगिरी जबरदस्तीने हडप केली होती. आपण आदिलशाहीच्या विरोधात केलेल्या बंडखोरीमुळे आदिलशाही सैन्य कर्नुल घेण्यास निश्चित येईल याची त्याला खात्री होती. याच परीस्थितीत आदिलशाही हि प्रचंड अडचणीस होती. अशा अडचणीच्या समयी आदिलशाहीस मदत केल्यास आपल्या कर्नुल येथिल जहागिरीस आदिल शाही मान्यता देईल असे त्यास वाटत असावे. याचवेळी आदिलशाहीकरीता बंडखोर सरदार म्हणून शहाजी भोसले हे सुद्धा चर्चेत होते. या दोन्ही बंडखोर सरदारांचा कर्नाटकातील मुक्काम, त्यानंतर सिददी जोहरचा पन्हाळा किल्ल्यास वेढा व शिवाजीची वेढयातून सुटका हया बाबी अनेक प्रश्न उपस्थित करतात.

मोगली सरदार शाहीस्तेखान हा स्वराज्यावर चाल करून आला असतांना, सिददी जोहर याने २ मार्च १६६० रोजी पन्हाळा किल्यास वेढा दिला. या किल्यावर शिवाजी महाराज असल्यामुळे स्वराज्यावर आलेले हे फार मोठे संकट होते. या संकटावर मात करतांना शिवाजीस शहाजीची निश्चितच मदत झाली. पन्हाळा किल्यावरील जनावरांचे वैरण संपले होते. अन्नधान्याच्या टंचाईमुळे लोक, अडचणीत आले होते.

त्यामुळे शिवाजीने सिद्दी जोहरकडे दूत पाठविले, नजराणा पाठविला. त्यानंतर शहाजी महाराजाच्या मदतीने बोलणी सुद्धा केली असावी. कारण १३ जुलै १६६० ला अंधाऱ्या रात्री भर पावसामध्ये शिवाजी महाराजांनी किल्यातून सुटका करून विशाळगडाकडे प्रयान केले. शिवाजी महाराज पन्हाळा किल्ल्यावरून एकटे बाहेर पडले नाहीत तर सोबत १००० शिपाई १५ उमदे घोडे व दोन पालख्या घेवून बाहेर पडलेले होते. याची कल्पना सिद्दी जोहर यास येवू नये हि अशक्य बाब आहे. तसेच शिवाजीच्या सुटकेनंतर अफजलखान पुत्र फाजलखान याने सिद्दी जोहर यानेवर केलेले आरोप, तसेच आदिलशहाने सिद्दी जोहर याचेवर विश्वासघाताचा केलेला आरोप तथा विजापूरवरून स्वत: आदिलशहा सिद्दी जोहर यास शिक्षा देण्यास पन्हाळा किल्याकडे येणे. हया सर्व बाबी शहाजी व सिद्दी जोहर यान्यातील समझोत्याकडे अंगुलीनिर्देश करतात. त्यानूसार शहाजी भोसले यांनी सिद्दी जोहर यांच्याशी संधान साधून त्यास कर्नाटकातील त्याच्या जहागिरीस संरक्षणाची हमी देवून तथा आगाबूना प्रदेश जिंकण्याची खात्री देवून शिवाजीची सुटका केली असावी. त्यामुळे या स्वारीत शहाजीची अतिशय महत्वपुर्ण मदत ही शिवाजीस झाल्याचे स्पष्ट होते.

शिवाजी महाराजाच्या स्वराज्य निर्मिती मध्ये शाहीस्तेखानाची स्वारी ही फार मोठे स्वराज्यावरील संकट होते. कारण भारतातील मोगली सत्तेचे ते आव्हान होते. याचवेळी शिवाजी महाराज पन्हाळा किल्यावर अडकले होते. या पन्हाळा किल्यावरून शहाजींच्या मदतीने शिवाजीची सुटका झाली. त्यानंतर शिवाजीने लाल महालावर ५ एप्रिल १६६३ रोजी छापा टाकण्याचे ठरविले होते. या छाप्याच्या वेळी पुण्याच्या सिंहगड मार्गावर मोगल सरदार जसवंतसिंह हा १०००० सैन्य घेवून तैनात होता. मात्र त्याने यावेळी शिवाजीचा पाठलाग केला नाही किंवा शिवाजीला विरोध सुद्धा केला नाही. तर तो शाहीस्तेखानाचा हितशत्रू सुद्धा नव्हता. या सर्व बाबींचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, शहाजी भोसले यांनी जसवंतसिंहाशी संधान साधून शिवाजीच्या शहिस्तेखान छापा मोहीमेकरीता जसवंतसिंहास शांत केले असावे. या संदर्भात कोणतेही पुरावे उपलब्ध नसले तरी तत्कालीन सर्व प्रसंग व घटनाक्रमावरून हे अगदी स्पष्ट होते.

शिवाजीचे शिक्षण, बालपण, लाहनपणातच आपल्या जहांगीरीची सोपविलेली जबाबदारी, कर्नाटक व महाराष्ट्रातील जहागिरीचा वारसा, अफजलखानानी स्वारी, सिद्दी जोहरचा पन्हाळा वेढा, शाहीस्तेखान स्वारी व लाल महालावरील छापा या सर्व बाबींचा सुक्ष्मपणे अभ्यास केल्यास एक बाब स्पष्ट होते की, शिवाजी महाराजांच्या हिंदवी स्वराज्य निर्मितीमध्ये एक मराठा सरदार व वडील म्हणून शहाजी भोसले यांचे योगदान अतिशय महत्वाचे ठरते.

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. Duff, Grant-The History of the Marathas, commonwealth publisher Delhi, 2002

२. Pagadi, Setu Madhavrao - Chhatrapati Shivaji, Contlene - Pune 1974

३. Sarkar, J.N.-Fall of the Mughal Empire, Vol. I publiorient Blockswas, Delhi, 1991

४. कुटे, भ. ग. — अहमदनगरची निजामशाही, अनुवाद बुऱ्हाणे मासिरी या फारसी ग्रंथाचा मराठी अनुवाद, १९६२

५. देशमुख, विजय — शककर्ते शिवराय, छत्रपती सेवा प्रतिष्ठान नागपूर २०१०

६. देशमुख, पी.एन. — मराठयांच्या इतिहासाचा मागोवा, पुर्वार्ध, ब्रम्हा प्रकाशन, नागपूर २००१

७. बेंद्रे,वा. सी.—मालोजी राजे आणि शहाजी महाराज, पार्श्व पब्लिकेशन कोल्हापूर २०१३

८. सरदेसाई, गो. स. — मराठी रियासत शहाजी राजे भोसले, दुसरी आवृत्ती मुंबई १९७५

९. हेरवाडकर, र. वी. — श्री. शिवछत्रपतीचे सप्तप्रकरणात्मक चरीत्र, मल्हार रामराव चिटणीस विरचित बदलापूर, ठाणे १९६७

१०. ९१ कलमी बखर — शिवछत्रपतीची ९१ कलमी बखर, वि. स. वाकसकर, विविध ज्ञान विस्तार, ऑगस्ट १९२९ ते सप्टेंबर ऑक्टोबर १९३०

ISSN: 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR : 4.205

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES



- Published by -
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES
Sneh Appartment, Flat No. 001,
Samarth Nagar, New Sangvi, Pune- 411027.
Mobile No. 9197660761 43/919766751104,
Email: ijmms14@gmail.com
Website: www.ijmms.in

ISSN: 2454-5503
IMPACT FACTOR: 3.012(IIJIF)
(UGC Approved Journal No. 63716)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 3 NO. 6 Nov. 2017

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

SPECIAL ISSUE

On the Occasion of
UGC Sponsored One Day National Seminar On

IMPACT OF GLOBALIZATION ON RURAL INDIA

21st November, 2017



Guest Editors
Dr. Subhash K. Pawar
Mr. Vikas T. Adlok

ORGANIZED BY
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
LATE DATTATRAYA PUSADKAR ARTS COLLEGE,
NANDGAON PETH, TQ. DIST. AMRAVATI (MS).

CamScanner से स्कैन किया

17	जागतिकीकरण आणि भारतीय श्रमबाजारपेठ	प्रा. स्वाती एम. उगेमुगे	153
18	जागतिकीकरण आणि भारतीय शेती : एक दृष्टीक्षेप	डॉ. बळीराम प. अवचार	156
19	जागतिकीकरणाचा ग्रामिण समुदायावरील प्रभाव : एक समाजशस्त्रीय अध्ययन	प्रा. सविता महाजन	160
20	जागतिकीकरणाचा ग्रामिण समाजावरील प्रभाव : एक समाजशस्त्रीय अध्ययन	प्रा. जयश्री घुगे	164
21	ग्रामीण समाजजीवनावर जागतिकीकरणाचा प्रभाव	प्रा. सागर बडगे	168
22	जागितिकीकरणाचा भारतीय कृषी क्षेत्रावर होणारा परिणाम	डॉ. विजय नागरे	172
23	जागितिकीकरणाचा कृषी क्षेत्रावर पडलेला प्रभाव	प्रा. होमराज टी. रोठाड	176
24	जागतिकीकरणाचा भारतीय ग्रामीण सामाजिक जीवनावरील प्रभाव	प्रा. प्रदिप ल.अंबोरे	180
25	**जागतिकीकरणाचा भारतीय शेती व्यवसायावर परिणाम**	**डॉ. श्रीनिवास पिलगुलवार**	182
26	जागतीकीकरणाचा ग्रामीण भारतावरील परिणाम	प्रा. अस्मिता आर. ठोंबरे	188
27	जागतिकीकरणाचे ग्रामीण समाज संरचनेवर होणाऱ्या परिणामाचे समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ.सुधा मु. खडके (कडू)	191
28	जागतिकीकरण आणि जागतिक श्रमशक्ती	डॉ. स्वराली चं. कुलकर्णी	196
29	**जागतिकरणाचा भारतीय शेतीवर प्रभाव**	**प्रा. मनोहर रा. चौधरी**	200
30	जागतिकीकरण आणि ग्रामिण समाज	डॉ. बि. पि.उबाळे	204
31	जागतीकीकरणाचा भारतीय कृषी क्षेत्रावरील परीणाम	प्रा.अनिल बि.वानखडे	207
32	जागतिकीकरण आणि ग्रामीण जीवनावर प्रभाव	प्रा. दामोदर दुधे	209
33	जागतिकीकरण व भारतीय शेतीवरील परिणाम	प्रा.सुजाता आर.नाईक (गवई)	211
34	जागतिकीकरणाचा ग्रामीण व आदिवासी कामगारावरील परिणाम : समाजशास्त्रीय अध्ययनाचा नवा संदर्भ	डॉ. आनंद बनकर	216
35	जागतिकीकरणाचा भारतावरील प्रभाव - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	प्रा. अमरिष एस. गायंडे	220
36	जागतिकीकरणाचा भारतीय शेतीवरील परीणाम	डॉ. सचिन ज. होले, डॉ. एस. एस. सोमवंशी	225
37	जागतिकीकरण आणि ग्रामीण स्त्री	प्रा. पुरुषोत्तम आर. बांडे	228
38	**जागतिकीकरणाचे भारतीय शेतीवरील परिणाम**	**प्रा. नंदकिशोर उ.राऊत**	232
39	जागतिकीकरणाचा ग्रामीण समाजावरील प्रभाव ...	डॉ. छाया नेम्मानीवार	236
40	जागतिकीकरण - ग्रामीण समाज जीवन	प्रा. दिपक सां.देशमाने	240
41	पर्यावरण-हास व मानवी आरोग्य : एक ज्वलंत समस्या	प्रा. राजेश पां. मेश्राम	244
42	जागतिकीकरणाचा ग्रामीण समाजावर पडलेला प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ.बी.एच.किर्दक	246
43	जागतिकीकरणाचे सामाजिक, व्यवसायिक व राजकीय घटकांना प्रभावीत करणारे घटक	प्रा. राजेश ब्राम्हणे	248
44	जागतिकीकरणाचा ग्रामीण भागावर झालेल्या परिणामाचे अध्ययन	डॉ. विशाखा जगन्नाथ डेरे	251

CamScanner से स्कैन किया

Chronicle of Humanities and Cultural Studies
(UGC Approved Journal No. 63716)
ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 3.012 (IIJIF)

36.

जागतिकीकरणाचा भारतीय शेतीवरील परीणाम

डॉ. सचिन ज. होले
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा
जि.अमरावती

डॉ. एस. एस. सोमवंशी
महात्मा ज्योतीबा फुले महाविद्यालय,
भातकुली. जि. अमरावती

प्रस्तावना :-

जागतिकीकरण ही संपूर्ण जगाची एकच बाजारपेठ निर्माण करणारी म्हणजेच जागतीक अर्थव्यवस्था निर्माण करणारी अशी प्रक्रिया आहे. जागतिकीकरण विशेषत: राष्ट्रा - राष्ट्रांतर्गत व्यापार, उद्योग, भांडवल व तंत्रज्ञानावरील निर्बंध दूर करून मूक्त व्यापाराची स्थापना या अर्थाने घेतली जाते. या प्रक्रियेमध्ये देशाची अर्थव्यवस्था ही जागतिक अर्थव्यवस्थेशी जोडली जाते. त्यामुळे कोणत्याही देशातील उत्पादीत वस्तु जगात कोठेही विक्रीसाठी उपलब्ध होते.

जागतिकीकरण या संकल्पनेचा उदय ही विसाव्या शतकाच्या पूर्वार्धातील महत्वपूर्ण घटना होय. ऑगस्ट १९४१ मध्ये दोस्त राष्ट्रांनी मांडलेल्या अटलांटीक सनदेत प्रथमत: या संकल्पनेचा उल्लेख सापडतो. जागतिकीकरणाचा विषय तसा खुप व्यापक आहे. भारतामध्ये ही संकल्पना रुजण्यासाठी विसाव्या शतकाचे शेवटचे दशक उजाडले. तत्कालीन भारताचे पंतप्रधान पी.व्ही. नरसिंमाराव यांनी १९९१ मध्ये नव्या आर्थिक धोरणाचा स्वीकार केला व भारतात जागतिकीकरण, उदारीकरण व खाजगीकरणाचे वारे वाहु लागले. त्यामुळे भारतीय अर्थव्यवस्थेला नवे वळण व नवी दिशा मिळाली आर्थिक अरिष्ठेतून बाहेर पडण्यासाठी भरताने 'जागतिक व्यापार संघटना' (WTO) च्या करारावर स्वाक्षरी केली. या नवीन आर्थिक प्रक्रियेच्या स्विकारामुळे शेती, उद्योग, व्यापार, बॅका,विमा कंपन्या, दळण - वळण व मूलभूत सुविधा यामध्ये अनेक व्यापक प्रकारचे रचनात्मक व संस्थात्मक बदल झाले. भारतीय दृष्टिकोनातुन पाहता जागतिकीकरणामुळे भारतीय समाजव्यवस्थेत खुप मोठा बदल घडुन आला तो म्हणजे भारतीय समाजातून जात हा घटक कायमस्वरुपी गेला नसला तरी विज्ञान, तंत्रज्ञान व नविन आर्थिक धोरणाने जातीव्यवस्थेच्या गढाला सुरुंग लावून त्यांच्या भिंती मात्र सेल केल्या.

जागतिकीकरणाचा अर्थ :-

आंतराष्ट्रीय नाणेनिधीच्या मते जागतिकीकरणस म्हणजे वस्तू, सेवा व आंतराष्ट्रीय भांडवल प्रवाह, अतिजलद व प्रसार पावणारे तंत्रज्ञान ह्यांचे वाढते प्रमाण. तसेच विविधता ह्यांच्या साह्याने जगातील देशाचे सतत वाढते परस्परालबित्व होय. रुसी मोदी यांच्या व्याख्येनुसार जागतिकीकरण म्हणजे दुहेरी वाहतुक एक म्हणजे नवीन तंत्रज्ञानाचा उपयोग करुन वाढलेली उत्पादकता व खुली स्पर्धा व दुसरे म्हणजे संपूर्ण जग ह्या एकाच बाजारपेठेत वस्तुंची विक्री करणे होय. याशिवाय जागतिक अर्थव्यवस्था निर्माण करण्यासाठी जगातील सर्व देशांनी आपआपल्या देशाच्या भौगोलिक सिमांचा विचार न करता जागतिक पातळीवर सर्व आर्थिक व्यवहार करुन सर्व देशाची एकच बाजारपेठ म्हणजे जागतिक बाजारपेठ निर्माण करणे, यालाच ' जागतिकीकरण ' असे म्हणतात.

जागतिकीकरणामध्ये मुक्त अर्थव्यवस्थेचा स्वीकार केला गेला. सर्वांना आयात - निर्यात व्यापार करण्याची समान संधी मिळाली. परस्परांमध्ये कोणत्याही प्रकारचा भेदभाव केला जात नाही. दुसरे म्हणजे परस्परावलंबीत्व वाढल्यामुळे राष्ट्रा- राष्ट्रांमध्ये ही स्पर्धा निर्माण झाली. विकसित व अविकसित राष्ट्रामध्ये ही स्पर्धा प्रामुख्याने निर्माण झाली. म्हणून अविकसित राष्ट्रांनी कृषी व कृषी व्यवसायाशी निगडीत इतर पुरक व्यवसायांमध्ये प्रगती करुन उत्पादन वाढविण्याचा ते प्रयत्न करत आहेत. म्हणूनच जागतिकीकरण म्हणजे सर्व क्षेत्रात असणारी तीव्र स्पर्धा होय.

CamScanner से स्कैन किया

जागतिकीकरण व भारतीय शेती :-

भारत हा कृषिप्रधान देश आहे. आजही भारतातील जवळ जवळ ७०% लोकसंख्या शेतीवर उदरनिर्वाह करते. प्रचीन काळापासून शेती व शेतीवर आधारित उद्योग हेच भारतीय अर्थव्यवस्थेचे प्रमुख घटक राहिलेले आहेत. म्हणून भारतीय कृषीव्यवस्थेत झालेले कोणत्याही प्रकारचे अनूकुल किंवा प्रतिकुल बदल हे भारतीय अर्थव्यवस्थेवर खोलवर परिणाम करतात. १९९१ मध्ये भारतीय अर्थव्यवस्थेत जागतिकीकरणाचा अंतर्भाव झाला आणि त्याचा भारतीय समाज, उद्योग, व्यापर, विज्ञान व तंत्रज्ञान, दळण - वळण व निशेषत: कृषीक्षेत्रावर विशेष प्रभाव पडला. जैवतंत्रज्ञान, वनस्पती व जीवशास्त्र खूप मोठया प्रमाणावर संशोधने झाली. कमीक्षेत्रात मोठ्या प्रमाणात उत्पादन देणाऱ्या पाले भाज्या व फळ झाडांच्या वाणांची निर्मिती करण्यात आली. अधिक दुध देणाऱ्या जनावरांच्या जाती विकसित करण्यात आल्या. त्यामुळे भारतीय कृषीव्यवस्थेचा विकासात भर पडली आहे.

जागतिकीकरणाचे भारतीय शेतीवर झालेले अनुकूल परिणाम :-

१९९३ -९४ मध्ये भारत सरकाने केलेल्या पाहणीनुसार नविन आर्थिक धोरण स्वीकारल्यामुळे भारतीय शेतीमालाची निर्यात वाढत असल्याचे दिसून आले. त्यामागील म्हणजे जागतिकीकरणामुळे विकसनशील देशांना शेतीव्यवस्थेत सुधारणा करुन निर्यातीमध्ये वाढ करण्याच्या विविध संधी उपलब्ध झाल्या. शेतकऱ्यांने कोणत्या प्रकारचे बि - बियाणे वापरावे? शेतीचे उत्पादन कशाप्रकारे वाढवावे? या संदर्भात निर्णय घेण्याचे स्वातंत्र्य शेतकऱ्यांना जागतिकीकरणामुळे मिळाले. त्याचप्रकारे शेतकऱ्याला बि - बियाण्यांचा विक्रेता म्हणून काम करणे शक्य झाले. भारतात १७५ प्रकारची बी - बियाणे आहेत. त्याकरीता ९५ प्रकारच्या बी - बियाणे जातीवर भारतीय संशोधक अधिक उत्पादन देणारे वाण विकसित करण्यासाठी काक करत आहेत. त्यापेक्षाही आधुनिक काळात बी-बियाण्यांऐवजी उतीसंवर्धन हा प्रकार विकसित होत आहे. १९९६-९७ मध्ये ४६.०२६ क्विंटल उत्पादन होते ते १९९९-२००० मध्ये ५०.७९८ क्विंटल पर्यत वाढले १९९६ ते २००० या कालखंडात बियाण्यांचे उत्पादन ७३.२७ लाख क्विंटलवरुन ९१ ला क्विंटलपर्यत वाढले. उदारीकरणाच्या धोरणामुळे खतांच्या आयातीतही वेगाने वाढ होऊन १९८५ -८६ ते १९८९-९० या काळात वार्षिक खतांची आयात ११९४ कोटी रुपयांवरुन १९९७ -९८ मध्ये ती ३७५५ कोटी रुपयांपर्यत वाढली. भारतीय शेतकऱ्यांना इतर विकसित देशाच्या तुलनेत खूप कमी म्हणजे १० % सबसिडी दिली जाते व मोठया प्रमाणात इतर देशांप्रमाणे शेतकऱ्यांना सबसिडी मिळावी म्ळणून ही ओरड होते. परंतु कमी सबसिडीचा फायदा भारतीय शेतकऱ्यालाच खूप मोठया प्रमाणात होणार आहे. कारण त्यामुळे शेती मालाच्या किंमती वाढून भारतीय शेतीमालाला चांगली किंमत मिळेल व इतर पूरक व्यवसायातून मिळालेल्या उत्पादनाची निर्यात ही १७.९% होतो तर १९९७-९८ मध्ये ती वाढून १८.८% पर्यत झाली. एकूणच जागतिकीकरणाचा परिणाम म्हणून भारतीय कृषी व औद्योगीक क्षेत्रात खुप बदल होऊन उत्पादन वाढून निर्यातीमध्ये ही लक्षणीय वाढ झाली आहे.

जागतिकीकरणाचे भारतीय शेतीवरील प्रतिकूल परिणाम :-

जागतिकीकरणाचा सर्वात मोठा परिणाम म्हणजे भारतात बहुराष्ट्रीय कंपन्याचा शिरकाव होय. त्यामुळे शेतकऱ्यांना विक्रेता होण्याचा अधिकार मिळणार नाही. कारण ते तेवढया प्रमाणात भांडवल उभे करुन या कंपन्यांशी स्पर्धा करु शकत नाहीत. तसेच जागतिकीकरणामुळे निर्माण झालेली स्पर्धा ही भारतीय शेतकऱ्यांसाठी व भारतीय शेतीसाठी जिवघेणी ठरत आहे. कारण या स्पर्धेमुळे मोठया प्रमाणात रासायनिक खतांचा वापर होत असून त्यामुळे जमिनीचा पोत घसरुन क्षार व दलदल युक्त जमिनीचे प्रमाण वाढत आहे. दुसरे म्हणजे तुंटपुंजे भांडवल व अपूरे क्षेत्र यामुळे भारतीय शेतकरी मोठया प्रमाणात आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापरही करु शकत नाही.त्याचा परिणाम म्हणजे अतिशय लक्षणीय उत्पादन वाढही दिसून येत नाही. तसेच आजही भारतीय शेतकरी हा अज्ञानीपणामुळे पारंपारिक पध्दतीनेच शेती करत आहे.

भारतीय शेतकऱ्यांना विकसित देशांशी स्पर्धा करणे अश्यक आहे. विकसित देश शेतकऱ्यांना मोठया प्रमाणात अर्थसहाय्य देवून उत्पादन वाढवण्याचा प्रयत्न करतात. अमेरिकामध्ये ६५% तर, जपानमध्ये ५५% अर्थसहाय्य दिले जाते. त्यामुळे शेती उत्पादनाच्या किंमती कमी होऊन त्यांचा तोटा भारतीय शेतीला होत आहे. जागतिक व्यापार संघटनेने १९९९ च्या अहवालात सर्व देशांनी शेतीवरील अनुदान २० % पर्यत कमी करावेत असे मत मांडले तो याचाच परिणाम होय.

जागतिक व्यापार संघटनेने दिलेल्या अहवालानुसार सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेसाठी लागणाऱ्या धान्यांची खरेदी आणि व्यवस्थेंअंतर्गत धान्याची विक्री ही मुक्त बाजारभावाने करुन सार्वजनिक वितरण व्यवस्थेला देण्यात येणार अर्थसहाय्य टप्प्या - टप्प्याने कमी करुन बंद करुन टाकावे. परंतु याचा परीणाम भाववाढीवर होऊन

CamScanner से स्कैन किया

विपरीत परिणाम होतील. जागतिकीकरणामुळे बहुराष्ट्रीय कंपन्या भारतात आल्याने एकप्रकारे केंद्राटी व्यवस्था निर्माण झाली आहे.

१९९१ मध्ये भारताने आर्थिक धोरण स्विकारल्यापासुन भारतीय राजकारणात मोठया प्रमाणात आर्थिक महाघोटाळयांमध्ये खुप वाढ झाली. मंत्र्यांद्वारे मोठया प्रशासकीय अधिकाऱ्यांशी संगणमताने नैसर्गिक साधन संपत्तीची महालुट सुरु केली. त्याचा परिणाम म्हणून गेल्या १५ वर्षात दोन लाखापेक्षा अधिक शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्या. भारतीय इतिहासात अशा प्रकारची घटना घडल्याचा कोणताही पुरावा मिळत नाही. जागतिकीकरणाचा भारतावर व भारतीय कृषीव्यवस्थेवर झालेला सर्वात मोठा प्रतिकूल परिणाम म्हणता येईल. शेती करणे परवडत नसल्यामुळे शेतकरी आत्महत्येचे मार्ग चोखाळत आहेत. खरे म्हणजे जागतिकीकरण व खाजगीकरणाच्या प्रक्रियेत राज्यव्यवस्था कल्याणकारी चेहरा काळबंडला जात आहे व त्याचा परिणाम अर्थ व कृषीव्यवस्थेवर खोलवर दिसत आहे.

निष्कर्ष :-

हरित क्रांतीने भारतीय उत्पादनव्यवस्थेत बदल करुन अधिक उत्पादन करणारे वाण विकसित केले गेल्याने उत्पादनात भरघोस वाढ झाली. जागतिकीरणामुळे भारतीय अर्थ व कृषीव्यवस्थेत त्यापेक्षाही व्यापक परिणाम होऊन कमी क्षेत्रात उत्पादनाच्या वाढीबरोबरच निर्यातीमध्ये ही लक्षणीय वाढ झाली. शेतीबरोबरच शेती आधारीत पूरक व्यवसायांमध्ये वाढ झाली. शेतकऱ्यांना स्वत:च्या मर्जीप्रमाणे लागवड करण्याचे व उत्पादन घेण्याचे स्वातंत्र्य मिळाले. एकूणच सर्व क्षेत्रांत विकास दिसून येत असला तरी, जागतिकीकरणामुळे श्रीमंत, गरीब, विस्थापित जीवन, विषमता, हिंसाचार व त्या माध्यमातून विविध समस्या उद्भवत आहेत. या सर्व बाबींसाठी जागतिकीकरण सर्वस्वी जबाबदार नसले तरी तो जागतिकीकरण प्रक्रियेपासूनचच उद्भलेला दुर्गण आहे. मुळात कोणतीही व्यवस्था वाईट, चुकीची नसते तर समाजमन विकृत बनले की व्यवस्थेचेही विकृतीकरण होण्यास फार काळ लागत नाही. तसेच जागतिकीकरणाबाबत काहिसे सांगत येईल. कारण जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेमुळेच जग एकमेकांशी बांधले गेले, जवळ आले व इतर देशातील लोक व तेथील विज्ञान व तंत्रज्ञान दुसऱ्या देशांना अवगत होणे शक्य आहे .

संदर्भ :-

१) रुद्र, दत्त सुदरम, 'भारतीय अर्थव्यवस्था ' नई दिल्ली.
२) योजना मासिक ' जागतिकीकरण आणि भारतीय शेतीपुढील आव्हाने ', जानेवारी - २०१०
३) संपा.रारावीकर, ' यशवंत गोडबोले वि.ज. बर्जेस, जॉन्सन, ' डायमंड अर्थशास्त्र कोश,' डायमंड पब्लिकेशन पुणे -२००८
४) पंडित, नलिनी, ' जागतिकीकरण आणि भारत 'लोकवाडमय गृह, मुंबई -२००३
५) शिंदे, एन, 'अर्थसंवाद', खंड -२७, अंक -२, जुलै - सप्टेंबर -२००३
६) टकले, एस.आर., 'कृषी अर्थशास्त्र'
७) खदिवाले, श्रीनिवास ' महाराष्ट्रातील शेती - एक दुर्लक्षित प्रश्न ' किसान सभा, २०१०
८) ' समाजप्रबोधन पत्रिका ', २००३
९) जरांडे जगन, ' जागतिकीकरण व भारतासमोरील आव्हाने'

❑❑❑

CamScanner से स्कन किया

ISSN : 2278-9308

Sanshodhan Samiksha

Humanities, Social Sciences, Commerce,
Education, Law and Language
Monthly Peer Reviewed International Research Journal

Special Issue July- 2017



☐ Chief Editor - Prof. Virag S. Gawande
☐ Editor - Dr. Sanjay J. Kothari
☐ Editor - Dr. Dinesh W.Nichit

- PUBLISHED BY -

AADHAR SOCIAL RESEARCH & DEVELOPMENT TRAINING INSTITUTE, AMRAVATI, MS.

CamScanner से स्कैन किया

17	डॉ. लता पवार	'जू' नावडत्या भारतीय स्त्री जीवनाचे 'दस्तऐवजन'	83
18	प्रा. विजय एम. पुबळे	भारतातील समाजातील स्वयंसेवी संस्थांचे कार्यक्षेत्र आणि विकासातील भूमिका	88
19	प्रा. संजीव वि. भुयार	भारताच्या बदलत्या राजकीय नकाशाचे ऐतिहासिक अध्ययन	97
20	प्रा.चांगदेव केशवराव भाजीखाये	शेतीचे व्यवस्थापन व शेतक-यांच्या आत्महत्या	104
21	प्रा. मधुकर खंडू पवार	सत्यशोधक अण्णासाहेब लट्ठे	111
22	डॉ. सचिन जगन्नाथ होले	अमरावती शहरातील नागरी कुटुंब संस्थेमधील तात्रिक परिवर्तनाचे अध्ययन	115
23	डॉ. अे.जी. वानखडे	१००० व ५०० रु.च्या नोटा चलनातुन बाद केल्यामुळे भारतीय अर्थव्यवस्थेवर होणारा परिणाम	119
24	प्रा. नंदकिशोर प्रेमचंद सिंगाडे	बचतगटांसाठी मार्केटींग - शोध बाजारपेठेचा	122
25	प्रा. कु. शीला सोमनाथ कापसे	डॉ. आंबेडकर यांचे शेतीसंबंधीचे विचार व योगदान	126

CamScanner से स्कन किया

ISSN - 2278-9308

अमरावती शहरातील नागरी कुटुंब संस्थेमधील तांत्रिक परिवर्तनाचे अध्ययन

डॉ. सचिन जगन्नाथ होले
विभाग प्रमुख, समाजशास्त्र, नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा

प्रस्तावना :-

भारतीय समाजातील बदलती परिस्थिती लक्षात घेण्यासाठी निरनिराळयासांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक व राजकीय बदलांची नोंद घ्यावीच लागेल. हल्लीच्या काळात तर हे काम अधिकच गुंतागुंतीचे झालेले आहे; कारण या बदलांचे मापदंड ठरविण्यासाठी निरनिराळया, परस्परविरोधी विचारप्रणाली अस्तित्वात आलेल्या आहेत. निरनिराळया जाती, जमाती, अल्पसंख्याक जमाती यांच्यामध्ये अत्यंत संकुचित असे सांस्कृतिक स्व-भान निर्माण झालेले आहे. सामाजीकरणावर राजकारणाची छाया पडू लागली आहे; त्यामुळे वैध असे सामाजिक परिवर्तन टिपणे कठीण झाले आहे; तरीही एखाद्याने ते समजून घ्यायचेच ठरवले तर त्याला अनेक भावनांना सामोरे जावे लागेल. भारतीय समाजाचे लोकशाही राष्ट्रात रूपांतर हे अनेक उद्दिष्टांवर आधारित आहे. यांमध्ये लोकांना सामाजिक न्याय मिळवून देणे, आर्थिक सुरक्षा पुरविणे, निरनिराळया जाती-धर्मांमध्ये सलोख्याचे संबंध निर्माण करणे, सांस्कृतिक देवाणघेवाण घडवून आणणे, यांचा समावेश होतो. याचाच अर्थ, नागरिकांना अधिक दर्जेदार आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक संधी मिळवून देऊन त्यांना नागरिकत्वाचे हक्क मिळवून देणे व कर्तव्यपालनास प्रवृत्त करणे असा होऊ शकतो.

भारतातील सांस्कृतिक परिवर्तनावर पुरोगामी व प्रतिगामी अशा दोन्ही प्रभावांचे प्रतिबिंब उमटलेले दिसते. लोकांच्या मनावरील व अभिव्यक्ती वरील वाढता धार्मिक पगडा हे पूर्वपदावर येण्याचेच संकेत देतात. धार्मिकतेच्या प्रभावाने लोकांचे संपूर्ण आयुष्य वेढलेले दिसते. सर्व राजकीय नेते, निगम कार्यकारी अधिकारी, व्यवसायिक व भांडवलशाह असे सर्वजण धार्मिकतेला समप्रमाणात आश्रय देतात. शास्त्र व तंत्रज्ञानाच्या अभ्यासाने देखील लोकांच्या खाजगी व सार्वजनिक जीवनातील धार्मिकतेची जागा घेतलेली दिसत नाही. उलट लोकांनी एक वेगळाच 'दुहेरी बाणा' जपलेला दिसतो. शास्त्र व तंत्रज्ञान क्षेत्रात कार्य करणारे अनेक व्यवसायिक आपआपल्या कार्यक्षत्रात वास्तववादी, शास्त्रीय मूल्ये जोपासतात; तर मूळ आयुष्याच्या गाभ्यात मात्र धार्मिक मूल्ये जोपासतात. कुटुंब, जाती, स्नेहसंस्था या सामाजिक आयुष्यात देखील हेच आढळते. साधनभूत स्वरूपाच्या काही परंपरागत मूल्यांची जागा नवीन साधनभूत अशा शास्त्रीय व तंत्रज्ञानविषयक मूल्यांनी घेतलेली दिसते. आरोग्य, अन्न, पोषण, वाहतूक व संपर्क या साधनभूत व्यवसायांमध्ये वरील बाब नजरेस येते. आधुनिक वैद्यकशास्त्र, नवनवीन प्रकारचे अन्न-तंत्रज्ञान या क्षेत्रांनी माहितीच्या व संपर्काच्या नवीन पद्धतींना आपले केले आहे. निवडणुकांचे राजकारण नवीन व्यवस्थापकीय रचना आणि शास्त्र व तंत्रज्ञान विषयक संस्थापक यांनी आधुनिक मूल्यांशी आपली बांधीलकी जपलेली आहे. सामाजिक आणि सांस्कृतिक आधुनिकीकरणाची नवीन मूल्ये जपणाऱ्या व आत्मसात करणाऱ्या पारंपारिक मूल्यांचे व संस्थांचे पूर्वस्थिती प्राप्त करण्याचेच हे संकेत आहेत. भारतीय समाजाची रचना ही मूलतः अनेकतावादी आहे व तिच्या सर्व प्रवाहांना आपली अशी स्वायत्तता आहे. ज्या वेळी भारत पाश्चिमात्य देशांच्या प्रभावाखाली होता तेव्हाच सांस्कृतिक आधुनिकीकरणाच्या प्रक्रियेला सुरूवात झाली होती. स्वातंत्र्यानंतर ही प्रक्रिया अधिकच सर्वसमावेशक बनली. सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संस्थांमध्ये लोक मोठया प्रमाणात सहभागी होऊ लागले. आधुनिक जीवनशैली अनेकांनी लीलया आत्मसात केली. लोकांच्या राजकीय जाणिवा वाढल्या व प्रत्येकाने आपली स्व-प्रतिमा जपली. आधुनिकीकरणामुळे समाजाची रचना बदलण्यास जेव्हा खऱ्या अर्थाने सुरूवात झाली तेव्हा काही मूल्ये जपली गेली; तर बऱ्याच मूल्यांचा ऱ्हास झाला. सूडभावना, जातीयवाद, वसाहतवाद, समूहवाद व प्रांतवाद ही या प्रगतीमुळे बाहेर पडलेली काही अपमूल्ये आहेत.

आजच्या भारतीय समाजामध्ये जे सांस्कृतिक परिवर्तन घडून येत आहेत, त्यांच्या-विषयीदेखील अनेक मतमतांतरे आहेत. ग्रामीण व नागरी सामाजिक यंत्रणांमध्ये आर्थिक व सामाजिक आधुनिकीकरणाची प्रबळ इच्छा निर्माण झालेली आहे; त्यामुळे क्रयसंपादन, संधिसाधू उपयुक्ततावाद, सूडभावना, वसाहतवाद व मूलतत्ववाद ही मूल्येवैध ठरू पाहात आहेत. गेल्या चाळीस वर्षात भारतीय समाजात जे परिवर्तन घडले त्यांचा हा परिणाम आहे. ग्रामीण विकासामुळे हरितक्रांती घडून आली तर नागरी विकासामुळे उद्योजकता व व्यवसायिकता वाढीस लागली; यामुळे स्वतंत्र व बहुसमावेशक, बहुभाषिक, बहुरंगी अशा आधुनिक मूल्यांची जागा अत्यंत संकुचित अशा उपयुक्ततावादाने घेतली.

CamScanner से स्कैन किया

'उपयुक्तता आहे तोपर्यंत वापरा व उपयुक्तता संपल्यावर फेकून द्या' हे तत्व सर्वच बाबतीत अंगीकारले जावू लागले. आर्थिक व सामाजिक विकासामध्ये सुस्पष्ट विचारांचा अभाव असल्याने हे घडले. समाजवादी लोकशाही परिवर्तन घडतांना जाणवणाऱ्या हया अपरिहार्य वेदना असाव्यात.

अमरावती शहर हे वाढत्या औद्योगीकरणामुळे व नविन तयार झालेल्या सोयी–सुविधा जसे मेन बायपास व उड्डाणपूलामुळे ओळखले जाते. अमरावती शहरातील हा मुख्य रस्ता पंचवटी हे राहटगाव व राहाटगाव पासून तर अकोला शहर असा जोडण्यात आला आहे. या अंतरराष्ट्रीय मुख्य रस्त्यावरून दिवसरात्र माल वाहतूक चालते. त्याचप्रमाणे अमरावती शहर एकात्मिक रस्ते विकास प्रकल्पांतर्गत उड्डाणपूल बांधण्यात आलेले आहेत. अमरावती शहराचा पाया सूधारण्याच्या दृष्टीने महाराष्ट्र शासनाने 114 कोटीचा प्रकल्प मंजूर केला आहे. या प्रकल्पात अमरावती शहरातील 30 रस्त्याचे रूंदिकरण व मजबूतीकरण, 15 चौकांचे सौंदर्यीकरण, 18.30 किलोमीटर लांबीचा अकोली वळणमार्ग, जयस्तंभ चौक, श्याम चौक, राजकमल पंचवटी व बडनेरा येथील रेल्वे उड्डाणपूलाचे रूंदीकरण कामांचा या प्रकल्पात समावेश आहे.

उद्दिष्टे :–

- अमरावती शहरातील नागरी कुटुंब संस्थेमधील तांत्रिक परिवर्तनाचे अध्ययन करणे.
- अमरावती शहरातील नागरी कुटुंब संस्थेमधील तांत्रिक परिवर्तन घडवून आणणाऱ्या घटकांचा शोध घेणे.
- अमरावती शहरातील नागरी कुटुंब संस्थेमधील तांत्रिक परिवर्तनाच्या गती विषयी अध्ययन करणे.

संशोधनाचे महत्व :– सदर संशोधन हे पुढील बाबींच्या अनुषंगाने महत्वपूर्ण आहे.

2) अमरावती शहरातील नागरी समाजात तांत्रिक परिवर्तन घडवून आणणाऱ्या घटकाविषयी सविस्तर माहिती प्राप्त झाली.
3) अमरावती शहरातील नागरी समाजातील तांत्रिक परिवर्तनाच्या गती विषयी माहिती प्राप्त झाली.
4) अमरावती शहरातील नागरी समाजातील तांत्रिक परिवर्तनामुळे त्यांना कोणते फायदे वा तोटे झाले या विषयी माहिती प्राप्त झाली.

नागरी समाज : एक असा विविधतापूर्ण व प्रगत जो औद्योगिकीकरणामुळे निर्माण झाला असून ज्यामध्ये विविध संस्कृतीचे लोक एकत्र राहतात.

परिवर्तन : परिवर्तन म्हणजे एका अवस्थेतून दुसऱ्या अवस्थेत जाण्याची घटना. उदा. सामाजिक परिवर्तन, ज्यामध्ये समाजातील विविध घटकांमध्ये अमुलाग्र बदत होत असतो.

अमरावती शहर : महाराष्ट्राच्या विदर्भ या भागातील दुसरे सर्वात मोठे शहर.

कुटुंब : मॅक आयव्हर आणि पेज यांच्या मते, "संतानोत्पत्ती आणि बालसंगोपन ही कार्य करण्यासाठी पर्याप्तपणे निश्चित व दीर्घकाळ टिकणाऱ्या लैंगिक संबंधावर आधारलेला समूह म्हणजे कुटुंब होय"

तंत्रज्ञानासंबंधी झालेला बदल

- तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरणांची हाताळणी
- तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे उपकरणांचे दर
- तंत्रज्ञान विकासामुळेशहरी नागरिकांच्या कार्यक्षमतेत झालेला बदल
- तंत्रज्ञान विकासामुळे वेळेची बचत

अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरण हाताळणे सोपे झाले या विधानासंबंधी माहिती दर्शविण्यात आली आहे. सारणीत दर्शविलेल्या माहितीनूसार असे निदर्शनास येते की, अध्ययन क्षेत्रातील 66.4प्रतिशत अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरण हाताळणे सोपे झाले असून अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरण हाताळणे सोपे नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 17.2 प्रतिशत असल्याचे निदर्शनास आले तर अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरण हाताळणे सोपे झाले या विधानासंबंधी सांगता येत नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 16.4प्रतिशत

CamScanner से स्कन किया

असल्याचे आढळले. सांख्यिकीय विश्लेषणातून प्राप्त परिणामांवरून असे आढळते की, अमरावती शहरातील बहुतांश नागरिकांना शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरण हाताळणे सोपे झाले. अध्ययनातून प्राप्त परिणामांवरून हा निष्कर्ष काढण्यात येतो की, अमरावती शहरातील बहुतांश (66.4:) नागरिकांना तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणांमुळे नित्योपयोगी उपकरण हाताळणे सोपे झाले.

अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहराततंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्योपयोगी उपकरणांचे दर स्वस्त झालेया विधानासंबंधी माहिती दर्शविण्यात आली आहे. सारणीत दर्शविलेल्या माहितीनूसार असे निदर्शनास येते की, अध्ययन क्षेत्रातील 56.6 प्रतिशत अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहराततंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरणांचे दर स्वस्त असून अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहराततंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरणांचे दर स्वस्त नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 18 प्रतिशत असल्याचे निदर्शनास आले तर अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना शहराततंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्यउपयोगी उपकरणांचे दर स्वस्त झाले या विधानासंबंधी सांगता येत नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 25.4 प्रतिशत असल्याचे आढळले. सांख्यिकीय विश्लेषणातून प्राप्त परिणामांवरून असे आढळते की, अमरावती शहरातील बहुतांश नागरिकांना शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्योपयोगी उपकरणांचे दर स्वस्त झाले. अध्ययनातून प्राप्त परिणामांवरून हा निष्कर्ष काढण्यात येतो की, अमरावती शहरातील बहुतांश (56.6:) नागरिकांच्या मते शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्योपयोगी उपकरणांचे दर स्वस्त झाले.

अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे शहरी नागरिकांची कार्यक्षमता वाढली या विधानासंबंधी माहिती दर्शविण्यात आली आहे. सारणीत दर्शविलेल्या माहितीनूसार असे निदर्शनास येते की, अध्ययन क्षेत्रातील 71.3 प्रतिशत अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळेशहरी नागरिकांची कार्यक्षमता वाढली असून अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे शहरी नागरिकांची कार्यक्षमता वाढली नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 23 प्रतिशत असल्याचे निदर्शनास आले तर अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे शहरी नागरिकांची कार्यक्षमता वाढलीया विधानासंबंधी सांगता येत नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 5.7 प्रतिशत असल्याचे आढळले. सांख्यिकीय विश्लेषणातून प्राप्त परिणामांवरून असे आढळते की, अमरावती शहरातील बहुतांश नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे शहरी नागरिकांची कार्यक्षमता वाढली. अध्ययनातून प्राप्त परिणामांवरून हा निष्कर्ष काढण्यात येतो की, तंत्रज्ञान विकासामुळे अमरावती शहरातील बहुतांश (71.3:) नागरिकांची कार्यक्षमता वाढली.

अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे वेळेची बचत झाली या विधानासंबंधी माहिती दर्शविण्यात आली आहे. सारणीत दर्शविलेल्या माहितीनूसार असे निदर्शनास येते की, अध्ययन क्षेत्रातील 67.6 प्रतिशत अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे वेळेची बचत झाली असून अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे वेळेची बचत झाली नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 29.5 प्रतिशत असल्याचे निदर्शनास आले तर अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे वेळेची बचत झालीया विधानासंबंधी सांगता येत नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 2.9 प्रतिशत असल्याचे आढळले. सांख्यिकीय विश्लेषणातून प्राप्त परिणामांवरून असे आढळते की, अमरावती शहरातील बहुतांश नागरिकांना तंत्रज्ञान विकासामुळे वेळेची बचत झाली. अध्ययनातून प्राप्त परिणामांवरून हा निष्कर्ष काढण्यात येतो की, तंत्रज्ञान विकासामुळे अमरावती शहरातील बहुतांश (67.6:) नागरिकांच्या वेळेची बचत झाली.

अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांच्या शहरात माहिती संसाधनाच्या उपलब्धतेसंबंधी माहिती दर्शविण्यात आली आहे. सारणीत दर्शविलेल्या माहितीनूसार असे निदर्शनास येते की, अध्ययन क्षेत्रातील 75.4प्रतिशत अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांच्या शहरात माहिती संसाधनांची उपलब्धता मुबलक प्रमाणातवाढली असून अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांच्या शहरात माहिती संसाधनांची उपलब्धता अल्प प्रमाणात वाढली आहे ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 21.7 प्रतिशत असल्याचे निदर्शनास आले तर अध्ययन क्षेत्रातील नागरिकांच्या शहरात माहिती संसाधनांच्या उपलब्धतेतबदल झाला नाही ही प्रतिक्रिया देणाऱ्या उत्तरदात्यांचे प्रतिशत प्रमाण 2.9प्रतिशत असल्याचे आढळले. सांख्यिकीय विश्लेषणातून प्राप्त परिणामांवरून असे आढळते की, अमरावती शहरातील बहुतांश नागरिकांच्या शहरात

CamScanner से स्कन किया

माहिती संसाधनांची उपलब्धता मुबलक प्रमाणात वाढली. अध्ययनातून प्राप्त परिणामांवरून हा निष्कर्ष काढण्यात येतो की, तंत्रज्ञान विकासामुळे अमरावती शहरातील बहुतांश (75.4:) नागरिकांच्या मते शहरात माहिती संसाधनांची उपलब्धता मुबलक प्रमाणात वाढली.

तंत्रज्ञान घटक : अध्ययनातून प्राप्त परिणामांवरून हा निष्कर्ष काढण्यात येतो की, अमरावती शहरातील बहुतांश (66.4:) नागरिकांना तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणांमुळे नित्योपयोगी उपकरण हाताळणे सोपे झाले. (56.6:) नागरिकांच्या मते शहरात तंत्रज्ञानात झालेल्या सुधारणेमुळे नित्योपयोगी उपकरणांचे दर स्वस्त झाले. तंत्रज्ञान विकासामुळे अमरावती शहरातील बहुतांश (71.3:) नागरिकांची कार्यक्षमता वाढली. तंत्रज्ञान विकासामुळे अमरावती शहरातील बहुतांश (67.6:) नागरिकांच्या वेळेची बचत झाली. तसेच अमरावती शहरातील बहुतांश (75.4:) नागरिकांच्या मते शहरात माहिती संसाधनांची उपलब्धता मुबलक प्रमाणात वाढली.

संदर्भसूची :–

- ✓ बोबडे प्र., "भारतीय समाजरचना", श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर, 1988
- ✓ बोबडे, प्र., "भारतीय समाज रचना पारंपरीक व आधुनिक" , प्रकाशक–मंगेश प्रकाशन नागपूर, पाचवी आवृत्ती 1994.
- ✓ दास्ताने, सं., "महाराष्ट्र 2006", प्रकाशक–दास्ताने कंपनी पुणे, 25 वी आवृत्ती 2005.
- ✓ कायदे पाटील, गं. वि., "संशोधन पध्दती", चैतन्य पब्लिकेशनस नासिक, 13, 2004.
- ✓ महाले सं., कर्डिले व., "संशोधन पद्धती, संशोधनात सांख्यिकी तंत्राचे उपयोजन", प्रकाशक, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक (2002)

CamScanner से स्कैन किया

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNITIONIL RESEIRCH FELLOWS ISSOCIITION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

May -2019

SPECIAL ISSUE-CLXXXV

EMERGING TRENDS IN HUMANITIES & COMMERCE



Executive Editor:
Prof. Virag S. Gawande
Director,
Aadhar Social Research & Development Training Institute Amravati

Guest Editor
Prof.Dr.Sanjay J. Kothari
Hod & Assistant Professor,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage Chandur Bazar Dist.Amravati [M.S.]

Chief Editor
Mr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

RESEARCH JOURNEY
MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

CamScanner से स्कैन किया

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013) | Special Issue | May 2019
UGC Approved No. 40705



INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	बेरोजगारी दूर करण्यामध्ये रोजगार हमी योजनेची भूमिका	प्रा. डॉ. नरेंद्र श्रीधर बागडे	6
2	कृषीविषयक वित्तीय समस्या : आर्थिकदृष्ट्या चिकित्सक अध्ययन	कु. वैशाली डोकरीमारे	10
3	माध्यमिक स्तरावर अभ्यासात मागे पडलेल्या विद्यार्थ्यांची शिक्षणाविषयक मानसिकता व अभ्यासात मागे पडण्याची कारणे शोधून त्यावरील उपयोजना.	सौ. प्रतिभा गंगाधर टापरे	20
4	पं. मनोहर कसलीकर यांचा उपशास्त्रीय गायकीतील सौंदर्य विचार	स्मिता प्रभाकर देशमुख	26
5	युगवाणी' या नियतकालिकाची संकल्पना, धोरण व वैशिष्ट्ये	डॉ. स्वप्निल चंद्रशेखर देशमुख	29
6	'अंधायुग' का आधुनिक संदर्भ	डॉ. तीर्थराज राय	32
7	महिला शेतकरी आत्महत्या अर्थव्यवस्थेला शाप – एक चिंतन	प्रा. डॉ. निना साधुजी चवरे	36
8	स्त्री–पुरूष असमानतेची समस्या	डॉ. सचिन होले	41
9	मराठी वाड:मयीन साहित्य प्रवाह	छाया सवडतकर	45
10	डॉ. विवेकी राय कृत हिंदी उपन्यास : "नमामी ग्रामम्"	डॉ. एम. ए. काजी	50
11	बालगृहातील एक पालक, द्विपालक, अनाथ आणि अन्य किशोरवीन मुलींच्या संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक परागमन, सामाजिक असमायोजन, परावलंबन, लवचीकता व परिस्थितीशी जुळवून घेणे आणि संवेगात्मक परिपक्वतेचे तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. अनुरागीणी रमेशराव बोके	52
12	मोगलकालीन लष्करातील मनसबदारी पध्दत – एक अभ्यास	प्रा. योगेश मारोती करवाडे	56
13	वित्तीय गुंतवणूक प्रणालीतील प्रत्यक्ष विदेशी प्रत्यक्ष गुंतवणुकीचा सहभाग एक चिकित्सक अभ्यास	प्रा. डॉ. जयंत एम. बनसोड	60
14	आधुनिक स्त्री आणि स्वयंरोजगार	डॉ. अनिता जिवतोडे (टेकाडे)	65
15	बालश्रमिकांच्या सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक समस्याचे अध्ययन	प्रा.श्रीहरी मा.सानप	68
16	ग्रामिण भागातील शिक्षणाविषयी जागृती व गळतीचे कारणे	डॉ. एस.जी. भांगडीया	73
17	ब्रिटिशकालिन भारतीय संस्थानातील शैक्षणिक व्यवस्था	डॉ. शितल पंचीकर	78

CamScanner से स्कैन किया

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013) | May 2019
Special Issue
UGC Approved No. 40705

स्त्री–पुरूष असमानतेची समस्या

डॉ. सचिन होले
(समाजशास्त्र विभाग प्रमुख) नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा

प्रस्तावना :–

भारतीय इतिहासाच्या कुठल्याही वळणावर नजर टाकली तरी आपल्याला सामर्थ्यवान, धैर्यवान व बुध्दिमान स्त्रियांची उदाहरणे दिसतात. उदा. वैदिक काळातील– द्रौपदी, सीता, गार्गी, मैत्रेयी, प्रसिध्द गणिततज्ञ लीलावती, मध्ययुगातील बंडखोर संत मीरा, जनाबाई, महदंबा, झुंजार लढवय्या राजकर्त्या अहिल्याबाई होळकर, झाशीवाली लक्ष्मीबाई, सुलताना रझिया, राणी दुर्गावती इ. हे सर्व मान्य केले तरीही कर्तृत्ववान स्त्रियांची ही अपवादात्मक उदाहरणे होय, असेच म्हणावे लागते. कारण भारतीय समाजातील बहुतांश स्त्रियांना शिक्षण घेण्याची संधी नाकारण्यात आली होती. विधवांना पुनर्विवाहाचा अधिकार नाकारण्यात आला होता. विधुरांच्या पुनर्विवाह हक्काला मात्र समाजाची मान्यता होती. ही उदाहरणे भारतीय समाजात स्त्रियांना पुरूषांच्या बरोबरीची संधी नाकारण्यात आली होती हेच दर्शवितात लिंगाधिष्ठित असमानता हा प्राचीन व मध्ययुगीन काळाचा वारसा होय असे म्हणावे लागते.

स्त्री–पुरूष असमानेची समस्या भारतीय समाजात आहे आणि अन्य समाजांमध्ये नाही, असा समज करून घेणे चुकीचे ठरते. अमेरिकन समाजाचे अध्ययन करणारे अभ्यासक नमूद करतात की, तेथे अध्यक्षपदाच्या निवडणुकीसाठी स्त्री उमेदवार असल्यास असंख्य पुरूष मतदार मतदान करण्याच्या प्रक्रियेत सहभागी होणार नाहीत. १५० वर्षाच्या प्रदीर्घ कालखंडात अमेरिकन अध्यक्षपदातील एकही स्त्रीला राजकीय पक्षांनी उमेदवार म्हणून पाठिंबा दिलेला नाही. ही पार्श्वभुमी लक्षात घेतल्यास अभ्यासकांच्या निष्कर्षातील वास्तव स्पष्ट होते. पुरूष डॉक्टरांच्या तुलनेत महिला डॉक्टरांची संख्या रशियामध्ये अधीक आहे. असे असूनही अमेरिका अथवा अन्य प्रगत देशांमधील पुरूष डॉक्टरांएवढा मानसन्मान व प्रतिष्ठा रशियातील महिला डॉक्टरांना मिळत नाही. म्हणून लिंगाधिष्ठित असमानतेची समस्या ही समाज संरनेतून निर्माण झालेली समस्या आहे असे म्हणता येते.

लिंग :– जिवशास्त्रीय व सामाजिक संकल्पना :–

इंग्रजी भाषेत लिंग या शब्दासाठी मैगव ळमदकमत हे दोन पर्यायी शब्द आहेत मैहा शब्द जीवशास्त्रीयदृष्टया वापरला जातो तर ळमदकमत हा शब्द सामाजीकरणाच्या संदर्भात वापरला जातो. उदा. स्त्रीच्या जातीत जन्माला आल्यामुळे एखाद्या व्यक्तीचे लिंग स्त्रीलींग असे आपण म्हणतो. लिंग हा गुणविशेष निसर्गदत आहे, असा लिंग या संज्ञेचा जीवशास्त्रीय अर्थ आहे.

ती व्यक्ती जन्मल्यापासून वाढ होताना सामाजीकरणच्या प्रक्रियेत समाजाला अपेक्षित असणारे बाईपणा चे गुण आत्मसात करते. उदा. मुलाने मुळमुळ रडू नये हे त्याला शिकविले जाते. लज्जाशीलतेचा गुण मुलीमध्ये विकसित केला जाते. चालताना पावलांचा फारसा आवाज होणार नाही ही बाब मुलीने आत्मसात करावी अशी समाजाची अपेक्षा असते. पावलांच्या आवाजाने घरातील लक्ष्मी निघून जाते असे मुलींच्या मनावर बिबविले जाते. अशा प्रकारे सामाजीकरणच्या प्रक्रियेमध्ये लहान मुलांच्या वर्तनक्रियाना श्पुरूषीश पणा आणि श्बायकीश पणाच्या रूढ साच्यात बसविण्याचा प्रयत्न केला जातो. मुलीना दुबळ्या सहनशील होण्यास शिकविले जाते. मुलांना आक्रमण व अधिकार गाजवणारा होण्यासाठी उत्तेजन दिले जाते.

CamScanner से स्कन किया

पुरूषपणा व बायकीपणा ठरविण्याने निकष सर्वच समाजांमध्ये काळाच्या ओघात उत्क्रांत झाले. या निकषांच्या आधारेच व्यक्तीच्या वर्तनक्रिया तपासून पाहिल्या जातात. या तपासणीने निष्कर्ष सांगण्यासाठी पुरूष व स्त्री या संज्ञांचा उपयोग केला जातो. यावरून पुरूष व स्त्री या संकल्पनामध्ये सामाजिक आशय अंतर्भूत आहे हे स्पष्ट होते.

ऐतिहासीक प्रवाह :—

- ऋग्वेद :— परिपक्व झाल्यानंतर लग्नाला मान्यता असून पती निवडण्याचे स्वांतत्र्य होते.
- वैदिक काळ :— स्त्रीयांना समान दर्जा व समान अधिकार होता.
- मनुस्मृती :— मनुस्मृतीपासून स्त्रीयांच्या दर्जेला उतरती कळ लागली.
- मुस्लीम काळ :— बाबर आणि मुगल साम्राज्यात महिलांवर मोठ्या प्रमाणात लैंगिक अत्याचार झाले.
- सहाव्या शतकापासून बालविवाहाची प्रथा सुरू झाली.
- महाभारतामध्ये देखील डावामध्ये द्रौपदीवर अत्याचार करण्यात आला आहे.
- रामायाणामध्ये सुध्दा सीतेचे अपहरण हे लैंगिक अत्याचार दर्शवते.
- मुस्लीम धर्मामध्ये ही पडदापध्दतीच्या अनुषंगाने महिलांचे शोषण झालेली आहे.
- दक्षिण भारतामध्ये ब्रिटीशकाळात मोठ्याप्रमाणात देवदासी प्रथा होती नंतर देवदासीचाच उपयोग लैंगिक अत्याचार करण्याकरीता होवू लागला.
- सतीप्रथा
- इश्वरचंद विद्यासागर यांनी १८५६ मध्ये विधवापुर्नविवाह कायदा करण्यास ब्रिटिशांना भाग पाडले.
- सद्यास्थितीत तृतीयपंथाच्या लैंगिक समस्या व त्याचे मनोसामाजिक प्रश्न मोठया प्रमाणात आहेत.

स्त्री—पुरूष असमानतेमधील विचारधारा :—

लिंग हा गुणविशेष निसर्गदत आहे. म्हणून जैविकीय दृष्टीने स्त्री व पुरूष समान आहेत असे म्हटले जाते. असे असूनही स्त्रियांबाबत भेदभाव का केले जातात ? किंवा संधी, हक्क आदींबाबत स्त्री—पुरूष विषमतेची स्थिती का निर्माण झाली? असा प्रश्न उपस्थित होतो. यासाठी विचारधारा व सामाजिक संरचना ही दोन ठळक कारणे जबाबदार असल्याची व्यक्त केले आहे.

१) विचारधारा :—

भारतीय समाजात स्त्रीया पवित्र व दैवी वा ईश्वरी आहेत अशी धारणा प्राचीन काळापासून आहे. स्त्रियांच्या नावासोबत श्रदेवीश हा शब्द जोडण्याचा प्रघात आजच्या काळातही सुरू आहे. ती म्हणजे रजस्वला (मासिक धर्म) या कारणामुळे स्त्रिया या अशुध्द वा प्रदूषित असतात. स्त्रियांच्या स्थितीबाबतच्या अशा धारणा अत्यंत प्रभावी असल्यचे सर्वच समाजात दिसून येते. अशा धारणा विचारधारेच्या मुळाशी असतात. वणे व जातींच्या श्रेष्ठ कनिष्ठ व्यवस्थेत पुरूषाप्रमाणेच स्त्रियादेखील समाविष्ट आहेत. कनिष्ठ मानल्या जाणाच्या जातीमधील स्त्रिया चरित्रहीन असतात असे श्रेष्ठ मानल्या जाणा—या जातीमधील काही स्त्रिया मानतात तर याउलट श्रेष्ठ मानल्या जाणा—या जातीमधील स्त्रियांबाबत कनिष्ठ जातीमधील स्त्रियांचे अनेक पूर्वग्रह असल्याचे दिसून येते.

२) सामाजिक संरचना :—

संरचनात्मक दृष्टीने पितृसताक व्यवरथा हे स्त्री—पुरूष असमानता निर्माण होण्याचे एक प्रमुख कारण आहे. श्मुलगी ही परक्याचे धन आहे, एक ना एक दिवस तिला तिच्या पतीच्या घरी

CamScanner से स्कन किया

जावायचे आहे. हा विचार पितृसत्ताक व्यवस्थेची देणगी होय असे म्हटले जाते. बालवयात आई–वडील, तरुणवयात पती आणि वृध्दावस्थेत पुत्र हा स्त्रीचे संरक्षण व देखभाल करण्याचे कार्य करतो. अशा विचारांची निर्मीती पितृसत्ताक व्यवस्थेतूनच झाली, पुरूषाचे उच्च स्थान आणि पुरुषापेक्षा स्त्रीची दुय्यम पपितृसत्ताक व्यवस्थेतून समाजमान्यता प्राप्त झाली. पुरूषाच्या वर्चस्वाचे हे तत्व केवळ कुटूंबांपुरतेच मर्यादित न राहता, घराचा उंबरठा ओलांडून घराबाहेर जगातही शिरकाव करते. म्हणून आर्थिक, सामाजिक अशा सर्व क्षेत्रातील सत्तास्थाने पुरूषांच्या हातात एकवटली असल्याचे सर्वत्र आढळून येते.

भारतीय स्त्रीयांचा बदलता दर्जा :–

स्त्री व पुरूष यांच्या दर्जाबाबत असमानतेची स्थिती हे सर्वच समाजव्यवस्थेत दिसून येणारे वास्तव आहे. असे असले तरी ही स्त्रियांच्या दर्जात विविध प्रकारचे बदल देखील घडून येत असतात ६ लात घेणे आवश्यक ठरते. भारतीय समाजात केवळ लिंग या एकाच आधारावर सर्व स्त्रीयाचा यता समान नाही. श्रीमंत वा उच्च वर्गातील स्त्रियांची स्थिती मध्यम वर्गातील स्त्रियांपेक्षा भिन्न आहे, तसच कानष्ट वर्गातील स्त्रियांची स्थिती मध्यम व उच्च स्त्रियांपेक्षा भिन्न आहे. लिंग समान असुनही स्त्रियांच्या स्थितीबाबतची ही भिन्नता सामाजिक विजातीयतेतूनच (वबपंस भ्मजमतवहमदमपजल) निर्माण होते. म्हणुन लिंगाधिष्ठित असमानतेची स्थिती सर्व स्त्रियांबाबत एकसारखी आहे, असे म्हणता येत नाही.

स्त्रियांच्या दर्जाचा किंवा सामाजिक स्थानाचा ऐतिहासिक दृष्टीने आढावा घेतला तर स्त्रियांच्या बदलत्या दर्जाचे स्वरूप स्पष्ट होते. उदा. प्राचीन काळातील भारतीय समाजात स्त्रियांना शिक्षण व धार्मिक उपासनेबाबत पुरूषांच्या बरोबरीचे अधिकार होते. मध्ययुगातील सामंतशाही व्यवस्था आणि परकीय आक्रमकांचे शासन यामुळे समाजाच्या सर्व स्तरांमधील स्त्रियांची स्थिती गुलामांसारखी झाली. म्हणजे त्यांच्यावर विविध प्रकारची बंधने लादण्यात आली. शिक्षणाचा प्रसार , समाजसुधारकांचे प्रयत्न या कारणांमुळे स्त्रियांच्या हक्काबाबत भारतीय जनमानसात जाणीव–जागृती निर्माण होण्यास स्वातंर्त्यपूर्व काळात प्रारंभ झाला. स्वातंर्त्योत्तर काळात भारतीय संविधानाने स्त्री–पुरूष समानतेच्या तत्वाची हमी मुलभुत अधिकारांद्वारे दिली. भारतीय स्त्रियांना समान सामाजिक दर्जा (वबपंस जंजने) संविधानाने मिळुन दिला आहे.

स्त्रियांच्या परिस्थितीत सुधारणा व्हावी, त्यांच्या हक्कांचे संरक्षण व्हावे या उद्देशाचे भारतीय शासनाने विविध प्रकारचे कायदे केले. उदा. बालविवाह बंदी कायदा (१९५४), हिंदु विवाह घटस्फोट कायदा (१९५६) , हुंडा प्रबिंधक कायदा(१९६१) इत्यादी आता विधवा स्त्रिला पुनर्विवाह करण्याचा हक्क मिळाला आहे. तसेच विवाहित स्त्रिला माहेरच्या वडिलोपार्जित इस्टेटीत तसेच पतीने मिळवलेल्या संपत्तीत वाटा मिळाला आहे. थोडक्यात विवाहसंबंध आणि कुटुंबातील स्थान या दोहोंबाबत स्त्रियांच्या दर्जा आता पुर्वीपेक्षा अधिक उंचावला आहे. महात्मा जोतिबा फुले यांनी सुरू केलेल्या स्त्री–पुरूष शैक्षणिक समता निर्माण होण्याची वाट सुकर झाली आहे, विशेषत: उच्च व मध्यम वर्गातील स्त्रियांचे आर्थिक परावलंबित्व झपाट्याने कमी होऊ लागले आहे. नोकरी, व्यवसाय ,उद्योग आणि सर्वच क्षेत्रात काम करणा–या स्त्रियांच्या एकूण संख्येत दिवसागणीक नवीन भर पडत आहे. आरक्षणाच्या तरतुदीमुळे पंचायत राज स्तरावर (स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये) महिलांचा राजकीय सहभाग वाढला आहे. घटकराज्य आणि राष्ट्रीय स्तरावरील राजकारणात महिलांचा राजकीय सहभाग वाढविण्यासाठी आरक्षणाची तरतुद करण्याबाबत सहमती होत आहे. थोडक्यात स्वातंर्त्योत्तर काळात सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, शैक्षणिक, अशा सर्वच क्षेत्रात भारतीय स्त्रियांचा दर्जा बदलला आहे. किंबहुना पुर्वीपेक्षा अधिक उंचावला आहे.

CamScanner से स्कैन किया

स्त्री–पुरूष असमानतेच्या समस्येवरील उपाययोजना :–

भारतीय समाजात स्त्री–पुरूष समानतेच्या विचार केवळ पाश्चिमात्यांच्या अनुकरणातून आलेला नाही, हे सर्व प्रथम लक्षात घेणे आवश्यक आहे. स्त्री–पुरूष असमानता हे वास्तव (त्मंसपजल) आहे. पाश्चिमात्य समाजातील स्त्री मुक्तिवादाच्या प्रभावातुन निर्माण झालेली विचारसरणी म्हणुन त्यांची हेटाळणी करणे योग्य नाही. स्त्री– पुरूष समानतेच्या कल्पनेला वैचारिक वा तात्विक बैठक आहे. स्त्री–पुरूष असमानतेच्या समाजशास्त्रीय विचारांतुन स्त्री–पुरूष समानतेच्या कल्पनेचे व या कल्पनेमागील तात्वीक बैठकीचे आकलन होऊ शकते असे म्हणता येईल.

स्त्रियांच्या समस्या या भावनिक व मानसिक नाहीत, त्या लिंग या निसर्गदत्त गुण विशेषातुन निर्माण झालेल्या नाहीत तसेच त्या व्यवस्थापनाच्या देखील नाही हे लक्षात घेणे आवश्यक ठरते.

१) लैंगिकतेशी संबंधीत माहितीची देवाणघेवाण

२) शारिरीक दृष्ट्य एकंदरीत आदर करणे.

३) लैगिकतेशी संबंधीत निर्णयाचा अधिकार समान असावा.

४) मुलं केव्हा, कधी आणि किती याचा निर्णय महिलांना असावा.

५) लैंगिकतेसंबंधी अधिकार सर्वाना समान असावा.

६) लिंगभाव– विषयक जनजागृती घडवुन आणणे ही या समस्येवरील उपाययोजना आहे.

७) लिंग हा गुणविशेष निसर्गदत्त असला तरीही त्याच्याशी संबंधीत जीवनशैली, सामाजिक स्थान व भुमीका हे सामाजिक रचित आहे. म्हणुन स्त्रियांकडे बघण्याच्या विषमतामुलक दुष्टीकोनात बदल होणे आवश्यक ठरते.

८) घरकामाची जबाबदारी केवळ स्त्रीची नाही हे ठसविण्यासाठी स्त्री–पुरूषांमध्ये जाणीव–जागृतीचे कार्यक्रम घेणे.

९) साधन स्त्रोतांची मालकी व पावरण्याचे अधिकार स्त्रियांना मिळणे यासारखे मुलगामी संरचनात्मक बदल ही या समस्येवरील उपाययोजना आहे.

संदर्भग्रंथ सूची :–

१) भारतीय सामाजिक संरचना आणि सामाजिक समस्या–लोटे रा.ज. ,डॉ चौहान ए.डी.

२) भारतीय सामाजिक समस्या–भांडारकर पु.ल.

३) भारतातील आजच्या समस्या– प्रा. कोंडेकर ए. वाय.

४) http://www-hrw-org/campaigns/iccwomen-htm

CamScanner से स्कन किया

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - IV

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CamScanner से स्कैन किया

CONTENTS OF MARATHI PART - IV

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१६	महात्मा जोतीराव फुले यांच्या शिक्षणविषयक विचारांची प्रासंगिकता **आकाश शेषराव बांगर**	६४-६६
१७	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राजकीय विचार **अमोल भाऊराव बंड**	६७-७०
१८	सामाजिक चळवळीत विचारवंताचे योगदान **प्रा. दिगंबरकुमार प्रल्हादराव लांडगे**	७१-७५
१९	पंडित जवाहरलाल नेहरु यांचे आदर्शवादी विचार **कु. अलफीया ई. खाजावाले** **प्रा. डॉ. जीवन पवार**	७६-८०
२०	समाजसुधारणा चळवळीत राष्ट्रसंत तुकडोजी ऐतिहासिक योगदान **प्रा. डॉ. किशोर एच. बारापात्रे**	८१-८३
२१	मध्ययुगातील प्रमुख महिला संतांचे स्त्री कल्याणासंबंधी सामाजिक प्रबोधन **प्रा. डॉ. एम. पी. खेडेकर**	८४-८६
२२	महात्मा फुलेंच्या विचारातील सामाजिक व आर्थिक क्रांती **प्रा. डॉ. मधुकर श्रीराम ताकतोडे**	८७-९०
२३	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कृषी अर्थव्यवस्थेसंबधी विचार **डॉ. उल्हास ना. मेडशीकरं**	९१-९२
२४	सामाजिक कार्यामध्ये गो. ग. आगरकरांचे योगदान **डॉ. नाना वानखडे**	९३-९६
२५	पं. नेहरुचे लोकशाही विषयक विचार **प्रा. नीता पांडे**	९७-१००
२६	दलित व समाज परिवर्तन **प्रा. विनय पैकिने**	१०१-१०२
२७	बंजारा महिलांची आर्थिक व सामाजिक स्थिती **प्रेमसिंग प्रल्हाद जाधव**	१०३-१०५
२८	सामाजिक चळवळीत विचारवंताचे ऐतिहासिक योगदान **राजेंद्र बापूराव वाकडे**	१०६-११०
२९	माहीतीचा अधिकार आणि त्याचे महत्व **प्रा. रमेश गुलाबराव सुरळकर**	१११-११७
३०	महात्मा गांधी आणि शाश्वत विकास **डॉ. सचिन ज. नेले**	११८-१२१

CamScanner से स्कन किया

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

३०. महात्मा गांधी आणि शाश्वत विकास

डॉ. सचिन ज. होले
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा.

शाश्वत विकास टिकविणे आज काळाची गरज झाली आहे. ही एक ज्वलंत समस्या आहे. यामुळे प्रत्येकांनीएकत्र येऊन पर्यावरणाला वाचविले पाहिजे. मार्क्सच्या समाजवादी तत्वज्ञानाने हे शोषण उघड श्रमजीवी वर्गाच्या क्रांतीचा मार्ग मोकळा केला. परंतु औद्योगिक क्रांतीनंतरच्या दोनशे वर्षात दुसरेही शोषण राहिले. त्याकडे फारसे कोणी लक्ष दिले नाही. हे शोषण म्हणजे नैसर्गिक संपत्तीचे शोषण होय. भांडवलशाहीने केलेली भोगवादी संस्कृती त्यामध्ये अनावश्यक गरजांची तृप्ती व जोडीला सर्वत्र वाढणारी लोकसंख्या उत्पादनात प्रचंड वाढ होत गेली अर्थात नैसर्गिक साधनांच्या उपयोगाशिवाय अशी वाढ शक्य नसल्याने त्यांचा वापर होत गेला हे उत्पादन वाढविताना वायू, जल व जमीन यांचे प्रदूषण थांबले पाहिजे शाश्वत विकास हे स्वतःच्या गरजा पूर्ण करण्याची भावी पिढ्यांची क्षमता बाधित न होऊ देता वर्तमान गरजा पूर्ण करणे म्हणजे शाश्वत विकास होय.

मानवता आणि त्याला पात्र असलेल्या मनुष्याच्या कल्याणाची दिशा गांधी दर्शनात अहिंसा, शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, आत्मिय घटकांच्या संपूर्ण विकासात विश्वासाची ध्वनि आढळते. महात्मा गांधी कारखानदारीचे विरोधी नव्हते. समतेचा अहिंसक उपाय गांधीनी इंगीत केला. धन आणि सत्ता जो विकासाचा राजकीय हातघातेचा आज समाजातील थोडया लोकांच्या हातात एकत्रित होत आहे. वितरणाची समानता आधारभूत अट होती. ट्रस्टीशिप सिद्धांत समाज हितासाठी भांडवलाची आवश्यकता, अपरिग्रह वृत्तीमुळे मनुष्य स्वतःच्या स्वार्थाहून वर उचलला जाईल. गांधीना भारताच्या भविष्याची कल्पना होती. गांधीना वाटे की, मनुष्याचा स्वार्थ निसर्गाच्या न्हासाला कारणीभूत आहे. मनुष्य निसर्गाच्या नैसर्गिक संपत्तीला लुबाडतो आहे, ओरबाडतो आहे. मनुष्य विचार करत नाही की आपल्या पूर्वजांनी नैसर्गिक साधन संपत्तीचा वापर आवश्यक गरजांनुसार केले म्हणजेच आज आपण तिचा उपभोग घेत आहोत.

गांधीचा शाश्वत विकास हा रोगनिवारणाची रुपरेषा आहे.त्यांचा निसर्गाशी वैयक्तिक आणि सामाजिक संबंध आहे.त्यांनी विकासाच्या सर्व बाजूनी विचार करावा, सर्व स्तरावर करावा, शाश्वत विकास हा आदर्शवादी आहे. हे संपूर्ण जगाच्या पातळीवर मानव प्राण्यांच्या आंतरक्रियेतून परिसंस्था ही जपली जात आहे. ही एक चळवळ आहे. याला जीवनाचा मार्ग बनवावे असे सुचवले जात आहे. या चळवळीत चाणाक्षपणे सर्वांनी सहभाग नोंदवून स्वयंसहायता, स्वयं परावलंबी, कारखानदारीचे विकेंद्रीकरण, मजुर तंत्रज्ञानाचे ध्येय हे सर्व गुणात्मक ध्येय आहे. हया समाधानकारक अर्थपूर्ण जीवनाचे समाजाचा दुर्बल वर्ग केवळ दयेचा पात्र बनू नये .परंतु विकासाचे, विकासाचा लाभ समान रुपाने घेणे गांधी दर्शनाची खूण आहे. समानता विकासाची पहीली अट आहे. अहिंसक तंत्रज्ञान गांधीवादी कल्पना करू शकतो, गांधीच्या शाश्वत विकासाचा उद्देश आजही निर्धनता आणि शोषणाचे उन्मूलन आहे. सर्वहाराचा विकास आज साम्यवादी देश पण करू शकला नाही आणि क्रांती वर क्रांती अशा आशेची टकटकी लागून राहीली.

CamScanner से स्कैन किया

शाश्वत विकासाच्या दर्शनात गांधीवाद एक व्यावहारिक समझदारी आणू शकतो . विभिन्न वर्गात आर्थिक सामाजिक समानता वाढत राहिल. शाश्वत विकासाच्या दर्शनात समानवाद स्थिर आहे, स्तंभ आहे. जो संपूर्ण समाजाच्या नैतिक आणि आध्यात्मिक अस्तित्वाला तंत्रज्ञानाच्या दबावाने वाचवले जात आहे. पश्चिम समाज आज आपल्या अविष्कार, सुपर कॉम्प्युटर, दानवी मिसाईल आणि महानगरांने कचरा घरात रूपांतर होऊ लागले विकास लोकांना लक्षात तेवून केला गेला पाहिजे. भारताच्या शाश्वत विकासासी नियोजन नितीत निर्धनतेला लक्ष्य समूह मानल्या जाणे योग्य आहे. कमीत कमी भारत जरी बहुभाषी, बहुसंस्कृती आणि बहुआयामी देशात विकासाची अट गांधी दर्शनाकडे वळली आहे.

अध्ययनाचे उद्देश

१. गांधीच्या शाश्वत विकासातील बदलांचा अभ्यास करणे.
२. गांधीनी राबवलेल्या पर्यावरणीय चळवळीचा अभ्यास करणे.
३. गांधीच्या शाश्वत विकासाच्या ऱ्हासामुळे मानवी जीवनावर होणाऱ्या परिणामांचा अभ्यास करणे.

शाश्वत विकासातून पर्यावरणाला वाचविण्यासाठी काही परिषदा भरवण्यात आल्या

१. १९८३– वर्ल्ड कमिशन पर्यावरण आणि शाश्वत विकासासाठी कार्य सुरू केले आहे.
२. १९९२ – मध्ये अर्थ समिटमध्ये रिओ दि जानीरो' मध्ये उत्पादनाची क्षमता ही रियोने पर्यावरण आणि विकास याची फ्रेमवर्क बनवून घोषित केले. यामध्ये जैवविविधता शब्द घरोघरी पोहोचला. यातील विविधता जोपासली पाहिजे. जैवविविधतेच्या नाशाबद्दल गंभीरपणे चर्चा झाली आणि नाशाची दखल घेतली गेली. एखाद्या प्राणी नामशेष झाला तर परत येत नाही. उदा. डायनासोर हा आपण आता तयार करू शकत नाही.
३. 2006 जेम स्पअपदह च्संदमज च्या मते, पाश्मिात्य समाजाच्या जीवनपद्धतीमुळे पृथ्वीवरील निर्सगात असमतोलपणा निर्माण झाला.
४. २०१० – कोपनहेगन येथे झालेली परिषद यात देखील हवामानाचे बदलते स्वरूप यावर चर्चा झाली होती. कुठलाच देश आपल्या देशातील कार्बन उत्पादन कमी करण्यासाठी पाऊल उचलत नाही. या परिषदेचे आऊटपूट काहीच निघाले नाही.

जगातला लढा हा शाश्वत विकासासाठी लढला जात आहे. जीवंत जंतूच्या जीवनाला ग्लोबल वॉर्मिंगमुळे, बदलत्या हवामानामुळे धोका निर्माण झाला आहे.

१) दांडी यात्रा १९३०

गांधीनी नैसर्गिक स्त्रोत हा सामान्य माणसाचा अधिकार असून त्याने याचा आत्मविश्वासपूर्वक स्वीकार करावा द्य आणि त्याचा गैरवापर करू नये हे शिकवले. नैसर्गिक स्त्रोतातील मीठ हा सामान्य माणसाच्या जीवनाचा मुलभूत आणि । प्राथमिक घटक आहे. जर आपण दांडी यात्रेविषयी जाणून घेतले तर स्वातंत्र्याच्या काळात मीठाचा सत्याग्रह करावा लागला. हा सत्याग्रह देशात विदेशात खूप प्रसिद्ध झाला.यामध्ये आश्रमाचे ७१ सदस्य सामील झाले होते. ११ मार्चला गांधीजींनी घोषणा केली की जेंव्हा ते मिठाचा कायदा तोडतील त्यानंतर मोठया प्रमाणावर मीठाचा गैरकानुनी निर्माण आणि निलामी आरंभ केला जाईल. यामध्येच विदेशी कपडे आणि दारूवर बहिष्कार टाकला. अहिंसा आणि

CamScanner से स्कन किया

झाल्या. मानवी हस्तक्षेपामुळे नैसर्गिक परिसंस्था व पुर्ननिर्मिती साधन संपत्तीच्या निर्मीतीवर देखील परिणाम होतो.जास्त उत्पादन देणारे संकरीत बि–बियाणे किंवा जास्त दूध आणि मांस देणारे प्राणी उपयोगी ठरतात. परंतु कधी कधी या नवीन जाती जर वातावरणाशी समरूप झाल्या आणि स्थानिक जातीपेक्षा प्रबळ झाल्या तर त्या स्थानिक लोकांना समस्या होऊन बसतात. ही एक त्रास दायक गोष्ट आहे. तसेच ब्रिटीशांनी जलपर्णीला शोभेची वेल म्हणून भारतात आणले होते. पण तिने आज नद्या,नाल्यांना व जलाशयांना अच्छादन टाकले आहे. या जलपर्णीचा नायनाट कसा करावा ही सरकारसमोर समस्या आहे. तसेच १९६० साली कॅलिफोर्नियात आफ्रिकेतून बेडकांची आयात करण्यात आली होती. परंतु हे बेडके प्रबळ निघाले की, कॅलिफोर्नियातील नद्यांमधील सर्वकाही भक्ष केले. त्यामुळे तेथील जलपरिसंस्थेचा समतोल ढासळला. जलप्रदूषणाचा । परिणाम भूगर्भजलावर व सरोवरांवर देखील होतो. विकसनशील राष्ट्रात वनस्पतीच्या प्रमाणाबाहेर वाढीमुळे किंवा अन्नअतिरेकामुळे सरोवरे नष्ट होण्याच्या मार्गावर आहेत.

भारतात सरोवरांनी सुमारे २ लाख हेक्टर क्षेत्र व्यापले आहे. भारतात निलगिरी टेकडयांच्या परिसरातील कोडाई कॅनॉल आणि भूकेटी ही सरोवरे वगळता समुद्रसपाटीपासून २००० मीटर्सपेक्षा जास्त उंचीवरील सरोवरांना अस्तित्वाचा धोका निर्माण झाला आहे. पशुपक्ष्यांमुळे, मधमाशांमुळे, फुलपाखरांमुळे या जीवजंतूमुळे मानव जीवंत आहे. असे म्हटल्या जाते की मधमाशांचे अस्तित्व संपल्यानंतर चार वर्षानंतर मानवाचे ही अस्तित्व संपेल.

निष्कर्ष

जसे गांधीजी नेहमी म्हणायचे चांगल्या कार्याचा शुभारंभ चला आपल्यापासून सुरूवात करूया जेणे करून भविष्यातील नवीन पीढी आपल्याला दोष देणार नाही. श्रीमंत गरीबातली दरी कमी करा, गरीब दुबळयांचा चेहरा बन आपल्याला त्यांच्याकडून घेतले पाहिजे. गांधीजी मानवाला प्रत्येक पावलागणिक जागरूक करत होते. जलप्रदूषण वाचवा, हवा शुध्द ठेवा, हवेचे प्रदुषण थांबवा गांधी नेहमी म्हणाचे 'चला खेडयाकडे' खेडयात शुद्ध हवा, स्वच्छ वातावरण, आपुलकी, जिव्हाळा मिळतो, दुषीत वातावरणापासून दूर राहता येते. साधी भोळी लोकांना भेटता येते. म्हणूनच तर , गांधीजींनी तीन माकडे निर्माण केली "बुरा मत बोलो, बुरा मत सोचो, बुरा मत देखो " पर्यावरणाशी छेडछाड न करता मानवी हस्तक्षेप न करता पर्यावरण प्रदुषण थांबवले पाहिजे.

संदर्भ ग्रंथ

१. रावराम मेहरसिंह, विकास के विकास का समाजशास्त्र २००४ अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस ४८३/२४ प्रल्हाद गली, अन्सारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली .पेज नं ५१
२. डॉ. विमंडन विजय, विकासाचे अर्थशास्त्र आणि नियोजन.
३. सुमित सरकार, आधुनिक भारत २००१, राजकमल प्रकाशन १ बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली.पेज नं ३०५–३०६
४. webliography & www-shodhganga-com
५. प्राचार्य सुहास पेशवे, डॉ मोहन बाबरे, प्रा.विलास खडके, पर्यावरण अभ्यास २००४, मंजुषा पब्लिकेशन्स नळदुर्ग, = शिवार, व्यासनगर नळदुर्ग पेज नं–१००,६५

CamScanner से स्कन किया

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
International Multilingual Research Journal

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर शिक्षण संस्था, गोंदिया द्वारा संचालित
आणि गोंडवाना विद्यापीठ, गडचिरोली संलग्नित

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, ब्रम्हपुरी, जि.चंद्रपुर

द्वारा आयोजित

मराठी समाजशास्त्र परिषदेचे २९ वे राष्ट्रीय अधिवेशन

दि. १८ व १९ जानेवारी २०१९

"जनसंवाद आणि सामाजिक माध्यमांचा भारतीय समाजावर प्रभाव"

मुख्य संपादक

डॉ. स्निग्धा राजेश कांबळे,

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, ब्रम्हपुरी, जि. चंद्रपुर

सहसंपादक

डॉ. कुंदन दुफारे,

श्री. जी. सी. पा. मुनघाटे महाविद्यालय, धानोरा, जि. गडचिरोली

संपादक मंडळ

डॉ. अशोक सालोटकर,
गो. वा. महाविद्यालय, नागभीड, जि. चंद्रपुर

डॉ. संजय कुंभारे,
श्री गोविंदप्रभु कला, वाणिज्य महाविद्यालय, तळोधी (बाळापुर), जि. चंद्रपुर

प्रा. संजय चव्हाण,
यादवराव पोशट्टीवार महाविद्यालय, तळोधी (बाळापुर), जि. चंद्रपुर

डॉ. विजय दिघोरे,
भिवापूर महाविद्यालय, भिवापूर, जि. नागपूर

प्रा. बालाजी दमकोंडवार,
नेवजाबाई हितकारीनी महाविद्यालय, ब्रह्मपुरी, जि. चंद्रपुर

डॉ. रविंद्र विखार,
श्री गोविंदराव मुनघाटे महाविद्यालय, कुरखेडा, जि. गडचिरोली

Reg.No U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh.Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

CamScanner से स्कैन किया

26) जनसंवाद आणि सामाजिक माध्यमांचा भारतीय समाजावर परिणाम
प्रा. बाळकृष्ण कारू रामटेके, लाखनी || 138

27) प्रसारमाध्यमे आणि बदलते जीवनप्रवाह
डॉ. साधना बाबुराव बुरडे, जि. नांदेड || 143

28) सामाजिक माध्यमांचा कुटुंब व विवाह संस्थेवर होणारा परिणाम
प्रा. डॉ. भारती कृष्णराव देशमुख, वाशिम || 146

29) नव समाजमाध्यमांची भूमिका परिणामकारक की समाजविघातक
प्रा.डॉ. हेमंत सोनकांबळे, नांदेड || 150

30) प्रसारमाध्यमे आणि बदलते जीवनप्रवाह
डॉ. साधना वि. मौंदेकर, नागपूर || 154

31) जनसंवाद व सामाजिक माध्यमांचा शेतकऱ्यांना होणारा फायदा
डॉ. कविता मते, नागपूर || 157

32) Dr. Ambedkar Dalit Social Movement/ Counter Movement and .....
Prof. Devesh M.Kamble, Bramhapuri || 160

33) जागातिकीकरण / उदारीकरण / खाजगीकरण आणि माध्यमे
Dr. Iliyas. G. Bepari, Bhandara || 162

34) भारतीय समाजावरील सोशल नेटवर्किंग साइटची भूमिका
डॉ. रमेश डी.राठोड, बीड, प्रा.नंदकुमार बी. कुकलारे, औरंगाबाद || 167

35) सामाजिक माध्यमांचा समाजव्यवस्थेवर होणारा परिणाम
प्रा. शरद गायकवाड, मुरुम || 170

36) जनसंवाद आणि सामाजिक माध्यमांचे सैध्दांतिक दृष्टीकोन
प्रा. डॉ. लालचंद किसन रामटेके, भंडारा || 173

37) जनसंवाद आणि सामाजिक माध्यमांचा भारतीय समाजावरील परिणाम
प्रा.डॉ.एस.एस.कुंभारे, चंद्रपूर || 175

38) लोकसहभाग पर्यावरण संतुलन आणि प्रसार माध्यमे
डॉ. सचिन ज. होले, बडनेरा || 182

CamScanner से स्कैन किया

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® | January 2019 Special Issue | 0182

38

लोकसहभाग पर्यावरण संतुलन आणि प्रसार माध्यमे

डॉ. मनिन ज. होले,
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा

प्रस्तावना :—

आपला देश हा खेड्यांचा देश आहे. सात लाख खेडी देशात आहेत. म्हणून खेडी हाच भारताचा खरा आत्मा आहे. आत्मा बलवान झाला तर देशाचा शाश्वत विकास व्हायला वेळ लागणार नाही. स्वातंत्र्य मिळाल्यावर प्रथम खेड्यांच्या सर्वांगीण विकासाकडे लक्ष द्या. खेड्यतील ग्रामोद्योगांना व शेती व्यवसायास चालना द्या. खेड्यांचा आर्थीक सामाजिक व शैक्षणिक विकास करा असा संदेश महात्मा गांधीनी राज्यकर्त्यांना दिला होता.

लोकसहभागशिवाय कोणताही कार्यक्रम उद्देश सफल होत नाही असे तज्ज्ञ विचारवंत, अनुभवी (ठामपणे) मांडतात. हे सत्य आहेच. त्यालाच जोडून मी असे म्हणतो की, कार्यक्रमाच्या यशस्वीतेसाठी जसे लोकसभाग जरूरीचा आहे तसेच प्रसार माध्यमांचा सहभाग ही महत्वाचा आहे. नेतृत्वाची लोकभिमुखता, पारदर्शकता, प्रेरणा व प्रोत्साहन देण्याची क्षमता व स्वयंसेवी संस्थांची गुणवत्त, द्रष्टेपण हे देखील यशासाठी खूप महत्वाचे आहे. ग्रामीण भागातील विकास जनसंवादाची अनेकविधक्षीतांने प्रकाशमान होत आहेत. नैसर्गिक साधन संपत्तीचे जतन करणे ही काळाची गरज आहे.

वृक्षवल्ली आम्हां सोयरी वनचरे।
पक्षीही सुस्वरे आळविती।।

अशा शब्दांमध्ये संत तुकाराम महाराजांनी आखिल मानवाचं निसर्गाशी जवळीक साधण्याचा अनमोल संदेश दिला आहे.

पर्यावरण व संस्कृती :—

पर्यावरणाचा व संस्कृतीशी अतूट निसर्गाशी आहे आणि मानवी जीवनातील सखोल संबंधाशी आहे. हे आदिम समाजापासून विज्ञानयुगापर्यंत सिध्द करता आहे. केवळ एवढे सिध्द करून थांबत नाही तर मानवाने हे हजारो वर्षांपूर्वी ओळखले आहे. प्राचीन भारतीयांच्या समोर आपल्याला काय या पर्यावरण संस्कृतीचा उलगडा केल्याशिवाय आपल्याला आजच्या आधुनिक काळातील भारतीय पर्यावरण संस्कृतीपुढे असलेले अनेकविध प्रश्न विचारात घेताना आपण भूतकालीन इतिहासाकडे दुर्लक्ष करता कामा नये. पर्यावरणाचे संरक्षण करण्यासाठी जनतेचे प्रमाणेच गावातील जनतेने सहभागी व्हावे म्हणून माध्यमांनी नवा जागृतीचा मार्ग अनुसरला पाहिजे. प्राचीन व मध्ययुगीन काळामध्ये भारतात जल, वायु व ध्वनी प्रदुषणावर नियंत्रण प्रस्थापित करण्यासाठी प्रयत्न केले जात होते. मध्ययुगात निर्माण केलेली पाणी पुरवठा व्यवस्था आजही शुन्य खर्चावर अलल्बून आहे. भारतीय पारंपारीक व आधुनिक जलनियोजन पध्दतीत समन्वयाची नितांत गरज आहे. पारंपारीक माध्यमाद्वारे भारतात पर्यावरण शिक्षणाची गती वाढविली जाणे गरजेचे आहे. ही गती ओळखून नव्या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमांची पूर्नरचना करण्यावर भर दिला तर उत्पादन वाढविता येऊ शकेल. जुन्या व नव्या माध्यमांद्वारे तसेच जुन्या नव्या संवर्धन संरक्षण तंत्राद्वारे याचा उपयोग करून आपणास पर्यावरण संतूलन अधिक प्रभावीरीत्या साधता येईल.

प्रदूषण नियंत्रणात पारंपारिक उदाहरणांना चागले स्थान आहे. पर्यावरण रक्षणासाठी पूर्वकाळात चांगले झालेले प्रयत्न लक्षात घेण्यासारखे आहेत. या प्रसार माध्यमांनी विज्ञान व संस्कृती यात समन्वय साधून लोकशिक्षणाचे काम चांगल्या प्रकारे हाती घ्यावे अशा प्रकारची विचारणा सामाजिक विचारवंतानी आहे. पर्यावरणाचा प्रश्न हा सगळ्या जगापुढे असणारा मोठा प्रश्न आहे. त्यामुळे या प्रश्नांना समर्थपणे सामोरे जाताना माध्यमांकडून लोकशिक्षणाचा मार्ग स्विकारावा अशी अपेक्षा स्पष्ट होते.

योजनेतील गावाचा सहभाग :—

कोणतीही लहान--मोठी योजना तयार होऊन

CamScanner से स्कैन किया

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta (P) | January 2019 Special Issue | 0183

प्रत्यक्ष कार्यक्रमात येण्यासाठी त्या गावातील लोकांचा सहभाग असेल तरच ती प्रत्यक्षात येईल व नंतर ती व्यवस्थित चालू शकेल. हा सहभाग मुख्यत: तीन गावपातळीवर अगत्यपूर्वक पाहिजे त्या : म्हणजे मानसिक, शारिरीक व आर्थिक या प्रत्येक पातळीवर स्पष्टीकरण खालील प्रमाणे स्पष्ट करता येईल.

१. मानसिक पातळी :—

एखाद्या गावाने मनावर घेतले तर अनेक गोष्टी साध्य होऊ शकतात. पूर्वीची म्हण 'गाव करील ते राव काय करील' अजूनही खरी आहे. महाराष्ट्रातील काही सेवाभावी संस्थांनी जे काम केले आहे त्यात गटेगण सिध्दीचे श्री. अण्णासाहेब हजारे यांनी केलेली कामे, पाणी रत्नागीरी जिल्ह्यात गोकूळ या संस्थेचे काम अथवा हिवरे बाजार या गावातील पोपटराव पवार यांचे काम ही या बाबतीतील उदाहरणे खूप काही सांगून जातात. इतरही लहान—मोठ्या संस्था निरलसपणे काम करताना आढळतात.

२. शारीरिक पातळी :—

काही गावाच्या बाबतीत असे दिसून येईल की, लोकांनी मानसिक तयारी झाली की, एखाद्या योजनेतील अंगमेहनतीची कामे करण्याबद्दल त्यांची तयारी होते. प्रत्येक कामाच्या गरजेप्रमाणे घरटी एक माणूस आठवड्यातून एकदा द्यावयाचा ठरविल्यास बरीच कामे हातावेगही करता येतात. गावातील सर्व कुटूंबाची यादी करून प्रत्येक कुटूंबातील एका माणसाने आठवड्यातील एक दिवस गावाच्या कामाकरीता दिल्यास कोणावरही एकदम बोजा पडत नाही. तसेच सर्वांचा सहभाग असल्याने त्या कामाबद्दल सर्वांना आत्मीयता वाटू लागेल. असा प्रयोग अनेक गावातून चालू आहे. व तो यशस्वी होत आहे.

३. आर्थिक पातळी :—

गावाच्या विकासाच्या काही योजनांच्या बाबतीत खर्चाची काही ठराविक टक्केवारी गावकऱ्यांनी उचलावी अशी शासनाची अथवा आर्थिक मदत देणाऱ्या संस्थेची अपेक्षा असते. ही टक्केवारी प्रत्येक गावातील परिस्थितीनुसार बदलू शकते. गावाच्या विकासाच्या दृष्टीने हा आर्थिक सहभाग पूर्ण करण्यात गावकरी कसून करणार नाहीत. विधायी कार्यकर्ते जर गावाला लाभले तर ही जाणीव नक्कीच निर्माण होऊ शकते.

शोषण आणि कार्यक्रम :—

भारतीय प्रसार माध्यमांना शोषण व कुपोषणाचे निरसनही अत्यन्तीने त्याला पर्यावरणासमोरचे जटील प्रश्न समजून घेताना अनेक समस्यांना तोंड द्यावे लागते. विज्ञान प्रसार व पर्यावरण शिक्षण हे भारतीय वृत्तपत्रांनी म्हणजे दृक्‌श्राव्य माध्यमांनी प्रसार माध्यमांनी प्रसिध्द अभ्यासक्रम हे व स्वयं वाहीन्यांवर मात्र 'अर्थशास्त्रीय' समस्या कार्यक्रमातून पर्यावरण शिक्षणाकडे भर दिला जातो. तिसऱ्या जगापुढील गरीबी त्यांची भौगोलिक परिस्थिती व औद्योगिक शोषणामुळे अनेक कठिण प्रश्नांना तोंड द्यावे लागते अशा प्रश्नांची वारंवारता उकल करणे गरजेचे आहे.

विज्ञान व तंत्रज्ञान :—

पर्यावरण शिक्षण ही काळाची गरज आहे. पण अशा शिक्षणासाठी विज्ञानाचा उपयोग कसा करता येईल. हा महत्वाचा प्रश्न आहे. 'डाऊन टू अर्थ' या नियतकालिकामधे म्हटले आहे की पर्यावरण विषयक प्रश्नांकडे दुर्लक्ष करत असून शासन आणि दूरध्वनी माध्यमे उभयतांचेही पर्यावरण समस्येकडे कामाचीचे दुर्लक्ष होत चाललेले पाहायला मिळते. नव्या तंत्रज्ञानाचा उपयोग समाजात वैज्ञानिक दृष्टिकोन रुजविण्याचे आणि अंधश्रध्दा पसरविण्यासाठी अधिक केला जात आहे. हि खेदजनक बाब सांगता येईल.

हरीत विश्वासाठी सामाजिक बनीकरण ही कल्पना स्टॉक होम परिषदेमध्ये स्वीकारण्यात आली. तदनंतर भारतामध्ये पर्यावरण रक्षणासाठी सर्वकष विचार जागृतीस प्रारंभ झाला. हा संदर्भात निर्णयक लोकहित संघटनांसाठी विचार प्रबोधन करण्याची जबाबदारी प्रसार माध्यमांवर येऊन पडली. पण १८७१ ते १९९५ या दोन तपाचा कालावधी पाहता माध्यमांनी पर्यावरण रक्षणासाठी प्रभावी निरपेक्ष कार्य केले असे वाटत नाही.

रासायनिक प्रदूषणाचा धोका :—

शेती व उद्योग या क्षेत्रात रासायनिक प्रदूषण वाढले आहे. शेतीसाठी वापरली जाणारी रासायनिक खते जमिनीतील धूप माहीतीशी करतात. तसेच जीव सर्जीवांच्या अवाजावी वापरामुळे कृषि उत्पादनाचा दर्जा

CamScanner से स्कैन किया

भरत आहे. विकासाच्या आलेखावर ही वाढ सुखी जीवनक्रम धक्का पोहचविणारी आहे.

एकीकडे विकासाचा वेग कमी पडतोय का प्रश्न आहे तर दुसऱ्याकडे प्रदूषण नियंत्रण करू शकते हा प्रश्न आहे. औद्योगिक्या वाढीबरोबर औद्योगिक, ग्रामीण वस्तूचे स्वरूपाचे प्रदूषण होते. महानगरातील शहरीकरण हे सामाजिक आरोग्य बिघडविणारे आहे. तसेच मानसी अर्थसंकल्पातील विस्मृतीमध्येही प्रदूषणात वाढ होत आहे. हे विसरता कामा नये. त्यामुळे महानगरातील लोक जीवनात प्रदूषण नियंत्रणावर भर देण्याची गरज आहे. यासाठी लोकशिक्षणाशिवाय पर्याय नाही.

जागृतीची गरज :—

पर्यावरण व विकास यात समतोल साधून स्थैर्य साधता येते. पण पर्यावरण रक्षण ही चळवळ नव्या संदर्भात पुनश्च तपासून घेतली पाहीजे. पर्यावरण रक्षणाच्या चळवळींना लोकांचा पाठींबा मिळतो. मग पर्यावरण शिक्षणासाठी ही नवी संजीवनी गरजेची आहे. केवळ शहरामध्येच नव्हे तर ग्रामीण व आदिवासी भागातही पर्यावरण रक्षणाच्या चळवळींची दिशा तपासून घेतली पाहीजे. सुंदरलाल बहूगुणा, मेधा पाटकर, सलीम अली यासारख्या ध्येयवादी कार्यकर्त्यांनी पर्यावरण रक्षणाचे प्रश्न जिव्हाळ्याने मांडले आणि त्यातून मार्गही काढले. त्यांना लोकांची शक्ती व्यापक प्रमाणावर लाभली. कारण पर्यावरण रक्षणाची हाक ही त्यांना काळाची गरज ओळखून दिली होती.

पर्यावरणातील लोकसहभाग दुबळा होण्याचे कारण म्हणजे विचार प्रसाराचे जागरण करण्यात माध्यमांना आलेले अपयश हे होय विकासाबरोबर येत असलेले वाढते प्रदुषण रोखता आले नाही तर विकासातून सामाजिक भ्रमनिरास होता. प्रादेशिक पातळीवरती पर्यावरणचे प्रश्न नवनविन आकार घेत आहेत. महानगरे ही पर्यावरण अध:पतनाची केंद्रस्थाने होत असतांना माध्यमांनी पर्यावरण शिक्षणाकडे दुर्लक्ष केले तर भारतामधील परिस्थिती अधिक हाताबाहेर जाऊ शकते.

निष्कर्ष :—

या सर्व चर्चेवरून हे सिध्द होते की, पर्यावरण

आहे. पर्यावरण शिक्षणासाठी दूरदर्शन, तंत्रज्ञानाचे व दूरसंचाराची अशा विविध स्वरूपाच्या माध्यमांचा उपयोग करता येतो. लोकांच्या जीवनशैलीवर होणाऱ्या माध्यमांचा परिणाम हा परिवर्तनाचा पोषक करता येईल. या दृष्टीने विचार करण्याची काही संशोधन पातळ्या होणे आवश्यक आहे. समकालीन जीवनातील बदलत्या मोठविनाश माध्यमांनी आणी समाजशिक्षण पोषक करणे तसेच याबद्दल माध्यमांचे मौलिकत्व अबाधित राहिले आहे. माध्यम मुद्रित असो, वा दृकश्राव्य त्याना जर योजकतेने वापर करता आला तर परिवर्तनाची सकारात्मक नांदीने माध्यमांचे काय अधिक साहाय्यभूत ठरू शकते. भारतीय संवाद क्रांतीला समाजक्रांतीची दिशा दिली तर समाज परिवर्तन होवून लोकसहभाग वाढेल आणि परिवर्तनाच्या नविन दिशा ग्रामीण भागास दिसू लागतील.

संदर्भ ग्रंथ :—

१. भोसले प्र.भा. (२०१२) आपण शेतकरी आणि आपला समाज
२. भोसले प्र.भा (२०१२) आम्ही शेतकरी आणि आमचा शेती धंदा
३. डॉ. धारूरकर वि.ल. (१९९९) 'माध्यम दृष्टीक्षेप'
४. थिटे चिंतामणी, रसाळ प्रसार (२०१२), 'पाणलोट क्षेत्र विकास'
५. आपले आदर्श गाव (मासिक) नोव्हेंबर २००१.
६. लोकराज्य, मे. २०१२.
७. Chatterjee R.K. (1973) Mas Communication, National Book Trust of India.
८. Metha D.S. (1979) Mas Communication at Journalism in India.
९. Desai M.U. Communication Policies in India. UNESCO.

❑❑❑

CamScanner से स्कन किया

8:25 PM 4G VoLTE

UGC-CARE List

You searched for "**Alochana chakra**". Total Journals : 1

Search

1	Alochana Chakra	Chiranjib Sur	2231-3990	NA

Sh

Copyright 2020 Savitribai Phule Pune University
All rights reserved. Disclaimer

CamScanner से स्कैन किया

ALOCHANA CHAKRA JOURNAL
(UGC-CARE GROUP-1 JOURNAL)

An ISO : 7021 - 2008 Certified Journal

ISSN NO: 2231-3990 / Web : http://alochanachakra.in/// e-mail : submitacj@gmail.com

Certificate of Publication

This is to Certify that the Paper Entitled

GLOBALIZATION AND SOCIAL CHANGE IN INDIA: A SOCIOLOGICAL ANALYSIS

Authored by:

Dr. Sachin J. Kolay, Associate Professor

From

Narayanrao Ram Mahavidyalaya, Jaisinghpur (Affiliated to SGB

Has been published in

AC JOURNAL, VOLUME IX, ISSUE IV, APRIL-2020

L. Zadeh (Univ. of California, USA)
Editor-In-Chief
ALOCHANA CHAKRA JOURNAL
http://alochanachakra.in/

CamScanner से स्कैन किया

(SJIF) Impact Factor-7.675 ISSN-2278-9308

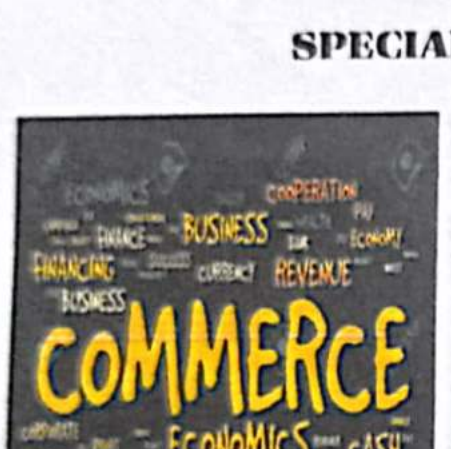
B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2020

SPECIAL ISSUE- CCXXXIII (233)







Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor :
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe ArtsComm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

CamScanner से स्कैन किया

39	नागपूर जिल्ह्यातील बचत गटात सहभागिता बचत गट सदस्यांच्या जीवनावर झालेल्या प्रभावा संबंधीने अध्ययन डॉ. भारती सुदर्शन गोस्वामी,	164
40	नागपूर जिल्ह्यातीलकल्पना कृषी उत्पन्न बाजार समितीना आर्थिक विकासाने अध्ययन डॉ. अशोक मंदे	169
41	बचपन की स्वतंत्र सोच : महापुरुषों के सामाजिक संदर्भ में डॉ मधुलता व्यास	173
42	किशोरवयीन मुलांच्या आहाराबाबत विचार प्रा.प्रिया खोरगडे	176
43	कौटुंबीक अर्थव्यवस्थेवर जागतीकीकरणाचा परिणाम प्रा.डॉ.सौ.सिमा बा.अढाऊ	180
44	भारतीय संगीतातील आध्यात्मीक परंपरा डॉ. वृषाली र. देशमुख	183
45	पर्यावरण संरक्षण और चिपको आन्दोलन Dr.Anju A.Sharan	187
46	मजदूर की मजबुरी डॉ सचिन होले	193
46	पर्यावरण संतुलनात महिलांचा सहभाग प्रा.डॉ. मंदाकिनी मेश्राम	195
47	कोसला –एक आकलन अन्वयार्थ डॉ.राजेश मिरगे	198
48	Information on globalization and employment in India **Dr.Sanjay J. Kothari**	200
49	वाणिज्य शाखेत मराठी भाषाभ्यासाची उपयुक्तता प्रा.नरेश महाजन	209
50	मराठी भाषा आणि व्यावसायिक संधी प्रा.डॉ.ममता व.दयने	212
51	मराठी साहित्य आणि मानवतावाद डॉ.सविता माधवराव पवार	215
52	म. गांधींची ग्राम विकासाची संकल्पना प्रा. पराग ज. गावंडे	220
53	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार **डॉ. प्रशांत सुखदेवराव चन्हाटे**	224

CamScanner से स्कन किया

B.Aadhar International Multidisciplinary Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
May 2020

मजदूर की मजबुरी

डॉ सचिन होले
सहयोगी प्राध्यापक नारायणराव गाणा महाविद्यालय बडनेरा

२४ मार्च को लॉकडाउन लागू करते समय यदि प्रवासी मजदूरों के बारे मेंभी सोचा गया होता तो मजदूरोंकी और उनके परिवारकी ऐसी दुर्गति नही होती । मात्र ४ घंटे का समय देकर लाक डॉउन कीजो घोषणा की गई। यह वक्त की आवश्यकता जरूर थी।परंतु देशभर मे बिखरे हुए प्रवासी मजदूर जो अपने पैतृक स्थानोंसे हजारो किलोमीटर दूर कार्यरतथे और जो आर्थिकरूपसे असुरक्षितथे एव आवासही नथे उनके बारे में यदि थोडा भी सोचा गया होता तो ऐसी परिस्थितियां नही बनती कि उनको पैदल, साइकिलसे, दूध केटैकरोंमें अमानवी यढंगसे अपने घरों की ओर लौटने केलिए हजारों किलोमीटरकी यात्राएं नहीं करना पडती।८ मई को औरंगाबाद के पास बदनावर और करनाल स्टेशन के बीच घर जानेकी उम्मीद मेंरे लवेकी पटरी के सहारे चलनेवाले १६ मध्यप्रदेश के प्रवासी मजदूर जो थककर रेलवे ट्रैक पर सो गए थे उनकी ट्रेन से कटनेसे मृत्यु होग ई।

लाक डाउन के बाद ऐसी घटनाएं आम होगईहै यात्रा ओंकेदौरान कई लोगोंने अपने घर पहुंचने के पहले ही भूख के कारण,बीमारी के कारण और अन्य कारणोसे दम तोड दिया।

सरकारने २१ दिन एवं १९ दिनके दो लाकडाउन के पश्चात ४० दिन बाद मजदूरों को वापस उनके गृहप्रदेश में स्थित निवास स्थानों पर पहुंचाने की व्यवस्था केलिए ट्रेनें चलाने की अनुमति या दी है, यदि यह अनुमति या प्रथम लाकडाउन के समयसे ही दे दीजाती तो यह सरकार की मजदूरो के प्रतिसंवेदनशीलता और गंभीरता का प्रतीक होता , परंतु लाकडाउन के ४० दिन बाद लाखो प्रवासी मजदूरो के घर वापस होने के लिए परेशान होने के बाद प्रवासी मजदूरोंको अपने घरोंकी ओर लौटनेके लिए ट्रेन चलानेकी अनुमति देना यह दर्शाता है कि सरकार की प्राथमिकता मे मजदूर सबसेनीचेकी पायदान पर है।

यदि सरकार ने विदेशोंमें कार्यरत आर्थिक रूप से सक्षम लोगों को अपने देश लाने मेंतत्परता दिखाई । कोटा में पढरहे बच्चोंकोलाने के लिए विशेष बसें चलाई। तब प्रवासी मजदूरों कोभी उनके गृहस्थानोंपर पहुंचाने की जिम्मेदारी सरकारकी थी , क्योंकि नातो प्रवासी मजदूर आर्थिक रूप सेसक्षम थे नाही उनके पास आवास व्यवस्थाए थी, नाही वे इतने लंबे लाकडाउन के समय दो समयके भोजनकी व्यवस्था करनेमें सक्षम थे। सरकारकी जिम्मेदारी होती है कि वह अपने सब सेकम जोर तब केकाध्यानहर परिस्थितिमे पहले रखे और उसके अनुसार नियम कानून बनाएं । परंतु प्रवासी मजदूरोंकाध्यान नही रखकर सरकारने संवेदन हीनता काही परिचय दिया है। अपने घर पहुंचने के लिए बिना दोनोंवक्त का भोजन किए, छोटे–छोटे बच्चों को गोदमेंटांगकर लेजातेस्त्री और पुरुष, गर्भवती महिलाएं, अधिक पैदल चलने के कारण बीमार होते मजदूर, सडकों पर पैदल चलते छोटे–छोटे बच्चोंकादर्द महसूस करनेकी संवेदना सरकार कोभी हो जाती तो मजदूरोंको उनके घरों की ओर लौटने केलिए मजबूरी मैं पैदल नही चलना पडता।

मजदूरोंको वापस पहुंचाने वाली ट्रेनों में पहले किराया लिए जानेकी बात भी की कारहीथी । परंतु बादमें जब इस पर विपक्षी दलोंने उसे अपने राजनीतिक फायदेकेलिए मुद्दा बनाया और मजदूरोंका किराया देनेके बात की तब मजदूरोंसे किराया लिएजानेकी बात खत्म हुई। इससे यह सिद्ध होता है की लोकतंत्र में विपक्षका होना भी अनिवार्य है क्योंकि जब किसी घटनाका विपक्ष को राजनैतिक फायदा मिलनेकी संभावना बनती है, तब सत्तारूढ पार्टियां विपक्ष के दबावमें जनता के हितमें फैसले लेने लगती है ।

यहां एक ओर असंवेदनशीलता कर्नाटक की सरकारने मजदूरोंके प्रतिदिखाई, और उन्होंने अपनी अर्थव्यवस्थाकी चिंतामें मजदूरोंको पहुंचानेवाली ट्रेनेंरद्दकर दी। सरकारद्वाग किसी भी मजदूरको घरजानेकी व्यवस्था सेवंचित करक उससे अर्थव्यवस्था के फायदेके लिए मजदूरी करवाना बंधु आमजदूरी से कम नहीं है यह मजदूरोंके संवैधानिक अधिकारोंका हननभी है किसी भी लोकतंत्र मे ऐसी सरकारोंका होना जनकल्याणकारी राज्य की परिकल्पना के विरुद्ध है।

CamScanner से स्कन किया

आजभी प्रवासी मजदूर को उनके घर वापस भेजने के लिए कोईस्पष्टनीतिना होनेके कारण और जिन राज्यों में अभीप्रवासी मजदूर है उन राज्यों में एवंस्वयंके गृहराज्योंमें और केंद्रसरकार मे बेहतर तालमेल के अभावमें पैदल अपने निवासस्थानोंकी ओरजाते मजदूर और उनके परिवार हर शहर और गांवके आसपास दिखाई देरहे है।

प्रवासी मजदूरोंपर लाकडॉउन में सरकार के रवैयेके कारण आगी परेशानी के कारण देश के मजदूर संगठनोंकाभी मूकदर्शक बन रहना सोचने पर मजबूर करता है कि इन संगठनोंका अस्तित्वही मजदूरोंसे होनेके बादभी यह संगठन मजदूरोंकी समस्याएं सरकारके समक्ष क्योंनहीं उठाते।

प्रवासी मजदूर जो कि अर्थव्यवस्था और उद्योगों की रीढ़ हैंकि यह स्थिति क्यों हुई? प्रवासी मजदूर जिसका उद्योगोंकी उन्नतिमें महत्वपूर्ण योगदान है।आर्थिक रूपसे इतना विपन्न क्यों है? क्यों प्रवासी मजदूरोंके पास इतनीभी व्यवस्था नहीं की बरसोंस उद्योगोंमें काम करनेके पश्चात वे इस लायकभी नहीं हुएकी बिना काम किए चार छह महीनेतक अपना जीवनयापन कर सके। क्या प्रवासी मजदूरोंके नियोक्ताकि इतनीभी जिम्मेदारी नहीं बनती की ऐसी प्राकृतिक आपदाकी स्थितिमें वे अपने यहां कार्यरत प्रवासी मजदूरोंको दो–तीन महीनेतक आवश्यक भोजन सामग्री एवं रहनेकी व्यवस्था कर सके।

यदि हमारे कामगार आर्थिक और सामाजिक रूपसे इतने असुरक्षित हैं, तो वर्तमानके श्रम कानूनोंमें बदलावकी आवश्यकता है और सरकार और नियोक्ता दोनोंको इस दिशामें सोचनेकीभी आवश्यकता है।भविष्यमें ऐसी प्राकृतिक आपदा और विपत्तियोंके समय प्रवासी मजदूरोंकेलिए कानूनमें संशोधनको ऐसे प्रावधान किया जाना चाहिएकि नियोक्ता प्रवासी मजदूरोंके रहनेकी व्यवस्था करें जिन नियोक्ताओंके पास प्रवासी मजदूरोंके रहनेकी व्यवस्थानाहो उन्हें उद्योग लगानेकी अनुमतिया ना दीजाए या सरकार औद्योगिक क्षेत्रोंमें एवं निर्माणकार्यमें कार्य कर रहे मजदूरोंके लिए स्वयं आवास नीति बनाए एवं आवास का निर्माण करें एवं ऐसी विपरीत परिस्थितियोंमें तुरंत कमसेकम २ माहका वेतन नियोक्ता की ओरसे त्वरित भुगतान दिए जानेके प्रावधान संबंधी कानून बनानेकी आवश्यकता है।उक्त व्यवस्था कर्मचारी भविष्यनिधि की राशि, ग्रेजुएटीके अलावा होना चाहिए , इस व्यवस्थाकेलिए सी एस आर फंडके जैसे अन्य फंड बनाए जानेकी आवश्यकता है।हमारे देशमें न्यूनतम मजदूरी बहुत कम हो ना श्रमिकों की दुर्दशाका बहुत बडा कारण है जबतक मजदूरोंको पर्याप्त मजदूरी देने संबंधी प्रावधान नहीं होते तबतक मजदूर ऐसेही विपत्तियोंमें दरदरकी ठोकर खानेको मजबूर होगा और दो समयके भोजन, आवास इलाज और धनके अभावमें मारता रहेगा या अपने ग्रहस्थानोंकी ओर लौटनेकलिए मजबूर होता रहेगा।

प्रवासी मजदूरोंकी आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा इसलिएभी आवश्यक है क्योंकि ऐसी स्थितिमें आर्थिक एवं सामाजिक रूपसे असुरक्षाके डरसे पलायन किया मजदूर वापस लौटनेसे डर गया तो उद्योग चलाना मुश्किल होजाएगा और अर्थव्यवस्थाकी कमरभी टूट जाएगी।अधिकतर उद्योगों एवं निर्माणकार्योंमें ग्रामीण पृष्ठभूमिसे आए मजदूर कार्य करते है, कोरोनाके कारण आई विपत्तिमैं इन प्रवासी मजदूरोंको आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान नही करके औद्योगिक संस्थानों और सरकारने इन मजदूरों विश्वास खोदिया है जोकि भविष्यमें उद्योगों एवं निर्माण एजेंसियोंको नुकसान पहुंचाएगा, क्योंकि अपने निवासस्थानपर वापस गया मजदूर वापस आनेके पहले कई बार वापस पहुंचते समय आई कठिनाइयां भूख, प्यास, हजारों किलोमीटर पैदल चलनेकी मजबूरी, के बारेमें जरूर सोचेगा और जब वह यह सोचेगा तो उसे अपने ग्रामीण परिवेशकी जिंदगी ज्यादा आसान लगेगी जहां वह कम खर्चेमेंही गुजारा कर सकता है , ओर ऐसी विपत्तिके समय सिरपर छत, दो समयका भोजन, अपनेपनके एहसाससे वंचित नही रहेगा और उसे यह एहसास वापस आनेसे रोकेगा।

संदर्भ ग्रंथ

प्रतिदिन अखबार
दैनिक भास्कर
इंटरनेट

CamScanner से स्कैन किया

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

June -2020
ISSUE No-CCXXXVIII (238)

Impact of COVID-19 on World: Problems, Challenges and Opportunities

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director

Guest Editor
Dr. Gopal S. Vairale
Principal

Editor
Dr. Omprakash B. Munde
HOD, Geography

Executive Editor
Dr. Sangita Bhangdiya (Malani)
HOD, Political Science

Executive Editor
Dr. Sachin J. Holey
HOD, Sociology

Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera,Dist. Amravati.



This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

CamScanner से स्कैन किया

21	करोना ;कोव्हिड–१९ चा प्रादुर्भाव आणि प्रतिबंधात्मक उपाययोजना डॉ.खुशाल ज. अळसपुरे	96
22	कोरोना आणि कामगारांच्या समस्या भूषण भीमराव टेंभुर्णे	99
23	"अमरावती जिल्हयातील हवामानाचा भूमी उपयोजनावर होणारा परिणाम" प्रा. डॉ. जयश्री वाय. पडोळे	102
24	हवामानातील परिवर्तन आणि पर्यावरण प्रा. डॉ. तिलकचंद जि. धोटे	107
25	अमरावती जिल्ह्यातील कृषीवर हवामान बदलाचा परिणाम डॉ. मनोज बी. गाथे	111
26	कोव्हीड १९ चा पर्यावरणावर होणारा परिणाम डॉ. कुंदन अ. अलोणे	116
27	कोरोनाचा कुटुंबावरील परिणाम प्रा. डॉ. लता वाघेला	119
28	'स्थालांतरीत श्रमीकांच्या समस्या एक भौगोलीक अध्ययन' प्रा.शशिकांत पी. दुपारे	123
29	"कोरोनाकाळातील स्त्रियांची स्थिती"(विशेष संदर्भ–कौटूंबिक कामगार स्त्रीया) डॉ. दया पांडे	126
30	कोरोना विषाणुचा मानवीजीवनावर विध्वंसक परिणाम डॉ. प्रविण म. चंद्रगिरीवार	129
31	कोरोना संसर्गामुळे ग्रामीण परिसरात निर्माण झालेल्या समस्या विषेश संदर्भ कोल्हापूर जिल्हा सहा. प्रा. ससाणे जगदीश केशवराव	134
32	कोरोना संकट – एक संधी प्रा.डॉ. केशव सिताराम गोरे	141
33	कोरोंनाचा संस्कृतिक घटकांवर होणारा परिणाम प्रा.डॉ. विनोद विठ्ठलराव बायस्कर	146
34	महाराष्ट्रातील लोकसंख्येच्या स्थलांतरावर प्रभावित करणाऱ्या घटकांचे विश्लेषण प्रा. राजेश पां. मेश्राम	156
35	पर्यावरण संवर्धनात मानवाची भूमिका व योगदान– एक सामाजिक अध्ययन प्रा. डॉ. सुधा एम. खडके (कडू)	160
36	कोविड १९ व शिक्षण प्रा.डॉ.मुश्ताक आर शहा	167
37	कोरोना महामारी का समाज पर प्रभाव डॉ. अनामिका प्रजापति	171
38	नोवेल कोरोना वायरस का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डॉ. बालकृष्ण प्रजापति	174
39	कोरोना का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव डॉ सचिन होले	179

CamScanner से स्कन किया

'B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO.238
ISSN : 2278-9308
June,2020

कोरोना का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव

डॉ सचिन होले
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख नारायणरावराणा महाविद्यालय बड़नेरा

अर्थव्यवस्था की स्थिति कोरोना महामारी होने के पहले से ही बिगड़ी हुई थी। जितनी भी रेटिंगएजेंसिया हैं उन्होंने भारत के विकास दर के वृद्धि अनुमान में लगातार गिरावट दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया था कि भारत में महंगाई और बेरोजगारी दर उच्च स्तर पर है।ऐसे में कोरोना महामारी के चलते जिस तरीके से भारत तथा विश्व के अधिकांश देशों में पूर्ण लॉकडाउन नीति अपनाई गई है, उससे ना केवल भारत को बल्कि विश्व के हर देश को इसकी आर्थिक एवं सामाजिक कीमत चुकानी पड़ेगी।पहला सवाल यह उठता है कि क्या इस महामारी से निपटने का कोई और दूसरा रास्ता नहीं था? बहुत हद तक इसका उत्तर ना है, क्योंकि इस महामारी से निपटने के लिए अभी तक कोई वैक्सीनइजात नहीं हो पाई है।बचाव, जागरूकता एवं एकांतवास ही इस समस्या से निपटने में कारगर है, जिसे तमाम देश ने अपना रखा है□अगर इस प्रश्न के उत्तर पर गहनता से विचार किया जाए तो हम पाएंगे कि इस महामारी के चलते पहला नकारात्मक प्रभाव तो आर्थिक ही होगा। जिसका अगर विश्लेषण किया जाए तो शायद उस पर पूरी की पूरी एक किताब लिखी जा सकती है□मगर मेरा उद्देश्य यहां इस महामारी से उत्पन्न उन सामाजिक प्रभावों पर विचार करना है, जो तत्काल अथवा महामारी के उपरांत पूर्ण या आंशिक रूप से देखने को मिल सकते है। अतः मेरा यह लेख विभिन्न सामाजिक आयामों पर ही केन्द्रित रहेगा।महामारी का प्रथम प्रभाव

इस क्रम में इस महामारी का पहला और सबसे गंभीर प्रभाव तो उन परिवारों पर ही पड़ेगा जिनके सदस्य इस बीमारी के चलते मृत हो गए हैं।वे अगर परिवार के मुखिया थे तो ऐसे में परिवार संभालने की ज़िम्मेदारी, बच्चों का वर्तमान एवं भविष्य सब अनिश्चित हो जाएगा। चूंकि इस महामारी से मरने वालों की संख्या हज़ारो में है। अतः इसका व्यापक असर उन देश के समाज पर भी देखने को मिलेगा।

महामारी का द्वितीय प्रभाव

महामारी का दूसरा सामाजिक प्रभाव 'नस्लभेदी प्रभाव' का उत्पन्न होना है। जैसा कि हमें मालूम है इस बीमारी की शुरुआत चीन से हुई है इसलिए चीनी नागरिकों को आगामी कुछ वर्षो तक इस महामारी के चलते जाना-पहचाना जा सकता है।अन्य देशों के लोगों द्वारा उन पर ना केवल नस्लभेदी टिप्पणी की जा सकती है, बल्कि उन्हें उपेक्षा का शिकार भी होना पड़ सकता है। भारत में तो नॉर्थईस्ट के भारतीयों पर पहले से ही चीनी, नेपाली, चिंकी-पिंकी, मोमोज़ जैसी नस्लभेदी टिप्पणियां होती रही हैं। अब इस क्रम में कोरोना का नाम भी जुड़ना तय है, जिसे एक सामाजिक समस्या के रूप में देखा जाना चाहिए।

CamScanner से स्कन किया

महामारी का तृतीय गंभीर सामाजिक प्रभाव

तीसरा सबसे गंभीर सामाजिक प्रभाव उन समुदायों पर देखने को मिलेगा जो आर्थिक तौर पर बेहद पिछड़े हुए हैं। मसलन, घुमंतू समुदाय के लोग, दिहाड़ी मजदूर, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले कामगार इत्यादि।

कोरोनासेसकारात्मक बदलाव

. धर्म और नस्ल का भेद – राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि दुनिया के ग्लोबलविलेज बनने के साथ ही राष्ट्रवाद की भावना ने जोर पकड़ा है. लगभग हर देश के लोग, किसी न किसी समुदाय से खतरा महसूस करते हैं या अपने आप को उनसे श्रेष्ठ समझते हैं. बीते कुछ समय के भारत को देखें तो यहां सांप्रदायिक समीकरणों की वजह से लगातार सामाजिक समीकरणों को बिगड़ते देखा जाता रहा है. अब जब दुनिया भर में कोरोनावायरस का प्रकोप फैल गया है तो इन सब बातों के बारे में सोचने की फुर्सत ज्यादातर लोगों को नहीं है. अभी समाज, देश और दुनिया बंटे हुये तो हैं लेकिन यह बिलकुल अलग तरह और वजह से हुआ है. इस समय अपने परिवार को छोड़कर लोग पड़ोसी से भी बात नहीं कर रहे हैं तो यह मजबूरी की वजह से है. यही बात देशों के एक-दूसरे से कटने के बारे में भी कही जा सकती है। श्रम की पहचान – सवा अरब की जनसंख्या वाले भारत में मानव संसाधन की कोई कमी नहीं है. शायद यही वजह है कि यहां पर न तो इंसान की मेहनत की उचित कीमत लगाई जाती है और न ही उसे पर्याप्त महत्व दिया जाता है. कथित छोटे काम करने वालों को अक्सर ही यहां हेय दृष्टि से देखा जाता है. फिर चाहे वह घर में काम करने वाली बाई हो या कचरा उठाने वाला कर्मचारी या घर तक सामान पहुंचाने वाला डिलीवरीबॉय. लेकिन कोरोनावायरस के हमले के बाद ज्यादातर लोगों को (सबको नहीं) इनका महत्व समझ में आने लगा है. हममें कई लोगों ने पिछले दिनों इस बारे में जरूर सोचा होगा कि वह व्यक्ति होगा जो सुबह-शाम हमारे नल की सप्लाई शुरू करता करता है अगर वह ऐसा करना बंद कर दें तो क्या होगा? या फिर कूड़े वाला अगले 21 दिन कूड़ा ना उठाये तो? कहीं लॉकडाउन खत्म होने से पहले वॉटरप्यूरीफायर खराब हो गया तो? या फिर डिलीवरी करने वाले ऐसा करना बंद कर दें तो? कोरोना संकट के इस वक्त में बड़े फैसले और 'महत्वपूर्ण' काम करने वाले ज्यादातर लोग घरों में बंद हैं और बहुत मूलभूत काम पहले की तरह जमीन पर ही हो रहे हैं. यह अहसास इस वक्त ज्यादातर लोगों को है लेकिन यह कितना स्थायी है यह कुछ समय बाद पता चल पाएगा.

प्रदूषण का कम होना – दिल्ली-मुंबई जैसे मेट्रो शहरों समेत लगभग पूरे देश में इस वक्त लॉकडाउनहै. इसके कारण फैक्ट्रियां, ऑफिस यहां तक कि रेल-बस सुविधाएं भी बंद हैं. इन सबके बंद होने से अर्थव्यवस्था को तो खासा नुकसान हो रहा है लेकिन पर्यावरण की हालत थोड़ी सुधरती लग रही है. अगर दिल्ली-एनसीआर की बात करें तो यहां फर्क साफ महसूस किया जा सकता है और आंकड़े भी कुछ ऐसी ही बात करते हैं. 26 मार्च, 2020 को नोएडा

CamScanner से स्कन किया

का एयरक्वालिटी इंडेक्स 77 का आंकड़ा दिखा रहा था. जबकि इसी तारीख को 2019 में यह आंकड़ा 156 यानी इसके दुगने से भी ज्यादा था. फिलहाल हर बढ़ते दिन के साथ एक्यूआई कम हो रहा है. साफ है कि लॉकडाउन के चलते हवा की गुणवत्ता बढ़ गई है. यह देखना थोड़ा खुशी देता है कि दिल्ली-एनसीआर जैसे इलाकों में भी आजकल चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई देने लगी है.।परिवार के साथ समय –हाल ही में फिल्म निर्देशक अनुराग कश्यप ने अपने इंटरव्यू में बताया कि कोई काम न होने के चलते एक दिन उन्होंने अपनी बेटी के साथ बैठकर करीब छह घंटे तक गप्पें मारीं. उनके मुताबिक बीते 15 सालों में ऐसा पहली बार हुआ था. हालांकि कश्यप एक व्यस्त फिल्मकार हैं और उनकी बेटी भी भारत में नहीं रहती है, इसलिए उनके साथ ऐसा होना स्वाभाविक है. लेकिन जीवन की भागदौड़ में कई बार बेहद आम लोग भी अपने परिवार को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं. यह लॉकडाउन परिवार के साथ वक्त बिताने का भी मौका बन गया है. इसके अलावा, इस वक्त को पुराने दोस्तों और छूट चुके रिश्तेदारों को याद करने और उनसे फोन या मैसेजिंग के जरिये संपर्क करने के लिए भी इस्तेमाल किया जा रहा है. आर्थिक समीकरण –यह तय है कि कोरोनावायरस के चलते दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति डांवाडोल होने वाली है. हो सकता है कि इसके असर को पूरी तरह खत्म होने में अगले कई सालों का वक्त लगे. लेकिन इसकी वजह से अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमत आधी से भी कम हो गई है. तेल के दाम कम हैं इसलिए भारत सरकार इसकी बाज़ार कीमत बढ़ाए बगैर, इस पर ज्यादा एक्साइजड्यूटी वसूल कर रही है. जानकारों का मानना है कि तेल के दाम अब एक लंबे समय तक नहीं बढ़ने वाले. कोरोना की मुसीबत से छुटकारा पाने के बाद भी. ऐसे में इससे न केवल सरकार को ज्यादा राजस्व मिल सकता है बल्कि देश का चालू खाते का घाटा भी थोड़ा कम हो सकता है और महंगाई भी नियंत्रण में रखी जा सकती है. यह और बात है कि कोरोना के चलते अर्थव्यवस्था को जो नुकसान होगा उसके सामने ये चीजें उतनी मायने नहीं रखती हैं. लेकिन यह कोरोना संकट के भुस में फायदे की एक छोटी सुई तो है ही□

संदर्भ÷

१ सत्याग्रह

२ दैनिक अमरउजाला

३ प्रतिदिन अखबार

४इनटरनेट

CamScanner से स्कन किया

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Volume - X, Issue - II
April - June - 2021
Marathi Part - II / Hindi

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CamScanner से स्कैन किया

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत जूठन: अस्पृश्यता का जीवन्त दस्तावेज **डॉ. अशोक कँवर शेखावत**	१-५
२	कोरोना एवम अर्थव्यवस्था **डॉ. सचिन होले**	६-९
३	स्थलांतरित जनजातियों के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति पर कोविड-१९ प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **डॉ. मनोहर भी. येरकलवार**	१०-१५
४	Covid- 19 का समाज पर सामाजिक आर्थिक प्रभाव **Dr. Shilpa Shah**	१६-२२

CamScanner से स्कन किया

२. कोरोना एवम अर्थव्यवस्था

डॉ. सचिन होले
सहयोगी प्राध्यापक एवम समाजशास्त्र विभागप्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा.

कोरोना वायरस ने न केवल भारत की बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था की हालत खराब कर रखी है. विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना वायरस के कारण भारत की इकोनॉमी पर बड़ा असर पड़ने वाला है. कोरोना के भारत की आर्थिक वृद्धि दर में भारी गिरावट आएगी.

वर्ल्ड बैंक के अनुमान के मुताबिक वितीय वर्ष 2019-20 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर घटकर मात्र 5% रह जाएगी, तो वहीं 2020-21 में तुलनात्मक आधार पर अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में भारी गिरावट आएगी जो घटकर मात्र 2.8% रह जाएगी. रिपोर्ट में कहा गया है कि यह महामारी ऐसे वक्त में आई है जबकि वित्तीय क्षेत्र पर दबाव के कारण पहले से ही भारतीय इकोनॉमी सुस्ती की मार झेल रही थी. कोरोना वायरस के कारण इसपर और दवाब बढ़ा है.

दरअसल कोरोना वायरस के कारण देशभर में लॉकडाउन है. सभी फैक्ट्री, ऑफिस, मॉल्स, व्यवसाय आदि सब बंद है. घरेलू आपूर्ति और मांग प्रभावित होने के चलते आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित हुई है. वहीं जोखिम बढ़ने से घरेलू निवेश में सुधार में भी देरी होने की संभावना दिख रही है. ऐसे में अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर में पहुंच सकती है. रिपोर्ट में सरकार को वित्तीय और मौद्रिक नीति के समर्थन की जरूरत पर जोर देने की सलाह दी गई है. चुनौती से निपटने के लिए भारत को इस महामारी को फैलने से रोकने के लिए जल्द से जल्द ज्यादा प्रभावी कदम उठाना होगा. साथ ही स्थानीय स्तर पर अस्थायी रोज़गार सृजन कार्यक्रमों पर भी ध्यान देना होगा. विश्व बैंक ने आगाह किया है कि इस महामारी की वजह से भारत ही नहीं बल्कि समूचा दक्षिण एशिया गरीबी उन्मूलन से मिले फायदे को गँवा सकता है. इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइज़ेशन ने कहा था कि कोरोना वायरस सिर्फ़ एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट नहीं रहा, बल्कि ये एक बड़ा लेबर मार्केट और आर्थिक संकट भी बन गया है जो लोगों को बड़े पैमाने पर प्रभावित करेगा.

दुनिया भर में बचत और राजस्व के रूप में जमा खरबो डॉलर स्वाहा हो चुका है. वैश्विक जीडीपी में रोज कमी दर्ज की जा रही है. लाखो लोग अपना रोज़गार खो चुके है अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने बताया है है कि 90 देश उससे मदद मांग रहे है. आईएलओ के अनुसार कोरोना वायरस की वजह से दुनियाभर में ढाई करोड़ नौकरियां ख़तरे में हैं. COVID-19 के कारण चीन से होने वाले आयात के प्रभावित होने से स्थानीय और बाहरी आपूर्ति श्रृंखला के संदर्भ में चिंताएँ बढ़ी हैं.सरकार द्वारा COVID-19 के प्रसार को रोकने के लिये लॉकडाउन और सोशल डिसटेंसिंग (Social Distancing) जैसे प्रयासों से औद्योगिक उत्पादन

CamScanner से स्कन किया

प्रभावित हुआ है. लॉकडाउन के कारण बेरोजगारी बढ़ी है, जिससे सार्वजनिक खर्च में भारी कटौती हुई है. लॉकडाउन के कारण कच्चे माल की उपलब्धता, उत्पादन और तैयार उत्पादों के वितरण की श्रृंखला प्रभावित हुई है, जिसे पुनः शुरू करने में कुछ समय लग सकता है. उदाहरण के लिये उत्पादन स्थगित होने के कारण मज़दूरों का पलायन बढ़ा है, ऐसे में कंपनियों के लिये पुनः कुशल मज़दूरों की नियुक्ति कर कर पूरी क्षमता के साथ उत्पादन शुरू करना एक बड़ी चुनौती होगी. जिसका प्रभाव अर्थव्यवस्था की धीमी प्रगति के रूप में देखा जा सकता है. खनन और उत्पादन जैसे अन्य प्राथमिक या द्वितीयक क्षेत्रों में गिरावट का प्रभाव सेवा क्षेत्र कंपनियों पर भी पड़ा है. जो सेक्टर इस बुरे दौर से सबसे ज़्यादा प्रभावित होंगे वहीं पर नौकरियों को भी सबसे ज़्यादा ख़तरा होगा. एविएशन सेक्टर में 50 प्रतिशत वेतन कम करने की ख़बर तो पहले ही आ चुकी है. रेस्टोरेंट्स बंद हैं, लोग घूमने नहीं निकल रहे, नया सामान नहीं ख़रीद रहे लेकिन, कंपनियों को किराया, वेतन और अन्य ख़र्चों का भुगतान तो करना ही है. ये नुकसान झेल रहीं कंपनियां ज़्यादा समय तक भार सहन नहीं कर पाएंगी और इसका सीधा असर नौकरियों पर पड़ेगा. हालांकि, सरकार ने कंपनियों से नौकरी से ना निकालने की अपील है लेकिन इसका बहुत ज़्यादा असर नहीं होगा. "विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री हैंस टिमर ने कहा कि भारत का परिदृश्य अच्छा नहीं है. है. टिमर ने कहा कि यदि भारत में लॉकडाउन अधिक समय तक जारी रहता है तो यहां आर्थिक परिणाम विश्व बैंक के अनुमान से अधिक बुरे हो सकते हैं. उन्होंने कहा कि इस चुनौती से निपटने के लिए भारत को सबसे पहले इस महामारी को और फैलने से रोकना होगा और साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सभी को भोजन मिल सके. लॉकडाउन का सबसे ज़्यादा असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ेगा और हमारी अर्थव्यवस्था का 50 प्रतिशत जीडीपी अनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है. ये क्षेत्र लॉकडाउन के दौरान काम नहीं कर सकता है. वो कच्चा माल नहीं ख़रीद सकते, बनाया हुआ माल बाज़ार में नहीं बेच सकते तो उनकी कमाई बंद ही हो जाएगी.

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्था आईएमएफ ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है. इस टास्क फोर्स का उद्देश्य है कि विगड़ती हुयी अर्थ व्यवस्था को कैसे पटरी पर लाया जाए. इस टास्क फोर्स में आरबीआई के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन भी हैं. रघुनाथ राजन पहले भी आईएमएफ के साथ रह चुके हैं और वे एक काविल अर्थ विशेषज्ञ है.भारत को भी चाहिए कि आर्थिकी को संभालने के लिए भारत मे भी प्रतिभाशाली अर्थशास्त्रियों की एक कमेटी का गठन किया जाए, जिसमें प्रोफेशनल हों और वे भारतीय चुनौतियों के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए चरणबद्ध तरीके से नीतिगत समाधान सरकार के सामने रखें. पिछले साल के ही आर्थिकी सूचकांक को देखें तो ऑटोमोबाइल सेक्टर, रियल स्टेट, लघु उद्योग समेत तमाम असंगठित क्षेत्र में सुस्ती छाई हुई थी.

बैंक एनपीए की समस्या से अब तक निपट रहे हैं. हालांकि, सरकार निवेश के ज़रिए, नियमों में राहत और आर्थिक मदद देकर अर्थव्यवस्था को रफ़्तार देने की कोशिश कर रही थी पर बहुत अधिक

CamScanner से स्कन किया

सफलता सरकार को नहीं मिली है. इस बीच कोरोना वायरस के कारण पैदा हुए हालात ने जैसे अर्थव्यवस्था का चक्का जाम कर दिया है. न तो कहीं उत्पादन है और न मांग, लोग घरों में हैं और कल कारख़ानों तथा दुकानों पर ताले लगे हुए हैं. यह स्थिति अभी 3 मई तक तो रहेगी ही. कोरोना से लड़ाई अब दोहरी है. ज्यादातर देश सेहत और अर्थव्यवस्था, दोनों का विनाश सीमित करने में जुटे हैं. भारत में संक्रमण रोकने की कवायद जोर पकड़ रही है लेकिन आर्थिक राहत में भारत पिछड़ गया है.

अमेरिका को मंदी से बचाने के लिए डोनाल्ड ट्रंप, अपनी संसद दो ट्रिलियन डॉलर के पैकेज पर मना रहे हैं. अमेरीकियों को एक मुश्त 3,000 डॉलर (करीब 2.25 लाख रुपए) दिए जाने का प्रस्ताव है. केंद्रीय बैंक (फेडरल रिजर्व) ब्याज दरें शून्य करते हुए बाजार में सस्ती पूंजी (4 ट्रिलियन डॉलर तक छोड़ने की तैयारी) का पाइप खोल दिया है.

ब्रिटेन की सरकार टैक्स रियायतों, कारोबारों को सस्ता कर्ज़, तरह-तरह के अनुदान सहित 400 अरब डॉलर का पैकेज लाई है जो देश के जीडीपी के 15 फीसद बराबर हैं. बैंक ऑफ इंग्लैंड ब्याज दरें घटाकर बाजार में पूंजी झोंक रहा है. कोरोना से बुरी तरह तबाह इटली की सरकार ने 28 अरब डॉलर का पैकेज घोषित किया है, जिसमें विमान सेवा एलिटालिया का राष्ट्रीयकरण शामिल है. इमैनुअल मैकरां के फ्रांस का कोरोना राहत पैकेज करीब 50 अरब डॉलर(जीडीपी का 2 फीसद) का है. स्पेन का 220 अरब डॉलर, स्वीडन 30 अरब डॉलर, ऑस्ट्रेलिया 66 अरब डॉलर और न्यूजीलैंड का पैकेज 12 अरब डॉलर (जीडीपी का 4 फीसद) का है. सिंगापुर अपनी 56 लाख की आबादी के लिए 60 अरब डॉलर का पैकेज लाया है. रिकार्ड घाटे, राजस्व में कमी के कारण भारत का राहत पैकेज इसके जीडीपी की तुलना में केवल 0.8 फीसदीहै जबकि अन्य देश अपने जीडीपी का 4 से 11% के बराबर पैकेज लाए हैं. भारत सरकार का करीब1.7 लाख करोड़ रुपये का पैकेज कोरोना प्रभावितों को सांकेतिक मदद पर केंद्रित है. जिसमें सस्ता अनाज प्रमुख है. जिसके लिए पर्याप्त भंडार है. रबी की की खरीद से नया अनाज आ जाएगा, किसान सहायता निधि और अन्य नकद भुगतान स्कीमों की किश्तें जल्दी जारी होंगी, इसके लिए बजट में आवंटन हो चुका है. उज्जवला के तहत मुफ्त एलपीजी सिलेंडर के लिए तेल कंपनियों को सब्सिडी भुगतान रोका जाएगा, भारत में भविष्य निधि पीएफ का संग्रह करीब 11 लाख करोड़ रुपये का है. इससे एडवांस लेने की छूट और छोटी कंपनियों में नियोक्ताओं के अंशदान को तीन माह के टालने के लिए इस निधि का भरपूर इस्तेमाल होगा. सरकार के मुकाबले रिजर्व बैंक ने ज्यादा हिम्मत दिखाई है. सभी बैंकों से सभी कर्जों (हाउसिंग, कार, क्रेडिट कार्ड सहित) पर तीन माह तक किश्तों का भुगतान टालने को कहा है. व्याज दरों में अभूतपूर्व कमी की है और वित्तीय तंत्र में करीब 3.74 लाख करोड़ कीपूंजी बढ़ाई है ताकि कर्ज़ की कमी न रहे. अन्य देशों की तरह भारत सरकार कोरोना के मारे मजदूरों, छोटे कारोबारियों नौकरियां गंवाने वालों को सरकार कोई नई सीधी मदद नहीं दे सकी है. भविष्यनिधि से मिल रही रियायतों के लाभ केवल 15-16 फीसदी प्रतिष्ठानों को मिलेंगे.

CamScanner से स्कन किया

"हमारे देश में छोटे-छोटे कारखाने और लघु उद्योगों की बहुत बड़ी संख्या है. उन्हें नगदी की समस्या हो जाएगी क्योंकि उनकी कमाई नहींहोगी. ये लोग बैंक के पास भी नहीं जा पाते हैं इसलिए ऊंचे ब्याज पर कर्ज ले लेते हैं और फिर क़र्ज़जाल में फंस जाते हैं."

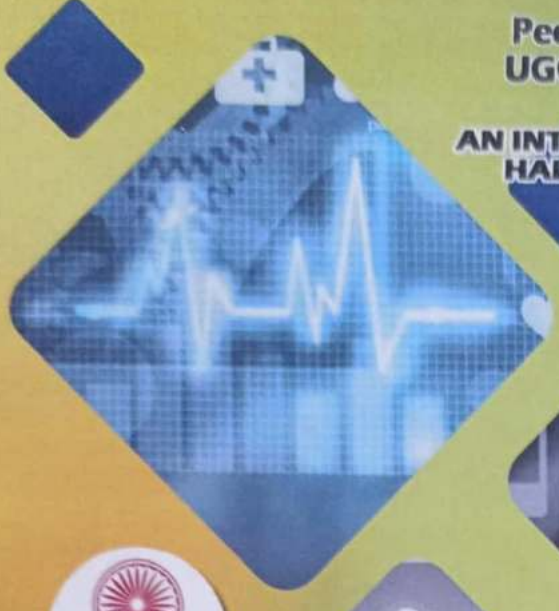
अनौपचारिक क्षेत्रों में फेरी वाले, विक्रेता, कलाकार, लघु उद्योग और सीमापार व्यापार शामिल हैं. इस वर्ग से सरकार के पास टैक्स नहीं आता, लॉकडाउन और कोरोना वायरस के इस पूरे दौर में सबसे ज़्यादा असर एविएशन, पर्यटन, होटल सेक्टर पर पड़ने वाला है. यह स्थिति सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण है अचानक ही उसके सामने एक विशाल समस्या आ खड़ी हुई है. 2008 के दौर में कुछ कंपनियों को आर्थिक मदद देकर संभाला गया. लेकिन,आज अगर सरकार ऋण दे तो उसे सभी को देना पड़ेगा. हर सेक्टर में उत्पादन और ख़रीदारी प्रभावित हुई है,कोरोना वायरस का असर पूरे दुनिया पर पड़ा है. चीन और अमरीका जैसे बड़े देश और मज़बूत अर्थव्यवस्थाएं इसके सामने लाचार हो गए हैं. इससे भारत में विदेशी निवेश के ज़रिए अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने की कोशिशों को भी धक्का पहुंचेगा. विदेशी कंपनियों के पास भी पैसा नहीं होगा तो वो निवेश में रूचि नहीं दिखाएंगी, हालांकि, जानकारों का कहना है कि अर्थव्यवस्था पर इन स्थितियों का कितना गहरा असर पड़ेगा ये दो बातों पर निर्भर करेगा. एक तो ये कि आने वाले वक़्त में कोरोना वायरस की समस्या भारत में कितनी गंभीर होती है और दूसरा कि कब तक इस पर काबू पाया जाता है.

संदर्भ सूची

1. दैनिक भास्कर
2. दैनिक पतिदिन
3. इंडिया टुडे
4. इंटरनेट

CamScanner से स्कैन किया

Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal No. 47100
ISSN - 2279 - 0489
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL







GENIUS

Volume - X, Issue - I
August - January - 2021-22
English Part - II / Hindi

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.631
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CamScanner से स्कैन किया

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	कोरोना वायरस का शिक्षा जगत् पर प्रभाव **डॉ. अनामिका प्रजापति**	१-४
२	कोरोना काल में आर्थिक संकट से जूझती मध्य-प्रदेश की लोक हस्तशिल्प कलायें **डॉ. अर्चना रानी**	५-१०
३	कोरोना संक्रमण का भारतीय समाज पर प्रभाव **डॉ. बी. के. प्रजापति**	११-१५
४	पीढ़ी अन्तराल : एक विमर्श **प्रो. हेमलता पारस**	१६-१९
५	लोकतंत्रात्मक भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी का वैचारिक एवं सैद्धान्तिक दृष्टिकोण **रविकरण** **डॉ. राजीव रत्न द्विवेदी**	२०-२६
६	कोविड-१९ महामारी का उच्च शिक्षा पर प्रभाव **Dr. Geeta Bhut**	२७-३२
७	कोरोना संकट के कारण पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन **डॉ. सचिन होले**	३३-३४
८	कोविड काल और शिक्षा प्रक्रिया में परिवर्तन **डॉ. पल्लवी चोपड़े**	३५-३६
९	साइबर अपराध : एक विमर्ष **डॉ. अंजली मोहन कोड़ोपी**	३७-४१

CamScanner से स्कन किया

७. कोरोना संकट के कारण पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन

डॉ. सचिन होले
सह्योगी प्राध्यापक एवं समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा.

कोरोना संकट के बीच हमारे समाज ने लंबा लॉकडाउन देखा है। महामारी के इस चुनौती के बीच हम सब घरों में रहने को मजबूर हुए हैं, लेकिन इस मजबूरी ने जहां जीवन जीने के तरीके बदले हैं वहीं पुराने संबंधों के प्रति एक ऊर्जा को दोबारा पैदा किया है।याद कीजिए कोरोना से पहले की जिंदगी और बाद की जिंदगी, कितना अंतर आया है इसमें। पहले भागती-दौड़ती जिंदगी में किसी के पास हालचाल लेने तक की फुर्सत नहीं थी वहीं लॉकडाउन में घरों में रहने के कारण हमारे आपसी संबंधों में एक राग और प्रेम भी पैदा हुआ है। रिश्तों की कद्र हुई है और हम अपनों के प्रति संवेदनशील भी हुए हैं। कई पुरानी बातों को भुलाकर हमने आपसदारी को बढ़ाया है और स्नेह व अपनत्व की डोर मजबूत हुई है। दरअसल, कोरोना के कारण मौत का अंतहीन मंजर और उससे बचने के लिए सरकार द्वारा लगाए गए लॉकडाउन की वजह हमारा परिवेश काफी तेजी से बदला है। हम सभी घरों में बंद सोचने को मजबूर हो गए हैं कि आखिर जीवन के प्रति हमारा स्वस्थ नजरिया कैसा हो। भारतीय संस्कृति मूल रूप से, योगमयी रही है और वैसी ही संस्कृति फिर से देखने को मिल रही है। इस पूर्ण-बंदी के दौरान लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर जो असर पड़ा है, उससे बचने के लिए हम योगा, प्राणायाम, अच्छे खान-पान तथा संयमित जीवन जीने की तरफ मुड़ रहे हैं। मौत का खौफ ही सही, पर समाज में आए इस नए बदलाव को शुभ संकेत के रूप में देखा जा सकता है। प्रकृति और स्वास्थ्य को नज़रअंदाज करके सुखी रह पाना कोरी कल्पना से कम नहीं।

इतने सालों से विलासितापूर्ण जीवन और आधुनिकता में डूबे जाने-अनजाने में प्रकृति से दूर हो गए थे। पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण, सुविधापूर्ण जीवनशैली जीते-जीते, भारतीय परपंरा, सच्ची खुशी, बच्चों का बचपन और सही मायने में खुशहाल जीवन से दूर होते चले गए। ऐसा नहीं है कि मनोरंजन करना सही नहीं है, लेकिन अपने मनोविनोद के लिए जिस तरह की गतिविधियां हम कर रहे हैं वह व्यक्तिगत व सामाजिक पतन का कारण बन रही हैं। लेकिन एक अच्छी बात है कि हम पुनः दुष्प्रवृत्तियों से अच्छी प्रवृत्तियों की तरफ कदम बढ़ाने लगे हैं। भले ही, मौत का डर ही सही लोगों का जीवन के प्रति नजरिया बदला है।अब तक हम प्रकृति का दोहन कर भौतिकतावादी जीवन को ईंधन दे रहे थे लेकिन उस पर थोड़ा अंकुश लग गया है। यह भविष्य के लिए शुभ संकेत की तरह है। अब हम भारत के योगमयी जीवन, सादा जीवन उच्च विचार वाली परंपरा, दया, प्रेम की तरफ बढ़ रहे हैं। प्राकृतिक संतुलन किस तरह बना रह सकता है उसे अच्छी तरह समझ गए हैं। इस लॉकडाउन ने हमें

CamScanner से स्कन किया

परिवार और सेहत की अहमियम सिखाई है। भले ही तालाबंदी से आर्थिक और सामाजिक नुकसान हुआ है पर भारतीय संस्कृति की पहचान- योगमयी जीवन की तरफ लौटना हमारे जीवन को आगे आने वाले दिनों में खुशहाल तथा संतुलित बना देगा। राम और कृष्ण की धरती पुनः गौरवान्वित होकर जगद्गुरु करने लगेगी। लॉकडाउन के चलते करीब दो महीने से ज्यादा वक्त से अपने घरों में बंद लोग फोन और इंटरनेट के जरिए ही अपने परिवार और दोस्तों से जुड़ पा रहे हैं. लेकिन खास बात यह है कि वे ऐसा कर खूब रहे हैं. वे लोग जो कभी व्यस्त होने या फिर घरवालों को वरीयता न देने के चलते कभी-कभार ही उनसे संपर्क करते थे, अब घर की खैर-खबर नियमित तौर पर लेते दिखने लगे हैं. इतना ही नहीं, कई लोग तो अपने भूले-बिसरे दोस्तों और रिश्तेदारों को भी खोज-खोजकर उनका हालचाल जानने के बहाने खुद को व्यस्त और खुश रखने की कोशिश करते दिख रहे हैं. यह देखना दिलचस्प है कि एक ऐसे समय में जब लोग आपस में मिल तक नहीं पा रहे हैं, एक-दूसरे को अपेक्षाकृत ज्यादा समय दे रहे हैं. इसके अलावा भी, कुछ ऐसे लोग जिनकी उपस्थिति हमारी रोजमर्रा का हिस्सा थी, जैसे हाउस-हेल्प, सफाईकर्मी, डिलीवरी बॉय या छोटे-मोटे काम करने वाले और कई लोग, उनका भी महत्व इस कठिन समय में समझ आने लगा है. इसलिए उनसे संपर्क रखने, उनकी मदद और सम्मान करने की ज़रूरत भी एक बड़ा तबका महसूस करता दिखने लगा है. कुल मिलाकर, आधुनिकता के चलते एकल परिवारों या अकेले होने को तरजीह देने वाले, हमारे आसपास के कई लोग अब यह बात स्वीकार करते दिखने लगे हैं कि अपने लोगों के करीब रहना, एक सोशल सर्कल का होना और जिंदगी आसान बनाने वाले कई लोगों की उपस्थिति हमारे लिए कितनी ज़रूरी है.

संदर्भ

1. अमर उजाला
2. प्रतिदिन
3. दिव्य भास्कर
4. वेब दुनिया

CamScanner से स्कैन किया

Impact Factor-8575 (SJIF)

ISSN-2278-9308

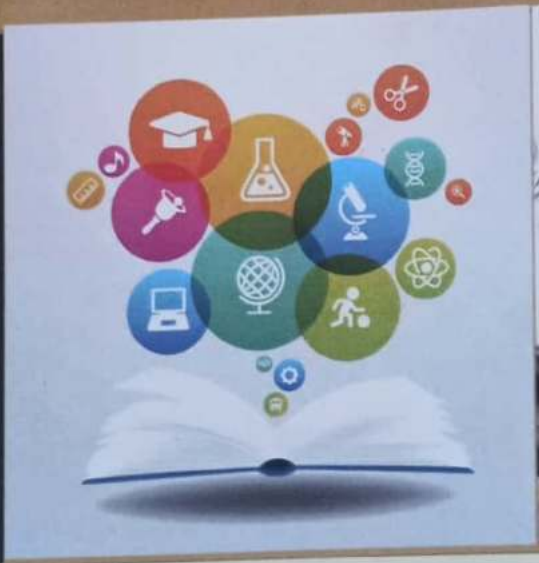
B.Aadhar

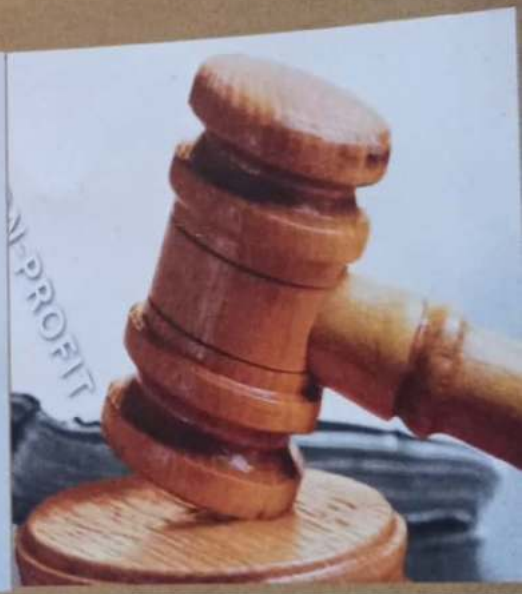
Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2022







Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

CamScanner से स्कैन किया

19	दुरस्थ शिक्षणाची आव्हाने डॉ. श्री. प्रमोद हरीभाऊ पौनिकर	88
20	कथेची जेव्हा पटकथा होते:माध्यमांतर प्रक्रिया प्रा. डॉ. सायली योगेश आचार्य	94
21	जात आधारीत जनगणना प्रा. विजय गावंडे	99
22	सतुंलीत आहार आणि आरोग्य डॉ.अल्का दहीकर	102
23	मूल्याधिष्ठित शिक्षणाचे प्रणेते- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कु. वैशाली वैकुंठराव वानखडे	106
24	वृध्दांना उद्भवणाऱ्या शारीरिक, सामाजिक व आर्थिक समस्या डॉ. कैलाश वि. बिसांद्रे	108
25	अचलपूर शहर - अल्लाउद्दीन खिलजी आणि प्रशासकिय घडामोडी डॉ.ओमप्रकाश सा. बोबडे	115
26	महामारीचा इतिहास प्रा. डॉ. सुरेश कातळे	119
27	विद्येची देवता सरस्वती की सावित्री : एक शोध प्रा. डॉ. जितेंद्र कदम	126
28	मराठी संत परंपरा आणि काव्य डॉ. गणेश चव्हाण	131
29	स्वातंत्र्य सेनानी योगीराज भणसाळीजींचे कार्य व कर्तृत्व मीना संतोषराव फुले	136
30	थोर शास्त्रज्ञ व विज्ञान लेखक डॉ. जयंत नारळीकर डॉ. मीनाक्षी देव (निमकर)	140
31	भारत चीन सीमा विवाद – एक राजनैतिक मंथन प्रा.राजेंद्र घोरपडे	144
32	अनुसूचित जाति बलई का लोकनाट्य : रासमंडल डॉ. सतीश पावड़े	148
33	भारतीय पुरूषप्रधान संस्कृती : एक चिंतन प्रा. अनिता पी. गणोरकर	152
34	समुद्रकिनाऱ्याची स्वच्छता प्रा. डॉ. लोकचंद बी. जाधव	155
35	वाढत्या लोकसंख्येचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम प्रा.संध्या आत्माराम इंगळे	159
36	Social media and library marketing and services: Is Facebook Tools used for Academic library problems and prospects. Dr.Prashant S.Thakare	162
37	Changing Statusof Marriage Institute in India Dr. Hiralal K. Bhosale	165
38	Teachers Training After Pandemic Need Of Time.... Dr. Sandip Bhimrao Dongare	169
39	महात्मा फुले यांचे सामाजिक योगदान डॉ सचिन ज होले ,	172
40	Physico-Chemical Characterization of Farmland soil Samples of nearby Villages of Vijayapur Taluka, District Vijayapur, Karnataka India Hullara Vinoda	176

CamScanner से स्कैन किया

महात्मा फुले यांचे सामाजिक योगदान

डॉ सचिन ज होले ,
सहयोगी प्राध्यापक एवं समाजशास्त्र विभाग प्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा

"विद्येविना मती गेली , मतीविना नीती गेली|
नीतीविना गती गेली, गतीविना शुद्र खचले|
इतके अनर्थ एका अविद्येने केले|'
विद्येशिवाय किती अनर्थ ओढवले हे लोकांना पटवून दिले.

प्रस्तावना

महात्मा फुले कृतिशील विचारवंत होते. एकदा विचारांची दिशा निश्चित झाल्यावर त्यांनी लगेच आपल्या कार्याला आरंभ केला. महात्मा ज्योतिबा फुले हे महान समाज सुधारक होते. भारतीय समाज जीवन मध्ये जनता मानसिक ,सामाजिक ,सांस्कृतिक तसेच आर्थिक व धार्मिक गुलामगिरीत जखडलेली आहे या गुलामगिरीतून त्यांची मुक्तता केल्याशिवाय समाजाची सुधारणा शक्य नाही हे त्यांनी जाणले होते या पार्श्वभूमीवर समाजाच्या उत्थानासाठी आणि त्यांच्या विकासाच्या उद्देशाने त्यांनी केलेले कार्याचे योगदान खूपच महत्त्वपूर्ण होता. महात्मा फुले सामाजिक समतेचे पुरस्कर्ते होते. त्यांना जातीवर आधारित भेदाभेद मान्य नव्हता तसेच अस्पृश्यांवर होणाऱ्या अन्यायाची जाणीव होती. महात्मा फुले स्त्री पुरुष समतेचे पुरस्कर्ते होते . त्यांनी स्त्री शिक्षणावरोबर स्त्रियांचे प्रश्न सोडविण्यात पुढाकार घेतला.

संशोधनाची उद्दिष्टे

१.महात्मा फुले यांचे सामाजिक योगदान जाणून घेणे.

२. महात्मा फुले यांच्या स्त्री शिक्षण विषयक कार्याचा आढावा घेणे.

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत शोधनिबंधामध्ये दुय्यम स्रोतांचा अवलंब करण्यात आला असून यामध्ये या विषयाशी संबंधित प्रकाशित ,अप्रकाशित संदर्भ ग्रंथ, नियतकालिके, पुस्तके, वृत्तपत्रे इंटरनेट इत्यादींचा वापर करण्यात आला आहे.

महात्मा फुले यांचे सामाजिक योगदान

महात्मा ज्योतिराव फुले समाजक्रांतिकारक होते. समाजाची सर्वकष सुधारणा हेच त्यांचे ध्येय होते. त्यांच्या जीवनात वाणीलेखणी आणि करणि यांचा लढाऊ संगम होता. समाजाविषयीची कळकळ होती. तसेच ते निर्भय होते. मनाला जे पटले आणि जे समाजाच्या उन्नतीसाठी आवश्यक आहे ते त्यांनी केलेले आढळले.

१. स्त्रियांना शिक्षण

महात्मा फुले यांनी स्त्री शिक्षणाचा पाया घातला. सावित्रीबाई फुले या पहिल्या शिक्षिका झाल्या. उच्चवर्णीयांनी त्यांना खूप त्रास दिला. तरी त्यांनी हाती घेतलेले कार्य उत्तम प्रकारे पार पाडले. सावित्रीबाई

CamScanner से स्कन किया

आद्य भारतीय स्त्री शिक्षिका ठरल्या. महात्मा ज्योतिरावांनी शूद्र मुली मुलांना शाळेत घालावे, सुशील करावे सर्व कामी' असा उपदेश केला नाही तर इ. स.१८४८ ला बुधवार पेठेतील (पुणे) भिडयांच्या वाड्यात भारतातील पहिली मुलींची शाळा सुरू केली. ई. स.१८५१ मध्ये विपळूणकरांच्या वाड्यात व रास्ता पेठेत आणखी मुलींची शाळा काढली.हे कार्य करताना सावित्रीबाई व महात्मा फुले यांना खूप त्रास झाला. कुटुंबीयांनी संबंध नकारले,तरीही त्यांनी स्त्री शिक्षणाचे कार्य निष्ठेने चालविले.

२. जातिभेद व अस्पृश्यता निवारण

महात्मा फुले सामाजिक समतेचे पुरस्कर्ते होते त्यांना जातीवर आधारित भेदाभेद मान्य नव्हता तसेच अस्पृश्यांवर होणाऱ्या अन्यायाची जाणीव होती. या काळात अस्पृश्यांवर अनेक निर्बंध लादलेले होते खानपनची बंदी, मंदिर प्रवेश बंदी, चांगले वस्त धारण करणे यावर पण बंधने होती. महात्मा फुलेंनी अस्पृश्यांसाठी आपल्या घरचा पाण्याचा हौद १८६७ मध्ये खुला केला. अस्पृश्यांना शिक्षण देण्यासाठी पुढाकार घेतला त्यांनी जन्मापेक्षा कर्तुत्वाला महत्त्वाचे मानले आणि जातीभेदाचा व अस्पृश्यतेचा निषेध केला.

३. बालविवाहा चा निषेध

त्या काळात बालविवाहाचे प्रचलन होते. मुला मुलींना काही करण्यापूर्वी कुटुंबातील सदस्य त्यांच्या विवाह करीत असत. बालविवाह मुळे त्यांचा व्यक्तिमत्व विकास होऊ शकत नव्हता. शिक्षणाची संधी मिळत नव्हती. अल्पवयात विभिन्न जबाबदाऱ्या येतात. हे जाणून त्यांनी बालविवाहाचा निषेध केला त्यासाठी लोक जागृती केली.

४. स्त्री पुरुष समानतेचा पुरस्कार

महात्मा ज्योतिराव स्त्री पुरुष समतेचे पुरस्कर्ते होते. पुरुष सत्ता समाजात स्त्रियांचे अनेक प्रकारे शोषण केले जाते.त्यांच्यावर अन्याय केला जातो. नीती नियमात ही तफावत असते. हे लक्षात घेऊन त्यांनी स्त्री शिक्षणाबरोबर स्त्रियांचे प्रश्न सोडविण्यात पुढाकार घेतला.

५. शेतकऱ्यांचे प्रश्न

महात्मा फुले यांनी सर्व साहित्यात ज्या विविध समस्यांना वाचा फोडली त्यात शेतकऱ्यांच्या प्रश्नांचा समावेश करावा लागेल. 'शेतकऱ्यांचा आसूड' या पुस्तकात त्यांच्या प्रश्नांची चर्चा केली आहे.शेतकऱ्यांवर नैसर्गिक संकटे येतात परंतु त्याचबरोबर भट भिक्षुक, सावकार ,जमीनदार आणि नोकरवर्ग त्यांना लुबाडतो. हे सर्व शेतकऱ्याला शिक्षा नसल्यामुळे होतो म्हणून शेतकऱ्यांनी शिक्षण घेतले पाहिजे असे त्यांनी ठामपणे प्रतिपादन केले.

६. विधवांची समस्या

बालविवाह प्रथेतून उद्भवलेली समस्या म्हणून विधवांचा प्रश्न प्रत्ययास येतो. मुली अल्पवयात विधवा होतात विधवा स्त्रियांना अतिशय वाईट वागणूक दिली जात होती. त्या अनाधिकारी होत्या ,त्यांना मंगल कार्यात भाग घेण्यावर बंदी होती. पांढरी वस्त धारण करणे, काबाडकष्ट करणे आणि जगणे ,असे त्यांचे जीवन होते. महात्मा ज्योतिराव विधवावर होणाऱ्या अत्याचा विरुद्ध उभे राहिले विधवांच्या समस्या सोडवण्यासाठी त्यांनी जनजागृती केली.

CamScanner से स्कन किया

७. केशवपना□चा प्रश्न

विधवांचे केशवपन करून त्यांना विद्रुप केले जात होते. केशवपनासाठी कुटुंबातील सभासद बळजबरी करीत होते. ही वाईट प्रथा पुण्यामध्ये वरच्या जातीत होती. त्यांच्यावर धर्म सत्तेने केलेला हा अन्याय होते. महात्मा फुले यांनाही केशवपणास पायबंद घालण्यासाठी पुण्यातील नव्हव्यंची सभा घेऊन संप केला. त्यांना आपल्या बहिणींच्या डोक्यावर वस्तरा चालू नका असे आव्हान केले.

८. बाल हत्या प्रतिबंधक गृहाची स्थापना

काही वेळा एखाद्या विधवेची पाऊल वाकडे पडले किंवा कोणी अत्याचार केला तर गर्भधारण होण्याची शक्यता नकारता येत नसेल असे स्त्रियांना गर्भपात किंवा आत्महत्या करावी लागत असे अशाच एका गरोदर विधवेला महात्मा फुले आपल्या घरी घेऊन आले आणि तिला आश्रय दिला पुढे १८६३ मध्ये बालहत्या प्रतिबंधक गृहाची स्थापना केली अजान ,निष्पाप, बालकांनाही जीवनदान देण्यात येऊ लागले.१८६५ मध्ये काशीबाई नावाची ब्राह्मण विधवा प्रसिद्ध झाली तिच्या मुलाला महात्मा ज्योतिराव आणि सावित्रीबाईंनी दत्तक घेतले. यास यशवंतरावाच्या नावे मृत्युपत्र तयार करून त्याला वारस म्हणून मान्यता दिली.

८. सर्वांना शिक्षण

महात्मा फुले यांनी सर्वांना शिक्षण दिले पाहिजे असे ठामपणे मांडले. कारण त्यांनी शिक्षणाशिवाय असलेल्या लोकांची परिस्थिती किती वाईट असते हे अनुभवले होते .ब्राह्मण जातीतील तसेच जमीनदार ,संस्थानिक आणि सरदार यांच्या मुलांना शिक्षण देण्याची व्यवस्था होती. त्याकाळी इंग्रज शिक्षक ठेवून तते शिकविले जायचे. त्यांची स्वतंत्र व्यवस्था होती ,परंतु सामान्य लोक शिक्षणापासून वंचित होते. हे लक्षात घेऊन महात्मा फुले यांनी झिरपण्याचा सिद्धांत मान्य केला नाही. या सिद्धांतानुसार वरच्या जातींना शिक्षण दिले म्हणजे ते खालच्या जातींकडे झिरपत जाईल भारतीय समाजातील जाती आधारित संरचना माहीत असल्यामुळे महात्मा फुले यांनी झिरपण्याऐवंजी सर्वांसाठी शिक्षणाचे समर्थन केले.

समारोप

महात्मा ज्योतिराव फुले यांच्या कार्याचा प्रवाह अनेकांगी आहे. महाराष्ट्रात सत्यशोधक समाजाच्या स्थापनेनंतर ,सत्यशोधक कार्यकर्ताचा एक वर्ग निर्माण झाला. त्यांनी ठिकठिकाणी मेळावे , संमेलने घेऊन जनजागृती केली. गुलामगिरी, शेतकऱ्यांचा आसूड व इतर ग्रंथातून तत्कालीन समाजाचे वास्तविक परंतु भेदक चित्र त्यांनी रेखाटले. समाज जागृती घडून आणली. प्राथमिक शिक्षण, शेतकरी व कामगारांचे प्रश्न शासन दरबारी मांडून त्या वर्गात चेतन निर्माण केलं. पुरोहितशाहीचे वर्चस्व संपुष्टात आणले.सत्यशोधक पद्धतीने कमी खर्चात विवाह संपन्न होऊ लागले. महात्मा फुले यांनी लोकांना बुद्धी संगत, विज्ञाननिष्ठ, एहिकवादी, समताधिष्ठित, विचार करण्यास शिकविले. त्यांचा सामाजिक योगदान खूप मोठा आहे.

CamScanner से स्कन किया

संदर्भसूची

१.अँड काडंगे,राम, मार्च २००४, महा-महात्मा ज्योतिराव फुले व्यक्ति व कार्य, चाकण पुणे: राजश्री प्रकाशन

२. क्षीरसागर, व्ही. एस.,२००५, महाराष्ट्रातील समाज सुधारक साहित्यिक, भारती विचारवंत , पुणे: के सागर पब्लिकेशन

३. खडसे, भा.की.,२०१०, समाजशास्त्र, मुंबई, हिमालय बुक्स प्रा. लि.

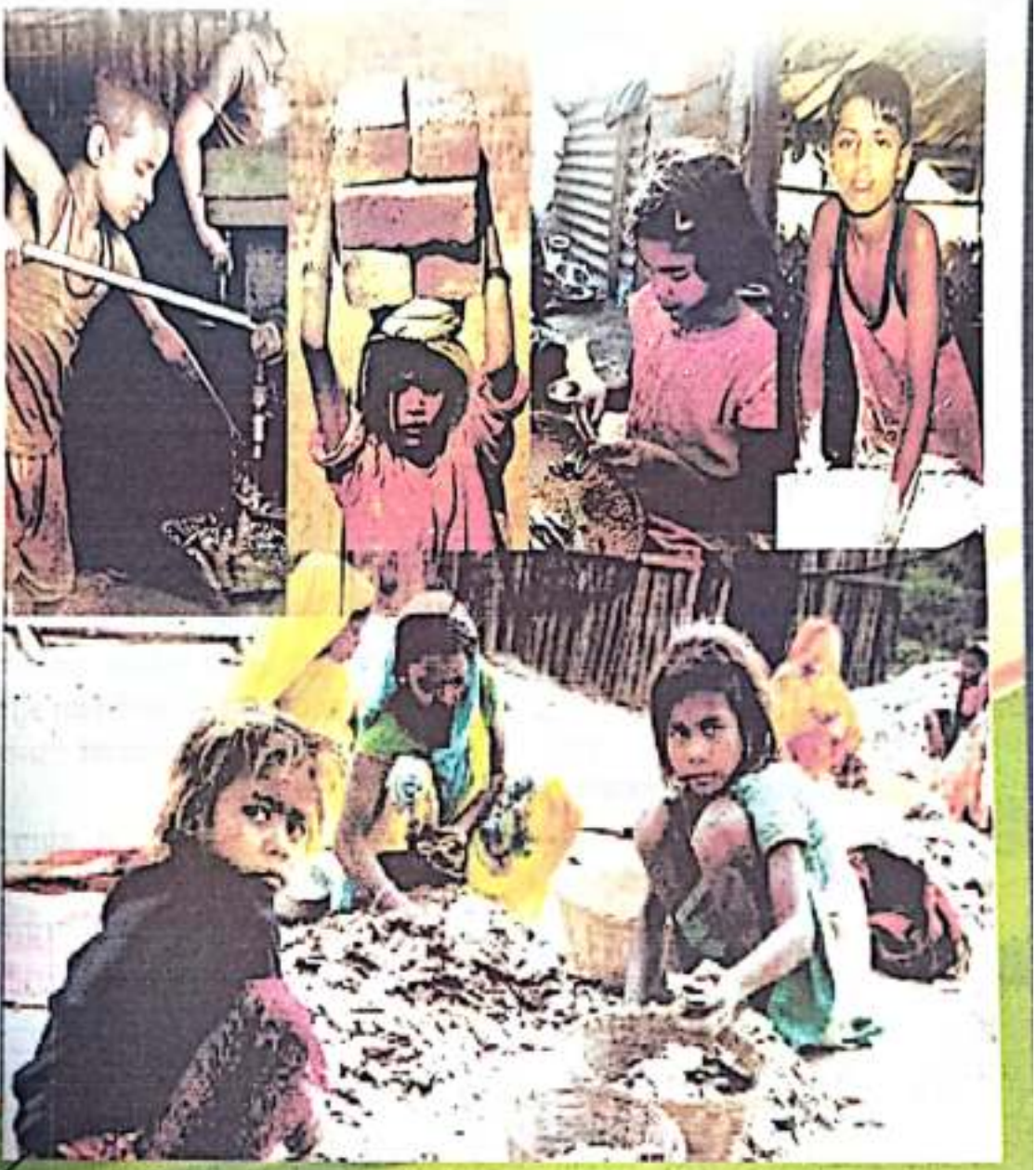
४. दैनिक देशोन्नती

५. इंटरनेट

CamScanner से स्कन किया

बालमजुरी समस्येमागील कारणे व उपाय

डॉ. अंजली चंद्रकांत पांडे (वेपे)



Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner



डॉ. अंजली चंद्रकांत पांडे (चेपे)

बडनेरा, जिल्हा-अमरावती येथील नारायणराव राणा महाविद्यालयातील गृहअर्थशास्त्र विभागाच्या विभाग प्रमुख म्हणुन डॉ. अंजली चंद्रकांत पांडे (चेपे) या कार्यरत असुन, एक सामाजिक जाणिव ठेवणाऱ्या प्राध्यापिका म्हणुन त्या सुपरिचित आहे.

सामाजिक, संस्कृतिक व इतर क्षेत्रात रुची ठेवणाऱ्या, उपेक्षित, भटक्या आणि मजूरी करणाऱ्या बालकांच्या हक्कासाठी झटणा-या, त्यांना समाज प्रवाहात आणण्यासाठी तसेच त्यांना शालेय जिवनात समाविष्ट करण्यासाठी व त्यांच्या राहणीमानाच्या दर्जात सुधारणा होण्यासाठी तळमळ असणाऱ्या व त्यांच्या उत्थानाकरीता झटणाऱ्या म्हणुन त्या सुपरिचित आहे.

शासनातर्फे अशा बालकांसाठी होणाऱ्या प्रत्येक कार्यक्रमात त्यांचा आवर्जुन सहभाग असतो.

त्यांचे बालमजुरी समस्येमागील कारणे व उपाय हे प्रकाशित होणारे पुस्तक बालमजुरी निर्मुलनार्थ कार्य करणाऱ्या अभ्यासक, विद्यार्थी, सामाजिक संस्था, गैर सरकारी स्वयंसेवी संस्था इ. यांना उपयुक्त राहील अशी मला खात्री आहे.

Aadhar Publication
New Hanuman Nagar,Infront of Pathyapustak Mandal,V.M.V Road,Amravati,444604
Email - aadharpublication@gmail.com, M.: 9595560278
ISBN-978-93-86623-88-1

Scanned by CamScanner

बालमजुरी समस्येमागील कारणे व उपाय

लेखक

प्रा. डॉ. अंजली चंद्रकांत पांडे (चेपे)

सहयोगी प्राध्यापक, नारायणराव राणा
महाविद्यालय, बडनेरा, जि. अमरावती

Principal

Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

आधार पब्लिकेशन,अमरावती

Scanned by CamScanner

महिलांची परीवर्तनशील भुमिका

(कोरोना काळातील परिस्थितीवर आधारीत)

प्रा. डॉ. मंजिरी मिलिंद चेपे
डॉ. सुनिता बाळापुरे







Scanned by CamScanner

About the Editors



प्रा. डॉ. मंजिरी निलिंद भेये नारायण राणा महाविद्यालय, बडनेरा, जिल्हा-अमरावती येथे गृहअर्थशास्त्र विषयाच्या विभाग प्रमुख म्हणुन या २१ वर्षापासून कार्यरत असून, एक सामाजिक जाणिव ठेवणाऱ्या प्राध्यापक म्हणुन त्या सुपरिचित आहे. त्यांचा पी.एच.डी संशोधनाचा विषय "अमरावती जिल्हा नागरी क्षेत्रातील बालमजूरी समस्ये बाबत कारणे व उपाय" हा असून त्यांचे आजपर्यंत २५ शोधनिबंध वेगवेगळ्या नामांकित राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय जर्नल मध्ये प्रकाशित झालेले आहे. त्यांनी आजपर्यंत अनेक चर्चासत्र/ परिषद/कार्यशाळेमध्ये सहभाग नोंदविला असुन, त्यामध्ये त्यांचे लेख सुध्दा प्रकाशित झालेले आहे. त्यांना कॉलेज टाईम्स, एज्युकेशन न्युजपेपर व न्युज बॅबेल यांच्या तर्फे त्याच्या गृहअर्थशास्त्र विषया संदर्भातील केलेल्या कार्याबद्दल महाराष्ट्र गुरू गौरव पुरस्कार २०१९ ने गौरविण्यात आलेले आहे.



Dr. Sunita S. Balapure Working as Professors of Home Economics, Late Dattaatray Pusadkar Arts college, Nadgaon Peth, Amravatti, -Ph.D. Completed From sant Gadge Baba Amravati university, Amravati Member Board of Studies Home Economics at Sant Gade Baba Amravati University, Amravati.

Two books one Published Many Journal Paper published national International Journals. Working two years as NSS Area co-ordinates at S.G.B.A University, Amravati Many conferences Attended as Chairperson Ph. D Supervision & Head of Research Centre.

Published by

.com
3101, Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

9 781678 047733

Scanned by CamScanner

महिलांची परीवर्तनशील भुमिका
(कोरोना काळातील परिस्थितीवर आधारीत)

Editor
प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे व
डॉ. सुनिता बाळापुरे

Research Ink Publication
February - 2021

Scanned by CamScanner

Research Publication

Price: 165 /-

प्रकरण
१

महिलांची परीवर्तनशील भुमिका (कोरोना काळातील परिस्थितीवर आधारीत)

प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे व डॉ. सुनिता बाळापुरे

© 2021 by प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे व डॉ. सुनिता बाळापुरे

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

ISBN – 978-1-6780-4773-3

Published by,
Lulu Publication
3101 Hillsborough St,
Raleigh, NC 27607,
United States.

Printed by,
Research Ink Publication,
258/34, Raviwar Peth,
Solapur, Maharashtra, India.
Contact No. : 9595359435
Website: http://www.lbp.world
Email ID: researchink2020@gmail.com

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

प्रकरण	विषय	पृष्ठ क्रमांक
१	मी, ती आणि कोविड – 19 प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे	१ – ८
२	महिलांचे परिस्थितीजन्य भूमीका प्रो. डॉ. सुनिता एस. बाळापूरे	९ – २३
३	कोरोना काळातील बालसंगोपन विषयक समस्या प्रा. डॉ. निलीमा पी. माहोरे	२४ –३०
४	कोविड 19 व भारतीय संस्कृती प्रा डॉ ज्योती वि हावरे	३१ – ३७
५	सामाजिक व्यवस्थेतील परिवर्तन डॉ सारीका एस. बोदडे	३८ – ५०
६	कौटुंबिक स्वास्थ्य प्रा. डॉ. शामली जा. दिघडे	५१ – ६४
७	टाळेबंदी काळात अर्थव्यवस्थेवर झालेला परिणाम प्रा. डॉ. मोनाली वि. इंगळे	६५ – ७६
८	करोना काळातील किशोरांच्या समस्या प्रा. प्राची भांबुरकर	७७ – ८१
9	कोविड–19 – स्त्रियांची मानसिक स्थिती डॉ. संध्या अनिल काळे	८२ – ८९

Scanned by CamScanner

प्रकरण — १

मी, ती आणि कोविड — १९

प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा—अमरावती

प्रस्तावना

ताण ही व्यक्तीच्या जीवनातील गतिशील अवस्था असून जी समायोजनाच्या गरजा पूर्ण न झाल्यास उद्‌भवते. ताणाची संकल्पना हि सर्वप्रथम हॅन्स यांनी मांडली. ताण ही संकल्पना उद्‌दीपक त्यास दिलेल्या प्रतिक्रिया किंवा या तिन्ही घटकाचा परिपाक होय. सोप्या भाषेत सांगायचे झाल्यास ज्या एका मानसीक अवस्थेमुळे शरीर स्वास्थ प्रभावित होते ते म्हणजे तणाव होय. ज्या घटनेमुळे शारीरिक मानसीक कार्यक्षमतेत विघटन घडून येते किंवा धोका संभवतो अश्या घटनांद्वारा उद्‌भवणारी प्रक्रिया म्हणजे तणाव होय.

आजचा काळ हा चिंता निर्माण करणारा काळ झालेला आहे. आता या चितेची जागा तणावाने घेतलेली आहे. लॉक डाऊनच्या या काळात झपाटयाने बदलणाऱ्या परिस्थितीशी जुळवून घेणे प्रत्येकास कठीण जात आहे. मनातील अनावश्यक व नकारात्मक विचारांच्या गर्दीमुळे मनाची जी स्थिती होते तिला 'तणाव' म्हणतात. तणा हा शारीरिक व मानसिक असू शकतो.

आजच्या काळात (लॉकडॉऊनच्या परिस्थितीत) ताण सर्वांना अनुभवावी लागणारी बाब झाली आहे. या अशा वातावरणात फारच थोडया व्यक्ती ताणाचे चांगल्याप्रकारे व्यवस्थापन करतांना दिसतात. पण हि परिस्थिती पाहता तणाव हा शब्दच आपल्या दिनचर्येचा भाग बनत चालला आहे.जगण्यातले सर्वच आनंदाचे क्षण हे स्पर्धा, ओढ़ाताण, आटापिटा करून मिळवायचे नाहीत. तर लॉकडाऊनचा हा काळ आपल्यासाठी एक नवी संधी किंवा स्वत:हास बदलणे आपल्यातील आवड जोपासणे असा छोटा—छोटा आनंद मिळऊन देणारे प्रसंग अनुभवन्याचा काळ म्हणावा. या

Scanned by CamScanner

आनंदाचे पुरेसे भान राखलास कुठलेच ताण जगण्यातला आनंदापेक्षा वरचढ ठरू शकत नाहीत.

ताणतणावाचा अर्थ – ताण निर्माण करणारे घटक किंवा ताणके यामुळे प्रत्यक्षात ताण निर्माण होतो. ताण निर्माण झाल्यानंतर त्याचा जो परिणाम होतो, त्यास आपण तणाव म्हणतो, म्हणजे तणाव हा शब्द परिणामाशी निगडीत आहे. दैनंदिन वापरात मात्र 'ताणतणाव' असा एकत्र आणि जवळ पास एकाच अर्थाने शब्द प्रयोग वापरतो "ताण हा परिणाम ज्या एका किंवा अनेक घटकांमुळे निर्माण होतो. त्यास ताणके" असे म्हणतात.

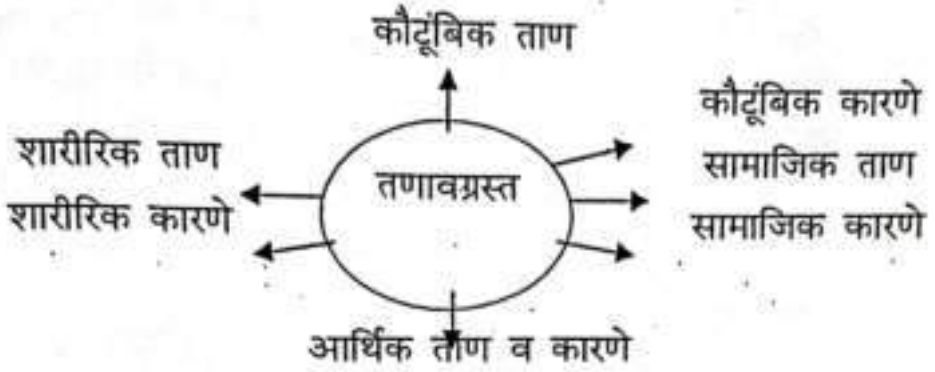
ताणाचे स्वरूप – ताण एक बहूआयामी, संमिश्र अशी प्रक्रिया असून सभोवतालच्या वातावरणातील काही घटक व परिस्थितीला अनुलक्षून केलेली प्रतिक्रीया यातून ताण व्यक्त होती. प्रत्यक्ष ताण निर्माण करणारे घटक व इतर परिस्थितीमुळे आलेले घटक समाविष्ट असतात. अशा उपघटकांवरच ताणाचे परिणाम अंवलबून असतात.

उदा – आज कोरोनाचे घराघरात निर्माण झालेले वातारण यामुळे महिलांची संभ्रमा अवस्था याकारणामुळे तणावजन्य परिस्थितीचा परिणाम तिच्या आरोग्यावर ताण स्वरूपात निर्माण होतो. यामुळे तिच्या मनाची असंतुलित स्थिती निर्माण होते. त्यातून ताणाचा परिणाम दिसुन येतात. उदा. रक्तदाब वाढणे, सततची चिडचिड, शारीरिक आजार इत्यादी. ब्राऊन व मॅकगिल यांच्या मते "ताण जसा दुःखद अनुभवांमुळे येतो, तसाच काही वेळेला तो सुखद अनुभवामुळे ही येऊ शकतो."

उदा – नोकरीचा पहिला दिवस, व्यवसायाची सुरूवात मुलीचे ठरलेले लग्न इत्यादी. टॅरिस पॉल असे ही म्हणतात कि बऱ्याच व्यक्ती अत्युच्च ताणतणावाखाली वावरत (जगत) असतात.

ताणाचे प्रकार – कौटूंबिक ताण, आर्थिक ताण, सामाजिक वातावरणातील ताण, मानसिक ताण, शारीरिक ताण, स्पर्धेतून येणारा ताण अपेक्षित ताण, सुखकारक ताण, नकारात्मक ताण, विघातक व असुखकारक ताण, शारीरिक ताण, भावनिक ताण ईत्यादी.

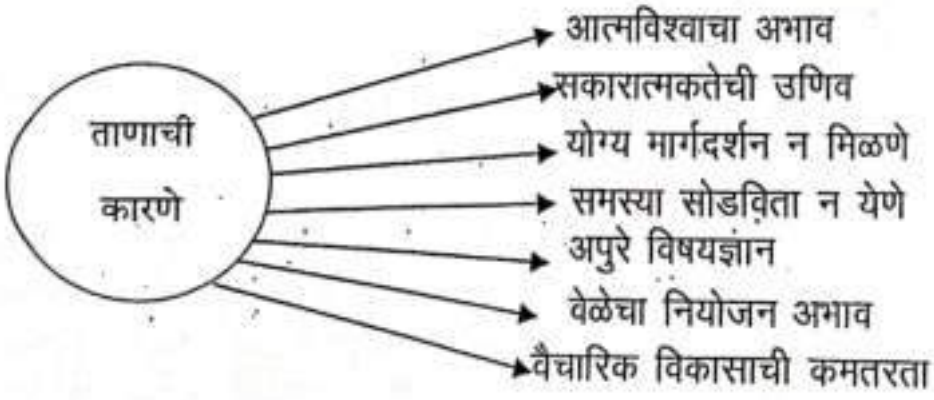
Scanned by CamScanner



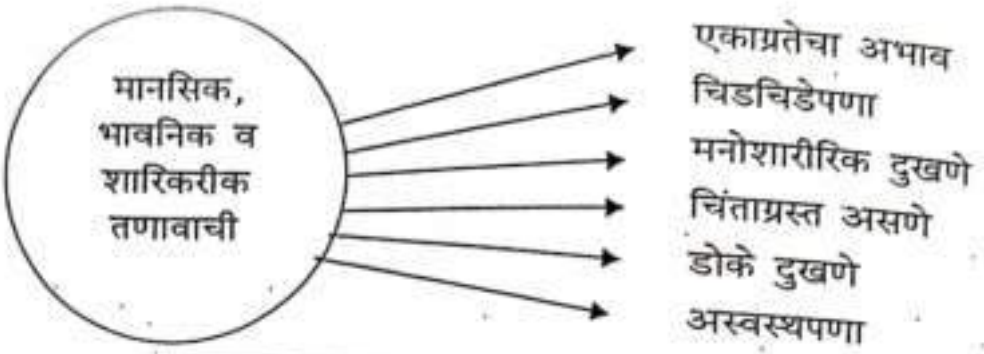
जेव्हा ताणाची पातळी हि वाजविपेक्षा जास्त किंवा खुप कमी असते, तेव्हा त्याचे परिणाम नकारात्मक दिसून येतात.

ताणतणावाचे दुष्परिणाम – जेव्हा ताणतणाव निर्माण होतो त्याचे दुष्परिणाम व्यक्तीच्या शारीरिक, भावनिक, मानसिक, आर्थिक वर्तनातून दिसुन येतात. याची संशोधन पुर्ण बातमी टिव्हीवर देखील दाखवली अभ्यासकांनी याचे अध्ययन केले त्यावेळी त्यानी याकाळात कोरोना काळात विविध इंमोजीचा उपयोग केला टॉप १० इंमोजीचा लोकांनी वापर केला. यांना रॅंकिंग दिले.





Scanned by CamScanner





ताणतणावाचे व्यवस्थापन :–

- कोणते ही काम करतांना पूर्वग्रह मनात ठेवू नका
- मनावर आणि भावनांवर नियंत्रण ठेवा.
- चिंत स्थिर ठेवून चिंतन मनन करून ताण दूर ठेवता येतात.
- कोणाच्या ही बोलण्याचा सकारात्मक विचार करा.
- कोणत्याही कामाचा ताण येऊ नये यासाठी पूर्व नियोजन करा. त्यानूसार काम करण्याची सवय करा.
- आपल्या स्वत:करीता वेळ दया व्यायाम योगासन करा.

कौटूंबिक ताण महिलांवर अधिक जाणवतो मग तो शारिरीक ही असू शकतो, मानसिक ही असू शकतो, भावनिक हि असु शकतो.

सध्याच्या धावपळीच्या व आज नविन आलेली महामारी (पॅंडयामीक) परिस्थिती असो. स्पर्धा अस्थिरता, आर्थिक प्रश्न, चिंता कलह, सामाजिक वातावरण, आजारपण लैंगिक समस्या अशी अनेक कारणे व्यक्तीवर ताण निर्माण करू लागले आहे. याचाच परिणाम प्रत्येकाच्या मानसिक तेवर होऊन अनेक मनोव्याधी निर्माण होऊ लागल्या आहेत, यासर्व गोष्टींचा परिणाम स्त्री, पुरूष बालक, अर्थकारण, समाज व्यवस्था यावर देखील नक्कीच होतांना दिसतो.

Scanned by CamScanner

उदा. आजच्या लॉकडाऊन (टाळेबंदी) चा काळ मुलांवर समाजात मिसळतांना आजूबाजूला होणाऱ्या घटना, गोष्टींचा त्याच्या मनावर कळत नकळत परिणाम होतोच आहे. यातून ताण–तणावाची निर्मीती होते.

व्यवस्थापन मंत्र (तंत्र) :–

'तंणाव ग्रस्तता किंवा ताणतणाव अनुभवणे हि यातनामय किंवा वास्तवता आहे, प्रत्येकाने नीट लक्ष ठेवावे मग ती महिला असो, पुरूष आबाल–वृध्द असोत प्रत्येकाने आपापल्या परीने ताणाची तिव्रता कमी करणे तिच्यातून मुक्त होण्याचा मार्ग शोधने अथावा तो सुसह्य कसा होऊ शकेल या दिशेने प्रयत्न करायला पहिजेत. याला ताणतणावाचे व्यवस्थापन अथवा तणावाचे तंत्र म्हणून वापर करावा.

आजच्या कोविड–१९ किंवा लॉकडाऊन अशा काळ, महिलांनी आपली जीवनशैली व कुटूंबाकरीता थोडी बदल करावी म्हणजे जाणवणारा ताणतणाव अथवा होणारी शारीरिक, मानसिक, ओढाताण कमी करता येऊ शकेल त्यासाठी रोजच्या दिनक्रमात जीवनशैली बदल करावा स्वत:करीता वेळ द्यावा. जसे स्वत:ला जाणून घ्यावे आपल्यासाठी हि एक संधी समाजवी आपल्या या आवडीचा छंद, गोष्टी यांना प्राधान्य दयावे. तसेच स्वत: हा ला जाणून घेतांना कामाचा क्रम कामाचे महत्व निश्चित करावे. कोणत्या प्रकारचा ताण जाणवतो. याच्या खाणाखुणा ओळखणे, महिलांनी स्वत:हाला जाणवणारी तणाव प्रतिक्रिया लक्षात घेणे उदा – दु:ख भावना, अथवा दु:ख देणाऱ्या गोष्टी यांना मनाच्या कप्पापर्यंत पोहचू न देणे किंवा दुखाचे गाढोडे सरळ वेशी वर (खुंटीवरच) टांगणे समोर येणाऱ्या समस्या, अडचणी यांना सामोरे जाणे, हिंदी मध्ये एक म्हण आहे 'डर के आग जीत है' यामुळे तणावात्मक परिस्थितीचा सामाना करणे कठीण वाटणारच नाही. मनातल्या मनात कुढत राहण्यापेक्षा मनातील भावना विचार किंतुपर्यंतच्या गोष्टी बोलून मोकळ्या व्हाव्यात आपल्या समवयस्क मैत्रीणी सोबत इच्छा, भावना आकांक्षा अपेक्षा बोलून व्यक्त कराव्यात. त्यामुळे निम्मा ताण कमी होतो.

सहनशीलता वाढविणे किंवा आपल्या मेंदूला अर्फमेशन देणे कि या अशा काळात देखील मी आनंदी आहे. माझे मन शक्तीशाली आहे 'मी निर्भय आहे माझे शारीरिक आरोग्य व मानसिक आरोग्य निरोगी व सुदृढ आहे. सभोवताली घडणाऱ्या घटनांचा मी त्रास करून घेत नाही मी तनदुरूस्त माणूस आहे.

Scanned by CamScanner

आज आलेली महामारी कोविड–१९ या करीताच आपण आपल्या जीवन जगण्याच्या जीवनशैलीत बदल करावयाचा आहे, असे नाही, तर सतत जाणवणारी स्पर्धा रोज होणारी धावपळ, समाजात शामील होतांना होणारा त्रास, विविध अडचण उदा– आर्थिक अशा वेळी आपल्या गरजांचा प्राधान्यक्रम ठरवावा व उपयुक्त आवश्यक निकड (गरज) यांना प्राधान्य देऊन आपल्याला योग्य (समर्पक) जीवनशैलीची निवड करावी. यातनूच तणावरहित जीवन जगता येते. आपल्याला संत माहात्मे यांनी सांगितले. "पृथ्वी प्रत्येकाच्या गरजा भागविण्याइतकी समर्थ आहे. पण हाव भागविण्याइतकी ती समर्थ नाही. म्हणजे कुठली ही गोष्ट मिळविण्यासाठी (हव्यास) अटहास न करता जीवनाकडे पाहण्याचा दृष्टीकोन हा सकारात्मक असावा याला तणाव तंत्रात फार महत्व आहे.

योग आणि ध्यान धारणा :–

२१ जुन हा योग दिवस फार मोठया प्रमाणावर आपण आता साजरा करू लागलो आहोत. पूर्वी वेदकाळात ध्यानधारणा व योगासने यांना महत्व दिल्या जायचे कारण कोणती हि स्थिती, परिस्थिती असली तरी त्याकरिता शरीर व मन हे कणखर असायलाच पाहिजे अशा शिक्षण पध्दतीचा उपयोग होत होता.

आजची विचार करता प्रत्येकास मग तो प्राध्यापक, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी, महिला व पालक असो यांना कळत न कळत समाजाशी समायोजन साधावेच लागते तसेच धावपळीच्या जगण्यात 'ताण' त्याच्या वर ही हल्लाबोल करतोच. या ताणवग्रस्त वाटणाऱ्या वातावरणावर मात करण्याकरिता योगा, व्यायाम याची मदत घेणे गरजेच आहे. प्राणायाम मेडीटेशन मॉर्निंग वाक या पध्दतीचा दिनचर्येत समावेश करणे, आज फिट राहण्यासाठी आनंदी व तणाव रहीत राहण्याकरीता गरजेचे आहे. योगक्रिया प्रक्रियेमुळे – शरीर, मन आत्मा यांचे संतुलन आणण्यात फार मदत होते.

या लॉकडाऊनच्या काळात सर्वच व्यवसाय रोजगार बंद आहेत, मिळणारे उत्पन्न घटले आहे. कसे होणार पुढे असे अनेक विचार सर्व समाजात वावरणाऱ्या व्यक्ती तसेच कुटूंबच्या मनात घोगावत आहे. काळजी युक्त, भिती युक्त वातावरण जाणवते आहे. या सर्वातून बाहेर पडण्याकरीता योगसाधना हा प्रभावी उपाय ठरतो.

Scanned by CamScanner

योगाची व्याख्या "मानवाचा सर्वोकृष्ट विकास करण्यासाठी त्यांचे लौकिक व आध्यात्मिक जीवन, सुखी व संपन्न करण्यासाठी ज्या सर्व प्रक्रिया केल्या जातात, त्याला योग असे म्हणतात"

योगशास्त्र शरीर, मन यांना महत्व दिल्या गेले आहे. याचे कारण शरीरात (घडणाऱ्या) होणाऱ्या विविध क्रियांची सुरूवात मनातून होते. मन हे शरीरापेक्षा प्रभावी आहे. शरीर सर्व संस्थांचे कार्य नियंत्रण मेंदू करतो आणि मेंदू (बुध्दी) याचे नियंत्रण मन नावाचा अवयव करीत असतो. योगशास्त्राची विभागणी चार भागात करून महर्षी 'पंतजलीना' १९६ सुत्रांतून हे शास्त्र जगासमोर मांडले.

मानसिक ताण तणावाला दूर ठेवायचे असल्याधारणा व योग फार महत्वाचे ठरतात.

'धारणा' — म्हणजे ध्यानाची प्राथमिक अवस्था आहे. मन जर नियंत्रणात ठेवायचे असेल तर श्वास व प्रश्वास यावर नियंत्रण आवश्यक आहे. यामुळे मनात येणाऱ्या नाना तऱ्हेच्या नकारात्मक विचारास दूर ठेवण्यास मदत होते यासाठी शरीराच्या एखाद्या भाग किंवा शरीराच्या बाहेरच्या वस्तू केंद्र बिंदू ठरवित मनाचे लक्षण त्यावर एकाग्र करण्याच्या प्रक्रियेतला 'धारणा' असे म्हणतात.

आपणा सर्वांना 'श्री.श्री. रविशंकर,' योगगुरू रामदेव बाबा तसेच Spiritual आध्यात्मिक योगा यांचे महत्व हि सर्व मंडळी सतत सांगत आहे. श्री.श्री. रविशंकर यांनी सुदर्शन क्रियेचे महत्व मांडले तर रामदेव बाबा योगा से होगा असे म्हणत प्रत्येकास प्राणायाय व व्यायाम यांचे धडे देत आहे.

ध्यान — ही धारणेची प्रगत अवस्था आहे. आज यास मेंडीटेशन असे म्हटले जात आहे. थोडक्यात एकाग्र करण्याचे तंत्र म्हणा किंवा मंत्र म्हणा. या साधनाना योग साधनेचा अभ्यास आज प्रत्येकानेच करावा असे वाटत आहे. लहान बालक देखील आज (स्ट्रेस) Stress मध्ये आहे असे म्हणत आहे. यासर्व तणावापासून दुर राहण्यासाठी व्यायाम व योग प्रत्येक कुटूंबानी घरच्या घरी केल्यास संपूर्ण वातावरण आनंदी राहण्यास मदत होईल.

तणाव टाळण्यांचे उपाय :— ताण तणाव म्हणा किंवा स्ट्रेस हा शब्द म्हणा हे टाळणे शक्य आहे. यासाठी तात्पुरते उपाय व दीर्घकालीन उपाय करता येतात. दिर्घकाळासाठी वर सांगितल्याप्रमाणे प्राणायाम व ध्यान धारणेची मदत घ्यावी तर तात्पुरते उपायांकरिता.

Scanned by CamScanner

- कोणत्या ही गोष्टीवर तात्काळ मत अथवा प्रतिक्रिया देणे टाळावे.
- कामाच्या प्रकाराला यादी करून प्राध्यान क्रम ठरवून करावा.
- काही वेगळे छंद जोपासावे.

तणाव मुक्त जीवन आपल्या स्वत:च्या व आपल्या सोबत राहणाऱ्या कुटूंबातील प्रत्येक सदस्याच्या आयुष्यात आनंद निर्माण करते. म्हणून मिळालेल्या जीवनाचा प्रत्येकानेच मनमुराद आनंद घ्या.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner



मानवी विकासात्मक अवस्थेनुसार दैनंदिन जीवनात आहार शास्त्राचे महत्त्व











प्रा. प्राची बा. भांबुरकर

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

प्रकरण	विषय	पृष्ठ क्रमांक
१	गर्भावस्था आणि आहार **प्रा. प्राची बा. मांबुरकर**	१ ते १४
२	स्तनपान अवस्थेतील मातेसाठी आहार आयोजन **प्रो. डॉ. सुनिता श्रीकृष्ण बाळापुरे**	१५ ते २०
३	शैशवावस्था (आहार आरोग्य कपडे झोप आणि सवयी) **प्रा डॉ स्वाती एस.वैद्य**	२१ ते ३१
४	पूर्व बाल्यावस्थेतील वैकासिक कार्यात आहाराचे महत्व **प्रा. डॉ. किरण आर. बेलुरकर**	३२ ते ४४
५	उत्तर बाल्यावस्था आणि समतोल आहार **प्रा.डॉ. स्वप्ना एस देशमुख**	४५ ते ५३
६	पौगंडावस्थेत आहाराचे महत्व **प्रा.डॉ. मंजिरी चेपे**	५४ ते ६५
७	किशोरावस्थेतील मुली व त्यांच्या आहाराचा त्यांच्या आरोग्यावर होणारा परिणाम **प्रा.डॉ. दयाश्री वि. कोकाटे**	६६ ते ७९
८	तरुणावस्था आणि आहाराचे महत्व **प्रा.डॉ. नीता गिरी**	८० ते ८४
९	प्रौढावस्थेतील आहार **डॉ. सारीका एन् दांडगे (बोदडे)**	८५ ते ९४
१०	वृध्दावस्था आणि आहार **डॉ. सुवर्णा विष्णु तायडे**	९५ ते ९९

Scanned by CamScanner

प्रकरण – ६

पौगंडावस्थेत आहाराचे महत्व

प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे
गृहअर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा.

प्रस्तावना

पोषणयुक्त आहार आणि भरपूर व्यायाम करण्याची सवय लावण्यासाठीचे हे वय आदर्श आहे असे म्हणता येईल. असे म्हणण्याचे कारण म्हणजे प्रौढावस्थेत उद्‌भवणारे आजार हे काही प्रमाणात पोषणाशी संबंधीत असतात हे जर टाळायचे असती तर पौगंडवस्थेतील मानसीक व शारीरिक पायाभरणीच उपयोगी पडते. या अवस्थेला परिवर्तनाची अवस्था असे देखील म्हणता येईल.

जागतिक आरोग्य संघटनेनी पौगंडावस्थेची व्याख्या दोन प्रकारे केली आहे. एक वयानसार म्हणजे (10 वर्ष ते 19 वर्षा पर्यंतचा काळ) आणि दुसरी म्हणजे विशिष्ट गुणधर्म असलेल्या जीवनाच्या टप्प्यानुसार गुणधर्म पुढील प्रमाणे :

- द्रुत गतीने शारीरिक वाढ आणि विकास
- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक परिपक्वता
- लैंगिक परिपक्वता
- प्रायोगिता

पौगंडावस्थेतील विकासातील महत्व

सहज बोली बोलतांना मुले आता वयात आली अशा शब्द प्रयोग होतांना नेहमीच दिसतो. वयात येणे सामान्यता वय वर्ष 10 आणि वय वर्ष 16 व्या वर्षाच्या दरम्यान हा काळ असतो. ही प्रकिया एका विशिष्ट कमाकमाने होत जाणारी असते. शैशवारथेतून प्रौढत्वात बदल होत जाणारी प्रकिया. प्रत्येक व्यक्तीत वेगळया वयात बदल होतो जसे

Scanned by CamScanner

शारीरिक होणारा बदल, स्वभावात घडून येणारा बदल, जीवनशैलीत होणारे बदल.

याबदलांची काही लक्षणे वयात येण्याच्या प्रक्रियेत याप्रमाणे [illegible]त.



- हात, पाय, बाहू (दंड) नितंब आणि छातीचा आकारात वाढ
- शरीरातील आंतरगत इंद्रियाची निर्मिती होऊ लागेण आणि त्यातून द्रवांची निर्मिती होवू लागणे.
- त्वचा आणखी तैलीय होऊ लागणे
- काख, पाय, हात, याठिकाणी केस येणे

यावेळेसच या वयातील मुला, मुलींना शरीराची मुलभुत निगा [illegible]ण्याबदलच्या सवयी लावण्यासाठी काही साध्या आणि मुलभूत गोष्टी आवश्यकता आहे.

- वयात आल्यावर, घामाचे प्रमाण वाढते. मुलांना रोज स्नान करण्यास सांगणे
- दातांची स्वच्छता करण्यास सांगणे.
- या वयात 'सिबम' चे अधिक प्रमाणात निर्माण होऊन लागल्याने तारूण्यपिटीका (पिंपल्स) अधिक दिसून येते यावर उपाय म्हणजे त्वचा स्वच्छ ठेवणे सर्वोत्तम उपाय.
- पोषक आहार आवश्यक आहे. पोटभर आहार घेणे.
- तसेच याठिकाणी आवर्जून उल्लेख करावासा वाटतो तो असा की 2019 ते 2022 या कोरोना काळात आपण सर्वजन एका विशिष्ट मितीच्या दडपणाखाली वावरतो आहे. अशा वेळी या किशोरवयीन मुलांना डोंक शांत ठेवणे, मन सुदृढ राहण्यासाठी मेडीटेशन योगा, व्यायाम तसेच सकारात्मक विचार करण्यास शिकवणे गरजेचे आहे.

Scanned by CamScanner

पालकांसोबत सुसंवाद असणे :–

पौगंडावस्था हा काळ असा आहे. ज्यामुळे युवा मुलं आणि पालकांना एकमेकांसोबत सुसंवाद साधणं अवघड जात असे निदर्शनास (पाहावयास) येत.

'युवा मुलांनी काही गोष्टी लक्षात घ्याव्या'

- आपल्या कुटूंबातील सदस्यांचा आदर करावा.
- पालकांच्या सुचना, मुल्य, श्रध्दा यांना समजून घ्याव्यात.
- युवा मुलांवर बाहेरी वातावरणाचा, मैत्रीचा, प्रसार माध्यमांचा खुप प्रभाव असतो. पण मुलांनी एक गोष्ट कायम लक्षात ठेवावी ती म्हणजे पालक (आई, वडिल) कायम मुलांच्या चांगल्या हिताचाच विचार करतात.
- आपल्या आई, वडील, भाऊ, बहिण कुटूंबातील इतर सदस्यांसोबत मोकळया गप्पा माराव्यात, त्यांच्या सोबत प्रामाणिक राहावे.
- पालकांसोबत वात्सलपुर्ण, प्रेमपूर्वक वागणूक असावी त्यांची काळजी घ्यावी, आदर करावा.

दोघांनी एकमेकांच्या भावना समजून घ्याव्यात. निर्माण झालेल्या समस्यावर एकत्र बसुन विचारविनिमय करून समस्या सोडवाव्यात. असे केल्यास समाजात निर्माण झालेल्या वर्तमान पत्रात येणाऱ्या रोजच्या बातम्या आत्महत्या, चोरी, खोटे बोलणे वाईट संगत मानसिक तणाव अशा अन कित्येक समस्या कमी होणास नक्कीच सुरूवात होईल असे म्हणणे अतिशयोक्ती ठरणार नाही.

पौंगडावस्थेतील आरोग्य आणि आहार :–

आरोग्याच्या समस्या उद्‌भवण्याचा ही एककाळ आहे. असे म्हणता येइल. आज लोकसंख्येच्या बाबतीत भारताचा जगात दुसरा क्रमांकावर आहे. देशातील संख्या 108 कोटी 10 लाखापेक्षा जास्त आहे. यात पौगंडावस्थेतील वय 10 ते 19 वर्ष वयातील प्रमाण मुलामुलींचे प्रमाण 22.5 टक्के आहे. वयापरत्वे प्रत्येकाचे आरोग्य त्याविषयीच्या गरजा देखील भिन्न भिन्न आहे. आरोग्य समस्या प्रश्न वेगवेगळे आहेत. 2001 च्या जनगणेनुसार तरूणांचे प्रमाण (10 ते 24 वर्षे) जनतेचे प्रमाण 30 टक्के आहे.

Scanned by CamScanner

या वयाच्या आहाराविषयी सांगायचे झाल्यास भरपूर उत्साह, प्रयोगशिल वयोगट, धडपड करणारे वय, जिद्दीचे वय व सळसळणारे रक्त, किंवा प्रत्येक देशाचे बलस्थान असणार वयोगट त्यांच्या सर्वांगीण उत्तम वाढ झाली तरच देशाचे राष्ट्राचे भविष्य उज्वल बनण्यास मदत होईल. पौगंडावस्थेतल्या मुलामुलींच्या आरोग्यपूर्ण विकास आणि वाढीसाठी पूरक आणि साहयक कृतीची गरज आहे. उदा – माहितीपूर्ण मार्गदर्शन, आश्वासक वातावरण आरोग्यपूर्ण सहज उपलब्ध करून देता येणाऱ्या सोयी तसेच समुपदेशन सेवा.

बालपणानंतरचे पुढचे टाकलेले पाऊल हे पौगंडावस्थेची सुरूवात होय. हा काळ बराच परिवर्तनाचा काळ असतो मनाची अवस्था द्विधा असते आपण मोठे झालो असे देखील वाटतेपण निर्णय घेता येत नाही. मनावर ताण घेतो. मानसीक समस्या उद्‌भवण्यावचे हे वय आहे. वागण्या बोलण्यातील बदल खाण्यापिण्याच्या आवड निवडतील बदल, चिडचीड, नैराश्य, हातघाईवर येण लैगिंक समस्या इ. या समस्यांना समर्थपणे सामोरे जाण्यासाठी उपाय म्हणजे समाजात वावरण्यासंबंधित कौशल्य वाढविणे, समस्या निवारणाचे मार्ग शिकणे त्यांच्यातील आत्मविश्वास वाढवणे. यासाठी आरोग्यसेवकांची मदत मिळू शकते.

पौगंडावस्थेत दिसणाऱ्या आरोग्य समस्या :–

1) घातक पदार्थाचे सेवन

2) अपघात

3) हिंसाचार

1) मादक पदार्थाचे सेवन :–

पौगंडावस्थेतील पिढीचे हया पदार्थाबाबत आकर्षण जास्त पाहण्याचे दिसून येते. आजची तरूण पिढी याबाबत चर्चा करतांना त्याचे प्रयोग करतांना दिसत आहे. प्रसार माध्यमे, वेबसिजीर त्यामधील प्रसारण यामुळे त्यांना या गोष्टी 'युजटू' आहेत. असे वाटायला लागले आहे. मात्र हयांचे सेवन टाळण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न केल्यास हिच तरूण पिढी आरोग्यपूर्ण विकास आणि त्यांची वाढ सहज साधता येईल. मादक पदार्थ, तंबाखू दारू आमली पदार्थ अशा तऱ्हेच्या पदार्थाच्या सेवनातून उद्‌भवणाऱ्या धोक्याची जाणीव आरोग्यावर होणारे गंभीर परीणाम,

Scanned by CamScanner

उद्‌वस्त होणारे भविष्य याची जाणीव असणे, मित्र मंडळीच्या आग्रहाला बळी न पडण्यास शिकवणे. ताणतणावाचे योग्यरितीने व्यवस्थापन करण्यास किंवा त्यांचा सामना करण्याचे मार्ग सांगणे. तर पिढीचे हया पदार्थाबाबतचे आकर्षण कमी करता येते.

2) अपघात :–

किशोरवयीन मुलेमुलीन आज अनेक प्रकारची वाहने नियमांचे पालन न करता वापरतांना दिसून येतात. अतिवेगाने, विविध प्रकारचे स्टंट करणे, सिंग्नल वर न थांबणे, रहदारीचे नियमांना फाटा देणे. त्यामुळे आज रस्तावरील अपघातांना बळी पडतांना किशोवयीन मुलामुली आढळतात. यावर उपाय म्हणजे त्यामधील धोक्याची त्यांना जाणिव करून देणे.

प्रबोधने आणि कायदा हयांची सांगड घालून वाहन चालकांस हेल्मेट व सीटबेल्ट लावण्याची सक्ती करणे मादक पदार्थाच्या सेवनानंतर वाहन चालण्यास बंदी करणे

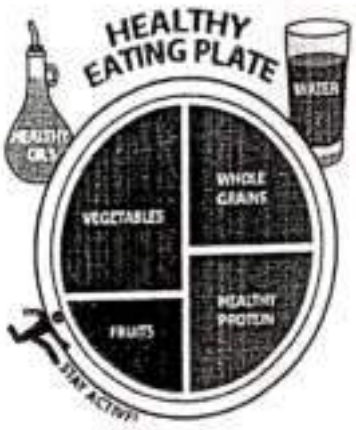
सुरक्षित आर्थिक दृष्टीने परवडणारी सार्वजनिक वाहतूक सेवा उपलब्ध करून देणे.

3) हिंसाचार :–

पौगंडावस्थेतील पिढीसाठी सामाजिक विकासाचे कार्यक्रम हाती घेणे आणि जीवनविषयक कौशल्ये शिकवणे हे उपाय करून हिंसाचार आणि हिंसक वृत्ती काबूत ठेवता येईल, शिक्षक तसेच पालक पाठिंबा देणारे असल्यास ते शारिरीक शिक्षा न करता शिस्त लावतात. आणि प्रश्न सोडविण्याचे विविध मार्ग शिकवून हिंसक वृत्ती कमी करतात. तरी ही तिने डोके वर काढल्यास आरोग्य सेवेने योग्य प्रकारे हाताळणे आवश्यक आहे. म्हणजेच हिंसेला –विशेषतः लैंगिक बळी पडलेल्यांना संवेदनशीलरीतीने उपचार मिळू शकतील सामाजिक (समाजाकडून मिळणारा सहयोग) पाठिंबा तसेच मानसिक मनोबल सातत्याने मिळाल्यास मुले मुली हिंसाचाराच्या दूरगामी परिणामाचा समान योग्य यप्रकारे करू शकतात.

Scanned by CamScanner

पौगंडावस्थेतील आहाराचे महत्व :–



या अवस्थेकरिता आहार आणि पोषण योग्य होणे अत्यंत गरजेचे आहे. याच काळात मुलांमुलीमध्ये अनेक प्रकारे शारीरिक व मानसिक स्थितंतरे होत असण्याचा हा काळ. योग्य मात्र आहार घेतल्या न गेल्याने शारिरीक वाढ खुंटण्यामध्ये परिणाम दिसतात. पोषणमुल्य असणारे अन्न मिळणे हे पौगंडावस्थे करिता खूप महत्वाचे आहे. याच वयातील मुलांमध्ये (वय 10 ते 19 वर्ष) विविध जीवनसत्वाची कमतरता दिसुन येते उदा. मुली–अनिमिक दिसतात लोहांची कमतरता कमी असणे पोटभर न जेवणाची सवय, बाहेर पदार्थ खाण्याकडे असणारा यांचा कल लठ्ठपण या आजाराला आमंत्रण येते मुलींमधील पिसीयुडी चे प्रॉब्लेम या पिढीत रोगप्रतिकार क्षमता याचा अभाव, रोगांचा लवकर होणारा संर्सग जेवणाचा अनियमित वेळा, टिव्ही पाहत जेवण फोन मधील विविध ॲप यांचा अतीरेकी वापर त्यामुळे खाणे पिणे जर व्यवस्थित ठेवले तर कुपोषणाचे परिणाम या पिढीसाठी आणि पुढच्या पिढीत झिरपण्याचे दृष्टचक्र थांबेल. पोषणमुल्य भरपूर असणारे पदार्थ घेण्याची आणि व्यायाम करण्याची सवय लावण्यासाठी हे वय आदर्श वय आहे. असे म्हणण्याचे कारण तरूणावस्थे नंतर येणाऱ्या अवस्थेत पोषणाची संबंधीत आजार टाळण्यासाठी पौंडावस्थेतील मानसिक आणि शारीरिक पायाभरणी फार उपयोगी पडते. आहाराच्या चांगल्या सवयी व निरोगी सृदृढ आरोग्य पूर्ण सवयीमुळे जगभर दिसु लागलेल्या लठ्ठपणाशी ही सामना करता येईल.

लैंगिक व पुनरूत्पादन संबंध आरोग्य

किशोरवयीन मुलामुलींना लैंगिक व पुनरूत्पादन संबंधी आरोग्य शिक्षण देण्याबरोबरच त्यांना त्या शिक्षणाचा उपयोग रोजच्या आयुष्यात करणे तेवढेच महत्वाचे आहे. मी वयात होणारी लग्न, कमी वयात होणारी गर्भधारणा टाळण्यासाठी लग्नाचे ठरवून दिलेले वय

Scanned by CamScanner

कायद्यानुसार त्याची अंमलबजावणी होणे गरजेचे आहे तसेच एकंदर समाजात वावरणाऱ्या मुली, महिला लैंगिक व जबरदस्ती पासून सरंक्षण मिळाले पाहिजे. त्याबाबत कडक शिक्षेची तरतूद आणि अमलबजावणी करणे गरजेचे आहे. पोषणयुक्त अन्न ही मानवाची आवश्यक प्राथमिक गरज आहे. समतोल आहार ही आरोग्याची गुरूकिल्ली आहे. सर्वांगीण विकास व वाढीसाठी अगदी बाल्यवस्थेपासुन चौरस आहार मिळणे गरजेचे आहे. आहारशास्त्रामध्ये अन्नामधील सर्व घटक विचारात घेतले जातात. विशिष्ट वयोगटांची तसेच प्रत्येक अवस्थेनुसार पोषणमुल्यांची एकंदरीत आवश्यकता व गरज लक्षात घेतली जाते ही गरज वय, उंची, लिंग, वजन दररोजची कामी आणि वाढीचा दर अशा अनेक बाबींवर अवलंबून असते.

आहार आणि हाडांचे आरोग्य –

हाडे ही शरीरात महत्वाची भूमिका पार पाडत असतात. आपल्या शरीरातील हाडे आयुष्यभर निरोगी गतीशील राहण्यास मदत होत. शरीर बळगट, दुखापतीपासुन संरक्षण देण्यास आधार देतात. पौगंडावस्थेत कॅल्शीयम सारख्या खनिज द्रव्यांची नितांत आवश्यकता आहे. हाडे सतत जिवंत असतात त्यात बदल होत असतो. नविन हाडे तयार होतात जलुनी हाडे लोप पावतात सांधे व त्याचे घर्षण होत असते त्यासाठी कॅल्शीयम महत्वपूर्ण भूमीका असते हा खनिज विविध हाडांमध्ये कॅल्शीयमच्या रूपात साठवून राहतो म्हणून विविध अवयवांसाठी बॅंकेचे काम करतात तरूण असतांना योग्य पोषण आणि योगासने व्यायाम प्रकाराद्वारे हाडांची निगा व काळजी घेतल्या बळकट राखली जाणार व सहजर पध्दतीने जीवन जगण्यास मदत मिळते.

प्रौढांमध्ये पूर्ण सांगाडा हा दर 7–10 वर्षांनी पुर्नस्थापीत होत असतो. स्त्रियांच्या बाबतीत उच्च प्रमाणात आढळणारा रोग ऑस्टियोपोरोसिस हा रोखता येईल.

हाडांच्या आरोग्याची मुलभुत माहिती –

हाडे म्हणजे जीवितपेशी बालकांच्या शरीरात 300 हाडे असतात तर प्रौढ व्यक्तीच्या शरीरात 206 हाडे असतात हाडे व पेशी आंतरिक इंद्रियांना संरक्षण देतात.

Scanned by CamScanner

हाडांची संरचना –



हाडे मुख्यता प्रोटीन कॅल्शियम, फॉस्फेट आणि मॅग्नेशिअम सारख्या खनिजांची बनलेले असतात. हाडांमध्ये कोलेजेन नावाचा पातळद्रव्य असतो. जो हाडांच्या संरचना (चाकट) तयार करण्याचे काम करतो. तर पेरियोस्टेयम हा पातळ पडदा असतो जा मज्जातंतू आणि रक्तवाहिण्यात असतो बाहेरून हाडांची व सुरक्षा करतो. (Compact bone) या घटकांपासुन हाडांचे बाहेरील आवरण तयार होते. हे हाडांवर फारदाट असते.

कॅन्सल हाडे –

हे स्पंज प्रकारासारखे दिसते हे हाडांच्या आतल्या बाजूला आच्छादन पुरवितो.

पुरेशा प्रमाणात कॅल्शिअमचे सेवन हाडांचे आरोग्य चांगले राखण्यास मदत करतात शरीरात 90 टक्के कॅल्शिअम हे हाडांमध्येच साठविल्या जाते. पौगंडावस्थेत या ही पोषक घटकांचा पुर्तता होणे किंवा आहारात फॉस्फोरस, मॅग्नेशिअम फ्लुराईड व जीवनसत्व यांचा देखील समावेश असावा.

हाडांच्या आरोग्यास प्रभावित करणारी घटक.

1. आनुवंशिकता
2. आहार
3. वय
4. शरीराचा आकार
5. शरीराची हालचाल

या घटकांमुळे हाडांचे आरोग्यावर परिणाम होतो.

- **आनुवंशिकता** – कुटुंबात हाडांच्या संबंधी विकास (आजार) दिसुन येतात. जसे पालकांमध्ये आजी, आजोबांमध्ये हाडांचे संबंधी आजार असल्यास ते होण्याची शक्यता असते गर्भावस्थेत मातेला

Scanned by CamScanner

कॅल्शीअमची कमतरता असेल तर जन्मानंतर बाळामध्ये कॅल्शिअमची कमतरता राहू शकते.

- **आहार** – हाडांचे आरोग्य निरोगी ठेवायचे असल्यास आहारात कॅल्शियम प्राप्त होण्याच्या अन्नपदार्थांचा समावेश अवश्य असावा. तसेच ड जीवनसत्व (Vit 'D')
- **वय** – बाल्यवस्थेत, किशोरावस्था मध्ये तसेच वयाप्रमाणेच हाडांची ताकद बळकटी कमी राहू शकते रजोनिवृत्ती नंतर हाडांच्या तक्रारी, संधीवात, हाडांची ठिसुळत हाडातील लवचीकपणा, कमी होत जाते आणि तक्रारी किंवा आजार वाढू शकतात.
- **शरीराचा आकारमान** : जाड , बारीक आणि कमी वजनाच्या व्यक्तीची हाडे अशक्त असतात.
- **शारीरिक हालचाल**– दरारोज व्यायाम, योगासने, वेगाने चालने, पोहणे, शारीरिक आवश्यक हालचालीमुळे हाडांची ताकत वाढते. त्यातील कडकपणा, हाडांची वेदना सांधे मधील लवचीक वाढू शकते. हाडांमध्ये बळकटी राखण्यास मदतच होते.

पूर्वीच्या काळापेक्षा आजच्या धावपळीच्या जीवनशैलीमुळे स्त्रियांमध्ये हाडांच्या तक्रारीचे प्रमाण हाडतेच आहे. ओस्टिओपोरोसिस हा आजार स्त्रीयांमध्ये जास्त प्रमाणात आढळून येतो आहे. याचे महत्वाचे कारण हाडांमधील खनिज द्रव्य कॅल्शिअम प्रामुख्याने कमी होऊ लागते तेव्हा या आजारची लक्षणे दिसु लागतात.

जसे हार्मोनल बदल–

तरूण आणि प्रौढ स्त्रीयांमध्ये एस्ट्रॉजन हार्मोनचे उत्पादन शरीरात हाडांच्या घनतेचा समतोल राखते. जसे या एस्ट्रॉजन हार्मोनच्या उत्पादनाची कमतरता असल्यास घनतेचा समतोल राखण्यास या बाबींचा व्यत्यय घेतो आणि ओस्टियोपोरोसीस होऊ शकतो.

हाडांची अस्थिखनिज घनत्व (बी.एम.डी) या चाचणीद्वारे शरीरातील खनिजांच्या प्रमाणातील कमतरता सांगू शकता येते.

- रजोधर्म न येणे
- रजोधर्म नियमित नसणे

- प्रथम र
- Early
हाडांची

पौगंडावस्थेत

या
घटकांचा समा
प्रोटी
फ्लूराईड, के
चीज बटर,
राजगीरा यु
टोफूचीक्की, I
बनाना चिप्स
वाढविण्यास f

श्रेणी
लहान मुले
मुली
स्त्रीया
गर्भवस्ती

Scanned by CamScanner

- प्रथम रजोधर्म फार उशीरा सुरू होणे
- Early menopause

हाडांची घनत्व कमी करण्यास कारणीभूत होऊ शकतात.

पौगंडावस्थेत आहारात वाढविण्यात येणारे घटक व प्रमाण –

या अवस्थेकरीता त्याच्या अन्नपदार्थातून किंवा आहारातून या घटकांचा समावेश असावा.

प्रोटीन, कॅल्शिअम, फॉस्फेट, मॅग्नेशिअम, जीवनसत्व, ड पलूराईड, के जीवनसत्व, दूध दूधाचे पदार्थ काही डेअरी पदार्थ – पनीर चीज बटर, फोर्टिफाईड दूध मासे, मांस, मोड आलेली कडधान्य, राजगीरा युग्त पदार्थ, सोयाचंग्स, सोया मिल्क, पिनट बटर, टोफूचीक्की, स्किम्ड, मिल्क, मोऊनीज, पालक, सुकामेवा, खोबरा, बर्फी, बनाना चिप्स, शिरीदांडका चटणी, दही, शरीराचे मोटाबोलिझम वाढविण्यास व्हिटॅमिन डी महत्वाचे कार्य करते.

रोजच्या आहारातील कॅल्शियम प्रमाण

श्रेणी	वय	प्रमाण
लहान मुले	1 ते 3 , 4 ते 8	500 ते 700
मुली	9 –11 ते 12–18	1000 ते 1300
स्त्रीया	19–20 ते पुढे 50	1000 ते 1300
गर्भवस्ती	19–30 ते 31 ते 50	1000 ते 1300

Scanned by CamScanner

विविध अन्नपदार्थातील कॅल्शिअम प्रमाण

अन्नस्त्रोत डेअरी	देण्याचे मापन	प्रमाण
साधे दुध	1 कप 250 मिली	285
स्किम्ड मिल्क	1 कप	310
साधेदही	1 टब 200 ग्रॅम	340
कमी फॅटचे दही	1 टब	420
सेडरचिज	40 ग्रॅम क्युब	310
कॉटेज चिझ	100 ग्रॅम	80
पांढरा ब्रेड	1 स्लाईज	15
उकडलेला पालक	1 कप (340 ग्रॅम)	170
फजन मिट	1/2 कप	230
फोजन सारडिन्स	50 ग्रॅम	190
बदाम	15 नग	50

कॅल्शिअमयुक्त आहार घेऊन जीवनाची गुणवत्ता राखता येऊ शकते जीवनसत्व के शरीरात आहारातून कॅल्शिअम शोषणास मदत करते. सूर्यप्रकाशाद्वारे के जीवनसत्वाचा पुरवठा शरीरास आपल्या त्वचेद्वारे होतो Osteoblasts, Osteoclasts हया दोन्ही पेशीतील समतोलनाचे शरीरातील खनिजांचे योग्य संतुलन राखले जाते

आयुष्यभर नवीन हाडे तयार करणे, जुनी हाडे लोप पावण्याच्या प्रक्रियेतून जात असतात. जसे जसे वय वाढते तस तसे जास्त प्रमाणात हाडे झिज वाढण्याचे प्रमाण कमी होते ही एक सामान्य अशी प्रकिया आहे. आरोग्याचा समतोल राखसाठी नियमित व्यायात करणे तसेच कॅल्शिअमचे प्राप्त होण्याऱ्या पदार्थाचा आहार आर्वजून समावेश करणे गरजेचे आहे.

आजच्या तरूण पिढीसाठी काही नवीन पदार्थ आहारात सुचविलेले आहे.

Scanned by CamScanner

- तंतूमय पदार्थ (फायबर) ग्रिनव्हेजीटेबल सलाद, सोबत ऑर्लिव्हआईल
- कुकिजनट
- ब्रोकोली व्हेजी कटलेट
- Vitus krespysh (पॅकेटमध्ये 18 गोळया)
- ओट चा पदार्थ
- एग्ज सॅण्डवीज होममेड सुप, ज्युस इत्यादी

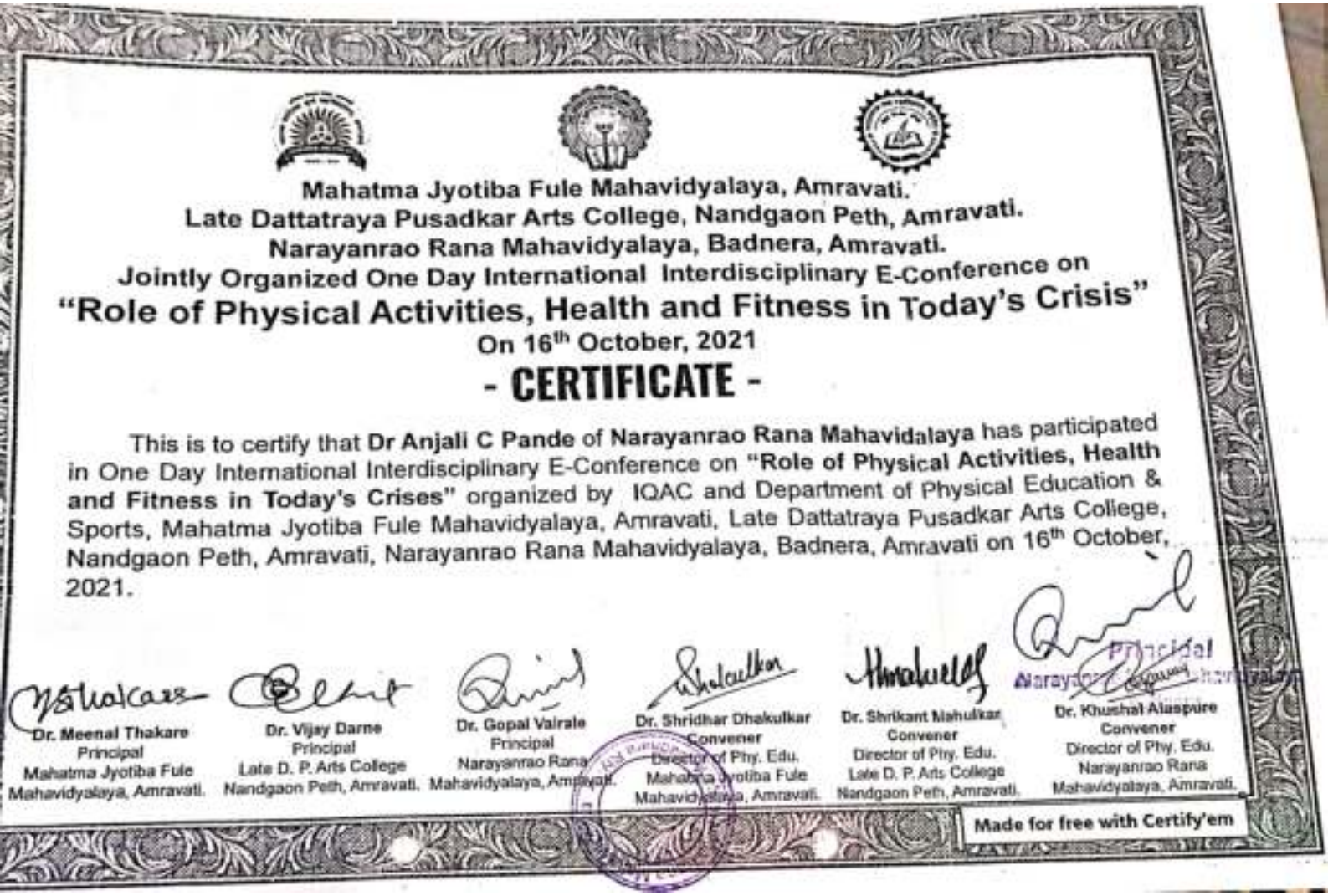
नाविन्यपूर्ण आहार देणे देखील आज व गरजेचे होऊन बसले आहे

आधीच सुचविल्या प्रमाणे बालपण संपून तारूण्य सुरू होण्याचा काळ यास म्हटले जाते. मुलामुलींच्या भावि जीवननाकरिता हा काळ अत्यंत महत्वाचा असतो मानसशास्त्र अभ्यासकांनी देखील या अवस्थेला विशेष महत्व दिले आहे. जे शारीरिक बदल होतात त्यात मुलांमध्ये टेस्टोस्टेशन तर मुलींमध्ये इस्टोजेन ही संप्रेरके कारणीभूत असतात.

प्रौगडावस्थेत मुलामुलींना पालकांचा सकारात्मक आधार, उपजिविकेसाठी चांगल्या प्रकारचे शिक्षण घेण्यासाठी मार्गदर्शन घरातील वातावरण मोकळे ठेवणे. मुलांमुलींमध्ये उर्जेला योग्य वळण देऊन कर्तृत्वान व्यक्तिमत्व घडविणे पालकांचे कर्तव्य असते. यासर्वांमुळे समाजविकासही चांगला घडून येतो, आणि पौगांडावस्था सहज निभावून नेता येते.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner



Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati.
Late Dattatraya Pusadkar Arts College, Nandgaon Peth, Amravati.
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.
Jointly Organized One Day International Interdisciplinary E-Conference on

"Role of Physical Activities, Health and Fitness in Today's Crisis"

On 16th October, 2021

- CERTIFICATE -

This is to certify that **Dr Anjali C Pande** of **Narayanrao Rana Mahavidalaya** has participated in One Day International Interdisciplinary E-Conference on **"Role of Physical Activities, Health and Fitness in Today's Crises"** organized by IQAC and Department of Physical Education & Sports, Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati, Late Dattatraya Pusadkar Arts College, Nandgaon Peth, Amravati, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati on 16th October, 2021.

Dr. Meenal Thakare
Principal
Mahatma Jyotiba Fule
Mahavidyalaya, Amravati.

Dr. Vijay Darne
Principal
Late D. P. Arts College
Nandgaon Peth, Amravati.

Dr. Gopal Valrale
Principal
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya, Amravati.

Dr. Shridhar Dhakulkar
Convener
Director of Phy. Edu.
Mahatma Jyotiba Fule
Mahavidyalaya, Amravati.

Dr. Shrikant Mahulkar
Convener
Director of Phy. Edu.
Late D. P. Arts College
Nandgaon Peth, Amravati.

Principal
Narayan...

Dr. Khushal Alaspure
Convener
Director of Phy. Edu.
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya, Amravati.

Made for free with Certify'em

Scanned by CamScanner

RESEARCH NEBULA
An Indexed, Refereed & Peer Reviewed Journal

J-Gate INDEXED

ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

DOI PREFIX 10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE

On

ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS

16th October, 2021

Jointly Organized by

IQAC, AND DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION & SPORTS
MAHATMA JYOTIBA FULE MAHAVIDYALAYA, AMRAVATI. (M.S.)

LATE DATTATRAYA PUSADKAR ARTS COLLEGE, NANDGAON PETH, AMRAVATI. (M.S.)

NARAYANRAO RANA MAHAVIDYALAYA, BADNERA, AMRAVATI. (M.S.)

Special Issue on 16th October, 2021
www.ycjournal.net

Scholarsteer

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Narayanrao Rana Mahavidyalaya * Badnera (M.S.) *

Scanned by CamScanner

81.	**DR. AKASH VIJAYRAO MORE** Yuvashakti Arts & Science College, Amravati *akashmore1977@gmail.com*	STUDY OF THE EFFECTS OF BREATHING TECHNIQUES WITH MUSIC ON PHYSIOLOGICAL COMPONENTS OF COLLEGIATE STUDENTS	265
82.	**DR. DINANATH NAWATHE** Professor, Degree College of Physical Education Amravati, Maharashtra **MR. ASHISH SOLANKE** Degree College of Physical Education Amravati.	COMPARATIVE STUDY OF EYE-HAND CO ORDINATION AND FLEXIBILITY BETWEEN CRICKET AND HOCKEY PLAYERS	268
83.	**DR. YOGESH S. NIRMAL** Assistant Professor, Shri H.V.P. Mandal's Degree College of Physical Education, Amravati (M.S.) nirmalys@rediffmail.com	EFFECT OF SIX WEEK FREE HAND EXERCISES ON MUSCULAR ENDURANCE OF ATHLETES	271
84.	**DR. ANJALI CHANDRAKANT PANDE** Head, Home Economics Department Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati chepemanjiri@gmail.com	NUTRITION FOR ATHLETIC PERFORMANCE	275
85.	**DR. SUDHIR D. PATHARE** Director of Physical Education Shriram Kala Mahavidyalaya Dhamangaon Rly, Dist. Amravati (M.S.)	SOCIAL IMPACT OF PHYSICAL FITNESS ON SOCIETY	277
86.	**DR. ATUL R. PATIL** Director of Physical education and sports Bar. R.D.I. K. and K. D. College Badnera-Amravati-444701 (M.S.) INDIA atulpatilrdik@yahoo.co.in	SPORTS MOTIVATION	279
87.	**DR. GAJENDRA B. RAGHUWANSHI** Director of Physical Education & Sports, Smt. K. L. College, Amravati (M.S.) *gb.raghuwanshi@gmail.com*	THE CONTRIBUTION OF PHYSICAL EXERCISE ON PHYSICAL FITNESS	281
88.	**MRS. SHITAL S. RAUT** Indira Mahavidyalay, Kalamb. District: Yavatmal shital.raut123@gmail.com	THE IMPACT OF SOCIOECONOMIC STATUS ON THE PERSONALITY TRAITS OF WOMEN HANDBALL PLAYERS	284
89.	**DR. CHETAK R. SHENDE** Shri shivaji College of Physical Education Amravati	A STUDY OF SELECTED PHYSICAL FITNESS VARIABLES AMONG THE STUDENTS OF MAHARASHTRA AND KASHMIR	287
90.	**DR. SHIRISH V. TOPARE** Director of Physical Education and Sports Bharatiya Mahavidyalaya, Morshi	ROLE OF POLITICS IN SPORTS	289
91.	**PROF. GANESH S. VISHWAKARMA** Director, Sports & Physical Education, S.M.B. Shingne Arts College, Khamgaon	PHYSICAL EDUCATION FOR THE SOCIETY	291
92.	**PROF. SARJERAO RAMBHAU WAGH** Director of Physical Education, Narayanrao Nagre College, Dusarbid,Buldhana waghsarjerao773@gmail.com	A STANDARD OF LIVING OF GOVERNMENT EMPLOYEE AND SELF-EMPLOYED P. E. TEACHERS	293
93.	**DR. VIKRANT RAMCHANDRA WANKHADE** Director of Physical Education & Sports Bharatiya Mahavidyalaya, Amravati (M.S.) vrwankhade1975@gmail.com	EFFECT OF LEZIM EXERCISE ON OBESE AND OVERWEIGHT COLLEGIATE STUDENTS	296

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 7.399

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

DR. ANJALI CHANDRAKANT PANDE

Head, Home Economics Department
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati

One Day International Interdisciplinary E-Conference On
ROLE OF PHYSICAL ACTIVITIES, HEALTH AND FITNESS IN TODAY'S CRISIS
On 16th October, 2021 @
Mahatma Jyotiba Fule Mahavidyalaya, Amravati. , Late Dattatraya Pusadkar Arts College, Nandgaon Peth, Amravati. & Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

NUTRITION FOR ATHLETIC PERFORMANCE

ABSTRACT

Nutrition is the provision to cell and organisms, of the materials necessary to support life. Many common health problems can be prevented by taking healthy diet. Nutrition is the supply of materials, food required by organism and cells to stay alive. In science and human medicine, nutrition is the science and practice of consuming and utilizing foods. Nutrition also focuses on how diseases, conditions and problems can be prevented or lessened with a healthy diet.

Athletic performance and recovery from training are enhanced by attention to nutrient intake. Optimal needed to support regular training and peak performance. As training demands shift during the year, athletes need to adjust their caloric intake and macronutrient distribution while maintaining a high nutrient dense diet that supports their training and competition nutrient needs. The following key points summarize impacts of training on energy, nutrient and fluid recommendations for competitive student-athletes as recommended by the college of Sports Medicine.

Carbohydrate, The primary fuel for higher ntensity activity is required to replenish liver and lycogen stores and to prevent low blood sugar hypoglycemia) during training and performance. arbohydrate intake has been well documented to ave a positive impact on adaptation to training, erformance and improved immune function. During ase training, a daily intake to between 5-7 grams of arbohydrate per kilogram of body weight per day is ivised. As training intensity and/or volume increase, rbohydrate need may easily exceed 10 grams of rbohydrate per kilogram of body weight. Athletes ould begin to think about fueling for stores, can be lculated based on 1-1.2 grams of carbohydrate per ogram of body weight and should be consumed mediately following training sessions 90 minutes or h intensity shorter duration training sessions. thin 2 hours following training, additional bohydrate will held continue glycogen repletion. e experts in performance nutrition recommended letes focus their food choices on less refined types fruits and vegetables are excellent source of high lity carbohydrate.

Protein in the foods is broken down into individual amino acids. Body uses the amino acids to built and repair the various parts of the body. Muscles contain lots of protein. Protein requirements are slightly higher in both endurance (1.2-1.4 grams per kilogram body weight) and strength-training student-athletes (1.6-1.7 grams per kilogram body weight). Fortunately, the higher intakes recommended for athletes is easily achieved in a well balanced diet without the use of additional supplements.

Fat intakes is an important source of essential fatty acids and carrier for fat soluble vitamins necessary and are stored in muscle as triglyceride for use during activity. Dietary intake is suggested to be between 20 the diet and the ability to consistently improve performance.

In general, vitamin and mineral supplements are not required if a student-athlete is consuming adequate energy from a variety of foods to maintain body weight. However, the risk of micronutrient deficiencies is greatest in student-athletes restricting calories, engaging in rapid weight-loss practices or elliminating specific foods or food groups from their diet. A multivitamin providing no more than 100 percent of the daily recommended intake can be considered for these student-athletes. Female student-athletes are especially prone to deficiencies in calcium and iron due to the impacts of regular menstrual cycles, avoidance of animal products and/or energy restriction. The diets and iron status of endurance athletes and vegetarians (especially females) should be evaluated. However, mega doses of specific vitamins or minerals (10 to 100 times the dose of daily requirements) are not recommended.

The maintenance or attainment of an ideal body weight is sport-specific and represents an

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 7.399

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN
ISSN 2277-9071

important nutrition regimen, particularly those competing in "weight class" sports (e.g., wrestling, rowing), sports that favor those with lower body weight (e.g. distance running, gymnastics), sports requiring student-athletes to wear body contour-revealing clothing (track, diving, swimming, volleyball) and sports with subjective dodging related to "aesthetics". These student-athletes are encouraged to eat to provide the necessary fuel for performance, yet they often face self or team-imposed weight restrictions. Emphasis on low body weight or low body fat may benefit performance only if the guidelines are realistic, the calorie intake is reasonable and the diet is nutritionally well-balanced.

The use of extreme weight-control measures can jeopardize the health of the student-athlete and possibly trigger behaviors associated with eating disorders. Studies have shown that at least 40 percent of member institutions reported at least one case of anorexia nervosa or bulimia nervosa in their athletics programs.

A more prevalent issue are the large number of sub-clinical or chronically dieting athletes. Department wide efforts to educate staff and student-athletes should include addressing the negative impacts of under fueling and weight/food preoccupation on the athlete's performance and overall well-being. Although dysfunctional eating is much more prevalent in women (approximately 90 percent of the reports in the studies were in women's sports) dysfunctional eating also occurs in men. Female athletes who miss 3 or more menstrual cycles in a year are preoccupied with weight, experience rapid changes in body weight, avoid eating with others, are over focused on shape and food are exhibiting warming signs worth addressing if prevention of eating disorders. The medical examination and updated history bylaw is an opportunity to assess athletes for the these risk factors and referral to appropriate professionals for further evaluation and diagnosis is critical.

Body composition and body weight can affect exercise performance but should not be used as the main criteria for participation in sports. Decision regarding weight loss should be based on the following recommendations to reduce the risk of disordered eating.

1. Weight loss (fat loss) should be addressed during base or transition phases
2. Weight loss goals should be determined by the student-athlete, medical and nutritional personnel, with consultation from the coach.
3. Weight loss plans should be individualized and realistic.

For each student-athlete, there may be a unique optimal body composition for performance, for health and for self-esteem. However, in most cases, these three values are not identical. Mental and physical health should not be sacrificed for performance. An erratic or lost menstrual cycle, sluggishness or an obsession with achieving a number on a scale may be signs that health is being challenged.

References

1. Balvikas – Dr.Nalini Varadpande
2. Poshan ani Aaharshastra – Triveni Farkade, Sulbha Gonge
3. The Female Athlete Triad-College of Sports Medicine (CSM). Position Stand, Medicine and Science in Sports and Exercise, 39:10:1-10-2007.
4. Exercise and Fluid Requirements-College of Sports Medicine.
5. Dale, KS, Landers DM. Weight control in wrestling: eating disorders or disordered eating? Medicine and Science in Sports and Exercise. 31:1382-1389,1999.
6. http://www.buzzle.com/articles/why-is-a-balance-diet-importance.html.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Badnera

Narayanrao Rang Mahavidyalaya * Badnera RN *

Scanned by CamScanner

21-22

CVAINB-2021

CERTIFICATE

Participation

International Multidisciplinary E - Conference On Contribution of Various Aspects In Nation Building

Date : 11 th to 13 th October 2021

IJSRST

Organised by

Department of [English, Marathi, Sociology, History, Commerce, Home Economics, Chemistry, Botany and Mathematics]

Shetkari Shikshan Sanstha's

ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, MAREGAON (ROAD)

Affiliated to SGB Amravati University, Amravati (M.S.)

Ref : CVAINB-2021/Certificate/8559

13-Oct-2021

This is to certify that **Dr. Manjiri M. Chepe** has presented a research paper entitled ***'Contribution of Various Techniques for Fitness'*** in the CVAINB-2021 held during 11th to 13th October 2021, Organized By Department of [English, Marathi, Sociology, History, Commerce, Home Economics, Chemistry, Botany and Mathematics] Arts, Commerce & Science College, Maregaon Dist. Yavatmal, Maharastra, India

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Dadhora

Convener	Chairman	Organizing Secretary,
Dr. D. A. Gundawar	Dr. A. N. Gharde	Prof. Dr. S. K. Khade
CVAINB-2021	Chairman	CVAINB-2021
	CVAINB-2021	

Scanned by CamScanner

Online ISSN : 2395-602X
Print ISSN : 2395-6011

International Journal of Scientific Research in Science and Technology

Certificate of Publication

Ref : IJSRST/Certificate/Volume 9/Issue 5/8559 13-Oct-2021

This is to certify that **Dr. Manjiri M. Chepe** has published a research paper entitled *'Contribution of Various Techniques for Fitness'* in the International Journal of Scientific Research in Science and Technology (IJSRST), Volume 9, Issue 5, September-October-2021.

This Paper can be downloaded from the following IJSRST website link
https://ijsrst.com/IJSRST219567
IJSRST Team wishes all the best for bright future

Principal
Narayanrao Ravi Mahavidyalaya
Basmora

Editor-in-Chief
IJSRST
Website : http://ijsrst.com

Scientific Journal Impact Factor = 7.314

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Scanned by CamScanner

PRINT ISSN : 2395-6011
ONLINE ISSN : 2395-602X

ABSTRACT BOOK

IJSRST

TECHNO SCIENCE ACADEMY

International Multidisciplinary E-Conference On Contribution of Various Aspects In Nation Building

Date : 11th to 13 th October 2021

Organised by

Department of [English, Marathi, Sociology, History, Commerce, Home Economics, Chemistry, Botany and Mathematics]
Shetkari Shikshan Sanstha's
Arts, Commerce & Science College, Maregaon Dist.
Yavatmal, Maharastra, India

INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC RESEARCH IN SCIENCE & TECHNOLOGY

VOLUME 9 - ISSUE 5 , SEPTEMBER-OCTOBER-2021

Email : editor@ijsrst.com Website : http://ijsrst.com

Principal
Gadnera

Scanned by CamScanner

International Multidisciplinary E- Conference On Contribution of Various Aspects In Nation Building
In Association with International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Volume 9 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

Contribution of Various Techniques for Fitness

Dr. Manjiri M. Chepe[1]
[1]Head Department of Home Economics, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati, Maharashtra, India

I. INTRODUCTION

1. **Power Yoga :**

Ashtanga Vinyass Yoga or Ashtanga Yoga is a System of Yoga popularized by K. Pattabhi Jois and which is often promoted as a Modern day from of classical Indian Yoga panabhi jois began his yoga studies in 1927 at the age of 12 and by 1948 had established an institute for teaching the specific Yoga practice known as Ashtanga (Sanskrit for "eight-limbed") Yoga power Yoga and Vinyasa Yoga are generic terms that may be refer to any type of various Yoga exercise derived from Ashtanga Vinyasa Yoga.

The term Vinyasa refers to the alignment of movement and breath, a method which turns static Yoga postures into a dynamic flow. The length of one inhale or one exhale dictates the length of time spent transitioning between postures, poses are then held for a predefined number of breaths. In effect, attentions is placed on the breath and the journey between the postures rather than solely on achieving prefect body alignment in a pose, as is emphasized in Hatha yoga.

The term Vinyasa also refers to a specific series of movement that are frequently done between each pose in a series. This Viyasa 'flow' is a variant of surya namaskar, the sun salution, and is used in other styles of Yoga beside Ashtanga Vinyase Yoga. A standared Vinyase consistas (for example) of the flow from caturayga or plank to caturayga dayyasana or low plank, to urdhva mukhauvanasana of upward facing dog, to Adho Mukha Svanasana or downward facing dog.

2. **Aerobics :-**

Aerobics is a form of physical exercise that combines rhythmic aerobic exercise with stretching and strength training routines with the goal of improving all elements of fitness (flexibility, muscular strength and cardio-vascular fitness). It is usually performed to music and may be practiced in a group setting led by an instructor (fitness professional), although it can be done solo and without musical accompaniment. With the goal of preventing illness and promoting physical fitness. Practitioners perform various routines comprising a number of different dance-like exercises. Formal aerobics classes are divided into different levels of intensity and complexity. Aerobics classes may allow participants to select their level of participations according to their fitness levels. Many gyms offer a variety of aerobics classes. Each class is designed for a certain level of experience and taught by certified instructor with a specialty area related to their particular class.

Aerobic gymnastics, also known as sport aerobics and competitive aerobics is a type of competitive aerobics involving complicated choreography, rhythmic and acrobatic gymnastics with elements of aerobics. Performance is divided into categories by age, sex and

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

groups (individual mixed pairs and trios) and is judged on the following elements, dynamic and static following elements : dynamic and static strength, jumps and leaps, kicks, balance and flexibility. Ten exercises are mandatory : four consecutive high leg kicks patterns. A maximum of ten elements from following families are allowed push-ups, supports and balances, kicks and splits, jumps and leaps. Elements of tumbling such as handsprings, handstands, backs flips and aerial somersaults are prohibited scoring is by judging of artistic quality creativity execution and difficulty of routines. Sport aerobics has state, national and international competitions, but is not an Olympic sport.

3. Reike :-

Reike is one of the five streams of Qigong, a form of physical and spiritual discipline originating in China. These five streams include the popular martial arts that employ mostly physical exercise to strengthen body and mind; medical Qigong exercises popular in Japan that combat disease by storing vital energy in the lower abdomen. Confucian Qigong aimed at calming the mind and making it receptive to moral wisdom. Taoist Qigong which includes breathing exercises, internal massage, Visualization and physical exercises to achieve the perfect balance of body, mind and soul, and Buddhist Qigong exercise that focus on the expansion of inner awareness. Reiki is an offshoot of Buddhist Qigong.

The list of benefits attributed to Reiki is long and varied. Benefits include balancing the organs and glands and their bodily functions as well as balancing the energies in the body. Adapting to the natural needs of the receiver, the Reiki energy releases blocks and suppressed feelings relaxex and reduces stress and relieves pain. It promotes natural self healing and heals holistically, strengthening the immune system while treating the symptoms and causes of illnesses. It strengthens the life force energy, enhancing personal awareness, promoting creativity and strengthening intuition.

4. Herbal treatment (Herbalism) :-

Herbalism is a traditional medicinal or folk medicine practice based on the use of plants and plant extracts. Herbalism is also known as botanical medicine, medical herbalism, herbal medicine, herbology, herblore and phyotherapy. The scope of herbal medicine is sometimes extended to include fungal and bee products, as well as minerals, shells and certain animal parts. Phamacognosy is the study of medicines derived from natural sources. Traditional use of medicines is recognized as a way to learn about potential future medicines. In 2001, researchers identified 122 compounds used in mainstream medicine which were derived from "ethnomedical" plant sources 80% of these compounds were used is the same or related manner as the traditional ethno medical use. Plants have evolved the ability to synthesize chemical compounds that help them defend against attack from a wide variety of predators such as insects, fungi and herbivorous mammals. By chance some of these compounds, whilst being toxic to plant predators, turn out to have beneficial effects when used to treat human diseases. Such secondary metabolites are highly varied in structure, many are aromatic substance, most of which are phenols or their oxygen-substituted derivatives. At least 12,000 have been isolated so far a number estimated to be less than 10% of the total. Chemical compounds in the plant mediate their effects on the human body by binding to receptor molecules present in the body such processes are identical to those already well understood for conventional drugs and as such herbal medicines do not differ greatly from convention drugs in terms of how they work. This enables herbal medicines to be in principle just as effective as conventional medicines but also gives them the same potential to cause harmful side effects. Many of the herbs and species used by humans to reason food yield useful medicinal compounds.

5. Music :-

Principal
Narayanrao Kale Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

The interplay of exercise and music have been long-discussed, crossing the disciplines of biomechanics, neurology, physiology and sport psychology. People "automatically feel the beat" of the music. They listen to and instinctively adjust their walking pace and heart rate to the tempo of the music. Listening to music while exercising has been found in multiple studies to create an increased sense of motivation, distracting the mind while increasing hearts rate. Faster tempo music has been found by researchers to motivate exerciser's to work harder when performing at a moderate pace, but peak performance has been found to be unaffected by listening to music. In a study published in 2009, researchers at the Research Institute for sport and Exercise sciences at Liverpool John Moores University had 12 subjects ride a stationary bicycle at a pace that they could sustain for 30 minutes while listening to a song of the subjects choice. In successive trials, they rode the bikes again, with the tempo of the music variously increased or decreased by 10% without the subject's knowledge. The researchers found that the rider's heart rate and mileage decreased when the tempo was slowed, while they rode a greater distance, increased their heart rate and enjoyed the music more at the faster tempo. Though the participants thought their workout was harder at the more upbeat tempo, the researchers found that when the faster - paced music was heard while exercising " the participants chose to accept, and even prefer, a greater degree of effort". Scientists at the university of Wisconsin-La Cross found in a 2003 study that participants who chose to listen to faster-paced music generated a higher heart rate, pedaled harder and generated more power. Increasing their level of work by as much as 15% by diverting their focus to the music. The study tested 20 volunteers who listened to an MP3 player loaded with a mix of 13 songs that they selected and then rode and exercise bike for an hour at a pace and gear of their choice. The study found that heart rates rose from 133 to 146 beats per minutes and power output increased accordingly when listening to the tempo-less sound of crashing waves versus music with a medium to fast tempo. A 2004 study by a research team from Australia, Israel and the United states found that runners performing at a pace where they were at 90% of their peak oxygen up take enjoyed listening to music, but that the music had no effect on their heart rate or running pace, regardless of the music tempo.

II. CONCLUSION

The above discussions concludes that Vibrational medicines such as power Yoga, Aerobes, Reiki, Herbal, Treatment and music plays a very vital role in fitness. If these simple treatments are followed lot more can be achieved in terms of fitness, than it can be done thorough conventional methods like gaming and steroids. If the above mentioned methods can be implemented effectively on grass root leavels, it will have a very positive impact on today's youth.

III. REFERENCES

[1]. www.wikipedia.com

[2]. www.aerobics .com

[3]. www.google.com

[4]. Acharya Deepak and Shrivastava Anshu (2008): Indigenous Herbal medicines, Aavishkar Publishers Distributor, Jaipur.

[5]. Aggrawal BB, Sundaram C, Malani N, Ichikawa H (2007), Advances in Experimental Medicine and Biology 595.

[6]. Staff, Upbeat music Boosts Exercise Intensity, Medical News Today, August 26, 2010.

[7]. Fauber, John Via Milwaukee Journal Sentinel, Workout with a tempo : choice of music can effect exercise intensity.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badgaon

Scanned by CamScanner

20-21

Shri Gajanan Maharaj Shikshan Sanstha, Amravati

Narayanrao Rana Mahavidyalaya,

Badnera, Amravati

Organized

One Day Interdisciplinary National E-Conference on

Impact of COVID-19 on World :
Problems, Challenges and Opportunities

Date : Monday 15th June 2020

CERTIFICATE

This is to certify that

Dr Anjali C Pande

Has participated in One Day Interdisciplinary National E-Conference on "Impact of COVID-19 on World : Problems, Challenges and Opportunities" organized by Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati.

Dr. O. B. Munde	Dr. S. G. Bhangdiya (Malani)	Dr. S. J. Holey	Dr. G. S. Vairale
Convener	Co-Convener	Co-Convener	Principal

Principal

...idyalaya

Scanned by CamScanner

33	Women Empowerment & Entrepreneurship **Dr.Anjali Chandrakant Pande**	151
34	Impact of covid-19 on domestic tourism Dr. **Jaideep Hire**	156
35	Impact of covid-19 on india tourism and travel industry **Sharath P. G**	163
36	History Of Pandemic In India **Asmita Dubey**	169
37	"Empowerment of community affected due to loss of employment during COVID-19 Pandemic situation" **Prashant Kanade,**	175
38	The Effect of Corona on Women's Life **Dr. Sangita G. Bhangdiya**	189
39	Impact Of Covid-19 On World: Problems, Challenges And Opportunities **Dr. Wasudeo J. Uike**	184
40	Nineteentips To Defuse The Impact Of Covid-19 On Health **Dr. Satish R.Modani**	189

Principal
Narayan... Vidyalaya

Scanned by CamScanner

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 237
ISSN : 2278-9308
June,2020

Women Empowerment & Entrepreneurship

Dr.Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor
Department of Home-Economics Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera, Distt.-Amravati

Introduction :

Women Empowerment is the process of empowering the women. It is that creates power in individuals over their own lives, society and in their communities. People are empowered when they are able to access the opportunities available to them without limitations and restrictions such as in education profession and life style. Feeling entitled to make your own decision creates a sense of empowerment. Empowerment includes the action of rising the status of women through education rising awareness, literacy and training. Women empowerment is all about equipping and allowing women to make life - determining decisions through the different problem in society. Alternately, it is the process for women to redefine gender rolls that allows them to acquire the ability to choose between known alternatives whom have otherwise been restricted for such an ability. Women empowerment has become significant topic of discussion in development and economics. It can also point to the approaches regarding other trivialized genders in particulars political or social contact.

Empowerment of women is a necessity for the very development of society, since it enhances both the quality and the quantity of human resources available for development. Women's empowerment and achieving gender equality is essential for our society to ensure the sustainable development of the country.

Entrepreneurial activities have been shown to influence economic development and growth. The powerful role women can play in this process has been the theme of much entrepreneurial research, mostly from developed nations. The contribution of entrepreneurs to economic advancement is likely to differ in developing countries, and remains a relatively unexplored research topic. Women, who constitute nearly half the population, can be a strong resource for sustainable socio-economic development given adequate support, but are unfortunately given only secondary roles, especially in developing and under-developed countries.

Economic growth and development of any country are determined by human, physical and financial resources. An economy can move on to higher levels of growth either by acquiring a larger quantum of the factors of production or through technical progress. The objective of any planned development is to develop human resources to their brimming utilization. Therefore, industrialization is one of the ways of bringing about socio-economic development in any country. The economic development of a nation is sparked largely by its enterprising spirit.

Women entrepreneurs are those women who think about business or enterprise, initiate it, organize and combine the factors of production. Open the enterprise and undertake

Principal
Narayan...

Scanned by CamScanner

risks and handle economic uncertainly involved in running a business. Women entrepreneurs are creating jobs, innovation and contributing to the GNP of various economies just like their male counterparts. There is growing evidence that women are more likely to reinvest their profits in education, their family and their community. Ironically traditional measures of economic development and business performance do not often capture the true transformational benefits of these transformational businesses.

Any strategy aimed at economic development will be lop-sided without involving women who constitute half of the world population. Evidence has unequivocally established that entrepreneurial spirit is not a male prerogative. Women entrepreneurship has gained momentum in the last three decades with the increase in the number of women enterprises and their substantive contribution to economic growth. The industrial performance of Asia-Pacific region propelled by Foreign Direct Investment, technological innovations and manufactured exports has brought a wide range of economic and social opportunities to women entrepreneurs.

In this dynamic world, women entrepreneurs are an important part of the global quest for sustained economic development and social progress. In India, though women have played a key role in the society, their entrepreneurial ability has not been properly tapped due to the lower status of women in the society. It is only from the Fifth Five Year Plan (1974-78) onwards that their role has been explicitly recognized with a marked shift in the approach from women welfare to women development and empowerment. The development of women entrepreneurship has become an important aspect of our plan priorities. Several policies and programmes are being implemented for the development of women entrepreneurship in India. There is a need for changing the mindset towards women.

Definition of the terms :

Economic Development

Economic development is the sustained, concerted actions of policy makers and that promote the and of a specific area.

Women Entrepreneurs :

It was operationally defined as 'As enterprises owned and controlled by women having a minimum financial interest of 51% of the employment generated in the enterprises to women.

Economic Development

Economic development of a country is usually determined by the growth of per capita income. However, other than per capita income, in the essence of modern economic growth, we also know that, on average, it might be measured with other fundamental changes that occur. Such changes are, among other things, the way people live, as they are more likely to move to cities and work in factories, no longer in farms. That happens as the household industries tend to decline and replaced by larger enterprises. Other indicators that we might see are the tendency of the families to reduce the number of children, so the birth rate begins to fall. Development could be seen also from the point of view of employment progress,

Principal
Narayanrao

Scanned by CamScanner

capital, business volume and consumption. In other words, economic development can be seen in the structural change of the society, and implies more than just economic growth.

Concept of women Entrepreneurs :

Women entrepreneurship has long been associated with concepts such as women empowerment and emancipation. Increasingly, it has also been marketed as crucial for increasing the quality of life of women in the developing world. Further, it has also been encouraged as way of making changes to the status-quo of women in the Muslim world and re-addressing the balance of power within the family unit. The benefits of women entrepreneurship are many and varied and have been researched in great detail in the past. The purpose of this research is to facilitate a discussion on how best to empower women using entrepreneurship. This will in turn help in the marketing of entrepreneurship as a tool for the female empowerment and emancipation.

Women constitute almost 50 per cent of the world population. So the socio-economic participation of women at the international, regional, national and local levels means using significant potential resources more effectively. Moreover, it is noticeable that entrepreneurship development and empowerment are complementary to each other. Women empowerment depends on taking part in various development activities. In other words, the involvement of women in various entrepreneurial activities has empowered them in social, economic, culture and other related fields. It can be understood that women entrepreneurs have been making significant impact in all segments of the economy in the developed countries like Canada, United kingdom, Germany, Australia and the united states, etc.,

Women entrepreneurs engaged in business due to different push and pull factors which encourage women to have an independent occupation and stands on their own legs. For example, move towards independent decision making on their life and career is the motivational factor behind this urge. In other words, women entrepreneurs are persons who accept challenging roles to meet their personal needs and become economically independent. Besides, a strong desire to do something positive is an inbuilt quality of entrepreneurial women, who is capable of contributing values in both family and social life. The challenges and opportunities provided to the women of this digital and dynamic era are growing rapidly that the job seekers are turning in to job creators. On the other hand, many women start a business due to some traumatic events, such as divorce, death of bread winner, sudden fall in family income, permanent adequacy in the income of the family etc.

The rising number of female business owners is currently a global trend especially in the developing countries. In the advanced market economies, women own more than 25 per cent of all business. Many people argue that women are 'pushed' rather than 'pulled' in to business ownership but recent, but recent studies indicate that many women now actively choose self-employment, especially the younger women. Quite interestingly, women entrepreneurs can significantly contribute to poverty reduction, mobilisation of entrepreneurial initiatives and accelerating the achievement of wider socio-economic objectives.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

However, the contribution of women entrepreneurs depends on their performance, which, in turn, is affected by the underlying facilitators and barriers. Over the past two decades, women entrepreneurs have come to be recognised for their significant contributions to socio-economic development of their respective countries.

Categories of Women Entrepreneurs :

- Women in organized & unorganized sector
- Women in traditional & modern industries
- Women in urban & rural areas
- Women in large scale and small scale industries.
- Single women and joint venture.

Women's Role in Economic Contribution :

Progress of women's role in several sectors, including business, could be seen in some phenomenon mentioned here under :

1. In line with the improvement of women's education, women are no longer the minority in fields that were dominated by men in the past.

2. The field of information technology creates many opportunities for the development of women's talents in this specific field.

3. The increase in the number of women who lead their own business, especially the ones in small and medium scale enterprises.

4. Women's leadership is able to gain high loyalty due to the fact that they are the ones that are able to conduct clean, ethical, transparent and honest management.

On the basis of the above picture, it is obvious that the 21" century provides high hopes for the progress in women role. They do have the opportunity to get strategic positions that dominated by men in the past.

In Asia, women are the economy driving force. Their contribution in providing job openings in business sectors continues to rise. They are involved in enterprises at all Levels as managers, entrepreneurs, owners and investors. Combination of influence of more education, technology and fast economic growth make Asian women more assertive concerning their right, more aggressive in reaching their ambition while we already acknowledged that the number of Asian women in the work force from country to country are almost as high as those of men.

Surprisingly in most countries in Asia, women are dominating the service sector. In countries like Singapore and Taiwan women donate respectively 681/0, 61% of the GNP of said countries. The amount of Asian women employment evidently in quantitative has been similar with European countries. In Vietnam shows 47/U from the employment are women, in Thailand 46%, Indonesia 45%. The service sector in Asia also experienced surprising growth, and resulting a large working opportunity for women. In Taiwan, Singapore and

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

Hong Kong in the service sector donate respectively 61%, 68% and 77% of the respective GNP of said countries. While, in Korea and Japan the service sector contributes up to 60.6% and 54.9% respectively. This obviously means women now dominated the service sector.

In the business world, women entrepreneurs play a big role in business development in the Pacific region. In Japan, 5 out of 6 new businesses are created by women, and they have at least five employees. The number of women owned larger companies is not significant, but they start and manage the smaller companies.

Ways to Develop Women Empowerment through Entrepreneurs :

1. Consider women as specific target group for all developmental programmers.
2. Better educational facilities and schemes should be extended to women folk from government part.
3. Adequate training program on management skills to be provided to women community.
4. Encourage women's participation in decision-making.
5. Vocational training to be extended to women community that enables them to understand the production process and production management.

Conclusion :

Women represent half the world's population, and gender inequality exists in every nation on the planet. Empowerment with Entrepreneurship among women, no doubt improves the wealth of the nation in general and of the family in particular. Women today are more willing to take up activities that were once considered the preserve of men, and have proved that they are second to no one with respect to contribution to the growth of the economy. Women in developing countries are tremendous forces for change in their families, villages, cities and countries. When they get a chance, which is reflected not only in the business practices, but also in the policy shaping process of governments domestically as well as regionally. The more significant role in economic development through women entrepreneurship is something that should be pursued, and it is not something that can be achieved freely and easily. There has to be a struggle to win that race.

References :

1. Kabeer,Naila.' Gender equality and Women's empowerment 2005.
2. R.F.Herbert and A.N.Link,' In search of the meaning of entrepreneurship 1989.
3. ±ÉÉäEò®úÉV*É 2009 ÉÉÊ°ÉEò.
4. Manisha Raj 2014. Women empowerment through employment opportunities in India.
5. Desai V.(2010) Small scale industries and entrepreneurship Mumbai
6. Role Of Women Entrepreneurs In The Economic Development Of Meghalaya: A North Eastern State, India, Ijebea 13-156; © 2013, Ijebea All Rights Reserved.
7. Dr. Suryani Motik, Significant Role of Women's Entrepreneurs in Economic Development, 5th Women Leaders Network Meeting.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019).
Special Issue - 24 (28) - Use of ICT in Teaching - Learning
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
March 2021

Rajeshwar Education Society's

Vidarbha Mahavidyalaya, Buldana

(Arts & Commerce)

Organises

ONE DAY NATIONAL E-CONFERENCE

On

Use of ICT in Teaching-Learning : Opportunities and Challenges

(Under UGC-Paramarsh Scheme)

Date: 24 Th Feb. 2021

PATRONS



Sau. Shardatai G. Pawar
President
Rajeshwar Education Society
Buldana



Prof. Dr. Kailasrao K. Pawar
Secretary
Rajeshwar Education Society,
Buldana



Dr. P. D. Hudekar
Act. Principal
Vidarbha Mahavidyalaya
Buldana

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyala
Badnera

Scanned by CamScanner

29	माहिती तंत्रज्ञानाची शिक्षणातील उपयुक्तता आणीव आवश्यकता	प्रा. गोकुल डामरे	133
30	माहिती साक्षरतेमध्ये महाविद्यालयीन ग्रंथालयाची भूमिका	प्रा.निलेश राउत	140
31	अध्ययन व अध्यापन प्रक्रियेत माहिती तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता व महत्त्व	डॉ.अंजली पांडे	143
32	उच्च शिक्षणात माहिती तंत्रज्ञान उपयुक्तता व महत्त्व	प्रा. दिनेश डगे, डॉ. सतीश राणे	151
33	अध्ययन व अध्यापनात माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञानी (ICT) भूमिका	सौ. हर्षदा वाघोने	154
34	संगीत क्षेत्रात माहिती तंत्रज्ञानाचे महत्त्व व उपयोगिता	डॉ.सुनिल पटके	157
35	माहिती तंत्रज्ञान, वृत्तपत्रे आणि मराठी भाषेची उपयोगिता	डॉ. अविनाश मेश्राम	160
36	नवीन शैक्षिणिक धोरण व माहिती व तंत्रज्ञानाची भूमिका	प्रा.पी.पी. सानप	165
37	माहिती व तंत्रज्ञानाच्या युगातील ग्रंथालयात कन्साॅरशियाचे महत्त्व	डॉ. कविता इंगळे	167
38	शिकवणे आणि शिकण्यामध्ये माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाचा वापर : संधी आणि आव्हाने	डॉ. नंदकिशोर राऊत	171
39	शिक्षण क्षेत्रातील माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाची भूमिका : फायदे व तोटे	डॉ. विष्णू गुमटकर	175
40	माहिती तंत्रज्ञान आणि शिक्षण	श्री.विलास टाले	179
41	अध्ययन व अध्यापनात माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता व महत्त्व	डॉ.लक्ष्मण शिराळे	184
42	अध्ययन व अध्यापन प्रक्रियेत - माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञानाचा उपयोग व समस्या	प्रा. मुनेश्वर जमईवार	190
43	ब्लेंडेड लर्निंग - उच्च शिक्षणात अपेक्षित आधुनिक अध्यापन पद्धती	डॉ. ओमप्रकाश बोबडे	194
44	ऑनलाइन शिक्षणाचे फायदे व तोटे	पुरुषोत्तम चाटे	197
45	माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञानाचा शिक्षकाला होणारा उपयोग - एक अभ्यास	डॉ.पी. डी. हुडेकर	200
46	कोव्हिड -१९ च्या लॉकडाऊनमुळे क्रीडा व शारीरिक शिक्षणामध्ये विविध तंत्रज्ञान शिकविण्यासाठी इंटरनेटचा उपयोग	प्रफुल्ल वानखेडे	207
47	अध्ययन अक्षमता आणि दृकश्राव्य माध्यम - एक अभ्यास	डॉ. सौ. माधुरी देशमुख	210
48	विविध क्षेत्रामध्ये माहिती तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता	प्रा.सीमा कालने	214
49	संगीत शिक्षणावर तंत्रज्ञानाचा परिणाम	डॉ.मृणाल कडू	217
50	ग्रामीण भागात अध्ययन व अध्यापन प्रक्रियेत माहिती तंत्रज्ञानाच्या संधी व आव्हाने	प्रा. सुधीर बनुबाकोडे	220
51	अध्ययन व अध्यापनात शैक्षणिक तंत्रज्ञानाचे महत्त्व	मनोहर चौधरी	224
52	शिक्षणात आंतरजालाचा वापर	प्रा. सागर दांदगे	229
53	तंत्रज्ञान आणि शिक्षण प्रक्रियेत झालेला बदल	डॉ.कामिनी मामर्डे	232
54	अध्ययन व अध्यापन प्रक्रियेत माहिती व तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता व महत्त्व	डॉ. सौ. आरती खडतकर	235
55	अध्ययन व अध्यापन माहिती तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता	प्रा.कविता किर्दक	238
56	पारंपरिक अभ्यासक्रमात माहिती व तंत्रज्ञानाची गरज	प्रा.संगीता पवार	240
57	शिक्षा में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उपयुक्तता व महत्त्व	डॉ. शाहेदा मुनाफ	243
58	शारीरिक शिक्षामें सूचना तंत्रज्ञान का महत्त्व	डॉ. कैलास भवार	246

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
[illegible]

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 261 (B) : Use of ICT in Teaching - Learning
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
March 2021

अध्ययन व अध्यापन प्रक्रियेत माहिती तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता व महत्त्व

डॉ.अंजली चंद्रकांत पांडे
सहयोगी प्राध्यापिका
गृह अर्थशास्त्र विभाग
नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जिल्हा अमरावती
ई-मेल - chepemanjiri@gmail.com
मो. – 9420520025

प्रस्तावना

मानव आणि तंत्रज्ञान यांचा फार जुना संबंध आहे.अगदी प्राचीन काळापासून मानव तंत्रज्ञानाचा वापर करत आलेला आहे,अथवा त्याने ते विकसित केलेले आहे.अग्नीचा शोध,चाकाचा शोध अथवा कागदाचा शोध असो त्याने त्यामध्ये प्रत्येकवेळी नवनवीन भर घालून मानवी जीवन सुसह्य बनविण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.आज 21 व्या शतकात तंत्रज्ञानाने मानवी जीवनातील सगळी क्षेत्रे व्यापून टाकली आहेत. भारतीय शिक्षण व्यवस्था संक्रमनाच्या टप्प्यातून जात असताना त्यात तंत्रज्ञानाचा वापर वाढत आहे.अथवा तो नक्कीच वाढविला गेला पाहिजे असे माझे स्पष्ट मत आहे. अध्यापनात योग्य पद्धतीने व विचारपूर्वक तंत्रज्ञानाचा वापर केल्यास अध्ययन अध्यापन नक्कीच आनंदायी होऊ शकते. असे चित्र आज आपणास खुप ठिकाणी बघावयास मिळत आहे.तंत्रज्ञानाच्या योग्य वापराने विचारांची क्षेत्रे रुंदावण्यास मदत होते.तंत्रज्ञानाचा वापर शिक्षक व विद्यार्थी या दोहोंसाठी उपयुक्त आहे.दर्जेदार व प्रभावी अध्यापणास पूरक साहित्य म्हणून आपणास नवीन तंत्रज्ञानाची नक्कीच मदत होऊ शकते.यात आपणास मोबाईल, लॅपटॉप,कॉम्पुटर,प्रोजेक्टर,टॅबलेट मोबाईल इ.विविध साधनांचा वापर करता येईल.बाजारात उपलब्ध साहित्याशिवाय काही तंत्रस्नेही शिक्षकांचा स्व-निर्मित तंत्रसाहित्य निर्मितीवर विशेष भर आहे.ही फार अभिमानास्पद बाब आहे. दूरस्थ शिक्षणात तंत्रज्ञान हे खूप प्रभावी माध्यम आहे.शेकडो किलोमीटर दूर बसलेला विद्यार्थी मी बनविलेली चाचणी ऑनलाईन सोडवितो, हे प्राथमिक शिक्षकाला कधीही न पडलेले स्वप्न आज तंत्रज्ञानाने साकार करून दाखविले आहे.विद्यार्थी सुद्धा स्व प्रेरनेने तंत्रज्ञानाचा वापर करून आपल्या ज्ञानात भर घालत आहे.शेकडो किलोमीटर दूर असलेले शिक्षक आज तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून दुर्गम भागापर्यंत पोहचून विद्यार्थ्यांची ज्ञानाची भूक भागवित आहेत.अध्ययन अध्यापनात तंत्रज्ञानाच्या वापराने विद्यार्थ्यांमध्ये अपेक्षित बदल नक्कीच घडून येतात.

तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता साधनांच्या परिणामकारक वापरावर अवलंबून आहे.शैक्षणिक क्षेत्रात काम करणाऱ्या प्रत्येक घटकाने यासाठी पुढाकार घेतला पाहिजे.Whats app वर शैक्षणिक चळवळ रुजत आहे.Facebook वर भरपूर माहिती देणारे शैक्षणिक pages उपलब्ध आहेत.त्यांचाही आपणास संदर्भ म्हणून वापर करता येईल, तंत्रज्ञानाने अध्ययन अध्यापनात क्रांती घडविली हे सत्य आहे पण आता गरज आहे ती शिक्षकांनी आपल्या व विद्यार्थ्यांच्या गरजा ओळखून स्वतः तंत्रज्ञान विकसित करण्याची....व इतर शिक्षक बांधवाना त्यासाठी प्रेरित करण्याची. खुप तंत्रस्नेही शिक्षक microsoft power point चा खूप छान वापर करत आहेत,काही विद्यार्थ्यांना दैनंदिनी लिहायची सवय असते, त्यांना आपण त्यांचा वैयक्तिक Blog तयार करून देऊन त्यावर लिहिण्यास प्रेरित केले पाहिजे,आपल्या वर्गाचा अथवा शाळेचा पण ब्लॉग तयार करता येऊ

Scanned by CamScanner

शकतो. Twitter account ला तालुक्यातील सर्व शाळा जोडून आपल्याला कोणत्याही शाळेतील उपक्रम बघता अथवा share करता येतील.एक उपयुक्त शैक्षणिक साहित्य म्हणून Google सर्च इंजिन चा उपयोग नक्कीच झाला पाहिजे.

माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञान म्हणजे काय?

माहिती प्रक्षेपित करण्यासाठी, साठविण्यासाठी, तयार करण्यासाठी, प्रदर्शित करण्यासाठी किंवा तिची देवाणघेवाण करण्यासाठी वापरली जाणारी विद्युत उपकरणे म्हणजे माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञान. यामध्ये रेडियो, दूरदर्शन, व्हिडियो, डिव्हिडी, दूरध्वनी, मोबाईल फोन, उपग्रहावर आधारीत सेवा व सुविधा, संगणक व त्या संबंधित हार्डवेअर आणि सॉफ्टवेअर अशा गोष्टींचा समावेश होतो. ह्या व्यतिरिक्त, व्हिडियो कॉन्फरन्सिंग, ईमेल, ब्लॉग अशा तंत्रांचा ही यात समावेश होतो. सध्याच्या 'माहिती युगात' शैक्षणिक ध्येये समजून घेण्यासाठी माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाच्या (ICT) नवनवीन स्वरूपांचा शिक्षणात अंतर्भाव करणे गरजेचे आहे. हे सर्व प्रभावीरीत्या करण्यासाठी शैक्षणिक नियोजनकार, मुख्याध्यापक, शिक्षक व तंत्रज्ञांना प्रशिक्षण, तंत्रज्ञान, वित्त, शिक्षण, संप्रेषण अशा विविध क्षेत्रात अनेक निर्णय, ते ही योग्य रीत्या घेता आले पाहिजेत. अनेकांसाठी हे काम म्हणजे एखादी नवी भाषा शिकणे व ती शिकविण्यास शिकणे इतके कठीण काम वाटते. या विभागात विविध उपकरणे व तंत्रे यांची माहिती दिलेली आहे. यात देशांना जोडणाऱ्या उपग्रहांपासून, विद्यार्थी वर्गात वापरत असणाऱ्या उपकरणांपर्यंत सर्वांचा समावेश आहे. शिक्षणतज्ञ, नीतीशास्त्रज्ञ, नियोजनकार, अभ्यासक्रम तयार करणारे तज्ञ तसेच इतरांना माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाची (ICT) गुंतागुंतीची उपकरणे, त्या संबंधित संज्ञा आदींतून मार्ग काढत योग्य निर्णय घेणे सोपे जावे हा यामागील उद्देश आहे.

माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाची शिक्षणातील भूमिका

माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाचा (ICT) वापर करून शिक्षणाच्या दर्जात उल्लेखनीय आणि सकारात्मक सुधारणा करता येईल असे साधारणतः सर्वच शिक्षणतज्ञांचे व संशोधकांचे म्हणणे आहे. मात्र शिक्षणपद्धतीमध्ये माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाचे स्थान नेमके काय असावे व त्याच्या उपयुक्ततेचा जास्तीत जास्त फायदा कसा करून घेता येऊ शकतो हा अजून ही चर्चिला जाणारा मुद्दा आहे. या विभागात माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञानाचा शिक्षणपद्धतीवर पडलेला प्रभाव व शाळांमध्ये तंत्रज्ञानाचा वापर कसा करता येईल या विषयी अनेक लेख, अहवाल समाविष्ट करण्यात आले आहेत शिवाय या विषयावरील ऑनलाईन जर्नल्स व वेबसाईटस्च्या लिंक्स देखील देण्यात आल्या आहेत. (शिक्षणपद्धतीत माहिती व संप्रेषण तंत्रज्ञान वापरण्याचे फायदे सांगणारे लेख या विभागात आहेत. तसेच, शिक्षणपद्धतीत या तंत्रज्ञानाचा समावेश करताना होऊ शकणाऱ्या चुका, त्या टाळण्यासाठी घ्यावयाची काळजी याविषयावरील लेख व उदाहरणे देखील देण्यात आली आहेत.)

अध्ययन व अध्यापन प्रक्रियेत पुढील माहिती तंत्रज्ञानाचा उपयोग होऊ शकतो.

- पोर्टेबल मीडिया प्लेअर
- व्हाईटबोर्ड
- व्हॉईस प्रोजेक्शन सिस्टम
- विद्यार्थी प्रतिसाद प्रणाली
- आयपॉडचा वापर

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

- पॉडकास्टिंग
- व्हर्च्युअल लर्निंग
- व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंग
- YouTube
- मल्टीचॅनेल लर्निंग (बहु-वाहिनी शिक्षण)
- शैक्षणिक दूरदर्शन
- शैक्षणिक रेडियो
- वेब-आधारीत सूचना
- शोधासाठी ग्रंथालये
- विज्ञान व तंत्रज्ञान यांची प्रात्यक्षिके
- माध्यमांचा (मीडिया) वापर
- विविध क्षेत्रातील तंत्रज्ञानाचा वापर: लहान मुलांचा विकास, कमी घनता असणारी लोकसंख्या, प्रौढ शिक्षण, स्त्री शिक्षण, मनुष्यबळ विकास
- शिक्षकांच्या तयारीसाठी व प्रशिक्षणासाठी तंत्रज्ञानाचा वापर
- धोरणे आखण्यासाठी, माहिती व्यवस्थापन (डेटा प्रबंधन) करण्यासाठी तंत्रज्ञानाचा वापर
- शाळा व्यवस्थापनासाठी तंत्रज्ञानाचा वापर

पोर्टेबल मल्टीमीडिया प्लेअर

पोर्टेबल मल्टीमीडिया प्लेयर (पीएमपी), कधी कधी पोर्टेबल व्हिडिओ प्लेयर (पीव्हीपी) किंवा इंटरनेट मीडिया टॅब्लेट (आयएमटी) म्हणून ओळखले जातात, डिजिटल मीडिया संग्रहित करण्यास आणि प्ले करण्यास सक्षम आहेत. डिजिटल ऑडिओ प्लेयर्स (डीएपी) जे प्रतिमा प्रदर्शित करू शकतात आणि व्हिडिओ प्ले करू शकतात ते पोर्टेबल मल्टीमीडिया प्लेयर आहेत. डीएपीएस प्रमाणेच डेटा हार्ड ड्राइव्हवर संग्रहित केला जातो.

इंटरएक्टिव व्हाईटबोर्ड

इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड एक पृष्ठभाग आहे ज्यावर डेटा प्रोजेक्टरद्वारे संगणक स्क्रीन प्रदर्शित केली जाऊ शकते. हा स्पर्श संवेदनशील असल्याने शिक्षकांना बोर्डमधून संगणकावर नियंत्रण ठेवण्यासाठी आणि भविष्यातील धड्यांसाठी कोणतेही बदल जतन करण्यासाठी माऊसप्रमाणे पेन किंवा बोटाचा वापर करण्याची परवानगी देते. याव्यतिरिक्त, मल्टीमीडिया संसाधने तसेच इंटरनेट आणि वेबसाइटवरील प्रवेशाद्वारे अध्यापन आणि शिकवणुकीस समर्थन मिळू शकते. इंटरएक्टिव व्हाईटबोर्ड एक वर्ग-आधारित धड्यांमध्ये उपयुक्त अध्यापन सहाय्य आहे कारण ते सादरीकरणे, प्रात्यक्षिके आणि मॉडेलिंगद्वारे शिकण्यास मदत करू शकतात, विद्यार्थ्यांना सक्रियपणे गुंतवून ठेवतात आणि धड्यांचा वेग आणि प्रवाह सुधारू शकतात. डेटा प्रोजेक्टरला लिंक केलेला लॅपटॉप संगणक आपल्याला स्पोर्ट्स हॉल किंवा जिममध्ये या प्रकारच्या संसाधनाचा वापर करण्यास सक्षम करू शकतो. संपूर्ण वर्गाला व्हिडिओ प्रात्यक्षिकांमधून त्वरित किंवा मागील धड्यात घेतलेले एक विशिष्ट तंत्र दर्शविण्यासाठी शिक्षक इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड वापरू शकतात.

व्हॉईस प्रोजेक्शन सिस्टम

व्हॉईस प्रोजेक्शन सिस्टमचा वापर हा शिक्षणाद्वारे विद्यार्थ्यांशी संवाद साधण्याचा अभिनव मार्ग आहे. सिस्टममध्ये हलके, वायरलेस हातांनी रेडिओ मायक्रोफोन आणि हेड मायक्रोफोनचा समावेश आहे जो शिक्षकांचा आवाज बेस-स्टेशनवर प्रसारित करतो. हे नंतर विस्तृत करते, भाषण वारंवारिता वाढवते आणि स्पीकर्स कडून संपूर्ण वर्गापर्यंत आवाज प्रसारित करते. हे सेट करणे सोपे आहे आणि खूप प्रभावी आहे.

Principal

Scanned by CamScanner

विद्यार्थी प्रतिसाद प्रणाली

परस्परसंवादी विद्यार्थी प्रतिसाद प्रणाली शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या प्रगतीवर नजर ठेवण्यासाठी आणि त्यांची नोंद ठेवण्यासाठी साधने प्रदान करीत असताना विद्यार्थ्यांना गुंतवून ठेवण्यास प्रवृत्त करते. प्रगत रेडिओ फ्रिक्वेन्सी तंत्रज्ञानाचा वापर करुन आणि अभ्यासक्रम सॉफ्टवेअरसह समाकलित करण्यासाठी त्यांना कधीकधी वर्ग मतदान प्रणाली म्हणून संबोधले जाते. विद्यार्थी प्रतिसाद प्रणाली इंटरएक्टिव्ह राइटिंग टॅब्लेट किंवा वायरलेस स्लेटद्वारे कक्षामध्ये वाढलेली परस्पर क्रियाशीलता समाविष्ट करते जे परस्पर व्हाईटबोर्ड तंत्रज्ञानासाठी प्रभावी प्रभावी पर्याय प्रस्तुत करते.

आयपॉडचा वापर

आयपॉड पोर्टेबल मीडिया प्लेयर्सचा एक ब्रँड आहे जो Applepल इंक द्वारे डिझाइन केलेला आणि मार्केटिंग केला गेला आहे. उत्पादनांमध्ये हार्ड ड्राइव्ह बेस्ड आयपॉड क्लासिक, टचस्क्रीन आयपॉड टच, व्हिडिओ-सक्षम आयपॉड नॅनो आणि कॉम्पॅक्ट आयपॉड शफल यांचा समावेश आहे. आयफोन एक आयपॉड म्हणून कार्य करू शकतो परंतु सामान्यत: वेगळा उत्पादन मानला जातो. आयपॉड क्लासिक मॉडेल अंतर्गत हार्ड ड्राइव्हवर मीडिया संग्रहित करतात, तर इतर सर्व मॉडेल्स त्यांचे लहान आकार सक्षम करण्यासाठी फ्लॅश मेमरी वापरतात. इतर बर्याटच डिजिटल संगीत प्लेयर्सप्रमाणे, आयपॉड, आयपॉड टच बगळता, बाह्य डेटा स्टोरेज साधने म्हणून देखील काम करू शकतात. मॉडेलनुसार स्टोरेज क्षमता बदलते.

पॉडकास्टिंग

पॉडकास्ट ही ऑडिओ किंवा व्हिडिओ डिजिटल मीडिया फाइल्सची एक मालिका आहे जी इंटरनेटद्वारे पोर्टेबल मीडिया प्लेयर आणि वैयक्तिक संगणकावर डाउनलोडद्वारे, वेब फीडद्वारे वितरीत केली जाते. पॉडकास्ट सिंडीकेट करण्याची, सदस्यता घेण्याची आणि नवीन सामग्री जोडली जाते तेव्हा स्वयंचलितपणे डाउनलोड करण्याच्या क्षमतेनुसार बर्यासच डिजिटल माध्यमांच्या स्वरुपात फरक केला जातो. प्रसारण या शब्दाप्रमाणेच पॉडकास्ट एकतर सामग्रीच्या मालिकेचा किंवा ती सिंडिकेट केलेल्या पद्धतीचा संदर्भ देते; नंतरचे पॉडकास्टिंग देखील म्हणतात. पॉडकास्टच्या होस्ट किंवा लेखकास बर्याीचदा पॉडकास्टर म्हटले जाते.

व्हर्च्युअल लर्निंग एन्व्हायर्नमेंट (VLE)

व्हर्च्युअल लर्निंग एन्व्हायर्नमेंट (व्हीएलई) ने विद्यार्थी शिकवण्याच्या आणि शिक्षक शिकवण्याच्या पद्धतीमध्ये बदल केला आहे. आभासी शिक्षण वातावरण ही जागतिक वेबसाइट आहे जी विद्यार्थ्यांना त्यांचे कार्य आणि त्यांचे अभ्यासक्रम जगातील कोठूनही प्रवेश करू देते. हे हक्क-संरक्षित आहे आणि म्हणूनच पालक, विद्यार्थी आणि कर्मचारी लॉग इन करण्यास सक्षम असतील. विद्यार्थ्यांचे काम सेट केले जाऊ शकते, एकत्र केले जाऊ शकते आणि व्हीएलई मार्फत चिन्हांकित केले जाऊ शकते, जे कागदाच्या कामकाजावर आणि संग्रह आणि अंतिम मुदतीच्या तारखांमध्ये मोठ्या प्रमाणात बचत होईल. हे यामधून विद्यार्थ्यांचे सामर्थ्य वाढवू शकते आणि त्यांच्या स्वत:च्या शिक्षणाची माहिती देऊ शकते. विद्यार्थी अधिक निर्णय घेण्यास सक्षम आहेत, कारण कार्ये त्यांच्या स्वत: च्या गतीने आणि संभाव्यत: त्यांच्या स्वत: च्या वेळी पूर्ण केल्या जातील.

व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंग

शाळांमध्ये व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंग औपचारिक अध्यापनासाठी, अतिथी शिक्षकांचा वापर करून, बहु-शाळा प्रकल्प आणि समुदाय कार्यक्रमांसाठी वापरली जाऊ शकते. एकदा कनेक्ट झाल्यानंतर, विद्यार्थी दुसर्याळ

Scanned by CamScanner

व्यक्तीस टीव्ही स्क्रीनवर पाहू शकतात आणि प्रश्न विचारू शकतात. आवश्यक उपकरणांमध्ये एक टीव्ही मॉनिटर, कॅमेरा, मायक्रोफोन, स्पीकर आणि एक संकुचित व्हिडिओ सिस्टम समाविष्ट आहे जे एकात्मिक सेवा डिजिटल नेटवर्क (आयएसडीएन) द्वारे प्रसारित केले जाऊ शकते. व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंगद्वारे विद्यार्थ्यांना वेगवेगळ्या मार्गांनी शिकण्याची संधी मिळू शकते, ज्यामध्ये परीक्षा स्तरावर औपचारिक शिक्षणामध्ये विशिष्ट विषयावर लक्ष केंद्रित केले जाऊ शकते. हे दुसर्‍या शारिरीक शिक्षण विभागासह आयोजित केले जाऊ शकते जेथे परीक्षा अभ्यासक्रमामध्ये शिक्षक माहिती सामायिकरण करण्यास अनुमती देऊन विशिष्ट कौशल्य देऊ शकतात.

शाळांमध्ये यूट्यूबचा वापर

YouTube एक व्हिडिओ-सामायिकरण वेबसाइट आहे जिथे वापरकर्ते व्हिडिओ क्लिप अपलोड, पाहू आणि सामायिक करू शकतात. हे मूव्ही क्लिप, टेलिव्हिजन क्लिप आणि संगीत व्हिडिओ तसेच व्हिडिओ ब्लॉगिंग आणि शॉर्ट ओरिजनल व्हिडिओंसारख्या हौशी सामग्रीसह विविध प्रकारच्या वापरकर्त्याद्वारे व्युत्पन्न व्हिडिओ सामग्री प्रदर्शित करण्यासाठी अॅडोब फ्लॅश व्हिडिओ तंत्रज्ञानाचा वापर करते. यूट्यूबवरील बर्‍याच सामग्री व्यक्तींनी अपलोड केल्या आहेत, जरी बीबीसीसह मीडिया कॉर्पोरेशन त्यांची काही सामग्री साइटद्वारे ऑफर करतात. यूट्यूबने व्यापलेल्या अनेक विषयांच्या विडीओने व्हिडिओ सामायिकरण इंटरनेट संस्कृतीतल्या एका सर्वात महत्त्वाच्या भागात रूपांतरित केले आहे. शाळांमध्ये प्रतिमा मिळवण्यासाठी आणि सादर करण्यासाठी YouTube एक जलद प्रभावी माध्यम होत आहे.

20व्या शतकाच्या सुरूवातीपासून रेडियो व दूरदर्शन यांचा वापर शिक्षणासाठी केला जात आहे. रेडियो व दूरदर्शनचा वापर मुख्यत्वे खालील प्रकारे केला जातो: ICT च्या ह्या स्वरूपांचा मुख्यत्वे तीन प्रकारे उपयोग करण्यात येतो:

1. शालेय विषयांशी संबंधित ध्वनी चित्रफिती व रेडियोवरून प्रसारित केले जाणारे कार्यक्रम यांच्या सहाय्याने वर्गात शिकविणे.
2. शाळांमध्ये शिक्षणाला पूरक असे कार्यक्रम प्रक्षेपित करणे.
3. सामान्य ज्ञान व माहितीपर शैक्षणिक कार्यक्रम दाखविणे किंवा प्रसारित करणे.

रेडियो व दूरदर्शन

रेडियोवरून (IRI) प्रसारित केले जाणारे कार्यक्रम दैनिक स्वरूपाचे असतात. हे रेडियो धडे, एका विशिष्ट विषयाशी संबंधित असतात व त्यांचा प्रेक्षकवर्ग लक्षात घेऊन त्यांची काठिण्यपातळी ठरविली जाते. या कार्यक्रमांमुळे शिक्षकांना तो विषय अधिक चांगल्या रीतीने शिकविण्यास मदत होते तसेच मुलांना ही तो विषय समजून घेणे सोपे जाते. या पद्धतीमुळे दुर्गम भागातील शाळेतील विद्यार्थी व ज्या ठिकाणी शिक्षकांची कमतरता आहे अशा ठिकाणच्या विद्यार्थ्यांना ही शिक्षण घेणे सोपे जाते. रेडियोवरून (IRI) प्रसारित केल्या जाणाऱ्या या कार्यक्रमामुळे औपचारिक व अनौपचारिक दोन्ही प्रकारच्या शिक्षणाचा दर्जा व त्याची व्याप्ती, दोन्ही गोष्टींवर सकारात्मक प्रभाव पडला आहे. शिवाय रेडियो कमी खर्चिक असल्यामुळे मोठ्या लोकसंख्येला शिक्षणाचा लाभ मिळू शकतो.

दूरचित्रित केलेले कार्यक्रम अभ्यासक्रमास पूरक म्हणून किंवा स्वतंत्र पाठ म्हणून ही वापरले जाऊ शकतात. अशा कार्यक्रमांत आता अनेक आमूलाग्र बदल घडून आले आहेत. पूर्वी अनेकदा अशा कार्यक्रमांत

Scanned by CamScanner

एखादा शिक्षक एखाद्या विषयावर विवेचन करताना दाखविला जाई मात्र आता त्याची जागा विद्यार्थ्यांना जवळ वाटणाऱ्या मुद्यांनी व सुसंवाद साधणाऱ्या कार्यक्रमांनी घेतली आहे त्यामुळे हे कार्यक्रम विद्यार्थ्यांना अधिकाधिक खिळवून ठेवत आहेत. विद्यार्थ्यांची ग्रहणक्षमता व सुसंवाद वाढविण्यासाठी बहुतेक अशा शैक्षणिक कार्यक्रमांसह छापील व इतर प्रकारचे साहित्यदेखील पुरविले जाते. आशिया-पॅसिफिक प्रदेशात शैक्षणिक प्रसारण मोठ्या प्रमाणात केले जाते. उदा. भारतात इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विद्यापीठातील अनेक अभ्यासक्रम दूरदर्शन व व्हिडियो कॉन्फरन्सिंगच्या मदतीने शिकविले जातात.

काही विशिष्ट अभ्यासक्रमांशी संबंधित कार्यक्रम प्रसारित करण्याबरोबरच सर्वसामान्य शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित करण्यासाठी ही दूरदर्शन व रेडियोचा वापर केला जाऊ शकतो. वास्तविक, शैक्षणिक मूल्य असणारा व रेडियो किंवा दूरदर्शनवरून प्रसारित केला जाणारा कोणता ही कार्यक्रम 'सर्वसामान्य शैक्षणिक कार्यक्रम' म्हणून गणला जाऊ शकतो. उदा. अमेरिकेत प्रसारित केला जाणारा 'सीसेम स्ट्रीट' हा कार्यक्रम किंवा कॅनडामधील 'फार्म रेडियो फोरम' हा रेडियो चर्चा कार्यक्रम.

अध्यापनात संगणकाचा वापर

सध्याचे युग हे संगणकाचे युग म्हणून ओळखले जाते. कॉम्प्यूटर नावाच्या या यंत्राने आजच्या समाज जीवनावर सर्वांगीण परिणाम केलेला आहे. संगणक हे एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आहे. यांत चिन्हांवर प्रक्रिया करणारी पद्धती किंवा व्यवस्था असून त्याची रचना व व्यवस्थापन असे असते की, ज्यामुळे माहिती स्वीकारणे, साठविणे व संस्कारित करणे आणि निकाल किंवा उत्तरे तयार करणे या प्रक्रिया आधीच साठवून ठेवलेल्या पाय-या पाय-यांनी बनलेल्या सूचनाबरहुकूम आपोआप केल्या जातात. संगणकाचा रेल्वे, विमान, आरोग्य, बँक, उद्योगधंदे, शिक्षण, संशोधन, विमाक्षेत्र, विद्युतविभाग इत्यादी क्षेत्र / विभाग यांत विविध कार्यांसाठी उपयोग केला जातो. ते संगणकाच्या काही वैशिष्ट्यपूर्ण क्षमतांमुळे याला शिक्षणातील अध्ययन-अध्यापन क्षेत्र तरी कसे अपवाद असणार?

संगणकाची वैशिष्ट्ये

1. वेग - संगणकाच्या कामाचा वेग अतिप्रचंड आहे.
2. स्मरणशक्ती – संगणकांची मुख्य स्मरमशक्ती मर्यादित असली तरी दुय्यम स्मरणशक्ती साधने वापरून खूप मोठ्या प्रमाणावर माहिती साठविता येते.
3. अचूकता – संगणक दिलेले काम दिलेल्या सुचनांप्रमाणे अतिशय अचूकतेने करतो.
4. अष्टपैलू उपयोगिता – ज्या कामाबाबत तर्कसंगत व क्रमवार सूचना देता येतात असे कोणतेही काम सामान्यपणे संगणक करू शकतो. या त्याच्या गुणधर्मामुळे संगणक विबध प्रकारची कामे पार पाडू शकतो उदा. बाहतुकीचे नियंत्रण, गुणपत्रिका छपाई इत्यादी.
5. संगणक हे एक तंत्र असल्याने त्याच्यामध्ये न कंटाळता व न थकता अचूकपणे काम करण्याची क्षमता आहे.
6. संगणकाच्या सर्व क्रियांमध्ये सातत्य, विश्वासार्हता दिसून येते.
7. संगणकाची विविधांगी उपयोगिता पाहता त्यावर होणारा खर्च नगण्य आहे.
8. भावनिक दृष्टीने कोणत्याही प्रसंगांचा संगणकाच्या कार्यक्षमतेवर कोणताही विपरीत परिणाम होत नाही.

Principal

Scanned by CamScanner

संगणकाची शैक्षणिक उपयुक्तता

संगणकाचा वापर दैनंदिन जीवनात पदोपदी होत असलेला दिसून येतो. संगणकज्ञानामध्ये झालेल्या प्रचंड वाढीमुळे संगणक शिक्षणक्षेत्रात देखील वेगवेगळ्या कार्यासाठी एक साधन म्हणून उपयुक्त साधन आहे. गरज आहे ती आज संगणकाचा वापर कल्पकतेने आणि योग्य मार्गदर्शिका वापरून शैक्षणिक प्रक्रियेत वापरण्याची काही उपयुक्त अप्लिकेशन सॉफ्टवेअरमुळे संगणकाचा शिक्षणक्षेत्रात ट्यूटर, साधन म्हणून वापर करता येतो.

१. शाळेमध्ये संगणक शिक्षकांना गुणपत्रिका तयार करण्यासाठी तसेच शिक्षणप्रक्रियेत मदत करतो.
२. निरनिराळ्या कार्यालयांमध्ये हा त्यांची कामे सोपी व लवकर करण्यास मदत करतो.
३. शालेय आरोग्य तपासणीसंबंधी माहिती साठवून त्याचा पाठपुरावा करण्यासाठी माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञान मदत करू शकतो.
४. दृक-श्राव्य माध्यमांमध्ये ग्राफिक्स आणि ॲनिमेशनच्या साहाय्याने प्रभावी व आकर्षक कार्टून्स, रेखाचित्रे, थ्रीडी चित्रे, पूर्णपणे संगणकाद्वारेच निर्माण केली जातात. या आधारे भाषा विषयासंबंधी व विज्ञान, गणित, सामाजिक शास्त्रे या विषयांतील शैक्षणिक कार्यक्रमांची निर्मिती करता येते.
५. शिक्षणात संगणकाचा वापर गेल्या काही दशकांत मोठ्या प्रमाणात होत आहे. संगणकामुळे आपल्या आयुष्यात आमुलाग्र बदल झाले आहेत. आज संगणकाचा वापर होत नाही असे जवळपास एकही क्षेत्र नाही.
६. संगणकाच्या साहाय्याने स्वयंअध्ययन प्रक्रिया प्रभावी व सुलभ होते.
७. क्रमान्वित पाठ अध्ययन पद्धतीचा वापर संगणकाच्या साहाय्याने करणे सुलभ जाते.
८. स्वगतीने विद्यार्थ्यास कुठल्याही घटकाचे अध्ययन करणे सुलभ जाते.
९. मानव विकासाच्या अवस्थेसंबंधी चित्रे, संदर्भित शास्त्रज्ञांची चित्रे, पाठ घटकांतील आवश्यक चित्रे व नकाशे यंत्रांच्या साहाय्याने स्कॅनिंग करून संगणकावर साठवून त्याचा गरजेनुसार अध्यापनात वापर करता येतात.
१०. शालेय प्रयोगशाळेत संगणकाचा प्रभावी उपयोग करून प्रात्यक्षिक कृतिद्वारे अध्ययनअनुभव देता येतो.
११. संदर्भज्ञानासाठी आणि मूल्यमापनासाठी देखील माहिती संप्रेषण तंत्राचा प्रभावी उपयोग करता येतो.
१२. संगीत, खेळ, कार्यानुभव, चित्रकला या विषयांमध्ये माहिती संप्रेषण तंत्रांच्या वापराला अधिक वाव आहे.
१३. विविध शैक्षणिक व व्यावहारिक संदर्भ आंतरजालाच्या मदतीने मिळविता येतात.

पॉवर पॉईंट

विज्ञान व तंत्रज्ञान या विषयातील वरीलशी माहिती ओघ तक्त्यांच्या स्वरूपात व सचित्र मांडता येते. संगणकातील पॉवर पॉईंट या सॉफ्टवेअरचा यासाठी प्रभावीपणे वापर करता येतो. यालाठी स्लाईड्स तयार कराव्या लागतात.

अ) स्लाईड्स तयार करणे –

स्टार्ट --- मेनू --- प्रोग्रॅम्स या पायरीने पॉवर पॉईंट चालू करून ॲप्लिकेशन विंडो मिळतात. फाईल मेनूमधील न्यू बटण क्लिक करा. त्यानंतर ब्लॅंक प्रेझेंटेशन हा पर्याय निवडा. डायलॉग बॉक्समधील टेक्स्ट एंड

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Kankavli
Scanned by CamScanner

Sr. No.

Certificate

Organized by

College Of Management And Computer Science, Yavatmal

In Collaboration With

Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalay, Yavatmal.

27th & 28th December 2019



This is to certify that

Shri / Smt. / Ku. / Dr. / Prof. _____

of _____ has actively participated in the two days International Conference organized by College Of Management And Computer Science, Yavatmal in Collaboration with Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal on **"Academic Research and Innovation in Teaching & Arising Inclination in Professional Education."** He/She has presented / published a paper on _____

Prakash H. Jajoo | Jagdish G. Wadhwani | Dr. Jayant M. Chatur | Prof. Ritesh D. Chandak

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

19-20

Scanned by CamScanner

Need and Scope of Innovation in Home Economics

Dr.Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor, Department of Home-Economics Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist.Amravati

Introduction

Education is the foundation of our economy. What (and how) we learn in school determines who we become as individuals and our success throughout our lives. It informs how we solve problems, how we work with others, and how we look at the world around us. In today's innovation economy, education becomes even more important for developing the next generation of innovators and creative thinkers However, there is a significant gap between the potential of modern education and what many students are actually learning. The adoption and exploration of innovative ideas in education is often slow. Instead, many educators still cling to old and increasingly ineffective methods of teaching. In common with others subjects, Home Economics reacted positively to new innovations in the subject. Key developments over the past years included .he promotion of investigative and pupil-centred activities in an attempt to improve the quality of education within the subject area.. The industrious efforts of teachers to produce new and relevant approaches to their subject, a systematic study of the essential nature and scope of Home Economies in the modern curriculum had been undertaken. Home Economics is one of the subjects in the Technology Education It comprises major areas of study on food, clothing, home and family which intertwine with the knowledge contexts proposed in the Technology Education.

Benefits of Technology in the Classroom

There's quite a bit of evidence that technology, when used in the right way, helps students learn. One study, for example, showed that a medical school class with iPads scored 23% higher on exams than classes without this device.

Technology, such as tablets, isn't only useful for absorbing knowledge; it helps with communication as well. Teachers and administrators use such devices to send materials and information to students and parents. Students hand in homework and term papers online and can access educational applications and programs to further assist with learning.

Here are some of the clear benefits of using technology in the classroom:

- It makes learning interesting and engaging, especially for younger generations raised on the latest technology.
- It allows for faster and more efficient delivery of lessons, both in the classroom and at home.
- It reduces the need for textbooks and other printed material, lowering long-term costs incurred by schools and students.
- It makes collaboration easier. Students, teachers, and parents can communicate and collaborate more effectively.
- It helps to build technology-based skills, allowing students to learn, early on, to embrace and take advantage of the tools technology offers.

Finding Innovative Applications of Technology

While technology, in and of itself, does not always spur innovation in the classroom, there are countless innovative ways to use technology to better teach and engage students. Here are some examples:

Robots in the Classroom – South Korean schools have experimented with robot teachers. This makes lessons more interesting and entertaining for kids and enables teachers from anywhere in the world to be "present" in the classroom.

Mobile Technology – Smart phones and other mobile devices are increasingly used in education. Mobile apps let teachers conduct digital polls, enhance verbal and presentation skills, and incorporate technological skills with core competency lessons. There are many Home Economics Apps available on the mobile which can be useful for teaching learning process

Principal Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera
Scanned by CamScanner

3D Learning – Students enjoy 3D games and movies, so why not use this technology to help them learn? GEMS Modern Academy in Dubai does just this, providing students with a 3D lab that offers interactive multimedia presentations.

Assisting Special Needs Students – Assistive technology is especially useful for students with learning disabilities. For example, phonetic spelling software helps dyslexic students and others with reading problems to convert words to the correct spelling.

Innovations in Teaching Methods

When we think of innovation nowadays, we usually think of technology. However, in a field such as education, it's just as important to focus on innovations in areas such as child psychology, learning theories, and teaching methods. This is particularly true at a time when many educators believe that the U.S. education system is failing. There are quite a few areas where innovations in education will help improve the system for everyone.

Addressing the Needs of Individual Students – Another longstanding problem in education is the one-size-fits-all approach. It's well known that everyone has different styles of learning. Some students are visual learners, while others are verbal or auditory learners. Technology allows teachers to individualize lesson plans to different students and their unique styles of learning.

Practical Education and Soft Skills – One criticism of education is that it's impractical and doesn't prepare students for living in the real world. When it comes to actually teaching students how to become innovative thinkers, they need to learn leadership skills, to be encouraged to think creatively, and to be taught independent thinking and learning. Innovative classrooms are beginning to place more emphasis on the soft skills needed to thrive in today's world.

Innovation in Home Economics help students to :

- Be responsible citizens and informed consumers willing to contribute to the well-being of individuals, families and society in terms of meeting basic human needs
- Demonstrate good use of management and organizational skills in handling physical and socio-economic resources for self, family, community and society
- Analyze contextual factors contributing to the well-being of individual, family and society with application of knowledge from the food science and technology strand or fashion, textiles and clothing strand
- Devise and implement strategies to solve complicated problems in technological contexts, in particular, food / fashion, using a range of appropriate techniques and procedures
- Evaluate critically the impact of social, cultural, economic, scientific and technological developments on the well being of individuals, families and society as a whole

Innovation in Food Science and Technology helps students to :

- Understand and appreciate the nature and properties of food and the cultural, social and economic influences on the evolution of nutritional science, food science and technology and food product development .
- Investigate the cultural, physical, chemical, nutritional, biological and sensory characteristics of food, and how these properties are exploited in designing and producing food products to meet specified criteria .
- Understand and apply scientific principles behind food preparation and the food production process in different settings to solve problems creatively.
- Develop capability, values and attitudes to make informed decisions that foster a healthy lifestyle and contribute positively to the social and economic future of a society.

Innovation in Fashion, Clothing and Textiles helps students to :

- understand the nature of fashion design, the characteristics of fibers and fabrics, the construction, production and marketing of clothing or textile products; and the evolution of fashion trends, textile technology and clothing production methods .

Principal

Scanned by CamScanner

- Investigate the historical, cultural, technological and social factors in the development of fashion, clothing and textiles and their relationship to the well-being of the individual, family and society.
- Apply appropriate principles and techniques in presenting fashion ideas and illustrations, and in pattern and garment construction for specific requirements and considerations in different settings
- Develop an aesthetic sense and creativity through the design and production processes of fashion, clothing and textile products

Conclusion

Every country develops its own system of education which undergoes transformation to meet the challenges of the changing times. Educational system in India is also confronted with several new choices, opportunities and challenges to ensure that a modernized, progressive and qualitatively superior system of education can be implemented at all levels. Innovation in Home Economics are improving the content of learning process and updating the development of life quality comprehension, what can be achieved by acquiring a variety of handicraft and modern technology.

References

1. Havelock, R. G. . (1971), 'The utilisation of educational research and development', British Journal of Education Technology.
2. McMullan, L. . (1987), 'Innovation and Development of the Post-Primary Home Economics Curriculum in Northern Ireland', unpublished D.Phil, thesis, University of Ulster.
3. NICED , (1984), Guidelines for Home Economics 11-13 Nutrition and Food Studies.
4. NICER , (1983), Curriculum Projects in Post-Primary Schools.
5. Nicholls, A. . (1983), Managing Educational Innovations, Unwin Educational.
6. Sutherland, M. B. . (1981), Sex Bias in Education, Basil Blackwell.
7. Wolpe, A. M. . (1974), 'The official ideology of education for girls', in Flude and Ahier (eds), Educability, Schools and Ideology, Croom Helm.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Issue-42, Vol-11, April to June 2022

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Editor
Dr. Bapu C. Chol...

Scanned by CamScanner

14) Inspiring Higher Education Institutions for Nation Building – Opportunities ...
Ms. Renu & Ms. Vandana, Noida ||72

15) महाराष्ट्राच्या ग्रामीण विकासातील भारतीय कृषी प्रतिष्ठानचे योगदान
डॉ. जी. एस. बोत्रे & सौ. अनुप्रिता प्रसाद भोर, पुणे ||78

16) बदलत्या जीवनशैलीतून उद्भवलेल्या स्वनिर्मित आरोग्य विषयक समस्या
प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे, अमरावती ||82

17) महात्मा ज्योतीराव फुले यांचा 'मानवतावाद'
डॉ. गोविंद गायकी, जि. बुलडाणा ||85

18) वा.म.जोशी यांच्या दासगणीकादंबरीतील स्वामी विवेकानंदांच्या विचारांचा प्रभाव
डॉ.सचिन गंगाधर गिरी, नांदेड ||88

19) राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास
प्रा.डॉ. मुंडे रामकिशन हरिदास, जि. औरंगाबाद ||90

20) वाचनसाहित्य रहवातल धोरण
डॉ. भगवान शामराव पडवळ, जि.कोल्हापूर ||93

21) महाराष्ट्रातील दलित चळवळीचे यशापयशाचे मूल्यमापन
डॉ. कोंडिबा पाटील, चाफळेडा ||96

22) आपली व्यवस्थापनाच्या प्रशिक्षणाची परिणामकारकता अभ्यासणे
प्राचार्य डॉ.सतीश उत्तमराव पाटील, जि.धुळे ||99

23) सातपुड्यातील आदिवासींची उत्पन्नाची साधने
प्रा. डॉ. केशव आत्माराम पावरा, जि. नंदुरबार ||102

24) कीर्तन आणि स्वच्छ महाराष्ट्र अभियान एक अभ्यास
प्रा.डॉ. दीपक शिंदे & गिमेकर मनोजकुमार पंढरीनाथ, नांदेड ||105

25) भारतीय समाज मे जाति–व्यवस्था का परिवर्तित स्वरूप : एक समाजशास्त्रीय विवेचन
डॉ. जयप्रकाश यादव, वाराणसी ||109

26) कविता की दुनिया
प्रो. (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल, महासमुंद, (छत्तीसगढ़) ||113

Scanned by CamScanner

करणाऱ्या विविध विकास संस्थांनी पोहोची आहे. या संदर्भात बजाज फाऊंडेशन या सेवाभावी संस्थेसोबत सध्यास्थितीत औरंगाबाद जिल्ह्यात पाणलोट विकास कार्यक्रमाचा प्रारंभ केला आहे. त्यापैकी आजपर्यंत ६७,२८,२१९ हेक्टर क्षेत्रावर विविध उपचार करण्यात आले आहेत. त्यामुळे भूगर्भात पाण्याचा साठा वाढण्यास मोलाची मदत झाली आहे. पाण्याच्या उपलब्धतेमुळे केवळ पिकाखालील क्षेत्र वाढले नाही तर विविध पिकांची व पशुधनाची उत्पादकता वाढून शेतकऱ्यांच्या उत्पन्नात भरघोस वाढ झाली आहे. आज मनिषाईच्या दूरदृष्टीपणामुळे भारतातील १६ राज्यात वसलेल्या ६०,००० खेड्यांमधील ४५ लाखाहून अधिक परिवार दुग्धाळ गायींचे पालन, जलस्रोत विकास, पडीक जमिनीवर फळबाग (वाडी) लागवड, महिलांचे सक्षमीकरण व सामुदायीक आरोग्य या उपक्रमांद्वारे गरिबीवर मात करून पूर्वापेक्षा अधिक जास्त चांगले जीवन जगत आहे.

संदर्भसूची :

1. BAIF History and Heritage : Traces the history of BAIF and the Gandhian heritage and values practiced by the Founder of BAIF Late Dr. Manibhai Desai which are relevant in the modern era.
2. Mamus Ubha Kela : Highlights the development philosophy of its Founder Late Dr. Manibhai Desai while focusing on the development programmes implemented by BAIF in Maharashtra especially on empowerment of women.
3. Blowing in the Wind : Collection of learnings from BAIF's operational area blending traditional and modern values and presented in the form of anecdotes.
4. Horticulture for Tribal Development BAIF's Story of excellence based on the Doctoral study.
5. Wadi Programme : A Tree Based Farming System User Guide.
6. Landscape Approach for Integrated Rural Development.
7. Sustainable Livelihood - Development in and Regions.
8. Swayam Sahayata Gat- Sabhasad Prashikshan - Prashikshak Margadarshika.
9. Annual Reports 2017-18, 2018-19 and 2019-20.
10. Dr. A. B. Pande, An innovative approach of BAIF in dairy husbandry for sustainable livelihood BAIF'S Approach.
11. www.baif.org.com

16

बदलत्या जीवनशैलीतून उद्भवलेल्या स्वनिर्मित आरोग्य विषयक समस्या

प्रा. डॉ. मंजिरी चेपे
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा—अमरावती

आपल्या जीवनशैलीत वेगाने बदल होत आहेत. त्यामुळे पुढील पेचप्रसंग आपल्यासमोर उभे राहतात. कामाबरोबर महत्वाकांक्षा वाढते. यशाची आसक्ती कुठेही पोहोचलो तरी असमाधानी करते. काम हे भावनात्मक आनंदाचे स्रोत नसून भावी यशाचे साधन बनले. मनाची पोकळी किंवा खीनता हा रोग नाही पण धोक्याचा इशारा आहे. मनाचा शरीरावर प्रचंड ताण पडत असतो. काळजी व भीती शरीराला नकारात्मक इशारे देणारे आहेत. काळजीग्रस्त शरीरात रोग चटकन पसरतो. तणतणाव— मुलाने परीक्षेत पहिले यावे, त्याला अमूकच कोर्सेस्ला प्रवेश मिळावा, स्वत:चे प्रमोशन, उत्तम घर यासाठी जिवापाड स्पर्धा करावी लागते. राहणीमान सुधारण्यासाठी आई व वडिल दोघेही नोकरी करत असतात त्यामुळे धावपळ, चीडचीड, मूलांचे एकटेपण, त्यांच्या वर्तनासंबंधी समस्या निर्माण होतात. आधुनिक बाजारवादी संस्कृतीमुळे नाती—गोती, भावना जीवनमूल्ये यासुद्धा वस्तू बनल्या. वस्तू विकत घेणे विकणे किंवा फेकून देणे शक्य आहे. सगळ्याच गोष्टी उपभोग मूल्याच्या पातळीवर मोजता येतात. पण वस्तूत सुख—समाधान नाही. पद, पैसा, प्रसिद्धी आणि किर्तीसाठी आम्ही जिवापाड धावतो. प्रत्येकाला कसली ना कसली तरी खंत असते. मी कोणीतरी वेगळा किंवा मोठा झालो असतो. आजसुद्धा मी कोणीतरी आहेच ना! पण त्यात मला समाधान नाही. मला आणखी काही वेगळं हवं आहे. या मृगजळामागे लागून माझे स्वत:शी सुद्धा नाते तूटत आहे. यशस्वी होणे म्हणजे आपण इतरांपासून वेगळे आहोत, संपन्न आहोत किंवा बरचढ

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

आहेत असे वाटते म्हणून एकटेपणा निर्माण होतो ते अनेक रोगांचे कारण ठरतो. अहंकार, ईर्षा, स्वार्थ व तृष्णा या चिंतनसूत्रांच्या चार घेरणा मनाला कायम असमाधानी बनवतात. तर हे असे अनेक घरणांनी येणारे अनारोग्य दूर करण्यासाठी उपाय योजना सुद्धा अनेक पदरी हवी या लेखात मी

१) ऑस्टिओपोरोसिस या चिंतनाचा धावता आढावा घेण्याचा प्रयत्न करते. एखाद्या बेमीरटला विचारल्यास त्याच्या दुकानातील कोणते औषध सर्वात जास्त खपते? याचे उत्तर आहे ऑस्टिओपोरोसिसवरील. १० पैकी ५ जणांना ऑस्टिओपोरोसिसचा त्रास असतो.

मुख्य जेवण रात्रीच घेतले जाते. अन्न पचनासाठी मोठ्या प्रमाणावर शक्तीत Blood circulation लागते. पचनक्रीया तेव्हाच व्हावी जेव्हा शरीराचे इलेक्ट्रोमॅग्नेटिक व्होल्टेज जास्त असेल. हे व्होल्टेज रात्रीपेक्षा सकाळी अधिक असते म्हणून आपण सकाळी ॲक्टीव असतो व रात्री झोपेची गरज असते. वेस्टर्न कल्चरचा प्रभाव, घाई, काळजी, मसालेदार पदार्थांची आवड, युवकांची फास्ट–फूड विषयी खास आवड, ताण–तणाव व्यायामाखी कमतरता, हवाबंद डब्यातील अन्नपदार्थ खाणे व कमी घटक असणारी शितपेये इ.मुळे पचनसंस्थेला हानी पोहोचते व ऑस्टिओपोरोसिसचा त्रास सुरू होतो. आहारोपचार करताना ज्या भागात जे पीकत ते खावे हे प्रामुख्याने लक्षात घ्यावे. त्या त्या सीझनमध्ये मिळणारी फळे व भाज्या खाव्यात. हिताहार व मीताहार घ्यावा. परफेक्ट डाएट कसे असावे या प्रश्नाचे उत्तर बरेचसे व्यक्तीसापेक्ष असते. वेगवेगळे आहारोपचार उपलब्ध असले तरी मध्यम मार्ग पाळावा. आहारविषयक सवयी घाई न करता हळू–हळू बदलाव्यात.

२) हायपोथायरोईडीझम–पोषक आहाराची कमतरता, अपूरी झोप, अपूरी विश्रांती, शरीराची झीज भरून न निघणे यामुळे हायपोथायरॉईडची समस्या वाढते. थायरॉईड ग्रंथी मानेत कंठमण्याखाली श्वासनलीकेसमोर असते. त्यातून थायरॉईड हार्मोनची निर्मीती होते. या हार्मोनचे चयापचय क्रिया, शरिराची वाढ व ऊर्जा निर्मितीसाठी उपयोग करणे इत्यादि क्रियांवर नियंत्रण असते. बराच काळ थायरॉईडहार्मोनची शरीरात कमतरता असल्यास रक्तातील चरबी व ट्रायग्लीसरॉईड्स वाढणे, निद्रानाश, स्नायूंत, पाठीचा दाह निरुत्साही वाटणे व थकवा, डोळ्यांची सतत जळजळ होणे, वजन वाढणे व कधीकधी उग्र स्वरूप हे त्रास होतात.

हायपोथायरॉईडची कारणे– स्त्रीगाभ्यें गर्भदरपणात व मेनोपॉज दरम्यान होणारे हार्मोनमधील बदल, जीवनशैली विषयक कारणे जसे स्वत:साठी वेळ नसणे, मनातले मोकळेपणाने न बोलणे, वर्षानुवर्षेतणावाखाली जगणे, तरूण मुलांसंबंधी चिंता व असमाधान, दुराग्रही जोडीदार इ

आहारविषयक धोरण–

१) आहारातील आयोडीनचे प्रमाण वाढवावे. केळी, गाजर, स्ट्रॉबेरी, दुध, टरफलयुक्त धान्य इ. आहारात भरपूर असावे. सुप–सलाद असे डायटींगचे खाणे सोडून भात– भाकरी असा आहार घ्यावा कारण वेगवेगळी धान्ये हा आयोडीनचा महत्त्वाचा स्रोत आहे. हिरव्या पालेभाज्या व हंगामी सर्व भाज्यांचा आहारात समावेश करावा. अधीक प्रथिनयुक्त आहार घ्यावा. चॉकलेट, मद्य, केक, बिस्किटस्, आईस्क्रीम, चिप्स प्रक्रिया केलेले पदार्थ वर्ज करावे. शुगर फ्री, फॅट फ्री अशा अन्न पदार्थांच्या जाहिरातीना बळी पडू नये.

हायपोथायरोईडसाठी निद्रा विषयक धोरण–

शांत झोपीमुळे शरीराची झीजभरून निघते. शांत झोपे अभावी कार्टीसॉल हे तणतणाव निर्माण करणारे हार्मोन निर्माण होते. चांगली झोप येईल असे वातावरण निर्माण करावे. दुपारीसुद्धा थोडी शांत झोप घ्यावी. चांगली झोप झाली नाही तर व्यायामाचाही उपयोग होत नाही. व्यायामविषयक धारण– हृदयाचे स्नायु मजबूत करणारे, प्राणवायुचे जास्त शोषण होणारे व्यायाम व अनुभवी योगशिक्षकाकडून थायरॉईड ग्रंथी कार्यक्षम करणारी योगासने शिकावीत. व्यायामाचा अतिरेक नको. नातेसंबंधाविषयी धोरणइतरांशी चांगले संबंध वाढवण्यासाठी मुद्दाम वेळ द्यावा लागतो. पण हायपोथायरॉईड मुळे शरीराला विश्रांती मिळणे गरजेचे असते. सर्व कामे स्वत:च्या अंगावर घेऊ नका. अध्यात्मशास्त्र सांगते थायरॉईड ग्रंथीची जागा विशुद्ध चक्राच्या ठिकाणी आहे. देवी आवाजाचे ते प्रतीक आहे. या ग्रंथीतील बिघाड हे दर्शवीते की तुम्ही रोजच्या धकाधकीच्या जीवनात इतके मग्न आहात की

Scanned by CamScanner

आतल्या आवाज ऐकण्यासाठी तुमच्याकडे वेळ नाही. व्यायामाचा कंटाळा इत्यादि करताना योग्य आहारापासून सुरुवात करा. शांत झोप लागेल. निश्चिंती मिळेल याकडे लक्ष द्या. अतिरेक न करता आवश्यक व्यायाम करा. जीवनातील आव्हाने संयमाने, ताठे ठिसूळ होणे, गरोदर राहण्यात अडथळा किंवा गरोदर राहिल्यास गर्भ टिकत नाही.

PCOS ची कारणे– १) अनुवंशीकता आणि २) जीवनशैलीशी निगडीत पुढील कारणे आहेत. सामाजिक बदलामुळे स्त्रीया पुरुषांची क्षेत्रे यशस्वीपणे काबीज करत आहेत. उच्चपदस्थ अधिकारी, व्यवस्थापक, उद्योगपती अशा विविध उच्च पदांवर आज स्त्रिया आहेत. त्या अनेक पुरुषांचे नेतृत्त्व करतात. कोटयावधी रूपयांची उलाढाल करतात. अशा प्रकारे कर्तृत्त्वाचे क्षितीज विस्तारीत होत असताना त्यांना स्वयंपाक व जेवणासाठी वेळ नसतो. रात्री उशिरा जेवण, प्रक्रिया केलेले अन्न पदार्थ, उशिरा जेवणानंतर आईस्क्रिम खाणे, व्यायामाचा अभाव, तासन्तास कॉम्प्युटरसमोर बसणे, रात्रीची जागणे, मैदा, पास्ता, पिझ्झा, नूडल्स, बर्गर यासारखे पोषणमूल्याचा अभाव असणारे अन्न खाणे, फ्लॅरिटकच्या साठ्या वापर, जंतूनाशके, किटकनाशके, रासायनीक खते यांचा साठ्या वापर सध्या होतो व ही सर्व रसायने थेट आपल्या बिजाडकोशात प्रवेश करतात. तसेच फ्लॅरिटकच्या पिशवीत भाज्या व फळे भरणे, फ्लॅरिटकच्या डब्यात अन्न भरणे व ते पुन्हा पुन्हा मायक्रोवेवमध्ये गरम करणे यामुळे आपण रसायनांना आपल्या अगदी जवळ आणतो.

PCOS टाळण्यासाठी आहार व्यवस्थापन – घरची कमी करून बिजांडकोशची कार्यक्षमता वाढवण्यासाठी संतुलित आहार घेणे आवश्यक आहे. शांत चित्ताने ताजे अन्न खावे. अन्न पुन्हापुन्हा गरम करू नये. ताजी फळे व भाज्या खाव्या. फळांचे रस करू नये. गहू, तांदूळ, ज्वारी, बाजरी, मका, नाचणी इ. सर्व धान्ये खावीत. पास्ता, पिझ्झाऐवजी पोळी, भाकरी, थालीपीठ, पराठा, ठेपला असे खा. सातकाश जेवाच्याने ठराविक वेळीनेच रक्तशर्करा वाढते. हार्मोन्स, एन्झाईम्स व बिजांडकोश यांचा एकमेकांवर परिणाम होत असतो. म्हणून पूर्ण प्रथिनयुक्त आहार घ्यावा, फक्त सॅलडवर राहू नये. लो फॅट किंवा फॅट फ्री डाएट मुळे VIT A-D-E- यांची कमतरता होऊ शकते हे लक्षात घ्यावे. पालेभाज्या, अंडे, जवस, मटार खात असणाऱ्या अल्फा लायपाईक ऑसीडमुळे चरबी वाढत नाही. म्हणून त्यांचा आहारात समावेश असावा. पनीर सोड आलेले कडधान्ये, इडली, ढोसा असे आंबवलेले पदार्थात Vit B12 भरपूर असते आणि ते बिजाडकोशाच्या आरोग्यासाठी आवश्यक आहे. पायात गोळे येणे, चक्कर येणे असा पाळीच्या दरम्यान होणारा त्रास कमी होण्यासाठी रोज १ कॅल्शीयमची गोळी घ्यावी. ओटीपोटाशी संबंधित योगासने करावीत. थोडक्यात नियमित पाळी ही स्वतंत्र घटना नसून ते शिस्तबद्ध जिवनशैलीचे फळ आहे हे भान राखावे.

संदर्भ:

१. आहारशास्त्र, आरोग्य आणि उपचार — डॉ. इ. वि. सरदेसाई
2-https//halthmarathi.com.women
3-www.bookganed.com

%%%

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Peer reviewed Journal Impact Factor 7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development







A Multidisciplinary International Level Referred Journal

March 2022 Volume-13 Issue-10

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Scanned by CamScanner

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Refereed and Peer Reviewed Journal.
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, March 2022, Volume-13, Issue-10

28	Study on Challenges Faced By Students and Teachers during Mathematical Education **Dr. Varsha D. Chapke**	116-119
29	Antifungal Potential and Phyto-Chemical Screning of Methanolic Extract of Petals of Bombax Ciea from Malvacea Family **M.S. Salunke, S.K. Thorat**	120-122
30	Crime against Women and the Role of Judiciary **Dr. Umesh N. Udapure**	123-126
31	Management of Lifestyle Through Diet and Fitness **Dr.Manjiri Milind Chepe (Pande)**	127-130
32	Eminence of R. K. Narayan's work in today's world **Asst. Prof. Aruna Shinde**	131-133
33	Information Seeking Behavior of College Faculty Members of Rural Area in Gadchiroli District. **Dr. Sanjay D. Fulzele**	134-138
34	Contribution of Economy to Eco-Tourism in India **Prasanta Mujrai**	139-146
35	Socio-economical Study of the Problems of Migrant from Urban to Rural Areas during the Corona Period **Dr. Nilima Rajaram Mirajkar**	147-149
36	E-Governance : A Challenge for India **Bhawna**	150-156
37	Attitude and Knowledge on Global Warming Among Student Teachers of Coimbatore District in the Current Scenario **S.Amutha, Dr. T. Premalatha**	157-160

Scanned by CamScanner

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Refereed and Peer Reviewed Journal.
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, March 2022, Volume-13, Issue-10

Management of Lifestyle Through Diet and Fitness

Dr.Manjiri Milind Chepe (Pande)

Associate Professor in Home-Economics, Narnyanrao Rana Mahavidyalaya,

Badnera Dist. – Amravati.

Abstract

Fitness makes all the difference in our body look and feel. It was defined early as the capacity to carry out the day's activities without undue fatigue i.e. physical fitness. But now it is known as a triangle of physical, emotional and mental fitness. Thus overall fitness is now defined as the body's ability to function efficiently and effectively in work and leisure activities, to be healthy, to resist hyperkinetic diseases and to meet emergency situations. Thus fitness is in two close meaning; **general fitness** (a state of health and well-being) and **specific fitness** (a task oriented definition based on the ability to perform specific aspect of sports or occupations). An individual's fitness is manifested through its phenotype. As phenotype is affected by genes and environment, the fitness of different individuals with the same genotype is affected by genes and environment, the fitness of different individuals with the same genotype are not necessarily equal, but depend on the environment in which the individuals live. There are two commonly used measures of fitness; absolute fitness and relative fitness. Absolute fitness for a genotype can also be calculated as the product of the proportion survival times the average fecundity. Relative fitness is quantified as the average of surviving progeny of competing genotypes after a single generation.

Keyword; general fitness, specific fitness, Vegetables and Fruits, Fiber Foods, Fish

Introduction

In the modern fast paced lifestyle driven by constant pressure to meet targets, individuals are victim to stress and anxiety. There are over one billion overweight and obese individuals globally. Overweight and obesity are associated with elevated blood pressure (BP) cholesterol levels and an increased risk of developing diabetes (insulin resistance). These are often referred to as 'degenerative diseases' a term which is closely associated with metabolic syndrome/Syndrome X/ Asian Paradox. Several studies have clearly indicated that malnutrition is a double edged sword with under –nutrition on one side over-nutrition on the other and that both are associated with adult obesity and metabolic syndrome. Elevated cholesterol levels alone are responsible for nearly 60% of CVD morbidity globally. Major modifiable determinants of overweight and obesity are unhealthy diet and physical inactivity. Thus, Improving diet and lifestyle is a critical component to curb and prevent the present epidemic of Non-Communicable diseases (NCD's) particularly the degenerative diseases Healthy eating habits can help us in reducing stress and building the required strength and energy levels to face the day. Several studies have clearly indicated that malnutrition is a double edged sword with under-nutrition on one side and over-nutrition on the other and that both are associated with adult obesity and metabolic syndrome. Thus, Improving diet and lifestyle is a critical component to curb and prevent the present epidemics with keeping the following most critical features in mind.

1. Recognizing that diet is part of an overall healthy lifestyle also includes activity and behavior.
2. Identifying the influence of environmental factors on the prevalence of under/overweight hypertension and diabetes related health behaviors.
3. Formulating practical guidelines on how to achieve diet and lifestyle changes which need to be provided to the general and 'at-risk' population.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

4. The importance of following the recommendations when eating at home and away from home needs to be emphasized.

5. The vital roles of healthcare professionals the food industry. Schools and local policies need to be highlighted, along with specific recommendations to these groups.

Objectives of Dietary Management :

The recommendations of WHO are on Dietary Intake.

- To balance (calorie) intake and physical activity to achieve and maintain a healthy body weight, consume a diet rich in vegetables and fruits; choose whole –grain, high-fiber foods, consume fish, especially oily fish, at least twice a week.
- Limit intake of saturated fat to < 7% of energy and vegetable alternatives, fat-free (skim) or low-fat.

(1% fat) dairy products and minimize intake of partially hydrogenated fats; minimize intake of Beverages and foods with added sugars; choose and prepare food with little or no salt ;

These can substantially reduce the risk of developing cardiovascular disease and other complications of excess body weight, which remains the leading cause of morbidity and mortality in both developed and developing nations. An emphasis on balanced or prudent diet is also appropriate to ensure nutrient adequacy and energy balance. Hence, rather than focusing on a single nutrient or food, individuals should aim to improve their whole or overall diet.

(i) **Consume a Diet Rich in Vegetables and Fruits**

In longitudinal observation studies, persons who regularly consume such diets are at a slower risk of developing CVD, particularly stroke. Consumption of a variety of vegetables and fruits has been recommended. Vegetables and fruits that are deeply colored throughout (e.g. spinach, carrots, barriers) should be emphasized because they tend to be higher in micronutrient content than are other vegetables and fruit such as potatoes and corn. Fruit juice is not equivalent to the whole fuit in fiber content and perhaps satiety value and should not be emphasized. A diet rich in vegetables and fruits is a strategy for lowering the energy density of the diet to control energy intake.

(ii) **Choose Whole-Grain, High-Fiber Foods**

Dietary patterns that are in whole-grain products and fiber have been associated with increased diet quality and decreased risk of CVD34 Soluble or viscous fibers (notably β–glucon and pectin) modestly reduce LDL cholesterol levels. Dietary fiber may promote satiety by slowing gastric emptying leading loan overall decrease in calorie intake. Soluble fiber may increase short-chain fatty acid synthesis, thereby reducing endogenous cholesterol production. It is recommended that at least half of grain intake must include whole grains and this is particularly important in case of cereal-based diet as consumed in India.

(iii) **Consume Fish, Especially Oily Fish, at Least Twice a Week**

(iv) **Limit Intake of Saturated and Trans Fat and Cholesterol**

(v) **Minimize Intake of Beverages and Foods with Added Sugars**

(vi) **Choose and Prepare Food with Little or No Salt**

(vii) **If Consume Alcohol, Do in Moderation**

(viii) **Other Dietary Factors-(a) Antioxidant Supplements (b) Soya Protein (c) Foliate and other B Vitamins (d) Photochemical (e) Fish Oil Supplements (f) Plant Sterols**

(ix) **Diet and Lifestyle Recommendations while Eating Away From Home**

(x) **Avoid Use of and Exposure to Tobacco Products.**

SPECIFIC GOALS RECOMMENDATIONS FOR LIEESTYLE :

1. Adopting a Physically Active Lifestyle
2. Ideal or Desirable Body Weight
3. Achieving and Maintaining a Desirable Lipid Profile –To aim for recommended levels of low-density lipoprotein cholesterol, high-density lipoprotein cholesterol, and trigly cerides
4. Achieving and Maintaining Normal Blood Pressure
5. Achieving and Maintaining a Normal Blood Glucose Level

RECOMMENDATIONS FOR SPECIAL AGE GROUPS

a) **Children Over 2 Year of Age**

Overweight andobesity are a particular concern for children as the prevalenc of overweight is 16% among children and adolescents. Achieving energy balance may be more complicated in children and adolescents because calorie and micronutrient intake must be adequate to support normal growth and development. However many children are eating excess calories and experiencing unhealthy weight gain especially in the urban sector. Children can eat a diet consistent with the AHA2006 Diet and Lifestyle Recommendations/NCEP recommendations and maintain appropriate growth while lowering risk for future development of obesity and other degenerative diseases. Furthermore, because diet in youth is associated with the occurrence of

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Baijapur
Scanned by CamScanner

CVD outcomes later in life and because lifestyle habits in youth into adulthood, adoption of a healthy diet and lifestyle at early ages is recommended.

b) **Elderly and Adults:**

Atherosclerosis is a chronic process beginning in youth. The risk of developing CVD increases dramatically with advancing age particularly among overweight obese. Diet and lifestyle behaviors can decrease CVD risk. Also, ample evidence from clinical trials indicates that older-aged persons can make and sustain lifestyle changes, perhaps more so than younger adults. In view of the high incidence of CVD events in older-aged individuals even relatively small improvements in risk factors (eg.small reductions in BP and LDL cholesterol through diet and lifestyle changes) would be of substantial benefit, gtap Elder have decreased energy needs while their vitamin and mineral requirements remain constant or increase, however, older individuals should be counseled to select nutrient-dense choices within each food group .

c) **Socioeconomic Groups at High Risk of CVD**

Barker's hypothesis has long substantiated the fact that individuals of lower socioeconomic status have a higher incidence of CVD than do individuals of higher socioeconomic status. In population, promotion of a desirable diet should be culturally sensitive and should encourage healthy preparation of traditional ethnic food. Unfortunately, social and economic barriers make widespread adoption of current diet and lifestyle recommendations difficult for many segments of society.

Target Group Recommendations

- **Practitioners :**
  - Advocate a healthy dietary pattern consistent with AHA recommendations.
  - Encourage regular physical activity.
  - Calculate BMI and discuss results with patients.
  - Discourage smoking among nonsmokers and encourage smoking cessation among patients who do amoke.
  - Encourage moderation of alcohol intake among those who do drink alcohol.
- **Restaurants**
  - Display calorie content prominently on menus or make calorie and other nutrition information easily accessible to consumers at point of decision and point of purchase.
  - Reduce portion sizes and provide options for selecting smaller portions.
  - Reformulate products to reduce calories, sodium, and saturated and trans fats.
  - Use trans fat free and low saturated fat oil in food preparation to eliminate added trans fat without increasing saturated fat.
  - Provide more vegetable options and prepare them with minimal added calories and salt.
  - Provide more fruit options and serve them without added sugar.
  - Develop creative approaches to including and marketing fruits and vegetables to make them more attractive to consumers.
  - Allow substitution of non-fried and low-fat vegetables for usual side dishes (eg. French fries and potato salad)
  - Provide whole-grain options for bread, pasta and rice.
- **Food Industry**
  - Reduce the salt and sugar content of processed foods.
  - Replace saturated and trans fat in prepared foods and baked good with low saturated fat liquid vegetable oils.
  - Increase the proportion of whole-grain foods available.
  - Package foods in smaller individual portion sizes.
  - Develop packaging that allows for greater stability, preservation, and palatability of fresh fruits and vegetables without added sodium and reduces refrigeration needs in grocery stores.
- **Schools**
  - Adopt competitive food policies that limit foods high in added sugar, saturated and trans fat, sodium and calories while encouraging consumption of fruits, vegetables, whole-grain foods and low-fat or fat-free dairy (Competitive food policies should address vending, a la care, school fundraising and all food sold outside of the reimbursable school lunch)
  - Ensure the availability of nutritionally balanced mid-day meal programmes
  - Offer daily physical education taught by qualified teachers at all grade level.
  - Expand physical activity opportunities by providing noncompetitive as well as competitive extracurricular physical activity options. Examples include intramural and intramural spots, dance classes and walking clubs.
  - Incorporate health nutrition and increased physical activity policy into after-school activities.
  - Adopt 100% smoke-free policies on school campus, including parking lots and surrounding school grounds.
- **Local Government :**
  - Develop and implement safe Routes to School plan.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
[illegible]

Scanned by CamScanner

Implement land-use practices that promote non-motorized transportation (walking and biking), such as complete streets and community parks.
Promote policies that increase availability of health food (eg, use of public land for farmers market and full-service grocery stores in low-income areas)

Conclusion:

A substantial importantly, lifestyle modifications can effectively control risk factors and lower the incidence. To realize benefits, individuals should aim for a desirable body weight be physically active, avoid tobacco exposure and follow a diet and lifestyle consistent with dietary recommendations. Accomplishing these objectives will require individuals to change their behavior and society to make substantial environmental changes. The current challenge to healthcare providers, researchers and government officials is to develop and implement effective clinical and public health strategies especially need-based educational programmes (asses sable, viable and adaptable to all age group across communities) that would lead to sustained lifestyle changes among individuals and populations.

References:

1) www.google.com
2) Ruikar R.N., Essential of Diet in 21st Century(2001), Himalaya Publication, Nagpur.
3) Tapase S.P., Mamagement of Lifestyles (2002), Rao Publication, Gumtur, A>P.
4) Shukla R.P., Diet & Fitness (2006), Pimplapure Publication, Nagpur

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

ISSN 2277-8071





RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

DOI PREFIX 10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN IMPACT FACTOR 7.399

VOLUME XI, ISSUE I, APRIL 2022

Published on 7th April, 2022

www.rcjournal.net

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera











Pexels@Edward Jenner

Scanned by CamScanner

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 7.399

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

FAST FOOD EFFECT ON HUMAN LIFE

ORCID
https://orcid.org/0000-0003-0662-7747

DR. MANJIRI M. CHEPE
Associate Professor, Head Department Home Economics
Narayanarao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Distt.-Amravati.
chepemanjiri@gmail.com

Received: 27.02.2022 Reviewed :04.03.2022 Accepted: 07.03.2022

ABSTRACT

Modern food processing industry and the latest advertising techniques made modern man very much addicted to the fast food and it has become necessary to depend upon different forms of fast food in day to day life ranging from biscuits, bread and burger to cola, soda and several types of soft drinks and junk foods. Fast food has become very popular all over the world but its disadvantages are many. Easily prepared and fast served food is called fast food. The concept has grown world wide with many restaurants coming up day in and day out. The reason for becoming most sought after is low investment requirement for the entrepreneurs and varieties of foods served in a short period of time for the customers. But the fact is that in most of the cases, fast food is prepared ready made in places of unhygienic conditions, kept it for long period of time and repeatedly heated to make them tastier. In the endeavor to make them more palatable the nutritional value is given secondary importance. Modern processed food industry comes with packed food in highly processed condition giving consumer minimal time for preparation but the process and methods employed in the manufacturing stage certainly reduces the nutritional value of fast food. They are unhealthy and excessive consumption leaas to obesity. Their advertising tactics specifically target children who are more affected by the food habits and eating plan. The under nutrition and the erratic food eating habit inflict our young ones with telling effect on health of people.

KEY WORDS:

Introduction

The history of fast food dates back to cities of Roman antiquity, where much of the urban population living in multi-story apartment blocks, depended on food vendors for their meals. In the mornings, bread baked in wine was eaten as a quick snack and cooked vegetables and stews later in the day. In the middle ages, large towns and major urban areas like London and Paris supported numerous vendors that sold dishes such as Pies, pasties, flans, waffles, wafers, pancakes and cooked meats. In Roman cities, many of these establishments catered to those who did not have means to cook their own food, particularly single households. Unlike richer town dwellers, many often could not afford housing with kitchen facilities and thus relied on fast food including the travelers and pilgrims. In UK, in cities which had access to coastal or tidal waters, fast food would frequently include local shellfish or seafood such as oysters or as in London, eels which are cooked directly on the quay or close by. American fast food such as hamburgers and fries, there are many other forms of fast food that enjoy widespread popularity in the West. Chinese takeaways/takeout restreaurants are popular as they offer a wide variety of Asian food which has normally been fried. Most options are noodles, rice or meat. In some cases, the customer chooses the size of the container they wish to buy, and then is free to fill it with their choice of food. It is common to combine several options in one container and some outlets charge by weight rather than by item. Many of these restaurants offer free delivery for purchase over a minimum amount. In Japan, Sushi, a form of fast food is normally cold sticky rice flavored with a sweet rice vinegar and served with some topping or rolled in roti with filling. The filling often includes fish, chicken or cucumber. Pizza is a common fast food category in the United States with chains such as Papa John's, Domino's Pizza, Sharto and Pizza Hut.

Fast food or junk food is the name given to food that can be prepared and served quickly, often served at basic restaurants or in packaged form for convenient takeaway form. It is typically inexpensive to buy but unhealthy to eat. Popular fast foods include burger, fries, pizza, fish and chips, kababs and fried chicken. Well known fast food franchises and restaurants include McDonalds, Kentucky Fried Chicken (KFC), Pizza Hut, Taco Bell Burger King etc. Fast food is often highly processed and produced on a large scale to decrease costs. Ingredients and various menu items are prepared at a different location before being sent to restaurants to be cooked reheated or quickly put together for the customer's convenience. While hamburgers, fries and pizza are seen as traditional fast foods, countries

Scanned by CamScanner

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 7.399

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

throughout the world sell all types of fast food that may not be so well known. Some examples of these include kebabs, Chinese takeaways-fried noodles, rice and meat dishes, sushi and bento type foods in Japan and fish and chips in the U.K, New Zealand and Australia. Consumers in the United States of America spend over $100 billion on fast food every year. McDonalds is arguably the world's most well known fast food chain. There are McDonald's restaurants found in over 100 countries around the world and they serve over 40million customers every day. Due to increased awareness of public health and obesity levels, efforts have been made to improve fast food menus by lowering fat levels or at least offering healthier alternatives. While these health concerns are generating more attention, fast food is still linked to worldwide weight gain problems, increased diabetes risks and healthcare costs.

Life style diseases now surface in rural areas and are no longer restricted to urban areas. The Maharashtra Health Department recently screened people from six different districts and found thousands suffering from hyper tension and diabetes. The doctors prescribed all similar urban prescription of a healthy life style that includes medicines, physical exercise and eating healthy food and also advised against high intake of salt, oily foods and to include seasonal fruits and vegetables. At the same time malnutrition among children a cause for concern for policy makers in many states.

In India, around 43% of its children under the age of 5 are malnourished or undernourished. Malnutrition is more common in India than in sub-Sahara Africa. It is estimated that one in every three malnourished children in the world live in India6. Malnutrition is considered tobe a leading cause of child mortality in India. Non availability of food seems to be the major cause of malnutrition. Protein energy malnutrition and micronutrient deficiencies are major contributions to higher mortality rates from illness and diseases such as pneumonia, malaria, diarrhea and measles in the developing world. The normal population of Indian cities consist of lower socio-economic classes who stay in slums and the middle and upper socio-economic classes who stay in proper housing facilities. Children in slums do not have access to proper food due to cost where as children from middle and upper class do not eat proper food. They eat food which is tasty but is poor in vitamins and minerals. Dietary habits of these children now have changed to fast food like biscuits, pastas, pizza, French fries, wafers, vadapav, samosa, pastries, chips and other oily foods which has high fat content but poor nutrition of vital elements. Thus such food may provide calories but not other elements. Thus children in urban India tend to nutritionally poor. Mumbai has 45.4% of its children below 5 years as stunted and 32.6% are under weight.

A fast food diet in children can lead to many health problems. Such a diet is low in fiber, vitamins, minerals and essential oils and this will lead to immune deficiency, high cholesterol, heart disease, over weight and cancer. Heart disease is the number one killer of both men and women. A study among the Asian Indian men showed that half of all heart attacks in this population occur under the age of 50 years and 25% under the age of 40. Such a large group of unhealthy people will result in problems for the generation in the future. There are many causes to the problems of children's health being adversely affected by fast food. The industry is only concerned about their profit and not health as they generate more revenue from the children. Fast food companies advertise to children so that the children will insist their parents to buy fast food. Fast food is not proper nutrition in any sense and mostly unhealthy also. Many parents only feed their children fast food instead of home cooked meals due to convenience. Even knowing that fast food is not good for children, the convenience is too great to avoid taking them there. However, if companies made healthier options for children, many parents would pick out the healthier options for their family.

In State of Punjab v. Mohinder Singh Chawla SC held that "right to life in Art 21 of the constitution includes the right to health". In India 'Right to Health' is not included as a fundamental right in the Indian Constitution. But Article 21, of the Constitution under 'Protection of Life and Personal Liberty' directs the state to take measures to improve the conditions of health care of the people. In Parmanand Katara v. Union of India and Others 10 Justice Ranganath Misra held"Art.21 of the Constitution casts an obligationon the State to preserve life and it is the obligation of the state to ensure the creation and the sustaining of conditions congenial to good health". In Vincent Panikulangara v. Union of India Supreme Court held that a healthy body is the very foundation for all human activities "maintenance and improvement of public health have to rank high as these are indispensable to the very physical existence of the community and on the betterment of these depends the building of the society of which the Constitution makers envisaged. Attending to public health, therefore, is of high priority-perhaps the one at the top".

From the above decisions of the Hon'ble Supreme Court of India it is very clear that right to health is an important Constitutional right. But the modern day practices force the people to consume fast foods which are unhealthy products by which they are affected with their health. Therefore it is highly necessary to make awareness among the consumers

Scanned by CamScanner

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 7.399

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

about the ill-effect of those products which are directly affecting their health. It is important to focus on the health of nation's children because these children are the adults of tomorrow. New healthy choices need be introduced so that children would enjoy the same and that also will teach them to lead a healthy life. Advertisements aimed at children should contain nutritional tips to instill the information needed in children to have lifelong eating habits. As part of corporate social responsibility, companies should undertake the task of educating people about the ill effects of fast food and also to select food depending upon the nutritional value.

Conclusion:

Fast food has become part and parcel of modern life. Both rural and urban people are much dependent on this food habits. It is very difficult to live without fast food in one form or another. But the consumption of the fast food can be reduced by making people aware about the ill-effects. Nutrition lessons should be started from school days. When children are educated about nutrition and defects of fast food culture, they in turn can give their knowledge to their family members and also to the coming generations. Companies should produce and market healthy fast foods with nutritional value and change is needed in the advertising methods also. If nutritional value is included in the advertisement, that will help people to select their food considering their health. Companies should undertake the task of giving healthy living lessons as part of corporate social responsibility to make people more conscious about their health. Health is wealth and healthy people can contribute more for themselves and also for the nation. Hence, through conscious efforts we should reduce the intake of fast food and should practice healthy diet to create a healthy nation.

References :

1. Jayasree Pakhare http://www.buzzle.com/articles/fast-food-nutrition-guide-facts-information.html visited on 6th Aug 2018
2. http://en.wikipedia.org/wiki/fast_food visited on 29th Nov 2017
3. www.sciencekids.co.nz/sciencefacts/food/fastfood.html visited on 29th Nov 2017
4. https://timesofindia.indiatimes.com/city/pune/lifestyle-diseases-now-surface-in-rural-areas/articleshow/17407911.cms Umesh Isalker, Times of india, Pune dated 29th Nov 2016
5. The Hindu, Bangalore edition dated 28th Nov 2016
6. http://www.unicef.org/infoobycountry/india-statistics.html visited on 30th Nov 2017 7.
7. www.pediatricconcall.com/nutrition/malnutrition.asp visited on 30th Nov 2016
8. http://voices.yahoo.com/american-children-eating-fast-fod-leads-health-10257.html visited on 30th Nov 2017
9. AIR 1997 SC 1225
10. (1989) 4 SCC 286
11. (1987) 2 SCC 165; AIR 1987 SC 990
12. https://en.wikipedia.org/wiki/Fast_food
13. https://www.sciencekids.co.nz/sciencefacts/food/fastfood.html
14. https://www.observerbd.com/2014/11/28/57364.php
15. https://dailydelish.us/faq/how-to-cook-nepali-food/?amp=1

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

ISSN - 2279 - 0489

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GENIUS

Volume - X Issue - I August - January - 2021-22

ENGLISH PART - II

Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal No. 47100

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.631
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Principal
Narayanrao [illegible]

Scanned by CamScanner

CONTENTS OF ENGLISH PART - II

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Empowering Rural Women through Digital Literacy : A Study of Dhule Distict **Prof. Dr. Farida Shafik Khan**	1-3
2	Relevance of Knowledge Management in post Covid-19 Era **Dr. Himanshu Agarwal**	4-13
3	Globalization and Higher Education in India **Dr. K. Chandrappa**	14-19
4	The Impact of the COVID-19 Crisis on Human Rights **Dr. Manja Naik H. S.**	20-24
5	Problems in Urban Society in Current Scinario **Dr. Nilima Dawane**	25-30
6	Regional Integration in Bay of Bengal Region in Post-Covid-19 Period **Suneet Mitra Pandey**	31-39
7	Corporate Aiding in Economic Recovery with Reference to Recovery of State Aid **Prof. Arvind W. Ubale**	40-44
8	Impact of Covid-19 on Migrant Women Workers of Construction Industry: A Case Study of Dakshina Kannada District of Karnataka **Alwyn Stephen Misquith** **Dr. Jayavantha Nayak**	45-51
9	Impact of Covid- 19 Pandemic on Livelihoods and Food System : Political and Socio-Economic Impact on Agriculture Sector in India **Dr. Anjali C. Pande**	52-59
10	Covid 19 Impact on Agriculture Sector in India **Dr. Purvi H. Parmar**	60-67
11	Impact of COVID-19 on Migrant Workers in India: Issues and Challenges **Dr. Sunita S. Dhopte**	68-75
12	Impact of Covid-19 Pandemic on Economy of International Sports and Sports Entrepreneurship **Prof. Dr. Khushal J. Alaspure**	76-81
13	Social, Political and Economic Consequences of the Covid- 19 Pandemic **Dr. R. K. Kale**	82-88

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
[illegible]

Scanned by CamScanner

9. Impact of Covid- 19 Pandemic on Livelihoods and Food System : Political and Socio-Economic Impact on Agriculture Sector in India

Dr. Anjali C. Pande
Head, Home-Economics Department, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera.

Abstract

Corona virus pandemic has upset the Indian agrarian framework widely. By and by, the new quarterly GDP gauges post-COVID situation grandstand vigor and versatility in Indian horticulture. the lone area to enroll a positive development of 3.4% during the monetary year (FY here after) 2020–21 (Quarter 1: April 2020 to June 2020). Simultaneously, the prompt past quarter development was assessed at 5.9% seeing a decay by 2.5% point. In this specific circumstance, we plan to integrate the early proof of the COVID-19 effect on the Indian horticultural framework viz., creation, advertising and utilization followed by a bunch of likely systems to recuperate and succeed post-pandemic. Study discoveries show that the pandemic has influenced creation and showcasing through work and strategic imperatives, while the negative pay shock confined admittance to business sectors and expanded costs of food wares influencing the utilization design. The pandemic unleashed a generous physical, social, financial and passionate destruction on every one of the partners of Indian horticultural framework. Taking advantage of the emergency as a lucky break, the state reported a heap of measures and long-forthcoming changes. We propose a 10-point system going from social security nets, family cultivating, adapting cradle stock, staggered acquisition to optional farming to restore and thrive post-pandemic.

Introduction

Corona virus, starting from Wuhan, China – the focal point – has at last spread through the entire world and arose into a pandemic. India has effectively become a focal point for the infection, close to the USA, contaminating 9.6 million (14.6% of worldwide disease) as of December sixth, 20201 which has brought about a decrease of 23.9% total national output in quarter 1, FY 2020–21.2 A pandemic shock can have a more prominent importance on economies because of lost living souls contrasted with a climate shock, for example, dry season

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

or flood or an exchange ban. Without a doubt, this load of shocks influence farming frameworks; nonetheless, pandemic shocks influence every one of the areas of an economy. The pandemic upsets request and supply of food affecting the worldwide production network; while dry seasons will in general be restricted influencing just the related area or partners (Mishra et al., 2021). Essentially, stuns because of an exchange ban influence a specific area and can be amended in the present moment with reasonable approach measures. For example, in the event of supply lack because of dry spells, worldwide connected wholesalers and retailers secure from different sources to stay away from unfriendly impacts (Mishra et al., 2021). Despite what might be expected, pandemic effect might be sweeping and harsher and may even dive a country into downturn.

Other than the pandemic making a frenzy circumstance, beetle pervasion from East Africa to India catastrophically affected horticulture (Timilsina et al., 2020). Normal catastrophes like tornadoes and floods in eastern and western states caused obliteration adding to the troubles. Ranchers confronted a troublesome time in planting summer (April–June) and south-west storm (July–October) season crops, reaping winter (March–April) harvests and settling on advertising choices. During the state acquirement activities of the colder time of year reaped wheat, because of the requirement for sticking to the social separating standards, the Government of India suspended the Agricultural Produce Market Committee (APMC) Act empowering numerous impermanent nearby business sectors and acquisition focuses. Seeing the fruitful finish of a record acquisition activity, the Government of India detected a chance in the pandemic to introduce different changes to rural showcasing and limit limitations on development and offer of agrarian wares by declaration of three statutes that included revising the APMC Act to permit private exchange, empowering contract cultivating to defend the concurrence on value confirmations and altering the Essential Commodity Act 1955 (Government of India, 2020b). Coronavirus has uncovered weaknesses and force lopsided characteristics in the Indian rural framework for learning and building versatility against future shocks. The pandemic likewise featured the hidden imbalances and pay inconsistencies across the general public as showed by the reactions of various layers. Momentary adapting is significant and a most extreme need, as the pandemic, however apparently subsiding, may perhaps restore, influencing the economy including horticulture, hindering food security and occupations. In this specific situation, the paper expects to feature the effect of COVID-19 on

Principal
Narayanrao [illegible] Vidyalaya

Scanned by CamScanner

the Indian farming framework alongside likely methodologies (10-point) for post-pandemic recuperation.

Impact of COVID-19 on people's livelihoods, their health and our food systems

The COVID-19 pandemic has prompted a sensational loss of human existence worldwide and presents an exceptional test to general wellbeing, food frameworks and the universe of work. The financial and social interruption brought about by the pandemic is wrecking: a huge number of individuals are in danger of falling into outrageous destitution, while the quantity of undernourished individuals, presently assessed at almost 690 million, could increment by up to 132 million before the year's over.

A large number of endeavors face an existential danger. Almost 50% of the world's 3.3 billion worldwide labor force are in danger of losing their livelihoods. Casual economy laborers are especially powerless in light of the fact that the larger part need social security and admittance to quality medical care and have lost admittance to useful resources. Without the resources to acquire a pay during lockdowns, many can't take care of themselves and their families. For most, no pay implies no food, or, best case scenario, less food and less nutritious food.

The pandemic has been influencing the whole food framework and has uncovered its delicacy. Boundary terminations, exchange limitations and control measures have been keeping ranchers from getting to business sectors, including for purchasing sources of info and selling their produce, and rural laborers from reaping crops, accordingly upsetting homegrown and worldwide food supply ties and decreasing admittance to solid, protected and various eating regimens. The pandemic has destroyed positions and put a large number of occupations in danger. As providers lose positions, become sick and kick the bucket, the food security and nourishment of millions of ladies and men are under danger, with those in low-pay nations, especially the most minimized populaces, which incorporate limited scope ranchers and native people groups, being hardest hit.

A great many rural specialists – pursued and independently employed – while taking care of the world, consistently face undeniable degrees of working neediness, hunger and chronic weakness, and experience the ill effects of an absence of security and work insurance just as different kinds of misuse. With low and sporadic earnings and an absence of social help, large numbers of them are prodded to keep working, regularly in risky conditions, consequently

Principal
Narayanrao ... Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

uncovering themselves and their families to extra dangers. Further, while encountering pay misfortunes, they might depend on adverse adapting techniques, for example, trouble offer of resources, savage credits or youngster work. Transient rural specialists are especially defenseless, on the grounds that they face chances in their vehicle, working and everyday environments and battle to get to help estimates set up by governments. Ensuring the wellbeing and soundness of all agri-food laborers – from essential makers to those associated with food handling, transport and retail, including road food merchants – just as better wages and assurance, will be basic to saving lives and securing general wellbeing, individuals' vocations and food security.

In the COVID-19 emergency food security, general wellbeing, and business and work issues, specifically laborers' wellbeing and security, combine. Holding fast to working environment wellbeing and wellbeing rehearses and guaranteeing admittance to nice work and the assurance of work rights in all enterprises will be significant in tending to the human element of the emergency. Prompt and intentional activity to save lives and occupations ought to incorporate expanding social security towards general wellbeing inclusion and pay support for those generally influenced. These remember laborers for the casual economy and in ineffectively secured and low-paid positions, including youth, more established specialists, and travelers. Specific consideration should be paid to the circumstance of ladies, who are over-addressed in low-paid positions and care jobs. Various types of help are critical, including cash moves, kid stipends and solid school dinners, sanctuary and food alleviation drives, support for work maintenance and recuperation, and monetary alleviation for organizations, including miniature, little and medium-sized ventures. In planning and executing such measures it is fundamental that legislatures work intimately with managers and laborers.

Effect of COVID-19 on the Indian Agrarian Framework: Production, Promoting and Utilization

Vulnerability forced by the emergency, limitations on between state developments and nonattendance of transportation upset the food supply chains and spiked food costs (Kalsi et al., 2020) and influenced ranch tasks (Table 1). Our investigation utilizing the authority time series value information of 284 days spreading over from 01.11.2019 to 10.08.20209 of significant food items demonstrated that the discount and retail costs of heartbeats, wheat flour and milk was 1–5% higher a month post-lockdown; costs of palatable oils and staple oats (rice and

Principal
Narayanrao R... Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

wheat) were 4–9% lower in light of eliminating import limitations and government mediations like free conveyance of food grains. Vegetable costs rose with tomato costs expanding by 77–78% in a week and 114–117% a month post lockdown (for additional subtleties see Cariappa et al., 2020a). Markets saw expanded appearances in May attributable to trouble deal and market changes protected ranchers from lower costs (Varshney et al., 2020). More modest urban communities and provincial regions saw greater cost ascends than the metropolitan regions (Cariappa et al., 2020a; Narayanan and Saha, 2020).

10-Point Strategy to Strengthen the Agricultural Sector Post COVID-19

Our previously mentioned conversation on the effect of COVID-19 on the Indian farming framework empowered us to show up at a 10-point methodology for fortifying the area against the emergency and supportability issues (Workie et al., 2020) presented by the pandemic.



Figure 1. 10-point strategy to strengthen the agricultural sector post COVID-19.

Social Safety Nets

The inevitable shut down halted creation prompting position and pay misfortune and request downturn. The pandemic likewise prompted food misfortune and wastages that influenced the food and nourishment security particularly of the weak area, however momentarily, and can lifelongly affect abilities. The public authority and private intercessions should warrant dealing with the food misfortune and waste, resuscitating the interest and food consumption. To deal with the food squander at family level, execution of good food the board rehearses like arrangement of shopping records and arranging the course of suppers are

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Baruta

Scanned by CamScanner

supported (Principato et al., 2020). India's work ensure conspire – Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) could utilize transients who have returned to their own towns and direct exchanges could place cash under the control of helpless who don't approach MGNREGA. Government uses should hence be towards expanded subsidizing for MGNREGA (business), PM-KISAN (cash move to ranchers under the Prime Minister-Farmer Honor Fund) and PDS (offering nutri-rich food sources through open conveyance framework). Then again, dispersion of 'food coupons' or 'combo packs' including a container of products particularly biofortified food varieties like zinc and iron rich oats and millet will work with the country towards the pathway in guaranteeing nourishment security (Sendhil et al., 2020b).

Cost and Income Hazard the Executives

Coronavirus had less or unimportant impact on food costs (aside from vegetables). Notwithstanding, food costs are tormented by high instability which makes an interpretation of into value hazard to ranchers. The Government ought to consider setting up a value adjustment asset to protect ranchers from the value hazard. Further, crop protection in India by and large covers just the yield hazard; COVID-19 has introduced the public authority a chance to change the harvest protection conspire which covers the income (yield and value) hazard of ranchers (Cariappa et al., 2020b). Then again, ranchers and customers can profit the advantages of prospects exchanging to purchase/sell the normalized product contracts at a pre-chosen cost for conveyance later on (Sendhil et al., 2013). To meet the agreement size set by the product trades, Farmer Producer Companies (FPCs) can change themselves into aggregators.

Moving the Concentration from Essential to Auxiliary Agribusiness

Corona virus prompted lockdown has disturbed farming work advertises that saw enormous converse movement. An overview reports that 45% of the travelers got back during lockdown (Imbert, 2020). Primary shortcoming in the framework ought to be addressed to empower acknowledgment of cultivating as an endeavor. Cycles which increase the value of essential farming creation frameworks and undertakings which source crude materials from crop deposits, side-effects and waste from essential horticulture ought to be advanced (Dey, 2019). For example, cotton stalks have a more extensive and undiscovered degree for use as delicate and hard sheets, paper and mash fabricate (Chengappa, 2013). Speeding up research on very good quality auxiliary agribusiness items is earnestly required. Improvement of organic product based frozen yogurt, changing over bamboo or wood waste to fancy adornment,

Principal
Narayanrao [illegible] Vidyalaya
Gaurela

Scanned by CamScanner

arrangement of desserts from ox-like milk, utilization of normal filaments and winnowed potato to get ready bio-plastics, gelatin extraction from natural product stripped squanders and bio-ethanol creation are some examples.10 Further, advancements in the post-collect innovations of therapeutic and sweet-smelling plants which supply crude materials to home grown medications, drugs, beauty care products, and food flavor businesses could build send out potential and make work (Chengappa, 2013).

Family Cultivating

In planning to fortify the rural area, we should focus on the idea of maintainability. Nothing comes nearer as family cultivating to the model of reasonable food creation (FAO and IFAD, 2019). Family ranchers not just produce food; they save biodiversity, produce nutritious and neighborhood food sources, foster new procedures and foster developments to handle social, financial and ecological difficulties (FAO and IFAD, 2019). FAO proposes certifiable arrangements to help family ranchers as an answer for the unsuitable world food framework in which 33% of the food delivered goes to squander.

Aggregate Cultivating

Yield ranchers should regard the fruitful cases like dairy cooperatives to build efficiency and benefits. In contrast to oats, heartbeats and vegetables, milk costs were not influenced by the lockdown (Cariappa et al., 2020a). The obtainment, handling, and appropriation organization of dairy cooperatives opposed the exogenous shock. Harvest ranchers should meet up one or the other as cooperatives or rancher maker associations (FPOs) or rancher maker organizations (FPCs) and work in the organization of the worldwide food framework. Through total (of information sources utilized and yield created), economies of scale can be guaranteed. Bumping by the association government on the standards of agreeable federalism (as accomplished for Goods and Services Tax) is needed for land changes and agreement cultivating. These means together will can possibly defeat difficulties of creation and advertising dangers of the ranchers.

Interest in Agrarian Innovative Work

The assessed yearly development (in genuine terms) from 2014–15 to 2018–19 in farming and partnered areas was 2.9% (Government of India, 2020a). While the Indian economy shrunk by 23.9% in the principal quarter of 2020–21, agribusiness was the solitary area to enlist a positive development of 3.4% (ET, 2020). The time has come to understand that

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
[illegible]

Scanned by CamScanner

agribusiness area could keep the development motor faltering when different areas neglect to adapt to the situation notwithstanding the ranchers confronting colossal measure of creation and promoting chances in any event, during typical occasions. Without a doubt, consideration of the private area builds the speculation stream just as effectiveness in working of the framework. Private and government interests in rural innovative work, protection, finance, motorization, cold stockpiling, coordinations, computerization, advanced acquisition and appropriation (e-advertising) ought to be taken up as a need.

Conclusion

The pandemic drove emergency has unleashed ruin on both the Indian and worldwide horticultural framework. A worldwide food security emergency is in conceivably approaching that can't be countered without understanding the effects of COVID-19 on the horticultural framework, particularly of the non-industrial nations.

References

1. Barrett, CB (2020) Actions currently can check food frameworks aftermath from COVID-19. Nature Food 1(6):319–320.
2. Baudron, F, Liegeois, F (2020) Fixing our worldwide agrarian framework to forestall the following COVID-19. Attitude toward Agriculture 49(2):111–118.
3. Bellemare, MF (2015) Rising food costs, food value instability, and social distress. American Journal of Agricultural Economics 97(1):1–21.
4. Carberry, P, Padhee, AK (2020) Containing COVID 19 effects on Indian horticulture.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

Universtiy Professors' Association

Reg. No. MAH/82/2013 (Nag)

UPA National Peer-Reviewed E-Journal

(ISSN : 2455-4375)

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr. Dr. Manjiri Milind Chepe of Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Distt.-Amravati has contributed a Scholarly Research Paper Entitled

GOVERNMENT SCHEMES FOR WOMEN ENTREPRENEURS

to be published in UPA National Peer Reviewed Interdisciplinary E-Journal in the Month of March-2021

Dr. Bharti Katekhaye, Editor | Dr. Sampada Naseri, Editor | Dr. Anil Dodewar, Chief-Editor

Download Certificate

Subscribe to Our newsletter

Follow us on Facebook

University Professors' Association - UPA

Helpful Links

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

Dr.Sampada Naseri
(Editor, UPA Interdisciplinary e-journal)

Dr Bharti Katekhaye
(Editor, UPA Interdisciplinary e-journal)

Advisory Board

Dr. Sanjay Dudhe
Pro-VC
RTM Nagpur University
Nagpur

Dr. Vandana Bhagdikar
Principal
Mahila Mahavidyalaya, Nandanvan,
Nagpur

Dr. Chetankumar Masram
Principal
S.N. Mor College
Tumsar

Dr. Rajashree Vaishnav
Dean
Interdisciplinary Studies,
RTMNU, Nagpur

Dr. Shubhangi Dange
Former Chairperson
BOS. Home Economics

Dr. Kalpana Jadhav
Professor and Head
PGTD, Home Science,
RTMNU,Nagpur.

Dr. Suneeta Chandorkar
Faculty of Community Sciences
The M.S. University of Baroda

Peer-Review Board

Dr. Leena Kandalkar
Principal
Indirabai Meghe ,Mahila Mahavidyalaya,
Amravati.

Dr. Anjali Lakhe
Dept of Home Science
KR.M. Mahila Mahavidyalaya,
Nanded.

Dr. Swati Chande
Principal
Smt.S.R.M. Mahila Mahavidyalaya,
Khamgaon

Dr. Rambha Sonaye
Principal
Priyadarshini Mahavidyalaya, Wardha

Dr. Radheshyam Dipte
Head, Dept of English
S.N. Mor College,
Tumsar

Dr. Sharad Meshram
Assistant Professor in Marathi
Shivprasad Sadanand Jayswal College, Arjuni
Morgaon,
Dist. Gondia

Sr. no.				Page	
Section:- English					
1	**Dr. Manjiri Milind Chepe** Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Distt.-Amravati	GOVERNMENT SCHEMES FOR WOMEN ENTREPRENEURS	1-5		
2	**Dr. Sampada Naseri** Mahila Mahavidyalaya, Nandanvan, Nagpur-09	ROLE OF TECHNOLOGY IN WOMEN EMPOWERMENT	6-11		

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

GOVERNMENT SCHEMES FOR WOMEN ENTREPRENEURS

Dr. Manjiri Milind Chepe
Associate Professor
Department of Home-Economics
Narayanrao Rana Mahavidyalaya,
Badnera, Distt.-Amravati
Email : chepemanjiri@gmail.com
Mob : 9420520025

Abstract : *Women entrepreneurship has been recognized as an important source of economic growth. Women entrepreneurs create new jobs for themselves and others and also provide society with different solutions to management, organization and business problems. Women are growing in the field of entrepreneurship and developing the field in dynamic terms. Women can turn things their way when they wish to and it has been noted that they have been very consistent with progress. Women who wish to earn on their own and be businesswomen are encouraged in today's day and age because of the progress their gender has made in the field. Today's women entrepreneurs do not come only from the established business families or from the higher-income sections of the population, they come from all walks of life and from all parts of the country. However, they still represent a minority of all entrepreneurs. Women entrepreneurs often face gender-based barriers to starting and growing their businesses, like discriminatory property, matrimonial and inheritance laws and/or cultural practices; lack of access to formal finance mechanisms; limited mobility and access to information and networks, etc. This paper focuses on the role of the government in enhancing women entrepreneurship and various government schemes for women entrepreneurs.*

Introduction :

Women entrepreneurship has been recognized as a very important supply of economic process. Women entrepreneurs produce new jobs for themselves and others and conjointly give society with completely different solutions to management, organization and business issues. However, they still represent a minority of all entrepreneurs. Women entrepreneurs usually face gender-based barriers to start and growing their businesses, like discriminatory property, marital status and inheritance laws and/or cultural practices; lack of access to formal finance mechanisms; restricted quality and access to data and networks, etc.

Women's entrepreneurship will build a very robust contribution to the economic well-being of the family and communities, impoverishment reduction and women's management, therefore tributary to the Millennium Development Goals (MDGs). Women's entrepreneurship will build a very robust contribution to the economic well-being of the family and communities, impoverishment reduction and women's management, therefore tributary to the Millennium Development Goals (MDGs). Thus, governments across the giobe and others numerous organizations are taking actively measure and endeavor—

Principal

Scanned by CamScanner

promotion of women entrepreneurs through numerous schemes, incentives and promotional measures. India continues to see immense successful women entrepreneurs; Vandana Luthra, Kiran Mazumdar Shaw, Priya Paul, Ritu Kumar, Suchi Mukherjee, Aditi Gupta, Falguni Nayar, Vani Kola, Radhika Ghai Aggarwal, Indra Nooyi, Chandra Kochar and Ekta Kapoor being a few of them. Such women entrepreneursencourage other aspiring women entrepreneurs to turn their dream into reality. However, a big part of chasing your dreams of starting a business, no matter how small, is capital. And as a way of encouraging such businesses, the Indian Government offers a financial boost specially designed for women entrepreneurs.

Role of Government to enhance women Entrepreneurship :

1. Government has to establish proper training classes at least monthly ones to encourage entrepreneurial skills among rural women.
2. Bankers and government should organize loan awareness schemes programs in the villages to educate rural women about the benefits provided by them.
3. Develop a policy to verify the amount provided by the banks.
4. Encourage women entrepreneurs by providing gift schemes who perform business well and participate well in entrepreneurial skill programmes.
5. There should be a continuous attempt to inspire, encourage, motive and co-operate women entrepreneurs.
6. To organize training programmes to develop professional competencies in managerial, marketing, financial production process, profit planning, to maintaining books of accounts and other skills. This will encourage women to undertake business.
7. There is need to change negative attitude of society towards women
8. District Industries centers and single window agencies should make use of assisting women in their trade and business guidance.
9. Better educational facilities and schemes and vocational training programmes will be arranged for development of rural women entrepreneurship.

Various Government Schemes For Women Entrepreneurs :

1) BharatiyaMahila Bank (BMB) business loan:

BMB Inaugurated on 19th November 2019 and was merged with State Bank of India on 1st April 2017. This loan is for women who wanted to start their own business. It offered women entrepreneurs business loans up to 20 Crores for manufacturing enterprises with an interest of 10.15% and more. It also offers collateral-free loans up to 1 crore under Credit Guarantee Fund Trust for Micro and Small Enterprises (CGTMSE) cover. The loans under this bank loan scheme are to be repaid in seven years.

2) Annapurna Scheme:

This loan is provided to women in the food catering industry, still establishing their small scale businesses. The loan allows these women entrepreneurs to avail it as capital requirements like buying equipment and utensils, setting up trucks, etc. Under this scheme,

Principal
Narayanrao [illegible] havidyalaya

Scanned by CamScanner

women can sell packed food items and snacks which is one of the most common businesses that women entrepreneurs scope out and excel in since it is something that housewives have been managing all their lives and are accustomed to. This boosts their sales since they have a chance at better capital and new products to kickstart their business than they could otherwise afford. The loan limit is Rs. 50,000 under the scheme.

3) Stree Shakti Package:

Women who have 50% share in the ownership of a firm or business and have taken part in the state agencies run Entreprencurship Development Programmes (EDP) is eligible for this package. The scheme also offers a discounted rate of interest by 0.5% in case the amount of loan is more than 2 lakhs. For tiny sector units no security is required for loans up to Rs. 5 lakhs.

4) Orient Mahila Vikas Yojna Scheme:

This scheme is for women who hold 51% share capital separately or collectively as a proprietary concern. It is a very good opportunity for these stakeholders to help expand their business and add to the development of their field. This scheme does not require collateral security while also giving a concession at the interest rate of up to 2%. The period of repayment is flexible up to 7 years and the loan limit is Rs. 25 Lakhs.

5) Dena shakti scheme:

This scheme is provided by Dena bank to those women entrepreneurs in the fields of Agriculture & allied activities, Retail Trade, Micro Credit, Education, Housing and retail & small business enterprises. There is a concession of 0.25 % on rate of interest. Scheme offers loans up to Rs 20.00 lakhs under retail trade, Rs 20 lakhs under education and housing and Rs 50,000/- under micro credit.

6) Udyogini Scheme

This program encourages women to be self-reliant and help them in self-development by empowering them economically to be able to do so. This scheme encourages budding women entrepreneurs by providing loans in the regards and giving good rates of interest in comparison to private sector skyrocketing rates, while also being a trustworthy source of lending. This is only valid for those who have a family income of less than Rs. 40,000 per annum. They especially encourage loans in the trade and service sector and the cap amount for the same is Rs. 1 Lakh.

7) Cent kalyani scheme:

This scheme is offered by the Central Bank of India. And is for women business owners in multiple areas such as SMEs or agricultural work or retail trading. Under this scheme loans up to Rs.1 crore are sanctioned. There is no need of collateral and guarantors. There are no processing fees and interest rate varies according to market rates.

Principal

Scanned by CamScanner

8) Mahilaudyamnidhi scheme:

This scheme is offered by Punjab National Bank and Small Industries Development Bank of India (SIDBI). This scheme provides financial assistance of up to Rs 10 lakh to set up a new small-scale venture. It also promotes upgrading and modernization of existing projects. And repayment period is 10 years. SIDBI also includes a moratorium period of maximum 5 years. The interest rate varies according to market rate.

9) Mudra yojana scheme for women:

This scheme offered by nationalized banks under the Pradhan Yojna. Which provides financial support to women entrepreneurs who want to start their own small businesses like day care,beauty salon, tuition, tailoring unit, etc. The loans between Rs.50,000 to Rs.50 lacks are sanctioned under this scheme.For loans below Rs.10 lack there is no need of collateral and guarantors.It has three plans

i. Shishu – Offers loan upto Rs.50,000 for new businesses with interest 1% per month and repayment period is 5 years.
ii. Kishore – Offers loan from Rs.50,000 to 5 lacks for well established businesses. Interest depends on bank, scheme guidelines and applicants credit history. Repayment also depends on bank's discretion.
iii. Tarun – Offers loan from Rs.5 lacks to 50 lacks for business expansion. Here also interest depends on bank, scheme guidelines and applicants credit history. Repayment also depends on bank's discretion.

10) TREAD (Trade Related Entrepreneurship Assistance and Development) scheme :

This scheme aims to economic empowerment of women by providing credit (through NGOs), training, development and counseling extension activities related to trades, products, services etc. Government grant up to 30% of the total project cost as appraised by lending institutions which would finance the remaining 70% as loan assistance to applicant women.

11) Pradhan Mantri Rozgar Yojna

Also known as PMRY, this is one of the best schemes for women entrepreneurs both socially and financially. The focus of this scheme is on creating skill-based, self-employment through women entrepreneurs and smart minds at work being utilized for monetary independence. This scheme covers both urban and rural areas and was developed through several amendments in cost, eligibility, and subsidy limits. The loan subsidy amount is up to 15% of the project cost with an upper ceiling of Rs. 12,500 per borrower as a restriction. The scheme applies to all types of ventures in industries, trade and services. The age limit is 35 years and loan limit for business is Rs. 2 Lakh while for service and industry, Rs. 5 Lakh.

Conclusion :

Principal

Scanned by CamScanner

Breaking centuries of conventions, Indian women have come out of their comfort zone and carved a niche for themselves in the business world. The corporate career has given them financial independence and an opportunity to demonstrate their managerial skills.

But, entrepreneurship took her much ahead and gave her the confidence to lead the world with an example. India currently has over 8.05 million women entrepreneurs. It is around 14% of the total Indian business industry. Apart from this, recent data also highlights that over 79% of women-owned enterprises are self-financed. Women participation in the field of entrepreneurship is increasing at considerable rate, efforts are being taken at the economy as well as global level to enhance woman's involvement in the enterprise sector. Educated Women is contributing to a great extent to the social transformation and in the future, will be seen that more women venturing into areas traditionally dominated by men.

References

- Rais Ahmad – Agriculture,Rural Banking and Micro Finance in India
- Singh Katar - Rural Development-Principal,Policies and Management
- *Scott, S.; Venkatraman, S. (2000). "The promise of entrepreneurship as a field of research". Academy of Management Review*
- *Scott, S.; Venkatraman, S. (2000). "The promise of entrepreneurship as a field of research". Academy of Management Review*
- Drucker, Peter F. Innovation and Entrepreneurship. New York: Harper Business, 1985.
-] BhardwajG.N. et al, (2012), "Women Entrepreneurship in India: Opportunities and Challenges" CH Institute of management and communication, vol2http://www.chimc.in/Volume2.1/Volume2Issue1/GurendraNathBhardwaj. Pdf
- http://www.bbamantra.com/women-entrepreneurship/
- https://en.wikipedia.org/wiki/Female_entrepreneurs
- https://www.slideshare.net/Amit7613/women-entrepreneurs-27656407
- http://www.bbamantra.com/womenentrepreneurship/https://en.wikipedia.org/wiki/Female_entrepreneurs
- https://savvywomen.tomorrowmakers.com/wise/government-schemes-can-help-women-entrepreneurs-india-grow-their-small-businesses-article

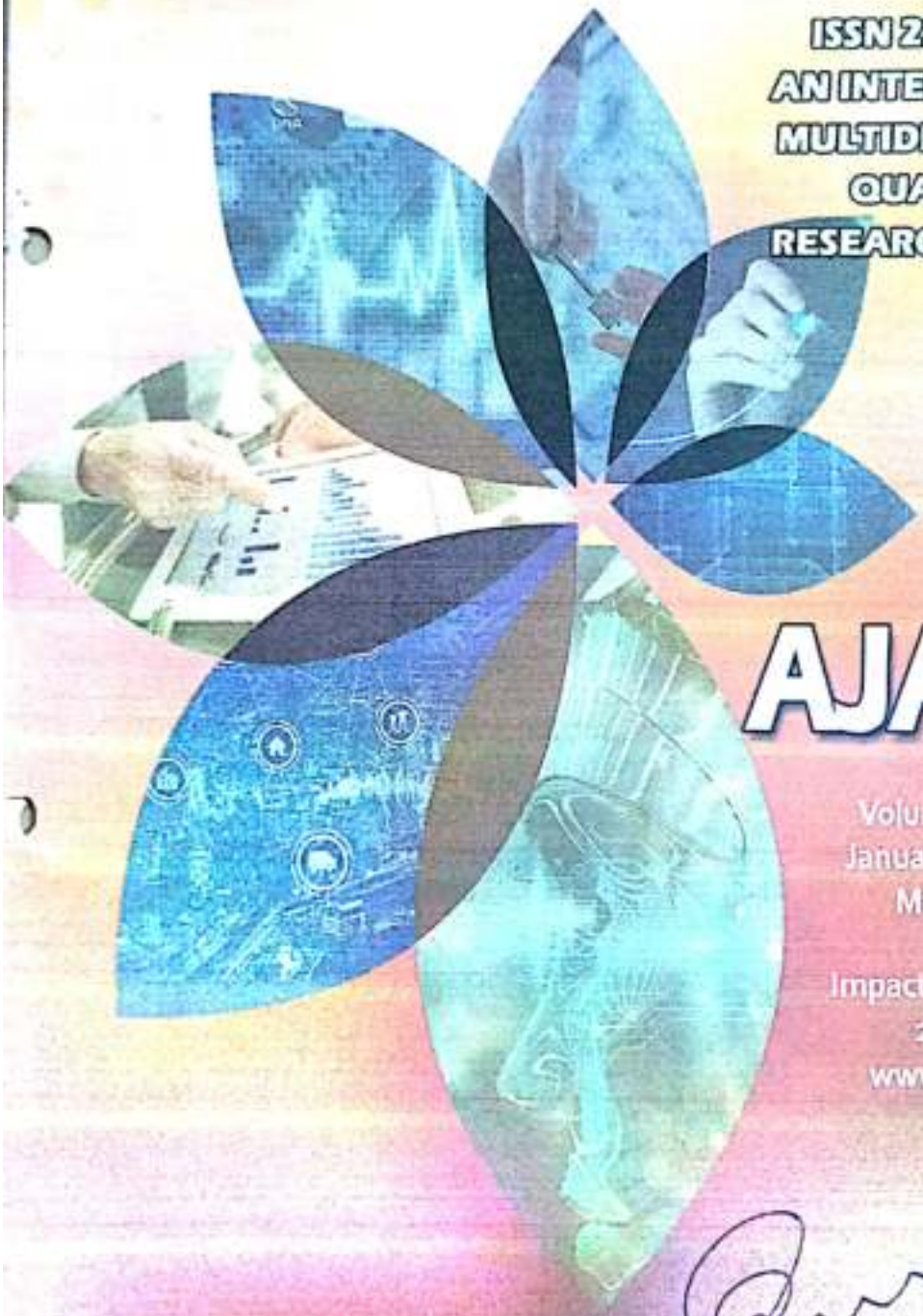
Principal

Scanned by CamScanner

Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL



AJANTA

Volume - X, Issue - I,
January - March - 2021
Marathi / Hindi

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

CONTENTS OF MARATHI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	आत्मनिर्भर भारतासाठी अंगणवाडी मधील बालकांचे पोषण दर्जाचे अध्ययन **डॉ. मंजिरी मि. चेपे**	५८-६३
१४	२१व्या शतकातील आत्मनिर्भर भारत **डॉ. आशा दादासाहेब कदम**	६४-६८
१५	भारतीय कृषी आणि संबधित उद्योग यांचा कोरोना काळातील थोडक्यात आढावा **डॉ. दिवाकर थोंडू कदम**	६९-७२
१६	आत्मनिर्भर भारतासाठी मानसशास्त्रज्ञांची भूमिका **श्री नरोटे गोरक्ष लक्ष्मण**	७३-७७
१७	आत्मनिर्भर भारत आणि शेती व ग्रामीण विकास **प्रा. नलिनी पाचर्णे**	७८-८३
१८	आत्मनिर्भर भारत म्हणजेच स्वावलंबन **प्रा. डॉ. शुभांगी सुभाष दांगट**	८४-८५
१९	आत्मनिर्भर भारत आणि भारतीय शेती **डॉ. प्रमोदिनी विठ्ठल कदम**	८६-८९
२०	जागतिकीकरण आणि भारतीय कृषी **डॉ. प्रशांत काशिनाथ लभाने**	९०-९४
२१	आत्मनिर्भर भारत : योजना व नियोजन **प्राचार्य डॉ. संजीव लाटे**	९५-१०१
२२	आत्मनिर्भर भारत अभियानाचा चिकित्सक अभ्यास **घोलप के. एस.** **डॉ. देसाई व्ही. आर.** **डॉ. लामदाडे बी. बी.**	१०२-१०७
२३	स्वावलंबी भारतात ग्रामीण विपनातील समस्या व आव्हाने **डॉ. मारुती अर्जुन केकाणे**	१०८-११४
२४	ऑनलाईन राष्ट्रीय कृषी बाजार (e-NAM) : एक आढावा **प्रा. रामदास गादगे**	११५-११९

Principal
Narayanrao Tapkir Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

१३. आत्मनिर्भर भारतासाठी अंगणवाडी मधील बालकांचे पोषण दर्जाचे अध्ययन

डॉ. मंजिरी मि. चेपे
सहयोगी प्राध्यापिका, गृह अर्थशास्त्र विभाग, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा, जिल्हा-अमरावती.

प्रस्तावना

सुदृढ शरीरातंच निरोगी मन वास करते असे म्हणतात! अशी सुदृढ व्यक्तीही त्या देशाची संपत्ती असते. सदृढ समाजासाठी चौरस आहार, संतुलित आहाराचे महत्त्व याबाबत लोकांमध्ये सजगता असणे गरजेचं आहे, त्याचबरोबर माता आणि बालकांची घ्यावयाची काळजी याबाबत समाजामध्ये जनजागृती होणं गरजेचे आहे.

कुपोषण हे अन्न कमी पडल्याने आणि विशिष्ट अन्नघटक कमी पडल्याने देखील होते. कुपोषण काही वेळा गैरसमजुतीतूनही होत असते. माता व बालकांना योग्य आहार व त्याचे आरोग्य व पोषण याबाबत जनजागृती करण्यासाठी शासनाने राजमाता जिजाऊ, माता-बाल, आरोग्य पोषण मिशन सुरू केले आहे.

अंगणवाडी ही मागास खेडयातील बालकांसाठी सुरू झालेली योजना होती. मुले हीच राष्ट्राचे भविष्य असतात. त्यामुळे बालकांची जडणघडण आणि विकास हेच आपले प्रथम कर्तव्य आहे. सहा वर्षाखालील मुलांचे आपल्या लोकसंख्येतील प्रमाण सुमारे 15.8% इतके आहे. या वयोगटात मुलामुलींचे परस्पर प्रमाण हजारी 927 इतके आहे. ही पिढी अनेक प्रतिकूल घटकांचा सामना करीत आहे. या प्रतिकूल घटकांचे निराकरण होऊन या वयोगटातील बालकांचे संवर्धन व्हावे म्हणून 1975 साली गांधीजयंती पासून भारत सरकारने एकात्मिक बाल विकास सेवा योजना (अंगणवाडी) सुरू केली. गेली 30 वर्षे प्रत्येक गावांत अंगणवाडी सुरू झालेली आहे. अंगणवाडी ही खास बालकांसाठी (सहा वर्षाखालील) तयार झालेली योजना असून त्यात पुढील सेवा येतात:

- पूरक आहार
- लसीकरण
- अनौपचारिक शालापूर्व शिक्षण
- आरोग्यशिक्षण व पोषण शिक्षण
- बालकांची आरोग्यतपासणी
- 'अ' जीवनसत्त्व पुरवठा आणि वैद्यकीय सेवा, इत्यादी.

अंगणवाडीमार्फत हया सहाही सेवा द्यायच्या असून, तीन वर्षाखालील मुलांना घरभेटीतून सेवा पुरवायच्या आहेत, तर तीन वर्षावरील मुलांना अंगणवाडीत तीन तास एकत्र आणून सेवा पुरवायच्या आहेत. वैद्यकीय सेवा, तपासणी, इत्यादींसाठी प्राथमिक आरोग्य केंद्र साहाय्य करते.

Scanned by CamScanner

अंगणवाडीत वजन तपासणी, वजन तक्ते-आरोग्यतक्ते ठेवणे, कुपोषण लवकर शोधून काढणे आणि सुधारणे, पूरक आहार - सुखदा (सुकडी), 'अ' जीवनसत्त्व डोस, शालापूर्व शिक्षण (पोषण, स्वच्छता इत्यादी विषयांवर भर) ह्या सेवा दिल्या जातात.

अंगणवाडीत फक्त तीन वर्षापुढची मुले येणे शक्य असते. यामुळे त्यापेक्षा कमी वयाची मुले योजनेच्या दृष्टीने दुर्लक्षित राहतात. कुपोषण व आजारांचे दुष्टचक्र याच लहान वयोगटात महत्त्वाचे असते. अंगणवाडी योजनेची ही एक मोठी त्रुटी आहे. मात्र तीन वर्षांच्या वरच्या गटातील मुलांना योजनेचा थोडाफार लाभ मिळतो. विशेषत: अतिकुपोषित मुलांचे प्रमाण कमी होण्यास मदत होते असे दिसते. पण कुपोषण-अनारोग्य ज्या परिस्थितीमुळे निर्माण झाले त्याचा मुकाबला करणे जास्त महत्त्वाचे आहे.

अंगणवाडी मध्ये पोषण दर्जा तपासण्यासाठी साधने

बालकांसाठी आरोग्य तक्ते (वजन तक्ते)

अंगणवाडीत प्रत्येक बालकाचे दर महिन्यात एकदा वजन केले जाते. आरोग्य तक्त्यातील नोंदीवरून मूल ठीक आहे, की कुपोषित आहे याचा अंदाज येतो. तसेच अचानक वजन कमी झाले तर तेही कळते. मूल कुपोषित असेल तर त्याप्रमाणे लवकर उपाययोजना करायला सोपे जाते.

अंगणवाडीत बालकाची प्रत्येक महिन्याची होणारी वजननोंद करतात. या सर्व बिंदूंना जोडणारी रेषा पाहून बाळाची एकूण प्रगती लक्षात येईल. या तक्त्यावरून अनेक गोष्टी समजतात.

पहिल्यापासून बाळाची प्रगती कशी आहे?

कधी अचानक वजन कमी झाले काय ?

बालकाच्या पोषणाचा (वजनाचा) दर्जा कोणता आहे, मूल कुपोषित आहे का? असल्यास कुपोषणाची कोणती पायरी (पहिली, दुसरी, खालची) आहे.

वजनतक्ते ठेवणे हा बालकांच्या आरोग्यसेवेतला एक महत्त्वाचा घटक आहे. पण केवळ वजन मोजणे पुरत नाही. बालकाची उंची, बाढीचे व विकासाचे टप्पे, इत्यादी गोष्टीही तपशीलवार पाहिल्या पाहिजेत.

अंगणवाडीच्या अडचणी

- कुपोषण हटवणे ही सोपी गोष्ट नाही. ही लढाई समाजाने अंगणवाडीवर सोपवून समस्या सुटणार नाही. अंगणवाडी केवळ यासाठी मदत करते. अंगणवाडी सेवांमध्येही अनेक अडचणी असतात.
- तीन वर्षाखालील मुले आपली आपण अंगणवाडीत येऊ शकत नाहीत. कधी कधी त्यांच्या आया त्यांना जेवणाच्या वेळेला अंगणवाडीत आणतात. पण खरे म्हणजे या मुलांनाच जास्त कुपोषण असते. या विचित्र समस्येबद्दल आपण काय करू शकतो?
- पालकांचा असा समज असतो की अंगणवाडीत मुख्य आहार मिळतो. म्हणून कदाचित घरी ते मुलाला कमी आहार देत असतील. यामुळे पूरक आहाराचा योग्य परिणाम होऊ शकत नाही. अंगणवाडीत मिळतो तो आहार फक्त 'पूरक' असतो, पूर्ण नसतो हे आपण पालकांना सांगायला पाहिजे.

Narayanrao ... Vidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

- अंगणवाडीत कधीकधी अन्नपुरवठा अनियमित होतो. असे मुद्दे आपण ग्रामपंचायतीसमोर आणू शकतो. अंगणवाडीत ब-याच नोंदी ठेवायच्या असतात. तिला तशी खूप कामे असतात. आणि त्यात तिचा बराच वेळ जातो. बालसंगोपन व स्त्रियांच्या आरोग्याच्या सर्व कामांत तिची खूप मदत होऊ शकते

सर्वसामान्यपणे आहार व पोषणामधील अडचणी

खरं तर पोषण चळवळीचा मुख्य पाया आहे तो संतुलित आहार घेणे. आपण बऱ्याचवेळा पाहतो लोक संतुलित आहार घेत नाहीत. जाहिरातींना लोक जास्तीत जास्त आकर्षित होऊन जंक फुड अथवा फास्ट फुड खाण्यावर लोकांचा जास्त भर असतो. बहुतांशी महिलांना घरात मिळणाऱ्या दुय्यम स्थानामुळे शेवटी जेवणे, अन्न शिळे खाणे असे प्रकार होतात परिणामत: कुपोषण वाढत असते. फास्ट फुडचे जास्त सेवन केल्याने अविष्यात लठ्ठपणा, हायपरटेंशन, असे आजार होण्याची जास्त शक्यता असते तर कुपोषणामुळे बुटकेपणा, बारिक शरीरयष्टी असणारी मुलं पाहतो जी वारंवार आजारी पडतात. अशा मुलांचा शारीरिक विकास नीट न झाल्याने बौद्धीक विकासही नीट होत नाही. त्यामुळे आपण जे खातो तो आहार संतुलित असला पाहिजे याकडे लक्ष देणे गरजेचे कमी खा पण संतुलित खा असाच संदेश यामधून द्यायचा आहे.

पोषण चळवळीमधील विषयांवर भर

पोषण चळवळीमध्ये प्रत्येक घटकाची वर्गवारी करण्यात आली आहे. यामध्ये गर्भवती माता, स्तनदा माता व बालक, किशोरी व कमी वजनांच्या मुलांच्या पालकांना समुपदेशनचा स्वतंत्रपणे कार्यक्रम राबविण्यात येत आहे. गर्भवती मातांना त्यांचा आहार व गरोदरपणाच्या कालावधीत घ्यावयाची काळजी तसेच बालकाचा जन्म झाल्यानंतर घ्यावयाची काळजी, तसेच किशोरवयीन मुलींना आहाराबाबत मार्गदर्शनही या उपक्रमाअंतर्गत करण्यात येत आहे. तसेच लहान मुलांचे कुपोषण दूर करण्याकरिता त्यांचे वजन, उंची वृध्दीदरपत्रक ही देण्यात येते ज्यामुळे पालकांनाही आपल्या मुलांची उंची किती असावी हे समजते त्याचे वजन किती असले पाहिजे याचीही समज येते.

स्तनदा मातांसाठी राबविण्यात येणारे उपक्रम

ऑगस्ट महिन्यात स्तनपान सप्ताह राबविण्यात येत आहे. स्तनपान सप्ताह निमित्ताने जनजागृती करण्यावर भर देण्यात येत आहे. प्रसुतीनंतर एका तासाच्या आत बालकाला मातेच्या अंगावरील दुध पाजणे आवश्यक आहे. तसेच माता व बालकाच्या दृष्टीने देखील अत्यंत आवश्यक अशी बाब आहे. तसेच मातेच्या दुधा इतका उत्कृष्ट दुसरा कोणताही पर्याय नाही. बालक निरोगी राहण्याकरिता तसेच तंदुरुस्त असावे याकरिता मातेने बालकाला दूध वेळेवर द्यावे. बालकाच्या हालचालीवरून बालकाला भुक लागली आहे का हे देखील समजू शकते त्यामुळे पहिल्या सहा महिन्यात बालकाला वरचे पाणी देखील न देता पुर्णपणे दूध दिले जावे. सहा महिने पूर्ण झाल्यानंतर बालकाला वरील खाण्याबरोबर दोन वर्षापर्यंत आईचे दूध देणे आवश्यक आहे. याबाबतही पुर्णपणे जनजागृती या सप्ताहात करण्यात येत आहे.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

पोषण चळवळीतील नाविन्यपूर्ण उपक्रम

पोषण चळवळीमध्ये लोकसहभागातून नाविन्यपूर्ण उपक्रम राबविण्यात येत आहेत. जसे अक्षयपात्र या उपक्रमाअंतर्गत गावातील लोकांनी अंगणवाड्यांना फळे भाज्या यांचा पुरवठा करावा, असे आवाहन करण्यात आले या उपक्रमाला इतका चांगला प्रतिसाद मिळाला की गावातील लोक या अक्षयपात्रामध्ये आपल्याकडे अतिरिक्त उपलब्ध असलेल्या भाज्या व फळे या अक्षयपात्रामध्ये देतात. अंगणवाडी परिसरामध्ये परसबागा तयार करणे, मटका फ्रीज मध्ये भाज्या ठेवणे मनोरंजनात्मक बैठकांचे आयोजनही केले जाते.

माता व बाल संगोपनात लोकांना आवाहन

मातांचे व बालकांचे पोषण उत्कृष्टरित्या होण्याकरिता कुटूंबाचा व समाजाचाही सहभागही महत्त्वाचा आहे. कुटूंबाचा व समाजाचा पाठिंबा असेल तर महिलांना मोठ्या प्रमाणात मदत होईल. कारण बऱ्याच वेळा महिलांना मुलाची जबाबदारी सांभाळण्याबरोबर घरकाम, शेती, नोकरी ही कामेही करावी लागतात अशा वेळी गरोदरपण ते प्रसुतीनंतर बालकाची जबाबदारी सांभाळण अवघड होते. अशा वेळी पती, आई, वडील यांची जबाबदारी मोठी राहते तसेच समाजाकडूनही पाठिंबा असेल मुलाचे पालन पोषण करण्यामध्ये मदत होते. त्यामुळे माता आणि बालकाचे आरोग्य चांगले रहावे याकरिता सामाजिक व कौटुंबिक पाठिंबाही अत्यंत महत्त्वाचा आहे.

एकात्मिक बाल विकास सेवा योजना

एकात्मिक बाल विकास सेवा योजना ही देशात 2 ऑक्टोबर 1975 पासून सुरु झाली. एकात्मिक बाल विकास सेवा योजनेचे उद्देश

- ० ते ६ वर्ष वयोगटातील बालकांच्या पोषण व आरोग्य विषयक स्थितीमध्ये सुधारणा घडवून आणणे.
- बालकांच्या योग्य शारीरीक, मानसिक व सामाजिक विकासाचा पाया घालणे.
- अर्भक मृत्यू, बालमत्यू कुपोषण व शाळा गळतीच्या प्रमाणात घट करणे.
- बाल विकासाला प्रोत्साहन देण्यासाठी विविध विभागांमध्ये धोरण निश्चिती आणि कार्यक्रमाची अंमलबजावणी करणेसाठी प्रभावी समन्वय कायम ठेवणे.
- योग्य पोषण आहार व आरोग्य शिक्षण याद्वारे बालकांचे सामान्य आरोग्य व पोषणासंबंधी काळजी घेण्यासाठी मातांना सक्षम बनविणे.

एबाविसे योजने अंतर्गत देण्यात येणा-या सेवांची माहिती

- पूरक पोषण आहार
- आरोग्य तपासणी
- लसीकरण
- संदर्भ सेवा
- अनौपचारिक पूर्व प्राथमिक शिक्षण
- आरोग्य व पोषण शिक्षण

Principal
Narayan... ...havidyalaya

Scanned by CamScanner

एबाविसे योजने अंतर्गत लाभ देण्यात येणारे लाभार्थी

- ० ते ६ महिने वयोगटातील बालके
- ६ महिने ते ३ वर्ष वयोगटातील बालके
- ३ वर्ष ते ६ वर्ष वयोगटातील बालके
- गर्भवती व स्तनदा माता
- किशोरवयीन मुली
- १५- ४५ वयोगटातील अन्य महिला

एकात्मिक बाल विकास सेवा योजने अंतर्गत राबविण्यात येणा-या विविध योजना

पूरक पोषण आहार

पूरक पोषण आहार योजने अंतर्गत 6 म. ते 6 वर्ष वयोगटातील बालके , गरोदर व स्तनदा माता, किशोरी मुली यांना लाभ देण्यात येतो. पैकी 6 म. ते 3 वर्ष वयोगटातील बालके , गरोदर व स्तनदा माता, किशोरी मुली यांना स्थानिक स्तरावर बचत गटांमार्फत उत्पादित घरपोच आहार (Take Home Ration - THR) देण्यात येतो. 3 व. ते 6 व. वयोगटातील बालकांना अंगणवाडी मध्ये बचत गटाने तयार केलेला गरम ताजा आहार देण्यात येतो. सदर योजने करीता 90 टक्के केंद्र शासनाचा व 10 टक्के राज्य शासनाचा निधी प्राप्त होतो

ग्राम बाल विकास केंद्र (VCDC)

- ग्राम बाल विकास केंद्र हे अंगणवाडी केंद्रात अंगणवाडी सेविकां व आरोग्य विभागामार्फत घेण्यात येते. सदर केंद्रामध्ये आहार व आरोग्य सेवा दिल्या जातात.
- ग्राम बाल विकास केंद्राचा कालावधी ३० दिवसांचा असतो. त्यानंतर ग्राम बाल विकास केंद्रामध्ये दाखल बालकांच्या वृद्धीसनियंत्रणाचा पाठपुरावा अंगणवाडी सेविकांमार्फत एक वर्षापर्यंत केला जातो.
- ग्राम बाल विकास केंद्रामध्ये ६ महिने ते ६ वर्ष वयोगटातील सॅम व मॅम श्रेणीतील बालकांना ३० दिवस दाखल करण्यात येते.
- ग्राम बाल विकास केंद्रामध्ये सदर बालकांच्या मातांना आरोग्य व पोषण प्रशिक्षण दिले जाते.
- सदर ग्राम बाल विकास केंद्रे लोकसहभागातून चालविली जात आहेत.
- अंगणवाडी इमारत बांधकाम
- अंगणवाडी इमारत बांधकामाकरीता डी.पी.सी., १३ वा वित्त आयोग, नाबार्ड मार्फत निधी उपलब्ध करून दिला जातो.
- जानेवारी २०१४ पासून अंगणवाडी इमारत बांधकामासाठी खर्चाची मर्यादा र.रु ६.०० लाख प्रति अंगणवाडी याप्रमाणे करण्यात आलेली आहे.

Principal
Narayanrao Rao Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

निष्कर्ष

भारतातील बालकल्याणाचे गंभीर स्वरूप लक्षात घेऊन स्वातंत्र्योत्तर काळात भारत सरकारने देशातील गरिबी, दारिद्र्य, बालमृत्युमान कमी करण्यासाठी विविध कार्यक्रमांची निर्मिती केली आहे. यापैकीच एक महत्वपूर्ण योजना म्हणून 'आय|सी|डी|एस' योजनेचा उल्लेख करता येईल. देशातील सर्व 0 ते 6 वयोगटातील बालकांच्या संपूर्ण व सर्वांगीण विकासासाठी ही योजना कार्यान्वित करण्यात आली| ही योजना सुरू करण्याचा मुख्य उद्देश म्हणजे 0 ते 6 वयोगटातील बालकांचा सर्वांगीण विकास,गर्भवती महिला व स्तनदामाता यांना विविध सेवा पुरविणे आहे.

संदर्भ

१. डॉ. विजया लाड (प्रमुख संपादक), मराठी विश्वकोश, खंड-१७वा, महाराष्ट्र राज्य, मराठी विश्वकोश निर्मिती मंडळ, मुंबई-२००७ पृ. ८२६-८२७
२. Jacob E. Sfra (Chairman of The Board), The New Encyclopaedia Britannica, Volume-3, Micropadia, Chicago-2005. पृ. २०८-२०९
३. डॉ. जोशी तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री (संपादक), मराठी विश्वकोश, खंड-XI वा, महाराष्ट्र राज्य, मराठी विश्वकोश निर्मिती मंडळ, मुंबई-१९८२ पृ. ४५९-४६०
४. भारत सरकार, भारत २००६, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली-२००६ पृ. ४१८
५. अनुताई वाघ, कोसबाडच्या टेकडीवरून, प्रकाशक: सौ. अरूंधती पानसे, ऋचा प्रकाशन, ठाणे २००४ पृ. ३-४
६. भारत सरकार, समेकित बालविकास सेवाएँ, महिला एवं बालविकास विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली-१९९५ पृ. १-२
७. किट्टा पृ. ४-५
८. महाराष्ट्र शासन, मार्गदर्शनात्मक पुस्तिका, सांस्कृतिक व शैक्षणिक विकास मंडळ, अकोला, पृ. ७१-७२
९. छाया जाधव, बीड शहरातील एका बालविकास प्रकल्प अंतर्गत काम करणाऱ्या अंगणवाडी सेविकांच्या समस्यांचा अभ्यास, समाजकार्य पारंगत भाग-२ च्या अभ्यासक्रमाच्या पूर्ततेसाठी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद यांच्याकडे सादर केलेला अप्रकाशित प्रबंध अहवाल-२००१-२००२
१०. Government of India, Integrated Child Development, Ministery of Human Resource Development, Shastri Bhavan, New Delhi-1999 पृ. १-४
११. भारत सरकार भारत २००६, पृ. ८४२
१२. http://wcd.nic.in/icds,htm8/26/2007

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January -2021

ISSUE No- (CCLXIX) 269







Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Scanned by CamScanner

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Evaluation of Maharashtra's Jalyukta Shivar Abhiyan — Dr. Santosh Shankarrao Pharande	1
2	Family Instability Involvement For Child Upbringing — Dr.Anjali Chandrakant Pande	5
3	A New Perspective on Health Issues in the Wake of Pandemic: Reference to Covid-19. — Dr Nitin W. Deulkar	9
4	Regional Pattern Of Agricultural Development In Amravati District — Dr. Omprakash B Munde	12
5	Innovative Approaches To Event Management Edcuation In Career Development — Dr. Patil Bhagwan Shankar	18
6	Educational and Health Status in Child Home — Dr. Sarika N. Dandge (Bodade)	25
7	Electronic Resource Management System of Academic Library — Dr. Shubhangi P. Ingole	28
8	Indian Higher Educaiton Policy 2020: Achievements And Objectives — Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil	33
9	Enhancing Library Services Using QR Code Technology — Prof. Deepa D. Patil	41
10	Human Rights and Environmental Rights — Mrs. Rohini S. Dhikale	44
11	An Empirical Study on Women Empowerment through Self- Help Groups(SHG'S) — Pranita Anand Giri	48
12	A Study Of Online Education In Lockdown Period — Prof.Dr.Rita.R.Raut	56
13	Plagiarism - Need for specific, drasticLegislations — Ranjita Madiwale (Sharvari Vaidya)	61
14	Nutrition for Fitness, Athletics and Sports — Dr.Nitin N. Jangitwar	65
15	Women In India And Careers — Dr.Sucheta Parker	68
16	Reflection of lord buddha's aura in matthew arnold's 'shakespeare' — Vinay M. Vasule	73
17	Ethno-Medicinal Plants Used for Immunity Increase — Dr.Sarita Ghanghat	79
18	Buddhist economic ethics for a ruler for welfare of human society — Prof. Dr. Pratibha A.Bhorjar	84
19	Buddhist approach to human society development: economic ethics for a ruler — Prof. Dr. Ashok N.Bhorjar	86
20	The problem of poverty and Remidies for its Eradication : The Biddhist Approach — Prof. Dr. Archana Bobade	88

Scanned by CamScanner

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 269 (CCLXIX)
ISSN : 2278-9308
January, 2021

Family Instability Involvement For Child Upbringing

Dr.Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor
Home-Economics Department Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera,
Distt.-Amravati

Introduction

The structure of the family plays an outsized role in children's. Upbringing. Family instability refers to changes in parents' residential and romantic partnerships, like marriage, divorce, and romantic partners occupation or out of the house . As rates of cohabitation, nonmarital births, and divorce have increased over the past 60 years, more children have experienced a point of family instability. This increase in family instability can have a negative influence on children's and adolescents' functioning and behavior..

Not all families are equally suffering from the rise in family instability. Families during which the oldsters aren't married and have low household income are far more likely to experience family instability than families with married parents and better household income. Family instability influences children and adolescents' functioning, as do household income and parents' relationship status. Family stability can promote positive social behavior in children and adolescents, while instability is related to social maladjustment, including behaviors like aggression toward peers, teachers, or parents. Family instability can are available many forms; economic, emotional, social, and physical. The challenges and struggles of family instability are often passed on from generation to generation if the instabilities aren't corrected or the family and youngsters don't receive appropriate physical and emotional assistance when needed.

Family

A family can be perceived as a unit of individuals who have consented to live respectively as father, mother and kids. It is a solitary defensive umbrella in the more extensive society. As an umbrella it secures, covers or shield it individuals from the slamming qualities of a more extensive society. It is a foundation that secures, covers, shield and support it individuals. Relatives are critical to one another and offer each other love and backing. The family shields its individuals from outer connect, by demonstrating food, garments safe house and care. The youthful ones develop to believe the family as a position of harmony and solace imparting their concern to the relative than untouchables. This is on the grounds that relatives regard and love one another and might want to keep quiet. It isn't ideal for relative to uncover each other mystery; they should bear each other weight.

What is Instability?

The term Instability is frequently utilized in sociology examination to reflect change or brokenness one would say; be that as it may, operational meanings of unsteadiness shift by field and are regularly dictated by the information and measures accessible for research. While some writing takes a gander at the impacts of progress estimated extensively, change itself can have both positive and negative ramifications relying upon the specific situation, including whether the change is intentional, arranged ahead of time, and moving the

Principal Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

Scanned by CamScanner

individual or family to better conditions. For our motivations, precariousness is best conceptualized as the experience of progress in individual or family conditions where the change is unexpected, compulsory, as well as a negative way, and accordingly is bound to have unfavorable ramifications for youngster improvement. Changes do not occur in isolation but rather a disruption in one domain (e.g., parent employment) often triggers a disruption in another domain (e.g., child care) in a "domino effect" fashion. In some cases, the causality of instability is not one-dimensional but a result of a complicated series of events that compound over time. This domino effect may be most evident among low-income or lower middle-class families who lack savings and assets that they can tap into during temporary periods of transition.

Children thrive in stable and nurturing environments where they have a routine and know what to expect. Although some change in children's lives is normal and anticipated, sudden and dramatic disruptions can be extremely stressful and affect children's feeling of security. Within the context of supportive relationships with adults who act as a buffer against any negative effects of instability, children learn how to cope with adversity, adapt to their surroundings, and regulate their emotions (National Scientific Council on the Developing Child 2007). When parents lack choice or control over change, they may be less likely to support their children in adapting to the change. "Unbuffered" stress that escalates to extreme levels can be detrimental to children's mental health and cognitive functioning

Types of family instability

Economic or financial instability

It come from a layoff, job loss, job change, or significant financial burden such a mortgage, car payment or medical debt. It impacts the families ability to meet the financial needs required to maintain a safe standard of living which includes sufficient food, shelter, medical and utility needs to have a safe and functional home. Children living in an economically unstable home may not have sufficient food, clothing, or utilities; if old enough they may be forced to work to help make ends meet in the home.

Emotional instability

Emotional instability in a family is often expressed through neglect, anger, anxiety and fear. Parents that are working demanding jobs or multiple jobs may not have time to adequately show attention and affection toward their children. They may overly express anger and frustration toward the children due to fatigue and share fears with children about adult concerns placing undue stress and anxiety on children. Love can also be an emotional instability when it becomes excessive and or inappropriate.

Social instability

Social instability in a family is expressed through neglect of tasks around the home and through anger and anxiety expressed by adults. The adults fail to express healthy social interactions which impact how the children will interact with each other and with other adults. They do not receive appropriate social training and this leads to dysfunction in the educational setting among peers, teachers and greatly impacts academic success.

Physical instability

Physical instability in a family can come in two forms; the first one is the physical setting in which the family resides. The child may reside in a home that is not physically safe or supportive; it may have no heat, electricity, water, sewer disposal. The house may be in

Narayanrao Badhera

Scanned by CamScanner

general ill repair. The second physical instability comes from the physical interactions that occur between family members. A child may be exposed to a physically threatening environment where items are thrown, broken, or used to demonstrate fear and anger.

Causes of family instability

While family instability focuses on these four forms of economic, emotional, social, and physical the cause of these instabilities can be numerous. Job loss, economic hardship, divorce, separation, infidelity, incarceration, extended family, unexpected pregnancy, sexual abuse, physical abuse, substance abuse, foreclosure, medical situation or emergency can all contribute to family instability. Certain socio-economic demographics and cultural groups experience higher levels of family instability.

Consequences of family instability

Children living in homes that experience family instabilities may experience extreme emotional expressions and extremes; they will suffer cognitively and often struggle in school. They will often have difficulty socializing and expressing age-appropriate social behavior. They will often show higher levels of anxiety and have irrational ideas and fears. Children may have clothing that is dirty or doesn't fit; they may show signs of malnutrition or have eating disorders and behaviors associated with food. Children may tell stories that are inconsistent or fanciful in an attempt to hide the instabilities and insecurities.

In multiple children home, younger children may be victims of the adults as well as that of older siblings that mimic situations or take out their own instabilities on younger children; younger children are more likely to be supervised by older siblings in the absence of adults.

Instability in any form is difficult for children. However, change is inevitable in life for all of us. Role modeling positive ways of managing difficult times can assist them in learning to effectively cope when life happens. Parents play an extremely important role in how children manage tough situations. Parents that keep in mind the long-term impact of how their behavior will impact their children now and in the future are a step ahead in assisting their children to have a positive future.

Some Effects of Family Instability on Child Development

1. Family instability is linked to problem behaviors and some academic outcomes, even at early ages.
2. Children's problem behaviors further increase with multiple changes in family structure.
3. Family transitions that occur early in children's development, prior to age 6, and in adolescence appear to have the strongest effects. While young children need constant caregivers with whom they can form secure attachments, adolescents need parental support, role models, and continuity of residence and schools to succeed.
4. Children demonstrate more negative behaviors when they lack the emotional and material support at home that they need to smoothly handle a family transition.

Conclusions

Children today face a dual set of obstacles to their healthy development. Many parents struggle to make ends meet as they work unstable jobs, live in unstable housing, have unstable relationships, and deal with unstable child care arrangements. Sudden changes in families' lives often result in inconsistencies both in the home and out-of-home settings. Meanwhile, public programs that can support children and families during times of need are

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

insufficiently funded to meet the demand. The instability so many children face raises questions about how instability impacts their development and how effects of instability can be avoided or mitigated. This investigation is critical to the nation's future economic well-being.

Children experiencing instability have outcomes that are as poor as, and sometimes worse than, outcomes for children in stable but adverse situations. For example, findings in the literature consistently reflect the disparity between children of two-parent and single-parent households, but there is some evidence that children of parents that move into and out of unstable relationships may be worse off than children in stable, single-parent families (Craigie et al. 2012). Similar patterns are seen for parental employment among low-income families, in which the effect of job instability on child behavior may be stronger than the effect of stable, full-time employment in low-wage jobs (Johnson et al. 2012). Additional research is needed that explores instability in multiple domains, how simultaneous events interact, and how instability affects children and families over time.

References

1.Acs, Gregory, and Austin Nichols. 2010. "America Insecure: Changes in the Economic Security of American Families." Washington, DC: The Urban Institute.

2.Acs, Gregory, Pamela J. Loprest and Austin Nichols. 2009. "Risk and Recovery: Documenting the Changing Risks to Family Incomes." Washington, DC: The Urban Institute.

3.Adam, Emma K. 2004. "Beyond Quality: Parental and Residential Stability and Children's Adjustment." American Psychological Society.

4.Adam, Emma K., and P. Lindsay Chase-Lansdale. 2002. "Home Sweet Home(s): Parental Separations, Residential Moves, and Adjustment in Low-Income Adolescent Girls." Developmental Psychology.

5.Adams, Gina, and Monica Rohacek. 2010. "Child Care Instability: Definitions, Context, and Policy Implications." Washington, DC: The Urban Institute.

6.Johnson, Rucker C., Ariel Kalil, and Rachel E. Dunifon. 2012. "Employment Patterns of Less-Skilled Workers: Links to Children's Behavior and Academic Progress." Demography

7.Craigie, Terry-Ann L., Jeanne Brooks-Gunn, and Jane Waldfogel. 2012. "Family Structure, Family Stability and Outcomes of Five-Year-Old Children." Families, Relationships, and Societies.

8.Amato, Paul R. 2000. "The Consequences of Divorce for Adults and Children." Journal of Marriage and the Family.

9.Amato, Paul R., Sobolewski, Juliana M. 2001. "The Effects of Divorce and Marital Discord on Adult Children's Psychological Well-Being." American Sociological Review.

10.Carlson, Marcia J., Corcoran, Mary E. 2001. "Family Structure and Children's Behavioral and Cognitive Outcomes." Journal of Marriage and Family.

11. Essex, Marilyn J., Klein, Marjorie H., Miech, Richard, Smider, Nancy A. 2001. "Timing of Initial Exposure to Maternal Major Depression and Children's Mental Health Symptoms in Kindergarten." British Journal of Psychiatry

Principal

Scanned by CamScanner

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2021

ISSUE No- 284 (CCLXXXIV)

Home Economics



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social

Research & Development

Training Institute Amravati

Editor:

Dr.Leena Kandlkar

Principal

Indirabai Meghe Mahila

Mahavidyalaya. Irwin Chowk,

Morshi Road, Amravati.

This Journal is indexed in :

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Principal

Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Nutrition and women's Health — Prof. Vaishali R. More	1
2	Skill Based Health Education : The Need Of Time — Dr.Sunita S. Balapure	3
3	An Effective Transfer of Household Art to Rural Women for Self Empowerment — Dr. Chhaya N. Vidhale	7
4	Dietary Habits of Adolescent Students — Dr.Manjiri Milind Chepe	11
5	Home Made Mask Prevent Droplet Transmission Of Corona-Virus — Mrs. Archana Prakash Harne	15
6	Needs and scope of innovation in home economics subject. — Dr. Priti P. Gawande	17
7	स्तनाचे आरोग्य — प्रा.डॉ. शामली जा. दिघडे	19
8	महिला सक्षमिकरणातील महत्वाचा टप्पा : सुक्ष्मवित्त पूरवठा (बचतगट चळवळ) — प्रा.सौ. किरण राजेंद्र बेलूरकर	23
9	कौटुंबिक जीवनावर दारिद्रियाचा परिणाम — प्रा.डॉ.सौ. माधुरी अरविंद देशमुख	26
10	विद्यार्थीनीं मधील मासिकपाळीतील स्वच्छता, आहार व आरोग्यविषयक दृष्टीकोनाची तपासणी. — प्रा.स्वाती श्रीधर वैद्य	29
11	स्त्री आणि मानवी हक्क — डॉ. लीना सुनील कांडलकर	33
12	आधुनिक जीवन शैलीतील तरूणांचा बदलता वैवाहिक दृष्टीकोन एक - अध्ययन — सौ. मनिषा मनिष शुक्ला	37
13	फळ व पालेभाज्यांवरील रसायन व किडनाशकाचा मानवी आरोग्यावर होणाऱ्या परीणामाची महिलांमध्ये जाणिव जागृती — प्रा.डॉ. ज्योती हावरे /रूपाली सा. टेकाडे	41
14	पालक बालक संबंधाचा बालकाच्या व्यक्तीमत्व विकासावर होणारा परिणाम अभ्यासणे — प्रा.डॉ. बबीता अ. हजारे	47
15	कोव्हीड–१९ महामारीतील महिलांच्या योगदानाचे अध्ययन — डॉ. रश्मी प्रविण गजरे	51
16	आदिवासी भागातील कुपोषित व सामान्य विद्यार्थ्यांच्या शारीरिक, बौद्धिक व सामाजिक विकासाचे तुलनात्मक अध्ययन — डॉ. कल्पना ए. शिंदे	54
17	किशोरवयीन मुलींच्या अपुऱ्या पोषणाला कारणीभूत घटक वा त्याचा भविष्यकालीन आरोग्यावर परिणाम — प्रा.डॉ.अल्का [illegible]कर	60
18	मुलांच्या बौध्दीक विकासासाठी आवश्यक पोषक तत्वांचा अभ्यास — प्रा. डॉ. मृणालिनी भू. बंड	64
19	महिला सशक्तीकरणाची स्थितीगती व जागृती — प्रा.सौ. धनश्री राणे	68

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 284 (CCLXXXIV)
ISSN : 2278-9308
March, 2021

Dietary Habits of Adolescent Students

Dr.Manjiri Milind Chepe
Associate Professor
Department of Home-Economics Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera,Distt.-Amravati Email : chepemanjiri@gmail.com
Mob : 9420520025

Introduction

Diet plays a very important role in growth and development of adolescents, during which the development of healthy eating habits is of supreme importance. There is a dual burden of undernutrition and overnutrition in this age-group. Poor eating habits formed during adolescence can lead to obesity and diet-related diseases in later years. In addition, the high incidence of dieting behaviors can contribute to nutritional inadequacies and to the development of eating disorders. Primary care providers are in an optimal position to provide nutrition screening, counseling to the adolescent patient and caregivers, and referral to a dietitian if needed. The word 'adolescence' is derived from the Latin verb 'adolescere', which means "grow to maturity." Adolescence is a grey area in the spectrum of life falling between childhood and adulthood. It is an age of transition when an individual experiences rapid growth and development, both physical and psychological and changes from being a child to an adult[1].

Adolescence is also a period when development of the reproductive system, sexual maturation, formation of identity, and gender roles set in, and issues relating to identity, gender roles, and related problems arise[4]. The development of healthy eating habits is important as the rapid physical growth in adolescence is associated with increased nutritional needs. Various studies on diet and nutrition intake of adolescents and young adults in the developed world have shown that their diets are often high in fats and refined carbohydrate[6].

Adolescence is also a period of increased vulnerability to obesity. Lack of physical activity and outdoor sports, along with the consumption of fat-rich 'junk' foods, is the major cause of obesity among the affluent population[7].Consumption of diet high in sugar, saturated fat, salt, and calorie content in children can lead to early development of obesity, hypertension, dyslipidaemia, and impaired glucose tolerance[8]. Some dietary patterns appear quite common among adolescents, to mention a few: snacking, usually on energy-dense foods; meal skipping, particularly breakfast, or irregular meals; wide use of fast food; and low consumption of fruits and vegetables[9][10]. Among urban adolescents in India, some of these patterns are also likely to be common but very little information is available.

Importance of Good Dietry Habits and Care to be taken

Eating a balanced and varied diet and establishing healthy eating habits promotes young people's health, growth and intellectual development across the life course. Most notably, a healthy diet and body weight reduces the risk of ill health and premature death from non communicable diseases (NCDs).

A healthy diet can have a significant effect on many of adolescents' main concerns by contributing to maintaining a healthy weight, improving physical and intellectual performance, optimizing growth and improving skin health. An unbalanced diet with a reliance on energy-rich, nutrient-poor foods is an important factor in the current epidemic of obesity and NCDs. WHO guidance to Member States on healthy diets encourages all people, but particularly adolescents, to eat

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

less food that is high in calories, fats, free sugars or salt/sodium, and more fruit, vegetables and dietary fibre, such as whole grains.

Some diet-related behaviours are particularly important during adolescence. Regularly eating breakfast, for example, is thought to reduce snacking and consumption of energy-rich foods. It also increases intake of essential micronutrients, including iron, calcium and vitamins C, B and D, and fibre. Skipping breakfast remains very common among young people in Europe, however, and is associated with other unhealthy behaviours such as smoking, alcohol consumption and sedentary behaviours.

Some food groups are hugely important during adolescence. Fruit and vegetable consumption during childhood is linked to many positive short- and long term health outcomes, with a well established decreased risk of NCDs such as cardiovascular disease, diabetes, obesity and cancer in adulthood. Most countries recommend the consumption of five or more portions (> 400 g) of fruit and vegetables a day, but adolescents in many eat far fewer. Food preferences and eating habits established in adolescence tend to be maintained into adulthood, which makes increasing fruit consumption among children and adolescents an important public health issue.

Certain types of foods and drinks should be limited to special occasions and are not suitable in the context of a healthy diet. Soft-drinks intake is higher among adolescents than in other age groups and is a matter of concern. Soft drinks with added sugar are associated with a greater risk of weight gain, obesity and chronic diseases such as metabolic syndrome and type 2 diabetes. Research shows that children with the highest intake of sugar-sweetened beverages are more likely to be overweight or obese than those with low intakes. Consumption can also directly increase the risk of dental caries (commonly known as tooth decay). Sugar-sweetened soft drinks are the main source of free sugars in children and adolescents' diets.

Factors Affecting Dietary Habits pf Adolscents

Age differences

Healthy eating behaviours become less common as young people move through adolescence, with the frequency of breakfast consumption, eating fruit and having evening meals with the family decreasing between ages 11 and 15. Soft-drink consumption increases with age, with significant differences between 11- and 15-year-olds found in 23 countries and regions for boys and 16 for girls. Age differences may be attributed, in part, to greater independence in food choice as children grow older.

Cross-national and gender differences

Eating breakfast on weekdays varies substantially across countries and regions, Levels of daily fruit consumption are generally below recommended levels. While they are higher among girls, rates are still relatively low. Soft-drink consumption is more common among boys at all ages, except among 11-year-olds in some country and 13-year-olds in another country, where girls are more likely to report it. Prevalence ranges from 42% in 15-year-old boys in some country to 1% among girls of all ages in another country. Reported levels are particularly low in Scandinavian countries. Frequency of having evening meals with the family also shows considerable variation between countries, from 88% of 11-year-old girls in some country to 13% of 15-year-old girls in another countries.

Family affluence

Many inequalities in eating behaviours exist, with young people from less affluent families generally more likely to report a poorer diet. Breakfast and fruit consumption are more common in those from higher-affluence families. Soft-drink consumption is associated with lower affluence in most countries and regions, but is more common among higher affluence groups in Albania, Armenia, Estonia, the Republic of Moldova and Romania. Daily evening meals with the family tend to be more common among young people from higher-affluence families.

Principal
Narayanrao Bajaj Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

generation. There is a time now to highlight the need to design effective nutrition promotion strategies to encourage healthy eating in adolescence and targeting food supply and availability.

References

1. Bhave SY, Nair MKC. Course manual for adolescent health. Part-II: Indian perspective. In: Bhave SY, editor. Adolescent health. New Delhi: Indian Academy of Pediatrics; 2002.
2. Nair MKC. Training materials for conducting family life education sessions for adolescents. Teens. 2002
3. Jejeebhoy SJ. Adolescent sexual and reproductive behavior: a review of the evidence from India. Soc Sci Med. 1998;46:1275–90. [PubMed]
4. Nath A, Garg S. Adolescent friendly health services in India: a need of the hour. Indian J Med Sci. 2008;62:465–72. [PubMed] [Google Scholar]
5. Kotecha PV, Patel S, Mazumdar VS, Baxi RK, Misra S, Mehta KG, et al. Identification and ranking of problems perceived among urban school going adolescents in Vadodara in India. Indian J Clin Pract. 2011;21:555–65. [Google Scholar]
6. Bull NL. Studies of the dietary habits, food consumption and nutrient intakes of adolescents and young adults. World Rev Nutr Diet. 1988;57:24–74. [PubMed] [Google Scholar]
7. Choudhury P, Gogia S. Nutrition issues in adolescence. In: Bhave SY, editor. Bhave's textbook of adolescent medicine. New Delhi: Jaypee Brothers Medical Publications; 2006.
8.Spear BA. Adolescent growth and development. J Am Diet Assoc 2002
9. Lifshitz F, Tarim O, Smith MM. Nutrition in adolescence. Endocrinol Metab Clin North Am 1993.
10.Cusatis DC, Shannon BM. Influences on adolescent eating behavior. J Adolesc Health 1996.
11.Cutler GJ, Flood A, Hannan P, Neumark-Sztainer D. Multiple sociodemographic and socioenvironmental characteristics are correlated with major patterns of dietary intake in adolescents. J Am Diet Assoc 2011.
12.Jenkins S, Horner SD. Barriers that influence eating behaviors in adolescents. J Pediatr Nurs 2005.
13.Das JK, Salam RA, Thornburg KL, et al. Nutrition in adolescents: physiology, metabolism, and nutritional needs. Ann N Y Acad Sci 2017.
14.Siega-Riz AM, Carson T, Popkin B. Three squares or mostly snacks--what do teens really eat? A sociodemographic study of meal patterns. J Adolesc Health 1998.
15.Fuster M, Weindorf S, Mateo KF, et al. "It's Sort Of, Like, in My Family's Blood": Exploring Latino Pre-adolescent Children and Their Parents' Perceived Cultural Influences on Food Practices. Ecol Food Nutr 2019.
16.Rodrigues PRM, Luiz RR, Monteiro LS, et al. Adolescents' unhealthy eating habits are associated with meal skipping. Nutrition 2017.

Principal
Narayanrao Ra... Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 229 (A) | February 2020 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

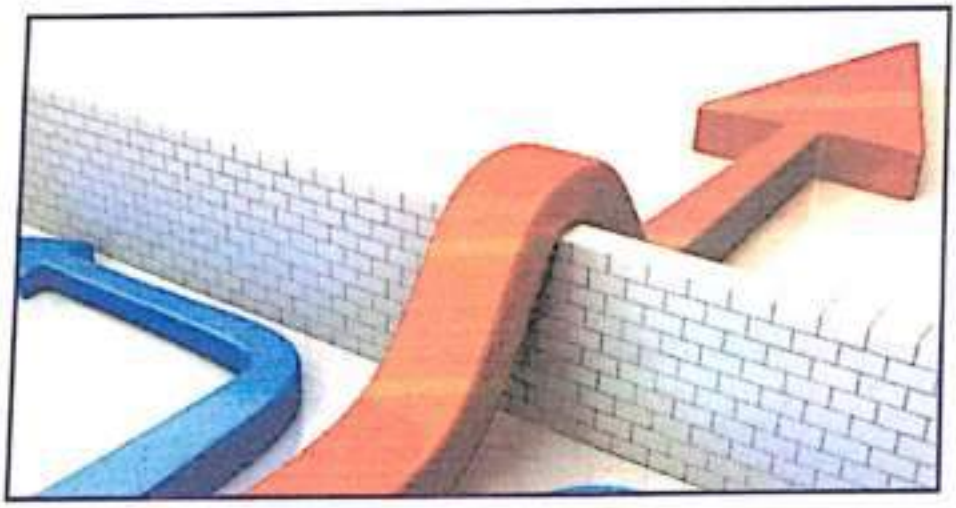
Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

SPECIAL ISSUE 229 (A)

INDIAN YOUTH :

CHALLENGES AND OPPORTUNITIES



- GUEST EDITOR -
Dr. V. R. Kodape

- CHIEF EDITOR -
Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITORS -
Dr. N. M. Chhangani
Prof. P. S. Shirsat

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

For Details Visit To :
www.researchjourney.net

Scanned by CamScanner

19. Need of E-Resources in Academic Libraries 49
Dr. Prakash Shriram Kolhe

20. Unemployment, Unrest and Youth 51
Dr. Madhuri Yogendra Kopulwar

21. The Role of Music in Youth Culture 56
Dr. Niraj Lande

22. Youth and Indian Musical Culture 57
Prof. Dr.Rahul Kashinathrao Ekbote

23. Intra Generational Conflicts and Youth in Current Scenario 59
Dr. Samruddhi Tapre

24. Importance of Physical Fitness in Youth and It's Benefits 61
Prof. Dr. Vinod Kapile

25. Youth and ICT 66
Dr. Dinesh B Raghuwanshi

26. Social Media and Youth 68
Miss. Hema Ramaji Khedkar

27. Tiktok App and Indian Youth 70
Parishkrit Agrawal

28. Criminality in Youth: Causes and Possible Solutions 73
Mrs. Bhagyashri Amit Dhumale

29. Music: Health Resource in the Life of Youth 76
Dr. D. R. Elalkar

30. Skill Development of Youth : Opportunities & Challenges 79
Dr. BaljeetKaur Oberio

31. Music Education and Youth Empowerment 82
Nana Bhadke

32. The Importance of Reading Habit in Young Generation 85
Dr. Ashalata Raman

33. Importance of Good Nutrients in Youth and Their Impact on Humans 87
Prof. Dr. Rashmi Gajre

34. Challenges & Opportunities for Youth in Agriculture 89
Prof. Dr. Jyoti R. Maheshwari

35. Challenges Faced Unemployed Youth in India 91
Tushar Manohar Kotak

36. Youth and Confidence Level 93
Dr. Mahesh C. Dabre

37. Modern Lifestyle and Youth 97
Dr. Manasi Manojkumar Kambale

38. E-Commerce and its impact on Youth 100
Dr. N. B. Mathpati

39. Nutrients and Youth
Dr. Anjali Chandrakant Pande

Scanned by CamScanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 229 (A) : Indian Youth : Challenges and Opportunities
ISSN : 2349-7143
February 2019

Nutrients and Youth

Dr. Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor, Home-Economics Department
Narayanrao Rana Mahavidyalaya,
Badnera, Dist. Amravati

Abstract:

Nutrition plays an important role in promoting an individual success by helping a person stay healthy and optimally fuel themselves so they can maximize training and conditioning. An often over-looked component in many programs, smart nutrition planning can equate to greater gains in lean body mass, minimized fatigue related to poor hydration and under-fuelling, and enhanced recovery which supports all future training and competition. Sports nutrition counselling helps student-athletes learn to maximally fuel performance through well-balanced, nutrient-dense eating. Meeting nutrition needs through food first is prioritized and the strategic use of sports foods, fluids, and supplements will be made on an individual basis. Healthy eating attitudes and behaviours are emphasized.

Diet plays a major role in promotion of health and well being of individual. A good and balanced diet habit improves the quality of life while poor diet may lead to morbidity and diseases. Nutritionists and dietetics are concerned with this aspect. While dietetics is related to food management, nutrition is related to promotion of health. Due to changes in food habits of most of the youth, role of nutritionists and dieticians is becoming more important. They suggest corrective food habits considering various aspects of an individual such as age, work routine and sickness etc. and thereby improving their quality of life.

This paper discusses about the nutritional needs of a youth, reviews common misconceptions, and examines the nutrition knowledge of youth and their sources of nutrition information.

Introduction :

For many youth, nutrition isn't always a focus. There are many transitions going on at this point in life. Busy schedules and new environments can lead to un healthful eating habits such as skipping meals or snacks, eating nothing but fast food, overeating, and drinking excessive amounts of sugar-sweetened beverages or alcohol. Along with inconsistent eating patterns, youth may experience fluctuations in weight and a lack of energy..

Making healthful choices to fuel a youth, active mind and body starts with balance one must have to follow a nutritious eating plan featuring lean protein, vegetables, fruits and whole grains. By eating well now, you can lessen your risk of health-related problems later.

Why is Proper Nutrition Important?

Are nutrition and health related? Is healthy eating important? Of course! Like a finely-tuned racing car, your body needs the right fuel (food) and regular maintenance (exercise, lifestyle and mental attitude) to achieve its true health potential. Nothing is more important than healthy eating! Put in the wrong fuel or let it go without regular use and there's no way it can deliver its full power and performance. Without healthy eating, your body's engine will cough, splutter and eventually stall.

Maintaining a balanced diet by healthy eating can :

- Give you vitality and energy for life
- Help you stay at a weight that's right for you
- Boost your immune system
- Improve sports performance
- Delay the effects of aging
- Keep you active and fit into old age
- Help beat tiredness and fatigue
- Protect teeth and keep gums healthy
- Enhance your ability to concentrate and possible alter mood
- Ward off serious illnesses like heart disease, certain cancers, mature-age onset diabetes, and gallbladder disease [1]

Basics of Healthy Eating for Today :

Low Fat :

Cutting down on all fats from fatty and fried foods, butter, cream, margarine and oils is agreed on by nutritionists the world over as a way of making the modern diet healthier and reducing weight. Cutting down on saturated fat in particular is important for the heart.

Base your meals on starchy foods :

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Starchy foods should make up around one third of the foods you eat. Starchy foods include potatoes, cereals, pasta, rice and bread. Choose wholegrain varieties when you can: they contain more fiber, and can make you feel full for longer. Most of us should eat more starchy foods: try to include at least one starchy food with each main meal. Some people think starchy foods are fattening, but gram for gram they contain fewer than half the calories of fat.[1]

High Fiber :

Not just bran! Fiber, that largely indigestible part of our food and often the part that really gets us chewing, is responsible for so much good. It not only keeps our insides moving smoothly but it helps to lower cholesterol, prevent gallstones and bowel cancer, and keep our weight in check. Whole meal and grain breads are full of it, as are brown rice, barley, lentils, beans and vegetables. To start your day, there is a wonderful array of wholegrain and bran breakfast cereals.

Vitamins, Minerals, and Anti-oxidants :

Vegetables, fruit and grains carry an abundance of vitamins, minerals and numerous other natural substances (called photochemical) which scientists are only just beginning to discover. Photochemical function as anti-oxidants, which fight off free radicals that could otherwise damage our cells, membranes and DNA. Numerous studies show that people who eat lots of veggies and fruit have lower rates of heart disease and cancer.

Variety :

Variety doesn't mean 10 different cereal packs in your cupboard, but rather a variety of botanically different foods. Pasta, bread, puffed wheat and couscous all look and taste different but are all derived from the one basic (but versatile) grain (wheat). So they all provide similar nutrient Substituting other grains like oats, barley, corn or rye for some wheat adds diversity to your diet and ensures a wider range of nutrients. The nutrients you miss from one food, you can make up from another.

Moderate Sugar and Sweets :

Sugar in modest amounts adds to the flavor of cooking and is a useful fuel for athletes and other active people. In excess, however, sugar adds unwanted kilojoules and can displace other more important foods - particularly for children and teenagers. In chewy and sticky form, sugar also can cause dental caries (or tooth decay).

Light on Salt :

Our modern diet is laden with salt. It's not until you avoid salt for a few weeks that you notice how it masks the true flavor of foods. As 75 per cent of our total salt intake comes from everyday commercial foods (including bread, biscuits, cereals, butter, deli meats and snack foods), it is imperative to buy salt-reduced or no-added-salt products.

Drink Plenty of Fluid :

Two liters (8 glasses) of fluid a day is needed to keep the body hydrated and the kidneys working efficiently. In hot weather, even more fluid is required. Alcohol and strong coffee do not count, as these act as diuretics and force the kidney to excrete more fluid than normal.

Enjoy Mealtimes :

Stress, tension, rushing and eating on the run all take their toll on your digestion and health. Try to relax and take the time to really appreciate the food in front of you. Not only will it increase your enjoyment and satisfaction by having a "comfortably full" stomach, this technique is often recommended as a strategy to help people lose weight.

Main Components of Nutrition :

Protein :

Proteins are often called the building blocks of the body. Protein consists of combinations of structures called amino acids that combine in various ways to make muscles, bone, tendons, skin, hair, and other tissues. They serve other functions as well including nutrient transportation and enzyme production. In fact, over 10,000 different proteins are in the body.

Water and salts :

Water is one of the most important nutrients in the sports diet. It helps eliminate food waste products in the body, regulates body temperature during activity and helps with digestion. Maintaining hydration during periods of physical exertion is key to peak performance. While drinking too much water during activities can lead to physical discomfort, dehydration in excess of 2% of body mass (by weight) markedly hinders athletic performance. Water and salt dosage is based on work performed, lean body mass, and environmental factors, especially ambient temperature and humidity. Maintaining the right amount is key.

Carbohydrates :

Carbohydrate is arguably the most important source of energy for athletes. No matter what sport you play, carbs provide the energy that fuels muscle contractions. Once eaten, carbohydrates breakdown into smaller sugars (glucose, fructose and galactose) that get absorbed and used as energy. Any glucose not needed right away gets stored in the muscles and the liver in the

Printed by: PRASHANT PUBLICATIONS

Principal
Narayangaon Vidyadhar Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

ISSN : 2348-7143
February 2020

form of glycogen. Once these glycogen stores are filled up, any extra gets stored as fat.

Adequate carbohydrate intake also helps prevent protein from being used as energy. If the body doesn't have enough carbohydrate, protein is broken down to make glucose for energy. Because the primary role of protein is as the building blocks for muscles, bone, skin, hair, and other tissues, relying on protein for energy (by failing to take in adequate carbohydrate) can limit your ability to build and maintain tissues. Additionally, this stresses the kidneys because they have to work harder to eliminate the byproducts of this protein breakdown.

The Nutrients needed for the youth :

Eat Breakfast Every Day :

The first meal you eat in the morning truly "breaks the fast" and gets your metabolism moving for the day. Don't skip it! This is a valuable opportunity to get in some servings of fruit and whole grains. Try a smoothie, baked oatmeal or whole-grain cereal.

Snacks :

A midmorning and mid afternoon snack will help you avoid overeating at meals and alleviate energy lows throughout the day. Have a whole-grain muffin if you prefer sweet foods or if you prefer savory.

Eat Vegetables and Fruits :

Aim for at least two cups of fruit and 2½ cups of vegetables every day. Grab an apple, peach or pear for the road. Take sliced fruit for a snack. Put lettuce and tomato on a sandwich or order a salad.

Make Protein Count :

Youth men need protein to fuel developing muscles. Eat less red meat and more chicken, turkey and pork. Eat fish at least two times a week. Regularly eat plant-based proteins such as tofu, beans and lentils.

Add in Healthy Fats :

Be selective with the fat you eat. Limit fries, onion rings and nachos. Eat heart-healthy fat sources such as olive oil, canola oil, walnuts, almonds and avocado.

Calcium :

Youth need 1,000 milligrams of calcium each day for bone and tooth health. What youth men do prior to age 30 is crucial to having healthy bones for life. Food is your best source of calcium. Aim for three servings of low-fat dairy products, such as milk, yogurt or cheese every day. Non-dairy sources of calcium include fortified plant-based beverages, calcium-set tofu and greens including collards and kale.

Vitamin D :

You also need vitamin D good for bone health. Especially if there is little to no fortified milk or fish in your diet, consider a supplement containing at least 600 IU.

Iron-Rich Foods :

Iron is important for energy. You likely can get enough iron by eating iron-fortified cereal, leafy greens or a handful of raisins each day. Youth men need just eight milligrams of iron per day. Women need more iron than men.

Get Active :

Most youth do not need an excuse to get active. For healthy bones and overall good health, get at least 30 minutes of weight-bearing activity most days of the week. To build muscle, strength train with weights or resistance bands at least two to three times a week.

Conclusion :

Proper nutrition and diet for youth is more important for their physical and mental growth, development, and overall health. Thus nutrition plays an integral role in keeping a youth stay healthy. Emerging evidence suggests a link between young people's interest in alternative food production practices and dietary quality. Eating healthy is an important part of a healthy lifestyle and is something that should be taught at a young age.

References :

1. Melinda Manore, Nanna L. Meyer, Janice Thompson, Sport nutrition for health and performance
2. Kathleen M. Zelman, How to overcome unhealthy habits that are keeping you from losing weight and getting fit.
3. Calfee, R. and Fadale, P., Popular ergogenic drugs and supplements in young athletes
4. Tom P. Hafer, Faith & Fitness : Diet And Exercise for a better world.
5. Jill Anne McDowall, Supplement use by young athletes
6. Maughan, R.J., King, D.S. and Lea, T. , Dietary supplements, Journal of Sports Sciences
7. Ziegler, P.J., Nelson, J.A. and Jonnalagadda, S.S. , Use of dietary supplements by elite figure skaters. International Journal of Sport Nutrition and Exercise Metabolism
8. http://www.nhs.uk/Livewell/Goodfood/Pages/ eight-tips-healthy-eating.aspx
9. http://sportsmedicine.about.com/ od/sportsnutrition /a /Protein.html
10. http://www.livestrong.com/meal-plans-for-athletes/
11. http://www.nhs.uk/Livewell/Goodfood/Pages /eight-tips-healthy-eating.aspx
12. Jill Anne McDowall, Supplement use by young athletes

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERN!TION!L RESE!RCH FELLOWS !SSOCI!TION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

5 ,,June -2019

SPECIAL ISSUE- CXCII

CURRENT TRENDS IN HUMANITIES & COMMERCE



Executive Editor:
Prof. Virag S. Gawande
Director,
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Guest Editor
Prof.Dr.Sanjay J. Kothari
Hod & Assistant Professor,
G.S.Tompe Arts Comm.Sci Collage
Chandur Bazar Dist.Amravati [M.S.]

Chief Editor
Mr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned by CamScanner

22	कृषी उत्पन्न बाजार समिती:कार्य व भूमिका डॉ. अश्विनी श्रीधर राऊत	87
23	सम्राट अशोकाची धम्मनिती व मानवाधिकार प्रा.डॉ. अनिल ठाकरे	91
24	वृद्धावस्था : एक समस्या प्रा. वैशाली तुकाराम लोणे	93
25	Physical education and Yoga for overall development Chapke Bharat Haribhau	95
26	Comparative Study Of The Leg Strength And Agility Of Thekabaddi And Kho-Kho Players. Suredra T. Chauhan	98
27	Depiction of Indian Culture through the selected works of V. S. Naipaul Subodh Krishna Pagare	102
28	Victimization Of Children : Causes & Measures Vikas G. Karmore	107
29	Myth and legends in Amitav Ghosh's The Hungry Tide Sachin S.Matode	112
30	Globalization and the Lifestyle of People Dr.Anjali Pande	115
31	Effect Of Swimming Training On Standing Heightof Beginner Swimmers Dr.Yogesh S. Nirmal	118
32	Use and User Perception of E-Resources in Jawaharlal Nehru Engineering College, Aurangabad: A Study Dr. Vilas Ashokrao Kale	125
33	An empirical study of impact of effective induction training on employee performance and satisfaction In selected manufacturing companie In pune Mr. Laxmidhar Biswal,/ Dr. Vijay Joshi	136
34	Need and Importance of Automation in Academic and Public Library Dr. Rashmi Bakane	150
35	Effects of Nutrition on Adolescent Girl Students Dr. Punam Deshmukh	155
36	Social Realism in 'The Swami and Winston' Deepmala Patode	157
37	A Study of Changes in the Standard of Living of the Labourers Due to Migration Dr. Laxmikant shivdas hurne	161
38	Productivity Index of Gram Crop in Amravati District of Maharashtra State Dr. Omprakash B. Munde	171
39	Manpower planning: a real boon for management in the organization scenario Dr. Prashant M. Puranik	176
40	Farmer's Suicides in India Dr. P. D. Suryawanshi	180
41	The Role of Finance in Growth and Development of a Country Dr. Rita Deshmukh	185
42	Impact of Goods and Services onIndia Economy Dr.Kanteshwar Dhoble	190
43	Participation Of Women Of Amravati City In Schemes Of Maulana Azad Minorities Financial Development Corporation Limited Dr.Prashant J. Katole	194
44	Suicide is a product of sick mind : A legal perspectives Dr. Manoj N. Bendle	203

Principal

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013) | June 2019
Special Issue
UGC Approved No. 40705

Globalization and the Lifestyle of People

Dr.Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor Home-Economics Department
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera. Distt.-Amravati

Introduction

This paper tries to examine changes in people's lifestyles, in the background of globalization and its influence on work, and people's food consumption (dietary patterns). Globalization (or globalization) describes a process in which the economy, society and regional culture have been integrated through communication, transportation and global trade networks. This term is sometimes used to refer specifically to economic globalization: the integration of the national economy into the international economy through trade, foreign direct investment, capital flows, migration and the spread of technology. Globalization is a spatial integration in the field of social relations when it says "Globalization can be defined as an intensification of social relations throughout the world that connects distant locations in such a way that local events are formed by events that occur miles away and vice versa." Globalization.

Economic prosperity has created a new middle class that is more open to information, especially advertising, and has more resources and the ability to know other parts of the world. immediately following or even coinciding with the increase in income are cultural changes and consumption patterns. Chua (2009) divides change into four levels of consumption: (1) small objects, (2) television, (3) primary home / family consumption and (4) cars. The rapidly growing middle class in countries and their consumption behavior have promoted the consumption of luxury goods, tourism and conspicuous goods. Golf has become very popular in the world, especially in Japan, South Korea, Taiwan, Hong Kong and many other Asian countries now, and has a significant environmental impact.

China is no exception. The rapidly growing middle class in this country and its consumption behavior have promoted the consumption of luxury goods, such as cars, homes, insurance and tourism (Chen, 2006). Markets emerged in China where the middle class began winning cars and large houses with green courtyards in the suburbs. The consumption trends that emerged in China resembled what was stated by the United States in the 1950s and 60s when a new middle class emerged. Middle class Americans are more interested in buying homes in suburban areas (Chen, 2006). Meanwhile, globalization has changed much of the country's ideology, culture and lifestyle. For example, capitalism's ant ideology no longer exists. The old saying about "rusty money" was replaced by "being rich is noble". As a result, the values of traditional Chinese culture formed in agrarian societies have been radically changed. The old saying about "getting to work after sunrise and stopping working at Sunset" was replaced by "time is money". In fact, globalization has had a big influence on the daily lives of Chinese people. For example, attitudes toward beauty contests, fashion shows, sexual behavior, dress and hair style, and leisure have changed a lot in the past two decades due to increasing modernization and globalization. This change is very clear to young people.

The Impact of Globalization on People -

The economic benefits and social costs of globalization are not evenly distributed. The people who benefit most are successful shareholders, managers, workers or sub-

Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

contractors of MNEs and competitive national companies. In general, those who have other capital and assets, entrepreneurial skills, education and skills have benefited.

Increased capital mobility and high unemployment have weakened the bargaining position of workers. Pressure has increased for labor market flexibility, eroding labor protection and causing concern about the quality of work. It highlights the importance of international actions to protect the basic rights of workers in all countries.

People who lack skills and indigenous people are very vulnerable. Investments in extractive industries, mega-hydroelectric dams and plantations have caused massive dislocation, disruption of livelihoods, ecological degradation, and human rights violations.

Increased tax competition and reduced role of the State have led to cuts in important government spending for the poor, including health, education, social safety nets, agricultural extension services and poverty reduction. For example, out of 680 million primary school age children in developing countries, 115 million do not go to school, 65 million of them are girls. Of the children who started elementary school, only one in two completed it

The impact of globalization on work -

The Labor Organization estimates that world unemployment increased over the past decade to around 188 million in 2003. Performance varies across regions. The unemployment rate has risen since 1990 in Latin America, the Caribbean and Southeast Asia, and in East Asia since 1995. The reasons include the financial crisis in the late 1990s. In some large countries, the unemployment rate declined after the crisis but did not reach pre-crisis levels. Entrepreneurship, which shows the informal economy, is increasing in all developing regions, except for East and Southeast Asia.

Job performance varies in industrialized countries. Over the past decade unemployment has risen in Japan but has fallen sharply in several European and British countries. Unemployment fell in the US despite job losses in several manufacturing industries. Income inequality is increasing in several industrialized countries. Income rose sharply from 1 percent of the highest income recipients in the US, UK and Canada. In the United States, part of this group reached 17 percent of gross income in 2000, a level last seen in the 1920s. The causes include high compensation paid by MNEs, development of new businesses with global reach and global "superstardoms".

At first glance, the relationship between globalization and food intake seems rather distant. However, the effect can be very high, although most work through ways to bring the domestic economy closer to international economics in many ways. This is a consequence of liberalization and control. The reason behind liberalization and globalization is to bring competition and efficiency into the economy. They are part of structural reform. Changes in the existing structure are expected to contribute to efficiency in the long term and lead to employment, increased income, and overall welfare.

One of the expected impacts on dietary patterns is related to higher income. The consumption pattern shifts from cereal to more expensive protective foods. The second expected impact is a shift towards more processed foods. Third is the market influence of popular fast food promoted through advertising by transnational companies. Changes in dietary patterns in turn affect the nutritional status of the population. Some effects such as fewer cereals and more protective foods in the diet can improve nutritional status, while a

Scanned by CamScanner

shift towards snack foods that are high in fat and high in sugar can cause obesity and chronic diseases. Another negative impact is the transfer of the poor through structural reforms. This group experiences lower affordability and reduced calorie intake which causes growth disorders, such as stunting. Implact the more severe it may be at higher infant mortality rates and lower life expectancy.

The impact of globalization differs from one country to another, and between and within society, depending on the losers and winners in the process of change. It is difficult to track this impact sequentially and to divide the total impact between globalization and other forces working in the economy. The reasons for the sedentary lifestyle of middle-class and middle-class workers, and the decline of the low diet of rural migrants can be found elsewhere in the pattern of economic growth, not necessarily related to globalization.

Conclusion -

It seems clear that when people's lifestyles change significantly towards prosperity, and conspicuous consumption, they are based more on social desires than on biophysical needs. Globalization universalizes lifestyle, which has become an important issue in emerging health and environmental issues. Some people argue that western lifestyles and consumerism contribute significantly to local and global environmental problems and threaten sustainability.

The impact of globalization on low income groups is one of malnutrition due to failure to create more jobs and provide higher income. The impact on the middle and upper classes is an increase in consumption of high-calorie foods and an increased incidence of obesity. Diet patterns without a balanced diet in all classes are responsible for the emergence of micronutrient deficiencies and related problems such as iodine deficiency disorders, anemia and growth disorders in children. This situation requires a three-pronged strategy of nutrition education, food fortification and improved safety nets for the poor.

All countries in the world that have introduced Globalization in their economic policies have experienced an increase in the unemployment rate. This unemployment trend is accompanied by a very different trend in the ratio of worker populations. Countries with declining labor population ratios also experience a decline in average working hours.

Reference:

1. Berghahn, V. (2007, November 15), Globalization, Americanization and Europeanization (Part III). Retrieved February 12, 2008, from http://www.theglobalist.com/ StoryId.aspx? StoryId = 6563.
2. Globalization of the Indian economy by the Sezhiyan Era
3. Globalization and Indian Business Prospects, Ravi Kastia
4. Prospects of Globalization and Liberalization of the New World Order Dr.A.K.Ojha
5. ILO (2007), Global Labor Trends Brief.
6. Berthold, N. and R. Fehn (1999), Labor Market Policy in Global Economics, in this Volume.
7. Welfens, P.J.J. (1999), Globalization of Economics, Unemployment and Innovation, Heidelberg, and New York.
8. Helm Wagner (Editor), Globalization and Unemployment.
9. Globalization and Employment, Jeffrey Sachs, http://www.ilo.org/public/english/130inst/papers/publecs/sachs/index.htm

Principal
Badnera

Scanned by CamScanner

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly e-Journal

· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

· www.aiirjournal.com

Principal
Narayanrao Ram Mahavidyalaya
Latur

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Scanned by CamScanner

15	Dr.Sunita Chhabra	Construction And Standardization Of An Achievement Test In Computer Science For 10th Class	54 To 56
16	Dr. Kanchan M. Thakre	The Impact of Technology on Human Life: Special reference to Smart Phone	57 To 61
17	Dr. Nita Sharma	Green Library & Today's Environment	62 To 64
18	Amrita Singh & Dr. Jaspreet Singh	Impact Of LIC In Socio-Economic Development Of India	65 To 71
19	Dinesh Bansal & Dr. Jaspreet Singh	The Employee Welfare Policies and Working Condition Measures in Rajasthan State Warehousing Corporation	72 To 77
20	Hardeep Kaur & Dr. Kalpna Midha	Examination of CAL Systems	78 To 82
21	Harleen Kaur & Dr. Jaspreet Singh	Job Satisfaction Of Women Bank Employees – In Public Sector Banks In Sri Ganganagar District	83 To 86
22	Ananthapadmanabha Prabhu & Dr. H S Jange	A Comparative Study On The Attitude Of Government, Private Aided, Private Unaided And International High School Boys Of Mysore Zone Towards Physical Education And Sports	87 To 90
23	Dr.Anjali Chandrakant Pande	Role of Nutrition and Dietetics in Enhancing Sport Performance of Students and Young Athletes	91 To 94
24	Dr. Anurag Panwar & Dr. Abhijit Patil	Formaldehyde- A Boon Or Curse For Anatomist Routine Life ?	95 To 96
25	Mr. Barakatali Halakeri	Recent Trends in Epigraphical Studies in India	97 To 99
26	Manju & Abha Dhingra	Comparative Phytoconstituents Study In Two Varieties Of Trigonella I.E. Trigonella Foenum Graceum And Trigonella Monantha	100 To 104
27	Jyoti D Sawant	Kinetics Of Oxidation By Using Polyoxometalates	105 To 112
28	Umesh Vithalrao Kadu	Teaching English in Rural Area and Mother Tongue Influence On English	113 To 115
29	Ms. Meena Sharma	Financial Inclusion : A SWOT Analysis In Context Of India	116 To 119

Scanned by CamScanner

Role of Nutrition and Dietetics in Enhancing Sport Performance of Students and Young Athletes

Dr.Anjali Chandrakant Pande
Department of Home-Economics
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera,Distt.-Amravati

Abstract

Nutrition plays an important role in promoting an individual success by helping a person stay healthy and optimally fuel themselves so they can maximize training and conditioning. An often over-looked component in many programs, smart nutrition planning can equate to greater gains in lean body mass, minimized fatigue related to poor hydration and under-fuelling, and enhanced recovery which supports all future training and competition. Sports nutrition counselling helps student-athletes learn to maximally fuel performance through well-balanced, nutrient-dense eating. Meeting nutrition needs through food first is prioritized and the strategic use of sports foods, fluids, and supplements will be made on an individual basis. Healthy eating attitudes and behaviours are emphasized.

Diet plays a major role in promotion of health and well being of individual. A good and balanced diet habit improves the quality of life while poor diet may lead to morbidity and diseases. Nutritionists and dietetics are concerned with this aspect. While dietetics is related to food management, nutrition is related to promotion of health. Due to changes in food habits of most of the urban population, role of nutritionists and dieticians is becoming more important. They suggest corrective food habits considering various aspects of an individual such as age, work routine and sickness etc. and thereby improving their quality of life.

This paper discusses about the nutritional and dietetics needs of a person, reviews common misconceptions, and examines the nutrition knowledge of sportsmen and their sources of nutrition information. Topics covered include energy, carbohydrate, protein, fat and micronutrient needs, hydration requirements and timing of meals.

Introduction

Good nutrition is important for everyone, but athletes in particular feel firsthand how not eating properly can affect performance. Their need for calories is greater than the average person, ranging from 2000 to 5000 calories a day, depending on gender. Nutrition is the science or study that deals with food and nourishment, especially in humans. Nutrition is the provision to humans to obtain the materials necessary to support life. In general, humans can survive for two to eight weeks without food, depending on stored body fat and muscle mass. Survival without water is usually limited to three or four days. Lack of food remains a serious problem, with about 36 million humans dying every year from causes directly or indirectly related to hunger.

Nutrition is an important aspect of an sportsman's training program. Although exercise and athletic training is considered to increase nutrient needs in some athletes, a balanced diet with adequate calories can potentially provide the necessary nutrients. It is likely, however, that for various reasons, not all athletes are able to consume a diet that meets their nutritional needs and thus resort to nutritional supplements with the intention of preventing deficiencies and even enhancing performance.[1]

Coaches, parents, and athletes often look for a "miracle food" to enhance performance. The truth is, there are no special foods or supplements that can help athletes train harder or compete better. What does make a difference is the athlete's overall diet and the timing of meals. Good nutrition is essential to support an athlete's growth, strength, and stamina. Parents and coaches can use the following nutrition information to help young athletes feel energetic and perform their best.[2]

Dietetics is the health field that focuses on the interaction between nutrition and health. Dietitians and dietetic technicians design "nutrition

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera
Scanned by CamScanner

therapies" that help the body use the natural nutrients and properties in food to protect against disease and promote health.

Diet plays a major role in promotion of health and well being of individual. A good and balanced diet habit improves the quality of life while poor diet may lead to morbidity and diseases. Nutritionists and dietetics are concerned with this aspect. While dietetics is related to food management, nutrition is related to promotion of health. Due to changes in food habits of most of the urban population, role of nutritionists and dieticians is becoming more important. They suggest corrective food habits considering various aspects of an individual such as age, work routine and sickness etc. and thereby improving their quality of life. They also educate their clients about preparation of food according to the principles of nutrition. They know about food production and processing, psychological factors influencing food choice, digestion and its effects on nutritional aspects. A growing and aging population will increase the demand for meals and nutritional counselling in nursing homes, schools, prisons, community health programmes, and home health care agencies.

Why is Proper Nutrition Important?

Are nutrition and health related? Is healthy eating important? Of course! Like a finely-tuned racing car, your body needs the right fuel (food) and regular maintenance (exercise, lifestyle and mental attitude) to achieve its true health potential. Nothing is more important than healthy eating! Put in the wrong fuel or let it go without regular use and there's no way it can deliver its full power and performance. Without healthy eating, your body's engine will cough, splutter and eventually stall.

Maintaining a balanced diet by healthy eating can:

- Give you vitality and energy for life
- Help you stay at a weight that's right for you
- Boost your immune system
- Improve sports performance
- Delay the effects of aging
- Keep you active and fit into old age
- Help beat tiredness and fatigue
- Protect teeth and keep gums healthy
- Enhance your ability to concentrate and possible alter mood
- Ward off serious illnesses like heart disease, certain cancers, mature-age onset diabetes, and gallbladder disease [1]

Role of Dietetics in Health Care

- **Basics of Healthy Eating for Today**

Low Fat

Cutting down on all fats from fatty and fried foods, butter, cream, margarine and oils is agreed on by nutritionists the world over as a way of making the modern diet healthier and reducing weight. Cutting down on saturated fat in particular is important for the heart.

Base your meals on starchy foods

Starchy foods should make up around one third of the foods you eat. Starchy foods include potatoes, cereals, pasta, rice and bread. Choose wholegrain varieties when you can: they contain more fibre, and can make you feel full for longer. Most of us should eat more starchy foods: try to include at least one starchy food with each main meal. Some people think starchy foods are fattening, but gram for gram they contain fewer than half the calories of fat.[1]

High Fiber

Not just bran! Fiber, that largely indigestible part of our food and often the part that really gets us chewing, is responsible for so much good. It not only keeps our insides moving smoothly but it helps to lower cholesterol, prevent gallstones and bowel cancer, and keep our weight in check. Wholemeal and grain breads are full of it, as are brown rice, barley, lentils, beans and vegetables. To start your day, there is a wonderful array of wholegrain and bran breakfast cereals.

Vitamins, Minerals, and Anti-oxidants

Vegetables, fruit and grains carry an abundance of vitamins, minerals and numerous other natural substances (called phytochemicals) which scientists are only just beginning to discover. Phytochemicals function as anti-oxidants, which fight off free radicals that could otherwise damage our cells, membranes and DNA. Numerous studies show that people who eat lots of vegies and fruit have lower rates of heart disease and cancer.

Variety

Variety doesn't mean 10 different cereal packs in your cupboard, but rather a variety of botanically different foods. Pasta, bread, puffed wheat and

Narayanrao Chavan Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

couscous all look and taste different but are all derived from the one basic (but versatile) grain (wheat). So they all provide similar nutrient Substituting other grains like oats, barley, corn or rye for some wheat adds diversity to your diet and ensures a wider range of nutrients. The nutrients you miss from one food, you can make up from another.

Moderate Sugar and Sweets

Sugar in modest amounts adds to the flavour of cooking and is a useful fuel for athletes and other active people. In excess, however, sugar adds unwanted kilojoules and can displace other more important foods - particularly for children and teenagers. In chewy and sticky form, sugar also can cause dental caries (or tooth decay).

Light on Salt

Our modern diet is laden with salt. It's not until you avoid salt for a few weeks that you notice how it masks the true flavour of foods. As 75 per cent of our total salt intake comes from everyday commercial foods (including bread, biscuits, cereals, butter, deli meats and snack foods), it is imperative to buy salt-reduced or no-added-salt products.

Drink Plenty of Fluid

Two litres (8 glasses) of fluid a day is needed to keep the body hydrated and the kidneys working efficiently. In hot weather, even more fluid is required. Alcohol and strong coffee do not count, as these act as diuretics and force the kidney to excrete more fluid than normal.

Enjoy Mealtimes

Stress, tension, rushing and eating on the run all take their toll on your digestion and health. Try to relax and take the time to really appreciate the food in front of you.Not only will it increase your enjoyment and satisfaction by having a "comfortably full" stomach, this technique is often recommended as a strategy to help people lose weight.

Main Components of Nutrition

Protein

Proteins are often called the building blocks of the body. Protein consists of combinations of structures called amino acids that combine in various ways to make muscles, bone, tendons, skin, hair, and other tissues. They serve other functions as well including nutrient transportation and enzyme production. In fact, over 10,000 different proteins are in the body.

Water and salts

Water is one of the most important nutrients in the sports diet. It helps eliminate food waste products in the body, regulates body temperature during activity and helps with digestion. Maintaining hydration during periods of physical exertion is key to peak performance. While drinking too much water during activities can lead to physical discomfort, dehydration in excess of 2% of body mass (by weight) markedly hinders athletic performance. Water and salt dosage is based on work performed, lean body mass, and environmental factors, especially ambient temperature and humidity. Maintaining the right amount is key.

Carbohydrates

Carbohydrate is arguably the most important source of energy for athletes. No matter what sport you play, carbs provide the energy that fuels muscle contractions. Once eaten, carbohydrates breakdown into smaller sugars (glucose, fructose and galactose) that get absorbed and used as energy. Any glucose not needed right away gets stored in the muscles and the liver in the form of glycogen. Once these glycogen stores are filled up, any extra gets stored as fat.

Adequate carbohydrate intake also helps prevent protein from being used as energy. If the body doesn't have enough carbohydrate, protein is broken down to make glucose for energy. Because the primary role of protein is as the building blocks for muscles, bone, skin, hair, and other tissues, relying on protein for energy (by failing to take in adequate carbohydrate) can limit your ability to build and maintain tissues. Additionally, this stresses the kidneys because they have to work harder to eliminate the byproducts of this protein breakdown.

Conclusion

Proper nutrition and diet for young student/sportsperson is critical not only to their athletic success, but more importantly to their growth, development, and overall health. Nutritional recommendations should be based on the most current scientific data; we must provide information about appropriate resources for the school nurse when advising student athletes and their coaches and parents. Student athletes and their advisors often are misinformed or have misconceptions about sports nutrition. Thus, nutrition plays an integral role in promoting athletic success by helping athletes stay

Principal
Navjivan Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

healthy and optimally fuel themselves so they can maximize training and conditioning. . It is likely, however, that for various reasons, not all athletes are able to consume a diet that meets their nutritional needs and thus resort to nutritional supplements with the intention of preventing deficiencies and even enhancing performance.

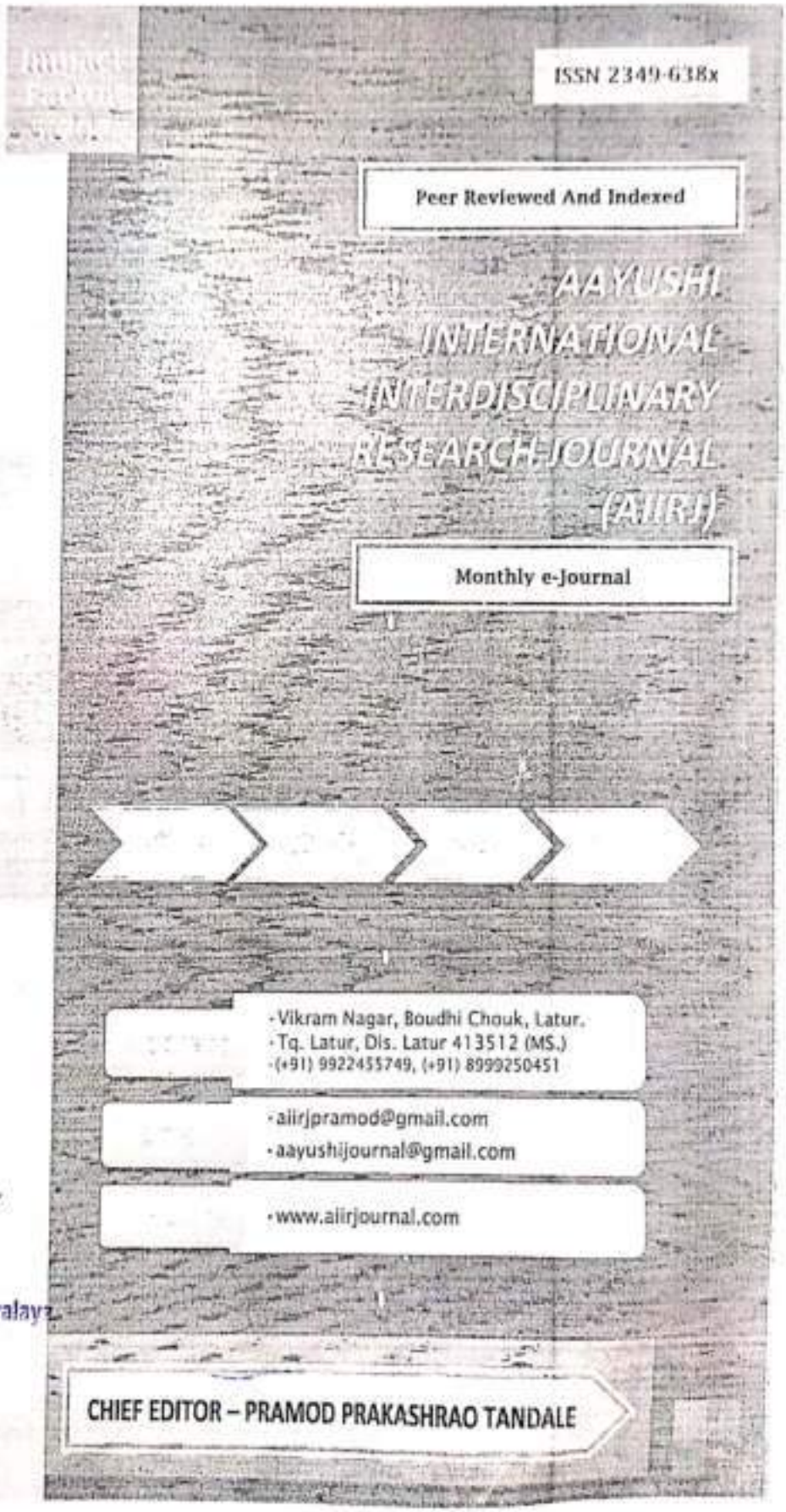
Dietetics play the role of managing food and nutrition to promote health. A Nutritionists and dietitians are food and nutrition experts who provide nutritional services in hospitals, schools, nursing care facilities, and other institutions. These essential health care professionals are responsible for developing food and nutrition programs to prevent and treat illness or promote general dietary health.

References :

1. **Melinda Manore, Nanna L. Meyer, Janice Thompson,** *Sport nutrition for health and performance*
2. **Kathleen M. Zelman,** *How to overcome unhealthy habits that are keeping you from losing weight and getting fit.*
3. **Calfee, R. and Fadale, P.,** *Popular ergogenic drugs and supplements in young athletes*
4. **S. Tom P. Hafer,** *Faith & Fitness : Diet And Exercise for a better world.*
5. **Jill Anne McDowall,** *Supplement use by young athletes*
6. **Maughan, R.J., King, D.S. and Lea, T.** , *Dietary supplements, Journal of Sports Sciences*
7. **Ziegler, P.J., Nelson, J.A. and Jonnalagadda, S.S.** , *Use of dietary supplements by elite figure skaters. International Journal of Sport Nutrition and Exercise Metabolism*
8. *http://www.nhs.uk/Livewell/Goodfood/Pages /eight-tips-healthy-eating.aspx*
9. http://sportsmedicine.about.com/od/sportsnut rition/a/Protein.html
10. *http://www.livestrong.com/meal-plans-for-athletes/*
11. http://www.nhs.uk/Livewell/Goodfood/Page s/eight-tips-healthy-eating.aspx
12. Jill Anne McDowall, Supplement use by young athletes

Principal
Narayanrao Ra... Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Bantara

Scanned by CamScanner

49	कुलदिप राजकिशोर गोड डॉ. प्रमोद काटकर	चंद्रपूर एवं गडचिरोली जिल्हे के ग्रामीण एवं शहरी आश्रम विद्यालयों के छात्रों की शरीराकृति मापन पटकों का तुलनात्मक अध्ययन	224 To 228
50	कु. शिल्पा मनोहरराव अडाऊ (महल्ले)	संगीत आणि चिकित्सा पद्धती एक अभ्यास	229 To 231
51	ए.पि. भिणगिणे एस.आर.लखमावाड	नांदेड शहरातील माध्यमिक स्तरावरील विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीवर कौटुंबिक परिस्थितीचा होणारा परिणाम अभ्यासणे	232 To 233
52	स्मिता प्रभाकर देशमुख	पं.मनोहर कासलीकर यांचा बंदिशीकडे बघण्याचा सौंदर्यात्मक दृष्टीकोन	234 To 236
53	ज्योत्स्ना भागवतराव गव्हाणे डॉ बाबासाहेब मनोहर गोरे	लातूर जिल्ह्यातील प्राथमिक शाळेत शिक्षणाच्या सार्वत्रिकीकरणासाठी सर्व शिक्षा अभियानांतर्गत राबविल्या जाणाऱ्या उपक्रमांचा चिकित्सक अभ्यास	237 To 238
54	डॉ.शिवाजी नारायणराव सोनटक्के	ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र व डेल्फी तंत्र	239 To 243
55	माधव दत्तात्रय मोरे	लिंगायत भक्ति चळवळीत श्री लक्ष्मण महाराज यांच्या कार्याचे योगदान : एक विशेष अभ्यास	244 To 246
56	माधव दत्तात्रय मोरे	संत मन्मथस्वामी प्रवर्तित लिंगायत भक्ति चळवळ साहित्य योगदान	247 To 249
57	अश्विन खांडेकर प्रा. डॉ. देवेन्द्र बिसेन	भंडारा जिल्हयातील पिकाखालील क्षेत्र व उत्पादन बदलाचा भौगोलिक अभ्यास	250 To 252
58	प्रा. किशोर मारोतराव ताकसांडे	यवतमाळ जिल्ह्यातील अनुसूचित जमातीच्या साक्षरतेचे भौगोलिक अध्ययन	253 To 256
59	डॉ. वी.व्ही. डिगोळे	फ. म. शहाजिंदे यांच्या काव्यलेखनाची निर्मिती प्रक्रिया	257 To 259
60	कु.श्वेता बळवंतराव भुते	एचआयव्ही/एड्स लक्ष्यगट हस्तक्षेप प्रकल्प व स्थलांतरीत कामगार	260 To 262
61	डॉ.अंजली चंद्रकांत पांडे	आरोग्य आणि आहार	263 To 265
62	प्रा.डॉ.दयानंद उजाडंबे	महाराष्ट्रातील जलसाठ्याचा भौगलीक अभ्यास	266 To 269
63	प्रा. डॉ. भाऊसाहेब सोनाजी देवकर	श्री क्षेत्र जांबसमर्थ यात्रा उत्सवाच्या अभिसरणीय प्रारुपाचा - एक भौगोलिक अभ्यास	270 To 273
64	प्रा. किशोर मारोतराव ताकसांडे	यवतमाळ जिल्ह्यातील (महाराष्ट्र राज्य) नोडल केंद्रातील लोकसंख्यावाढीचे भौगोलिक अध्ययन	274 To 276

Principal
Narayanrao Ram Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Vol - VI Issue - V MAY 2019 Peer Review e-Journal Impact Factor 5.707 ISSN 2349-638x

आरोग्य आणि आहार

डॉ.अंजली चंद्रकांत पांडे
गृह-अर्थशास्त्र विभाग,
नारायणराव राणा महाविद्यालय,बडनेरा, जिल्हा-अमरावती.

प्रस्तावना -

आजच्या धकाधकीच्या जीवनामध्ये मानवास आपल्या दैनंदिन गरजेच्या पूर्ततेसाठी सतत कार्यमग्न रहावे लागत असल्याने शारीरिक आरोग्याकडे लक्ष देण्यासाठी कुणासही वेळ मिळत नसतो. जो तो सतत आपापल्या कार्यामध्ये व्यस्त आहे. स्पर्धेच्या युगात टिकण्याकरीता धावपळ ही गरजेची आहे, परंतु त्याचसोबत आपले आरोग्य टिकविणे सुद्धा त्याहीपेक्षा महत्त्वाचे आहे. परंतु आजची जीवनशैली व आहार हे आजाराला पोषक ठरत आहेत. पाश्चिमात्य आहारशैली ही आपण अंगिकारल्यामुळे त्याचे वाईट परिणाम आपल्या आरोग्यावर झालेले आहेत. त्यामुळे मधुमेह, हृदयविकार यासारखे आजार वाढत आहेत. मागील पाच दशकापुर्वीच्या काळात ज्या पद्धतीची जीवनशैली होती त्यामुळे आजाराचे प्रमाण देखील खुप कमी होते. तेव्हा परत तो जीवनशैली व आहार अंगिकारणे आवश्यक झालेले आहे. दिनचर्येमुळे व आहारामुळे उद्भवणा-या हृदयविकार व मधुमेह यासारख्या आजारांना रोखण्यासाठी आहारातील बदल आवश्यक झालेला आहे. आज आपल्या देशात 42 दशलक्ष लोक मधुमेहग्रस्त आहेत. 2030 साली ही संख्या 80 दशलक्ष होईल. तसेच आजच्या घडीला देशात 100 दशलक्ष लोक हृदयविकाराने आजारी आहेत अशी कार्डीयालॉजीकल सोसायटी ऑफ इंडियाची आकडेवारी सांगते. आरोग्याचा मुख्य आधार म्हणजे आहार. आपण काय खातो, काय खात नाही, खातो ते कसं खातो, याचा विचार म्हणजेच आहाराचा विचार, यावर माणसाला होणारे रोग किंवा त्याचं निरोगीपणा अवलंबून आहे.

आरोग्य - शारीरिक, मानसिक व सामाजिक अध्यात्मिक सुस्थिती असणे म्हणजे आरोग्य होय.

आहाराच्या चुकीच्या पद्धती -

माणूस हा सवयींचा गुलाम असतो. सवय एकदा लागली की ती बदलणे दिवसेंदिवस कठीण होत जाते. म्हणून कळत नकळत आपण कोणत्या सवयी अंगिकारत आहोत याबद्दल सावध राहणे अत्यंत आवश्यक आहे. आहाराच्या चुकीच्या सवयी तुमच्या आरोग्याचे मोठे नुकसान करू शकतात. जगात जितक्या लोकांचा उपासमारीने मृत्यु होतो, त्यापेक्षा खुप जास्त लोक खाण्याच्या चुकीच्या पद्धतींमुळे मृत पावतात.

घाईघाईत खाणे -

जर तुमचे आयुष्य हे खुपच धकाधकीचे असेल आणि तुम्हाला जेवण तयार करायला आणि शांततेने बसून खायला वेळ नसेल, तुम्हाला खुप घाईघाईत खाण्याची सवय असेल तर तुम्ही किती खात आहात याकडे तुमचे लक्ष नसते. लवकर लवकर खाल्ल्याने जास्त खाल्ले जाते. म्हणून शांत चित्ताने हळूहळू प्रत्येक घास चांगला चावून खावा, यामुळे आहार कमी लागतो आणि आरोग्य चांगले राहते.

जास्त खाणे -

शरीराला आवश्यक आहे त्यापेक्षा जास्त खाणे ही एक वाईट सवय आहे. याला विविध कारणे आहेत. काही लोकांना टि.व्ही. पाहता पाहता खाण्याची सवय असते, काही लोकांना एकटेपणा जाणवत असला कि ते जास्त खातात. आपला आहार मर्यादित ठेवण्यासाठी खायला बसण्यापूर्वीच आपल्याला किती आहार पुरेसा होईल याचा विचार करावा, आपल्याला हवे तेवढेच एखाद्या लहान ताटात वाढून घ्यावे.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera
Scanned by CamScanner

ताण घालवण्यासाठी खाणे -

बरेच लोक ताण घालविण्यासाठी काहीतरी खातात. भरपूर कामात आणि ताणतणावात दिवस घालविल्यानंतर रात्री स्नॅक्स, पिझ्झा, बर्गर इत्यादी खाता खाता बिअर, सिगारेट पिणे असे प्रकार करतात. या प्रकारांमुळे वजन वाढते, आरोग्य खराब होते.

जेंव्हा तुम्ही तणावात असाल तेंव्हा स्वतःला रिलॅक्स करण्यासाठी ज्यात खाणे समाविष्ट नाही असे इतर उपाय शोधा. निसर्गाच्या सानिध्यात वेळ घालवणे मित्रांशी गप्पा मारणे, ध्यानधारणा करणे, व्यायाम करणे हे काही चांगले पर्याय ठरू शकतात.

जेवण टाळणे -

बरेच डॉक्टर आणि आहारतज्ञ तुम्हाला जेवण न टाळण्याचा सल्ला देतील. तुम्ही नियमितपणे जेवण करत नसाल तर तुमची भुक वाढते आणि रक्तातील साखरेचे प्रमाण कमी होऊ शकते. वेळेवर जेवले नाही, जास्त वेळ उपाशी राहिले की नंतर एकतर जेवण जात नाही किंवा जास्त खाल्ले जाते. रोज सकाळी न्याहारी, दुपारचे जेवण आणि रात्रीचे जेवण नियमितपणे, वेळेवर घेण्याची सवय लावावी.

रात्री उशिरा जेवणे -

रात्री उशिरा जेवणे ही सुद्धा अनेकांना असलेली एक बाईट सवय आहे. या जेवणात जास्त कॅलरीज जाण्याची जास्त शक्यता असते. कारण रात्री उशिरा कंटाळा आला म्हणून किंवा टि.व्ही. समोर बसून आपण किती खात आहोत याचे भानच राहत नाही. रात्रीचा कंटाळा आणि जास्तीचे खाणे टाळण्यासाठी काही आवडीच्या गोष्टी करण्याचे पर्याय शोधा. आपल्या चांगल्या मित्रांशी बोलणे हे सुद्धा उत्तम पर्याय आहेत.

आहाराचे (अन्नाचे) प्रकार -

माणसाच्या प्रवृत्तीनुसार त्याच्या आहाराचे सत्व, रज आणि तम असे तीन प्रकार असतात.

1.माणूस स्वतःच्या वृत्तीनुसार आहार ग्रहण करत असतो.

1. पूर्वीच्या काळी, व्यक्ती सत्वगुणी होती. त्यामुळे तो आहारात कंदमुळे खात असे. त्यात अधिक सात्विकता
2. त्यानंतर काळ पालटला, त्याप्रमाणे आहारातही फरक झाला. माणूस वरण, भात, भाजी, आमटी असे रजोगुणी पदार्थ खाऊ लागला.
3. त्यानंतर पृथ्वीवरील रज-तमाचे प्रमाण अधिकच वाढले. त्यामुळे माणसाच्या आहारात त्याप्रमाणे फरक झाले. तो मांस, मासे, मद्यपान असा तमोगुणी आहार करू लागला.

2. सात्विक, राजसिक, तामसिक आणि राक्षसी आहार -

अ. सात्विक अन्न - फलाहार म्हणजे केळी, पेरू आदी झाडापरून पडलेली पक्व फळे तसेच खाणे.

आ. राजसिक अन्न - धान्याहार म्हणजे तांदूळ, डाळी, गहू आदी धान्ये शिजवून किंवा दळून खाणे.

इ. तामसिक अन्न - मांस, मदयी आदी पदार्थ शिजवून खाणे.

ई. राक्षसी अन्न - कच्चे मांस खाणे.

योग्य व रुमतोल आहार हेच सुखी जीवनाचे रहस्य -

रोजच्य जेवणात समतोल आहार असावा. त्यात शक्तिवर्धक घटक असावेत. शरीरस्वास्थासाठी मिठाची तितकी आवश्यकता नाही. पालेभाज्या व फळातून नैसर्गिक स्वरूपात आपल्या शरीराला मीठ प्राप्त होतेच. म्हणून मिठाचा अतिरेक टाळावा. तसेच आरोग्यशास्त्राच्या दृष्टीने साखर तर निषिद्ध आहे. आपल्या शरीराला असणारी शर्करा फळे, पालेभाज्या, कच्च्या पदार्थापासून मिळू शकते. कोठा साफ राहील असा हलका आहार असावा. मासपेशींचा विकास करणा-या प्रटकद्रव्यास प्रथिने असे नाव असून ती मांस, अंडी, दूध, डाळी व फळे यापासून मिळतात. दूध व मांसापासून मिळणारी प्रथिने पचण्यास सोपी असतात. ती पालेभाज्यापासून मिळणा-या प्रथिनापेक्षा जास्त महत्वाची असतात. तरीसुद्धा मांसापेक्षा दूध केव्हाही चांगले. मांसाहार न करणा-यांना दुधापासून प्रथिने मिळतात. परंतु सर्वच जण दूध पिऊ शकत वा पचवू शकत नाही. दुधातील स्निग्ध पदार्थ काढलेले दुधही लाभदायकच आहे. कारण त्यामुळे प्रथिने नष्ट होत नाहीत. कोणतेही दूध घेतले तरी चालते. बकरीचे दुधही आरोग्यास उपयुक्त आहे. शरीरात उष्णता निर्माण करण्याचे, व शरीर सुडौल ठेवण्याचे कार्य दूध, तूप,

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

तेल, मांस करत असतात. चांगल्या तुपाला आहारात प्राधान्य द्यावे. साजूक तूप घेतल्यास रोजची शारीरिक आवश्यकता पूर्ण होते. साजूक तूप खरेदी करू न शकणा-या व्यक्तिनी तेल वापरावे. शेंगदेतेल, खोबरेल तेल हे तेले आहारासाठी चांगली समजली जातात. तुपाचा-तेलाचा अतिरेकही चांगला नाही. चरबीयुक्त पदार्थ आहारात अधिक घेतल्यास रक्तवाहिन्या कठीण व संकुचित बनतात. शक्यतो प्राणिजन्य चरबीपेक्षा वनस्पती चरबीचा वापर केव्हाही चांगलाच. पु-या व लाडू यात तुपाचा जास्त उपयोग करणे म्हणजे व्यर्थच खर्च होय. आहारावर नियंत्रण असावे.

गहू, तांदूळ, ज्वारी व बाजरी ही धान्ये महत्वाची आहेत. या धान्यांना दुधापेक्षा जास्त प्राधान्य मिळायला हवे. हाच मनुष्याचा मुख्य आहार असून देशातल्या निरनिराळ्या प्रांतात वेगवेगळी धान्ये आहारात असतात. शरीर विकासार्थ ही सर्वच आवश्यक आहेत असे नाही. कारण त्यापैकी सर्वात स्टार्च असल्याने यापैकी एक धान्य जरी आहारात असले तरी चालण्यासारखे आहे. धान्य दळून घेतल्यावर ते चाळण्याची गरज नाही. कारण त्या कोंड्यात अनेक प्रकारची जीवनसत्वे असतात. पोषणाच्या दृष्टीने तो महत्वाची असतात. तर डाळींपासूनही बरोच प्रथिने मिळतात. दूध विकत घेऊ न शकणा-यांना कडधान्ये केव्हाही चांगली. डाळीत मसुराची डाळ पचावयास हलकी असते. फळे व भाज्या यांना आपल्या आहारात तृतीय स्थान मिळते. रोज ताज्या पालेभाज्या जरूर घ्याव्यात. गाजर, काकडी, टोमॅटो वगैरे पदार्थ न शिजवता धुवून कच्चे खाणे चांगले. व्याधिमुक्त होण्यासाठी पालेभाज्या व फळांच्या रसाचा प्रयोग सलग घेऊन करावा.

फळेही ऋतुमानानुसार खावीत. आंबा, जांभूळ, लिंबू, संत्री आदींचे सेवन करण्यास सकाळची वेळ सर्वोत्तम. फळांचा रस रक्तशुद्धीचे काम करतो. शरीराच्या कोषांमध्ये साठविलेली विषारी द्रव्ये तो शरीराबाहेर टाकतो. फळे आणि भाज्यांचा आहारात वापर हा चांगला मंत्र आहे. हिरव्या पालेभाज्यांचे आहारात महत्वपूर्ण स्थान आहे. हिरव्या पालेभाज्या आपल्याला पुरेशा प्रमाणात खनिजे आणि जीवनसत्वे यांचा चांगला स्त्रोत पुरवित असतात. फळे व पालेभाज्यांमध्ये जीवनसत्वे आणि प्रोव्हिटॅमिन्स व्यतिरिक्त आढळणारे फायटोकेमिकल्स कर्करोग, मधुमेहासारखे दीर्घ आजार तसेच हृदयरोगास प्रतिबंध करतात. भाज्यांच्या पानामध्ये जीवनसत्व 'अ', 'क', फोलिक ॲसिड, रायबोफ्लेविन, थायमीन, बीटा कॅरोटीन असते. जीवनसत्व 'अ' मुळे अंधत्वापासून बचाव होतो. शेवग्याच्या शेंगा, मेथी, कढीलिंब यांचे पावडर करून ते पावडर वडे, पापड, सॉस, सूप यांची चव आणि गुणवत्ता वाढवितो. फुलकोबीच्या पानाची भुकटी खाण्यामुळे पदार्थातील बीटा कॅरोटीनचे प्रमाण वाढते. आणि त्यामुळे जीवनसत्व 'अ' च्या कमतरतेची समस्या दूर केल्या जाते. फुलकोबीच्या साधारपणे टाकून दिल्या जात असलेल्या हिरव्या पानामध्ये क्लोरोफिल आणि बीटा कॅरोटीन भरपूर प्रमाणात असते. भाज्यांमध्ये कांदा, लसून, वांगे याचा विशेष उपयोग होतो. वांग्यामुळे आहारातील जास्तीचे कोलेस्टेरॉल शरीराबाहेर टाकायला मदत होते.

निष्कर्ष -

आरोग्य ही बाब महत्वपूर्ण आहे. आरोग्यच चांगले नसेल तर कितीही श्रीमंत व्यक्ती असली तरी सुखी राहू शकणार नाही. आरोग्यामुळेच आपण आपल्या जीवनाचा उपयोग चांगला करू शकतो. आजच्या या ताणतणावाच्या काळात रोज नवीन आव्हाने स्विकारतांना आरोग्याची काळजी घेणे गरजेचे आहे. आरोग्याचा मुख्य आधार म्हणजे आहार. आपण काय खातो, काय खात नाही. खातो ते कसं खातो याचा विचार म्हणजेच आहाराचा विचार. यावर माणसाला होणारे रोग किंवा त्यांच निरोगीपण अवलंबून आहे. आपल्या आहाराच्या चुकीच्या पद्धतीमुळे विविध आजारांना सामोरे जावे लागत आहे. त्याकरिता आपला आहार सर्व पोषक घटकांनी परिपूर्ण असावा.

संदर्भ -

1.http://en.wikipedia.org/wiki/Health_in_India
2.जुगल किशोर (2005), National health programs of India : national policies & legislations related to health. Century Publications.
3.http://www.indexmundi.com/India/infant_mortality_rate.html
4.http://www.loksatta.com/
5.http://www.miloonsaryajani.com/node/26
6.http://www.marathiarogya.com/
7.http://arogyavidya.net/arogyavi/index.php.com/

Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Scanned by CamScanner

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
April-2019 Special Issue – 183 (A)

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wanichede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Scanned by CamScanner

"RESEARCH JOURNEY" International E- Research Journal
Impact Factor - (SIIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 183 (A)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

The Growing Menace of Childhood Obesity and Low Self Esteem

Dr. Mrs. Anjali C. Pande
Department of Home-Economics
Narayanrao Rana Arts College, Badnera-Amravati
E-mail : mulmulchepe0@gmail.com
Mob : 7767891556 & 7588749783

Abstract:

Childhood obesity is a major health problem and has reached epidemiological proportions today. Childhood obesity is defined as a condition in which a child weighs considerably more than normal for his height, sex and body frame. It is a condition beyond "overweight" and should be treated by a physician. Most treatment plans involve a calorie-reducing diet and increased activity. Other specific treatments may be ordered depending on the medical reason (if any) your child is overweight or any co-occurring medical conditions. Although it is well-known that childhood obesity has many negative physical effects, it is important for parents to recognize the emotional effects as well. Low self-esteem is one of the main psychosocial factors related to childhood obesity. Low self-esteem is a risk factor for poor mental health, especially anxiety and depression. Yet not all overweight children are affected. Little is known about what characterises the group of overweight children with the lowest self-esteem. This topic may be of particular interest in relation to planning prevention, assessment and treatment strategies for children with overweight/obesity. With regard to the development of intervention strategies that promote self-esteem in overweight children, information about which self-esteem domains are particularly important to target and about related factors that might deserve focus are useful.

Keywords: Low self-esteem, childhood obesity, psychological factors

Introduction

Obesity, an important health problem, has definitely increased in prevalence in the past few decades throughout the world, more so in the developed countries. And as the developing countries increasingly adapt to the Western lifestyle and food habits, the problem of obesity seems to be turning into epidemic proportions in these nations too, involving the extremes of ages as much as the middle age populace. More and more children and adolescents with obesity are being detected today worldwide.[1] Obese persons accumulate so much body fat that it might have a negative effect on their health, not only physical like cardiovascular disease and Type 2 diabetes, but also mental health.[2]

Prevalence of childhood obesity is rising around the world.[7,8] Once considered a problem of affluent countries, it is now becoming a common problem even in the developing countries.[9–11] More than 1.1 billion adults and 10% children are classified as overweight or obese.[12] WHO figures are somewhat similar and estimate at least 20 million children under the age of five years as overweight.[3] Childhood obesity is now being rightly referred to as a global epidemic[10] and WHO estimates that by 2015, approximately 2.3 billion adults will be overweight and more than 700 million children and adolescents will be obese. The global prevalence of childhood obesity varies from 30% in the US to less than 2% in sub-Saharan Africa. The prevalence of overweight and/or obesity in school children is 20% in the UK and

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Australia, 16.2% in Brazil, 15.8% in Saudi Arabia, 15.6% in Thailand, 10% in Japan and 7.8-10.9% in Iran.[13–15] The prevalence of childhood obesity was found to be much less in the two Indian cities of Delhi and Chennai (6.2% and 7.4% respectively).[16,17]

Knowledge about the prevalence of self-esteem problems in children with overweight or obesity is growing. However, less is known about which self-esteem domains are particularly impaired in children with overweight/obesity and what characterises the sub-group of children with overweight/obesity that demonstrates lower self-esteem. Most previous studies on self-esteem in children have focused on global measures of self-esteem. More recently, however, emphasis has been placed on multi-dimensional measures, highlighting different domains of self-esteem [7]. Self-esteem is also considered to be influenced by the discrepancy between the ideals and the accomplishments of a child within a specific area as well as upon perceived emotional support from parents and peers. Several studies indicate that some domains of self-esteem may be more negatively affected by overweight/obese status than others. Children with overweight/obesity seem to have an elevated risk of low self-esteem in the domains of sports, physical appearance and peer engagement in particular [1,7]

Childhood obesity

Childhood obesity is defined as a condition in which a child weighs considerably more than normal for his height, sex and body frame. It is a condition beyond "overweight" and should be treated by a physician. Most treatment plans involve a calorie-reducing diet and increased activity. Other specific treatments may be ordered depending on the medical reason (if any) your child is overweight or any co-occurring medical conditions. Although it is well-known that childhood obesity has many negative physical effects, it is important for parents to recognize the emotional effects as well. Childhood obesity epidemic may trigger an increase in the population prevalence of low self-esteem in the future. Thus, the growing menace of childhood obesity epidemic may increase the prevalence of not only chronic diseases, but also poor mental health.

Low Self-Esteem

A child who is obese is at risk of overall lower self-worth when compared with an average child. This low self-esteem can be damaging in many ways. This may cause the child to engage in risky behaviors, such as drug or inhalant abuse. She may also have low self-fulfilling expectations regarding her education and future career. Low self-worth can increase the likelihood she will allow others to abuse her, physically and emotionally.

Problems faced by Obese Children

Depression

Obese children are at increased risk of depression. Unsuccessful diet attempts may cause the child to feel as though the situation is hopeless. Depression is often the result of bullying as well. In severe cases, depression can lead to a suicide attempt.

Anxiety

Obese children are at risk of anxiety, often because of the stress of taunting. The child learns to dread being at school or participating in activities, such as physical education, in which he seems different from other children. The stress of dealing with a condition that leads to social stigmatization can lead to anxiety, poor school performance and dropping out of school.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Poor Body Image

The obese child often suffers from a poor body image. This may cause her to avoid participating in physical activities or spending her spare time with others. Having a poor body image can also precipitate an eating disorder, such as bulimia.

Social Stigma

For children who are overweight, living with excess pounds can be heartbreaking. In its own way, the social stigma attached to being overweight can be as damaging to a child as the physical diseases and conditions that often accompany obesity. In a society that puts a premium on thinness, studies show that children as young as 6 years may associate negative stereotypes with excess weight and believe that a heavy child is simply less likable.

Self-Esteem & School Bullying

Generally speaking if your child is obese, he is more likely to have low self-esteem than his thinner peers. His weak self-esteem can translate into feelings of shame about his body, and his lack of self-confidence can lead to poorer academic performance at school. You probably don't need a detailed description of how difficult the day-to-day life of children who are overweight can sometimes be. These youngsters may be told by classmates (and even adults) that being heavy is their own fault. They might be called names. They could be subjected to teasing and bullying. Their former friends may avoid them, and they may also have trouble making new friends. They could be the last one chosen when teams are selected in physical education classes.

Emotional Eating

In an ironic twist, some children who are overweight might seek emotional comfort in food, adding even more calories to their plates at the same time that their pediatricians and parents are urging them to eat less. Add to that the other emotional peaks and valleys of life, including the stress of moving to a new community, difficulties in school, or the death of a parent or a divorce, and some children routinely overindulge in food.

Discrimination

There are other obesity-related repercussions that continue well into adolescence and beyond. Heavy teenagers and adults might face discrimination based solely on their weight. Some research suggests that they are less likely to be accepted for admission by a prestigious university. They may also have a reduced chance of landing good jobs than their thinner peers. Women who are overweight have a decreased likelihood of dating or finding a marriage partner. In short, when heavy children become heavy adults, they tend to earn less money and marry less often than their friends who are of average weight.

Caring for Obese Child with Low Self Esteem

Care for an obese child must be two-fold. First, for physical health, he/she needs assistance in appropriate weight loss. It is best to let a medical professional recommend a diet for your child, as he can determine the appropriate amount of calories, fat and nutrients needed each day for safe weight loss. This should be accompanied by enjoyable exercise for an hour a day most days of the week. Healthy options include team sports if your child is interested or solo pursuits, such as swimming, basketball and brisk walking that leads to jogging. Your child may enjoy playing tag with a sibling or playing active outdoor games with a dog. Having a fun plan can improve exercise compliance.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera
Scanned by CamScanner

It is equally important to safeguard your child's emotional health. Do not hesitate to seek mental health counseling when needed. Find out if your child is being bullied at school, either from your child if he will tell you or from his teachers or guidance counselor if he doesn't want to talk about it. Bullying requires significant action to avoid serious emotional and learning problems for your child. Help your child find ways to build his self-esteem by involvement in activities in which he excels.

Some important suggestions :-

- Help children understand that being overweight can undermine physical and mental health and is more than an appearance issue;
- Talk to children about why they overeat and how they feel about themselves. Identify feelings and situations that cause them to overeat, and discuss coping strategies;
- Criticizing an obese child or trying to humiliate them into losing weight will increase the child's emotional difficulties. The child may become lonelier, more depressed, and less likely to make changes that might help;
- Praise your child's strengths and accomplishments;
- Help children gain control over their weight by discussing and encouraging healthy food choices and exercising regularly with them. Individualize food and exercise plans according to the child's interests and your commitment level;
- Set an example--make healthy eating and exercise a family affair;
- Encourage children to make smart choices and understand the benefits of feeling better and being healthier. Explain the long-term medical impacts of a healthy lifestyle;
- Limit access to high-calorie, high-fat and sugary foods, including soda and juices--especially at home;
- Limit sedentary activities including television and computer time; and
- Do not use food to reward or punish children. Establish a system to reward weight goals and help the child get back on track when they fall off.

Conclusion

Obesity impacts the self-perception of children entering adolescence, especially in girls, but in selected areas of competence. Obese children are at particular risk of low perceived competence in sports, physical appearance, and peer engagement. Not all obese children are affected, although the reasons for their resilience are unclear. Quantifying risk of psychological distress alongside biomedical risk should help in arguing for more resources in child obesity treatment.

References

1. Caballero B. The global epidemic of obesity: An overview. Epidemiol Rev. 2007;29:1
2. Wyatt SB, Winters KP, Dubbert PM. Overweight and obesity: Prevalence, consequences and causes of a growing public health problem. Am J Med Sci. 2006;331:166–74.
3. WHO- Obesity and overweight. 2006. Sep, [Last accessed on 2010 Nov 7]. Available from http://www.who.int/mediacentre/factsheets/fs311/en/index.html .
4. Dietz WH, Bellizi MC. Introduction: The use of body mass index to assess obesity in children. Am J Clin Nutr. 1999;70:123S–5S.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

5. Cole TJ, Bellizzi MC, Flegal KM, Dietz WH. Establishing a standard definition for child overweight and obesity worldwide: International survey. BMJ. 2000;320:1240–3.
6. Luciano A, Lavieri C, Di Pietro ME, Bergamaschi G, Maffeis C. Definition of obesity in childhood. Criteria and limits. Minerva Pediatr. 2003;55:453–9.
7. Micic D. Obesity in children and adolescent--a new epidemic? Consequences in adult life. J Pediatr Endocrinol Metab. 2001;14(Suppl 5):1345–52. discussion 1365.
8. Wang Y, Lobstein T. Worldwide trends in childhood overweight and obesity. Int J Pediatr Obes. 2006;1:11–25.
9. Kumar S, Mahabalaraju DK, Anuroopa MS. Prevalence of obesity and its influencing factor among affluent school children of Davangere city. Indian J Community Med.2007;32:15–7.
10. Flynn MA, McNeil DA, Maloff B, Mutasingwa D, Wu M, Ford C, et al. Reducing obesity and related chronic disease risk in children and youth: A synthesis of evidence with 'best practice' recommendations. Obes Rev. 2006;7(Suppl 1):7–66.
11. WHO Expert Consultation. Appropriate body-mass index for Asian populations and its implications for policy and intervention strategies. Lancet. 2004;363:157–63.
12. Haslam DW, James WP. Obesity. Lancet. 2005;366:1197–209.
13. Kelishadi R, Ardalan G, Gheiratmand R, Majdzadeh R, Hosseini M, Gouya MM, et al. Thinness, overweight and obesity in a national sample of Iranian children and adolescents: CASPIAN Study. Child Care Health Dev. 2008;34:44–54.
14. Mo-suwan L, Junjana C, Puetpaiboon A. Increasing obesity in school children in Transitional society and the effect of the weight control programme. Southeast Asian J Trop Med Public Health. 1993;24:590–4.
15. de Souza Ferreira JE, da Veiga GV. Eating disorder risk behavior in Brazilian adolescents from low socio-economic level. Appetite. 2008;51:249–55.
16. Kapil U, Singh P, Pathak P, Dwivedi S, Bhasin S. Prevalence of obesity among affluent adolescent school children in Delhi. Indian Pediatr. 2002;39:449–52.
17. Subramanyam V, Jayashree R, Rafi M. Prevalence of overweight and obesity in affluent adolescent school girls in Chennai in 1981 and 1998. Indian Pediatr. 2003;40:775–9.
18. Chatterjee P. India sees parallel rise in malnutrition and obesity. Lancet. 2002;360:1948.
19. Dietz WH. Childhood weight affects adult morbidity and mortality. J Nutr. 1998;128(2 Suppl):411S–4S.
20. Must A, Jacques PF, Dallal GE, Bajema CJ, Dietz WH. Long-term morbidity and mortality of overweight adolescents. A follow-up of the Harvard Growth Study of 1922 to 1935. New Engl J Med. 1992;327:1350–5.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badpura

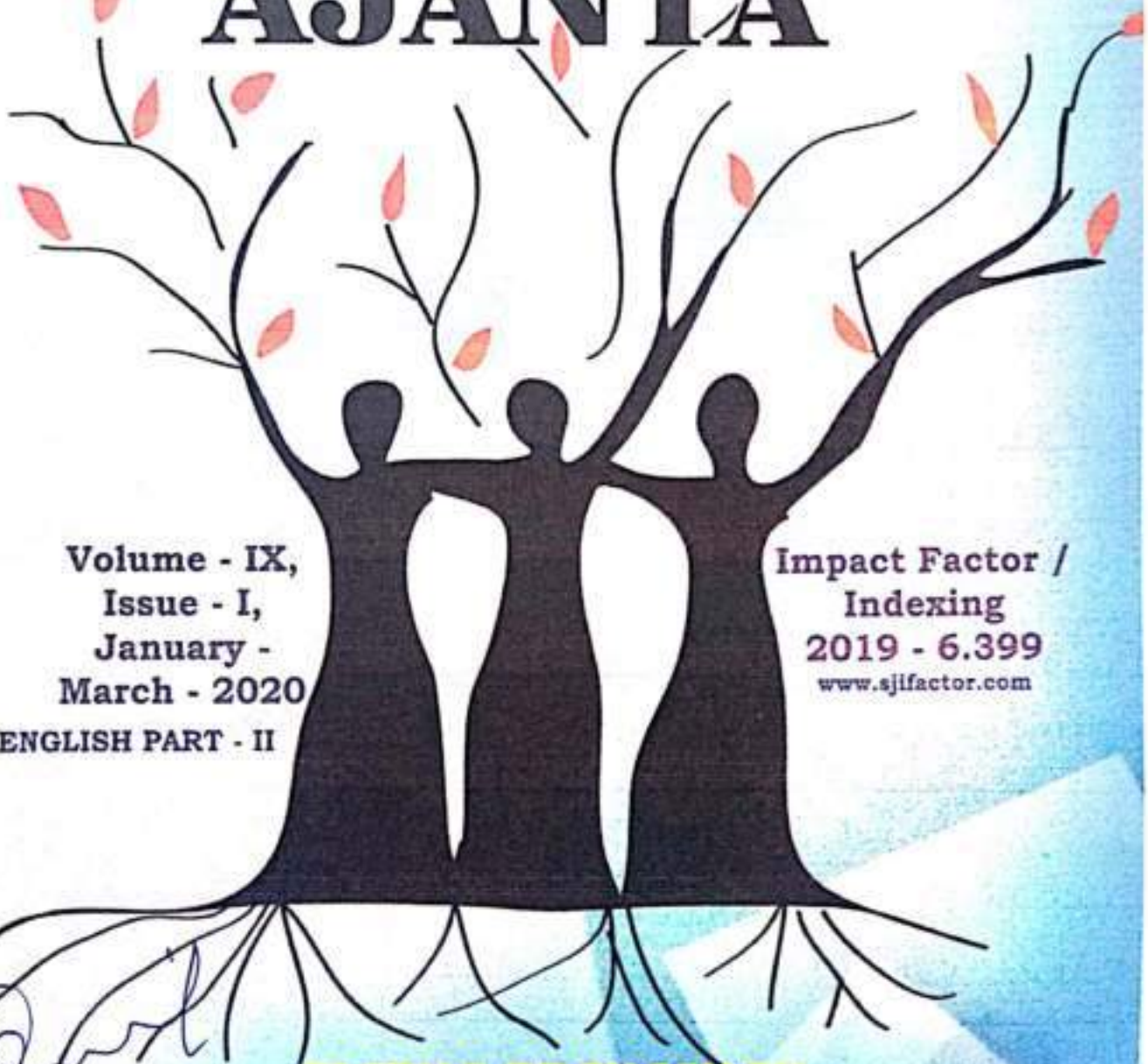
Scanned by CamScanner

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Volume - IX,
Issue - I,
January -
March - 2020
ENGLISH PART - II

Impact Factor /
Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

AJANTA PRAKASHAN

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

CONTENTS OF ENGLISH PART - II

S. No.	Title & Author	Page No.
15	Indigenous Indian Breakfast (IDLI) With Enhanced Nutritional Content Using Drumstick Leaves Powder **Dr. Sudhakara Rao. J** **Aarke Nandini Vijay** **Dr. Swati D Shende**	63-68
16	Economy and Women **Sumedha S. Lanjewar**	69-71
17	Challenges of Rural Women Entrepreneurs **Surekha R. Bhawar** **Dr. Sandhya M. Rotkar**	72-75
18	A Case Study Women Entrepreneurship in Maharashtra **Ku. Sushama Sundarrao Lomate**	76-81
19	Investigation and Stress Management of Pre-Competitive State Anxiety of Women Volleyball Players **Dr. Prashant Dinkarrao Taur**	82-85
20	Stress and Women Health **Asst. Prof. Vaishali Tukaram Lone**	86-93
21	Modern Eating Practices and Prevalence of Obesity in Adolescents **Miss. Sonal Tuljaram Kame**	94-97
22	A Study on Women Entrepreneurs in Beed Distict **Miss. Mubina Abdul Aziz Shaikh** **Dr. Surekha R. Gaikwad**	98-102
23	Information Technology and Women Empowerment **Shaikh Amjad Shaikh Riyaz**	110-115
24	Women Entrepreneurship in India and Women Rights **Dr. Anjali Chandrakant Pande**	116-116
25	Dr. B. R. Ambedkar and Women's Empowerment **Pradnya Ramdas Maheshmalkar**	117-122

Principal
Narayanrao ... Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

24. Women Entrepreneurship in India and Women Rights

Dr. Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor, Department of Home-Economics, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Distt.-Amravati.

Abstract

In this golden age of globalization, digitalization and start-up booms, India is clearly seeing a revolution vis-à-vis women entrepreneurs. The sixth economic census released by Ministry of Statistics and Programme Implementation (MOSPI) highlights that women constitute around 14% of the total entrepreneurship in India. Today's women entrepreneurs do not come only from the established business families or from the higher-income sections of the population, they come from all walks of life and from all parts of the country. From running sports media firms to construction companies and security and detective agencies – women are dabbling into fields that have traditionally been bastions of male domination. With the constant development in the Indian startup ecosystem, more and more women are chasing the entrepreneurial dream and succeeding in their ventures. This is empowering other Indian women who are still confined to the traditional homemaker role to think for themselves. However, a recent report states that only two Indian cities have made it to a ranking of the 50 most favorable global places for women to work. India's Silicon Valley, Bengaluru, ranked 40th, while Delhi came in at the 49th place. This survey was conducted by the tech giant Dell, and consultancy firm IHS Market. The ranking—based on inputs from Indian women entrepreneurs, policymakers, venture capitalists, media, and academicians—measures a city's ability to attract and support women who want to grow their businesses.

Introduction

Women entrepreneurship has been recognized as an important source of economic growth. Women entrepreneurs create new jobs for themselves and others and also provide society with different solutions to management, organization and business problems. However, they still represent a minority of all entrepreneurs. Women entrepreneurs often face gender-based

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

barriers to starting and growing their businesses, like discriminatory property, matrimonial and inheritance laws and/or cultural practices; lack of access to formal finance mechanisms; limited mobility and access to information and networks, etc.

Women's entrepreneurship can make a particularly strong contribution to the economic well-being of the family and communities, poverty reduction and women's empowerment, thus contributing to the Millennium Development Goals (MDGs). Thus, governments across the world as well as various developmental organizations are actively undertaking promotion of women entrepreneurs through various schemes, incentives and promotional measures.

Entrepreneurship has traditionally been defined as the process of designing, launching and running a new business, which typically begins as a small business, such as a startup company, offering a product, process or service for sale or hire. It has been defined as the "...capacity and willingness to develop, organize, and manage a business venture along with any of its risks in order to make a profit." While definitions of entrepreneurship typically focus on the launching and running of businesses, due to the high risks involved in launching a start-up, a significant proportion of businesses have to close, due to a "...lack of funding, bad business decisions, an economic crisis -- or a combination of all of these" or due to lack of market demand. In the 2000s, the definition of "entrepreneurship" has been expanded to explain how and why some individuals (or teams) identify opportunities, evaluate them as viable, and then decide to exploit them, whereas others do not, and, in turn, how entrepreneurs use these opportunities to develop new products or services, launch new firms or even new industries and create wealth.

India needs more women entrepreneurs

For quite a few years now, we have known that there is a major problem with India's labour force: the women are missing. Indian women are not only staying out of the workforce, they are doing so in increasing numbers across the board. The World Bank's latest development update for India reiterates these trends but also draws attention to an interesting insight: Women employers tend to hire a significantly greater number of women.

Of course, this is partly the result of the kind of businesses that women set up in what is already a heavily gendered labour force. For example, a beauty salon or a small tailoring unit owned by a woman can be expected to mostly hire other women. Also, many of these women-owned firms have only a single worker, which also skews the picture. But the trend holds true

Scanned by CamScanner

even in medium-sized firms. This lends credence to the idea that a targeted focus on women's entrepreneurship might be the tool needed to improve the labour force's gender balance.

The World Bank's report builds on a working paper by Ejaz Ghani, Arti Grover Goswami, Sari Kerr and William Kerr, Will Market Competition Trump Gender Discrimination In India?, which finds "a clear pattern of gender segmentation in both manufacturing and services, where, for instance, about 90% of employees in female-owned business in unorganized manufacturing are females". Gender segmentation is a double-edged sword in the sense that just like female-owned or female-led firms tend to hire more female workers, male owners and employers have the same tendencies. A 2014 paper, *Political Reservations And Women's Entrepreneurship In India*, by Ghani and others noted that "97% of working men are employed in male-owned enterprises". In the long run, such extreme levels of gender segmentation are obviously undesirable and inefficient. But in the short term, it may help to view this trend as a catalyzing opportunity that will bring more women into the workforce.

Problems Faced by Women Entrepreneurs in India

Some of the problems faced by women entrepreneurs are as follows:

1. Problem of Finance

Finance is regarded as "life-blood" for any enterprise, be it big or small. However, women entrepreneurs suffer from shortage of finance on two counts.

Firstly, women do not generally have property on their names to use them as collateral for obtaining funds from external sources. Thus, their access to the external sources of funds is limited.

2. Scarcity of Raw Material

Most of the women enterprises are plagued by the scarcity of raw material and necessary inputs. Added to this are the high prices of raw material, on the one hand, and getting raw material at the minimum of discount, on the other. The failure of many women co-operatives in 1971 engaged in basket-making is an example how the scarcity of raw material sounds the death-knell of enterprises run by women (Gupta and Srinivasan 2009).

3. Stiff Competition

Women entrepreneurs do not have organizational set-up to pump in a lot of money for canvassing and advertisement. Thus, they have to face a stiff competition for marketing their

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

products with both organized sector and their male counterparts. Such a competition ultimately results in the liquidation of women enterprises.

4. Limited Mobility

Unlike men, women mobility in India is highly limited due to various reasons. A single woman asking for room is still looked upon suspicion. Cumbersome exercise involved in starting an enterprise coupled with the officials humiliating attitude towards women compels them to give up idea of starting an enterprise.

5. Family Ties

In India, it is mainly a women's duty to look after the children and other members of the family. Man plays a secondary role only. In case of married women, she has to strike a fine balance between her business and family. Her total involvement in family leaves little or no energy and time to devote for business.

6. Lack of Education

In India, around three-fifths (60%) of women are still illiterate. Illiteracy is the root cause of socio-economic problems. Due to the lack of education and that too qualitative education, women are not aware of business, technology and market knowledge. Also, lack of education causes low achievement motivation among women. Thus, lack of education creates one type or other problems for women in the setting up and running of business enterprises.

7. Male-Dominated Society

Male chauvinism is still the order of the day in India. The Constitution of India speaks of equality between sexes. But, in practice, women are looked upon as abla, i.e. weak in all respects. Women suffer from male reservations about a women's role, ability and capacity and are treated accordingly. In nutshell, in the male-dominated Indian society, women are not treated equal to men. This, in turn, serves as a barrier to women entry into business.

8. Low Risk-Bearing Ability

Women in India lead a protected life. They are less educated and economically not self-dependent. All these reduce their ability to bear risk involved in running an enterprise. Risk-bearing is an essential requisite of a successful entrepreneur.

Role of Government to enhance women Entrepreneurship

1. Government has to establish proper training classes at least monthly ones to encourage entrepreneurial skills among rural women.

Scanned by CamScanner

2. Bankers and government should organize loan awareness schemes programs in the villages to educate rural women about the benefits provided by them.
3. Develop a policy to verify the amount provided by the banks.
4. Encourage women entrepreneurs by providing gift schemes who perform business well and participate well in entrepreneurial skill programmes.
5. There should be a continuous attempt to inspire, encourage, motive and co-operate women entrepreneurs.
6. To organize training programmes to develop professional competencies in managerial, marketing, financial production process, profit planning, to maintaining books of accounts and other skills. This will encourage women to undertake business.
7. There is need to change negative attitude of society towards women
8. District Industries centers and single window agencies should make use of assisting women in their trade and business guidance.
9. Better educational facilities and schemes and vocational training programmes will be arranged for development of rural women entrepreneurship.

Government Policies and programmes

1. UNIDO –United nation industrial development organization.
2. (TREAD)-Trade Related Entrepreneurship Assistance and Development.
3. Bharatiya Mahila Bank .
4. Mahila Coir Yojana .
5. Mahila Udayam Nidhi .
6. Stree Shakti Project.
7. Support to Training & Employment programme for women.
8. National Policy for Skill development and Entrepreneurship 2015

Women's Rights

Gender equality means a society in wherein both women and men enjoy the same opportunities, rights and obligations in different spheres of life. Equality in decision making, economic and social freedom, equal access to education and right to practice an occupation of one's choice. In order to promote gender equality , we need to the empowerment of women, and concentrate on areas which are most crucial to her well being. Women's empowerment,

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

economic, social, political, is vital to growth of any nation and to protect and nurture human rights.

Constitutional rights available to women in India

Fundamental right to equality before Law that is, equal protection of laws in India- Article 14

Prohibition of discrimination on grounds of religion, race, caste, sex or place of birth.However art 15(3) empowers state to make any special provision for women and children - Article 15

Equality of opportunity in matters of public employment or opportunity to any office under state and prohibits discrimination on ground of sex- Article 16

Freedom of speech and expression and freedom to practice any profession or to carry out any occupation , trade or business – Article 19

Protection of life and personal liberty- Article 21

Right to Privacy- Article 21

Right to property- Art. 300-A

Political rights- women reservation in for instance, panchayats. Art 15 of the Constitution allows special provisions for women and children to be made for their welfare.

Under the Legal Services Authorities Act women and children are entitled to free legal aid .

Under the Constitution of India , the Directive Principles of State Policy contain duties of the State to apply these principles while making laws.These principles state that state shall direct its policies to secure that citizens , men and women equally have the right to an adequate means of livelihood, that there is equal pay for both men and women, provide free and compulsory education for children and duty to improve public health.Whereasincase of violation of fundamental rights , these rights are enforceable , that is , a victim can seek legal redress through a court of law , the directive principles are only a guiding factor and its non observance is not actionable before court of law.

Conclusion

Women entrepreneur are those women who think of a business enterprise, initiate it organize and combine the factors of production, operate the enterprise, undertakerisk and handle economic uncertainties involved in running a business enterprise. Women participation in the

Principal

Scanned by CamScanner

field of entrepreneurship is increasing at considerable rate, efforts are being taken at the economy as well as global level to enhance woman's involvement in the enterprise sector. Educated Women is contributing to a great extent to the social transformation and in the future, will be seen that more women venturing into areas traditionally dominated by men.

References

1. Rais Ahmad – Agriculture,Rural Banking and Micro Finance in India
2. Singh Katar - Rural Development-Principal,Policies and Management
3. *Scott, S.; Venkatraman, S. (2000). "The promise of entrepreneurship as a field of research". Academy of Management Review*
4. *Scott, S.; Venkatraman, S. (2000). "The promise of entrepreneurship as a field of research". Academy of Management Review*
5. Drucker, Peter F. Innovation and Entrepreneurship. New York: Harper Business, 1985.
6. BhardwajG.N. et al, (2012), "Women Entrepreneurship in India: Opportunities and Challenges" CH Institute of management and communication, vol2http://www.chimc.in/Volume2.1/Volume2Issue1/GurendraNathBhardwaj. Pdf
7. http://www.bbamantra.com/women-entrepreneurship/
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Female_entrepreneurs
9. https://www.slideshare.net/Amit7613/women-entrepreneurs-27656407
10. http://www.bbamantra.com/women-entrepreneurship/
11. https://en.wikipedia.org/wiki/Female_entrepreneurs

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

ISSN 2394-5303

Printing Area®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal



Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Revised Edition

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

04

Values – Important Part of Life

Dr. Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor,
Department of Home-Economics,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera,
Distt.-Amravati

Values are the basis of a large number of our attitude towards things in life. They form the basis of our interaction with other people and can be said to be the most essential part of attaining and leading a successful life. Treat your children like flowers. Let them grow naturally. But instead of water and manure, give your children plenty of love. That's the way to make them grow. Children grow and behave on the basis of the foundation of the values and morals inculcated in them by significant people they are surrounded by, during early child-hood. Once values get inculcated, they remain with the individual and then take a strong hold which gets reinforced according to the experiences the child has during later years. Most parents are so anxious about their children that they try to rush their development but that only does harm. The parent's role in the child's growing up must be one of helping the child's own efforts. They cannot force their child's development any more than they can force flowers to grow more quickly. Every human being is born neutral and is like clean slate and with no mindset. How much virtues and vices are filled in, depends solely on the parents, teachers, circumstances, and the environment in which he grows up. When social values are taken into consideration, it is observed that every social group has its own social values which are strong influences on the behavior of the members of that group.

Latest report of National Survey of Children Health state that, the great majority of parents have positive and nurturing relationships with their children. Recently related parents reported data provide a window into parent-child relationships by children's specific ages. The report concludes that most parents have close-bond with their children, communicated with their children about important topics and were acquainted with most of their children friends. These findings were apparent even among parents of adolescent children (ages 12-17) who are often presumed to feel distant from their children. Parents have to socialize their children i.e. the moulding of individual into a social being. The new infant at the time of birth is not social or human, but is made social through a process of learning norms and values which is known as socialization. There are various agencies like family, playmates, teachers (school and college), marriage, media. Values are constituent facts of social structure and provide more general guidelines. A value is a belief that something is good and desirable. It defines what is important worthwhile and worth striving for. They are different values like honesty, trustworthiness, tolerance, co-operation, service humanity, charity, perseverance and many more.

While inculcating values in children parents have to keep in mind certain factors or criteria that are as follows :

Parents should inculcate this value among the children, this value comes from the parents themselves if they respect their children. Respect the feelings of others. Parents should teach their children to respect the feelings of others in order to get along in society. It takes years for a young child to comprehend fully how his actions impinge on other people that through his behavior. Respect elders, parents teach children, to respect elders, and also to respect for rules, rule is a rule one must obey them, such values like honesty, trustworthines should be

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

inculcated by parents, teachers & others.

It is the duty of the parents to be role models so that the inculcation of values such as speaking the truth does not have to be told or explained nor forced on the child. The exemplary behavior of the parents should be imitated/ emulated by the child through continuous exposure to the values, by parents who are his role model. During the initial stages of life, the child does the right things not because he understands that "it is the right thing to do" but because the child is afraid of being punished. But as he grow older, and his self concept develops, that child gradually inculcates values and does the right things because he learns to differentiate between good & bad.

Social Media is an agent of socialization, various forms of media can have profound effects on children. In India and United States as well as in other modern country, children are especially influenced by television. Different types of shows display a variety of interaction situations that can give children early exposure to social settings outside the family. Some shows might be purely entertaining, such as cartoons but now days in cartoons too violence is shown. Children are learning violence, not peace-making. Children often feel changed after viewing a particular affecting film, changed because they might have just witnessed a group of characters on film 'acting' in parts that communicate plausible yet different values from their own.

A child should be told about the consequences of the values and then he should be encouraged to decide which value to be followed. Generally it is said Honesty is the best policy – but it is not a policy or business transaction. It is the most natural and profitable way of leading life. It is not as difficult as it is made out to be. As the child grows up, he gradually learns to bring about a variation in the way he can keep his value system intact and at the same time not hurt the other person. For example, sometimes it is very dangerous to reveal the truth, but the child doesn't want to lie, then in such circumstances encourage him to be courageous enough to accept the consequences without fear. This, later on becomes an integral part of his personality whereby he is looked up in the society with respect.

The traditional joint family is gradually changing to the modern nuclear family functions of the family have been certainly subject to change; the role of grand parents have change, they cannot interfere in the household activities nor spend time with grand children. In joint family they performed very important role; as they were the head of the family and would inculcate values to children by telling them stories which had morals, and would teach children lessons in life. In nuclear family both the parents are working outside and there is nobody to look after children at home, they are left with care-keepers or left alone at home, or sometimes they lock the children at home. So they watch television, cartoon shows, adult movies, read wrong books, get wrong knowledge, learn Television culture.

Western culture can also be referred to as advanced culture; this is because its ideas and values promote the development and sustainment of advanced civilization. The core religious traditions are still the same but the life style differences can be found because of western culture. Hence we can say that western media has not affected the core traditions of Indian society but has changed life style and apparent characteristics of the society. Right from our clothing, till the music, the films, our attitude, our lifestyle, in short every aspect of our life has totally changed. In such a scenario, where the point of a rich cultured country like India is facing the problem of losing its culture. A value accepted and practiced frequently becomes a pattern of life. For example, keeping

Principal Narayanrao Vidyalaya Latur

Scanned by CamScanner

a promises made to children/ others and later on to oneself becomes a pattern of life. Child imitates the parents, if the parents themselves are aware of this act of keeping promises, slowly child will also follow the same path. If the child is performing any act which needs appreciation, it should be done without hesitation as simple appreciation serves as a positive reinforcement and thus becomes a pattern of life.

Any act which is accepted publicly becomes value. Although it is seen today that, corruptions rampant in the society, people who are no corrupt will get acknowledgement for their honesty. The child learns gradually that people who indulge in wrong doings, may have all the riches but will not be appreciated in the society at large. Corruption can never be appreciated or accepted even though it has become regular feature, hence cannot be called as value. Schools too have realized today that inculcation of value is also an important aspect of school education. Earlier, values were taught schools as "Moral education" but today the stress is on Value education as it has been understood by educators that in order for the child develop a wholesome personality, the inculcation of values is of utmost importance.

CONCLUSION –

Effective communication with the child can help in this process of value inculcation. Most parents are themselves under stress and pressure due to the demand of their professions, society and families. They therefore often fail to discharge their prime duties of inculcating values among children such values as tolerance, patience, love, benevolence, compassion charity forgiveness which may help their children cope with the complexities of modern life and help them better adjust to their environment. When parents consider inculcation of values in their child, their prime responsibility, values get ingrained in the mind and heart of the child and continuous reinforcement of exemplary behaviour by elders in the family, help in making these values, a part of the child's every day life. . School environment, especially the teacher's attitude are also important contributors in the development of values in children.

Reference :

1. R.A.Sharma (2007) Human Values & Education
2. Mohammad Nagi (2005) Modern Value Education, New Delhi
3. The Social Psychology of Childhood
4.Human Development : Nirupama Bhatt
5. http://answers.yahoo.com/question/index

□□□

Principal
Narayanrao Ra[illegible]vidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA®



Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

[14] Tapobrata Sanyal, "Prospective applications of jute geotextiles", Jute Manufactures Development Council, 3A Park Plaza, 71 Park Street, Kolkata-700016, India

[15] R Ilangovan, K Nagamani and P Gopal Swamy, 2007, Recycling of Quarry Waste as an Alternative Material in Concrete Manufacturing, Indian Construction, vol 40, no 2, p 7.

[16] Ilangovan R. and Nagamani K., 2006. Application of quarry Rock dust as fine aggregate in concrete construction. National Journal on construction Management: NICMR. Pune. December. pp. 5-13.

[17] A K Sahu, S Kumar and A K Sachin.,2003 Crushed Stone Waste as Fine Aggregate for Concrete.The Indian Concrete Journal, vol 77, no 1, p 845.

[18] M R Chitlange, 2010, Appraisal of Artificial Sand Concrete, IE(I) Journal Volume 90.

[19] M. Shahul Hameed and A. S. S. Sekar, 2008, Properties of Green Concrete Containing Quarry Rock Dust and Marble Sludge Powder as Fine Aggregate, ARPN Journal of Engineering and Applied Sciences, Vol. 3, no. 5.

[20] R. Ilangovana1, N. Mahendrana1 and K. Nagamanib2, 2008, Strength And Durability Properties Of Concrete Containing Quarry Rock Dust As Fine Aggregate, ARPN Journal of Engineering and Applied Sciences, vol. 3, no.

[21] Prakash Rao D.S. and Gridhar V, 2004. Investigation on Concrete with Stone crusher dust as Fine aggregate. The Indian concrete Journal, pp. 45-50.

[22] http://www.cnci.org.za

[23] http://www.3co.com/Pro/Principles/Special%20Concrete/nfrc.htm

□□□

04

Today's Lifestyle - Diet and Fitness

Dr. Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor,
Department of Home-Economics,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera,
Distt.-Amravati

Today is the age of science due to science every thing have got new shape. As for the development of fitness different advance techniques are operated by the trainers many techniques can only be effectively executed orchestrated with larger strategically planned regimens. Several techniques should only be used an occasion if at all during brief periods of planned over reaching. Fitness should be a way of life and a regular exercise programme can help in reserving the effect of ageing. Physical activity to get started although it must be retreated that moderation is the key word. Bear in mind it is never to late exercising.

Right attitude and healthy lifestyle play a vital role in fitness. If we start our day with positive attitude and self motivation we remain healthy throughout a day. Fitness makes all the difference in our body looks and feels. It was defined early as the capacity to carry out the day's activities without undue fatigue i.e. physical fitness. But now it is known as a triangle of physical, emotional and mental fitness. Thus overall fitness is now defined as the body's ability to function efficiently and effectively in work and leisure activities, to be healthy, to resist hyperkinetic diseases, and to meet emergency situations. Thus fitness is in two close meanings : general fitness (a state of

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

health and well-being) and specific fitness (a task-oriented definition based on the ability to perform specific aspects of sports or occupations). An individual's fitness is manifested through its phenotype. As phenotype is affected by genes and environment, the fitness of different individuals with the same genotype are not necessarily equal, but depend on the environment in which the individuals live. There are two commonly used measures of fitness; absolute fitness and relative fitness. Absolute fitness for a genotype can also be calculated as the product of the proportion survival times the average fecundity. Relative fitness is quantified as the average number of surviving progeny of a particular genotype compared with average number of surviving progeny of competing genotypes after a single generation.

In the modern fast paced lifestyle driven by constant pressure to meet targets, individuals are victim to stress and anxiety. There are over one billion overweight and obese individuals globally.Overweight and obesity are associated with elevated blood pressure / cholesterol levels and an increased risk of developing diabetes (insulin resistance). There are often referred to as 'degenerative diseases'; a tern which is closely associated with metabolic syndrome/ Syndrome X/ Asian Paradox. Several studies have clearly indicated that malnutrition is a double edged sword with under-nutrition on one side and over-nutrition on the other and that both are associated with adult obesity and metabolic syndrome. Elevated cholesterol levels alone are responsible for nearly 60% of heart disease. Major modifiable determinants of overweight and obesity are unhealthy diet and physical inactivity. Thus, Improving diet and lifestyle is a critical component to curb and prevent the present epidemic of Non-Communicable diseases particularly the degenerative diseases. Diet plays a major role in promotion of health and well being of individual. A good and balanced diet habit improves the quality of life while poor diet may lead to morbidity and diseases. Nutritionists and dietetics are concerned with this aspect. While dietetics is related to food management, nutrition is related to promotion of health. Due to changes in food habits of most of the urban population, role of nutritionists and dieticians is becoming more important. They suggest corrective food habits considering various aspects of an individual such as age, work routine and sickness etc. and thereby improving their quality of life.

The human body is a complex and efficient bundle of cell, muscles, bones, organs and system. Everyone knows that good diet is needed to sustain good health. The human body wants may nutrients. Our body can not manufacture many of these required nutrients, our body obtain them from external sources, for this we must eat required quantities of high quality, fresh and unrefined food. Food can improve our mood activate our brain cells, retain information & induce sharpness in our thinking process. So we must consume balance diet, a balance diet means getting the right types and amounts of foods and drinks to supply nutrition and energy for maintaining body cells, organs for supporting normal growth and development Components of an balance diet every entgrants has its part to play in maintaining well development of human body. Tonic or supplements are not required for people who consume balanced diets.

Healthy eating can also help people that already have some types of disease or illness such as diabetes, high cholesterol and blood pressure. And, of course, improving your eating habits will contribute to you achieving and maintaining a healthy weight. Due to hectic and busy life style a common man is often pressed for time, under a lot of stress and eating on the go. You may find it difficult to avoid bad habits like skipping meals for frequenting fast food restaurants. But eating a healthy diet can hele

Narayan... Mahavidyalaya Badnera

Scanned by CamScanner

you feel better, cope with stress and perform better in your work. Almost 70% of peoples are not consuming the daily-recommended amount of fruits and vegetables, and at about 60% are eating too much saturated fat.

Healthy eating habits can also help us in reducing stress and building the required strength and energy levels to face the day. Several studies have clearly indicated that malnutrition is a double edged sword with under-nutrition on one side and over-nutrition on the other and that both are associated with adult obesity and metabolic syndrome. Thus, Improving diet and lifestyle is a critical component to curb and prevent the present epidemics with keeping the following most critical features in mind :

i) Recognizing that diet is part of an overall healthy lifestyle, Lifestyle also includes activity and behaviour.

ii) Identifying the influence of environmental factors on the prevalence of under /overweight hypertension and diabetes related health behaviours.

iii)Formulating practical guidelines on how to achieve diet and lifestyle changes which need to be provided to the general and 'at-risk' population.

iv) The importance of following the recommendations when eating at home and away from home needs to be emphasized.

v) The vital roles of healthcare professionals. restaurants, the food industry, schools and the policies need to be highlighted, along with specific recommendations to these groups.

The recommendations of World Health Organization are on Dietary Intake-

to balance (calorie) intake and physical activity to achieve and maintain a healthy body weight, consume a diet rich in vegetables and fruits; choose whole-grain, high fiber foods; consume fish, especially oily fish, at least twice a week; limit intake of saturated fat to <7% of energy, and vegetable alternatives, fat-free (skim) or low-fat.

(1% fat) dairy products and minimize intake of partially hydrogenated fats; minimize intake of beverages and foods with added sugars; choose and prepare foods with little or no salt;

These can substantially reduce the risk of developing cardiovascular disease and other complications of excess body weight, which remains the leading cause of morbidity and mortality in both developed and developing nations. An emphasis on balanced or prudent diet is also appropriate to ensure nutrient adequacy and energy balance. Hence, rather than focusing on a single nutrient or food, individuals should aim to improve their whole or overall diet.

Eat a healthy Balance Diet -

It is important to eat healthy balance diet all the time. This should include plenty of foods and vegetables, starchy foods such as bread, rice, potatoes and pasta choosing wholegrain varieties whenever possible. In longitudinal observation studies, persons who regularly consume such diets are at a lower risk of developing heart diseases, particularly stroke. Consumption of a variety of vegetables and fruits has been recommended. Vegetables and fruits that are deeply colored throughout (ie. spinach, carrots, peaches, berries) should be emphasized because they tend to be higher in micronutrient content than are other vegetables and fruits such as potatoes and corn. Fruit juice is not equivalent to the whole fruit in fiber content and perhaps satiety value and should not be emphasized. A diet rich in vegetables and fruits is a strategy for lowering the energy density of the diet to control energy intake.

Dietary patterns that are high in whole-grain products and fiber have been associated with increased diet quality and decreased risk of heart diseases. Soluble or viscous fibers

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

modestly reduce Low Density Lipoprotein cholesterol levels. Dietary fiber may promote satiety by slowing gastric emptying, leading loan overall decrease in calorie intake. Soluble fiber may increase short-chain fatty acid synthesis, thereby reducing endogenous cholesterol production. It is recommended that at least half of grain intake must include whole grain and this is particularly important in case of cereal-based diet as consumed in India. Also Consume Fish, Especially oily Fish at least twice a Week, Limit intake of saturated and Trans Fat and Cholesterol, Minimize Intake of Beverages and Foods with Added Sugars Choose and Prepare Foods with Little or No Salt, Diet and Lifestyle recommendations while Eating away from Home.

Specific Objects Recommendations for Life Style :

1.Adopting a Physically Active Lifestyle

2.Ideal or Desirable Body weight

3.Achieving and Maintaining a Desirable Lipid Profile - To aim for recommended levels of low-density lipoprotein cholesterol, high-density lipoprotein cholesterol, and triglycerides

4.Achieving and Maintaining normal Blood Pressure

5.Achieving and Maintaining a normal Blood Glucose Level

Fitness Techniques for Special Age Groups :

(i) Kids over 2 years of Age :

If you wishes your children to remain healthy, you need to indicate healthy ways of eating and exercise to them. It is not possible to subscribe a gymnasium and keep children away form tempting food, so to make children healthy lifestyle we have to maintain proper diet and exercise. Overweight and obesity are a particular concern for children as the prevalence of overweight is 16% among children and adolescents. Achieving energy balance may be more complicated in children and adolescents because calorie and micronutrient intake must be adequate to support normal growth and development. However, many children are eating excess calories and experiencing unhealthy weight gain especially in the urban sector. Children can eat a diet consistent with the American Heart Association 2006 Diet and Lifestyle.

(ii) For Adults :

Atherosclerosis is a chronic process beginning in youth. The risk of developing heart diseases increases dramatically with advancing age particularly among overweight /obese. Diet and lifestyle behaviors can decrease heart diseases risk. Also, ample evidence from clinical trials indicates that older-aged persons can make and sustain lifestyle changes, perhaps more so than younger adults. In view of the high incidence of heart diseases events in older-aged individuals even relatively small improvements in risk factors (eg. small reductions in BP and LDL cholesterol through diet and lifestyle changes) would be of substantial benefit. Elderly have decreased energy needs while their vitamin and mineral requirements remain constant or increase; however, older individuals should be counseled to select nutrient-dense choices within eaech food group.

CONCLUSION :

Diet and Fitness is a important part of today' healthy life style. By making some change in our lifestyle and eating habits, we can move towards fitness and in turn a happier life. Good health provides a solid foundation on which fitness rests and at the same time, fitness provides one of the most important keys to health and living one's life to the fullest. Freedom from disease, organic, development, efficient movement, alertness of mind and emotional adjustment provide the framework of the fitness. A substantial importantly, lifestyle modifications can effectively control risk factors and lower the incidence. To realize benefits, individuals should aim for a desirable body weight, be physically active, avoid tobacco exposure, and follow a diet and lifestyle

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

Review of Research
UGC APPROVED
International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 6 | Issue - 12 | September - 2017

Impact Factor : 5.2331(UIF) ISSN : 2249-894X

स्वयंसहायता बचत गटाच्या माध्यमातून महिला महिलांचे सक्षमिकरण व विकास



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Dr. Anjali Chandrakant Pande

Associate Professor, Department of Home-Economics,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Distt.-Amravati.

प्रस्तावना : स्वातंत्र्योत्तर काळात महिलांच्या कल्याणासाठी अनेक योजना कार्यान्वित करण्यात आल्या आहेत. परंतु गेल्या काही वर्शात विषेशत: जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत राजकीय व .....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

Scanned by CamScanner

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

स्वयंसहायता बचत गटाच्या माध्यमातून महिला सक्षमिकरण व विकास

Dr. Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor , Department of Home-Economics ,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera, Distt.-Amravati.

❖ प्रस्तावना



स्वातंत्र्योत्तर काळात महिलांच्या कल्याणासाठी अनेक योजना कार्यान्वित करण्यात आल्या आहेत. परंतु गेल्या काही वर्षात विशेषत: जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत राजकीय व सत्ताधी नोकरशाहीला हाताशी धरून गरीबी हटविण्याच्या ऐवजी Poverty Reduction च्या नावाखाली तसेच नवीन रोजगार निर्माण करण्याच्या नावाखाली संपूर्ण गरीब समाजालाच वेठीस धरले आहे. ह्या संपूर्ण प्रक्रियेत शोषणाचा बळी ठरलेला एक घटक म्हणजे स्त्रिया होत. जागतिकीकरणाच्या वैशिटयांचा आणि परिस्थितीचा प्रभाव सर्वव्यापक असाला तरीही त्याचा सर्वात जास्त फटका हा स्त्रियांना सहन करावा लागत आहे. याबरोबरच वर्षानुवर्षे चालत आलेल्या परंपरा, रूढी, चालीरीती यांच्या बंधनात अडकून राहिल्याने महिलांची स्थिती विशेषत: ग्रामीण भागातील महिलांची स्थिती अधिकच खालावत चालली आहे. असंघटितपणा, शिक्षणाचा अभाव, रोजगार आणि आरोग्य यांचा अभाव, अंधश्रध्दांचा जबरदस्त पगडा यामुळे ग्रामीण दारिद्रयात भरच पडत आहे. व याचा सर्वात जास्त परिणाम ग्रामीण महिलांवर होत आहे.भारतातील सामाजिक चालीरीती, रूढी व परंपरामुळे ग्रामीण महिलांना विकासामध्ये महत्व दिले गेले नाही. आणि त्यांना विकासाची संधी सुध्दा मिळाली नाही. परंतु वास्तविकता ही आहे की, जोपर्यंत ग्रामीण महिलांना विकासाच्या मुख्य प्रवाहात आणले जात नाही तोपर्यंत भारताच्या आर्थिक महासत्तेची कल्पना करणे योग्य होणार नाही. ह्याकरीता महिला बचत गट महिलांच्या आर्थिक विकासाकरीता प्रभावी माध्यम म्हणून समोर येत आहे. बचत गटातील महिला कुटूंबाला दारिद्रयाच्या गर्तेतून बाहेर काढून आर्थिकदृष्टया सक्षम होऊन स्वत:च्या व्यक्तिमत्वाचा विकास करीत आहेत.

❖ संशोधन विषयाचे उद्देश

१. महिलांच्या आर्थिक स्वावलंबनासाठी बचत गटाच्या योगदानाची माहिती घेणे.
२. बचत गटातील महिलांच्या व्यक्तिमत्व विकासाचा शोध घेणे.
३. भिवापूर तालुक्यातील महिला बचत गटाद्वारे चालविल्या जाणाऱ्या व्यवसायाची माहिती घेणे.

❖ संशोधन विषयाची गृहिते

१. बचत गटामुळे महिला आर्थिकदृष्टया स्वावलंबी होत आहेत.
२. महिला बचत गटाच्या स्थापनेमुळे महिलांच्या व्यक्तिमत्वाचा विकास होत आहे.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Scanned by CamScanner

❖ संशोधन पध्दती

प्रस्तुत शोधनिबंध तयार करण्यासाठी प्राथमिक आणि द्वितीयक सामग्री संग्रहनाच्या पध्दतीचा उपयोग करण्यात आलेला आहे. ह्यामध्ये भिवापूर तालुक्यातील यशस्वी महिला बचत गटांना प्रत्यक्ष भेट देऊन महिलांचे स्वावलंबन आणि व्यक्तिमत्व विकासासदर्भात माहिती प्राप्त करण्यात आलेली आहे. द्वितीयक सामग्री संग्रहन पध्दतीमध्ये वर्तमानपत्रे, मासिके, प्रकाशित पुस्तके इ. चा आधार घेण्यात आला आहे.

❖ बचत गटाची पार्श्वभूमी

बचत गटाच्या संकल्पनेचे खरे श्रेय मिळते ते बांगलादेशालाच, महिलांच्या बचत गटांची सुरवातच बांगलादेशातुन प्रथम झाली. तेथील ग्रामीण बँकेने गरिबांच्या जीवनात अक्षरशः क्रांती घडवून आणली या देशानेच बचत गटाची संकल्पना साकारली, शिकविली आणि ग्रामीण बँकेच्या माध्यमातून आपल्यासमोर एक आदर्श निर्माण केला. बांगलादेशातील या चळवळीपासून प्रेरणा घेवूनच भारतात बचत गटाची चळवळ उभी राहीली. बांगलादेशात १९७० पर्यंत बचत गट किंवा सुक्ष्म वित्त हे शब्दही अस्तित्वात नव्हते. पण मंतर हे दोन शब्द बांगलादेशवासियांच्या परवलिचे झाले. बांगलादेशातील चितगाव विद्यापिठात मोहम्मद युनूस हे अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख या संकल्पनेचे खरे प्रणेते आहेत. त्यांच्या कार्याची जागतिक स्तरावर दखल घेवून त्यांना अत्यंत प्रतिष्ठेच्या नोबेल पुरस्काराने सन्मानित केले. त्यांनी 'थेंब थेंब तळे साचे' या म्हणीप्रमाणे बांगलादेशातील गरीब कुटुंबातील महिलांना बचत गटाच्या माध्यमातून एकत्र आणून पैसे बचत करण्यास प्रोत्साहीत केले. आणि ग्रामिण बँकेच्या माध्यमातून त्या देशातील गरिबी दुर करण्याचा यशस्वी प्रयोग केला त्याची दखल संयुक्त राष्ट्रसंघ,जागतिक बँक, इटरनॅशनल फूड रिसर्च पॉलिसी इन्स्टिट्युट यासारख्या जागतिक संस्थांनीही घेतली आहे. त्यांनी महिलांसाठी केलेल्या कार्यामुळे महिलांमध्ये आर्थिक उन्नतीसोबतच सकारात्मक बदल घडून आला.त्यांना एक नवी दिशा मिळाली. स्वयंरोजगाराच्या माध्यमातून त्या खऱ्या अर्थाने उभ्या राहील्या.बांगला देशात आता ग्रामीण बँकेचे ४० लाख सदस्य आहेत. यामध्ये ९६ टक्के महिला या बँकेच्या मालक आहेत. त्या महिला बँकेच्या भागधारक असून ९० टक्के भाग त्यांच्याच मालकीचे आहेत आणि उर्वरित १० टक्के भाग बांगलादेश सरकारच्या मालकीचे आहेत.आज असे ठामपणे म्हटले जाते की, बांगला देशातील खेड्यांचे संपुर्ण चित्र ग्रामीण बँकेने बदलले.मायक्रो फायनान्सने गरीब लोकांना प्रगतीची संधी दिली.म्हणूनच हे मॉडेल जगभरात प्रसिध्द झाले.

❖ भारतातील बचत गटाचे स्वरूप

भारतामध्ये १९९० च्या दशकात बचत गटाची चळवळ धोरणात्मकरीत्या स्विकारून त्या संदर्भात प्रभावी अंमलबजावणी सुरू झाली त्यामुळेच भारतात स्वयंसहायता बचत गटांच्या चळवळीने क्रांतीकारक स्वरूप धारण केले. निम्न मध्यमवर्गीय आणिगरीब महिलांच्या आर्थिक उन्नतीच्या दृष्टीने बचत गटाची चळवळ यशस्वी होत असतांना दिसते. या बचत गटामुळे महिलांच्या आर्थिक परिस्थितीत सुधारणा झाली, बचत गट हे नाव सार्थ झाले. पण त्याही पलीकडे जाऊन या गटांनी कार्य करायला सुरवात केली. अक्षरशः ग्रामविकासापासून यशस्वी उद्योजक, अशी बऱ्याच बचत गटांनी मजल मारली. म्हणून या गटांना, बचत गटाऐवजी "स्वयंसहायता गट " हे नाव पडले.बचत गटातील महिला एकत्र येवून स्वत:ची मदत स्वत:च करतात, तसेच त्या इतरांना मदत करण्याइतपतही सक्षम होतात.म्हणूनच त्यांच्या गटाला स्वयंसहायता बचत गट म्हणून आता ओळखले जाते. गावागावांत जाऊन बचत गटांविषयी माहिती देणारे बँकेचे अधिकारी असोत, वा वेगवेगळ्या स्वयंसेवी संस्थांचे प्रतिनीधी असोत, ते गावात जाऊन महिलांची बैठक घेतात, बचत गट म्हणजे काय समजावून सांगतात,बचतीचे महत्व समजावून सांगतात. अर्थातच अल्प रक्कम दर महिण्याला बचत करायची असल्याने लाखो बचत गट भारतात स्थापण झालेले आहेत. त्यापैकी अंदाजे ९० टक्के बचत गट यशस्वीही झालेले आहेत. बचत गटाची चळवळ ग्रामीण भागात आणि शहराच्या गरीब वस्त्यांमधूनही चांगली फोफावली आहे. त्यामुळे महिलांचा आर्थिक विकास तर होतोच पण त्यांच्यामध्ये सकारात्मक मानसिकता तयार होण्यासही मदत होत आहे.

Principal
Narayanrao ... Mahavidyalaya
Bhandara

Scanned by CamScanner

भारताच्या ग्रामीण भागातील खेड्यांमध्ये गेल्या दहा वर्षात २ लाखावर बचत गटांची स्थापना झाली. त्यामध्ये महिला बचतगटांची संख्या १ लाख ६१ हजार ८७२ आहे. सुमारे ४३ हजार २५४ महिला बचतगटांनी आर्थिक उपक्रम सुरू केले आहेत. महिला बचतगटांच्या माध्यमातून ग्रामीण भागातील महिलांच्या सबलीकरणाला मोठी गती मिळाली आहे. ग्रामीण भागातील सावकारांचे कंबरडे मोडण्याचे काम बचतगटांच्या माध्यमातून होत आहे. महिला बचतगटांना ४ टक्के व्याजदराने व्यवसायाकरीता कर्ज दिले जात आहे. त्यामुळे मोठ्या प्रमाणावर महिला बचत गटाद्वारे चालविले जाणारे व्यवसाय उभे राहिले आहे.

❖ महाराष्ट्रातील बचत गटांची वाटचाल

भारतामध्ये महाराष्ट्राने बचत गटांच्या स्थापनेमध्ये पुढाकार घेतलेला दिसून येतो. महाराष्ट्रामध्ये बचत गटांच्या स्थापनेमध्ये राष्ट्रीय कृषी आणि ग्रामीण विकास बँक (नाबार्ड), महिला आर्थिक विकास महामंडळ मर्यादित (माविम) महानगरपालिका तसेच नगरपालिका क्षेत्रातील दारिद्र्य रेषेखालील तसेच मागासवर्गीय महिलांसाठीनगर परिषद प्रशासन संचालनालय, राष्ट्रीयकृत,शेड्युल व सहकारी बँका तसेच स्वयंसेवी संस्थाहयांचा समावेश होतो.

महाराष्ट्रामध्ये सुवर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजनेच्या माध्यमातून निर्माण झालेल्या बचत गटांची माहिती पुढील तक्त्यात दिलेली आहे.

जिल्हा	बचत गट संख्या	महिला बचत गट	व्यवसाय सुरू केलेले बचत गट	
			एकूण गट	महिला गट
ठाणे	५५४९	४५४५	१६६६	१०७९
रायगड	४५०६	३९४८	७६४	५५४
रत्नागिरी	५१६९	३३०२	३७५६	३६२
सिंधुदुर्ग	३४८१	१९३२	५१८	३१७
नाशिक	४८०३	३०१८	१३५२	८५०
धुळे	२६३२	१८६८	२८१७	७५५
नंदुरबार	३३०१	२८२१	२५३१	५५०
जळगाव	६५६३	४४४८	२१३७	१६३७
अहमदनगर	४७१८	२६५२	३२०२	८५८
पुणे	७३०४	५५११	४४३४	८७२
सातारा	४४२१	३४४३	२७१०	७४३
सांगली	३६८५	३५४७	२००९	६८०
सोलापूर	८६४४	७२४४	५२४८	१४१३
कोल्हापूर	६५६९	५३८०	३१७२	८८९
औरंगाबाद	४२६७	३०८०	७५६	६३३
जालना	२९४५	२१३४	५८५	४४
परभणी	२४४७	१९६६	४७६	४७६
हिंगोली	२५५८	१५९४	१७०१	४१३
बीड	३६०१	२५१२	१३८०	४४३
नांदेड	४८८५	४४०९	१०११	७८८
उस्मानाबाद	३४४०	२७६९	२२९८	४५१
लातुर	४००६	३६६९	३०१४	८१७
बुलडाणा	६६८३	३०५१	४८१२	५४४
अकोला	५४७६	४३११	११०७	७९५
वाशिम	२९३३	२१४७	२१८८	६४९
अमरावती	८५१२	६९९७	६२९०	१४३१

Scanned by CamScanner

स्रोत – लोकराज्य मासिक

❖ भिवापूर तालुक्यातील बचतगटाचे व्यवसाय

भिवापूर तालुक्यामध्ये बचत गटाच्या वाढतीत पुर्ण आवश्यकता निर्माण झालेली दिसून येते. दिवसेंदिवस नवनविन बचत गट निर्माण होत असून या तालुक्यात आता बचत गटाने यशस्वीचे स्वरूप धारण केलेले आहे. तालुक्यामध्ये पुरुष आणि महिलांचे हजारो बचत गट स्थापन झालेले आहे. बचत गटाच्या स्थापनेच्या वाढतीत पुरुषांपेक्षा महिला सरस असल्याचे समोर आलेले. महिलांचे बचत गट केवळ कागदावरच दिसून येत नाही तर प्रत्येक महिला बचत गट कोणता ना कोणत्या तरी व्यवसाय करण्याच्या, जोडीने उभा राहिलेला आहे. त्यामुळे या तालुक्यात महिला बचत गटाद्वारे चालविल्या जाणाऱ्या बचत गटाच्या व्यवसायाचे जाळे संपुर्ण तालुक्यामध्ये पसरलेले आहे. भिवापूर तालुक्यामध्ये शेती हा लोकांच्या उपजिवीकेचा मुख्य व्यवसाय आहे. त्यामुळे अनेक महिला बचत गटांनी शेती आणि शेतीसोबतच शेतमाल छोटी विक्रीला प्राधान्य दिलेले आहे. यामध्ये मिरची, सोयाचिन, धान, हळद इत्यादी शेतमाल प्रमुख आहे. त्याचप्रमाणे शेतीसह जोड व्यवसाय म्हणून मदतगार ठरणाऱ्या आणि कमी भांडवलामध्ये सुरू होणू शकणाऱ्या दुग्ध व्यवसाय, बकरी पालन, कुक्कुटपालन, मत्स्यपालन, कृषी सेवा केंद्र इत्यादी व्यवसाय महिला बचत गटाद्वारे सुरू आहेत. अनेक महिला बचत गट कांडप केंद्राच्या माध्यमातून मिरची आणि हळद या शेती उत्पादनावर प्रक्रिया करून मिरची आणि हळद पावडर विक्रिचा व्यवसाय करीत आहेत. काही महिला बचत गट दारोडाच्या प्रमिण जिवनाची संबंधित किराणा व जनरल, भाजीपाला, स्टेशनरी, मेडन ईक्विपमेंट व विक्रीचा, शिवणकाम, कापड दुकान , आंगणवाडीसाठी आहार शिजविणे इत्यादी व्यवसाय करीत आहेत. तर काही महिला बचत गट धार्मिक उत्सवाप्रसंगी पुजेचे साहित्य,राखी विक्री,इत्यादी हंगामी स्वरूपाचे व्यवसाय करीत आहेत.

❖ बचत गटाच्या माध्यमातून महिलांच्या व्यक्तिमत्व विकासात साध्य झालेल्या बाबी

➢ महिलांमध्ये एकी व संघटन निर्माण झाले.

बचत गटाचा सर्वांत महत्वाचा फायदा म्हणजे विविध जातीच्या, धर्माच्या व गरजू महिलांना एकत्र आणण्याचे काम बचतगटानी केलेले आहे. एकमेकींच्या अडीअडचणी समजून, एक दुसऱ्यांच्या निकडीचा, सुख दुःखाचा विचार करण्यासाठी १० ते १५ समविचारी महिलांनी एकत्रीत येऊन बचत गटाची स्थापना केलेली आहे. बचत गटातील महिला,समविचारी असल्यामुळे आपापसात विचारांची देवाण घेवाण करतात. त्यातून महिलांचे संघटन तयार होते. आजच्या आंतरिक लोकसंख्येपैकी ५० टक्के लोकसंख्या महिलांची आहे. जगातील एकूण समाजापैकी अर्धा वर्ग महिलांचा असला तरी त्यांना आज स्वतःच्या मनाप्रमाणे,मताप्रमाणे, विचाराप्रमाणे जगण्याचा अधिकार नाही. चुकवाइतकेच श्रम करीत असुनही त्याचा योग्य मोबदला मिळत नाही. अशाप्रकारे एक मानुस म्हणून जगण्याचा अधिकार महिलांना मिळावा त्यासाठीही महिलांनी बचत गटाच्या माध्यमातून महिलांमध्ये संघटन शक्ती निर्माणकरणसंघटन शक्तीच्या बळावर सहयोगाच्याच्या दिशेने वाटचाल सुरू केली आहे.

Scanned by CamScanner

➢ **महिलांना बचतीची सवय लागली.**

समाजातील विविध स्तरातील महिला एकत्र येऊन परस्परांशी सुख दुःखाची देवाण घेवाण करतात. आजची बचत उद्याच्या कामाला येते ही भावना त्यांच्यात निर्माण झाली. बचतीची एक चांगली सवय लागल्यामुळे भविष्यातील विविध बाबींचे नियोजनात अडचण येत नाही. महिलांना एक दुसरीला आर्थिक तसेच अडचणीच्या वेळी मदत करण्याची एक चांगली सवय लागली. महिलांना आपल्या दैनंदिन अडचणी सोडविणे सहज शक्य झाल्या. स्वतःची आर्थिक परिस्थिती सुधारण्याकरीता बोज भाडवल तयार करणे महिलांना शक्य झाले

➢ **महिलांचे आर्थिक स्वावलंबन.**

देश स्वतंत्र झाल्यापासुन महिला आर्थिक स्वावलंबनाच्या अनेक योजना आल्या व गेल्या पण निष्पन्न काहीच झाले नाही. महिला बचत गट योजनेमुळे एक वेगळे चित्र ग्रामिण भागात निर्माण झाले. महिलामध्ये संघटन शक्ती उभी राहिली. नेतृत्वगुणांचा विकास झाला. सहकार प्रेमभावना उभी राहिली. आणि आता तर बचतगटातील महिला सामूहिक तथा वैयक्तिक, बँकेच्या आर्थिक सहकार्याने शेतीसोबतच लघुउद्योग उभारून स्वावलंबी झालेल्या दिसतात. त्यामुळे गरीब गरजू लोकाची विकास प्रक्रियेतील गती अधिक गतिमान झालेली दिसते. आर्थिक स्वावलंबित्वामुळे महिलांना स्वतंत्र निर्णय घेण्यासाठी बळ मिळाले.

➢ **महिलांना शिकण्याची संधी मिळाली.**

महिलांचे जिवन जगणे म्हणजे केवळ चुल व मुल एवढ्यापुरतेच मर्यादीत नाही तर त्याही पलीकडे जगणे आहे ही भावना महिलामध्ये निर्माण झाली. समाजासाठी देशासाठी कार्य करण्याची बचत गटामुळे महिलांना संधी मिळाली. आपल्या अंगच्या कला कौशल्य व गुणामुळे जीवन उपयुक्त करण्याची योग्य संधी मिळाली. संघटीतपणातून नवीन शिकण्याची संधी मिळाली. बँकेचे व्यवहार समजले. पोष्टाचे व्यवहार माहिती झाले. महिलांच्या व्यवहार ज्ञानात भर पडली. महिलांचा व त्यासोबत आपल्या परिवाराचाही सर्वांगीण विकास करून घेण्याची संधी या बचत गटाच्या निमित्याने महिलांना प्राप्त झाली.

➢ **बचत गटामुळे महिलांमध्ये निर्णय घेण्याची क्षमता आली.**

महिलांना या बचत गटामुळे व त्यातील सकीय सहभागामुळे जीवनात येणाऱ्या विविध प्रश्न व समस्यांना विश्वासाने सामोरे जाण्याचे धाडस प्राप्त झाले. स्वतःच्या व समाजाच्या जीवनात अस्तित्वात असणाऱ्या अनेक लहान सहान प्रश्नांची जाणीव झाली व त्यावर उपाययोजना करण्याकरीता विचार प्रणालीने आकार घेतला. आत्मविश्वास आणि आत्मबळ मिळाले. निर्णयप्रक्रियेच्या सहभागामुळे महिलांना संधी मिळाली असून, स्वतःचे घर सांभाळून सामाजिक विषयावर आवाज उठविण्याची ताकद मिळाली. आपणही योग्य निर्णय घेऊ शकतो ही दृष्टी मिळाली. बचत गटातील महिलांना कोणताही निर्णय घेताना कोणावरही विसंबून राहावे लागत नाही. महिलांचा दृष्टीकोण मी पासून आम्हीपर्यंत विस्तारीत होवू लागला. पर्यायाने स्वयंविकासाकडून सामाजिक विकासाकडे वाटचाल होवू लागली.

➢ **महिलांच्या ज्ञानाच्या कक्षा रूंदावल्या**

बचत गटामध्ये येण्यापुर्वी महिलांचे घराबाहेरचे ज्ञान अत्यंत मर्यादित होते. केवळ चुल आणि मुल हेच महिलांचे कार्यक्षेत्र होते. घराच्या चार भिंतीच्या बाहेर काय चुरू आहे. याची महिलांना माहिती नव्हती. बचत गटात येण्यापुर्वी महिलांना घराच्या बाहेर पडून ज्ञान अर्जित करण्याची साधी हिंमत सुध्दा महिलांमध्ये नव्हती. पुरूषप्रधान संस्कृतीमध्येच महिला अडकलेल्या होत्या. परंतु बचत गटात आल्यापासून महिलांचा स्वतःकडेच पाहण्याचा दृष्टीकोण संपुर्ण बदललेला आहे. आता त्यांना स्वतःच्या पायावर उभे राहण्याची तळमळ निर्माण झालेली आहे. महिला बचत गटाच्या माध्यमातून विविध व्यवसाय, छोटे मोठे उद्योग याचे ज्ञान प्राप्त करीत आहेत. अनेक महिलांनी बचत गटाच्या माध्यमातून स्वतःचे छोटे मोठे उद्योग सुरू केले

Principal
Narayanrao [illegible] Vidyalaya

Scanned by CamScanner

आहेत. उद्योग सुरू करण्यासाठी आवश्यक असलेले ज्ञान त्यांनी महिला बचत गटांना उपलब्ध करून दिलेल्या प्रशिक्षण शिबीरामधून प्राप्त केले आहे. बचत गटामध्ये येण्यापुर्वी अनेक महिला निरक्षर होत्या. अशा सर्व त्यांना स्वत:च्या व शिक्षणाची लाज वाटते अनेक महिला बचत गटात आल्यापासून मिळालेल्या संधीतून बाहेर पडल्या आहेत. मुलांबरोबरच शिक्षित केले पाहिजे ही भावना महिलांमध्ये निर्माण झाली आहे.

➢ **महिलांना बँकेचे व्यवहार माहीत झाले.**

बचत गटात येण्यापुर्वी अनेक महिलांना बँक म्हणजे माहित नव्हते. तर अनेक महिलांचा बँकेशी साधा संबंधसुध्दा आलेला नव्हता. त्यामुळे महिलांनी कितीही पैसा कमावला तरी तो बचत केला पाहीजे अशी भावना महिलांमध्ये नव्हती. आलेली संपुर्ण कमाई ते घरामध्येच खर्च करीत असत. बँकाद्वारे अनेक प्रकारचे फायदे मिळतात याची माहितीही महिलांना नव्हती. बँकेच्या महिला विकासाकरीता असलेल्या अनेक योजना, सवलती यापासून महिला कोसो दुर होत्या परंतु महिला बचत गटात आल्यापासून महिलांचा बँकेशीबरोबर संबंध आला त्यामुळे बँकेत खाते काढणे, बँक खात्यामध्ये पैसे जमा करणे, बँकेतून पैसे काढणे, बँकेच्या बचत गटासाठी व महिला विकासाकरीता असलेल्या योजना बँक अधिकाऱ्यांकडून जाणून घेणे, बँकेकडून कर्जावर मिळणाऱ्या अनुदानाची माहिती अशा अनेक बँकेच्या व्यवहारीची माहिती महिलांना बचत गटामध्ये आल्यामुळे माहिती झाल्या.

➢ **महिलांच्या व्यवहार ज्ञानात वाढ झाली.**

बचत गटात येण्यापुर्वी महिलांचे कार्य केवळ चार भिंतीच्या आतच असायचे. कुटूंबातील सर्व व्यवहार पुरुषांच्या हाती होते. महिलासुध्दा त्यामध्ये हस्तक्षेप करीत नव्हत्या. महिलांना कोणतीही आर्थिक गरज पडल्यास तो घरच्या कार्ता व्यक्तिकडूनच पुर्ण करावी लागत होती. महिला बचत गटामध्ये येण्याअगोदर अनेक महिलांचे व्यवहारीक ज्ञान शुन्य होते. परंतु महिला बचत गटामध्ये आल्यानंतर अनेक महिला स्वत:चा व्यवसाय करू लागल्या आहेत. व्यवहारातील लहान सहान ज्ञान महिलांनी प्राप्त केले आहे. महिला बचत गटामध्ये येण्यापुर्वी ज्याप्रमाणे महिलांची फसवणूक केली जात होती ती फसवणूक करणे महिलांना आलेल्या व्यवहार ज्ञानामुळे कमी झाली आहे.

➢ **महिलांना लहान प्रमाणावरील आर्थिक अडचणी दुर करता आल्या.**

महिला बचत गट हे महिलांच्या लहान सहान आर्थिक अडचणी पुर्ण करण्याचे महत्वाचे माध्यम म्हणून पुढे येत आहे. आज भारताच्या ग्रामिण भागामध्येच नाही तर शहरी भागामध्येसुध्दा मोलमजूरी करणाऱ्या महिलांनी एकत्र येवून महिलांचे अनेक गट स्थापन केलेले आहे. त्यामुळे महिलांना बचत गटामध्ये लहान प्रमाणातसुध्दा बचत करणे शक्य झाले आहे व बचत केलेली रक्कम पाहिजे तेव्हा प्राप्त करता येत असल्यामुळे महिलांचा बचत गट स्थापन करण्याकडे कल वाढलेला आहे. बचत गटामुळे महिलांना आपल्या दैनंदिन अडचणी सोडविणे शक्य झाले आहे.महिला बचत गटामुळे महिलांना आर्थिक गरज पुर्ण करण्यासाठी इतरांवर अवलंबून राहण्याची गरज राहिली नाही.

➢ **बचत गटामुळे महिलांमध्ये उद्योग क्षमता विकसित झाली.**

बचत गटामध्ये सहभागी झाल्याने महिलांमधील सुप्त गुणांना वाव मिळून त्या अनुषंगाने काम करण्याची संधी प्राप्त होते.यामुळेच उद्योगक्षमता विकसित करण्याची संधी प्राप्त झाली. महिला बचत गटाच्या सदस्यांनी जमा केलेल्या बचतीतून उद्योग व्यवसाय सुरू करण्यापर्यंतची गटाची यशोगाथा बचत गटांनी निर्माण केली आहे. शिवापूर तालुक्यामध्ये अनेक महिला बचत गट महिला आर्थिक विकास महामंडळाच्या मार्गदर्शनाखाली काम करीत आहेत. माविमच्या समन्वयीका सौ. रंजना वाघमारे यांनी या गावामध्ये महिलांना एकत्रित करून बचत गटाची स्थापना केली. आणि बचत गटांना आर्थिक प्रगती साधण्याबाबत तसेच सामाजिक एकोपा जपण्याबाबत मार्गदर्शन केले. या मार्गदर्शनाचा परिणाम म्हणून

Narayanrao ... Mahavidyalaya
Dashera

Scanned by CamScanner

गावामध्ये बचत गटाची स्थापना व्हायला सुरवात झाली. बचत गट स्थापन केल्यानंतर नियमानुसार बचत गटामध्ये नियमित बचत भरणे सुरू झाले. मासिकसभेत प्रशिक्षण मिळत गेले. महिला बँकेत व पंचायत समितीमध्ये स्वत: जावून स्वत:चे काम करू लागल्या. काम करता करता त्यांच्यामध्ये धाडस निर्माण झाले. गटामध्ये सहभागी महिलांमध्ये अनेक महिला जेमतेम शिकलेल्या तर अनेक निरक्षर होत्या. निरक्षर असल्याने त्यांना व्यवहाराच्या अडचणी यायच्या या महिलांना साक्षर करण्याची जबाबदारी इतर शिक्षित सदस्यांनी घेतली आणि काही कालावधीनंतर निरक्षर महिलाही साक्षर झाल्या. बचत गटामधील बचत केलेल्या पैशातून अंतर्गत व्यवहार सुरू झाले. केवळ अंतर्गत कर्जावर या महिलांनी समाधान मानले नाही. तर आपण काहीतरी उद्योग केला पाहिजे असा विचार पुढे आला. सर्वप्रथम त्यांनी मासिकसभेत उद्योग करण्यासंबंधी माहिती प्रशिक्षणाद्वारे जाणून घेतली. त्यानंतर त्यांनी आपला स्वत:चा व्यवसाय गावामध्ये सुरू केला. त्यासाठी त्यांनी बँकेतून स्वर्णजयंती योजनेतून कर्ज घेतले. महिलांनी सुरू केलेल्या व्यवसायाला सुरवातीला गावातील महिलांनी प्रतिसाद दिला. नंतर हळूहळू गावातील पुरुष मंडळीही महिला बचत गटाच्या उपक्रमाला प्रतिसाद देत गेले. केल्याने होत आहेरे आधी केलेच पाहिजे या उक्तीचा प्रत्यय महिलांना आला. त्यांची आर्थिक प्रगती साधली गेली. व उद्योगासाठी आवश्यक असलेली उद्योग क्षमता महिलांमध्ये विकसित झाली.

➢ बचत गट महिलांच्या सर्वांगीण विकासाचे उत्तम माध्यम

बचत गट म्हणजे महिलांसाठी एक वरदान होय. बचत गटामुळे केवळ आर्थिक विकासाचे मार्ग व संधी उपलब्ध होते असे नाही. तर विविध प्रशिक्षण , बाहेरील जगाचा अनुभव, संघटन कार्याचा व विचारांचा प्रभाव यामुळे महिलांमध्ये आत्मविश्वासाची निर्मिती होते. तसेच घरात बँकेत आणि पर्यायाने गावात महिलांची पत व सामाजिक दर्जा निर्माण होतो. बचत गट हे स्वावलंबनाचे, मानसिक व वैचारीक, आर्थिक उन्नतीचे आणि सामाजिक प्रगतिचे उत्तम माध्यम आहे. बचत गटामुळे महिलांची गतिशिलता वाढते व त्यासोबत आत्मविश्वासही वाढतो. शासकीय यंत्रणेबद्दल आत्मियता वाढते. शासकीय यंत्रणेमधील दुरावा कमी होऊन जवळीक साधता येते. बचत गटामुळे महिलांना स्वत:च्या पायावर उभे राहून भविष्यामध्ये समाजासाठी, देशासाठी काहीतरी करावे ही जाणीव निर्माण होते, तसेच कार्यात्मक साक्षरता, संभाषण कौशल्य,कार्यात्मक कौशल्याची वाढ होते. समाजातील जास्तीत जास्त महिलांनी एकत्र येवून महिला बचत गटाची निर्मिती करून या उपक्रमातून कुटुंब, समाज व राष्ट्राच्या विकास व प्रगतीला हातभार लावला आहे.

संदर्भग्रंथ सुची

१. कराडे प्रा. जगन – जागतिकीकरण भारतासमोरील आव्हाने
२. काटोले रविंद्र म. – महिला बचतगट (स्वयंसहायता बचतगट मार्गदर्शिका)
३. गोस्वामी सुबुध्दी –महिला एव बालविकास
४. मुलानी प्रा. एम. यु.–महिला स्वयंसहायता बचत गट, डायमंड पब्लीकेशन पुणे
५. मुलानी प्रा. एम. यु.–अल्पबचत नियोजन (बचतगट), डायमंड पब्लीकेशन पुणे
६. वर्मा डॉ. सबलिया बिहारी – महिला जागृती आणि सशक्तीकरण
७. सारस्वत स्वप्नील/सिंह डॉ. निशांत – समाज राजनिती और महिलायें :–दशा और दिशा
८. Rais Ahmad – Agriculture,Rural Banking and Micro Finance in India
९. Singh Katar - Rural Development-Principal,Policies and Management
१०.दैनिक – सकाळ, लोकमत, लोकसत्ता, देशोन्नती, नागपूर टाईम्स
११.योजना मासिक जानेवारी २०१८

Principal

Scanned by CamScanner

Review of Research
UGC APPROVED
International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 7 | Issue - 6 | March - 2018

Impact Factor : 5.2331(UIF) ISSN : 2249-894X

WOMEN EMPOWERMENT IN RURAL AREA AND THE ROLE OF GOVERNMENT



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Dr. Anjali Chandrakant Pande

Associate Professor, Department of Home-Economics,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Distt.-Amravati.

Abstract : In this modernized world there has been a radical progress in the field of economy. In this context women's participation is of greater .....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

Scanned by CamScanner

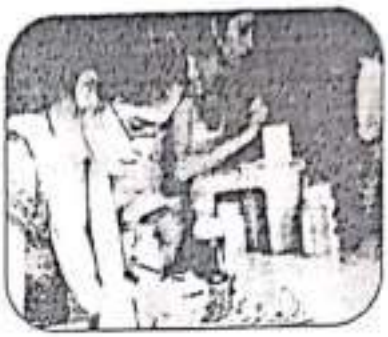
REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

WOMEN EMPOWERMENT IN RURAL AREA AND THE ROLE OF GOVERNMENT

Dr. Anjali Chandrakant Pande
Associate Professor , Department of Home-Economics , Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera, Distt.-Amravati.

ABSTRACT

In this modernized world there has been a radical progress in the field of economy. In this context women's participation is of greater importance. In India though women have played a key role in the society, their entrepreneurial ability has not been properly tapped due to the lower status of women in the society. The development of women entrepreneurship has become an important aspect of our plan priorities. Several policies and programmes are being implemented for the development of women entrepreneurship in India.



KEY WORDS: *modernized world , lower status of women , women entrepreneurship.*

INTRODUCTION :

In the words of former president APJ Abdul Kalam "empowering women is a prerequisite for creating a good nation, when women are empowered, society with stability is assured. Empowerment of women is essential as their thoughts and their value systems lead to the development of a good family, good society and ultimately a good nation."

RURAL WOMEN ENTREPRENEURS

Meaning-Rural women entrepreneurs are those entrepreneurs who actually hail form and reside in rural areas i.e. either from a 'Panchayat' and mobilize human resources requirements from those areas in which they live.

Definition-"An enterprise owned and controlled by women saving a minimum financial interest of 51 percent of the capital and giving at least 51 percent of the employment generated in the enterprise to women."

The government of India

Entrepreneurship development of India, it would be of utmost importance to ensure the facilitating factor of women's development, especially in rural areas. If properly supported, the rural disadvantaged have a great opportunity to maintain their livelihood through engaging themselves in various type of income generating activities.

Rural women entrepreneurs are facing various critical problems in India so the government of India has taken significant policies and rules for women entrepreneurship development in rural India. Rural

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Scanned by CamScanner

women are one of the sources to our country to make developed India as we have 50% of women population from rural. So it is the responsibility of the country to make certain policies to help the rural women to develop entrepreneur skills and surface the problems to become a flourishing entrepreneur women entrepreneur in rural & backward regions needs special assistance and incentives from the government and other associate agencies.

Empowerment:

Meaning- "The situation of authority or to be authorized or to be powerful"

"Empowerment is a process which gives women power or authority to challenge some situation."

Economic empowerment –

Economic empowerment of women by entrepreneurship led to the empowerment of women in many things such as socio-economic opportunity, property rights, family development and at last the nation development.

Problems faced by women empowerment in rural India

1. Problem of Finance:

Money is viewed as "life-blood" for any venture, be it enormous or little. In any case, ladies business people experience the ill effects of deficiency of money on two tallies.

Right off the bat, ladies don't for the most part have property on their names to utilize them as guarantee for getting assets from outer sources. In this manner, their entrance to the outside wellsprings of assets is restricted.

2. Scarcity of Raw Material:

The greater part of the ladies ventures are tormented by the shortage of crude material and important data sources. Added to this are the high costs of crude material, from one viewpoint, and getting crude material at the base of rebate, on the other. The disappointment of numerous ladies co-agents in 1971 occupied with bin making is a model how the shortage of crude material sounds the demise chime of undertakings kept running by ladies (Gupta and Srinivasan 2009).

3. Stiff Competition:

Ladies business people don't have authoritative set-up to siphon in a great deal of cash for campaigning and promotion. In this way, they need to confront a hardened challenge for advertising their items with both sorted out area and their male partners. Such a challenge at last outcomes in the liquidation of ladies ventures.

4. Limited Mobility:

Unlike men, women mobility in India is highly limited due to various reasons. A single woman asking for room is still looked upon suspicion. Cumbersome exercise involved in starting an enterprise coupled with the officials humiliating attitude towards women compels them to give up idea of starting an enterprise.

5. Family Ties:

In India, it is mainly a women's duty to look after the children and other members of the family. Man plays a secondary role only. In case of married women, she has to strike a fine balance between her business and family. Her total involvement in family leaves little or no energy and time to devote for business.

6. Lack of Education:

In India, around three-fifths (60%) of ladies are as yet unskilled. Lack of education is the underlying driver of financial issues. Because of the absence of training and that too subjective instruction, ladies don't

Principal Narayanrao Vidyalaya Gadhinglaj

Scanned by CamScanner

know about business, innovation and market information. Additionally, absence of instruction causes low accomplishment inspiration among ladies. Along these lines, absence of instruction makes one sort or different issues for ladies in the setting going of business ventures.

7. Male-Dominated Society:

Male hawkishness is as yet the request of the day in India. The Constitution of India discusses correspondence between genders. In any case, by and by, ladies are viewed as abla, for example feeble in all regards. Ladies experience the ill effects of male misgivings about a ladies' job, capacity and limit and are dealt with as needs be. In nutshell, in the male-overwhelmed Indian culture, ladies are not treated equivalent to men. This, thus, fills in as a boundary to ladies section into business.

8. Low Risk-Bearing Ability:

Women in India lead a protected life. They are less educated and economically not self-dependent. All these reduce their ability to bear risk involved in running an enterprise. Risk-bearing is an essential requisite of a successful entrepreneur.

GOVERNMENT POLICIES TO ENHANCE WOMEN EMPOWERMENT

1. Government has to establish proper training classes at least monthly ones to encourage entrepreneurial skills among rural women.
2. Bankers and government should organize loan awareness schemes programs in the villages to educate rural women about the benefits provided by them.
3. Develop a policy to verify the amount provided by the banks.
4. Encourage women entrepreneurs by providing gift schemes who perform business well and participate well in entrepreneurial skill programmes.
5. There should be a continuous attempt to inspire, encourage, motive and co-operate women entrepreneurs.
6. To organize training programmes to develop professional competencies in managerial, marketing, financial production process, profit planning, to maintaining books of accounts and other skills. This will encourage women to undertake business.
7. There is need to change negative attitude of society towards women
8. District Industries centers and single window agencies should make use of assisting women in their trade and business guidance.
9. Better educational facilities and schemes and vocational training programmes will be arranged for development of rural women entrepreneurship.

- **Government Policies and programmes-**

1. **UNIDO –**United nation industrial development organization.
2. **(TREAD)-**Trade Related Entrepreneurship Assistance and Development.
3. **Bharatiya Mahila Bank .**
4. **Mahila Coir Yojana .**
5. **Mahila Udayam Nidhi .**
6. **Stree Shakti Project.**
7. **Support to Training & Employment programme for women.**
8. **National Policy for Skill development and Entrepreneurship 2015**

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Baswa

Scanned by CamScanner



मराठी रंगभूमी आणि आजचे वर्तमान

डॉ. सतीश पावडे
मुख्य संपादक

डॉ. भूमिका वानरवडे
कार्यकारी संपादक

डॉ. पी. जी. रोहणकर
प्राचार्य तथा प्रबंध संपादक

चर्चासत्र : संयोजक

जगदंब महाविद्यालय

अचलपूर शहर

AANI AAJACHE VARTMAN

ISBN - 978-93-91590-30-7

आवृत्ती । प्रथम - १२ ऑक्टोबर २०२२

मुख्य संपादक । डॉ. सतीश पावडे

कार्यकारी संपादक । डॉ. भूमिका वानखडे

प्रबंध संपादक तथा प्राचार्य । डॉ. पी. जी. रोहणकर

संपादक मंडळ । डॉ. नरेंद्र राईकवार, श्री. प्रफुल टाले, श्री. शाम गायकवाड

© जगदंब महाविद्यालय
अचलपूर शहर, अमरावती

प्रकाशक । अक्षरशिल्प प्रकाशन
वि. ना. राऊत
शॉप नं. १४, अनवर मार्केट, अलमास नगर,
बायपास रोड, बडनेरा, अमरावती - ४४४७०१
मो.नं. : ७४९९०५८८७९ / ९३२५४१४०५१
email : aksharshilpprakashan@gmail.com

मुद्रक । अंबा प्रिंटर्स
जुनीवस्ती, बडनेरा, अमरावती.
मो.नं.: ९३२५४१४०५१
email : anupetale@gmail.com

मुखपृष्ठ । अनुप पेटले

अक्षर जुळवणी । धनश्री भेंडे

9 789391 590307

मूल्य । ₹ ३५०

या पुस्तकात मांडलेल्या लेखातील विचारांशी संपादक मंडळ/प्रकाशक सहमत असेल असे नाही. हे त्या-त्या लेखकांचे आकलन आहे.

महाराष्ट्र शासन

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ

गडकरी नाट्यमंदिर इमारत दुसरा मजला, पु. ल. देशपांडे महाराष्ट्र कला अकादमी आवार
मंगलदास रोड, प्रभादेवी, मुंबई ४०००२५

दूरध्वनी : ०२२-२४३२५९३० (कार्यालय), फ्रमणध्वनी : ९८२२८३२८९९

फॅक्स : ०२२-२४३२५९३०, ई-मेल : secretary.sks-mh@gov.in संकेतस्थळ : https://sahitya.maharashtra.gov.in

डॉ. सदानंद मोरे
अध्यक्ष

श्री जगदंब शिक्षण संस्थेच्या अचलपूर येथील जगदंब महाविद्यालय स्थापनेचा हीरक व विज्ञान शाखेचा सुवर्ण महोत्सव साजरा करण्याच्या स्तुत्य व प्रेरणादायी उपक्रम केल्या बद्दल हार्दिक अभिनंदन! आणि पुढील वाटचालीसाठी शुभेच्छा..!

या उपक्रमाचा एक भाग म्हणजे महाविद्यालयाने आमंत्रित केलेले मराठी रंगभूमीच्या वर्तमानावरील चर्चासत्र. हे चर्चासत्र देवीच्या नवरात्रोत्सवात घेण्यातील औचित्याचाही उल्लेख करायला हवा.

अभिजात संस्कृत साहित्यात व नाटकातही विदर्भाचे योगदान लक्षणीय आहे. जिला सर्वश्रेष्ठ सहित्यशैली म्हणून गौरविण्यात येते ती वैदर्भी रीतीही याच भूमीत विकसित झाली. लोकरंगभूमीतही हा परिसर अग्रेसरच राहीला आहे. अलीकडच्या काळातही मराठी नाट्यसृष्टीत येथील अभिजात, लोक आणि पाश्चात्य परंपरा कमी अधिक प्रमाणात आढळून येतात हे वेगळे सांगायची गरज नाही.

चर्चासत्रात मराठी रंगभूमीच्या विविध पैलूंवर प्रकाश टाकला जाईल व त्याचा रंगभूमीच्या भावी वाटचालीसाठी उपयोग होईल यात शंका नाही.

सर्व शुभेच्छांसह..!

अनुक्रमणिका

- संपादकीय ०७

१) मराठी रंगभूमी आणि आजचे वर्तमान
-डॉ. सतीश पावडे ०९

२) मराठी रंगभूमी आणि तत्वचिंतक चिंतातूर जंतू
-प्रेमानंद गज्वी १५

३) मराठी रंगभूमी आणि माझी अनुभव यात्रा
-श्री. विजय कदम २४

४) मराठी रंगभूमीचा भक्कम पाया
-डॉ. संजय पाटील देवळाणकर २९

५) मराठी ग्रामीण रंगभूमी : स्थिती आणि गती
-डॉ. संपदा कुलकर्णी ३३

६) बोधी रंगभूमी : गरज वर्तमानाची आणि भविष्याची!
-डॉ. भूमिका गो. बानखडे ३६

७) बोधी नाटक : काही निरीक्षणे
-डॉ. शांतरक्षित गावंडे ४६

८) आंबेडकरी नाट्यसाहित्य : एक अभ्यास
-डॉ. कमलाकर पायस, प्रा. संजय शेंडे ५६

९) दलित रंगभूमी आणि दलित नाट्यचळवळ : एक अनुबंध
-डॉ. नरेंद्र पाठारे ६३

१०) मराठी रंगभूमीवरील दलित नाटके : शोध आणि बोध
-प्रा. अभिजीत झाडे ७३

११) मराठी दलित रंगभूमी : संकल्पना, स्वरूप व वाटचाल
-प्रा. तुषार ज्ञानेश्वर पाटील ८१

१२) मराठी दलित रंगभूमी
-डॉ. माधुरी मनोहरराव पाटील ८९

१३) मराठी दलित रंगभूमी
-प्रा. मनीषा रामेश्वर खंडारे ९६

१४) सत्यशोधक नाटके आणि लोकरंगभूमी
-डॉ. प्रवीण श्रीकृष्ण बनसोड १०४

१५) मराठी रंगभूमीवरील वास्तव
-डॉ. सुवर्णा गाडगे १०९

१६) मराठी रंगभूमी व नाट्यलेखनाच्या दिशा
-डॉ. वैशाली बाबुराव कोटंब ११०

१७) मराठी रंगभूमी चर्चा आणि चिंतन
-डॉ. गजानन गोपाळराव शेरोळे ११५

१८) मराठी रंगभूमीवरील प्रवाह - एक अभ्यास
-प्रा. अनुप अरुण राटगावकर १२१

१९) मराठी रंगभूमी आणि पाश्चात्य नाटकाचा प्रभाव
-डॉ. वैशाली केशव बोटले १३४

२०) लोकनाट्य आणि लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे
-डॉ. माधुरी व्ही. भटकर १४१

२१) महाकवी वामनदादा कर्डक आणि आंबेडकरी जाणिवा
-डॉ. अशोक बडगर, सिद्धार्थ ताबडे १४४

२२) मराठी नाटक रंगभूमी आणि नाट्य संगीत
-डॉ. जयश्री कुळकर्णी १५२

२४) मराठी रंगभूमीवरील स्त्रियांचे योगदान : एक अवलोकन
-डॉ. संपदा कुलकर्णी.....१६७
२५) अचलपूरच्या नाट्यपरंपरा
-अशोक बोंडे.....१७२
२६) अचलपूरची नाट्यपरंपरा समृद्ध करणारा कलावंत
-डॉ. प्रमोद भीमराव गारोडे.....१७७
२७) मराठी नाटकातील संवादाचे स्वरूप
-डॉ. निशा सु. जोशी.....१८६
२८) झाडीपट्टी रंगभूमी
-सदानंद बोरकर.....१९८
२९) महाराष्ट्रातील आदिवासी रंगभूमी
-डॉ. काशीनाथ बऱ्हाटे.....२०६
३०) विदर्भ-नागपूर ची रंगभूमी - एक अभ्यास
-डॉ. संयुक्ता बोरात.....२२४
३१) पूर्व वैदर्भीय रंगभूमि और आज के लोक रंगमंच
-सुहास नगराळे.....२२९
३२) नव्वदोत्तर मराठी नाटक
-डॉ. कल्पना ज्ञा. मेहरे.....२३५
33) Marathiness of Marathi Drama
- Mr. Shyam D. Gayakwad.....242
34) Progression of Children's Theatre During Lockdown
- Radhika Pendse, Dr. Sanyukta Thorat.....246

संपादकीय...

अचलपूर शहर आणि परिसराला समृध्द अशी धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आणि साहित्याची परंपरा लाभलेली आहे. गो. नि. दांडेकर, डॉ. अरूण साधू आणि आचार्य राम शेवाळकर अशा सुप्रसिध्द साहित्यिकांच्या वास्तव्याने व कार्याने ही भूमी उजळून निघाली आहे. प्रबोधनकार ठाकरे यांचे वास्तव्य काही काळ अचलपूरला होते. संस्कृत नाटककार महाकवी 'भारवी' सुध्दा याच भूमीतले! त्याचप्रमाणे कालखंडापासून 'पंढरीनाथ संस्था', 'बावणएक्का', 'बाविशी', 'व्यंकटेश बालाजी मंडळ' यांच्या माध्यमातून मराठी नाटकांचे प्रयोग अचलपूरात होत असत. नाट्य परंपरेची समृध्द अशी परंपरा अचलपूरला लाभलेली आहे. हे वर्ष महाविद्यालय [illegible] विज्ञानशाखेचे सुवर्ण महोत्सवी वर्ष म्हणून आम्ही साजरे करीत [illegible] अचलपूरला लाभलेल्या नाटक आणि रंगभूमीच्या समृद्ध परंपरेला अनुसरून [illegible] रंगभूमीच्या अभ्यासाला दिशा देण्याकरिता 'मराठी रंगभूमी [illegible] : चर्चा आणि चिंतन' या विषयावर एक दिवसीय राज्यस्तरीय [illegible] महाविद्यालयात दिनांक १२ ऑक्टोबर २०२२ रोजी करण्यात [illegible] नाटक आणि रंगभूमीवरील नामवंत नाटककार, दिग्दर्शक, [illegible] मार्गदर्शन करणार असल्याने त्याची नाटक आणि रंगभूमीच्या [illegible] स्वरूपात प्राप्त झाले. त्याचबरोबर या चर्चासत्राकरिता [illegible] प्राध्यापक व संशोधक विद्यार्थ्यांचे शोध निबंध मागविण्यात [illegible] त्यातील निवडक आलेख 'मराठी रंगभूमी आणि आजचे वर्तमान' या [illegible]

निष्कर्ष :

आधुनिक काल में भी विदर्भ का मिहान प्रकल्प उद्योगपतियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इसी तरह हम देखते हैं विदर्भ की सांस्कृतिक विरासत बहुत बड़ी है। इसकी सांस्कृतिक विरासत के साक्ष्य प्राचीन काल से हैं। विदर्भ की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने वाली ऐसी ही कुछ वैदर्भीय लोककलाओं के बारे में ऊपर जान चुके हैं। विदर्भ प्रांत में हमें अनेक लोककलाएँ देखने को मिलती हैं- गंगासागर, नागबरी, मरिमाय, महादेव के गाने (शंकर पार्वती के) फुगडी, लप्पक, डफगान, राधा, भिगिसोंग, खड़ीगंमत, दंडार जैसे कई कलाएं सम्मलित हैं। किन्तु आज ये लोक रंगमंच और लोक कलागीत विलुप्त होने की कगार पर हैं। महाराष्ट्र का सांस्कृतिक विभाग भी राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में लोकगीत, लोक कलाओं के कार्यक्रम आयोजित करता है। और साथ ही अन्य गैर शासकीय संस्थाएं भी इस में सम्मिलित होती हैं।

– डॉ. कल्पना व्यं. मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा,
जि. अमरावती.

नाटक ही दाखविण्याची, सादरीकरणाची कला (Art of Performing) आहे ती प्रयोगनिष्ठ कला आहे नाटकामध्ये नाटक, ते करणारे अभिनेते, रसिक असा प्रवास असतो. प्रेक्षकांचा प्रतिसाद मिळाल्यावरच नाटकाची आस्वाद प्रक्रिया पूर्ण होते. नाटक हे दृकश्राव्य असते. नाटकाला एक संहिता असते. पण रंगमंचावर अवतरल्याशिवाय नाटक पूर्ण होत नाही. नाटकात अनेक कलांचा समावेश झालेला असल्यामुळे त्याला संमिश्र कला असेही म्हटले जाते. उदा. नृत्य, संगीत, शिल्प, चित्र वास्तु इ. नाटकाच्या महत्वाच्या घटकामध्ये नेपथ्य, संगीत, आणि प्रकाश योजना या याही येत असल्यामुळे नाटक अतिशय प्रभावी आणि परिणामकारक होते.

भारतात नाटक ही कला अतिशय प्राचीन म्हणजे दोन हजार वर्षांपासून अस्तित्वात आहे. भरतमुनींना भारतीय नाट्यकलेचे जनक मानले जाते, त्यांचा याबाबतीतील सर्व माहिती देणारा 'नाट्यशास्त्र' हा ग्रंथ प्रमाण मानला जातो. त्याबद्दल अशी आख्यायिका सांगितली जाते की भरतमुनींनी ऋग्वेदातून पाठ्य, सामवेदातून गान, यजुर्वेदातून विधीपूर्वकता म्हणजे अभिनय आणि अथर्व वेदातून रस याप्रमाणे चारही वेदातून महत्वाचे भाग होऊन नाट्यशास्त्र हा ग्रंथ लिहिला म्हणूनच नाट्यशास्त्र याला 'पंचमवेद' (पाचवावेद) असे ही म्हणतात. आनंद देणे, मनोरंजन करणे हे याचे महत्वाचे प्रयोजन आहे. भरतमुनीच्या मते असा कोणताही अनुभव जगात नाही त्याचे सादरीकरण करता येत नाही.

मराठी नाटकाचा प्रारंभ विष्णुदास भावे यांच्या 'सीता स्वयंवर' [illegible] झाला विष्णुदास भावे आपली नाटक मराठी [illegible] ते कळसूत्री बाहुल्यांचे प्रयोगही आपल्या नाटकात करत. विष्णुदास भावे नाटके मुख्यत्वे पौराणिक होती.

भारतीय नाट्यसृष्टीचा विचार करत असताना [illegible]
दिसून येते. सुमारे दोन हजार वर्षांची दीर्घ परंपरा तिला लाभली असून भरतमुनीपासून
आजच्या नाटकापर्यंत भारतीय नाट्यसृष्टी अतिशय समृद्ध आहे. पूर्वीचे संगीत नाटक
रात्रभर चालायची त्यामध्ये कुठल्याही प्रकारची घाई गडबड नसायची. एकएका पदाचा
अनेकदा आस्वाद घेत घेत नाटक संपायला पहाट व्हायची. आपल्याकडचे अभिजात
काय किंवा जानपद काय सर्वच नाट्यप्रकार तसे ऐसे पैसे लंबेचवडे असायचे.

काळ बदलला लोकांचं जीवन घड्याळावर आखलं जाऊ लागलं. त्यामुळे
नाटकाचा कालावधी तीन साडेतीन तासाचा झाला आणि नाटक तीन अंकाचे झाले.
आज व्यवसायिक नाटकाला हे तीन अंक ही जरा जडच वाटू लागले त्यामुळे बहुतां
नाटक दोन अंकातच आटोपण्याचा कल दिसतो.

१९२० नंतर जग फार बदलले खाजगीकरण, जागतिकीकरण, उदारीकरण,
संगणकाचे युग, अभासीयुग, मोबाईल यामुळे काल आणि अवकाश याची [illegible]
बदलली. आज इथे असताना आपण कोणाशी तरी कनेक्टेड असतो आणि
असूनही डिस्कनेक्टेड असतो. आपल्याला वाटतं संवादाची माध्यम वाढली पण [illegible]
झालेल नाही आपण अधिकाधिक एकाकी पडलो.

१९९० नंतरची जी घुसमट जाणवू लागली त्यात एकाकीपणाची, [illegible]
जाणीव प्रमुख होती. माणसांचा माणसांशी, माणसांचा स्वतःशी [illegible]
'कमतो दुनिया मुठी में' म्हणत असतानाच माणसांच्या हातातील [illegible]
ही जाणीव सर्वांना आहे. मास कम्युनिकेशन म्हणत असताना [illegible]
बोलणंच हे कळत नाही अशी आज अवस्था आहे. आज [illegible]
संस्कृती रुजवत आहे. आपलं व्यक्तिगत आयुष्य एकांगीय [illegible]
झालं आहे.

१९९० नंतरचे जग हे विस्कटलेले आहे, विभक्त [illegible]
तुटावे तसे जगाचे दोन वेगळे भाग झालेत. या विभाजन [illegible]
आव्हानात्मक कालखंड आहे त्याला भिडणारा [illegible]
लागत आहे. या पार्श्वभूमीवर आजचं मराठी [illegible]
बदलती सामाजिक मूल्ये, स्त्री पुरुषांचा [illegible]
जाणिवा यांचा वेध घेण्याचा प्रामाणिक [illegible]

समोर आहे.

नव्वदनंतरची मराठी नाटके ही आधीच्या मराठी रंगभूमीवर आलेल्या नाटकांपेक्षा वेगळी आहे. कारण आजचं वास्तव्य हे पूर्वीसारखं घामाने घरात घुसले त्यात काही हात पाय मारायला लागले, काही तरंगायला लागले, काही गटांगळ्या खायला लागले, काही शिताफीने पोहायला लागले. या सगळ्या जगण्याला सामोरं जाताना होणारी दमछाक आणि जगण्यातून आलेली नवी संवेदनशीलता हे नव्वदोत्तर जगण्याचे व्यवच्छेदक लक्षणे आहे. जागतिकीकरणाचे परिणाम जरी थेट महानगरावर जाणवले तरी नंतर ते शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यांपर्यंत पसरत गेले. माणूस विफल, पराभव, असहाय झाला तरीही एका ग्रामक वास्तवात गुंतून पडला. पूर्वी ग्रामक वास्तव निर्माण करणं ही त्याची गरज होती. आता ते त्याच्यावर लादले गेले. माणसांनी त्यातच अडकून पडावं अशी सक्तीची परिस्थिती निर्माण केली गेली हे नव्वदोत्तरी वास्तव आहे.

नव्वदोत्तरी नाटकामध्ये मकरंद साठे हे आघाडीचे नाटककार आहे. त्यांची 'चारसे कोटी विसरभोळ', 'मायलेकरांच पत्र', 'ठोंब्या', 'गोळायुग डॉटकॉम', 'चौक', 'सूर्य पाहिलेला माणूस', 'दलपतसिंग येती गावा' या सारखी अतिशय गाजलेली नाटके आहेत. यांनी वेगवेगळ्या धाटणीची नाटके लिहिलीत. 'ठोंब्या' (१९९७) या नाटकात आशय आणि रचनेच्या दोन्ही अंगानी अनेक वावैगुण्यपूर्ण प्रयोग नाटककारांनी केले आहेत. माणसाचे आयुष्य आणि संगणकीय तंत्रज्ञान याचे नाते नाटककाराने इथे जास्त बाळ्यारीतीने दाखविले आहे. तुकडे होत चाललेले जग आणि मानवीय भावभावनांचे [illegible] असलेले विखंडीकरण इथे प्रखरपणे दर्शविले आहे. मुळात संगणकाला ठोंब्या हे [illegible] देऊन आपले आजचे जगणे हे निरर्थक, रटाळ, कमअस्सल, बोगट, रोगट आणि [illegible] आहे हे सूचवले आहे. याच धर्तीवर मकरंद साठे यांचे 'गोळायुग' (२००७) [illegible] त्रेतायुग, द्वापारयुग, कलियुग तसे 'गोळायुग' आजचे युग लिबलिबित, आकारहिन [illegible] मर्यादेत असे आहे. 'सूर्य पाहिलेला माणूस' (१९९९) आजच्या काळाच्या [illegible] सॉक्रेटीसचा अर्थ लावण्याचे काम नाटककाराने केले आहे. 'चौक' (२००५) [illegible] ट्रॅफिक जाम आहे. आणि तिथे विविध आर्थिक सामाजिक, राजकीय [illegible] एकत्र अडकून पडली आहेत. कमालीची तीव्र भावनिक मंडळी या [illegible] कशी पाहते याविषयी हे नाटक आहे. मकरंद साठे ट्रॅफिक जाम या

[illegible]भूमी आणि आजचे वर्तमान (ISBN - 978-93-91590-30-7)

समाजसुधारक, बायकी बेरी हे लोक आहेत. ही सगळी मंडळी [illegible]
आहेत. सगळे बैतागले आहेत. असे का झाले याचे कोणाकडेच [illegible]
नुसता गोंधळ, गडबड सुरु आहे. एकमेकांच्या होणाऱ्या वादविवादातून, आपण
प्रत्यारोपातून समजते की, आपण कोण आहोत? हे लोक विसरून गेले आहेत.
समाजातील सगळेजण एकमेकांपासून तुटत जात आहे. एकमेकांशी संबंध नाही असे
एकूण निरर्थकतेकडे जाणारे वातावरण आहे. या गर्दीत सरळ-सरळ दोन गट दिसतात.
ज्यांच्या भावना पटकन भडकतात असे लोक आणि दुसरे काही जण असे आहेत की
त्यांना काही झाले तरी त्यांच्या भावना भडकत नाहीत. दोघेही टोकाची भूमिका
घेणारे. यामुळे समाजाचा समतोल बिघडतो. जागतिकीकरणात आपली आधीची
संस्कृती आणि आताची संस्कृती यात दरी निर्माण झाल्यामुळे असे प्रश्न निर्माण होतात.
'दलपत सिंग येती गावा' या नाटकाचा विषय हा अरुणा रॉय यांनी दिलेल्या माहितीच्या
अधिकाराचा लढा हा आहे. शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येचे वेगळे विश्लेषण करणारे हे
नाटक आहे. दलपतसींग हा राजस्थानातून महाराष्ट्रातील खेड्यात येतो. येथे त्याला
समस्या दिसतात त्याच्या हे लक्षात येते की लोकांना आपले हक्क, अधिकार [illegible]
हे माहित नाही. तो लोकांना हक्क भान मांगण्याचा प्रयत्न करतो. रंगमंचाच्या [illegible]
अतिशय कमी अशा रंगमंच व्यवस्थेतून आलेले हे नाटक आहे. या लोकांनी [illegible]
गावामध्ये जावून हक्कभानाचा प्रचार करावा असे दलपतसिंग याला वाटते. [illegible]
देणारे, हक्काची जाणीव करून देणार, ग्रामीण भागाशी नाळ जोडणारे हे [illegible]

चारचौघी - (२००१) - प्रशांत दळवी यांनी या नाटकात एक आई आणि [illegible]
मुली त्याच्या स्वतंत्र विचारसरणीनुसार त्यांच्या आयुष्यात [illegible]
घेतात हे निर्णय वैयक्तिक असले तरी ते सर्वसाधारणपणे स्त्रियांच्या [illegible]
करतात. हे नाटक स्त्री पुरुष संबंधावर प्रकाश टाकते. 'चारचौघी' [illegible]
प्रवास आहे. त्यांनी पुरुषप्रधान समाजाची बंधने झुगारून [illegible]
व्यक्तिस्वत्वाच्या साक्षात्काराच्या वाटेवर वाटचाल केली.

बाम, पंडित सत्यदेवजी दुबे, लक्ष्मीनारायण बिरक, महेश मांजरेकर हे सारे आहेत. आईंगी करणाऱ्या सी.डी.एम.ची ही [illegible] या समाजातील बुद्धीजीवींना ठेवले. यात एक शिक्षिका ही [illegible] असत ती भारत माता असते एक वडाचाला मुलगा असतो या नाटकात वर्तमानात भूतकाळाचा आधार घेतला आहे. स्वातंत्र्याच्या वेळी जे राष्ट्र पुरुष आमचे आदर्श होते ते काही मूठभर विकृत लोकामुळे आज टिंगलीचा, चेष्टेचा विषय बनले आहेत. अशा वेळी मिळविलेल्या स्वातंत्र्याचे मोल खरंच आपल्याला आहे का? असा प्रश्न शफाअत खान उभा करतात.

सिगारेटस (२००४) -

मनस्विनी लता रवींद्र बाचे हे तरुणाईचे नाटक आहे. नाटकात दोन पिढ्यांमधील संवाद कमी होत जात आहे. या नाटकात नेहा, नंदिनी, आशिष, गौरव या पात्रांच्या जीवनात जे घडत त्याना चित्रित करणारे हे नाटक आहे. मराठी नाटकाच्या परंपरेला छेद देणारे हे नाटक आहे. आजच्या तरुणाईला घेऊन जाणारे हे नाटक आहे. नाटकाची भाषा ही बेट आहे. तरुणाची भाषा आहे. मनस्विनी लता रविंद्रच्या मते नाटकाला नैसर्गिकपणे माइयचे असेल तर अशीच भाषा लागेल. या नाटकात २०-२५ ग्रुपमधील मुलांच्या मनातील प्रश्नाची खडबड, त्याच सुख ती कशी शोधतात ते दिसते.

'गेली २१ वर्ष' (२०१०) - धर्मकिर्ती सुमत बाचे हे व्यक्तिचित्रण [illegible] करून देणारे नाटक आहे. नाटकातील पात्र २१ वर्षांचा तरुण आहे. या [illegible] नाव तरुण आहे. आजची पिढी दोन जगात वावरते एक वास्तव जग आणि [illegible] आभासी जग. या नाटकातील तरुण याने मनाशी ठरवले आहे की आपल्या [illegible] आई- वडिल देऊ शकणार नाही. सोबतच यात love with relationship [illegible] वेगळ्या पध्दतीने हाताळला आहे.

'माझेच काय करायचं?' राजू नाईक बाचे या नाटकातील अभय नावाच्या [illegible] ही वर्तुळाकार गोष्ट आहे. त्याला साठे नावाच्या आर्ट फिल्ममेकर विषयी [illegible]. तो त्याची भडास आपली बायको मल्लमासमोर व्यक्त करतो. ती कधी

अभयला फक्त तिचे भय आहे. त्यांचा आंतरधर्मीय विवाह आहे. त्या अर्थाने ही त्यांच्या कॉन्शस आहे. त्यांच्यातील संवादांची मालिका म्हणजे नाटक. नाटकातील प्रत्येक प्रसंग अभयच्या मत्सराभोवती फिरतो. गोष्ट गोल फिरून पुन्हा त्याच ठिकाणी येते अभय सलमाला एका प्रसंगात म्हणतो, आपल्या गप्पांना सुरुवात, मध्य, शेवट असा काही क्रमच नाही. सुरुवात, मध्य की परत सुरुवात हे या नाटकाचं वैशिष्ट्य आहे. या नाटकात सारे एकमेकांचा सुरुवातीपासून शेवटपर्यंत कुठेच हिशेब मांडीत नाही. सगळेजण आपण प्रतिभावंत आहोत असे अभयला सारखे वाटते. पण अभयला साहेबप्रमाणे मोठ्या माणसांना घेरीज करायला जमत नाही. म्हणून अभयच्या मनात सारखा सुरू होतो. याला सारखी सतावी असलेला दाखविली आहे. जी लोकं आपल्यावर ऐश करतात त्यांच्याच

[illegible]

अशाप्रकारे नाटकात व्यक्त होण महत्त्वाच असत. नाटकात कलाकाराच्या [illegible] इथे पृथ्वीला सारखी वाही किंवा कलावंताचा कलाकार झालेली [illegible]

निष्कर्ष

[illegible]

त्याची समजूत काढते, कधी त्याला चिमटे काढते, काही वेळा कानउघाडणी करते. अभयला फक्त तिचे भय आहे. त्यांचा आंतरधर्मीय विवाह आहे. त्या अर्थाने ती त्याचा कॉन्शस आहे. त्यांच्यातील संवादाची मालिका म्हणजे नाटक. नाटकातील प्रत्येक प्रसंग अभयच्या मत्सराभोवती फिरतो. गोष्ट गोल फिरून पुन्हा त्याच जागेवर येते. अभय सलमाला एका प्रसंगात म्हणतो. आपल्या गण्याला सुरूवात, मध्य, शेवट असा काही नसतच. सुरूवात, मध्य की परत सुरवात हे या नाटकाच वेगळेपण आहे. या नाटकात साठे रंगमंचावर सुरूवातीपासून शेवटपर्यंत कुठेच दिसत नाही. साठेपेक्षा आपण प्रतिभावंत आहोत असे अभयला सारखे वाटते. पण अभयला साठेप्रमाण मोठ्या माणसांना मॅनेज करायला जमत नाही. म्हणून अभयच्या मनात मत्सर सुरू होतो. यात मानवी मनाची अवस्था दाखविली आहे. जी लोक आपल्यावर प्रेम करतात त्यांचाच माणसं राग करतात.

अशाप्रकारे नाटकात व्यक्त होणं महत्त्वाच असतं. नाटकात कलावंताचा कस लागत असतो. इथे चुकीला माफी नाही. किंवा कसलेला कलाकार झालेली चूक लक्षात देखील येऊ देत नाही.

निष्कर्ष –

१) १९९० नंतरच्या मराठी नाटकांनी इतर भाषामधील नाटके मृतवत झालेली असताना उल्लेखनीय कामगिरी केली आहे.

२) १९९० नंतरची नाटके ही समस्येला उत्तर सांगत नाही. प्रेक्षकांनी उत्तर शोधावी ही अपेक्षित असणारी आहे.

३) १९९० नंतरच्या नाटकातील प्रश्न बहुस्तरीय व्यामिश्र आणि अनेक पातळ्या देणारे आहेत.

४) नव्वदोत्तर नाटकाची भाषा परिचित नाट्यमय नाही. ती अनपेक्षित आणि भिडणारी आहे.

५) नव्वदोत्तर नाटके आश्वासक आहेत. नवीन देण्याचा प्रयत्न दिसून येतो.

६) विविध संकटांना सामोरी जावून नव्वदोत्तर मराठी नाटक समर्थपणे पुढे जात आहे.

७) वेगवेगळ्या विषयांवर वेगवेगळे प्रयोग आज नव्वदोत्तरी नाटकात केले जात आहे.

१) मराठी रंगभूमीच्या तीस गती (खंड तिसरा) – मकरंद साठे, श्रीपुरम प्रकाशन, मुंबई.

२) [illegible] – गजानन वाईकर, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.

३) मराठी नाटक आणि रंगभूमी [illegible], प्रकाशन, मुंबई.

४) नाटक उमजन आणि उमज – संपा. मुकुंद करंदीकर, अक्षर मानव प्रकाशन, पुणे.

५) महाराष्ट्री नाटके (२००० ते २०२०) नाट्यसमीक्षण – कमलाकर नाडकर्णी, अक्षर प्रकाशन, पुणे.

६) आताची नाटके – गजानन वाईकर, मौज प्रकाशन, मुंबई.



प्रेमानंद गज्वी
ज्येष्ठ नाटककार तथा
अध्यक्ष ९९ वे अ.भा.
मराठी नाट्य संमेलन, मुंबई

मराठी नाटक आणि रंगभूमीविषयी भरपूर विवेचन झालेलं आहे. एकाच वेळी प्रायोगिक रंगभूमी आणि व्यावसायिक रंगभूमी अशी दुहेरी विकसित होत आलेली आहे. या विकासप्रक्रियेवर एक ग्रंथ 'मराठी रंगभूमी – आजचे वर्तमान : चर्चा आणि चिंतन' या नावाने, 'अखंड विनोद शिक्षण संस्थान' कालसुसंगत अशी चर्चा घडवून आणत मराठी रंगभूमीविषयी आपली आस्था सिद्ध केली आहे.

या ग्रंथात समाविष्ट केलेले लेखांविषयक अभिप्राय महत्त्वपूर्ण असून मराठी रंगभूमीचे समग्र दर्शन घडविणारे आहेत. अत्यंत मौलिक असा हा ग्रंथ सिद्ध केला याबद्दल संपादकांचे अभिनंदन.



विजय कदम
मराठी नाट्य आणि
चित्रपट अभिनेते, मुंबई

मी एक व्यावसायिक रंगकर्मी! गेली ५० वर्षे रंगभूमीवर पाईक म्हणून नाट्यव्यवसायी पांढाऱ्या पेशन्स सहजपणे काम आलोय. माझ्या सुदैवाने सर्वप्रथम प्रायोगिक रंगभूमीवर शिकत शिकत व्यावसायिक रंगभूमीवर आलो. अशा पाच 'मराठी रंगभूमीचे – आजचे वर्तमान : चर्चा आणि चिंतन' असा आगळावेगळा विषयावर चर्चा घडवून आणण्याची कल्पकता 'अखंड विनोद संस्थेनी' दाखवली आहे. आयोजकांचे कौतुक करावे तितके थोडे आहे. सदरहू ग्रंथात दिग्गजांचे मौलिक विचार मराठी रंगभूमीचे अंतरंग उलगडून दाखवणारे आहेत. संपादकांचे मन:पूर्वक अभिनंदन!



डॉ. सतीश पावडे
नाटककार, नाट्य समीक्षक
आणि नाट्य विचारक

'मराठी रंगभूमी आणि आजचे वर्तमान : चर्चा आणि चिंतन' या विषयानुसार मराठी रंगभूमीची वर्तमानाच्या परिप्रेक्ष्यात चिकित्सेची दिशा स्पष्ट होते. या दृष्टीने हा ग्रंथ एक महत्त्वाचा विचारार्थक दस्तऐवज सिद्ध होणार आहे. आजच्या वर्तमानाच्या संदर्भात मराठी रंगभूमीचा शोध आणि बोध घेतला जाणार आहे. हा ग्रंथ सर्वांगीण आहे; चर्चा समावेशक आहे, तो केवळ एक संदर्भग्रंथ नाही तर विचारार्थक सूत्रांची मांडणी करत पहाणारी 'थ्रू पिंट' आहे. आज मराठी रंगभूमीपुढे व्यापक अशी खूप आव्हाने आहेत. या आव्हानांची चर्चा आणि त्याचा सामोरे जाण्याचे हे माध्यम आहे. मराठी नाट्यसमीक्षेच्या दृष्टीने, एक संदर्भग्रंथ म्हणून, संग्राह्य असे पुस्तक म्हणून आपण त्याकडे बघू शकतो.

Aksharshilp Prakashan

ct Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B..Aadhar

Peer Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2020







Chief Editor
f. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
arch & Development
ng Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics.
G.S.Tompe Arts Comm.Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

r Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor - 7.675 ISSN - 2278-9308

B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

Peer-Reviewed Indexed

March - 2020

SPECIAL ISSUE - CCXXIII 223

Sciences, Social Sciences, Commerce, Education, Language & Law

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr.Dinesh W.Nichit
Editor :
Principal
Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.

Aadhar International Publications
For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	मतीज तसल्याची ग्रामीण कथा : आशय आणि अभिव्यक्ती — डॉ. अलका गायकवाड–लुंगे	1
2	मतेची बँकीग क्षेत्रातील उपयुक्तता — डॉ. सौ. सपना आर. वेगीनवार	5
3	बालसंगोपनात पालकांसमोरी आव्हाने — **प्रा. सुषमा जयकुमार फरसोले**	8
4	आधुनिकव कौटिलीय कूटनीती आणि जागतीय स्त्रीविरजावादाचे विवेचन — डॉ. ओमकुमार टोम्पे	11
5	काले धन के स्रोत प्रभाव एवंनियंत्रण करने के लिए सुझाव–एक अध्ययन — प्रा. डॉ. ए.बी.पटले	18
6	पंचायतराज मधील महिला नेतृत्व व वास्तव — प्रा. गौतम कांबळे	23
7	आदिवासी समाजातील कुमारी मातांची वर्तमान स्थिती. — प्रा. डॉ. श्रीराम खाडे	26
8	अर्थव्यवस्थेच्या विकासात सरकारची भूमिका — डॉ. प्रदीप दरवरे	31
9	महात्मा गांधी यांचे सत्य व अहिंसा याबाबतचे विचार — प्रा. डॉ. सुभाष के. पवार	35
10	महात्मा गांधी का दृष्टिकोण एवं प्रबन्धकीय कौशल — डॉ. मधुलता व्यास	39
11	महात्मा फुले यांच्या दृष्टिकोनातुन वंचितांचा इतिहास –एक मिमांसा — फकिरा भगवान राजगुरू	43
12	महिला व बालक हक्क अधिकार कायदा व सुव्यवस्था टिकात्मक परीक्षण — प्रा. डॉ. निना सा. चवरे	50
13	कामायनी महाकाव्य की प्रासंगिकता — विक्रम बालकृष्ण वारंग	55
14	किसान क्रेडिट कार्ड योजना : एक अध्ययन — **प्रा.डॉ.शालिनी के.पांडे**	60
15	महात्मा जोतीराव फुले व समकालीन समाजसुधारक पंडिता रमाबाई — प्रा. डॉ. सुनिल चवळे	64

33	[illegible]	149
34	[illegible]	153

B.Aadhar' *International Multidisciplinary Research Journal*
Impact Factor - ((SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
March 2020

श्री नागदेवचार्य जीवन व कार्य

प्रा. डॉ. कल्पना ज्य. मेहरे
प्रमुख मराठी विभाग नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा, जिल्हा अमरावती.

महाराष्ट्र अनेक धर्मपंथांचा प्रदेश आहे. येथे वेगवेगळ्या थरातील लोकांची सामूहिक गरज व सांस्कृतिक पातळी यांना अनुसरून अनेक उपासना संप्रदाय स्थापन झाले. प्रत्येक पंथाने धर्मग्रंथ स्थापन करून समाजस्थिती सुधारण्याचाच प्रामुख्याने प्रयत्न केला. महाराष्ट्रात विविध धर्मपंथाचा उदय प्रत्यक्षात अकराव्या शतकात दिसत असला तरी त्याची बीजे अगोदरच पेरली गेली होती. ही बीजे पुढे अंकुरित झाली आणि त्यातून नाथ, महानुभाव, वारकरी, दत्त व समर्थ हे पंथ यथावकाश उदयाला आले. हे संप्रदाय बाह्यत: भिन्न दिसत असले तरी त्यांच्या मूळ प्रणेत एक प्रकारची सुसंवादीताच दिसून येते. बहुजन समाजाची जागृती व या जागृतीतून त्यांची आध्यात्मिक व नैतिक उन्नती हा पायाभूत विचार सर्व पंथाच्या आद्य प्रेरणेत होता.

श्री चक्रधरांनी 12 व्या शतकामध्ये महानुभाव पंथाची स्थापना केली. त्या काळात महाराष्ट्रात देवगिरीचा यादव राजाची राजवट होती. यादवराजा हा स्वत:च वैदिक कर्मकांड करणारा होता. धर्माच्या नावाखाली वर्णवर्चस्व, पोथीपांडित, स्पृश्यास्पृश्यता, सोवळे-ओवळे, व्रतवैकल्य, बहुदेवोपासना आणि निरर्थक कर्मकांडाचे स्तोम माजले होते. स्त्री शुद्रांना भक्तीचा आणि मोक्षाचा अधिकार नाकारला होता. सर्वज्ञ श्री चक्रधरांनी माणसाने माणसाशी माणसाप्रमाणे वागावे, माणसांनी आपल्यातील चांगुलपणा वाढवावा, जीवाला शाश्वत फळ परमेश्वरच देऊ शकतो. अशा प्रकारे भरकटलेल्या समाजाला चीर सुखाचा मार्ग दाखविला.

अशा या समर्थ युगपुरुषाचा आधी अद्वितीय शिष्य श्री नागदेवाचार्यांचा जीवन परिचय समर्थ श्री चक्रधरांच्या पार्श्वभूमीवरच अधिक खुलून दिसतो. जसे सृष्टी सौंदर्याचे दर्शन घेण्याकरिता सूर्यप्रकाशाची आवश्यकता असते. तसेच श्री नागदेवांचे चरित्रदर्शन श्री चक्रधरांच्या जीवन प्रकाशात होणे शक्य आहे.

श्री चक्रधरांनी उत्तरपंथे गमन करण्यापूर्वी पंथाचे संपूर्ण दायित्व श्री नागदेवांकडे सोपविले. श्री चक्रधरांच्या सान्निध्यात येण्यापूर्वी नागदेवांचे जीवन अत्यंत साधारण होते. परंतु कठोर आत्मनिरीक्षण व स्वामींच्या कृपेने ते श्रेष्ठ व स्पृहणीयच नव्हे तर अनुकरणीय बनले. श्री नागदेवांचे ठिकाणी कुशल नेतृत्व, शिस्तप्रियता, आचार-विचारांची कठोरता, ज्ञानाविषयी अत्याधिक आदर इ. गुण होते.

महाराष्ट्रातील सह्याद्रच्या बीड जिल्ह्यातील पुरी (पोढरी) या गावचे नागदेव रहिवासी माधव भट व आबाइसाच्या पोटी त्यांचा जन्म झाला. त्यांच्या कुटुंबावर लागोपाठ कोसळलेल्या आपत्तीमुळे सुशिक्षित व संस्कारित नागदेवांचे मन देखील उत्तेजित झाले. बंधू सारंगपाणी दूर देशाहून सोबत काही द्रव्य व मौल्यवान जडजवाहीर आणत असता दरोडेखोरांनी त्याला लुटले व त्याचा वध केला. या घटनेने तर नागदेव पूर्ण बदलला व दरोडेखोर बनला. आखूड वेणी, मोकळा कासोटा व खांद्यावर सदैव तलवार अशा वेशातील नागदेव कोणासही जुमानत नसे. कोणी त्याची समजूत घालावयास गेलाच तर त्याला तो शिवीगाळ करी दुरुत्तरे देई. अशा त्याच्या वागणुकीमुळे आपत्तीने आधीच खचलेली माता आबाइसा पूर्ण निराश झाली व आपल्या दोन विधवा सुनींना घेऊन एक पर्णकुटी बांधून राहू लागली. तेथे श्री चक्रधरांचे विचारांत शिष्य दादोस येत असत.

एके दिवशी श्री चक्रधरांच्या लीळा आबाइसा व तिच्या सुनींना सांगत असता नागदेवही योगायोगाने तेथे गेला. पर्णकुटीच्या बाहेर पुरुषाच्या वाहाणा पाहून त्याच्या तळपायाची आग मस्तकालात पोहचली. त्याने दादोसाचे

कमंडलु, चौपडी व वाहना दूर फेकून दिल्या त्यांनाही मढे झाकून बाहेर घालवले. दादोस तांबपणे बाहेर आले व अखंडच्याच एका झाडाखाली बसले. बाता आवाईमाने संतश्रेष्ठ नामदेवाची समजूत घालण्याचा प्रयत्न केला. पण व्यर्थ ते आरंभा बडबडतच होता. तुमहा लोकांना एवढीशुद्धा लाज नाही. एका परकया पुरुषाचा घरात एकांतात बसवले व त्याच्याशी हास्यविनोदी करताहात हे पाहून लोक काय म्हणतील? आपल्या घराण्याची मान मर्यादा याची याचाही विचार केला नाही. सगळा दोष आई तुझाच आहे. तूच या दोघींना मोकळीक दिली आहेस.

बाता आवाईला त्याची समजूत घालण्याचा व्यर्थ प्रयत्न करीत म्हणाली बाळ असे बोलू नये ते सत्पुरुष आहेत. विठ्ठरुपाचे कसली कल्पना असलेल्या एका अवतारी पुरुषाचे ते विद्वावंत शिष्य आहेत. ते येथे येऊन आम्हाला ज्ञानामृत पाजतात. केवढे उपकार आहेत त्यांचे आम्हावरा आमच्या वृध्द जीवनात त्यांच्यामुळे थोडा आल्हाद मिळतो. तू असे व्यर्थ काही बोलून पापाचा वाटेकरी बनू नकोस तू त्यांच्या अपमान केला आहेस. त्यामुळे त्यांच्या उपकाराची परतफेड होण्याऐवजी आम्हाला मात्र तरणिचे होण्याची वेळ आणती आहेस. अजूनही वेळ गेलेली नाही. बाळ अप ते सत्पुरुष त्यांचा ज्ञानाखाली बसलेले आहेत जा त्यांना बोलावून आण.

आपल्या बोलावण्याने तो अपमानित साधू परत आला तर तो खरा साधू थी समजेल असे म्हणून नामदेव दादोबाबळ जाऊन माझी आई तुम्हाला बोलावते असे तुटकपणे म्हणाले.

दादोस उठले शोपडीकडे निघाले. त्यांचा कमंडलु व चौपडी उचलून नामदेवही निघाले. नामदेव आता जरा प्रभावित झाले होते. दादोसच्या मुखातून थी चक्रधरांचे नाव ऐकताच त्यांना स्थित्यानंदाचा अनुभव आला. त्यामुळे थी चक्रधरांच्या भेटीची अनिवार इच्छा मनी निर्माण झाली. त्याने दादोसला विचारले मला थी चक्रधरांचे दर्शन होईल काय? स्वामी सिध्दरूप आहेत. आपण परवाला पर्व आहे त्यावेळी जाऊ दादोस म्हणाले दादोसांनी आई व दोन बहिणीसह माडेयाबाबा पोहोचावे. तेथेच नामदेवाने त्यांना भेटावे व सिध्दरकडे निघावे असे ठरले. सिध्दरच्या वाहेने दादोसांनी नामदेवांना बजावले, थी चक्रधर आमचे गुरु आहेत. तुमचे नव्हेत. तुमचे गुरु आम्ही येथे ते आपले उष्टे लाडून प्रसाद म्हणून देतात. ते ग्रहण करण्याचा अधिकार आमचा. तुमचा नव्हे हे लक्षात असू द्यावे.

दादोसाच्या गुरुत्वाच्या अहंकाराचा नामदेवाला हा पहिला अनुभव आला. थी चक्रधरांच्या भेटीत त्यांनी प्रसाद देण्यासाठी नामदेवाकडे हात केला. क्षण भावक नामदेव विचारात पडला. परंतु ईश्वरावताचा हा अत्यंत दुर्मिळ प्रसाद मिळण्ये परमभाग्य समजून त्याने तो चटकन घेतला व दादोसांची सूचना हेतूपूर्वक विसरून तो ग्रहण ही केला. त्याबरोबर त्याला स्थित्यानंदाचा लाभ झाला. आनंदाची स्थिती ओसरताच त्याची पूर्ण खात्री पटली की पूर्वी मिळालेला आनंदही थी चक्रधरांपासूनच झाला होता.

दादोसांच्या गुरुत्वाच्या अहंकाराचा दुसरा अनुभव असा की थी चक्रधरांना अर्पण करण्यासाठी घेतलेले वस्त्र दादोसांना अर्पण करावे लागले. असा प्रसंगाली नामदेव दादोसपासून दूर सरकले व थी चक्रधरांचे प्रभावी व्यक्तिमत्व व विरक्तिभावी वृत्ती याच काळात स्वामीकडून झालेले ईश्वरी चमत्कार यामुळे त्यांचेकडे आकर्षिले गेले. यांना अनन्यभावाने शरण जाण्याने आपला उद्धार होण्यार याची खात्री पटली.

नामदेवाची स्वामीवर एवढी श्रद्धा बसली की स्वामी उठले की तो उठे, स्वामी बसले की तो बसे, स्वामी चालू लागले की तो चालू लागले, स्वामींच्या ही गोष्ट लक्षात आली. स्वामी म्हणाले की आम्ही चालू लागलो तर तू शाकलीस का ? होय धावेन. इतकेच काय पण लवकरच पकडेनही? तर मग पकड म्हणून स्वामी चालू लागले वराच वेळ झाला स्वामी पुढे नामदेव मागे धावत नदी किनारी आले. नामदेवाला वाटले आता कुठे जात स्वामी? एका हातावरच तर आहेत असा पकडीन असा विचार करून थोडा वेग वाढविला. नामदेवाने हात पुढे केला तर स्वामी अदृश्य झाले. नामदेव पहातच राहिला त्याला काहीच सूचेना विव्हळ झाला. कुठे आहात आपण स्वामी? करुण स्वरात नामदेवाची आळवणी केली. थी येथेच तर आहे पकड होत स्वामी म्हणाले. आपण कोठे होता? नामदेव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पसंती संघकारांना सोलाव्या सूचना केल्या. मराठीतून ग्रंथ निर्मितीचा आग्रह धरला. लीळाचरित्राची रचना करताना म्हाइंभटांनी लीळा आचार्यांकडून वेळोवेळी तपासून घेतल्या. आचार्यांनी सोलाचे मार्गदर्शन केले.

एकदा आचार्यांना खूप ज्वर आला. तीन दिवस ते एका बाजेवर पडून होते. स्वामींचे बोलावणे आले हे त्यांनी सर्व शिष्यांना जवळ बोलावून सांगितले. पंथाचे प्रथम आचार्य श्री नागदेवांचे देहावसान झाले. भरपूर मशागत, भरपूर मेहनत करणाऱ्या शेतकऱ्याला सुपीक जमिनीची जोड असेल तर तो अधिक धनवंत होतो. त्यांची मशागत, मेहनत अधिक फलद्रूप होते हे सर्वमान्य आहे. तसे स्वामींनी नागदेवांतून प्रथम पंथाचे आचार्य निर्माण केले.

निष्कर्ष

1) नागदेवाचार्यांच्या ठिकाणी त्याग हा मोठा गुण आहे.
2) आचार्यांनी धर्माचा प्रचार व प्रसार मोठ्या प्रमाणावर केला आहे.
3) आचार्यांनी आपल्या मार्गस्थ मंडळींना कडक शिस्त लावली आहे.
4) आचार्यांच्या ठिकाणी प्रसंगावधानता व समयसूचकता हे गुण होते.
5) आचार्यांचे आपल्या शिष्य परिवाराला सोलाचे मार्गदर्शन लाभले आहे.
6) श्री चक्रधरांच्या प्रयाणानंतर आचार्यांने 30 वर्षांच्या उर्वरित आयुष्यात श्रीगोविंदप्रभूंची सेवा केली आणि स्वामींची आज्ञा पाळून परमेश्वर भक्तांचा सांभाळ केला आहे.
7) श्री नागदेवाचार्यांचे कार्य दुहेरी आहे एक पंथीय व दुसरे बाह्यवर्तीन कार्य आहे.
8) नागदेवांचार्यांनी आचार्य पद शेवटपर्यंत निष्ठेने सेवा बुद्धीने सांभाळले आहे.
9) स्वामींची सेवा आचार्यांनी ईश्वर सेवा या भावनेने केली आहे.
10) नागदेवांनी आचार्य पदाची धुरा कसोशीने सांभाळली आहे.
11) नागदेवांनी पंथाचे कार्य विवेक बुद्धीने केले आहे.
12) स्वामींना माहिती होते की, नागदेव हा सामान्य जीव नाही.
13) स्वामींनी नागदेवांना आचार्यपदाचे विशेष कार्य करण्याकरिता पाठविले आहे.
14) नागदेवाची स्वामींवर अनन्य भक्ती आहे.
15) नागदेवांच्या ठिकाणी कुशल नेतृत्व, शिस्तप्रियता आचारविचारांची कठोरता, ज्ञानाविषयीचे अत्याधिक आदर आहे.

15) संदर्भ ग्रंथ सूची

1) महानुभावांचा इतिहास - कै. मुरलीधर कोळपकर
2) महानुभाव पंथ आणि त्याचे वाङ्मय - ग. मो. तुळपुळे
3) प.पू.प.म.श्री. श्री नागराजबाबा स्मृतीग्रंथातील गौरवग्रंथ परिचयन - संपा. डॉ. तु. वि. गेडाम
4) स्मृतिस्थळ - संपा. का. ना. देशपांडे
5) महाराष्ट्र सारस्वत - वि. ल. भावे

तुमच्या Ph.D. प्रबंधाचे
पुस्तकात रूपांतर करून मिळेल
व ते जगभर पोहोचेल...
More Details – 9595560278





CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process.
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of Impact



Impact Factor Value : 6.561

ISSN : 2278-9308

Sanshodhan Samiksha

Humanities, Social Sciences, Commerce, Education, Law and Language

Peer Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2019



☐ Chief Editor - Prof. Virag S. Gawande
☐ Editor - Dr. Sanjay J. Kothari
☐ Editor - Dr. Dinesh W. Nichit

- Published By -

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati, MS.

Impact Factor Value : 6.561 I S S N- 2278-9308

Sanshodhan Samiksha

Humanities,Social Sciences,Commerce, Education, **and** language& Law Monthly
Peer Reviewed International Research Journal
Special Issue

March - 2019

Chief Editor
Prof.Virag S.Gawande

Editor
Dr.Sanjay j. Kothari
Social Sciences

Editor
Dr. Dinesh W.Nichit
Commerce

Published By
Aadhar Publication – Amravati
(M.S.) India 444604

INDEX

	Author	Title of Research Paper	Pg.No.
1	प्रा. अभिजीत प्र. दोड	पूर्णा नदी खोऱ्यातील खारपाणपट्ट्याचे पर्यावरण संवर्धनातील योगदान –एक भौगोलिक अध्ययन	1
2	डॉ. पंडीत जी.राठोड	दलित, आंबेडकरी साहित्य एक चिकित्सक अध्ययन	5
3	डॉ. नेहा हिरुरकर	यशस्वी रूध्दत्व– एक मानसशास्त्रीय दृष्टी क्षेप	8
4	डॉ.निलेश आर निंबाळकर	सुशासनाचा विचार व भारतीय व्यवस्था विश्लेषणात्मक अध्ययन	10
5	प्रा.डॉ. सुरेश रामरावजी सोमकुंवर	अस्पृश्यांचे समाजाची बदलती धार्मिक स्थित्यंतरे : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	16
6	प्रा.नंदकुमार गणेशराव भाकरे	१९८० ते १९९० या दशकातील मराठी ग्रामीण कादंबरी	21
7	Dr. Prakash U. Jawanjal	Role of Small-Scale Industries In India	24
8	Dr. Sunil Kumar	'A Study Of The Effect Of Circuit Training On Vertical Jumpingability And Skill Ability Of Weightlifter Players Aged 18 To 25 Years"	30
9	Dr. Sou. P. B. Patil	Empowerment Of Women	34
10	Prof. Bhavana Parab	Women Empowerment In India	44
11	Prof. Dr. Sou. Swati Ramrao Sarode	A Study of Experiments Done by An Educationist Tarabai Modak For The Uplifment of Warli Tribe	47
12	Anagha A. Ambekar	Contribution of women in Indian arts and Culture Importance of women in Indian Literature - Bhagwadgeeta	50
13	Prof. Abida Muntajar Khan	'Homemeaking' is it dignified profession for women?	54
14	Dr. Smita Ramesh Deshmukh	Women Empowerment And Role Of Social Reformers In Women Empowerment In India	60
15	Dr. Dr. Deepak S. Vede,	Importance of women in Indian Literature A Review	69
16	Dr. Nandkishor Dhawale.	Impact of Co-operatives in Financial	72

31	प्रा. चैतन्य दिनेश सवाई	आधुनिकरणाच्या बदलत्या सामाजिक वातावरणात लैंगिक शिक्षणाची गरज -एक अध्ययन	144
32	प्रा. दिपक मगरदे	हवामान बदलाचा शासीय जीवनावर होणारा परिणाम	148
33	प्रा. डॉ. वैशाली बाबुराव कोटबे	साहित्यातून व्यक्त होणारे अनुभवविश्व	154
34	प्रा. डॉ. हिरालाल मेश्राम	भारतीय आध्यात्मिक संस्कृतीचे महत्व जोपासणारे संत सेना न्हावी	157
35	प्रा.पुरुषोत्तम वि. माळोदे	मराठी साहित्यात मध्य प्रदेशातील महिला लेखीकाचे योगदान -एक अभ्यास	160
36	Dr.Purnima Giri Kapta	Effect Of Sports Participation On Educational Aspirations And Scholastic Achievements: Myths And Misconceptions	164
37	प्रा. रविन्द्र सदाशिव बर्वे	महाराष्ट्रातील बाल कामगारांचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	168
38	प्रा. डॉ. कल्पना व्यं. मेहरे	श्री गोविंदप्रभु विषयक साहित्यातील जननिष्ठा	173

Impact Factor Value : 6.561 ISSN-2278-9308

श्री गोविंदप्रभु विषयक साहित्यातील जननिष्ठा

प्रा. डॉ. कल्पना श्या. मेहरे

प्रमुख, मराठी विभाग नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा, जि. अमरावती

प्रस्तावना :-

स्वातंत्र्योत्तर नंतरच्या अर्धशतकात मराठी साहित्यात ग्रामीण, दलित, स्त्रीवादी, आदिवासी हे वेगवेगळे साहित्यप्रवाह चळवळीच्या माध्यमातून नावारुपास आले. प्रारंभी ते प्रस्थापितांकडून हेटाळले गेले. परंतु कालांतराने हे सर्व प्रवाह स्वतःच्या योगदानाच्या बळावर मराठीच्या साहित्य दालनात समाविष्ट होत गेले. इतकेच नव्हे तर त्यांच्यातल्या अंगभूत वैशिष्ट्यांकरीता गौरविले देखील गेले. मात्र आपापली स्वतंत्र अस्मिता जोपासून ती अधिकाअधिक प्रखर बनविण्याच्या हव्यासापोटी ह्या सर्व परिवर्तनवादी साहित्यप्रवाहांमध्ये जर परस्पर वैमनस्य वाढीस लागले तर मराठी समाजाच्या विघटनाची पाळी आल्याविना राहणार नाही. हा संभाव्य धोका लक्षात घेऊन या सर्व प्रवाहांना एकात्मतेच्या सूत्रात ओवण्याचा प्रयत्न चळवळीच्या माध्यमातून नावारुपास आलेले जनसाहित्य १९८४ पासून करत असून जनजीवनाभिमुखता व जननिष्ठा ही त्याची लक्षणे आहे.

- जनसाहित्याची व्याख्या
  - 'जननिष्ठ जाणिवेतून जनजीवनाचा घेतलेला कलात्मक वेध म्हणजे जनसाहित्य'.
  - 'जनहितैषी जाणिवेने व्यक्तित्वाने शब्दबध्द केलेली जीवनानुभूती म्हणजे जनसाहित्य'
  - जन म्हणजे देश, काल, धर्म, पंथ, वर्ण, वर्ग, जात, लिंग या उपाधिच्या पलिकडचा निखळ माणूस.
  - जननिष्ठा - जनांच्या सार्वभौमत्वावर निष्ठा.
  - श्री गोविंदप्रभुविषयक साहित्य (श्रीगोविंदप्रभूचरित्र)
    - महानुभवाची श्रीगोविंदप्रभु विषयक काव्यानिर्मिती (गीतविशेष)
    - महेश्वर पंडितांचे ऋध्दिपुरमाहात्म
    - पंडित नारायणव्यास बहाडियेकृत श्रीऋध्दिपुरवर्णन

(सीर्षमाला, आरती, पदे, स्तोत्र, काव्य)

- मुर्तिवर्णनपर काही काव्ये
- स्फुट ओव्या.

श्रीगोविंदप्रभुचा जन्म -

अंके ११०९ भाद्रपद शुध्द अष्टमी (त्रयोदशी) ला गोविंदप्रभुनी अवतार घेतला. श्रीप्रभुंचा अवतार हा दवडण्याचा होय (दवडणे - मातेच्या उदरातील गर्भाला काढून परमेश्वर तेथे प्रवेश करतो) त्या जीवाचे सर्व धर्म परमेश्वराला स्विकारावे लागते. हा जीव वेडापिसा असल्यामुळे श्रीप्रभू वेडयापिशासारखे वर्तन करीत असत.

सावळा वर्ण, मोठे पोट, त्यावर नाभिचुंबित दाढी, गळयात यज्ञोपवित (जानवे) कण्वशाखीय ब्राम्हण, अखंड ब्रह्मचर्य राहणी अतिशय साधी मालगंठी धोतर नेसायचे. भोजनाची फार आवड विशेष आवडीचे पदार्थ कढीलिंब किंवा दह्यातील वडे तसेच तुरीच्या डाळीचे वरण.

महानुभावांची काशी

श्री. गोविंदप्रभूंच्या वास्तव्याने रिद्धपूर महानुभवांची काशी बनले. महानुभाव पंथाचे [illegible] भागेचा वैचार घेणारे सर्वेश चीवकधर स्वामी यांनी रिद्धपुरलाच श्री. गोविंद प्रभूंपासून [illegible] श्रीगोविंदप्रभूंच्या पवित्र स्पर्शाने पुलकित झालेल्या रिद्धपूरास श्री. चक्रधर स्वामी नेहमी परमेश्वरपूर [illegible] असत. श्रीप्रभूंचे किशोरवयात असलेल्या रिद्धपूरचे आणखी एक महत्व असे की, श्रीळाचार्यांच [illegible] आद्यपीठ याचवी निर्मिती रिद्धपूरलाच (साळेश्वरी) झाली. श्री. चक्रधरांच्या समाधीसोबत [illegible] व्यक्तिमत्वातच होते.

रिद्धपूर हेच श्रीप्रभूंचे कार्यक्षेत्र होते तरी रिद्धपूर च्या बाजूबाजूच्या गावांना देऊनगाव, वानोळी, [illegible] पुसदा, रहाटगाव, वांदगाव, तिवसा, भिरणोर, कोळविहिर इ. ठिकाणी ते जात होते.

यादवकालीन समाजव्यवस्था

बाराचे शतक म्हणजे देवगिरीच्या यादव घराण्याचा शासन काळ राज्यसत्तेपेक्षा धर्मसत्तेची समाजमनावर घट्ट पकड होती. स्वत: यादवराजाच वैदिक धर्माचा पुरस्कर्ता होता. यादवांच्या राज्यसभेचे भीकरणाधिप हेमाद्रिपंडित हे वैदिक ब्राह्मण होते. त्यांनी 'चतुर्वर्गचिंतामणी' नावाचा ग्रंथ लिहिला असून त्याच्या व्रतखंडात भिन्नभिन्न देवतांचा उपासना करण्यासाठी वर्षभर अवळ अवळ दोन हजारव्रतांची आवश्यकता वर्णन केलेली आहे. वैदिक धर्मांना अनुसरून राज्यकर्ते राज्यशासन करीत असल्यामुळे सामाजिक तसेच धार्मिक विषमतेची दरी अधिक रुंदावत चालली होती. ज्ञानार्जनाचा तथा मोक्षाचा अधिकार फक्त ब्राम्हण वर्णालाच होता. स्त्रियांना धर्माचा अधिकार नव्हता. वादविवाद, शास्त्रचर्चा संस्कृत भाषेतून होत असल्यामुळे सामान्य लोकांना ज्ञानापासून वंचित राहावे लागत असे. सामान्यजनता व्रत वैकल्ये, कर्मकांड आणि क्षुद्र देवी - देवतांच्या उपासनेत गुंग होती. कर्मकांड व व्रतवैकल्य यांच्यामागे लागलेला समाज विलासी व निष्क्रिय झाला होता.

स्त्रियांचे माहेर (राजमठ) -

श्रीप्रभू म्हणजे माहेरच्या मायेचा निर्मळ झरा, गरीबांचे श्रीमंत माहेर. श्रीप्रभूचा स्त्रियांना फार मोठा आधार होता. स्त्रियांवर कोणे अन्याय होत असला की श्रीप्रभू तेथे जाऊन त्यांना मदत करीत. एक सासू स्वत: दूध भाकरी घालची व सूनाना ताक वाढायची सूनांवरील हा अन्याय श्रीप्रभूंना आवडला नाही. एकदा रात्रीच्या वेळी नेमके जेवणाच्या वेळेस श्रीप्रभू तेथे गेले आणि स्वत: त्यांनी सासूला ताक आणि सूनांना दूध वाढण्याचे काम केले. आपल्याला दूध नको नको असे वरवर म्हणणाऱ्या सूनांना मात्र मनातून आनंद होत होता. सकाळी ताक होणार नाही असी खत त्यांनी श्रीप्रभूजवळ व्यक्त केली. परंतु सकाळी जेव्हा विरजण घुसळले तेव्हा नेहमी इतकेच ताक निघाले. सावळापुरच्या ब्राह्मणाच्या सूनेला श्रीप्रभू म्हणजे आपले माहेरच वाटायचे. श्रीप्रभुंच्या निजधामानंतर त्यांच्या देहावर अंग टाकून माझे माहेर गेले म्हणून आकंदून रडणाऱ्या या सासुरवाशीनीने म्हाइंभट पाठवणीची चरितचोळी देऊ नासले तरी चालली नाही. आता काई घेईन: काई माझे माहेर आहे : असे म्हणून ती निघून गेली.

गोतासाठी जगरविक्रय करणाऱ्या स्त्रिया ह्या त्याही काळात होत्या समाजात उपेक्षित घटक. त्या काळात त्यांना सामान्य स्त्रिया म्हणून जोडण्याचे धाडस. श्रीप्रभूंनी अळजपूरच्या एका सामान्य स्त्रीच्या पाठीवरील फोड आपला पाय तिच्या पाठीवर ठेऊन फोडला. ती आनंदाने म्हटली माझ माय गाऊळ बाप : गाऊळ माते रक्षिले :

श्रीप्रभूंनी विटाळा बांदाळाच्या कल्पनेलाही मूठमाती दिली. उपाशांच्या विटाळला सूतीचे अंधरुण त्यांनी पाण्याने भरलेल्या रांजणात बुडविले आणि त्यांच्या मनातील विकल्प दूर केला.

स्त्रियांना श्रीप्रभु आपले वाटायचे हक्काने त्या आपले काम त्यांना सांगायच्या आपल्या तान्ह्या लेकराला पाळण्यात झोपवून एक तेलीण तेल विकायला बाजारात जायची. तर दुसरी लेकराला सोबत आणायची. लेकर रडायला लागले की, अवळल्या खेळणाऱ्या श्रीप्रभुंना म्हणायची राऊळे परी बाऊली : आमचे लेकर पाळणा घालौनिया वाका : मग मी तुमचीए माथा हो भरि तेल घालीन.

एका घरात कोणीच लहान मोठे माणुस नव्हते आणि घरातील बाईची प्रसुतीची वेळ जवळ येऊन ठेपली तेव्हा श्रीप्रभुने तिचे बाळंतपण केले. एकदा उपाध्यांच्या गावची नाचाऱ्या मुलीला तर तिच्या सासरहून ने घेऊन आले, एका ब्राह्मणाने त्यांच्याकडे येऊन कन्या उपवर झाली परंतु विवाहास पैसे नसल्याची व्यथा व्यक्त केली. थोर कवीच्या श्रीप्रभुंनी त्याला तीन ओंजळ आमू देऊन त्याची गंभीर समस्या सोडविली.

धर्माच्या क्षेत्रात या काळात स्त्रियांना कुठलेही अधिकाराचे स्थान नव्हते. स्त्री जातीवर एकूणच या काळात फार मोठा अन्याय व्हायचा. महानुभाव पंथाने स्त्रियांना धर्मात स्थान देऊन त्यांचा मोक्ष प्राप्तीचा अधिकार मान्य केला. श्रीप्रभुंच्या शिष्यसंप्रदायातही स्त्रियांची संख्या बरीच होती. त्यातील एक आद्य मराठी कवयित्री महदंबा होय.

आद्य समाजसुधारक (अस्पृश्यता निवारण करणाऱ्या लिळा) -

यादवकालीन समाज व्यवस्थेला धक्का देण्याचे काम सर्वप्रथम श्रीगोविंदप्रभुंनी केल. ते सर्व थरातील लोकांच्या घरी जात. एकदा ते कुणब्याच्या घरी आरोगणा करीत असता पत्निकडून आलेल्या साधेनी त्यांना देहबत केला आणि प्रसाद घेतला तिला कुणबीन स्त्री म्हणाली ब्राह्मण श्री तू आमचे अन्न कसे खातेस यावेळी श्रीप्रभुंनी हास्य केले. ते मातंगाच्या पाणपोईवर जायचे तिथे पाणी प्यायचे, त्यांचेकडील अन्नही ग्रहण करायचे. एकदा ते तेलीनीच्या घरी जातात तिचे लेकरु लाकाची भाकरी खात होते. त्यांनी त्या मुलाच्या हातातील भाकरी हिसकून घेऊन खाल्ली. तेलीन म्हटली राऊळो ही भाकरी तेलियांची श्रीप्रभु म्हणाले आवो मेली जाए : तेलियाची नव्हे म्हणे : हे लाकांची भाकरी एकदा ते अस्पृश्यांच्या वस्तीला गेले असता त्यांना मातंगानी विनविले आम्ही पाणियेवीन मरत असो त्यांना अनुकंपा आली. गोसावी म्हणीतले आवो येथे खाणावे म्हणे : श्रीप्रभूंनी अंगठा दाखविला तिथे विहिर खणली तिला अमर्याद पाणी लागले.

खाटकाच्या घरी जाऊन हाडामासांशी खेळून तशाच भरल्या हातांनी ब्राह्मणांच्या घरी येऊन त्यांच्या रांजणात हात धुणारे श्रीप्रभू तत्कालीन समाज व्यवस्थेत उपेक्षित, दुर्लक्षितांचा मोठा आधार होते. राऊळांच्या या अस्पृश्यांच्या उध्दार कार्यामुळे सनातनी लोक रिध्दपूरात यायला देखील कचरत असत.

अशाप्रकारे श्रीगोविंदप्रभु विषयक साहित्यात या जननायकाच्या जननिष्ठेच्या प्रसादखुणा जागोजागी उमटल्या आहेत.

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. श्रीगोविंदप्रभुचरित्र संपा दाँ. वि. भि. कोलते
2. महानुभावांचा इतिहास - श्री मुरलीधर महानुभावभास्वी कोळपकर
3. महानुभावीय मराठी वाङ्मय - दाँ. य. खु. देशपांडे
4. मराठी वाङ्मय इतिहास खंड १-दाँ. अ. गो. तुळपुळे
5. ऋध्दिपूर वर्णन - पंडित नारायणव्यास बहाळिये.
6. श्रीगोविंदप्रभुविषयक साहित्य शोध आणि समिक्षा - दाँ. अ. वा. आवलगावकर
7. धर्मसंप्रदाय आणि मध्ययुगीन मराठी वाङ्मय – र.वा. मंजरकर

आधार रिसर्च सिरीज : सायन्स अँन्ड सोशल सायन्स

राज्यशास्त्र

भौतिकशास्त्र

लायब्ररी सायन्स

सोशल वर्क

इतिहास

संस्कृत

गृहअर्थशास्त्र

संगीत

मानसशास्त्र

शिक्षणशास्त्र

शारीरिक शिक्षण

वाणिज्य व व्यवस्थापन

सहकार

मानसशास्त्र

मराठी

गणित

कायदा

समाजशास्त्र

रसायनशास्त्र

अर्थशास्त्र

ऊर्दू

पर्यावरणशास्त्र

संगणकशास्त्र

भूगोल

तर्कशास्त्र

मुख्य संपादक - प्रा. विराग गावंडे, मो. ९५९५५६०२

Aadhar Publication
New Hanuman Nagar, Infront of Pathyapustak Mandal,
Behind VMV College, Amravati - 444604
Email - aadharpublication@gmail.com, M.: 9595560278

ISSN : 2278-

स्त्री
• प्रतिमा आणि वास्तव
• छवि और यथार्थ

मुख्य संपादक



Women : Image and Reality



स्त्री :
प्रतिमा आणि वास्तव
छवि और यथार्थ
Image and Reality

• मुख्य संपादक
डॉ. सतीश पावडे
• मुख्य सह संपादक
डॉ. निशा शेंडे
• कार्यकारी संपादक
डॉ. पंकज वानखेडे
• संपादक
प्रा. दीपक वानखेडे
डॉ. मंदा सांडुरकर
• सह संपादक
प्रा. प्रसेनजीत तेलंग
• मुखपृष्ठ
किशोर इगळे, नागपूर
• रेखाचित्रे
सी.डी. शिवणकर
किशोर इगळे

• प्रकाशिका
सौ. संध्या राजेश बाहे
पायगुण प्रकाशन,
सराफ ले-आऊट, कलोतीनगर, अमरावती
भ्रमणध्वनी: ९२२५२३३८००, ९२२५२२३८००
• मुद्रक
राजेश बाहे
शशी प्रिंटर्स
सराफ ले-आऊट, कलोतीनगर, अमरावती
• प्रथमावृत्ती:
२३ सप्टेंबर २०१७

Women : Image and Reality
Editor: Dr. Satish Pawade
ISBN: 978-81-89839-99-4

© डॉ. सतीश पावडे

• मुल्य : पाचशे रूपये

या पुस्तकात प्रसिद्ध झालेल्या विचारांशी संपादक सहमतच असेल असे नाही. लेखातील मते, आशय, टिप्पणी आदि सदर्भ या संदर्भातील सर्व अधिकारी सर्वस्वी त्या त्या लेखकाची असेल.

ISBN: 978-81-89839-99-4

अनुक्रमणिका

१	'इदा' तील स्त्री आणि प्रतिमा	डॉ. सतीश पावडे /७
२	स्त्रीवादी कादंबरी प्रतिमा आणि वास्तव	डॉ. निशा शेंडे/१०
३	[illegible] स्त्री प्रतिमा	प्रा. डॉ. सुशीला धाबे /१२
४	[illegible] स्त्री प्रतिमा	डॉ.किशोर उत्तमराव राऊत/१५
५	[illegible] स्त्री-प्रतिमा एक शोध	प्रा. डॉ. पूनम रा. अभ्यंकर/१८
६	[illegible] स्त्री प्रतिमा	डॉ. वर्षा चिखले/२१
७	[illegible] स्त्री प्रतिमा	प्रा.डॉ.ममता इंगोले (महल्ले)/२३
८	[illegible] स्त्री प्रतिमा	प्रा. मंदाकिनी मेश्राम/२७
९	[illegible] स्त्री प्रतिमा	प्रा. डॉ. गजानन गोपाळराव हेरोळे/२९
१०	[illegible] स्त्री प्रतिमा एक आकलन	डॉ. कल्पना अं. मेहरे/३१
११	[illegible] स्त्री प्रतिमा चित्रण	प्रा. डॉ. अरूणा वाडेकर/३४
१२	स्त्री प्रतिमा व दलित साहित्य	डॉ. मालिका विवेक आबणे/३८
१३	[illegible] स्त्री प्रतिमा	प्रा. प्रभाकर जे. जामूळे/४०
१४	[illegible] साहित्यावरील स्त्रीवादाचा प्रभाव	प्रा.डॉ. अविनाश रा. धोबे/४३
१५	[illegible] चित्रपटातील शांताबाईची स्त्री प्रतिमा	प्रा. डॉ. रेखा वानखडे/४६
१६	[illegible] साहित्यातील ग्रेसगाथा स्त्री स्वातंत्र्याचा जाहीरनामा	प्रा. डॉ. गणेश क. टाले/४८
१७	[illegible] स्त्रीरूपे	डॉ. प्रवीण बनसोड/५१
१८	१८५० ते १९५० या कालखंडातील स्त्रियांच्या साहित्यातील स्वजाणीव	प्रा.डॉ. वंदना मोयर/५३
१९	मराठी मालिकातील स्त्री प्रतिमा	डॉ. भूमिका गो. वानखडे/५५
२०	अनिल बर्वे लिखित हमिदाबाईची कोठी या नाटकातील स्त्री प्रतिमा	डॉ. मिनल खेरडे/प्रा. रजनी गजबे/५७
२१	इतिहास आणि स्त्री प्रतीमा	डॉ. स्मिता वानखेडे/६०
२२	झोपडपट्टीतील स्त्री : प्रतिमा आणि वास्तव	प्रा. डॉ. सौ. वनश्री मु. देशपांडे/६४
२३	स्त्री प्रतिमा - संकल्पना व स्वरूप आणि वास्तव	डॉ.दीपाली प्र. गावंडे/६९
२४	लोकसाहित्यामधील स्त्रीलोकगीतातील स्त्री प्रतिमा	डॉ.सिद्धार्थ भगत/७३
२५	बोलगा से गंगा मधील स्त्री प्रतिमा	डॉ.वैशाली बोदेले /७६
२६	बुद्ध, फुले आंबेडकरवादी विचार प्रणित रंगभूमी आणि स्त्रीवादी चळवळ	प्रा.पी.व्ही.गावंडे/७९
२७	मध्यकालीन भारतातील जनानखान्यातील स्त्री : प्रतिमा व वास्तव	प्रा.के.ओ. जिरापुरे/८४
२८	धर्मग्रंथातील स्त्री प्रतिमा	डॉ. रोहिणी उ. देशमुख/८८
२९	आदिवासी स्त्री आणि वास्तव	डॉ. मंगला दि. तांबेकर/९२
३०	पश्चिम विदर्भातील माळी स्त्रियांची प्रतिमा: समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. अनिल ठाकरे/९५
३१	ताराबाई शिंदे कृत स्त्री प्रतिमेची चिकित्सा	प्रा. मुकेश भा. सरदार/९८
३२	शेतकरी स्त्री : प्रतिमेचे वास्तव	प्रा. सुशिला मळसणे/१००
३३	चित्रपटातील स्त्री प्रतिमा	
३४	समकालीन समाजातील स्त्री प्रतिमेची ताराबाई शिंदे यांनी केलेली चिकीत्सा :- एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	सुयोधम देशमुख /१०३
	स्त्रीवादी साहित्य- स्त्रियांच्या आत्मचरित्राची परंपरा	प्रा. रोशनी एस. वैस/१०५

ISBN: 978-81-89839-99-4

ग्रामीण कादंबरीतील स्त्री जीवन चित्रण

डॉ. कल्पना ज्ञा. मेहेर
मराठी विभाग प्रमुख
नारायणराव गाणा महाविद्यालय, बड़नेरा (रेल्वे)
जि. अमरावती मो. न. ९९२२९८४३२६

आपल्या घरासाठी, घरातल्या [illegible] आणि जगण्यासाठी अहोरात्र [illegible] स्त्री ग्रामीण कादंबरीकारांनी मराठी [illegible] काळापासून कशी रेखाटली आहे, याचा [illegible] पाहून येते की, कमालेकर यांची बळीबा [illegible] याची काळ तर मोठा कठीण आला [illegible] यांची शिराजी पाटील (१९०३) [illegible] काही हाताला लागत नाही. बळीबा [illegible] या दोन कादंबऱ्यांमागे म. फुल्यांच्या [illegible] काळ हीच या कादंबऱ्यांमागची प्रेरणा [illegible] आहेत. ग्रामीण स्त्री व्यक्तिरेखा म्हणून [illegible] या व्यक्तिरेखा उठावदार वाटत नाहीत. [illegible] जाणिवेतून या कादंबऱ्या जन्मल्या आहेत.

[illegible] अवघ्या पाव शतक मराठी कादंबरी ग्रामीण [illegible] परंपरेमुळे बहरली नाही. अवघ्या छोट्या [illegible] उदयोन्मुख सुरू होते त्यापासून ग्रामीण भाग [illegible] कादंबरीवर रंजनवादाचा प्रभाव होता. [illegible] कादंबरी म. गांधीच्या ग्रामोद्धाराच्या प्रेरणेतून [illegible] कादंबऱ्यांच्या तुलनेत रामतनय यांची [illegible] विशेष लक्षात राहते. या कादंबरीमागे [illegible] चळवळीचा प्रभाव असून ही कादंबरी वैचारिक [illegible] या कादंबरीची नायिका मंजुळा हिचे लग्न [illegible] झाले. शीर्षस्थानी मंजुळा ठेवून [illegible] चळवळींना ही कादंबरी अधिक

[illegible] कादंबरीकार असा ज्यांचा गौरव झाला असे [illegible] दिवस जातील (१९२५) कादंबरीत [illegible] शोषणातून उठून पोटासाठी मुंबईत [illegible] आलेल्या कामगिकांना दाखवले. तो व्यसनी बनतो. [illegible] या परिस्थितीत साबाजी या स्त्री लंपट [illegible] पहिल्या आवाजी बायको रखुमा संसार ओढायचा प्रयत्न करते. यातील रखुमाची व्यक्तिरेखा मनावर ठसते. पण कादंबरीत शहरी झोपडपट्टी जीवनाचेच चित्रण प्रामुख्याने दिसून येते.

याच काळातील एक महत्त्वाची कादंबरी म्हणून साने गुरुजींच्या 'श्यामची आई' (१९३५) चा उल्लेख करावा लागतो. या निमित्ताने एक भारतीय आदर्श मातेची व्यक्तिरेखा साने गुरुजींनी वाचकांपुढे मांडली. पालघरसारख्या खेड्यातील ब्राह्मण कुटुंबातील एका संस्कारशील आईची मूर्ती घडविण्यात ही कादंबरी यशस्वी ठरली आहे.

प्रारंभीच्या कादंबऱ्यांतून ग्रामीण जीवनातील स्त्री चित्रण पत्नी, बहीण, विधवा, स्त्री, आई अशा पैलू झालेले आढळते. पांढरपेशी संस्कार आणि त्या संस्कारातून निर्माण झालेली साहित्य परंपरा यांच्या प्रभावातून १९४० पर्यंतची मराठी ग्रामीण कादंबरी मुक्त झालेली नाही. हे कटुसत्य आहे. कादंबरीतील स्त्रीजीवन चित्रण ही याला अपवाद नाही.

१९४० ते १९६० या दोन दशकातील मराठी कादंबऱ्यांच्या वाटचालीचा विचार करता र. वा. दिघेंची पाणकळा (१९३९), सराई (१९४३), रानजाई (१९४६), आई आहे शेतात (१९५६), पड रे पाण्या (१९५८), कार्तिकी (१९६६), सोनकी (१९७८) प्रसिद्ध झाल्या. मराठी ग्रामीण कादंबरीच्या भवितव्याच्या दृष्टीने पाहता र. वा. दिघेंची कामगिरी ऐतिहासिकच म्हणावी लागते. या कालखंडातील पहिल्या दशकातील मराठी ग्रामीण कादंबरीकार जसे र. वा. दिघे, ग. ल. ठोकळ, म. भा. भोसले यांना प्रत्यक्ष ग्रामीण जीवनाचा अनुभव होता पण त्यांच्यावर पांढरपेशा साहित्य परंपरेचे संस्कार होते. त्यांच्या कादंबऱ्यातील स्त्री चित्रणातून अभिव्यक्त झालेले नातेसंबंध तसेच सामाजिक विशिष्ट स्तरातील स्त्री जीवन, पुरुषी अहंकाराच्या बळी पडलेली स्त्री यांची चित्रणे आली आहेत. बहुसंख्य लेखकांना कादंबरीतील स्त्री व्यक्तिरेखा ठळकपणे ग्रामीण म्हणून उभी करता आलेली दिसत नाही. त्या ग्रामीण स्त्रिया वाटत नाहीत.

१९५० ते १९६० या दशकातील प्रारंभी प्रसिद्ध झालेली विभावरी शिरूरकरांच्या बळी तीन चांगुणा मानावर ठरते. १९४५ ते ६० हा काळ मराठी नवसाहित्याचा ओळखला जातो. या काळातील

ISBN: 978-81-89839-99-4

श्री. ना. पेंडसे यांच्या इतर कादंबऱ्यात अनेक अर्थाने महत्त्वाची कादंबरी रथचक्र वाटते. गो. नी. दांडेकरांची शितू, पडघवली, पूर्णामाईची लेकरं, जैत रे जैत, व्यंकटेश माडगूळकरांची बनगरवाडी या कादंबऱ्यातील स्त्री व्यक्तिरेखा मनावर ठसते. याच काळात अण्णाभाऊ साठेच्याही कादंबऱ्या लोकप्रिय ठरल्या आहेत.

१९६० ते १९८० या कालखंडात अण्णाभाऊ साठेनंतर उद्धव शेळके, शंकर पाटील, हमीद दलवाई, रणजित देसाई, महादेव मोरे, रा. रं. बोराडे, आनंद यादव, ना. धो. महानोर, वासुदेव मुलाटे, नागनाथ कोत्तापल्ले, सदाशिव पठारे, वि. ज्यं. खानोलकर, जयवंत दळवी, शंकरराव खरात, उत्तम बंडू तुपे, नामदेव ढसाळ, इ. कादंबरी लेखकांनी लिहिलेल्या कादंबऱ्यांचा विचार करावा लागतो.

१९६० नंतरच्या पहिल्या दशकात धग (उद्धव शेळके), टारफुला (शंकर पाटील), इंधन (हमीद दलवाई) या कादंबऱ्या लक्षणीय ठरतात. तसेच या कादंबऱ्यातील स्त्री चित्रणेही जिवंत वास्तवात उतरली आहेत. १९७० ते १९८० या दशकात पाचोळा (रा. रं. बोराडे), गोतावळा (आनंद यादव), गांधारी (ना. धो. महानोर), रैत (महादेव मोरे), अगीन फुले (चंद्रकुमार नलगे), मी आणि माझा बाप (द. ता. भोसले), दूर गेलेले घर (लक्ष्मीकांत तांबोळी), जोगीण (सुभाष भेंडे), उभे धागे आडवे धागे (ग. दि. माडगुळकर), भंडारवाडी (बाजीराव पाटील), इ. कादंबऱ्या विशेष महत्त्वाच्या ठरल्या.

१९७० ते १९८० या दशकात मराठी ग्रामीण कादंबरी आशय आणि अभिव्यक्तीच्या या दोन्ही अंगांनी अधिक समृद्ध झालेली आहे.

ग्रामीण कादंबरीत स्त्रीची आई, मुलगी, पत्नी, सून, सासू, भावजय अशा वेगवेगळ्या नातेसंबंधातील तिची वेगवेगळी रूपे तसेच उपेक्षित परित्यक्ता, विधवा, वेश्या, मुरळी, देवदासी, तमाशा कलावंतीण, बलात्कारिता इ. सामाजिकदृष्ट्या अव्हेरलेली तिची विविध रूपे आलेली आहे. ग्रामीण जीवन पारंपारिक वळणाचे असते. त्यामुळे स्त्रीच्या वाट्याला उपेक्षित जगणे येते. पुरुषी अहंकारात वाढी पावलेल्या स्वाभिमानाचे गावगाड्याच्या अनुषंगाने अस्पृश्य घटके, डाकर, गावोगी, भिल्ल, कैकाडी, मांग, कातकरी आदी विविध जाती जमातींमधील स्त्रियांचे चित्रण ग्रामीण कादंबरीत आले आहे. सांस्कृतिक स्त्रीची व्यक्तिनिष्ठ स्वतंत्रता ग्रामीण कादंबरीत आढळत नाही. परंपरा भेदामुळे गावचे सर्वोच्च गावकीकडून देवाघेवा करणारी ग्रामीण स्त्री ग्रामीण कादंबरीत अनेक विविध रूपात कादंबरीकारी रंगवली दिसते.

गावचे ग्रामीण कादंबरीत नैतिक मूल्यांची चित्रणे अधिक आढळतात. ग्रामीण समुदायजीवन स्वीकार हा गावचा मुलबाळ, शेतभात यानंच आपले मुख्य व्यवसाय आहेत. ही म्हणजे गावचा. मुलबाळ ही सर्व सुखासमाधानात असतील तरच घराला घरपण अशी तिची धारणा असते. स्त्रीच्या या भावनांचे चित्रण मराठी ग्रामीण कादंबरीने समरसून केलेले आढळते. [illegible] स्त्रीच्या ठिकाणी असते. म्हणून तर रथचक्र मधील नायिकेला संन्यासी झालेला नवरा परत आल्यावर वाटते की, चला, या घराचा मालक आला. आपल्या डोकीवरची काळजी गेली. यावरून नवरा म्हणजे घराचा मालक ही भावना स्त्रीच्या ठायी रुजलेली असल्याचे लक्षात येते. काहीही करून नवरा घरी राहावा. त्यात जमेल तेवढा कामधंदा करावा. त्याकरिता प्रसंगी आपल्याला दोन कष्ट पडले तरी काळजी नाही. पण त्यानं संसाराच्या गाड्याला जुपून चालावं हीच संसारशिक्षणी सामान्य स्त्रीची अपेक्षा पण यामध्ये अपवाद आले की धग आणि पाचोळा या कादंबरीत हे वास्तव आहे.

ग्रामीण स्त्रीला नवरा हा मोठा आधार वाटत असतो. तो तिच्या कुंकवाचा धनी असतो. तिला आपण साधवा याचा मोठा अभिमान आणि आनंद असतो हा कुंकवाचा धनी मराठी ग्रामीण कादंबरीत ठिकठिकाणी भेटत राहातो. तो ग्रामीण स्त्रीच्या भाव विश्वाचा, केंद्रबिंदू असल्यामुळे त्यांच्या अस्तित्वाचे भान कादंबरीकार विविध प्रसंगातून आणून देतात.

पतिव्रत्ता मूल्य स्त्रीच्या भावजीवनाचा एक भाग बनून राहिलेले आहे. ग्रामीण कादंबरीत या मूल्याचे दर्शन कधी मुख्य कथानकाचा भाग म्हणून कांदबरीकारांने घडविले आहे तर कधी उपकथानकाच्या अंगाने त्याचे प्रत्यंतर आणून दिले आहे. नवराजबळ असो नाही तर तो बाहेरगावी असो, कधी तो परस्त्रीच्या नादाला लागलेला असो वा नाकर्ता असो, त्याच्या ठायीची स्त्रीची श्रद्धा विचलित होताना दिसत नाही. उदा. व्यंकटेश माडगूळकरांच्या पुढचे पाऊल मधील रखमा, नामदेव ढसाळ, हाडकी हाडवळा मधील बायजा इतकेच नाही तर नवरा नाकर्ता का असेना तो उपाशी झोपला तर ती ही उपाशीच राहते. उदा. पाचोळा.

वात्सल्य ही जैविक भावना आहे. स्त्री ही प्रत्यक्ष जननी जन्मदात्री असल्यानेच तिच्या पोटी या प्रेरणांची तीव्रता पुरूषांपेक्षा अधिक असते. मुलापेक्षा मुलगीकडे तिच्या प्रेमाचे, वात्सल्याचे माप झुकते असते. हा पुरूषसत्ताक समाजव्यवस्थेचा प्रभाव आहे. रथचक्रची नायिका मोठा मुलगा हवा तसा घडवता येत नाही. हे पाहुन धाकट्या मुलाच्या शिक्षणावर भिस्त ठेवते. मुलासाठी घर सोडते. अपवादादाखल गो. नी. दांडेकरांची पडघवली मधील अंबुबहिनीला आपले सारसर्वस्व पडघवली वाटते. तसेच र. वा. दिघे यांच्या आई आहे शेतात कादंबरीतील जिजा ला शेतच आपली आई वाटते.

ग्रामीण कादंबरीतील स्त्री चित्रणावर लेखकांच्या परंपरागत दृष्टिकोनाचा

ISBN: 978-81-89839-99-4

श्रध्दामूल्यांना आणि माणूस म्हणून त्या भावनांना ठेच पोहोचली की ती विरोधाचा पवित्रा घेते. अशावेळी तिच्या मनाविरूध्द काही घटित घडल्यावर विरोधाचे संघर्षाचे जे स्फुलिंग तिच्यामध्ये पेटते ते तिच्यातील पारंपारिक संस्काराचे द्योतक आहे असे म्हणावे लागते. याशिवाय एक माणूस म्हणून ही तिची कृतीउकती विचारात घ्यावी लागते. अशा परीस्थितीजन्य संघर्षशील पवित्रा घेणाऱ्या स्त्रियांची चित्रणे मराठीतील काही ठळक ग्रामीण कादंबरीत केलेली आढळून येतात.

संदर्भ ग्रंथ

१) ग्रामीण साहित्य एक चिंतन - द. ता. भोसले
२) ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि शोध - नागनाथ कोत्तापल्ले
३) मराठी ग्रामीण कादंबरी - रवींद्र ठाकूर
४) ग्रामीण कादंबरीतील स्त्री - डॉ. मोहन पाटील
५) साहित्य आणि सामाजिक संदर्भ - डॉ. अंजली सोमण
६) ग्रामीण साहित्य :चिंतन आणि चर्चा - डॉ. वासुदेव मुलाटे

◆◆◆



ISBN: 978-81-89839-99-4

• विनम्र अभिवादन •



“

कुठलाच पर्याय न निवडणे, गप्प राहणे,
किंवा पुटपुटणे अस्पष्ट शब्दांतून
किंवा सोपा-सुरक्षित मार्ग शोधून काढणे
विरोध करण्यासाठी. हे सगळं रानटीपणाच्या बाजुने
उभे रहाण्याशिवाय दुसरे काहीच नाही !

”

– विद्रोही पत्रकार
स्मृतिशेष गौरी लंकेश

मोबा. ९२२६२ ३३८००
९२२५२ ३३८००

Women: Image and Reality / ISBN:978-81-89839-99-4

मराठी साहित्य व मानवी मूल्ये

संपादक
डॉ. गणेशचंद्र शिंदे
डॉ. संजय जगताप
डॉ. विश्वाधार देशमुख
डॉ. संगीता घुगे

मराठी साहित्य व मानवी मूल्ये

संपादक
डॉ. गणेशचंद्र शिंदे
डॉ. संजय जगताप
डॉ. विश्वाधार देशमुख
डॉ. संगीता पुरी

परिकल्पना

© सम्पादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-95104-09-8
मूल्य : ₹ 995

श्रद्धेय डॉ. शंकरराव जी चव्हाण साहेब यांना समर्पित

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ल, दिल्ली से टाइप सेट होकर
कम्पीजट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

डॉ. स्नेहा महावरे गोवा, डॉ. अनंत राऊत नांदेड, डॉ. प्रतिभा कोकाटे नागपूर, डॉ. राजेंद्र राऊत, डॉ. कल्पना मेहरे अमरावती, डॉ. हंसराज जाधव पैठण, डॉ. पंडित शिंदे, डॉ कविता सोनकांबळे, डॉ. भारत भदाडे, डॉ. राजेश्वर दुधकनाळे, डॉ. व्यंकटी पावडे, डॉ. साहेबराव शिंदे, डॉ. संभाजी जाधव, डॉ. बालासाहेब काळे, डॉ. माधव हैबतकर, डॉ. प्रल्हाद भोपे, डॉ वृंदा देशपांडे यासारख्या महत्त्वपूर्ण अभ्यासक संशोधकांनी आपले शोध निबंध या ग्रंथासाठी दिलेले आहेत. एकुण 74 वेगवेगळ्या विषयावर आलेल्या शोधनिबंधातून मानवी मूल्यांचा विचार विविध संदर्भ देऊन प्रकट झाला आहे. मानवी मूल्य आणि मराठी साहित्य असे सुंदर नाव या ग्रंथाला प्राप्त झाले आहे. या ग्रंथाचे संपादक महाविद्यालयाचे आदरणीय प्राचार्य डॉ. गणेशचंद्र शिंदे, मराठी विभाग प्रमुख डॉ. संजय जगताप, डॉ. विश्वाधार देशमुख, डॉ. संगीता घुगे यांनी या ग्रंथाचे सुरेख अशा प्रकारचे संपादन केले आहे. मानवी मूल्यांच्या जडणघडणीत महाविद्यालयाचा खारीचा वाटा असावा हाच प्रामाणिक उद्देश ठेवून हा ग्रंथ आपल्यासमोर सादर करीत आहोत. या ग्रंथाचे आपण निश्चितपणे स्वागत कराल, अशी आशा करतो. हा ग्रंथ विद्यार्थी, शिक्षक, प्राध्यापक, संशोधक, अभ्यासक यांना भविष्यात संदर्भ ग्रंथ म्हणून महत्त्वपूर्ण असेल अशी आशा व्यक्त करतो.

–संपादक

अनुक्रम

1 [illegible] आणि मानवी मूल्ये 13
[illegible]

2 [illegible] समाजघडणीत साहित्याची भूमिका 24
[illegible]

3 [illegible] प्रकारातून व्यक्त होणारी मानवी मूल्ये 38
[illegible]

4 [illegible] मूल्य विधान 47
[illegible]

5 [illegible] मानवी मूल्ये 55
[illegible]

6 [illegible] समाजरचनेसाठी विज्ञान साहित्याची भूमिका 59
[illegible]

7 [illegible] मानवी मूल्ये 64
[illegible]

8 [illegible] व्यक्त होणारी जीवनमूल्ये 68
[illegible]

9 [illegible] उपस्थित करणारी समकालीन मराठी कविता 74
[illegible]

10 [illegible] आणि मानवी मूल्ये 83
[illegible]

11 [illegible] आत्मचरित्रातील मानवी मूल्ये 91
[illegible]

12 [illegible] ललित साहित्यातील मानवी मूल्ये 99
[illegible]

९. लोकप्रशासनीय भारतीय योगदान पुरुषे

डॉ. ...

...

...

मानवी मूल्य असे म्हणतात. लीळाचरित्र या ग्रंथात 1) सामाजिक मूल्ये-अहिंसा, कर्तव्य, न्याय 2) मानवी मूल्ये-1) नैतिक-न्याय, इमानदारी 2) अध्यात्मिक-शांती, अहिंसा 3) भौतिक मूल्ये-भोजन, मकान, वस्त्र याशिवाय अहिंसा, सत्य, संवेदनशीलता, स्वातंत्र्य, समता, न्याय, प्रामाणिकपणा, क्षमा, ध्येय, विवेकनिष्ठा, आत्मविश्वास, शांती, नम्रता, पवित्रता, एकाग्रता, करुणा, सहानुभूती, नीटनेटकेपणा, स्वच्छता, आत्मशोधन, शिस्त, स्वाभिमान, वैज्ञानिक दृष्टिकोन अशी कितीतरी मूल्य आहेत.

मानवतेचे महान पुजारी असलेल्या सर्वज्ञ श्री चक्रधरांनी वीड जवळच्या कुटल्याच गावात चर्मकारांच्या हातचा विडा खाऊन त्याला स्थिती दिली. ज्याकाळात समाज हा जातीभेदाने अत्यंत हीन पातळीवर पोहोचला होता, माणसाचे माणूसपण पशुपेक्षाही हीन पातळीवर पोहोचले होते. त्याकाळात चर्मकाराची ब्राह्मणवर्गाने त्याची जात माहित नव्हती तोपर्यंत पूजा केली. 'चर्मकार भेटी' या लीळेवरून श्री चक्रधरांना माणसामाणसात भेद मान्य नव्हता, कर्मेयांडाळा पासी जाती चांडाळ चांग हे श्री चक्रधरांचे सूत्र होते. त्यांनी समाजात सर्व प्रकारची समता प्रस्थापित केली.

श्री चक्रधर हे कृतिशील समाजसुधारक होते. त्यांनी आपल्याकृतीतून जातीभेदाच्या अभेद्य भिंतींना तडा देण्याचे महान कार्य केले. त्यांनी स्थापन केलेल्या पंथात सर्वजातीची लोक होती. समाजातील सामाजिक विषमतेची मूळ समूळ उकल्ड टाकण्यासाठी त्यांनी सातत्याने प्रयत्न केला. मातंगाच्या हातचा लाडू ते मंदिरातील ब्राह्मणांना प्रसाद म्हणून देतात. स्वामी एकदा जोगेश्वरीच्या मंदिरात असताना त्यांना भेटण्यासाठी तीन मातंग आले होते. त्यापैकी एकाने स्वामीचे दर्शन घेण्यासाठी मंदिरासमोर उभे राहण्याचे ठरवले. ही गोष्ट स्वामींना आऊसेने सांगितली. स्वामींनी त्या मातंगाची परीक्षा घेण्याचे ठरवले. त्यांनी आऊसे करवी प्रसाद म्हणून लाडू दिले व त्यांना घरी जाण्यास सांगितले आणि ती आत निघून गेली. परंतु तो मातंग मात्र तिथेच स्वामींच्या भेटीसाठी उभा होता. आऊसा त्यांच्यावर रागावली. परंतु तो म्हणाला आज माझा प्राण गेला तरी चालेल परंतु मी माझ्या देवाला वंचितल्या शिवाय इथून हालणार नाही. त्याच्या अढळ श्रद्धा व भक्तीने स्वामी गहिवरलेत व त्याची भेट घेण्यास मंदिराबाहेर आलेत. स्वामींना पाहून तो मातंग खूप आनंदी झाला. त्याला कळत नव्हते की आपण स्वामींची पूजा कशी करावी. म्हणून त्याने स्वामींनी काही वेळा पूर्वी पाठवलेले प्रसादाचे लाडूच स्वामींना अर्पण केले. त्या लाडूचा प्रसाद स्वामींनी मंदीरातील ब्राह्मणांना देऊन समाजात समतेचे सामाजिक मूल्य रुजविले.

श्री चक्रधरांनी जगा, जगू द्या आणि जगवा चा मूलमंत्र समाजाला दिला. 'सर्वांचे रक्षण' या लीळेत श्री क्षेत्र सावरवडी येथे सशाला जीवनदान दिले. येथे मानव आणि मानवेतर जीवाला जगण्याचा अधिकार, स्वातंत्र्य आहे. पारध्यांचा पेजेचा तर मरणाच्या भीतीने सर्वज्ञांच्या मांडीखाली लपतो. त्यावेळी ससा मागणाऱ्या पारध्यांना श्री चक्रधर स्वामी म्हणतात येथे शरण आलेल्या काही मरण असे त्या सशाने तुम्हाला

आणि मांस दिला नाही. तुमचे कोणीच फेडत नाही, सिद्धांत नाही तरी तुम्ही त्याचा मारू शकत नाही. स्वामिनी पारध्यांना हिंसेपासून परावृत्त केले. मुंगीचे ही वैर न घ्यावे, आपलेच नी पाप मुंगी सांड न होआवी असे सर्वज्ञ सांगतात. त्यांनी समाजात शांतता, प्रेम, स्नेह निर्माण केला. अहिंसेचे मूल्य रुजवले.

श्री चक्रधर स्वामींनी स्त्री पुरुष समानतेचा पुरस्कार केला. त्याकाळात स्त्रियांना दुय्यम वागणूक दिली जात होती. त्यांना बरोबरीने स्थान दिले. सारंग पंडितांच्या मनातील स्त्री द्वेष दूर करताना स्वामी त्याला म्हणतात तुझा तो जीव आणि स्त्रियांचा काय जीव जसे? स्त्रियांचा आणि पुरुषांचा एकच परमेश्वर आहे. दोघांनाही जीव आहे. एकाच परमात्म्याची निर्मिती आहे. हा भेदाभेद पाळण्याचा अधिकार तुला कोणी दिला? तू जर असे केलेस तर तुला पाप लागेल. तुझे ज्ञान कधीच पूर्णत्वास जाणार नाही. तू आज मोठे पाप केले आहेस. त्याची शिक्षा तुला झालीच पाहिजे. सारंग पंडित खजील झाला. स्वामींना म्हणाला, 'माझ्याकडून महापाप झाले. आपण जो दंड मला द्याल तो मी भोगायला तयार आहे.' स्वामी त्याला म्हणतात तुला पश्चाताप झाला हे चांगले आहे. पण तू मोठा गुन्हा केला. म्हणून तू गंगेत (गोदावरीत) जाऊन उभा रहा. या प्रसंगातून स्वामींनी स्त्री पुरुष समतेचे मूल्ये पटवून दिले आहे.

'उकिरडा पहुडु' या लीळेतून सर्वज्ञ श्री चक्रधरांनी समाजाला स्वच्छतेचे मूल्य आपल्याकृतीतून स्पष्ट केले. गावातील रोगराई दूर करण्यासाठी गाव स्वच्छ करणे आवश्यक होते. एका कुत्रीने थंडीच्या दिवसात आपले पिल्ले झोपण्यासाठी उकीरड्यावर जो खड्डा केलेला असतो. त्यात स्वामी झोपतात. एक स्त्री पहाटेच्या वेळी उकिरड्यावर राख टाकते. तेव्हा श्री चक्रधर अंगावरील धूळ झटकतात. उकिरडा व्याला. उकिरड्याने माणसाला जन्म दिला म्हणून सर्व गाव तो संपूर्ण परिसर स्वच्छ करतात. ठिकठिकाणी मांडव घालतात. होमहवन होते. गावाची शांती करायची म्हणून गाव जेवण दिले जाते. यातून एकात्मता, स्वच्छता ही मूल्ये सर्वज्ञ रुजवितात.

'साधा मोदक विपलाणे' या लीळेतून श्री चक्रधरांनी कुठलेही कार्य करायचे असेल तर कार्याप्रती एकाग्रता व एकरूपता अत्यावश्यक असल्याचे सांगितले. 'राजाची मती अवस्थान' या लीळेतून सिंदेराणे हा राजाचा पाईक राजा राज्यभ्रष्ट झाल्यावर कोणाच्याही आश्रयाला गेला नाही. राजा जेव्हा पुन्हा सिंहासनावर बसला तेव्हा सिंदेराणे याला आणावयास पालखी, सैन्य पाठविले. स्वतः राजाने त्याचे स्वागत केले. त्याला अर्धराज्य देऊन सन्मानीत केले. यातून प्रामाणिकता, स्वामिनिष्ठा ही मूल्ये स्वामींनी रुजवलीत.

समाजाला सचेत करण्याचे कार्य श्री चक्रधरांनी केले. सप्तव्यसनांपासून दूर राहण्याची शिकवण दिली. मांस खाणे, दारू पिणे, जुगार खेळणे, हिंसा करणे, वेश्या गमन करणे आणि खोटे बोलणे ही सप्त व्यसने मनुष्याला पशुतुल्य बनवून त्याचा विनाश नाशीसा करतात. सुजान, सुशील चारित्र संपन्न युवक युवती निर्माण व्हाव्यात.

समाजाचे आधारस्तंभ म्हणून त्यांनी पुढे यावे ही स्वामींची इच्छा त्यांच्या तत्त्वज्ञानातून [illegible] येते. माणसाने सात्विक जीवन जगावे, मधुरभाषी असावे, प्रयत्नांची कास न सोडता [illegible] परमेश्वर स्मरण करावे आणि प्राणीमात्रांवर दया करावी, प्रेम करावे, परस्परांमध्ये [illegible] सलोख्याचे संबंध ठेवावे. आहार, आचार, विचार यातील सात्विकतेला महत्त्व दिले.

श्री चक्रधर स्वामींनी विटाळ चांडाळ मानणे त्याज्य होय. असे सुनीत [illegible] रजस्वला स्त्रीचा विटाळ मानणे ही चूकीचे आहे. विटाळाशीचा विटाळ मानायचा [illegible] आपल्या शरीरातून लाळ, शेंबूड, मल, मूत्र इत्यादी प्रवाह वाहत असतो. त्याचा [illegible] स्वतःच्या शरीराचा विटाळ का मानू नये? उमाईसा विटाळशी असल्यामुळे स्वामींना [illegible] दुरूनच नमस्कार केला. त्यावेळी आपल्या पायाचा अंगठा मुद्दाम तिच्या कपाळाला [illegible] त्यांनी विनोदाने म्हटले की उमाई माझ्या अंगठ्याला तू विटाळ का केलास? आता [illegible] काय गयेला न्याया लागेत? अशाप्रकारे त्यांनी विटाळ कल्पनेची ते थट्टा करून [illegible] दृष्टिकोन निर्माण केला.

'राजसुयी अग्रपूजा' (अग्रपूजेचा मान उत्तरार्ध 459) या लीळेत ज्ञान सर्व [illegible] असते हे जीवनमूल्य रुजविले आहे. द्विजगोरक्षण अद्‌भुत-गोपालक (पूर्वार्ध [illegible] कर्मश्रेष्ठ असल्याची जाणीव करून देतात. क्षमाशीलता (उत्तरार्ध 600) या [illegible] ज्ञानांकुश महात्म्याला त्रास देण्याचे ज्यांनी पाप केले. त्यांनी पश्चाताप केला [illegible] क्षमा केली. क्षमा करणे हे जीवन मूल्य या लीळेत आहे.

कला हे मानवी मूल्य रुजवितांना सर्व कलेचे, विद्येचे माहेर असणारे [illegible] कलाकारांच्या कला गुणांना मनापासून दाद देत असत. त्यांचा सन्मान करीत असत. श्री चक्रधर एके दिवशी चांगदेवाच्या देवळात गेले असता नृत्यांगना तिथे आली. नृत्यांगना व तिच्यासोबत चे सर्वजण स्वामींना वेधले. नृत्य करतांना नृत्यांगना [illegible] चुकली असता स्वामी हसले. तिला तिची चूक जाणवली. ती सर्वज्ञांना [illegible] जाणीवेविना कला पोरक्या झाल्या आहेत. 'गुफेचोर वीद्रावण' या लीळेतून बोपेवाईच्या गुफेतून चोर सर्व सामान घेऊन निघाला असता श्री चक्रधरांचे विराट रूप [illegible] गाठोळे तसेच टाकून चोर पळाला. यातुन चोरी करू नये. प्रत्येकाने प्रामाणिकपणे कष्ट करावे हे मूल्य ते रुजवितात.

सर्वज्ञ श्री चक्रधरांचा आचार विचार हा विश्वाचे कल्याण साधणारा आहे. विश्वशांती, विश्वबंधुत्व यावर आधारलेली त्यांची तत्वप्रणाली आहे. जागतिकरणाच्या आजच्या काळात मनुष्य भौतिक सुखाच्या मागे लागून अतिशय आत्मकेंद्रित [illegible] अशा परिस्थितीत श्री चक्रधरांच्या विचारांची आज समाजाला नितांत गरज आहे.

निष्कर्ष

1. लीळाचरित्र या आद्य मराठी बृहद् ग्रंथात मानवी जीवनमूल्ये ओतप्रोत भरलेली आहेत.

2. लीळा चरित्राचे चरित्र नायक श्री चक्रधर हे कृतीशील समाजसुधारक होते.
3. सर्वज्ञ श्री चक्रधरांना जीवोद्धाराणाचे व्यसन होते.
4. श्री चक्रधरांनी मराठी भाषेला धर्म भाषेचा दर्जा दिला.
5. श्री चक्रधरांनी परमेश्वर भक्तीचे गमक सांगून चोर सुखाचा, शांतीचा, प्रेमाचा मार्ग विश्वाला दाखविला.

संदर्भ

1. लीळाचरित्र, संपा. पुरुषोत्तम नागपूरे, ओंकार प्रकाशन, अमरावती.
2. लीळाचरित्र: संशोधन समीक्षा, डॉ. स्मिता ठाकरे, ओंकार प्रकाशन, अमरावती.
3. लीळाचरित्रातील समाजदर्शन-सुमन बेलवलकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई.
4. लीळाचरित्रातील स्त्री दर्शन, डॉ. सुशीला धावे, सुगम प्रकाशन, अमरावती.
5. [illegible] भोक्तिके, डॉ. राजेंद्र रंगराव राऊत, मेघा पब्लिशिंग हाऊस, अमरावती.
6. लीळाचरित्रातील कथनरूपे जननिष्ट समीक्षा, डॉ. राजेंद्र रंगराव राऊत, मेघा पब्लिशिंग हाऊस, अमरावती.

प
परिकल्पना
के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
मो. 9968084132, 7982062594
e-mail : parikalpana.delhi2016@gmail.com



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

On the occasion of Diamond Jubliee Year 2022-23

Shri Shanta Bhavan Education Society's

YESHWANT MAHAVIDYALAYA, NANDED

The Best College Award (2021) by SRTMU, Nanded

College with Potential for Excellence (CPE) Status Awarded by UGC

Re-accredited with 'A' Grade (3rd Cycle) by NAAC, Bengaluru

DST-FIST Sponsored College

A Two day Inter-lingual, International Conference

on

"ETHICS AND HUMAN VALUES THROUGH LITERATURE" (EHVTL-22)

16th and 17th December, 2022

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mrs./Mr. डॉ.कल्पना त्र्यंबक मेहरे

of **नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा**

has participated in the Two Day Inter-lingual, International Conference on "ETHICS AND HUMAN VALUES THROUGH LITERATURE" (EHVTL-22) jointly organized by **the Departments of English, Hindi, Marathi and Urdu, Yeshwant Mahavidyalaya, Nanded and SRTM University, Nanded** on December, 16th - 17th, 2022.

He /She has attended/ presented a paper entitled

लीळाचरित्रातील मानवी मूल्ये

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Organizing Secretary	Organizing Secretary	Organizing Secretary	Organizing Secretary	Convener & Chief Organizer
Dr. L. V. Padmaraju Rao	Dr. Sanjay Pakre	Dr. S. M. Durrani	Dr. Sonaji Jagtap	Dr. [illegible]
Head, Department of English	Head, Department of Hindi	Head, Department of Urdu	Head, Department of Marathi	Principal

जनता महाविद्यालय, मलकापूर शहर

- प्रमाणपत्र -

मानसी संभाजी- शेलार वर्ग/सन : प्रथम द्वितीय

या विद्यार्थीनीने/विद्यार्थ्याने महाविद्यालयीन वार्षिक

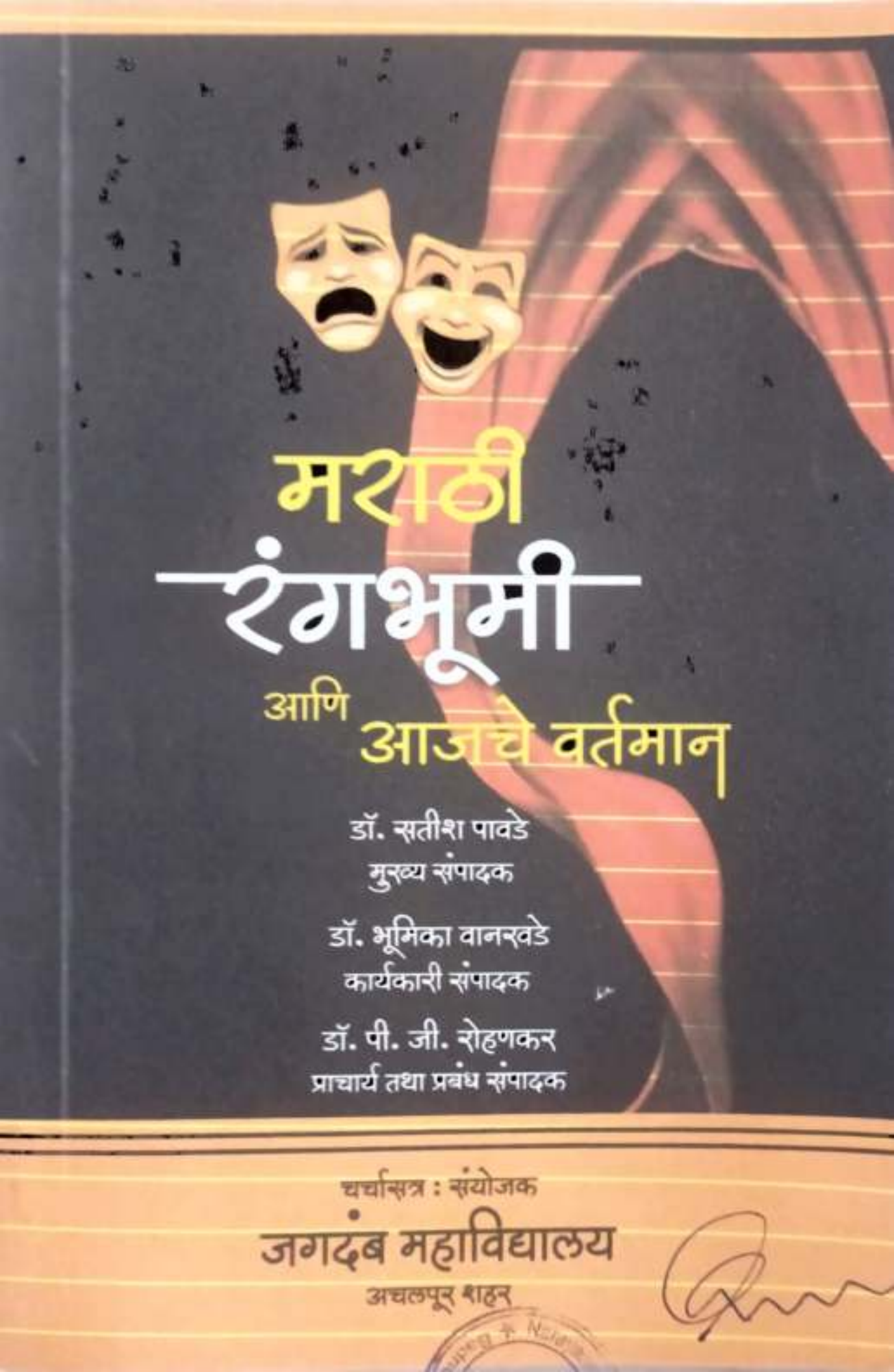
स्नेहसंमेलन २०२२

मध्ये सहभाग घेतला.

प्रा. डॉ. [illegible], प्रा. [illegible], प्रा. [illegible], प्रा. [illegible], प्रा. [illegible]

प्राचार्य

स्नेहसंमेलन प्रमुख



मराठी रंगभूमी आणि आजचे वर्तमान

डॉ. सतीश पावडे
मुख्य संपादक

डॉ. भूमिका वानरखडे
कार्यकारी संपादक

डॉ. पी. जी. रोहणकर
प्राचार्य तथा प्रबंध संपादक

चर्चासत्र : संयोजक

जगदंब महाविद्यालय

अचलपूर शहर





ईगल लीप प्रकाशन, पुणे

यशवंतराव चव्हाण जीवन व कार्य

संपादक : प्रा. डॉ. शरद वाघोळे
प्रा. डॉ. प्रमोद देवके

प्रकाशन आणि मुद्रक

संदेश दादाराव पहुळकर,
ईगल प्रिंटर्स अँड पब्लिशर प्रा.लि. पुणे
ऑफिस नंबर २८, विशाल रेसिडेन्सी, कासरवाडी पुणे
संपर्क : ८६०००७१६३४

ISBN : 978-81-957896-0-3

प्रथमावृत्ती :

२५ नोव्हेंबर २०२२

अक्षर मांडणी :

शिव पौळ, ईगल इन्फोमेडीया, पुणे



या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुननिर्मिती अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी – फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणूकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगी शिवाय करता येणार नाही. यासाठी सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

अनुक्रमणिका

अ.क्र	लेखकाचे नाव	शीर्षक	पा.नं
१.	प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील	प्रतिभासंपन्न राजकीय व्यक्तिमत्व – यशवंतराव चव्हाण	११
२	डॉ. गजानन संतोषराव कुबडे	यशवंतराव चव्हाण यांचे कृषी विषयक विचार	१७
३	डॉ कल्पना च्यं. मेहरे	यशवंतराव चव्हाण यांचे वाङ्मयीन कार्य	२२
४	प्रा. सुषमा सुरेश जाजु	यशवंतराव चव्हाणांचे शैक्षणिक कार्य	२७
५	डॉ. निलम छंगाणी	यशवंतराव चव्हाण यांचे महाराष्ट्राच्या विकासातील योगदान	३३
६	डॉ. मधुकर ताकतोडे	यशवंतराव चव्हाण यांचे आर्थिक विचार	४०
७	डॉ. दयाळू किसन राठोड	यशवंतराव बळवंतराव चव्हाण– महाराष्ट्राचे शिल्पकार	४६
८	प्रा.कु.पल्लवी र. देशमुख	यशवंतराव चव्हाण जीवन आणि सामाजिक कार्य	५५
९	डॉ. दीपक विजय जयस्वाल	यशवंतराव चव्हाण नीती संपन्न राजकारणी	५८
१०	प्रा.डॉ.गजानन गोपाळराव हेरोळे	यशवंतराव चव्हाणांची वैचारिक भूमिका	६४
११	डॉ. सुनील ए. राठोड	यशवंतराव बळवंतराव चव्हाण व मराठी साहित्य	६९
१२	प्रा.डॉ. प्रमोद दामोदर देवके	यशवंतराव चव्हाण यांचे सामाजिक व शैक्षणिक कार्य	७८

03 यशवंतराव चव्हाण यांचे वाङ्मयीन कार्य

डॉ कल्पना ज्यं. मेहरे
प्रमुख मराठी विभाग
नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जिल्हा अमरावती.
भ्रमणध्वनी ९१२२९४५३२६

प्रास्ताविक :

आधुनिक महाराष्ट्र राज्याचे शिल्पकार पहिले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हा यांनी भारताच्या स्वातंत्र लढ्यात सहभाग घेतला. त्यांनी काही काळ भारता उपप्रधानमंत्री, संरक्षणमंत्री म्हणून काम केले. उत्कृष्ट संसदपटू, उदारमवादी अभ्यासू, व्यक्तीम व म्हणून त्यांची ख्याती आहे. ते रसिक व साहित्यिकही होते अनेक कवी, संपादक आणि अनेक मराठी, हिंदी लेखकांशी त्यांचा निकटचा संबं होता. त्यांनी आपल्या लेखनात समाजवादी लोकशाहीचा पुरस्कार केला राजकारणाप्रमाणेच समाजकारण, साहित्य, कला इत्यादी क्षेत्रातही त्यांना विशेष र होता. त्यांनी मराठी भाषेतला राज्यभाषेचा दर्जा दिला मराठी सोबतच हिंदी, इंग्रज या भाषांचा पुरस्कार केला.

महाराष्ट्रराज्याचे पहिले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांच्या आधुनि महाराष्ट्राचे शिल्पकार म्हटले जाते. त्यांनी आधुनिक महाराष्ट्राच्या विकासाचा पाय घातला. त्यांनी हा पाया घातलतांना अनेक अंगानी राज्याच्या आणि देशाच्य विकासाचा विचार केला होता. तो काळ पारतंत्र्याचा होता. १९३१ मध्ये शाले शिक्षण घेत असताना तिरंगा फडकविल्याबद्दल त्यांना एक महिन्याच्या तुरुंगवासाच शिक्षा भोगावी लागली. या काळातील वाचनातून त्यांना गांधीवाद मार्क्सवादाच्या विचारांचा परिचय झाला. महाविद्यालयीन शिक्षण त्यांनी राजाराम महाविद्यालय कोल्हापूर येथे घेतले. कोल्हापूरचे वातावरण स्वातंत्र चळवळील पोषक होते. तेथेच ते स्वातंत्र्य चळवळीत सहभागी झाले. यशवंतराव चव्हाण यां स्वतःचे हे एक वैचारिक अधिष्ठान होते. निरंतर वाचन आणि अनुभव यातून त्यांच्य व्यक्तिम वाला वैचारिक अधिष्ठान प्राप्त झाले होते.

देशातला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर १९५६ ला भाषावार प्रांतरचना झाली राज्यकारभार करणे सोयीचे व्हावे आणि त्या त्या प्रांतिक भाषेत शिक्षण होता यावे व इतरही व्यवहार सुलभ पद्धतीने करता यावे हा त्या मागील हेतू होता. यशवंतराव चव्हाण यांनी १ मे १९६० ते १९ नोव्हेंबर १९६२ या काळात स्वातंत्र्य महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री म्हणून जबाबदारी पार पाडली. महाराष्ट्रराज्याची मराठी ही भाषा आहे यशवंतराव चव्हाण यांची मराठी ही मातृभाषा असून तिच्यावर त्यांचे अतिव प्रेम होते, अभिमान होता. पण त्यांचे हे मराठी भाषेविषयाचे प्रेम अतिशय डोळस होते. त्यांचे मराठी, हिंदी, इंग्रजी या भाषा विषयी मांडलेले विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण आहे.

यशवंतराव चव्हाण हे कुशल प्रशासक विचारवंत व साहित्यिक होते शिवनेरीच्या नौबती युगांतर, विचारधारा, सह्याद्रीचे वारे भूमिका (भाषण संग्रह) ऋणानुबंध (ललित लेख, संग्रह) आणि कृष्णाकाठ (आत्मचरित्र) इत्यादी त्यांची साहित्यसंपदा आहे. या साहित्य संपदेतून त्यांची विचारधारा अभिव्यक्त झाली आहे.

यशवंतराव चव्हाण यांनी मराठी भाषेच्या विकासासाठी मराठी विश्वकोश, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, भाषा सल्लागार मंडळ आणि महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडळाची स्थापना केली.मराठी भाषेच्या विकासाला चालना मिळावी म्हणून मंत्रालयात स्वतंत्र भाषा विभाग सुरू केला. १९०५ मध्ये कराड येथे भरलेल्या अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलनाचे ते स्वागताध्यक्ष होते.

ज्या भाषेत शब्द भंडार दर्जेदार आणि वाङ्मय निर्मिती जास्त तीच भाषा अधिक समृद्ध होत जाते. याची यशवंतराव यांना चांगलीच जाण होती. त्यांच्या वाढदिवसाच्या समारंभात ते मराठी विषयी असे म्हणाले की नव्या महाराष्ट्रात मराठी भाषेचे काम करायचे आहे. ही विनंती त्यांनी लेखकांना केली. मराठी भाषेत शब्दांची वाणवा आहे. तेव्हा जुने शब्द तर वापराच पण नवीन अमृतासारखे शब्द आणि विचार शोधून काढा. नवीन शास्त्राच्या ज्ञानाचा इमला उभा करावयाचा आहे. तो तोलून धरतील असे शब्द निर्माण करा. केवळ भूतकाळाकडे पाहून चालणारा नाही. भविष्य काळात पुढे जायचे आहे भूतकाळातील परंपरा आपण मध्या कुठे आहोत व कुठे जवयाचे आहे हे सांगतात त्यांच्या या आव्हानाचा इष्ट परिणाम झाला.

यशवंतराव चव्हाणांना हे माहीत होते की, भाषेच्या समृध्दीवरून समाजाच्या

मानसिक आणि वैचारिक समृध्दीची कल्पना करता येते, भाषा हे अभिव्यक्तीचे प्रमुख साधन आहे. भाषा ही केवळ पुस्तकात बंदिस्त करून तिचा विकास होत होत नाही. तर तिचा जास्तीत जास्त वापर सर्व घटकात होणं गरजेचे आहे. मराठवाडा विद्यापीठाच्या पदवीदान समारंभात भाषेच्या संदर्भात ते म्हटलेत की, भाषेचा विकास हा केवळ भाषेच्या ललित साहित्याच्या संदर्भात होतो. ही समजून चुकीची आहे निरनिराळ्या वैज्ञानिक शास्त्रांचा अविष्कार जेव्हा भाषा करू लागते तेव्हाच तिचा खरा विकास झाला असे म्हणता येईल तेव्हा साहित्यकारांबरोबर शास्त्रज्ञ इतिहासकार, त वज्ञ हे सर्वजण मराठी भाषेच्या सर्वांगीन विकासाला चालना देतील असा विश्वास त्यांनी व्यक्त केल्या.

नव्या महाराष्ट्रशराज्यात यशवंतरावांनी कलावंत साहित्यिकांना मानधन सुरू केले. गाण सम्राट बालगंधर्वांना दरमहा पाचशे रुपये मानधन जाहीर केले कवी यशवंतांना महाराष्ट्र कवी हा किताब देऊन त्यांनाही दरमहा ३०० रुपये मानधन सुरू केले. उत्तम ग्रंथांना पुरस्कार योजना राबविली नवा विचार व्यक्त करण्यासाठी नवे शब्दही निर्माण केला पाहिजे. या गोष्टीचा त्यांनी आग्रह धरला भाषिक राज्याची स्थापना हे त्यांचे साधन होते. तर जनतेचा विकास हा त्यांचा ध्यास होता.

यशवंतराव चव्हाण यांची वाणी आणि लेखनी दोन्हीही मोहक होती. अहमदनगर जिल्ह्यातील कोपरगाव येथे महाविद्यालयाच्या पायाभरणी समारंभातील भाषणात त्यांनी थ्री लँग्वेज फॉर्म्युल्याचा पुरस्कार केला त्यांच्या मते शिक्षणात मातृभाषा, मातृभाषेच्या जोडीला हिंदी आणि हिंदीच्या जोडीला काही काळ तरी इंग्रजी हिन्दुस्थानांमध्ये राहणे आवश्यक आहे. उच्चशिक्षण हे मातृभाषेतून झाले पाहिजे. शिक्षण खालच्या थरापर्यंत पोहोचवायचे असले तर ते मातृभाषेतून दिले पाहिजे. लोकभाषा, ज्ञानभाषा झाली पाहिजे.

यशवंतरावांनी मराठी भाषेबरोबरच हिन्दी भाषेविषयी भूमिका मांडली. त्यांच्या भाषण संग्रहात राष्ट्रभाषा हिन्दी व राष्ट्रभाषेचा प्रश्न ही दोन भाषणे आहेत. भारतासारख्या बहुभाषिक राष्ट्रात संपर्क भाषेची मोठी गरज आहे. यशवंतरावांनी हिन्दीकडे संपर्क भाषा म्हणून पाहिले. संपर्क भाषा ही सहज बोलता येण्यासारखी असावी ती जास्तीत जास्त लोकांना यायला हवी आणि हिन्दीच्या बाबतीत ते सहज शक्य आहे असे त्यांना वाटत होते.

हिंदी भाषा बोलणाऱ्यांची संख्या आणि प्रदेश लक्षात घेऊन हिंदीला राष्ट्रभाषेचा जो दर्जा दिला तो दर्जा टिकविता आला पाहिजे. आणि हे काम साहित्यिकांचे आहे. देशाच्या कानाकोपऱ्यातून हिंदीचा प्रचार करण्याची आवश्यकता आहे. परंतु हिंदी भाषेतील शब्दसंपत्ती अशा प्रकारे वाढविली पाहिजे की, त्यामुळे आधुनिक विचार प्रवाह, शास्त्रीय व तांत्रिक विशय आणि त्याच प्रमाणे राज्यकारभार यांची संपूर्ण गरज ती चांगल्याप्रकारे भागवू शकेल. या दिशेने केंद्रीय सरकारतर्फे उच्च पातळीवर बरेच कार्य चालू आहे. हे महान कार्य त्वरीत पूर्ण होण्यासाठी सर्वच हिंदी साहित्यिकांच्या हार्दिक सहकार्याची विशेष आवश्यकता आहे.

कोणत्याही भाषांमधील वाक्यप्रचार, म्हणी, शब्द यांचा परस्परांशी देवाण-घेवाण झाली पाहिजे हे काम साहित्यिक, अनुवादक किंवा भाषांतरकार करू शकतात त्यामुळे भाषा समृध्द बनतात. हिंदीच्या बाबतीत हे काम होणे आवश्यक असल्याचे ते म्हणतात लिपी आणि भाषेचा अन्योन्य संबंध आहे. किंबहुना लिपीविना भाषा लुळीपांगळी ठरते हिंदीच्या प्रसारामध्ये लिपीची मोठी अडचण होते. यावर त्यांनी एक तोडगा सूचविला होता तो म्हणजे भारतातील प्रमुख भाषांसाठी एकाच लिपीचा वापर करायचा. यामुळे लोकांनाही हिंदी भाषा लवकर शिकता येईल असे त्यांचे मत होते. हिंदीच्या बाबतीत आणखी एक बाब म्हणजे तिला राष्ट्रभाषेचा दर्जा दिल्यामुळे तिच्या वापरातून राष्ट्रीय एकात्मतेची निश्चित वाढ होण्यास मदत झाली आहे. म्हणून हिंदीचा प्रचार आणि प्रसार करण्यात कमी पडणार नाही असे वचन यशवंतरावांनी दिले होते.

१५ ऑक्टोबर १९६० रोजी मराठवाडा विद्यापीठाच्या दीक्षांत समारंभ संपन्न झाला. त्या कार्यक्रमात यशवंतराव प्रमुख पाहुणे होते. त्यावेळी केलेल्या भाषणात ते म्हणतात. अर्थात मराठीच्या अभ्यासाबरोबर राष्ट्रभाषा म्हणून हिंदी, सर्व भाशांची मायभाषा व प्राचीन संस्कृतीची भाषा म्हणून संस्कृत व आंतरराष्ट्रीय व्यवहारची भाषा म्हणून इंग्रजी या भाषांचाही अभ्यास करणे आपणाला आवश्यक आहे. इतिहासाने इंग्रजी भाषेशी आपला जो घनिष्ठ संबंध आला त्यामुळे इंग्रजी भाषा आपल्याला परकी राहिलेली नसून तिने आपले फार मोठे हितच साधले आहे व त्याचबरोबर आंतरराष्ट्रीय व्यवहारही सुलभ केला आहे. संशोधन, वैद्यकीयशास्त्र आणि इंजिनिअरींग या क्षेत्रासाठी इंग्रजीत जे शब्दभांडार आहे ते मिळविण्यासाठी इंग्रजीचा द्वेष करून चालणार नाही.

मानसिक आणि वैचारिक समृध्दीची कल्पना करता येते, भाषा हे अभिव्यक्ती प्रमुख साधन आहे. भाषा ही केवळ पुस्तकात बंदिस्त करून तिचा विकास होत हो नाही. तर तिचा जास्तीत जास्त वापर सर्व घटकात होणं गरजेचे आहे. मराठवाड विद्यापीठाच्या पदवीदान समारंभात भाषेच्या संदर्भात ते म्हटलेत की, भाषेच विकास हा केवळ भाषेच्या ललित साहित्याच्या संदर्भात होतो. ही समजून चुकीच आहे निरनिराळ्या वैज्ञानिक शास्त्रांचा अविष्कार जेव्हा भाषा करू लागते तेव्हा तिचा खरा विकास झाला असे म्हणता येईल तेव्हा साहित्यकारांबरोबर शास्त्र इतिहासकार, तत्वज्ञ हे सर्वजण मराठी भाषेच्या सर्वांगीन विकासाला चालना देती असा विश्वास त्यांनी व्यक्त केल्या.

नव्या महाराष्ट्रराज्यात यशवंतरावांनी कलावंत साहित्यिकांना मानधन सु केले. गाण सम्राट बालगंधर्वांना दरमहा पाचशे रुपये मानधन जाहीर केले क यशवंतांना महाराष्ट्र कवी हा किताब देऊन त्यांनाही दरमहा ३०० रुपये मानधन सु केले. उत्तम ग्रंथांना पुरस्कार योजना राबविली नवा विचार व्यक्त करण्यासाठी न शब्दही निर्माण केला पाहिजे. या गोष्टीचा त्यांनी आग्रह धरला भाषिक राज्याच स्थापना हे त्यांचे साधन होते. तर जनतेचा विकास हा त्यांचा ध्यास होता.

यशवंतराव चव्हाण यांची वाणी आणि लेखनी दोन्हीही मोहक होती अहमदनगर जिल्ह्यातील कोपरगाव येथे महाविद्यालयाच्या पायाभरणी समारंभाती भाषणात त्यांनी थ्री लँग्वेज फॉर्म्युल्याचा पुरस्कार केला त्यांच्या मते शिक्षणा मातृभाषा, मातृभाषेच्या जोडीला हिंदी आणि हिंदीच्या जोडीला काही काळ त इंग्रजी हिन्दुस्थानांमध्ये राहणे आवश्यक आहे. उच्चशिक्षण हे मातृभाषेतून झाल पाहिजे. शिक्षण खालच्या थरापर्यंत पोहोचवायचे असले तर ते मातृभाषेतून दिल पाहिजे. लोकभाषा, ज्ञानभाषा झाली पाहिजे.

यशवंतरावांनी मराठी भाषेबरोबरच हिन्दी भाषेविषयी भूमिका मांडली. त्यांच्य भाषण संग्रहात राष्ट्रभाषा हिन्दी व राष्ट्रभाषेचा प्रश्न ही दोन भाषणे आहे भारतासारख्या बहुभाषिक राष्ट्रात संपर्क भाषेची मोठी गरज आहे. यशवंतरावांन हिन्दीकडे संपर्क भाषा म्हणून पाहिले. संपर्क भाषा ही सहज बोलता येण्यासारख असावी ती जास्तीत जास्त लोकांना यायला हवी आणि हिन्दीच्या बाबतीत ते सह शक्य आहे असे त्यांना वाटत होते.

हिंदी भाषा बोलणाऱ्यांची संख्या आणि प्रदेश लक्षात घेऊन हिंदील राष्ट्रभाषेचा जो दर्जा दिला तो दर्जा टिकविता आला पाहिजे. आणि हे काम साहित्यिकांचे आहे. देशाच्या कानाकोपऱ्यातून हिंदीचा प्रचार करण्याची आवश्यकता आहे. परंतु हिंदी भाषेतील शब्दसंपत्ती अशा प्रकारे वाढविली पाहिजे की, ज्यामुळे आधुनिक विचार प्रवाह, शास्त्रीय व तांत्रिक विशय आणि त्याच प्रमाणे राज्यकारभार यांची संपूर्ण गरज ती चांगल्याप्रकारे भागवू शकेल. या दिशेने केंद्रीय सरकारतर्फे उच्च पातळीवर बरेच कार्य चालू आहे. हे महान कार्य त्वरीत पूर्ण होण्यासाठी सर्वच हिंदी साहित्यिकांच्या हार्दिक सहकार्याची विशेष आवश्यकता आहे.

कोणत्याही भाषांमधील वाक्यप्रचार, म्हणी, शब्द यांचा परस्परांशी देवाण-घेवाण झाली पाहिजे हे काम साहित्यिक, अनुवादक किंवा भाषांतरकार करू शकतात त्यामुळे भाषा समृध्द बनतात. हिंदीच्या बाबतीत हे काम होणे आवश्यक असल्याचे ते म्हणतात लिपी आणि भाषेचा अन्योन्य संबंध आहे. किंबहुना लिपीविना भाषा लुळीपांगळी ठरते हिंदीच्या प्रसारामध्ये लिपीची मोठी अडचण ठरते. यावर त्यांनी एक तोडगा सूचविला होता तो म्हणजे भारतातील प्रमुख भाषांसाठी एकाच लिपीचा वापर करायचा. यामुळे लोकांनाही हिंदी भाषा लवकर शिकता येईल असे त्यांचे मत होते. हिंदीच्या बाबतीत आणखी एक बाब म्हणजे तिला राष्ट्रभाषेचा दर्जा दिल्यामुळे तिच्या वापरातून राष्ट्रीय एकात्मतेची निश्चित वाढ होण्यास मदत झाली आहे. म्हणून हिंदीचा प्रचार आणि प्रसार करण्यात कमी पडणार नाही असे वचन यशवंतरावांनी दिले होते.

१५ ऑक्टोबर १९६० रोजी मराठवाडा विद्यापीठाच्या दीक्षांत समारंभ संपन्न झाला. त्या कार्यक्रमात यशवंतराव प्रमुख पाहुणे होते. त्यावेळी केलेल्या भाषणात ते म्हणतात. अर्थात मराठीच्या अभ्यासाबरोबर राष्ट्रभाषा म्हणून हिंदी, सर्व भाशांची मायभाषा व प्राचीन संस्कृतीची भाषा म्हणून संस्कृत व आंतरराष्ट्रीय व्यवहारची भाषा म्हणून इंग्रजी या भाषांचाही अभ्यास करणे आपणाला आवश्यक आहे. इतिहासाने इंग्रजी भाषेशी आपला जो घनिष्ठ संबंध आला त्यामुळे इंग्रजी भाषा आपल्याला परकी राहिलेली नसून तिने आपले फार मोठे हितच साधले आहे व त्याचबरोबर आंतरराष्ट्रीय व्यवहारही सुलभ केला आहे. संशोधन, वैद्यकीयशास्त्र आणि इंजिनिअरींग या क्षेत्रासाठी इंग्रजीत जे शब्दभांडार आहे ते मिळविण्यासाठी इंग्रजीचा द्वेष करून चालणार नाही.

* लेखक परिचय *



डॉ. शरद जा. वाघोळे

एम. ए.,पीच्.डी. (मराठी लोकसाहित्य)

मराठी विभाग प्रमुख

यशवंतराव चव्हाण कला व विज्ञान महाविद्यालय

मंगरूळपीर, जि.वाशीम

संशोधन प्रबंध ''अकोट तालुक्यातील मराठी लोकसाहित्याचा चिकित्सक अभ्यास''

आंतरराष्ट्रीय परिषद, राष्ट्रीय परिषद यामध्ये निबंध वाचन व सहभाग

- गीता साहित्य प्रकाशन मंडळ, सदस्य
- भावमाला नियतकालिक संपादक मंडळ, सदस्य

* प्रकाशित ग्रंथ *

* भुलाबाईची गाणी : आकलन आणि आस्वाद
* संपा. आभाळमाया चरित्र ग्रंथ
* लोकसाहित्यातील विधिपूजा (आगामी)
* वऱ्हाडी लोकगीत आकलन आणि आस्वाद (आगामी)



प्रा.डॉ.प्रमोद देवके

एम. ए.,पीच्.डी. सहयोगी प्राध्यापक

यशवंतराव चव्हाण कला व विज्ञान महाविद्यालय

मंगरूळपीर, जि.वाशीम

संशोधन प्रबंध '' साधना साप्ताहिकाच्या प्रबोधन व वाङ्मय विषयक कामगिरीचा चिकित्सक अभ्यास ''

- आंतरराष्ट्रीय परिषद
- राष्ट्रीय परिषद यामध्ये निबंध वाचन व सहभाग

PRINTING & PUBLISH

EAGLE LEAP PRINTER'S AND PUBLISHER PVT. LTD.

SNO 57/4/5 Balaji Colony, Nr. Hanuman Mandir,
Bijali Nagarshivnagar, Chinchwad, Pune, MH - 411033.

Contact : 7083766990 / 8600071634

Email : eagleleap.pp@gmail.com

9 788195 789603

Registration No. 1919643

ईगल लीप
प्रिंटर्स अँड पब्लिशर्स प्रा. ली.

यशवंतराव चव्हाण जीवन व कार्य

This is to certify that Mr./Ms./Mrs.

डॉ कल्पना त्र्यं. मेहरे

of नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जिल्हा अमरावती. has

Cantributed Chapter/Research Article in यशवंतराव चव्हाण जीवन व कार्य

Published on 08 October 2022. With ISBN No : **978-81-957896-0-3**

He / She Contributed Book Chapter entitled

यशवंतराव चव्हाण यांचे बाह्यमंत्रीपद कार्य

संदेश दा. पहुडकर
CEO & Publisher
Eagle Leap Printers And Publisher Pvt. Ltd.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

प्रा. डॉ. शरद वाघोळे
EDITOR

प्रा. डॉ. प्रमोद देवके
EDITOR

ग्रामीण साहित्य आणि संस्कृती



डॉ. संतोष चतुर
डॉ. गोपाल ढोले

Prashant



ग्रामीण साहित्य आणि संस्कृती

© प्रा. डॉ. संतोष चतुर

प्रकाशक । मुद्रक
रंगराव पाटील
प्रशांत पब्लिकेशन्स
3, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालयाजवळ,
जळगाव 425001.

दूरध्वनी । वेब । ईमेल
0257-2235520, 2232800
www. prashantpublications. com
prashantpublication. jal@gmail. com

आवृत्ती । आयएसबीएन । किंमत
सप्टेंबर, 2021
978-93-91391-69-0
₹ 395/-

मुखपृष्ठ । अक्षरजुळवणी
प्रशांत पब्लिकेशन्स

e-Books are available online at www. prashantpublications. com
Prashant Publications *app for e-Books*
kopykitab. com • amazon. com • play. google. com

या पुस्तकातील कोणताही मजकूर, कोणत्याही स्वरूपात वा माध्यमात पूर्वपरवानगीशिवाय अंशतः संग्रहित करण्यासाठी लेखक/प्रकाशक दोघांचीही लेखी पूर्वपरवानगी घेणे बंधनकारक आहे. तसेच मजकुराची तोडफोड ही सर्वस्वी लेखकाची राहील. लेखकाची याद्वारेच्छा सर्व संमती सपाटक मंडळ असतील असे मानी

: संपादकीय :

ग्रामीण भागातील शिकलेल्या पिढीला १९६० च्या आसपास सांस्कृतिक भान आले. आपण अनुभवलेले अनुभव, अनुभवत असलेले खेडे आणि ते जीवन साहित्याचा विषय होऊ शकते याची त्यांना जाणीव झाली. आपण वाचतो ते प्रस्थापित मराठी साहित्य समग्र जीवनाचे चित्रण करीत नाही. खरेतर खेड्यात राहणारी माणसे आणि शेती, निसर्ग, पशुपक्षी, पिके, जमिनीचा प्रकार, जलसंधारण यांचा अतूट संबंध असतो. ग्रामीण विभाग म्हणजे केवळ खेडी असलेला विभाग नव्हे, तर निसर्गाच्या साधनसंपत्तीवर आणि शेतीनिष्ठ जीवन पद्धतीवर ज्यांची उपजीविका चालते असे खेड्यातील, खेड्याच्या भोवतीचे, रानावनातील, भटके असे सर्व लोक जेथे राहतात असा सर्व विभाग होय. या विभागातून उपजीविकेसाठी शहरात जाणारे व तेथे काम धंदा करणारे परंतु मूळच्या आपल्या खेड्याची प्रत्यक्ष किंवा मानसिक पातळीवर संबंध ठेवणारे जनसामान्य 'ग्रामीण' या संज्ञेत समाविष्ट आहेत.

ग्रामीण माणसाचे त्याच्या काळ्या आईवरील, पिकावरील, झाडावरील, पशुधनावरील, घनिष्ठ प्रेम आणि जिव्हाळा लक्षणीय असतो. ग्रामीण जीवन काबाडकष्टांचे, हालअपेष्टांचे असते. तरीपण त्यांच्या जीवनात आनंदाचे क्षण सुद्धा असतात. दुधाच्या सायीपासून तर शेणाच्या पोवट्यापर्यंत त्यांचे भावबंध गुंतलेले असतात. प्रतिकूल परिस्थितीतही जगण्याचे चिवट बळ त्यांनी आत्मसात केलेले असते. शेतकरी-शेतमजूर, अलुते-बलुते यांचे परस्पर संबंध घट्ट आबळले गेले आहेत. यांत्रिकीकरणामुळे जुनी गाबगाडा पद्धती मोडकळीस आली आहे. पण ती संपूर्ण नष्ट झाली नाही. शेती, पिके, उत्पादन पद्धती, अतिवृष्टी, अनावृष्टीचा ग्रामीण जीवनावर होणारा परिणाम यामुळे रावाचा रंक आणि रंकाचा राव होतो. ग्रामीण माणसाचा विचार शेती आणि त्याचे पशुधन वगळून करताच येत नाही. शेती आणि पशुधन यांची कोणत्याही कारणाने परवड होऊ नये असे शेतकऱ्यांना वाटते.

बदलत्या काळानुसार शेतीनिष्ठा बदलत आहे. शहराजवळील शेतकरी शेतीचे प्लॉटिंग करून शेती विकत आहेत. शेती विकणाऱ्या शेतकऱ्यांच्या मनातील ताण-तणाव, त्यांची आर्थिक स्थिती आपण लक्षात घेतली पाहिजे. अनावृष्टी, अतिवृष्टी, गारपीट, पिकांवरील कीड यासारख्या निसर्ग

: अनुक्रमणिका :

- **ग्रामीण साहित्य : स्वरूप, स्थिती, गती आणि अपेक्षा, आव्हाणे** १५
  प्रा. डॉ. गजानन लोहरे
- **ग्रामीण साहित्य : संकल्पना, प्रेरणा व विशेष** २२
  प्रा. रेखा बी. इंगोले
- **ग्रामीण साहित्याची परंपरा** २७
  प्रा. डॉ. अनुराधा रा. पुळे
- **ग्रामीण साहित्याची चळवळ** ३४
  प्रा. मौ. हेमा शि. जयंजाळ
- **ग्रामीण कृषी जीवन आणि संस्कृती काल-आज-उद्या** ४०
  डॉ. दिपाली प्र. गांवडे
- **ग्रामीण कृषी जीवन व संस्कृती** ५०
  प्रा. फिरोज साहाळा
- **ग्रामीण साहित्य व लोकसाहित्य अनुबंध** ५५
  डॉ. भाऊसाहेब दादासाहेब गव्हाणे
- **लोकजीवनातील लोकसमजुती** ६३
  डॉ. कांत जाधव
- **लोकसंस्कृती आणि लोककलावंत** ७३
  प्रा. पुरुषोत्तम एम. निर्मळ
- **ग्रामीण साहित्य आणि लोकसाहित्य : अनुबंध** ८०
  डॉ. ममता व. दळवे
- **शेती जीवनाची दैन्यावस्था रेखाटणारी सचिन वसंत पाटील यांची ग्रामीणकथा** ८४
  डॉ. प्रमोद भीमराव गारोडे
- **ग्रामीण साहित्यातील ग्रामजीवनाचे वास्तव** ९२
  डॉ. माधुरी मनोहरराव पाटील

- ग्रामीण सामाजिक वास्तव ९७
  डॉ. आर. व्ही. भोरे
- ग्रामीण साहित्यातील सामाजिक वास्तवाचे स्वरूप : एक आढावा १०२
  प्रा. सिद्धार्थ इंगोले
- ग्रामीण कादंबरीतील स्त्री १०९
  डॉ. अनुराधा वसंत गुजर
- आजचे ग्रामीण वास्तव ११३
  प्रा. डॉ. नागोराव कों. सोरे
- ग्रामीण जीवनातील स्त्रियांच्या समस्या ११८
  प्रा. डॉ. संगीता घुईखेडकर
- ग्रामीण जीवन व प्रसारमाध्यमे १२४
  प्रा. सुरेश किसनराव इंगळे
- राष्ट्रसंतांचा ग्रामरक्षण विषयक विचार १३०
  प्रा. डॉ. संतोष विष्णू चतुर
- भारतीय शेतीचे महत्त्व १३६
  डॉ. एन. आर. भिंगारे
- ग्रामातील आर्थिक जीवन १४०
  प्रा. डॉ. रामधन शिरे
- ग्रामजीवनावर तंत्रज्ञानाचा परिणाम १४४
  डॉ. गंधराम नाना पोटे
- ग्रामीण जीवन आणि जलसमस्या १५०
  डॉ. मनीष नरेश मोहरील
- ग्रामीण साहित्य आणि जागतिकीकरण १५६
  सुधीर बा. सालोंके
- जागतिकीकरण आणि ग्रामीण साहित्य १६०
  प्रा. सुबिल रामराव काकडे
- ग्रामीण कृषी व शेत मजुरांची उदासीनता १६५
  डॉ. शंकर मारोती सावंत
- नव्वदोत्तर ग्रामीण कादंबरीतील शेतकरी जीवन १७४
  प्रा. डॉ. कल्पना जांबक मेहर

- 'दगडी मक्ता' या ग्रामीण कादंबरीतील पात्रसंघटनांचा जीवनसंघर्ष १८०
  डॉ. सुवर्णा गाडगे
- डॉ. सदानंद देशमुख यांच्या कादंबऱ्यातून व्यक्त होणाऱ्या कृषिनिष्ठ ग्रामीण संवेदनांची अभिव्यक्ती १९०
  विलेज गायकवाड
- ग्रामीण कादंबरीतील जननिष्ठ जाणिवांचा ज्वलंत व प्रभावी आविष्कार १९७
  डॉ. पद्मरी डोईफोडे
- बारोमास : जागतिकीकरणाचे परिणाम टिपणारी प्रातिनिधिक ग्रामीण कलाकृती २०२
  प्रा. डॉ. प्रदीप राऊत
- व्यंकटेश माडगूळकर : ग्रामीण विद्यार्थ्यांना संस्कारक्षम बनविणारे शिक्षक २०९
  डॉ. विष्णू नामदेव लांडे
- कोरोनोत्तर ग्रामीण साहित्य २१३
  नरेश कृ. महाजन
- ग्रामीण विदर्भातील लोकनायक बापूजी अणे : ऐतिहासिक व्यक्तिमत्त्व २१७
  प्रा. डॉ. संदिप शि. भुरले
- ग्रामीण सार्वजनिक ग्रंथालयामध्ये माहिती साक्षरता कार्यक्रम काळाची गरज २२४
  आर. डी. काहेती
- लहान कादंबरीतील राघोजी शेवाळे यांचे व्यक्तिचित्र २२९
  डॉ. अविनाश श. धोबे
- फ. म. शहाजिंदे यांच्या 'शेतकरी' दीर्घकाव्यातील विकल गावाचे चित्रण २३५
  डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे
- कृषी जीवनाचे प्रत्ययकारी चित्रण करणारी कादंबरी– 'बारोमास' २४१
  डॉ. भगवान जे. साबळे
- ग्रामीण जीवनाचे सामाजिक वास्तव : एक आढावा २४६
  प्रा. डॉ. अपर्णा पाटील

नव्वदोत्तर ग्रामीण कादंबरीतील शेतकरी जीवन

प्रा. डॉ. कल्पना अंबक मोरे
मराठी विभाग प्रमुख
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, बदनापूर, जालना

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. खेड्यांचा बनलेला आहे. शेती हा खेड्यातील मुख्य व्यवसाय आहे. भारतीय अर्थव्यवस्थेचा शेती हा कणा आहे. या शेती मध्ये कष्ट करणाऱ्या राबणाऱ्या माणसांच्या जीवनानुभवांचे, ताणतणावांचे दर्शन ग्रामीण साहित्यातून घडते. १९६० नंतर उदयास आलेल्या या साहित्याची पाळेमुळे १० व्या शतकातील 'लीळाचरित्र' या बृहद ग्रंथात दिसतात.

ग्रामीण जीवन आपल्या साहित्यातून मांडणारे पहिले लेखक महात्मा जोतीराव फुले आहे. एकोणविसाव्या शतकामध्ये शेतकऱ्यांच्या दुरावस्थेवर मौलिक चिंतन करणारा त्यांचा 'शेतकऱ्यांचा आसूड' हा ग्रंथ आणि 'तृतीय रत्न' हे नाटक आहे. यामधून त्यांनी शेतकऱ्यांच्या प्रश्नाला वाचा फोडली आहे. त्यानंतर 'दीनबंधू' नियतकालिकातील 'बळीचा पाटील' कादंबरी लक्षवेधक ठरली. महर्षी शिंदे, धनुर्धारी या सामाजिक भान असणाऱ्या लेखकांनी शेतकऱ्यांच्या व्यथा आपल्या लेखनातून समाजासमोर मांडल्या.

आदिम काळापासून भारतातील शेतकऱ्यांची आणि त्याच्या शेतीची व्यवस्था करण्यात आली आहे. त्यांच्या श्रमाला प्रतिष्ठा राहू नये याची काळजी आदिम काळापासून घेतली गेली आहे. त्यांच्या अज्ञानाचा, श्रद्धेचा, सहनशीलतेचा फायदा वेळोवेळी व्यवस्थेने घेतला आहे. जागतिकीकरणाच्या चक्रात शेतकऱ्याला केंद्रात बनविण्याची प्रवृत्ती आणखी गतिमान झाली आहे.

१९९० नंतरचा कालखंड हा अत्यंत गतिमान युगाचा आहे. सोशल नेटवर्किंगच्या माध्यमातून संपूर्ण जग जवळ आले. खेड्याचे जगाची एक पेठ बनले आहे. १९९० साली भारताने हुकेल प्रस्तावावर सही केली आणि त्यानंतर जागतिकीकरणाची सुरुवात झाली. जागतिकीकरण, खुले आर्थिक धोरण, उदारीकरण, खाजगीकरण, गॅट करार, सेझ, माहितीचा अधिकार, दहशतवाद, भ्रष्टाचार या बरोबर माहिती तंत्रज्ञान इत्यादी कारणांनी ग्रामीण जीवनात आमूलाग्र बदल झाला. जागतिकीकरणाने शेतीच्या समस्या कमी झाल्या नसून बीजोत्पादन, कृषिमाल प्रक्रिया, कीटकनाशके इत्यादी शेती संबंधीच्या जागतिक बाजारामधील आंतरराष्ट्रीय कंपन्यांनी ग्रामीण भागात आपले पाय पसरलेले आहे.

शेतकऱ्याचा शेतीमाल उत्तम असेल तर जागतिक बाजारपेठेत त्याला चांगला

भाव मिळेल. त्यामुळे मुक्त अर्थव्यवस्था शेतकऱ्यांच्या फायद्याचे आहे. असा विश्व गाजविले गेले. असले तरी समकालीन शेतकऱ्याचे चित्र पाहता जागतिक स्तरी न भारतीय शेतकरी, किसान तरा धारणे हे मागणे कठीण आहे. मुळातच उत्पादन, अपुरा पुरकाळ, बाजारपेठेतील मालाचे घसरलेले भाव, वाढती महागाई अशा असंख्य संकटांचा शेतकरी पूर्वीपासून सामना करीत आला आहे. त्याची सहनशीलता वाखाणण्याजोगी आहे परंतु आता मात्र त्याच्या सहनशीलतेचा अंत झाला आहे. शेतकऱ्याच्या आत्महत्येचे प्रमाण वाढले आहे. उच्च शिक्षण घेऊन शिक्षणाच्याच्या पदवीधर शहरात मोठेमोठे त्यातून वैयक्तिक मूल्यांची घसरण, शिक्षणातून येणारी त्याचाही कोरोनाची महामारी या सर्व बदलाचे आव्हान कृषी संस्कृतीला होत आहे. याचे चित्रण आजच्या ग्रामीण कादंबरीत होत आहे. ग्रामीण भागातील अनेक प्रश्न आणि समस्या पुढे आलेल्या दिसत आहे.

एकोणीसशे नव्वद पूर्वी व नव्वदनंतर लेखन करणारे विदर्भातील महत्त्वाचे ग्रामीण कादंबरीकार वामनराव मुसळे यांच्या कादंबऱ्या खूप रे. 'लक्ष्मण वाकडा', 'पाटीलकी', 'देश' या कादंबऱ्यामधे लक्ष्मण वाकडा, देश, या कादंबऱ्या नव्वदोत्तरी कादंबऱ्यांचे प्रतिनिधीत्व करणाऱ्या आहेत. लक्ष्मण ही महत्त्वाची कादंबरी असून या कादंबरीमधे ग्रामीण कुटुंब उद्ध्वस्त करण्यामागे शासन व्यवस्थेचे अक्षम्य आणि त्यामुळे त्यांची होणारी वाताहत लेखकाने लक्ष्मणच्या दयनीय जीवनाच्या कथा हा बलुतेदारांच्या कथेने दाखवून दिली आहे. यामध्ये ग्रामीण व्यवस्थेमधून शोषण, अन्याय, विषमता, अभाव कायम, जातीवाद व त्या अनुषंगाने निर्माण होणारे सामाजिक चित्रण केले आहे.

ग्रामीण कादंबरीकारांमध्ये महत्त्वाचे ग्रामीण कादंबरीकार म्हणून त्यांचा नामोल्लेख केला जातो असे प्रा. मदनवर देशमुख यांच्या 'वहान' व 'बारबंदा' या कादंबऱ्या समकालीन शेतकरी जीवनाचा आपल्या कथनात खेड्यातील राणी रामाक त्यांची 'वहान' (१९९८) ही कादंबरी पुकाश टाकते. या कादंबरीचा नायक त्यांचा शेवाळे हा शेतकऱ्याचे प्रतिनिधिक चित्र म्हणून वाचकांसमोर येते. शेवाळे पुकाळे पडतो. यामधून दोन दिशा भटकती मुक होते. सोन्याचा घास यामधून खात राणोजी शेवाळे याचा मुलगा बबन शेवाळे यामधून घडा मुक करतो. यामधून म्हणून पैसे मिळतात तो भौतिक सुखाच्या चक्रात मागतो. अनेक वैगेरेच्या बन्नू तो घरात आणतो. पत्नीच्या हट्टाने त्याची आई रामकाकी सुकाळाने बबनच्या रोजच्या रात्र चुराड्या होतो. कुटुंब आनंदात जगत असले याच कुटुंब उद्ध्वस्त राणोजी शेवाळे असमर्थ असतो. यामधून व्यवसाय केलेला त्याला आवडत नाही. बैलाचे हाल त्याला पाहवत नाही. बैलाची जखम पाहून तो चिडतो. बबनला शेवटी यामधून

त्याला मारण्यासाठी अगावर धावून जातो. मध्ये येणाऱ्या रामकोरला तो मारहाण करतो. शेतकऱ्यांच्या आंदोलनात तो सहभागी होतो. आंदोलन यशस्वी झाल्यास गावाला पाणी मिळेल व आपल्या बैलाला सुख मिळेल असे त्याला वाटत. आंदोलकांवर पोलीस लाठीहल्ला करतात. आंदोलक सैरभैर धावतात. राघोजीचा पाय खड्यात पडतो आणि मोडतो. राघोजी अंथरुणावर पडून राहतो तरीही आपले बैल दिसावे असे त्याला वाटते मुरल्या छबील्या या बैलांसाठी राघोजीचे पंचक्रोशीत नाव असते राघोजी हा इमाने इतबारे शेती करणारा शेतकरी असतो. बैलांवर तो जीवापाड प्रेम करत असतो. त्यामुळे पाण्यासाठी बैलाचे होणारे हाल त्याला बघवत नाही. राघोजीच्या स्वभावातील अनेक कंगोरे लेखकाने अधोरेखित केले आहे. शेतकरी जीवन चित्रणाच्या दृष्टिने हे खूपच महत्त्वाचे आहे.

बारोमास (२००२) या प्रा. सदानंद देशमुख यांच्या कादंबरीत जागतिकीकरणानंतर खेड्यातील शेतकरी कुटुंबाची झालेली पडझड आली आहे. जन्मभर शेतात राबून मेल्यावर ही वावरातच जाळा म्हणून सांगणाऱ्या कुटुंबाची व्यथा चित्रित करते. या कादंबरीचा नायक एकनाथ हा एम.ए. बी.एड. होऊनही त्याला नोकरी मिळत नाही. शेतीत सतत होणारी तूट भरून काढण्यासाठी दुसरा कोणताही मार्ग त्याच्याकडे नसतो. शेतकऱ्याच्या हक्कासाठी लढण्या या शेतकरी संघटनेत सामील झाल्यामुळे त्याला तुरुंगवास भोगावा लागतो. अशा बेकार एकनाथला त्याची पत्नी सोडून जाते, जिच्यावर आपण जिवापाड प्रेम केलं तिच्यावर आपल्यामुळेच उपासमारीची पाळी आली याचा पश्चाताप झालेला एकनाथ एकाकी पडतो.

शेतकरी शेतात राबराब राबतो पण त्याच्या वाट्याला मात्र काहीच येत नाही. शेतीसाठी पैसा लागतो पण उत्पादन खर्चावर आधारित भाव शेतमालाला मिळत नाही त्यामुळे शेतीचा धंदा तोट्यात आहे. परिणामी शेतकरी कर्जाच्या विळख्यात अडकतो व शेवटी आत्महत्येशिवाय त्याला पर्याय राहत नाही यासाठी शासनाची शेतकऱ्यांच्या प्रश्नांकडे पाहण्याची उदासिनता कारणीभूत आहे. असा निष्कर्ष शेवटी एकनाथ काढतो.

विसाव्या शतकाच्या शेवटच्या आणि एकविसाव्या शतकाच्या पहिल्या दशकात ग्रामीण जीवनात निर्माण झालेल्या अनेक पदरी समस्यांचे आकलन झालेल्या लेखकात अशोक कौतिक कोळी हे महत्त्वाचे लेखक आहेत. अशोक कौतिक कोळी यांनी पाडा या कादंबरीमधून केळी उत्पादक शेतकऱ्यांच्या प्रश्नांचा वेध घेतला आहे. पाडा म्हणजे शेतकरी जीवनाच्या दुःखाची गाथा आहे. नायक वासुदेव हा छोटा केळी उत्पादक शेतकरी निष्ठेने शेती सांभाळत गावात व आजूबाजूच्या

विश्वास कमावलेला आहे. त्याची बायको कमळा, बारावी झालेली मुलगी सुनिता आणि कैलास ही भावंडे आहेत. आपली मुलगी सुनिता हिचे लग्न व्यवस्थित करावे आणि तिला नोकरी करणारा वर मिळावा यासाठी कमळा सतत आपल्या पतीला तगादा लावते. तिच्या मनाप्रमाणे घडत नसल्यामुळे मनात कुढत राहते. मनासारखी जमलेली सोयरिक पैशांच्या जमवाजमवित मोडते आणि कमळा मोडून पडते. आपली तणट काशीबाई चांगल्या स्वभावाची नसतांनाही तिच्या बेकार मुलासोबत सुनिताचा विवाह होतो. कमळाच्या किमान अपेक्षांची परिपूर्ती होत नाही. कमळाच्या आजारपणात चांगदेव बैलजोडी विकून दवाखान्यांचे बिल चुकवून कमळाचे प्रेत नाल्यात घेतो. कमळाच्या निधनानंतर पैशासाठी चांगदेवची बहिण काशीबाई सुनिताचा बळी घेते चांगदेव तापीकराचे भारनियमाविरूध्द भाव वाढिच्याच्या संबंधिचे आंदोलन आणि या आंदोलनामुळे त्याच्या कुटुंबाची, शेतीची होणारी होरपळ पाडा मधून नेमकेपणाने साकार झाली आहे.

सुरेंद्र पाटील यांची 'चिखलवाटा' ही कादंबरी शेतकरी जीवन चित्रणाच्या दृष्टीने पाहण्यासारखी आहे. शेतकरी आंदोलनातील एक सच्चा कार्यकर्त्याची वैचारिकता या कादंबरीत शब्दबध्द झाली आहे. शेतकऱ्यांची कर्जे माफ झाली पाहिजे. म्हणून गावोगावी हिंडणारा या कादंबरीतील नायक तनमनधनाने शेतकऱ्याची आंदोलने यशस्वी करतो. शेतकरी आंदोलनामुळे त्याचे शेती व्यवसायकडे दुर्लक्ष होते. परिणामी व्यवसाय तोट्यात येतो. मुलगी लग्नाला येते. मुलाची शालेय पुस्तके घसरते. नोकरीला असणारा भाऊ शहरात बंगल्याचे काम सुरू करतो. त्याच पाव्हण्यांचे पैसे द्यावयाचे असतात. बहीण मुलीला नाकारते. जमीन विक्रीला काढल्यावर बाप अस्वस्थ होतो. अशा सगळ्या बाजुने त्याची कोंडी होते. शेवटी सावकाराकडून जमीन गहाण ठेवून तो कर्ज काढतो. या सर्व ताणतणावात शेतकरी संघटना राजकारणात उतरते. शेवटी या कादंबरीतला नायक शेतकरी संघटनेचा बिल्ला काढू शकतो. नात्यागोत्यातील ताणतणाव, शेतकरी आंदोलनातील यश-अपयश या सामान्य शेतकऱ्यांवर होणारे परिणाम या कादंबरीत आले आहेत.

अनंत भोवर यांची 'आभाळ झुंज' ही कादंबरी धरणग्रस्त शोषित पिढीतांची दुःख व्यक्त करणारी, ग्रामजीवनाचा वेध घेणारी कादंबरी आहे. ही कादंबरी वामन या पात्राच्या जीवनामधील संकटाची संघर्ष गाथा आहे. भ्रष्ट नोकरशाही, आणी व तात्पुरती विकास व्यवस्था यामुळे ग्रामीण जीवन उद्ध्वस्त होते. ग्रामीण परिसरातील मोळकळीस आलेली कृषीव्यवस्था अनंत भोवर यांनी समर्थपणे मांडली आहे.

धरणाचे खेड्यावर होणारे आक्रमण किती गतिमान आहे. याचे चित्रण प्रा.

शंकर सखाराम यांच्या सेझ या कादंबरीत आले आहे. लेखक स्वत: सेझग्रस्त आहेत. सच्चा कार्यकर्ता म्हणून सेझच्या विरोधात ते उभे राहिले. सेझ विरोधात लढा देण्याकरीता त्यांनी शेतकऱ्यांकडून जमिनी काढून घेऊन त्या मोबदल्यात पैसे किंवा नोकऱ्यांचे अमिष दिले गेले. लेखक म्हणतो पैसे आज ना उद्या संपणार. जमीन कायमचीच गेली तर पुढच्या पिढ्या कशावर जगणार? आणि इथला निसर्ग, ग्रामसंस्कृती, नातीगोती सारे सारे संपणार. लेखकांनी शेतकऱ्याचा आत्मा असलेल्या कृषि क्षेत्रासंबंधी त्यांच्यावर कब्जा करू पाहणाऱ्या लोकांना धडक दिली आहे.

घरभिंती (आनंद यादव), राघववेळ (नामदेव कांबळे), रिक्त-अतिरिक्त (रा. र. बोराडे), तणकट (राजन गवस), धूळपेरणी (शेषराव माहिते), बारदाना (प्रकाश देशपांडे), ऐसे कुणबी भुपाळी (भारत काळे), बुढाई (प्रतिमा इंगोले), आभाळ (तानाजी राऊ पाटील), आघात (विलास अंभोरे), बस्तान (मोहन पाटील), देशोधडी (माधव कोंडविलकर), गावठाण (कृष्णा खोत), जगबुडी (वामन पात्रीकर), गराड (भिमराव वाघचौरे), आटपाट (सुभाष सावरकर), आरंबळ (रा. गो. चवरे), झाडाझडती (विश्वास पाटील), झिम्पोरी झिम (बालाजी मदन इंगळे), पाचरूट (अरूण जाखडे), साखरफेरा (मोहन पाटील) कापूसकाळ (कैलास दौंड), तुंबण (अर्जुन व्हटकर) इ. कादंबऱ्यांमधून ग्रामीण भागातील अनेक प्रश्न आणि समस्या समोर आल्या आहे. ग्रामीण भागात वाढलेल्या व स्वानुभवातून लेखन करणाऱ्या ग्रामीण साहित्यिकांना सर्व प्रकारच्या शोषणातून ग्रामीण समाज मुक्त झाला पाहिजे असे वाटते.

या कादंबरीकारांनी शेतकऱ्यांची ससेहोलपट अतिशय प्रभावीपणे रेखाटली आहे. नव्वदोत्तरी ग्रामीण कादंबरी ही केवळ अतिशय प्रभावीपणे ग्रामीण जीवनाचे चित्रण करीत नाही तर या जीवनामागील कारणांचा शोध घेण्याचा प्रयत्न करीत आहे.

निष्कर्ष :

१. कांदबरीकारांनी स्वानुभवाशी निगडित लेखन केले आहे.
२. कादंबऱ्यांचा नायक जगाचा पोशिंदा आहे.
३. शेतीविषयीचे सखोल चिंतन करणाऱ्या या कादंबऱ्या आहेत.
४. शासनाची चुकीची धोरणे शेतकऱ्यांसाठी जीवघेणी ठरली आहेत.
५. नवदोत्तर कादंबरीकाराच्या लेखनात तळमळ जाणवते. दु:खाच्या व शोषणाच्या मुळाशी जाण्याची तयारी आहे.

संदर्भ ग्रंथसूची :

१. ग्रामीण साहित्य स्वरूप दिशा- डॉ. वासुदेव मुलाटे
२. ग्रामीण साहित्य आणि शेतकरी जीवन- डॉ. वामन जाधव
३. ग्रामीण साहित्य प्रेरणा आणि प्रयोजन- डॉ. श्रीराम गुंदेकर
४. ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि समस्या- डॉ. आनंद यादव
५. ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि शोध- डॉ. नागनाथ कोत्तापल्ले
६. ग्रामीण साहित्य चिंतन आणि चर्चा- डॉ. वासुदेव मुलाटे
७. मराठी ग्रामीण कादंबरी- डॉ. रविंद्र ठाकूर
८. ग्रामीण साहित्य आणि वास्तव्य- संपा. डॉ. कृष्णा इंगोले
९. साठोत्तरी साहित्य प्रवाह भाग-१ - डॉ प्रल्हाद लुलेकर
१०. साहित्य संस्कृती आणि जागतिकीकरण- डॉ. भलचंद्र नेमाडे



डॉ. संतोष विष्णू चतुर

एम.ए. (मराठी, समाजशास्त्र, राज्यशास्त्र),
बी.एड., पीएच.डी., नेट
सहयोगी प्राध्यापक, मुगसाजी महाराज महाविद्यालय,
दारव्हा, जि. यवतमाळ

प्रकाशित ग्रंथ : मराठी बतकथा : आकलन व समीक्षा

पुरस्कार : १) विद्याभूषण पुरस्कार, २) सेवा गौरव पुरस्कार

संशोधन कार्य : विविध चर्चासत्र, परिषद, नियतकालिके व पुस्तकांमधून २० पेक्षा अधिक संशोधनपर लेखांचे वाचन तथा प्रकाशन.



डॉ. गोपाल जनार्दन ढोले

एम.ए. (मराठी), बी.एड., पीएच.डी., नेट
प्राचार्य, डॉ. गोपाळराव खेडकर महाविद्यालय,
गाडेगाव (तेल्हारा), जि. अकोला

प्रकाशित ग्रंथ : १) मानवाधिकार : सद्यास्थिती (संपादित), २) दलित आत्मकथने : चिंतन आणि चर्चा (संपादित), ३) बिऱ्हाड : शोधाचे नवे दिशा, ४) भारतीय शिक्षण प्रणालीचा विकास व नवे प्रवाह

पुरस्कार : १) विद्याभूषण पुरस्कार, २) अक्षर वैदर्भीचा राज्यस्तरीय उत्कृष्ट वाङ्मय निर्मिती पुरस्कार, ३) विद्यारत्न पुरस्कार

संशोधन कार्य : विविध चर्चासत्र, परिषद, नियतकालिके व पुस्तकांमधून संशोधनपर लेखांचे वाचन तथा प्रकाशन.

मराठी वाङ्मय ₹ 350

ISBN 978-93-91281-69-0

Prashant

www.prashantpublications.com
prashantpublication.jal@gmail.com

Also Available in e-Book

Dr. Ambedkar Studies Center,
Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati



Dr. Babasaheb Ambedkar's Role in Nation Building

Editor's

Dr. Tushar Deshmukh
Registrar
Sant Gadge Baba
Amravati University,
Amravati

Dr. Santosh Bansod
Co-ordinator
Dr. Ambedkar Studies Center,
Sant Gadge Baba Amravati
University, Amravati



SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY

National Level Multi-disciplinary Seminar on

DR. BABASAHEB AMBEDKAR'S ROLE IN NATION BUILDING



Certificate

This is to certify that Miss/Mr./Mrs./Prof./Dr. Kalpana Mehare

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera, Amravati

participated in the two days National level Multi-disciplinary Seminar on DR. BABASAHEB AMBEDKAR'S ROLE IN NATION BUILDING organized by Dr.Ambedkar Studies Centre, Sant Gadge Baba Amravati University, held on 8th & 9th March 2022.

He / She has been invited as a **Chairperson / Resource person / Participant** in the seminar.

He / She has presented a research paper entitled डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री शिक्षण विषयक कार्य.

Dr.Tushar Deshmukh
Registrar
Sant Gadge Baba Amravati University

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Dr. Santosh Bansod
Convenor of the Seminar & Co-Ordinator
Dr. Ambedkar Studies Centre,
Sant Gadge Baba Amravati, University

Dr. **Babasaheb Ambekar's**
Role **in Nation Building**

ISBN : 978-81-940865-8-1

© Reserved

Edition : 8th March 2022

Publisher & Printer :
Sant Gadge Baba Amravati
University, Amravati

Type Setting
Sanskruti Printers,
Yamuna Lane 4,
Amravati.

Price : Rs. 800/-

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval
transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying
otherwise, without prior written permission of the publisher. The authors are solely
content of the papers compiled in this volume. The publishers or organ
responsibility for the same in any manner.
Printed from the Camera ready copy provided by the editors.

INDEX

Research Topic	Author	Pg No.
...g The Rivers : A Revolutionery Insight In Water ...e Management pioneered by babasaheb dr. B. R ...kar. Unlightened One Towards Nation Building ...20" Century in India (An Economic Study in ...l Perspective)	Dr. Indira P	1
...saheb Ambedkars Perspective of Human Rights ...n Building	Dr. Sandesh Wagh	6
...ons of Ambedkarism from us:	Dr. Santosh Ratnoil	12
...dent Labour Party and Dr Ambedkar	Dr. Vasant R. Dongare	15
...heb Ambedkar and His Philosophy	Dr. Chandrakant Kolipudde / Dr. Jayamma. B	18
...sheb Ambedkar's Role in Women ...ment	Dr. Padmanand M. Tayade	21
...Philosophy of Indian Constitution and Challenges	Dr. Nirajkumar D. Ambhore	26
...System the Biggest Obstacle in Nation Building: ...R. Ambedkar's Perspective.	Dr. Manish B. Wadive	31
...saheb Ambedkar: The Architect of Water and ...Navigation Policy and his Contribution	Seema Gholap	35
...R. Ambedkar's Thoughts on Family Planning	Dr. Kishor N. Ingole	41
...rao Amebdkar as an Economist	Prof. Sangita Virendra Dumore	45
... Dr. B. R. Ambedkarin Education System of India	Dr. HarshalR. Nimbhorkar	48
...saheb Ambedkar's Theory and Practice of ...pation through Education	Dr. Jagdish Chhaburao Sonawane	52
...alising Social Discourse Of Freedom In Baby ... *The Prisons We Broke*: A Self-Affirmation	Dineshkumar Ukandi Shinde	65
... Ambedkarism in Current Scenario	Dr. Shyam Prakash Deokar	70
...ution Of Dr. B. R. Ambedkar Towards The ... Building As An Educationist	Dr. Punam Rajsingh Pardhi	73
...saheb Ambedkar: The Pioneer of Women's ...on	Dr. Sujata H. Gaurkhede	77
... R. Ambedkar's Thoughts on Social Democracy	Dr. S. Marithai	80
... Party System and Dr. B. R. Ambedkar	Prof. Dr. Anand C. Wele	84
...ien views of Dr. B. R. Ambedkar- the great ... philosopher and Emancipatory Economist	Dr. Sandip Bhimrao Dongare	88
...साहेब आंबेडकराचे अर्थशास्त्र विषयक विचार	ज्ञानेश्वर विश्वनाथ रोकडे	90
...साहेब आंबेडकर याचे आर्थिक लोकशाहीवरील विचार	कोवेळेा बोदुळे	96
...साहेब आंबेडकर याचा पाणी व्यवस्थापनाचा दृष्टिकोन	प्रा. डॉ. कैलास गायकवाड /	101

		सागर किसनराव राखोडे	
24	डॉ. बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर की परिपेक्ष्य मे अछूतो के लिए पृथक मतदार संघ	चंद्रशेखर लक्ष्मणराव कोरे	105
25	**स्त्रीयांच्या प्रगतीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराचे योगदान**	श्रीमती शितल बुधा सोनवणे	111
26	खोती पद्धतीच्या निर्मूलनात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची भूमिका	प्रमेंद्र शामरावजी लाटीमार	118
27	**डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि पुणे करार**	**प्रा. किशोर शेषराव चौरे**	123
28	**महिलांचे उध्दारकर्ते - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर**	डॉ. टी. जी. हापसे	128
29	मराठी दलित कथेवर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराच्या विचाराचा प्रभाव	तोष्णा आ. बोदाडे (मोकडे)	132
30	डॉ बाबासाहेब आंबेडकर आणि महिला सक्षमीकरण	प्रा. ज्ञानेश्वर वारगे	138
31	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची गोलमेज परिषदामधील भूमिका	रविकिरण बसंतराव सदानशिव	141
32	**सायमन कमिशन साक्ष : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे अस्पृश्य समाजाच्या राजकीय क्षेत्रातील योगदान**	प्रा. लतिका पंकज पाटील	148
33	**डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा राष्ट्र उभारणीसाठीच्या कार्याचा आढावा**	निता श्रीराम राठोड / जया श्रीराम राठोड	156
34	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराचे कृषिविषयक विचार आणि कार्य : एक चिकित्सक अध्ययन	डॉ. रेखा मनोहर बडोदेकर	160
35	**डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची मानवतावादी राजकीय विचार प्रणाली**	**डॉ. वासुदेव डोंगरदिवे**	166
36	खोती पद्धती निर्मूलनात **डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका**	विजय सुखदेवराव निमजे	172
37	**डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांची राष्ट्र उभारणीतील भूमिका**	**सतीश पाटीलबा चव्हाण**	177
38	**डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राष्ट्र उभारणीतील योगदान**	**आकाश प्रशांत मेश्राम**	181
39	खोती पध्दतीच्या निर्मुलनात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान : एक अध्ययन	प्रा. प्रविण श्रीकृष्ण राऊत	189
40	**खोती पध्दतीचे उच्चाटन आणि डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार**	**प्रा. डॉ. सुरेश संतराम माळशिखरे**	192
41	**आधुनिक भारताचे निर्माते युगपुरूष डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर**	प्रा. विजय वि. आठवले	195
42	**जहागीरदार, इजारदार व जमिनदार यांच्याविषयी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार**	**प्रणिता डोमाजी धनविज**	199
43	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री शिक्षण विषयक कार्य	प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे	204
44	आदिवासी समाजाच्या विकासामध्ये डॉ. बाबासाहेबांचे योगदान	अजय हर्तसिंग सोळके	208
45	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि काळाराम मंदिर सत्याग्रह	कु. युगंधरा यशवंत शिवणकर	214
46	**नवभारतायी निर्मिती आणि संविधान**	डॉ. सिद्धार्थ जाधव /	221

ISBN No. 978-81-940865-8-1

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री शिक्षण विषयक कार्य

प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे
प्रमुख, मराठी विभाग, नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा, जि. अमरावती

भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार, दलितांचे कैवारी, स्त्रियांचे मुक्तिदाते, विश्वरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यानी स्त्री मुक्तीचा विचार राष्ट्रीय दृष्टिकोनातून केला. त्यांच्या मते ज्या देशात 50 टक्के स्त्रिया स्वतंत्र नसतात, तो देश अर्धा अधिक गुलाम असतो. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराच्या मते देशाच्या विकासासाठी पुरुषाच्या बरोबरीने स्त्रियानाही समान संधी देण्यात यावी. त्यांच्या मते स्त्रियांना समान संधी न देणे म्हणजे देशाची अर्धी शक्ती वाया घालविणे होय.

शिक्षणाला वाघीणीचे दुध मानणारे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे व्यक्तिचा सर्वांगीण विकास हा शिक्षणानेच होतो असे मानत. म्हणूनच स्त्रियांच्या शिक्षणाच्या बाबतीत ते उदारमतवादी होते. स्त्रीने शिक्षण घेतले तर कुटुंबासोबत समाजाचा पर्यायाने देशाचा विकास होतो. जर स्त्रीने शिक्षण घेतले नाही तर समाज अंधकारमय होवून समाजाची अधोगती होते म्हणून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर समाजातील अंधःकार दूर करण्यासाठी स्त्रियाना शिक्षण हे काळाची गरज मानत होते.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे सहशिक्षणाचे पुरस्कर्ते होते. स्त्री पुरुषाना एकच व समान शिक्षण दिले पाहिजे. स्त्रियांसाठी स्वतंत्र शाळा व महाविद्यालय काढण्याची आवश्यकता नाही. स्त्री पुरुषाच्या सहशिक्षणामुळे स्त्रिया समाजात निर्भिडपणे वावरू शकतील असे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरानी म्हटले आहे. स्त्रियांच्या विनय व पुरुषाची नीतिमत्ता मजबूत राखण्यासाठी वयाच्या 7 वर्षानंतर त्यांना वेगळे शिक्षण देण्यात यावे. हे पुराण मत बादरायांचे मत मान्य नव्हते.

डॉ. आंबेडकरानी 15 जुलै 1927 च्या बहिष्कृत भारत या वृत्तपत्रात असे लिहिले की, स्त्री पुरुषाची नितिमत्ता जर बाढवायची असेल तर त्यांचा सहवास जितका जास्त तितका आवश्यक घडवून आणला पाहिजे. पृथकपृथक ठेवल्याने अनीतिचा अग्नि शांत न होता जास्त भडकणार आहे हे कोणी विसरू नका.

बौद्ध राजांच्या काळात स्त्रीला जे स्वातंत्र्य होते ते नष्ट करण्याचा प्रयत्न मनुने केला. स्त्रीला गुलाम केले. मनुने घटस्फोटाला विरोध केला. या बंदीमुळे स्त्री पतीशी बांधली राहिली पण पुरुष मात्र मर्जीप्रमाणे वागण्यास मोकळा राहिला. पती पत्नीचा त्याग करू शकतो पण त्याग केल्यानंतर ही त्यांचा पत्नीवर हक्क कायम राहतो. हे सगळे नियम दास्यत्वात ठेवण्याचे निदर्शक आहेत हे बाबासाहेबानी ठामपणे प्रतिपादन केले. हिंदू स्त्रीची जाचक आचार विचारानी जखडलेली होती. तिची अवनत अवस्था बघून हिंदू स्त्रीच्या

ISBN No. 978-81-940865-8-1

मिळाला पाहिजे यासाठी त्यांनी सातत्याने पाठपुरावा केला. या त्यांच्या प्रयत्नाला यश ते कायदेमंत्री झाल्यावर आले.

स्त्रियांच्या उत्थानातील त्यांची सर्वात मोठी कामगिरी म्हणजे हिंदू कोड बिल होय. या बिलाचा मुख्य उद्देश हा की भारतीय संविधानाने जो स्त्री पुरुष समानतेचा हक्क दिला त्याचे स्पष्टीकरण करणे व हिन्दु धर्म शास्त्रामधील स्त्रिया विरोधी असलेले नियम, रूढी, परंपरा, नष्ट करून स्त्री-पुरुष समानतेचे नविन नियम प्रस्थापित करणे हा होतो. 1947 पासून सतत 4 वर्षे 1 महिना 26 दिवसात बाबासाहेबांनी हिंदू कोड बिल तयार केले आणि 24 फेब्रुवारी 1949 रोजी संसदेत मांडले परंतु अनेक बाजूनी होणाऱ्या विरोधामुळे 1951 साली आलेल्या सार्वत्रिक निवडणुकांच्या तोंडावर जवाहरलाल नेहरूंनी बिलातील केवळ 4 विषय मंजूर करून बिल फेटाळून लावले. त्यांनी हे बिल 5 फेब्रुवारी 1951 ला संसदे मध्ये मांडले. या बिलामध्ये मुलीच्या विवाहाचे वयामध्ये वृध्दी, आंतरजातीय विवाहाला मान्यता, स्त्रियांना पुरुषांप्रमाणे घटस्फोट घेण्याचा अधिकार, विधवा पुर्नविवाहाला मान्यता स्त्रियांना संपत्तीमध्ये समान अधिकार, स्त्रियांना दत्तक घेणे व घेता येण्याचा अधिकार इ. महत्त्वपुर्ण तरतूदीचा अंतर्भाव हिंदू कोड बिलमध्ये होता. हिंदू कोड बिलाच्या निर्मिती मधून त्यांना समाजात गौण स्थान असणाऱ्या स्त्रिला पुरुषाच्या बरोबरीने स्थान मिळवून दयायचे होते. त्यानंतर दि. 27 सप्टेंबर 1951 रोजी बाबासाहेबांनी आपल्या कायदेमंत्री पदाचा राजीनामा नेहरुकडे पाठविला. हिंदू कोड बिलाचा खून झाल्यामुळे मी राजीनामा देत आहे. असे त्यात त्यांनी नेहरूना ठणकावून सांगितले. स्त्रियांना जे कायदेमंडळ अधिकार देत नाही. त्या कायदेमंडळातील पदाचा राजीनामा बाबासाहेबांनी दिला. द राइस ॲन्ड हिंदू वूमन या ग्रंथातून त्यांनी मनुस्मृती स्त्रियांच्या उन्नतीला कशी हानिकारक आहे याचे वर्णन केले.

हिंदू कोड बिलामुळे हिंदू समाजात आमूलाग्र परिवर्तन झाले. हिंदू कोड बिलामुळे स्त्रियाच्या बाबतीत केल्या जाणाऱ्या अन्याय अत्याचाराला आळा बसला. बाईला खऱ्या अर्थाने मुक्त करणारा तिच्या पंखांना बळ देणारा भारतीय स्त्रीला कायदेशीर दृष्ट्या साक्षर आणि सक्षम करणारा हा कायदा या कायद्याने मनूच्या विषमतावादी कायदयाला जिवंत गाडले. त्यावर समतेची पताका लावली. मजूर मंत्री या पदावर असताना गिरण्या, कारखाने येथे काम करणाऱ्या कामगार स्त्रियांना पुरुषांच्या बरोबरीने वैतन मिळावे, स्त्रियांना बाळंतपणाची रजा मिळावी, महिलांच्या मुलांसाठी कामाच्या ठिकाणी पाळणा घरे असावी, वयात आलेल्या सर्वच पुरुषांसोबत स्त्रियांनाही मताधिकार असावेत अशा त-हेच्या मागण्या संमत करून घेतल्या. घटनेत लिंग, वय, अपंगता आदि भेद न मानता घटनेच्या 45 व्या कलमाप्रमाणे शिक्षण सक्तीचे मोफत व सर्वात्रिक केले.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर स्त्रियांच्या संघटनेच्या संदर्भात आग्रही होते. स्त्रिया नेहमी शोषीत व पिडीत राहिल्या आहेत. जर त्या संघटित होवून समोर आल्या तर त्यांना कोणीच रोखू शकणार नाही. कारण संघर्षाशिवाय काहीच मिळत नाही असे त्यांचे म्हणणे होते.

 ISBN No. 978-81-940865-8-1

परिषदेतील एका भाषणाला स्त्रियांना उद्देशून ते म्हणाले तुम्ही स्वत:ला अस्पृश्य मानू नका. घरी स्वच्छता ठेवा. स्पृश्य हिंदू स्त्रिया नेसतात त्या पध्दतीने नेसा. फाटके लुगडे असले तरी ते स्वच्छ असायला पाहिजे. तुमच्या पोटी जन्म घेणे हे पाप का व्हावे? सर्व गुलामगिरीची जननी ही बौद्धिक गुलामगिरी आहे. त्यासाठी शिक्षण हे प्रभावी हत्यार आहे. सर्व प्रकारच्या गुलामगिरीतून मुक्त होण्यासाठी शिका हा संदेश त्यांनी दिला.

20 जुलै 1942 ला नागपूरच्या परिषदेमध्ये 25 हजार महिलांसमोर भाषणात डॉ. बाबासाहेब म्हणालेत की तुमच्या मुला मुलींना शिकवा त्यांना महत्वाकांक्षी बनवा. त्यांच्या मनामधले जे न्यूनगंड आहेत ते त्यांना झटकून टाकायला सांगा. सर्वात महत्वाचे म्हणजे लग्न करण्याची घाई करू नका. लग्न ही एक जोखीम आहे. तुम्ही हे विसरता कामा नये की तुमच्या मुलांना सर्व प्रकारच्या सुविधा, सर्व प्रकारची साधन तुम्ही देऊ शकलात तरच तुरच तुम्ही त्यांना लग्न करायला सांगितल पाहिजे. कारण लग्न केल्यानंतर जी जबाबदारी त्यांच्यावर येणार ती पेलण्याची ताकद त्यांच्या खांद्यामध्ये, पायामध्ये असली पाहिजे. तेव्हाच त्यांनी लग्न करायला हवं. जोपर्यंत मुलगा आणि मुलगी स्वत:च्या पायावर उभी रहात नाहीत तोपर्यंत लग्न करण्याची घाई करू नये. लग्न केलेल्या मुलीने अत्यंत आदराने प्रेमाने नम्रतेने आपल्या जोडीदाराला सांगितले पाहिजे की मी तुझी मैत्रिण आहे. मी तुझ्या बरोबरीची आहे आणि सर्वात महत्वाचे म्हणजे मी तुझी गुलाम नाही तसेच कुटुंब नियोजना संदर्भात जास्त मुलांना जन्माला घालू नये हा राष्ट्रीय गुन्हा आहे.

खाण कामगार स्त्रीला प्रसूती भत्ता, कोळसा खाणीत काम करणाऱ्या स्त्री कामगारांना पुरुषांइतकीच मजुरी, मजुर व कष्टकरी स्त्रियांसाठी 21 दिवसाची किरकोळ रजा, एक महिन्याची हक्काची रजा, दुखापत झाल्यास नुकसान भरपाई आणि 20वर्षाचे सेवा झाल्यावर निवृत्ती वेतनाची तरतूद करणारे डॉ. बाबासाहेब हे जगातील पहिले व्यक्ती आहे. ज्या मतदानाच्या अधिकारासाठी युरोप मधल्या स्त्रियांना संघर्ष करावा लागला तो अधिकार भारतीय स्त्रियांना न मागता बाबासाहेबांनी दिला.

बाबासाहेबांनी स्त्रियांना आपल्या चळवळीत आवर्जून सहभागी करून घेतले. पुरुषाप्रमाणे स्त्री ही शिक्षित व्हावी यासाठी त्यांनी घटनेच्या 45 व्या कलमाने स्त्री-पुरुषांना शिक्षणाचा समान हक्क मिळवून दिला. स्त्रियांनी शिक्षण घेऊन स्वत:ची प्रगती साधावी, असे ते म्हणत. महाड येथील 27 डिसेंबर 1927 च्या परिषदेत आपल्या भाषणात बाबासाहेबांनी स्त्रियांना उद्देशून म्हणाले. जुन्या, गलिच्छ चालीरिती सोडून द्या, लुगडी नेसण्याची पध्दत बदला, गळ्यात खूप काचेचे मणी घालू नका, दागिना घालावयाचा असेल तर सोन्याचा घाला. स्वच्छ रहा, मांस खाऊ नका आणि मुलांना शिक्षण द्या. व पुढील पिढी सुधारायची असेल तर मुलींना शिक्षण द्या. त्यांचे म्हणणे स्त्रियांनी पाळावे म्हणून त्यांनी त्यांच्याकडून या परिषदेत अभिवचन घेतले होते. 20 जुलै 1942 च्या अखिल भारतीय दलित महिला परिषदेत त्यांनी प्रांतिक सरकारला पुढील तरतुदी करण्याचा आग्रह धरला होता. स्त्री शिक्षणात मागे आहे

ISBN No. 978-81-940865-8-1

पुरुषांच्या मानाने मागासली आहे. स्त्रियांना शिक्षित करण्यासाठी प्रत्येक ठिकाणी 50 मुलींचे वसतिगृह सरकारी खर्चात काढावे दुरुयम व उच्च शिक्षण घेऊ इच्छिणाऱ्या अस्पृश मुलींना सर्व सरकारी व निमसरकारी शाळांमधून फ्रिशिप व स्कॉलरशिप देण्याची तरतूद करावी असा आग्रह धरला.

स्त्रियांनी आपली प्रगती साधावी आपला विकास घडवून आणावा यासाठी प्रत्यक्षात त्यांनी शाळा महाविद्यालये स्थापन केली. मुलींसाठी वसतीगृहे, शिष्यवृत्ती, फी माफी व आर्थिक सवलतीच्या योजना राबविल्या. स्त्रियांमध्ये शिक्षणाविषयी जागृती घडवून यावी यासाठी जनशिक्षण, जनप्रबोधन यावर भर देऊन वृत्तपत्रे, मासिके यात लेख लिहून स्त्री शिक्षण, प्राथमिक व उच्च शिक्षण यावर मार्गदर्शन केले.

अशाप्रकारे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर स्त्री मुक्तीचे पक्के समर्थक होते. त्यांच्यावर तथागत गौतम बुध्दांची शिकवणुकीचा आणि महात्मा जोतिबा फुलेच्या कार्याचा प्रभाव होता. त्यांनी भारतीय समाजाच्या सर्वांगीण विकासासाठी आपले संपूर्ण जीवन कणाकणाने झिजविले.

निष्कर्ष :

1) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी स्त्रियांची प्रगती घडवून आणण्यासाठी स्त्री शिक्षणाचा पुरस्कार केलेला दिसून येतो.
2) डॉ. आंबेडकरांनी स्त्रियांना राष्ट्रनिर्मिती प्रक्रियेत सहभागी केले.
3) डॉ. आंबेडकरांच्या संविधानामुळेच आज स्त्री सर्व क्षेत्रात पुरुषांच्या बरोबरीने दिसते.
4) डॉ. आंबेडकरांचे स्त्री जातीला मिळालेले योगदान अतिशय मौलिक आहे.
5) डॉ. आंबेडकरांच्या स्त्री शिक्षण विषयक विचार व कार्यामुळे स्त्रियांमध्ये आत्मसन्मानाने जगण्याचे बळ निर्माण झाले.

संदर्भ :

1) स्त्री उत्थानात डॉ. बाबासाहेबांचे योगदान - प्रा. कुमुद पावडे
2) महिलांचे कैवारी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर - डॉ. रूपा कुळकर्णी बोधी
3) फुले आंबेडकरी स्त्री चळवळ - मिनाक्षी मून
4) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर - धनंजय कीर
5) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हिंदू कोड बिल - रत्नाकर गणवीर
6) डॉ. आंबेडकर आणि स्त्री - अरूणा सबाने



Sant Gadge Baba's Ten Commandments

Food for the Hungry

Water for the Thirsty

Clothes for the Naked

Education for the Poor

Shelter for the Homeless

Medicines for the Sick

Employment for the Jobless

Protection for the Animals

Marriage Opportunity for the Poor girls & Boys

Courage for the Unhappy & Frustrated



Sant Gadge Baba

Principal

This is today's true religion
This is true veneration & worship

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera dist. Amravati

Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya Gadegaon Telhara dist. Akola &

jointly organises international Level E-Conference

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Prof./Mr./Mrs. प्रा. डॉ. कल्पना व्य. मेहरे

of मराठी विभाग प्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जि. अमरावती

participated in One Day International Level E-Conference on topic "CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY" organized on 14th October, 2021 byNarayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera dist. Amravati & Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya Gadegaon Telhara dist. Akola & .B.Aadhar Multi-Disciplinary Peer Reviewed & Index Research Journal, Amravati (M.S) with Impact Factor 7.675 (SJIF) & ISSN: 2278-9308. He/She presented his/her Research Paper

entitled मराठी नियतकालिकांचा उदय आणि विकास

in the Paper Reading Session. This certificate is issued in recognition of publication of the research paper.

Prof. Virag S. Gawande	Dr.Dhiraj Kumar Nagpure	Dr.Santosh Bansod	Dr Gopal J Dhote	Dr Gopal S Vairale
Chief Editor	Convener	Convener	Principal	Principal

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

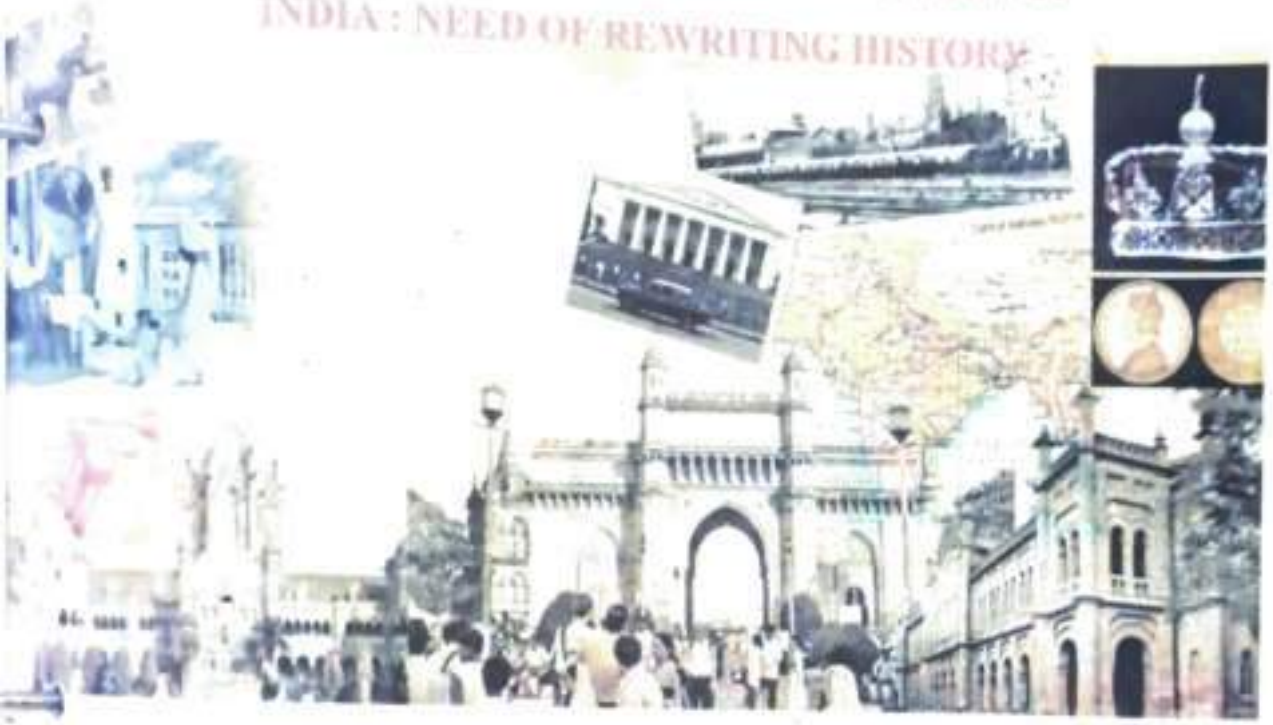
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Bansod,
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

SJIF Impact Factor 7.675 ISSN 2278-9308

B..Iadhar

Peer Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October 2021

ISSUE No (XXXV) 5(2)

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Indian Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Ramod,
Head , Department of History
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Rajkeera, Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Impact Factor – 7.675 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October -2021

ISSUE No- (CCCXX) 320

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr Santosh Bansod,
Editor
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera,Dist. Amravati.

Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya, Gadegaon, Telhara Dist. Akola

Aadhar International Publication
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

Principal



INDEX- 320

No.	Title of the Paper Name	Authors'	Page No.
1	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम	प्रा.डॉ.संतोष गोपाळकृष्ण कुळकर्णी	1
2	ब्रिटीशांचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवर झालेले दुष्परिणाम	प्रा.डॉ.भास्कर शा.खंडारे	4
3	ब्रिटीश राजवटीतील भारताच्या शैक्षणिक प्रगतीचा आढावा - एक अध्ययन	प्रा. डॉ. पी. आर. जुनघरे	7
4	ब्रिटीशकालीन भारतातील पहिला दलित क्रिकेटर : बाळू पालवणकर	डॉ. लोंढे एच. एम	12
5	भारतातील ब्रिटीश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम	प्रा.सुरेखा रामदास लगड	16
6	ब्रिटिश कालीन भारतातील भू–धारणा पध्दती	प्रा.गौतम विक्रम भालेराव	19
7	ब्रिटीश आक्रमण का भारतीय मुस्लिम समुदाय की शिक्षावस्था पर परिणाम के परिप्रेक्ष्य में अलिगढ आंदोलन का महत्व	डॉ. सैय्यद मुजाहिद सैय्यद बासित	24
8	ब्रिटिश सत्ता आणि भारतीयांचे आर्थिक शोषण: एक अभ्यास	प्रा. डॉ. प्रकाश जंगले	27
9	प्राचीन भारतीय इतिहासाचे पुनर्लेखन आणि पुनर्विचार	प्रा.गौडदाब लखन अभिमान	30
10	मेमसाहेबांचे कार्य : इतिहास पुनर्लेखनाची गरज	डॉ. सुनिता हनुमंत गित्ते	33
11	ब्रिटीश आक्रमणाचे भारताच्या सर्वांगीण जीवनावर झालेले दुष्परिणाम	डॉ. रावसाहेब भीमराव नेरकर	35
12	मराठी नियतकालिकांचा उदय आणि विकास	डॉ.कल्पना ज्यं.मेहरे	38
13	ब्रिटिश आक्रमणाचे भारताच्या आर्थिक जीवनावरील परिणाम	डॉ. प्रदिप शा. ढोले	41
14	ब्रिटीशांची आर्थिक निती आणि भारतीय उद्योग	प्रा. राजेन्द्र एम. देवाळकर	45
15	भारतावरिल ब्रिटीश आक्रमणाचा मेळघाटातील आदिवासी कोरकू जमातीच्या सामाजिक घटकावर झालेला परिणाम .	रोशन रामदास भटकर	48
16	भारतातील ब्रिटिश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम	प्रा. डि. बि. भुईभार	52

International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO. 320 (CCCXX))
ISSN : 2278-9308
October, 2021

मराठी नियतकालिकांचा उदय आणि विकास

प्रा. डॉ. कल्पना त्र्यं. मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जि. अमरावती

मराठी नियतकालिकांनी वाङ्मयाला मोलाचे योगदान दिले आहे. "जे एकाच शीर्षकाखाली किमान आठवड्याच्या किंवा त्याहून अधिक कालावधीने सामान्यत: नियमितपणे प्रसिद्ध होते, आणि ज्यात अनेक विषयांवरील सर्वसाधारणपणे विविध लेखकांचे साहित्य संकलित केलेले असते त्यास नियतकालिके म्हणतात. असा नियतकालिकांचा अर्थ विश्वकोषात दिला आहे. समाजमनावर हळूहळू पण ठामपणे संस्कार घडविणे हे नियतकालिकांचे कार्य आहे. नियतकालिकांचा उदय युरोपमध्ये १७ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात झाला. जगातील पहिले नियतकालिक इ.स. १६६३ साली जर्मनीमध्ये सुरू झाले त्यानंतर १७ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात व इंग्लंड, फ्रान्स, इटली मध्ये नियतकालिके निघू लागली. हा काळाशी निगडित असणारा प्रबोधनाचा सातत्यपूर्ण आविष्कार आहे. भारतामध्ये प्रथम बंगाली भाषेत १८१८ ला 'दिग्दर्शन' नावाचे मासिक जे.सी. मार्शमन यांच्या संपादनाखाली सुरू झाले. त्याच वर्षी 'समाचार दर्पण' हे साप्ताहिक सुरू झाले ही दोन्ही नियतकालिके श्रीरामपूरहून प्रसिद्ध हो असत. मुद्रणाच्या सुकरतेमुळे नियतकालिकांचा संभव आणि वाङ्मय निर्मितीस चालना मिळाली.

भारतात मराठीतील पहिले नियतकालिक 'दर्पण' चा पहिला अंक ६ जानेवारी १८३२ रोजी बाळशास्त्री जांभेकर यांनी काढला. प्रथम पाक्षिक नंतर साप्ताहिकात रूपांतर केलेल्या नियतकालिकाचा हेतू नव्या, पाश्चात्य ज्ञानाचा अभ्यास व्हावा, लोकांचे कल्याण व्हावे, देश समृद्ध व्हावा असा होता. आठ वर्ष चालल्यानंतर २६ जून १८४० रोजी शेवटचा अंक निघाला आणि दर्पण बंद पडले. जांभेकरांचे एक सहकारी भाऊ महाजन (गोविंद विठ्ठल कुटे) यांनी २४ ऑक्टोबर १८४१ रोजी प्रभाकर नावाचे साप्ताहिक सुरू केले. त्यातून लोकहितवादी यांची १८४८–१८५० दरम्यान शतपत्रे सुरू झाली. इ.स. १८४२ मध्ये ज्ञानोदय (अहमदनगर) इ. स. १८४२ मध्ये ज्ञानसिंधु, चंद्रोदय १८४४ मित्रोदय (पुणे) इ.स.१८४९ ज्ञानप्रकाश इत्यादी नियतकालिके एकामागे एक असे विविध ठिकाणी सुरू झाली. या काळात काही नियतकालिके निघायचे तर काही बंद पडायचे आणि बंद पाडणे हा प्रकार घडत होता.

नियतकालिकांची अशी प्रथा एतद्देशीयांनी इंग्रजांपासूनच उचलली. या प्रथेला आवश्यक अशी परिस्थिती यापूर्वी निर्माण झाली नव्हती. शिक्षणाचा प्रसार, वाचन लेखनाची आवड, रेल्वे तारायंत्र इ. दळणवळणाच्या साधनांमुळे प्रवासाची व बातम्या मिळवण्याची सोय, छापखाने, अल्पमोलाने व श्रमाने लेखन प्रसाराचे साधन हया सर्वांमुळे नियतकालिकांची निर्मिती होत होती व नियतकालिकांची नावे ही अन्वर्थक होती. लोकशिक्षण देणे प्रसार करणे, भौतिकशास्त्रांचा जनसामान्यांना परिचय करून देणे हे केवळ मनोरंजनापेक्षाही उद्बोधनाचेच उद्दिष्ट या नियतकालिकांमागे होते. इ.स. १८५४ मध्ये 'ज्ञानदर्शन' हे त्रैमासिक सुरू केले. पहिल्याच अंकात उद्देश स्पष्ट करताना लिहिले आहे की, मराठी भाषेत विद्यांच्या विषयांवर व त्यात करून पश्चिम देशातील विद्यांच्या विषयावर फारच थोडे ग्रंथ आहेत व कित्येक विषयांवर तर अजून मुळीच लिहिले गेले नाही. तेव्हा अशा विषयांची लोकास माहितगारी होण्याकरिता साधन उपस्थित केले असता त्यापासून उपयोग पडेल असे मनात आणून हे त्रैमासिक काढण्याची योजना केली आहे.

'दिग्दर्शन' या मासिकात बातमीचे सार भूगोल, इतिहास, पदार्थविज्ञान, रसायनशास्त्र व साधारणविधी याविषयी थोडा थोडा मजकूर दुसऱ्या ग्रंथातून घेतलेला किंवा नवा छापला जाई. लोकांची समजूत पटावी म्हणून प्रसंगोपात्त चित्रेही देण्यात येत. हिंदुस्थानचा इतिहास, ग्रीस देशाचा इतिहास, पदार्थविज्ञान, ज्योतिष्यशास्त्र, सामान्यनीती इत्यादी महत्त्वपूर्ण विषयावर या मासिकात लेख प्रसिद्ध झाले आहेत. यावरून नियतकालिकाच्या कार्याचे स्वरूप लक्षात येते.

प्रत्येक नियतकालिकांच्या उदयामागे काही ना काही उद्दिष्ट होते असे नियतकालिकांच्या इतिहासावरून लक्षात येते. लोकशिक्षणासाठी निर्माण होणाऱ्या गरजा लक्षात घेऊन नियतकालिका

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

निघत होती. आणि यातून होणाऱ्या विचार जागृतीमुळे प्रबोधनाच्या पर्वाला गती मिळत होती ही वस्तुस्थिती महत्त्वाची आहे.

पाश्चात्त्य शिक्षणाच्या संस्कारामुळे सुधारकांचा पक्ष उदयाला येत होता. त्याच प्रमाणे एतद्देशीय संस्कृतीच्या पुनरुज्जीवनामुळे परंपराभिन्यांचा, पुराणमतवाल्यांचा, ही पक्ष उदयाला येत होता. ख्रिस्ती मिशनरी विरूध्द, एतद्देशीय सुधारक आणि एतद्देशीय मवाळ्यी असाही संघर्ष उद्भवला आणि ख्रिस्ती मिशनऱ्यांच्या हिन्दूधर्मविषयक मतप्रचाराचे खंडण करण्याकरिता नियतकालिके निघाली. त्याचप्रमाणे नवविचार प्रवर्तकांच्या मताचे खंडण करण्याकरिता म्हणून देखील नियतकालिके निघाली.

एतद्देशीयांचे विचार पाश्चात्त्यांनाही समजावेत म्हणून प्रारंभी अनेक मराठी नियतकालिकांत इग्रजी मजकूर असे याचे उदा. म्हणजे प्रभाकर (१८४०) हे नियतकालिक होय. याबरोबर धार्मिक कारणासाठी नियतकालिके निघाली होती. वर्तमानदीपिका हे पुराण मतामिमानी हिंदूधर्मीयांचे नियतकालिक होते. तर पुढे प्रार्थना समाजाचे 'सुबोधपत्रिका' (१८७०—७४) सुरू केले. ही धार्मिक स्वरूपाची पण धर्मसुधारक मनाची होती. ज्ञान प्रकाश (१८४९) व हिंदू प्रकाश (१८६२) ही पत्रे राजकीय व सामाजिक विषयांची चर्चा करीत होती.

सत्यशोधक सातारा (१८७१), माळवा, अखबार, खानदेश वैभव (१८६८) अशी प्रादेशिक नियतकालिकेही त्याकाळात निघत होती. 'पुणे वैभव' ते जुन्या कर्मठ पंथाचे मुख पत्र होते. मराठी ज्ञान प्रसारक (१८५०), सृष्टिदान (१८५५), विद्या कल्पतरू (१८६८) विद्यामाला (१८७८) इ. ज्ञानविज्ञानाला वाहिलेली मासिके नाना विद्या, कला, कौशल्ये युक्ती व कारखाने व दुकाने, औषधे व त्यांचा क्रिया हुन्नरे इ. अनुभवसिद्ध निरूपण व उपयुक्त माहिती त्यात असे तसेच विचारलहरी (१८७४), सिद्धर्मदीपिका (१८७७) उपयुक्त ज्ञान सागर (१८७७) ही मासिके सुरु होती.

स्वतःला मराठी भाषेचे शिवाजी समजणारा विष्णुशास्त्री चिपळूणकरांनी इ.स. १८७४ मध्ये निबंधमाला' सुरू केले. पुढे इ.स १८७७ मध्ये श्री नामजोशी यांनी 'किरण' मासिक तर भालेकर बधूनी 'दिनबंधू' हे साप्ताहिक सुरु केले.

पुढे इ.स.१८८०—८१ च्या सुमारास केसरी चा जन्म झाला. केसरीचा पहिला अंक १८८१ मध्ये निघाला केसरीने लोक जागृती बरोबर देशाभिमान, धर्माभिमान, इतिहासाभिमान, जागविला. इ. स. १८८५ 'सोलापूर समाचार' निघाले. इ.स. १८८९ मध्ये आगरकरांनी समाजसुधारणेसाठी स्वतंत्र सुधारक सुरू केले. इ.स. १८८९ ला मुंबई येथे वार्ताहर पत्र सुरू झाले. इ.स. १८९० हरिभाऊ आपटे यांनी 'करमणूक' हे साप्ताहिक सुरू केले. इ.स.१८९६ मध्ये 'मनोरंजन' चा जन्म झाला. पुढे 'निबंधचंद्रिका', शि.म. परांजपे यांचे 'काळ' कोल्हापूरचे 'ग्रंथमाला' मासिक 'मुंबई वैभव', ज्ञानप्रकाश' यासारखी वृत्तपत्रे मासिके, पाक्षिके निघू लागली.

विसाव्या शतकात 'सृष्टिज्ञान', 'किर्लोस्कर', 'मराठी शिक्षक', 'रंगभूमी' अशी नियतकालिके निघाली. ललित साहित्याला प्राधान्य देणारी 'रत्नाकर' (१९२५), 'महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका' (१९२८), 'सत्यकथा' (१९३३), 'प्रतिभा' (१९३३), 'पारिजात' (१९३४), 'ज्योत्स्ना' (१९३६), 'अभिरुची' (१९४३), 'युगवाणी' (१९४६), 'साहित्य' (१९४७), 'प्रतिष्ठान' (१९५३), 'छंद' (१९५४) 'आलोचना' (१९६२).

'महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका' 'सत्यकथा' 'अभिरुची', 'साहित्य', 'छंद', 'हंस', 'प्रतिष्ठान', 'आलोचना', 'पंचधारा', 'ललित', 'कवितारती', 'रुची', 'उगवाई', 'समुचित', 'समाज प्रबोधन पत्रिका', 'सत्यप्रकाश' 'अस्मितादर्शन', 'अक्षरवैदर्भी', 'वाटसरू', 'ज्ञानभाषा', 'पूर्वा', 'उर्मी', 'साधना', 'सर्वधारा', 'भावमाला' इत्यादीचे समकालीन साहित्याच्या जडणघडणीत अत्यंत महत्त्वाचे स्थान आहे.

'माहेर', 'अनुराधा', 'रोहिणी', 'स्त्री' ही रंजनवादी नियतकालिके असून 'बायजा', 'बाई' 'मिठ्ठू मान्या जणी' 'प्रेरक', 'खलकारी', 'आकांक्षा' इत्यादी नियतकालिकांनी स्त्री प्रश्नांची चर्चा केली आहे.

आज काळ बदलला आहे. काळाबरोबर नियतकालिकेही बदलत आहे. काळाची आव्हाने झेलत आहे. हा बदल बाहय रूपाचाच नाहीतर आतरिक दर्शनाचाही आहे. काळाबरोबर राहून प्रबोधन करत आहे.

निष्कर्ष

- नियतकालिकांनी आधुनिक काळात मराठी साहित्याच्या चळवळी रेखाटले मोठे काम केले आहे
- मराठी नियतकालिकांनी प्रबोधनासह वाङ्मयीन अभिरुची विकसित केली
- मराठी नियतकालिकांनी अनुवाद शिक्षण पद्धतीच्या माध्यमातून साहित्याचे नवीन पद्धतिचे
- मराठी नियतकालिके देशातील साहित्य साहित्यिकांचा या प्रेरणेतून विचार झाली
- मराठी नियतकालिकांनी वाचकांना साहित्यिकांचे वाङ्मयाचा एक विशिष्ट दृष्टिकोन दिला
- ज्ञानाजनाचे व वैचारिकता समृद्ध करण्याचे मोठे कार्य नियतकालिकांनी केले
- आज आधुनिकतेच्या युगात मुद्रण माध्यमात अनेक प्रतिस्पर्धा होऊन, दिपुन ही प्रकाशन अणण्याचे काम आज सोप्या प्रमाणात ही वाङ्मयीन नियतकालिके करीत आहे

संदर्भ ग्रंथ सूची

१) ग. गो. मानकर मराठी नियतकालिकांचा इतिहास कर्नाटक पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई
२) डॉ. श्या. ना. देशमुख मराठी नियतकालिकांचा वाङ्मयीन अभ्यास (खंड – ३) स्नेह वर्धन प्रकाशन, मुंबई
३) सौ. डॉ. ज्ञा. दि. कुलकर्णी मराठी नियतकालिकांचा वाङ्मयीन अभ्यास (खंड – १) पुणे विद्या प्रकाशन, पुणे
४) प्रा. दत्ता भगत – आधुनिक मराठी वाङ्मयाची सांस्कृतिक पार्श्वभूमी, विनय प्रकाशन, औरंगाबाद




NARAYANRAO RANA MAHAVIDYALAYA
BADNERA AMRAVATI (M.S.)
DR. GOPALRAO KHEDKAR MAHAVIDYALAYA GADEGAON
TELHARA DIST. AKOLA (M.S.) INDIA
ONE DAY INTERNATIONAL E-CONFERENCE
On
CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY
14th OCTOBER 2021
Jointly Organized by Departments of History
CHIEF PATRON
Organizing Committee


Our Guests, Resource Persons and Eminent Experts


Co-Convenor
Organizing Committee Members
National Advisory Committee
State Advisory Committee


University B.O.S. Member
University Professors
ORGANIZERS

Aadhar PUBLICATIONS
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Email: aadharpublication@gmail.com
For Details www.aadharsocial.com
Price:Rs.500/

Impact Factor – 7.675

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

Peer-Reviewed Indexed

March - 2020

SPECIAL ISSUE - CCVII

The Relevance of Buddha's Philosophy in the Present Era

Dr. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Prof. P. R. S. Rao,
Editor :
Secretary, SDGCT, Amravati.

Dr. Varsha Gawande
Executive Editor :
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar International Publications

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

Principal
Mahavidyalaya

INDEX

Sr. No.	Title	Author	Page No.
1	Quantumneurodynamics Of Vipassana Meditation	Bhikkhu Ananda	1
2	Relevance Of Buddhism In Human Rights Philosophy	Dr P.S.Khadse	4
3	Manimekalai : On Buddhist Path Through Women Empowerment Incarnated In The Thoughts Of Buddha	Anoma Sākhare	10
4	Relevance Of Buddhism For Business Ethics & Management	Dr. Kishor M. Akotkar	12
5	Shopping Malls: The Changing Face Of Indian Retailing Market	Dr. Mallu Ahla Padaval	17
6	Buddhas Remedy To World Misery	Dr. Varsha E. Gawande	21
7	Bhutan: Buddhist Model Of Development	Prof. Yashwant V. Harne	24
8	Vipassana Meditation, Martial Arts And Buddha	Dr. Waman Gulabrao Jawanjal	27
9	Buddha's Teaching And World Peace	Prof. Dr. Mrs. Savita D. Thakare	31
10	Social, Political And Economical Issues Under Buddhism Philosophy And Dr. Babasaheb Ambedkar's Views	Prof. Nandkishor K. Ramteke	34
11	Buddhism In American Poetry: A Study Of Gary Snyder's Poetry	Prof. Shuddhodhan P.Kamble	38
12	"The Learning Gained By The Prospective Entreprenure From Buddhas Principle"	Ms. Mayuri Tatte	41
13	Buddha's Perspective On Gender Equality And Discriminations	Mr. Sachin M. Pandit	44
14	The Noble Eightfold Path Of Lord Buddha: A Boon To The World	Mrs. Priyanka A. Sarda	47
15	Exploring Ethics Of Management Rested In Buddhism	Dr. L. K. Karangale	51
16	Poverty In Economy And Role Of Buddhism	Dr. Mangala R. Bhate	55
17	The Relevance Of Buddhist Principles And Business	Dr. Rajesh M. Deshmukh	57
18	Global Peace And Buddhism	Asst.Prof.Dr. Dayanand U. Raut	60
19	Buddhist Economic	Dr. Ravindra J. Kayde	62
20	Buddhist Perspectives In Harry Potter Series.	Ms. S. S. Joshi	67

21	Women Empowerment Incarcenated In Thoughts Of Buddha	Dr. Parag Kukade	71
22	Existentialist And Buddhist Perspectives In Modern Indian Novel	Dr. S. P. Joshi	75
23	Buddha: The Science Of 'Closed Eyes'	Dr. Satyendra B. Gadpayale	78
24	The Relevance Of Buddha And Business.	Prof. S.K. Tantrapale	83
25	The Economics Of Ecosystems And Biodiversity: The Ecological And Economic Foundations	Prof. Pritesh B. Patil	87
26	A Buddhist Approach To Management	Asst. Prof. Naval Daulatrao Patil	91
27	Empowerment Of Women And Buddhism: An Overview	Aruna Kadu	94
28	बुध्द धम्म विश्वकल्याणाचा मार्ग	प्रा. डॉ कल्पना ज्ञं. मेहरे	96
29	**बौध्द धर्म भारतीय संस्कृतीला मिळालेली देणगी**	**प्रा. डॉ.माधुरी मनोहरराव पाटील**	98
30	वर्तमान स्थितीत बुद्ध तत्वज्ञानाची गरज : एक चिंतन	डॉ. पूनम अभ्यंकर	101
31	बौद्ध तत्वज्ञानातील मानवतावाद	प्रा. पी.एल. अंबोरे	105
32	धर्म प्रार्थनास्थळात बंदिस्त धम्म : एक विश्लेषण	डॉ. दिनेश स. धाकडे	108
33	**बौद्ध धम्म : एक वास्तविकता**	**डॉ. पी. जी. राठोड**	110
34	**बौद्ध धर्म व संस्कृती**	**प्रा. प्रविन एन. वानखडे**	113
35	बुद्धाचा स्त्रीवादी दृष्टिकोन	प्रा. डॉ. कुमदेद्र ग. सोनटक्के	116
36	नारी स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति : थेरीगाथा	डॉ. कमलाकर पायस	118
37	तणावमुक्तीकरिता **विपश्यना**	डॉ. सारिका एन. दांडगे (बोदडे)	121
38	**बौध्द धम्म तत्वज्ञानाचा भारतीय** लोकसंगीतावर **प्रभाव**	**प्रा. कु. प्रिति जी. इंगळे (वाकपांजर)**	124
39	**प्राचीन बौद्ध वास्तुकला** आणि आधुनिक **महत्त्व** विशेषत: **महाराष्ट्राच्या संदर्भात)**	**डॉ.ओमप्रकाश सा.**बोबडे	129
40	दुःख मुक्ति की साधना – विपस्सना	प्रा.डॉ..रेखा.जे.वानखडे	133
41	लोकतंत्र मैत्रागतिक शांतता के लिए बुध्दिझम एवंविपस्सना	प्रा. सुनिता श्रीखंडे	140

'Aadhar' International Multidisciplinary Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675.
Special Issue
ISSN : 2278-9308
March 2020

बुध्द धम्म विश्वकल्याणाचा मार्ग

प्रा. डॉ कल्पना च. येवले
मराठी विभाग प्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा (रेल्वे) जि. अमरावती

बुध्द हा एक मानवतावादी धम्म आहे. मानव उत्थानाचा धम्म आहे. या धम्माचा केंद्रबिंदू मानव आहे. मानवाचे कल्याण हाच सुख हे बुध्द धम्माचे अंतिम उद्दिष्य आहे. मानवाची मानव मुक्ती व मानव कल्याणाचा तो सरदशीर मार्ग आहे. म्हणून तर मृत्यू पर्यंतचा प्रवास आनंददायी करणारा आहे. म्हणूनच या धम्मामध्ये देव, आत्मा, चमत्कार, पूर्वजन्म तसेच इ सर्व बाबी नाकारलेल्या आहेत. बुध्दीप्रामाण्य व विज्ञाननिष्ठेवर आधारित असा धम्म आहे. समतेचा पुरस्कार करणारा धम्म असून त्याने वर्णाश्रम पध्दतीला अजिबात थारा नाही. स्त्री-पुरूष समानतेचा पुरस्कार बुध्दांनी केलेला आहे. म्हणूनच त्यांनी भिक्खू संघामध्ये महिला भिक्खूनींचा समावेश केला होता. बुध्द, धम्म हा स्वातंत्र्य, समता व बंधुता या जीवनमूल्यांना अंगीकार करणारा लोकशाहीवादी धर्म आहे.

बुध्द धम्मामध्ये माणसाच्या सदाचाराला अनन्य साधारण महत्व आहे. सदाचारात शील हे सर्वात महत्वाचे तत्व आहे. बुध्दाने प्रथम शील नंतर प्रज्ञा व शेवटी करूणेचा संदेश दिला. शिला शिवाय प्रज्ञा घातक आहे. बुध्द हे चारित्र्याला महत्व देतात. ज्ञान असेल परंतु त्याचा उपयोग विघातक कार्य करण्यासाठी होत असेल तर ते ज्ञान घातकच आहे. प्राप्त ज्ञानाचा उपयोग विधायक कार्यासाठी करण्याकरीता स्वत: शीलवान असणे, चारित्र्यवान असणे फार आवश्यक आहे. जर ज्ञानी व्यक्ती आपल्या ज्ञानाचा उपयोग अज्ञानी लोकांना फसविण्यासाठी, त्याचे शोषण करण्यासाठी करत असेल तर ते ज्ञान घातक ठरते. ज्ञानाचा उपयोग नेहमी सुकर्मासाठी करायला पाहिजे.

जीवनात पवित्रता राखणे म्हणजे धम्म होय. कारण मनाची, शरीराची, वाचेची, बुध्दीची पवित्रता जर असेल तर व्यक्ती मरणोत्तर देव होवू शकतो. बुध्द तत्वज्ञान सांगते की मनुष्याचा उध्दार कोणताही देव किंवा दैवीशक्ती करत नाही. त्याच्या स्वत:च्या हातानेच तो होतो. अत दिप भव' स्वयं प्रकाशीत व्हा. स्वत:च स्वत:ला प्रकाशात आणा, प्रगती करा, नावलौकीक मिळवा. बुध्दाचा विचार उत्कृष्ट व पापमुक्त जीवनशैलीचा आहे. बुध्द म्हणतात, या जगात वैराने वैर शमत नाही ते अवैराने शमते.

गौतम बुध्दाच्या मते आत्मसंतोषी राहणे ही मानवाची सर्वात मोठी संपत्ती आहे. कारण जगातील सर्व गोष्टी नश्वर आहे. त्यामुळे म्हणजेच धम्म होय. आपले शरीर हे नष्ट होणारे आहे. कारण मृत्यूनंतर ते पंचतत्वात विलीन होते. त्याचप्रमाणे प्रत्येक वस्तू ही कोणत्या ना कोणत्या वस्तू पासून बनलेली आहे. आणि तिला एक दिवस नष्ट होणे आहे आणि म्हणूनच म्हटल्या जाते की जगातील सर्व नश्वर आहे. आपले कर्म हेच नैतिकतेच्या नियमाचे शास्त्र आहे. यावर विश्वास ठेवणे म्हणजे धम्म होय. आपले कर्म आपल्या जीवनात फळ देतात. चांगल्या कर्माचे फळ चांगलेच मिळते.

धम्म हा एक विचार आहे हा सद्विचार माणसाला सत्कृत्याकडे नेणारा आहे. माणसाने माणसाशी माणसासारखे वागले पाहिजे असा संदेश धम्म देतो. बुध्द हा मूलतत्ववादी नसून परिवर्तनवादी, सर्व कल्याण तत्ववादी आहे. बुध्द सांगतात स्वत:ला कमी लेखू नका, वाहती नदी करा सगळ्यांवर प्रेम करा म्हणजे कुणाचा द्वेष करण्याची आणि द्वेषापोटी कुणाची हत्या करण्याची मानसिकता होणार नाही. बुध्दाने सर्वांच्या हिताची, सहिष्णुतेची, परस्पर सौहार्दाची संस्कृती सुरू केली.

धम्म म्हणजे नितीचा सर्वोत्कृष्ट नमुना होय. मनुष्याचे चांगले आचरण म्हणजे धम्म आहे. धम्मात देव आणि आत्म्याला स्थान नाही. धम्माचे स्वरूप हे परिवर्तनशील आहे. धम्मात बुध्दिवादाला स्थान आहे. धम्म म्हणजे स्वातंत्र्य असून धम्म माणसाला मुक्त करतो.

गौतम बुध्दाचे चार आर्यसत्य

१) जगात दु:ख आहे.
२) दु:खाला कारण आहे.
३) दु:खाचे कारण तृष्णा आहे
४) दु:ख नष्ट करता येते.

Principal
Narayn... ...halaya

ISSN : 2278-9308
March 2020

लोभ व तृष्णा यांच्या आहारी न जाणे हा बौध्द जीवनमार्ग आहे. त्यानी कोणालाही कमेश देऊ नका व दुसऱ्या संबंधी बोलू नका असा उपदेश दिला आहे. त्यांच्या मतानुसार मनुष्याने प्रथम सन्मार्गाचा स्वीकार करावी. मग दुसऱ्याला त्याचा करावा. शहाण्या माणसाने स्वत:चा दोष तपासील असे वर्तन करता कामा नये.

भगवान बुध्दांनी दु:खाचे कारण जाणून घेऊन आपल्या मनातील दु:खाचे मूळ शोधले. मन जर समाधानी, शांत असेल तर मानवाचे जीवनही सुखकर होते.

बुध्दांनी आपले पंचशील पुढीलप्रमाणे विशद केले आहे.

प्राणाची हत्या करू नका म्हणजे त्यांनी दया, प्रेम, आपुलकीची शिकवण दिली.

चोरी करावे करू नये असे सांगितले म्हणजे सद्वर्तन व सामाजिक सुरक्षितता प्राप्त करण्यावर भर दिला.

व्यभिचार नियंत्रण असावे. कुणीही स्त्री-पुरूषांनी एकमेकांपती वाईट भावना ठेवू नये.

खोटे बोलण्यास मनाई केली. त्यांनी सत्याचा पुरस्कार केला.

मादक पदार्थ व दारू सेवनाला मनाई केली.

कारण, मादक पदार्थामुळे आरोग्याची हानी होते. सोबतच कुटुंबाचे नुकसान होते.

पृथ्वीवर सदाचाराचे राज्य निर्माण करणे, पृथ्वीवरील दु:ख नष्ट करणे हा धम्माचा उद्देश आहे.

भगवान बुध्दांनी संपूर्ण विश्वाला वैकल्पीक आधारावर विचार करण्याची पध्दत दिली आणि विविध महत्त्वपूर्ण सिध्दांत या सिध्दांतापैकी एक प्रतीत्यसमुत्पाद हा सिध्दांत खूप महत्त्वपूर्ण आहे. या सिध्दांतानुसार कोणतीही घटना ही स्वत: हून घडत त्यामागे काहीतरी कारण असते. या कारणामुळे घटना घडते. प्रसिध्द वैज्ञानिक आईनस्टाईन आपल्या सापेक्षतावादाच्या श्रेय भगवान बुध्दाच्या प्रतीत्यसमुत्पादला देतात. ते बुध्दाला विश्वातील महान वैज्ञानिक मानतात. बुध्दाचे विचार असल्यामुळे त्यावर काळाच्या मर्यादेचे बंधन नाही. अडीच हजार वर्षापूर्वी बुध्दाचे विचार जेवढे उपयोगी होते तेवढेच सुध्दा आहे. बुध्द धम्म हा विश्व कल्याणाचा सोपा मार्ग आहे.

संदर्भ
भगवान बुध्द आणि त्यांचा धम्म - डॉ. भिमराव रामजी आंबेडकर
भगवान बुध्द आणि त्यांची चार आर्यसत्ये - डॉ. सुरेंद्र मांडवधरे
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा बुध्द धम्म - प्रा. यशवंत मनोहर
तथागत गौतम बुध्द - माने गुरूजी
बुध्द धम्म - डॉ. धनराज डाहाट
धम्मपद - सत्यनारायण गोयनका
मार्क्सवाद, बुध्दवाद आणि आंबेडकरवाद - डॉ. कऱ्हाडे सदा
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे निवडक लेख - डॉ. गंगाधर पानतावणे

SHRI DADASAHEB GAWAI CHARITABLE TRUST, AMRAVATI

(A Buddhist Religious Minority Institution Recognised by the Govt. of Maharashtra)

Shyam Nagar Amravati - 444 606
Regd No. : E-275 (Amravati)
Email : sdgct1991@gmai.com

COLLEGES

Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya	Uttam Nagar, Amravati.
Takshashila Mahavidyalaya	Shyam Nagar, Amravati.
Ramkrushna Mahavidyalaya	At Post Darapur, Tq. Daryapur, Amravati
Ramkrushna Shikshan Shastra Mahavidyalaya B. Ed.	Uttam Nagar, Amravati.

INSTITUES UNDER DIRECTORATE OF TECHNICAL EDUCATION

Dr. Sau Kamaltai Gawai Institute of Engg and Technology	At. Darapur ,Tq. Daryapur, Amravati
Kamalprakash Pharmacy College and Research Center	At Kherda, Tq. Karanja Lad, Washim

POLYTECHNICS

Vikramshila Polytechnic	At Darapur. Amravati.
Kirti Polytechnic	Uttam Nagar, Amravati.

ITI

Nalanda Industrial Training Institue	At. Mogra, Post. Bhankheda, Amravati
Samrat Ashok Industrial Training Institute	At. Darapur, Tq. Daryapur, Amravati

JUNIOR COLLEGES

Dr. Babasaheb Ambedkar Junior College	Uttam Nagar, Amravati.
Takshashila Junior College	Shyam Nagar, Amravati.
Ramkrushna Junior College	At Darapur, Tq. Daryapur, Amravati.
Kamaldeep Junior College	At. Fulamla, Tq. Nandgaon (Kh.), Amravati
Mahatma Jyotiba Fuley Junior College	At. Vihigaon to Anjangaon Surji, Amravati
Matoshri Gangadevi Lulla Junior College	At Gaurkheda kumbhi, At. Achalpur, Amravati
Matoshri Ramabai Ambedkar Junior College	Shyam Nagar, Amravati.
Dr. Babasaheb Ambedkar MCVC	Uttam Nagar, Amravati.
Takshashila MCVC	Shyam Nagar, Amravati.
Ramkrushna MCVC	At Darapur Tq. Daryapur, Amravati.
Matoshri Ramabai Ambedkar MCVC	Shyam Nagar, Amravati.
Mahatma Jyotiba Fuley MCVC	At. Vihigaon, Tq. Anjangaon Surji, Amravati
Sau Kamaltai Gawai Adhyapak Vidyalaya D. Ed.	At. Darapur, Tq. Daryapur, Amravati

SCHOOLS

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathi Vidyalaya	At. Frezarpura Amravati
Madan Maharaj Vidyalaya	At. Fulamla Tq. Nandgaon Khandeshwar, Amravati
Mahatma Jyotiba Fuley Vidyalaya	At. Vihigaon Tq. Anjangaon Surji Dist. Amravati
Matoshri Ramabai Ambedkar Vidyalaya	Shyam Nagar Amravati
Shri Dadasaheb Gawai Vidyalaya	At. Malhara Tq. Achalpur Amravati
Matoshri Gangadevi Lulla Vidyalaya	At Gaurkheda Kumbhi Tq. Achalpur, Amravati
Krushnakamal Adiwasi Ashram Shala	At Ner Pingalai Tq. Morshi Amravati
Dr. Babasaheb Ambedkar Hindi Primary School	Shyam Nagar Amravati
Sant Gadge Baba Hindi High School	Shyam Nagar Amravati
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathi Primary School	Shyam Nagar Amravati
Kamaljyot Marathi Primary And Middle School	Nawsari Amravati
Lotus English Primary School	Shyam Nagar Amravati
Lotus English Primary School	At Gaurkheda Kumbhi Tq. Achalpur Amravati
Lotus English Primary School	At Darapur Tq. Daryapur Amravati
Lotus English Primary School	Uttam Nagar Amravati
Lotus English School	At. Vihigaon, Tq. Anjangaon Surji, Amravati.

TAKSHASHILA MAHAVIDYALAYA, DARAPUR
RAMKRUSHNA MAHAVIDYALAYA, DARAPUR
Maharashtra (India)

In Association with

UNITED INTERNATIONAL BUDDHA DHAMMA SOCIETY, USA

Two Day International Interdisciplinary Conference

On

The Relevance of Buddha's Philosophy in the Present Era

18th & 19th October, 2019 at Bangkok, Thailand

Certificate



This is to certify that, Dr./Mr./Mrs. Kalpana T. Mehare.

of Narayanrao Rana Mahavidyalay, Badnera (

has actively participated in the Two Day International Interdisciplinary Conference on

Relevance of Buddha's Philosophy in the Present Era" *at Pinnacle Lumpinee*

Bangkok, Thailand on 18th and 19th October, 2019. He / She presented a paper e

बुद्ध धम्म विश्वकल्याणाचा मार्ग.

in the conference / in absentia.

Khanti Khema

Rev. Sasana Dipika Khanti Khema
UIBDS, U.S.A.

Prof. P. R. S. Rao
Secretary
SDGCT, Amravati

Mrs. Kirti Rajesh A
President
SDGCT, Amravati

Dr. Varsha E. Gawande
Head, Academic Excellence
SDGCT, Amravati

Asst. Prof. Sachin M. Pandit
Co-ordinator
SDGCTRC, Amravati

Shri Dadasaheb Gawai Charitable Trust, Amravati's

DR. BABASAHEB AMBEDKAR MAHAVIDYALAYA, AMRAVATI

TAKSHASHILA MAHAVIDYALAYA, AMRAVATI

RAMKRUSHNA MAHAVIDYALAYA, DARAPUR

In Association with

UNITED INTERNATIONAL BUDDHA DHAMMA SOCITY, USA

JOINTLY ORGANISES

Two Day International Interdisciplinary Conference

On

The Relevance of Buddha's Philosophy in the Present Era

18th & 19th October, 2019 at Bangkok,Thailand



Principal

An International Multidisciplinary Quarterly Research Journal

ISO 9001:2008 (QMS)
ISBN / ISSN

AJANTA

Volume - IX, Issue - I, January - March - 2020
ISSN - 2277 - 5730
Impact Factor - 6.399 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

[redacted]

In Recognition of the Publication of the Paper Entitled

राष्ट्रसंतांची अभंग गाथा- समाजोध्दाराची सरिता

Principal
Narayanrao Ra[illegible] Mahavidyalaya
Badnera

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Ajanta Prakashan, Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 8390984760 Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta5050@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor : Vinay S. Hatole

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA





Volume-IX, Issue-I
January - March - 2020
Marathi Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Principal
Mahavidyalaya

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

MARATHI PART - I

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖
Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Principal
Narayanrao

CONTENTS OF MARATHI PART - I

लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
ग्रामगीतेतील जिवनमुल्य **प्रा. गाजुकराम दिनानाथ बनकर**	१-५
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे ग्राम स्वराज्यासंबंधी विचार **प्रा. डॉ. उमेश आर. धुमाळे**	६-८
खंजेरीच्या नादातून राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे समाजप्रबोधन **प्रा. अमोल वासुदेवराव गावंडे**	९-११
राष्ट्रसंताच्या मते सांगीतीक भजनाद्वारे समाजजागृती **डॉ. स्नेहल दत्तात्रय शेंबेकर**	१२-१४
राष्ट्रसंतांचे स्त्री सबलीकरण व महिलोन्नती विषयक विचार **प्रा. मंगला डि. बनसोड**	१५-१९
२१ व्या शतकात राष्ट्रसंतांच्या साहित्याचे महत्व **डॉ. सी. डी. पाखरे**	२०-२३
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या ग्रामगीतेतील आणि अभंगातील तत्त्वविचार **प्रा. डॉ. मिलिंद भिवाजी कांबळे**	२४-२६
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या सांगीतीक योगदानातील सामाजिक तत्व **प्रा. नाना विठ्ठलराव भडके**	२७-२८
राष्ट्रसंताचा संगीत विषयक दृष्टिकोन **प्रा. डॉ. प्रशांत एस. पगाडे**	२९-३३
राष्ट्रसंत गाडगे महाराज : सामाजिक, सांस्कृतिक व वैज्ञानिक दृष्टिकोन **प्रा. डॉ. शिवाजीराव पाटील**	३४-३८
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचा मानवतावाद **प्रा. डॉ. शोभा रोकडे**	३९-४२
राष्ट्रसंताचा संगीत विषयक दृष्टिकोन **प्रा. डॉ. राहुल एम. भोरे**	४३-४५
ग्रामगीता : राष्ट्राच्या विकासाचा जाहिरनामा **प्रा. विक्रांत कृष्णराव मेश्राम**	४६-

Principal
Narayan... Vidyalaya

CONTENTS OF MARATHI PART - I

लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांचे सामाजिक चिंतन **प्रा. डॉ. प्रमोद दामोदर देवकते**	१२१-१२२
राष्ट्रसंतांची ग्रामगीता-समाजोद्धाराची भगिरथ **प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे**	१२३-१२५
लोकनेते बहुजी ब्रह्मभट्ट ने वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज : एक जीवन प्रवास **डॉ. मेधा गोपाळराव सवाने**	१२६-१२९
राष्ट्रसंतांची स्त्री - सबलीकरण व महिलोन्नती विषयक विचार **डॉ. मंदा विठोबाजी तडस**	१३१-१३५
राष्ट्रसंतांना अभिप्रेत असणारा माणूस **डॉ. सतीश माधवराव चहांदे**	१३६-१३२
राष्ट्रीय राष्ट्रसंतांच्या स्वप्नांतील भारताची जडण घडण **प्रा. डॉ. अनिता ज. लिडके**	१३३-१३६
राष्ट्रसंतांचे युवकांना आवाहन **प्रा. डॉ. केशव सितराम गोरे**	१३७-१३९
ग्रामगीतेतील जीवनमूल्ये विषयक विचार **डॉ. अशोक गौरीशंकर माळगे**	१४०-१४५
ग्रामगीता तेथे सुबत्ता **प्रा. डॉ. महेश सखाराम बावधनकर**	१४६-१५०
वंदनीय राष्ट्रसंतानी स्त्रीशक्तीचा घेतलेला शोध व बोध **प्रा. कु. पूजा विनायकराव जोशी**	१५१-१५५
महिलांच्या उन्नती विषयी राष्ट्रसंताचे विचार **डॉ. अनुराधा रा. मुळे**	१५६-१५८

Principal

२८. राष्ट्रसंतांची अभंग गाथा- समाजोध्दाराची सरिता

प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा रे., जि. अमरावती .

विसाव्या शतकात वऱ्हाडाच्या भूमीत अमरावती जिल्ह्यातील यावली शहीद या छोट्याशा खेड्यात राष्ट्रसंतांचा जन्म झाला. लहानपणापासून ते विरक्त होते. अठराविश्वे दारिद्र्यात जन्मलेल्या या संतानी समाजाचे सूक्ष्म निरिक्षण केले. अज्ञानाच्या दारिद्र्याच्या अंधःकारात बुडालेल्या या समाजाला प्रबोधनाच्या माध्यमातून जीवनदान दिले. राष्ट्रसंत तुकडोजी विसाव्या शतकातील अतिश्रेष्ठ प्रबोधनकार होते. त्यांनी पारतंत्र्याच्या काळात समाजात राष्ट्रीय जाणीव जागृती केली. त्यासाठी त्यांनी साहित्यनिर्मिती केली. हिन्दी व मराठी या भाषांवर त्यांचे प्रभुत्व होते. राष्ट्रसंत हे संतत्वाकडून राष्ट्रीयत्वाकडे जे उत्क्रांत होत गेले त्याचे सुंदर दर्शन त्यांच्या अभंग गाथेत होते. त्यांचे आरंभीचे उपदेशपर अभंग हे प्राचीन मराठी संतांच्या अभंगवाणीची, त्यांच्याशी असलेल्या एकरूपतेची आठवण करून देणारे आहेत. तुकडोजी महाराजांच्या जीवनाच्या विकासाबरोबर त्यांच्या अभंगानांही ऐहिक वळण लागलेले आहे.

राष्ट्रसंत तुकडोजींचा अभंग लेखनामागील पहिला उद्देश म्हणजे सगुण तत्त्वाशी सुसंवाद साधणे आणि दुसरा उद्देश म्हणजे समाज जीवनात प्रबोधन कार्य करणे. सगुण उपासनेपासून निघून निर्गुण उपासनेचे अत्युच्च शिखर गाठणे. आरंभीच्या जीवनात राष्ट्रसंतांनी सगुण भक्ती रानावनात हिंडून केली. मंदिरात बसून पूजाअर्चा केली. ते अभंगात लिहितात -

आधी अध्यात्म जीवन | पुढे समाज कारण ||
आधी आचरोनी घ्यावे | मग जनलोका सांगावे |

अतिशय सोप्या भाषेत राष्ट्रसंतांनी ईश्वर प्राप्तीचे रहस्य आपल्या अभंगांतून सांगितले आहे. राष्ट्रसंतांच्या अभंगाचे दोन प्रकार आहेत.

1) **लहान अभंग** 2) **मोठा अभंग**

राष्ट्रसंतांचे अभंग हे अमृतवाणी आहे. त्याचा आस्वाद घेताना वेगळेच भावतरंग निर्माण होतात त्यांच्या अभंग वाणीत विविधता आणि विपुलता आहे. त्यांच्या अभंगवाणीत त्यांच्या इतर ग्रंथाप्रमाणे समाजप्रबोधनांचे पाठ आहे. त्यांच्या अभंगवाणीत सगुण-निर्गुण भक्ति सोबतच जनसमुहाला सावध करण्याची, जागृत करण्याची क्षमता आहे. महाराजांचे अभंग हे आधुनिक विचारांनी भरलेले आहे. बुवाबाजीवर प्रहार करताना ते लिहितात.

भगवे रंगले तरी का झाले? | त्यागी नाही चाले तरिते व्यर्थ ||
लंगोटी घातली तरी काय झाले? | मन ना निघाले विषयातूनी ||
संसार सोडला तरी काय झाले? | परदार सोडले नाही ज्याने ||

Principal
Narayanrao ... Vidyalaya

तुकड्यादास म्हणे जरीमाळ घाले, वर्म जाणले तरि व्यर्थ ॥[3]

(अनुभवामृत अभंगगाथा - [illegible])

सत्य संत-लक्षण स्पष्ट करताना ते लिहितात

संत तोचि खरा | जया शुध्द भक्ति झरा ॥
जना दावी मार्ग नीटा चाले आपण ही वाट ॥
जना दाखवी करोन | तरी वोळवीतो जन ॥
तुकड्या म्हणे बंध तोडी | जनी जनार्दन जोडी ॥[4]

(अनुभवामृत अभंगगाथा - [illegible])

ईश्वर प्राप्तीसाठी जनसामान्यांनी तात्विकदृष्टया संसार नश्वर असला तरी प्रपंच सोडू नये ज्याला स्वत:चा संसार सांभाळता येत नाही त्याला लोकाचे दु:ख कसे कळणार.

नाही व्यवहारी धड | परमार्थी काय रड |
घर सांभाळता नये| लोकी दु:ख काय पाहे? ॥
राहे घरीच भेकाड | कधी होईल धिप्पाड ॥
तुकड्यादास म्हणे शिका | लोका बोध दावू नका ॥[5]

(अनुभवामृत अभंगगाथा - [illegible])

आदर्श गृहस्थ कोणास म्हणावे ? हे स्पष्ट करताना ते लिहितात

धन्य तो संसार| ज्याचे उज्ज्वल चरित्र ॥
घर आश्रमा सारिखे| हरिनामा गाती मुखें ॥
अतिथींचा वाहती भार | मुले बाळे नारी नर ॥
स्वच्छ पवित्र राहणी | तुच्छ बुद्धी नेणे कोणी ॥
तुकड्यादास म्हणे झाला | वधता लाभ दुणावला ॥[6]

(अनुभवामृत अभंगगाथा - 502)

पुत्र-धर्म सांगताना ते लिहितात

आई बाप दोन्ही माता देवासम | तयापासी प्रेम ठेवांनिया ॥
तयांच्या प्रसादे पावेल या जगा | लहानाच्या अंगा मोठे केले ॥[7]
विद्या शिकवांनि लाविले यामागीं | नाही तरी सांगा काय होते?
तुकड्यादास म्हणे फेडावे हे कर्ज | उभारावा ध्वज कीर्तिरूपे ॥

(अनुभवामृत अभंगगाथा - 541)

खरा धर्म ते पुढील प्रमाणे स्पष्ट करतात

Principal
Mahavidyalaya

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(अनुवादित अभंगगाथा ८४१)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संदर्भ

1. [illegible] संपा. प्राचार्य रा.तु. भगत, सहसंपादक, डॉ. सुभाष सावरकर, चैतन्य प्रकाशन, कोल्हापूर, प्रथमावृत्ती, 2 ऑक्टोबर 2009 पृ. 121
2. तत्रैव पृ. 117
3. अनुवादित अभंगगाथा व राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विरचित श्री गुरुदेव प्रकाशन गुरुकुंज आश्रम ता. तिवसा जि. अमरावती (म.रा.) तृतीय आवृत्ती 2010 पृ.69
4. तत्रैव पृ. 72
5. तत्रैव पृ. 78
6. तत्रैव पृ. 81
7. तत्रैव पृ. 87
8. तत्रैव पृ. 102



CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN

Vinay S. Hatole

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,

Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877

E-mail : ajanta5050@gmail.com **Website : www.ajantaprakashan.com**

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2021







Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S. Tompe Arts Comm Sci College
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications
Principal

Impact Factor - 7.675 ISSN - 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February - 2021

ISSUE No - CCLXXI (271) B

Sciences, Social Sciences, Commerce, Education, Language & Law

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr.Dinesh W.Nichit
Editor :
Principal
Sant Gadge Maharaj Art's Comm.Sci Collage, Walgaon.Dist Amravati

Aadhar INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

INDEX

No	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Use of Internet by Students of Sambhajirao Kendre Mahavidyalaya Jalkot : A Study — **Dr. Dagdu Tukaram Ghatkar**	1
2	Effect Of Dips And Pull Ups On Throwing Ability For Distance Of Baseball Players — **Dr. Vikrant J. Gautam**	7
3	Women's War Poetry — **Dr Sanjay L. Khandel**	10
4	Study on effect of lockdown on wildlife in urban areas. — **Dr. Anilkumar Gopi Prasad**	15
5	New Social Media And Rural Development — **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil**	19
6	The Educaitonal Advantages Of Using Internet — **Dr.Patil Bhagwan Shankar**	23
7	Farmers Suicide in India-Causes and Remedies — **Dr.S.T.Sangale**	29
8	Food Technology & Food Processing — **Dr. Mrs. Mrunal R. Wallokar**	33
9	Work of Ravindranath Tagore — **Asst. Prof. Archana P. Tiwari**	36
10	Entrepreneurship in Rural Maharashtra — **Mrs. Chetna Sinha Gala. / Vasundhara Dattaram Salunkhe**	38
11	Overall water splitting by Pt/g-C3N4 photo catalysts — **Prof. Maggie Jomon John**	45
12	Reinvestigation of Angiospermic Petrified flower from the Deccan Intertrappean Beds of India. — **Meshram S. M1, Mohture V.M2 , Nandeshwar M3., Pandey I. J4.,**	50
13	The Performance Of Major Initial Public Offers In Indian Markets During Covid-19 Scenario — **Dr. Hariom J. Puniyani**	55
14	Effect Of Fenugreek, Bitter Gourd Powder And Need Of Physical Activity For Diabetes Patients In Chandrapur District — **Dr. Vijay E. Somkuwar**	62
15	तुलसी के राम — डॉ.(श्रीमती) ज्योति धनोतिया	69
16	नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० : संभावनाएं एवं चुनौतियां — डॉ. विकास कुमार शर्मा	75
17	शान्ति शिक्षा — किरन कुमारी / डॉ. सियाराम यादव	87
18	१९४२ च्या स्वातंत्र्यलढ्यात खामगाव शहरातील राष्ट्रीय शाळेचे योगदान – एक ऐतिहासीक अध्ययन. — प्रा. एन. धा. खराटे	94
19	भारतीय लोकशाही आणि नवमध्यमवर्ग — डॉ. मनोहर नाईक	97
20	नागपूर शहर का विस्तार — प्रा. रवि आर. साखरे	103

21	जळगाव जिल्ह्यातील तालुकानिहाय लोकसंख्या वाढीचे भौगोलिक विश्लेषण — प्रा. एन. जी. सोनुले	106
22	विदर्भ जलसिंचन वाढीचे भौगोलिक अध्ययन — डॉ. सुषमा ल. दामोदरे	115
23	आदिवासी साहित्याच्या प्रेरणा आणि संकल्पिते — **प्रा. डॉ. अविनाश मेश्राम**	122
24	मराठी कवीतील वास्तवदर्शी भावविश्व — **डॉ. हिराजी बनपूरकर**	128
25	महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय एक अध्ययन — प्रा. सचिन गणपतराव कर्णेवार	132
26	ब्रज का भक्ति संगीत — प्रा. डॉ. श्वेता दीपक वेगड	137
27	शेतकऱ्यांच्या समस्या व उपाय — चोपराम लक्ष्मण गडपायले / डॉ.अशोक माडेकर	142
28	बाबा आमटेंच्या 'ज्वाला आणि फुले' मधील जीवन दर्शन — डॉ. वैजयंती पेशवे	147
29	आदिवासीचे शिक्षण — प्रा. डॉ. लोकचंद बी. जाधव	152
30	ऋषि–मुनियों की दयालुता एवं शाप की प्रवृत्ति कालिदास की रचनाओं सन्दर्भ में — डॉ.अर्चना पाल	155
31	महाराष्ट्राच्या विकासात वसंतराव नाईक यांचे ऐतिहासीक योगदान — डॉ. मनिष काशा चव्हाण	160
32	Kamala Markandaya's fiction and her Diasporic perspective – The Tales of Cultural Clash and process of Being and Becoming — **Dr.Aachal Mundafale**	164
33	Evils of Racism in Gugi wa Thiong'o's 'The River Between' — **Sapnil Shankarrao Kalpande**	167
34	पंचायत राज व्यवस्थेच्या विकासात आर. आर. पाटील यांची भूमिका — प्रा. साखरे दत्तात्रय यशवंत	169
35	कार्लमार्क्स यांचे तत्त्वज्ञान व साहित्य – एक सिंहावलोकन — प्रा.पुरुषोत्तम दि. माळोदे	172
36	पेशवे काळातील शिक्षा — डॉ.विजय रामदास तिरपुडे	177
37	The Role of ICT in Higher Education — **Santosh Nivrutti Ghongade**	179
38	पाली साहित्यात स्त्रीचे कर्तव्य व अधिकारी — प्रा.डा. बंडू एस.मानवटकर	184
39	महदंबा – आद्य मराठी कवयित्री — प्रा. डॉ. कल्पना ज्ये. मेहरे	187
40	कौटुंबिक अस्थिरता आणि मुलांचे आरोग्य एक अध्ययन — प्रा.डॉ.वीणा आर.मेंदुले	190

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO. 271(CCLXXI) B
ISSN : 2278-9308
Febraury, 2021

महदंबा – आद्य मराठी कवयित्री

प्रा. डॉ. कल्पना त्र्यं. मेहरे
प्रमुख, मराठी विभाग नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जि. अमरावती

मराठी साहित्यातील आद्य कवयित्री महदंबा ही महानुभाव पंथाचे संस्थापक श्रीचक्रधरस्वामी यांची पट्टशिष्या होती. महदाईसा उर्फ महदंबा ही महानुभाव पंथाने मराठी काव्यास दिलेले एक अनमोल रत्न, देणगी होय. अखंड जागृतता, सतेज बुद्धीमत्ता, विलक्षण चौकस वृत्ती, जिज्ञासूवृत्ती आणि अलौकिक प्रतिभा इ. असाधारण गुणांमुळे महदाइसा ही सर्वज्ञ श्री चक्रधरांची आवडती पट्टशिष्या झाली होती. स्वामींच्या सन्निधानात राहण्याने, त्यांचे आचारविचार प्रत्यक्ष अनुभवण्याने लाभ तिला लाभले होते.

महदंबेचे मूळ नाव रूपाबाई महदाइसा हे जाण तिला की चक्रधरांनी तिच्या लग्नप्रसंगी साक्षात्कारी पणजीवरून दिले. महदंबेचे आजोबा वामनाचार्य व पणजी महदाइसा ही शके ११८२ ते शके ११९३ या कालखंडात देवगिरीच्या गादीवर असलेल्या महादेवरायास समकालीन होती. महदाईसेला होत असलेल्या भविष्यस्फुरणामुळे व म्हाळसा या देवतेच्या तिच्यावर विशेष अनुग्रह असल्यामुळे महादेवरायांची या महदाईसेवर विशेष श्रद्धा होती. एवढी की तीच महादेवरायाचे ऐतिहिक ही करीत होती असा उल्लेख पंथीय वाङ्मयात आढळतो.

वामनाचार्य व महदाइसा यांच्या पुत्राचे नाव महेश्वर पंडित होय. या महेश्वर पंडितास माधवभट्ट व वायनायक अशी दोन मुले होती. महानुभाव पंथाचे पहिले आचार्य नागदेवाचार्य हे माधवभट्टाचे पुत्र होय. तर रूपाबाई ही वायनायक यांची ज्येष्ठ कन्या होय. श्रीचक्रधरांनी याच रूपाबाईचे तिच्या ठिकाणी वसत असलेल्या अनन्यसाधारण गुणामुळे 'महदाइसा' असे नाव ठेवले.

महदंबेला अकाली वैधव्य प्राप्त झाले. ती आपल्या चुलत भावंडांस 'रावसगांव' येथे गुंफा करून राहात असे. येथेच श्रीचक्रधरांचा शिष्य दादोस तिला प्रथम भेटला. तो या कुटुंबियांना ज्ञानदान करीत असे. त्यामुळे महदाइसा व नागदेवाचार्यही दादासाच्या भजनी लागलेले दिसतात. या दादोसाकडूनच त्यांना श्रीचक्रधरांची माहिती होऊन त्यांच्या भेटीविषयी ओढ वाटू लागली. कालांतराने श्रीचक्रधर व महदाइसा– नागदेव यांची भेट पाटक्य येथे झाली.

महदाइसाला पुराण ऐकण्याचा छंद होता. पुराण ऐकून ती तसेच आत्मसात करीत असे व स्वामींच्या जवळ येवून त्यास सन्यास्याच्या चौकटीवर ओतू पाहात असे व आपले ज्ञान उजळून घेत असे महदाइसा अशाप्रकारे आपल्या जिज्ञासू व चिकित्सक बुद्धीला आणि स्वामींच्या अखंड निरूपणाला अखंड प्रकाशमान करीत राहीली. तिने वेळोवेळी स्वामींना बोलके केले. त्यांचे अवतारिच जीवन कथन करण्यास त्यांना भाग पाडले. तिच्या या जिज्ञासक, चर्चकवृत्तीमुळे स्वामी तिला आदराने, ''म्हातारी जिज्ञासक: म्हातारी चर्चक: म्हातारी एव निरंतर काही पुसतनि असे'' म्हणत.

महदाइसा व श्रीचक्रधरस्वामी यांच्या संवादातून सिद्ध झालेले श्रीकृष्णचरित्र उदयास आले. श्रीकृष्ण चरित्रातील महत्त्वाच्या प्रसंगी महदाइसाने स्वामींना विचारलेले प्रश्न व त्या निमित्ताने स्वामींनी केलेले निरूपन व निरूपणाच्या ओघात होणारी प्रश्नोत्तरे व अखेर महदाईसेच्या मनाचे समाधान अशी या श्रीचक्रधर निरूपीत 'श्रीकृष्णचरित्र' ग्रंथाची निर्मिती झाली. श्रीकृष्णचरित्र होणारे ग्रंथ निर्मितीचा मान श्रीचक्रधर स्वामींच्या एवढाच महदाईसकडे जातो. हे श्रीकृष्णचरित्र महदाईसेला पुढे पवळण्याच्या निर्मितीच्या दृष्टीने महत्त्वाचे ठरले.

महदाइसाच्या जीवनातील सर्वोत्कृष्ट कार्य म्हणजे पवळे होय. पवळयासोबतच तिने मातृकी रूक्मिणी स्वयंवर व गर्भकांड ओव्या रचल्या. श्री चक्रधर स्वामी विद्यमान असता त्यांच्या आज्ञेमुळे महदंबा काही काळ श्रीगोविंदप्रभुंजवळ रिद्धपूर येथे राहिली. श्रीकृष्णस्वरूप असलेल्या श्रीगोविंदप्रभुंनी एकदा खट्टूपुटीच्या विवाहाची प्रवृत्ती स्विकारली व त्यांनी महदाइसाला विवाह सामुग्री आणून विवाह विधी करावयास सांगितला. आणि त्यावेळी रूक्मिणी स्वयंवर गीत गाण्याचा आग्रह केला. आवो मेली जाए म्हणे श्रीकृष्ण रूक्मिणी गाए म्हणे तुरया चार गाए म्हणे असा महदाइसा गावायी लागली.

'भवळा' म्हणजे विवाह गीत किंवा वरमाप. महदंबेने लिहिलेल्या भवळयाचे पूर्वार्ध (८३) आणि उत्तरार्ध (५५) असे दोन भाग आहे. भवळ किंवा भवळा हा या गाण्याचा मुळातला अस्सल ग्रामीण शब्द आहे. भवळ हे महदंबेच्या भाषेचे महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य असल्याचे डॉ. अनंत देशपांडे होय. भवळयामध्ये श्रीकृष्णरुक्मिणी स्वयंवराचे कथानक आलेले आहे. राजा भिष्मकाची कुमारी रुक्मिणीने तारूण्यात पदार्पण, त्यामुळे राजा भिष्मकाला आपल्या कन्येच्या विवाहाची लागलेली चिंता त्यातच कालेश्वराच्या भटाने आणलेले, त्याने केलेले श्रीकृष्ण चरित्राची स्तुती, रुक्मिणीला श्रीकृष्णाप्रति विरोध, रुक्मिणीची श्रीकृष्णाप्रति विरहावस्था या सगळ्यांचे उत्कंठेतून मूलभूतरित्या चित्रकरण्याचे पाठविणे, श्रीकृष्णाने कौंडण्यपुरास आगमन, रुक्मिणीची श्रीकृष्णप्राप्ति भेटण्याची उत्सुकता, अंबिका देवीचे दर्शन व श्रीकृष्ण चरणाची रुक्मिणीने केलेले हरण यामध्ये रुक्मिणीने आपला प्राणसखा श्रीकृष्ण व परमात्मा यांना पाठविलेली कागदाला, त्यामुळे दुरावलेले श्रीकृष्ण व जरासंध, शिशुपाल व रुक्मिणी यूध्द, पुढे सर्व देवसमूह राजा भिष्मकाने मूळ गावाहून आणून, श्रीकृष्णरुक्मिणी विवाह अशी सर्व साधारण भवळयाची कथा आहे.

शिशुपाळ नरू ऐसें आहे किरे माळा
प्र पातली निरा जाली व्याकुळा
स्मरिले कृष्णराजो, 'देवा, सकरूणे पडिलीवे गोरी
तू एकू वानौनिया आन् नाही अवधारी' ॥ ५५ ॥
हृदा धाक, तिये लागली चिंता
'भक्तबंधू छेदुनि', म्हणे गेली अनंता
आरता दानी कृपा करा देवा माझि देयावे उधारण
शिशुपाळ—बदिसाळ चुकवा, दाखवा आपुले श्रीचरण ॥८॥

रूक्मिणी शिशुपाल वर ऐकताच चकली, व्याकुळ झाली मग रूक्मिणीने श्रीकृष्णराजाने स्मरण केले. "देवा! मी घोर संकटात पडले ऐका! तुडयाशिवाय मला सोडविणारा दुसरा कोणी नाही.

हृदयात धाक पडला म्हणून रूक्मिणीला चिंता लागली ती देवाला म्हणाली. "हे भक्तांचे बंधन छेदणारा! अनंता! माझे रक्षण कर. हे आर्तदानी देवा! हे दिनाचा उद्धार करणारा! माझ्यावर कृपा कर. माझा शिशुपाळ बदीखाना चुकवून आपले (मोक्ष देणारे) श्रीचरण दाखव."

भवळयांतील रूक्मिणी स्वयंवर कथा ही एका संवेदनशील प्रतिभावंत स्त्रीमनाची निर्मिती आहे. भवळयांनी भाषा साधी व अनलंकृत आहे. आशयनिष्ठ आहे. भवळयात येणारे अलंकार काव्याला सजविण्यासाठी आलेले नसून बोली-भाषेच्या अनुषंगाने आलेले आहे. भवळयातील प्रत्येक कडव्यात चार चरण असतात. त्यातील पहिले दोन लहान तर तिसरा व चौथा प्रदीर्घ असतो. ओवीच्या पहिल्या चरणात कथा प्रवाह विलक्षण गतिमानतेने द्योतावतो. मागील ओवी व पुढील ओवी यामधील कथावकाश झपाटयाने कवेत घेऊन ही ओवी आलेली असते.

भवळे हे एक आख्यान काव्य आहे. मराठीतील सर्व आख्यान काव्याच्या आदिस्थानी ते उभे आहे. भवळयाचा उत्तरार्ध हा महदंबेने म्हाइभट आणि लक्ष्मीधर भट यान्या म्हणण्यानुसार गाइला. कारण महदाईसाच्या दृष्टीने रूक्मिणी स्वयंवर ही कथा पूर्वार्धातच संपलेली आहे. तिला श्रीकृष्ण–रूक्मिणी मिलनानंतर पुढचे काव्य गुफण्यात काही स्वारस्य नव्हते. भवळे उत्तरार्ध (५४) श्लोकामध्ये आहे.

महदाइसा ही स्वत: आचारनिष्ठ व तपोनिष्ठ होती. गुरूकुळान्या आचरणाची ती काळजी घेत असे. तिला गाववयाची आवड होती. सर्वज्ञ श्री चक्रधरांच्या उत्तरापंथे जाण्यानंतर पोरक्या झालेल्या स्वामींच्या परिवाराला महदाईसेने मायेची पाखर घातली आणि स्वामींच्या वियोगाने, मनाने कोसळलेल्या आचार्याना सावरले. भानखेडोच्या वनात स्वामींच्या दु:ख वियोगाने मुर्च्छित होऊन पडलेल्या आचार्याना तिने सावध करून पाटकुळीवर घेऊन रिद्धपुरला आणले व त्याच्या कर्तव्याची त्यांना जाणीव करून दिली. त्यावेळी आचार्यांनी महदाईसाबद्दल प्रशंसोद्गार काढले. महातारी रक्षक, प्रौती रक्षक, महदाल्हे: दु:ख निर्वेदु: माझिया धर्मासि रक्षण: अशा या आचार्यांच्या प्रशंसोद्गारावरून महदाईसेचा पंथिय अधिकारही लक्षात येतो.

निष्कर्ष :—

धवळे हे मराठीतील आद्य आख्यान काव्य आहे.
महदाईसा ही अलौकिक प्रतिभावंत आहे.
महदाईसा ही महानुभाव पंथाची संजीवक व धर्मरक्षक आहे.
महदंबा ही महानुभाव पंथाने मराठी काव्याला दिलेली एक अनमोल देणगी आहे.
धवळे हे प्रतिभावंत स्त्री मनाची व ईश्वरीय मनोधर्माची निर्मिती आहे.

संदर्भ ग्रंथ सूची –
महदंबेचे धवळे – डॉ. सुहासिनी इर्लेकर
महानुभावपंथ आणि त्याचे वाङ्मय – श. गो. तुळपुळे
महानुभावांचा इतिहास – कै. मुरलीधर कोळपकर
लीळाचरित्र – संपा. डॉ. पुरूषोत्तम नागपूर
महानुभावीय मराठी वाङ्मय – डॉ. य. खु. देशपांडे
लीळाचरित्रातील स्त्री दर्शन – डॉ. सुशीला पाचे



Principal
Narayan... Vidyalaya



तुमच्या Ph.D. प्रबंधाचे पुस्तकात रूपांतर करून मिळेल व ते जगभर पोहोचेल...

More Details – 9595560278



Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process.
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

Aadhar Publications

New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604

For Details www.aadharsocial.com

Email: aadharpublications@gmail.com

Price:Rs.

ISSN: 2249-894X
REVIEW OF RESEARCH
International Online Multidisciplinary Journal
UGC APPROVED Journal No.: 48514
Volume - 8 | Issue - 5 | February - 2019
Impact Factor : 5.7631(UIF)

श्री चक्रधर स्वामींची सामाजिक समरसता



प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख , नारायणराव राणा महाविद्यालय , बडनेरा (रेल्वे) जि अमरावती

प्रस्तावना : बाराव्या शतकात महाराष्ट्राच्या या पवित्र भूमीमध्ये उदयास आलेल्या महानुभाव पंथाचे संस्थापक सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी आहे. महानुभाव पंथ हा द्वैती मताचा भक्ती पंथ असून या पंथाचे कार्य विशाल आहे. त्याकाळात .....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

International Online Multidisciplinary Journal
REVIEW OF RESEARCH
ISSN NO: 2249-894X

Research ROR Journal is an Online International Multidisciplinary Research Journal, published in English & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed by members of the Editorial Board. Readers will include investigator in universities, research institutes industry with research interest in the general subjects.

OUR CHIEF EDITORS





Iran

Bijan Goodarzi



Bucharest

Ecaterina



Sri-lanka

Kamani Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- ENDNOTE
- ZOTERO
- DRJI





Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Badnera

International Online Multidisciplinary Journal

Review of Research

Save Tree, Save Paper, Save World

ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 8, Issue - 5, February -2019

Content

Title and Name of The Author (S)	Page No.
श्री चक्रधर स्वामींची सामाजिक समरसता प्र. डॉ. कल्पना मेहरे	1
ICT Usage Overall Benefit And Poverty Reduction For Rural Farmers Kalyan Sarkar and Dr. Sujit Deb	4
Jalakanteswara Temple Of Vellore – A Centre Of Historical, Religious And Tourist Attraction Dr. J. Sampath	15
हिन्दी : भाषा की लहरों पर जीवन का दस्तावेज़ । डॉ मनीषकुमार मिश्रा	19
A Study Of Use Of Social Media For Business By Women Entrepreneur: A Special Reference To Whatsapp Dr. Sunil Uttamrao Suryawanshi	27
A Study on Effectiveness of Motivational Strategies in Mathematics at Middle School Students Dr. K. Jayaraman , V. Devi and R. Rajesh	31
The Assessment of Socio-Economic Conditions in Selected Villages of The Hemavathi Watershed Dr. S. Bindumathi	37
An Empirical Note on Understanding Pedagogical Terminologies Dr. S. Ravivarman	49
Strangulated Women: Women in Between Family and Public Space in The South Indian State of Kerala Dr. Gayathri O.	57

Principal
Narayanrao [illegible] Vidyalaya
College

REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

श्री चक्रधर स्वामींची सामाजिक समरसता

प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख , नारायणराव राणा महाविद्यालय , बडनेरा (रेल्वे) जि. अमरावती.



शतकात महाराष्ट्राच्या या पवित्र भूमीमध्ये ...ल्या महानुभाव पंथाचे संस्थापक सर्वज्ञ श्री ... आहे. महानुभाव पंथ हा द्वैती मताचा भक्ती ... पंथाचे कार्य विशाल आहे. त्याकाळात ...व राजाची राजवट होती. यादवराजा हा ...पुरस्कर्ता होता. त्याचा श्री करणधिपती हेमाद्री ...चतुर्वर्गचिंतामणी नावाचा ग्रंथ लिहिला. त्यात ...र्थात दोन हजार व्रत वैकल्ये करण्यास ... समाज हा अज्ञानात खितपत पडलेला होता. देवी देवतांचे स्तोम माजलेले होते. उपास ...चे मोठया प्रमाणावर केली जात होती. देवी–देवतांना नवससायास बोलले जात होते. नर ... होते. जातीयता होती. समाजात दिवसेंदिवस सामाजिक तसेच आर्थिक विषमतेची दरी ... होती. बहुजनांना धर्माचा अधिकार नव्हता. संस्कृत भाषा ही देववाणी होती. बहुजनवर्ग ...चित होता. दैन्य दु:ख दारिद्रय याने बहुजन वर्ग त्रस्त होता. खोला धर्माचा अधिकार ... मार्गातील धोंड मानले जात होते. स्वीचे चूल आणि मूल एवढेच मर्यादित क्षेत्र होते. ...ग्रस्थ दिवसेंदिवस वाढले होते. या संदर्भात श्री चक्रधर स्वामी म्हणाले. हा अवघा जनु ... कवणी याचे थक फेडिता नाही.तु का थकलासि ऐसे कव्हणी म्हणते नाही. अशा ...प्रेरणेनी आधार दिला.

... हे कृतिशील समाजसुधारक होते. त्यांनी आपल्या कृतीतून जातीभेदाच्या अभेद्य भितीना ... कार्य केले. त्यांनी स्थापन केलेल्या पंथात सर्व जातीची लोक होती. त्याकाळात ...तेचा भेदाभेद दूर केला. चर्मकाराच्या हातचा विळा खाउन त्याला स्थिती प्राप्त करुन ... भेटी या लीळेवरुन दिसून येते. श्री चक्रधरांना माणसामाणसात भेद मान्य नव्हता. जाती ... पाडायच्या होत्या. ब्राम्हण आणि मातंग. हे दोन्ही ते सारखेच मानत. कर्मकांडाळापासो ... हे त्यांचे सूत्र होते. त्यांनी महारवाडयाहुनी धर्म काढायला सांगितला.

... सामाजिक विषमतेची मुळे समूळ उखळून टाकण्यासाठी त्यांनी सातत्याने आपल्या ... मांगाच्या हातचा लाडू ते ब्राम्हणांना प्रसाद म्हणून देतात. स्वामी एकदा जोगेश्वरीच्या ... ...ला भेटण्यासाठी तीन मातंग आले होते. त्यापैकी एकाने स्वीमीचे दर्शन घेण्यासाठी ...याचे ठरविले. ही गोष्ट आउसेनी स्वामीना सांगितली. स्वामीनी त्या मातंगाची परीक्षा ... आउसे करवी प्रसाद म्हणून लाडू दिले व घरी जाण्यास सांगितले आणि ती आत ... मातंग तिथेच स्वामीच्या भेटीसाठी उभा होता. आउसा त्याच्यावर रागावली परंतु तो ... गेला तरी चालेल परंतु मी माझ्या देवाला वचितल्याशिवाय येथून हलणार नाही ... व भक्ती पाहून स्वामी गहिवरलेत व त्यानी भेट घेण्यास मंदिराबाहेर आलेत.

Principal
Narayanrao ... College
Badnera

स्वामींना पाहून तो मातंग खूप आनंदी झाला. त्याला कळत नव्हते की आपण स्वामींची पूजा कशी करावी म्हणून त्याने स्वामींनी काही वेळा पूर्वी पाठविलेले प्रसादाचे लाडू स्वामींना अर्पण केले. स्वामींनी त्याचा लाडू स्विकारला व मंदिरात येउन आपल्या ब्राम्हण भक्त उद्देशून म्हणाले प्रसाद वाटिसेतां प्रसाद घेतला. धिक्कार विकल्प शून्यता होवानी की गा: तुम्ही अच्युत गोत्रीय की गा ? तुम्हा परस्परे परमर्दिले कीं. अशाप्रकारे सर्वज्ञ श्री चक्रधरांनी आपल्या कृतीतून सामाजिक समता निर्माण केली.

समाजात ज्याकाळात अस्पृश्यांची सावलीही वर्ज्य मानली जायची त्याकाळी नर्मदाकाठला स्नान करून त्यांच्या त्या अवस्थेत नगरातील ब्रम्हवृंदाना त्यांची पूजा करायला लावण्याने अलौकिक कार्य त्यांनी केले. तसेच दाकोबा सारख्या अंत्यजाला मंदिर प्रवेश घडवून स्वत:वरोबर आपल्या पाती जेवायला बसविले होते. ब्राम्हण शिष्याकरवी त्याला जेवण वाढले होते. त्याला पाय धुवायला पाणी देवविले होते. भोजनोत्तर दाकोबासारख्या अस्पृशाला एका ब्राम्हण शिष्याकरवी त्यांनी तांबूल देवविला होता. अशा अलौकिक सामाजिक कार्यासाठीच ते सतत महाराष्ट्रभर फिरले.

श्री चक्रधर स्वामींना स्त्री—पुरुष समानतेचा पुरस्कार केला. ज्याकाळात स्त्रियांना कोणतेही ज्ञान ग्रहण करण्याचा अधिकार नव्हता त्याकाळात स्वामींनी त्यांना पुरुषाच्या बरोबरीचे स्थान दिले. सारंग पंडितांच्या मनातील स्त्री द्वेष दूर करताना स्वामी त्याला म्हणतात (डोमेग्राम लीळा) तुझा तो जीव आणि स्त्रियांचा काय जीव नसे? काय स्त्रियांचा आणि पुरुषांचा परमेश्वर अलग आहे. दोघांनाही जीव आहे. ते सर्वांच्या ठायी समानच असल्याची निर्मिती आहे. मग तू हा भेदाभेद का पाळतोस. हा अधिकार तुला कुणी दिला? तू जर असे करशील तर तुला पाप लागेल व तुझे ज्ञान केव्हांस पूर्णत्वास जाणार नाही. तू आज खूप मोठे पाप केलेस त्याची शिक्षा तुला झालीच पाहिजे. शास्त्र सांगते. सर्वांचा जीव सारखाच आहे. तर तू भेदाभेद का पाळतोस व मनात आणतोस ? हे सर्व ऐकून सारंग पंडित खूप खजिल झाला व स्वामींना म्हणाला. माझ्याकडून महापाप झाले. आपण जो दंड मला द्याल तो मी भोगायला तयार आहे. मला माफ करा. मला पश्चाताप झाला हे चांगले आहे. पण तू अक्षम्य गुन्हा केला याचे प्रायश्चित म्हणून तू गोत (गोदावरीत) जाउन उभा रहा. या प्रसंगातून स्वामी स्त्री—पुरुष समानता सर्वांना पटवून देतात.

यादव काळात निरर्थक कर्मकांडाचे प्रस्थ माजले होते.मोक्षाच्या प्राप्तीसाठी प्रत्येक समाजात सर्वत्र अनेक देवांची उपासना आणि व्रत वैकल्य केली जात होती.या सर्व बाबी मोक्षमार्गीयांना उपयोगाच्या नाहीत म्हणून त्या त्यागण्यांचा स्वामींचा आग्रह होता.बहिष्कृत समाजात तथाकथित शूद्रातीशुद्र शेंदरी—हेंदरी देवतांची हिंसाप्रधान पूजा होत होती.दगडाला शेंदूर लावला की देवता तयार होत असे आणि कोंबड्या बकरे कापले की त्या प्रसन्न होतात.अशी श्रध्दा खालच्या स्तरातील भोळ्या—भाबड्या जनांच्या मनात होती. भट —ब्राम्हण आपली पोटे भरीत होता. ही अंधश्रध्दा नाहीसी व्हावी यासाठी आग्रह धरणारे श्री चक्रधर स्वामी हे पहिले अंधश्रध्दा निर्मूलनकर्ते होय.

समाजाला सचेत करण्याचे कार्य श्री चक्रधरांनी केले.सनातन्य वाढल्यामुळे सर्वसामान्य समाजाला कोणी द्रष्टा किंवा मार्गदर्शक नव्हता. तेंव्हा श्री चक्रधरांनी भटकलेल्या समाजास मार्गदर्शन केले. तत्कालीन समाजात खितपत पडलेल्या दलित—स्त्रीशूद्रादिकांना त्यांनी दिलासा व प्रेम दिले.सर्व वर्गातील स्त्रियांना त्यांनी समतेची वागणूक दिली. सर्व समभावांचा व समतेचा दिव्य संदेश दिला.ईश्वर विषयीचे खरे ज्ञान त्यांनी सर्वसामान्यांना करुन दिले.संसार तापाने पोळलेल्या जीवांना अव्दैताश्रित वेदोक्त देवतोपासनेच्या कर्मकांडातून सोडवून परमेश्वराच्या अनन्य भक्तीचा मार्ग त्यांनी उपदेशीला.

श्री चक्रधरांनी शुध्द शाकाहाराचा पुरस्कार केला. सप्त व्यसनापासून दूर राहण्याची शिकवण दिली. मास खाणे, दारु पिणे, जुगार खेळणे हिंसा करणे वेशागमण करणे, चोरी करणे आणि, खोटे बोलणे ही सप्तव्यसने मनुष्याला पशुतुल्य बनवून, त्याचा विवेक नाहीसा करतात. सुजान, सुशील, चारित्रसंपन्न युवक पुढती निर्माण व्हाव्यात समाजाचे आधारस्तंभ म्हणून त्यांनी पुढे यावे हिच स्वामींची इच्छा त्यान्या तत्वज्ञानातून दिसून येते. माणसाने सात्विक जीवन जगावे, मधुर भाषी असावे.प्रयत्नांची कास न सोडता अखंड परमेश्वर स्मरण करावे, मुंगीचेही वैर चितू नये, मारीता—पूजीता समान मानावा असा मानवतेचा धर्म सर्वज्ञ श्री चक्रधर या जननायकानी शिकविला. कसल्याही व्यसनांच्या आहारी न जाता परस्पराभ्यये प्रेम सल्लेखनाचे संबध प्राणी मात्रांवर दया, प्रेम करण्याची शिकवण दिली. आहार, आचार, विचार यांच्यातील सात्विकतेला महत्त्व दिले. सर्वसामान्यमाणसांपर्यंत धर्माचे तत्त्वज्ञान साध्या सोप्या मराठी भाषेत पोहोचावे

Principal
Vidyalaya
Nanded

केली असता तुमचा अस्मात करमात ती नेणे गा येणे माझा सामन्य परिवार नागवेल. म्हणौनी
संस्कृत सुत्रबध्द न करी तू की अशा शब्दात संस्कृत भाषा नाकारुन महानुभाव पंथाचे प्रथम आचार्य
देवाचार्य यांनी मराठी भाषेला श्रेष्ठत्वाचा मान दिला. मराठी सुवर्ण काळाची सुरुवात करणारा हा
आहे.

निष्कर्ष

श्री चक्रधर स्वामी हे कृतीशील समाज सुधारक होते. तत्कालीन समाजातील चातुर्वर्ण व्यवस्था व
त्याच्या अनुषंगाने निर्माण झालेल्या सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक विषमतेचा त्यांनी
कडाडून विरोध केला.
स्त्रियांना धर्माचा अधिकार दिला.
मराठी भाषेला धर्मभाषेचा दर्जा दिला.
श्री चक्रधरांनी परमेश्वर भक्तीचे गमक सांगून चिरसुखाचा मार्ग समाजाला दाखविला.

संदर्भ ग्रंथ सूची

लीळाचरित्र: संशोधन समीक्षा—डॉ.स्मिता ठाकरे, ओंकार प्रकाशन,अमरावती
लीळाचरित्रातील समाजदर्शन—सुमन बेलवलकर, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई
लीळाचरित्र—संपा. प्रा. पुरुषोत्तम नागपूरे, ओंकार प्रकाशन अमरावती
सर्वज्ञ श्री चक्रधरांची शिकवण—आचार्य दीपक तायडे, निर्गुण ब्रम्ह प्रकाशन अमरावती
मानवतेचा महान मानदंड—प्रा.आवलगावकर रमेश वामन
लालीमुध्दा वाळीत टाकलेला श्री चक्रधर—वैद्य प्रभाकर, किशोर प्रकाशन, अमरावती

Principal
Narayan... Vidyalaya
...

...rial for all Subjects : www.lbp.world

...मराठी भाषेतूनच लिहिले जावे, ग्रामस्थांनी मराठीतून कथाकथी हे सांगितले. श्री चक्रधर स्वामी ...प्रचार बोलत असत. प्रभाट पंडित केशीराजबास यांनी संस्कृत भाषेतून ग्रंथ लिहिण्याची इच्छा ...असता तुमचा अस्मात करमात ती नेणे गा. येणे माझा सामान्य परिवार सगळेच खलाशी ...संस्कृत सूत्रबध्द न करी तू की अशा शब्दात संस्कृत भाषा नाकारून महानुभाव पंथाचे प्रथम आचार्य ...आचार्य यांनी मराठी भाषेला श्रेष्ठत्वाचा मान दिला. मराठी सुवर्ण काळाची सुरुवात करणारा हा

...चक्रधर स्वामी हे कृतीशील समाज सुधारक होते. तत्कालीन समाजातील सर्वच अनिष्ट ...त्या अनुषंगाने निर्माण झालेल्या सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक विषमतेचा त्यांनी ...डाडून विरोध केला.

...याना धर्माचा अधिकार दिला.

...ी भाषेला धर्मभाषेचा दर्जा दिला.

...चक्रधरांनी परमेश्वर भक्तीचे गमक सांगून निरसुखाचा मार्ग समाजाला दाखविला.

...ची सूची

...चरित्र संशोधन समीक्षा—डॉ.स्मिता ठाकरे, ओंकार प्रकाशन,अमरावती

...चरित्रातील समाजदर्शन—सुमन बेलवलकर, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई

...चरित्र—संपा. प्रा. पुरुषोत्तम नागपूरे, ओंकार प्रकाशन अमरावती

...ी चक्रधरांची शिकवण—आचार्य दीपक तायडे, निर्गुण ब्रम्ह प्रकाशन अमरावती

...चेचा महान मानदंड—प्रा.आवलगावकर रमेश वामन

...बुध्दा वाळीत टाकलेला श्री चक्रधर—वैद्य प्रभाकर, किशोर प्रकाशन, अमरावती

Narayan ... Vidyalaya

...Subjects : www.lbp.world

We welcome you to contact us
transforming your thesis into a book

THESIS

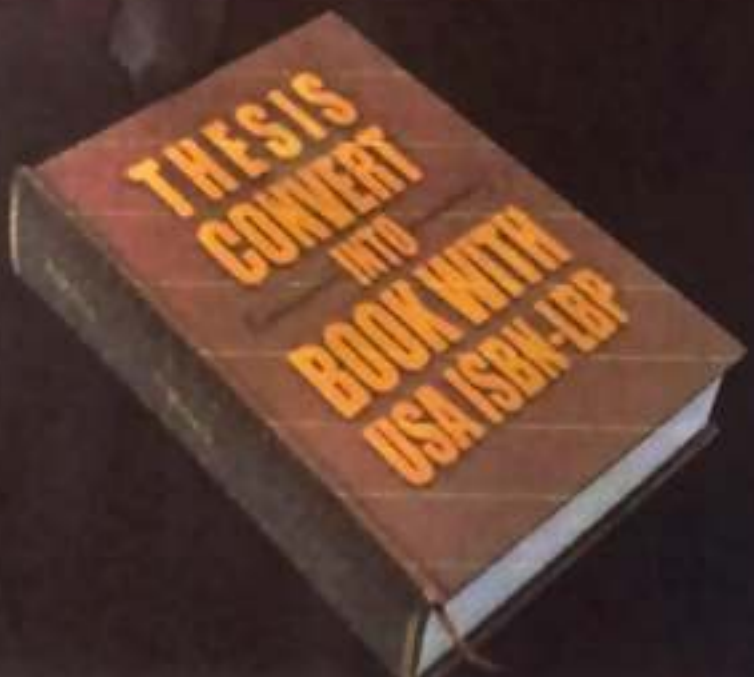
DISSERTATION

PROJECT

CONVERT INTO BOOK

THESIS TO JOURNAL ARTICLE

PUBLISH SEMINAR, CONFERENCE & WORKSHOP



THESIS CONVERT INTO BOOK WITH USA ISBN-LBP

Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X
UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे , Topic:- श्री चक्रधर स्वामींची सामाजिक समरसता, College : मराठी विभाग प्रमुख , नारायणराव राणा महाविद्यालय , बडनेरा (रेल्वे) जि अमरावती The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of Feb 2019.

Laxmi Book Publication
258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
E-mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief

REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

श्री चक्रधर स्वामींची सामाजिक समरसता

प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख , नारायणराव राणा महाविद्यालय , बडनेरा (रेल्वे) जि. अमरावती.



अठराव्या शतकात महाराष्ट्राच्या या पवित्र भूमीमध्ये होऊन गेलेल्या महानुभाव पंथाचे संस्थापक सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी आहेत. महानुभाव पंथ हा द्वैती मताचा भक्ती मार्ग असून या पंथाचे कार्य विशाल आहे. त्याकाळात देवगिरीला यादव राजाची राजवट होती. यादवराजा हा हिंदू धर्माचा पुरस्कर्ता होता. त्याच्या श्री करणाधिपती हेमाद्री पंडित याने चतुर्वर्गचिंतामणी नावाचा ग्रंथ लिहिला. त्यात व्रत एका वर्षात दोन हजार व्रत वैकल्ये करण्यास सांगितले. बहुजन समाज हा अज्ञानात खितपत पडलेला होता. देवी देवतांचे स्तोम माजलेले होते. उपास तापास व्रत वैकल्ये मोठ्या प्रमाणावर केली जात होती. देवी–देवतांना नवससायास बोलले जात होते. नर बळी दिले जात होते. जातीयता होती. समाजात दिवसेंदिवस सामाजिक तसेच आर्थिक विषमतेची दरी अधिकाधिक वाढत होती. बहुजनांना धर्माचा अधिकार नव्हता. संस्कृत भाषा ही देववाणी होती. बहुजनवर्ग या ज्ञानापासून वंचित होता. दैन्य दुःख दारिद्र्य याने बहुजन वर्ग त्रस्त होता. स्त्रीला धर्माचा अधिकार नव्हता. स्त्रीला मोक्ष मार्गातील धोंड मानले जात होते. स्त्रीचे चूल आणि मूल एवढेच मर्यादित क्षेत्र होते. परंतु काही प्रथांचे प्रस्थ दिवसेंदिवस वाढले होते. या संदर्भात श्री चक्रधर स्वामी म्हणाले हा अवघा जनु एकला होला असे कवणी याचे थक फेडिता नाही तु का थकलासि ऐसे कव्हणी म्हणते नाही. अशा समाजाला श्री चक्रधरांनी आधार दिला.

श्री चक्रधर हे कृतिशील समाजसुधारक होते. त्यांनी आपल्या कृतीतून जातीभेदाच्या अभेद्य भिंतीना तडा देण्याचे महान कार्य केले. त्यांनी स्थापन केलेल्या पंथात सर्व जातींची लोक होती. त्याकाळात स्वामींनी स्पृश्यास्पृश्यतेचा भेदाभेद दूर केला. चर्मकाराच्या हातचा विळा खाउन त्याला स्थिती प्राप्त करुन दिली हे चर्मकार पेटी या लीळेवरुन दिसून येते. श्री चक्रधरांना माणसामाणसात भेद मान्य नव्हता. जाती पंथाच्या भिंती त्यांना पाडायच्या होत्या. ब्राम्हण आणि मातंग हे दोन्ही ते सारखेच मानत. कर्मकांडाळापासी जाती याहाळ याग हे त्यांचे सूत्र होते. त्यांनी महारवाडयाहुनी धर्म काढायला सांगितला.

समाजातील सामाजिक विषमतेची मुळे समूळ उखळून टाकण्यासाठी त्यांनी सातत्याने आपल्या कृतीतून प्रयत्न केला. मांगाच्या हातचा लाडू ते ब्राम्हणांना प्रसाद म्हणून देतात. स्वामी एकदा जोगेश्वरीच्या मंदिरात असताना त्यांना भेटण्यासाठी तीन मातंग आले होते. त्यापैकी एकाने स्वामींने दर्शन घेण्यासाठी मंदिरामध्ये उभे राहण्याचे ठरविले. ही गोष्ट आउसेंनी स्वामींना सांगितली. स्वामींनी त्या मातंगाची परीक्षा पाहावी ठरविले. त्यांनी आउसे करवी प्रसाद म्हणून लाडू दिले व घरी जाण्यास सांगितले आणि ती आत निघून गेली. परंतु तो मातंग तिथेच स्वामींच्या भेटीसाठी उभा होता. आउसा त्याच्यावर रागावली परंतु तो विठ्ठाला आज माझा प्राण गेला तरी चालेल परंतु मी माझ्या देवाला बघितल्याशिवाय येथुन हलणार नाही. त्याची ती अढळ श्रध्दा व भक्ती पाहून स्वामी गहिवरलेत व त्यांनी भेट घेण्यास मंदिराबाहेर आलेत.

Principal
Narayan... Vidyalaya

स्वामींना पाहून तो मातंग खूप आनंदी झाला. त्याला कळत नव्हते की आपण स्वामींची पूजा कशी करावी म्हणून त्याने स्वामींनी काही वेळा पूर्वी पादविलेले प्रसादाने खादाड स्वामींना अर्पण केले. स्वामींनी प्रसाद विकार विकल्प शून्यता होवानी की ना तूम्ही अत्यंत गोड़ीस की ना ? तूम्हा परस्परे परमप्रिती तयाची की अशाप्रकारे सर्वज्ञ श्री चक्रधरांनी आपल्या कृतीतून सामाजिक समता निर्माण केली.

समाजात ज्याकाळात अस्पृश्यांनी सावलीही वर्ज्य मानली जायची त्याकाळी सर्वसाधारण स्त्रियांनी दूर ठेवण्या त्या अवस्थेत नगरातील ब्रम्हवृंदाना त्यांनी पूजा करायला लावण्याचे अलौकिक कार्य त्यांनी केले. तसेच डाकोबा सारख्या अस्पृश्याला मंदिर प्रवेश घडवून स्वत: बरोबर आपल्याच पानी जेवायला बसविले होते. ब्राम्हण शिष्याकरवी त्याला जेवण वाढले होते. त्याला पाय धुवायला पाणी देवविले होते. अशा ह्या थोतनोर डाकोबासारख्या अस्पृशाला एका ब्राम्हण शिष्याकरवी त्यांनी नावून देवविला होता. अशा अलौकिक सामाजिक कार्यासाठीच ते सतत महाराष्ट्रभर फिरले.

श्री चक्रधर स्वामींना स्त्री–पुरुष समानतेचा पुरस्कार केला. त्याकाळात स्त्रियांना कोणतेही ज्ञान ग्रहण करण्याचा अधिकार नव्हता त्याकाळात स्वामींनी त्यांना पुरुषांच्या बरोबरीचे स्थान दिले. सारंग पंडितांच्या मनातील स्त्री द्वेष दूर करताना स्वामी त्याला म्हणतात (डोमेग्राम स्त्रीळा) तुझा तो जीव आणि स्त्रियांचा काय जीव नसे ? काय स्त्रियांना आणि पुरुषांना परमेश्वर अलग आहे. तापांनाही जीव आहे. जे एकाच प्रकारचे जीव आहेत. मग तू हा भेदाभेद का पाळतोस. हा अधिकार तुला कुणी दिला ? तू जर असे करशील तर तुला पाप लागेल व तुझे ज्ञान केव्हाच पूर्णत्वास जाणार नाही. तू आज खूप मोठे पाप केलेस याची शिक्षा तुला झालीच पाहिजे. शास्त्र सांगते सर्वांचा जीव सारखाच आहे. तर तू भेदाभेद का पाळतोस व मनात आणतोस ? हे सर्व ऐकून सारंग पंडित खूप खजिल झाला व स्वामींना म्हणाला, माझ्याकडून महापाप झाले. आपण जो दंड मला द्याल तो मी भोगायला तयार आहे. मला माफ करा. मला पश्चाताप झाला हे चांगले आहे. पण तू अक्षम्य गुन्हा केला याचे प्रायश्चित म्हणून तू गोंगेत (गोदावरीत) जाउन उभा रहा. या प्रसंगातून स्वामी स्त्री–पुरुष समानता सर्वांना पटवून देतात.

यादव काळात निरर्थक कर्मकांडाने ग्रस्त माजले होते मोक्षाच्या प्राप्तीसाठी प्रत्येक समाजात सर्वत्र अनेक देवांची उपासना आणि व्रत वैकल्य केली जात होती या सर्व बाबी मोक्षमार्गीयांना उपयोगाच्या नाहीत म्हणून त्या त्यागण्यांचा स्वामींचा आग्रह होता बहिष्कृत समाजात तथाकथित शुद्रातीशुद्र शेंदरी–हेंदरी देवतांची हिंसाप्रधान पूजा होत होती दगडाला शेंदूर लावला की देवता तयार होत असे आणि कोंबड़ बकरं कापले की त्या प्रसन्न होतात अशी श्रध्दा खालच्या स्तरातील भोळ्या–भाबड्या जनांच्या मनात होती. भट –ब्राम्हण आपली पोटे भरीत होता. ही अंधश्रध्दा नाहीसी व्हावी यासाठी आग्रह धरणारे श्री चक्रधर स्वामी हे पहिले अंधश्रध्दा निर्मुलनकर्ते होय.

समाजाला संघेत करण्याचे कार्य श्री चक्रधरांनी केले.सनातन्य वाढल्यामुळे सर्वसामान्य समाजाला कोणी दृष्टा किंवा मार्गदर्शक नव्हता. तेंव्हा श्री चक्रधरांनी भटकलेल्या समाजास मार्गदर्शन केले. तत्कालीन समाजात खितपत पडलेल्या दलित–स्त्रीशुद्रादिकांना त्यांनी दिलासा व प्रेम दिले.सर्व वर्गातील स्त्रियांना त्यांनी समतेची वागणूक दिली. सर्व समभावांचा व समतेचा दिव्य संदेश दिला.ईश्वर विषयीचे खरे ज्ञान त्यांनी सर्वसामान्यांना करून दिले.संसार तापाने पोळलेल्या जीवांना अव्दैताश्रित वेदोक्त देवतोपासनेच्या कर्मकांडातून सोडवून परमेश्वराच्या अनन्य भक्तीचा मार्ग त्यांनी उपदेशीला.

श्री चक्रधरांनी शुध्द शाकाहाराचा पुरस्कार केला. सप्त व्यसनापासून दूर राहण्याची शिकवण दिली. मास खाणे, दारु पिणे, जुगार खेळणे हिंसा करणे वेशागमण करणे, चोरी करणे आणि, खोटे बोलणे ही सप्तव्यसने मनुष्याला पशुतुल्य बनवून, त्याचा विवेक नाहीसा करतात. सुजान, सुशील, चारित्रसपन्न युवक पिढ़ी निर्माण व्हाव्यात समाजाचे आधारस्तंभ म्हणून त्यांनी पुढे यावे हिच स्वामींची इच्छा त्यांच्या तत्वज्ञानातून दिसून येते. माणसाने सात्विक जीवन जगावे, मधुर भाषी असावे प्रयत्नांची कास न सोडता तत्वज्ञानातून दिसून येते. माणसाने सात्विक जीवन जगावे, मधुर भाषी असावे प्रयत्नांची कास न सोडता अनुदूत परमेश्वर स्मरण करावे, मुंगीचेही वैर चिंतू नये, मारीता–पुजीता समान मानावा असा मानवतेचा धर्म संदेश श्री चक्रधर या जननायकानी शिकविला. कसल्याही व्यसनाच्या आहारी न जाता परस्परामध्ये प्रेम सलोख्याचे संबध प्राणी मात्रांवर दया, प्रेम करण्याची शिकवण दिली. आहार, आचार, विचार यांच्यातील सात्विकतेला महत्व दिले. सर्वसामान्यमाणसांपर्यंत धर्माचे तत्वज्ञान साध्या सोप्या मराठी भाषेत पोहोचावे

Principal
Vidyalaya
Narayan

...ली ग्रंथ मराठी भाषेतूनच लिहिले जावे, शास्त्रग्रंथ मराठीतून करावी हे सांगितले श्री चक्रधर स्वामी ...ची अविचार बोलत असत प्रसंग पडित केशीराजबास यांनी संस्कृत भाषेतून ग्रंथ लिहिण्याची इच्छा ...केली असता तुमचा अस्मात करमात ती येणे ना येणे याहा सामान्य परिवार बालबोध लहानांची ...संस्कृत मुखबध्द न करी तू की अशा शब्दात संस्कृत भाषा डावलत महाप्रभाव पंथाचे प्रथम आचार्य ...श्री नागदेवाचार्य यांनी मराठी भाषेला बंधनमुक्तता मान दिला मराठी सुवर्ण काळाची सुरुवात करणारा हा ...आहे.

श्री चक्रधर स्वामी हे कृतीशील समाज सुधारक होते तत्कालीन समाजातील वर्णवर्ण व्यवस्था व ...त्यामुळे अनुषंगाने निर्माण झालेल्या सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक विषमतेचा त्यांनी कडाडून विरोध केला.

सर्वांना धर्माचा अधिकार दिला

मराठी भाषेला धर्मभाषेचा दर्जा दिला

श्री चक्रधरांनी परमेश्वर भक्तीने समक साधून निरसुखाचा मार्ग समाजाला दाखविला

संदर्भ ग्रंथ सूची

लोळारकर, संशोधन समीक्षा—डॉ.स्मिता ठाकरे, ओंकार प्रकाशन,अमरावती

लीळाचरित्रातील समाजदर्शन—सुमन बेलवलकर, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई

लीळाचरित्र—संपा. प्रा. पुरुषोत्तम नागपूरे, ओंकार प्रकाशन अमरावती

सर्वज्ञ श्री चक्रधरांची शिकवण—आचार्य दीपक तायडे, निर्गुण ब्रम्ह प्रकाशन अमरावती

मानवतेचा महान मानदंड—प्रा.आवलगावकर रमेश वामन

मानवीमुल्ये वाळीत टाकलेला श्री चक्रधर—वैद्य प्रभाकर, किशोर प्रकाशन, अमरावती

Principal
Vidyalaya

Journal for all Subjects : www.lbp.world

Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X
UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.2331(U

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे. Topic:- लीळा चरित्रातील साहित्यिक स्थिती College : मराठी विभाग प्रमुख , नारायणराव राणा महाविद्यालय , बडनेरा (रत्न) जि. अमरावती The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of July 2018.

Laxmi Book Publication
258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
E-mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief

ISSN: 2249-894X
REVIEW OF RESEARCH
International Online Multidisciplinary Journal
UGC APPROVED
Journal No.: 48514
Volume - 7 | Issue - 10 | July - 2018
Impact Factor : 5.2331(UIF)

लीळा चरित्रातील साहित्यिक स्त्रिया



प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख , नारायणराव राणा महाविद्यालय , बडनेरा (रेल्वे) जि. अमरावती

प्रस्तावना : श्री चक्रधरांनी बाराव्या शतकात महानुभाव पंथाची स्थापना केली देवगिरीला यादव राजाची राजवट होती यादवराजा हा वैदिक धर्माचा पुरस्कर्ता होता सामाजात उच्चनिचतेचे प्रस्थ फार मोठया प्रमाणात वाढले होते.....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

International Online Multidisciplinary Journal
REVIEW OF RESEARCH
ISSN NO: 2249-894X

OUR CHIEF EDITORS



Ashok Yakkaldevi

Iran



Bijan Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri lanka



Kamani Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- EBSCO
- ENDNOTE
- SCHOLAR
- ZOTERO
- DRJI





Narayan Vaidya

International Online Multidisciplinary Journal

Review of Research

Save Paper, Save World

ISSN : 2249-894X Impact Factor : 5.2331(UIF) Vol. 7, Issue 10, July 2018



Title And Name Of The Author (S)	Page No
Buddhist Ultimate Destination: The Knowledge Of Destruction Of Āsava (Āsavakkhayañāna) Mr. Ga Thay Na	1
BANKING SECTOR REFORMS IN INDIA Prof. S. G. Rodgi and Dr. Bhakti Mahindrakar (Tatuskar)	7
बौद्ध परिवारातील साहित्यिक स्त्रिया डॉ. कल्पना मेहरे	15
DIGITAL LIBRARIES AND SEARCH ENGINES S. Dadpe	19
ACTIVITY COEFFICIENT OF UREA IN TERNARY SYSTEM Prof. K. Kushare	30
INDIGENOUS POLITICAL INSTITUTIONS IN TRANSITION: A STUDY WITH REFERENCE TO DECENTRALIZED GOVERNANCE AND ITS IMPLICATION FOR ARUNACHAL PRADESH Dr. Mibang	33
SELF HELP GROUPS FOR WOMEN EMPOWERMENT IN TAMILNADU Dr. A. Rajathilagam and Ms.T. Sulochana	39

Principal
Narayan... Vidyalaya
L...a

5.2331(UIF) REVIEW OF RESEARCH
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

लीळा चरित्रातील साहित्यिक स्त्रिया

प्रा. डॉ. कल्पना मेहरे
विभाग प्रमुख , नारायणराव राणा महाविद्यालय , बडनेरा (रेल्वे) जि. अमरावती



बाराव्या शतकात महानुभाव पंथाची स्थापना केली. राज्याची राजवट होती. यादवराजा हा वैदिक धर्माचा समाजात उच्चनिचतेचे प्रस्थ फार मोठया प्रमाणात वाढले स्त्रीना शिक्षणाची कवाडे बंद होती. संस्कृत भाषेत ज्ञान असल्यामुळे समाज व्रतवैकल्य, कर्मकांड तसेच अनेक क्षुद्र गोष्टीत पुरफटलेला होता. स्त्री–शुद्रांना धर्माचा व ज्ञानार्जनाचा अधिकार नव्हता. मुलींचे बालविवाह होत. स्त्रिया सती, केशवपन, वैधव्य, अशा चाली रूढी पडल्या होत्या. यामुळे सर्व सामान्यांचे जीवन असह्य झाले होते. अशा स्थितीत श्री चक्रधरांनी महानुभव पंथाची स्थापना केली. बहुजनांना हितकर असे विचार समाजात रूजवून सर्वसामान्य समाजास नवसंजीवनी दिली.

या पंथाने आपले तत्त्वज्ञान मराठी भाषेतून विशद केले. विद्वानांपासून सामान्यांपर्यंत पोहचण्यासाठी सर्वसामान्यांना समजेल अशा भाषेतून लिहावे असा त्यांचा दंडक होता. स्त्री आणि पुरुष यांच्यात कधीच भेदाभेद केला नाही.स्त्रियांना समान अधिकार देणारा हा महाराष्ट्रातील पहिलाच पंथ असल्यामुळे अनेक स्त्रिया या पंथात समाविष्ट झाल्या यामध्ये प्रामुख्यान अनेक विधवा स्त्रिया होत्या. अजोड असे कार्य करण्याची क्षमता असूनही समाजाने त्यांच्याकडे लक्ष दिले नाही. त्या सर्वांनी पंथात मानाचे स्थान दिले. सन्मानाची वागणूक दिली.

शिक्षण, लेखन,वाचन इ. ज्ञानाच्या कक्षा स्त्रियांकरीता रूढीपरंपरेच्या कडिकुलूपात बधिस्त असतांना महानुभावकालीन स्त्रियांनी लेखन केले. त्यांच्या माध्यमातून निर्माण झालेल्या वाङ्मयाने समृध्द झाले. एवढेच नव्हे तर, आद्य मराठी कवयित्रीचा मानही महानुभाव पंथाच्या स्त्रीने पटकावला. महदाईसाप्रमाणेच इतर स्त्रियांनी मराठी साहित्यात मोलाची भर घातली. त्यांची वृत्ती चिकित्सक व जिज्ञासूवृत्तीची होती. श्रीचक्रधरांनी महदाईसेच्या प्रश्नाच्या निमित्ताने श्रीकृष्णाच्या चरित्रावर प्रकाश टाकला आहे. ही श्रीचक्रधर व श्रीगुंडमराऊळ यांच्या चरणी लीन होती. तेराव्या शतकात विवेकभूच्या 'विवाह स्विकारु' हया लीळेच्या प्रसंगी गायिलेले 'धवळे' ही आद्य काव्यरचना व आद्यकाव्य आहे.

गोविंदप्रभूना विवाह करण्याची प्रवृत्ती झाली. बाशिंग बांधून हळद लावल्यावर श्रीगोविंदप्रभु म्हणे, आवो मेली जाय: गाए गाय म्हणे, महदाईसा म्हणितले 'आवो कृष्ण रुक्मिणी गाय म्हणे गाय म्हणे' आणि त्यानंतर महदाईसेस स्फूर्ती झाली.यातून मराठीतले पहिले काव्य म्हणजे ओव्यांचे धवळे महदंबेने गाईले. धवळ्याच्या पूर्वाधाची रचना श्रीगोविंदप्रभुच्या हयातीत १२३५–८८ च्या पूर्वी झाली. उत्तरार्ध नंतरचा आहे. धवळे म्हणजे लग्नप्रसंगी गावयाची वर कथागीते आहेत. त्यांची भाषा साधी आहे. महदंबेने श्रीनरेंद्रबाळकडून श्रीकृष्ण लीळा ऐकल्या नंतर गायील्या. धवळयाचा उत्तरार्ध पूर्वार्धानंतरचा वर्षानंतरचा आहे. धवळ्याचा उत्तरार्ध

VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - ...

लिहिण्यासाठी लक्ष्मीद्रभट व म्हाइंभट यांचा हातभार लागला. श्रीगोविंदप्रभुपासून महदंबेस स्फूर्ती झाली ती उत्स्फूर्तपणे तुरीया रागात गाऊ लागली. चार दिवस श्रीगोविंदप्रभुंनी रुक्मीणी स्वयंवर आहांकले. महदंबा ही मोठी बुध्दिमान,अतिविरक्त आणि परमार्ग मर्म जाणणारी होती या कवयित्रीमुळेच महानुभाव वाङ्मयाला स्थान मिळाले. महदाईसेच्या नावावर धवळे, मातृकीरुक्मिणी स्वयंवर आणि ... ओव्या एवढी रचना आहे

नागांबा –

महानुभाव पंथाचे द्वितीय आचार्य बाईदेवबास त्यानंतरचे आचार्य कवीश्वरबास यांने ... दिवाकर यांची नागांबा ही कन्या होती. तिने कवीश्वरांकडे दीक्षाविधी स्वीकारला आणि अखंड आचार ... व्रतनियमात राहिली. शिवाय भटोबासांकडून नागांबिकेला बोधही झाला होता. ही सकल शास्त्र ... असल्यामुळे पंडिता स्त्री म्हणून तिचा उल्लेख केला जातो.

कवीश्वराच्या मृत्युनंतर नागांबा दुःखाने व्याकुळ झाली. त्यावेळी तिने ज्या ओव्या गायिल्या ... उद्योग ओव्या म्हणून प्रसिध्द आहे. नागांबिकेच्या कडव्यांच्या या ओव्यातून तिची विरही अवस्था ... झाली आहे. गुरुनिष्ठा आहे. गुरुला आपण अंतरलो ही असहनीय जाणीव आहे.

इतर साहित्यिक स्त्रिया –

धनाइसा –

सतराव्या शतकात 'हंसाबा स्वयंवर' काव्य लिहिले गेलेले असून ते श्री चक्रधरांच्या हंसाबिके ... झालेल्या वरंगळ येथील विवाहासंबंधी आहे. महानुभाव पंथाच्या इतिहासात दोन धनाइसा आढळतात ... आम्नायातील एक मयंकराजाची गुरुबहीण तर दुसरी सारंगधरांची शिष्या आहे. यापैकी एकीने हे ... लिहीले आहे. हे काव्य श्रीचक्रधरांच्या हंसाबिकेशी झालेल्या विवाहासंबंधी असून ओव्यांमध्ये ... आहे. लीळाचरित्रात नसलेला पण या कवयित्रीन आपल्या कल्पनेने सजविलेला भाग त्यात पुष्कळ ... काव्य गेय आहे. या काव्याची भाषाशैली समृध्द आहे.

महदाइसेने गायीलेल्या ओव्या –

ओवी हा प्राचीन मराठी कवितेचा अविभाज्य घटक आहे. स्त्री रचित मौखिक ओव्या हे ... दुसरे रुप होय. ओवी म्हणजे ओवणे. भावभावना ओवणे ओवी साधी, भोळी, सहज सुंदर ... उत्स्फूर्त भाषेतून रचलेली असते. त्यामुळे ती लवचिक अर्थवाही व जिवंत आहे. दळणकांडण करताना ... ओवी गीते गातात. ओवी म्हणजे स्त्रीची सखी.

महदंबेने दळणकांडण करतांना आपल्या आराध्य दैवताविषयीचे भाव विविध प्रतिमातून ... आहे. महदंबेची ओवी ही वारकरी संतांच्या पूर्वीची आहे.

महदंबा शोकवर्णन

श्री चक्रधरांचा वियोग सहन न झाल्यामुळे श्री नागदेवाचार्य निघून गेले. कोणालाही ... सांगता नाही. महदाईसाने त्यांचा शोध घेतला. श्री गोविंदप्रभुच्या सांगण्यावरुन महदंबेने नागदेव ... यांना माघारी घेउन रिध्दपूरी आणले. वास्तवात श्रीचक्रधरांच्या विरहाने ती पोरकी झाली होती. ... दुःखाचा कढ आवरुन धैर्य खचू न देता निर्णयक्षमता व चिकाटीच्या बळावर तिने नागदेवाचार्य ... यांना आणले.

'महदंबा शोकवर्णन' हे महदंबेच्या शोक विव्हळ अवस्थेने मूर्तिमंत दर्शन आहे. करुण ... रसाची याचा मनोहर संगम या गीतात आढळते. सुटसुटीत, साधी, सरळ, ओघवती भाषाशैली ... वैशिष्ट्य आहे. करुणा व भक्तिरसाने ओथंबलेले हे काव्य आहे. एका आत्मिक कवी ... अंतर्मनाच्या बळावर हे गीत रचले.

रुक्मिणी स्वयंवर' ही श्रवण रचनेपेक्षा वेगळ्या प्रकारची रचना आहे. यामध्ये ११० पदे [illegible] रचना आहे. यामध्ये बावन्न मातृका प्रत्येक ओवीचा प्रारंभ एक याक्रमाने योजलेल्या [illegible] ओव्यांने आहे. १ ते ८२ ओव्यामध्ये क ते क्ष पर्यंत अक्षरे आहेत. ३ ते १०१ [illegible] ज्ञ पर्यंत अक्षरे घेतलेली आहेत. त्यानंतर ध—ट—ध—न—द—ब—म—न—प असा [illegible] काव्यरचना ही विविध प्रकारची आहे. महदंबेनी गर्भकांड ओव्या तसेच आरत्या रचल्या

[illegible] गीतात आर्तता आहे. प्रभूशिवाय राहण्याची कल्पना असहनीय आहे. तिच्या मनातील [illegible] स्फुटे काव्याच्या रुपाने प्रतीत झाली आहे.

[illegible] उमाइसा हिने 'सह्याद्रीना तोडा ही रचना केली. ही नागदेवाचार्यांची नात असून ती मोठी [illegible] वेदांत पारंगत होती. तोडा हा गद्य लेखन प्रकार असून यात लेखकाने मत विविध प्रमाणाच्या [illegible] लिहिले असते. माहूर हे स्थान स्वाभिमानी देवतेचे असल्यामुळे साधकाला त्या देवतेपासून विघ्न [illegible] असतो.

[illegible] सह्याद्रीचा परिसर, ब्रम्हगीरीचे पठार,ब्रम्हगीरीचा उतरणीचा भाग हा श्रीदत्त चरणांकीत भाग [illegible] आहे. ही विद्वान, वादविवादपटू, चर्चक होती.

[illegible] नागदेवाचार्यांची ही धाकटी बहीण. एकदा उमाइसा हळूहळू गात होती. तेव्हा स्वामींनी विचारले [illegible] कसे गाताति' तेव्हा स्वामींच्या सांगण्यावरुन तीने चौपदी गायिली. उमाइसेने गायिलेली हिन्दी [illegible] पदीतील प्रथम काव्य होय.

[illegible] निरर्थक जीवन निरर्थक असल्याचे ती काव्यातून व्यक्त करते. श्री चक्रधरांनी देखिल हिन्दी [illegible] रचना याप्रसंगी गायिली.

[illegible] अप्राप्तीरुप गीतरचना केली आहे. परमेश्वर न मिळाल्याने एका विरहिणीची अवस्था [illegible] भाव काव्यात व्यक्त केला आहे.

[illegible] स्वरुप, गुण इत्यादीवर हे काव्य रचले आहे. ५ कडव्याचे हे काव्य अतिशय सरस [illegible] रुक्मिणी दासी मनात चिंतन करत आहे. असा आशय या काव्यात आहे.

[illegible] वेद आवडत नाही. यामुळे कवयित्री व्यथित होते. दगडाने माझ्या कुशीत जन्म घेतला. [illegible] बाळत्व राहिले याचे शल्य तिला आहे.

[illegible] नावावर ही गर्भकांड ओव्या आहेत.

VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY 2018

...ळाराणी विरहपद —

या काव्यामध्ये हरिपाळ देवांनी घराचा त्याग केल्यानंतरची कमळाऊकमाची अवस्था व त्या ...
...लेल्या पश्चातापाचे वर्णन यात कवीने केलेले आहे.

...गाबिका स्तवन —

नागाबिकेला प्रेमदान मिळाले म्हणून अनेक कवींनी स्तवने गायिली.

...ताबाईंच्या योग्यतेविषयीच्या ओव्या —

राघव मुनीने हे काव्य रचले आहे. या काव्यात कवीने शांताबाईंसेच्या पूर्व पुण्याने व श्रीगुरु...
...ेवामध्ये मिळालेल्या मानसिक शांतीचे वर्णन केले आहे.

...ाइसेची कवित्व शक्ती —

...काव्याचा कर्ता खळो हा आहे.

...ियांची गद्यपद्य रचना —

भाष्यग्रंथांना प्रारंभ लहानसहान प्रमेयांनी केला आहे. प्रमेय म्हणजे तत्व किंवा सिध्दान्त एखादे ...
...ुभवातून निवडून त्यावर केलेले गद्यभाष्य म्हणजे महानुभावांचा प्रमेयग्रंथ होय. नागाइसा ...
...ुर्णप्रमेयाची रचना उपलब्ध नाही. नोंदमात्र आहे.

...गाइसा —

नागाइसा ही भास्कराची पुतणी हिच्या नावावर चार प्रमेय रचना आहे.

...दे आणि ध्रुवे —

महानुभाव पंथात स्त्रियांनी रचलेली गीते काळाच्या ओघात नष्ट झाली किंवा पंथापुरती ...
...ाली असणार त्याचे संशोधन होऊन संग्रह प्रसिध्द होऊ शकले नाही.

...निकर्ष —

यादवकाळात श्री गोविंदप्रभू एका विधवा स्त्री कडून विवाहगीत गाऊन घेतात. येथे त्यांना ...
...ेदकोन दिसतो. धवळे हे यादवकाळाचे रंगचित्र आहे. पद्यवाङ्मयाचा प्रारंभ महानुभाव कवयित्रींने ...
...ाइसेने गायिलेली रचना ही हिन्दीतील प्रथम रचना आहे. अनेक स्त्रियांनी तत्त्वज्ञानावर आधारित ...
...ना केल्या आहे. काही पुरुषांनी स्त्रियांची विद्वत्ता व अधिकार जाणून स्त्रियांवर गीते लिहिलेली ...
...काळातच यांनी रचना रचल्या असून त्या सरस आहे. या रचनामध्ये कवीत्वगुणी, प्रतिभा ...
...ता, प्रासादिकता,उत्कृष्टता ओतप्रोत भरलेली आहे.

...र्भ ग्रंथ सूची

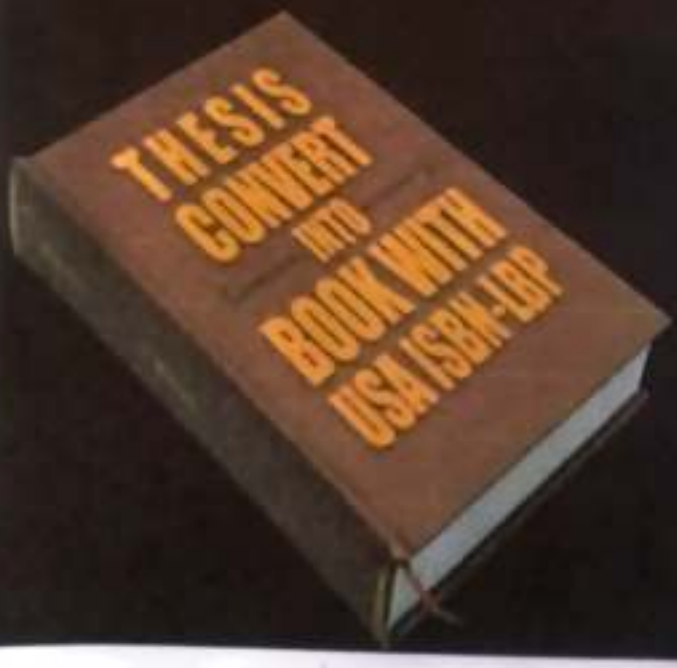
१) डॉ. सौ. इलेकर सुहासिनी (संपा.): महदंबेचे धवळे, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे
२) मंदाकर रत्नाकर बापुराव : धर्मसंप्रदाय आणि मध्ययुगीन मराठी वाङ्मय, प्रतिमा प्रकाशन,सदाशिव ...
३) मुळ्ये श.गो. : महानुभाव पंथ आणि त्यांचे वाङ्मय,व्हीनस प्रकाशन,पुणे
४) वेरुरकर ल.ग.: प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर
५) डॉ. देशपांडे अ.ना. : प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास (भाग तिसरा), व्हीनस प्रकाशन, पुणे
६) डॉ. सौ.इलेकर सुहासिनी: प्राचीन मराठी कवयित्रींचे वाङ्मयीन कार्य, परिमल प्रकाशन, औरंगाबाद
७) डॉ. घाये सुशीला : लीळाचरित्रातील स्त्री दर्शन, सुगम प्रकाशन, अमरावती
८) शेवाळकर अनिल (संपा.) : महानुभावआश्र साहित्य ...ा, गजकमल, हिंदीपराज प्रकाशन, पुणे

We welcome you to contact us
transforming your thesis into a book

THESIS TO JOURNAL ARTICLE

THESIS
DISSERTATION
PROJECT
CONVERT INTO BOOK

PUBLISH
SEMINAR,
CONFERENCE
&
WORKSHOP



THESIS CONVERT INTO BOOK WITH USA ISBN-LBP

LBP
Laxmi Book Publication

LBP PUBLICATION
258/34, Raviwar Peth, Solapur 413 005. Cell.: 09595359435
Email: apiguide2014@gmail.com Website: www.lbp.world

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati

CERTIFICATE

ISSN 2278-9308

Impact Factor 7.675 (SJIF)

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs./Ms. प्रा.डॉ. कल्पना त्र्यं. मेहरे

Of मराठी विभागप्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय,बडनेरा (रेल्वे), जि. अमरावती.

has published a paper on स्त्रियांचे मुक्तीदाते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

Peer Reviewed International Research Journal B.Aadhar *Issue* no, 250. *Published* on *Dated* 05, October - *2020.*

Dr. Santosh Bansod
Editor :
Head Dept.of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera (M.S.).

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Prof. Virag Gawande
Director
Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati

(SJIF)

ISSN-2278-9308

Aadhar

Peer-Reviewed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

October 2020

SPECIAL ISSUE-CCL(250)



Chief Editor
Virag S. Gawande

Aadhar Social
& Development
Institute Amravati

Editor:
Dr. Santosh Bansod
Head Dept.of History
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

Impact Factor - 7.675

ISSN - 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October - 2020

ISSUE No -CCL (250)

Dr. Babasaheb Ambedkar Thought

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. Santosh Bansod
Editor :
Head Dept.of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

Aadhar International Publications
For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem. — Dr. Santosh Bansod	1
2	Dr Babasaheb Ambedkar and Socialism — Dr. Vasant R. Dongare	4
3	स्त्रियांचे मुक्तीदाते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर — प्रा.डॉ. कल्पना व्ही. मेहरे	8
4	An Advocate of Human Society: Dr B. R. Ambedkar — Satish K. Khode.	11
5	Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar — Dr.Harshal R.Nimbhorkar	15
6	दलित पँथर आणि आंबेडकरवाद — प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे	19
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे उच्चशिक्षणा विषयक विचार — प्रा. डॉ. सिध्दार्थ शिवाजी वाठोरे	24
8	महिला व मजदुरो के विकास मे डॉ. आबेडकर की भूमिका — प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील.	27
9	भारतीय कृषी विकास के संदर्भ मे डॉ. बी. आर. अंम्बेडकर के विचारोका ऐतिहासिक विश्लेषण — डॉ. प्रसन्न प्रकाश बगडे	30
10	वर्तमान परिप्रेक्षातून डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांची विदर्भातील भाषणे (पातुर्डा ते अमरावती) — डॉ श्याम प्रकाश देवकर	34
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सामाजिक चळवळीचा समाजमनावरील प्रभाव :— एक चिकित्सा. — डॉ किशोर मारोती वानखडे.	42
12	समाज क्रांतिकारकबाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय संविधान — जगन्नाथ सावंत	46
13	आंबेडकरी चळवळीतील रावबहादूर सीतारामपंत बोले यांचे योगदान — प्रा. प्रविन एम. राजुरवाडे	52
14	भारतीय स्त्री, पूर्वइतिहास, आजची स्थिती आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर — प्रा.शितल बुधा सोनवणे	56
15	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व योगदान — प्रा. विनय वामनराव तायडे	63
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार — प्रा. डॉ. नितिन उल्हासराव सराफ / गोपाल मधुकर राठोड	67
17	संविधानिक दृष्टिकोनातून महिला सक्षमीकरणामध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका — प्रा. संतोष बन्सीलाल राठोड	72

18	Thoughts of Dr. Bhimrao Ambedkar On An Education	Dr. Punam Vivek Rane	79
19	The feminist warrior dr. Babasaheb ambedkar	Ajay Hatesing Solanke	84
20	बहुजन समाजाच्या बदलाकरीता आंबेडकरांचे योगदान	कु. अंजली किशोर नांदेकर	89
21	डॉ. बाबासाहब अम्बेडकरजी का स्वतंत्र मजदूर पक्ष की स्थापना में दृष्टिकोन	कु. युगंधरा यशवंत शिवणकर	92
22	सद्यस्थितीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या शेतीविषयक विचारांची उपयुक्तता-एक अध्ययन	कु. भाग्यश्री श्रीकृष्णराव गाडगे	95
23	डॉ. बाबासाहेबांचे शैक्षणीक विचार व कार्य	कु. माधुरी शंकर खामनकर	101
24	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्र उभारणीतील योगदान	मोहन ओंकार वेलोकार	104
25	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे शेती आणी शेतकरी विषयक धोरण	कु.वैशाली विजय ठाकरे	107







Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process.
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

Principal

Narayanrao

Aadhar Publications
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Mob:- 09405661778 Emial: aadharpublication@gmail.com
For Details www.aadharsocial.com
Price:Rs.500/

17-18

ISSN 0976-0377
RNI. MAHMUL02805/2010/33461
International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

Editor In Chief
Dr. Balaji Kamble

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
[illegible]

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR 3.42

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XVI, Vol. II
Year - 8 (Half Yearly)
(July 2017 To Dec. 2017)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Lohevan,
PENSULVIYA (USA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi , Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur (M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur. (A.P.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani (M.S.)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur (M.S.)

Principal

IIRL MAHMUL-0280/2010/03481
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 3.42
ISSN 0976-0377

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author(s)	Page No.
1	Bio-Diversity of Fresh Water Algae of Limboti water Reservior of Nanded Dist. of M.S. India	R. P. Aradwad	1
2	Socio-Economic Development of Scheduled Castes in Maharashtra	Dr. Balaji G. Kamble	12
3	Phenyl Phosphonic Acid Catalyzed Syntghesis of Benzoxazoles Under Solvent-Free Conditions	Sanjeev M. Reddy	26
4	भारतीय नोटबंदीचे परिणाम	डॉ. सतिश गव्हाणे	33
5	भारतीय अर्थव्यवस्थेमध्ये सेवाक्षेत्राचे योगदान	डॉ. निलम छंगाणी	39
6	नाशिक जिल्ह्यातील फळ प्रक्रिया उद्योग व त्यांची भुमिका	अनिल प्रभाकर सावळे	43
7	बहिणाबाई चौधरी यांच्या काव्यातील आध्यात्मिक तत्वज्ञान	डॉ. चारुशिला रा. रुमाले	50
8	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचा स्त्री विषयक दृष्टीकोन	डॉ. कल्पना ज्ञ. मेहरे	56

Principal
Nara

RNI MAHMUL02005/2010/33461 IMPACT FACTOR 3.42 ISSN 0976-0377
Interlink Research Analysis Issue : XVI, Vol. II, July 2017 To Dec. 2017 56

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचा स्त्री विषयक दृष्टीकोन

डॉ. कल्पना त्र्य. मेहरे
मराठी विभाग प्रमुख,
नारायणराव राणा महाविद्यालय,
बडनेरा, जि. अमरावती

8 Research Paper - Marathi

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज हे एक द्रष्टे समाज सुधारक आणि कृतिशील संत होते. राष्ट्रसंतांनी आपले आयुष्यभर सर्वसामान्य जनांच्या उत्थानासाठी वाणी व लेखनी अविश्रांत झिजवली. राष्ट्रसंतांनी विपुल साहित्य निर्मिती केली. प्रबोधन आणि परिवर्तन हा त्यांच्या साहित्य निर्मिती मागचा हेतू होता. राष्ट्रसंतांचा ग्रामगीता हा बृहद्ग्रंथ म्हणजे ग्रामस्वराज्याचा मुलमंत्र होय. हा अद्‌भूत आणि अप्रतिम ग्रंथ आहे. आधुनिक मराठी साहित्यातील अत्यंत महत्त्वाचा ग्रंथ आहे. स्वातंत्र्योत्तर कालखंडात ग्रामगीतेपेक्षा मोठा काव्यग्रंथ निर्माण झाला नाही.

ग्रामगीतेत ग्रामीणांनी आपले दैनंदिन जीवन कसे जगावे याबाबतीत उपदेश केला आहे. गाव हा समाज घटक व खेडयातील माणूस हा मानवी समुहाचा लहानात लहान घटक या घटकात सुधारणा घडवून त्याची प्रगती करता येईल हे राष्ट्रसंतांनी हेरले होते. ग्रामगीतेत ग्राम आरोग्य, ग्राम शुध्दी यासारखे अध्याय आहेत. लग्नविधी, वैवाहिक जीवन, अंत्यसंस्कार, सणोत्सव, यात्रा मेळे याबाबत प्रबोधन केले आहे. 'महिलोन्नती' या अध्यायातून त्यांनी महिलांच्या उन्नतीविषयी अनेक मार्ग सुचविले आहेत.

स्त्री विषयक दृष्टीकोन :–

राष्ट्रसंतांचा स्त्रीकडे पाहण्याचा दृष्टीकोन हा विशाल व उदार आहे. त्यांनी विद्या व गुरू पेक्षा मातेला श्रेष्ठ ठरविले आहे. बालकांची आद्य गुरू ही माता असते. बालकावर योग्य संस्कार करण्याची जबाबदारी ही पार पाडत असते. मुलांना चारित्र्य संपन्न बनविण्याचे कार्य आई करत असते.

जिच्या हाती पाळण्याची दोरी
तीच जगाते उध्दारी।

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

ऐसी वर्णीली थोरी
शेकडो गुरूहूनि ।। अ.२० ओ ३.

भारतीय संस्कृतीने स्त्रिचा मातृदेवो भव असा गौरव केलेला आहे. पण तिचा गौरव करताना समाजाने तिला दुर्लक्षित केले स्वत:ला हुशार व विद्वान समजण्याऱ्या पुरूषांनी स्त्रीयांना सदोदित मागेच ठेवले. तरीही तिचे मोठेपण कमी झालेले नाही

स्त्रियांमध्ये फार मोठे सामर्थ्य आहे. हे सामर्थ्य आपण ओळखले पाहिजे तिच्या या सामर्थ्याचा उपयोग आपण समाजोन्नतीसाठी करू शकलो पाहिजे पण आजच्या समाजात मुलीचे लग्न होताना तिला लग्नेच परकरमात गुंतविले जाते. फुकटची नोकरांनी म्हणून तिच्याकडे बघितले जाते.

काही लग्न होता गुंतविती परी
नसे बोलण्याची ही उजागरी
चूल आणि मूल हिच चाकरी।
सांगती तिज।। अ. २० ओ. ६२

उत्तर वैदिक कालखंडापासून स्त्रियांच्या अवनतीस सुरूवात झाली आहे. कमी वयात जरठ मुलांच्यासोबत मुलींचे विवाह होत. त्यात त्यांना वैधव्य आल्यानंतर कुरूप केले जात असे. यापूर्वी त्यांना पतीसोबत इच्छा नसतांनाही पतीसोबत चितेवर स्वाहा व्हावे लागत असे.

काही स्त्रिया विधवा होती। केश काढून विद्रूप करिती।
त्याने कैसी साधे संन्यासवश्ती मला नसे ठावे हे।। अ.२० ओ. ६९
आपुला झाकोनि दुबळेपण करावी दुसऱ्याची विटंबना।
हा तो आपला दुष्टपणा अमानुष जैसा। अ.२० ओ. ७०

स्त्रियांचे सामर्थ राष्ट्रसंतांनी ओळखले होते स्त्रिया ह्या पुरूषापेक्षा गुणात्मक दृष्टया सरस आहे असा विचार मांडतांना

अरे ती तुझ्याहुनि उत्तम वागते.
समाजाची उत्तम भाषण देते।
तुलाही शहाणपण शिकवू जाणते
मग ती मागे कशाने ।।

असा पुरूषांना सवाल करतात पुरूषाला जर उत्तम सहचारिणी मिळाली तर त्याचा संसार स्वर्गाप्रमाणे होतो संसारातील समस्यांचे निमूर्लन तिच करत असते. राष्ट्रसंतांनी स्त्रियांच्या ठिकाणचे हे चातुर्य ओळखले होते.

मानवी स्वभावाचे अनुमान। प्रसंग पोहोनि अवधान।
पुढील काळाचे अनुसंधान । स्त्रियांचे ठायी ।। अ.२० ओ. ३२

Narayan Vidyalaya

पुरुषप्रधान समाजाने मात्र सदैव तिच्यावर अन्याय केलेला आहे. तिचे सर्वच अधिकार नाकारून तिने कार्य क्षेत्र मर्यादित केले आहे. तिला भोगवस्तू बनविले

कोणी भोग वस्तु समजोनि घली।
सजवोनि ठेतिली नुसती बाहुली।
त्याने घरोघरी शिरला कली
अबला बनली मायभूमी अ.२०, ओ. ४५

स्वत:च्या स्वार्थासाठी पुरूषांनी स्त्रियांना गुलाम बनविले स्त्रियांच्या प्रगतीच्या वाटा बंद केल्या असे जरी असेल तरी स्त्रियांचे सामर्थ्य राष्ट्रसंतांनी ओळखले होते. राष्ट्रसंत स्त्रियांचे हितचिंतक आहे

काय स्त्रियांनी युध्द नाही केले
पति, पुत्रा नाही प्रोत्साहन दिले।
काय स्त्रियांनी प्राण नाही
अर्पिले ब्रिदासाठी।। अ.२० ओ.५१

अतिशय सुंदर शब्दात स्त्रियांची महती वर्णितात. तिच्या कार्याचा गुणगौरव करतात. तिचे वैशिष्टय [illegible] लिहितात.

स्त्रियासारखी मोहिनी नाही।
स्त्रियेसारखी वैरागिणी नाही।
स्त्रियेसारखी मुलायम नाही।
आणि कठोर रणचंडिका। अ.२० ओ.५३

पुरूषांनी स्वत:च्या शुद्र स्वार्थासाठी स्त्रीला दासी बनविले. चूल आणि मूल एवढेच तिचे क्षेत्र ठरविले. स्त्रीने घरी दडून राहायचे पुरूषांनी मात्र छाती काढून वाटेल ते दुष्ट कृत्य करायचे ही परिस्थिती राष्ट्रसंताला हवी यासाठी राष्ट्रसंत लिहितात

अरे। तुझ्याहुन ती उत्तम वागतो
समाजी उत्तम भाषण देते।
तुलाही शहाणपण शिकवू जाणतो
मग ती मागे कशानी? अ.२० ओ.६५

पुरूषांनी स्त्रियांना समान हक्क द्यावे विधवेची विटंबना थांबवावी. तिच्या आंतरिक गुणांचा विकास होईल असे शिक्षण द्यावे पुरूषांप्रमाणे महिलांच्या सुध्दा संघटना असाव्या असे राष्ट्रसंताना वाटते. या संघटनेच्या माध्यमातून त्या आपल्या सांसारिक तसेच सामाजिक समस्यांचे निवारण करतील. पुरूष जेव्हा वाईट मार्गाला लागतील तेव्हा हया संघटनेच्या माध्यमातून त्या त्यांना वठणीवर आणतील.

जैसी मुलांची संघटित सेना

[illegible] संघटना।
[illegible] मुख्य दु:खाच्या भावना
[illegible] ओ १०२

[illegible] संघटना फार महत्त्वाची आहे. या संघटनेच्या माध्यमातून [illegible] शारदोत्सव सहभोजनादि उपक्रम चालू ठेवावे. [illegible] व्यायामाने छाती बलवान करण्यासाठी व्यायामशाळेची स्थापना करावी. [illegible] कार्यात अडसर ठरणाऱ्या प्रथांना झुगारून द्यावे.

[illegible] पुरुषांकरिता।
[illegible] सर्व व्यवहार।
[illegible] शास्त्र आता?
[illegible] ओ १०८

[illegible] सन्मान प्राप्त करून देतात. स्त्री–पुरुष समानतेचा [illegible] दृष्टिकोन हा अतिशय प्रागतिक व पुरोगामी आहे. ग्रामगीतेतील [illegible] महत्त्वाचे ठरत आहे.

निष्कर्ष

१) [illegible] सर्व राष्ट्रसंतांनी सूचविलेले आहेत.
२) [illegible] स्थान दिल्यास त्याच्या विकासातच राष्ट्राचा खरा विकास घडून येईल [illegible]
३) [illegible] योग्यतेनुसार प्रतिष्ठा लाभावी हा राष्ट्रसंतांचा आशावाद आहे.
४) [illegible] दृष्टिकोन जितका आधुनिक तितकाच आदर्श पूजकही आहे.

संदर्भ सूची :-

१) [illegible] संपा. सावरकर सुदामजी ग्रामगीता महाराष्ट्र पाठयपुस्तक मंडळ, पुणे २००३
२) राष्ट्रसंत स्त्रीदर्शन – शेंदरे नमिता, ओम प्रकाशन, नागपूर १९९५
३) राष्ट्रसंत आणि ग्रामगीता सावरकर डॉ. सुभाष, मराठी जनसाहित्य परिषद, अमरावती १९९७
४) ग्रामगीता रहस्य स्पर्श २– सावरकर डॉ. सुभाष, जनसाहित्य परिषद, अमरावती

Principal
[illegible] Vidyalaya

RNI. MAHMUL02805/2010/33461



Published, Printed, Owned by Sow. Mahananda B. Kamble & Edited by Dr. Balaji Kamble & Printed at Jyotichandra Offset Printing & Binding & Published by Jyotichandra Publication, 'Gyandev -Parvati'R-9/139/6, Near Vishal School, LIC Colony, Pragati Nagar, Latur, Dist Latur-413531 M.S., India

Editor in chief : Dr. Balaji Kamble, Mob. 9423346913

SPECIAL ISSUE

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

Sonopant Dandekar Shikshan Mandali's

S.D.ARTS, V.S.APTE COMMERCE, M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE, PALGHAR

R. H. SAVE LIBRARY
(Knowledge Resource Centre)

CELEBRATING 50 1968-2018 YEARS OF SUPPORT

Organizes

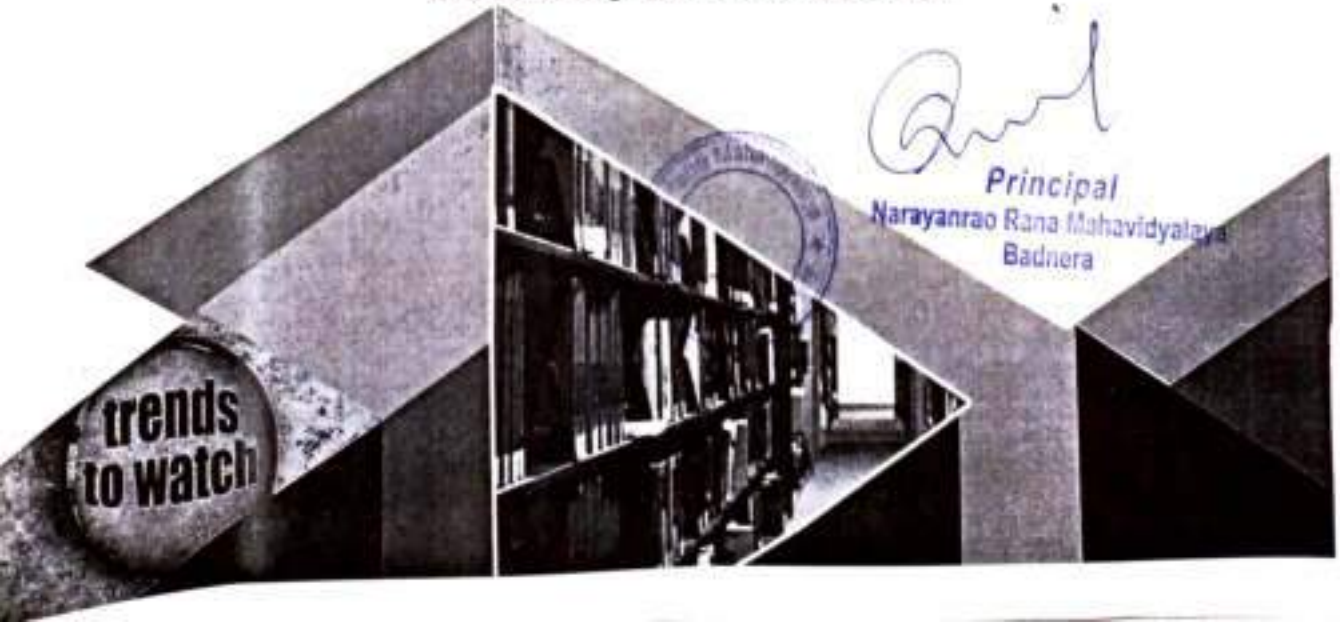
One Day National Conference

On

EMERGING TRENDS AND TECHNOLOGIES IN LIBRARIES: AN INNOVATIVE SPACE

Wednesday 28th March, 2018

SONOPANT DANDEKAR ARTS, V.S. APTE COMMERCE AND M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE
Kharekuran Road, Palghar (W),
Tal & Dist. Palghar, Maharashtra-401404



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

13) GREEN LIBRARY
Dr. Rajkumar Thorwe, Kada || 69

14) A Study of Web Technologies 1.0 to 3.0 & It's Applications in Libraries
Dr. Vivek S. Sathe & Dr. Ganesh D. Kulkarni, Dist. Aurangabad || 74

15) GREEN LIBRARY
G. M. Kangune & G.P. Aute, Aurangabad || 83

16) Application of Smartphone Technology in College Library Services: Need...
Gavit Jitendra R., Dist-Palghar) || 87

17) Usage of Electronic Resources in Academic Libraries and Role of Info...
Dr.Harshal R.Nimbhorkar, Amravati || 91

18) Library portal: A Tool for organise, store, access and disseminateinformation
Mrs. Mehetre Hemangi Shashikant, Nashik, Maharashtra || 94

19) Mumbai Marathi GranthSangrahalaya: In-house Library Services
Mr. Arjun Kisanrao Hon, Dist- Palghar || 98

20) Effect of Merging Libraries Services with Cloud Based Technologies
Mrs. Kavita B. Mogare, Bordi || 101

21) Institutional Repository
Prof. Mahendra Shantarm Sable, Dist. Chandrapur || 106

22) User Friendly Green Library: An Emerging Dimension
Manjula Jain || 110

23) CLOUD COMPUTING
MS. Monika Dinkar Bade, New Panvel || 112

24) DSpace Digital Library Software : An Overview
Dr. Nandkishor R. Motewar, Ratnagiri || 116

25) A case study of Information seeking behavior of users of Late S. R. Tambe...
Mr. Nilesh H. Hande, Dist-Pune || 119

26) Digital Libraries Software and Future: A Review
Mr. Sanjay N. More & Mr.Vaibhav V. Pimple, Mumbai || 123

https://sites.google.com/site/vidyawarta/

17

Usage of Electronic Resources in Academic Libraries and Role of Information Literacy

Dr.Harshal R.Nimbhorkar
Librarian,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera-Amravati

Abstract

In today's world electronic resources (e-resources) have become very popular, and libraries are no exception. Today, the academic libraries are procuring more and more e-resources for their libraries. This paper is a literature review on usage of e-resources in academic libraries. It gives an overview of the relationship of e-resources with information literacy. It also gives a brief overview of the importance of information literacy on e-resources in academic libraries.

Keywords: E-Resources, Usage of E-Resources, Information Literacy

1. Introduction

The academic system largely relies on teaching, learning and research. Eternally, education depends on information resources. These resources are the driving forces and factors for making a society an educated one. The educated society can exist only when information is stored, shared and utilised properly. In an academic arrangement, both 'education' and 'library' are inseparable – indivisible concepts, working for the promotion and evolution of teaching, learning and research for greater use of academia (Rao & Choudhury, 2009).

Devi & Devi (n.d) noted that electronic publishing has led to a new era of communication and information sharing. It creates opportunities for users and better prospects for authors and publishers. Many of the electronic books or electronic publishers' web site freely permit and encourage readers to provide feedback on works, often directly to the author rather than to the publisher. Nevertheless, users may establish their own accounts, charge services to credit cards or pay by prearranged method, and have requested material delivered directly to them through fax, email, etc. Today, libraries of all kinds have been spending larger and larger shares of their budgets to adopt or gain access to electronic resources from publishers and vendors. This is due the fact that e-resources have enabled libraries to improve services in a variety of ways. Most importantly, most e-resources come equipped with powerful search-and retrieval tools that allow users to perform literature

2.E-Resources

E-resources are those resources which include documents in electronic or e-format that can be accessed via Internet in digital library environment. E-resources are that electronic product that delivers a collection of data, be it text, image collection, other multimedia products like numerical, graphical mode for commercially available for library and information centres. These may be delivered on CD-ROM / DVD, over the Internet and so on. Providing access to E-resources is a service to help library users to find E-Databases, E-Journals, E-Magazines, E-Books/ E-Audio/ E-Images, Data/ GIS, Digital Library Projects, Electronic Exhibitions, E-Subject Guide, E-newsletters, E-White papers, E-conferences proceedings and Web search tools on a range of topic. Many of the electronic resources are freely available to anyone over Internet access but some are commercial resources. Information and communication technology is one of the important buzzwords of today's world. It has

changed the society into information society and is way of life. In modern library the electronic resources are becoming more and more important. The printed resources are now being digitized, which has given rise in increases of the availability of books and journals in the electronic format.(Bajpal,2009)

2.1 Types of E- resources

E-resources are those electronic products that deliver a collection of data, from text referring to full text basis, e-journals, image collection, and other multimedia products and numerical, graphical or time based, are commercially available till that has been published with an aim to being marketed. These may be delivered on CD-ROM, via the Internet and so on (Devi & Devi, n.d). Some of the common types of e-resources are e-books, e-journals, indexing and abstracting databases, reference databases (like dictionaries, directories, encyclopaedias, etc.), statistical databases, e-audio/visual resources, CDROMs, etc.

4.3 E-RESOURCES AND LIBRARIES

Today libraries are facing challenges while responding to the changes. They sustain their traditional role. With the explosion of information technology the powerful competitive forces raise fundamental question about the role of libraries .The libraries should be engaged in the creation and dissemination of knowledge. It searches information and transfer information to any corner of the world .An educational institute and libraries user requires the latest and pinpointed information in their respective fields Due to the increasing cost of information resources developing countries to access information at very low cost. Libraries should provide e-resources find it very difficult both faculty staff, researcher and students with the expectations that the e-resources will be used for educational purposes.(Ghule,2014)

3. Literature Review

Different people and groups of people have studied on works relating to e-resources. The literature review gives a broader outlook of it. Some of the works that have been done are reviewed and given below.

According to the study done by Sharma (2009), use of e- resources is very common among teachers and research scholars of Guru Gobind Singh Indraprastha University and majority of the teachers and research scholars are dependent on e-resources to get the desired and relevant information. But practical use of e-resources is not up-to the worth in comparison to investments made in acquiring these resources and infrastructure and training programmes should be revised as per requirements. In the study conducted by Ansari (2010), it was found that majority of the academics have computer skills that facilitate the use of electronic resources, although a majority have little knowledge of electronic resources, which was not a positive aspects of the findings. Mostly users use both electronic and printed resources, or only printed resources. Electronic resources are used for research and for preparation of lectures. Nearly all respondents were satisfied or quite satisfied with the available resources but they regard them as less reliable. Lack of knowledge and lack of facilities are the main reasons for not using electronic resources. Bhatia (2011) stated that the internet has attracted the attention of the users as an easy source for accessing information and e-resources as is evident from her study. However, she also verified that only a sizeable number of users could frequently seek information from e- resources. Most of the users access e-resources for updating their knowledge on their respective subjects and for academic assignments. Furthermore, the college library should organise awareness and training programmes and seminars to educate the users on seeking information from e-resources and to maximize the use of library resources and

vices. Habiba & Chowdhury (2012) confirmed heir study a large number of e-resources are ade available in Dhaka University Library JL). Their study also revealed that, a majority the users use e- resources for their learning rpose and that the e- resources materials are ailable for users to use to their satisfaction. evertheless, the authors stated that DUL lack frastructure facilities. Therefore, DUL should range more training programmes for users, point trained professionals with ICT skills and ccommodated users opinions on subscribing ew e- journals.

The authors also recommended among thers that the institution in question should dopt more dynamic marketing strategies in rder to inform and create awareness of the existence of the electronic resources, which can nclude fresh student's orientation, faculty seminars, mailing list to users, circulars, memorandums, selective dissemination of information and word of mouth.

According to Adeleke & Emeahara (2016), the low level of usage of e-resources, especially full text databases, among postgraduate students in the University of Ibadan revealed that they need to be more competent in using communication tech nologies, including computers and associated skills such as desktop publishing, database management, programming, and web page design to navigate in an electronic environment. Significant relationship between information literacy skills and use of electronic information resources was established from result of the findings. It is evident that postgraduate students need to be assisted by stake holders to acquire the needed electronic information literacy skills, provide unmediated access to effectively use and benefit from the myriads of electronic information resources available to them to improve the quality of their academic and research work. Nimbhorkar H.R.(2016) In his thesis opinion about the library users they access internet we analysis four agricultur libraries. At PDKV library all users 40% UG,20% PG, 25% Research Scholars and 15% Faculty Staff that have 100 % access to internet At MPKV library Rahuri, we see that 12.5% UG students have no access to internet. However, 100% users from other categories have access to internet. At MKV library Parbhani, 25% UG students have no access to internet whereas 100% users from other categories have access to internet At BSKKV Dapoli; it was found that 37.5 UG students have no access to internet whereas 100% users from other categories have access to internet. Thus, it was seen that there is internet access for all types of respondents accept UG students. However, at BSKKV, Dapoli, UG students have least access to internet.

4. Role of information literacy

Information literacy is a set of abilities requiring individuals to recognise when information is needed and have the ability to locate, evaluate and use effectively the needed information (ACRL, 2000).

The importance of information literacy is increasing in this electronic environment. With the coming up of e-resources in libraries, users are likely to build up their information literacy skills. It can be said that from the above literature reviewed, information literacy plays a pivotal role in enhancing the usage of electronic resources in academic libraries. However, most of the users do not use their full potential in retrieving information from electronic resources due to lack of information literacy skills. Finding and making use of the required information from the electronic environment needs information literacy.

There are certain principles which information literate persons have. Therefore, students especially the beginners should be guided by the librarians, staffs or faculties how to locate the correct information needed and to be able to apply that information to solve their problem. Information literacy skills like

technology skills and critical thinking should be taught to the students so that they can locate and use the required information efficiently and easily. Information literacy

Usage of Electronic- Resources in Academic..necessitates the student's skill to know when there is need for information, how and where to get the information and using such information effectively to accomplish a specific purpose. Today's libraries are not just traditional libraries, they have developed into Information Centres which are collecting, organizing electronic learning resources/ digital objects to provide access to the end users.

The role of library professionals has also changed in order to provide best services to the end users, from traditional ways to electronic modes which the younger generation wants and also demands. Students need information for a variety of activities and the e-resources can meet their purposes. There is a daily explosion of information resources and the challenge of using these resources effectively and responsibly. In using the e-resources, students lack skill in locating and evaluating information, which impedes its effective use. Therefore, libraries should organise orientation programmes in the beginning of each session where the users can be taught how better they can access e-resources and be familiarised to the electronic environment. Also the faculty can help the students on how to access e-resources which are available in the library as well as those that are not subscribed by the library.

5. Conclusion

Since Information technology has become very fast, information can easily be accessed by just one click through various searching, linking facility. Users' preference towards e-resources is rising and their demand for providing electronic information services in the library is increasing. Therefore libraries in particular are concerned in building and purchasing e-resources. But one of the challenges that librarians are facing in this electronic era is how to make the users known of the availability of the e-resources and the skills to acquired appropriate information from the collection of e-resources. Hence, information literacy plays a vital role in this electronic era.

References

1. Association of College and Research Libraries (ACRL). (2000). Information literacy competency standards for higher education. Chicago: Association of College and Research Libraries. Retrieved from www.acrl.org/ala.mgrps/dlvs/ acrl/standards/standards.pdf.

2. Akussah, M., Asante, E. & Adu-Sarkodee, R.(2015). Impact of electronic resources and usage in academic libraries in Ghana: evidence from Koforidua Polytechnic & All Nations University College, Ghana. Journal of Education and Practice, 6(33). 33-38. Retrieved from http:// files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1083497.pdf

3. Ansari, M. N. (2010). Use of electronic resources among academics at the University of Karachi. Library Philosophy and Practice(e-journal). Retrieved from http://digitalcommons.unl.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1398&context =libphilprac

4. Bajpal, R.P.BidyutK.M, andBajpal, G(2009)'Use of E-Resources through consortia:A boon to users of Indian University Libraries,' 'New Dimensions ICAL journal',192(2),Pp.83-85

5.Bhatia, J. K. (2011). Use of electronic resources in degree college libraries in Chandigarh. DESIDOC Journal of Library & Information - 35 - Usage of Electronic- Resources in Academic.... 10th Convention PLANNER 2016 Technology, 31 (6).480-484. Retrieved from http:/ /publications.drdo.gov.in/ojs/index.php/djlit/ article/view/1323/571

6.Devi, T. S. & Devi, K. S. (n.d). Management of e resources in the modern library information system : an outlook. 360-364. Retrieved from http://ir.inflibnet.ac.in/bitstream/1944/1409/1/ 49.pdf

7.Ghule,R.(2014) 'E-Resources and

changing role of Academic Librarians,' 59th International Conference on 'Managing Libraries in the Changing Information World: From Surviving to Thriving'.- at Indian Institute of Technology, Roorkee Organised by Indian Library Association New Delhi from 22 to 24 Feb.2014.Pp.857-85

8. Habiba, U. & Chowdhury, S. (2012). Use of electronic resources and its impact: a study of Dhaka University library users. The Eastern Librarian, 23 (1). 74-90. Retrieved from http:// gsdl.easternuni.edu.bd/greenstone/ collect/ 7eufacultypub/index/assoc/HASHa0c9. dir/ doc.pdf

9. Nimbhorkar H.R.(2016) Use of Electronic Resorces in Agricultural university Libraries in Maharashtra : A Study PhD Thesis submitted in Sant Gadge Baba Amravati University Amravati Feb.2016

10. Rao, Y. S. & Choudhury, B. K. (2009). Availability of electronic resources at NIT libraries in India : A Study. ICAL 2009 – POSTER PAPERS .Retrieve from http://crl.du.ac.in/ical09/ papers/ index_files/ical-106_68_169_2_RV.pdf

11. Adeleke, D. S. & Emeahara, E. N. (2016). Relationship between information literacy and use of electronic information Resources by postgraduate students of the University of Ibadan. Library Philosophy and Practice (ejournal). Retrieved from http://digitalcommons.unl.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=3788&context=libphilprac

12. Sharma, C. (2009). Use and impact of e- resources at Guru Gobind Singh Indraprastha University (India): a case study. Electronic Journal of Academic and Special Librarianship,10(1). Retrieved from http:// southernlibrarianship.icaap.org/content/v10n01/sharma_c01.html About Authors Ms. Lendina Imsong, Librarian, Fazl Ali College, Nagaland Email: lendinaimsong@gmail.com Mr. Ibajanaishisha M. Kharbudon, Research Scholar, Department of Library & Information Science, North- Eastern Hill University, Shillong. Email: ibajanai21@gmail.com

18

Library portal: A Tool for organise, store, access and disseminateinformation

Mrs. Mehetre Hemangi Shashikant
Librarian,
Navjeevan Education Society's Navjeevan Institute of Management CIDCO, Nashik, Maharashtra

ABSTRACT :

Most of the libraries are adding e-resources to their collection. The utility of these e-resources will be limited in the absence of a functional website that facilitates the users to exploit these the maximum extent. Web portals are the tools that enhance access to the e-resources by providing visibility to these. This paper highlights the role of a library portal, a tool for organise, store and access and disseminate information. In the modern digital information environment, a well-defined mechanism is needed and library portal is highly beneficial for this as well as for web –enabled information services.

Keywords : Library Portal, e-resources, Digital Library, Web OPAC, Discovery tools

1.INTRODUCTION

The Librarian as content managers in the web world relay on their web sites and their web catalogs to provide users with a variety of information access to full-text resources and digital library services.

So Web portals are also important tools for users to access and utilise library and information services over a network. An informative home page provides the users helpful information about the library, its collection and services





Published By

Harshwardhan **P**ublication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

ISSN-2319 9318

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue – 110 (A)

LIBRARY SCIENCE

Guest Editor :
Dr. F. C. Raghuwanshi
Principal,
Vidya Bharati Mahavidyalya, Amarawati

Executive Editors of the Issue :
Dr. V. P.Gudadh, Prof & Head Dept. Of Library and information Science SGBAU Amravati
Dr R.R.Khokle, Librarian Shri Shivaji Science College Amravati
Dr.V.R.Shekhawat, Librarian Vidyabharati Mahavidyalya Amravati
Dr A.D.Wankhade, Librarian Mahatma Jotibaphule Mahavidyalya Amravati
Mr V.T. Adlok, Librarian Late Dattatraya Pusadkar Arts College Nandgaopeth Amravati

Chief Editor : Dr. Dhanraj Dhangar (Yeola)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 1000/-

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
[illegible]

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013) | February-2019
Special Issue 110 (A): Library Science
UGC Approved Journal

E-Resources, Concepts and Use: An Overview

Dr.Harshal R.Nimbhorkar
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

Abstract :

Information and communication technology (ICT) has thrown a new challenge to the libraries. The technology has shown a great impact on the services of the libraries. Libraries use ICT for better services and satisfying diverse user needs. Libraries have transformed into digital and virtual libraries where books, journals, and magazines have changed into e-books, e-journals etc.This has increased the global dissemination of information. Electronic resources (e-resources) are easily accessible in the remote areas. The e-resources solve storage problems and control the flood of information. Print sources are being digitised. There is a great need to study the use of e-resources and investigate the factors that are a hindrance to their use, introduction of various types of e- resources, and databases using agricultural libraries.

Keywords: Internet, e-resources, CDROM, e-journals, e-books, search engines, library portals, agriculture databases.

Introduction:

The internet provides access to unlimited sources of information and search engines are continuously being advanced to provide efficient ways to help users to find what they want. The internet eases and increases access to a large amount of data, saves time and money, and provides an opportunity to consult several experts with a single request (via discussion groups), and more independence from specific times and places for information seeking. Technology has penetrated all areas of life. Libraries use information and communication technology (ICT) for better services and satisfying diverse users' needs. Libraries have transformed into digital and virtual libraries where books, journals, and magazines have changed into e-books, e-journals etc. This has increased the global dissemination of information. Electronic resources (e-resources) are easily accessible in the remote areas.

Electronic Resource Concepts

An electronic resource is defined as a resource which requires computer access or any electronic product that delivers a collection of data, be it text referring to full text bases, electronic journals, image collections, other multimedia products and numerical, graphical or time based, as a Commercially available title that has been published with an aim to being marketed. These may be delivered on CD ROM, on tape, via internet and so on. Over the past few years, a numbers of techniques and related standards have been developed which allow documents to be created and distributed in electric form. Hence to cope with the present situation, libraries are shifting towards new media, namely electronic resources for their collection developments that the demands of users are better fulfilled. The e-resources on magnetic and optical media have a vast impact on the collections of university libraries. These are more useful due to inherent capabilities for manipulation and searching, providing information access is cheaper to acquiring information resources, savings in storage and maintenance etc. and sometimes the electronic form is the only alternative.

Principal

Types of E-Resources

The e-resources are basically dived in two major types are

Online e-Resources, which may include:

- e-Journal (Full Text & Bibliographic)
- e-Books
- On-line Databases
- Bibliographic Databases
- Numeric and statistical databases
- Web sites
- Consortium based e-Resources

Off line e-Resources may include:

- CD-ROM
- Diskettes
- Other portable computer databases (Bajpal R.P.et.al)

Meaning Of E-Resources

World Wide Web (WWW) facilitates the delivery of electronic content to the libraries and the desktops of its users. Libraries began acquiring the new online resources with few ideas of where this revolution would be leading. Procedures were developed to fit the small scale of available materials at the time, and then hastily underwent revisions. Online journals were at first merely adjuncts to their print counterparts.

Characteristics Of E-Resources

- Timely and Instant access to nascent info
- any time any where access (24x7)
- Saves lot of time in terms of publishing, dissemination, usage.
- Unlimited simultaneous use
- Downloading, saving, reading, forwarding and many more.
- It can be edited as per the user requirement
- Up-datedness (Veeranjaneyulu K.et.al)

Definitions Of Electronic Resources

"The phrase 'electronic resources', has broadly been defined as information accessed by a computer, may be useful as bibliographic guides to potential sources but, as of yet, they infrequently appear as cited references in their own right". (Graham S.R.2003)

IFLA ISBD , "An electronic resource consists of materials that are computer-controlled, including materials that required the use of a peripheral (e.g. a CD-ROM player) attached to a computer- the items may or may not be used in the interactive mode." (http//:www.ifla.org)

Online Dictionary for Library & Information Science (ODLIS) an "electronic resource is a material consisting of data and/or computer program(s) encoded for reading and manipulation by a computer, by the use of a peripheral device directly connected to the computer, such as a CD-ROM drive, or remotely via a network, such as the Internet." (http//:www.abc-clio.com/ODLIS/odlis_e)

Need For E-Resources

The driving force of present day society is information. The information seekers mainly depend on the information sources which provide instant access to current information for various

Principal
Narayana

authentic. Users can browse the resources from any

Advantages Of E-Resources

The reasons for actually embarking on the purchasing of electronic resources are generally accepted because of the ease of usability, readability, affordability and accessibility. The following are the advantages of e-resources over the print media

Accessible – can be accessed from any computer on campus and usually any computer off campus, any time of the day or night, so there is no need to make a trip to the library

Easily searchable - each journal can be searched quick and easy often through the complete full text of articles and via online index

Speed - Articles/issues appear online before printed version is available

Interactive - Rapid turnaround time means articles can be read, commented by the readers, amended quickly and greater feedback thru the web

Links - Hypertext format should be exploited and links to related articles, information on other web sites, stable URLs for individual articles and email alerts when latest issue loaded.

Functionality: E-resource will allow the user to approach the publications to analyze its content in new ways by click of the mouse on search mode.

Content: The e- resources can contain a vast amount of information, but more importantly the material can consist of mixed media i.e. images, video, audio animation which could not be replaced in print.

Web OPAC

The development of ICT has influenced the implementation of OPAC available through internet. By searching and browsing online library catalogue, the end users can directly order or transmit request directly to the Web OPAC available at different University Libraries.

CD-ROM Databases

CDROM databases provide mainly abstracting and indexing services. Those are the most cost effective tools for information storage and retrieval. Information can be stored in different formats such as text, audio, video etc. Searches can be made through author, subject, Journal Title, Publisher etc. Boolean operators like AND, OR, NOT can be used to refine searches. Those CDROM databases not only minimize subscription

cost but also facilitate quick and speedy search/Some of the important CDROM databases of Agriculture are AGRIS, AGRICOLA, CAB abstracts etc

e-ShodhSindhu

e-ShodhSindhu merging three consortia intatiatives, namely UGC INFONET Digital Library Consortium NLIST and INDEST-AICTE Consortium. The e-ShodhSindhu will continue to provide current as well as archival access to more than 15,000 core and prereviwed journal and a number of bibliographic, citation and factual databases in different disciplines from a large no of publishers and aggregators to its members Institutions. Universities and colleges that are

Principal
Narayanan

cover under 12 (B)and 2(f)Sections of the UGC Act. The main objectives provide access to subscription based scholarly information e-books and e journals to all educational institutions. (www.inflibnet.ac.in)

Conclusions:-

The role of information and communication technology (ICT) and internet technology through library users can access various types of electronic resources accessed available on the web.such as e-journals, e-books,e-databases etc. The major advantages of e-resources in library and information centers to provide better efficient and effectively information to end user and satisfied Dr.S.R.Ranganathans fourth law of library science which is save the time of library user.

References:-

Graham S.R.(2003) '*Historians and electronics resources: a citation analysis*' JAHC vol.3 http://www.crl.du.ac.in/ical09/papers/index_files/ical-85_83_195_2_RV.pdf accessed on 25.08.2014.

http://www.ifla.org. Accessed on 23.08.2014

Mete M.et al.(2012).State Level Conference on '*Electronics Services in Libraries*' organized by shri shivaji arts and commerce college Amravati in collaboration with vidrabha library association (VLA),25th feb.2012.P.109.

Online Dictionary for Library and Information Science available on http//:www.abc-clio.com/

Veeranjaneyulu K. et.al.(2012) '*Library Services In the knowledge Web*' New Delhi. New India Publication Agency.Pp.43-46

http//:www.inflibnet.ac.in accessed on 05 01 2019

Vidya Bharati Shaikshanik Mandal's

VIDYA BHARATI MAHAVIDYALAYA, AMRAVATI

Re-accredited with Grade 'A' by the NAAC (CGPA 3.26 - Second Cycle) College with Potential for Excellence

In Collaboration with

S.S.S.K.R. INNANI MAHAVIDYALAYA, KARANJA (LAD) DIST. WASHIM

Re-accredited by NAAC with Grade 'A' (CGPA 3.24 - Second Cycle) College with Potential for Excellence

UGC Sponsored National Conference on

Emerging Trends in Science

1st & 2nd February, 2019

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms. H. R. Nimbhorkar

of Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera.

has actively participated in the Conference held on 1st & 2nd February, 2019 and has presented a research paper oral / poster in the subject Library Science

entitled E-RESOURCES, CONCEPTS AND USE: AN OVERVIEW

during technical session of the conference.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Dr. R. V. Joat
Organizing Secretary

Dr. P. R. Rajput
Principal & Co-Convenor
S.S.S.K.R.I. Mv., Karanja Lad

Dr. F. C. Raghuwanshi
Principal & Convenor
VBMV, Amravati

International Conference on Recent Trends in commerce and Humanities

NAAC
CGPA 2.21 (B)

Organized by
IQAC

Mahajan College of Technology

In Collaboration With

Smt Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya



23th & 24th March 2019

Conference Venue: Mahajan College of Technology, Wadgaon Road, Yavatmal

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Managing Editor :- **Dr.Jayant M. Chatur**
Principal, SMT. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Associate Editor :- **Asst. Prof. Nikhilesh D. Nalode**
Dept. of Music, SMT. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Publisher :- **Principal,** SMT. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Front Page :- **Designed by Sanjay Aasolikar,** Amravati

Subscription :- Individual Rs.1000/- Yearly
Institutional Rs. 1500/- Yearly
Single Issue Price Rs.1000/-

Address :- **Principal,** SMT. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal
Contact : 07232-240436, 9371992538
Websight : www.gjaspsas.net
Email : snwkmy@gmail.com

Printer :- **Shrikrupa Printer, Main Line,Yavatmal**

Publication Committee

Dr.J.M.Chatur (Principal)	**Head**
Assit.Prof.N.D.Nalode	**Member**
Assit.Prof.S.B.Rachalwar	**Member**
Asst.Prof.N.D.Autkar	**Member**
Asst.Prof.R.V.Bajad(Librarian)	**Member**
Asst.Prof.K.S.Godghate	**Member**

S.No.	Title	Authors	Page No
83	N-List Programme : A Boon for Academic Libraries	Dr. Ekta Ashok Menkudale	328
84	Managing of E-Resources in Academic Libraries: Best Prac	Dr.Harshal R.Nimbhorkar	331
85	How Technology Changing the Future of Libraries	Dr. Milind Lahkotwar	336
86	COLLECTION DEVELOPMENT IN DIGITAL LIBR	Dr. Prashant P. Deshmukh, Dr. R.R.Dhuldhule	339
87	Views and Vision on Default, Phrase Search Technique	Prof. Rajesh G. Bobade	344
88	CURRENT TECHNOLOGY TRENDS IN LIBRARIES	Ravindra B. Nimat (librarian)	349
89	ग्रंथालय क्षेत्रातील विविध सेवा	भारती लोभदास शिरपूरे	352
90	Current technology trends in libraries	Sandeep Subhash Satturwar	357
91	Advances in Web-based library services in Academic li	Dr. Sanjay Shenmare, Librarian	360
92	Role of Digitization in Library Profession	Dr. Vilas Ubhad	364
93	Innovative Trends and Technology in Library Science	Mrs. Maniha Vivek Jagtap	368
	Physical Education		
94	PHYSIOLOGICAL ASPECT OF EXERCISE	Prof. Dr. Sangita M. Khadse	373
95	Benefits of regular physical activity	Abhay Y.Bhishma	374
96	Importance of meditation and yoga in student's life	Mr. Abhay S .Chandekar	377
97	ASANA AND PRANAYAMA	Ajay Gulhane	380
98	Use of Information Technology as a tool to enhance sport performance: A theoretical review	Aniket A. Ambekar	383

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Editorial Board

Dr.Jayant M. Chatur
Principal,
SMT. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Dr. Subodh E. Bhandarkar
Associate Professor inChemistry,
Govt. Vidhrbha Institute Of Science& Humanities, Amravati

Asst. Prof. Nikhilesh D. Nalode
Dept. of Music,
SMT.Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya,
Yavatmal

Dr.Rajendra S. Ramteke
Principal,
Hanuman Vyayam Shala Krida Mandal Physical Education College,
Yavatmal

Dr. Nilesh Gawande
Principal,
Late.Bhaskarrao Shingne Kala Mahavidyalaya, Takakheda

Dr. D. C. Punse
Associate Professor in English,
Amolakchand Mahavidyalaya
Yavatmal

Dr. Pavan B. Mandavkar
Principal,
Indira Mahavidyalaya,
Kalamb, Distt. Yavatmal

Dr. S.B. Gharote
Principal,
Shri Gajanan Maharaj Arts & Comers'College, Mukutban

Dr. Rajendra M. Kshirsagar
Principal,
B.P.E.D.College, Shivaji Nagar,
Yavatmal

Dr. M. T. Aran
Principal,
Govt. College of Education,
Yavatmal

Dr. M. A. Shajad
Principal,
Gilani Arts & Commers College,
Ghatanji

Asst. prof. Sanjay B. Rachalwar
Head Dept. Of Economics,
SMT. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Global Journal of Applied Social, Political, Sports & Science - ISSN 2278-[illegible]

Managing of E-Resources in Academic Libraries: Best Practices

Dr.Harshal R.Nimbhorkar
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

Abstract:

Libraries functions as an essential central component in an education system. It plays an important role in an academic institution. In twentieth century rapid development of the Information Communication Technology (ICT) has revolutionized each and every filed and Library and Information Centres (LICs) is one of them. ICT has changed the academic libraries in terms of collection, organization and services. The traditional concept of acquiring information is gradually replaced by accessing information online. The collections of modern libraries are not restricted to print media only but libraries actively archiving the electronic resources due to its diverse nature like eco-friendly, time saving, cost saving, multi access, facility to access without physical presence in libraries etc. The developments in ICT have changed the users' expectation from the academic libraries in different ways. Demand of the library users have changed and they prefer electronic resources more than the print resources. E-Resources represent an increasingly important component of the collection building activities of libraries and library environment has been leading towards digital/electronic library. But still libraries are facing many problems in managing these e-resources. This paper discusses the concept of e-resources, various types of e resources, advantages and disadvantages of e-resources. This paper also describes the best practices in managing e-resources for maximizing its utilization in academic libraries and information centres with the help of modern technologies.

1.1Introduction:

The use of electronic resources in libraries began with the development of the machine-readable cataloguing (MARC) format in the mid-1960, a full 30 years before the introduction of the World Wide Web and its subsequent ubiquity. Web-based electronic resources were widely available beginning in the mid- 1990 and here has been a sharp rise in the number and complexity of e-resources in library collections in the last decades. Moreover, use patterns are shifting from print to electronic materials. Because of the proliferation of e resources and user preferences for the electronic format, these resources are becoming essential mainstays of any library collection. E-resources are a very broad term that includes a variety of different file formats such as E-book, journal, E-theses, Full-text Databases, Partially full-text databases, aggregator databases CD-ROM etc.

In the present ICT era and age of instant access to information it has become necessary to convert valuable printed resources into e-resources for future needs in posterity. Therefore, the creation of e resources, access preservation and its management has become the need of the hour. Management of electronic resources is a time-consuming and at times, a difficult process. Although the management of electronic resources is often seen as a strictly technical services endeavour, it should be considered a multifaceted process requiring all areas of the library.

'Dhanavan & Tamizhchelvan '(2012) defined electronic resources "as a resource which requires computer access or any electronic product that delivers a collection of data, be it text referring to full text bases, electronic journals, image collections, other multimedia products and numerical, graphical or time based, as a commercially available title that has been

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

published with an aim to being marketed. These may be delivered on CD-ROM, on tape, via Internet and so on".

2 Types of e-resources:

There are mainly two types of e-resources are there, they are as follows-

2.1 Online e-resources: Online e-resources are those resources which are under the control of a central computer, as in a manufacturing process or experiment. It is not connected to a computer or computer network.

Some of the online e-resources are discussed below:

E-journals, E-Books, E-zines, Online e-databases, Electronic Thesis & Dissertation, In–house databases , E- Images, E-Music and Sound Collections E-Reference Sources, Dictionaries ,Translators, Encyclopedia, Directories, Glossaries, Virtual Newspapers

2.2 Offline e-resources:

Offline e-resources are those which are not under the control of a central computer, as in a manufacturing process or experiment. Not connected to a Computer or computer network. Some **offline e-resources are as follows:**

Offline mail, Offline media playing, Offline browsing, CD-ROM Offline e-dictionary, Subject Guides

3. Advantage of e-resources:

Following are some important advantages of e-resources are listed below:

- E-Resources provide 24x7 access service;
- Multi access of e-resources is possible;
- It saves the time of the users;
- E-resources provide remote access;
- E-resources do not require binding and repair;
- E-resources save space;
- It allows various types of searching facilities;
- It can be downloaded instantly;
- It is more economic than print version as it does not require printing and postage expenditures;
- It supports multimedia applications;
- It provides current information, necessary for research work;
- Save human resources for shelving and rectification.

4. Disadvantages of e-resources:

The following disadvantages of E-Resources are as below:

- Need proper ICT infrastructure for easy access of e-resources;
- Skilled manpower is required for managing e-resources;
- More concern is required regarding copyright issue;
- Security problem;
- Initial high infrastructure cost is required;
- Renewal of e-resources is required in annual basis;
- High Internet speed is required for accessing online e-resources;
- Need proper preservation policy;
- Lack of standards.

5. Best practice: definition: A best practice may be innovative and be a philosophy, policy, strategy, program, process or practice that solves a problem or create new opportunities and positively impact the whole organisation (NAAC, 2005).

ODLIS (Online Dictionary of Library and Information Science) describes best Practices as follows: "In the application of theory to real-life situations, procedures that, when properly, applied consistently yield superior results and are therefore used as reference points in evaluation of the effectiveness of alternative methods of accomplishing the same task. Best practices are identified by examining empirical evidence of success."

6. Best practices in managing electronic resources: Two decades after the advent of electronic resources, librarians are still struggling with how to effectively manage these resources in combination with their print resources. There are many ways to systematically organize the available e resources

of the library and make it available to users in a convenient way to increase its usage. Some of the best practices for managing e-resources can be followed by academic libraries are discussed below.

6.1 Digital Library: Digital library is an access to the collection of electronic documents over network. It is an electronic library consisting of information in the digital, analogue and digitized form. Digital library plays an important role in providing more appropriate information in less time with easy access. Numerous terms are used by authors to denote the concept of digital libraries. According to E.A. Fox the digital library may be defined as the "New way of carrying out the functions of libraries encompassing new types of information resources, new approaches to classification and cataloguing, intensive use of electronic systems and networks and dramatic shifts in intellectual, organizational and electronic practices".

Larsen defines, "A digital library as a global virtual library-the library of thousands of networked electronic libraries". Digital library collections are not limited to document surrogates, but they also include digital artefacts that cannot be represented or distributed in printed formats. In broad sense digital library is a computerized system that allows users to obtain a coherent means of access to an organized, electronically stored repository of information and data.

6.2 Institutional Repository: An Institutional Repositories is "a digital collection capturing and preserving the intellectual output of a single or multiuniversity community." It's a set of services that an institute/university offers to the members of its community for the management and dissemination of digital materials created by the institution and its community members. An Institutional repository is a digital archive of the intellectual output of an Academic Institution.

Kircz (2005) believes an institutional repository can become "a research tool in itself" and, for the institution, becomes "the central metabolic organ for knowledge". At the institutional level, there are a number of justifications for creating a digital repository. These include the potential for raising the institutional profile and for demonstrating its 'scientific, social and financial value' (Crow, 2002)

IR may contain a wide variety of digital materials such as pre-prints of articles or research reports; journal articles; e-book, course material; conference papers; teaching materials; hand-outs'; doctoral thesis and dissertations; student projects; monograph; datasets resulting from research projects; photographs and video recordings; patents etc.

6.3 Electronic Theses and Dissertation (ETD): Electronic Theses and Dissertation (ETD) contain extremely valuable information as they report the results of first hand research information conducted by the researcher. It is often necessary for a library to develop a system, which will allow

Researchers, students and staff to access this information. An ETD system can allow the students to submit a topic electronically, or allow the departmental office to store the dissertation registration information, the title, date of registration, name of supervisors and the full digital document in an ETD system.

6.4 Library Consortium: Consortia means for procurement of e resources is now very popular in libraries due to the budget constraints in libraries and high price of the electronic resources. Consortium approach is extremely beneficial as it allows sharing of collective strength of member libraries of the consortium to negotiate for better deal with the publisher and the database producer. There are so many library consortium are there in India like UGC Info net Digital Library Consortium, INDEST consortium which provides access to millions of electronic resources and provides platform for managing the same. Any library by becoming a member of a consortium can Provides access to huge number of e-resources to their library user.

6.5 Dynamic Library Website/Library Portal: The library portal is a gateway to its electronic resources and services. The main purpose of a dynamic websites is to help user to discover high quality, relevant web based electronic information rapidly and effectively. Library portal can be used to provide information about the available e resources in the library itself. It can allow access to the Online Public Access Catalogue (OPAC) and provides direct link to the subscribed e-resources from the publisher's website. Dynamic library portal can provides facility to interaction with the library user through Ask a Librarian service. Library authority may provide links to various open access e-resources in subject wise for the use of the library user.

6.6 Cd Mirror Server Facility: To disseminate the information from magnetic sources like CDs, Floppies and DVDs CD mirror server can be used.Library non-book materials can be mounted on CD mirror server on regular basis and the users can access these materials through the Campus LAN. This facility can enhance the use of e-resources in the libraries. CD and DVD resources are very delicate and users are not allowed to take them outside the library so these resources can be copied to the CD Net Server and the connectivity to this server on the Intranet enable the users to access these magnetic sources of e-resources.

6.7 Local Area Network (Campus-Lan) Facility: Local Area Network within the campus facilitates network of the electronic information resources of the academic library with the entire academic and research activities to the academic community. To evolve user friendly environment by using the information and communication technology tools to provide quality and quick retrieval to the information sources along with the access of e-resources available in other libraries at their desktops.

6.8 User Feedback Mechanisms: The main aim of a library is to fulfil the ever increasing information needs of the library clientele. Libraries are established and maintained for users only, hence the main objective of any library should be to provide services as per their need. User feedback on managing e-resources and their better performance can be done through suggestion box, online/offline feedback form or through library website to help libraries for managing the e-resources. This will also increase users satisfaction level.

Conclusion:

To cope with the challenges of higher education system, every library has to identify and develop its own tailor-made best practices to manage the e-resources in the libraries for their ultimate use. Appropriate planning, fore thinking, objectives of the affiliating institution and its future strategies reading e-resource management should be taken into account while planning any best practice in managing e-resources. Many library patrons gripe that any best practice means involvement of a lot of resources especially in terms of money and equipment but actually it requires active participation, willingness, creativity and problem solving attitude from the library authorities. Developing best practices in managing e-resources and

analysing; revising them at a regular interval will improve the e-resource management and enhance the use of the e-resources in libraries which leads to the overall performance of the library and the whole institution.

References:

Crow, R. (2002). The Case for Institutional Repositories: A SPARC Position Paper. Washington D.C: The Scholarly Publishing & Academic Resources Coalition. Retrieved March 25, 2014, from http://www.arl.org/sparc/IR/ir.html.

D.K. Swain and K.C.Panda, Use of e-resources in libraries of Management Institutions,(New Delhi: SSDN Publishers and Distributors,2011)

Dhanavandan, S and Tamizhchelvan, M. (2012) An Evaluation of E-Resources in Academic Libraries in Tamil Nadu, Journal of Emerging Trends in Computing and Information Sciences, 3(3), 421-426.

Govindaraju, Nemani., (2010). Use and user awareness of E-resources in Andhra University library: A study. PEARL: A journal of Library and Information Science, 4(3), 183-188.

Jotwani, D. (2008) Best Practices in a Modern Library and Information Center – The Case of Central Library, IIT Bombay, Paper presented at 6th International CALIBER -2008, University of Allahabad, Allahabad, February 28-29 & March 1, 2008

Kamble, Ajay & Tikam, Madhuri V. (2010). Best practices in academic libraries, Retrieved on 1 April, 2014 from http://liscompendium.wordpress.com/article/best-practices-in-academic-libraries- 35muq6i9t1aro-3/

Kircz, J. (2005). Institutional Repositories, a New Platform in Higher Education and Research. Amsterdam: KRA Publishing Research, 20. Retrieved April 5, 2014, from http://www.surf.nl/en/publicaties/index2.php?oid=47

Prasad, V.S, Best practices in higher education for quality management. Bangalore, NAAC, 2005. Available at http://naacindia.org/circulars/best_practices_in_HE-Qlty_Mgmt.pdf

Vyas, S. D. Best practices in academic libraries in India

MAH/MUL/03051/2012
ISSN- 2319 9318

VIDYAWARTA®

www.vidyawarta.com

Special Issue

ISSN - 2319 9318

(Vol. II) Aug. 2019

International Multilingual Refereed Research Journal

Available Online

An Inter-Disciplinary NATIONAL CONFERENCE On

Role Of Higher Education In

	DR. SHRIDHAR R. DHAKULKAR	159
33)	COMPARATIVE STUDY OF LEVEL OF ADJUSTMENT OF PLAYERS AND... DR. SHRIKANT S. MAHULKAR	163
34)	HEALTH AWARENESS IN SCHOOL PROGRAMME - A NECESSITY DR. SUGANDH BAND	167
35)	INFLUENCE OF SPECIFIC TRAINING PROGRAMME ON PHYSIOLOGICAL... DR. UMESH VYAS	170
36)	YOGA AS A THERAPY DR. SANJAY DESHMUKH	175
37)	EFFECT OF POWER YOGA PRACTICE ON BIO- CHEMICAL CHANGES IN... DR. CHANDRASHEKHAR B. KADU	178
38)	RELEVANCE OF NUTRITIONAL AWARENESS IN HIGHER EDUCATION DR. CHHAYA S. GHADYALJI	181
39)	E-LEARNING PLATFORM FOR PHYSICAL EDUCATION DR. P.V. PINGLE	185
40)	EMERGING TRENDS IN EDUCATIONAL TECHNOLOGY RUPESH S. WANKHADE	189
41)	SKILL YOUTH PLAY KEY ROLE IN MAKING INDIA A SUPERPOWER DR. MAYAV MAWALE	193
42)	FLEXIBILITY AS AN ASPECT OF PHYSICAL FITNESS DR. GAJANAN N. BADHE	197
43)	HUMAN RESOURCE MANAGEMENT IN LIBRARY VIJAY R. GAIKWAD	203
44)	ROLE OF SOCIAL MEDIA IN HIGHER EDUCATION PROF. SANTOSH C. GOHOKAR	206
45)	USING E- RESOURCES IN AGRICULTURAL UNIVERSITY LIBRARIES... DR. HARSHAL R. NIMBHORKAR	211
46)	IMPACT OF PHYSICAL EDUCATION AND SPORTS IN PROMOTING SOCIAL... ULHAS V. BRAMHE	217
47)	IMPORTANCE OF PHYSICAL EDUCATION IN ONE'S LIFE DR. SUNIL S. BHOTMANGE	220
48)	IMPORTANCE OF PHYSICAL EDUCATION & SPORTS IN THE MODERN AGE YOUTH PROFF. PRADIP K. INGOLE	224

Principal
Narayanrao Raisoni Mahavidyalaya

USING E- RESOURCES IN AGRICULTURAL UNIVERSITY LIBRARIES IN MAHARASHTRA: A STUDY

DR. HARSHAL R. NIMBHORKAR
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera-Amravati

Abstract

In the state of Maharashtra there are four Agricultural university libraries which are rendering availability and accessibility of e-resources (electronics resources) to the library users (UG, PG, Faculty Staff and Research Scholars) to fulfill the objectives of the agricultural university libraries in Maharashtra State. It was conducted that the electronic information resources (e-resources), e-databases are very useful (Cera, Krishiprabha, e-granth and Krishikosh) the users of Agriculture university libraries belonging in Maharashtra state.

Key words: Agriculture, E-Resources, Users, Consortia, University

1. Preamble

University of Agricultural Sciences, Maharashtra was established on the provision of Maharashtra Council of Agricultural Education and Research (MCAER) Pune is a body, which has been constituted under section 12 of Maharashtra Agricultural Universities (Krishi Vidyapeeth) Act 1983. In exercise of the powers converted upon MCAER vide provision in the provision of sub-section 3 of section 12 of the Act common regulations for admission to various degree programmes have been formulated.

2 Initiatives

The present study is a probe into this specialized area of using, and impact of electronics resources. In library collection, it concentrates on the major steps, processes and issues to be confronted in dealing with the incorporation of electronic resources into agricultural university libraries. It is important to understand and develop sound theoretical and operational knowledge about acquisition and use of e-resources and its role of licensed online e-journal online databases and its impact on library print collection and its users. This study will certainly bridge the gap in existing studies and further make understanding deeper on the subject of use of electronics resources in a much needed manner.

3. Research Methodology

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Research methodology indicates the layout followed in a study. It explains the aims, assumptions, and scope and limitation; data collection methodology use for the study is planned and carried out as follows:

3.1 Statement of the Problem

A survey was conducted to find out whether these libraries are fully equipped to select, manage and organize in their collection for both print and non-print (electronic resources). Further opinions of faculty and research scholars are sought with regard to nature and scope of the existing collections and services rendered in their Agricultural university libraries in Maharashtra.

3.2 Agricultural University libraries in Maharashtra

The present status of four Agricultural university libraries in Maharashtra given in table 3.2.1

Sr. No	Name of Agricultural University Library	Location	Region	Establishment Year
1	Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth	Rahuri	Western Maharashtra	20th Oct.1969
2	Dr.Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth	Akola	Vidarbha Region	20th Oct.1969
3	Marathwada Krishi Vidyapeeth	Parbhani	Marathwada Region	18th May 1972
4	Dr.Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth	Dapoli	Kokan Region	18th May 1972

(MCAER Prospects2018-2019)

3.3 Objectives of the study

The study primarily aims to know about preference given electronics resources carried out in selected agricultural university libraries in Maharashtra. The ultimate purpose of e-resources is their utility. Hence, it is intended to study the use of e-resources by the library users. The specific objectives related to the present study are as follows:

1. To study the different types of electronic resources and services available in the Agriculture university libraries of Maharashtra.
2. To determine the level of satisfaction of the library users on e- resources.
3. To know the awareness of e. resources among the users of agriculture university libraries of Maharashtra.
4. To evaluate the frequency visit, time spent, purpose and utilization of e- resources by the Agricultural university library users.
5. Find out the preferences of respondents in using various categories of e-resources.

3.4 Hypotheses Formulated

For the present study the following hypotheses are proposed and tested:

H-1: "Users are not fully satisfied with the electronic information resources available in the Agricultural university libraries in Maharashtra".

H-2: "The Agriculture universities libraries in Maharashtra do not provide adequate electronic information services."

H-3: "Electronic Journals and databases are the most favored electronic resources available in the Agriculture university library"

H-4: "The ICAR improves the present quality for regular financial grants provided in Agricultural university libraries in Maharashtra"

3.5 Scope and limitation of the study

The present study covers the type of users that is students, faculty staff and research scholars pursuing their study, teaching and involving research activities, respectively up to 2009 to 2011 that is limitation of users for collection of a primary data period covering up to 2011 that is limitation by period and confined users. The investigator has conducted the survey of four Agricultural university libraries in the state of Maharashtra that is limited to geographical area.

3.6 Sample Study

The present study has taken a random sample out of the four Agricultural University libraries were total 6173 library users and distributed 400 questionnaires with a percentage of samples (6.47%) of the four agricultural university libraries in Maharashtra state.

3.7 Data Collection Methodology

Survey method has been followed to collect data owing to its inherent advantages with questionnaire as the main tool for data collection. Questionnaire was administered to all the university librarians of the four Agriculture universities. In addition a separate Users Questionnaire was devised for the U.G., P.G. students, Faculty staff and research scholars of agriculture university libraries. ate of Maharashtra

3.8 Statistical tools used for analysis and interpretation of data

Analysis and interpretation of data was done for the purposes analysed using on the basis of ANOVA (Analysis of Variance),to study whether there is any significant difference due to type of library services and also due to category of user, a statistical technique namely two ways ANOVA is applied. For the analysis purpose, data in percentage is concerned, and chi-square test was used to compare an observed group of frequencies with an expected group of frequencies.

4. Discussion and Findings

The study shows how library users gave preferences for different use of internet .At all four agriculture universities out of 400 library users 241(60.25%) download and save the information on internet .94(23.5%) library users take print and 65(16.25%) library users only

the information. It shows that maximum library users download and save the mation on internet.

In agricultural universities, following electronic resources are expected to be able. In case of four agricultural universities, the availability of the resources along with ist of electronic resources is given below: (y- Availability of resource, N- No availability source)

e 4.1 Availability of e-resources

Sr. No.	E-resources	PKV Akola	MPAV, Rahuri	DBSKAV, Dapoli	MAV Parbhani	Total of y
1	CeRa	Y	Y	Y	Y	4
2	Krishiprabha	Y	Y	N	Y	3
3	e-Granth	N	N	N	N	0
4	open j-gate	N	Y	N	Y	2
5	Uni.online thesis	Y	Y	N	Y	3
6	NDLTD	Y	N	N		1
7	e.TAD	Y	Y	N	Y	3
8	inflibnet	Y	N	N	Y	2
9	Online e-journal	Y	Y	N	Y	3
10	e-books	Y	N	N	Y	2
11	JMU	Y	Y	N	N	2
12	Indiastat.com	N	Y	N	N	1
13	Online Databases	Y	Y	Y	Y	4
	Total	10	9	2	9	

From the table we see that in the library of PKV Akola, 10 out of 13 (77%). E-esources are available. In the library of MPAV, Rahuri and MAV Parbhani, 9 out of 13 (69%) -resources are available. But in the library of DBSKAV, Dapoli, only 2 out of 13 (15%) e-esources are available. From the above table it can also be seen that the e-resources namely CeRa and Online Databases are available all the 4 universities. The e-resources namely Krishiprabha, Unionline thesis, e.TAD, online e-journal are available in 3 universities. The e-resources namely open j-gate, Inflibnet, e-books and JMU are available in 2 universities. The e-resources NDLTD and Indiastat.com are available in only one university whereas the e-resources Union online thesis is not available in any of the universities.

In the university library, CDROM data bases are also expected to be available. However, the database Agricola is not available at any agricultural university in

read the information. It shows that maximum library users download and save the information on internet.

In agricultural universities, following electronic resources are expected to be available. In case of four agricultural universities, the availability of the resources along with the list of electronic resources is given below: (y- Availability of resource, N- No availability of resource)

Table 4.1 Availability of e-resources

Sr. No.	E-resources	PKV Akola	MPAV, Rahuri	DBSKAV, Dapoli	MAV Parbhani	Total of y
1	CeRa	Y	Y	Y	Y	4
2	Krishiprabha	Y	Y	N	Y	3
3	e-Granth	N	N	N	N	0
4	open j-gate	N	Y	N	Y	2
5	Uni.online thesis	Y	Y	N	Y	3
6	NDLTD	Y	N	N		1
7	e.TAD	Y	Y	N	Y	3
8	inflibnet	Y	N	N	Y	2
9	Online e-journal	Y	Y	N	Y	3
10	e-books	Y	N	N	Y	2
11	JMU	Y	Y	N	N	2
12	Indiastat.com	N	Y	N	N	1
13	Online Databases	Y	Y	Y	Y	4
	Total	10	9	2	9	

From the table we see that in the library of PKV Akola, 10 out of 13 (77%). E-resources are available. In the library of MPAV, Rahuri and MAV Parbhani, 9 out of 13 (69%) e-resources are available. But in the library of DBSKAV, Dapoli, only 2 out of 13 (15%) e-resources are available. From the above table it can also be seen that the e-resources namely CeRa and Online Databases are available all the 4 universities. The e-resources namely Krishiprabha, Unionline thesis, e.TAD, online e-journal are available in 3 universities. The e-resources namely open j-gate, inflibnet, e-books and JMU are available in 2 universities. The e-resources NDLTD and Indiastat.com are available in only one university whereas the e-resources Union online thesis is not available in any of the universities.

In the university library, CDROM data bases are also expected to be available. However, the database Agricola is not available at any agricultural university in

Maharashtra. The database namely CB Abstract is available at PKV, Akola and MAV Parbhani only. However, the data bases FSTA and AGRIS are available only at MAV Parbhani.

* It is the information about where library users access e-resources out of 400 library users 228 (57%) library users use e-resources at computer centere,136(34%) users at university library ,216(54%) at home, 216(54%) at home,132(33%) at on Campus location, 128 (32%), at off Campus location ,72(57%) at hostel, and dept. total 72(57%) . From the above study it is clear that maximum library users use e-resources at computer centre.

* The first priority given by the library users for seeking their information total 112 (28%) for using online data bases, 97(24.25%) library users searching On –line public access Catalogue (OPAC), 64(16%) library users searching information on various reference Sources total 38 (9.5%) library users searching e-mail and 14(3.5%) library users searching internet websites. Reveals that most of the respondents are seeking information from on line data bases on the internet.

* It is information about the details of library software which is use at different university libraries .MPKV library and BSKKV library are using SLIM 21 library software, MKV library is using SLIM++ library software, and PDKV library is using LIBSYS library automation software.

* Every year there are specific budget allocated to every university library. In 2009-10 PDKV library and BSKKV library did not received any grant in the comparison MPKV library receive 13192700 rupees grant and MKV library receive 374100 rupees grant .In 2010-11 PDKV library received 254000 rupees grant,MPKV library received 9019200 rupees grant,MKV library received 822000 rupees grant and BSKKV library did not received any grant. In 2011-12 PDKV library received 12754000 rupees grants, MPKV library received 14148000 rupees grant, MKV library received 3258200 rupees grant and BSKKV library received 3500000 rupees grant from ICAR.

6. Conclusion

It has been concluded after through study that library maximum users are using library for different purposes such as for issue books, for referring journals, for Xerox facilities and other services and they are satisfied with the library services .Various e-resources namely Cera ,Krishiprabha ,e-Granth Open J gate ,Uni.online thesis ,NDLTD ,eTAD are available in Agricultural universities. And library users often use these e-resources for their academic study work PDKV library users are mostly aware about these e-resources We can obverse that satisfaction level of library service is lowest for BSKKV library Dapoli .Satisfaction level found lowest for BSKKV, Dapoli may be due to the reason that there is no full time university librarian.

References

1. MCAER Prospects (2018) Maharashtra Council for Agriculture Education and Research Pune Available at http//:www.mcaer.org [Accessed 12-9-2018]
2. Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth (2018) Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth Rahuri Available at htpp://www.mah.nic.in [Accessed 11-9-2018]
3. Dr Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth (2018) Dr Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth Akola Available at htpp://www.pdkv.mah.nic.in [Accessed 12-9-2018]
4. Dr Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth (2018) Dr Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth Dapoli Avalable at htpp://www.dbskkv.org [Accessed 10-9-2018]
5. Marathwada Agriculture University (2018) Marathwada Agriculture University ParbhaniAvailable at htpp://www.mkv2mah.nic.in [Accessed 11-9-2018]
6. Nimbhorkar H. (2016)'Use of Electronic resources in Agricultural university libraries in Maharsashtra: A study PhD thesis submitted in Sant Gadge baba Amravati University Amravati.
7. Rokade S.M.and Rajlakshmi 'Evaluation of Electronics Information Services in Agricultural University Libraries in Maharashtra: A Study 4th International convention CALIBER Gulbarga 2-4 February, 2006.

Higher Education in Making India Superpower

21st August 2019



Organized By

Department of Physical Education and I.Q.A.C.

S. N. Arts, And U. K. Commerce College, Akola,
Shri. Ganesh Kala Mahavidyalaya, Kumbhari, Akola
Saraswati Kala Mahavidyalaya, Dahihanda,
Tq. Akola District Akola, Maharashtra

Collaboration With
Physical Education Foundation of India

Principal
Narayanrao R... Mahavidyala...

Impact Factor – 6.625 **E-ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March 2021

Special Issue 261(A)

Use of ICT in Teaching - Learning
Opportunities and Challenges

Guest Editor of the Issue :-
Dr. P. D. Hudekar
Act. Principal
Vidarbha Mahavidyalaya, Buldana
Dist – Buldana [M.S.] INDIA

Executive Editor of the Issue :-
Prof. Sangita K. Pawar
Vidarbha Mahavidyalaya, Buldana

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Co Editors of the Issue :-
Prof. Vaibhao G. Vaghmare
Prof. M. T. Jamaiwar
Prof. S. H. Dandade
Prof. N. D. Raut
Prof. L. F. Shirale
Prof. S. V. Kalne
Shri. S. G. Pande

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanraj@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

Principal
Narayan... ...ahavidyalaya

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	Information Communication and Technology (ICT) Integration in Teacher Education: A Necessity for Sustainable Educational Growth	Dr.G.V. Sreenivasamurthy	13
2	ICT in Sports and Physical Education	Dr. Sangita Khadse	20
3	Need of Innovations in ICT Teaching Learning Process	Dr. Hari Kale	22
4	E-Resources, Concepts and Use : An Overview	Dr. Harshal Nimbhorkar	26
5	Role of ICT in Home Economics : Enhancement in Teaching and Learning	Ms. Pratibha S. Katkar	30
6	Emphasis on ICT / Digital Technology in National Education Policy 2020	Dr. Durga Pande	34
7	Application of ICT in Academic Library : An Overview	Dr. Pranali Pete	40
8	Use of ICT in World of Sports : Development in Physical Education	Dr. Balasaheb Paul	45
9	Need of Library Automation in Current Era: A Study	Prof. Swapnil Dandade	50
10	Use of Internet in Language Acquisition	Pundlik Nalinde	53
11	Role of Information and Communication Technologies (ICT) in Physical Education and Sports	Prof. Sunil B. Chordiya	57
12	Use of RFID Technology In Libraries	Dr. Prashant Pagade	61
13	Use of E-Learning in Teacher Education Institutions	Mrs. Sharmila Kerkar	64
14	Usage of ICT Based Library Services.	Dr. Dattatray Dhumale	70
15	ICT Enabled English Language Teaching-Learning in Rural India	Dr. Archana Deshmukh	73
16	A Study of Various Parameters of ICT and Teaching Aids used iin the Higher Education in Gadchiroli District	Ganesh Dandekar	80
17	Impact of ICT in Higher Education in India	Dr. Pawan Naik	85
18	Role of ICT in Quality Enhancement in Higher Education in India	Dr. Archana Patki (Kahale)	90
19	IT and Teaching	Dr. Mahesh Joshi	95
20	Role and Significance of ICT in Rural Higher Education	Dr. Dadarao Upase	97
21	Impact and Suitablity of Use of Information Technology with Reference to Physical Education in the Context of Pandemic of Covid-19	Dr. Pratap Chauhan	100
22	Suitability of ICT in Teaching Learning Process	Dr. Bhavesh Bhuptani	104
23	Innovations in Physical Education and Sports: Technological Tools Developing Sports	Dr. Devendra Gawande	107
24	Information and Communication Technology Uses in Teaching - Learning: with Respect to Opportunities and Challenges	Dr. Umesh Rathi	111
25	Technology in Physical Education and Sports	Sanjay Kale	116
26	Use of IT in Education	Dr. D. S. Wankhade	120
27	Social Media as Modern Tool	Dr. R. G. Suralkar	123
28	Expressionistic Technique in Tennessee Williams' 'The Glass Menagerie'	B. W. Somatkar	126
29	Use of ICT in Developing Academic Libraries	Dr. Sanjay Shenmare	129

Principal

"RESEARCH JOURNEY" International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SIIF) - 6.625/120191 | March 2021
Special Issue : 261 (A) : Use of ICT in Teaching - Learning
Peer Reviewed Journal

E-Resources, Concepts and Use : An Overview

Dr. Harshal Nimbhorkar

Abstract:

Information and communication technology (ICT) has thrown a new challenge to the libraries. The technology has shown a great impact on the services of the libraries. Libraries use ICT for better services and satisfying diverse user needs. Libraries have transformed into digital and virtual libraries where books, journals, and magazines have changed into e-books, e-journals etc.This has increased the global dissemination of information. Electronic resources (e-resources) are easily accessible in the remote areas. The e-resources solve storage problems and control the flood of information. Print sources are being digitised. There is a great need to study the use of e-resources and investigate the factors that are a hindrance to their use, introduction of various types of e-resources, and databases using agricultural libraries.

Keywords: Internet, e-resources, CDROM, e-journals, e-books, search engines, library portals, agriculture databases.

1 Introduction:

The internet provides access to unlimited sources of information and search engines are continuously being advanced to provide efficient ways to help users to find what they want. The internet eases and increases access to a large amount of data, saves time and money, and provides an opportunity to consult several experts with a single request (via discussion groups), and more independence from specific times and places for information seeking. Technology has penetrated all areas of life. Libraries use information and communication technology (ICT) for better services and satisfying diverse users' needs. Libraries have transformed into digital and virtual libraries where books, journals, and magazines have changed into e-books, e-journals etc. This has increased the global dissemination of information. Electronic resources (e-resources) are easily accessible in the remote areas.

1.1 Electronic Resource Concepts

An electronic resource is defined as a resource which requires computer access or any electronic product that delivers a collection of data, be it text referring to full text bases, electronic journals, image collections, other multimedia products and numerical, graphical or time based, as a Commercially available title that has been published with an aim to being marketed. These may be delivered on CD ROM, on tape, via internet and so on. Over the past few years, a numbers of techniques and related standards have been developed which allow documents to be created and distributed in electric form. Hence to cope with the present situation, libraries are shifting towards new media, namely electronic resources for their collection developments that the demands of users are better fulfilled. The e-resources on magnetic and optical media have a vast impact on the collections of university libraries. These are more useful due to inherent capabilities for manipulation and searching, providing information access is cheaper to acquiring information resources, savings in storage and maintenance etc. and sometimes the electronic form is the only alternative.

1.2 Types of E-Resources

The e-resources are basically dived in two major types are:

1.2.1 Online e-Resources, which may include:

- e-Journal (Full Text & Bibliographic)
- e-Books
- On-line Databases
- Bibliographic Databases
- Numeric and statistical databases
- Web sites
- Consortium based e-Resources

1.2.2 Off line e-Resources may include:

- CD-ROM
- Diskettes
- Other portable computer databases (Bajpal R.P.et.al)

1.3 Meaning Of E-Resources

World Wide Web (WWW) facilitates the delivery of electronic content to the libraries and the desktops of its users. Libraries began acquiring the new online resources with few ideas of where this revolution would be leading. Procedures were developed to fit the small scale of available materials at the time, and then hastily underwent revisions. Online journals were at first merely adjuncts to their print counterparts.

1.4 Characteristics Of E-Resources

- Timely and Instant access to nascent info
- any time any where access (24x7)
- Saves lot of time in terms of publishing, dissemination, usage.
- Unlimited simultaneous use
- Downloading, saving, reading, forwarding and many more.
- It can be edited as per the user requirement
- Up-datedness (Veeranjaneyulu K.et.al)

1.5 Definitions Of Electronic Resources

"The phrase 'electronic resources', has broadly been defined as information accessed by a computer, may be useful as bibliographic guides to potential sources but, as of yet, they infrequently appear as cited references in their own right". (Graham S.R.2003)

IFLA ISBD , "An electronic resource consists of materials that are computer-controlled, including materials that required the use of a peripheral (e.g. a CD-ROM player) attached to a computer- the items may or may not be used in the interactive mode." (http//:www.ifla.org)

Online Dictionary for Library & Information Science (ODLIS) an "electronic resource is a material consisting of data and/or computer program(s) encoded for reading and manipulation by a computer, by the use of a peripheral device directly connected to the computer, such as a CD-ROM drive, or remotely via a network, such as the Internet." (http//:www.abc-clio.com/ODLIS/odlis_c)

1.6 Need For E-Resources

The driving force of present day society is information. The information seekers mainly depend on the information sources which provide instant access to current information for various

Principal
Narayanrao ... Mahavidyalaya
Badnera

lications. With the rapid advancements the user expectations are changing in the same portion. The field of publishing aims to publish the information in the format as desired by the l-users. Reputed publishers located around the globe have switched over from conventional ishing to electronic publishing. In electronic publishing the delivery of information is instant and chentic. Users can browse the resources from anywhere any time i.e., 24 X 7 accesses.

Advantages Of E-Resources

The reasons for actually embarking on the purchasing of electronic resources are nerally accepted because of the ease of usability, readability, affordability and accessibility. e following are the advantages of e-resources over the print media

ccessible – can be accessed from any computer on campus and usually any computer off mpus, any time of the day or night, so there is no need to make a trip to the library

asily searchable - each journal can be searched quick and easy often through the complete full xt of articles and via online index

peed - Articles/issues appear online before printed version is available

nteractive - Rapid turnaround time means articles can be read, commented by the readers, mended quickly and greater feedback thru the web

inks - Hypertext format should be exploited and links to related articles, information on other eb sites, stable URLs for individual articles and email alerts when latest issue loaded.

unctionality: E-resource will allow the user to approach the publications to analyze its content n new ways by click of the mouse on search mode.

Content: The e- resources can contain a vast amount of information, but more importantly the material can consist of mixed media i.e. images, video, audio animation which could not be replaced in print.

1.8 Web OPAC

The development of ICT has influenced the implementation of OPAC available through internet. By searching and browsing online library catalogue, the end users can directly order or transmit request directly to the Web OPAC available at different University Libraries.

1.9 CD-ROM Databases

CDROM databases provide mainly abstracting and indexing services. Those are the most cost effective tools for information storage and retrieval. Information can be stored in different formats such as text, audio, video etc. Searches can be made through author, subject, Journal Title, Publisher etc. Boolean operators like AND, OR, NOT can be used to refine searches. Those CDROM databases not only minimize subscription cost but also facilitate quick and speedy search/Some of the important CDROM databases of Agriculture are AGRIS, AGRICOLA, CAB abstracts etc

1.10 e-ShodhSindhu

e-ShodhSindhu merging three consortia intatiatives, namely UGC INFONET Digital Library Consortium NLIST and INDEST-AICTE Consortium. The e-ShodhSindhu will continue to provide current as well as archival access to more than 15,000 core and prereviwed journal and a number of bibliographic, citation and factual databases in different disciplines from a large no of publishers and aggregators to its

Principal

members Institutions. Universities and colleges that are cover under 12 (B)and 2(f)Sections of the UGC Act .The main objectives provide access to subscription based scholarly information e-books and e journals to all educational institutions. (www.inflibnet.ac.in)

Conclusions:-

The role of information and communication technology (ICT) and internet technology through library users can access various types of electronic resources accessed available on the web.such as e-journals, e-books,e-databases etc.. The major advantages of e-resources in library and information centers to provide better efficient and effectively information to end user and satisfied Dr.S.R.Ranganathans fourth law of library science which is save the time of library user.

References:-

1. Graham S.R.(2003) *'Historians and electronics resources: a citation analysis'* JAHC vol.3 http//:www.crl.du.ac.in/ical09/papers/index files/ical-85_83_195_2_RV.pdf accessed on 25.08.2014.
   http://www.ifla.org. accessed on 23.08.2014
2. Mete M.et al.(2012).State Level Conference on *'Electronics Services in Libraries'* organized by shri shivaji arts and commerce college Amravati in collaboration with vidrabha library association (VLA),25th feb.2012.P.109.
3. Online Dictionary for Library and Information Science available on http//:www.abc-clio.com/ODLIS/odlis_c accessed on 20.08.2014
4. Veeranjaneyulu K et.al.(2012) *'Library Services In the knowledge Web'* New Delhi, New India Publication Agency,Pp.43-46
5. http//:www.inflibnet.ac.in accessed on 10/02/2021

LIBRARY SCHOLAR

International Peer-Reviewed/ Refereed Journal of Library Science

www.researchhub.org.in

ABOUT JOURNAL

"Library Scholar" is an online International Peer-Reviewed/Refereed Journal of Library Science with ISSN which intends quality research in the field of Higher Education. The Journal is published twice in a year in the month of April & October respectively. Being an international journal of Library Science, it focuses on the Information Science related issues which badly require scholarly platform to be addressed in India and abroad. The journal follows all research related ethics and does not compromise the quality of research at any cost. Research friendly mechanism has been set up and all research papers are sent to the UGC recognized centers for checking the plagiarism. The editorial board scrutinizes all research papers meticulously and papers having less than 15 % plagiarism get qualified to be published in the journal after peer-review.

ABOUT PUBLISHER

Skylark International Publication is an independent registered entity that owns its own database namely **Research Hub**. It publishes four International Peer Reviewed/Refereed Journals- 1. Research Hub 2. Science Scholar 3. Library Scholar and 4. Commerce Scholar. All these journals are hosted at [redacted].

PLAGIARISM POLICY & ETHICS

Skylark International Publication has framed research ethics based on the guidelines issued by the state universities and UGC with regard to research. Before being published, all research papers have to undergo the research ethics and the Research Publication Policy setup by the Skylark International Publication. Skylark International Publication is committed to enhance the quality in the field of research. Hence, As per the Research Publication Policy, plagiarism of all research papers is checked with the help of Urkund and Turnitin Software only. Research papers with less than 15 % plagiarism are selected for publication in the journal. Research Papers having more than 15 % plagiarism are sent back to the authors for necessary modification and correction. All rights with regard to accept or reject the research paper are reserved with the publisher.

PEER-REVIEW POLICY

After checking the plagiarism, all qualified research papers are sent to the Peer Review Committee for reviewing the research paper. Peer Review Committee may suggest changes or major modifications, if found necessary.

Principal
Vidyalaya

1. Research paper must be typed in the following format only
   1) File : MS Word Only
   2) Font : Times New Roman
   3) Font Size : Title-16, Sub-Title – 14, Text – 12
2. Research Paper must contain the following elements
   1) Title of the research Paper
   2) Details of an Author (Name, Designation, College Name, Email etc
   3) Abstract with 200 words & Key-Words
   4) Introduction
   5) Body of Research Paper
   6) Conclusion
   7) References (Word limit for entire research paper is 1500-3000 words)
3. An Author should send his/her Research Paper on the Email id given below [redacted]
4. While sending research paper, an author should write his/her name and mobile no in the email and attach the word file of Paper along with Payment receipt.
5. An author can download Research Paper, cover page, content page, certificate etc. from the website- [redacted]
6. Research papers will be checked using UGC recognized Urkund or Turnitin software for plagiarism check.

THEME FOR RESEARCH PAPER

An author can choose any topic from the library science / information science

LAST DATE FOR PAPER SUBMISSION

Last date for paper submission is 28th March 2021

BANK DETAILS FOR FEE-DEPOSIT

Account No.	: 60376076483
Account Name	: SSSSS
Bank	: Bank of Maharashtra
Branch	: Nandanvan, Nagpur
IFSC	: MAHB0000665

Paper Publication Fee– 400/-

CONTACT

Dr. Ramanik Lengure
Editor
Library Scholar
International Refereed Journal
Mobile : 9420869043

Dr. A. G. Doifode
Editor
Library Scholar
International Refereed Journal
Mobile : 7588776907

LIBRARY SCHOLAR
International Peer-Reviewed/ Refereed Journal of Library Science
Website : www.researchhub.org.in
Email : libraryscholar21@gmail.com

SKYLARK INTERNATIONAL PUBLICATION
(In Association with Research Hub)
16, Mitranagar, Manewada
Nagpur-27
Website : www.researchhub.org.in

Volume - 1 (2021)
Issue - 1 (August)
LIBRARY SCHOLAR
International Peer-Reviewed Journal of Library Science
ISSN 2583-2549

USAGES OF E-RESOURCES IN AGRICULTURAL UNIVERSITY LIBRARIES IN MAHARASHTRA: A STUDY

Dr. Harshal R. Nimbhorkar
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera-Amravati

Abstract : *In the state of Maharashtra there are four Agricultural university libraries which are rendering availability and accessibility of e-resources (electronics resources) to the library users (UG, PG, Faculty Staff and Research Scholars) to fulfill the objectives of the agricultural university libraries in Maharashtra State. It was conducted that the electronic information resources (e-resources),e-databases are very useful (Cera, Krishiprabha, e-granth and Krishikosh) the users of Agriculture university libraries belonging in Maharashtra state.*

Key words: Agriculture, E-Resources, Users, Consortia, University

Preamble :

University of Agricultural Sciences, Maharashtra was established on the provision of Maharashtra Council of Agricultural Education and Research (MCAER) Pune is a body, which has been constituted under section 12 of Maharashtra Agricultural Universities (Krishi Vidyapeeth) Act 1983. In exercise of the powers converted upon MCAER vide provision in the provision of sub-section 3 of section 12 of the Act common regulations for admission to various degree programmes have been formulated.

Initiatives :

The present study is a probe into this specialized area of using, and impact of electronics resources. In library collection, it concentrates on the major steps, processes and issues to be confronted in dealing with the incorporation of electronic resources into agricultural university libraries. It is important to understand and develop sound theoretical and operational knowledge about acquisition and use of e-resources and its role of licensed online e-journal online databases and its impact on library print collection and its users. This study will certainly bridge the gap in existing studies and further make understanding deeper on the subject of use of electronics resources in a much needed manner.

Research Methodology :

Research methodology indicates the layout followed in a study. It explains the aims, assumptions, and scope and limitation; data collection methodology use for the study is planned and carried out as follows:

Statement of the Problem :

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

A survey was conducted to find out whether these libraries are fully equipped to select, manage and organize in their collection for both print and non print (electronic resources). Further opinions of faculty and research scholars are sought with regard to nature and scope of the existing collections and services rendered in their Agricultural university libraries in Maharashtra.

Agricultural University libraries in Maharashtra :

The present status of four Agricultural university libraries in Maharashtra given in table 3.2.1

Sr. No	Name of Agricultural University Library	Location	Region	Establishment Year
1	Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth	Rahuri	Western Maharashtra	20th Oct.1969
2	Dr.Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth	Akola	Vidarbha Region	20th Oct.1969
3	Marathwada Krishi Vidyapeeth	Parbhani	Marathwada Region	18th May 1972
4	Dr.Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth	Dapoli	Kokan Region	18th May 1972

(MCAER Prospects2012-2013)

Objectives of the study :

The study primarily aims to know about preference given electronics resources carried out in selected agricultural university libraries in Maharashtra. The ultimate purpose of e-resources is their utility. Hence, it is intended to study the use of e-resources by the library users. The specific objectives related to the present study are as follows:

1. To study the different types of electronic resources and services available in the Agriculture university libraries of Maharashtra.
2. To determine the level of satisfaction of the library users on e- resources.
3. To know the awareness of e. resources among the users of agriculture university libraries of Maharashtra.
4. To evaluate the frequency visit, time spent, purpose and utilization of e- resources by the Agricultural university library users.
5. Find out the preferences of respondents in using various categories of e-resources.

Hypotheses Formulated :

For the present study the following hypotheses are proposed and tested:

H-1: "Users are not fully satisfied with the electronic information resources available in the Agricultural university libraries in Maharashtra".

H-2: "The Agriculture universities libraries in Maharashtra do not provide adequate electronic information services."

H-3: "Electronic Journals and databases are the most favored electronic resources available in the Agriculture university library"

H-4: "The ICAR improves the present quality for regular financial grants provided in Agricultural university libraries in Maharashtra"

Scope and limitation of the study :

The present study covers the type of users that is students, faculty staff and research scholars pursuing their study, teaching and involving research activities, respectively up to 2009 to 2011 that is limitation of users for collection of a primary data period covering up to 2011 that is limitation by period and confined users. The investigator has conducted the survey of four Agricultural university libraries in the state of Maharashtra that is limited to geographical area.

Sample Study :

The present study has taken a random sample out of the four Agricultural university libraries were total 6173 library users and distributed 400 questionnaires with a percentage of samples (6.47%) of the four agricultural university libraries in Maharashtra state.

Data Collection Methodology :

Survey method has been followed to collect data owing to its inherent advantages with questionnaire as the main tool for data collection. Questionnaire was administered to all the university librarians of the four Agriculture universities. In addition a separate Users Questionnaire was devised for the U.G., P.G. students, Faculty staff and research scholars of agriculture university libraries. ate of Maharashtra

Statistical tools used for analysis and interpretation of data :

Analysis and interpretation of data was done for the purposes analyzed using on the basis of ANOVA (Analysis of Variance),to study whether there is any significant difference due to type of library services and also due to category of user, a statistical technique namely two ways ANOVA is applied. For the analysis purpose, data in percentage is concerned, and chi-square test was used to compare an observed group of frequencies with an expected group of frequencies.

Discussion and Findings :

The study shows how library users gave preferences for different use of internet .At all four agriculture universities out of 400 library users 241(60.25%) download and save the information on internet .94(23.5%) library users take print and 65(16.25%) library users only read the information. It shows that maximum library users download and save the information on internet. In agricultural universities, following electronic resources are expected to be available. In case of four agricultural universities, the availability of the resources along with the list of electronic resources is given below: (y- Availability of resources, N- No availability of resources)

Table 4.1 Availability of e-resources

Sr. No.	E-resources	PKV Akola	MPAV, Rahuri	DBSKAV, Dapoli	MAV Parbhani	Total of y
1	CeRa	Y	Y	Y	Y	4
2	Krishiprabha	Y	Y	N	Y	3
3	e-Granth	N	N	N	N	0
4	open j-gate	N	Y	N	Y	2
5	Uni.online thesis	Y	Y	N	Y	3
6	NDLTD	Y	N	N		1
7	e.TAD	Y	Y	N	Y	3
8	inflibnet	Y	N	N	Y	2
9	Online e-journal	Y	Y	N	Y	3
10	e-books	Y	N	N	Y	2
11	JMU	Y	Y	N	N	2
12	Indiastat.com	N	Y	N	N	1
13	Online Databases	Y	Y	Y	Y	4
	Total	10	9	2	9	

From the table we see that in the library of PKV Akola, 10 out of 13 (77%). E-resources are available. In the library of MPAV, Rahuri and MAV Parbhani, 9 out of 13 (69%) e-resources are available. But in the library of DBSKAV, Dapoli, only 2 out of 13 (15%) e-resources are available. From the above table it can also be seen that the e-resources namely CeRa and Online Databases are available all the 4 universities. The e-resources namely Krishiprabha, Unionline thesis, e.TAD, online e-journal are available in 3 universities. The e-resources namely open j-gate, inflibnet, e-books and JMU are available in 2 universities. The e-resources NDLTD and Indiastat.com are available in only one university whereas the e-resources Union online thesis is not available in any of the universities. In the university library, CDROM data bases are also expected to be available. However, the database Agricola is not available at any agricultural university in Maharashtra. The database namely CB Abstract is available at PKV, Akola and MAV Parbhani only. However, the data bases FSTA and AGRIS are available only at MAV Parbhani.

- It is the information about where library users access e-resources out of 400 library users 228 (57%) library users use e-resources at computer centere,136(34%) users at university library ,216(54%) at home, 216(54%) at home,132(33%) at on Campus location, 128 (32%), at off Campus location ,72(57%) at hostel, and dept. total 72(57%). From the above study it is clear that maximum library users use e-resources at computer centre.
- The first priority given by the library users for seeking their information total 112 (28%) for using online data bases, 97(24.25%) library users searching On –line public access Catalogue (OPAC), 64(16%) library users searching information on

various reference Sources total 38 (9.5%) library users searching e-mail and 14(3.5%) library users searching internet websites. Reveals that most of the respondents are seeking information from on line data bases on the internet.

- It is information about the details of library software which is use at different university libraries .MPKV library and BSKKV library are using SLIM 21 library software, MKV library is using SLIM++ library software, and PDKV library is using LIBSYS library automation software.
- Every year there are specific budget allocated to every university library. In 2009-10 PDKV library and BSKKV library did not received any grant in the comparison MPKV library receive 13192700 rupees grant and MKV library receive 374100 rupees grant .In 2010-11 PDKV library received 254000 rupees grant,MPKV library received 9019200 rupees grant,MKV library received 822000 rupees grant and BSKKV library did not received any grant. In 2011-12 PDKV library received 12754000 rupees grants, MPKV library received 14148000 rupees grant, MKV library received 3258200 rupees grant and BSKKV library received 3500000 rupees grant from ICAR.

Conclusion :

It has been concluded after through study that library maximum users are using library for different purposes such as for issue books, for referring journals, for Xerox facilities and other services and they are satisfied with the library services .Various e-resources namely Ceru ,Krishiprabha ,e-Granth Open J gate ,Uni.online thesis ,NDLTD ,eTAD are available in Agricultural universities. And library users often use these e-resources for their academic study work PDKV library users are mostly aware about these e-resources We can obverse that satisfaction level of library service is lowest for BSKKV library Dapoli .Satisfaction level found lowest for BSKKV, Dapoli may be due to the reason that there is no full time university librarian.

References

- MCAER Prospects (2016) Maharashtra Council for Agriculture Education and Research Pune Available at http//:www.mcaer.org [Accessed 12-9-2016]
- Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth (2009) Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth Rahuri Available at htpp://www.mah.nic.in [Accessed 11-9-2016]
- Dr Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth (2009) Dr Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth Akola Available at htpp://www.pdkv.mah.nic.in [Accessed 12-9-2016]
- Dr Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth (2009) Dr Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth Dapoli Avalable at htpp://www.dbskkv.org [Accessed 11-02-2016]
- Marathwada Agriculture University (2009) Marathwada Agriculture University ParbhaniAvailable at htpp://www.mkv2mah.nic.in [Accessed 11-2-2021]
- Rokade S.M.and Rajlakshmi 'Evaluation of Electronics Information Services in Agricultural University Librariesi n Maharashtra:A Study 4th International convention CALIBER Gulbarga 2-4 February,2006.

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - X Issue - III July - September - 2021

ENGLISH PART - I

Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2019 - 6.399

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

S. No.	Title & Author	Page No.
13	Impact of Covid on Agriculture Sector in India **Pankaj M. Raut** **Dr. Harshal R.Nimbhorkar**	74-80
14	Covid-19 and Migrant Labors **Swaty Sharma**	81-86
15	Social Impacts of COVID -19 in India **Aparana Vishvanath Kalyankar**	87-90
16	Impact of COVID-19 on Agriculture Sector in India **Vasundara G. G.**	91-96
17	Impact of Pandemic Covid-19 on Educational Learning System **Dr. Harshal R. Nimbhorkar**	97-100
18	Impact of COVID- 19 : on Indian Sugar Industry **Dr. Rajendra Tulshidas Ahire**	101-109
19	New Needs Forming the New Social Structure during Covid-19 Pandemic **Mr. Suhas Netaji Morey**	110-114
20	Changing perspective of Agriculture after COVID-19 **Manoj Baburao Giram**	115-119
21	Social, Political and Eoconomic Impact of COVID-19 **Mr. Nirmal E. S.**	120-125
22	Political and Social Concerns towards Nation Building in the Indian Context **Mrs. Aparna Rajhans**	126-129
23	Existence of Socio-Economic Problems during Covid-19 Pandemic **Dr. G. O. Jondhalekar**	130-134
24	Rural Employment Opportunity during Covid-19 with the Lens of MGNREGA **Inderjit Kaur** **Dr. Javeed Ahmad Bhat**	135-140
25	Environmental and Social Impacts on Fast Fashion **Cheena Gupta**	141-144

Impact of pandemic covid-19 on Educational learning system

Dr.HarshalR.Nimbhorkar
Librarian
NarayanraoRanaMahavidyalayaBadnera- Amravati

Abstract

The impact of pandemic COVID sector of India as well as world are badly affected by this .It has enforced the worldwide lockdown creating very bad effect on the students of schools colleges and all educational activities halted in India the outbreak of us that changed is invertible .It has worked as a catalyst for the educational institution who grow and fore platform Technologies which have not been used before .The education sector has been writing to server the Christmas with a different approach and digitization the challenges to wash away the threat of the pandemic .This paper highlight some shameless education in the country .Both the positive and negative impact of covid-19 some truthful suggestion are also pointed to carry out educational activities during the pandemic situation

keywords: Impacts,COVID-19 ,Educational system , Students.

1. Introduction

The pending covid-19 has spread over whole world and compiled the human society to maintain social distancing.It has significantly disputed the education sector which is a critical determined of a country's economic future. February 11 2020, the World Health Organization and official name of the virus as COVID acronym for coronavirus disease 2019 .It was first identified in Wuhan China 2020, W H O declared covid-19 as a pandemic on 2020 the first case of the covid-19 reported on 30 January 2020 in the state of Kerala and gifted had a travel history from Wuhan China (Wikipedia) the first date due to covid-19 was describe in India on March 12 2020 according to the UNESCO report it had affected more than 90% of total world's student population during mid April 2020 feature is now reduced to nearly 67% during June 2020 outbreak of covid-19 has impact more than 120 crores student and youth across the planet in



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalay
Badnera

India more than 32 crores of student have been affected by the various restrictions and the national poet lockdown for covid-19 as per the UNESCO report about to14 crores or primary and 13crores of secondary students are affected which are two mostly affected levels in India.The lockdown caused due to endemic has force any educational institutions to cancel their classes examination internships etc. and to choose online modes. Initially, the educators and students where quite confused and didn't understand how to cope up with the situation of this sudden crisis that compiled closure of the educational activities. But later on all realized that the love tone has taught so many lessons to manage with the emergence of such endemic has created many challenges and opportunities for the educational institution to strengthentheir infrastructure .The lockdown has given them a ray of hope for teachers and students to continue their educational activities through online.The Teachers assigned work to students via internet, delivered lectures video conferencing using different apps like Google meet, zoom, Facebook platform, YouTube and Skype etc.

There are Whats App groups of guardians teachers for students and parents for technological knowledge and effective communication through which they are always in touch share their difficulty through this e-medium.In a nation like China that practices a considerably more centralizationsystem, a change to digital learning arrangements. The same is the situation that happens with India where not every student is well equipped with the high-speed internet and digital gadgets and are along these lines of suffer. Numerous advanced educational institutions in India are not also equipped with digital facilities right now to cope up with sudden change from traditional education set up to the online education system.

2. Positive Impact of COVID-19 on Education System

Through the outburst of COVID-19 has created many negative impacts on education institution of India have accepted the challenges and trying their best to provide seamless support services to the students during the pandemic. Indian education system got the opportunity for transformation from traditional system to a new era. The following points may be considered as the positive impacts.

2.1. Move towards Blended Learning: COVID-19 has accelerated adoption of digital technologies to deliver education. Academic institutions moved towardsblended mode of

India more than 32 crores of student have been affected by the various restrictions and the national poet lockdown for covid-19 as per the UNESCO report about to14 crores or primary and 13crores of secondary students are affected which are two mostly affected levels in India.The lockdown caused due to endemic has force any educational institutions to cancel their classes examination internships etc. and to choose online modes. Initially, the educators and students where quite confused and didn't understand how to cope up with the situation of this sudden crisis that compiled closure of the educational activities. But later on all realized that the love tone has taught so many lessons to manage with the emergence of such endemic has created many challenges and opportunities for the educational institution to strengthentheir infrastructure .The lockdown has given them a ray of hope for teachers and students to continue their educational activities through online.The Teachers assigned work to students via internet, delivered lectures video conferencing using different apps like Google meet, zoom, Facebook platform, YouTube and Skype etc.

There are Whats App groups of guardians teachers for students and parents for technological knowledge and effective communication through which they are always in touch share their difficulty through this e-medium.In a nation like China that practices a considerably more centralizationsystem, a change to digital learning arrangements. The same is the situation that happens with India where not every student is well equipped with the high-speed internet and digital gadgets and are along these lines of suffer. Numerous advanced educational institutions in India are not also equipped with digital facilities right now to cope up with sudden change from traditional education set up to the online education system.

2. Positive Impact of COVID-19 on Education System

Through the outburst of COVID-19 has created many negative impacts on education institution of India have accepted the challenges and trying their best to provide seamless support services to the students during the pandemic. Indian education system got the opportunity for transformation from traditional system to a new era. The following points may be considered as the positive impacts.

2.1. Move towards Blended Learning: COVID-19 has accelerated adoption of digital technologies to deliver education. Academic institutions moved towardsblended mode of

earning .It encouraged all teachers and students to become more technology savvy. New ways of delivery and assessments of learning opened immense opportunities for a major transformation n the area of curriculum development and pedagogy. It also gives access to large pools of earners at a time.

.2 . Increase in use of Learning Management System: Useof learning management system by ducational institution becomes a great demand. It opened a great opportunity for the companies hose have been developing and strengthening learning management systems for useeducational nstitutions (Misra, 2020)

2.3. Rise of Online Meetings: The pandemic has created a massive rise in teleconferencing, virtual meetings, webinars, and e-conference opportunities.

2.4. Enhanced Digital Literacy: The pandemic situations like induced people to learn and use digital technology and resulted in increasing the digital literacy.

2.5. Access to Digital World: Since manystudents have limited or no internet access and many students may not be able to afford computer, laptop or supporting mobile phones in their homes, online teaching –learning may create a digital divide among students.

2.6. Enhance the use of soft copy of learning Material: In lockdown situation students were not able to collect the hard copies of study materials and hence most of the students used of soft copies materials for reference.

2.7. Access to Global Education: The pandemic has significantly disrupted the higher education sector. A large number of Indian students who are enrolled in many Universities abroad, especially in worst affected countries are now leaving those countries and if the situation persists, in the long run, a there will be a significant decline in the demand for international higher education.

2.8. Better time Management: Students are able to manage their time more efficiently in online education during pandemic situations.

2.9. Accessed on line e-Resources: In pandemic situations students are accessed online resources through Internet like e-book, e-journal, e-references sources for eg. Wikipedia, e-databases etc.

2.10. Worldwide exposure: Educators and learners are getting opportunities to interact with peers from around the world .Learners adapted to an international community.

Conclusion

COVID-19 outbreak has impacted massively to the education sector. Through it has created many challenges, various opportunities are also evolved. Itestablished that the Corona virus pandemic has adverse effects on education.COVID-19 has major effects on school, colleges Characteristics, including research, academic programmes, staff, professional development and job in the academic sector etc. These effects were felt by both educational institutions, educators, students and parents and other stakeholders in educations. The students who aren't privileged like the other will suffer due to the present choice of digital platforms. But Universities and government of India are relentlessly trying to come up with a solution to resolve this problem .The priority should be to utilize digital technology to create an advantageous position for millions of young students in India.

References

1. **Alvarez P.(2020) National emergency: Trump declares coronavirus emergency-CNN Polities accessed from https://edition.cnn.com/on August2,2021/politics/states-coronavirus-fema/index.html**
2. **Jena (2020) A: study abroad life, how COVID -19 will affect the Indian education system Accessed on August 3,2021 from https://www.studyabroadlife.org/how-covid-19 will affects-the Indian-education-system/**
3. **Misra K.(2020) COVID-19: 4 negative impacts and 4 opportunities created for education.**
4. **Pravat K.J.(2020) Challenges and opportunities created by COVID-19 FOR ODL:A case study of IGNAU. *International Journal for Innovative Research in Multidisciplinary vol-6, Issue-5,Pp.217-222***

Impact of COVID on Agriculture Sector in India

Pankaj M. Raut,
M.L.I.Sc.,M.Phil.
Librarian,
Shri Shivaji College of Agril-Biotechnology,
Amravati.

Dr. Harshal R.Nimbhorkar
M.L.I.Sc.,M.Phil.,Ph.D.
Librarian,
Narayanrao Rana Mahavidhyalaya,
Badnera.

Abstract

The COVID-19 pandemic is the greatest global humanitarian challenge the world has faced since World War II. The virus has spread widely, and the number of cases is rising daily as governments work to slow its spread. India had moved swiftly, implementing a proactive, nationwide, 21-day lockdown, with the goal of flattening the curve and using the time to plan and resource responses adequately. India's effort to combat COVID-19 virus has been praised over the globe. However, the lockdown came with an economic cost and cascading impact on all the sections of society. The Covid-19 induced lockdown in India was a huge economic shock. It started across the country on 24 March 2020 and is still ongoing with restrictions in one form or other. It stalled the economy with complete closure imposed on enterprises across all sectors. Even though agricultural activities were exempted, in the initial phases of the lockdown the agriculture value chain also faced large-scale disruptions. This had a serious detrimental effect on the rural Indian economy. The coronavirus pandemic has also triggered a massive reverse migration from the urban to rural areas in large parts of the country.

1. INTRODUCTION

1.1 The novel Coronavirus (COVID-19) pandemic has rapidly spread across the world, adversely affecting the lives and livelihoods of millions across the globe. India reported its first infection on 30 January 2020, prompting the authorities to soon initiate various measures to contain the spread of the epidemic. Given that the disease is highly contagious, the much-needed nation-wide lockdown was enforced starting 25 March 2020 in order to contain the spread of COVID-19 pandemic. During the initial few weeks, the restrictions were strict and all non-essential activities and businesses, including retail establishments, educational institutions, places of religious worship, across the country were prohibited from operating. Subsequently, these restrictions are being gradually eased in a phased manner in most parts of the country. 1.2 As the restrictions imposed due to the lockdown are being lifted, it is an opportune moment to analyze the impact of COVID-19 on different sectors of the economy. A number of reports have pointed towards the possibility of contraction of Indian GDP in 2020-21. This is a worrisome indication, since a higher GDP contributes immensely towards achieving better living standards, reduced poverty as well as improvement in other socio-economic indicators.



Principal
Narayanrao Rana Mahavid
Badnera

While other sectors are reported to be under significant stress, it is important to analyse the impact on agricultural and allied sectors which provide likelihood to majority of the population in India.

2. The specific objectives of the study were to assess the impact of COVID 19 on:

i. Agriculture and allied sector production, farm gate prices, supply and demand of agricultural inputs, agriculture labour and wage rates.

ii. Marketing of agriculture produce of farmers

iii. Banking activities in terms of access to credit, recovery and digital transactions

iv. Activities of SHG, NBFC –MFI, FPO, Farmers Club and MSME sector in rural areas

v. To suggest policy measures for agriculture and rural sector to ameliorate the adverse situation prevailing in the post COVID 19 situation

3. MAJOR FINDINGS

i. **Impact on Production** – At All-India level, agriculture production in almost half (47%) of sample districts was adversely affected by the impact of COVID-19. Magnitude wise, agriculture production (-2.7%) had not been adversely impacted significantly, mainly due to the fact that harvesting of rabi crops like wheat was almost complete by the end of April 2020. However, production in *allied sector* had declined significantly, especially in poultry sector (-19.5%), followed by fisheries sector (-13.6%) and Sheep/Goat/Pig (S/G/P) sector (-8.5%), primarily due to drastic decline in demand for these products possibly due to the widespread fear circulating in the wake of COVID 19 regarding safety of non-vegetarian food, particularly poultry meat, for health related concerns. Similarly, production in dairy (-6.6%) and horticulture (-5.7%) sub-sector also reduced, owing to reduced demand for these products and disruption in their supply chain.

ii. **Impact on Farm Gate Prices** – Farm gate prices have not declined significantly in crop sector (-2.2%). However, prices in allied sectors had declined in the range of 2% to 18%. This decline was highest in poultry sector (-17.8%), followed by horticulture (-7.6%), dairy (-5.6%), fisheries (-4.8%) and S/G/P (-2.9%) sectors respectively, mainly due to supply disruption caused by restriction on movement of vehicles. On the whole, 54% of sample districts witnessed adverse impact on farm gate prices of agricultural produce.

iii. **Impact on Availability of Agri Inputs** - Due to restrictions imposed on movement of men/material and closure of shops, availability of agri inputs viz. seeds (-9.2%), fertilisers (-11.2%), pesticides (-9.8%), fodder (-10.8%), etc. declined in the range of 9 to 11 per cent. At all-India level, 58% of sample districts were adversely affected in terms of availability of inputs.

iv. **Impact on Prices of Agri Inputs** - Due to disruption in supply chain owing to restrictions on movement of vehicles and closure of shops and markets, prices of agri inputs viz seeds (8.8%), fertilisers (10.0%), pesticides (9.0%), fodder (11.6%), increased in the range of 9 to 12 per cent. At all-India level, 54% of sample districts witnessed an increase in prices of agri inputs, possibly due to its non-availability.

v. **Impact on Agriculture Marketing** –Even though local procurement centres were opened by various State Governments under their jurisdiction, yet restrictions on movement of vehicles had adversely impacted about 74 per cent of sample districts in smooth operation of agriculture marketing though *mandis*. The impact on operation of rural *haats* was more severe, with 87 per cent of sample districts being adversely affected. This was mainly due to a complete ban on opening of rural *haats* by the local authorities in majority of the districts in the country.

vi. **Impact on Banking Services** – As far as banking services are concerned, access to credit through term lending and KCC was adversely impacted in about 89 per cent and 59 per cent of districts, respectively. As regards to recovery, 94 per cent of sample districts were reported to have been adversely affected by the pandemic and consequent lockdown. However, a positive feature that emerged was that 63 per cent of sample districts reported an increase in digital transactions by the customers during the lockdown period.

vii. **Impact on Microfinance Activities and FPO/FC**– At an all-India level, microfinance activities were adversely impacted in 95 per cent of the sample districts and the business activities of NBFC-MFIs was adversely affected in 88 per cent of the sample districts. Similarly, adverse impact was reported in activities of FPOs and Farmers Clubs promoted by NABARD. However, many SHGs and FPOs seized upon the opportunity of making face mask and sanitizers as also direct selling of vegetables/fruits to the customers, thereby helping the local community and administration as also increasing their business.

viii. **Impact on MSME Sector** – MSME sector was the worst hit sector by the COVID pandemic in terms of impact on price level of raw materials, employment, production level, consumer demand and disruptions in supply chains. Decline in production level and employment was reported in 97 per cent and 96 per cent of the sample districts, respectively. Similarly, adverse impact was reported on consumer demand (85% districts) and cash flow (80% districts) of MSME sector thereby increasing hardship of the people at large.

4. CONCLUSIONS

On the whole, at the national level the impact of COVID-19 and the resultant lockdown had been quite harsh on agriculture and allied sector in majority of districts.

Among various subsectors, rabi crops were least affected as its harvesting was on the verge of completion but allied sectors such as poultry, fisheries and pig/goat sheep sector witnessed a drastic fall in demand due to misplaced rumours leading to declining production as well as declining farm gate prices. However, prices of agriculture inputs were estimated to be rising mainly due to disruption in supply chain and closure of shops and markets. Although banking activities were exempted from lockdown, yet basic banking services viz. loans, deposit and recovery were severely hampered in majority of the sample districts in the country. However, the silver lining was the increase in digital banking transactions in majority of the sample districts. The microfinance sector and MSME sector were the biggest casualty with disruption in more than four-fifths of the sample districts thereby seriously hampering the livelihood in the unorganized sector which provides maximum employment in the rural areas. The activities of FPOs and FCs also came to complete halt. However, these rural institutions including SHGs grabbed the opportunities provided by the situation of stitching face masks, PPEs and preparation of sanitizers thereby helping the society as also earning some income for their members. Further, FPOs in close coordination with local administration in some of the districts were quite instrumental in door to door delivery of fruits, vegetable and dry rations to the needy there by extending a helping hand to the society. These rural institutions like SHGs and FCs were also active in creation of awareness in rural areas about COVID 19 and its preventive measures.

5. Policy Implications/Action Points

5.1 Based on the findings feedback received from the stakeholders, a few policy suggestions for mitigating the impact of COVID-19 on rural India are as under:

i. Due to decline in agriculture and allied sector production, direct income support may be provided to farmers in general and those engaged in poultry and fisheries sector in particular. In this connection, enhancing the income support through PM-KISAN could be a good option.

ii. Due to disruption in marketing of agri produce in *mandis* and rural *haats*, and reduced farm gate prices, the income of farmers declined leading to poor recovery. Therefore, interest waiver for agri term loan for at least one year may be thought of.

iii. Microfinance activities need to be reactivated through injection of liquidity to NBFC-MFI sector so that small business activities on pavement and road side shops could be resurrected in semi-urban and rural areas.

iv. Banks should be nudged to enhance credit linkage and /or next dose of credit to eligible

v. MSME sector to be supported through enhanced credit support (working capital) at lower interest rate, interest subvention and waiver of interest for at least two quarters for existing loans

vi. Opportunities for mask making, sanitizers, direct delivery of food grains, vegetables, fruits to be encased by SHGs and FPOs.

vii. A provision may be considered for NABARD grant assistance to FPOs for purchase of small road transport vehicle to take advantage of new emerging opportunities for direct selling of agri and horticulture produce to consumers.

viii. Awareness programme on COVID-19 by SHGs, FPOs and FCs in rural areas may be done on massive scale to check the growth of corona pandemic

ix. Universalization of MNREGS for covering more and more labourers, including those migrant workers who have returned from bigger cities.

x. MSMEs may be encouraged to produce PPE kits and hand sanitizers, etc.

xi. Rural godowns and cold storage infrastructure capacities in rural regions need to be augmented

xii. Model farm equipment bank/ fodder bank with FPOs may be developed with support from NABARD.

References :

1. *Anonymous (2020a), "Karnataka Poultry Farmer Buries Alive 6,000 Chickens in Mass Grave as Coronavirus Impacts Sale," News18.com, March 11, available at https://www.news18.com/news/buzz/karnataka-poultry-farmer-buries-6000-chickens-alive-in-mass-grave-as-coronavirus-impacts-sale-2533167.html, viewed on May 22, 2020.*

2. *Anonymous (2020b), "Destination Germany: Desperate to Leave Romania, Farm Workers Besiege Airports," Emerging Europe, April 10, available at https://emerging-europe.com/news/destination-germany-desperate-to-leave-romania-farm-workers-besiege-airports/, viewed on May 22, 2020.*

3. *Aronoff, Kate (2020), "Give Me Meat and Give Them Death," The New Republic, April 30, available at https://newrepublic.com/article/157501/give-meat-give-death, viewed on May 22, 2020.*

4. *Baldwin, Richard, and di Mauro, Beatrice Weder (eds.) (2020), Mitigating the COVID Economic Crisis: Act Fast and Do Whatever It Takes, CEPR Press, London, available at https://voxeu.org/content/mitigating-covid-economic-crisis-act-fast-and-do-whatever-it-takes, viewed on May 22, 2020.*

5. *Chu, Mei Mei, and Jadhav, Rajendra (2020), "India's Coronavirus Lockdown Curbs Buffalo Meat Exports, Hitting Ramadan Supplies," Reuters, May 3, available at https://in.reuters.com/article/health-coronavirus-asia-beef/indias-coronavirus-lockdown-curbs-buffalo-meat-exports-hitting-ramadan-supplies-idINKBN22F01N, viewed on May 22, 2020.*

6. *COPA and COGECA (2020), "Press Statement," April 29, available at https://copa-cogeca.eu/Downloadasix?ID=3766911&fmt=pdf, viewed on May 22, 2020.*

7. *Corkery, Michael, and Yaffe-Bellany, David (2020), "The Food Chain's Weakest Link: Slaughterhouses," The New York Times, April 18, available*

chain-6330203 , viewed on May 22, 2020.

9. Debucquet, David Laborde (2020), "COVID-19 Food Trade Policy Tracker," International Food Policy Research Institute (IFPRI), Washington, available at https://www.ifpri.org/project/covid-19-food-trade-policy-tracker, viewed on May 22, 2020.

10. Food and Agriculture Organisation (FAO) (2020a), "FAO needs $350 Million to Avert Rising Hunger as Countries Reel From COVID-19 Pandemic's Impact," Food and Agriculture Organisation, Rome, May 18, available at http://www.fao.org/news/story/en/item/1276081/icode/, viewed on May 22, 2020.

11. Food and Agriculture Organisation (FAO) (2020b), "AMIS Market Monitor," no. 78, Food and Agriculture Organisation, Rome, May, available at www.amis-outlook.org/fileadmin/user_upload/amis/docs/Market_monitor/AMIS_Market_Monitor_current.pdf, viewed on May 22, 2020.

12. Food and Agriculture Organisation (FAO) (2020c), "Global Food Commodity Prices Drop Further in April," Food and Agriculture Organisation, Rome, May 7, available at http://www.fao.org/news/story/en/item/1273914/icode/, viewed on May 22, 2020.

13. Rawal, Vikas and Verma, Ankur (2020), "Agricultural Supply Chains During the COVID-19 Lockdown: A Study of Market Arrivals of Seven Key Food Commodities in India", SSER Monograph 20/1, Society for Social and Economic Research, New Delhi.

14. Tushir, Deepak and Kanitkar, Ajit (2020), "Misconceptions about COVID-19 Result in Poultry Value Chain Erosion – II," Village Square, May 4, available at https://www.villagesquare.in/2020/05/04/misconceptions-about-covid-19-result-in-poultry-value-chain-erosion-ii/, viewed on May 22, 2020.

15. United Nations Development Programme (UNDP) (2004), Practice Note – Poverty

Shri Shivaji Education Society Amravati's

Dr.Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya Gadegao (Telhara) Dist. Akola.

Collaboration with

Gajanan Maharaj Shikshan Sanstha Amravati's

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera Dist. Amravati

Organized by Department of Political Science & Department of Sociology

National Level Interdisciplinary E-Conference on

Socio-Political and Economic Changes at the National and International Levels During the Covid Period

Certificate

This is to certify that Dr. Harshal R. Nimbhorkar, Librarian, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera- Amravati. has attended and enriched the deliberations of National Level Interdisciplinary E-Conference on "Socio-Political and Economic Changes at the National and International Levels During the Covid Period" organized by Department of Political Science, Dr.Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya Gadegao (Telhara) Dist. Akola Collaboration with Department of Sociology, Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera Dist. Amravati held on 31st July 2021.

He /she has presented a Research paper entitled "Impact of Pandemic Covid-19 on Educational Learning System"

His/her paper has been published in UGC Refereed Journal No.- 47100 - GENIUS - ISSN - 2279 - 0489 with Impact Factor - 6.631.

Dr. Krushna A. Mahure	Dr. Sachin J. Holey	Dr. Gopal J. Dhole	Dr. Gopal S. Vairale
Convener	Convener	Principal	Principal

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal No. 47100

GENIUS

ISSN - 2279 - 0489

Volume - X, Issue - I, August - January - 2021-22

Impact Factor 2019 - 6.631 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

Dr. Harshal R. Nimbhorkar

In Recognition of the Publication of the Paper Titled

Impact of Pandemic Covid-19 on Educational Learning System

Ajanta Prakashan
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260677, 9822620677 Tel. No.: (0240) 2400677,
ajanta6060@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor

Vinay S. Hatole

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B. Aadhar

Peer-Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

October -2020

SPECIAL ISSUE-CCL(250)



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr. Santosh Bansod
Head Dept. of History
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya Badnera (M.S.)

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications



Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

Principal

Aadhar Publications
Ne[illegible]Nagar, In Front Of
Path[illegible]Bebind V.M.V. College, [illegible] (M.S) India Pin- 44[illegible]
Email: [illegible]
Price:Rs.500/-

1	reference to Goa Problem. **Dr. Santosh Bansod**	1
2	Dr Babasaheb Ambedkar and Socialism **Dr. Vasant R. Dongare**	4
3	स्त्रियांचे मुक्तीदाते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा.डॉ. कल्पना त्र्यं. मेहरे	8
4	An Advocate of Human Society: Dr B. R. Ambedkar **SatishK. Khode,**	14
5	Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar Dr.HarshalR.Nimbhorkar	15
6	दलित पँथर आणि आंबेडकरवाद प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे	19
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे उच्चशिक्षणा विषयक विचार प्रा. डॉ. सिध्दार्थ शिवाजी वाठोरे	24
8	**महिला व मजदुरो के विकास मे डॉ. आबेडकर की भूमिका प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील.**	27
9	भारतीय कृषी विकास के संदर्भ मे डॉ. बी. आर. अंम्बेडकर के विचारोका ऐतिहासिक विश्लेषण **डॉ. प्रसन्न प्रकाश बगडे**	30
10	वर्तमान परिप्रेक्षातून डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांची विदर्भातील भाषणे (पातुर्डा ते अमरावती) डॉ श्याम प्रकाश देवकर.	34
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सामाजिक चळवळीचा समाजमनावरील प्रभाव :– एक चिकित्सा. डॉ किशोर मारोती वानखडे.	42
12	समाज क्रांतिकारकबाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय संविधान जगन्नाथ सावंत	46
13	आंबेडकरी चळवळीतील रावबहादूर सीतारामपंत बोले यांचे योगदान प्रा. प्रविन एम. राजुरवाडे	52
14	भारतीय स्त्री, पूर्वइतिहास, आजची स्थिती आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर प्रा.शितल बुधा सोनवणे	56
15	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व योगदान प्रा. विनय वामनराव तायडे	62
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार प्रा. डॉ. नितिन उल्हासराव सराफ / गोपाल मधुकर राठोड	67
17	संविधानिक दृष्टिकोनातून महिला सक्षमीकरणामध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका प्रा. संतोष बन्सीलाल राठोड	72

Principal
Narayanrao

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO. 250 (CCL) | ISSN : 2278-9308 October, 2020

Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar

Dr.Harshal R.Nimbhorkar
Librarian , Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera (M.S.)

Abstract:

Dr.B.R.Ambedkar was a great social reformer and an eminent economist. He was a many sided genius: a distinguished economist, a learned professor, a brilliant lawyer, reputed author and a great political leader, but above all he left the marks as to how one can attain the heights of glory through self-help respect. Acting on these principles, he rose to international eminence and exhorted untouchables to follow these principles as the only effective way of removing their disabilities

Key words: agriculture, water policy, irrigation

Introduction:

His natural intelligence and acquired knowledge made him a great authority on current economic and political issues of India. It is to be noted that DrAmbedkar was essentially an economist by academic training and a recognized researcher in problems pertaining to public finance and political economy. He studied thoroughly the economic problems facing British-India and provided bold solutions to them, which are relevant even today.

Dr Ambedkar's Contribution in Formulation of Water Policy:

The development of infrastructures such as electric power, irrigation, roads, communication and transport services and technical manpower were treated as prerequisites for agriculture and industrial development and therefore received top priority in the plan. It was believed that development of infrastructure would bring a relatively higher growth in industrial output and employment than the growth in rural labour force help to absorb the surplus labour from agriculture. In a policy Committee on public work and electric power, DrAmbedkar emphasized that the country needed, "cheap and abundant electricity" without it, no effort for industrialization could succeed. Development of irrigation and electric power were long-term projects involving large capital expenditure. The development of electric power (an transport, road and communication) was crucial for industrial and agricultural development. Improvement in irrigation facilities was expected to raise agricultural productivity. The main features of the new water policy, mentioned in an earlier section, constitute, 1. Adoption of a multipurpose approach for a water resources development on the basis of river valley basin. 2. Introduction of the concept of river valley authority. 3. Creation of technical expert bodies at the center to undertake planned development of water and power resources. On each of the above issue, Dr. Ambedkar had views of his own. In the period 1943-46, when the new policy was evolved, he actively participated in all discussions and expressed his views through president addresses and lectures. Between November 15,1943 and November 8,1945. Dr. Ambedkar addressed five conferences of which two were on Damodar valley project, both held at Calcutta ,one on Mahanadi valley project and two on electric power. Besides the records of the labour department, these five addresses contain his

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

thinking on the issue of water resource development in the country. DrAmbedkar was a president of policy committee on irrigation and electric power. He was closely associated with "official committee" in the labour department. The main task of the committee was to formulate the water and power policy. DrAmbedkar has influenced the nature of power and water policy and strategy for their planned development. In conference on the development on Orissa rivers, DrAmbedkar expressed his views about conservation and use of water resources. He referred to the recommendations made by various committees, while pointing out the limitations of remedies suggested by these committees, he observed; "with all respect to the members of these committees, I am sorry to say that they did not bring the right approach to bear on the problem. They were influenced by the idea that water in excessive quantity was an evil, that when water comes in excessive quantity, what needs to be done is to let it run into the sea in an orderly flow. Both these views are now regarded as grave misconceptions, as positively dangerous from the point of view of the good of the people". Man suffers more from lack of water than from excess of it, DrAmbedkar said, not only was nature niggardly in the amount of water it gave, it was also erratic in its distribution, altering between drought and storm. But these could not alter the fact that water was wealth. Water being the wealth of the people and its distribution being uncertain, the correct approach was not to complain against nature but to conserve water. DrAmbedkar thus looked at the problem of flood or excess of water in a different manner and focused more on brighter and the positive aspects of water problem.

DrAmbedkar's views on Damodar valley Projects:

The water resource policy evolved under DrAmbedkar's direction was a far-reaching framework and a multi-dimensional achievement. It let to the creation of two premier Technical Power Board. It was accepted by all concerned that the best way of developing inter-state rivers was by adopting the concepts of comprehensive planning with multipurpose projects through multi disciplinary River Valley Development Authority. It was the beginning of an important present day river valley project in the country, namely the Damodar Valley Projects. The river valley projects which was under the active consideration of the Labour department during 1994-46 were Damodar valley projects, the Sone River Valley Projects, the Mahanadi and the Kosi and others on river Chambal and the rivers of the deccan. These projects were conceived essentially for multipurpose development with flood control, irrigation, navigation, domestic water supply, hydropower and other purposes. The multipurpose projects which were initiated during 1943-46 were the Damodar, the Mahanadi, the Sone and the Kosi while the substantial work relating to the Damodar Valley Projects was completed during 1943-47, a beginning was made with others and various magnitudes achieved. DrAmbedkar was instrumental in ushering in the coordinated development of the Damodar basin by the central government. As a member in the pre-independence Cabinet, he pursued vigorously the government proposal for Damodar Valley. With this kind of groundwork, the Damodar Valley Scheme become the first river valley development scheme in post-independence India, with the Damodar Valley Corporation getting established by an act of parliament, in July 1948. Damodar Valley Corporation(DVC) was established in the year 1948 with the primary objectives of flood control, irrigation and water supply, and electricity generation, transmission and distribution. Damodar Valley Corporations (DVC's) command area extends over 24235 sq.kms. spread across Bihar and West Bengal. The

Principal
Narayanrao ... Mahavidyalaya
Badnera

Damodarriver rises in West Bihar and after travelling for about 540km. in Bihar and 250 km. in West Bengal joins the river Hoogly about50 km. below Calcutta. It's destructive characteristics have earned the Damodar river notorious name of 'the river of sorrows'. It encodes soils in Bihar and floods Bengal and causes much distress and loss in both Bihar and Bengal. Floods have been occurring at regular frequency causing untold misery and damage and adhoc measures were taken to repair the damage and relive the distress. A devastating flood in 1943 totally disrupted the railand the road communication and Calcutta was totally cut off, disrupting the movements of troops, which made the Government to realize the importance of controlling the floods on Damodar River. The Government of Bengal appointed a Committee, the Damodar Flood Enquiry Committee in 1944 to suggest permanent measures to control floods in Damodar Valley. The committee, inter alia, recommended after detailed surveys, construction of storage dams on Damodar River and its tributaries. It also felt, measures should be taken not only for controlling floods, but also irrigation and electricity generation. In one of its recommendations, the Damodar flood Enquiry Committee had stated that it would be an advantage in the solution of flood control and soil conservation problems if forest and rivers of India were made the concern of the central government. DrAmbedkar approved this approach on september18,1944. This would also enable the central government to fund the project to some extent. The central government, under the leadership of DrAmbedkar suggested the involvement of Bihar government and also preparation of comprehensive schemes by a committee of experts involving the Central Technical Power Board and Central Waterways of Irrigation Board, covering not only flood control but also hydroelectric and thermal power from the coal fields, irrigation and development of agriculture, navigation and development of ports, afforestation, etc.

Dr Ambedkar's View on Hirakud and SoneRriver Projects:

Mahanadi is the biggest river in Orissa. The flood and destruction of July-August 1943 were the worst ever. Many temporary expedients have been tried in early decades to tame the fury of the river, without much success. At this time, the government of Orissa approached DrAmbedkar to consider the taming of the Mahanadi on the lines of the Damodar Valley project. H K Mahtab, a nationalist leader from Orissa, also suggested him to pay special attention to the problem. The Sone river valley project was another multipurpose scheme, which the Labour Department initiated during 1944-1945. River Sone rises in Madhya Pradesh and flows onwards to Uttar Pradesh before merging with Ganga .On November 1944 the government of the united provinces drew the attention of the Labour department to the potentialities of development of Soneriver. The department responded favorably. In its letter dated December 8, 1944, it observed that potentialities for multipurpose development and management scheme on the river Sone immense. These included possibilities relating to increase supplies of water for irrigation, perennial hydelpower plant, provision of hydel power for pumping from tube well or from rivers and for industrial development, supplies of water for navigation on the Ganga and improved flood control.

Principal
Narayanrao

Role of Dr Ambedkar's focus on the holistic approach to development and management of India's water resources:

Dr Ambedkar evolved a new water and power policy during 1942-46 to utilise the water resources of the country to the best advantage of everybody and the Tennessee Valley Scheme of USA was an ideal model to emulate. He rightly visualised that only multipurpose project can be a fine prospect for the control of the river, a prospect of controlling floods of securing a fine area for perennial irrigation with resultant insurance against famine, much needed supply of power and uplifting the living standard of poverty-stricken people of India.DrAmbedkar was instrumental in evolving multipurpose approach for water resources development on the basis of river valley basin, and introduction of the concept of river valley authority which are summarily now-a-days termed as Integrated Water Resources Management.The river valley projects which were under the active consideration of the Labour Department during 1944-46 were the Damodar River Valley projects, the Sone River Valley projects, the Mahanadi (the Hirakud Project) and the Kosi and others on river Chambal and rivers of the Deccan.These projects were conceived, commented the Minister, "essentially for multipurpose development with flood control, irrigation, navigation, domestic water supply, hydropower and other purposes. The Damodar River Valley Projects and Hirakud Multipurpose Project are standing monuments to the memory of this great visionary."

Conclusion:

Dr Ambedkar with his political status, immense concerns and high scholarship was successful in persuading the provinces to have an all India policy, to develop the instrument of river valley authority to manage the project on inter-state rivers for multipurpose development and with active participation of the central government. In the establishment of the central water ways, Irrigation and Navigation Commission (CWINC) on April, 1945 DrAmbedkar and his department laid down the foundation for a new water policy on the eve of independence preparing the ground for the prosperity of the emerged nation.

References:

1. Dr Narendra Jadhav(1991): "DrAmbedkar's Economic Thought and Philosophy".
2.Bhalchandra Mungekar(1998): An Ambedkarian perspective, paper presented to national seminar, JNU, Delhi.
3.SukhadeoThorat(1998): Ambedkar's Role in Economic Planning and Water Policy.
4.Sing(S.K.)http://gurukuljournal.com/wp-content/uploads/2017/08/007-Special-Issue-Dr.-Babasaheb-Ambedkars-Global-Vision-2016.pdf accessed on 2/10/2020
5Biswas(A.K.)https://www.forwardpress.in/2020/04/dr-ambedkar-pioneer-of-national-water-resources development-policy/ accessed on 2/10/2020

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

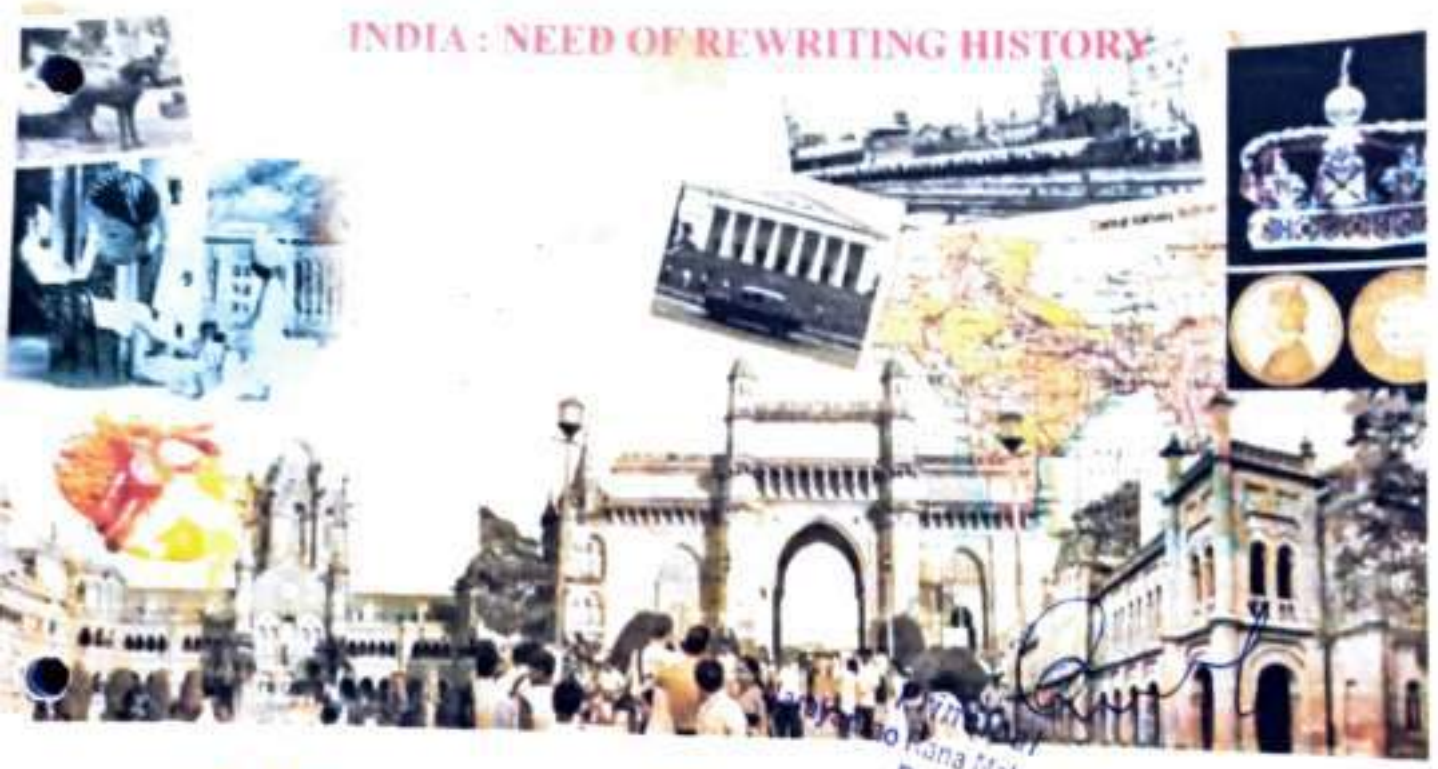
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social Research & Development Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Bansod,
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

38	The Life Oriented Education System in Ancient India and Bread and Butter Education System of British India: A Brief Study. **Dr. Salunkhe Umesh Ashok**	133
39	Scenario of Indian Economy in British Invasion **Prof. Dr. Premchand Gundu Gaikwad**	137
40	Post Independence Political, Social And Edcuational Impact Of The British Rule In India **Dr K R Nagulkar**	140
41	Historical Development of Public Libraries in India **Dr.Harshal R.Nimbhorkar**	143
42	Dadabhai Naoroji – Drain Theory Impact Economic And Social Aspect In British India **Prof. Vijay Devidas Wakode**	147
43	History of Education in India during British Period **Dr.Jadal M.M**	150
44	औपनिवेशिक काल में भारतीयों का समुद्रपारीय प्रवासन : एक नई गुलामी का इतिहास **राजू कुमार**	154
45	ब्रिटिश आक्रमणाचे कामगारांवर झालेले परिणाम. **कु. माधुरी शंकर खामणकर**	160
46	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व डॉ. भाऊसाहेब उपाख्य पंजाबराव देशमुख यांचे संबंध **कु. अंजली किशोर नांदेकर**	162
47	To rewrite the history of the impact of the British Invasion on Indian Women's life. **Mrs. Seema Ravindra Gholap**	166

Principal
Narayan... Vidyalaya

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308

Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, 321(CCCXXI) | October, 2021

Historical Development of Public Libraries in India

Dr.Harshal R.Nimbhorkar
Librarian Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera
Mo.9960224366

History of Public Libraries :-

Public libraries arose worldwide along with growth in education, literacy, and publications. Every country has its own public library history with influential leaders. Monarchs, wealthy people, and philanthropists have all made a contribution to society in the form of public library development. India is no exception. Libraries were established in ancient India mainly by the patronage extended by emperors, major capitalists, and scholars. Indian emperors and kings were supported scholars and scholarship. There is evidence of well-developed libraries even in the sixth century A.D. The famous Nalanda University in Bihar had its own magnificent library with a massive collection of manuscripts covering the universe of knowledge. Admission to library was restricted to scholars. Other ancient universities, such as Taxila and Vikramashila, also had valuable libraries. Muslim influence in India during the 13th century A.D. marked the dawn of another era of learning and scholarship. The Mughal period gave a further stimulus to the growth of libraries. Mughal rulers attached considerable importance to libraries and appointed scholars as Librarians.

Yet another development during the period was the organization of a host of conferences such as:

- The first conference of library workers and persons interested in the library movement was held at Beswada, Andhra in 1914.
- The first All India Library Conference of Librarians was held in 1918 at Lahore.
- The first All India Library Conference was held at Calcutta in 1933.
- The first All India Public Library Conference was held at Madras in 1934.

With the existence of democratic governments in several provinces beginning in 1937, another phase of the library movement began. Between 1937 and 1942, a number of village libraries and travelling libraries sprang up in Assam, Bihar, Punjab, and Travancore. It was estimated that there were about 13,000 village libraries in India in 1942 (Verma & Agarwal, 1994, p. 6).

After Independence -

After independence, the growth of libraries in general has been remarkable, although not as remarkable as that of academic and special libraries. At the time of independence, India was facing a host of challenges. Those in the rural population, 88 percent of the total, were nearly all illiterate. Transportation was poor and mass media merely nominal. The 1951 census, the first conducted after independence, found 2,843 local governments in the urban and rural areas in India, of which 320 were rural district boards. UNESCO and Government of India. The purpose of the library was to adapt "modern techniques to Indian conditions" and to serve as a model public library for Asia (Verma & Agarwal, 1994, p. 8).

Advisory Committee for Libraries

The Government of India appointed a committee in 1957 to report on the status of public library development in the country. It is also called the Sinha Committee, after its chair, the late Dr. A.P. Sinha, who was at that time Director of Public Instruction in Bihar.

The Sinha Committee's charge included:

- Determining present reading needs, how they are met, and what part existing library systems play in meeting the needs;
- Determining reading tastes, what agencies provide suitable literature, and how reading taste can be improved;
- Recommending future library structure in India;
- Recommending areas of cooperation between libraries and education systems; Considering the training of librarians and the conditions of their service;
- Recommending the administrative and financial measures necessary to support public libraries in India (Ministry of Education, India, 1961, p. 126).

Principal
Badnera

The committee submitted its report to Dr. K.L. Shrimali, who was Minister for Education on the 12th of November, 1958. The Committee described the situation as dismal and called libraries in most cases, "a stagnant pool of books," because new books were not added regularly. The committee at the same time observed that wherever large collections did exist, they were not fully used because of rigid rules. , as of March 1954 there were 32,000 libraries in India, with a little more than 7,100,000 books and a total circulation of about 37,700,000. The report observed that genuine public library service was rarity, and that public library service throughout the country was unsatisfactory.

The committee recommended creating state library networks based on uniform library legislation. The chief recommendations of the report were:

- An independent Director of Social Education and Libraries should be set up in every state, with a fulltime senior class-1 officer of the rank of Deputy Director of Education to plan, organize, and administer library services;
- An All India Library Advisory Council should be constituted as a central agency to review and assess the work done at the state level;
- Library Associations should actively assist the development of libraries in the country;
- University libraries should cooperate with public library systems by allowing selected public readers to use their collection;
- The Government of India should provide necessary financial assistance to the state governments for this purpose. (Ministry of Education, India, 1961, p. 126)

Raja Ram Mohan Roy Library Foundation

Another positive step taken by the Central Government was the establishment of the Raja Ram Mohan Roy Library Foundation (RRRLF) at Calcutta on May 22, 1972, as a part of the bicentenary celebrations of the birth of Raja Ram Mohan Roy, a social reformer of the early 19th century. Its objectives are library development in general and rural library development in particular. It provides financial assistance to public libraries in the form of matching grants. It assists State Central Libraries and District Central Libraries, which has helped many states and Union Territories develop rural public library services.

Main Objectives of RRRLF

- Promotion of the library movement in India;
- The adoption of a national library policy by the central and state governments;
- Development of a National Library System by integrating the services of National Libraries, State Central Libraries, District Libraries, and other types of libraries through an interlibrary lending system;
- Propagation and adoption of library legislation in the country;
- Provision of financial and technical assistance to libraries;
- Promotion of research in problems of library development (Baraua 1994, p. 64)

National Policy on Library & Information System (NAPLIS)

In 1985, a committee was set up under the chairmanship of Prof. D.P. Chattopadhyay to formulate a National Policy on Library & Information System (NAPLIS) (Chatoopadhyay, 1998). The Committee submitted its report in May 1986. Following that, another committee looked at implications of the report and created an action plan for its implementation (Bhatacharjee 1999, p. 19-20).

The following are some of the recommendations of NAPLIS related to public libraries:

- Proposals for maintenance and development of public libraries should preferably come from State Legislative Enactment. The Central Government may revise the Model Public Library Bill. Funds for library development should come from each state, either from general revenue or from local taxation. Central Government agencies may provide funds under Plan Expenditure.
- The central government increase its assistance to state governments in the development of public libraries. The RRRLF, as the national agency for coordinating and assisting the development of public libraries, should be suitably strengthened in order to do this.
- Standards and guidelines for library service should be created.
- There should be a system of national libraries consisting of National Library, Calcutta (Now Kolkatta) as the National Library of India, National Depository libraries in Delhi, Bombay (NowMumbai), Madras (now Chennai), National Subject Libraries, and others. These national libraries should form part of one integrated system.

Principal

1951-1956

The first five-year plan for educational development included a proposal for "Improvement of Library Service." This proposal envisioned a network of libraries throughout the country, coordinated by National Central Library at New Delhi (Planning Commission of India, (a), 1952) During the first five-year plan, nine state governments, i.e. Assam, Madhya Pradesh, West Bengal, Punjab, PEPSU, Rajasthan, Savarashtra, Bhopal, and Vindhya Pradesh, decided to set up State Central Libraries (Sharma, 1965).

1956-1961

At this time, the government allocated funds to set up a national network of libraries in its 320 districts. As a result, most states established State Central Libraries and District Libraries as the main distributing centers (Planning Commission India, 1956, p. 522)

1961-1966

During this period, the system of central government assistance to the states was changed, and funding for libraries was kept to a minimum. It was up to the individual states to take initiative and develop their public libraries. The programme to assist state governments in establishing state central libraries, district central libraries, and block development libraries was abandoned.

The working group submitted its report on 7th September 1965 with following recommendations:

- State central libraries should be established in four states: Madhya Pradesh, Mysore, Nagaland, and Orissa. States which do not possess adequate functional buildings for their state central libraries should be provided with library buildings.
- The state central library must have a children's section.
- There should be 335 District Libraries for the 327 districts in the country, i.e., in large and populous districts, two district libraries may be provided.
- New buildings should be constructed for the existing 100 district libraries.

1969-1974

This plan proposed a substantial sum for the social education programme. A much lower sum was allocated (Thomas 1997, p. 30). Of this, only a very small amount was available for the development of libraries in the country.

1974-1979

This plan included measures to strengthen the buildings, collections, and staff of the central and state libraries, as well as strengthening the district, block, and village libraries. During this period, attempts were made to develop a district-level library system, so that district library could act as a leaderfor the smaller libraries in the district. The adult education programme was the hallmark of this plan. (Thomas 1997, p. 30)

1980-85

This plan emphasized establishing a network of rural public libraries to sustain literacy and disseminate information to rural areas. It discussed the necessity of integrating school and college libraries with the system of public libraries. During thisperiod, 26 states or union territories out of 31 (in 1982) had established state central libraries and 291 district libraries (Thomas 1997, p. 31).

1985-90

During this period, the Commission's objective was to address the needs of 90 million people in the Adult Education Programme. The network of libraries was to play a role in the development of literature for neo-literates. Library systems were to be strengthened, with specific attention given to improvement of facilities at national level institutions. An important development was the 1986 adoption of National Literacy Mission, which emphasized the education of women and the establishment of rural libraries. In addition, the RRRLF set up an Integrated Research Cell-cum-Computer Unit for promoting research in librarianship and database of public libraries in the country (Planning Commission India 1991, p. 258) There were two annual plans for the years 1990-91 and 1991-92.

1992-97

During this period it was proposed to reorganize the Central Reference Library into the National Bibliographical and Documentation Centre, which would also have a computer centre. The Delhi Public Library set up two new libraries in its service area. RRRLF created programmes to help state central libraries purchase reprographic equipment, to help libraries process rare books, and to

Principal
Vidyalaya
Banera

give special assistance to networks of public libraries that were at least 100 years old (Planning Commission India, 1992).

1997-2002

During the 9th five year plan, the National Library,Kolkatta, undertook several major initiatives to upgrade and modernize its collection building programme, reader services, and conservation of library material. The major activities completed during the period were automation of the circulation system in the lending section, setting up of a local area network, improved reader services, and more efficient collection management. (Planning Commission India 1997).

Tenth Five-Year Plan (Action Plan)

The Planning Commission proposed further modernization of central and public libraries during the Tenth Plan. A national bibliographic database would be developed to encourage resource sharing, networking, and to improve reader services. The Commission resolved to strengthen public library infrastructure through the RRRLF. The Tenth Plan focused on upgrading existing libraries, including private collections, and widening the programme for bibliographic control and documentation. (Planning Commission India 2002)

Conclusion:-

Public libraries have always been the door to learning for a great majority of the populations that they serve. They are knowledge centres and contribute to lifelong learning. For India, there are bumps in the road that leads to the goal having an institution to serve the masses, which is even more imperative in the present information society, in a nation where 40 percent of the population is living below the poverty line. A massive investment in public libraries is needed to make them true information resource centres for the layman

References

1) Barua, B. P. (1994). Raja Ram Mohan Roy Library Foundation and Library Movement in India. Presentedat 39th All India Library Conference.Delhi: Indian Library Association.
2)Bhattacharjee, R. (1999). Role of Raja Rammohan Roy Library Foundation in the promotion of public library movement in India. Herald of Library Science38 (1-2).
3)Chatoopadhyay, D. P. (1998). Chattopadhyay Committee on NPLIS. CLIS Obs
4)Dutta, Bimal Kumar (1970). Libraries
5)Atma Ram

Dr. Ambedkar Studies Center,
Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati



Dr. Babasaheb Ambedkar's Role in Nation Building

Editor's

Dr. Tushar Deshmukh
Registrar
Sant Gadge Baba
Amravati University
Amravati

Dr. Santosh Bansod
Co-ordinator
Dr. Ambedkar Studies Center,
Sant Gadge Baba Amravati
University, Amravati

Dr. Babasaheb Ambekar's
Role in Nation Building

ISBN : 978-81-940865-8-1

Reserved

Edition : 8th March 2022

Publisher & Printer :
Sant Gadge Baba Amravati
University, Amravati

Type Setting
Sanskruti Printers,
Vidya Lane 4,
Amravati.

Price : Rs. 800/-

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher. The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or organizers do not take any responsibility for the same in any manner.
Printed from the Camera ready copy provided by the editors.

PROF. DR. DILEEP N. MALKHEDE
M.E. Ph.D.
VICE-CHANCELLOR

SANT GADGE BABA
AMRAVATI UNIVERSITY
AMRAVATI - 444 602
MAHARASHTRA (INDIA)

31[illegible] 2022

MESSAGE

It gives me immense pleasure to note that, Dr. Ambedkar Studies Centre, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati is organizing a National Multidisciplinary Conference on "Dr. Babasheb Ambedkar's Role in Nation Building" on 8th & 9th March, 2022. Dr. Babasaheb Ambedkar's contribution in the nation building is demonstrated through his struggle for the realisation of social democracy in India under the colonial area. His ideas and thoughts are humanity centered.

Dr. Babasaheb Ambedkar in the constitutional history of India right from Southborough Franchise Committee, Simon Commission, Round Table Conference, Cripps Commission, and Cabinet Missions played very vital role for giving fundamental rights to the minorities in India. He paved the ways for the social democracy in India through the Constitution of India. Through his writings, speeches and action Dr. Ambedkar has played a role of philosopher as well as nation builder in a true sense. He resolved various issues of the labours. His policy for building dams generating electricity is milestone in the nation building process.

Dr. Babasaheb Ambedkar Study Centre deserves appreciation for organizing this event on such a grand scale. I am sure that the academicians, scientists and students will come together on a common platform to reap the benefits and spread awareness to lay person about the importance of Dr. Babasaheb Ambedkar's Role in Nation Building.

I convey my best wishes to the Co-ordinator, students and all those who are associated with this event.

(Dr. Dileep Malkhede)

Dr. Santosh Bansod
Coordinator,
Dr. Babasaheb Ambedkar Study Centre,
Sant Gadge Baba Amravati University.

Phone : Office - 0721 - 2668273, Resi. 0721 - 2668108
E-mail : vc@sgbau.ac.in Website : www.sgbau.ac.in

Role of Dr.B.R.Ambedkarin Education System of India

Dr.HarshalR.Nimbhorkar

Librarian, Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera-Amravati

Abstract

This paper aims at Dr.B.R.Ambedkar's role of Education. Ambedkar's kno education was the necessary precondition for the reconstruction of the society principles of equality and justice. Studying the development of education in Indian Soc found that during the rule of Peshwa in Maharashtra and even during the earlier per British Raj, right to education was restricted to higher castes. He fought for the educat masses without discrimination of caste and sex. Participation in the budget to debate be Education is something which ought to be brought within the reach of everyone education department is not a department which can be treated on the basis of quid pro Education ought to be cheapened in all possible ways and to the greatest possible e Taking active part in the discussion on Bombay University Act and Primary Educa Amendment Bill, he contributed his views in the reform of Education. He founded people's Education society, and started colleges at Bombay and Aurangabad. He repeat with the government that providing equal educational opportunities to all wit discrimination was its responsibility however, boys and girls should get the diff education. Paper attains to understand the Dr. B R Ambedkarsrole ofeducation syste India.

Key Words: Education, Dr.B.R.Ambedkar, Enlightened, Self-respect, Moral values

Preamble:

It is the education which is the right weapon to cut the social slavery and it is education which will enlighten the downtrodden masses to come up and gain social stat economic betterment and political freedom", are the views of Ambedkar. B.R. Ambedkar, is well known, the Chairman of the Drafting Committee of the Constitution of India, devote most of his intellectual, social and political efforts to give expression to his belief in the ide "SarvenahBhavantuSukhinahSarveSantuNiramayah" i.e. the good and prosperity of all. struggled throughout his life for securing the rightful place for the discriminated, deprive and downtrodden sections of our society. Though several efforts were made by Ambedkar to establish an equalitarian society in India and had been discussed widely by different scholars yet few studies are available to project him as a great educationist. Ambedkar made an attempt to achieve this objective through his educational project also and discussed at length in this paper.

OBJECTIVES:

1. To Assess the Contributions of Dr.B.R.Ambedkar to Educational field.
2. To explore the Changes in life style of marginalised section through Dr.B.R.Ambedkars Contribution to field of Education.

METHODOLOGY:

The study was conducted by secondary sources of existing literature through critical, analytic approaches. Method consists, analysis concepts and arguments, synthesize ideas and evidence drawn from different sources, construct consistent and well-supportedarguments, discuss an issue in a balanced way, evaluate the ideas and arguments of others, make judgments and express informed opinion. Implications Dr. B. R. Ambedkar"s view that education was the necessary precondition for the reconstruction of the society on the principles of equality and social justice. Studying the development of education in Indian society he found that during the rule of Peshwa in Maharashtra and even during the earlier period of British Raj, right to education was restricted to higher castes. He fought for the education of masses without discrimination of caste and sex. Participation in the budget to the state he said, "Education is something which ought to be brought within the reach of everyone.

The education department is not a department which can be treated on the basis of quid pro quo. Education ought to be cheapened in all possible ways and to the greatest possible extent"(Ambedkar, 40-41). Taking active part in the discussion on Bombay University Act and Primary Education Amendment Bill, he contributed his views in the Reform of Education. He founded thepeople's Education society, and started colleges at Bombay and Aurangabad. He repeatedly with the government that providing equal educational opportunities to all without discrimination was its responsibility however, boys and girls should get the different education. It is unfortunate that in the past India got divided into castes based on birth. The people belonging to low castes i.e. the scheduled castes were denied all privileges and facilities, including educational facilities. They were so poor that they could never think of sending their children to educational institutions. Door of all educational institutions were closed on them. If at all any scheduled caste dared to get elementary education he was required to sit outside the class room. His shadow should not fall on other student. Educationally therefore, they were extremely backward.

Dr.B.R.Ambedkar"s believed that education would greatly contribute to the improvement of the untouchables. He always exhorted his followers to reach excellence in the field of knowledge. Knowledge is a liberating force. Education makes man enlightened. It makes him aware of this self –respect and also helps him to lead a better life materially. One of the causes of the degradation of the untouchables was that they were denied the right to education. Ambedkar criticised the British Policy on education for not adequately encouraging education among the lower castes. He felt that even under the British rule education continued mainly to be an upper castes and untouchables and funded the houscentres of learning. While a labour member in the executive council of the GovernorGeneral, he was instrumental in extending scholarships for education abroad to the untouchable students.

Dr. B.R. Ambedkar wanted the untouchables to undergo both liberal education and technical education. He was particularly opposed to education under religious auspices. He warned that only secular in education could instil the values of liberty and equality among the

student. Dr.B.R.Ambedkar knew that Indian being a multilingual country has the po... of problems for the unity of the country on account of regional pressures and pulls. W... ideas of linguistic states were mooted he favoured it for two reasons. Firstly i... facilitate functioning of democracy in the country, secondly, linguistic states would... the removal of racial and cultural tensions. Expressing his views Dr.B.R.Ambedkar ... seeking to create linguistic states India is treading the right road. It is the road which ... have followed. In case of other linguistic states they have been so from the very begin...

In case of Indian she has to put herself in the reverse gear to reach the goal. ... road she proposes to travel is a well tried road" (Ambedkar, 145). Accord... Dr.B.R.Ambedkar"s, in the enthusiasm to accept the ideas of linguistic states Indi... commits the grave blunder of giving official status to regional Language. There... warned that with regional languages as their official languages the states could a... Independent nationality and thus pose a threat to the national unity. To avoid this po... in future he suggested that it should be laid down in the constitution that regional lan... shall never be accepted as official language so long as Hindi does not become fit ... status. He warned that linguistic states without proviso would be a peril. Indian sh... Indians first and Indians last to keep India a united country. The ideas of linguistic ... regional Languages as their official languages was contrary to this pr... Dr.B.R.Ambedkar"s said "one language can unite. Two languages are sure to divide pe... Culture is observed by language. Since Indians wish to unite and develop a common cu... is the bounden duty of all Indians to own Hindi as Language" (Ibid, 145). He said th... Indian who refused to accept his idea had no right to call himself an Indian. Such a p... might be hundred per cent Tamil or Gujarati but could not be Indian in the real ... Unfortunately, as his warning and suggestions were not understood in the proper spirit.

Today, people in Punjab, Tamil Naidu, and Assam are openly asking for s... nationalities. As Indian politics is suffering from lack of unity of interests under the inf... of castes. This will be sharpened with linguistic states. India is bound to m... disintegration if suitable amendment in our constitution is not made and a national cons... on one official language is not accepted and enforced. In order to promote education ... untouchables Dr.B.R.Ambedkar"sset up hostels for untouchable students at different ... like Panvel, Pune, Nasik, Sholapur, Thane and Dharwad with donations and gran... district and local authorities. Having free facility of boarding to the hostel inmates, these ... open to untouchables students, apart from financial constraints social and cultural stigm... affected full development of their personality in the Hindu dominated colleges. The ... Dr.B.R.Ambedkar"s wanted to set up separate institutions for the untouchables ... established the People"s Education Society in July 1945.

The main Objectives were to:

1) Search after the trust

2) Start, establish and conduct educational institutions or give aid to such institutions.

He repeatedly emphasised the need to explode the myth created by Hindu ortho... that theUntouchables were incapable of learningWith the constant struggle ...

B.R.Ambedkar"s, due to some of reasons education and literacy among the people nging to these castes and classes is very low. The problem is likely to continue for quite e time, unless serious efforts are made to remove these hurdles and obstacles. Much ntion is already being paid, but distance to be covered is very long. The government is ng scholarships liberally to these students. They are encouraged to go abroad for higher ies. Even in India for admission to professional and nonprofessional courses percentage arks is kept low. Separate girl hostels have been opened for them. Book banks have been d and all hurdles which stand on the way of nonutilisation of educational facilities by e removed

lusion:-

Ambedkar has deliberately included Article 45 in the Directive Principles of State that, "the state shall Endeavour to provide, within a period of ten years from the ncement of this Constitution, for free and compulsory education for all children until complete the age of fourteen years." The government of India has passed the bill of to Education Act 2008 and paid a great tribute to the contributions of Ambedkar tomass ion. The policy of the Government of universalization of elementary education ng particularly on marginalized groups, poorer sections and the girl child, enhancing ment in secondary education as well as its commitment to expand education facilities mpower and equip youth to face the future with hope and confidence. There are several nges to cherish Ambedkar"s vision of universal education. There is need to frame such es starting from the primary stage to the higher stage that help to realize the vision of kar.

erences:

Babasaheb Ambedkar: Writing and Speeches, Vol II, pp. 40-41

Babasaheb Ambedkar: Writing and Speeches, Vol XIX

Dr.Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches, Vol. I, p. 15, Bombay: The Education Department, Government of Maharashtra, (1979)

Dr.Babasahab Ambedkar Writings and speeches Bombay 1979, Vol.14, part 2.

Dr.Navjot - Education and Vulnerable Communities- Reading B.R. Ambedkar's Visionhttp://ijellh.com/education-and-vulnerable-communities-reading-b-r-ambedkarsvision/ 2-10-2016 2-25pm

Ambedkar, B. (1995).Writings and Speeches, 14(1) Education Department, GovtofMaharashtra

Dhavaleshwar C U and Banasode, C.C. (2017), Dr. B R Ambedkar as a Social Worker for the MarginalisedSections, International Research Journal of Human Resources and Social Sciences 4 (10), 344-350.

Salagare, M..B. (2017).Dr. B. R. Ambedkar"s Views on Dalit Movement (September 28, 2017). International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS), 7 (9), Available at https://ssrn.com/abstract=3061050

Sr. No	Research Topic	Author	Pg
1	Damming The Rivers : A Revolutionary Insight In Water Resource Management pioneered by Babasaheb B. R. Ambedkar, Enlightened One Towards Nation Building During 20th Century in India (An Economic Study in Historical Perspective)	Dr. Indira P.	1
2	Dr. Babasaheb Ambedkars Perspective of Human Rights and Nation Building	Dr. Santosh Wagh	6
3	Expectations of Ambedkarism from us	Dr. Santosh Bansod	12
4	Independent Labour Party and Dr. Ambedkar	Dr. Vasant P. Dongare	15
5	Dr. Babasaheb Ambedkar and His Philosophy	Dr. Chandrakant Kadgaonkar / Dr. Jayamma B.	18
6	Dr. Babasaheb Ambedkar's Role in Women Empowerment	Dr. Rahmanand M. Tayade	21
7	Basic Philosophy of Indian Constitution and Challenges	Dr. Nirajkumar D. Ambhore	26
8	Caste System the Biggest Obstacle in Nation Building: Dr. B. R. Ambedkar's Perspective.	Dr. Manish B. Wadive	31
9	Dr. Babasaheb Ambedkar: The Architect of Water and River Navigation Policy and his Contribution	Seema Gholap	35
10	Dr. B. R. Ambedkar's Thoughts on Family Planning	Dr. Kishor N. Ingole	41
11	Dr. Bhimrao Ambedkar as an Economist	Prof. Sangita Virendra Damore	45
12	Role of Dr. B. R. Ambedkar in Education System of India	Dr. Harshal R. Nimbhorkar	48
13	Dr. Babasaheb Ambedkar's Theory and Practice of Emancipation through Education	Dr. Jagdish Chhaburao Sonawane	52
14	Conceptualising Social Discourse Of Freedom In Baby Kamble's *The Prisons We Broke*: A Self-Affirmation	Dineshkumar Ukandi Shinde	65
15	Need of Ambedkarism in Current Scenario	Dr. Shyam Prakash Deokar	70
16	Contribution Of Dr. B. R. Ambedkar Towards The Nation Building As An Educationist	Dr. Punam Rajsingh Pardhi	73
17	Dr. BabasahebAmbedkar: The Pioneer of Women's Liberation	Dr. Sujata H. Gaurkhede	77
18	Dr. B. R. Ambedkar's Thoughts on Social Democracy	Dr. S. Manthai	80
19	Political Party System and Dr. B. R. Ambedkar	Prof. Dr. Anand C. Wele	84
20	The golden views of Dr. B. R. Ambedkar- the great economic philosopher and Emancipatory Economist	Dr. Sandip Bhimrao Dongare	88
21	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे अर्थशास्त्र विषयक विचार	ज्ञानेश्वर विश्वनाथ रोकडे	90
22	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक लोकशाहीतरील विचार	कविता बोदुळे	96
23	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा पाणी व्यवस्थापनाचा दृष्टिकोन.	प्रा. डॉ. कैलास गायकवाड /	101

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Ba...

LIBRARIANSHIP
&
SOCIAL NETWORKING



LIBRARIANSHIP & SOCIAL NETWORKING

Ganesh Kulkarni
Vaishali Khaparde
Santosh V. Ghage

CURRENT PUBLICATIONS, AGRA-282010

LIST OF CONTRIBUTORS

Dr. Rajendra Madhukar Marwade
Librarian
Premraj Sarda Mahavidyalaya
Patrakar Chowk, Nagar- manmad Road
Ahmednagar 414 001, Maharashtra
Email: marwaderajendra@gmail.com

Prof.K.D.Guldagad
Librarian
BabujiAvhadMahavidyalaya,
Pathardi, Dist.Ahmednagar
kiran_guldagad@rediffmail.com

Dr.Harshal R.Nimbhorkar
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera-Amravati

Dr. KhapardeVaishali S.
Professor and Head
Dept .of Library & Information Science
Dr.BabasahebAmbedkarMarathwadaUniver,
Aurangabad (MS) India
Email: khapardevaishali@gmail.com

Dr. Ganesh **Kulkarni (Takarwankar)**
Librarian
Shri Sant Savata Mali Gramin Mahavidyalaya,
Phulambri , Dist Aurangabad, Maharashtra.
Email: ganeshkulkarni364@gmail.com

First Edition, 2022
ISBN - 978-93-91542-78-8

© Publisher
All right reserved. No part of this publications may be reproduced in any form with out the written permission of publishers.

Price : 1250/-

Published By :
Current Publications
A-15 Kalakunj, Maruti Estate Road,
Opp. R. D. Public School
Maruti EState, Shahganj Bodla Road,
AGRA-282010
Mob : 09457780387, 07017544862
E-mail : Currentpublications001@gmail.com

Laser Typesetting By :
Sunil Computer
AGRA-20

CONTENTS

Preface iii

List of Contributors v

1. Role of Social Media For Librarians: A Study. 1-13
Dr.Harshal R.Nimbhorkar

2. Role of Social Networking in Modern Innovative Library Services. 14-24
Hafijull Mondal

3. SNSs Practise in LIC@ Digital AEON. 25-38
Mrs. Sucheta Chandanshive
Mr. Atul R. Chandanvandan

4. Social Media and Applications in Libraries 39-54
Kulkarni Rahul

5. Scholarly use of Social Networking Sites Among the Post Graduate Students, Pemraj Sarda College, Ahmednagar: A Study. 55-72
Dr. Rajendra Madhukar Marwade

6. Librarianship And Social Networking tools. 73-84
Ms. Khandale Deepjyoti N.
Dr. KhapardeVaishali S.
Ms. BawaskarSangeeta S.
Dr. Ganesh Kulkarni

7. Social Networking websites: An Overview. 85-95
Bhagat Meenakshi Pandurang
Prof. Dr. Vaishali Khaparde

1

ROLE OF SOCIAL MEDIA FOR LIBRARIANS: A STUDY

Dr.Harshal R.Nimbhorkar
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera-Amravati

Abstract: The rapid progress and development of social media and its associated tools have made things easy for the library staff and library professionals. Social media is the fastest tool of communication in today's world, where everyone can reach the other within a click. At the same time, the library professionals are getting familiar with social media and its related tools to apply in their respective libraries. The library professionals are creating a virtual platform using Social media to interact with their users and social media is also helping to reach out to the targeted audiences and customers. Social media is being by librarians to make their library users and use social media for the marketing of their sources and services. Several factors are influencing the use of social media in the libraries because the library professionals think that social media is the best choice to bring library users nearer. Besides these facts there are massive numbers of challenges and issues are facing by the library professional while using social media in their respective libraries. These hurdles and issues should

be resolved for better and reliable use of social media in the libraries. Library professionals use social media to share information with their potential users. This paper has highlighted some of the aspects of social media e.g. usage, factors and issues, challenges in the use of libraries.

Keywords: Social media, Librarians, Digital, ICTs, Network

1. Introduction

The present age of the digital world has changed the course of the individual and collective thinking of the people as well as the mindset of the service providers. The rapid growth of ICTs and its associated aids has changed the living standard of human beings. ICTs made several revaluations in term of social media and others same media of communications. at the beginning of computer and internet the people thought that this is biggest things to use for their lifelong working but at the inception of social media, the people saw a massive change in the mode of communication. Social media makes things easy to connect, share and receive information from one end to another end of the world. Even though this media of communication has changed attitude, thinking and perception of service providers throughout the globe.

The social media has finished the discrimination of communication from the community and it provides the way to access the learned society and make them aware of the access to the library sources and services from their home. Moreover, social media is providing the techniques to the librarians to make things easy to market their sources and services to their targeted audiences. These social media are, LinkedIn, My Space, web.2.0, Blogs, WhatsApps, QQ, and We chat and LIS professionals are using these social media to interact with their users at remote locations and marketing their products addressed that twitter is the type of social media that allows

library professionals to create a platform to access library resources and services. Additionally, the Library Professionals are trying to use a suitable and convenient means of communication to fulfill the needs and wants of library users.

The number of libraries in the world is using different social media to bring library users to nearer library sources and services. found that Librarians are using social media for professional development in their respected areas of interest. Moreover, the present age social networking sites are meeting the need of library professionals to prepare themselves for overcoming challenges in their fields. Library professionals should have skills and knowledge to develop them to meet the needs and wants of the library users in the future. added that social networking technologies are creating a virtual environment changing the method of communication among library users and library professionals. Furthermore, in the current age of social media usage library professionals are getting familiar with the demand of library users. On the other hand, the utilization and adoption of social media in the libraries are making a big difference to cope up with the issues and challenges society. Facebook is the most popular network among librarians followed by Twitter and blogs



Figure 1.)

Figure 1.Source: https://www.smartinsights.com/social-media-marketing/social-media-strategy/new-global-social-media-research/

2. Social Networks Sites

The present age of information explosion has encountered the mindset and thinking of human beings. Everyone is running behind the information, but they have no idea how to collect the information and shared the information from one to one and one to many at one time. Besides these facts, the present age of information ICTs and its related aids has changed the role of information professionals. Furthermore, ICTs has made tremendous achievement in the shape of generating the social networks sites for exchanging the information one end to another end. According to Wikipedia (2019) "Social media may have roots in the 1840s introduction of the telegraph, which connected the United States". Social media has created an environment where everyone can access the information, share the information and disseminate the information. Additionally, there is a number of social networks has been launched and some of them are very much popular throughout the globe like Facebook, Twitter, YouTube, WeChat, Instagram, QQ, QZone, Weibo, Twitter, Tumblr, Telegram, Baidu Tieba, LinkedIn, LINE, Snapchat, Pinterest, Viber etc. social media creates an effective platform to make people access and share their information with other people with far distance. Social media helps the library professionals to make things easy for them and for their readers to increase their capacity to build good relationships among library staff and library users. Social media like Facebook helps the library professionals to create an account to promote their library sources and services. Facebook provides platforms to market their source s and service effectively and efficiently.



Figure 2:S ource: https://www.smartinsights.com/social-media-marketing/social-media-strategy/new-global-social-media-research.

Likewise, Twitter is playing a vital role in the promotion ...brary sources and services. Today in the modern age of ...s the social media is the cheapest source for marketing the ...ary sources and services. Additionally, Social media have ...fferent aspect to share news and views about the library, ...mmunicate different events and create an environment for ...ctive service to their library users addressed Facebook is ...e best tool to promote library sources and services and ...vides a platform to market library sources and services with ... expenditures. Furthermore, Facebook helps the library staff ...dvertise their product and maximize the use of their sources ...d services to the potential users .

2.1. **Definition of social media**

1. Social media is a collection of Internet-based communities that allow users to interact with each other online. This includes web forums, wikis, and user-generated content (UGC) websites.
2. Websites and computer programs that allow people to communicate and share information on the internet using a computer or mobile phone

2.2. Definition **of facebook**

1. Facebook is a popular free social networking website that allows registered users to create profiles, upload photos, and video, send messages and keep in touch with friends, family, and colleagues.
2. An online community that allows individual users to create personal profiles, share photos and videos, and post on each other's profile pages, or "Timelines."

2.3. Definition of **twitter**

1. An Internet service that allows people to publish quick updates and see posts or "tweets" of other users they are following in real-time. of LinkedIn

4. A professional networking website that allows users to create profiles, post resumes, and communicate with other professionals and job-seekers of Pinterest.
5. An online community that allows users to share ideas and photos with others by "pinning" items and describing them on their profile pages.

2.4. Definition of MySpace

6. My Space is an online community that allows friends to keep in touch and meet new people as well. It started as a website that bands could use to promote their music but has since grown into a more general community of friends.

2.5. Definition of Instagram

1. Instagram is an online photo-sharing service. It allows you to apply different types of photo filters to your pictures with a single click, and then share them with others.

2.6.Definition of Blog

1. Short for "Web Log," this term refers to a list of journal entries posted on a Web page. Anybody who knows how to create and publish a Web page can publish their blog.

2.7.Definition of Wikis

1. A wiki is a Web site that allows users to add and update content on the site using their Web browser.

2.8.Definition of Web 2.0

1. Web 2.0 is a term that was introduced in 2004 and refers to the second generation of the World Wide Web.

2.9.Definition of Twitter

1. Twitter is a micro blogging and social networking service on which users post and interacts with messages known as "tweets". Tweets.

3. Role of Social Librarian related works

Librarians' awareness of social media usage for informal scientific communication in university libraries in south-south,

Nigeria. The author used the survey method and questionnaire to collect the data and descriptive research method. He has collected data from 284 librarians. The response ratio of the research was 71% because out of 284 respondents 202 were returned with proper responses. The result of this study has revealed that the majority of the librarians were fully aware of the use of social media. On the bases of these findings, the author has suggested that the library administrator should provide the social media tools for better communication and librarians should be well aware of the importance of social media while in communicating.

investigated the influence of social networking sites on library and information centers. They focused on the latest development in the library and information centers in terms of information transformation. They find out that the present age every library is connected with a different type of social media to minimize the gape among libraries and users. They mentioned some of the most popular social media like Facebook and twitter etc. examined the social networking technologies in the digital environment its possible implications on libraries. He investigated that social networking sites are making things easy for library users to interact with other library users to get connected in the world using the web. He examined different social software and their usage in the libraries but finally, the author he found out the web 2.0 is suitable social software for the libraries to interact with their users.

studied how libraries use social networking sites to interact with users. They probed that the adoption of social networking sites is increasing day by day at a great pace. They further added that besides these facts the participation of the library users in the social networking sites is very little. They investigated some major social network sites Facebook, Twitter and Yahoo about the sharing, dissemination, communication,

and gathering of knowledge and information. They used mix methods to complete this research.

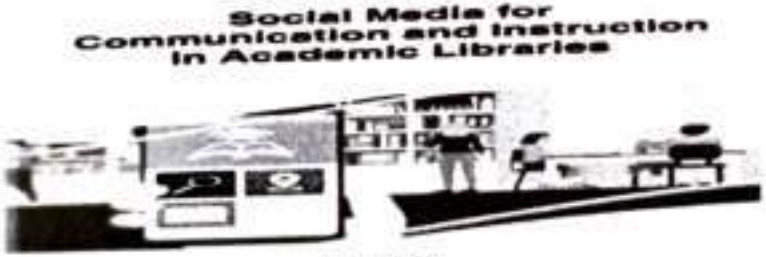
4. Factors of Usage of Social Media in the Libraries

The social media is playing a pivotal role to reach out the potential customer and users. The massive number of information has been transferred from the last four to five decades from one pole to the other pole of the world. The social media is the biggest change of the 21st century and it is growing rapidly. Millions of information are being shared one to one, one to many at the same time on the same channels. The libraries are looking forward to using social media to fulfill the requirement of their users. Social media gained several factors of usage in the libraries to disseminate the information within a quick time. [20] some of the purposes that meet the library user's needs and this will help to reach out to the new customers. Furthermore, he discussed that social media build library image and modernize the library.

Mentioned that social media is the technique or tool to make things easy and it is the vital source to share and receive the information. Facebook is the best tool to accommodate strong positive impact SMEs and positive relations with the non-financial performance of SMEs Social media is providing the best tool to reach library users where they can share and receive their information without any trouble. Additionally, social media is putting a great impact on libraries. LIS professionals are getting familiar with social media to create a flexible environment to reach potential library users. social media is putting a massive impact on libraries and information centers to promote library services and sources. Several social media bring all the library users community together on one spot to share their ideas and views about their relevant and specific information. Furthermore, social media is providing massive space to the library professionals to create a virtua

environment to enhance the library service providing capacity. addressed that the use of social media is making things for library professionals to reduce the gap between library users and library resources and services. Moreover, social media expanding their use in the libraries because of the library approach have given remarks about the social media that will facilitate the library professionals to achieve their library goals and objectives.

Likewise, social media will help library professionals to make their services effective and efficient. Social media will establish a bridge between library users and library resources. Similarly, the fourth law of library sciences told about the saving time of library users. So, the present age of ICTs social media a powerful tool to engage the library users from remote locations to the library resources and services. It can be said that there are number of factors of using social media in the libraries and information centers. so, those factors can be interaction with potential library users, marketing of library sources and services, sharing and receiving the information, searching for new library users, save the time of library users, achieve the library goals and objectives, create an effective environment, improve the library images, etc



(Figure 3).

Figure 3:Sources: https://www.kobo.com/gr/en/ebook/social-media-for-communication-and-instruction-in-academic-libraries.

5. Issues and Challenges use of Social Media in Libraries

Investigated the challenges at the usage of social media in the Nigerian university libraries. They indicated some of the major issues and challenges that are creating problems with the use of social media in the said study population. They mentioned some of them as follows lack of financial support, lack of authority support, lack of cooperation among the library staff, no knowledge of social media and its tools and lack of expertise of ICTs and lack of getting feedback from library users. Furthermore, it can be said that these challenges are genuine that encountering the use of social media in libraries throughout the globe. Today, the world has become a global village and everyone is access to the internet connecting to other people via social media. The librarians and LIS professionals are trying to make a bridge between the library sources, services and library users via social networks. addressed the challenges of the use of social networking sites in the libraries. They identified some of the challenges and issues of lack of training of library staff, lack of government or authority supports copyright issues. Furthermore more, these issues should be resolved until the librarians cannot use social media for the promotion of library sources and services.

Conclusion:

The recent past social media growth comes at the peak. Social media is the most promising tool to interact with other remote located peoples. Besides these facts, social media are providing a new and excellent platform to the library professionals to reach out to their potential library customers to fulfill their needs, wants and demands. Social media is the point of access where every individual library users can get their demand within a click addressed social networking sites are the technologies that are offering new methods of access to latent customers. Likewise, social media helps the librarians

their services effective and convenient. The most popular social media like Facebook, Twitter, LinkedIn, and what are the best tools for library staff to promote their library services and sources make their opinion about web 2.0 that the majority of the libraries are applying this social media tool to share and provide information services to their online clients. Furthermore, librarians are personally taking an interest in using social media to bring people to know about their sources and services [30] searched the marketing library services through Facebook groups. Library staff is using social media for the marketing of library sources and services. Social media can be a better choice for the library to adopt these tools and make them accessible through the globe. Social media would play an important role to change the role and responsibilities of the librarians what we called today cyprian.it would be suggested that every librarian is to apply social media to promote their sources and services.

REFERENCES

Abrizah MYI, Abrizah A (2019) Social media engagement in developing countries: Boon or bane for academic libraries? Information Development 35(3): [illegible]

[illegible] (2009) Marketing library services through groups. Facebook. Library management 30(6/7): 469-478.

[illegible] NK (2015) Use of Web 2.0 technology by the [illegible] universities of India: A survey. In International Conference on the Convergence of Libraries, Archives and Museums: Innovative Ideas, Library Professional Association, New Delhi, India, pp. [illegible]

[illegible] Chanda A (2018) WhatsApp means sharing information among Lis professional of North East India. [illegible] International Journal of Research in Applied [illegible]

Sachin KV (2014) Impact of use of social networking sites on libraries. Knowledge Librarian 1(1): 116-124.

Zhang M, Sheu F. (2018) Understanding twitter use by major LIS professional organisations in the United States. Journal of Information Science 44(2): 165-183.

Mishra C (2008) Social networking technologies (SITs) in digital environment: Its possible implications on libraries, India.

Mishra C (2008) Social networking technologies (SITs) in digital environment: Its possible implications on libraries, India.

Vatter Z (2016) Using social media for libraries. For the peace library system, p. 1-4.

Chan C (2012) Marketing the academic library with online social network advertising. Library Management 33(8/9): 479-489.

Cloo (2018) Librarians 'awareness of social media usage for informal scientific communication in university libraries in south-south, nigeria. Library Philosophy and Practice 1-35.

Prabhakar SV, Rani SVM (2017) Influence of social networking sites on library and information centres. International Journal of Library & Information Science 6(1): 83-87.

Muruli N, Gireesh Kumar TK (2013) Marketing of library services and products through social media: An evaluation, India.

Onuoha UD (2013) Librarians' use of social media for professional development in Nigeria. Information Management and Business Review 5(3): 136-143.

Sachin KV (2014) Impact of use of social networking sites on libraries. Knowledge Librarian 1(1): 116-124.

Ainin S, Parveen F, Moghavvemi S, Jaafar NI, Mohd Shuib NL, et al. (2015) Factors influencing the use of social

media by SMEs and its performance outcomes. Industrial Management & Data Systems 115(3): pp.570-

(2013) Social networking tools for academic Journal of librarianship and information pp.64-75.

Taylor and Francis (2017) How libraries are applying social Content & Communications Team, USA.

●●







Dr. Ganesh D Kulkarni (Takarwankar) is graduated from Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad and hold MLIS Degree From Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad In the year 1998. He was Awarded Ph.D in Library and Information Science in the year 2009. He has been Honored and Awarded by Akhil Bhartye Shaishnik Mahasangh, Shiksha Samman Purakar 2019, 2021,and Lions club Of Midtown Aurangabad Gunvarya Award 2021-22. He is currently working as Librarian (Associate Professor Scale) Shri Sant Sena Maharaj Gramin Mahavidyalya, Phulambri Tq. Phulambri Dist. Aurangabad (Maharashtra) since 2003. He has 18 years Experiences in Librarian & information science profession. He has contributed many Articles and Research paper in Reputed International And national Journals and Conference Proceedings he is the Life Member of Indian Library Association (LA). Area of interest are Collection Development, and Library and Society is also working as a guest Lecturer at Yeswshwantrao Chavan Open University, Nashik ,for B.Lib. Inf Sci. and MLISc. since 2003. Also he has three Books published. 1) Collection Evaluation by Vikas Prakashan Kanpur, 2013 ISBN: 978-93-81317-80-3,(2013) 2) Advances in Library Science in the Digital World By Current Publication Agra. ISBN: 978-81-94535-3-7,(2020) 3) Advances in Library Services in the Modern Era ,by Current Publication ,Agra ISBN: 978-81-945395-2-0,(2020). He is trying to take the profession a height of repute with his efforts.



Dr Vaishali Khaparde Working as Professor and Head , Dept of Library and Information Science, Dr Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad (Maharashtra) India, and former Management Council Member,Dr Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad. She is Chairman, BOS Library and Information Science. She has total 25 years of teaching Experience for Post Graduation. She Has published more than 250 Research Papers in various National and International Journals, Presented 128 Papers in National as well as International Conferences. She has to her credit 14 Books .She has H-Index 10 and i10- Index 13 with 377 citations received.

She is the member of BOS Library and Information Science, Pune University, SNDT University, Mumbai, and Shivaji University, Kolhapur. She is the Chief Editor of World Research Journal of Library and Information Science ISSN: 2278-702X & E-ISSN : 2278-7038 and an Associate Editor of National Journal i.e The Horizon: A Biannual Research Journal ISSN 2229-4554 , and Associate Editor of Bonfring International Journal of Data Mining ISSN: 2277-503X(online) ISSN: 2250-1053(Print). She worked as a Guest Editor for World International Journal of Library and Information Science , Bio-info publications . She is the member of Library and Information Science Forum of International Researchers of American Research Institute for policy Development, UK.

She has been honoured by the Research Professor Award for the year 2016-17 by Dr Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad. She has been honoured by the "International Gold Star Award "in 2011; she has also been honoured by national awards "Bharat Jyoti Award" and "Best Citizens of India Award "in 2011. Kartabgar Mahila Puraskar by the Maharashtra State OBC Association 2012 and Dhammakanya Puraskar by Maharashtra State Samrat Association 2012. She was the Course Coordinator of Five Refresher Courses in Library and Information Science as well as coordinator of Training programmes in Library Automation and Coordinator of the ICSSR, New Delhi sponsored Research Methodology course for Ph.D students.



Mr. Santosh V. Dhage He has pursuing Ph.D degree from Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad (Maha) India. He joined the Vasantrao Naik Marathwada Krishi Vidyapeeth, Parbhani (An Agricultural University) and was posted at University Library in 2008. The Author is now working as a Librarian at College of Agriculture, Badnapur, District Jalna (Maharashtra) which is constituent college of Vasantrao Naik Marathwada Krishi Vidyapeeth, Parbhani (An Agricultural University)

₹ 1250/-

LIBRARIANSHIP & SOCIAL NETWORKING



GANESH KULKARNI
VAISHALI KHAPARDE
SANTOSH V. DHAGE

8. Tools & Technology of SNS: An Overview. 96-110
Madhuri Sharad Suryawanshi
Dr. KhapardeVaishali S.
Mr. Dhage Santosh V.

9. Popular Social Media Sites: Impact On Society 111-124
Dhande V A.
Prof. Dr.Khaparde V.S.

10. Challenges And Opportunities With Big Data. 125-134
Mr. Gajbe Sumedh Shamrao

11. Libraries with Web 2.0 Technologies: Current scenario. 135-148
Dr. Smita Shamrao Patil
Dr. Satish L. Padme

12. Effective Use of E-learning Resources by Engineering Students inCovid-19 Pandemics 149-160
Sunita Pawar
Nilesh J. Uke

13. Use of Web 2.0 Tools In Libraries. 161-172
Dr.Harshal R.Nimbhorkar

14. Open Source Software Use In Libraries: An Overview. 173-185
Rohini Giridhari Landge
Prof. Vaishali Khaparde
Mr. Dhage Santosh

15. Adaption of Web2.0 Application in Academic Libraries. 186-201
Mr. Gajbe Sumedh Shamrao

13

USE OF WEB 2.0 TOOLS IN LIBRARIES

Dr. Harshal R. Nimbhorkar
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera-Amravati

Abstract: *This paper deals with web 2.0 and its tools in the context of the libraries and information centers. Web 2.0 is like human. The theme of web 2.0 is a founder of theme 2.0 and it influenced the library services too. The web 2.0 could be seen as coequally part of the evolution revolution. Through it, users will see the face of the library and librarians will guide them via electronic methods. On the one hand it extends much of what we have been doing for years through the use of standards such as HTML, URLS and HTTP and ubiquitous web browser. On other hands it challenges the outdated attitudes towards the right of users, their choice and improvement. The advent of web 2.0 and its tools provide better library services in the present era.*

Key Words:- Web 2.0,Information,Library,Computer

1. Introduction :-

The exchange of thoughts, messages, information from one person to another person is called communication. In earlier time communication can be done through signals, speech or written but Due to rapid growth and development in technology the new medium of communication were evolve

that we called electronic medium or information Communication Technology (ICT). In the 1950's the evolution of computers have changed the whole scene of communication. In 1960's the computer were used in the sharing of information in research and development, scientific area, and in military. The account of Internet began with the growth and development of computers. In the late 1960's The Leonard Klein rock from DARPA (Defense Advanced Research Projects Agency) developed the theory of Packet Switching which was to form a basis of Internet connections. The Lawrence R. of MIT connected a Massachusetts computer with a California computer in 1965 over dial-up telephone lines. It shows the possibility of wide area networking. There after the origin of web.

The advancement of web 2.0 and its tools (such as Blogs, wiki, tagging and Social Bookmarking,Multimedia Sharing audio blogging and Podcasting, RSS and Syndication, Mashups and social networking sits etc.) and their use in providing better library services in the present ICT era. These tools adds more advantages to the library users and opens opportunity to the library and information centers that how they can cope the present needs of the users communities. 2.0 was coined by Tim 0' Reilly and Dale Dougherty of O'Reilly media in 2004 to describe the trends and business model that survived the technology sector market crash of the 1990. Web 2.0 essentially not a web of textual publication but a web of multi sensory communication. It is a matrix of dialogues not a collectionof monologues. Web 2.0 principles and technology offer to libraries many opportunities to serve their existing audiences better and to reach out beyond the walls. It is a user centered web.

*Web 2.0 is defined in different way by different people like:

a) Community driven on-line platform or an attitude rather than technology (Downes, 2005)
b) It is a technology (Franklin and Van Harmelen, 2007)
c) Second generation of web based tools and services (Guntram, 2007)
d) This is a new way of living as the" always on" culture (Bryant, 2007)

The term web 2.0 is associated with web application that facilitate participatory information sharing, inter operability, users centered design and collaboration on the World Wide Web. Examples of web 2.0 tools are Blogs, wiki, tagging and Social Bookmarking, Multimedia, Sharing audio, blogging, Podcasting, RSS & Syndication,Mashups and Social Networking Sits etc. Web 2.0 is among the popular buzzwords in blogosphere and social media today. Still there is no proper, exact and standard definition for web 1.a and it is the term given to describe a second generation of the World Wide Web that is focused on the ability for people to collaborate and share information online. The web 2.0 is basically refers to the transition from static HTML web pages to a more dynamic web that is more organized and it is based on serving web applications to users.

* The most significant characteristics of web 2.0 services are:

a) User oriented design
c) Web as platform
e) Power centralization
g) Rich user experience

1.1 .Key Features of Web 2.0:

b) Crowd sourcing d) Collaborative f) Dynamic Content

With the change in technology the web has entered in a more advanced stage known as web 2.0. The Web 1.0 allows users to read or view the information but web 2.0 allows users to read, write, save and produce the content on the web. Some

experts say that it is new version of web but others says that it is the application of web 1.0

1.3.Some key features of web 2.0 are as follows:

It allows users to arrange their information according to their needs and wants; this is also known as social tagging. - The web2.0 has rich user experience because it uses AJAX (Asynchronous JavaScript + XML). - The traditional web model was one way in which the information provided by the site owner and the users are the ultimate receivers but in web 2.0 the users also contribute in the information production by the means of evaluation, review and commenting, etc. In traditional web the information was only provided by the site owner but in web2.0 the participation of users is compulsory. The web 2.0 contents are easily shared, reuse, redistributed and edited. The single information may be accessed or shared by the multiple users through sharing, hyper linking, tagging, etc.

2. Library 2.0:

Library 2.0 describes as a subset of library services designed to meet user's needs caused by the direct and peripheral effect of web 2.0 services leveraging concepts of the read/write web, the web as platform. The long tail, harnessing collective intelligence, network effects, core datasets from users contributions and light weight programming models (Habid, 2006). The principles of library 2.0 seek to put users in touch with information and entertainment wherever they may be breaking down the barriers of space time and out dated policy. It is a user oriented paradigm focusing on knowledge, experience, collaboration, the creation of new content (library 2.0 LIS Wiki, 20 II).

Thus library 2.0 is a transformation of the way of library services which delivered to the library users. It promotes new tools to make library space (both virtual and physical) more interactive collaborative and driven the community needs. It

encourages collaborative two way- social interaction between library staff and library users. It requires the users participation and feedback in the development & maintenance of Library services.

2.1. Element of Library 2.0:

The theory of library 2.0 could be understood to have these four essential elements:

1. It is a user centered: Users participate in the creation of the content and services they view within the library's web presence, OPAC, etc. The consumption and creation of content is dynamic and thus roles of librarians and users are not always clear.
2. It Provide a Multimedia Experience: Both the collection and service of library2.0 content video and audio components. While this is one cited as a function of Library 2.0. It is here suggested it should be. 3. It is socially rich: The library's web presence includes users' presences. There are both synchronous (eq. 1M)and a synchronous (eq. wikis) ways for users to communicate with one another and with librarians.
1. It is Communally Innovative: It is perhaps the single most important aspect of Library 2.0. It rests on the foundation of library as a community service but understands that as communities change, libraries must not only change with them, and they must allow users to change the library also. It seeks to continually change its services, to find new way to allow communities not just individuals to seek, find and utilize information.

2.2. Web 2.0 and Libraries:

Web 2.0 is a next generation of web services which offers more services on comparison to traditional web. Traditional web have only web sites and search engines like facilities but web 2.0 is a two way shared network that were used in every

place. Traditional web have great effect on the libraries but it seems that the web 2.0 have much more impact on libraries. It revels the gaps between the libraries and the users, if the tools of web 2.0 and the existing services of libraries were used together then the libraries succeed to provide better and new services to their users at present scenario. Technologies are the tools through which libraries provides services to their users and satisfy their users needs, as the time changes technology changes, when technology changes there is change in the form/ way/style in the demand of the users. To satisfy the demand libraries, we have to adopt new technologies. In the era the web 2.0, it's needed to be opted by the libraries. With web 2.0, the collection of library become virtual collection and library become without walls. The traditional library read only catalogues will become Amazon style where the user's comments, reviews and feedbacks will be used for enhancing the catalogues. The information is viewed as a two way process where the users search, , investigate and participate in the creation and re-mixing of new content

The web 2.0 focuses on users and how to attract the uses as information consumer as well as contributor. Webs 2.0 also give a lot of impact on reference services. With the help of web 2.0 library provide web based reference services in which web 2.0 tool (such as Slogs, social network sites etc.) can be used so that user can meet their information needs without ant tome and place limitation. There are many libraries in all over the world which offering services through their blogs and making blogs the most common channel for providing digital reference services. To be successful in our modem society, LIS educators should take advantage of this (web 2.0) new information & communication technology (ICT) and consider the learning performances of digital natives and digital immigrants. Web 2.0 is a participative and participation is seems to be on

the part of end users such as bloggers. Library use web 2.0 as a way to share information toencourage feedback from their patrons to highlight their services or new materials and more about opinions and input from users to collaborate on making their library the best.

3. Tools of Web 2.0 and Their Use in Libraries :-

3.1. **Blogs**: The term Slog or Web-log was first coined by Jom Barger in 1997 that means a simple web page which contains brief statements of entries, opinions, information, personal diaries, links, etc which called posts, arranged in chronological order with most recent are first. Most blogs offers their users to add a comments and exchange of comments, posts, etc are called Slogging. There are many people in the world engaged in blogging. As the technology became more complicated, bloggers have begin to use multimedia into their blogs and the starting of photos- blogs, video-blogs and facilitates uploading of multimedia contents and supports mobile phone (m-blogging) formats also so that users can access their blogs at anytime, anywhere. Libraries can create their blogs tells their users about the library and library services, their special collections, new arrivals, knows users problems, quick feedback to users queries, in house publications, current awareness services, etc.

3.2. **Wikis**: Wikis are the web pages or contains a set of web pages that are easily edited or updated

by the users. Wikipedia concept brings the idea of wiki, wiki pages have an edit options and the users can use the online editing tool to change the contents of the web page. It has history function through which users can easily restore previous versions or components of the wiki. There is restricting access to registered users only It facilitates libraries as a service through which interaction of users and libraries became more effortless.' Users and libraries share their information at

one place in the form of discussion, comments, criticism, photos, graphs, etc and after that these things were easily archived for further use or reference.

3.3. **Tagging and Social Bookmarking:** Tag means adding information to a digital object, so tags enrich the qualities of any digital object such as photos, videos, web pages, e-documents, etc.

User can easily add information to their digital objects online and make it more useful. Through Tagging things can be easily categorized or classified according to their characteristics. Social bookmarking allows users to create a list of bookmarks and favorites online, users can access these bookmarks from any corner of the globe, and after that user can easily manage, edit, store and categories the bookmarks. Through tagging libraries can easily tag their users or user's communities to their needy things. It acts as a cataloguing and classification of the e-resources and also acts as a reference service. Through tagging the librarians easily provide current awareness services, upcoming events, collection and database to the users communities.

3.4. **Multimedia Sharing, Audio Blogging and Podcasting:** Multimedia sharing means sharing of photos, videos, audios, etc among the users online, YouTube (video), Flicker (photos) anode (pod casts) are the famous multimedia sharing websites. The concept of writable web was justified where users are not only ultimate consumer but also participate actively in the creation of web contents. Millions of the users are sharing these multimedia contents. They can upload videos and photos directly through their camera and phones at anytime, anywhere. After that they can tag, manage, categorize, edit, and share their contents online. The term Podcasting was first coined by Ben Hamersley in a The Guardian article on 12 February, 2004. Podcasting are episodic audio recordings of

talks, interviews, lectures, etc which may be played on any online multimedia devices. A podcast is made by a creating an audio file with the help of sound recorder or other similar devices and uploading the file to the host server and making the globe aware of the created file by the use of RSS feeds. The podcasts users subscribe to the RSS feeds and get information about new created podcasts. Through multimedia sharing or streaming, audio blogging and podcasting, a librarian can easily share libraries instructions or orientation programs which may be operated online, libraries can organize multimedia chat rooms that act as virtual class rooms and archive these multimedia resources for further use.

3.5. **RSS and Syndication**: The first version of RSS was created by Dan Libby and Ramanathan V. Guha on March 1999 known as Rich Site Summary. In September 2002, Dave Winner releasers 2.0 and renamed as Really Simple Syndication. At that time there are various RSSformats due to issue of incompatibility and in 2003 new syndication system was projected and developed under the name of ATOM in order to clear the incompatibilities between RSSversions. Really Simple Syndication (earlier it was known as Rich Site Summary) is a family of web formats which permits users to get the update of the RSS enabled websites. Without visiting to the websites users get their updates. The updates are termed as feeds and were collected in feed format. Users have to subscribe for the RSS feeds and install a software tool know as Feed reader, aggregator, RSS reader, etc. These are web based, desktop-based and mobile based software applications. Whenever updates were made, the subscribed websites users were informed by the installed software applications. Libraries can create RSS feeds to their user's communities which shows the updates in the libraries collections, services, database, etc and get their feedbacks.

3.6. **Mashups**: Mashups is a technology that merges two or more services or technology to create anew service or technology. The value of present services or technology were increased by merging two or more service or technology which results in better service, growth and development in technology. Mashups have an active role in the evolution of Web 2.0.Thelibrarian can easily merge two or more than two library services to make user convenient such as any traditional services were mixed with any current online services which make new service.

3.7. **Social Networking** Sites: Social Networking Sites are those sites which allow their users to build social relations on the Web. It is the web based service which provides users to interact virtually and share their thoughts in the forms of comments, likes, messages, tags, etc. here users can upload photos, videos. Every user has their own profile describing their personal details. Through which users search others users and create a list of friends.If a library connects to a social network sites then a librarian easily get the users recommendations, interests, information needs, users information, and libraries can easily provides quick reference services, current awareness services, latest arrivals, rules regulations of the libraries, OPAC, etc.

Conclusion : The web 2.0 is an addition or update to the traditional World Wide Web Technology and it is a never ending process. Earlier times libraries were using World Wide Web services to provide many online services, with the advent of web 2.0 technology librarians use it as a tool to bridge the gap between the libraries and the users. With new and more interactive services the libraries can easily provide better services and attracts more users towards it and open the gates for the new opportunities for the libraries. Web 2.0 is a library response to the larger social technology changes going on right now. Some Librarians are noticing the change and are trying to figure

out how libraries can capture the good stuff of web 2.0 and use it to further serve our patrons. They have added a library centric name (Library 2.0) to larger concept that is appearing in our libraries. Web 2.0is influencing the way in which people learn & access information and communicate with each others in a participative manner.

REFERENCES

1. Firke, Y. S. and etc. (2012). "*Web 2.0 Technologies for Libraries". Future of Libraries in Digital Age;* KBD, New Delhi. Pp 80-84.
2. Singh, M. P. and etc. (2012). &quot *Library Behavior of Social Networks Linked to Web* 2.0". *Future of Libraries in Digital Age,* KBD, New Delhi. Pp 40-44.
3. Anderson, P. (2007). "*What is Web 2.0? Ideas, Technologies and Implications for Education". JISCTechnology and Standards* Watch, Pp 4-14
4. O'Reilly, T(2005),"*What is the web 2.0", Reference Review,* Vol21(7) Pp 5-6.
5. Miller, P(2005), "*Web 2.0: Building the new library".* Ariadne, vol -45, available at <http://www.ariadne.ac.uk/issue45/web2 .0/>.
6. Reilly, T(2005),"What is the web 2.0: Designs patterns and business models for the next generation ofsoftware". Available: http://oreilly.com/web2/archive/what-is-web-20.html#mememap (Accessed on 3August 2021).
7. Habib, Michael C. (2006). "Towards Academic Library 2.0: Development and Application of Library 2.0methodology". Pp 8, Available http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?oi+10.1.1.119.7866 amp;rep+ repl& type+pdf. (Access on 1August 2021).

8. Das, K.C. (2012). "Web 2.0 and Library 2.0: *The Challenge of Disruptive Innovation". Information Control and Management in Digital Environment. A festschrift in Honor of Dr KC Panda;* AtlanticPublication, New Delhi. Pp 119-124.
9. Islam, A. and Modabber, A.A. (2012). "Library 2.0) *The New Generation Library". Information Controland Management in Digital Environment: A festschrift in Honor of Dr KC Panda; Atlantic Publication, NewDelhi.* Pp125-136
10. Tapkir, Samanta etc. (20 10). "*Use of Blogs and Social Networking in Universities of India". Paperpresented in ETTLIS* 2010, Shimla, June 3-5.
11. Broughton, K. (2001). "*Our experience in online, real-time reference". Computers in Libraries. Vol-21(4).* Pp. 26-31.
12. Sood, S. K., Gupta, S., & Sharma, N. (2012). "*Web 2.0 Technology and Its Applications for PreparingLibrarian 2.0". Future of Libraries in Digital Age Future of Libraries in Digital Age; kbd,* New Delhi.Pp 74-79.

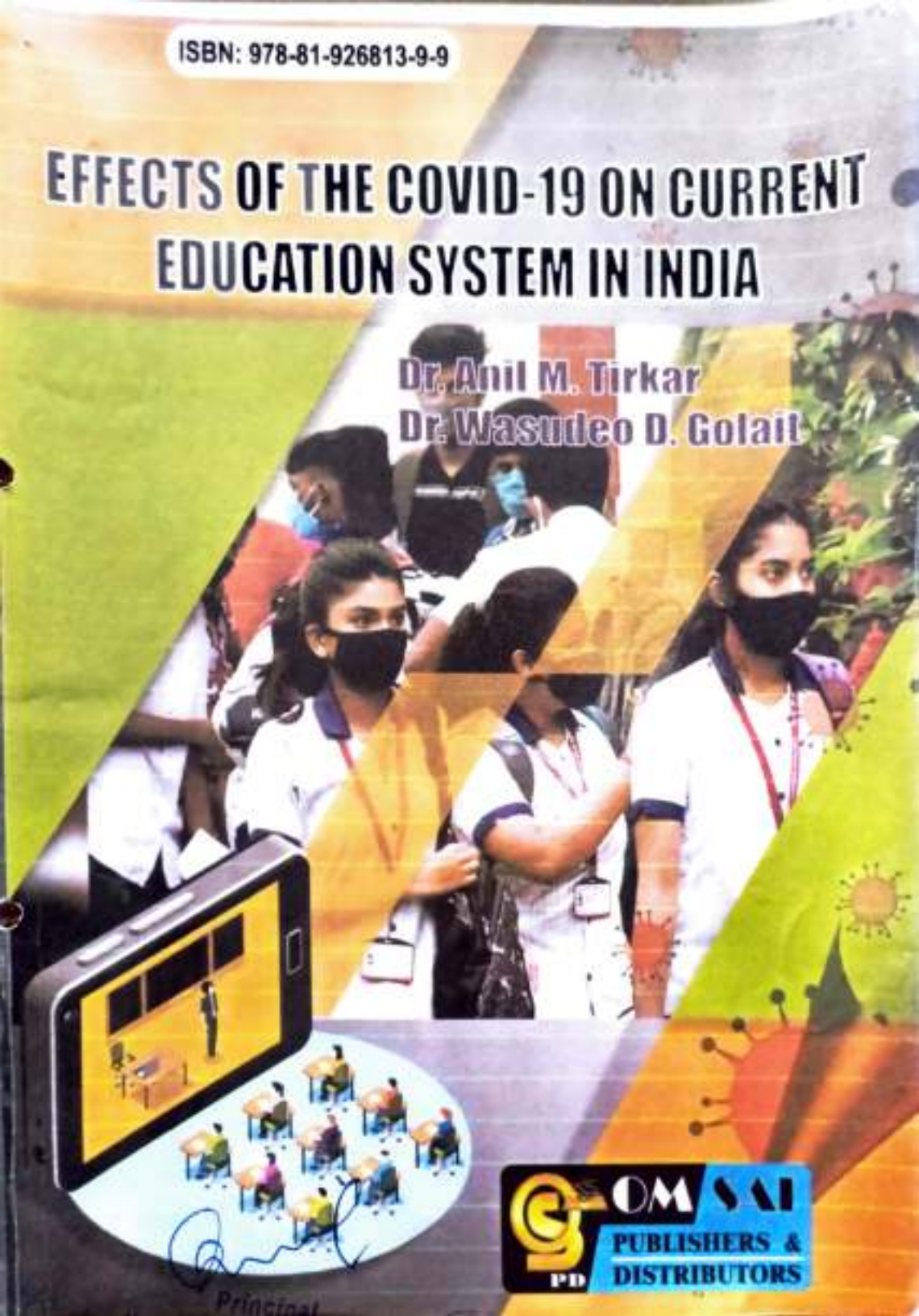
●●

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

ISBN: 978-81-926813-9-9

EFFECTS OF THE COVID-19 ON CURRENT EDUCATION SYSTEM IN INDIA

Dr. Anil M. Tirkar
Dr. Wasudeo D. Golait



OM SAI PUBLISHERS & DISTRIBUTORS

Contents:

Sr. No.	Paper Title	Written By	Page No.
1.	Impact Of Covid-19 On Education System In India	Dr. Harshal R. Nimbhorkar	1-5
2.	A Study Of Effects Of The Covid-19 On Current Education System In India	Mr. Bharat N. Ravan Mr. Datta N. Ravan	6-13
3.	Covid-19: A Boon Or Bane For Indian Education System	Dr. Gayatri S. Tiwari	14-21
4.	Impact Of Covid 19 On Conducting Final Year Exam	Mr. Manohar A. Wasnik	22-25
5.	Effects Of The Covid-19 On Current Education System In India	Dr. Vandana K. Mishra	26-31
6.	Effects Of Covid-19 On Current Education System In India	Dr. Pallavi S. Kale	32-36
7.	Importance Of Physical And Mental Health During Covid-19 Pandemic	Dr. Rakesh A. Badgujar	37-40
8.	Effects Of The Covid-19 On Current Education System In India	Dr. Nitin V. Deulkar	41-45
9.	Study Effects Of The Covid-19 On Higher Education System In India	Chandrakant B. Dhumale.	46-53

"IMPACT OF COVID-19 ON EDUCATION SYSTEM IN INDIA"

Dr. Harshal R. Nimbhorkar
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera

Introduction:-

The petrifying and severe impact of COVID-19 has shaken the world to its core. Further, most of the Governments around the world have temporarily closed educational institutions in an attempt to contain the spread of the COVID-19 pandemic. In India too, the government as a part of the nationwide lockdown has closed all educational institutions, as a consequence of which, learners ranging from school going children to postgraduate students, are affected.

Role of UNESCO:-

The UNESCO report estimates that the coronavirus pandemic will adversely impact over 290 million students across 22 countries. The UNESCO estimates that about 32 cores students are affected in India, including those in schools and colleges. Therefore, the government has come up with e-learning program. Many ed-tech firms have tried to leverage the occasion by offering free online classes or attractive discounts on e-learning modules. These measures have been met with overwhelming response by students with some startups witnessing as high as 25% uptick in e-learning. Remote learning seems a viable solution to students during this time as they offer convenient, on -the- go and affordable access to lessons. E-learning also comes as an interesting and interactive alternative as compared to classroom teaching.

Role of Digital Education in India:-

Impact of Covid-19 has prompted experts to rethink the conventional mode of education. Digital education appears to be a viable solution to fill in the void for classroom education for a period of three to four months while minimizing the chances of any infection to students until classes resume. More importantly, it has also brought the hitherto peripheral issue of digital education in India to the center stage. Going forward, digital education is likely to be integrated into mainstream education. This will enable inclusive education by facilitating learning across diverse geographies in India. Moreover, it will provide an opportunity for educators to come up with customized learning solutions for every student. A complete revolution in the way we learn today has been brought about by Technology. Each student gets in contact with a world-class education, which is not easy to impart by the traditional white chalk and blackboard method of teaching. This new learning is more interesting, personalized and enjoyable.

Role of MOOC in Digital Learning Process:-

A massive open online course (MOOC) is an online course aimed at unlimited participation and open access via the web. India is considered to be the biggest market for MOOCs in the world after the USA. Since the population of India is huge, massive open online course (MOOC) is said to open gateways for a lot of Indians in terms of bringing an educational revolution. Online distant learning programs give a great opportunity to avail high-quality learning with the help of internet connectivity.

Digital learning has many advantages in itself like digital learning has no physical boundaries, it has more learning engagement experience rather than the traditional learning, it is also cost-effective and students get to learn in the confines of their comfort zone. However, digital learning is not without its limitations and challenges, since face-to-face interaction is usually perceived as the best form of communication as compared to the rather impersonalized nature of remote learning. Globally, online education has met with some success. In the case of India, we still have a long way to go before digital learning is seen as mainstream education, because students living in urban area have the facilities to opt for digital education,

however, rural area students do not have the required infrastructure nor are financially strong to avail the resources required for digital education. Building of the digital education infrastructure by the Government of India presently appears to be difficult due to lack of budget.

Another challenge is that e-learning comes across as somewhat patchy and impersonal experience. Also, e-learning is likely to witness a high dropout rate due to the lack of atmosphere for studying. Students might tend to get distracted by gaming consoles, social media at home and might not feel a sense of community while taking online classes. Successful delivery of education is also in question because learning at the level of higher education and learning at the kindergarten/school level can be different. Digital education cannot be applied the same at every level of the education.

Role of Work from Home:-

Due to the outbreak of the pandemic, the work from home (WFH) culture is booming in India. As social distancing is prescribed as the best way to curb the spread of COVID 19, companies are faced with an unprecedented challenge of ensuring it is business as usual even if everyone is working remotely. Therefore, not only businessmen or start-ups in India have opted for an online platform like Zoom App to stay connected with their employees who are working from their homes but also the educational institutions have opted for different digital platforms to facilitate learning for their students. However, only educational institutions in urban areas can provide those facilities. Again the questions are raised for the learners in rural areas, the educational systems in rural areas and their growth.

With so many different ways to define e-learning and the educational approaches that can be taken in these learning environments, many colleges and extra curriculum activity classes have started making use of the technology. Through applications such as Zoom, various colleges especially engineering and designing colleges of Pune have undertaken the task of educating students through video conferencing. Undeterred by the security concerns which such video conferencing applications may pose, these applications are widely used and have proved to be beneficial and with a lot of advantages.

Conclusion:-

There is picture, sound clarity which makes imparting of knowledge and learning effective for both the instructor and the student. But at the same time, there is a glaring disadvantage as exams have to be postponed. Examinations cannot be conducted online. It is not only just the question of imparting continuous and uninterrupted learning during the outbreak of COVID 19 pandemic but also the most important challenge for the instructor is to focus on the overall elements of a well-developed course. Developing a purposeful and well-defined online course, which supports the instructor and learner, means devoting the appropriate time and embedding the applicable course elements into the e-learning environment. Through the use of technology, we can, if not provide a strong alternative to the conventional education system, mitigate and compensate for the impediments posed and inconvenience caused due to COVID 19 pandemic to the education system and learners by extension. Learning, as they say, is a continuous and ever-evolving process. The educational institutions in India, from schools to universities, can use this present adversity as a blessing in disguise and make digital education a major part of the learning process for all learners in the future.

References:

1. https://en.unesco.org/covid19/educationresponse
2. https://www-indiatoday-in.cdn.ampproject.org/v/s/www.indiatoday.in/amp/education-today/featurephilia/story/covid-19-impact-digital-education-conventional-education-divd-1661185-2020-03-30?usqp=mq331AQFKAGwASA%3D&_js_v=0.1#aoh=15864254935324&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com&_tf=From%20%251%24s&share=https%3A%2F%2Fwww.indiatoday.in%2Feducation-today%2Ffeaturephilia%2Fstory%2Fcovid-19-impact-digital-education-conventional-education-divd-1661185-2020-03-30

4. http://www.education.ie/en/Schools-Colleges/Information/Information-CommunicationsTechnology-ICT-in-Schools/Digital-Strategy-for-Schools/Building-Towards-a-Learning-Society-ANational-Digital-Strategy-for-Schools-Consultative-Paper.pdf

5. https://www.latestlaws.com/articles/impact-of-covid-19-on-education-system-in-india

******

EFFECTS OF THE COVID-19 ON CURRENT EDUCATION SYSTEM IN INDIA

- © Dr. Anil M. Tirkar
- © Dr. Wasudeo D. Golait

The text of this publication, or any part there should not be reproduced or transmitted in any form or stored in any retrieval system, or translated in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and/or otherwise without the prior written permission of the Author and Publishers with the rights are reserved.

ISBN: 978-81-926813-9-9

Printed and Published By:

Shri Ganesh Raut
Plot No. 29 Behind T.B. Ward,
Indira Nagar, Nagpur 440003,
Ph.9923693506,
E-mail- ospdnagpur@yahoo.com

Sales Office :

OM SAI PUBLISHER & DISTRIBUTORS
29, Indira Nagar,
Behind T.B. Ward,
Nagpur 440003,
Ph.9923693506

Type Setter :

Akshara Computer Works
Nagpur. Ph.: 7028020478



Dr. Anil M. Tirkar has been working as an Assistant Professor at Smt. L.R.T. College of Commerce, Akola since last 11 years. He published two books 'Business Environment' & 'Economics of Development' for B.Com. III year (Semester V & VI) students for Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati. He has published 40 research papers in State, National & International Conferences and Seminars and Research Journals. He is a Ph.D. supervisor in the faculty of Commerce and Management in Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati. He is an Associate N.C.C. Officer (Lieutenant). Amravati N.C.C. Group awarded him Best N.C.C. Officer Award for his outstanding performance in the year 2018. Recently he has been awarded by DG NCC Commendation Card, New Delhi.



Dr. Wasudeo D. Golait is presently working as a Assistant Professor in Department of Commerce & Management of M.E.S. Arts and Commerce College, Mehkar Dist. Buldhana Maharashtra, he engaged in higher educational teaching field since last 20 years. He shouldered as a Head of Department of Commerce & Management for four years. Presently he is shouldering the responsibility of I.Q.A.C. Coordinator. Recently he has been approved as a 'Ph.D. Guide in Commerce & Management' and also approved 'Post Graduate Teacher' by Sant Gadge Baba Amravati University Amravati. He has done various types and numbers of responsibilities of the college works. He wrote and presented near about 45 research papers in State, National and International conferences and seminars, and also wrote and published research papers in renowned and UGC approved Journals. His three academic books published "Financial Accounting" for B.Com. Part-I(Semester-2) & "Company Accounting for B.Com Part II (Semester-3), Cost Accounting for B.Com Part III (Semester-5). He delivered number of lectures for the students of Senior colleges and also for social platforms, on the topics "Personality Development"," How to improve Communication Skills", "How to improve English Language" "How to do study" "Importance of Time Management In Student life" and "Confidence is the key of Success" etc. He prepared E-Content 14 Modules on Online Teaching. He has aim to give time oriented shape to the personalities of the students of College and he has been striving to build their bright future through his YouTube Chanel and various Programs.

ISBN: 978-81-926813-9-9

Rs.395/-

Om Sai Publishers & Distributors
Plot no. 29, Behind T.B. Ward, Indira Nagar, Nagpur-440003
Mob. No. :9923693506, E-mail : ospdnagpur@gmail.com

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyala:

Emerging Library & Information Science and Technologies



K. Veeranjaneyulu
G. Rathinasabapathy
P. A. Shinde

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
कृषि अनुसंधान भवन-II, पूसा, नई दिल्ली-110012
Krishi Anusandhan Bhawan-II, Pusa, New Delhi - 110 012

डॉ. पी एस पाण्डेय
Dr. P. S. PANDEY
सहायक महानिदेश (शिक्षा नियोजन तथा गृह विज्ञान)
Asst. Director General (Education Planning & Home Science)

Phone 011-25841569
Fax 011-24841559
Email [illegible]
[illegible]
Website www.icar.org.in

Foreword

India agriculture is demographically the broadest economic sector and still plays a significant role in the overall socio-economic fabric of India. India ranks second in farm output and exporting to more than 120 countries thus become the seventh largest agricultural exporter worldwide.

The Indian Council of Agricultural Research (ICAR) and the 73 State Agricultural Universities along with other colleges are playing a vital role in the overall development of agricultural sector. The academic research and extension programmes of the universities have played a pivotal role in the overall developent of agricultural sector of the country.

Library is the heart of university system. We cannot think a university without a good library since the role of the library is very important in academic system, equal importance is given to laboratory and library spending during the National Institutional Ranking Framework (NIRF).

In this context, I am very happy to note that the MPKV Library is organising a National Conference on "Emerging Library, Information Science and Technologies (ELIST 2017)" during 20-21 July 2017 and I congratulate Prof P.A. Shinde, University Librarian, MPKV, Rahuri for taking up the responsibility even though he is retiring very shortly. I am also very happy to note that this scientific event has been of great interest for a wide range of LIS professionals from the width and breadth of the country.

This volume represents the papers presented in the ELIST 2017 and contains about 40 papers dealing with various aspects of Library and Information Science viz., library automation, networking, digitization, institutional repository, scientometrics, user studies, information literacy etc.

I congratulate Dr. K. Veeranjaneyulu Dr. G. Rathinasabapathy, Prof. P. A. Shinde, the Editors of the Conference Volume for their commendable work and hope the volume will be of immense use to the LIS professionals.

(P.S. Pandey)

© 2017

Disclaimer

The Publisher and Organisers do not claim any responsibility for the accuracy of the data, statements made, and opinions expressed by authors. The authors are solely responsible for the contents published in the paper.

Published by

BSP BS Publications

A unit of **BSP Books Pvt. Ltd.**

4-4-309/316, Giriraj Lane, Sultan Bazar,
Hyderabad - 500 095
Phone : 040 - 23445605, 23445688
e-mail : info@bspbooks.net
www.bspbooks.net

Price: Rs. 1095.00
ISBN: 978-93-5230-199-7

Emerging Library & Information Science and Technologies

Dr. K. Veeranjaneyulu
Dr. G. Rathinasabapathy
Prof. P.A. Shinde

BSP BS Publications
A unit of BSP Books Pvt. Ltd.
4-4-309/316, Giriraj Lane, Sultan Bazar,
Hyderabad - 500 095 – TS
Phone : 040 - 23445605, 23445688

Emerging Library & Information

This volume is being brought out as the Pre-conference Volume of the National ... Library & Information Science and Technologies (ELIST 2017). This volume contains 36 papers contributed by leading LIS professionals from the width and breadth of the country and the papers deal with distributed aspects of Library and Information Science such as Emerging Technologies in LIS, Scientometrics, Webometrics, Knowledge Management, Library user studies, Information Literacy, Library Automation and Digitization, Institutional Repositories, Open Access Resources, Digital Rights Management, Agriculture Knowledge Management etc.

It is hoped that this volume will be of immense use to the students, research scholars, faculty and practicing library and information professionals.

About the Editors



Dr. K. Veeranjaneyulu, M.Com, M.L.I.S, BGL, PGDLAN, Ph.D., is currently the University Librarian & Professor of Prof. Jayashankar Telangana State Agricultural University, Hyderabad. He has more than two and half decades of professional experience in the field of library and information service and a Resource person to various Academic Staff Colleges in the country, and delivered many Guest Lectures in Universities of Andhra Pradesh, Maharashtra, Tamil Nadu, Karnataka and Haryana. He has participated in more than 100 National Conferences, Workshops and Seminars and written and edited more than 25 books and contributed around 150 articles. He is a member of Boards of Studies, Academic Councils and Faculty Boards of many Universities in India, and a Ph.D. Adjudicator and External Examiner for several Universities. Under his guidance, ten candidates were awarded M. Phil. Degrees and two Ph.D. Currently he is guiding six Ph. D. students. He is a life member of various learned societies. He visited many foreign countries including the USA as part of his academic and research assignments. He has been awarded UGSHILE-UILS Parivar Bhushan & B. Shukla Millennium Award for excellence in 2007. He received "Certificate of Appreciation" awarded for outstanding contribution in developing KrishiKosh (Agricultural Institutional Repositories Database) in the Libraries of NARES under the e-Granth Project from the Director General, ICAR and National Director, NAIP, IARI, New Delhi. He also received Appreciation Certificate from ICAR for uploading high number of theses i.e. more than 5000 in the krishikosh during the year 2016.



Dr. G. Rathinasabapathy is serving as the University Librarian of Tamil Nadu Veterinary and Animal Sciences University (TANUVAS), Chennai. He was awarded M.Com., M.L.I.S., by Annamalai University, M.Phil. (LIS) by Alagappa University and Ph.D. (LIS) by the University of Madras. He has 23 years of professional experience and contributed about 110 research papers to journals, International and National Seminar volumes and participated about 35 International/National level programmmes in LIS. He has authored/edited four books and five volumes. He has obtained three projects worth about Rs.300 lakhs for the development of Library and Information facilities at TANUVAS. He is a member in the Editorial Board of Seven Peer Reviewed Journals and presently the Editor-in-Chief of the Indian Journal of Agricultural Library and Information Services (IJALIS) of AALDI. He is a reviewer for many International Journals including "Scientometrics" and "PLOS" journal. He is the elected President of Tamil Nadu Library Association. Secretary of MALIBNET and life member of 18 professional societies viz., ILA, IASLIC, MALA, AALDI, SALIS, SLA (USA), ISTE, CSI, etc. He has served as the Chairman and Member of about 65 Committees at National and Regional level. Delivered about 20 invited talks and organized many national level Continuing Educational Programmes. He visited many leading libraries in the USA. He was honoured with many awards including 'Award for Best Paper Presentation' by the Indian Society for Veterinary Pharmacology and Toxicology (2005); "Useful Writer Award" (2012) by Tamil Nadu Magazine Publishers Association, 'Bharat Gaurav Award (2016)' by an International Social Service Association, New Delhi and "Certificate of Appreciation" by ICAR for his contribution to 'KrishiKosh' Institutional Repository (2017).



Prof. P. A. Shinde, M.A., M.L.I.Sc., is serving as the University Librarian of Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth, Rahuri, Maharashtra State. With more than 35 years professional experience, he has developed the university library as a model agricultural library in the country. He has played a vital role in automation and digitization of the MPKV library with the support of e-Granth project of ICAR. He has published a large number of papers in journals and presented a number of papers in conferences and seminars besides book chapters. He has organized many training programmes and workshops for the benefit of LIS professionals besides participated about 10 continuing education programmes. He was honoured by the ICAR with a "Certificate of Appreciation" for his contribution towards the development of 'KrishiKosh' during the year 2016.

BSP **BS Publications**

A Unit of **BSP Books Pvt. Ltd.**

4-4-309/316, Giriraj Lane, Sultan Bazar, Hyderabad - 500 095

Ph: 040-23445688 / 606 Fax: +91-40-23445611

e-mail: info@bspbooks.net marketing@bspbooks.net

Website: www.bspbooks.net

ISBN : 978-93-5230-199-7

19. Mapping of Intellectual Assets of Agricultural Scientists with special reference to Indian Citation Index 181
Dr. D.K.Veer & Gajanan P. Khiste

Theme 4: Library Services, User Studies and Information Literacy

20. Comparative Study of User's Perception on Use of Print Vs. e-Resources between boys and girls (PG Students) of Dr.YSPUHF, Solan 193
Sudhir Gupta, Mrs. Yashodha Negi & Dr. Neelam Sharma

21. Information Seeking Behaviour in Academic Library and Use Pattern 207
Ms. Bhimabai Subhash Muneshwar & Dr.Vaishali S.Khaparde

22. Role of Library Professionals in Organizational Learning 214
Gireesh A.Ganjihal, K.S.Kwati & Vijayakumar A.Ganjihal

23. Information Literacy in Digital Age 220
Yogesh P.Surwade & Manmeet Kour

24. Importance of Information Literacy 230
Shilpa Kachru Tupe & Dr. Vaishali S.Khaparde

25. Library User Satisfaction in Present Scenario: An Overview 237
Rekhraj Sahu

26. Use of Electronic Resources in Agricultural University Libraries in Maharashtra: A Study 242
Dr. Harshal R.Nimbhorkar

Theme 5: Agricultural Knowledge Management

27. Digital Infrastructure and Technology Integration in Select Agricultural Libraries in India: A Study 251
Dr. K.Veeranjaneyulu

28. Agricultural Knowledge Management in India: Challenges and Opportunities 264
Dr. Madhav Pandey, Ms. Akanksha Pandey & Dr. M.L. Lakhera

findings of the study undertaken universities viz., Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth, Marathwada Krishi Vidyapeeth and Dr.Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth to find out the use of electronic resources in Agricultural University Libraries in Maharashtra State.

Keywords: User study, Agriculture, e-Resources, Consortia, Maharashtra

Preamble

University of Agricultural Sciences, Maharashtra was established on the provision of Maharashtra Council of Agricultural Education and Research (MCAER) Pune is a body, which has been constituted under section 12 of Maharashtra Agricultural Universities (Krishi Vidyapeeth) Act 1983. In exercise of the powers converted upon MCAER vide provision in the provision of sub-section 3 of section 12 of the Act common regulations for admission to various degree programmes have been formulated.

Need for the Study

The present study is a probe into this specialized area of using, and impact of electronics resources. In library collection, it concentrates on the major steps, processes and issues to be confronted in dealing with the incorporation of electronic resources into agricultural university libraries. It is important to understand and develop sound theoretical and operational knowledge about acquisition and use of e-resources and its

4. To evaluate the frequency visit, time spent, purpose and utilization of e-resources by the Agricultural university library users.
5. Find out the preferences of respondents in using various categories of e-resources.

Hypotheses Formulated

For the present study the following hypotheses are proposed and tested:

H-1: "Users are not fully satisfied with the electronic information resources available in the Agricultural university libraries in Maharashtra".

H-2: "The Agriculture universities libraries in Maharashtra do not provide adequate electronic information services."

H-3: "Electronic Journals and databases are the most favored electronic resources available in the Agriculture university library"

H-4: "The ICAR improves the present quality for regular financial grants provided in Agricultural university libraries in Maharashtra"

Scope and limitation of the study

The present study covers the type of users that is students, faculty staff and research scholars pursuing their study, teaching and involving research activities, respectively up to 2009 to 2011 that is limitation of users for collection of a primary data period covering up to 2011 that is limitation by period and confined users. The investigator has conducted the survey of four Agricultural university libraries in the state of Maharashtra that is limited to geographical area.

Sample Study

The present study has taken a random sample out of the four Agricultural university libraries were total 6173 library users and distributed 400 questionnaires with a percentage of samples (6.47%) of the four agricultural university libraries in Maharashtra state.

Data Collection Methodology

Survey method has been followed to collect data owing to its inherent advantages with questionnaire as the main tool for data collection. Questionnaire was administered to all the university librarians of the four Agriculture universities. In addition a separate Users Questionnaire was devised for the U.G., P.G. students, Faculty staff and research scholars of agriculture university libraries. ate of Maharashtra

Statistical tools used for analysis and interpretation of data

Analysis and interpretation of data was done for the purposes analyzed using on the basis of ANOVA (Analysis of Variance),to study whether there is any significant difference due to type of library services and also due to category of

Research Methodology

Research methodology indicates the layout followed in a study. It explains the aims, assumptions, and scope and limitation, data collection methodology use for the study is planned and carried out as follows

Statement of the Problem

A survey was conducted to find out whether these libraries are fully equipped to select, manage and organize in their collection for both print and non print (electronic resources). Further opinions of faculty and research scholars are sought with regard to nature and scope of the existing collections and services rendered in their Agricultural university libraries in Maharashtra

Agricultural University libraries in Maharashtra

The present status of four Agricultural university libraries in Maharashtra given in table 1

Table 1

Sr. No	Name of Agricultural University Library	Location	Region	Establishment Year
1	Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth	Rahuri	Western Maharashtra	20th Oct.1969
2	Dr.Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth	Akola	Vidarbha Region	20th Oct.1969
3	Marathwada Krishi Vidyapeeth	Parbhani	Marathwada Region	18th May 1972
4	Dr.Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth	Dapoli	Kokan Region	18th May 1972

(MCAER Prospects2012-2013)

Objectives of the study

The study primarily aims to know about preference given electronics resources carried out in selected agricultural university libraries in Maharashtra. The ultimate purpose of e-resources is their utility. Hence, it is intended to study the use of e-resources by the library users. The specific objectives related to the present study are as follows:

1. To study the different types of electronic resources and services available in the Agriculture university libraries of Maharashtra.
2. To determine the level of satisfaction of the library users on e- resources.
3. To know the awareness of e. resources among the users of agriculture university libraries of Maharashtra.

H-2: "The Agriculture universities libraries in Maharashtra do not provide adequate electronic information services."

H-3: "Electronic Journals and databases are the most favored electronic resources available in the Agriculture university library"

H-4: "The ICAR improves the present quality for regular financial grants provided in Agricultural university libraries in Maharashtra"

Scope and limitation of the study

The present study covers the type of users that is students, faculty staff and research scholars pursuing their study, teaching and involving research activities respectively up to 2009 to 2011 that is limitation of users for collection of primary data period covering up to 2011 that is limitation by period and confined users. The investigator has conducted the survey of four Agricultural university libraries in the state of Maharashtra that is limited to geographical area.

Sample Study

The present study has taken a random sample out of the four Agricultural university libraries were total 6173 library users and distributed 400 questionnaires with a percentage of samples (6.47%) of the four agricultural university libraries in Maharashtra state.

Data Collection Methodology

Survey method has been followed to collect data owing to its inherent advantages with questionnaire as the main tool for data collection. Questionnaire was administered to all the university librarians of the four Agriculture universities. In addition a separate Users Questionnaire was devised for the U.G., P.G. students, Faculty staff and research scholars of agriculture university libraries. ate of Maharashtra

Statistical tools used for analysis and interpretation of data

Analysis and interpretation of data was done for the purposes analyzed using on the basis of ANOVA (Analysis of Variance),to study whether there is any significant difference due to type of library services and also due to category of

user, a statistical technique namely two ways ANOVA is applied. For the analysis purpose, data in percentage is concerned, and chi-square test was used to compare an observed group of frequencies with an expected group of frequencies.

Discussion and Findings

The study shows how library users gave preferences for different use of internet At all four agriculture universities out of 400 library users 241(60.25%) download and save the information on internet .94(23.5%) library users take print and 65(16.25%) library users only read the information. It shows that maximum library users download and save the information on internet.

In agricultural universities, following electronic resources are expected to be available. In case of four agricultural universities, the availability of the resources along with the list of electronic resources is given below: (y- Availability of resource, N- No availability of resource)

Table 2 Availability of e-resources

Sr. No.	E-resources	PKV Akola	MPAV, Rahuri	DBSKAV, Dapoli	MAV Parbhani	Total
1	CeRa	Y	Y	Y	Y	4
2	Krishiprabha	Y	Y	N	Y	3
3	e-Granth	N	N	N	N	0
4	open j-gate	N	Y	N	Y	2
5	Uni.online thesis	Y	Y	N	Y	3
6	NDLTD	Y	N	N		1
7	e.TAD	Y	Y	N	Y	3
8	Inflibnet	Y	N	N	Y	2
9	Online e-journal	Y	Y	N	Y	3
10	e-books	Y	N	N	Y	2
11	JMU	Y	Y	N	N	2
12	Indiastat.com	N	Y	N	N	1
13	Online Databases	Y	Y	Y	Y	4
	Total	10	9	2	9	

From the table 2 we see that in the library of PKV Akola, 10 out of 13 (77%). E-resources are available. In the library of MPAV, Rahuri and MAV Parbhani, 9 out of 13 (69%) e-resources are available. But in the library of DBSKAV, Dapoli, only 2 out of 13 (15%) e-resources are available. From the above table it can also be seen that the e-resources namely CeRa and Online Databases are

available all the 4 universities. The e-resources namely Krishiprabha, Union online thesis, e.TAD, online e-journal are available in 3 universities. The e-resources namely open j-gate, inflibnet, e-books and JMU are available in 2 universities. The e-resources NDLTD and Indiastat.com are available in only one university whereas the e-resources Union online thesis is not available in any of the universities.

In the university library, CDROM data bases are also expected to be available. However, the database Agricola is not available at any agricultural university in Maharashtra. The database namely CB Abstract is available at PKV, Akola and MAV Parbhani only. However, the data bases FSTA and AGRIS are available only at MAV Parbhani.

- It is the information about where library users access e-resources out of 400 library users 228 (57%) library users use e-resources at computer centere,136(34%) users at university library ,216(54%) at home, 216(54%) at home,132(33%) at on Campus location, 128 (32%), at off Campus location ,72(57%) at hostel, and dept. total 72(57%) . From the above study it is clear that maximum library users use e-resources at computer centre.
- The first priority given by the library users for seeking their information total 112 (28%) for using online data bases, 97(24.25%) library users searching On –line public access Catalogue (OPAC), 64(16%) library users searching information on various reference Sources total 38 (9.5%) library users searching e-mail and 14(3.5%) library users searching internet websites. Reveals that most of the respondents are seeking information from on line data bases on the internet.
- It is information about the details of library software which is use in different university libraries .MPKV library and BSKKV library are using SLIM 21 library software, MKV library is using SLIM++ library software and PDKV library is using LIBSYS library automation software.
- Every year there are specific budget allocated to every university library. In 2009-10 PDKV library and BSKKV library did not received any grant in the comparison MPKV library receive 13192700 rupees grant and MKV library receive 374100 rupees grant .In 2010-11 PDKV library received 254000 rupees grant,MPKV library received 9019200 rupees grant,MKV library received 822000 rupees grant and BSKKV library did not received any grant. In 2011-12 PDKV library received 12754000 rupees grants. MPKV library received 14148000 rupees grant, MKV library received 3258200 rupees grant and BSKKV library received 3500000 rupees grant from ICAR.

CONCLUSION

It has been concluded after through study that library maximum users are using library for different purposes such as for issue books, for referring journals, for Xerox facilities and other services and they are satisfied with the library services.

satisfaction level of library service is lowest for BSKKV library Dapoli .Satisfaction level found lowest for BSKKV, Dapoli may be due to the reason that there is no full time university librarian.

REFERENCES

1. Dr Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth (2009) Dr Balasaheb Sawant Kokan Krishi Vidyapeeth Dapoli Avalable at htpp://www.dbskkv.org [Accessed 10-9-2016]
2. Dr Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth (2009) Dr Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth Akola Available at htpp://www.pdkv.mah.nic.in [Accessed 12-9-2016]
3. Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth (2009) Mahatma Phule Krishi Vidyapeeth Rahuri Available at htpp://www.mah.nic.in [Accessed 11-9-2016]
4. Marathwada Agriculture University (2009) Marathwada Agriculture University ParbhaniAvailable at htpp://www.mkv2mah.nic.in [Accessed 11-9-2016]
5. MCAER Prospects (2016) Maharashtra Council for Agriculture Education and Research Pune Available at http//:www.mcaer.org [Accessed 12-9-2016]
6. Rathinasabapathy, G. and Mohana Sundari, T., 2005. Internet Using Pattern of Veterinary Science Students: A Case Study. In *Proceedings of the National Convention on Library and Information Networking (NACLIN). PES Institute of Technology* (pp. 358-365).
7. Rokade S.M.and Rajlakshmi (2006). Evaluation of Electronics Information Services in Agricultural University Librariesi n Maharashtra: A Study 4th International convention CALIBER Gulbarga 2-4 February,2006.
8. Selvaraj, A.D. and Rathinasabapathy, G. (2015). Information use pattern by students of self-financing engineering colleges in Tiruvallur District, Tamil Nadu: A Study. *Journal of Library, Information and Communication Technology*, *6*(3-4), pp.45-54.
9. Selvaraj, A.D. and Rathinasabapathy, G. (2016). A Study on electronic information use pattern of Faculty Members of Self-Financing Engineering Colleges in Tiruvallur District, Tamil Nadu. *Asian Journal of Library and Information Science*, *6*(3-4), pp.31-40.

Principal,
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera



SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY



National Level Multi-disciplinary Seminar on

DR. BABASAHEB AMBEDKAR'S ROLE IN NATION BUILDING

Certificate

This is to certify that Miss/Mr./Mrs./Prof./Dr. Harshal R. Nimbhorkar

Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera-Amravati

participated in the two days National level Multi-disciplinary Seminar on DR. BABASAHEB AMBEDKAR'S ROLE IN NATION BUILDING organized by Dr.Ambedkar Studies Centre, Sant Gadge Baba Amravati University, held on 8th & 9th March 2022.

He/She has been invited as a **Chairperson** / **Resource person** / **Participant** in the seminar.

He/She has presented a research paper entitled Role of Dr B.R.Ambedkar in Education System of India.

Dr. Sudhir Deshmukh
Registrar
Sant Gadge Baba Amravati University

Dr. Santosh Badsod
Convenor of the Seminar & Co-Ordinator
Dr. Ambedkar Studies Centre,
Sant Gadge Baba Amravati, University

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Bharatiya Mahavidyalaya, Amravati's

BHARATIYA MAHAVIDYALAYA, AMRAVATI

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE, HISTORY &

DR. B. L. BHOLE VICHAR MANCH NAGPUR JOINTLY ORGANIZE

MULTIDISCIPLINARY OFFLINE ONE DAY STATE LEVEL SEMINAR

DEMOCRACY & ENVIRONMENT



डॉ. भा. ल. भोळे
विचार मंच नागपूर

Certificate

This certificate is awarded to
Prof./Dr./Mr./Mrs. Dr. H. R. Nimbhorkar
of Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati has
participated in the State Level Seminar organized on 15 December 2021
He/She has published/presented paper on Ghankachara Vyasthapan
Aajchya Kalachi Garaj.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Dr. Anuradha Vaidya
Principal, Bharatiya Mahavidyalaya, Amravati

Dr. Prashant Vighe
Organizing Secretary

Dr. Ashok Kale
Secretary, Dr. S.B.L. Bhole Vichar Manch, Nagpur

Prof. Sheshkumar Yerlekar
President, Dr. B.L. Bhole Vichar Manch, Nagpur

Gadgebaba Maha raj Shikshan Sanstha Amravati

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera dist. Amravati

Shri Shivaji Education Society Amravati's

Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya Gadegaon Telhara dist. Akola &

jointly organises international Level E-Conference

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Prof./Mr./Mrs. **Dr.Harshal R.Nimbhorkar**

of Librarian Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

participated in One Day international Level E-Conference on topic 'CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY' organized on 14th October, 2021 byNarayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera dist. Amravati & Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya Gadegaon Telhara dist. Akola & ,B.Aadhar Multi-Disciplinary Peer Reviewed & Index Research Journal, Amravati (M.S) with Impact Factor 7.675 (SJIF) & ISSN: 2278-9308. He/She presented his/her Research Paper entitled **Historical Development of Public Libraries in India**

in the Paper Reading Session. This certificate is issued in recognition of publication of the research paper.

Prof. Viraj S. Gawande	Dr.Dhiraj Kumar Najan	Dr.Santosh Bansod	Dr.Gopal J.Dhole	Dr.Gopal S.Vairale
Chief Editor	Convener	Convener	Principal	Principal

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.



CERTIFICATE

ISSN 2278-9308

Impact Factor 7.675 (SJIF)

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs./Ms. **Dr.Harshal R.Nimbhorkar**

Of Librarian , Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera (M.S.)

has published a paper on **Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar**

Peer Reviewed International Research Journal B.Aadhar *Issue* no, 250. *Published* on *Dated* 05, October - *2020.*

Dr. Santosh Bansod
Editor :
Head Dept of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera (M.S.)

Prof. Virag Gawande
Director
Aadhar Social Research &
Development Training Institute,
Amravati

IQAC

Certificate

Sr. No. NW0052



Organized by

College Of Management And Computer Science, Yavatmal

In Collaboration With

Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalay, Yavatmal.

27th & 28th December 2019

This is to certify that

Shri. / Smt. / Ku. / Dr. / Prof _____

of _____ has participated as Chief Guest /Resource Person / Chairperson / Co-Chairperson in two days International Conference organized by College Of Management And Computer Science, Yavatmal in Collaboration with Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal on "Academic Research and Innovation in Teaching & Arising Incination in Professional Education."

Prakash H. Jajoo
President
Harikisan Jajoo Education Sanstha

Jagdish G. Wadhwani
President
Yavatmal Zilla Vikas Samiti, Yavatmal

Dr. Jayant M. Chatur
Principal
Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Ritesh D. Chandak

S. N. Arts & U. K. Commerce College, Akola
Saraswati Kala Mahavidyalaya, Dahihanda, Tq. Dist. Akola
Shri. Ganesh Kala Mahavidyalaya, Kumbhari, Akola

Department of Physical Education & IQAC

Collaboration With

Physical Education Foundation of India

Organized

An Inter Disciplinary National Conference on

Role Of Higher Education In Making India Superpower

21st August 2019

Sr. No.

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./~~Prof./Mr./Mrs./Ms.~~ DR. HARSHAL R. NIMBHORKAR

of NARAYANRAO RANA MAHAVIDYALAYA, BADNERA - AMRAVATI has participated in the One Day Inter-Disciplinary National Conference On "Role of Higher Education In Making India Superpower". He / She has participated as Resource Person / Chairperson/ Co-Chairperson/ Delegate / Research Scholar. He / She has presented / published a paper Entitled USING E-RESOURCES IN AGRICULTURAL UNIVERSITY LIBRARIES IN MAHARASHTRA : A STUDY

Dr. Piyush Jain
Secretary
Physical Education Foundation of India, New Delhi

Dr. Nitin W. Deodhar
Convener

Dr. Sagar P. Narkhede
Organizing Secretary

Dr. Santosh P. Lavade
Joint Secretary

Principal
Narayan... Mahavidyalaya

Dr. Jayant P. Bobade
Principal
S. N. Arts & U. K. Commerce College, Akola

IQAC

Certificate

Organized by

College Of Management And Computer Science, Yavatmal

In Collaboration With

Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalay, Yavatmal.

27th & 28th December 2019

This is to certify that

Shri. / Smt. / Ku. / Dr. / Prof Harshal R. Nimbhorkar

of Jagadamba Nagar, Yavatmal has actively participated in the two days International Conference organized by College Of Management And Computer Science, Yavatmal in Collaboration with Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal on **"Academic Research and Innovation in Teaching & Arising Inclination in Professional Education."** He/She has presented / published a paper on Impact of E-Resources in Academic Libraries.

Prakash H. Jajoo	Jagdish G. Wadhwani	Dr. Jayant M. Chatur	Prof. Ritesh D. Chand
President	President	Principal	Principal
Harikisan Jajoo Education Sanstha	Yavatmal Zilla Vikas Samiti, Yavatmal	Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya	College Of Management An

Conference Proceedings: SCHE-DC19-LPIW | 2020

ISBN: 978-93-5407-920-7

International E-Conference on "Strategies & Challenges in Higher Education during COVID-19 Lockdown Period in India with reference to World" 15th, 16th & 17th May, 2020



Organized By
Government of Maharashtra
Higher and Technical Education
Government Vidarbha Institute of Science and Humanities,
Amravati, Maharashtra – 444 604 India
NAAC re-accredited 'A' Grade (II Cycle) with 3.32 CGPA

Editor in Chief: Prof Vasant Baburao Helavi Reddy

Editors: Prof Kishor Gopal Patil, Dr Yasmeen Sultana Siddiqui

Organizing Secretary: Prof S P Yawale

IQAC Coordinator: Dr S N Malode

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

bodies of Red cotton bug Dysdercus cingulatus Fabr. (Hemiptera: Pyrrhocoridae)	Dr Chhaya N Vidhale	320-32
64. Effects of COVID-19 Lockdown on Indian Economy	Dr Sangita G Bhangdiya	327-3
65. E Learning & Rural Areas		
66. Exploration of traditional indigenous common medicinal plants with respect to sanitation & immune booster against COVID-19 with special reference to floral diversity of GVISH, Amravati (MS) India	A S Deshpande, S N Malode	331-33
67. Five YAMA supports of wisdom from the Yoga Sutra lead the way to true ways to guidelines of breaking the chain of Novel COVID-19 Virus.	Dr Pravin Chandrabhan Dabre	335-33
68. Gauging the Online Learning preferences of Students as a stakeholder in higher education institute during the COVID-19 Lockdown scenario through online survey.	Dr Gajendrasingh Pachlore, Dr Pratibha Mahalle	340-34
69. Gender dimensions of adaptation of digital technologies for learning in higher education during COVID-19 Lockdown – a Study with reference to Kerala	Dr Chacko Jose P	345-34
70. Gender Perspective on Corona Virus Pandemic	Sujata W Damke	350-35
71. Global Consequences of COVID-19 in Higher Education	Balaji K Dudhate, Dhondiram P Gadgile, Anjali V Sarkate	356-35
72. Globally Spread of Novel disease COVID-19 & It's Medicinal & Protective Trials	Dr Jigar S Patel, Mr Praksh K Joshi	360-36
73. Health & Basic Precautions in COVID-19 Pandemic	Renuka Anand Ganeshe	369-37
74. Higher Education & Its Related Problems	Priti R Nikam	372-37
75. Higher Education in Post COVID-19 India	S P Khodke, V D Hutke, R C Maggirwar	375-37
76. Hindering the Corona Juggernaut: A preventative Strategy and General Trends	M M Mhasal, M P Wadekar	378-38
77. How COVID-19 is Affecting the World of Sports	Dr Abhijit H Ingole	384-38
78. How to Protect Yourself from Novel Coronavirus-19 Infection	Sabiha V Syed (Bagwan)	388-38
79. Impact of Coronavirus 2019 (COVID-19) on Higher Education during Lockdown: With Special Reference to Face to Face Online Classes	Dr Mahananda Chandrakant Dalvi	390-39

E-learning & rural areas

Dr. Sangita G. Bhangdiya,
HOD of Political Science,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera

Covid-19 has caused a worldwide outcry. As if the whole world has stopped. WHO has declared it as pandemic. Covid-19 has spread through China to the whole world. Due to its influence, no region remained untouched. The number of Covid-19 infected people in India is now 77729(13/5/2020). The third cycle of lock down is underway. All social, economic, cultural, educational activities have come to a standstill due to the lock down. This will have an impact on the country's economy. Already, inflation and unemployment are at a high level in the country. In such a situation, due to corona which is pandemic, India and most of the country adopted the policy of lock down, every country will have to suffer its socio-economic consequences. The Organization for Global Economic Cooperation and Development (OECD) has projected the growth rate of the world's economy at 2.4% for the year 2020. OECD has also warned that if this global pandemic spreads, the growth rate of the world economy is expected to come down to 1.5%.

Covid-19 is impacting the economy as well as normal life Domestic servants, laborers working in organized and unorganized sector, taxi drivers, small business owners, hotels, restaurant, malls, cinema, home-working women, flower business, vegetable and fruit business, tourism, roads all of them have been affected badly by this pandemic. According to the International Labor Organization, at least 90 percent people in India are in non-organized areas. There are only 47% of workers in payroll jobs in cities 70% of those working in the formal sector do not even have a fixed contract 49% of the workers do not have social security benefits. 93% of the working people who work in the unorganized sector do not have social security system and this has been found by the latest Recurring Labor Survey (2017 18). India has also taken several measures for poverty alleviation and social security, but due to this pandemic, the number of people below the poverty line will increase again. World Bank figures (2018) show that the poverty rate in urban Indian population is 14% while the number of poor in rural India is 25%. Covid-19 has also affected tourism in India. Due to restrictions on traffic, the movement of tourists has also reduced. During January to March, the arrival of foreign and domestic tourists has decreased by 67 % and 40% respectively. Thus, not every region has survived the Covid-19 outbreak

The most important area which can be called the origin of the development Ganga, that is education sector, has also been badly affected by the outbreak of Covid-19. Mahatma Gandhi had said that education is an instrument which can play a lively role in improving the social, economic condition of the nation. It empowers citizens with their analysis capability, improves their confidence level, and sets the goal of increasing efficiency. Hence the education sector is an area that needs to attract the attention of the government. The challenge is to continue the process of teaching and learning during this crisis and at the same time reduce the spread of the disease. According to WHO guidelines, almost all countries have decided to close schools colleges. The education process is

started in the country which has developed and enabled new technological systems. But it is not possible to maintain the continuity of education process in developing countries like India due to Covid 19. The entire education system is struggling to find a permanent solution in India. The school system has its own problems. The government school lacks basic facilities and technology. E-learning tools are being used in many private schools, but this solution is not satisfactory.

Universities have the same status as schools. Many colleges do not have the proper infrastructure to adopt new technology, to bring a change in the traditional system. Most colleges in India are still trained through the 'chalk and talk' method. The traditional method is accepted in colleges of humanities branch and rural area colleges. In such a situation, is it possible to maintain the continuity of the education process? To know the answer and to study the education policies of the government, "e-learning and rural area" this subject has been taken.

UGC Prof. R.C. Kuhar Committee has given a report about the college examinations in view of the increasing impact of Covid-19 and to get out of this situation safely. This report will act as a guiding element for every university. Each university may decide to change it by considering the situation and available resources of their respective enclaves.

Prof. Kuhar committee has recommended to continue academic work from 16/3/2020 to 15/5/2020 by 'Work from Home' through e-learning. But this recommendation cannot be done only by keeping the students of the city or sub city in front. It is also important to consider the students of rural areas. Many students in rural areas or inaccessible areas still do not have smartphones. According to the report of Telecom statistic India 2019 March, [illegible] million people use internet in India. Of [illegible] 227.01 million rural and 409.72 million [illegible] people run the Internet. Total 53.47 [illegible] people in Maharashtra have an [illegible] connection. Of these, 33.26 million are urban and 20.21 million are rural peop[illegible] the figures show that the number of [illegible] running internet at the rural level is less [illegible] urban. If the education process [illegible] continued through e-learning, then [illegible] necessary to fulfill the basic needs for [illegible] someone has a smartphone then the [illegible] connectivity problem and has no m[illegible] recharge the phone. Most of the student[illegible] area colleges are laborers, farm labor[illegible] below poverty line students. In this [illegible] how they can be taught by e-learning too[illegible] being used for teaching in many college[illegible] there is a need to teach through [illegible] medium, but it is not fair for rural area[illegible]

I tried to know this situation throu[illegible] Forms from the professors of Human[illegible] of Sant Gadge Baba Amravati [illegible] Maharashtra. And 31 professors took [illegible] They were asked, that if their college [illegible] area? Are most of the students in h[illegible] from rural areas? How many students [illegible] for their subject? How many stud[illegible] connected through the e-learning me[illegible] these questions were answered. On [illegible] the information related to the study [illegible] is in the chart below. In this chart, the [illegible] college is given without revealing the [illegible] names.



...study shows that out of 7811 ... 3539 or only 45.30 per cent students ... taught through e-learning. 54.70 per ...dents are deprived of education. The ...llege is in rural area or the majority of ...dents in that college are from rural area. ...the above colleges, through ICT, only ...professors are in touch with 90 to 100 ...of the students. Among them, colleges ...ati and Murtijapur are in urban areas.

And the proportion of students coming from rural areas is also low. Also, the college at Shendurjana Adhav is located in a rural area but after discussing with the professor, it was learned that they are in touch with all the students through WhatsApp group. No other ICT tools are used. There are ten professors who are in touch with more than 50 and 50 per cent students through e-learning, while there are 18 professors who are in touch with less than fifty per cent students. It is a college with students from all rural and ultra-rural areas.

This means that while realizing the concept of Work from Home, about 55 per cent of the students could not complete the course. The e-learning tool is not successful in the context of rural colleges and rural students. Reasons are:

1. Not all students in rural and ultra-rural areas have smartphones.

2. Even if they have smart phone, there is no money to recharge it.

3. Most of the girls in rural areas do not have a smartphone.

4. Parents are agricultural labourers or manual labourers, their financial condition is weak.

5. There is a big problem of internet connectivity in the village.

6. Many professors do not find it easy to use e-learning tools.

7. In class study process is very easy. If there are some obstacles in the study process, they can be easily removed but through the e learning it becomes a problem.

8. According to many professors, the teaching method in the classrooms are more effective.

9. Students cannot solve their problems completely in e learning.

10 Classroom teaching makes it easier to communicate with students

11. Responses are required for teaching and learning. But in e-learning it doesn't happen very effectively.

The learning process is underway through new technology to combat covid-19. There is no other option today. The education system in the country was not ready for such a situation. Although there are some difficulties, e-learning is an effective medium. But for that, basic facilities have to be created and while creating it, care has to be taken to make rural areas more technological, overcome poverty, and train professors, only then will e-learning become more effective.

References:

1. India services economy braces for a heat from local spread of coronavirus-- Pallavi Nahata

2. Pathways to Reducing Poverty and Sharing Prosperity in India: Lessons from the Last Two Decades; World Bank 2016.

3. https://dot.gov.in/reportsstatistics/telecom-statistics-india-2019

4. https://forms.gle/xW8Mw2TbVJ3dycWD7

5. Letter of Joint Director Amravati to submit report on Work from Home. (13/05/2020)

6. https://www.ugc.ac.in/pdfnews/5369929_Letter-regarding-UGC-Guidelines-on-Examinations-and-Academic-Calendar.pdf

Please cite as:

Dr. Sangita G. Bhangdiya. "E-Learning & Rural Areas." In *SCHE DC19 LPIW 2020*, Vidarbha Institute of Science and Humanities, Amravati, Maharashtra, India. Vidarbha Institute of Science and Humanities, Amravati, 2020.

Note: All Published papers are referred, having undergone a peer review process.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

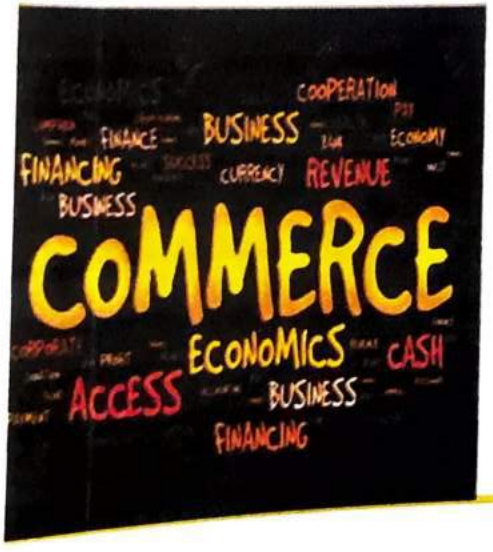
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February -2021

ISSUE No- (CCLXXI) 271







Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S. Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

34	"प्रतिभावंत साहित्यिक अण्णा भाऊ साठे" प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर	143
35	किन्नरों का समाजशास्त्रीय विश्लेषनात्मक अध्ययन डॉ. प्रमिला हरीदास भुजाडे	147
36	लोकसत्ताक भारताचो गरज : भगवान बुद्ध आणि त्यांचा धम्म डॉ. प्रतिभा गौ. ताकसांडे	154
37	बहुराष्ट्रीय कंपन्यांचो भूमिका : एक अभ्यास डॉ. सुधाकर सोनोने	163
38	पश्चिम विदर्भातील स्वदेशी आंदोलन डॉ. गजानन बापूराव ठाकरे	167
39	सत्यशोधक जगदेवराव भालेराव डॉ. किशोर मारोती वानखडे.	172
40	चतुष्कोन एक आकलन डॉ.सी.एस.राणे	177
41	मराठी आंबेडकरवादी कवितेतील प्रतिमा प्रा.डॉ. गोविंद नामदेव रावळेकर	180
42	Study of Psychological Capital and Emotional Competence among Divorcees Mrs. Chitra Nimbalkar. / Dr. Subodh Bansod	184
43	नागपूर शहर का विस्तार प्रा. रवि आर. साखरे	192
44	Domestic Violence against Women's in India Dr. Sushma Bageshwar	195
45	भारत के लैंगिक अंतराल का अध्ययन डॉ. संगीता भांगडिया मालाणी	199

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 271(CCLXXI)
ISSN : 2278-9308
February, 2021

भारत के लैंगिक अंतराल का अध्ययन

डॉ. संगीता भांगड़िया मान्त्राणी
राज्यशास्त्र विभाग नारायणराव राणा महाविद्यालय बड़नेरा

वर्ष 2020 महिला अधिकारों की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण वर्ष माना जा सकता है। गौरतलब है कि यह महिला अधिकारों और समाज के विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की भूमिका से जुड़ी दो बड़ी घटनाओं की 25वीं वर्षगाँठ का वर्ष है। इस वर्ष 'भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति' (CSWI) द्वारा संयुक्त राष्ट्र को 'समानता की ओर' या 'टुवर्डस इक्वालिटी' (Towards Equality) नामक रिपोर्ट को प्रस्तुत किये हुए लगभग 25 वर्ष पूरे हो गए हैं। इस रिपोर्ट में भारत में महिलाओं के प्रति संवेदनशील नीति निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हुए लैंगिक समानता पर एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करने का प्रयास किया गया। साथ ही वर्ष 2020 में 'बीजिंग प्लेटफार्म फॉर एक्शन' की स्थापना की 25वीं वर्षगाँठ भी है, जो समाज में महिलाओं की स्थिति और सरकारों के प्रयासों का विश्लेषण करती है। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 वैश्विक लिंग अंतर की वर्तमान स्थिति और इसे कम करने के प्रयासों का अवलोकन प्रदान करती है। इस वर्ष की रिपोर्ट में पाया गया है कि पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष लिंग अंतराल थोड़ा कम हो गया है फिर भी इसे वर्तमान गति से पूर्ण समानता प्राप्त करने के लिए 99. 5 वर्ष की आवश्यकता होगी, जो हमारे आत्मनिर्भर भारत समक्ष बहुत बड़ी चुनौती है। क्योंकि स्त्री शक्ति राष्ट्र शक्ति का अभिन्न अंग है जिसे सशक्त और शामिल किए बिना कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता।कहते हैं किसी संस्कृति को अगर समझना है तो सबसे आसान तरीका है कि उस संस्कृति में नारी के हालात को समझने की कोशिश की जाए। नारी की सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत समृद्धि तथा मजबूत समाज की द्योतक है।

वर्तमान में नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही हैं। शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं में नवीन चेतना भर दी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हो रही है। आज महिलाएँ राजनीति, विज़नेस, कला तथा खेल सहित रक्षा क्षेत्र में भी नए आयाम गढ रही हैं। सेना जैसे संवेदनशील क्षेत्र में भी महिलाएँ अपनी भूमिका का पुरुषों के साथ कदम मिलाकर निवर्हन कर रही हैं। हाल ही में अवनी चतुर्वेदी सहित तीन लड़कियों को वायुसेना में फाइटर प्लेन उड़ाने की अनुमति प्रदान की गई है।

यह उनकी कार्यक्षमता का द्योतक है, क्योंकि प्राय: कमज़ोर समझी जाने वाली महिलाएँ आज कठिन माने जाने वाले क्षेत्रों में भी अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं। गांधी जी ने कहा था कि "महिलाएँ पुरुषों से बेहतर सैनिक साबित हो सकती हैं। बस उनको मौका देने की ज़रूरत है।" कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, टेंसी थॉमस, अवनी चतुर्वेदी जैसी अनेक नारियाँ आज समाज में महिलाओं की मज़बूत छवि प्रस्तुत कर रही हैं। अग्नि-V मिसाइल के विकास में प्रमुख भूमिका निभाने वाली टेंसी थॉमस को 'मिसाइल वुमेन' के नाम से जाना जाता है।

शीर्ष क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी सफलता की कहानी दुनिया के सामने रखी है। आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के कारण महिलाओं का सशक्तीकरण हुआ है। देश के कई आर्थिक संस्थानों के शीर्ष पदों पर महिलाएँ कार्यभार संभाल रही हैं तथा देश के विकास में अपना योगदान दे रही हैं। अरुंधति महाचार्य, शिखा शर्मा, नैनालाल किदवई, सावित्री जिंदल आदि आर्थिक क्षेत्र में शीर्ष पदों पर काबिज हैं।यह सत्य है कि वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आया है। लेकिन 2020 की वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट के अनुसार अभी 153 देशों में से केवल 40 देशों ने ही लैंगिक समानता प्राप्त की है। वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक लैंगिक समानता को नापने के लिए बनाया गया सूचकांक है,जो विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किया जाता है। यह सूचकांक चार क्षेत्रों में विभिन्न देशों द्वारा लैंगिक समानता प्राप्त करने की दिशा में की गई प्रगति के आधार पर जारी किया जाता है। ये चार क्षेत्र निम्न हैं

(1) आर्थिक भागीदारी एवं अवसर

(2) शैक्षणिक उपलब्धियां

(3) स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता तथा

(4) राजनीतिक सशक्तीकरण

वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता की स्थिति

रिपोर्ट के अनुसार प्रथम स्थान पर आइसलैंड है, जिसने लगातार 11वीं बार दुनिया का सबसे लिंग समान देश का स्थान प्राप्त किया है।आइसलैंड के बाद नॉर्वे (2रा), फिनलैंड (3रा) और स्वीडन (4था) है। शीर्ष 10 अन्य अर्थव्यवस्थाओं में निकारागुआ (5वें), न्यूजीलैंड (6ठे), आयरलैंड (7वें), स्पेन (8वें), रवांडा (9वें) और जर्मनी (10वें) शामिल हैं।

यमन सबसे अंतिम (153 वां) स्थान पर है।

रिपोर्ट द्वारा मूल्यांकन किए गए आठ क्षेत्रों ने औसतन 60.5% (मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में औसत स्कोर) और 76.7% (पश्चिमी यूरोप में औसत स्कोर) अंक प्राप्त किये।

उत्तरी अमेरिका, पश्चिमी यूरोप (9%) और लैटिन अमेरिका और कैरेबियाईदशों (72.2%) से कुछ प्रतिशत नीचे है मगरपूर्वी यूरोप और मध्य एशिया (71.3%) के साथ लगभग समान है। उसके बाद पूर्वी एशिया और प्रशांत (68.5%), उप-सहारा अफ्रीका (68.2%) और दक्षिण एशिया (66.1%) हैं।

ब्रिक्स देशों की स्थिति- (विश्व लैंगिक अंतराल रिपोर्ट 2020)

रैंक	देश	स्कोर
17	दक्षिण अफ्रीका	0.780
81	रूस	0.706
92	ब्राजील	0.691

106	चीन	0.676
112	भारत	0.668

इस रिपोर्ट अनुसार ब्रिक्स देशों में भारत आखिरी पायदान पर है।

भारत की स्थिति -

वर्ष 2020 में कुल 153 देशों की इस सूची में भारत का स्थान 112वां है।जबकि भारत के मुकाबले हमारे पड़ोसी देशों का प्रदर्शन बेहतर रहा।बांग्लादेश- 50 वा, नेपाल- 101, श्रीलंका-102, इंडोनेशिया-85 और चीन-106 स्थान पर रहा।

किसी भी राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। महिला और पुरुष दोनों समान रूप से समाज के दो पहियों की तरह कार्य करते हैं और समाज को प्रगति की ओर ले जाते हैं। दोनों की समान भूमिका को देखते हुए यह आवश्यक है कि उन्हें शिक्षा सहित अन्य सभी क्षेत्रों में समान अवसर दिये जाएँ, क्योंकि यदि कोई एक पक्ष भी कमज़ोर होगा तो सामाजिक प्रगति संभव नहीं हो पाएगी। जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत में महिलाओं की विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति भी गंभीर बताई है। देश की लिंग समानता की दिशा में प्रगति को चार प्रमुख क्षेत्रों (स्वास्थ्य एवं अस्तित्व, राजनीतिक सशक्तिकरण,शैक्षिक प्राप्ति तथा,आर्थिक भागीदारी एवं अवसर,)के आधार पर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

1) स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति

स्वास्थ्य एवं उत्तरजीविता के क्षेत्र में भारत (150वाँ स्थान) का प्रदर्शन बहुत ख़राब रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, विश्व के चार बड़े देशों भारत, विएतनाम, चीन और पाकिस्तान में अभी भी करोड़ों की संख्या में ऐसी महिलाएँ हैं जिन्हें पुरुषों के समान स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

WEF ने भारत (91/100) और पाकिस्तान (92/100) में असमान शिशु लैंगिक जन्मानुपात को भी चिंताजनक बताया है।वर्ल्ड बैंक की एक ताजा रिपोर्ट के यदि दक्षिण-पूर्ण एशिया में महिलाओं का स्वास्थ्य कार्ड देखें तो भारतीय महिलाओं की स्थिति श्रीलंका, नेपाल तथा पाकिस्तान की महिलाओं से ज्यादा खराब है। भारत की स्थिति बांग्लादेश से जरा ही बेहतर है। वर्ल्ड बैंक की एक्सपर्ट मीरा चटर्जी की रिपोर्ट 'स्यार्यरिंग लाइव्स' में भारत, बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान तथा श्रीलंका में महिलाओं की स्वास्थ्य की स्थिति का लेखा-जोखा पेश किया गया है। इसके अनुसार भारत में आज भी प्रति एक लाख प्रसवों के दौरान 301 महिलाओं की मृत्यु हो जाती है। जबकि नेपाल में यह दर 281, पाकिस्तान में 276 तथा श्रीलंका में सिर्फ 58 है। अलबत्ता बांग्लादेश में यह दर थोड़ी ज्यादा 320 है। यानी हम बांग्लादेश से ही बेहतर हैं। इससे साबित होता है कि भारत के छोटे-छोटे पड़ोसी देशों ने अपने हैल्थ केयर सिस्टम में काफी सुधार कर लिया है जिसका फायदा महिलाओं को मिल रहा है। लेकिन भारत में यह स्थिति अभी तक गंभीर बनी हुई

है। चटर्जी के अनुसार श्रीलंका ने अपने स्वास्थ्य ढांचे को महिलाओं के अनुकूल बनाया है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में 15-1साल की उम्र की 51.4 फीसदी महिलाएं खून की कमी से ग्रस्त हैं तथा इसी आयु वर्ग में 41.ीसदी पोषण के अभाव में कम वजन की समस्या से जूझ रही हैं। 20-2आयु वर्ग में करीब 45.8 फीसदी महिलाएं रक्त अल्पतता से ग्रस्त हैं तथा 30.6 फीसदी अंडरवेट हैं। इतना ही नहीं प्रजनन स्वास्थ्य में कमजोर होने की एक मुख्य वजह 50 फीसदी महिलाओं का विवाह 20 साल से कम उम्र में होना है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत को महिलाओं के स्वास्थ्य पर फोकस करने के लिए अपने स्वास्थ्य सुरक्षा तंत्र को मजबूत बनाए। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्मिकों की तैनाती कर। सभी प्रजनन सेवाएं एक स्थान पर दी जानी चाहिए।

2) भारत में राजनीतिक सशक्तिकरण और भागीदारी

राजनीतिक सशक्तीकरण और भागीदारी में अन्य बिंदुओं की अपेक्षा भारत का प्रदर्शन (18वाँ स्थान) बेहतर रहा है।

लेकिन भारतीय राजनीति में आज भी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी बहुत ही कम है, आकड़ों के अनुसार, केवल 14% महिलाएं ही संसद तक पहुँच पाती हैं (विश्व में 122वाँ स्थान)। वहीं आज विश्व के विभिन्न देशों में 25.2% महिलाएँ संसद के निचले सदन का हिस्सा हैं।रवांडा में 61%, दक्षिण अफ्रीका 43 %, यूके 32%, यूएसए 24%, बांग्लादेश 21%, चीन 23%, नेपाल लगभग 30%, महिलाएं निचले सदन का हिस्सा है। पाकिस्तान में 17% प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित है। यानी कि हमारे पड़ोसी देश हमसे बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

मंत्रिमंडल में महिलाओं की भागीदारी केवल 5.8%(2019) ही है। वहीं दक्षिण अफ्रीका के मंत्रिमंडल में 50% महिलाएं हैं। विश्व में केवल 11 देशों में लैंगिक बराबर वाली कैबिनेट है।

आँकड़ों के मुताबिक, WEF के अनुमान के अनुसार, इस राजनीतिक असमानता को दूर करने में 95 वर्ष लग जाएँगे,

3) शिक्षा के अवसर :

महिलाओं के लिये शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता के मामले में भारत का स्थान विश्व में 112वाँ है।

जबकि इस आँकड़े में पिछले वर्ष भारत का स्थान 114वाँ और 2017 में 112वाँ स्थान रहा था।

महिला साक्षरता के मामले में भारत का प्रदर्शन बहुत ही ख़राब रहा है, पुरुषों के मुकाबले (82% साक्षर) केवल दो-तिहाई महिलाएँ ही साक्षर हो पाती है।वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, देश में महिला साक्षरता दर मात्र 64.46 फीसदी है, जबकि पुरुष साक्षरता दर 82.14 फीसदी है। उल्लेखनीय है कि भारत की महिला साक्षरता दर विश्व के औसत 79.7 प्रतिशत से काफी कम है।

भारत में महिला शिक्षा वर्तमान परिदृश

भारत में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर काफी कम है। वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़े दर्शाते हैं कि राजस्थान (52.12 प्रतिशत) और बिहार (51.50 प्रतिशत) में महिला शिक्षा की स्थिति काफी खराब है।

जनगणना आँकड़े यह भी बताते हैं कि देश की महिला साक्षरता दर (64.46 प्रतिशत) देश की कुल साक्षरता दर (74.04 प्रतिशत) से भी कम है।

बहुत कम लड़कियों का स्कूलों में दाखिला कराया जाता है और उनमें से भी कई बीच में ही स्कूल छोड़ देती हैं। इसके अलावा कई लड़कियाँ रूढ़िवादी सांस्कृतिक रवैये के कारण स्कूल नहीं जा पाती हैं।

कई अध्ययनों के अनुसार, भारत में 15-24 वर्ष आयु वर्ग की युवा महिलाओं की बेरोज़गारी दर 11.5 प्रतिशत है, जबकि समान आयु वर्ग के युवा पुरुषों के मामले में यह 9.8 प्रतिशत है।

वर्ष 2018 में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट में कहा गया था कि 15-18 वर्ष आयु वर्ग की लगभग 39.4 प्रतिशत लड़कियाँ स्कूली शिक्षा हेतु किसी भी संस्थान में पंजीकृत नहीं हैं और इनमें से अधिकतर या तो घरेलू कार्यों में संलग्न होती हैं या भीख मांगने जैसे कार्यों में।

आँकड़े यह भी बताते हैं कि भारत में अभी भी लगभग 145 मिलियन महिलाएँ हैं, जो पढ़ने या लिखने में असमर्थ हैं।

उल्लेखनीय है कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा स्थिति और अधिक गंभीर है।

आर्थिक भागीदारी और अवसर :

रिपोर्ट के अनुसार, 2006 में पहली बार प्रकाशित आकड़ों की तुलना में आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं के लिये सक्रिय भागीदारी के अवसरों में कमी आई है।

153 देशों में किये गए सर्वे में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत राजनीतिक क्षेत्र से कम है।

श्रमिक बाजार में भी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पुरुषों (82%) की तुलना में एक-चौथाई ही है तथा महिलाओं की औसत आय पुरुषों की तुलना में ⅓ है, इस मामले में भारत का विश्व स्थान 144वाँ स्थान है।

WEF के आँकड़ों के अनुसार, अवसरों के मामले में विभिन्न देशों में आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति इस प्रकार है- भारत (35.4%), पाकिस्तान (32.7%), यमन (27.3%), सीरिया (24.9%) और इराक़ (22.7%)।

साथ ही भारत का नाम विश्व के उन देशों की सूची में भी है जहाँ कंपनियों में नेतृत्व के शीर्ष पदों पर महिलाओं की भागीदारी सिर्फ 13.8% है, जबकि इन्ही पदों पर चीन में महिलाओं की संख्या सिर्फ 9.7% ही है।

केवल 14% भागीदारी उन महिलाओं की है जो शीर्ष नेतृत्व के पदों पर हैं (विश्व में 136वाँ स्थान) और पेशेवर तथा तकनीकी कुशल महिलाएँ केवल 30% है।

WEF ने देश के दूर-दराज़ के इलाकों में महिलाओं की स्थिति और भारतीय समाज में गहराई तक फैले लैंगिक अंतराल पर चिंता जाहिर की है।आर्थिक तौर पर महिलाओं को सशक्त बनाने के मामले में 190 देशों में भारत का स्थान 117वां है। विश्व बैंक की बहुप्रतिक्षित रिपोर्ट 'वूमन बिजनेस एंड लॉ 2020 (डब्ल्यूबीएल इंडेक्स)' से पता चलता है कि 190 अर्थव्यवस्था या देश में कानून कैसे विभिन्न स्तरों पर कामकाजी महिलाओं की जिंदगी प्रभावित करती है।global gender gap report में कहा गया है कि

दुनिया भर में पूर्ण लिंग समानता अभी भी लगभग 100 वर्ष दूर है। रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं को पुरुषों के समान आर्थिक अवसर प्राप्त करने में 257 वर्ष लगेंगे।

'आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS), 2018-19' के अनुसार, कार्यक्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में भारी गिरावट देखने को मिली है।

वर्ष 2011-19 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यस्थलों पर महिलाओं की भागीदारी 35.8% से घटकर 26.4% ही रह गई।

वर्ष 2019 में जारी ऑक्सफैम रिपोर्ट के अनुसार, लिंग के आधार पर वेतन के मामले में होने वाले भेदभाव के मामले में एशिया के देश सबसे प्रमुख हैं, एशिया में समान योग्यता और पद पर कार्य करने वाली महिलाओं को 34% कम वेतन प्राप्त हुआ।

अक्तूबर 2020 में जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) रिपोर्ट के अनुसार, अक्तूबर-दिसंबर 2019 में महिला बेरोज़गारी की दर 9.8% रही जो वर्ष 2019 में जुलाई-सितंबर की तिमाही के आँकड़ों से अधिक है, गौरतलब है कि COVID-19 महामारी के बाद देशभर में बेरोज़गारी के आँकड़ों में व्यापक वृद्धि देखी गई।

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी लगभग 60% है परंतु इनमें से अधिकांश भूमिहीन श्रमिक हैं जिन्हें स्वास्थ्य, सामाजिक या आर्थिक सुरक्षा से संबंधित कोई भी सुविधा नहीं प्राप्त होती है।

वर्ष 2019 में मात्र 13% महिला किसानों के पास अपनी ज़मीन थी और वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, यह अनुपात मात्र 12.8% था।

इसी प्रकार विनिर्माण क्षेत्र (लगभग पूरी तरह असंगठित) में महिला श्रमिकों की भागीदारी लगभग 14% ही है।

सेवा क्षेत्र में भी अधिकांश महिलाएँ कम आय वाली नौकरियों तक ही सीमित हैं

भारत में स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान और उससे पहले भी कई सामाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा महिला अधिकारों के मुद्दों को बहुत ही प्रमुखता से आगे रखा गया है। देश की स्वतंत्रता के बाद भी महिला अधिकारों और कार्यक्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी के संदर्भ में सामाजिक तथा राजनीतिक हस्तक्षेप जारी रहे हैं परंतु देश के विकास के साथ-साथ इस दिशा में अपेक्षित सुधार देखने को नहीं मिला है।

भारत में विविध क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में कमी के कई कारण है।

कारण

1)सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि:

भारत में लगभग सभी धर्मों और वर्गों के लोगों में लंबे समय से समाज की मुख्यधारा में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को लेकर अधिक स्वीकार्यता नहीं रही है। वर्तमान में भी देश के कई हिस्सों में महिलाओं को घरेलू कामकाज या अध्यापक अथवा नर्स आदि जैसी भूमिकाओं में ही कार्य करने को प्राथमिकता दी जाती है।

सामाजिक दबाव और विरोध के भय से कुछ पारंपरिक क्षेत्रों को छोड़कर आमतौर पर अन्य क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी कम ही रही है। भारतीय समाज में व्याप्त इस भेदभाव की शुरुआत बच्चे के जन्म से

ही हो जाती है, इस भेदभाव को भारत में जन्म के समय लिंगानुपात में भारी असमानता है। [संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (United Nations Population अनुसार, लगभग 910]

उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों की कमी: पिछले दो दशकों में देश में प्राथमिक शिक्षा के मामले में व्याप्त लैंगिक असमानता को दूर करने में बड़ी सफलता प्राप्त हुई है, हालाँकि उच्च शिक्षा और पेशेवर प्रशिक्षण संबंधी कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी में कमी अभी भी बनी हुई है। 'अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण, 2018-19' की रिपोर्ट के अनुसार, प्रौद्योगिकी और तकनीकी से संबंधित पाठ्यक्रमों में नामांकित पुरुष छात्रों (71.1%) की तुलना में महिला छात्रों (28.9%) की भागीदारी काफी कम रही।

2) संसाधनों की कमी:

कार्य क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी शिक्षा और रोज़गार के अवसरों की उपलब्धता के साथ आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता पर भी निर्भर करती है। देश में अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों या छोटे शहरों में घर से कार्यस्थल की दूरी, 24 घंटे यातायात के सुरक्षित साधन, सार्वजनिक स्थलों पर प्रसाधन या अन्य आवश्यक संसाधनों का न होना इस कारण भी महिलाओं की भागीदारी में कमी का एक प्रमुख कारण है। इन संसाधनों की अनुपलब्धता का प्रभाव उनके स्वास्थ्य और कार्यक्षमता पर भी पड़ता है।

3) कार्यस्थलों पर भेदभाव और शोषण:

कार्यस्थलों पर होने वाला भेदभाव महिलाओं के विकास में एक बड़ी बाधा रहा है, देश में सक्रिय सार्वजनिक (सेना, पुलिस आदि) और निजी क्षेत्र के अधिकांश संस्थानों में शीर्ष निर्णायक पदों पर महिला अधिकारियों की कमी इस भेदभाव का एक स्पष्ट प्रमाण है। भारत में आज भी कई कार्य स्थलों पर महिलाओं का यौन शोषण होता है, 'मी टू अभियान' यह सिद्ध करता है।

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भूमिका अधिक होने के बावजूद भी समाज के साथ-साथ सरकार की योजनाओं में इसकी स्वीकार्यता की कमी दिखाई देती है। कार्यस्थलों पर भेदभाव और शोषण की घटनाएँ पीड़ित व्यक्ति के साथ आकांक्षी युवाओं के मनोबल को भी कमज़ोर करती हैं, हाल ही में सोशल मीडिया पर सक्रिय 'मी टू अभियान' (MeToo Movement) के तहत सामने आई महिलाओं के अनुभवों ने इस क्षेत्र में व्यापक सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

4) नीतिगत असफलता:

देश की अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने में सरकार की नीतियाँ अधिक सफल नहीं रही हैं। इसका एक कारण भारतीय राजनीति (लगभग 14% महिला सांसद, स्वतंत्र भारत में मात्र एक महिला प्रधानमंत्री) और नीति निर्माण संबंधी अन्य महत्त्वपूर्ण पदों पर महिलाओं के प्रतिनिधित्व में कमी को माना जा सकता है।

सुझाव--

1) भारत के संबंध में कई बार वर्ल्ड बैंक ग्रुप आदि ने कहा है कि अगर यहाँ पर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि की जाए तो भारत की विकास दर में तीव्र वृद्धि हो सकती है।

2) महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा, ज़बरन विवाह और स्वास्थ्य जैसी सेवाओं में होने वाला भेदभाव आज भी चिंता का विषय है जिसे दूर करने की सख्त ज़रूरत है।

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

WEF के अनुसार, इस असमानता को दूर करने के लिये जरूरी है कि साथ ही साथ उभरते नए क्षेत्रों जैसे क्वांटम-कम्प्यूटिंग, इंजीनियरिंग, डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता(AI) में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाया जाए तथा नई पीढ़ी को इससे जुड़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाए।

3) यह माना जाता है कि कार्यबल में महिलाओं के प्रवेश को सुनिश्चित करने और उनकी भागीदारी बढ़ाने में जेंडर मेनस्ट्रीमिंग इंफ्रास्ट्रक्चर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जेंडर सेंसिटिव इंफ्रास्ट्रक्चर के तहत सभी हेतु पूर्वकालिक शिशुगृह, कार्यरत महिलाओं हेतु सहायक एवं सुरक्षित हॉस्टल एवं आवागमन सार्वजनिक सुविधाएँ शामिल हो।

4)महिलाओं के विकास हेतु सकारात्मक आर्थिक और सामाजिक नीतियों का निर्माण किया जाए।

5) पुरुषों के साथ महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नागरिक क्षेत्रों में वैधानिक एवं समान अवसर प्रदान करें।

6) देश के लिये महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की समान भागीदारी के लिए महिला राजनीतिक आरक्षण दिया जाए।

7)स्वास्थ्य, गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, रोज़गार में समान पारिश्रमिक, सामाजिक सुरक्षा आदि महिलाओं तक समान स्तर पर पहुँचे।

8) महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन किया जाए,सक्रिय भागीदारी द्वारा सामाजिक व्यवहार और कुप्रथाओं में परिवर्तन लाने के लिए कड़े कानून बनाए जाए।

9) विकास प्रक्रिया में लैंगिक भेदभाव को समाप्त करें

10)महिलाओं और बालिकाओं के प्रति सभी प्रकार की हिंसा का उन्मूलन किया जाए तथा नागरिक समाज विशेषकर महिला संगठनों के साथ भागीदारी कर उन्हें सुदृढ़ बनाए।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, यदि भारत में कार्यक्षेत्र में व्याप्त लैंगिक असमानता को 25% कम कर लिया जाता है तो इससे देश की जीडीपी में 1 ट्रिलियन डॉलर तक की वृद्धि हो सकती है। विश्व आर्थिक मंच के अनुसार, कार्यस्थलों पर महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि से कई सामाजिक और आर्थिक लाभ देखने को मिले हैं।

शिक्षा और रोज़गार के अवसरों में वृद्धि से महिलाओं में अपने स्वास्थ्य तथा विकास के प्रति जागरूकता के बढ़ने के साथ अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता में वृद्धि होती है। इस बदलाव का सकारात्मक प्रभाव समाज तथा देश की अर्थव्यवस्था पर भी देखने को मिलता है।

देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका को स्वीकार करते हुए बेहतर योजनाओं के क्रियान्वयन के माध्यम से गरीबी, स्वास्थ्य और आर्थिक अस्थिरता से संबंधित चुनौतियों से निपटने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

महिलाओं को अपने स्वतंत्र अस्तित्व का निर्माण करने और उसे कायम रखने हेतु स्वावलंबी और आत्मनिर्भर होना जरूरी है।

संदर्भ

1) वैश्विक आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट-2019
2) वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट- 2020
3) नारी सशक्तिकरण का इतिहास- देवेंद्र कुमार शरण
4) भारत समाज और महिलाएं- डॉ सुषमा जैमन
5) Indian constitution and women- Dr Nishant Singh

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera



20-21

Peer Reviewed Refereed
and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Volume - X, Issue - IV,
October - December - 2021
Marathi Part - I / Hindi

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta
Prakashan

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

CONTENTS OF MARATHI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२६	पंचायत राज व्यवस्था आणि महिला नेतृत्व **डॉ. संगीता भांगडिया मालानी**	१३३-१३८
२७	पालघर जिल्ह्यातील आदिवासी राजकीय नेतृत्वाचा अभ्यास **प्रा. डॉ.नवनाथ अडकिणे** **प्रा. संतोष भावार्थे**	१३९-१४२
२८	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या संविधानातील सामाजिक न्यायाच्या अनुषंगाने आरक्षणातील तरतुदी **चैतन्य शंकर कांबळे**	१४३-१४९
२९	महात्मा गांधीजी प्रणित आदर्श ग्रामस्वराज्य व्यवस्था **डॉ. भालेराव जे. के.**	१५०-१५४

२६. पंचायत राज व्यवस्था आणि महिला नेतृत्व

डॉ. संगीता भांगडिया मालानी
राज्यशास्त्र विभाग, प्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा.

कोणत्याही देशाचा विकास तेव्हाच शक्य आहे जेव्हा त्या देशातील महिलांचा विकास झालेला असेल. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी म्हटले होते की समाजात स्त्रीला महत्त्वाचे स्थान आहे. ज्या घरातील स्त्री ही शिक्षित- प्रशिक्षित असेल त्या घरातील मुलं नेहमीच प्रगती पथावर अग्रेसर राहतात. भारतातील एकूण लोकसंख्येच्या पन्नास टक्के महिला आहेत. आज महिला पुरुषांच्या बरोबरीने सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, क्रीडा, विज्ञान, तंत्रज्ञान अशा प्रत्येकच क्षेत्रात दिसून येत आहे. बऱ्याच क्षेत्रात महिलांनी निर्विवाद यश संपादन केलेले आहे. मात्र यशाचे शिखर प्राप्त करताना तिला अनेक संघर्षातून जावे लागले आणि अजूनही संघर्ष करावा लागत आहे. राजकीय क्षेत्र असे आहे की ज्यात महिलांना त्यांच्या लोकसंख्येनुसार अजूनही प्रतिनिधित्व मिळाले नाही. भारतीय संविधान स्थानिक स्तरापासून ते राष्ट्रीय स्तरापर्यंत नागरिकांना सहभागी होण्याची संधी प्राप्त करून देते. त्यामुळे भारतीय स्त्रियांना ही संधी सुरुवातीपासूनच प्राप्त झाली आहे परंतु राजकारणात सक्रिय सहभाग आणि राजकीय निर्णय प्रक्रियेत सहभाग मात्र स्वातंत्र्याच्या सात दशकानंतर सुद्धा उल्लेखनीय स्वरूपात झालेला दिसून येत नाही. भारतीय संविधानाने स्त्री आणि पुरुषांना बरोबरीचे अधिकार दिलेले आहेत.कोणत्याही देशाचा संपूर्ण विकास व्हावा असे वाटत असेल तर स्त्रियांना सहभागी करून घ्यावेच लागेल. स्वामी विवेकानंद म्हणतात की, "ज्याप्रमाणे एका पंखाने पक्षी उडू शकत नाही त्याचप्रमाणे स्त्रियांच्या सहभागाशिवाय कोणतेच राष्ट्र प्रगती करू शकणार नाही".

स्वातंत्र्यानंतर भारत सरकारने स्त्रियांच्या स्थितीत सुधारणा करण्यासाठी अनेक योजना केल्या व महिलांना अनेक अधिकार दिले आहे. 1975 नंतर म्हणजे आंतरराष्ट्रीय महिला आयोगाच्या स्थापनेनंतर संपूर्ण देशभरातच महिला नेतृत्वाला महत्त्व देण्यात येऊ लागले. कर्नाटक राज्याने एकूण 1985 ला महिलांसाठी जिल्हा परिषद व पंचायत समितीमध्ये 25 टक्के जागा राखीव जागा ठेवून महिला नेतृत्वाला संधी दिली तसेच केरळ राज्याने 1991 ला जिल्हा परिषदेमध्ये 30 टक्के आरक्षणाची तरतूद केली. ७३ व्या घटनादुरुस्तीमुळे संविधानातील 248 डी (३) कलमानुसार पंचायत व्यवस्थेतील तीनही स्तर ग्रामपंचायत, पंचायत समिती व जिल्हा परिषद यामध्ये महिलांना १/३ आरक्षणाची तरतूद करण्यात आली या तरतुदीमुळे आज स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये नेतृत्व उदयास आले. आरक्षणाची तरतूद ही महिला सशक्तिकरण याच्या दृष्टीने एक महत्त्वाचे पाऊल होते त्यामुळे त्याचा फायदा केवळ महिलांना झाला असे नाही तर राष्ट्राला सुद्धा त्यांच्या ज्ञानाचा व अनुभवाचा फायदा झाला संयुक्त राष्ट्राची एजन्सी यु. एन. एफ.

VOLUME - X, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

पी. ए.च्या मते महिला आरक्षणामुळे केवळ महिलांच्या सशक्तीकरणाचे द्वार मोकळे झाले नसून स्त्रियांमध्ये नवीन चेतना, नवीन सामर्थ्य आणि आशेच्या किरणांचा संचार झाला आहे. सध्या आंध्रप्रदेश, आसाम, बिहार, छत्तीसगड, गुजरात, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, केरळ, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तामिळनाडू, तेलंगणा, त्रिपुरा, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल या 21 राज्यांतील पंचायत राज व्यवस्थेत महिलांना 50 टक्के आरक्षण आहे.

पंचायत राज मंत्रालय भारत सरकार 2018 नुसार ग्रामपंचायत मध्ये 1292203, पंचायत समिती 75620, जिल्हापंचायत मध्ये 8091 महिला प्रतिनिधित्व करीत आहे. एकूण 3100804 पैकी 1375914 म्हणजे 44.37% महिला पंचायत राज व्यवस्थेत प्रतिनिधित्व करीत आहे. राज्य निहाय संख्या खालील सारणी दिलेली आहे.

Elected Women Representatives (EWRs)

Total Elected Representatives (ERs)

Source: MoPR Compilation as on 27.03.2018

Sr. No.	Name of the State/ UTs	Total ERs	Total EWRs	%EWRs
1	Andra Pradesh	156050	78025	50.00
2	Arunachal Pradesh	9383	3658	38.99
3	Assam	26820	13410	50.00
4	Bihar	127391	57887	45.44
5	Chhatisgarh	170285	93287	54.78
6	Gujarat	144016	71988	49.99
7	Haryana	70035	29499	42.12
8	Himachal Pradesh	28723	14398	50.13
9	Jammu& Kashmir	33847	11169	33.00
10	Jharkhand	60782	30757	50.60
11	Karnatak	104967	50892	48.48
12	Kerala	18372	9630	52.42
13	Madhya Pradesh	392981	196490	50.00
14	Maharashtra	240122	121490	50.60
15	Manipur	1723	868	50.38
16	Mizoram	3502	828	23.64
17	Odisha	107487	53551	49.82
18	Panjab	97180	32393	33.33
19	Rajasthan	124854	70527	56.59
20	Sikkim	1096	548	50.00
21	Tamil Nadu	117599	39975	33.99
22	Tripura	6646	3006	45.23
23	Telangana	103468	51735	50.00
24	Uttarakhand	64606	35957	55.66
25	Uttarpradesh	826458	272733	33.00
26	West Bengal	59402	30157	50.77
27	Dadar & Nagar Haveli	136	47	34.56
28	Daman & Diu	172	92	53.49
29	Goa	1564	516	32.99
30	Candigarh	169	58	34.32
31	Lakshdip	110	41	37.27
32	A & N island	858	302	35.20
	Total	**3100804**	**1375914**	**44.37**

वरील सारणी वरून असे दिसून येते की

1. राजस्थान, छत्तीसगड, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, केरळ, महाराष्ट्र, मणिपूर, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल व दमन दीव यासारख्या राज्य आणि केंद्रशासित प्रदेशात महिलांना 50 टक्केच्या वर प्रतिनिधीत्व आहे.
2. राजस्थान या राज्यात महिलांचे 56.49 टक्के प्रतिनिधित्व आहे.
3. आंध्रप्रदेश, आसाम, गुजरात, मध्यप्रदेश, ओडिसा, सिक्कीम, तेलंगणा यासारख्या राज्यात जवळपास 50 टक्के महिला प्रतिनिधित्व आहे.
4. मिझोराम वगळता इतर राज्ये आणि केंद्रशासित प्रदेशात 33% किंवा 33%च्या वर महिलांना प्रतिनिधित्व आहे.
5. विहार, हरियाणा, कर्नाटक, पंजाव, तामिळनाडू, त्रिपुरा यासारख्या राज्यांनी पंचायतराज व्यवस्थेत महिलांना 50 टक्के आरक्षणाचा निर्णय घेतलेला असताना ही पुरेसे प्रतिनिधित्व नाही.

मात्र वरील सारणी वरून असे म्हणता येईल की आरक्षणामुळे निश्चितच महिला सहभागीतेत वाढ झाली आहे. समाजात त्यांचा दर्जा वाढला आहे. त्यांना सन्मान आणि महत्त्व प्राप्त झाले आहे. ही समाधानकारक वाव आहे.

1. पंचायत राज मधील आरक्षणामुळे महिला नेतृत्व निर्माण झाले असून त्याचे प्रतिविंव राज्य विधिमंडळ व केंद्रीय कायदे मंडळात दिसून येत आहे
2. महिला आरक्षणामुळे स्त्रिया कुटुंवात ही महत्त्वपूर्ण झाल्या आहे. त्यांचा आत्मविश्वास वाढलेला आहे.
3. विविध अभ्यासावरुन असे दिसते की महिला प्रतिनिधित्व मुळे पाणी, आरोग्य, विकासाच्या योजना, पायाभूत सुविधा, स्वच्छतागृहे, वचतगट, महिला सुरक्षितता, लिंगनिदान करून स्त्री-भ्रूणहत्या, भाजी, मंडया व त्यातील स्वच्छता, दिव्यांचा अभाव यांसारख्या प्रश्नांवर लक्ष वेधले गेले.
4. गेल्या दहा वर्षात ग्रामीण भागातही महिला सरपंचांपैकी काहींनी दारूवंदीच्या लढाईलाही मूर्तस्वरूप दिले. ग्रामसभा घेतल्या, दारूवंदीचे ठराव विजयी केले व गावपातळीवर समाज सुधारायचा प्रयत्न केला.

अमरावती जिल्हा परिषद सदस्य 1997 सुरेखाताई ठाकरे यानी पाणीटंचाई, अगणवाडी आहार, वालकांच्या आरोग्य संदर्भात अनेक प्रश्न सभागृहात मांडले आणि तडीस नेले. तसेच अमरावती जिल्हा परिषदेतील(1997) शिराळा येथील कोकिळाताई काळमेघ यांनी दारूवंदी विषयी विशेष कार्य केले. अकोला जिल्हा परिषदेतील (1995) व्यवसायाने डॉक्टर असणारया डॉ. संजीवनी विरहाडे यानी पाच लाखाची

गर्भाशय कर्करोग निदान शिबीर योजना राबविण्यासाठी प्रत्यक्ष तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शरद पवार यांची भेट घेऊन या योजनेचे महत्त्व त्यांनी पटवून दिले होते आणि मंजुरी मिळवून घेतली होती. तसेच सौ.नयना मनातकार या अकोला जिल्हा परिषद सदस्य (1997) यांनी महिला मेळाव्याच्या दौऱ्यात 'दौरा विदाऊट नवरा' हे घोषवाक्य ठेवले होते. ते फार प्रभावी ठरले. यवतमाळ जिल्हा परिषदेच्या महिला सदस्य 1997 च्या संध्याताई सव्वालाखे यांनीही विविध प्रश्न सोडविले. आज त्या काँग्रेसच्या महाराष्ट्र प्रदेश महिला काँग्रेस अध्यक्ष आहे. अशा अनेक महिलांनी विविध प्रश्न, ज्वलंत समस्या सोडविण्याचे कार्य केल्याचे दिसून येते.

स्त्रीच्या राजकारणातील सहभागाविषयीच्या वाढणाऱ्या प्रतिकूलतेला स्त्रियांनी एक शक्ती यत्नपूर्वक यश मिळवले आहे. परंतु 25 वर्षांत म्हणजे आरक्षणानंतरची परिस्थिती पाहिली तर स्त्रिया राजकारणात आल्या, निर्णयप्रक्रियेला समजून घेऊ लागल्या, परंतु स्त्रियांना निर्णय घेता येतात, ती अधिकार गाजवू शकते, किंबहुना स्त्री एक उत्तम प्रशासक असू शकते, ही वस्तुस्थिती समाजाने अजूनही पाहिजे तशी आत्मसात केलेली नाही. असे मत काही आमदार-खासदार असणाऱ्या महिलांनी मांडले आहेत.

प्राजक्ता पोळ बीबीसी मराठी प्रतिनिधी यांनी विचारलेला प्रश्न (17 ऑक्टोबर 2019)

महिलांना समान हक्क मिळण्याची चर्चा सर्वदूर होत असली तरी राजकारणात हे चित्र तितकं समाधानकारक दिसत नाही.

यावर बोलताना सध्याच्या अमरावती पालकमंत्री यशोमती ठाकूर म्हणाल्या, "2009-2014 ला पहिल्यांदा आमदार झाले. पण या पाच वर्षांत मला माझ्या जिल्ह्यात जिल्हा अध्यक्षांनी मला आमदार म्हणून कधी तितकसं महत्व दिलं नाही. जेव्हा प्रदेश पातळीवरच्या एखाद्या पदासाठी विचार केला जातो तेव्हा महिलांच्या बाबतीत तिच्या बुध्दिमत्तेपेक्षा ती हे करू शकेल का? तिला हे पेलता येईल का इथपर्यंत विचार केला जातो."

त्या पुढे सांगतात, "जर विरोधी पक्षाचा एखादा पुरुष आमदार जोराने ओरडून विरोध करू लागला तर मी ही महिला आमदार म्हणून ते करू शकते. पण त्यावेळी जोरदार ओरडून विरोध करणारा पुरुष आमदार आणि ओरडून विरोध करणारी महिला आमदार या दोघांनाही वेगवेगळ्या चौकटीतून बघितलं जातं. त्यामुळे इतक्या वर्षाच्या धारणेमुळे अजून राजकारणात म्हणावी तशी समानता आलेली नाही."

भाजपच्या प्रवक्त्या शायना एन. सी यांनीही या विषयावर आपली मतं मांडली. त्या म्हणतात, "आपण कितीही समानता म्हटली तरी राजकारणात आजही पुरूषांची मक्तेदारी आहे. आम्ही भाजप पक्षात महिलांना उमेदवारी देण्यासाठी सतत आग्रही भूमिका घेतो. पण त्यावेळी महिला उमेदवार निवडून जिंकण्याच्या आणि जबाबदारी पेलण्याच्या क्षमतेवर विचार केला जातो.

याबाबत राष्ट्रवादी काँग्रेसच्या नेत्या आणि खासदार सुप्रिया सुळे यांनी बीबीसी मराठीशी बोलताना म्हटलं, "आम्हाला इच्छा असूनही महिलांना उमेदवारी देता येत नाही. कारणं उमेदवाराची निवडून येण्याची क्षमता ही ग्राह्य धरली जाते. ती क्षमता असणाऱ्या महिलांची कमी होती. त्यामुळे हे शक्य झालं नाही."

राष्ट्रवादीतून भाजपात आलेल्या महिल्या नेत्या चित्रा वाघ म्हणतात, "प्रत्येक क्षेत्रात जशी स्पर्धा असते तशी राजकारणात सुध्दा आहे. पण राजकारणातला संघर्ष हा खूप जास्त आहे. जिला घराणेशाहीची पार्श्वभूमी नाही अशा सामान्य घरातल्या महिलेने चौकट मोडून पुढे जायचा प्रयत्न केला तर त्या स्त्रीलाच अजूनही चुकीचं ठरवलं जातं. स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये महिलांना आरक्षण मिळालय, पण विधानसभा आणि लोकसभेतही ते मिळालं तर जास्तीत जास्त महिलांना संधी मिळेल."

ही सर्व वास्तविकता असली तरी हेही सत्य आहे की,

1. स्थानिक स्वराज्य संस्थेमध्ये महिला आरक्षणामुळे महिला नेतृत्व निर्माण प्रक्रियेला एकंदरीत गती प्राप्त झालेली आहे.
2. लोकशाही प्रक्रियेतील सहभाग वाढविण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.
3. महिला आरक्षण नसते तर महिला नेहमी राजकारणापासून अलिप्त राहिल्या असत्या.
4. राजकारणात त्यांचा वावर वाढल्यानंतर महिला आत्मविश्वासाने बोलताहेत, काहीतरी करून दाखवण्याची महिलांमधील जिद्द वाढली आहे.
5. स्त्रियांनी राजकारणाविषयी नकारात्मकता न बाळगता, राजकारणात येत आहेत.
6. स्त्रियांना मिळालेल्या आरक्षणामुळे पुरुषांचा एकाधिकार काही प्रमाणात संपुष्टात आलेला आहे.
7. महिला आरक्षणामुळे समाजजीवनाच्या विविध क्षेत्रावर म्हणजेच राजकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिणाम झालेले आहेत.
8. महिला ह्या जुन्या, पारंपारिक रूढी, परंपरा आणि अंधश्रद्धा च्या जोखडातून मुक्त होऊन निर्भय आणि निर्णयक्षम बनत आहे.

अशाप्रकारे आरक्षणामुळे महिलांच्या जीवनात मोठे बदल घडून येत आहे. महिला हा प्रत्येक समाजाचा अविभाज्य घटक आहे समाजातील व देशातील समानता टिकविण्यासाठी, देशाचा विकास करण्यासाठी, परिवर्तन घडवून आणण्यासाठी महिलांचा राजकारणातील सहभाग हा अत्यंत आवश्यक आहे. यासाठी अजूनही प्रयत्न करणे गरजेचे आहे.

1. महिला चळवळीने कात टाकून केवळ समाजकारण न करता राजकीय आरक्षणासाठी लढले पाहिजे. आणि स्त्रियांचं प्रतिनिधित्व करण्यासाठी समाजभान असलेल्या चांगल्या महिला राजकारणात धाडल्या पाहिजेत.
2. शिवाय महिला राजकीय आरक्षणाचं जे विधेयक गेल्या अनेक वर्षांपासून रखडून आहे ते संसदीय अधिवेशनात महिला खासदारांनी संसदेत मांडावे. आणि ते सर्वांनी एकमताने पास

करावे. हे विधेयक संसदीय अधिवेशनात मांडल्या गेले तर, परिस्थिती बदलू शकते. जर उच्च स्तरावर स्त्रियांच्या राजकीय सहभागाला थांबवले गेले तर राष्ट्रनिर्माण करिता महिलांच्या सहकार्याचा पूर्ण लाभ राष्ट्राला प्राप्त होणार नाही.

3. महिलांनी आपली सक्रियता वाढविण्यासाठी उपलब्ध संधीचा उपयोग करावे.
4. स्त्रियांच्या कार्यक्षमतेवर व कुशलतेवर जे प्रश्नचिन्ह निर्माण केले जाते ते दूर करण्यासाठी महिलांनी प्रयत्न केले पाहिजे.

कारण, सर्वसमावेशक लोकशाही ही समान राजकीय सहभागाशिवाय निर्माण होऊच शकत नाही.

संदर्भ

1. http://lgdirectory.gov.in
2. https://www.saamana.com/womens-oarticipation-in-politics/
3. पश्चिम विदर्भातील जिल्हा परिषदेतील महिला प्रतिनिधींचा राजकीय सहभाग- तौलनिक अध्ययन - डॉ. संगीता भांगडीया
4. मराठी स्त्री शक्ती चे राजकारणी रूप- रोहिणी गवाणकर
5. पंचायती राज महिला सशक्तिकरण- अनिता मोदी

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April -2021
ISSUE No- (CCLXXI)290

India's Challenges in 21st Century: Issues and Remedies



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Nitin A. Mathankar
Principal
Late Vasantrao Kolhatkar Arts
College, Rohana

Guest Editor
Adv. Nitin V. Kolhatkar
President
Swami Vivekanand Bahuuddeshiy:
Vikas Shikshan Sanstha, Rohana.

This Journal is indexed in :
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

39	Electronic Resources in Libraries — Dr Rajendra Manikpure	157
40	E-Book And Its History — Dr. Sagnarani S. Kamteke	160
41	Future Challenges for Library Professionals in India — Dr Ashish Thanekar	163
42	Challenges of rural students in India — Dr. Archana v. Bhangdia	165
43	Swami Vivekananda's Views on Significance of Ethics and Values in Education for Regeneration of New India — Dr. Sawan Giridhar Dharmpuriwar	167
44	The Legal and Regulatory Framework of Third-Party Motor Vehicle Insurance in India: Issues and Challenges — Abhijit More	170
45	ग्रंथालय आणि समाज — प्रा. प्रयोद लडस	175
46	२१ व्या शतकातील भारतासमोरील आव्हान – दहशतवाद — प्रा.डॉ. प्रमिला डी. पोयर	178
47	कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी — डॉ. एस.जी.पांगडिया	183
48	ग्रामीण क्षेत्राच्या आर्थिक प्रगतीत स्वयंसहाय्यता बचतगटाची भूमिका — कु. गायत्री गजाननराव कडवे	188

'Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 7.675, Issue NO. 290 (CCXC) A
ISSN 2277-9302
April - 2021

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी

डॉ. एस.जी. भागडिया
राज्यशास्त्र विभाग नारायणराव राणा महाविद्यालय, डबलेर

15 अक्तूबर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा ग्रामीण महिलाओं के अंतर्राष्ट्रीय दिवस और भारत में वर्ष 2017 में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने राष्ट्रीय महिला किसान दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया भारत अपने अस्तित्वकाल से ही कृषि प्रधान देश रहा है। यहां जिस तरह से पुरुष और महिलाओं के बीच श्रम का विभेदीकरण किया गया है, उसमें महिलाओं के जिम्मे जो कार्य है, वह गुणात्मक रूप में मात्रात्मक के साथ पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों के पास अधिक है। इसमें शहरों की तुलना में ग्रामीण महिलाओं के पास कार्य की अधिकता है, इसके विपरीत औरतों की स्थिति दयनीय है। सबसे अधिक कार्य का बोझ होने के बावजूद श्रमशक्ति में पुरुषों से कम पारिश्रमिक उनकी दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

शहरों में तो व्यावसायिक एवं मासिक वेतन कर्मचारी व्यवस्था में अधिकतर महिलाएं कार्यरत हैं, किंतु यह स्थिति गांवों में नहीं है। वहां महिलाएं कृषि क्षेत्र में पुरुषों के साथ बराबरी से तो नहीं उससे भी अधिक भागीदारी कर वे अपनी बहुआयामी भूमिकाएं निभा रही हैं। बुवाई से लेकर रोपण, निकाई, निकाई उर्वरक डालना, पौध संरक्षण, कटाई, निराई, भंडारण और कृषि से जुड़े अन्य कार्य जैसे कि बकरी पालन चारे का संग्रह, दुग्ध संग्रहण, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, सूकर पालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन इत्यादि में ग्रामीण महिलाएं पूरी तरह सक्रिय हैं। इसके साथ ही कृषि क्षेत्र के क्षेत्रीय, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और क्षेत्रीय कारकों के आधार पर काम करने वाले वैतनिक मजदूरों, अपनी श्रम को अर्जित कर रही जोतकार और कटाई पश्चात अभियानों में श्रम पर्यवेक्षण और सहभागिता के जरिए कृषि उत्पादन के विभिन्न पहलुओं के प्रबंधन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है हो, लेकिन क्या इतना अधिक योगदान होने के बाद भी हम अपनी महिलाओं के साथ न्याय कर पा रहे हैं?

दिल्ली में 70 दिनों से किसानों का बड़ा आंदोलन हो रहा है। देश के कई हिस्से के किसानों ने राजधानी के विभिन्न हिस्सों में डेरा डाला हुआ है। जबकि, यह वक्त कुछ जगहों पर धान की कटाई और गेहूं में पानी लगाने का है। दूसरी मौसमी फसलें भी खेतों में लगी है, उन सभी की देखरेख महिलाएं ही कर रही है। किसान बे-खबर होकर आंदोलन में डटे हैं। उनको पता है उनकी गैर-मौजूदगी में उनकी औरतें खेती का काम संभाल लेंगी। विगत कुछ वर्षों में मध्यम और सीमांत जोत वाले दूसरे काम धंधों की तरफ मुड़ रहे हैं उनकी जमीनें घरों की महिलाएं जोतती हैं। उत्तर प्रदेश में गन्ने की खेती सबसे ज्यादा होती है इसलिये उत्तर प्रदेश के अलावा यूपी के लखीमपुर और पीलीभीत जिले में गन्ने की खेती बहुतायत रूप में होती है, इस समय वहां गन्ने की कटाई बड़े स्तर पर चालू है जिसमें ज्यादातर महिलाएं लगी है। पुरुष किसानों की तुलना में लंबे समय तक अधिक काम करने के बावजूद महिला किसान न तो उत्पादन पर कोई दावा कर सकती है और न ही उच्च मजदूरी दर की मांग कर सकती है।

खेत पर काम करने के अलावा, उनके पास घर और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी हैं।आंकड़ों के अनुसार खेती-बाड़ी के काम में 32.8 प्रतिशत महिलाएं और 81.1 फ़ीमदी पुरुष जुड़े हैं। पर यह सच्चाई नहीं है। इनमें 81.1 फ़ीसदी पुरुष किसानों के घर की औरतें है, वह औरतें जो किसान नहीं कहलाती। महिलाएं फसलों की बुवाई से लेकर निराई, फसल काटने आदि में अपनी भागीदारी बढ़ चढ़कर निभाती है लेकिन इनकी मेहनत कहीं भी नहीं गिनी जाती।महिला किसानों का समाज में शायद ही कोई प्रतिनिधित्व है और किसानों के संगठनों या समय–समय पर किये जाने वाले आंदोलनों में उनका कहीं भी स्पष्ट प्रतिनिधित्व भी नहीं हैं।अभी हो रहे आंदोलन में यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है। वे ऐसी अदृश्य श्रमिक हैं जिनके बिना कृषि अर्थव्यवस्था में वृद्धि करना मुश्किल है।

जनगणना 2011 के मुताबिक समूचे हिंदुस्तान में तकरीबन 6 करोड़ के आसपास महिला किसानों की संख्या बताई गई है। लेकिन धरातल पर उनकी संख्या कहीं ज्यादा है। बीते एकाध दशकों मे ग्रामीण इलाकों के पुरूषों विशेष कर युवाओं का रुझान खेती बाड़ी की बजाय नौकरियों व व्यापार में ज्यादा बढ़ा है। उनके नौकरियों या व्यापार में चले जाने के बाद खेती बाड़ी की पूर्णता ज़िम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर ही होती है, जिसे महिलाएं ज़िम्मेदारी से निर्वाह करती हैं। घरों का काम निपटाने के बाद वह खेतों में लग जाती हैं। इस लिहाज से ये आंकड़ा पुरूषों के मुकाबले आधे से भी ज्यादा हो जाता है। बावजूद इसके महिलाओं की भूमिका को पर्दे के पीछे रखा जाता है।

कृषि क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं का अमूल्य योगदान

पूरी दुनिया में कृषि क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं का अहम योगदान है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि दुनियाभर में ग्रामीण महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान 50 प्रतिशत से भी ज्यादा है। मतलब, पूरे विश्व खाद्य उत्पादन में से आधे उत्पादन का योगदान ग्रामीण महिलाओं का है। खाद्य और कृषि संगठन (Food & Agriculture Organisation) के आंकड़ों की मानें तो कृषि क्षेत्र में कुल श्रम में ग्रामीण महिलाओं का योगदान 43 प्रतिशत है,संयुक्त राष्ट्र की यूनएडीपी की रिपोर्ट बताती है कि किसानी में महिलाओं की हिस्सेदारी 43 फीसदी है जिन्हें किसान नहीं, बल्कि महिला मजदूर कहा जाता है।वहीं कुछ विकसित देशों में यह आंकड़ा 70 से 80 प्रतिशत भी है। वैश्विक स्तर पर ग्रामीण महिलाओं की भूमिका खाद्य और कृषि संगठन के आंकड़ों की मानें तो वैश्विक स्तर पर आधे से ज्यादा खाद्य उत्पादन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका है। अफ्रीका में 80 प्रतिशत कृषि उत्पादन छोटे किसानों से आता है, जिनमें अधिकतर ग्रामीण महिलाएं हैं।उप सहारा अफ्रीका और कैरेबियन में, ग्रामीण महिलाएं बुनियादी खाद्य पदार्थों में 80 प्रतिशत तक उत्पादन करने में सफल हैं। वहीं, एशिया में वे चावल की खेती में 50 से 90 प्रतिशत तक खेती के लिए श्रम प्रदान करती हैं। इसके दूसरी ओर, अगर हम लेटिन अमेरिका की बात करें तो यह आंकड़ा 40 प्रतिशत तक पहुंचता है।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के महिला एवं जनसंख्या विभाग ने बताया कि भारत जैसे विकासशील देशों में महिलाएं लगभग 70% कृषि श्रम प्रदान करती है। जबकि घरेलू खाद्य उत्पादन में 60 से 80%, खाद्य भंडारण में 80% और खाद्य वस्तुओं के प्रसंस्करण में महिला श्रम की हिस्सेदारी पूरी 100 प्रतिशत है। अधिकांश विकासशील देशों में महिलाएं 60 से 80% खाद्य उत्पादन की जिम्मेदारी निभा रही

है। संपूर्ण विश्व का लगभग आधा खाद्य उत्पादन इन्हीं के मजबूत हाथों से हो रहा है। एफ.ए.ओ. के अनुसार ग्रामीण महिलाएं खेती के लिए सबसे ज्यादा श्रम करती हैं, खेती के मिट्टी तैयार करने से लेकर फसल तक। फसल तैयार होने के बाद ग्रामीण महिलाएं फसल का भंडारण, हैंडलिंग, मार्केटिंग समेत अन्य कार्यों में भी अपनी भूमिका निभाती हैं। ऐसे में ग्रामीण महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा काम का अधिक बोझ उठाने में योगदान रहता है। अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाएं 60 प्रतिशत तक अपने परिवारों में योगदान देती हैं।

भारत में कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान

भारत में कृषि क्षेत्र में महिलाओं का अहम योगदान है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कृषि क्षेत्र में कुल श्रम की 60 से 80 फीसदी हिस्सेदारी ग्रामीण महिलाओं की है। एफएओ की एक शोध के अनुसार, हिमालय क्षेत्र में एक ग्रामीण महिला प्रति वर्ष औसतन 3485 घंटे प्रति हेक्टेयर काम करती हैं, वहीं पुरुष औसतन 1212 घंटे काम करते हैं। इस आंकड़े से कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को आंका जा सकता है और महिलाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। इतना ही नहीं, कृषि कार्यों के साथ ही महिलाएं मछली पालन, कृषि वानिकी और पशुपालन में भी अपना योगदान दे रही हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और डीआरडब्लूए की ओर से नौ राज्यों में किये गये एक शोध से पता चलता है कि प्रमुख फसलों के उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी 75 फीसदी तक रही है। इतना ही नहीं, बागवानी में यह आंकड़ा 79 प्रतिशत और फसल कटाई के बाद के कार्यों में 51 प. — ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी है। इसके अलावा पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी 58 - T उत्पादन में यह आंकड़ा 95 प्रतिशत तक है। सिर्फ इतना ही नहीं, नेशनल (NSSO) के आंकड़ों की मानें तो 23 राज्यों में कृषि, वानिकी और मछली पालन में ग्रामीण महिलाओं का कुल श्रम की हिस्सेदारी 50 है। इसी रिपोर्ट के अनुसार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और बिहार में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत 70 प्रतिशत रहा है। इसके अलावा पश्चिम बंगाल, पज।ब, . ।.ड और केरल में महिलाओं की भागीदारी 50 फीसदी है। वहीं, मिजोरम, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ और नागालैंड में यह संख्या 10 प्रतिशत है। शोध के अनुसार, पौध लगाना, खरपतवार हटाना ,' ..सल कटाई के बाद ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय भागीदारी शामिल है। फिर भी महिलाओं का भू।मक। ।सर्फ एक "मदद" मानी जाती रही है, बल्कि कृषि उत्पादन और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में ग्रामीण महिलाओं का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पूरी दुनिया में महिलाएं ग्रामीण और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के विकास की रीढ़ हैं।लेकिन सामाजिक आर्थिक रुप मे और सरकारी आंखों में महिलाओं की भूमिका को यथोचित मान सम्मान तथा मान्यता नहीं मिल पा रही है इसीलिए इन्हें कई बार अदृश्य कार्यबल की संज्ञा दी जाती है।

महिला किसानों के समक्ष समस्याएँ

1. भू-स्वामित्व

महिला किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि जिस भूमि पर वे खेती कर रही हैं, उस पर स्वामित्व का दावा करने के मामले में वे शक्तिहीन हैं।

कृषि जनगणना 2015 के अनुसार, लगभग 86% महिला किसान भू स्वामित्व से वंचित हैं, क्योंकि हमारे समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्थापित है। विशेष रूप से भूमि पर स्वामित्व की कमी महिला किसानों को ऋण के लिये बैंकों से संपर्क करने की अनुमति नहीं देती क्योंकि बैंक आमतौर पर ज़मीन के आधार पर ही ऋण स्वीकृत करते हैं।

दुनिया भर में किये गए शोधों से पता चलता है कि जिन महिलाओं की पहुँच सुरक्षित भूमि, औपचारिक ऋण और बाज़ार तक है, वे फसल-सुधार, उत्पादकता में वृद्धि और घरेलू खाद्य सुरक्षा तथा पोषण में सुधार करने के लिये अधिक निवेश कर पाती हैं।

2. भूमि अधिग्रहण

पिछले वर्षों में भूमि अधिग्रहण दोगुना हो गया है जिसके परिणामस्वरूप खेतों का औसत आकार घट गया है। इसलिये, अधिकांश किसान छोटे और सीमांत वर्ग (एक श्रेणी जो निर्विवाद रूप से महिला किसानों को शामिल करती है) के अंतर्गत आते हैं, इनके पास 2 हेक्टेयर से कम भूमि होती है।

3. अनुकूल मशीनरी

महिला किसान और मज़दूर आमतौर पर श्रम-केंद्रित कार्य (कुदाल या फावड़े की मदद से गड्ढा खोदना, घास काटना, खरपतवार हटाना, कटाई करना, बेंत का संग्रह, पशुधन की देखभाल) करती हैं।

विभिन्न कृषि परिचालनों के लिये महिला-अनुकूल उपकरण और मशीनरी रखना महत्त्वपूर्ण है।

अधिकाँश कृषि मशीनरी ऐसी हैं जिनका संचालन करना महिलाओं के लिये मुश्किल है। इस समस्या के बेहतर समाधान के लिये निर्माताओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

4. संसाधनों तक पहुँच

अंतिम समस्या यह है कि कृषि को अधिक उत्पादक बनाने के लिये संसाधनों और आधुनिक उपकरणों (बीज, उर्वरक, कीटनाशक) तक महिला किसानों की पहुँच आमतौर पर पुरुषों की तुलना में कम होती है।

खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार, महिला और पुरुष किसानों के लिये उत्पादक संसाधनों तक समान पहुँच सुनिश्चित हो जाने से विकासशील देशों के कृषि उत्पादन में 2.5% से 4% की वृद्धि हो सकती है।

5. जनजागृति

महिला किसानों के लिए 'महिला किसान सशक्तीकरण योजना' का बनाई गई। योजना के तहत 24 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 84 परियोजनाओं के लिए 847 करोड़ रुपए आवंटित किए। इसमें खेती करने के लिए महिलाओं को कर्ज व खाद और बीच में सब्सिडी देने का प्रावधान हैं। लेकिन, साल भर पहले शुरू हुई इस योजना की महिला किसानों को ज्यादा जानकारी नहीं है। सरकार को इस योजना का प्रचार-प्रसार करना चाहिए ताकि जन जन तक पहुंच सके और महिलाएं लाभान्वित हो सकें।

महिला के सशक्तिकरण और उनके उत्थान के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है लेकिन उनको उनका हक फिर भी नहीं मिल पा रहा है। उसके लिए हमें कुछ समाधान खोजना जरूरी है।

समाधान

कृषि और ग्रामीण विकास के लिये नेशनल बैंक के माइक्रो-फाइनेंस पहल के ऋण प्रावधान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। क्रेडिट, प्रौद्योगिकी और उद्यमशीलता क्षमताओं के प्रावधान तक बेहतर पहुँच महिलाओं के आत्मविश्वास को और बढ़ावा देगी और उन्हें किसानों के रूप में मान्यता प्राप्त करने में मदद करेगी।

2) महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये सामूहिक खेती को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कुछ स्वयं-सहायता समूहों और सहकारी- डेयरी गतिविधियों (राजस्थान में सरस और गुजरात में अमूल) द्वारा महिलाओं को प्रशिक्षण तथा कौशल प्रदान किया गया है।इन्हें किसान निर्माता संगठनों के माध्यम से और अधिक विकसित किया जा सकता है।

3) राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, बीज और रोपण सामग्री पर राष्ट्रीय कृषि विकास योजना जैसी सरकारी प्रमुख योजनाओं में महिला केंद्रित रणनीतियों और समर्पित व्यय को शामिल किया जाना चाहिये।

4) महिला किसानों को सब्सिडी वाली सेवाएँ प्रदान करने के लिये राज्य सरकारों द्वारा प्रचारित कृषि क्लीनरी बैंक और कस्टम भर्ती केंद्रों को तैयार किया जा सकता है।

5) प्रत्येक ज़िले में कृषि विज्ञान केंद्रों को विस्तार सेवाओं के साथ-साथ महिला किसानों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने का एक अतिरिक्त कार्य सौंपा जा सकता है।

6) महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि रोजगार गारंटी योजना और एकीकृत बाल विकास सेवा पर खर्च बढ़ावा जाए।

7) पेशेवर प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिया जाए ताकि तेजी से बदल रहे उत्पादन प्रक्रिया के हिसाब से महिलाएं कौशल हासिल कर सकें।

8) रोजगार में आरक्षण और उन्हें कर्ज देने जैसे उपायों से भी भागीदारी बढ़ेगी।

निष्कर्ष

अब महिलाएँ कृषि के क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं तो इस कार्य में उनकी निरंतरता को बनाए रखने के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है उन्हें भूमि संपत्ति के अधिकारों को सौंपना। एक बार महिला किसानों को प्राथमिक उद्यम और भूमि मालिकों के रूप में सूचीबद्ध कर दिया जाए तो उनके लिये बैंकों से ऋण प्राप्त करना आसान हो जाएगा। साथ ही महिला किसान तकनीक और मशीनों का उपयोग करके फसल उगाने और गाँव के व्यापारियों या थोक बाजारों में उपज का निपटान करने का निर्णय ले सकेंगी। इस प्रकार वास्तविक और दृश्यमान किसानों के रूप में उनकी पहचान सुनिश्चित हो सकेगी।

संदर्भ

1) भारतीय महिला किसान- डॉ.पैत्रेई कृष्णराज/ अरुणा काची.
2) भारतीय खेतीहरों की स्थिति- जी.एस. भल्ला
3) सामुदायिक ग्रामीण विकास- बैजनाथ सिंह
4) कुरुक्षेत्र- जनवरी 2018
5) कुरुक्षेत्र- जनवरी 2019
6) कुरुक्षेत्र फरवरी 2020
7) योजना- अक्टूबर, 2018

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

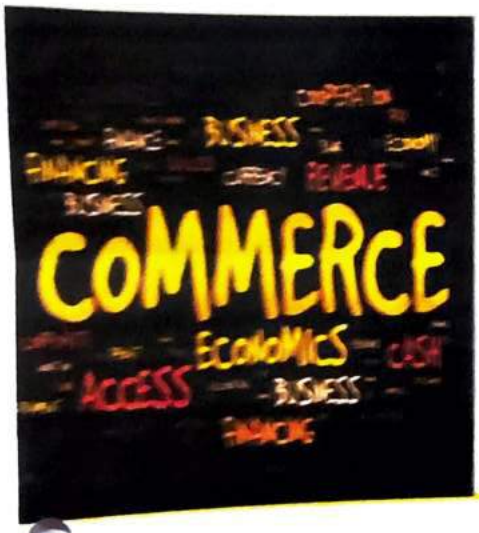
B..Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

July -2020

ISSUE NO-CCXLI(241)







Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Arts & Comm.Sci.College
Waigaon Dist. Amravati

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics
[illegible] Arts Comm.Sci. College
[illegible] Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To www.aadharpublication.com

Aadhar Publications

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Composition & Role of Indian Supreme Court "The Future evolutions of the Constitution will thus depend to a large extent upon the work of the Supremecourt and the direction given to it by that court." Sir Aladi Krishna Swami Aiyar.	Dr shailja vasudeva	1
2	Cashless Digital Banking Economy Of India: Challenges And Opportunities	Prof. Dr. Dattatraya S. Tambe	5
3	Critical Exploration of the Various Forms in George Herbert's The Altar	Dr Veena Ilame	11
4	Farmers suicides in india recent Trends, composition and remedies Prof.	Dr. Dnyaneshwar T. Shende	16
5	Stress Management and Indutrial Relations through Yoga as HR tool –A case study of 3 selected districts of Nagpur Division	Dr. Ajay Nanaji Saratkar	19
6	Effect of Step Aerobics Training Programme on Leg Strength and Agility	Dr. Shivaji Dnyandeo Bhintade	28
7	Dalit indian english literature - Quest for identity to social equality	Dr. Indira A. Budhe	31
8	Women and environmental development	Dr. Renu A.Tiwari	35
9	Ambit Of Article 131 – Original Jurisdiction Of Supreme Court Of India: An Overview	Ku. Pratibha B. Kaware /Dr. M.N. Bendle	40
10	A Study on Use &Purchasing Behavior of working men & women regarding Cosmetics	Dr. Gokula .Y. Dhokey / Dr.G. A. Bhalerao	44
11	The view of dr. B. R. Ambedkar regarding various sectors of indian economy: a glance	Dr. Prashant M. Puranik	48
12	Aekwondo women students The decline of moral values in Indian Politics	Dr. Sangita G Bhangdiya (Malani)	52
13	A Valediction : Forbidding Mourning and To His Coy Mistress : A Comparative Study	Dr. Hemant Sudhakar Dalal	55
14	Impact of gender and culture on Learning Disabilities	Dr. Valshali Nandagawali Panhekar	58
15	महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार	प्रा. डॉ. लोकचंद जाधव	62
16	प्रातिनिधिक कवयित्रींच्या कवितांचा स्त्रीवादी अंगाने शोध	डॉ. भूमिका गो. वानखडे	65
17	मानवी जीवनाच्या विकासातील अंकेक्षणाचे स्थान	प्रा.डॉ. बाळकृष्ण पु.अढाऊ	73
18	बहिणाबाईच्या कवितेतील जीवन मूल्ये	प्रा. महेंद्र द. झलके	77

B.Aadhar International Peer Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) 7.675, Issue NO. 241(CCXLI)
ISSN : 2278-9308
July,2020

Aekwondo women students The decline of moral values in Indian Politics

Dr. Sangita G Bhangdiya (Malani)
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

We call a person's behavior good behavior, proper deeds, duties etc , because his ethics are compatible with social and moral ideals. On the contrary, one refers to the ethics of misconduct tyranny, inappropriate behavior, akartavya. The Words proper-unjust, good-inauspicious, duty akartavya, etc are most commonly used in ethics. But moral, unethical behavior can only be evaluated in society. Without society there is no moral value of the conduct of the person. Person's nature is selfish. Therefore, he considers the act of self-interest auspicious. But only on the basis of social standards can his work be considered fair or unfair.

The Vedas and the Upanishads are considered to be the source of the basic principles of Indian religion, philosophy and ethics. In Vedic period, the sages have thought about sins-virtue, moral duties and virtues.The Vedas have all those moral virtues and duties have been mentioned, which are still considered essential for humans. Speaking the truth, serving parents and gurus, having mercy on all beings, keeping harmony and love for every human being, trying to keep away from misdeeds like theft, lies, murder, corruption, etc., all these essential moral duties of human beings. It is believed that in the Gita also, the highest importance has been given to the duty of human beings. In Jain philosophy, the virtue of man is given utmost importance and is considered essential for the purification of the mind. Gautam Buddha has also told man 'Ashtanga Marg' for purification of conduct and freedom from sorrows.

These moral beliefs of Indian philosophies have also been supported by many thinkers. Mahatma Gandhi's name is particularly notable among these thinkers. Greek thinker Plato is considered the pioneer of political thought. His famous treatise 'The Republic' in which he has presented the philosophical ruler. According to him, when the ruler is virtuous and rules prudently, good governance is established in the state. The prudent ruler only rules just justice. There is such a close relationship between policy and politics, that it is also Interdependent Relation.

India is one of the oldest civilizations in the world. India has diversity based on caste, religion, language. There were foreign invasions on India and the invaders continued to be successful. Its root cause is lack of political unity and mutual unity. These elements remain in Indian politics even today, which proves that we could not learn anything from history. This is proved by the decline of moral values happening in Indian politics.

Today's politics is not for social work, it has only become a means of attaining power. There is only competition like misconduct, tyranny, wrongdoing, gaining power through the path of progress. Political parties of the country promote casteism, theism to succeed in elections. For the benefit of the party, unmoral switching and political horse trading is done. All political parties in India play opportunistic games. Political criminalization, coalition politics, compromise with ideologies are causing the decline of moral values in Indian politics.

The first corruption in independent India was revealed in the 1948 Jeep car scam. Later in 1951 Mudgal case, 1957- 58 Mundra deal, Malaviya Sirajuddin scam etc. During Mrs. Indira Gandhi's era, corruption had increased . Indira Gandhi Congress held both the posts of President and Prime Minister and also kept the fund of the party under her control. Corruption cases like HBJ pipeline, Fairfax, HDW submarine deal, Antulay case sugar scam, Bofors scandal during Rajiv Gandhi era etc. After that, during the tenure of PV Narasimha Rao, there were cases like hawala scandal, urea scam, Jharkhand Mukti Morcha bribery scandal.

Corruption or scam is not new to Indian politics. Every government has allegations of corruption. After the 90s these cases appeared to be increasing rapidly. CommonWealth Games Scam, Kolsa Scam, 2G Spectrum Scam etc. The Modi government is also accused of the Rafale Scam. Today corruption has become institutionalized.

The cause of corruption is criminalization of politics. Today no political party is untouched by this. There may also be a research topic here. Black money is used extensively in Indian politics. The case of horse-trading of MPs came to light in 1993. PV Narasimha Rao, the then patriarch, gave Rs 1.61 crore to JMM MPs to save the government. At the same time, three BJP MPs also showed a bundle of notes in the hall and alleged that an attempt was made to buy them. This has become common in today's Indian politics. To gain power or to retain power, every national, regional party is engaged in the horse-trading of MPs, MLAs. There are allegations of horse-trading by legislators in several states from 2015 to 2020, such as Goa, Uttarakhand, Karnataka, Madhya Pradesh, Telangana, Arunachal Pradesh and Rajasthan. This is seen more in coalition politics. Moral values tend to decline more in coalition politics. When mixed parties change their partners in between and take advantage of opportunists to achieve the goal of social, economic development and combine with the new party in the quest for power. This is more seen in coalition politics.

Political ideologies have their own moral value. But in the changing political times, political ideology has no moral value. Politicians choose the party according to their selfishness. After fighting elections from one party, they join other political party ideology. This is seen in the politics of every state. At present, such incidents were seen in Madhya Pradesh, Maharashtra, Karnataka. The public sentiments are kept in swing by these leaders. The people of Maharashtra gave a majority to the BJP and the Shiv Sena. To fulfill their aspirations, both the parties remained adamant. Shiv Sena formed a government in alliance with its various ideology parties. Recently all these along with some Rajya Sabha MP in which K.C. Ramamurthy, Bhubaneswar Kalitha, Sanjay Singh and Surendra Singh Nagar of Samajwadi Party, Sanjay Seth, Neeraj Shekhar resigned from their party membership and joined the Bharatiya Janata Party for personal interest. Such incidents have become common in Indian politics. The decline of ideologies in Indian politics is the biggest blot on democracy. In today's changing era, ideologies have taken the place of post and personal aspirations. Leaders have no ideology of their own. Jawaharlal Nehru called Parliament a temple of democracy. Today here, no one is worried about 'Lok' and 'tantra'. The country's parliamentary politics has fallen into the pit of decline.

According to the political culture, the rulers adopted and implemented progressive policies till the sixties and seventies. But since the eighties, the rulers have been chanting the political legacy But abandoned policy-making accordingly. As progressive policies were abandoned, welfare states began to withdraw from the public sector, and the state's development slowed down. The politics of vested interests in the name of economic reforms have seen an increase in corruption cases in the country and in state over the last two decades.

As political values, political morality, and political allegiance began to decline, so did the political culture. After the collapse of political culture, other factors began to become influential in politics. Narrowness in political affairs, racism was on the rise. There is no corruption-free sector left out of the equation of power and money.

After the nineties, politicians, builders, corporates and bureaucrats formed an alliance and adopted a policy of grabbing important government plots, private plots of public land, agricultural land in the name of SEZs. The lobby has increased control over government policy-making. Their language is that of progressive thought, the language of the common man, but their policies are complementary to neo-capitalism. No political party is an exception. Changing governments will not solve the problem, but will stop the malpractices that have entered the political culture. For this, it is necessary to increase the rate of public opinion.

Decline of legislative traditions

The situation in the legislature from the seventies to the eighties has changed a lot compared to the present situation. In the early days, even if there was a stable one-party government at the state or center, the opposition was also cautious. The numerical strength of the opposition was low. But they also had a moral weight in the legislature and in the public. The authorities also had a kind of respect for the opposition. The state legislature or parliament functioned in an orderly and disciplined manner. But after the nineties, the quality of work of the legislature has declined. There used to be learned leaders on the ruling and opposition benches. There used to be many hours of scholarly speeches on a subject or a bill. They look closed now. Public relations bills are being passed after five to ten minutes of discussion.

Democracy is not just about elections and the formation of governments. Democracy also has a constitutional responsibility to create equality and a just society. With that in mind, the

legislature has made many progressive decisions and passed laws in the last fifty years. Some decisions were also taken at the national level. But, gradually the tendency to implement only important decisions is beginning to break down and now only the interests of legislature and the ruling party are seen to be complemented.

The state legislature and parliament also seem to have lost interest in the activities of members in the House, never participating in the debate over any subject in the House, neglecting the importance of parliamentary weapons, frequent closing of the House without discussion. Leaders and members of the ruling and opposition parties also seem to be constantly showing how a case can be won and the use of Shivraj language seems to have increased. Due to the politics of the last fifty years, the concept of government does not seem to be taking a clear shape in many ways. The work of the government seems to be proceeding in a slow pace and without any concrete decision. There are many parliamentary and anti-democratic and need to develop and adopt parliamentary practices in the current changing social, economic and political scenario.

Examples of the decline of the above moral value are seen not only in the central government but also in large scale in the governments of the states. According to scholars, what moral values are the root of the same. A morally degraded state and government cannot last for long.

Solutions:

1) It is the responsibility of political parties to keep an equal account of their income and expenditure. Get them audited and make them available for public information.

2) Our country has a coalition government till 2014 at the centre and in many states. The coalition government is the reality of our country. Due to coalition politics, weakness like corruption, state instability, defection are seen. Today it is necessary to stop the politics of this alliance. For this by amending the constitution, it should be ensured that the party which has formed the pre-election alliance should remain till the last. If any other party is to be included after the election, it is necessary to seek the consent of the Election Commission.

3) To prevent criminalization of politics, people facing charges like corruption, murder, rape, robbery, exploitation of women, molestation, should be considered ineligible to contest elections.

4) If the offender or accused is given an election ticket by any party, the recognition of that party should be rejected.

5) The defection law should be made more stringent. A person who commits defection should not have the right to contest elections for 6 years and should not be a participant in any political work.

6) The public representative should submit an account of the work done by him every 6 months to the public.

7) There should be a strict monitoring of the expenditure incurred in elections.

8) Enforcement Directorate, Central Vigilance Commission, Central Bureau of Investigation should be made more effective so that no government can misuse them.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

20-21

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

June -2020

ISSUE No-CCXXXIX (239)

Impact of COVID-19 on World: Problems, Challenges and Opportunities

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director

Guest Editor
Dr. Gopal S. Vairale
Principal

Editor
Dr. Omprakash B. Munde
HOD. Geography

Executive Editor
Dr. Sangita Bhangdiya (Malani)
HOD. Political Science

Executive Editor
Dr. Sachin J. Holey
HOD. Sociology

Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera.Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :
- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**
- **International Impact Factor Services (IIFS)**

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publication

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

33	Women Empowerment & Entrepreneurship Dr.Anjali Chandrakant Pande	151
34	Impact of covid-19 on domestic tourism Dr. Juldeep Hire	156
35	Impact of covid-19 on india tourism and travel industry Sharath P. G	163
36	History Of Pandemic In India Asmita Dubey	169
37	Empowerment of community affected due to loss of employment during COVID-19 Pandemic situation" Prashant Kumade,	175
38	The Effect of Corona on Women's Life Dr. Sangita G. Bhangdiya	189
39	Impact Of Covid-19 On World: Problems, Challenges And Opportunities Dr. Wasudeo J. Ulke	184
40	Nineteentips To Defuse The Impact Of Covid-19 On Health Dr. Satish R.Modani	189

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 239
ISSN : 2278-9308
June,2020

The Effect of Corona on Women's Life

Dr. Sangita G. Bhangdiya
Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera

Woman is the companion of man, gifted with equal mental capacities.

-- Mahatma Gandhi

Gandhiji considered women more strong and gentle than men. They would say, to call a woman an Abala means to defame her. If we look at the history, we will find many examples of women's bravery and sacrifice. If women pledge to increase the dignity of the country, their spiritual experience can change the country. From the present perspective, we can see that Gandhiji's words have been proved today. Currently the whole world is suffering from corona. Corona is fought by every country in the world. But the battles against Corona in Germany, Finland, Denmark, Norway, New Zealand and Taiwan are characteristic. Because this country is being led by women. At the global level, women's leadership is still limited. But in countries where this leadership exists, they have successfully thwarted Corona. It is said that women are emotional, they lack leadership ability, decisiveness. So they are unable to lead politically. But if they get the right opportunity, they will make the most of it.

Coronavirus infection has spread to about 213 countries around the world. The speed of Corona's spread is incomprehensible. By the time we came to know about the exact nature of the virus, and how it spread, it was already spread from China to Europe and the United States. The contribution of national and international leadership is crucial in such a global crisis. Corona has not spread much where the leadership of the countries which have taken swift measures in view of the scope of the crisis. The leadership of some of the world's leading women seems to have been particularly effective this time around.

While Corona was investing heavily in China, Italy and the United States, it managed to keep the death rate in Germany as low as 1.4 percent. Credit goes to Chancellor Angela Merkel. She interacted with the people and took measures. Promptly developed a corona test and conducted a massive door-to-door test. Coronavirus taxis were introduced as a mobile center to test patients. His speeches during all these times were point-based, science-based and rational.

The Prime Minister of Finland, Sana Marin, is the youngest Prime Minister in the world at 34 years of age. Even in such a difficult time she took the decisive steps to reduce the impact of the Corona disease, without any hesitation, without any haste, overcame it with great confidence.The Prime Minister of Denmark, Mette Frederiksen, also sounded the alarm in Italy, and began to take precautions to control the disease. Citizens also responded to the planned lock-down. The Prime Minister of Denmark says that locking down is like exercising on a rope fifty feet high. Similarly, the

Prime Minister of Norway Erna Solberg, the Prime Minister of New Zealand Jacinda Ardern, the Prime Minister of Iceland Katrín Jakobsdóttir and the Prime Minister of Taiwan Tsai Ing-wen have achieved a lot of success in grassland through sincere efforts and regular communication. This made it easier for them to cope. But today we see that female leadership is fighting the Corona with faster decision-making, strict enforcement of rules with confidence, compared to what many leaders see only in trying to elevate their own image, show power, and play the blame game

Women have demonstrated their leadership ability not only globally but also at the Gram Panchayat level in India. Most of the women sarpanches in the place are nominal but some of them have proved their leadership against the backdrop of women leadership in Covid 19. The women leaders made fast decisions without wasting any time, without any hesitation. In implementing these decisions, we involved the people of our country. This type of crisis cannot be dealt alone. It requires the contribution of scientists, doctors, economists. They are not knowledgeable about this subject, but the woman-leadership has shown the skill to take the right advice and find a way accordingly. Thus, although women have proved their leadership in the political arena during this Corona period, their lives are in danger in fields such as social health. Because there are more women than men in this field.

Social and health sector

Women and men in society are affected differently during any conflict. In terms of health, men and women also suffer from global epidemics. The gender inequality between the Ebola virus in Brazil in 2011 and the Zika virus in 2015-16 was highlighted. Now, even in Covid-19, it is necessary to look at this gender from a different point of view.

Worldwide, the proportion of women working in the healthcare sector is 70%. This means that women will be the first to be affected by the outbreak of the virus. Not only that, women are also more likely to be infected with this disease. The National Sample Survey has prepared a report on employment in India. According to this, considering the different categories in the health sector, the proportion of eligible nurses and midwives alone is 88.9%. This means that women dominate in this field.

Recognizing social health workers (Asha) and Anganwadi workers from some of the states in the country have also been directed to inspect the families in their respective areas. They want to go from house to house and inform the citizens about the precautions to be taken to prevent Covid-19. However, according to a report, Asha employees have been evicted from the village and beaten up. This means that these activists, along with Corona, are at risk of such a mentality. There are one million women working as public health workers (ASHAs) in the country and 1.4 million women working as Anganwadi workers. Her life is most at risk during this corona period.

Most of the women in India work in this house. The proportion of self employed women is also high. It is important to see what effect a pandemic like Covid 19 has on this class. 41.7%

women working in the non-agricultural sector work from this household. In comparison the percentage of males is only 11%

These women who work from home are self employed, which means they can't get the benefits that other companies can give their employees due to the pandemic. The PLFS decided to determine the number of workers working in the informal sector from the non-agricultural sector and ancillary agricultural sectors (such as animal husbandry, fisheries that will complement agriculture). According to their survey, 54.8% of women workers are in the informal sector. This means that Covid-19 will have a strange effect on women. This is because they are more likely to leave their jobs during this period and they will not be able to avail the benefits of the contract pay policy.

Women and health facilities

The important needs of women are always given secondary priority. Essential sexual and reproductive health care tools are being used for emergency response. Outbreaks appear to be exacerbated during outbreaks of infectious diseases, leading to a lack of fertility and sexual health services. Studies have shown that pregnant women are more likely to get sick and die during epidemics. When Ebola broke out in Africa, there was no information about the effects it had on pregnant women. Lack of medical guidance and proper information on how to care for pregnant women in the context of Ebola has led to a lot of struggles for health workers working on the first floor, such as midwives. In addition, during the Ebola outbreak, hospital births in Guinea, Sierra Leone and Liberia dropped by 30% and maternal mortality increased by 75%. Looking at the rising maternal mortality rate during the Covid-19 period, it is more challenging for India to be equipped, because of the lack of skilled and urgent maternity services required during childbirth. According to NFHS-4 data, only 21% of women in India have access to maternity health care. Only 36.4% of mothers receive financial benefits under Janani Suraksha Yojana in case of delivery in a public hospital. As we prepare against this pandemic of corona, it is imperative to meet the needs of pregnant women along with the weaker sections of society. This needs immediate attention.

Covid-19 has literally shaken the healthcare sector around the world. The pandemic has disrupted supply chains around the world. That is why China has shut down many pharmaceutical projects. As a result, companies that manufacture generic drugs in India are facing delays in making such drugs. This can lead to shortages of birth control pills, sexually transmitted diseases, antibiotics, and antiretrovirals for AIDS / HIV patients. If there is a shortage of these drugs, their prices may go up. So it can have a big impact on poor women who want to have an abortion or take care not to get infected during this period.

Field of education

UNESCO estimates that 107 countries around the world have shut down educational institutions across the country, affecting 861.7 million students and young people worldwide. The spread of Covid-19 may further increase gender differences in education. The most severe side effects of school closures are seen in the context of girls' education. For example, after the Ebola

epidemic, the number of girls dropping out of school had increased. This has become clear at the end of the study.

Domestic violence

The National Commission for Women (NCW), which receives complaints of domestic violence from across the country, has recorded more than twofold rise in gender-based violence in the national coronavirus lockdown period. The total complaints from women rose from 116 in the first week of March (March 2-8), to 257 in the final week (March 23-April 1). "Domestic violence cases have doubled than what it was before the lockdown. The cases of domestic violence are high in Uttar Pradesh, Bihar, Haryana and Punjab," says NCW chief Rekha Sharma. The main reason for the rise of domestic violence is that the men are at home and they are taking out their frustration on women and they refuse to participate in domestic work. Women are also confined within the four walls of the house and they cannot share their grief with anybody. The victims are also scared of complaining to the police because they fear that harassment will increase. Job loss, salary cuts, an uncertain future arising out of the lockdown has everyone on edge.

Police area

In the battle with Corona, the female cops are seen standing alongside the male cops. According to the statistics of the development department of 2018, a total of 1,67,000 women are working in the country such as city police, district armed reserve and armed police. Out of which 27,167 women police are working in Maharashtra. This woman is doing her duty with family responsibilities regardless of her life. Women have to play a dual role in every field as compared to men. She is doing her job with confidence without fear.

The whole study shows that because of the corona, on the one hand, women showed their leadership ability, decision-making ability globally. She is also working in the field of health, social and police regardless of her life. Corona, on the other hand, has a negative impact on women's lives, family, education and health.

The number of women working at the forefront of the health sector is large. However, their involvement in global health security, surveillance, detection and prevention mechanisms is minimal. For example, the World Health Organization-China Joint Mission Covid-19 has a total of 25 members, including only three women. This clearly shows the inadequate representation of women in the policies regarding Covid-19 globally. In India, the Covid-19 Economic Response Task Force is headed by a woman. It is headed by Finance Minister Nirmala Sitharaman. However, in Covid-19, a 21-member committee of public health experts constituted by the Medical Research Council of India, has only two female members.

This preparation can be more powerful if it involves women's knowledge and their expression as they prepare to face the pandemic, and the problem can be looked at from a better-gender perspective. It is important to note the different effects that this will have on vulnerable citizens and women in the response to the spread of Covid-19. So the global community should share their

experiences with each other, learn the best practices and make sure that no method has the most adverse effects

Reference:

1. Sakad Newspaper- 3/4/2020
2. Lokmat Newspaper- 5/5/2020
3. Nari Shaktikaran Itihas - Devendra Kumar Sharan

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

FILE NO.

20-21

Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL



AJANTA

Volume - X, Issue - I,
January - March - 2021
Marathi / Hindi

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

VOLUME - X, ISSUE - I - JANUARY - MARCH
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	वैदिक दर्शन एवं अखण्ड भारत (आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक कदम) **डॉ. अशोक कैंवर शेखावत**	१-६
२	आत्म निर्भर भारत एवं चुनौतियां **डॉ. संगीता गो. भांगडिया**	७-१२
३	आत्मनिर्भर भारत की ओर..... **प्रा. डॉ. वैशाली खेडकर**	१३-१४

VOLUME - X, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२. आत्म निर्भर भारत एवं चुनौतियां

डॉ. संगीता गो. भांगडिया
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा.

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकल उत्पादों को वोकल बनाकर यानी उनका प्रचार कर ग्लोबल बनाने की योजना है। यानी स्थानीय उत्पादों को को बढ़ावा दिए जाने की बात कही है। ताकि आर्थिक क्षेत्र में देश आत्मनिर्भर बन सकें।आत्मनिर्भर भारत अभियान के पांच स्तंभ बताएं है। अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा, देश की व्यवस्था, जनांकिकी और मांग यह पांच स्तंभ है।भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जो कदम उठाए जाएंगे, जो अभियान चलाया जाएगा उसे आत्मनिर्भर भारत अभियान कहा गया है। आत्म निर्भर भारत अभियान के लिए 20 लाख करोड़ घोषित किए गए हैं।इस पैकेज से देश के इंफ्रास्ट्रक्चर, छोटे और मध्यम उद्योगों को मजबूती देकर अर्थव्यवस्था को उच्च स्तर पर ले जाना है, ताकि आर्थिक क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर बन सकें।आत्मनिर्भर भारत अभियान देश को कोरोना संकट से हुए नुकसान से बाहर निकालने के लिए शुरू किया गया था। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तीन फेस बताए गए हैं। फेस 3.0 में 12 योजनाएं की शुरुआत की गई है। इसके माध्यम से देश का आर्थिक विकास होगा। परंतु आत्मनिर्भर भारत देश बनाने के समक्ष कई चुनौतियां भी है।

इस महामारी के कारण देश की अर्थव्यवस्था मंदी की ओर जाती दिखाई देती है। वर्तमान काल में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार मान में 2.7 ट्रिलियन डॉलर से भी कम हुआ है। अर्थव्यवस्था का विकास दर -7.5% हुआ है। क्रेडिटविया द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में बताया गया है कि रुपये 60000 प्रति माह से अधिक कमाने वालों के बीच आय का नुकसान उनकी महामारी पूर्व की तुलना में 10% था जबकि महीने में 20000 रुपये से कम कमाने वालों की महामारी के दौरान आय उनकी पूर्व की कमाई से 37% तक कम हो गई। ऑक्सफैम के मुताबिक,अप्रैल, 2020 मे 84 फ़ीसदी परिवारों को आय में कमी का सामना करना पड़ा। अप्रैल, 2020 के महीने में हर घंटे 1,70,000 लोगों ने अपनी नौकरियां गंवाई और लगभग 167 लोगों ने मार्च से जुलाई 2020 के बीच नौकरी छूटने और आय में कमी से भुखमरी और वित्तीय संकट के कारण खुदकुशी कर ली। हमारे देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है उसे मजबूती देखकर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना यह एक बहुत बड़ी चुनौती है।प्रभावित करने वाला एक व्यवहारिक मुद्दा भी है।

जनांकिकी स्त्रोत का सही उपयोग कर रोजगार निर्माण करना, सशक्त ग्रामीण युवा, महिला शिक्षा एवं उद्यमिता, स्वास्थ्य क्षेत्र का कौशल्य विकास यह सभी आत्मनिर्भर भारत समक्ष बड़ी चुनौतियां हैं। प्रथम इन सब पर ध्यान देना जरूरी है, तभी हमारा देश एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बन पाएगा।

VOLUME - X, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

प्रमुख चुनौतियां

1. **कृषि क्षेत्र**

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की अहम भूमिका है। भारत में 1994555 वर्ग किलोमीटर कृषि योग्य भूमि है जो कुल क्षेत्रफल का 56.78% है।दुनिया के 10 वे सबसे बड़े भू संसाधन भारत में ही मौजूद है और 20 कृषि जलवायु क्षेत्रों के साथ दुनिया की सभी 15 प्रमुख जलवायु भी भारत में मिलती है। दुनिया में मिलने वाली 60 प्रकार की मिट्टी में से 46 प्रकार की मिट्टी देश में मिलती है। 58% से अधिक ग्रामीण परिवारों के लिए आजीविका का प्रमुख साधन खेती है। ग्रामीण जनसंख्या भारत की जनसंख्या का प्रमुख हिस्सा है इस विशाल हिस्से की आजीविका संबंधी कार्य नीतियां मुख्यता कृषि तथा संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। कृषि ऐसा क्षेत्र है जो सबसे बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। पिछले एक दशक के दौरान कृषि क्षेत्र के वृद्धि में गिरावट देखी गई है।

प्रो. शुल्टझ कहना है कि, "अनाज में आत्मनिर्भरता प्राप्त किए बगैर कोई भी देश आर्थिक विकास की कल्पना नहीं कर सकता" इसीसे से कृषि क्षेत्र का महत्व प्रतिपादित होता है। देश की अखंडता सार्वभौमिकत्व के लिए देश सीमा का संरक्षण जितना महत्वपूर्ण है उतना ही अन्नदाता का संरक्षण भी। यह हमारे आत्मनिर्भर भारत के समक्ष चुनौती है।

2. **ग्रामीण सशक्त युवा**

आत्मनिर्भर भारत का एक स्तंभ हमारी जनांकिकी है।विश्व की सबसे बड़े लोकतंत्र में हमारे जीवित जनसंख्या ही हमारी ताकत है, आत्मनिर्भर भारत के लिए ऊर्जा का स्त्रोत है। परंतु आत्मनिर्भर भारत के समक्ष प्रमुख चुनौती ग्रामीण क्षेत्र की युवा आबादी को ऊर्जावान, शिक्षित, प्रशिक्षित और कुशल जन संसाधन के रूप में किस तरह विकसित किया जाए यह है।

वर्तमान में देश की लगभग 54 % जनसंख्या 25 वर्ष से कम आयु की है और 2022 तक भारत में कार्य बल में शामिल लोगों की औसत आयु 29 वर्ष होगी जिसके कारण हम विश्व में सबसे कम उम्र के देश बन जाएंगे।

उद्योग 4.0 के मद्देनजर भारत को टेक्नोलॉजी अपनाने की दिशा में तेजी से कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता है। क्योंकि भारत का श्रम बल का बड़ा हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है जिसका अर्थ है कि वे कम शिक्षित है और उन्हें कौशल्य विकास के लिए सीमित अवसर मिलते है। विकास की उच्च दर को बनाए रखने के लिए कुशल मानव संसाधन की उपलब्धता में महत्वपूर्ण सुधार की आवश्यकता है। विशेष रूप से श्रम बाजार में तरक्की और विविधीकरण के चलते एक कुशल श्रम बल की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। भारत की अधिकांश आवादी (63%) कामकाजी आयु वर्ग (15 से 59 वर्ष) के भीतर है और इसीलिए कौशल की मांग पहले से कहीं अधिक है।

भारत की औपचारिक रूप से कुशल श्रमबल का वर्तमान आकार बहुत छोटा है (लगभग 2%) इसके विपरीत दक्षिण कोरिया और जापान जैसे देशों में क्रमशः 96% और 80% कुशल कार्य बल है। भारतीय जनसंख्या का लगभग 60% से अधिक भाग उच्च माध्यमिक (कक्षा बारहवीं) से कम शिक्षित है।वर्तमान में देश उच्च प्रशिक्षण

प्राप्त हुनरमंद श्रम बल के गंभीर अभाव से और शिक्षित कार्यबल, जिसके पास बहुत कम या कोई रोजगार कौशल्य नहीं है ऐसी चुनौतियों का सामना कर रहा है।

ग्रामीण क्षेत्र में केवल लगभग 21% पुरुष और 12% महिलाएं माध्यमिक स्तर तक शिक्षित है। यह बेरोजगारी के दुष्चक्र को उजागर करता है क्योंकि अधिकतर कुशल श्रमिक की मांग हालिया समय में कई गुना बढ़ गई है। इसके अलावा लगभग 89% युवाओं ने कोई व्यावसायिक प्रशिक्षण हासिल नहीं किया है।

वास्तव में ग्रामीण युवाओं का सशक्तिकरण गांवों के सशक्तिकरण से सीधे तौर पर जुड़ा है। ग्राम सशक्तिकरण की गति जितनी तेज होगी और उसका दायरा जितना व्यापक होगा ग्रामीण युवाओं का सशक्तिकरण उतना ही व्यापक और असरदार होगा। लेकिन आज इस संबंध में एक चुनौती यह भी है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद गांव का युवा गांव में नहीं रहता वह शहरों की ओर पलायन करता है इससे देश को दोहरा नुकसान होता है एक और शहरी क्षेत्र के पहले से तंग बुनियादी सुविधाओं पर अनावश्यक बोझ बढ़ता है दूसरी ओर उसका अपना ही गांव उपेक्षा का शिकार हो जाता है। अगर वह युवा अपनी शिक्षा और कौशल्य का उपयोग गांव के विकास और उत्थान के लिए करें तो उसे तरक्की की रफ्तार दे सकता है। केवल अच्छी नौकरी के उद्देश्य पढता है तो ग्राम सशक्तिकरण का स्वप्न साकार होना आसान नहीं होगा और ऐसी स्थिति में ग्रामीण युवाओं को सशक्त करना मृग-मरीचिका जैसा ही रहेगा।

आज पूरे विश्व में युवा कौशल और रोजगार में जुड़ी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इनकी चुनौतियां पिछली पीढ़ी से सर्वथा अलग है। नए युग की बदलती परिस्थितियों और प्रवृत्तियों पर खरा उतरने के लिए व्यावसायिक कंपनियों को दक्ष और कुशल युवा शक्ति की आवश्यकता है। सन 2018 सर्वे के अनुसार भारत दुनिया के उन देशों की सूची में चौथे नंबर पर था जहां कौशल का सबसे ज्यादा संकट चल रहा है। भारत में 56% संस्थानों ने कहा था कि उन्हें अपनी जरूरत के लिहाज से कुशल कर्मचारी नहीं मिल रहे।

कोई भी देश तभी आर्थिक और राजनीतिक विश्व शक्ति बन सकता है जब वहां पर साक्षरता की स्थिति बहुत अच्छी हो, शिक्षितों के बीच वे जरूरी कौशल हो जिनकी आजकल मांग है। हम ग्रेजुएट दुनिया में सबसे ज्यादा तैयार कर रहे हैं लेकिन उन क्षेत्रों में नहीं जहां देश को ज्यादा कर्मचारियों की जरूरत है, ऐसे ग्रेजुएट नहीं जिनके पास में कौशल हो जिनको बाजार तलाश रहा है।यानी डिमांड और सप्लाई के बीच तालमेल यह आत्मनिर्भर भारत के आगे चुनौती है।

3. महिला उद्यमिता

आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण महिलाओं के बिना अकल्पनीय है। देश की कुल आबादी का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं का है। आत्मनिर्भर राष्ट्र के लिए सशक्त महिला जरूरी है।किसी भी देश को आर्थिक दृष्टि से प्रभावशाली राष्ट्र बनाने के लिए महिला उद्यमिता को बढ़ावा देना अपरिहार्य है। लघु उद्योग और लघु व्यवसाय विकास कार्यक्रम महिलाओं के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। बदलते विश्व आर्थिक परिदृश्य में पुरुष

एवं महिला दोनों ही आपसी सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु महिलाओं में उद्यमिता विकास एक अति आवश्यक [illegible] बन गई है।

किसी भी राष्ट्र राज्य व क्षेत्र का विकास उसकी उपलब्ध मानव संसाधन की कार्य क्षमता, सामर्थ्य, दृष्टि कौशल्य एवं शिक्षा आदि प्रमुख बिंदुओं पर निर्भर करता है। आज की नारी व पुरुष दोनों ही राष्ट्र निर्माण व विकास में समान सहभागिता निभाते है। वर्तमान परिस्थितियों में महिलाओं का राष्ट्रीय विकास में अमूल्य योगदान है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी स्तरों पर देश की प्रगति में महिलाएं अपना योगदान देती आ रही है। फिर प्रमुख राष्ट्रीय विकास की गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका को समुचित रूप से मान्यता नहीं मिल पा रही है। आत्मनिर्भर राष्ट्र के लिए महिलाओं के प्रति सकारात्मक परिवर्तन जरूरी है।

उद्यमिता नए संगठन आरंभ करने की भावना को कहते हैं। उद्यमिता में एक तरफ भरपूर लाभ कमाने की संभावना होती है तो दूसरी तरफ अनिश्चितता और अन्य खतरे की संभावना होती है। युवा महिलाओं को उद्यमी बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती है, जिसका हल आपसी समन्वय, जनजागृति, कौशल्य विकास आदि में ही छुपा है।

महिलाओं में व्यापक संभावनाएं एवं क्षमता है, जिसका पूर्ण इस्तेमाल कभी नहीं किया गया है।शिक्षा उद्यमिता विकास का निवेश और उत्पादन दोनों है। अतः शैक्षणिक समानता से उद्यमिता विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। परंतु भारत में महिला शिक्षा को लेकर अभी भी जागरूकता नहीं दिखाई देती है। इस महामारी के कारण यूनिसेफ द्वारा किए गए सर्वे में 52 फ़ीसदी किशोर उम्र की लड़कियों ने (जिनमें से 75 फ़ीसदी अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति से थी) बताया कि तकनीकी सुविधाओं की कमी, घरेलू झगड़े और घरेलू हिंसा के कारण पढाई बीच में ही छोड़ दी। शिक्षा क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिलाओं का प्रतिशत कम होता है। ग्रामीण महिला का प्रतिशत तो और भी कम होता है। भारत में महिला साक्षरता 59.3% है, जबकि पुरुषों का 78.8% है।ग्रामीण क्षेत्र में महिला साक्षरता का प्रमाण 50.6% प्रतिशत और शहरी क्षेत्र में 70.9% है,वहीं पुरुषों का प्रमाण ग्रामीण क्षेत्र में 74% है और शहरी क्षेत्र में 88.3 प्रतिशत है। महिलाओं का बीच में ही शिक्षा छोड़ने का प्रतिशत भी अधिक है। 2019 के असर रिपोर्ट अनुसार नौवीं कक्षा के बाद स्कूल छोड़ने का प्रमाण 30% है,वहीं दसवीं कक्षा के बाद वह 57% है। आज हमारे देश के सन्दर्भ महिला शिक्षा यह बहुत बड़ी चुनौती है।

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था, "महिलाओं को सशक्त बनाकर ही एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है" आज हमें महिला उद्यमी बनाने के लिए इस पर ध्यान देना जरूरी है।

4. शिक्षा क्षेत्र

हम भारतीयों को शिक्षा के मामले में अपनी सोच में बदलाव लाने की जरूरत है, ना सिर्फ निजी तरक्की के लिए बल्कि देश के विकास के लिए भी। पारंपारिक शिक्षा के साथ हमें कौशल्य विकास, स्टेम शिक्षा जैसी नई पद्धतियों को भी अपनाना है।

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन 2014 की रिपोर्ट अनुसार भारत में कौशल्य की कमी का आंकड़ा 62 फ़ीसदी था, जो 2018 की रिपोर्ट में सुधार कर 56 फ़ीसदी हो गया है। याने 4 साल में [illegible]

के मामले में यह स्थिति भिन्न है। चीन में 2014 में प्रतिभाओं की कमी का आंकड़ा 24% था वह 2018 में 13% हो गया यानी 4 साल में करीब 50% का सुधार हुआ। कौशल की मांग और सप्लाई का अंतर बहुत कम हो गया है। चीन आर्थिक तरक्की में काफी आगे है वहां प्रति व्यक्ति आय 11200000 सालाना के करीब है।

शिक्षा में स्टेम की शिक्षा भी एक बहुत बड़ा बदलाव है। STEM यानी साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथमेटिक्स। दुनिया भर की सरकारें स्टेम शिक्षा को विकास का मूल मंत्र मानकर चल रही है। 2000 में चीन में स्नातक को की संख्या 3.50 लाख थी जो 2014 तक 16.50 लाख के करीब पहुंच गई। भारत में स्टेम विषयों में डिग्री हासिल करने वालों की संख्या 26% है वहीं चीन में 41% है यह आंकड़े एक्सचेंजर इंस्टिट्यूट ऑफ़ हाई परफॉर्मेंस 2011 के है। चीन ने स्टेम एक्शन प्लान 2029 बनाया है, जिसे देखते स्टेम शिक्षा का आंकड़ा 50 फ़ीसदी तक पहुंच जाएगा।वहां प्राथमिक स्कूलों में ही स्टेम की शिक्षा दी जाने लगी है। जापान ने भी स्टेम फ्रेमवर्क बनाया है और ब्राजील तथा यूरोपीय संघ के अनेक देश भी इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहे हैं। हमें भी आत्म निर्भर भारत बनाने के लिए उचित कदम उठाना जरूरी है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था पारंपारिक शैली में चलती है। जो हमें कौशल नहीं देती, ना ही रोजगार और व्यवसाय के लिए तैयार करती है। हमें पारंपारिक शिक्षा के साथ कौशल शिक्षा भी सीखना जरूरी है। हम गिग इकोनामी की तरफ बढ़ रहे हैं जो भारत के कुल रोजगार का 56 फ़ीसदी हिस्सा पैदा कर रही है। आने वाले सालों में 25 से 30 फ़ीसदी की बढ़ोतरी होगी। राष्ट्रीय विज्ञान निधि का कहना है, कि इस दशक में पैदा होने वाले 80% रोजगारों में गणित और विज्ञान का कुछ न कुछ कौशल जरूरी है।

आत्म निर्भर भारत के लिए कौशल विकास और स्टेम शिक्षा की दिशाओं में बहुत बड़े स्तर पर काम किए जाने की जरूरत है। यह बहुत बड़ी चुनौती है।

5. स्वास्थ्य क्षेत्र में कौशल्य विकास

हमारा देश स्वास्थ्य नीतियों पर ध्यान दे रहा है पर वह पर्याप्त नहीं है। स्वास्थ्य क्षेत्र की मौजूदा समस्याओं से निपटने के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र में कौशल्य विकास पर जोर देना जरूरी है।स्वास्थ्य के क्षेत्र में कौशल विकास का सबसे बड़ा फायदा ग्रामीण, स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित और उपेक्षित जनता को मिलने की संभावना है। इससे उनके स्वास्थ्य संबंधी परिणाम में सुधार होगा। इससे स्वास्थ्य क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

वर्ष 2015 में जारी एक रिपोर्ट में भारत के लिए स्वास्थ्य संबंधी श्रमशक्ति की आवश्यकता 2022 तक 74 लाख होजाने का अनुमान लगाया गया था जबकि 2013 में इसकी उपलब्धता 36 लाख आकी गई थी। भारत के नेशनल हेल्थ प्रोफाइल-2018 में 31 मार्च 2017 को देश में कुल 58 लाख स्वास्थ्य कर्मियों के उपलब्ध होने की बात कही गई थी। जिनमें करीब 10 लाख एलोपैथिक डॉक्टर, 7.7 लाख आयुष डॉक्टर, 19 लाख नर्स 99 लाख फार्मासिस्ट 8.4 लाख एएनएम, 2.5 लाख डेंटिस्ट, 56 हजार महिला हेल्थ विजिटर शामिल थी।यानी भारत में प्रति 10000 लोगों पर डॉक्टरों, नर्सों और मिडवाइव्स की संख्या 30 है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानदंडों के अनुसार भारत को

स्तावित न्यूनतम सीमा तक पहुंचने के लिए लगभग 18 लाख और डॉक्टर, नर्स तथा मिडवाइफ की आवश्यकता
ह।

स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में कौशल विकास की सुनिश्चित और बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।स्वास्थ्य कर्मियों की वर्तमान कमी को दूर करने और इसके लिए लोगों को कौशल्य संपन्न बनाने, नए सिरे से कौशल प्रदान करने के लिए तत्काल ऐसी प्रणाली कायम करना जरूरी है जिससे भारत में कौशल्य संपन्न स्वास्थ्य कर्मियों की उपलब्धता बढे।

आज देश के समक्ष जिस तरह की चुनौतियां है, ऊंचे लक्ष्य को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं, उनके लिए नागरिकों में राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य पालन की भावना सुदृढ़ रहे। अगर भारत को आत्मनिर्भर बनाना है तो इसकी अनिवार्य शर्त है, कि भारत का प्रत्येक नागरिक देश को आगे ले जाने के लिए कर्तव्य भाव से कार्य करें। आत्म निर्भर भारत का लक्ष्य तभी साकार होगा यदि देश के नागरिक अपने संवैधानिक कर्तव्य को लेकर सजग और गंभीर रहेंगे।

संदर्भ

1. योजना – अक्टूबर २०१८
2. योजना – जुलाई २०२०
3. कुरुक्षेत्र - जनवरी २०१८
4. कुरुक्षेत्र - जनवरी २०१९
5. कुरुक्षेत्र – फरवरी २०२०
6. प्रतिदिन अख़बार – ३१ जनवरी २०२१
7. लोकसत्ता अखबार – १ जनवरी २०२१

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera Rly.

Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERN!TION!L RESE!RCH FELLOWS !SSOCI!TION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

May -2019

SPECIAL ISSUE-CLXXXV

EMERGING TRENDS IN HUMANITIES & COMMERCE



'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor (CIF) 3.452, (SJIF) 6.261, (GIF) 0.676 (2015)
Special Issue
UGC Approved No. 48705

गेल्या तरीही आज शालेय व उच्च शिक्षण या दोन्ही क्षेत्रातील गुणवत्ता व उच्च शिक्षणातल्या गळतीचे प्रमाण हा चर्चेचा मुद्दा आहे.

एकीकडे देशात गुणवत्ता, साक्षरता वाढविण्यासाठी विविध योजना राबविल्या जात आहे तरीही साक्षरतेचे प्रमाण जागतिक दृष्टिने (८५%) अद्यापही कमी आहे. भारत स्वतंत्र झाला तेव्हा साक्षरतेचे प्रमाण १२% होते ते आज (२०११नुसार) ७४% आहे. त्यातही ग्रामीण भारतात साक्षरतेचे प्रमाण ६८.९% आहे.

ग्रामीण भागातील साक्षरता प्रमाण, शैक्षणिक जागृती व गळती प्रमाण हया प्रमुख समस्या आहेत. ग्रामीण भागातील उच्च शिक्षण विषयी जागृती व गळतीचे कारणे अभ्यासणे हे या लेखनाचा उद्देश आहे.

या अभ्यासासाठी अमरावती तालुक्यातील अंजनगाव (बारी) या गावाची निवड करण्यात आली. या गावाची लोकसंख्या ७२५७ (पुरुष – ३७११, स्त्री– ३४५६) आहे. एकुण १८१५ घरे आहेत. या गावातील १०० कुटूंबाची मुलाखत घेण्यात आली. अभ्यास करताना व दारिद्रय रेषेखालील कुटूंब तसेच ज्या कुटूंबाच्या पाल्यांनी ८वी, १०वी, १२ वी नंतर शिक्षण अर्धवट सोडलेले आहे अश्यांची निवड करण्यात आली.

शिक्षणविषयी जागृता तपासण्यासाठी मुलाखतदाराला उच्च शिक्षण म्हणजे काय? गावात शाळा कोणत्या वर्गापर्यंत आहे? स्पर्धा परीक्षा कश्यासाठी असतात? बी.ए., बी.कॉम. बी.एस्सी. यात काय शिकविल्या जाते? असे प्रश्न विचारण्यात आले. त्यात असे आढळले की शैक्षणिक जागृती निम्मतम स्वरुपाची आहे. केवळ ४% कुटूंबाची जागृती मध्यम स्वरुपाची आढळली. कोणत्याही कुटूंबाला सर्व प्रश्नांची उत्तरे देता आली नाही काही कुटूंबाना गावात शाळा कोणत्या वर्गापर्यंत आहे याचीही माहिती नव्हती. कुटूंबातील प्रमुखाला पाल्याने पुढच्या शिक्षणासाठी कश्यात प्रवेश घेतला आहे हे देखील माहिती नाही, पाल्य देखील मित्राने ज्या शाळेत प्रवेश घेतला असेल तिच शाळा तो निवडतो असे देखील आढळले.

तात्पर्य असे दिसुन येते की,

1) ग्रामीण भागात अजुनही शिक्षणाविषयी उदासिनता आहे.
2) पालकांना वाटते की आपल्या पाल्यांनी शिकावे परंतू जागृकता नाही.
3) 'मुलगी दुसऱ्या घरची' अशी प्रवृत्ती आढळली.
4) नोकरी नाही मग शिकून काय करावे? ही भुमिका दिसुन आली.
5) मोठे स्वप्न पाहण्याची प्रवृत्ती नाही, आहे त्याच स्थितीत जगण्याची वृत्ती दिसली.
6) शिक्षण विषयी जागृता नसल्या कारणाने ग्रामीण भागातील उच्च शिक्षणातील गळतीने प्रमाण ही अधिक दिसले.
7) सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत ८ वी पर्यंत सर्वसाधारणता ढकल गाडीने पुढे येणारे व आर्थिकतेचा प्रश्न असणारे पुढचे शिक्षण होत नाही असेही आढळले.
8) देशात शिक्षणाविषयी जागृकता निर्माण करण्याच्या प्रयत्नामुळे, शासनाच्या धोरणामुळे प्राथमिक व माध्यमिक शिखण घेण्याऱ्यांच्या सख्येत वृद्धी पाहायला मिळते परंतू उच्च माध्यमिक व उच्च शिक्षणातील गळतीचे प्रमाण मात्र अधिक आहे.

गळतीची विभिन्न कारणे निदर्शनास आली.

बेरोजगारी :

सुशिक्षित युवकांमधले बेरोजगारीचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत चालले आहे. शैक्षणिक पातळी जसजशी वाढत जाते तसेच बेरोजगारीचे प्रमाण वाढत जाते. सन २०१५–१६ मध्ये १८ ते



[illegible] पदवीपूर्व किंवा पदवीधारक [illegible] ते २२ लाखांपर्यंत शिक्षित तरुणांपैकी [illegible] शोधण्यात अडचण येत आहे. भारतीय मजबूत विश्वास निर्माण होणाऱ्या मजबूत [illegible] आहेत.

भारतातील एकूण लोकसंख्या २०१७ मध्ये [illegible] आहे. या बेरोजगारांच्या संख्येत २०१७ मध्ये ४ लाखांनी तर २०१८ मध्ये [illegible] शक्यता आहे. परिणामी भारतातील बेरोजगारीचा दर २०१८ मध्ये ३.५% तर [illegible] होण्याचा आणि जगातील एकूण बेरोजगारांची संख्या ४७.७ लाखांवरून ४८ लाख होण्याचा अंदाज आहे. एम साऱ्यांकडे अहवाल नुसार मार्च २०१९ ला बेरोजगारी दर ३.८% आहे.

ग्रामीण भागात सुमारे ५८% पदवीधर आणि ६२% पदव्युत्तर पदवीधर त्यांच्या शिक्षण अनुरूप कौशल्याच्या रोजगाराच्या संधी उपलब्ध नसल्यामुळे बेरोजगार आहेत.

अशा परिस्थितीत ग्रामीण भागातील तरुण शिकून काय करायचे? शेतात नोकरी नाही अशा नकारात्मक भावनेने ग्रासलेला असल्याने शिक्षण घेण्यास उत्सुक नाही.

गरिबी

आपल्या देशात गरिबी ही मोठी समस्या खरं तर सर्व समस्येच मूळ कारण दारिद्र्य आहे. २०१८ मध्ये जागतिक बँकेने व्यक्त केलेल्या अंदाजानुसार भारतामध्ये १७९६ कोटी लोक दारिद्र्य रेषेखाली होते. जगातील लोकसंख्येच्या १७.५% लोक असणाऱ्या भारतात जगातील एकचतुर्थांश २०.६% लोक राहतात. ओडिशा, झारखंड, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, बिहार, छत्तीसगड आणि उत्तरप्रदेश या राज्यामधील २५% हून अधिक लोकसंख्या दारिद्र्यरेषेखाली असून हे एक भीषण वास्तव्य आहे. २०१४ च्या सी रंगराजन अहवालानुसार या राज्यातील ३०% लोकसंख्या दारिद्र्य रेषेखाली आहे. सुरेश तेंडुलकर अहवालानुसा २०११-१२ शहरी भागातील २६% लोकसंख्या दारिद्र्यरेषेखाली आहे तर ग्रामिण भागातील ३५.७% आहे.

ग्रामीण भागातील भीषण वास्तव्य आहे. पालक किंवा पाल्य यांच्या समोर रोज पोट भरण्याचा प्रश्न असतो शिकण्यापेक्षा गावात उपलब्ध असलेले काम करून पोट भरण्यातर भर असतो. बरेच विद्यार्थी शाळा, महाविद्यालयात प्रवेश तर घेतात परतू त्यांची उपस्थिती नसते. शाळा, अभ्यासक्रम, पुस्तके, शाळा, महाविद्यालयात ये-जा वर होणारा खर्च त्यांना शक्य नाही.

स्त्री शिक्षणाविषयी उदासिनता :

महात्मा गांधींच्या मते जर तुम्ही पुरुषाला शिक्षित करतात तर एक व्यक्ती शिक्षित होते परंतु जर एका स्त्रीला शिक्षित केले तर संपूर्ण कुटुंब शिक्षित होते. भारतीय संविधान कलम [illegible] प्रमाणे भारतीय नागरिकांना नि शुल्क व अनिवार्य शिक्षणाचा मूलभूत अधिकार मिळालेला आहे. सरकार स्त्री शिक्षणाच्या बाबतीत खूपसा प्रयत्न करत व करीत आहे.

२०११ च्या जनगणनेनुसार महिला साक्षरतेचा दर ६५.४६% आहे तर पुरुषांचा ८२% पेक्षा अधिक आहे. ग्रामीण भारतातील महिला साक्षरता प्रमाण ५९.३% तर पुरुषांचा ७८.८% आहे. राष्ट्रीय ग्रामीण भारतातील साक्षरता प्रमाण ७१.४% आहे.

ग्रामीण क्षेत्रात ८०% पुरुष व ४०% महिला स्वतःचे स्वतःचे शिक्षण पूर्ण करू शकत नाहीत. ग्रामीण भागात स्त्री शिक्षणाविषयी उदासिनता, गळतीचा प्रमाण हा अधिक आहे. मुलींच्या कमी परिपक्व वयातील प्रवेश व्यवस्थापनाची कमी या कारणामुळे महिला शिक्षण घेत नाहीत. मुलींची ही दुय्यम वागणूक पालकांची मुलगा शिक्षणात मागे पडतात व गळतीचे प्रमाण वाढते.

कौशल्य आधारीत प्रशिक्षणाचा अभाव

आज भारत हा जगातील सर्वांत मोठी वृद्धिंगत होणारी अर्थव्यवस्था आहे. भारताला लोकसंख्येचा फायदा मिळाला आहे. भारताला विकसीत देश बनवण्याचे असेल, तर आपल्याला कुशल मनुष्यबळाची गरज असून त्याहूनही महत्त्वाचे म्हणजे रोजगाराचे कौशल्य प्राप्त करणे महत्त्वाचे आहे. आपल्याकडे प्रशिक्षित मनुष्यबळाचा अभाव आहे. कोरियात ९३% तर हे प्रशिक्षित प्राप्त आहे. भारतात हे प्रमाण १०% च्या जवळपास आहे. शिक्षण हे कौशल्य आधारीत असले पाहिजे. प्रत्येक वर्ष शिक्षण घेऊनही नोकरी नाही, काम नाही म्हणजे शिक्षणाचा उपयोग काय? या विचाराने ग्रासलेला आहे. पारंपारिक कामाकडे त्याचा अधिक ओढा आहे. त्यातून पैसे कमाने पोट भरण्याची सोय होते. शिक्षण घेऊन काय उपयोग? म्हणजे शिक्षण हे कौशल्यावर आधारीत असले पाहीजे.

शैक्षणावरील खर्च :

शिक्षणाची गंगा सर्वदुर नेण्याची आपल्या कल्याणकारी शासनाची महत्त्वाची जबाबदारी मानली गेली आहे. त्यासाठीच भरिव अर्थसंकल्पीय तरतुदींची गरज आहे. मात्र भारतातील सरकार या बाबतीत कमी पडते. शिक्षणावरील खर्चाच्या बाबतीत भारत जगात १३६ व्या नंबरवर आहे. तर नॉर्वे पहिल्या नंबरवर. नॉर्वे आपल्या GDP च्या ६% च्या वर शिक्षणावर खर्च करतो. तर भारतातील शिक्षणावरील खर्चाचे प्रमाण ३% च्या पुढे सरकायला तयार होत नाही. त्यामुळे शिक्षण हे सर्व स्तरापर्यंत पोहचू शकले नाही.

शिक्षण हे महत्त्वपुर्ण सार्वजनिक उत्पादन आणि सामाजिक जबाबदारी आहे. याला आता व्यापक प्रमाणावर मान्यता मिळाली आहे. जगभरातील विकसनशिल आणि प्रगत समाजामध्ये शिक्षणासाठी अर्थ सहाय्य देण्यासाठी सरकारी निधी हिच सर्वाधिक प्रमुख पद्धत वापरली जाते.

अशा विविध कारणामुळे ग्रामिण भारतातील उच्च शिक्षणाविषयी उदासिनता व गळतीचे प्रमाण अधिक दिसुन येते. याशिवायही अनेक आव्हाने सांगता येतील.

१ ग्रामीण भागातील निरक्षरतेचे प्रमाण अधिक असल्यामुळे मुलामुलींना उच्च शिक्षणासाठी महाविद्यालयात व शहरात पाठविण्याची पालकाची मनोभूमिका तयार होत नाही.

२ शाळा व महाविद्यालयातून शिकविण्यात येणाऱ्या अभ्यासक्रमावर शहरी वातावरणाचा प्रभाव अधिक असतो. ग्रामीण जीवनाच्या गरजाशी व दैनदिन व्यवहाराशी प्रचलित अभ्यासक्रमाचा संबंध कमी येतो.

३ उच्च शिक्षण हे अधिक खर्चीक बनले आहे.

भारताच्या शिक्षण क्षेत्रासमोरील आव्हाने व प्रश्न सोडवण्याच्या दृष्टीने स्वातंत्र्योत्तर काळात अनेक प्रयत्न केले गेले असले तरी त्याबाबतीत मिळालेले यश समाधानकारक नाही. जागतीकिकरणाच्या स्पर्धेत समाजघटकाना स्वत:चे स्थान निर्माण करण्यासाठी व वाढत्या स्पर्धेत टिकून राहण्यासाठी शिक्षण व्यवस्थेत सुधारणा होणे आवश्यक आहे.

उपाययोजना :

१ पारंपारीक शिक्षणाचा मुलभूत पाया बदलून नव्या गुणात्मक व स्पर्धात्मक पायावर उभी राहणारी शिक्षण व्यवस्था निर्माण केली पाहिजे.

२ सर्व क्षेत्रातील तज्ञांनी एकत्र येवून योगदान देणे गरजेचे आहे.

३ माध्यमिक शिक्षणाकडे ही लक्ष देण्याची गरज आहे. कौशल्यवृद्धी अभियान अधिक सजगतेने चालविणे गरजेचे आहे.

४ समाजात शिक्षण म्हणजे केवळ रोजगार उपलब्ध करुन देणारे साधन नव्हे तर माणूस निर्मितीचा प्रमुख केंद्रबिंदु आहे हे पटवून देणे गरजेचे आहे.

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue
UGC Approved No. 40705
ISSN : 2348-7143
May 2019

५. सर्व शारीरिक सदृढतासाठी शारीरिक, मानसिक, दुर्बल असणाऱ्या व 'ढ' श्रेणीत येणाऱ्या मुलांची विशेष काळजी घेतली पाहिजे

६. ग्रामीण भागातही उच्च शिक्षणाची व्यवस्था केली गेली पाहिजे किंवा योग्य परिवहन व्यवस्था निर्माण केली जावी

७. दिवसेंदिवस मानवी मूल्याचे अवमूल्यन होत आहे. तरुण पिढी भ्रष्ट आचरणाकडे झुकत आहे समाजाचे अध:पतन होत आहे. त्यासाठी चारित्रसंपन्न नितीप्रधान व मानवी मूल्यांचे जाण असणारा समाज उभा करणे गरजेचे आहे.

८. शिक्षण हे मानवाच्या गरजा आणि आकांशानुरुप असावे. शिक्षणामुळे मानवाचे सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतीक परिवर्तन साध्य होईल असे मत शिक्षण क्षेत्राबद्दल कोठारी आयोगाने (१९६४) व्यक्त केले होते. याचाही विचार होणे गरजेचे आहे.

आपल्या मानवी संसाधन शक्तीचा पूरेपूर लाभ होऊन आपल्या शैक्षणिक संरचनेच्या पायाकडे लाभ देण्याची गरज आहे. तरच आपला भारत देश जगाचे आर्थिक नेतृत्व करण्यास समर्थ होईल

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera Rly.

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

ISSUE No- (CCCI)301

July -2021

Impact of Race, Caste, Class and Religion on Indian and International Society



Prof. Virag S. Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Dr Nitin A. Mathankar
Executive-Editor
Principal,
Late Vasantrao Kolhatkar
Arts College, Rohana

Dr. Deoman S. Umbarkar
Editor
Organizing Secretary
,Department of Sociology
Late Vasantrao Kolhatkar
Arts College, Rohana

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Narayanrao [illegible] Vidyalaya

Impact Factor – 7.675 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

July -2021

ISSUE No- 301 (CCCI)

Impact of Race, Caste, Class and Religion on Indian and International Society

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr Nitin A. Mathankar
Executive-Editor
Principal,
Late Vasantrao Kolhatkar Arts College, Rohana

Dr. Deoman S. Umbarkar
Editor
Organizing Secretary ,Department of Sociology
Late Vasantrao Kolhatkar Arts College, Rohana

Aadhar International Publication
For Details Visit To : **www.aadharsocial.com**
© All rights reserved with the authors & publisher

Principal
Narayan... Mahavidyalaya

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Role Of Communication Skills In The Development Of Tourism Industry — **Dr. Vijay Madhukar Khadse**	1
2	The impact of Depression on Women's Health — **Dr.Trushna S. Kalambe and Asst. Prof. Swapnil M. Bhagat**	3
3	Women in Tourism and Hospitality Sector of Indian Economy: Experiences of Women Workers of Cruise Ships — **Ms.Sonal R Pusalkar**	7
4	Scheduled Castes ,Panchayat Raj Reservation in Women Empowerment — **Prof.Rupesh Kuchewar**	13
5	Cross – Culture Communication Across Borders – A Study Of Literature — **Dr. T. Rachel Shalini**	16
6	maculata on acclimation — **Bidwai. P. A./ Wankhade L.N.**	20
7	Decent Work in the Informal Service Industry: A study of the Automobile Garage Workers in India. — **Mr.Yatin Dhaktode**	24
8	Effect of Covid-19 on Students' Education — **Asst. Prof. Vaishali T. Lone**	29
9	The Changing pattern of Caste Modernity and its Impact on Caste Politics in India: An Assessment — **Dr.Tuhin Kumar Das**	32
10	Physical growth ,Nutritional status and Mental Development of School going Children — **Dr. Surekha R.Gaikwad**	35
11	Depiction Of Modern Society Issues In Chetan Bhagat's Revolution-2020 — **Mr. Sujay S. Ikhar / Dr. Jayant Karmore**	41
12	Management lessons from Bhagavad Gita — **Dr. (Ms.) Subhashree Panda**	44
13	Dietary intake and anthropometric measurements in preschool children — **Prof. Sonal Tuljaram Kame/ Dr. SavitaSanghwan/ Dr. Yogita Sanap**	50
14	Impact of Religions in Indian Society — **Dr. Smita D. Rane**	55
15	Observation of Nesting Pattern and Breeding Ecology of Laughing Dove (SpilopeliaSenegalensis) in Around the Hilly Region of Girna River, Tal. Kalwan, Dist. Nashik, (MS) India — **Shantaram B. Bhoye/ Nalesh G. Bahiram**	60
16	Effective Use of Balanced Scorecard to Evaluate the Performance of Academic Libraries — **Mr. Santosh P. Khajindar**	63
17	Impact of Cast , Class and Religion on Indian Politics — **Prof. Dr. Sanjay Madhukarrao Salwe**	69
18	A Study On Collection Development and Management of college Librari e srunby Mahatma Gandhi Mission Aurangabad — **Mr. Sakharam B. Harka/ Dr. Mrs. Wadalkar R. R./ Mrs. Mathdewaru B. S.**	72

Narayan... Vidyalaya

19	RFID Implementation in Libraries: Pros and Cons **Dr. Pallavi S. Kale**	80
20	Mahesh Dattani -As A Craftsman **Prof. Dr. Niraj P. Kendhe**	84
21	Impact of Religion on International Relations **Mr. Ninad Kulkarni**	88
22	Impact of Cast Class & Religion on Women Empowerment **Dr. Mrunal R. Waliokar**	91
23	Impact Of Gender, Religion And Caste On Women In Indian Society **Dr. Manjusha S. Bhoyar**	93
24	Digital LIS Collection Development **Mangesh R.Ubale**	97
25	Self-Help Group (SHG) : An Effective Tool of Women Empowerment and Poverty Alleviation. **Harish T. Sakhare**	101
26	Women Co-operative Societies- A way of Women Development. **Dr. H.B. Panjabi**	104
27	Caste System in India and its impact on Socio Economic Condition **Dr. D. H. Puttewar**	110
28	A Critical Analysis of Workforce Management in Rice Industry with special reference to the Gondia District (2000-2009) **Dr. Bhavesh M. Jasani**	116
29	Effect of covid-19; challenges& innovations **Dr.Ashwini Sunil Potphode**	126
30	Role of Caste Politics in India **Ashis Naskar**	129
31	A Study Of Farmer's Perception And Benefits Of Crop Insurance With Special Reference To Khatav Taluka **Dr. Amol Haridas Bobade**	133
32	Depiction of Moral Degradation of Everyman Through Fantasy in Elkunchwar's "Reflection" **Prof. Vikas Meshram**	140
33	Perception Towards Food Saffety Its Impact On Infant Mortality **Dr.T.Priyanka / Ms.A.Amora**	145
34	Impact Of Jain Caste ,Class And Religion On Their Occupation & Business Ethics In Indian Society **Dr.Anjali Upadhye / Dr.Sulakshanan Chavan**	150
35	TheLost World of Igbo Culture and Religion **Mr. Somnath Sopan Lokare**	157
36	Impact of Racism Depicted in Light in August by William Faulkner **Snehal Nasre**	161
37	E-Resources **Murkute Balasaheb Shivaji**	164
38	Chinua Achebe's Things Fall Apart: Old verses New Religion **Dr. Shaikh M. A. Raheman**	166

Narayanrao ... Vidyalaya
Badnera

39	Impact of Class and Religion Reflected in Vultures By Vijay Tendulkar **Satish K. Khode**	170
40	A Visionary Social Reformer and Educationist: Dr. Panjabrao Deshmukh **Sanjay L. Khandel**	173
41	The Role of Nature Plays in Thomas Hardy's Novels(With Special reference to Tess of D'urbervillies) **Rupesh Prakash Rede**	176
42	Caste System and Indian Society **Dr. Rama Gandotra**	179
43	History And Impact Of Caste System On Indian Society **Dr. Manjusha S. Bhoyar / Dr. Vijaya Y. Muley**	183
44	Religious Intolerance and Liberal Dissent in Githa Hariharan's In Times of Siege **Dr. Leena V. Phate**	187
45	Impact Of Caste System, Racism And Religion On Indian And International Society **Dr. Jaikumar g. Kshirsagar**	192
46	Life And Death Instincts In Chitra Banerjee Divakaruni's The Sister Of My Heart **Mr. Ganesh Bele**	196
47	Indian Caste System, Religion, Culture and Its Impact on Middle Class Society **Dr. Lande S. D**	200
48	Absence of Harmony in Shashi Deshpande's Roots and Shadows **Ashish M. Sahare / Dr.Neehal Sheikh**	204
49	Empowering the Consumer's Rights under the Consumer Protection Act 2019: Analysis **Abhijit Anil More**	207
50	Madhubani Painting – Folk Art of Mithila **Mrs. Archana P. Harne**	213
51	Impact of Caste Class and Religion in Shashi Deshpande'snovel Roots and Shadows **Prachi Bhongale / Dr. Varsha Vaidya**	216
52	Impact Of Class And Religion On Immigrants In Rahul Varma's Plays **Dr. Tulshiram Laxman Dabde**	221
53	Global Challenges and Global Solutions **Dr. Sunil S. Bidwaik**	225
54	Impactof E-Governanceon Public Servicesin The State Of Maharashtra **Dr. Sunil d. Punwatkar**	232

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO. 298 301 (CCCI)
ISSN : 2278-9308
July 2021

Impact of Class and Religion Reflected in Vultures By Vijay Tendulkar

Satish K. Khode
Assistant Professor, Dept. of English, Narayanrao Rana Mahavidyalaya,
Badnera, Dist. Amravati ,
Mob. 9423425596 ,Email: satishkkhode13@gmail.com

Abstract:

This paper deals with the *Vulture*, a famous play in the canvas of Indian Writing in English. It is attempted to find that the lack of religious values and changed class mentality of the post modern generation is prone to create waste land in Indian social soil and culture. All the characters in the play are perverted in some course of action and passion to deal with the social conventionality. This is a novel aspect that has great relevance to deal with the present context of modern absurdity of life.
It is also aimed at to highlight Tendulkar's overall contribution to the Indian writing in English. Though the translator, is present in between the artist and the art, the core of creation has its own effect and novelty.

Introduction

In the post modern Indian English drama, Vijay Tendulkar has created a name for thematic technical and theatrical innovations. He is one of the most celebrated genius in the field of Indian Writing in English. His drams deal with the subjects that are rooted deep in culture and traditions of the contemporary Indian society. His art of drama navigates the existing theoriesof literature and adds a new dimensions to the performing arts. Through the crisis and problems selected he has always tried to pose the dilemmas of human life in midst of age old traditions and customs. In the event of most of his dramas we find that sometimes he has put the question mark on social convention that entail the story of human servitude and subjugation. His seems to be art emerged from his individualistic, inwardly felt awareness of man's confrontation with social flux, the forces that mark the complexity of modern life.

In his plays Tendulkar has shown his concern and related reaction towards the several problems. He has probed deep into the psychic state of human behaviour in the context of Indian society and explored the middle class way of life and thinking through the prevailing overt and covert violence and sexuality within said society. As an innovative and experimental playwright Tendulkar used theatre not merely as a medium of entertainment but also as a medium to make people aware of the conditions and situations they are living in. He writes:

I don't think that theatre is meant only for entertainment. I want people to come to the theatre, Iwant them to see the play but on my terms and not on their terms.... I don't have a political ideology, but I am deeply concerned about the existence of my people, so I am trying to say something about that. (Tendulkar 1977)

Regarding his experiments with the drama as a performing art, ChatterjeeShukla observes that: To bring about innovations as an experimental dramatist, Tendulkar has adopted various new forms and techniques. He has modified the art of drama to make the best use of them for his representation of socially controversial themes that jolted the orthodox Marathi Theatre completely. (ShuklaChatterjee130)

Though most of his plays had cut short the troubles compelling the producers to go to court. He has preferred social realism, a trending technique popularized through the post modern Indian English novelsand took up real life incidents as plots for his plays. Most of these plays caused severe controversies during production but finally stood earned fame globally. He never shrank from public

Narayanrao ...avidyalaya
Badnera

controversy but rather tore through the barrier of propriety with ruthless yet clinical dispassion, and turned the genre of social realism to focus back on the individual. In most of his plays Tendulkar dealt with living characters who speak their own language in their separate personal style and incidents to depict life in its actual form. The basic urge (to write) has always been to let out my concerns vis à vis my reality: the human condition

As mentioned earlier that Tendulkar's dramatic art is marked by many innovations in techniques and subject. The first novelty of his art is reflected in his use of the themes like conflict between tradition and modernity is also seen. He never thought that the occurrence of human violence as something loathsome or ugly. Rather, he believes in existence of evils to be part of the innate in human nature. He believes that violence is a basic quality in human. In most of his dramas we find that the anger and frustration of his characters, the young men and women is expression of their rejection of the conventional or traditional values and norms. So we see the cruelness of the protagonists. They offer the world which is not cultural. Human world can't understand their intention, feeling and sense of humanity. Tendulkar explores human mind and its complexities in all depth and variety. He presents man-woman relationship in terms of sensuality and violence rather than love and affection. So Tendulkar is called anti-romantic playwright.

Apart from this, Tendulkar was a great humanist. He intended to bring change, a drastic change in society and its people. It can be easily evidenced that whatever the kind of life presented in his play corresponds to the realistic picture of society. The authenticity of treatment makes us introspective. His plays are helpful to human being to being human.

Critiquing the *Vultures*:

Vijay Tendulkar's play 'Vultures' falls in the series of bringing back the once famous plays to the stage that has come to a new end. The list of his most stormy plays consists of Sakharam Binder, GhashiramKotwal and Vultures. From the title of the play, the flamboyance is noticeable. The playwright Tendulkar has unhesitatingly presented the burning truth that 'vultures' break the ligaments of dead bodies and fill their stomachs, but in this play, people break the ligaments of living people and try to make them physically and mentally twisted. This is the first time that such a violent cruelty in the story came on the Marathi stage on the occasion of 'Vultures'. Actress AtishaNaik, who reached home due to 'GhadalanyaBighadalanya', has dared to direct for the first time. He also seems to have worked hard for it. Tendulkar's code is 'Between the Lines'. It has also been studied by Atisha and the original three-act play has been well enclosed in two acts. Along with directing, she also played the role of Rama to witness every experiment. The drama was colorful because of the ingenuity of balancing the many incidents that lean towards pornography and obscenity. Coincidences are fantastic.

When 'Vultures' first came on the stage in 1970, the leading role of 'Ramakant' in the male character and directing of the play was done by Dr. It was done by ShriramLagoo. Today, even in 2013, AtishaNaik is directing and playing the lead role of a female character, 'Rama'. It shows a 'stubborn' and restrained acting. 'Vultures' is a drama as well as a family drama. The story revolves around a family. It involves two brothers fighting for inheritance. A vicious plot to rob the birth father and sister-in-law. From that comes the horrible form of social life. Tendulkar's unique personality traits are characteristic and numbing. Everyone's story, grief and outlook on life is abandoned. The plot is locked in it.

Dad is an elderly man who brings financial prosperity on his own. It is because of him that a large bungalow has been erected, but today at this age it has become a symbol of helplessness. Sunil Godbole has effectively portrayed the pain in the role of Pappa. Godbole has put up a good fight against the violence of both the boys. They have two children, one eldest son in Ramakant, Rubabdhr, the other son Umakant and the illegitimate son of Pappa who lives in the garage of the bungalow is Rajinikanth! Ramakant is married to Rama. Eldest son and daughter-in-law. After many days, Rama

Narayan... Vidyalaya Badnera

is pregnant. Ramakant is always trying to grab money from there. Brother and sister do not consider this relationship. His wife dominates Rame. Pulls his brother out of the house.In the original experiment in the role of Ramakant, Dr. himself Shriram wanted to play an applicable role. Here is GautamJoglekar.

After a long hiatus, Gautam has made an entry in this play. He has erected Ramakant in Rubab. Ramakant's brother Umakant. It has many sounds. Sister Manik also causes an accident to conceive a rich lover in her womb. The two brothers also plot to blackmail their boyfriend and boil his money. SuhasShirsat played the role of Umakant and Amrita Sant played the role of Manik. Manik was earlier played by DeepaShriram. Meanwhile, Umakant suspects that the fetus growing in Rame's womb is not of Ramakant but of his half-brother Rajinikanth. He is trying to get a bungalow deal with Ramakant, but avoids the deal. He does not get entry to the bungalow. Not entitled as heir. Drinking alcohol, smoking cigarettes, 'bha' is all started in some bungalows. For the whole bungalow! Rajinikanth (AngatMhaskar) and Rama (AtishaNaik) have a love story, a tragedy. This subplot strikes the audience.

Conclusion

Tendulkar is one of the innovative, post modern novelist who has turned the wheel of Indian drama raising it to the level of western drama. Tendulkar's name is placed in the list of the most succesful novelists after BadalSircar from Bangal. Through the way if his plays into English translations, he has successfully raised the height of Indian. He shares a great contribution to the Indian writing in English. His plays replete with the color and setting of Indian ethos. His one of the most talked about plays, Vultures presents, the impact of modern life style displaying moral and social degeneration of the new generation. They quarrel like beast. They show no respect to the elders who strived hard to bring them up. This impact of ingratitude on the mind of the new generation is evidenced in the lack of religious values in the threir life. This point of view that has been driven deep into social psyche by the dramatist.

Reference:

- Tendulkar Vijay. *Five Plays*, Kumud Mehta, ShantaGokhale, PriyaAdarkar (trans.). 6th impression, (New Delhi: 2004).
- Chatterjee, Shukla, 'Representing Violence in the Plays of Vijay Tendulkar', Ph. D Dissertation, Visva-Bharati University, 2012.
- In an unpublished diaryentry collected from National Council for Performing Arts(NCPA), Mumbai he mentions, (Translated by S. Chatterjee fromthe original Marathi diary entry with the guidance ofProf. VeenaAlase)
- Deshpande, Satish, 'The Centrality of the Middle Class', in *Contemporary India: A Sociological View*, (New Delhi: 2003)

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

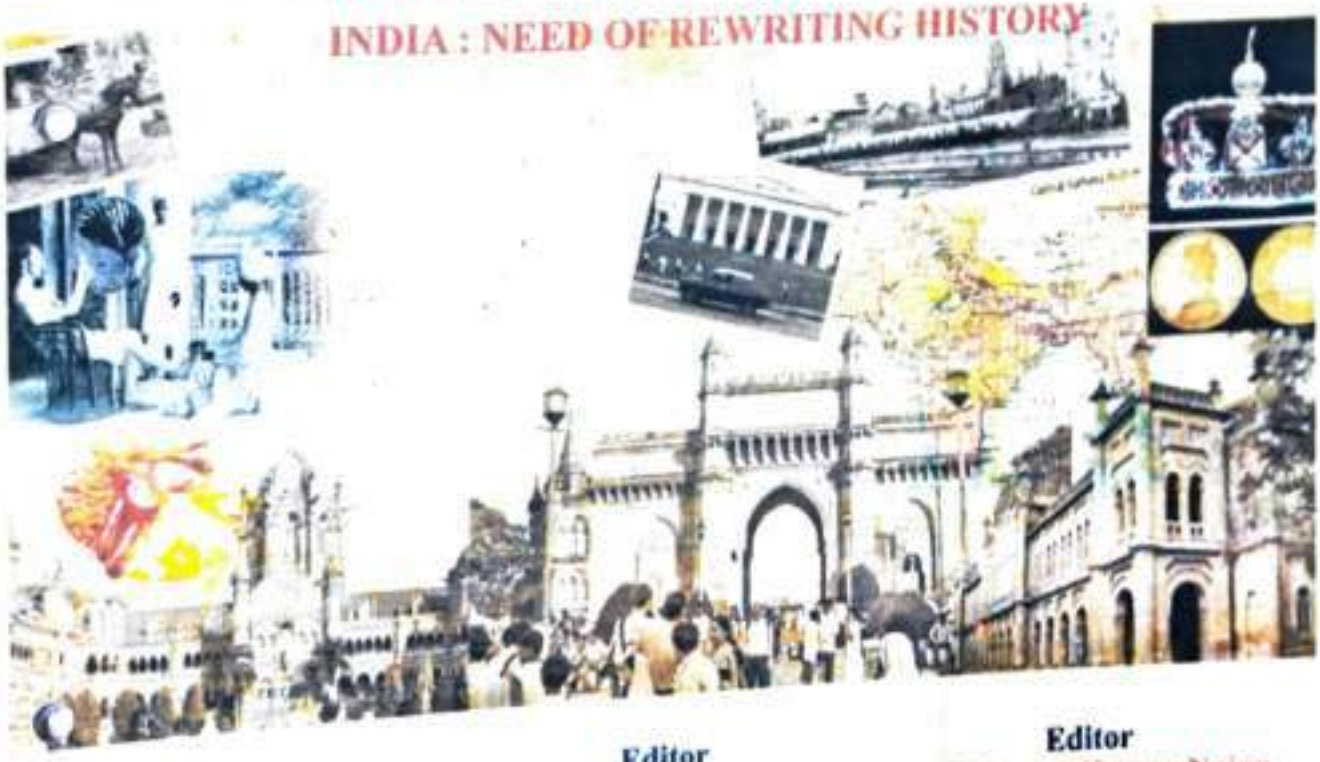
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Bansod,
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

ISSUE No. 321

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

(SJIF) Impact Factor-7.675 ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

October-2021
ISSUE No- (CCCXXI) 321

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Bansod,
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera,Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -7.675.Issue NO. 321 (CCCXXI)

ISSN : 2278-9308 October, 2021

INDEX-321

No.	Title of the Paper Authors' Name	Page No.
1	ब्रिटिश आक्रमणाचे कऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम — प्रा.डॉ. संतोष बनसोडे	1
2	ब्रिटिशराजवटीचे भारतावरील परिणाम — डॉ.उर्मिला क्षीरसागर	4
3	फोर्ट सेंट जॉर्ज कालखंडात भारतात झालेल्या बदलाचा ऐतिहासिक आढावा (इ.स. १७७२ - १७८५) — डॉ. शरद गावंडे / पंढरीनाथ पोपट शेलूद	8
4	वासुदेव बळवंत फडके यांची सशस्त्र चळवळ — डॉ चौहरी रंगनाथराव पिलळे	11
5	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे सांस्कृतिक जीवनावरील परिणाम — प्रा. अंभोरे अशोक गंगाराम	13
6	भारतातील ब्रिटीश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम — प्रा.सुरेखा रामदास अवड	16
7	भारतावर ब्रिटिश आक्रमणाचे राजकीय जीवनावर झालेले परिणाम एक ऐतिहासिक चिंतनशील अध्ययन — प्रा.डॉ. एन. आर. वर्मा	18
8	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील क्रांतिकारी स्त्रियांचे योगदान — प्रा. डॉ. किशोर शेषराव धीरे	22
9	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे शैक्षणिक जीवनावर झालेले परिणाम — प्रा. डॉ. शरद गावंडे /प्रा. संजय सदाशिव बनकर	25
10	ब्रिटिश कालीन शिक्षण पद्धतीचे भारतीयांवरील परिणाम — डॉ. एस. यु. गावंडे / अमोल विश्वासराव तायडे	28
11	ब्रिटीश कालीन शिक्षणाचे भारतावर झालेले परिणाम — डॉ. प्रमोद ना. घ्यार	31
12	ब्रिटीश साम्राज्यवादाविरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनाची दीर्घकालीन रणनीती — सहा. प्रा. डी.एन. रिठे	37
13	गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौसीचे खालसा धोरण एक ऐतिहासिक चिकित्सा १८४८–१८५६ — श्रीकांत पांडुरंग तळेकर / डॉ.शरद गावंडे	40
14	बहिरम यात्रा – एक ऐतिहासिक मागोवा — कु. शिल्पा युगेंद्र अंबळकार	44
15	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव... — डॉ.सोमनाथ लक्ष्मण गुंडकर	47
16	'भारतावरील ब्रिटिश आक्रमण, सामाजिक जीवन व भाषांतर युग' — डॉ.संदीप अर्जुनराव बनसोडे	53
17	ब्रिटिश आक्रमणाने स्त्री जीवनातील सहित्यावर झालेले परिणाम — प्रा. डी. कुसमेंद्र गं. सोनटक्के	56
18	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे स्त्री जीवनावरील परिणाम — प्रा. कु. सुषमा जयकुमार फरसोले	58

19	ब्रिटिश कालीन इंग्रजी शिक्षणाचा भारतावरील परिणाम प्रा. डॉ. वीरकुमार तजाल	61
20	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे सैनिकि जीवनावर झालेल्या परिणामांचा ऐतिहासिक दृष्टीकोनातुन अभ्यास प्रा. डॉ. रविराज मारुतीराव कोकरे	67
21	ब्रिटिश कालखंडातील यवतमाळ जिल्ह्यातील शेतकऱ्यांची दशा आणि दिशा कु. भारमवी वीरकुमारराव साबळे	71
22	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे सैक्षणीक जीवनावरील परिणाम प्रा. रेखा महादेवराव मनवर	77
23	ब्रिटीश अमदानीतील बागलाण तालुक्यातील सैनिकी छावणी एक आढावा प्रा. डॉ.रविंद्र एम.साळुंखे /वर्षा नारायण पवार	80
24	भारतातील शिक्षणाच्या सुरुवात व विकासाचा इतिहास (इ.स.१८०० ते १९४७) श्री. अजित कालिदास चव्हाण	84
25	ब्रिटिश आक्रमणाचे भारतीय इतिहास लेखनावरील परिणाम डॉ. दत्ता दत्तराव जाधव	88
26	जुलमी ब्रिटीश राजवटीने भारताची केलेली लूट डी.व्हाय.हि. पाटील	92
27	ब्रिटिश राजवटीचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम प्रा. रोहिणी विलीन देसपांडे	95
28	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे सांस्कृतीक क्षेत्रावरील परिणाम एक दृष्टीक्षेप वैभव प्रभाकर डगवार	99
29	भारतावरील ब्रिटिश आक्रमणाचे शैक्षणिक जीवनावरील परिणाम डॉ. पुजा राजेंद्रसिंह पारखी	101
30	पुर्वे जिल्ह्यातील गडिल्यांचे ब्रिटिश संबंधित पुरातत्वीय व्यवस्थापनातील योगदान प्रा. शितल कृष्णा बोरकर	104
31	Role of Yashwantrao Holkar in Battle of Hadapsar Asst. Prof.Shankar Tekale	108
32	Farming The First Appointed Job Of Mankind Brinda Shine	109
33	Economical Impact Of British Rule On India Dr Balu Atmaram Kamble	114
34	Cave Women The Hammer To Break The Glass Ceiling Brinda Shine	118
35	Conversion into Buddhism: Stimulating Self-Consciousness of Dalits-Buddhists Dr Mangala Tayade	122
36	Indian English Drama and the British Influence Satish K. Khode	127
37	Changing Nature Of India's Trade And Industry Under British Rule: The Early Days Dr. Mrs. Anjali Andrew	130

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, 321(CCCXXI)
ISSN : 2278-9308
October, 2021

Indian English Drama and the British Influence

Satish K. Khode
Assistant Professor Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera
Dist- Amravati ,satishkkhode13@gmail.com

Undoubtedly , the drama in India is older than the Western literature and , its arrival can be traced back to 2000 years before Aristotle's 'Poetics' . The most pioneering work on Indian dramaturgy, is Natyashastra , the oldest book of theory of drama by Bharatha . It indicates Indian tradition of drama through its prescription relating to all major aspects of drama, namely stage- the setting, music , plot construction , characterization , dialogue and acting. It is known as Sanskrit drama as it was Vedic period and was performed in a simple way of daily activity. The period of Sanskrit dramatists in Indian tradition of drama is considered as the Golden Age of Sanskrit drama. During the middle ages, Sanskrit drama flourished in its glory. But later on the Indian drama declined in its popularity due to certain foreign invasion. The crippled Indian drama regained its strength when the British entered India. With the arrival of the English theatre in India the concept of heroes and celestial beings in drama faded away slowly as the English theatre brought realistic touch to the Indian drama. The drama selected the major events of individual's life and socio-economic and political affairs of the society.

The colonization played a major role in influencing the Indian dramaturgy. The Indian drama in English appeared on the scene with its origin traced back to the year 1931, when Krishna Mohan Banerjee's *The Persecuted* was published in English. The East-West cultural conflict was projected through this social play , first time in the Indian context of setting. In his attempt of tracing the origin, Dr Amit Bhattacharya writes, "Indian English drama as we all know, is a literary offshoot of the cultural encounter between the East and the West occasioned by the colonial rule in India." (Dipak Giri,7) This drama came after four years of the publication of *The Collected Poems (1927)* the first collection of Indian English poetry by Henry Dorezio. This shows that the journey of Indian English drama began simultaneously with the beginning of Indian Writing in English which has established its place, fame and recognition in the world literature today and which is grown up of around 200 years old. The development of Indian English literature ridden on the genres like poems and fictions, has surpassed the essay and drama.

Due to many reasons, the drama lagged behind. Some of the important reasons are: first is the medium of expression, i.e. English. Apart from Indian educated scholars, very few Indians were able to use English as their medium of communication. Second is the nature of the genre itself. Unlike poetry and fiction, drama is a performative, theatrical art. "It is designed for representation on the stage by actors who act the parts of the characters of its story, and among whom the narrative and the dialogue are distributed." (Grace, 2018) Indian English drama failed to attract the mass audience resulting in lack of popularity and scanty output. M. K. Naik Points out, "drama-essentially a composite art involving the playwright, the actors and the audience in a shared experience on the stage has its own problem of which the other literary forms are free." (Naik 256) He further adds, "A play in order to communicate fully and become a living dramatic experience, needs a real theater and a live audience. It is precisely the lack of these essentials that has hamstrung Indian drama in English all along" (Naik, Shamala 201)

The above description makes it clear that the drama being composite art, theatre plays crucial role. Marjorie Boulton says, "A true play is three dimensional: it is literature that walks and talks before our eyes. It is not intended that the eye shall perceive marks on paper and the imagination turn

them into sights, sound and actions: the text of the play is meant to be translated into sights, sounds and actions, which occur literally and physically on the stage. Though in fact plays are often read in silence, if we are to study drama at all intelligently, we must always keep this in mind." (Marjorie, 71)

It is with the entrance of the British that the Indian English drama got fresh impetus. They interfered with bringing in the influence of English theatre in India. The English theatre brought realistic touch to the Indian drama. Apart from theatrical development, the Indian drama shifted to thematic and technical innovations. The selection of the content of drama was extended to the major events of individual life, socio-economic and political affairs of the society. The British of East India Company developed the Indian theatre in Kolkata, Mumbai and Chennai, the three important places which were the centers of their activity.

The National School of Drama was established at Delhi in 1959. The dramatic organizations like, the Parsi Natak Mandali, the Indian National Theatre, the Amateur Dramatic Association and Ebrahim Alkazi's Theatre Unit were also constituted. Institutions for training in dramatics were found in big cities. The National Drama Festival was started in Delhi by the Sangeet Natak Academy in 1954 and academic discipline in form of departments of drama was established in the universities. These were the developments that led to the growth of theatre as movement in India. Though many of the Indian English plays had to remain satisfied with one or two performance in big cities, it boosted the development of Indian drama in English. Many Indian intellectuals went abroad, they were exposed to the theatre and literature.From thematic point, the major concern of the Indian playwrights seemed too centered on Indian myths, epics, legends, history, folk literature through which they brought about effective presentation of contemporary social, cultural and political problems and conflicts in their plays.

Initially, the Indian drama seems to have been greatly influenced by Western thinkers and playwrights such as Sartre, Camus, Brecht, G.B. Shaw, Ibsen, Chekhov, Eliot, Ionesco, Pirandello, Pinter and Beckett. However, during the post modern period, the Indian writers have achieved a thorough synthesis of all the three distinguished traditions namely classical, folk and contemporary western. This resulted in the discovery of a new form as well as a new style of production. Indian dramatists blended the western intellectual consciousness and Indian theatrical techniques in English. They experimented with innovative themes and methods of handling situation, character delineation, tone and expression in dialogue, stage craft and technical virtuosity. The playwrights, beginning with the first modern generation, the literary stalwarts, like Rabindranath Tagore, Girish Karnad and Mahesh Dattani led the Indian drama in English to reach to the height of artistic achievement. According to Diana Devlin, "Rabindranath Tagore sets out to unify Indian and western traditions creating plays which have been described as a mixture of Bengali folk drama and Western medieval mystery plays." (Diana, 53) Among the recent, post modern generation, we find the playwrights like Asif Currimbhoy, Mahasweta Devi, Pratap Sharma, Gurcharan Das, Manjula Padmanabhan, Shiv Subramanian, Tanika Gupta and Lakhan Deb whose works in the field of drama have enriched the Indian drama and theatre immensely. These post-independence playwrights have made bold experiments in the area of theatrical art.Though their dramatic works came out in regional languages, such as Mohan Rakesh in Hindi, Badal Sircar in Bengali, Vijay Tendulkar in Marathi and Girish Karnad in Kannada, their English translations became global. Their works have greatly enriched the drama in India and contributed immensely in Indian writing in English. They can be called the torch bearers of a new resurgence of the contemporary Indian drama.

Principal

References :

Iyengar . K.R.S. *Indian Writing in English* New Delhi: Sterling publishers Pvt.Ltd.1962.

Kumar, Satish.*A Survey of Indian English Drama*. Barielly : Prakash Book Depot , 1993.

Marjorie Boulton *Quest*, No. 64 , Jan - March 1970.

Manachi Sarathabu, *Indian Drama Today* , Prestige Books , New Delhi 1997.

Naik, M.K., *A History of Indian English Literature* , Sahitya Akademi , New Delhi 1995.256.

Reddy, T.Shashikanth. " The Trajectory of Post-Independence Indian English Drama – A over View", *Emergent Trends and Issues in Indian English Drama* , Jaipur. Aadi Publication 2012.

Principal

Narayan... Vidyalaya

NARAYANRAO RANA MAHAVIDYALAYA
BADNERA, AMRAVATI &

DR. GOPALRAO KHEDKAR MAHAVIDYALAYA GADEGAON
TELHARA, DIST AKOLA. (M.S.) INDIA

ONE DAY INTERNATIONAL E-CONFERENCE
ON

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY

14th OCTOBER 2021

Jointly Organized by Departments of History

CHIEF PATRON

Dr. Ashish Mahe
Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Amravati

Adv. Harshvardhanji Deshmukh
Hon. President
Shri Narayanrao Education Society
Amravati

Shri. Dadasaheb Patil
President
Shri Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Telhara, Dist. Akola

Adv. Lalitkumar Patilkar
Hon. President
Shri Narayanrao Education Society
Amravati

Organizing Committee

Dr. Gopal Vavale
Principal
Shri Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Gadegaon, Telhara, Dist. Akola

Dr. Gopal J. Dhote
Principal
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Gadegaon, Telhara, Dist. Akola

Dr. Santosh Rawool
Convener
Associate Professor & HOD
Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Amravati

Dr. Dhirajkumar Najan
Co-Convener
Associate Professor & HOD
Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Gadegaon, Telhara, Dist. Akola

Our Guests, Resource Persons and Eminent Experts


Patron
Hon. President, Shri Narayanrao Education Society
Amravati


Patron
Hon. Secretary, Shri Narayanrao Education Society
Amravati


Inaugurator
Dr. Harishbhai Wankhade
Hon. Minister of State
Social Justice & Special Assistance
Government of Maharashtra


Key Note Address
Dr. Pravin Kumar Patil (IPS)
Director General
Maharashtra Prison & Correctional Services
Pune (M.S.)


Chief Guest
Dr. Prashant Bokare
Hon. Minister
Social Justice & Special Assistance
Government of Maharashtra


Speaker
Dr. Santosh Wagh
Associate Professor & Head
Department of History
Mumbai University, Mumbai


Chairperson
Dr. Vandana Gurav
Principal
Arts, Commerce & Science College
Ner Pingalai, Tal. Dist. Yavatmal


Guest of Honour
Dr. Sulbha P. Nagarkar
Principal
Shri Shivaji Mahavidyalaya
Barshitakli, Dist. Akola

Co-Convener

Prof. Dr. Kalpana Mohan, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati
Prof. Sarah Khan, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati
Prof. Dr. Harshal Sambhrani, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati
Dr. Kavita Mohare, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Amravati
Prof. M. M. Kawarkhe, Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya, Gadegaon, Telhara, Dist. Akola
Dr. A. D. Sonkhaskar, Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya, Gadegaon, Telhara, Dist. Akola

Organizing Committee Member

1) Prof. Dr. G. R. Munde
2) Prof. Dr. V. G. Bhangdiya
3) Prof. Dr. Sachin Dole
4) Prof. A. J. Gawali
5) Dr. R. A. Sathe
6) Prof. Dr. K. J. Deopare
7) Prof. Dr. S. G. Pande
8) Prof. R. V. Lanker
9) Prof. M. P. Chopade

International Advisory Committee

Kiranjeet Kaur, Department of English, Punjabi University, Patiala, Punjab
Arvind Kumar, Department of Political Science, Punjabi University, Patiala, Punjab
Dr. Laxman Satapathy, Department of History, Utkal University, Bhubaneswar, Odisha
Dr. Subhadra Sangita, Department of History, Utkal University, Bhubaneswar, Odisha

National Advisory Committee

Prof. Dr. Ajaykumar Pujari, Solapur
Dr. Lokhande, Solapur
Prof. Dr. Sanjay Sonekar, Nagpur
Prof. Dr. Jadhav Vaijanath, Aurangabad
Prof. Dr. Pitti Ishwardas, Nanded

State Advisory Committee

Prof. Dr. Vaishampayan Gaude, Nagpur
Prof. Dr. Vishwambhar Hatole, Nagpur
Prof. Dr. Shrikant Kolte, Nagpur
Prof. Dr. Kiran Tarbade, Nagpur
Prof. Dr. Chandrakant Kamble, Nagpur
Prof. Dr. Mukund Bhoi, Nagpur
Prof. Dr. Anil Mahajan, Nagpur
Prof. Dr. M. M. Mude, Nagpur
Prof. Dr. Arvind Dhoke, Nagpur
Prof. Dr. Gopal Magarde, Nagpur
Prof. Dr. Kavalkar Sakare, Nagpur
Prof. Dr. Sanjay Patil, Nagpur
Prof. Dr. Dilip Jolate, Nagpur
Prof. Dr. Sudhakar Lahane, Nagpur
Prof. Dr. Jagtap Sonawane, Nagpur

University B.O.S. Member

Prof. Dr. Gajanan Rathod, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Nitin Sarap, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Sanjay Gaikwad, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Narayanrao Gawande, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. V. N. Bachkar, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Pramod Gawai, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Ganesh Gawande, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati

University Professors

Prof. Dr. Vasant Bhoge, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Kishor Nene, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Kavita Sarap, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Bhaskar Wasnik, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. V. P. Wankhade, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Chandrakant Narkhed, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Vasant Padghan, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Minal Khevade, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Rekha Kulkarni, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Pradip Dhote, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Prof. Dr. Vasant Mahajan, Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati

ORGANIZERS


Dr. Gopal Vavale
Principal
Shri Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Gadegaon, Telhara, Dist. Akola


Dr. Gopal Dhote
Principal
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Gadegaon, Telhara, Dist. Akola


Dr. Santosh Rawool
Convener
Associate Professor & HOD
Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Amravati


Dhirajkumar Najan
Co-Convener
Associate Professor & HOD
Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya
Gadegaon, Telhara, Dist. Akola

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Aadhar Publications
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Mob:- 9595560278 Emial: aadharpublicationsj@gmail.com
For Details www.aadharsociety.com
Price:Rs.500/
ISBN

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue
01 March 2022

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

*Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghocke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq Dist Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributor / www.vidyawarta.com

Principal
Narayanrao Ra... Mahavidyalaya
Badnera

Date of Publication
01 March 2022

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.com

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. *Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyawarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).*

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 8.14 iijif FACTOR

Govt. of India, Trade Marks Registry Regd. No. 2611690

Harshwardhan Publication Pvt. Ltd. ISO 9001:2015 International Multilingual Research Journal

http://www.printingarea.blogspot.com

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Dadnera

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**
Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**
salen Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**
Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**
115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**
vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**
Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**
B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**
Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**
AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437

- MISS. VARSHA ANILRAO TIDKE
FULE-AMBEDKAR COLLEGE OF SOCIAL WORK,
HANUMAN NAGAR, REVENUE COLONY, GADCHIROLI
9421857700
varshaatidke21@gmail.com

- **Dr Trushna S Kalambe**
66 Ayodhyanagar behind
sai Mandir lane no 2 Nagpur-440024

- **Dr. Ambhore Shankar**
Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Sumit Prasad**
Professor Colony, Kankarbagh,
PO – Lohia Nagar,Patna – 800 020 (Bihar)
prasadsumit78@gmail.com

- **Prof. Surwade Yogesh p**
Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**
At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**
Vanshree Nagar,Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr. Varma Anju**
Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
aniuverma2009@rediffmail.com

- **Dr. Dinesh Kumar Charan**
Associate Professor and HOD-History Dept.,
Govt.Lohia College Churu (Rajasthan) India'
Pin- 331001
Mob. No.-9414305804

Principal
Narayanrao R... Mahavidyalaya
Dadnera

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Special Issue 06

INDEX

01) Innovation and Entrepreneurship by Government Of India
Principle Dr. V.H. Nagre, Dist buldana ||10

02) A Review on Some Ethnomedicinal Plants of Akola District Maharashtra
M.J.Naise, Akola (MS) India ||18

03) A Study of Impact of Cotton Production on Socio-Economic Development ...
Dr Shivanand B.Adkine, Mr. Atmaram U. Jadhav, Nanded ||21

04) A Study on Covid 19 and use of ICT in education sector
Dr. Mahendra Kailas Sonawane, Pune ||23

05) SUSTAINABLE DEVELOPMENT
Dr.Rahul.N.Dhumal, Dist- Pune ||27

06) Conservation of Ethonomedicinal Plant is One of The Way of Conservation ...
Dr.Mrs.Sharayu Shyam Deshmukh, Dist-Amravati ||31

07) An Overview on Role of Entrepreneurs in Economic Development
Dr. Ambadas B. Pande, Akola (M.S.) ||34

08) Innovation In Commerce Education for The Success of Commerce Students
Archana V. Pawar, Khamgaon ||40

09) BLENDED MODE OF TEACHING IN COMMERCE
MS. SUNITA SAKET, KIRAN KAUR RANA, Bilaspur (CG) ||44

10) Corporate Social Responsibility benefit and challenges
Dr.Archana Godhaji Antre, Dist- A. Nagar ||49

11) COVID-19 CHALLENGES AND REFORMS IN INDIA
Mr.Gudadayya Kengapur, Dr.D N Patil, Belagavi ||52

12) A REVIEW STUDY ON DIFFERENT CRASH PREDICTION MODELS
Yogita Godara, Poonam, Yogesh Jangra, Anil Kumar, Ch. Dadri (Haryana) ||54

13) Data Provider and Information Extractor for Modern Businesses-BIG DATA
Sandeep Kumar, Mamta Sharma, Rajpura ||59

http://www.prmtingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Principal
Narayanrao R... Mahavidyalaya
Dist...

14) Role and Challenges of Commerce Education in Entrepreneurship ...
Deepali Shah, Dr. R.D.Sikchi, Akola ||66

15) Development of Micro and Small Scale Industries in India
Prof. Dr.Vidya. P. Channe, Pulgaon ||73

16) ROLE OF ENTERPRENUERSHIP IN INDIA
DHANANJAY CHANDRASHEKHAR UPADHYAY ||77

17) Parent's Attitude towards use of ICT in Teaching and Learning
Dr. Patil Amol Ashokkumar, Sangli ||81

18) Communicative Language Teaching: Approaches & Principles
Dr. D. R. Khanderao, Akola ||84

19) Changing Status of Music Education from Gurukul to Institute
Dr. Durgasingh R. Elalkar, Akola ||87

20) Innovative methods of Teaching and Learning in Zoology
Dr. Trishala D. Elalkar, Akola ||91

21) Innovative Teaching Methods In Mathematics
Dr. Priti U. Chapke, Akola. M/S ||95

22) Role of Various Factors to uplift North-Indian Classical Music
Dr. Ajaykumar G. Solanke, Akola ||99

23) ROLE OF E-LEARNING IN INDIA
Dr. Magar Jyoti Popat, Pune ||103

24) THE RISE OF MODERN TECHNOLOGY IN MUSIC EDUCATION
Dr. Niraj Lande, Akola ||107

25) Education for empowerment of Nation
Prof. Manisha B. Kamble, Akola ||111

26) IMPACT OF INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY ON ...
Mrs. H. S. Wadhone, Akola ||114

27) Depiction of Refined Sensibility of Post Modern Cultural Issues in The Last ...
Ravindra Mahadeo Sadanshiv, Amravati ||117

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Principal
Narayana...Mahavidyalaya
Badnera

28) Use of ICT in Economics Subject Teaching
Dr. P R Gawai, Akola ||121

29) Use of Information Communication Technology in Teaching
DR.Seema Raghu Avachar, Bhor ||123

30) ICT Use in Teaching Learning Process
Dr. Gokul Shamrao Damre, District Buldhana ||126

31) USE OF ICT IN TEACHING-LEARNING PROCESS
TATERAO BAPURAO NIKALJE, Dist-Buldana ||129

32) A study of employee motivation and job satisfaction for organizational ...
Prin. Dr. Muluk P.V, Prof. Sonam Rahul Patwa, Pune ||132

33) INDIAN MUSICAL EDUCATION SYSTEM DURING PANDEMIC SITUATION
VIVEK SANTOSHRAO CHAPKE, AKOLA ||137

34) PERSONAL AND SOCIAL DEVELOPMENT IN PHYSICAL EDUCATION: A STUDY
SHAFIQ UR RAHMAN, DR. AVINASH ASNARE ||140

35) A STUDY ON RECRUITMENT AND SELECTION PROCESS ORGANIZATION WITH ...
GAIKWAD JYOTI RAHUL, WAGHOLI ||143

36) SOCIO-CULTURAL MILIEU IN VIJAY TENDULKAR'S DRAMTIC WORKS: REFERENCE ...
Satish K. Khode, Dist. Amravati ||148

37) New Economic liberalization in India & Discussion on Economic and ...
Prof. Mahesh Pandurang Malwadkar, Dist. - Palghar ||152

38) Point Prevalence Survey on Urinary Tract Infections (UTIs) in Women: to ...
Miss. Neha S. Phafat, Akola, Maharashtra ||157

39) New Era In E-Commerce
Dr. Balkrushna S. Ingle, District - Buldana ||159

40) NEW ERA IN E COMMERCE
Dr. Jaya Chawla, Bilaspur ||165

41) The Messenger of Humanity, Tathagat Buddha
Dr. Rajesh Vishwanath Chaurpagar, Dist Buldana ||168

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Principal
Vidyalaya
Editor

36

SOCIO-CULTURAL MILIEU IN VIJAY TENDULKAR'S DRAMTIC WORKS: REFERENCE TO THE TOUR

Satish K. Khode
Assistant Professor, Dept. of English,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera,
Dist. Amravati

Abstract: This paper aims at presenting the world Vijay Tendulkar's plays revolving the social and political issues of the society of his time. His characters are picked up from extra-ordinary situations. He has chosen the criminals coming out of the jail, exploited women, precarious life of middle-class couples, broken promises and adamant decisions creating turmoil in the emotional world, frustrations of sincerely developed little dreams of little people, a spinster becoming a victim of uncontrollable physical drives and finally ending up in being accused of murder of her infant child, abnormal members of a family (sons, daughter, father) abusing each other in filthy language and murderously attacking each other for petty little greed , making life unbearable for two innocent persons of tender sensitivities destined to live amongst them.

Keywords: socio-culture milieu, over-affectionate, dacoit-alarm, mentally-retarded

Introduction

Vijay Tendulkar has become a mature, multi-faceted genius of the Indian drama. , Through all these years exceeding a quarter century. He has always been on the forefront and frequently achieved something new that gave some new direction to the Indian drama. His latest play The Tour which is just out in printed form, also fall in line with such remarkable creations of the genius.

Socio-cultural approach:

One thing that makes this play different from the earlier creations of Tendulkar, is the characters involved. In Tendulkar's previous plays, we find unique characters picked up from extra-ordinary situations. Criminals coming out of the jail, exploited women, precarious life of middle-class couples, broken promises and adamant decisions creating turmoil in the emotional world, frustrations of sincerely developed little dreams of little people, a spinster becoming a victim of uncontrollable physical drives and finally ending up in being accused of murder of her infant child, abnormal members of a family (sons, daughter, father) abusing each other in filthy language and murderously attacking each other for petty little greed , making life unbearable for two innocent persons of tender sensitivities destined to live amongst them; an abnormal womanizer having his arbitrary code of the man-woman relationship, hunting for forlorn women; a frivolous sexy woman swaying upon the tides of intoxication: an ex-marital beloved coming to stay with the legitimate family of her unethical lover; the so-called intelligentsia engaged in adultery, prostitution and corruption; a ruthless administrator bent upon disciplining his people with a vindictive attitude towards them; a lusty ruler and his calculatedly wicked conspiracies careless of the ruthless exploitation of a budding innocent young girl; a police constable of an erstwhile Royal state, who is unable to forget his glorious past and cope with the changed realities of the present; a corrupt chief minister who gets frightening hallucinations as the projections of his complaining conscience; a young extra actress of the film-world, who had fallen victim to the morbidity of a rogue; a young college-teacher who confronts the caste-ridden society in educational institutions of the moffusil area; an unfortunate woman sold away in the flesh-market and a so-called happy housewife married to a daring journalist, both having a revelation of finding themselves on the

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

common platform of sexual slavery in the male-dominated world; a lesbian entangled in the emotional turmoil and her inevitable frustration leading to her horrible and pathetic end; an over-idealistic democratic couple, their revolutionary daughter who marries a down-caste poet and gets disillusioned in the consequent turn of events due to the unexpectedly barbaric behavior of her life-partner; such has been the world of characters and situations in Tendulkar;s plays so far.

They are selectively unique and extra-ordinary though they represent the plight and condition of common people. Or, we may say, that they are the strange, rare and sometimes unbelievable and distorted projections of the realities of common people, their dreams, aspirations, sufferings, agonies and frustrations. They comment upon the real life, but their own lives lie in the extended regions of realities.

The Tour begins with a note of fantasy and remains on that level throughout. There is an exerciser (a bicycle without wheels, meant for exercise) on the stage. The main character appears fully prepared (though childishly) for a long tour. He declares his intention of a long tour on the bicycle. He has never been out of his house. His parents have taken care of not allowing him to do so, he being their only child. But all the while he has nurtured the dream of a long tour. Finally his parents have given their consent after his insistence and pleading for many years. Now the parents appear on the stage and make their final attempt to change his mind, but he is determined to make his dream true and so finally they bid good-bye to him, making all kinds of over-affectionate parental suggestions.

The main character sets off to his tour, partly tense and frightened, partly enjoying his freedom. He jingles the bell of the bicycle and a man comes out of his house angrily and scolds him for disturbing him by sounding his door bell. The dejected traveler recollects his enthusiasm and reaches a spot where there are three roads going in different directions. The main character finds himself confused as he is unable to decide which way to go. A guide appears, but he is of no help, at first he ridicules the main character, then tries to help with the toss of a coin and finally gets cross, misunderstanding the main character's mutterings about his own mother to be abusive language. The main character somehow manages to escape, but again comes to a halt when he finds the name-board of his town at the end of the road. He is confused how he reaches the same town again after coming out of it.

A wise man appears and explains to him the meaning of the board. The tour continues. The main character is excitedly remembering the entire history of his vehicle-right from its invention in the eighteenth century. Four rowdy people storm in and take the main character to task, accusing him of killing their hen under his bicycle. All his defenses are ignored and he is compelled to pay them fifty rupees. After the main character recovers from the shock, continues paddling further and then halts a while to appreciate the majestic beauty of the sunset (an incarnation of the usual routine descriptions in any travelogue), he is confronted by two rough men, who accuse him of trespassing into their private property and threaten to arrest him and keep him in a co-shed.

He has to pay some money to them too. Slowly it is getting dark. The main character remembers that it is an ideal situation for the arrival of dacoits, but boasts that he has not to worry, as he is carrying a novel dacoit-alarm. The so-called dacoit-alarm starts ringing and a dacoit actually appears. He withdraws only after taking away the travelers camera. Now it is fairly dark. While the main character is enjoying his confident mood after the dacoit's exist, a lion appears. When the main character ascertains that it is actually a lion, he tries to play a trick on him by engaging him in silly conversa-

tion. The lion gets simply bored of him and leaves silently. The main character feels victorious, remembers that he is to write his diary and starts writing it in the torch-light. A veiled figure is seated beside him and wiring a ghost-diary without torch-light.

After an exchange of words and demonstration of the veiled figure's ghostly powers, the main character faints. The ghost takes away the veil and discloses that he is not actually a ghost, but a stage actor, who has replaced himself with the real ghost and the real ghost, after a successful stage career, has become a member of the Parliament now. The main character now gets up and discloses that he had not really fainted, but was pretending to have fainted and shakes hand with the so-called ghost. But he experiences, and the ghost confirms that the ghost is a real one. The main character desperately cries for Nana, his father, who appears in his internal mind. Nana, after much thinking, advises the main character to do nothing, which, according to him, is the best policy in the present situation. The main character stalls for time and the ghost retreats when it hears the call of a cock. The gigantic cock actually appears on the stage and settles itself upon the bicycle. It refuses to oblige even after much persuasion by the main character. The main character revolves round the bicycle making noise like a hen, and then the cock excitedly chases him. In the melee that follows, the main character finally succeeds in escaping from the cock. Panting and puffing, he resumes his journey.

After a while he discovers that his money purse is gone and wonders whether it is the deed of the ghost or the cock; but determinedly continues further. Suddenly it begins to rain heavily with the thundering of clouds and lightning. When it becomes impossible to proceed, the main character halts, takes off his drenched clothes, squeezes them and hangs them to dry, when the rain stops. While he is enjoying his free nakedness, his clothes disappear one by one. Unaware of the fact, he is busy in locating his place in a big map. A feminine voice calls him and announces her arrival. The main character raps the map around his waist and desperately cries for Nana. Nana appears in his inner mind and advices him to close his eyes. The main character thinks that he cannot see his hanging clothes because his eyes are closed, though they are actually open. A big fish, owner of a feminine voice, enters and introduces herself to be a real princess, who has turned into a fish by the curse of a Yaksha. She admits that she has fallen in love with the main character and appeals to him to fight with the Yaksha. She discloses that she had swallowed his clothes and fancies that now she will give birth to his child that will be wearing his clothes. The main character desperately cries in protest.

Again the same neighbor angrily comes out and scolds him for disturbing his sleep. He points out that the bicycle has no wheels. The main character cannot take this shock, splutters childishly in protest and finally goes to sleep like a small child in a pathetic pose. The play ends here.

Tendulkar has always been focusing his attention on the problems and conditions of the middle-class. Here, in these two plays also, he highlights the typical world of experiences of the middle class. His plays presents a spectrum of conflicts and paradoxical confrontation of tendencies, attitudes, ambitions and ways of a seasoned politician versus those of a middle-class person, presenting a concealed commentary on the values and the lack of values in both the spheres. And even while doing this, the stress is on the middle-class mentality and value-system more solidly than the other sphere. For example, both the middle-class person and the politician are much more disturbingly concerned about their respective wives getting adjusted to the changed situation rather than anything else.

Principal

The major part of this mentality and value-system lies in the glorification of faithfulness, which is the backbone of the power of existence for the middle-class. Without this, it will easily break down and collapse under the pressure of jealously towards the upper class from one hand and instigation of satisfying earthly desires at any cost, from the lower class, on the other hand. Another, rather satirical in appearance, but literally true to the core of it, reference is B's remark, when he says, "I never imagined that I could be such a treacherous person. I grew under good impressions. My father lived as a faithful person and died as one. Faithfulness towards home, faithfulness towards family, faithfulness towards town, faithfulness towards caste, faithfulness towards the deity of the family, faithfulness towards religion. He used to smoke bidis and was faithful towards the horse-brand bidi."

The play The Tour in English translation of the Safar is actually an obliquely scathing commentary upon the middle-class view of life woven through a series of refreshing fantasies. Apparently, it is an imaginary journey of a slightly mentally-retarded man, but every detail for it points its finger towards one or the other middle-class feature either satirically and jokingly, or seriously and harshly. The very first sentence of the main character is his question addressed to the viewers, "What is the year, today? Year?" poignantly reveals the fact that days, weeks and months just roll on routinely and meaninglessly for this class. His confessions like "Never been out! Nana and Aai never allowed to go!," his confused and indecisive-state when he reaches a spot from where three paths emerge out, his confirmation after his money is robbed by roughs that "What Nana says is true, that nowadays ethical values are decaying in the lower classes of the society? All point towards the narrow, limited, frightful and still boastfully so-called value-oriented, elders-dominated, routine world of the middle-class. Even the fantasies and the main character's responses and reactions towards these fantastic endeavours are deeply tainted with middle-class mentality.

Conclusion:

Though the play, Safar presented in the form of pure fun, succeeds in symbolizing the immobile fate of impotent aspirations and unrealistic desires of the common man. Its content is multifaceted. Firstly, it criticizes the queer ways of the so-called middle class, its over-cautious, over-calculating, dull charmless approach towards life. Secondly, it probes into the moulding of children grown under the pressurizing influence of their parents-the indecisive, under-developed, frightened attitude of their personalities. Thirdly, it portrays the cruel, opportunistic, ruthless ways of the materialistic world that never hesitates to exploit the simple, sensitive and weak class. Apart from these, there are oblique (but sufficiently poignant) remakrs deOmasking the so-called prestigious concepts like psychological analysis, artists and actors turning into political leaders, and so on. above all, the futility of dreams-dreams that are affectionately nurtured by man, especially a middle-class sensitive human being is candidly and effectively highlighted through all these fantasies.

Reference:

Tendulkar Vijay. The Safar. Popular Publication, Mumbai, Jane 1991.

Vijay Tendulkar, "Collected Plays in Translation. New Delhi, Oxford University Press, 2004.

Vijay Tendulkar. A Testament' in "Indian Literature no.147, Jan-Feb 1992, (Sahitya Akademi, New Delhi, 1992).

❑❑❑

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

October -2020

SPECIAL ISSUE-CCL(250)



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr. Santosh Bansod
Head Dept.of History,
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem. — **Dr. Santosh Bansod**	1
2	Dr Babasaheb Ambedkar and Socialism — **Dr. Vasant R. Dongare**	4
3	स्त्रियांचे मुक्तीदाते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा.डॉ. कल्पना ज्यं. मेहरे	8
4	An Advocate of Human Society: Dr B. R. Ambedkar — **Satish K. Khode,**	11
5	Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar — Dr.Harshal R.Nimbhorkar	15
6	दलित पँथर आणि आंबेडकरवाद — प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे	19
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे उच्चशिक्षणा विषयक विचार — प्रा. डॉ. सिध्दार्थ शिवाजी वाठोरे	24
8	महिला व मजदुरो के विकास मे डॉ. आंबेडकर की भूमिका — **प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील.**	27
9	भारतीय कृषी विकास के संदर्भ मे डॉ. बी. आर. अंम्बेडकर के विचारोका ऐतिहासिक विश्लेषण — **डॉ. प्रसन्न प्रकाश बगडे**	30
10	वर्तमान परिप्रेक्षातून डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांची विदर्भातील भाषणे (पातुर्डा ते अमरावती) — डॉ श्याम प्रकाश देवकर	34
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सामाजिक चळवळीचा समाजमनावरील प्रभाव :– एक चिकित्सा. — डॉ किशोर मारोती वानखडे.	42
12	समाज क्रांतिकारकबाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय संविधान — जगन्नाथ सावंत	46
13	आंबेडकरी चळवळीतील रावबहादूर सीतारामपंत बोले यांचे योगदान — प्रा. प्रविन एम. राजुरवाडे	52
14	भारतीय स्त्री, पूर्वइतिहास, आजची स्थिती आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर — प्रा.शितल बुधा सोनवणे	56
15	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व योगदान — प्रा. विनय वामनराव तायडे	63
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार — प्रा. डॉ. नितिन उल्हासराव सराफ / गोपाल मधुकर राठोड	67
17	संविधानिक दृष्टिकोनातून महिला सक्षमीकरणामध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका — प्रा. संतोष बन्सीलाल राठोड	72

Principal Narayanrao Vidyalaya Basmata

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 250 (CCL)
ISSN : 2278-9308
October, 2020

An Advocate of Human Society: Dr B. R. Ambedkar

Satish K. Khode,
Head, Dept. of English, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Bandera Amravati. (MS)

Abstract:

Dr B R Ambedkar is known as one of the greatest visionaries. His lifelong efforts to eradicate caste discrimination is one of his greatest achievement. He is truly called an India crusader for social justice and the greatest defender and philosopher of humanism and human rights. He devoted his life for the cause of welfare and betterment of the common and the poor people. The present paper is a critical perspective of the life and works of Dr B. R. Ambedkar with the implications of his desire and efforts towards creating society governed by fellow spirit of human for humanity. From the vastness of his work and experience only excerpts are given with selective purpose to drive a point. Overall the essence is that Dr Babasaheb Ambedkar cannot be fit in a frame of caste, class and religious myth.

Introduction

Two brothers who were studying at school went to see their father. They alighted at the Masur Railway Station, engaged a cart and continued their journey. They went some distance; then the cart driver came to know that they belonged to the Mahar cast. He at once stopped the cart and raised one end of it; the poor boys tumbled down and fell on the ground. He shouted at them and scolded them as he pleased. It was afternoon and the boys were thirsty. They begged for water but no one would give them a drop. Hours passed. Still no one gave them water. They were not allowed even to go near tanks and wells. The younger brother's name was BhimraoAmbedkar. A few days passed and one day Ambedker felt unbearable thirst and drank water from a well. Someone noticed it and a few people gathered and beat the boy mercilessly. On another day the boy had to get his hair cut. Even a barber who used to cut the hair of a buffalo would not touch the boy's hair. On yet another day, the boy was going to school and it was raining heavily. He took shelter near the wall of a house and the lady of the house saw this. She was very angry and pushed him into the rain. The boy fell into the muddy water. These experiences of inhuman treatment made him rebel. Dr Ambedkar never compromised with honour, dignity and self in future journey of his life.

Dr B RAmbedkar: A Life Sketch

Born on 14th April 1891 in Mahoo, Madhya Pradesh, BhimraoRamjiAmbedkar was the fourteenth child of his parents, BhimabaiSapkal and Ramji. He was the victim of religious untouchability by birth. He was born in a family, which was a part of the Hindu Mahar caste. This caste was considered to be untouchable in the society and had to face immense discriminations, both in the social as well as in the economic fields. His father was in the army and was promoted to the rank of Subedar in the Mahoo Cantonment, Indian Army.

Education of Dr B R Ambedkar

Though he was born in a family that was deprived socially as well as economically, he had great interest in education. There were special schools run by the Government for educating children of Army personnel and Ambedkar was lucky to get admission in one of those schools. The standard of education was good and Ambedkar developed a good grasp

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalay
Bandera

over Marathi and English. After his father retired from the Army, the entire family shifted to Satara, Maharashtra. Ambedkar was admitted to a local school there and had to face discriminations. He was made to sit on the floor, away from other students. The teachers also discriminated him. He was a man of patience from his early childhood and underwent all this agony without a fuss. In 1908, he passed his matriculation examination with flying colours from Bombay University. His higher education continued in Elphinstone College. Political Science and Economics were the subjects in which he graduated from the Bombay University in 1912. After graduating he joined Columbia University where he was awarded Ph.D. for a thesis which he published in book as *The Evolution of Provincial Finance in British India.*

Later he joined the London School of Economics and obtained a degree of D. Sc. for his thesis, *The Problem of the Rupee.* He became a Professor of Political Economy in the Sydenham College of Commerce and Economics, Bombay in 1918. He later resigned Professorship at Sydenham College to resume his studies in London, completed his law education and became a barrister. He returned to India in April 1923 and started to practice in the Bombay High Court. The Government Law College of Mumbai had Dr. Ambedkar as its Principal for two years from 1935. He also occupied important positions in the government of the country. He had been appointed to the Viceroy's Executive Council as the Minister of Labour. Ambedkar had also served in the Defence Advisory Committee.

His educational experiences made him aware of the social realities and injustice in the society which led him to work for establishment of equality in and fraternity based on humanism. In future course of action, in all the political and social affairs of India he kept social reform at front of his agenda. He desired the society in which all men and women are equal.

Social Reforms and Political Life of Dr B.R. Ambedkar

After his return to India, Bhimrao Ambedkar was made the political secretary of the Maharaja of Baroda. He became victim of caste discrimination again and was humiliated greatly by his peers. It was during this time that Ambedkar began his movement to eradicate caste system and untouchability from society. He attended the three Round Table Conferences which were held in London to enable representatives of the various Indian communities and the three British Political parties to consider proposals for the future constitution of India. He founded the BahishkritHitkariniSabha on July 20, 1924 for the upliftment of the depressed classes. He opened a hostel for untouchable students at Barshi. He was nominated as a member of the Bombay Legislative Council in 1926. He started Satyagraha at Mahad, a place in Kolaba district to secure to the untouchables the right to access to the Chavdarlake. He also started Satyagraha at Kalaram Temple, Nasik to secure the right to entry into the temple by the untouchables.

In September 1932, he signed the Poona Pact with M.K. Gandhi giving up the separate electorates granted to the depressed classes by Ramsay MacDonald's communal Award. By signing this Pact, Ambedkar marked his emergence as the most influential leader of the untouchables. From 1932-34, he became a member of joint parliamentary committee on the Indian Constitutional Reform. A historical Yeola Conversion Conference was held under the presidentship of Dr. Ambedkar on Oct. 13, 1935.

He founded the independent labour party and took part in provincial elections in 1935. He was appointed to the defence advisory committee and in the following year joined the

Principal
Narayanrao Ramchandra Vidyalaya
Dadnera

viceroy's executive council as a labour member. During the same period he transformed the independent labour party into the all India scheduled caste federation and here, when in 1938 the Congress party introduced bill making a change in the name of untouchables that is, they would be called Harijans meaning sons of God, Dr Babasaheb Ambedkar criticized the bill as in his opinion the change of name would make no real change in their conditions. Dr Ambedkar and Gaurav Gaikwad protested against the use of the term Harijans in legal matters. Later on Ambedkar was elected to the constitution assembly by Bombay legislature Congress party and joined Nehru's cabinet.

He criticized the Indian national Congress as well as the British Raj for not being able to curb the problems of caste discrimination and untouchability in Indian society. He stood against the orthodox authorities in the social field of India and made him the targets of their criticism with his political and social views. He found that there were no considerable changes evident in the Indian society even during the British rule and in this backdrop when Gandhiji who had started a fast unto the death when Ambedkar demanded separate electorates for the backward classes in society, he was really upset. He criticized Gandhiji's role who was boasting of humanity and was opposite the society based on human spirit working on principle in reality and equality. After many efforts when there would be no separate electorates upon this, he returned to his study in Europe.

Babasaheb Ambedkar established a successful legal practice and also organised a voice to HitkariniSabha. The motto of this Sabha was to educate, agitate and organize and provide some opportunities to the deprived and backward classes to upgrade themselves. He worked for the education to these classes and tried to improve their socio economic conditions. He became a nominated member of Bombay legislative council and finally decided to launch an active movement against all the ill practices in society including the untouchability.

Untouchability and caste system where the two social evils that had troubled Dr Babasaheb Ambedkar since the days of his childhood, he thought of tackling this problem himself and began his fight against untouchability. He fought in many ways there were several ways by which he was trying to remove untouchability from the society. As a leading dalit scholar Ambedkar had been invited to testify before the Southborough committee which was preparing the government of India act of 1919. At this sharing, he began the publication of the weekly Muknayak in Bombay to champion the cause.

Conclusion

Dr B.R. Ambedkar was the true messenger of humanity. He worked for the establishment of equality, liberty and fraternity in a concretized form in the society. He thought that all human are equal and resources given by the sun by the nature should be shared by each of the human equally without any discrimination. He opposed the rule of anarchy which gave upper hand to a few group of people calling it right to rule. He opposed hero worship throughout his life which is the major drawback of Indian society.

References:

Bakshi S. R.,(2000) B. R Ambedkar his Political and Social Ideology, Vol 2, New Delhi, Deep and Deep.

Omvedt, Gail. (2004), Ambedkar: Towards an Enlightened India, New Delhi, Penguin.

Bharti, C.B. *The Aesthetics of Dalit literature*, Trans. DarshanaTrivedi. Hyati, June1999)

Bagul, Baburao. *DalitSahitya: AajcheKrantiVigyan.* (Nagpur: Buddhist Publishing House. 1980)

Chandra, Subhash. *DalitAtamakathanAnubhavacheChintan.* ItihasbodhPrakashan: Allahabad, 2006.

Dangle, Arjun. ed. *Poisoned Bread,* Orient Blackswan Private Ltd, Mumbai, 2016

Dangle, Arjun ed. *A Corpse in The Well Translations from Modern Marathi Dalit Autobiographies,* Disha Books, Orient Longman Limited, Ballard Estate, Bombay, 1994.

Dhasal, Namdeo, *A Current of Blood,* trans. by DlipChitre, NavayanaPu blishing Pvt. Ltd. ShahapurJat, New Delhi, 2016.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Badnera



Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

SJIFactor Project

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Badnera

Aadhar Publications
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Mob- 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com
For Details www.aadharsocial.com
Price:Rs.500/

ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

July 2018 Volume VII, Issue II

DOI Prefix 10.22183

Journal DOI 10.22183/RN

Impact Factor 3.018

Indexed In 52 Databases

Chief Editor

DR. GANESH PUNDLIKRAO KHANDARE

Yashwantrao Chavan Arts & Science Mahavidyalaya,
Mangrulpir, Washim, Maharashtra
gpkenglish@gmail.com
www.ycjournal.net

Impact Factor: 3.049 | An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences | ISSN 2277-7071

S.NO.	AUTHOR(S)	TITLE	PAGE
1.	DR. SONALI RODE Assistant Professor, Department of English Government Rajaram College, Kolhapur, Maharashtra	Mapping Identity in Lewis Carroll's Alice's "Adventures in Wonderland"	9 - 11
2.	PROF. MEGHRAJ G. GADGE Assistant Professor, Department of English Shri Ganesh Arts College MIDC Area, Shivani-Kumbhari Tq. Dist. Akola, Maharashtra	Arundhati Roy's "The God of Small Things: A Picture of Contemporary Indian Psyche"	12-14
3.	DR. SHIVAJI VITHALRAO WAYBHASE Late.Dr. Shankarrao Satav Arts, Commerce College, Kalamnuri Dist. Hingoli, Maharashtra	Social, Economic and Educational Studies of Masod Village	15-22
4.	PROF. SUNIL HARIBHAU PANDE, Department of Commerce, Shri Shivaji Arts. Commerce and Science College, Akot Dist Amravati Maharashtra	Comparison of Akola Central Co-operative Bank with other District Central Co-operative Banks in Maharashtra regarding Reserve Fund	23-25
5.	DR. PRAVEEN N. CHOUGALE (Guide) Principal, D. R. Mane Mahavidyalaya, Kagal. PRAMOD P. KAMBLE (Research Student), Assistant Professor, Department of Commerce, Sahakarbhushan S. K. Patil College, Kurundwad.	Digitization of Payment System: A Key for Inclusive Growth	26-31
6.	DR. DEVIDAS SHRIRAM BHAGAT Head, Department of Sociology, Yashwantrao Chavan Arts and Science College, Mangrulpir Dist. Washim Maharashtra	Madiya Gond, a tribe from Vidarbha	32-33
7.	DR. SATYENDRA B. GADPAYALE Associate Professor, Department of English, Smt Radhabai Sarda Arts, Commerce & Science College, Anjangaon Surji, Dist Amravati	The Fusion of Opposites in Frost's Poetry	34-36
8.	DR. DINESH SUDHAKARRAO TATTE Assistant Professor, Department of English, Arts and Science College, Kamargaon Dist. Washim, Maharashtra	A Critical Analysis of The Liberal Humanism Expressed in The Critical and Creative Literature of Matthew Arnold	37-42
9.	GAJANAN DAYARAMJI TAYADE Assistant Professor, Department of English Shri Shivaji Arts, Commerce & Science College Akot, Dist. Akola, Maharashtra	Mahasweta Devi's Rudali: A Journey from The Anguish To The Victory	43-45
10.	PRAVIN P. UGALE Assistant Professor, Department of English Arts College Malkapur Akola (MH)	Supernatural Elements in S. T. Coleridge's "Rime of Ancient Mariner, Kubla Khan and	46-47

Narayanrao ... Vidyalaya
Bachora

11.	MR. SWAPNIL RAJESHRAO SONARE Assistant Professor Shri Nathmal Goenka Law College, Akola, Maharashtra.	Human Rights of The Elderly Persons in India	48-52
12.	SATISH K. KHODE Assistant Professor, Dept. of English, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati	Quest For Female Autonomy in *Difficult Daughters* and *The Immigrant* by Manju Kapur	58-62

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071
Impact Factor 3.018

Research Paper in English






SATISH K. KHODE

Assistant Professor, Dept. of English, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati
satishkkhode@gmail.com

QUEST FOR FEMALE AUTONOMY IN *DIFFICULT DAUGHTERS* AND *THE IMMIGRANT* BY MANJU KAPUR

ABSTRACT

The Indian fiction shown the women characters who were submissive as wives or daughters or selfless mothers. This shows that the difficulty of Indian women to be rebellion against the paradox of their lives. As the tradition of writing had been male dominated in nature, the woman had to coddle in creative writing that was considered as a divergence from the conventional roles assigned to her. Thus the literary creations by Indian women writers were reduced as something exciting or imitative. Therefore, they had to be conventional to themes like love, faith, motherhood as a loyal disciple. This seeks opposite to this as demonstrationist insight into women's writing.

KEYWORDS: feminist, patriarchal, protaginist

Introduction

One of the major contributions of feminist scholars has been to ask questions about the lack of female authors in the canon of literature. As the feminism movement gained prominence in the West, women began to rebel against the oppressive gender roles in which they had an entity but no being. In comparison, Sita and Savitri's likeness has been a common one in Indian literature for a long time.

Indian writing tended to elevate characters who were either devoted moms or obedient children, making it challenging for Indian women to rebel against the contradictions in their lives. Given the patriarchal nature of the writing practise, it was considered unconventional for a woman to write creatively given the roles that were traditionally assigned to her. The literary works of Indian women writers were derided as sensational or plagiarised. They were required to stick to conventional subjects like motherhood, religion, and love.

The writings of Manju Kapur convey more than just the restrictions imposed on women. She covers a wide range of subjects, such as identity conflict, locating personal fulfilment, and interpersonal and intrapersonal interactions. The five well-received novels by Indian author Manju Kapur are Difficult Children, A Married Woman, Home, The Immigrant, and Custody. She battles the conflict between conventional and modern ideals. The writings of Kapur help to shape a discourse that aims to both question the patriarchal expectations that shape a woman's life and provide a deep understanding of the man-woman relationship. She offers a thorough examination of the man-woman bond as it is impacted by, among other things, forced arranged marriages, extramarital affairs, homosexual relationships, infidelity, sexual dysfunction, adoption, and divorce.

Kapur's female protagonists, or "female heroes," grow into autonomous, self-sufficient people as a result of these nuanced interactions. So, one of the major themes in Manju Kapur's novels is how men and women are related to one another in patriarchal societies. In an interview, Kapur claimed to be well-versed in feminist theory. I regard myself to be a woman, and it has had a significant impact on me. I believe that in order to survive in the world of today as a thinking individual, one must be one, for both men and women. Even though I don't set out

Narayanrao Rana Mahavidyalaya

with a feminist goal in mind, it's often impossible to avoid it when talking about men and women's relationships. This holds true for publications that were made long before the word "feminist" was even created.

In literature, women are frequently depicted as being mostly focused on preserving domestic harmony. The writings only briefly addressed women's psychology and only in relation to men. However, with the growing consciousness of gender discrimination, reproductive rights, and the empowerment of women, the man-woman relationship experienced a complete metamorphosis. Although they do not fit the conventional definition of a hero, the masculine characters in Kapur's novels have an effect on women's psychology. The female protagonists, however, are heroines because they either directly or indirectly escape the constraints imposed on them by the patriarchal agents. Her female characters are driven to seek individuality and liberation because they are acutely aware of their place in the family and society.

In Search of Female Self

The political turmoil of division serves as the backdrop for the book Difficult Daughters. Ida, a childless divorcee, declares bluntly at the start of the book, "The one thing I desired was not to be like my mother." The protagonist of the book is Virmati, a young woman born into an orthodox household. Despite being the oldest girl in the family, she is still responsible for the family. The patriarchy's owners crush her desire to study, and they quickly start looking for an appropriate match for her. Due to her secret affair with married professor Harish, Virmati fiercely opposes the notion of a forced marriage. Even though Harish admits his love for Virmati, he declines to wed her out of concern for the social backlash that would follow. Although he has no sentimental connection to his illiterate wife Ganga, he lacks the guts to leave her. Virmati attempts suicide due to her rising anxiety over her connection with the professor, but she is saved in time.

She confesses in her family that she wants to continue her schooling when they ask why she did what she did. Virmati, the challenging daughter, is finally sent to Lahore for additional education. She tries to distance herself from the professor, but his persistent efforts at reconciling result in Virmati becoming pregnant because of their sexual intimacy. The baby is aborted because Virmati is left on her own to care for herself.

She wants to accomplish something important in life, but she is helplessly torn between her practicality and her emotional reliance on Harish. This incident only makes her anguish worse. She is unable to cut her ties with the professor, despite her sincere desire to actively take part in the liberation fight like other women. She felt like an outsider among all these ladies, according to Kapur. Harish, who cherished her, came to mind. I assume that pleases her. She couldn't fit in these bigger areas. She sensed a bogus person seated in the hallway. Again, uninvited glimpses into her private life were presented to her. (DD 144) She becomes the headmistress of a college in Nahan after receiving her B.T., which heralds the start of her character's independence. She is later expelled from the school after Lalaji learns of her illicit relationship with the professor, but she remains hopeful and chooses to travel to Shantiniketan. After following her there, Harish decides to propose to her. Virmati marries the professor despite being shunned by her family and understanding that she would have to vie for her husband's affection. She understandably has to put up with the professor's first wife's scathing remarks and is also barred from helping out around the home. Due to social rejection, a miscarriage, and lack of affection in Harish's home, her romantic life appears to be stagnating.

The opportunity to return to Lahore to study is the only solace she receives, but due to the political turmoil of the partition, she is compelled to do so. In the stuffy confines of her husband's home, Virmati is forced to adapt and modify. She bears him a girl and passes away in a relatively unremarkable manner. The partition that serves as the backdrop for the book can also be metaphorically seen in Virmati's existence. She fights for independence from her family, society, and even herself, and she attempts to fight her attraction to a married man, but she fails miserably, dividing those around her. She receives criticism for her connection with Harish throughout her life because it is unsuitable in a culture where patriarchy is so ingrained.

The society only supports relationships that fall within the bounds it has established. Even today, societal factors like caste, financial situation, family reputation, etc. are taken into consideration when arranging marriages in India. Thus, the aesthetics of a woman's reliance on a man have an impact on the novel's strong radical potential.

In an interview, Kapur stated: "All the novels examine the challenges of balancing the aspirations and desires for a life outside the home with the expected family devotion of middle class Indian women." "I am concerned in the lives of women, whether they are in the political sphere or the home," she declared. All of my books are primarily concerned with how women navigate the inner and outer spaces of their lives, the sacrifices they make to keep the house running, and the price they pay in terms of their personal lives in order to find fulfilment outside the home.

The Immigrant, a novel by Kapur, dives so deeply into the man-woman relationship that it almost reads like a psychological document outlining the complexities of interpersonal relationships. The central character of the novel, Nina, works as a lecturer at Miranda House and is self-sufficient and monetarily self reliant. She resides with her bereaved mother, who is very upset that Nina is still single at the age of thirty-one. Rahul, a scholar who is fifteen years Nina's senior, marks the start of her first serious relationship. Nina, like Virmati, commits herself to him in the hopes that their relationship will blossom into something more lasting. Ironically, the professor walks away from her guiltlessly, saying, "But Rahul had always made it obvious that he wanted to have his cake and eat it, too. Like all desserts, this one was chewed, mangled into pulp, and gulped down (TI 6), and she is compelled to make concessions due to her situation. However, Nina's mother is comforted by a marriage proposal from Ananda Sharma, a dentist in Halifax, Canada. The early correspondence between Nina and Ananda is conducted via letter-writing. Nina is unsure of why an Indian man who has lived in Canada for seven years would want to marry an Indian woman, but after much thought, she chooses to get married to him. Nina decides to "join legions of women who crossed the seas to marry men living in unseen countries" because she is drawn to "a future, laced with options, trimmed with beautiful snowflakes that glittered through the distance" (TI 78).

The novel's original location of India is replaced by that of Canada after their marriage. Nina and Ananda's connection is handled by Kapur on both a physical (sexual) and psychological level (Emotional). Kapur provides voice to a subject that is typically taboo in fiction written by women writers: the libido of the married pair. The first time Nina and Ananda came into physical contact, it was without inhibition or self-consciousness, as it is stated, "She pushed herself closer. The awkwardness of speech was gone. He turned her face in his direction and kissed her lips with his free hand. When she opened her mouth, he slid his tongue inside to eagerly meet hers. (TI 76)

Principal
Narayanrao Ra... Mahavidyalaya
Jalna

However, Nina is largely let down by Ananda's selfishness in only caring about himself after engaging in sexual intercourse. Nina unintentionally compares Ananda to Rahul because he easily ignores his wife's gratification needs. As evidenced by the passage "she lay in bed she attempted to transform reality into a scenario that would not confuse or distress her," Nina's sexual dysfunction is not particularly upsetting to her. The crucial element was unity. It was against the spirit of marriage to criticise the process that was used to accomplish it. The things that enrage Nina the most are his disregard for her emotional needs in a foreign country, his rambling monologue on the value of money, the shortcomings of India as a nation, and his boasting about his success (TI 91).

The immigrant who comes as a wife has a more difficult time, Nina protests, "The immigrant who comes as a wife has more difficult time... She is currently just a wife, and a wife spends a lot of time alone. (TI 124) Nina reiterates the plight of countless spouses who are domestic helpers and long for their husband's time and attention in this passage. Ananda turns sex with Nina into a mechanical and pointless exercise so that he can prove to himself that he is a virile man, which makes Nina feel even more abandoned. Ananda, on the other hand, looks for pleasure with numerous women in an effort to appease his masculine ego and alleviate the pain of his physical shortcomings. What kind of man would he be with his restricted masculinity, he wonders. (TI 151) Nina longs for motherhood so badly, but Ananda is unable to give her that wish.

As a result, Nina and Ananda's union is in danger of disintegrating. Nina's fervent desire to become a mother gradually gives way to her desire to be independent, and she enrols in a library degree programme where she encounters Anton. Nina overcomes all restrictions that are a part of an Indian woman's ornamine process when she is with Anton. She consumes alcohol, smokes, eats meat, engages in sexual activity, and ultimately feels unbound by social norms. Both Ananda and Nina continue to engage in extramarital relationships because they think that these relationships are simply "a good give and take, a meeting of the bodies" rather than an act of infidelity. (TI 269) Nina is startled out of her complicity, though, and is devastated to learn that despite giving herself over to Anton fully, he still has his wife as his wife. Over time, she comes to understand that it is inappropriate for a woman to look for happiness in her husband's companionship or in the embrace of a lover. As a floating resident of the western world, Nina departs Halifax and moves "towards fresh regions and a different set of circumstances." Anywhere can be a person's home when they are remaking themselves. (TI 330)

The narrative follows Nina's relationship through her premarital, marital, and extramarital phases, but like Virmati, Astha, and Nisha, she only finds comfort when she decides to break the cultural taboos associated with virginity, daughterhood, wifehood, motherhood, etc. in order to move beyond the everyday existence focused on marriage and family life. As noted by Betty Friedan in The Feminine Mystique: (Friedan.1963:31)

The tangible details that trap the suburban homemaker with constant demands on her time are clear to see. However, she is held captive in her own mind and soul by chains that she has placed there. They are chains made up of false assumptions and misinterpreted information, as well as incomplete realities and irrational decisions. They are difficult to see and to cast off. Within the confines of her own existence, how can any woman see the whole truth? How can she trust that voice inside of her when it contradicts the widely held, conventional beliefs she has been relying on for so long?

Principal
Narayanrao R... Mahavidyalaya
Badnera

Manju Kapur is an expert at handling household problems. The female protagonists of her books take risks with their marriages, families, and homes in an effort to achieve autonomy that is stifled by the weight of societal phallocentrism and an abundance of household responsibilities. However, Kapur's emphasis on the vivid nuances of man-woman interactions is a trait that consistently permeates all of her books.

Each of her female characters must deal with different moral quandaries in regards to their relationships with their male equivalents, and each must find their own way to navigate this change. While some of them choose to end their relationships with their spouses or lovers, others fall into the societal trap of social acceptance and honour. She responds, "My own feeling is, describe me in any manner you like, as long as I am relevant, as long as I am read, I don't really care... " Kapur is sometimes referred to as the "chronicler of Indian families." Families are a brilliant mirror of society, reflecting societal mores, cultural trends, gender relations, and class dynamics.

Conclusion

Manju Kapur does not present an alternative theory on the subject of deteriorating family relationships. Although Kapur vividly depicts the disagreement between the husband and wife, she is unable to provide a resolution. Few female characters conform to family customs, and even fewer female protagonists rebel against them. It's easy to take revolution for granted, but few female heroes never consider divorcing their spouses. Instead, they continue down the same road of adultery. It is incorrect to take the husband's route in an effort to relieve oneself of this sort of burden. The protagonists are free to attempt to alter their spouses' personalities. However, Kapur is more concerned with portraying the female figures as contemporary feminists. She highlights the conventional elements through other personalities. It is no mystery that tradition and modernity are at odds with one another. Those conventional figures are perpetually held captive by their husbands.

Reference

1. Kapur, Manju. *Difficult Daughters*. Faber and Faber. New Delhi, 1998.
2. Kapur, Manju,*The Immigrant*. Random House India. New Delhi, 2002.
3. Chandana, Yashika. 'Quest For Identity' By "Her" In The Novels of Manju Kapur- Difficult Daughters,and A Married Woman.' IJELR. Vol.1.Issue.4, 2014
4. Kumar, Gajendra. Indian English Literature: A New Perspective. Sarup and Sons. New Delhi,2001. Print.
5. Sethi, Honey. "The Womenly Observation by Manju Kapur." IJIET. Oct, 2012.
6. Warake, N.S. "Quest For Identity And Survival: A Study of Manju Kapur's Home." JLCMS. Vol.II. Dec, 2010.
7. Interview by Saudamini Jain published at website www.hindustantimes.com/brunchstories/greatest-indian-novels-interview-with-manju-kapur/articl e- 1-1232003.aspx
8. Interview by Lindsay Preira published at website Rediff.comhttp://in.rediff.com/news/2006/jun/07/spec1.htm

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Baramati

ISSN 2277-8071

J-Gate
INDEXED

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

April 2018 Volume VII, Issue I

DOI Prefix 10.22183

Journal DOI 10.22183/RN

Impact Factor 3.018

Indexed In 52 Databases

Chief Editor

DR. GANESH PUNDLIKRAO KHANDARE

Yashwantrao Chavan Arts & Science Mahavidyalaya,
Mangrulpir, Washim, Maharashtra
gpkenglish@gmail.com
www.ycjournal.net

Principal
Narayanrao Rathi Mahavidyalaya
Badnera

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071
Impact Factor 3.018

S.No.	Author(s)	Title	Page
1.	T. PUSHPANATHAN Assistant Professor, Department of English, SCSVMV University, Kanchipuram, Tamil Nadu	IMPACT OF INTERNET RESOURCES IN DEVELOPING READING SKILL: A QUANTITATIVE STUDY	9-12
2.	DR. C. SANTHOSH KUMAR Associate Professor, Department of English, Annamalai University, Chidambaram, Tamil Nadu	STORIES FACILITATING LANGUAGE LEARNING	13-17
3.	DR. ROWEENA BELINDA D'COUTO Assistant Professor, Department of English, Dr.N.G.P Institute of Technology, Coimbatore.	EFFECTIVE TEACHING METHODOLOGY OF USING APPS AS A TEACHING AID IN THE CLASSROOM	18-20
4.	DR. C. ARUN Assistant Professor, Department of English, Thiruvalluvar University College of Arts & Science (Govt.), Thiruvennainallur, Thirukoilur.	DEVELOPING READING SKILL AMONG UG STUDENTS	21-24
5.	प्रा. सुनिल हरीचंद्र पांडे श्री शिवाजी ज ला. यावि. एम. आर्ट्स ॲन्ड विज्ञान महाविद्यालय, अन्य टेट	राष्ट्रीय सेवा योजनेचा अन्य जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक चौ महाराष्ट्रातील इतर जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक यांचा तुलनात्मक	25-27
6.	P. BINDHU Assistant Professor, Department of English, SCSVMV University, Kanchipuram, Tamil Nadu	INTERACTIVE ENGLISH LEARNING THROUGH MOBILE TECHNOLOGIES	28-30
7.	DR. SONALI RODE Asst Professor, Government Rajaram College, Kolhapur	EXPLOITATION OF WOMEN IN OUTCASTE	31-34
8.	DR. ARVIND LADOLE Head, Department of English Mungsaji Maharaj Mahavidyalaya, Darwha, Dist.Yavatmal, Maharashtra	THE CONFIDENACE LEVEL OF T.Y.B.COM STUDENTS OF MUNGSAJI MAHARAJ MAHAVIDYALAYA, DARWA DIST. YAVATMAL: AN ANALYTICAL STUDY	35-37
9.	INDAL G. JADHAV Assistant Professor, Dept of English, Smt Radhabai Sarda Arts, Commerce & Science College, Anjangaon Surji, Dist. Amravati	HUMANISM IN THE SHORT STORIES OF RUSKIN BOND	38-40
10.	DR. DINESH SUDHAKARRAO TATTE Assistant Professor, Department of English, Arts and Science College, Kamargaon, Dist.Washim, Maharashtra	A BRIEF ANALYTICAL STUDY ON THE SIGNIFICANCE OF MATHEW ARNOLD'S CRITICISM IN THE TRADITION OF ENGLISH LITERARY	41-45

Principal
Narayanrao ... Mahavidyalaya
Badnera

11.	DR. I.D. CHAUDHARI Assistant Professor, Department of English, Government Vidarbha Institute of Science & Humanities, Amravati.	CRITICISM IMAGINATION, SCIENCE AND LITERATURE: A SURVEY OF GENRE 'SCIENCE FICTION'	46-50
12.	ABU TALEB AHMED Assistant Professor, Department of History S.S.M. College, Bhatkuchi, Barpeta	PARSI PARLO, AN ARCHEOLOGICAL EVIDENCE OF NEOLITHIC CULTURE IN ARUNACHAL PRADESH	51-55
13.	DR. JAIDEEP GHOSH Principal, Indira Gandhi College of Physical Education Nagpur	CHALLENGES IN SPORTS AND PHYSICAL EDUCATION: GROWTH AND DEVELOPMENT	56-59
14.	DR. NAGNATH MADHAVRAO PHAD Head, Department of Geography Late Baburao Patil College, Hingoli.	RURAL SETTLEMENT PATTERNS IN HINGOLI DISTRICT: A GEOGRAPHICAL ANALYSIS	60-64
15.	SATISH K. KHODE Assistant Professor, Dept. of English, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati.	HOUSE OF CARDS : A CRITIQUE OF INDIAN PATRIARCHAL DOMESTICITY	65-69

Principal
Narayan... Mahavidyalaya
Badnera

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071
Impact Factor 3.818

Research Paper in English



MEMBER OF
Crossref
OPEN ACCESS
INNO SPACE



SATISH K. KHODE

Assistant Professor,
Dept. of English,
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya, Badnera,
Dist. Amravati.
satishkkhode13@gmail.com

HOUSE OF CARDS : A CRITIQUE OF INDIAN PATRIARCHAL DOMESTICITY

ABSTRACT

This paper present a study of Mridula, the main character, refrained from spending money because she aimed to create a stable and happy future. Due to her stupidity and ignorance, her husband successfully used her to his advantage by giving his mother and sister thousands of dollars in private. She became paralysed by the betrayal, became disillusioned, and fled on her own. A marriage is destroyed by heartless reasoning, deceit, and power, and the flimsily constructed home tragically collapses.

KEYWORDS: feminism, *judiousness, manipulation, relationship, philanthrope, foolishness,*

Introduction

As a writer, Sudha Murthy is regarded as one of the most creative and talented individuals and has won numerous honours for her contributions to literature and philanthropy. Her writing is truthful, conveys a lovely atmosphere, speaks to the readers' hearts, and makes it incredibly enjoyable to concentrate on the words. Her writing is simple and effective at communicating her thoughts. She is a prolific writer in both English and Kannada, and the subjects of her books are the villages and people of Karnataka. She supports equality and empowers her females to confront challenging circumstances in their lives. She insists that the women acknowledge them and release the incredible power they possess to use their discernment. She uses her wealth to help those who are less privileged because she is unassuming and full of humility. She recognises the cries and needs of the underprivileged, impoverished, and neglected members of society. She works with Indian English literature as a backdrop. Her female characters are brash, intelligent, devout, middle-class to lower middle-class people who are overcome by the conflicts brought about by modernity. They are also worried about morals, money, fame, success, and how their actions will affect their marriages and interpersonal connections. Her books are captivating; they are comprehensible, distinctive, and inspire readers to aspiration and mental calibration on a spiritual level. She has written several books, including Dollar Bahu, House of Cards, Mahashweta, The Bird with Golden Wings, The Elderly man and His Deity, Wise and Otherwise: A Salute to Life, The Day I Stopped Drinking Milk, A Wedding in Russal, The Accolades Galore, Changing India, House of Cards, Sweet Hospitality, and The Bakula descends gently, primarily through penguin, Fasalcut.

The home, family ties, and the vital equilibrium required to maintain them in good health are the focus of House of Cards. The current essay focuses on the tenuous foundation of Mridula and Sanjay's marriage and the betrayal that Sanjay committed.

House of Cards

Murthy calls attention to the Indian awareness that has been bestowed through legendary events, figures, their sagas, and interpersonal interactions. She focuses on the nonsense occurring in the characters by delving deeply into their innermost selves. She

Narayanrao Ranamahavidyalaya
Badnera

writes naturally, making each sentence seem to be its own tale. In her writings, she concentrates on capturing the grace of the locals, allowing the readers to become familiar with locations in Karnataka and catch glimpses of its villages. Character titles are also derived from Karnataka.

Her books are a reflection of Sudha Murthy's creativity and thinking process. The focus of Sudha Murthy's episode of House of Cards is on how individuals behave when they have more money. She also talks about the characters, who are mostly men, who are pompous, stupid, and greedy. The trials of Mridula and Sanjay's marriage are depicted in the book House of Cards. The main character of this book, Mridula, hails from Aladahalli, is a top student, unobjectionable, sincere, and informed. She also has attractive, big, twinkling eyes, as well as long, dark hair that she used to wear up in a string of flowers. Her family was happy and satisfied; they weren't ostentatious or materialistic. She believes that everyone is similar to her. She is incredibly enthusiastic about life and has boundless energy for activities like reading, cooking, and drawing. She relished each wonderful moment and always did well in school. She was a teacher at the secondary school run by the government.

The main character The young man Dr. Sanjay caught Mridula's attention during a wedding rite in Hubli. Despite feeling repulsed by the way he had trusted her, he was captivated by her physical beauty. Sanjay had a strong commitment to his job. He wasn't quite as fair as she was, nevertheless he was tall with well-defined, pointed features. He had wavy hair, and he had an athletic build. He originally worked for the government hospital in Bombay and didn't take life too seriously. She was attracted to him as well. They communicate the same language and are members of the same community. Because of a car crash, Sanjay was born with a short limb, but Mridula never brought up this flaw when she questioned him. She was sincere and affectionate. He was drawn to her by a feeling of security and belonging.

He wrote her a letter with a proposal, keeping in mind his buddy Alex's comment that no Indian girl would initiate contact first. The marriage proposition made by Mridula and Sanjay was also accepted by Mridula's parents, Bheemanna and Rukuma. Additionally honest, direct, and amiable was Bheemanna. His parents' conversations were as contradictory as day and night, and he was a resident of T. Narasipura. Despite not having a formal education, his mother Ratnamma was intelligent, brave, and decisive. She also had knowledge of famines and how to manage them. His late father Appa used to be timid and readily admit loss. Because of Sanjay's short arm disability, his father used it to reflect his ideas.: Every person is an island. You need a bridge to connect two islands. That bridge is called a relationship. In life, real affection comes not through hiding but through expressing your true feelings. (House of cards, 38).

In the past, his mother has advised him to avoid expressing his vulnerability in public because it will invite abuse from others. Sanjay's mother was his rock and gave him the spirit of adventure that helped him become a successful doctor. Instead of listening to his father, he followed his mother's advice. She also didn't disagree with the partnership in any way. His mother adjusted to life without her spouse by selling flowers, fragrance, camphor, bananas, coconuts, and other items for puja to visitors to the Narasimha temple. She also runs a successful loan company. She imposed extraordinarily high interest rates on her loans. She kept accounts for everything, and her entire universe revolved around money. For her, gold was a commodity and an investment rather than just jewellery. She anticipated that Sanjay would wed a physician and start a care

home. She counsels Lakshmi, her daughter, to put money aside for a bad day. Spendthrift Lakshmi battled with the ladies club members. Lakshmi, her daughter, had encountered shrewdness, jealousy, and humiliation in the joint household.

After Sanjay and Mridula were married, Sanjay obtained employment at Bangalore's Victoria Government Hospital. Mridula had a difficult time adjusting to life in Bangalore; she worked happily at Yelahanka High School, a Bangalore neighbourhood, and had begun her new life with the assistance of Kantaamma, the principal's wife. Sanjay made less than Mridula. He also handed Mridula his pay and instructed her to handle the money. Sanjay had to retain some cash in his wallet, and she insisted on keeping the accounts. Together, they paid the rents, used some of the money to send to Ratnamma, and used the rest for household expenditures.

With the money Mridula had saved, they eventually bought a TV, a refrigerator, and a new bike for Sanjay. They were happy with their lives. Mridula and her sister-in-law were entirely different kinds of people. Lakshmi was a spendthrift while Mridula was a money saver. Shankar, the spouse of Lakshmi, worked as a bank clerk and received payment in exchange for favours. He had a large home with all the bells and whistles and expensive furnishings. They moved to Vijaynagar after Sanjay received admittance to the post-graduate programme in gynaecology.

Sanjay eventually completed his education and began working as a physician and lecturer in a government hospital in Bangalore. As a result of the ups and downs in his line of work, he changed to fit the new conditions. Mridula, on the other hand, was innocent, kindly, and her thought was still a blank page. Dr. Alexander, also known as "Alex," was a close friend of Sanjay's who was charismatic, fashionable, well-dressed, and a gifted speaker. Sanjay was persuaded by Alex to start a private nursing clinic with a partner because he was an idealist and intelligent man who intended to assume complete responsibility for his patients' care. Alex, a character played by Sudha Murthy, points out to Sanjay the value of money and says, "Money is a valuable tool." It's similar to a knife in that you can use it to either cut an apple or murder someone. You get to choose how you want to use it (House of cards, 109).

He received extensive support from Mridula to conduct a private practise. She opposed spending excessive amounts of money and only wanted her spouse to be happy. They both took out loans, which she routinely repaid by working hard and long hours. She didn't pay money to have shirts sewed to match her saris or take an auto-rickshaw to get around. She didn't spend money because she wanted to create a stable and happy future for herself. She was duped by Lakshmi into believing she wasn't dressed appropriately. She was working not for her own pleasure but to meet the requirements of a materialistic life, and she was also willing to give evening lessons as restitution to her family. She put her jewellery under mortgage to establish the nursing home. She had also paid off the mortgage on their house, but they had stayed in the flat to cut costs. The nursing facility prospered, and he began to receive a lot of money. She did not want to invest money on a new home because she believed that her son Sishir would need it for further education. She was chosen by Sanjay to manage and watch over his financial accounts. He adjusted more money, such as $25,000, to the usual distribution. In terms of ideals, the husband and wife were opposing points apart.

Sanjay's sister constructed a new home, her husband, Shankar, had taken a voluntary retirement, and they had begun a new business with a partner. However, the partner betrayed

them, and they lost both their home and their company. For Lakshmi to escape her difficult situation, she required thirty lakhs. RoseMary handled the care home's finances in a responsible manner. Mridula told her mother-in-law that Lakshmi needed thirty lakhs, but she said she didn't want to get involved. When Mridula asked her husband's permission to assist Lakshmi during their difficult times, he gave her the thumbs down:

> Mridula , we don't have that kind of money. I've lived in their house for two years and seen how they live. They show off too much. I don't want to give them a loan because they'll never return it. If Shankar agrees, I can give him a job at the nursing home with a monthly salary. But they must stay separately and not in our house. I can't help them more than this. That's my final say.‖ (House 139).

After hearing her husband's choice, she felt very uncomfortable. She said nothing more. She and her spouse resided in a four bedroom JP Nagar home (residential area in south Bangalore). They own three automobiles. The Jayanagar School's headmaster was now Mridula (residential neighbourhood of Bangalore). Shishir, their son, was obstinate and loved by his father. The three housekeepers were truthful. She did not want to quit her work because it had helped her start a hospital during trying times and was her source of oxygen.

Sanjay was confident due to his consistent achievement. Because of Mridula's attempts, perseverance, and support, Sanjay was able to succeed. He also accepted the difficulties that came with living. With no issues, Alex and Sanjay divide the proceeds. He had gained a lot of knowledge about managing money. He did not anticipate telling the income tax division about all of his profits. He had both white and dark money. Black money was used to pay for all payments. Mridula was kept in the dark by Sanjay; he said nothing to her. The reason was that Mridula believed it to be unethical. The other male character, Alex, who was Anita's spouse, also betrayed Anita by having an affair with anyone else and had used two condoms in her bedroom while she was away. Anita was astounded by this as was Mridula when she learned about it. When men have more money, their hypocrisy and dubiousness are clearly displayed, and this reveals the manipulation of marriages.

Sanjay used to regularly review the accounts at his care home, which had grown to a 100-bed facility. He has no faith in anyone when it comes to financial issues, not even Rosemary, her receptionist. He had advanced into the dishonest methods and gained more wealth. Mridula teaches his boy how to save money for difficult times. Sanjay has always stood by his kid, even when he is in the wrong. Sanjay shows his son how to make money and goes on to explain how most people's weakness is money. Sanjay's demeanour was deceiving to Mridula as well.

Because her upbringing was different from her husband's, Mridula argued with her husband not to teach the wrong things to her boy and warned him that her son would stray. The provocative conversation between her son and her spouse caused her to become agitated and overly sensitive. Shishir, her son, used to avoid eating at home if he didn't enjoy the homemade food, and his father would also encourage him to consume outside. By teaching his son the incorrect life lessons, Sanjay was utterly spoiling his son. Shishir had begun to resist, but not against his father, but rather against his mother. Sincerity and diligence were values that Mridula had ingrained in her son, who frequently shared and practised them with her.

Principal
Narayana Vidyalaya
Badnora

Sanjay was impolite to Mridula because he valued everyone else but her. Mridula was subjected to prejudice at home. Sanjay trusted his sister more than his fiancée. She believed that having money had stolen her joy. Sanjay believed that Mridula needed to accept help from Lakshmi in order to survive. He presented a polished image to others, but his wife perceived him as being overly harsh. He faults her and critiques her. When forming his views, he ruled with an iron fist. Mridula was unaware that selfish people dominated actual life. Compassion is the glue that holds relationships together. There was an urgent need for documents to be sent to the pharmaceutical firm from Sanjay's nursing home while he was travelling to Malaysia to attend the international conference. Mridula only visited care homes during Ayudha Puja, but she went there to look for a file. Something broke into pieces at that precise instant. The basis for confidence has been compromised. She had lost faith in him and felt like she was sinking. He has been deceiving her for the past five years. Sanjay used to say: I don't want to handle money .You manage it and I will manage the nursing home. (House of Cards 183).

Conclusion

Equal rights should be granted to women, and neither patriarchy nor their spouses should be able to dominate, subordinate, or cheat them. They ought to be granted the same privileges as their husbands. Women must also become more aware and avoid falling for anyone's tricks. It is preferable to be upfront with your partner or spouse about your money situation from the beginning. One must not betray one's partner's confidence; once betrayed, it cannot be repaired even if you move back in together. The house of cards is simple to destroy. Marriage, a socially sacred institution, has lost its holiness and pertinence in the book due to Sanjay's dubious behaviour attitude. Sudha Murthy undoubtedly wrote about her own life's experiences in this book, exposing female characters to show their anguish, yearnings, and afflictions in this hypocritical society that discriminates against women and treats them less favourably than men when it comes to material things. She also used this book to contrast the pretentiousness, insensibility, and greed of the patriarchal society.

Reference:

1. Murty, Sudha. House of Cards. New Delhi: Penguin Books India., 2013.
2. Vishnu, Kshirsagar Rajkumar. "A critical study of sudha murtys selectsd novels and shortstories." (2019).
3. Angeline, M. "Re-Mapping Identity, Culture and History through Literature." (2019).
4. Cunningham, K. Trust Quotes on http://www. wow4u.com.
5. Murty, Sudha. House of Cards. New Delhi: Penguin Books India., 2013. .
6. Stuart Y. Barbara. Betrayal of sacred Trust: Living with an unfaithful Husband .Lincoln, NE: iuniverse.,2005.

Principal
Navajeevan [illegible] Vidyalaya

Impact Factor Value : 6.067 ISS - 2278-9308

Sanshodhan Samiksha

Humanities, Social Sciences, Commerce,
Education, Law and Language

Peer Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

Special Issue- July -2017



Chief Editor - Prof. Virag S. Gawande
Editor - Dr. Sanjay J. Kothari
Editor - Dr. Dinesh W.Nichit

- Published By -

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati, MS.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

INDEX

1	Dr. S.N.Waghule	E-Governance Strategy:Reduce Correption	1
2	Sanjay P.Pawar	Role of Women Entrepreneurship In Rural Development Of India	5
3	Aparna Dalvi and Sarita C. Deshpande	A Relationship between English Creative Writing Skills and Academic Performance of C.B.S.E. and State Board School Children	9
4	Dr. Uddhav Jane,	Postmodern Literature and Literary Theories	14
5	Prof. Smita Ameya Wagh Prof. Dr. Malhar Kolhatkar	Role Of Training In Employees Retention In It Sector	22
6	Ketan Gautam Wakode	[Indian Women : Past Present And Future]A Study Of Social-Economical Problems Of The Women Domestic Workers In Akola District.	30
7	Anchal Arora Dr.H.S.Chahal	Critical Evaluation of Antecedents of Consumer's Perception towards Green Electrical Cooling Appliances	36
8	Dr.D.B.Borade	E-Governance In India –Hard But Bright Perspective	42
10	तक्षशिला मोटघरे	हमाल वर्गातील पाल्यांच्या शैक्षणिक समायोजन क्षमतेचा अभ्यास	49
11	डॉ. पी.के. कांबळे श्री. कैलास यशवंतराव यावले	भारतीय उत्तर शास्त्रीय संगीतातील राग : जयजयवंती चे सांगीतिक अध्ययन	54
12	डॉ. शारदा आय. महाजन प्रा. शशीकांत जे. चवरे	भारतीय महिलांमधील राजकीय उदासीनता (केंद्रीय पातळीवरिल निवडणुकांच्या संदर्भात) एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	57
13	प्रा.डॉ.एस.जी.राक्षसे	आसियान आणि भारत संबंध	67
14	प्रा.डॉ. व्ही. एम. गवई	बेरोजगारांच्या सेवा सहकारी संस्था : कार्यप्रणाली	70
15	प्रा. डॉ. कृष्णा आ. माहुरे	संविधान सभेतील डॉ. पंजाबराव देशमुख यांचे योगदान	74
16	डॉ. रजनी मामीडवार	बालवयातील लठ्ठपणा समस्या व उपाय	80
17	डॉ. लता पवार	'जू' नावडत्या भारतीय स्त्री जीवनाचे 'दस्तऐवज'	83
18	प्रा. विजय एम. घुबळे	भारतातील समाजातील स्वयंसेवी संस्थांचे कार्यक्षेत्र आणि विकासातील भूमिका	88

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Dadhara

19	प्रा. संजीव वि. भुयार	भारताच्या कटकस्था राज्यातील नक्षलवादाचे ऐतिहासिक अध्ययन	97
20	प्रा.चांगदेव केशवराव भाजीखाये	शेतीचे व्यवस्थापन व शेतक–यांच्या आत्महत्या	104
21	प्रा. मधुकर खंडु पवार	सत्यशोधक अण्णासाहेब लठ्ठे	111
22	डॉ. सचिन जगन्नाथ होले	अमरावती शहरातील नागरी कुटुंब संस्थेमधील तात्रिक परिवर्तनाचे अध्ययन	115
23	डॉ. अे.जी. वानखडे	१००० व ५०० रु.च्या नोटा चलनातुन बाद केल्यामुळे भारतीय अर्थव्यवस्थेवर होणारा परिणाम	119
24	प्रा. नंदकिशोर प्रेमचंद सिंगाडे	बचतगटांसाठी मार्केटींग - शोध बाजारपेठेचा	122
25	प्रा. कु. शीला सोमनाथ कापसे	डॉ. आंबेडकर यांचे शेतीसंबंधीचे विचार व योगदान	126
26	प्रा.दिलीप शहाडे	राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था / निती आयोग	133
27	Prof.DrSuprabha P. Yadgirwar,	Incorporation of Principle of Fair Trial in Constitution: An Appraisal of Rights of Accused under Constitution of India	136
28	Dr. Prakash U. Jawanjal	Economic View Of Dr.Panjabrao Deshmukh	141
29	श्री. विजय वसंतराव मोरे	सार्त्रचे'स्वातंत्र्य' व 'मानवाच्या परस्पर संबंध'विषयक विचार	144
30	प्रा. डॉ. गोविंद गायकी	आदिवासींचे प्रणयपर्व : भगोरिया	147
31	डॉ. प्रमोद म. बावणे	मेळघाट प्रदेशातील वसाहतींवर जलसंसाधनाच्या प्रभावाचा भौगोलिक अभ्यास	150
32	प्रा. डॉ. प्रसाद शं. मडावी	ख्याल गायन शैली तथा ख्याल गायन में बंदिशों का महत्व	154
34	Dr, Amit Pande	The Political Economy of Growth	158
35	श्यामल गरुड	लोककलेचे सैद्धांतिक पेच आणि तमाशातील कलावंत स्त्रियांचे प्रश्न	173
36	Satish K. Khode	Depiction Of Women Characters In The Novels Of William Faulkner	181
37	प्रा. रविन्द्र सदाशिव बर्वे	वृध्दाश्रमात राहणाऱ्या वृध्दांच्या समस्या :-एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	184
38	प्रा. साखरे दत्तात्रय यशवंत,	महात्मा गांधी विचारांचा वारसा आणि सद्यस्थिती	188
39	प्रा. डॉ. नरेंद्र पाखरे,	संत कवयित्रिंचे स्त्री उद्धारक कार्य विशेष संदर्भ (संतकवयित्री- महंदबा, मुक्ताबाई, जनाबाई, कान्होपात्रा, सोयराबाई, बहिणाबाई)	192

Principal
Narayanrao Ra... Mahavidyalaya
Baliwara

Impact Factor Value : 6.067 ISSN - 2278-9308

Depiction Of Women Characters In The Novels Of William Faulkner

Satish K. Khode

Assistant Professor, Dept. of English, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati

Email ID: satishkkhode13@gmail.com, Mob. 9423425596

Abstract: *This paper attempt to assess how William Faulkner's women characters are treated in light of their behaviours, which deviate from the predetermined standards of behaviour expected of women or women in general. This critical analysis of William Faulkner's imaginary universe, one of the best-known authors of American literature in English, focuses on how the conventions common in western societies cross with American society.*

Introduction

Because of the abundance of compelling imaginative fiction in English, William Faulkner has been one of the most popular novelists of this century. He has written 19 novels, 75 short stories, and a few poems to his credit. Families like the Chickas of Habersham, Holston, Grenier, Benbow, Stevens, Sartoris, Compsons, Me Caslin Edmonds, Priest, Sutpen, Me Callum, and Snopes are included in his imaginary cast. There are other black families, including the one of Srtoris, who appeared in some of his most well-known and much read novels includes *The Sound and the Fury, Light in August, Absalom, Absalomi,* as well as *Go Dowon, Moses.*

Women characters in Faulkner's novels

An in-depth examination of his books indicates that Faulkner portrays a variety of female characters. In her book "William Faulkner's Women Characters: An Annotated Bibliography of Criticism," Patricia E. Sweeney deals with this topic in depth (1930-1983). This is a thorough work that provides us with in-depth explanations of Faulkner's female characters. It has been discovered that very few American novelists have created such a large and diverse cast of female characters. Faulkner stated that the human being was his main focus in his writings. In his own words, "I am interested in people, I'm interested in people first and foremost, in man in struggle with himself, with his fellow man, or with his time and place, his surroundings. (At the University of Virginia, class conferences) This clarifies the goal and role of interpersonal relationships throughout the majority of Faulkner's fiction. His fictitious women are treated equally in terms of gender. They are equally wealthy as his men. His subsequent comment is frequently used in the discussion concerning his treatment of women.

In his novels men like Gordon, the Semitic guy, and Dawson Fairchild go looking for their particular prostitutes. The two subplots in Sartoris revolve around Horace Benbow and Belle Mitchell, Narcissa and Byron Snopes, and the marriage of Bayard and Narcissa. Miss Jenny stands for everything that is truly precious. She is able to mirror the best traits of bygone times without living in the past or letting the past rule the present. She is strong, smart, and highly capable. In his renowned book *The Sound and the Fury*, two lost women—Caddy, Candace, and her daughter Miss Quentin are tragically depicted. He introduces Dilsey Gibson, who stands for moral principles and whose acts set a baseline for human behaviour, to draw attention to the differences. While Mrs. Compson seems to view Dilsey Gibson rather differently. One of Faulkner's most complex female characters, Addie Bundren, can be found in books similar to *As I Lay Dying.*

When it comes to her strong reaction to the physical feelings, Dewey Dell is similar to Addie. There are a lot of female characters in Sanctuary, including Temple Drake, who is a multifaceted person. Likewise, Miss Reba's brothel employs a large number of young ladies. There are several women in Light in August who work as prostitutes, including Lena Grove,

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Joanna Burden, Miss Atkins, Allen Bobbie, Mrs. Mc Eachern, Mrs. Hines, and Hightower's wife. In the social environment, they have a special meaning. Lena Grove is a representation of the wealth, peace, fertility, and creativity that human existence may provide to the world. The goddesses of vegetation are represented by Helen and Diana. Faulkner broke with societal norm in Joanna Burden to portray a lady as vulnerable to evil influences. However, despite being distorted by these social forces, a woman can achieve tragic stature by having the fortitude and perseverance to fight against the evil forces that pose a danger to her individuality. In addition to these gender-related norms, he has portrayed a number of minor female characters Mrs. Armstid, Mrs. Beard, Milly Hines, Laverne Shumann, Lena Grove, etc. as if they were earth goddesses, personifying fertility in a world ruled by sterility and death.

In addition to the glorifying and codification of women through social conventions, Faulkner's female characters who defy society or transgress certain moral standards and reject the code offer a fresh perspective on how women should be treated. In the end, people either stay the same or change for the better, demonstrating some human decency and redeeming themselves. Knowing what a "rebel" is in this context is crucial to delve more into the issue of rebellion. It has been applied to female characters whose actions are interpreted as a divergence or aberration from social or moral norms with regard to sex relationships and an infringement on shared obligations. It is true that we do not mean a criminal or a terrible person when we use the term "rebel," nor does the phrase itself imply such meaning. However, it also doesn't imply that a person is devoid of vice. It's possible to connect the aberration of the female characters in Faulkner's books with evil in origin. However, the phrase "rebellion" or "evil" in a character here in the criticism refers to the portrayal of deviance in Faulkner's women against established norms of conduct and behaviour. In Faulkner's books, the rebel woman figure typically represents a woman with radical opinions. She disobeys all social rules and penalties. She is the kind of person who seems to be excessively self-centered and more focused in pursuing her desires without concern for the potential repercussions. She either disregards accepted standards and codes of behaviour by doing this.

She actively responds against them. She is unlikely to keep herself connected to the essential family link since she is unafraid of the repercussions of her behaviour. It is likely to turn to how Frederick R. Carl defines a rebel in another context in order to have a more thorough understanding of the rebel in Faulkner. Frederick defines a rebel as "someone who operates on the basis of who he is rather than what is required of him. The rebel may engage in antisocial behaviour, but he is not a criminal or a force for evil. He is inherently the type of guy for whom society does not provide a testing ground since he looks within himself for his philosophy rather than to God or his surroundings. He is, at best, faithful to himself despite the consequences, which are frequently negative.

The rebellious women in Faulkner's works most certainly fit this criterion to a large extent. The rebellious female characters in Faulkner's work are handled by setting them in both religious and secular contexts. the principles that the society upholds. Being religious, according to certain orthodox thinkers, is holding the idea that God created the cosmos in response to Adam and Eve's good or evil deeds. It is believed that Satan is the root of all evil. Thus, it is thought that evil is intrinsic in human beings and that the path that Adam and Eve began in heaven by committing the original sin now continues. The women characters in Faulkner's works are viewed as the travellers, and their journey might be characterised as a passage from "innocence to experience" in the Blakean meaning. Faulkner, according to Cleanth Brooks, was not well-versed in theology but nonetheless believed in God and struggled to accept Christianity. Faulkner also thought that humanity could find solace in Christian principles.

Narayantao ... Vidyalaya
Belhara

There is no abstract treatment of evil in Faulkner. He places men or women in a predicament where they are challenged, similar to Conrad. Never does he portray evil as a goal in itself. He explores the inner workings of his characters' minds as a psychologist might. For this reason, Faulkner's universe is not a pessimistic one, in contrast to Dickens' depiction of evil. His rebellious women are accepted for who they are. Faulkner is neither nihilistic nor hopeful in his outlook, unlike Conrad and Melville. He has exposed the flaws in humanity and the true nature of the problem. But the rebellious woman in Faulkner's story isn't entirely a sadist or acting maliciously for no reason. She embodies evil because it is something that all people are capable of. Faulkner's social point of view, however, is a filtered one that treats women on a same footing with men.

It has been proven that the same form of evil must be allowed by society if perpetrated by a man, but should not be stigmatised if committed by a woman. From a larger perspective, it appears that the rebellious women in Faulkner's works are not the social outcasts. Instead, they make up a significant portion of the family as a social unit. Although moms, wives, daughters, sisters, and maids are not neatly grouped together like mothers and wives are, a clear pattern in Faulkner's depiction of rebellious women does emerge. First, there is a group of female characters that defy society or familial norms through odd sexual behaviour.

Cecily Saunders from Soldiers Pay, Caddy and Miss Quentin Compson from *The Sound and the Fury*, Temple Drake from *Sanctuary*, Milly from *Light in August*, etc. are a few examples of characters who fit this description. An iconoclast is Cecily Saunders. She is the antithesis of everything established and conventional. She is referred to as a flapper of the day. She serves as a test case for Faulkner. Because of the superficiality and shallowness that he observes in society, it is noted in critical terminology. She exemplifies sexual manic behaviour. She is quite promiscuous and flirty. She represents a generation of empty males whose ideal woman is an asexual, shallow, greedy, and foolish creature that plays at sex despite lacking sensuality. Through the depiction of the "headless, armless, and legless virginal breast less body of a girl, in marble," Faulkner already conveys the idea of sexless love in Mosquitoes.

Conclusion:

Faulkner places a strong emphasis on the humanity of his characters. Despite being Faulkner's favourite character, Caddy has received mixed reviews from readers. In Volpe's opinion, Caddy is by no means a model of virtue. In other words, the critic draws attention to that character's vulnerability. Two different kinds of women characters are introduced by Faulkner. There are two types of people: one who abide by societal rules and another who doesn't. The women characters in The Sound and the Fury largely fall under this category of women. They are Caddy's daughter and her. Faulkner had a lot of respect for characters like Caddy, despite the fact that great writers don't have favourites. Faulkner has addressed women in its entirety in this way.

Reference:

Faulkner William. *As I Lay Dying*. New York: Cape and Smith, 1930.

Faulkner William. *Light in August*. New York: Smith and Haas, 1932.

Faulkner William. *Mosquitoes*. New York: Boni and Liveright,1927.

faulkner William. *Sartoris*. New York: Harcourt, Brace, 1929.. The Sound and the Fury. New York: Cape and Smith,1929.

Friedan, Betty. *The Feminine Mystique*. New York: Norton, 1963.

Brown, Calvin. *A Glossary of Faulkner's South*. New Haven: Yale University Press, 1976.

Brooks, Cleanth. "Absalom, Absalom! The Definition of Innocence." The Sewanee Review, 59 (Autumn, 1951), 543-558.

आधार रिसर्च सिरीज : सायन्स अँन्ड सोशल सायन्स

राज्यशास्त्र

भौतिकशास्त्र

लायब्ररी सायन्स

संस्कृत

सोशल वर्क

इतिहास

गृहअर्थशास्त्र

संगीत

मानसशास्त्र

शिक्षणशास्त्र

शारीरिक शिक्षण

वाणिज्य व व्यवस्थापन

सहकार

मानसशास्त्र

मराठी

गणित

कायदा

समाजशास्त्र

रसायनशास्त्र

अर्थशास्त्र

ऊर्दू

पर्यावरणशास्त्र

भूगोल

संगणकशास्त्र

तर्कशास्त्र

मुख्य संपादक - प्रा. विराग गावंडे, मो. ९५९५५६०२७८

Aadhar Publication
New Hanuman Nagar, infront of Pathyapustak Mandal,
Behind VMV College, Amravati - 444604.
Email - aadharpublication@gmail.com, M.: 9595560278

ISSN : 2278-9308
2278-9308

Impact Factor - 6.556

ISSN : 2278-9308

Sanshodhan Samiksha

Humanities, Social Sciences, Commerce,
Education, Law and Language

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

Special Issue - March -2018





Chief Editor - Prof. Virag S. Gawande
Editor - Dr. Sanjay J. Kothari
Editor - Dr. Dinesh W.Nichit

- Published By -

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati, MS.

INDEX

	Author	Title of Research Paper	Pg.No.
1	Prof. V. K. Utture	impact of emotional intelligence on knowledge management	1
2	Dr. Purnima Giri Kapta	Differences In Selected Physiological & Psychological Measures Between High & Low Resting Pulse Rate Groups	9
3	Prof. Vasant V. Thakare	A Studay of significant changes in the current trends of kabbadi game	12
4	Prof. Dr. G. L. Pathwal	Rats Menace or opportunity for the WTO?	16
5	Prof. Sangita Suryawanshi	Social Empowerment of Women in India	24
6	Prof. Dr. V.V. Kulkarni.	Women Empowerment in Rural-an important program for the benefit of the Society.	28
7	डा. डॉ. एच. डी. आकोटकर	कौटिल्यअर्थशास्त्र : एक दृष्टिक्षेप	31
8	डा. डॉ. बालासाहेब नारायणराव कुलकर्णी	स्वातंत्र्यपूर्व हिन्दी काव्य में 'मातृ-रूप' में नारी	37
9	[illegible]	[illegible]	41
10	डा. एच. एन. वार्के	भारतीय हिंदी साहित्य में स्त्रियों का योगदान	55
11	डा. जयश्रीताई बसवंत गणोरकर	भारतीय राजकीय क्षेत्र में महिलाओंका स्थान	60
12	डॉ. ज्योती परब	स्त्रियांची कविता : एक शोध	60
13	डॉ. विजय विठ्ठलराव उमाटे	महात्मा गांधी आणि स्वातंत्र्योत्तर भारत	64
14	डा.डॉ. चक्रवा पद्मनाभ कोकाटे	शंकराचार्यांचा अद्वैत सिद्धान्त आणि संत ज्ञानदेवांचा अमृतानुभव	69
15	डॉ. विनोद नारायणराव सपाटे	अलक्षित संत कवयित्या व्यथा आणि वेदना	77
16	Dr. Anil P. Mude,	An Analysis of Agriculture Sector In Indian Economy	81
17	Dr. Kamlakar K. Askar	Jootham: A Saga of a Dalit Viewed from Fourth World Perspective	87

18	Surajprasad s. Shukla	An ecocritical study of 'place' in john steinbeck's califcenian novels	91
19	Dr.P B Kharche	Impact Of Demonetisation On Rural India	94
20	Dr. Manjusha M Jagtap	Problems Of Small Scale Women Entrepreneurs In Rural Area	99
21	Dr. Chandrahas A. Dixit	Urban Poor living in India	103
22	डॉ. अजय कुळकर्णी	'यश-अपयश' या आत्मचरित्राची भाषावैशिष्ट्ये	110
23	Dr. Amit Pande	The Impact of Industrial Waste on Human Resources -In Butibori Industrial Area	120
24	Dr. KalpanaVajpeyi	Inclusion of Minority Groups in Higher Education	128
25	Satish K. Khode	Plight of Indian Woman in Namesake: A Critique of Disporaic Literature	136
26	प्रा.डॉ.संध्या गो चर्जन	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज आणि समाजोन्नती	140

Principal
Narayanrao [illegible] Vidyalaya

ISSN-2278-9308

Plight of Indian Woman in Namesake: A Critique of Disporaic Literature

Satish K. Khode
Assistant Professor, Dept. of English, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati
Email ID: satishkkhode@gmail.com, Mob. 9432425596

Abstract: The notion of "diaspora," which is usefully applied in the analysis of emigration and settlement of people outside the confines of their homeland, has some specificity limits. Another key element of the idea of diaspora is the preservation of cultural identity in the host society. In addition to the Jewish Diaspora, there is already a sizable body of writing on other Diasporas like the African, Chinese, and Caribbean ones. The basis of diasporic study is the framework upon which research on Indians living abroad is currently conducted. The people who moved from areas that are presently within the borders of the Republic of India are referred to in this paper as the "Indian Diaspora" in its broadest sense.

Keywords: Emigration, Diaspora, marginal, multiculturalism, socio-cultural hybridity

Introduction

The word "diaspora" has an ancient Greek etymology that means "to disperse about." And that's precisely what the diaspora community participates in. They disperse from their native country to various locations around the globe, spreading their culture. The Jewish Diaspora that was exiled from Israel by the Babylonians is connected to the sacred book Bible. However, the term is now also used more specifically to refer to any significant influx of refugees, a language, or a society. There are various ways to observe the Indian scene.

Immigration after Independence

When compared to earlier migration periods during the ancient and colonial periods, the migration during the post-Independence era was completely different. The migrants at this period were educated and from the middle class. The Indian educational system at the time was modelled after the British and American institutions. In India, this method led to unemployment. People were drawn to the world because of this. This resulted in a "brain drain" of professionals, which was made possible by the quick changes in transit and information exchange. The majority of the migrants went to Western industrialised countries like the United States, the United Kingdom, and some parts of Europe and Australia. Today, India has one of the biggest and most prosperous "diasporas" in the world, with about 25–30 million Indian expatriates and individuals of Indian origin living in various nations. While wealthy Indians chose to pursue higher education in prestigious British imperial institutions and universities. In the past two decades, the younger population of individuals of Indian descent has developed into a highly skilled group that includes professionals in every industry, including doctors, scientists, engineers, and entrepreneurs. By aggressively luring its human and financial capital to help drive the nation's long-term development, India has not been able to effectively capitalise on this special and capable asset.

India needs to develop policies that will stop the exodus of its highly qualified students and workers and, over time, turn the nation into a centre of knowledge around the world. Which can draw notice draw immigrants from all over the world, not just the diaspora.

The majority of the literature on the Indian Diaspora that is currently in circulation deals with Indian migration, their socioeconomic and cultural experiences, and their experiences adjusting to and assimilating into their host communities.

Indian English authors are an integral part of each person's post-colonial character. They are Indian and part of the social-political landscape of India, which includes all local and regional disputes and changes. having chosen a language that is as much international as it is Indian, rather than a regional tongue. Their main difficulty is coming to an innovative compromise. Both thematically and stylistically, her works address postcolonial and sociocultural hybridity. R.K. Narayan, Kamala Das,

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

Amitav Ghosh, Arundhati Roy, and Jhumpa Lahiri are just a few of the writers who have been impacted by the Indian diaspora's requests for observation and representation.

Jhumpa Lahiri published her first book, The Namesake, in 2004. It was first released as a novella in New York and eventually became a full-length book. It covers many of the same emotional and societal topics as her short story compilation Interpreter of Maladies, which won the Pulitzer Prize. The book explores the complexities of being caught between two contending societies with highly distinct religious, social, and ideological differences as it switches between events in Calcutta, Boston, and New York City. The most favoured figure is Ashoke. In general, people have praised the way Gogol was incorporated into the narrative and made the primary subject. Many bloggers have expressed how fascinated they were by the Gangulis' attempts to strike an equilibrium between their traditional culture and contemporary way of life. The book's portrayal of genuine emotions and struggles has generally received high acclaim from readers. In 2007, the movie, which is based on the novel of the same name and stars Kal Penn as Gogol, was released in four different languages: English, Hindi, Bengali, and French.

Aftermath of Migration

Migration inevitably leads to cultural diversity and bilingualism. A greater need for developing symbolic expressions of identities and the emergence of hybrid and complicated identities are both a result of contact between various cultural and linguistic groups. Multilingualism and multiculturalism are behaviours that are constantly infused with identity. Language and cultural expressions both shape and are shaped by identities, creating an essentially reflexive relationship.

Despite being frequently viewed as problems, multiculturalism and multilingualism are in fact tools for society. They serve as tools for constructing identities on a personal and collective level as well as tools for contributing to society. Characters in The Namesake frequently draw comparisons or differences between American and Indian cultures. Ashima and Ashoke, two Indian immigrants, frequently compare the two societies because, when they first immigrated to America, everything was foreign to them. Although they are at least familiar to their friends and families back home, in America they are both treated as virtual outsiders by the populace. They both exhibit a blend of American and Bengali behaviour due to their immigration status. For the sake of their children, who are accustomed to American culture, they are eager to enjoy Christmas. As outsiders in their respective societies, Gogol and Moushimi frequently experience the feeling of being on the road with nowhere to go but back. Even though they make an effort to fit in with their new societies, they still exhibit signs of loneliness and alienation towards their original society.

Along with the identity crisis they experience, they also struggle from loneliness and alienation. They are unable to fully recognise the cultures of their new country because of the sight and feel of their ancestral home. The fact that they still view their new home as a separate nation is a bitter reality. The main reason Gogol is not more closely associated with his name is that he was born and raised in America from birth, which led him to love American custom more than Indian traditions and cultures.

The Namesake explores the depths of ethnic displacement. Ashima, for instance, is upset when Gogol informs him that he has leased a room for three months, and she is also upset that their children were unable to visit her frequently. Ashima endures a great deal of suffering: "She will never comprehend her children's independence, their need to keep their distance from her, having been deprived of the company of her own parents upon moving to America." (112 Macwan)

As this character grows up in a society that is completely foreign to his parents and their attempts to preserve the Indian culture for their children, Jhumpa Lahiri does a fantastic job in the book of placing the reader in this character's head and making them feel for him. When they arrive at the hospital for Gogol's delivery, Ashima and Ashoke are obvious. Ashima searches for her husband after being granted a bed, but he has moved behind the curtain that surrounds her bed. He responds in Bengali, a language neither the carers nor the doctor are fluent in, saying, "I'll be back." Although the curtain is a physical barrier, it symbolises the metaphorical barrier that Bengali speaking in the United States creates. As Gogol and Sonia mature, the language barrier becomes a problem. Every other Saturday, Ashima and Ashoke enrol them in Bengali language and culture courses, but it never fails to worry

them that their kids sound exactly like Americans while speaking fluently in a foreign [illegible] occasionally baffles them and with accents they are trained not to believe.

In the past, women and males enjoyed equal status. But during the post-Vedic and epic [illegible] to deal with some challenges. They were frequently handled like slaves. Since the beginning of twenty-first century, (national movement), their position has slowly and gradually changed. Lahiri does a lovely job of portraying her characters in the book. How Ashima transitions from a homesick housewife to a self-assured woman at ease in her surroundings after her husband moves away in a distant country. Overall, Ashima can be described as a genuine Bengali lady who is polite and kind. Despite being a traditional woman, she easily adjusts to American culture and effectively raises her children abroad.

Different Factors Affect Family Relationship:

In the book, Gogol despises the moniker his parents gave him—his "good name," as they refer to it. **He finds it** especially offensive and embarrassing to be compared to his namesake, Nikolai Gogol. **Gogol has demonstrated** that he despises his ancestry and is not at all pleased of it. Gogol struggles to **completely accept** and comprehend his Bengali-American parents. His **identity problem is exemplified by his resentment** and subsequent rejection of his name. Lahiri describes **his unsuccessful interactions with** American women as well as his difficult marriage to a Bengali **woman who is just** cosmopolitan **and lost in her** own culture as he is. The protagonist reads Gogol's tales for the first time **at the book's climax,** just before his father's funeral. As he progresses, he finds himself becoming more **and more drawn** to his origins as his name and fate come to represent his parents' legacy. He learns to value **both the** society that his parents left behind and the one that they built.

Sonia is described **in the book** as Gogol's younger sibling and the offspring of **Ashima and Ashoke.** Her personality is barely touched upon in the novel. Sonali becomes Sonia as she **gets older, due to** the Bengali system of "bhalonaam" and "daaknaam." She fights with her parents **about her** [illegible] going out with friends, getting her ears pierced, and wearing earrings as an adolescent. She does, however, develop into a more wise adult. She only dates one guy, unlike Gogol, **and they end up** getting married, which demonstrates her clear and undemanding thinking.

She is also very sympathetic and helpful, and she visits her folks whenever they require assistance. When she resides with her mother, for instance, Ashima and Ashoke's marriage is arranged by their families, so Lahri in the book depicts the various family members. When Ashima [illegible] and discreetly assumes Ashoke's role before their wedding, it is the closest intimacy they experience. The romantic experiences that Gogol has are very dissimilar from those that his parents have had or anticipated for their son. what makes Gogol fall in love with so many women, particularly Ruth and Maxine. Depending on how you view it, the novel's most crucial section may or may not exist. When Gogol weds Indian girl Moushumi, that scene reaches its apex.

Conclusion:

The analysis of the novel as above demonstrates how Jhumpa Lahiri conveys an impression of an uncharted world that is both a land of opportunity and conflict. Jhumpa Lahiri discusses a variety of immigrant situations. She thinks that the difficulties of assimilating into a new culture and language, loneliness, and knowledge of and yearning for a bygone era are more overt and distressing for emigrants than for their offspring. Identity is a challenging topic for everyone, but is particularly challenging for people who have been ethnically displaced. The novel also demonstrates the cultural challenges immigrants encounter in a distant culture. Lahiri demonstrates how immigrants eventually adopt the cultural practises of the host nation despite their enthusiasm to uphold their own cultural beliefs and traditions. At the conclusion of the book, Lahiri also demonstrates how immigrants all carve their own "routes" over time and are not required to remain in their home countries own origin.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

आधार रिसर्च सिरीज : सायन्स अँन्ड सोशल सायन्स

राज्यशास्त्र
भौतिकशास्त्र
लायब्ररी सायन्स
संस्कृत
सोशल वर्क
इतिहास
गृहअर्थशास्त्र
संगीत
मानसशास्त्र
शिक्षणशास्त्र
शारीरिक शिक्षण
वाणिज्य व व्यवस्थापन
सहकार
मानसशास्त्र
मराठी
गणित
कायदा
समाजशास्त्र
रसायनशास्त्र
अर्थशास्त्र
ऊर्दू
पर्यावरणशास्त्र
भूगोल
संगणकशास्त्र
तर्कशास्त्र

-अधिक माहितीकरिता संपर्क-
मुख्य संपादक - प्रा. विराग गावंडे, मो. ९५९५५६०२७८

Aadhar Publication
New Hanuman Nagar, Infront of Pathyapustak Mandal,
Behind VMV College, Amravati - 444604
Email - aadharpublication@gmail.com, M. 9595560278

ISSN : 2278-9308
2278-9308

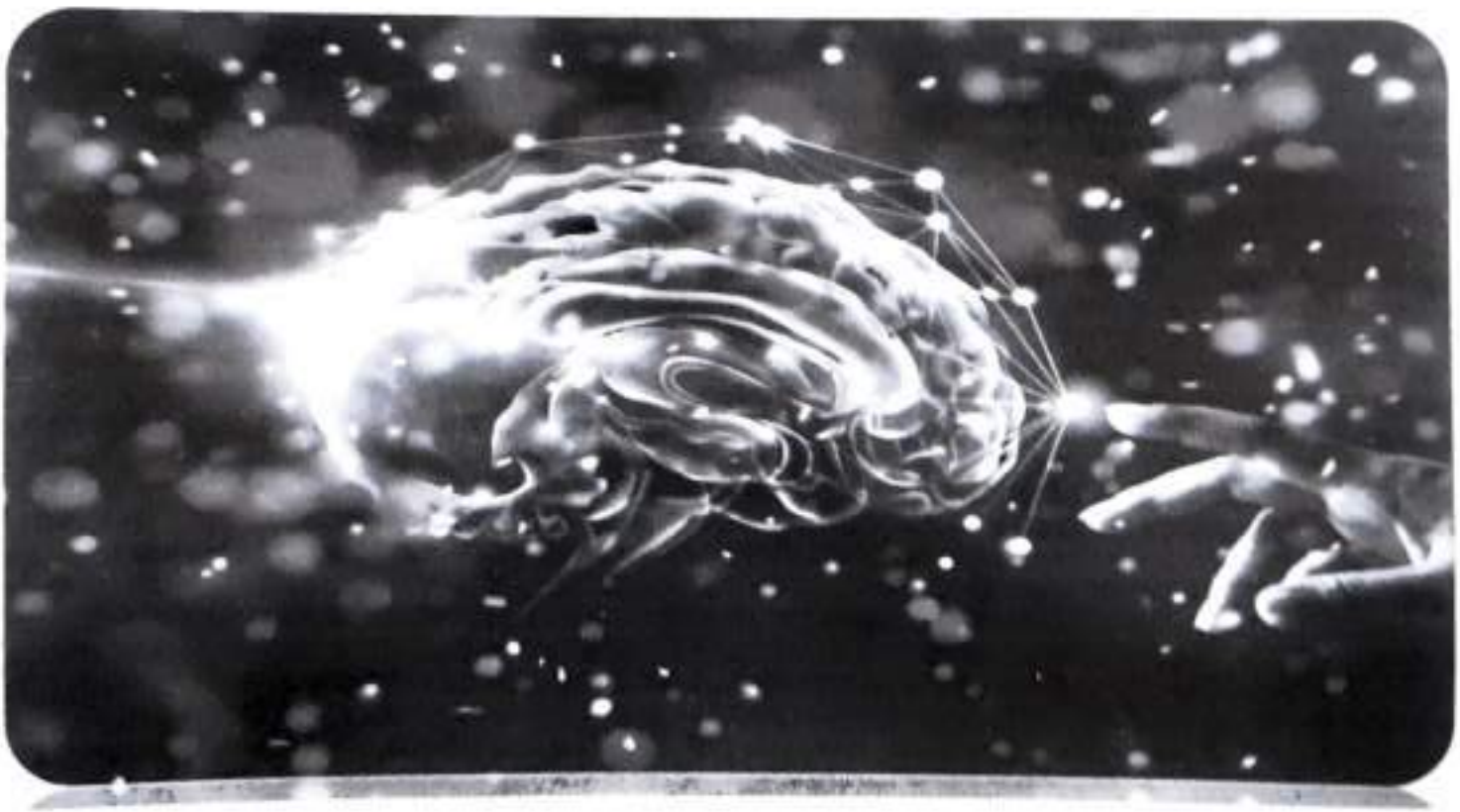
September-2021 *Volume-12* *Issue-11*

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

Global Issues

social
issues



Address

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Refereed and Peer Reviewed Journal.
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, September-2021, Volume-12, Issue-11

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	Structural Issues of the Cold Storage Industry in Punjab: **Jyoti Garg**	1-7
2	Empowerment of Women in India **Dr. Ayodhya Pawal**	8-10
3	Importance of Sustainable Development in India **Prof. Vijay Devidas Wakode**	11-12
4	Contribution of Women Novelists in Indian English Writing **Dr. Rajkumar Ramrao Patil**	13-15
5	Effectiveness of Jigsaw Method Learning Strategy for Physics **Dr. Dond G. R.**	16-17
6	Role of E- Learning in Life Sciences During Corona Virus (COVID-19) Pandemic **T.T. Shaikh**	18-19
7	Entrepreneurship Development and Women Empowerment **Dr. Swati Rokade**	20-23
8	Male Involvement in Family Planning: A Case Study Varanasi **Dr. Uma Kant Singh**	24-29
9	Changing Land Use and Cropping Pattern, A Geographical Analysis: A Case Study Of Kopergaon Tehsil In Ahmednagar District (M.S.) **Mr. Kishor Dashrath Kamble**	30-33
10	Prevalence of Human Value in the Mythical Hindu Literature **Mrs. Ipsita Chakraborty, Dr. P. Ganesan**	34-36
11	Studies Of Physico-Chemical Parameters To Assces The Water Quality Of Sonhira Lake (Chinchani) For Agricultural Farming Purpose In Kadegaon Tehsil (Sangli District) **Thorat J. C, Kamble P. D**	37-41
12	The Study of How Electricity Generation from Solar Energy **Thorat J. C, Kamble P. D**	42-49
13	पुणे विद्यापीठाच्या बीएड महाविद्यालयातील प्रात्यक्षिक मूल्यमापनाचा अभ्यास **दौंड जी. आर.**	50-52
14	आंचलिक उपन्यास की अवधारणा – मैला आंचल **डॉ. संतोष रामचंद्र आडे**	53-57
15	बहुविध विषयांसाठी परंपरागत आणि संगणक सहाय्यित अध्यापन पद्धतींचा तुलनात्मक अभ्यास **डॉ. सुदर्शन अण्णासाहेब आहेर श्रीमती. परीक्षा सुरेश पाटील**	58-63
16	जलवायु परिवर्तन और ऑरोनीकरण **Dr. Dinesh Kumar**	64-68
17	जागतिकीकरण आणि मराठी लोकनाट्ये **डॉ. साहेबलाल एस. पैरम**	69-74
18	महाराष्ट्रातील लोकनाट्ये प्रकार आणि ओळख **डॉ. चैनलाल एस. राणे**	75-85
19	कबीर तथा: चयनित पदियों में कबीरकालीन सिंहल तथा भगत **डॉ. वंदे एन. साखरे**	86-90
20	भारतीय कृषी-समस्या आणि उपाय **Dr. Sarwade M. P.**	91-94
21	आळंदी देवाची या धार्मिक पर्यटनस्थळाचा प्राचीन इतिहास – एक अभ्यास **दादासाहेब मारकड डॉ.ओमप्रकाश मुंदे**	95-98

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Refereed and Peer Reviewed Journal.
Impact Factor 7.265, ISSN: 2230-9578, September-2021, Volume-12, Issue-11

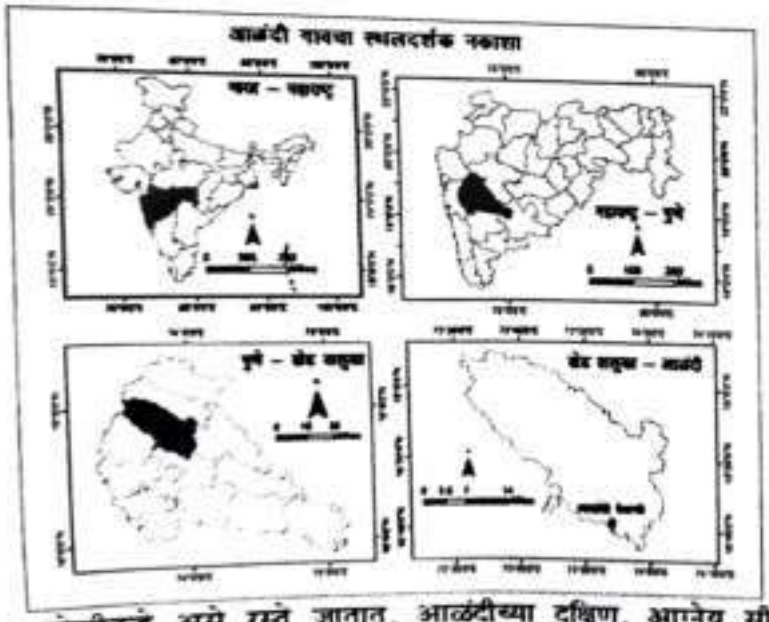
आळंदी देवाची या धार्मिक पर्यटनस्थळाचा प्राचीन इतिहास – एक अभ्यास

दादासाहेब मारकड[1] डॉ.ओमप्रकाश मुंदे[2]
[1]सहाय्यक प्राध्यापक हुतात्मा राजगुरू महाविद्यालय राजगुरूनगर ता.खेड, जि.पुणे
[2]सहयोगी प्राध्यापक, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा, जि.अमरावती

सारांश –
आळंदी देवाची हे क्षेत्र प्राचीन काळापासून अस्तित्वात आहे. प्राचीन काळी आळंदी हे स्थान ऋषीमुनींचे तप करण्याचे ठिकाण असावे. यामुळे आळंदी परिसरास सिद्धक्षेत्र असे म्हटलेले आहे. प्राचीन काळी लिहिलेल्या स्कंद पुराणातील सह्याद्रीखंडात आळंदीचा उल्लेख येतो. मध्ययुगीनकालखंत आळंदी हे ग्राम स्वरूपात उदयास आले. संत ज्ञानेश्वर महाराजांच्या पूर्वीच आळंदी हे एक चांगले सुस्थापित खेडे म्हणून उदयास आलेले दिसते. संत ज्ञानेश्वर महाराजांनंतर आळंदीचे महत्व आणखी वाढत गेले. ज्ञानेश्वर महाराजांच्या पूर्वीचा आळंदीचा इतिहास या शोधनिबंधात थोडक्यात मांडलेला आहे.

प्रस्तावना – भारताच्या किंवा महाराष्ट्राच्याही राजकीय इतिहासात आळंदीस विशेष असे महत्व असल्याचे दिसत नाही. इथे कोणत्याही स्वरूपाची महत्वाची ऐतिहासिक घटना घडली, तहरह झाले, युद्धे झाली, षडयंत्रे शिजली असे प्रकार घडलेले नाहीत. परंतु महाराष्ट्राच्या सांस्कृतिक इतिहासात मात्र आळंदीस खूप उच्च स्थान आहे. आळंदीचा सुसूत्र, सविस्तर असा इतिहास उपलब्ध नाही. काही त्रोटक ऐतिहासिक उल्लेखांवरून आळंदीच्या इतिहासाचा अंदाज बांधावा लागतो.

अभ्यासक्षेत्र – आळंदी हे पुणे जिल्ह्यातील एक छोटे नगर (Town) आहे. ते पुणे जिल्ह्यातील खेड तालुक्याच्या आग्नेय कोपऱ्यात इंद्रायणी नदीच्या काठी उत्तर तटावर वसलेले आहे. आळंदीचे अक्षवृत्तीय स्थान १८°६७'८३'' उत्तर असून व रेखावृत्तीय स्थान ७३°८९'५०'' पूर्व असे आहे. गावची मूळची वस्ती सघन प्रकारची आहे. आता त्या गावाभोवती संयुक्त आणि प्रकीर्ण वसाहती निर्माण झालेल्या आहेत. गावातून सहा बाजूंनी सहा रस्ते बाहेर जातात. दक्षिण दिशेस पुण्याकडे रस्ता जातो. पश्चिमेस चिंबळीकडे, वायव्येस चाकणकडे, उत्तरेस पद्मावतीकडे, ईशान्येस वडगांव घेणंदमार्गे शेल पिंपळगांवकडे, पूर्वेस मरकळमार्गे वाघोलीकडे असे रस्ते जातात. आळंदीच्या दक्षिण, आग्नेय सीमेवर चऱ्होली बुद्रुक, दक्षिण सीमेवर डुडुळगांव, पश्चिम सीमेवर केळगांव, उत्तर व पूर्व सीमेवर चऱ्होली ही गावे आहेत. यातील दोन हवेली तालुक्यात आहेत.



उद्दिष्टये –
१. आळंदीचा प्राचीन इतिहास अभ्यासणे
२. आळंदीच्या भौगोलिक स्थानाचा अभ्यास करणे.

गृहितत्व – आळंदी हे प्राचीनकाळी सिद्धसाधूंचे तपस्थान असून मध्ययुगीन काळी त्यास गावाचे रूप आले.

बीजसंज्ञा — धार्मिक पर्यटनस्थळ, प्राचीन इतिहास.

अभ्यासपद्धती — सदर शोधनिबंधासाठी पुस्तके, प्राचीन ग्रंथ, ऐतिहासिक नोंदी,यांचा आधार घेतलेला आहे. त्या आधारे विश्लेषण केलेले आहे

विषय विवेचन — आळंदी हे गाव म्हणून फारसे प्राचीन नसले तरी हे क्षेत्र म्हणजेच तीर्थक्षेत्र म्हणून फारच प्राचीन आहे

आळंदीचा सर्वात प्राचीन उल्लेख स्कंद पुराणातील सह्याद्री खंडात येतो. पुराणांमध्ये आळंदीचा 'आळंदी' असा उल्लेख नाही. त्यास सिद्धक्षेत्र म्हटलेले आहे. याशिवाय पुराणांमध्ये आळंदीस आनंदविपिन, वरूणा, कपिल, अलका, अशी नावे आहेत. (अभ्यंकर २०१६)

बऱ्याच विद्वानांच्या मताप्रमाणे पुराणे ही इसवीसन पूर्व ३०० ते इ.स. ६०० या काळात रचली गेली असावीत. (चौधरी २००२) याप्रमाणे विचार केला असता, आळंदी क्षेत्राचा इतिहास जास्तीतजास्त इ.स.पू. ३०० वर्षापर्यंत नेता येईल. पण पुराणांच्या मतानुसार आळंदी हे एखादे गाव नसून ऋषींचे तपश्चर्या करण्याचे ठिकाण असावे असे दिसते. आनंदविपिन या शब्दावरून हे वनक्षेत्र असावे असे वाटते. कारण विपिन याचा अर्थ वन असा होतो.

आळंदी ही ज्ञानेश्वरांच्या पूर्वीच तीर्थक्षेत्र म्हणून गणली गेली होती. संत एकनाथ महाराज आळंदीचा उल्लेख जुनाट तीर्थक्षेत्र असा करतात.

सर्व सुखाची लहरी । ज्ञानाबाई अलंकापुरी ।१।।
शिवपीठ हे जुनाट । ज्ञानाबाई तेथे मुकुट ।।२।।
वेदशास्त्र देती ग्वाही । म्हणती ज्ञानाबाई आई ।।३।।
ज्ञानाबाईचे चरणी । शरण एका जनार्दनी ।।४।। (संपा. खरात २०१५)

याबाबतीत प्रसिद्ध संतसाहित्य संशोधक डॉ.शं.दा.पेंडसे म्हणतात, 'आळंदी हे मूळचे सिद्धेश्वराचे क्षेत्र आहे. पण तेथेही ज्ञानेशांच्या पूर्वीच विठ्ठलाची उपासना चालू झाली होती.' (पेंडसे १९६९)

दुसरीकडे एका ठिकाणी ते म्हणतात, 'अलंकापुरीला सिद्धेश्वराचे स्थान असल्यामुळे ते जुनाट शिवपीठ म्हणूनच त्यावेळी प्रसिद्ध होते.'(पेंडसे १९६९)

ज्येष्ठ संतसाहित्य संशोधक भा.पं.बहिरट म्हणतात, 'सिद्धेश्वराचे स्थान ज्ञानेश्वरांच्या जन्माअगोदरच प्रसिद्ध होते. स्कंदपुराणात, सह्याद्री खंडात ६४ व्या अध्यायात आळंदीस वारूणा, अलका, कणिका, आनंद, सिद्धक्षेत्र अशी नावे आहेत.'(बहिरट १९७२)

स्कंद पुराणातील सह्याद्रीखंडाच्या ६४व्या अध्यायात पुढील उल्लेख आलेला आहे —

कृते चानंदविपिनं त्रेताया वारूणं स्मृत ।
द्वापारे कपिलं ज्ञेयं । अलकाख्य कलौयुगे ।।

अर्थ — कृतयुगात म्हणजे सत्ययुगात या क्षेत्रास आनंदविपिन असे म्हणत असत. त्रेतायुगात वारूण, द्वापारयुगात कपिल तर कलीयुगात अलका असे म्हणतात.

अलका आणि अलंकापुरी यांचे उच्चारसाधर्म्य विलक्षण आहे. ग.ह.खरे यांच्या मते अलका या शब्दाचे अलंकापुरी हे रूपांतर म्हणजे संस्कृतकरण होय. वारूण आणि कपिल ही दोन नावे मात्र कुणी वापरलेली दिसत नाहीत. संत नामदेव आणि संत तुकाराम यांनी अलंकापुरी हे नाव अनेकदा वापरलेले आहे. यावरून असे सिद्ध होते की आळंदी हे ज्ञानेश्वरांच्या फार पूर्वीपासून अस्तित्वात होते.

आळंदी हे नाव देखील बरेच जुने असावे असे वाटते. तसेच पुणे जिल्ह्यातील क्षेत्र हे शके ६९० (इ.स.७६८) मध्ये राष्ट्रकूटांच्या अखत्यारीत होते. तळेगाव दाभाडे येथे त्याकाळातील एक ताम्रपट सापडला आहे. त्या ताम्रपटात आळंदीचा 'अळंदिय' असा उल्लेख आलेला आहे. मात्र तो या आळंदीचा उल्लेख नसून चोराच्या आळंदीचा आहे असे विद्वानांचे मत आहे. (अभ्यंकर २००६)

"या नावाचा सर्वात जुना उल्लेख शके ६९० च्या कृष्णराज राष्ट्रकूटाच्या तळेगाव ताम्रपटात आलेला आहे. यात करहाटक देश सहस्त्रातील ब्राह्मणांना पुनक विषयातील कुमारीग्राम (कोरेगांव मुळा)

नावाचा दान केलेला आहे. या गावाच्या सीमा सांगताना अलंदिय व थिऊर या गावच्या पूर्वेस हे गाव असल्याचे सांगितले आहे. अलंदिय म्हणजे हल्लीचे नोर आळंदी.'' (खरे शके १८५३)

हा उल्लेख ज्ञानेश्वरांच्या देवाच्या आळंदीचा नसला तरी तरी त्यावरून देवाच्या आळंदीचे अस्तित्व लक्षात यायला हरकत नसावी. ज्याअर्थी त्याकाळात नोराची आळंदी अस्तित्वात होती त्या अर्थी देवाची आळंदी अस्तित्वात असणार हे उघड आहे. नोराच्या आळंदीइतके देवाची आळंदीही प्राचीन असावी असे वाटते.

सध्याच्या ज्ञानेश्वर महाराज मंदिराच्या पश्चिमेस एक समाधी आहे. ती समाधी हरिहरेंद्र स्वामींची असून हरिहरेंद्र स्वामी हे नाथ संप्रदायाचे होते. त्या समाधीवर शिलालेख कोरलेला आहे. यावरून वि.का.राजवाडे यांनी असा निष्कर्श काढलेला आहे की आळंदी हे गाव मध्ययुगीन असावे (अभ्यंकर २००६)

हरिहरेंद्र स्वामींच्या समाधीचा जीर्णोद्धार करीत असताना ३ समाध्या सापडल्या. यापैकी उजव्या हातच्या एका समाधीवर ग.ह.खरे यांच्या मते एक लेख आहे. तो यादवकालीन आहे.

१. ।। स्वस्ती ।। श्रीकृष्णस्वामीराय ।।
२. ।। नारायण शके ११३१ चैत्र व ।।
३. ।। द्य १० भोमवासर ।।० ।।

डाव्या बाजूच्या समाधीच्या देवळावर पुढील लेख आहे –

१. बापू श्री दादे न
२. मा.

हरिहरेंद्र स्वामींच्या देवळाच्या पाठीमागे पुढील लेख आहे –

१. श्री वीठळ तुको
२. बा पांडुरग नाराय
३. ण सीवराम:

हा शिलालेख शके ११३१ (इ.स.१२०९) सालचा असल्याने त्याकाळी आळंदी हे गांव चांगले सुस्थापित होते असे ठरते. अर्थात हा काळ संत ज्ञानेश्वर महाराजांच्या सुमारे एक शतक अगोदरचा आहे. आळंदी ही त्याही अगोदरची असावी. (खरे १९३१)

आळंदी हे क्षेत्र ज्ञानेश्वरांच्या पूर्वीही गाव या स्वरूपात अस्तित्वात होते काय? याविषयी डॉ.शं. दा. पेंडसे म्हणतात, 'ज्ञानेशांच्या पूर्वीच आळंदीत विठ्ठलाची उपासना चालू होती. तेथील शके ११३१ मध्ये झालेल्या कृष्णस्वामींच्या समाधीवर विठ्ठल रखुमाईच्या मूर्ती आहेत.' (पेंडसे १९६९) कृष्णस्वामी हे ज्ञानेश्वरांपूर्वी सुमारे ६० वर्षे आधी होवून गेले आहेत.

ज्ञानेश्वर महाराजांच्या जन्मापूर्वीच आळंदी हे एक सुस्थापित खेडे होते. संत ज्ञानेश्वर महाराजांच्या जन्मानंतर आळंदीचा एक वेगळाच विख्यात इतिहास सुरू झाला. इ.स. १२७३ मध्ये आळंदीच्या पश्चिमेकडील सिद्धबेटावर विठ्ठलपंत गोविंदपंत कुलकर्णी यांच्या पोटी निवृत्तीनाथांचा जन्म झाला. १२७५ साली ज्ञानेश्वर महाराजांचा, १२७७ साली सोपानदेवाचा आणि १२७९ साली मुक्ताईचा जन्म झाला. त्यानंतरचा आळंदीचा इतिहास वेगळा आहे.

निष्कर्ष –

१. आळंदी हे प्राचीनकाळी गाव नसून एक वनक्षेत्र होते.
२. आळंदीस पूर्वी आनंदविपिन वारूणा, कपिला आणि अलका अशी नावे होती.
३. आळंदी हे गाव स्वरूपात इ.स. ३०० ते ६०० या दरम्यान केव्हातरी उदयास आले असावे.
४. इ.स. ११०० नंतर आळंदी हे चांगले सुस्थापित खेडे होते.

संदर्भ ग्रंथ –

१. अभ्यंकर शंकर (२००२) – भक्तिकोश खंड ५ – भारतीय मंदिरे व तीर्थक्षेत्रे, आदित्य प्रतिष्ठाण पुणे, पृ.१०६८,१०६९, १०७१.

२ अभ्यंकर शंकर (२००२) — भारतीय संत — भक्तिकोश खंड २, आदित्य प्रतिष्ठाण पुणे पृ ५४०, ५४१

३ खरात रंगनाथ (सप्टें २०१५) — वारकरी संप्रदायिक भजनी पालिका, राहुल धार्मिक वाङ्मय सेवा प्रकाशन, श्री क्षेत्र आळंदी देवाची पृ ११९,२१०,

४ खरे ग ह (१९३१) — श्री क्षेत्र आळंदी, भारत इतिहास संशोधक मंडळ पुरस्कृत ग्रंथमाला क्र २७ शके १८५३ पृ १०,१३

५ चौधरी प का (२००२) प्राचीन भारताचा इतिहास व संस्कृती, विद्या कृष्ण पब्लिशर्स औरंगाबाद पृ २६४

६ चहिरट भा पं, भालेराव प ज्ञा (१९७२) — वारकरी संप्रदाय: उदय आणि विकास, व्हिनस प्रकाशन पुणे पृ ५२, १७८, १७९, १८०

७ डेणारे पुष्पाताई, (२०१८) श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज चरित्र, राहुल धार्मिक वाङ्मय सेवा प्रकाशन, आळंदी देवाची पृ.२०

८ पैंडसे ज ना (१९६९) — ज्ञानदेव आणि नामदेव — कॉन्टिनेंटल प्रकाशन पुणे. पृ.२४५,३६२

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Narayanrao Rane Mahavidyalaya Badnera

ISSN No 2347-7075
Impact Factor: 7.328
Volume-1 Issue-2

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH



Publisher: **P. R. Talekar**
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

202

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN - 2347-7075
Impact Factor - 7.328
Vol.1 Issue-2 Sept- 2021

CONTENTS

Sr No	Paper Title	Page No
1	राष्ट्रीय एकीकरण Dr. Sanjay Tukaram Waghmare	1-3
2	जागतिकीकरण आणि अनुवादित मराठी साहित्य प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र बंदारे	4-8
3	आंतरराष्ट्रीयत्ववाद प्रा. मोहन भाऊसाहेब सावंत	9-11
4	जागतिकीकरणाचे भारतीय संस्कृतीवर झालेले परिणाम : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास प्रा. लक्ष्मण बापूराव नैताम	12-14
5	सोलापूर जिल्ह्यातील कृषी तंत्रज्ञानाचा एक अभ्यास प्रा.पवार एस.एच., प्रा. मगर एस. बी.	15-17
6	महाराष्ट्र कुपोषण आणि राजमाता जिजाऊ माता-बाल आरोग्य व पोषण अभियान प्रा. नितिन विश्वनाथ खरात, प्राचार्य डॉ. रविंद्र भा. पागस	18-21
7	वर्धा जिल्ह्यातील रस्ते वितरणाचा भौगोलिक अभ्यास प्रा. बुद्धपोष म. लोहकरे	22-25
8	कैमेझम एक ऐतिहासिक अभ्यास प्रा. सुहास रामचंद्र नलावडे	26-32
9	जगतिकीकरणाचा अरुण काळे आणि अजिम नवाज राही याच्या कवितेवर प्रभाव डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे	33-38
10	भारतातील कोरोना काळातील विद्यार्थी वर्गावर झालेला परिणाम – एक विश्लेषण प्रा. विजय देविदास वाकोडे	39-43
11	वैश्वीकरण में अनुवाद का महत्व प्रा. किसन भानुदास वाघमोडे	44-47
12	जागतिकीकरणाचा मराठी ग्रामीण साहित्यावरील प्रभाव प्रा.डॉ. जनार्धन परकाळे	48-52
13	१९७० च्या दशकातील भारताचे परराष्ट्र धोरण प्रा. सुहास रामचंद्र नलावडे	53-57
14	प्रसार माध्यम आणि शाश्वत विकास डॉ. बालाजी लक्ष्मणराव शिंदे	58-60
15	वैश्वीकरण और भारतीय समाज प्रा. रज्जाक शेख	61-62
16	राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण प्रा. मोहन भाऊसाहेब सावंत	63-67
17	भारतीय यांत्रिकीकरण : सद्यस्थिती व भविष्यातील दिशा डॉ.बी.टी.निकम	68-72
18	जागतिकीकरणात आर्थिक क्षेत्रात उद्योगपती रतन टाटा यांचे योगदान डॉ.मनीषा जगदीशलाल वर्मा	73-79
19	विट्ठल रामजी शिंदे यांचे धार्मिक विचार श्री. तेलसंग हनमंत भिमराव	80-81
20	जागतिकीकरणाचे प्रखर चित्रण करणारी कथासंग्रह 'गुलाबी मिर्च - द पिंक हेवेड डक' प्रा. डॉ. अशोक गौरीशंकर माळगे	82-85
21	पर्यावरणविषयक चळवळी डॉ. हरी साधू वाघमारे	86-91
22	जागतिकीकरणाचा कृषी क्षेत्रावरील परिणाम अंकिता नरहरराव पुटाणे	92-102
23	खानदेशी लेवा-पाटीदार समाजाच्या सांस्कृतिक जीवनाचा चिकित्सक अभ्यास दादासाहेब मारुतराव डॉ.ओमप्रकाश सूर्दे	103-108

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.1 Issue-2 Sept- 2021

आळंदी येथे येणाऱ्या पर्यटकांच्या प्रादेशिक वितरणाचा भौगोलिक अभ्यास

दादासाहेब मारकड[1] डॉ.ओमप्रकाश मुंदे[2]
[1]सहाय्यक प्राध्यापक हुतात्मा राजगुरू महाविद्यालय राजगुरूनगर ता.खेड, जि.पुणे.
[2]सहयोगी प्राध्यापक, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा, जि.अमरावती

सारांश -

आळंदी हे महाराष्ट्रातील एक महत्वाचे पर्यटनस्थळ आहे. हे वारकरी संप्रदायाचे श्रद्धास्थान आहे. आळंदी संपूर्ण महाराष्ट्रात आणि देशातील काही राज्यातही प्रसिद्ध आहे. वारकरी संप्रदाय हा पूर्ण महाराष्ट्रात पसरलेला आहे. त्यामुळे पूर्ण महाराष्ट्रातून आळंदी येथे पर्यटक येत असतात. या शोधनिबंधात आळंदी येथे येणाऱ्या पर्यटकांच्या प्रादेशिक वितरणाचा अभ्यास केलेला आहे.

प्रस्तावना -

आळंदी हे पुणे जिल्ह्यातील एक महत्वाचे तीर्थक्षेत्र आहे. हिंदू धर्मातील वारकरी पंथातील श्रध्दास्थान असलेले ते पुण्यधाम आहे. थोर संत, ज्ञानेश्वर महाराज आणि त्यांची भावंडे यांचे ते कार्यक्षेत्र आहे. वारकऱ्यांच्या दृष्टीने काशीपेक्षाही पंढरपूरचे महत्व अधिक आहे. परंतु संत नामदेव महाराज म्हणतात,

भू वैकुंठ एक पंढरी । त्याहुनि अधिक अलंकापुरी ।
सिद्धेश्वरसोजारी । इंद्रायणी ।
पंढरीहून हे सोपे । जनाची हयवया पापे ।
कलिकाळ कोपलिया कोपे। न चले अलंकापुरासी । (अभंगांकर २००८)

वारकरी संप्रदायाच्या परंपरेनुसार वैकुंठादि आठ पीठे आहेत. त्यापैकी आळंदी हे जुनाट शिवपीठ आहे. शिवपीठ हे जुनाट । ज्ञानाबाई तेथे मुकुट या आळंदीचा महिमा शैवशास्त्रात (स्कंदपुराणात आला आहे. (वक्ते वि.सं. २०६८) पवित्र इंद्रायणी नदीचे काठी श्री क्षेत्र अलंकापुरी (आळंदी) वसलेले आहे. अलंकापुरी हे क्षेत्र पुरातन काळापासून पवित्र व प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र आहे. या क्षेत्रासारखे त्रैलोक्यात दुसरे पावन क्षेत्र नाही. प्राचीन काळी आळंदी भोवतालचा प्रदेश अरण्यमय होता व त्यास आनंदवन असे नाव होते. असे याचे वर्णन स्कंद पुराणातील सह्याद्रीखंडात आलेले आहे. (खरात २००४) कृतयुगात आनंदवन त्रेतायुगात वरूण, द्वापारयुगात कपिल आणि कलियुगात अलंकापुरी अशी निरनिराळ्या युगात या आळंदीला नावे लाभलेली आहेत. श्री अलंकापुरी क्षेत्र हे ज्ञानेश्वर महाराज यांच्या अभोदयापासून प्रसिद्ध आहे. (वेणारे २०१८) आळंदीचे माहात्म्य अनेक साधु संतांनी, भाविकांनी, साहित्यिकांनी मुक्त कंठाने वर्णन केलेले असल्याने आळंदी अतिशय महत्वाचे धार्मिक पर्यटनस्थळ बनलेले आहे.

बीजसंज्ञा – धार्मिक पर्यटक, तीर्थक्षेत्र, प्रादेशिक वितरण, प्रशासकीय विभाग

उद्दिष्ट्ये -

१. आळंदी धार्मिक पर्यटनस्थळी येणाऱ्या पर्यटकांचे प्रादेशिक विभागनिहाय वितरण अभ्यासणे.
२. आळंदी येथे येणाऱ्या पर्यटकांचे जिल्हानिहाय वितरण अभ्यासणे.

गृहितके -

१. आळंदी हे प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटनस्थळ असल्याने संपूर्ण महाराष्ट्रातून आळंदी येथे पर्यटक येतात.
२. अंतरानुसार पर्यटकांच्या संख्येत बदल होतो.

अभ्यासपद्धती -

दादासाहेब मारकड डॉ.ओमप्रकाश मुंदे

आळंदी येथे येणाऱ्या पर्यटकांकडून दोन पद्धतीने प्रश्नावली भरून घेतली. लॉकडाऊनच्या काळामध्ये ऑनलाईन पद्धतीने १७१ लोकांकडून प्रश्नावली भरून घेण्यात आल्या. तसेच अनेक पर्यटकांकडून प्रत्यक्ष पद्धतीने प्रश्नावली भरून घेतल्या. या प्रश्नावलीव्यतिरिक्त वारकरी शिक्षण संस्थेतील अहवालामधील देणगीदारांच्या यादीचा अभ्यास केला. त्यावरून आळंदी येथे येणाऱ्या पर्यटकांच्या मूळ स्थान लक्षात आले. कोठून किती पर्यटक येतात हे निश्चित केले. त्याची टक्केवारी काढून राज्य, प्रदेश आणि जिल्हानिहाय वितरण नकाशा आणि आलेखाच्या साहाय्याने दर्शविलेले आहे.

विश्व विवेचन -

आळंदी या तीर्थक्षेत्रावर तीर्थयात्रा आणि पर्यटन करण्यासाठी भारत देशातील विविध राज्यांमधून तसेच महाराष्ट्रातील विविध जिल्ह्यांमधून पर्यटक येत असतात. आळंदी हे पुणे जिल्ह्यातील खेड तालुक्यात इंद्रायणी नदीच्या काठी वसलेले तीर्थक्षेत्र आहे. आळंदी हे धार्मिक पर्यटनस्थळ तर आहेच, शिवाय आळंदीपासून २० कि.मी. अंतरावर पश्चिमेस देहू, २७ कि.मी. अंतरावर दक्षिणेस पुणे, याशिवाय निमगांव, तुळापूर, शेऊर, रांजणगांव या पर्यटनस्थळांचे सानिध्य यामुळे आळंदीस संपूर्ण महाराष्ट्रातून पर्यटक येतात.

१. **पर्यटकांचे राज्यनिहाय वितरण** - आळंदी येथे येणाऱ्या पर्यटकांपैकी यादृच्छिक नमुना पद्धतीने निवडलेल्या ५०० पर्यटकांपैकी वेगवेगळ्या राज्यांतून येणाऱ्या पर्यटकांची संख्या पुढीलप्रमाणे आढळून आली.

अ.क्र.	राज्य	पर्यटकांची संख्या	टक्केवारी
१.	महाराष्ट्र	४९४	९८.८
२.	मध्यप्रदेश	२	०.४
३.	पंजाब	१	०.२
४.	गोवा	१	०.२
५.	कर्नाटक	१	०.२
६.	तेलंगाणा	१	०.२
	एकूण	५००	१००

टेबल क्र.१ - राज्यनिहाय पर्यटकांची संख्या (स्त्रोत - अभ्यासकाने केलेले सर्वेक्षण)

त्यांबरोबरच शेजारच्या काही राज्यांमधूनही आळंदी येथे पर्यटक येत असलेले दिसून येतात. मात्र त्यांचे प्रमाण फारच कमी आहे. विविध राज्यांतील पर्यटक पुढीलप्रमाणे आहेत.

महाराष्ट्र - सर्वांत जास्त पर्यटक हे महाराष्ट्र राज्यातील आहेत. त्यांची संख्या ४९४ असून त्यांची टक्केवारी ९८.८ टक्के इतकी आहे. याचे कारण आळंदी हे क्षेत्र महाराष्ट्र राज्यात आहे. तसेच आळंदी हे प्रामुख्याने वारकरी संप्रदायाचे तीर्थक्षेत्र आहे. वारकरी संप्रदायाचा सर्वांत जास्त प्रसार महाराष्ट्रात झालेला आहे. आळंदी हे संत ज्ञानेश्वर महाराजांचे जन्मस्थान आणि समाधीस्थान आहे. संत ज्ञानेश्वर महाराजांचे सर्व वाङ्मय मराठी भाषेमध्ये आहे. त्यामुळे त्यांना मानणारा, त्यांची भक्ती करणारा वर्ग हा सर्वांत जास्त महाराष्ट्रातच आहे. त्यामुळे सर्वाधिक म्हणजे ९८.८ टक्के पर्यटक हे महाराष्ट्रातील आहेत.

मध्यप्रदेश - हे राज्य महाराष्ट्राच्या शेजारी आहे. तसेच त्या राज्यात अठराव्या शतकात शिंदे आणि होळकर या मराठा सरदारांचे राज्य असल्याने तेथे मराठी संस्कृतीचा आणि वारकरी संप्रदायाचा काही प्रमाणात प्रसार झालेला आहे. म्हणून मध्यप्रदेशातीलही काही पर्यटक आळंदीस भेट देतात. या अभ्यासाच्या सर्वेक्षणामध्ये मध्यप्रदेशातील २ व्यक्ती या मध्यप्रदेशातील असल्याचा आढळून आलेल्या आहेत.

गोवा, कर्नाटक आणि तेलंगणा - ही राज्ये महाराष्ट्राच्या शेजारी असल्याने तेथूनही आळंदीस काही पर्यटक येतात. या राज्यांतून प्रत्येकी एक पर्यटक आढळून आलेला आहे.

पंजाब – हे सर्व महाराष्ट्रापासून दूर आहे मात्र मात्र पंजाबमध्ये संत नामदेव महाराज आणि त्या दोघेजणांनी तीर्थयात्रा केलेली होती तसेच संत नामदेव महाराजांनी पंजाब राज्यात वास्तव्य संप्रदायाचा प्रसार केलेला आहे त्यामुळे त्या राज्यातून आळंदी येथे भाविक येत असतात सर्वेक्षण घेतले असताना पंजाब राज्यातील एक पर्यटक आढळून आला आहे

प्रशासकीय विभागनिहाय वितरण –

महाराष्ट्रामध्ये एकूण सहा प्रशासकीय विभाग आहेत. कोकण, पुणे, नाशिक, औरंगाबाद, अमरावती आणि नागपूर या सर्व प्रशासकीय विभागातून आळंदी येथे पर्यटक येत असतात सर्वेक्षणा दरम्यान या सर्व प्रशासकीय विभागातून खालीलप्रमाणे पर्यटक आल्याचे दिसून आले आहे

अ.क्र	विभाग	पर्यटकांची संख्या	टक्केवारी
	कोकण	४६	९.३१
	पुणे	१६२	३२.८४
	नाशिक	९७	१९६३
	औरंगाबाद	१३०	२६.३१
	अमरावती	३७	७.४८
	नागपूर	२२	४.४५
	एकूण	४९४	१००

टेबल क्र. २ विभागनिहाय पर्यटकांची संख्या (स्त्रोत – अभ्यासकाने केलेले सर्वेक्षण)

वरील आकडेवारी आणि वर्तुळालेखावरून सर्वसाधारणपणे असे लक्षात येते की, आळंदी या पर्यटनस्थळापासूनचे विविध विभागांचे अंतर जसजसे वाढत जाते तसतशी पर्यटकांची संख्या कमी होत जात आहे. कोकण विभाग मात्र त्यास थोडासा अपवाद आहे. आळंदीस येणाऱ्या पर्यटकांचे विभागनिहाय वितरण पुढीलप्रमाणे आहे.

पुणे विभाग –

आळंदी येथे येणाऱ्या पर्यटकांपैकी सर्वांत जास्त पर्यटक हे पुणे विभागातील आहेत. आळंदी हे तीर्थक्षेत्र मुळातच पुणे जिल्ह्यात असल्याने सर्वांत अधिक पर्यटक हे पुणे विभागातील आहेत. पुणे विभागात पुणे, सोलापूर, सातारा, सांगली आणि कोल्हापूर हे जिल्हे आहेत. एकूण ५०० पर्यटकांपैकी सुमारे १६२ म्हणजे ३२.४४ टक्के पर्यटक हे पुणे विभागातील असल्याचे आढळून आलेले आहे.

औरंगाबाद विभाग –

औरंगाबाद विभाग दुसऱ्या क्रमांकावर आहे. नाशिक विभाग आणि मुंबई विभाग पुणे आळंदीस भौगोलिकदृष्ट्या जवळ असूनही औरंगाबाद विभागातून त्यांच्यापेक्षा जास्त पर्यटक आलेले दिसतात. याचे कारण मुळातच औरंगाबाद विभाग मोठा आहे. तसेच औरंगाबाद विभागात वारकरी संप्रदायावर श्रद्धा असणाऱ्या लोकांचे प्रमाण अधिक आहे. औरंगाबाद विभागातील औरंगाबाद, बीड हे जिल्ह्यातील पर्यटकांचा आळंदीकडे येण्याचा ओढा मोठ्या प्रमाणात दिसून येतो. सर्वेक्षण केलेल्या पर्यटकांपैकी १३० म्हणजे २६.३१ टक्के पर्यटक हे औरंगाबाद विभागातील असल्याचे आढळून आलेले आहे.

नाशिक विभाग –

नाशिक विभागातील पर्यटक तिसऱ्या क्रमांकावर आहेत. नाशिक विभाग आळंदीपासून जवळ आहे. नाशिक विभागात नाशिक, अहमदनगर, धुळे, जळगांव आणि नंदुरबार हे जिल्हे येतात. नाशिक विभागातून ९७ म्हणजे १९.६३ टक्के पर्यटक होते असे आढळून आले.

कोकण विभाग –

कोकण विभागाचा विचार करता मुंबई महानगर क्षेत्रातून अन्य जिल्ह्यातून येणाऱ्या पर्यटकांचे प्रमाण फारच कमी आहे. याचे मुख्य कारण कोकणात वारकरी संप्रदायाचा फारसा प्रभाव नाही. त्यामुळे मुंबईतून आळंदीस येणारे बरेचसे पर्यटकही मूळचे कोकणातील नसून ही देशावरून जाऊन मुंबईस स्थायिक झालेले लोक आहेत. कोकण विभागातून ४६ म्हणजे ९.३१ टक्के पर्यटक असलेले आढळून आलेले आहेत.

अमरावती विभाग -

अमरावती विभाग विभाग हा आळंदीपासून दूर अंतरावर आहे. तसेच या विभागात वारकरी संप्रदायाचा प्रसार आणि प्रचार कमी आहे. या विभागात बुलडाणा, अकोला, वाशिम, अमरावती, आणि यवतमाळ हे पाच जिल्हे अमरावती विभागात येतात. अमरावती विभागातून ३७ म्हणजे ७.४८ पर्यटक आळंदीस आलेले आहेत. त्यातही सर्वात जास्त पर्यटक हे बुलडाणा जिल्ह्यातून आहेत. बुलडाणा हा जिल्हा अमरावती विभागातील इतर जिल्ह्यांच्या तुलनेत आळंदीस जवळ आहे. तसेच त्या जिल्ह्यातील क्षेत्रात येथे वारकरी शिक्षण संस्था आहे. संत गजानन महाराजांची मोठी दिंडी आळंदी येथे येत असते.

नागपूर विभाग -

नागपूर विभागातून सर्वात कमी पर्यटक आळंदी येथे येत असल्याचे आढळून आलेले आहे. नागपूर विभाग हा आळंदीपासून सर्वात दूर आहे. तसेच त्या विभागात वारकरी संप्रदायाचा प्रसारही फारच कमी आहे. नागपूर विभागातून केवळ २२ म्हणजे ४.४१ टक्के पर्यटक आळंदीस येत असल्याचे दिसून आलेले आहे. त्यातही सर्वात जास्त म्हणजे १७ पर्यटक केवळ नागपूर जिल्ह्यातील आहेत. इतर जिल्ह्यातून नगण्य पर्यटक असल्याचे दिसून आले आहे.

कोकण, अमरावती आणि नागपूर हे विभाग अंतराच्या दृष्टीने आळंदीपासून दूर आहेत. कोकण आणि विदर्भात वारकरी संप्रदायाचा प्रसारही कमी आहे. वारकरी संप्रदायातील संत ज्ञानेश्वर महाराज, निवृत्तीनाथ, सोपानदेव, मुक्ताबाई, (आळंदी), संत नामदेव (पंढरपूर) संत चोखामेळा, दामाजीपंत (मंगळवेढा - सोलापूर) नरहरी सोनार (पंढरपूर) सावता माळी (अरण - सोलापूर), गोरा कुंभार (तेरढोकी - मराठवाडा) जनाबाई (पंढरपूर), संत एकनाथ (पैठण - औरंगाबाद), संत तुकाराम (देहू) संत निळोबाराय (पिंपळनेर - अहमदनगर) बहिणाबाई सिऊरकर (जळगांव) ही सर्व संतमंडळी पश्चिम महाराष्ट्र किंवा मराठवाड्यातील आहेत. हे संत विदर्भ किंवा कोकणातील नाहीत. विदर्भामध्ये संत गाडगेमहाराज, संत तुकडोजी महाराज, गजानन महाराज असे संत होऊन गेलेले आहेत. परंतु ते वारकरी संप्रदायिक संत म्हणता येणार नाहीत. त्यामुळे विदर्भात वारकरी संप्रदायाचा फारसा प्रसार नाही. शिवाय विदर्भाचे भौगोलिक अंतर आळंदीपासून दूर असल्याने पर्यटकांचे प्रमाण कमी आहे.

पर्यटकांचे जिल्हानिहाय वितरण -

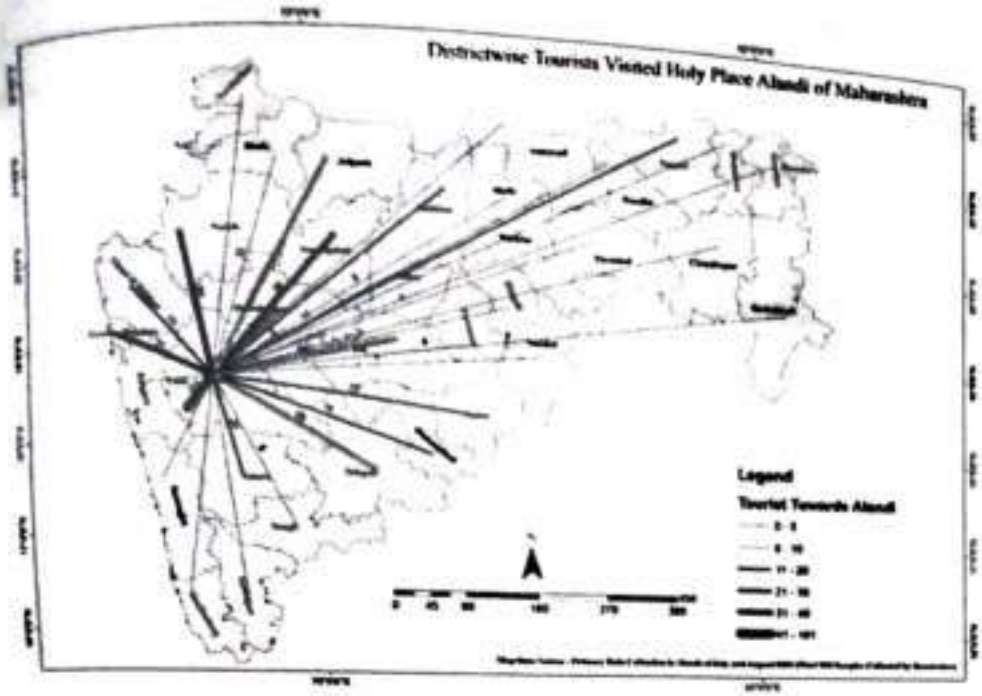
आळंदीत येणाऱ्या पर्यटकांचे जिल्हानिहाय वितरण पुढीलप्रमाणे आहे.

कोकण विभाग			
अ.क.	जिल्हा	पर्यटकांची संख्या	टक्केवारी
१.	मुंबई	३१	६.२७
२.	पालघर	२	०.४
३.	ठाणे	७	१.१४
४.	रायगड	४	०.८
५.	रत्नागिरी	१	०.२
६.	सिंधुदुर्ग	१	०.२
पुणे विभाग			
७.	पुणे	१०१	२०.४४
८.	सातारा	२०	४.०४
९.	सांगली	८	१.६१
१०.	कोल्हापूर	४	०.८
११.	सोलापूर	२९	५.८७
नाशिक विभाग			
१२.	नाशिक	३८	७.६९
१३.	अहमदनगर	२३	४.६५
१४.	धुळे	१०	२.०२

१५	जळगांव	२४	४.८१
१६.	नंदुरबार	२	०.४
	औरंगाबाद विभाग		
१७	औरंगाबाद	३६	१७.२८
१८.	जालना	१४	२.८३
१९.	परभणी	६	१.२१
२०	नांदेड	५	१.०१
२१.	उस्मानाबाद	१८	३.६४
२२.	हिंगोली	२	०.४
२३.	लातूर	१९	३.८४
२४.	बीड	३०	६.०७
	अमरावती विभाग		
२५.	अमरावती	६	१.२१
२६.	बुलढाणा	१५	३.०३
२७.	अकोला	९	१.८२
२८.	वाशिम	३	०.६
२९.	यवतमाळ	४	०.८
	नागपूर विभाग		
३०.	नागपूर	१७	३.४४
३१.	वर्धा	३	०.६
३२.	भंडारा	१	०.२
३३.	गोंदिया	०	०
३४.	चंद्रपूर	१	०.२
३५.	गडचिरोली	०	०
	एकूण	४९४	१००

टेबल क्र. ३ पर्यटकांची जिल्हानिहाय संख्या (स्त्रोत - अभ्यासकाने केलेले सर्वेक्षण)

पर्यटकांची संख्या	जिल्हे	जिल्ह्यांची संख्या
० ते ५	रायगड, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, कोल्हापूर, नंदुरबार, नांदेड, हिंगोली, वाशिम, यवतमाळ, वर्धा, भंडारा, गोंदिया, चंद्रपूर, गडचिरोली,	१४
६ ते १०	सांगली, धुळे, परभणी, अमरावती, अकोला,	५
११ ते २०	सातारा, जालना, उस्मानाबाद, लातूर, बुलढाणा, नागपूर ठाणे व पालघर	८
२१ ते ३०	सोलापूर, अहमदनगर, जळगांव, बीड	४
३१ ते ४०	मुंबई, नाशिक, औरंगाबाद	३
४१ ते १०१	पुणे	१



वरील आकडेवारी आणि नकाशावरून असे लक्षात येते की, गोंदिया आणि गडचिरोली हे दोन जिल्हे वगळता सर्व महाराष्ट्रातून आळंदी येथे पर्यटक येत असतात. आळंदीपासून जसजसे अंतर वाढत जात आहे तसतशी पर्यटकांची संख्या कमी झालेली सर्वसाधारणपणे दिसते. परंतु या नियमाला काही अपवादही दिसून येत आहेत. नागपूरपेक्षा रायगड, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, कोल्हापूर, परभणी,हिंगोली इत्यादि जिल्हे जवळ असूनही नागपूरहून आळंदीला येण्याचे पर्यटकांचे प्रमाण त्या जिल्ह्यांपेक्षा अधिक आहे. आळंदीपासून सातारा, सोलापूर, हे जिल्हे जवळ असूनही औरंगाबाद येथून येणाऱ्या पर्यटकांचे प्रमाण अधिक आहे. नागपूर, औरंगाबाद ही शहरे लोकसंख्येने मोठी आहेत. त्यावाही हा परिणाम असू शकतो. तसेच आळंदीच्या उत्तर आणि ईशान्य दिशेकडून आळंदीला येणाऱ्या पर्यटकांचे प्रमाण अधिक आहे.

निष्कर्ष -

१. संपूर्ण महाराष्ट्रातून आणि महाराष्ट्राबाहेरूनही आळंदी येथे पर्यटक येतात.
२. आळंदीपासून जसजसे अंतर वाढत जाते तसतसे पर्यटकांचे प्रमाण घटत जाताना दिसते. मात्र नागपूर, औरंगाबाद, नागपूर हे जिल्हे त्यास अपवाद आहेत.
३. सातारा, सांगली, कोल्हापूर, रायगड, हे जिल्हे तुलनेने आळंदीला जवळ असूनही तेथून आळंदीकडे येण्याचे पर्यटकांचे प्रमाण कमी आहे.
४. आळंदीला येणारे सर्वात जास्त पर्यटक हे पुणे विभागातून येतात. तर सर्वात कमी नागपूर विभागातून येतात.
५. अतिपूर्वेकडील भंडारा, गोंदिया, चंद्रपूर, गडचिरोली, आणि अति दक्षिणेकडील रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग येथून आळंदीस येणाऱ्या पर्यटकांचे प्रमाण नगण्य आहे.

संदर्भ ग्रंथ -

१. अभ्यंकर शंकर (२००८) - भक्तिकोश खंड ५ भारतीय मंदिरे व तीर्थक्षेत्रे, आदित्य प्रतिष्ठान पुणे.
२. वर्वते निवृत्ती (वि.सं. २०६८). ब्रह्मचैतन्यलाडगांव अर्थात श्री मुक्ताबाई चरित्र व गाथा, गीता प्रेस गोरखपूर पृ. ३९१
३. खरात रंगनाथ (२००४) अशी ही अलंकापुरी, राहुल वार्मिक वाङ्मय सेवा प्रकाशन, आळंदी देवाची पृ. १४,१५ ४.
४. हेणारे पुष्पाताई (२०१८) श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज चरित्र, राहुल धार्मिक वाङ्मय सेवा प्रकाशन आळंदी देवाची, पृ. १९

AH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

International Peer reviewed Referred Research Journal

Issue-37, Vol-06 Jan. to March 2021

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Jan. To March 2021
Issue 37, Vol-06

Date of Publication
01 Feb. 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही न्यायक्षेत्र:बीड

*Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Call 07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

INDEX

01) HUMAN RIGHTS AND WOMEN
Dr.SUDHIR PRAKASHRAO DINDE, Dist.- Jalna ||13

02) An Analytical Study of Challenges before Higher Education in the Current ...
Dr. Mangesh Ramesh Bhavsar, Nashik ||16

03) Dynamics impact of paper mill effluents on water and soil in Indapur ...
Jayashri Bhore, B.I.Gatkul & Shinde M.P., Dist - Pune ||19

04) STUDY OF MANIKGAD HISTORICAL FORT IN CHANDRAPUR DISTRICT WITH THE ...
Dr. Omprakash B. Munde, Amravati ||22

05) Exploitation, Gender Discrimination and Domestic Violence : A Study of ...
Asst. Prof. Vilas A. Pundkar, Dist. Akola ||25

06) Importance of E-Banking in Financial progress
AMITA LACHHWANI & SHAILESH KUMARI, Gwalior (M.P.) ||28

07) The anatycial study FDI and its significance of the U.P. Industrial ...
Anamika Sharma, Gwalior (M.P.) ||30

08) RIGHT TO INFORMATION- POWER TO THE PEOPLE OF NATION- ANALYTICAL ...
Manaswini Singh & Maryam Ishrat Beg ||32

09) भारतातील स्त्रीयांचा सामाजिक – आर्थिक दर्जा
प्रा.भांडवलकर बी.एन., ता.जि.बीड ||39

10) महात्मा गांधी यांचे विश्वस्तासंबधीचे विचार : एक अवलोकन
प्रा. आनेराव एम.एम., जि. नांदेड ||41

11) सुफी संत : शेख महंमद
प्रा.डॉ. संतोष देशमुख, औरंगाबाद ||46

12) गणित अध्यापनात संकल्पना नकाशा (Concept Mapping) चा वापर
प्रा.डॉ.सौ. विजया विठ्ठल बाविस्कर, नंदुरबार ||50

www.vidyawarta.com/03 http://www.printsarea.blogspot.com

04

STUDY OF MANIKGAD HISTORICAL FORT IN CHANDRAPUR DISTRICT WITH THE HELP OF SATISFACTION INDEX

Dr. Omprakash B. Munde
Head, Dept. of Geography,
Naraynrao Rana Mahavidyalya, Amravati

Abstract

Tourism has a special place in the study of geography, different types of tourism fall and each has its own characteristics. Although forts, palaces, etc. are historical, these places are more important in the study of geography as tourism. Today, there are many forts and forts in Maharashtra that are very ancient but many tourists still do not know about them. As a result, such tourist destinations have been neglected and their original condition has deteriorated.

In the present research, the historical fort of Manikgad located in Chandrapur district has been studied with the help of Satisfaction Index.

Keywords: Satisfaction index, Manikgad, tourists, development

Introduction

At the time when the entire Vidarbha was ruled by the Rashtrakuta Chalukya dynasty, a fort was built on the Manik hill in Korpana taluka (old Rajura taluka) of Chandrapur district. The fort is called 'Manikgad' as it is built on a hill called Manik. In the ninth century, the kings of the Nagavanshi Mana caste, east of the Wainganga river, established their rule at Manikgad. King Gahilu of the same dynasty developed the fort to protect his empire. The fort had strong fortifications with walls and bastions. Manika Devi is an adored deity of the Mana dynasty and it is due to her grace that the Mana people succeeded in the southern region of Chandrapur district.

In the present study, information about Manikgad fort has been given and this place has been studied with the help of Satisfaction Index from the point of view of tourism.

Objectives

The main objectives of the present study as follows,

To analyze the information and present condition of Manikgad fort

Drawing of Manikgad fort satisfaction index according to the components of tourism system

Data Source & Methodology

Information source of present paper is based on the both primary and secondary source. The information about Manikgad forte is collected from District gazetteers, socioeconomic review, tourist atlas, local offices etc.

The satisfaction index of this tourist place is calculated by conducting field survey, There are total 100 questionnaire was filled out from 100 tourist visiting to this forte. Satisfaction index of tourists is based on the major six factors of tourism development i.e. accommodation, travel, food arrangement, tourist arrangement, behavior of local public, and other basic arrangements (drinking water, entertainment, mobile network etc). The tourists were asked to give the marks of tourism arrangement according to their availability. Total 8 to 10 marks for best arrangement, 5 to 7 marks for good arrangement and 0 to 4 marks for satisfactory or poor arrangement of tourism. On the basis of marking of tourists Satisfaction Index is calculated with the helpof following formula,

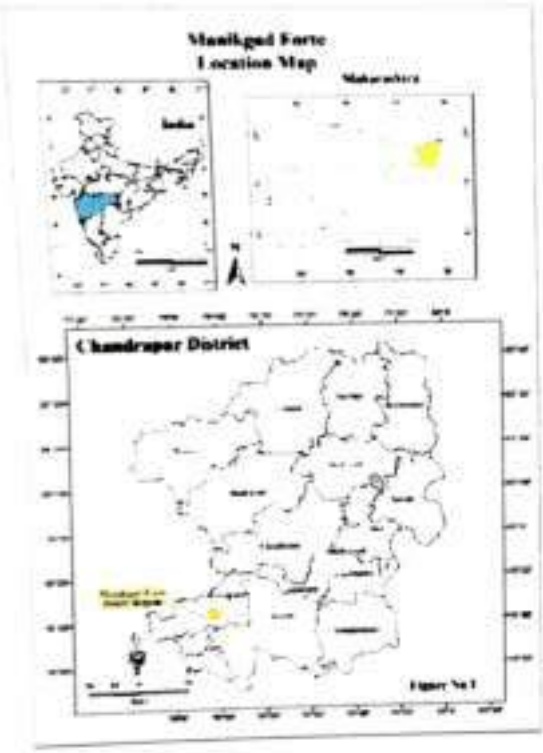
Sli = (Mi x Ni) ÷ N

Sli – Satisfaction index
Mi – Number of tourists according to the marks
Ni – Average satisfaction marks
N – Total number of tourists

The complied values and calculated values are tabulated and arranged in the table. Also component wise satisfaction index is shown in the graph.

Study Region

Manikgad forte is located in Korapana tahsil which is separated from Rajura tahsil of Chandrapur district. This fore geographically conflicts 19° 40' 32" north latitude and 79° 07' 38" east longitudes. The average height of this Manikgad forte is near about 507 meter from above mean sea level.



Transport Accessibility and Accommodation Facility

There are several trains are available from Nagpur railway station to Chabdrapur railway station and local passenger trains are available from Chandrapur to Korapana.

Manikgad forte is located near about 35 km from Chandrapur city and Korapna is connected to Chandrapur from Road and Railway both network. Maharashtra State Road Transport buses provide services regularly from Chandrpaur to Krapana. Auto rickshaw, private vehicles are available from Korapna to Manikgad forte.

The accommodation facility is available in Chandrapur city and Korpna city but no major accommodation facility is available near Manikgad forte.

About Manikgad Forte

There is an image of a serpent in the front part of the main entrance of Manikgad fort. On the right side of the main entrance of this fort, a 3 meter high coiled image of a cobra can be seen carved in stone. In some places, cotton handicrafts are carved on the entrance. There is also another entrance to the fort which dates back to the Yadav period, as the entrance has carvings and domes. Upon entering through the second entrance, there appears to be cannon, made of beads. The gun is about 320 meters long and is found to have a vent. The interior of the fort looks like a dome-shaped structure with a large cylindrical bastion adjoining the ramparts. There is also an ancient well inside the fort and it is found that there is a subway with steps in this well.

There is evidence that the Gond queen Hirai ruled this place from 1704 to 1719 AD. However, later, around 1751 AD, Manikgad was under the control of Bhosale of Nagpur.

Satisfaction Index of Tourist in Manikgad Forte

Satisfaction index helps to understand the expectations of tourists about tourist center. Average satisfaction of tourists visited in Manikgad forte is shows in table no 1.

Table no 1 shows the maximum marks obtained to the good behavior of local publics near Manikgad forte. Local citizens helps tourist about tourist place. Traveling and meal arrangement got the highest marks after local public. Other facilities got lower marks from tourists.

Accommodation facilities are also not well developing near Manikgad therefore this

management also got low marks from tourists.

Table No 1- Average Satisfaction (Mi)

Components of Management	Number of tourists giving points according to management factor		
	Best	Good	Satisfactory
Accommodation	33	31	36
Travel	57	34	9
Meal	52	21	27
Tourist system	42	21	37
Local Public	63	27	10
Other Arrangement	39	31	30

Source – Author

The average satisfaction marks of tourist are shown in table no 2. Maximum average mark is obtained by Meal facility in Manikgad. Local food of this place is most like by tourists. Cooperation of local people near Manikgad has second highest average scoring of best satisfaction. There is fluctuation found in other faculties

There are differences among many tourists regarding other arrangements. Tourists who like historical objects and natural structures do not attach much importance to other arrangements. So the tourists who like entertainment, fast food etc. give less marks to other arrangements as there is no other arrangement available here other than the viewing arrangement of the fort.

Table No 2 - Average Satisfaction Marks (Ni)

Components of Management	Average Satisfaction Marks		
	Best	Good	Satisfactory
Accommodation	7.79	4.77	3.03
Travel	7.70	5.15	5.11
Meal	9.65	5.81	3.22
Tourist system	7.17	4.00	1.97
Local Public	8.70	5.41	4.10
Other Arrangement	8.10	3.35	2.63

Source – Author

Table no 3 shows the component wise satisfaction index of Manikgad forte. The satisfaction index is calculated with the help of formula which is mentioned in methodology.

There are total 33 tourists gives best marks in between 8 to 10 to accommodation facility. Average of their marks is 7.79 and total numbers of tourist which are selected for survey are 100. Thus the satisfaction index of accommodation facility is,

[(33 x 7.79) ÷ 100] + [(31 x 4.77) ÷ 100] + [(36 x 3.03) ÷ 100] = 5.14

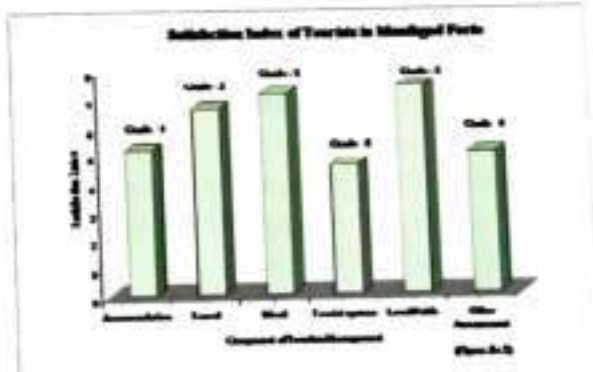
Therefore the satisfaction index of accommodation facility in Manikgad is 5.14 (Table No 3).

Table No 3 - Satisfaction Index with Category by Management Component (Sli)

Components of Management	Satisfaction Index	Grade
Accommodation	5.14	4
Travel	6.6	3
Meal	7.11	2
Tourist system	4.58	5
Local Public	7.35	1
Other Arrangement	4.99	6

Source – Author

Tourists seem to be happier with the cooperation of the locals in Manikgad, hence the satisfaction index of this system is more. So the local food available here makes people feel more delicious later. Satisfaction index is found in the third place of transport system, while accommodation system is found in fourth place. The satisfaction system shows that the viewing system of this fort is not very developed. The tourist satisfaction index shows that there is a need to develop darshan system and other arrangements in this place



Conclusions and Suggestions

Manikgad fort is made of basalt rock and the ramparts of this fort are also made of black basalt rock. Apart from the main entrance to the fort, other entrances are in a completely dilapidated condition and are on the verge of destruction. In many places the remains of the entrance door are not visible; the wells in this fort are completely clogged with mud in its present condition. Due to this bad condition, other ruins of

the fort are also on the verge of extinction. Considering the safety of the tourists, the entire area of the fort is infested with violent animals, so there is a risk of loss of life to the tourists.

If the fort is maintained and repaired by the tourism department as well as the local administration and if the fort area is properly conserved, this tourist spot will be developed and employment opportunities will be available to the locals as well as self-employment.

The satisfaction index shows that the viewing system of the fort is not developed. It is also necessary to develop other recreational facilities to attract tourists. In order to facilitate transportation to this fort, the tourism department should organize a tourist package at least once a year so that tourists can come directly to the fort. If the tourism system is developed as per the tourist satisfaction index, this tourist destination will prosper and tourists will visit in large numbers.

Reference

1) Socioeconomic review of Chandrapur District (2019),

2) en.wikipedia.org

3) Funde Ravindra, (2006), "Geographical Study of Chandpur Tourist Place", Bhugolshastra Sanshodhn Patrika, Deccan Geography Society, Pune, pp 59-69.

4) Waindeshkar A and Bhendkar S (2009), "Amravati Shahar : Paryataniya Drushtikonse Bhaugolik Adhyayan", Maharashtra Bhugolshastra Sanshodhan Patrika, Pune, Vol-XXIII, Issue - 2, July-December 2009.

❑❑❑

05

Exploitation, Gender Discrimination and Domestic Violence : A Study of Vijay Tendulkar's Sakharam Binder

Asst. Prof. Vilas A. Pundkar
HOD (English),
Shri Narsing Art's College Akot, Dist. Akola

Abstract :

Vijay Tendulkar is the leading post-independence playwright. His plays has focused on the evil taking place in the society. Sakharam Binder is written in year 1972. The play Sakharam Binder explores complexities of human nature. The play is entitled after the name of major male character i.e., Sakharam. It shows how a woman is considered to be an object or thing that one can keep in the showcase and which can be easily brought and sold, exploited, used and finally threw away. The paper attempts to show how women as the victims and sufferers in so called patriarchal Indian Society.

Women have been treated inferior in the male dominated society. Violence against women exists everywhere. They have been subjected to several restrictions. Discrimination against girls actually starts in the womb. Female fetuses are aborted and another important reason for the discrimination against the female foetuses is the fear of heavy dowry. Then are also discriminated against in term of health and education. Even today there are many cases of discrimination and domestic violence and many ways in which women are need to suffer. The dominating nature of male thrown women in to a well of oppression of every kind. Such condition of women is shown by Vijay Tendulkar in Sakharam Binder.

The play Sakharam Binder explores com-

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2021

SPECIAL ISSUE- CCLXIX (269)







Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor :
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe ArtsComm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Evaluation of Maharashtra's Jalyukta Shivar Abhiyan — **Dr. Santosh Shankarrao Pharande**	1
2	Family Instability Involvement For Child Upbringing — **Dr.Anjali Chandrakant Pande**	5
3	A New Perspective on Health Issues in the Wake of Pandemic: Reference to Covid-19. — **Dr Nitin W. Deulkar**	9
4	Regional Pattern Of Agricultural Development In Amravati District — **Dr. Omprakash B Munde**	12
5	Innovative Approaches To Event Management Edcuation In Career Development — **Dr. Patil Bhagwan Shankar**	18
6	Educational and Health Status in Child Home — **Dr. Sarika N. Dandge (Bodade)**	25
7	Electronic Resource Management System of Academic Library — **Dr. Shubhangi P. Ingole**	28
8	Indian Higher Educaiton Policy 2020: Achievements And Objectives — **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil**	33
9	Enhancing Library Services Using QR Code Technology — **Prof. Deepa D. Patil**	41
10	Human Rights and Environmental Rights — **Mrs. Rohini S. Dhikale**	44
11	An Empirical Study on Women Empowerment through Self- Help Groups(SHG'S) — **Pranita Anand Giri**	48
12	A Study Of Online Education In Lockdown Period — **Prof.Dr.Rita.R.Raut**	56
13	Plagiarism - Need for specific, drasticLegislations — **Ranjita Madiwale (Sharvari Vaidya)**	61
14	Nutrition for Fitness, Athletics and Sports — **Dr.Nitin N. Jangitwar**	65
15	Women In India And Careers — **Dr.Sucheta Parker**	68
16	Reflection of lord buddha's aura in matthew arnold's 'shakespeare' — **Vinay M. Vasule**	73
17	Ethno-Medicinal Plants Used for Immunity Increase — **Dr.Sarita Ghanghat**	79
18	Buddhist economic ethics for a ruler for welfare of human society — **Prof. Dr. Pratibha A.Bhorjar**	84
19	Buddhist approach to human society development: economic ethics for a ruler — **Prof. Dr. Ashok N.Bhorjar**	86
20	The problem of poverty and Remidies for its Eradication : The Biddhist Approach — **Prof. Dr. Archana Bobade**	88

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 269 (CCLXIX)
ISSN : 2278-9308
January, 2021

Regional Pattern Of Agricultural Development In Amravati District

Dr. Omprakash B Munde
Head, Dept. of Geography, Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera

Abstract

Agriculture is the backbone of an Indian economy and in average 70% population is engaged in agriculture and related work. The socio economic development is also depended on the agricultural development. Before the study of any regional development it is necessary to study the agricultural development of particular region because it is the basic and main part of any economy.

Present research work carried out to analysis the regional pattern of agricultural development of Amravati district on the basis of selected indicators.

Keywords

Regional pattern, agricultural, development, z-score

Introduction

Agriculture plays a crucial role in the basic economy and it is the backbone of an Indian economic system. It not only provides food and raw material but also employment opportunities to a very large proportion of employment. Agriculture is the main source of livelihood, national income, international trade marketing, raw material etc.

Present work has reveals the analysis of regional pattern of agricultural development in Amravati district on the basis of five indicators, i) number of iron ploughs, ii) number of electric pumps for irrigation, iii) number of tractors, iv) net sown area, v) irrigation area to net sown area.

Study Region

Amravati district is situated on east of Maharashtra state. This district is main district of Amravati Division; there are total 14 tahsil included in the district. The district lies between 20^0 33' N to 21^0 47' N latitudes and 76^0 43' E to 78^0 24' E longitudes (Map No 1).

Total geographical area of district is 12210 sq.km and total population is 2888445 according to the census year 2011.

Objectives

The main objectives of the present research paper as follows,

i) To determine an analysis the regional pattern of agricultural development in the study region

ii) To evaluate the regional disparities in the level of agricultural development of Amravati district.

iii) Calculate an analysis the correlation between agricultural population and agricultural development in the study region.

Data Source & Research Methodology

The data source of the present research work is based on the secondary source of data. It is collected from Socioeconomic Review of Amravati district and District Office of Agriculture, Amravati. The analysis is based on the year 2016-2017.

The regional pattern of agricultural development has been determined on the basis of five indicators

X1 – Numbers of iron plough

X2 – Number of electrical pump used for irrigation

X3 – Numbers of tractors

X4 – Net sown area

X5 – Percentage of irrigated area to net sown area

With the help of above indicators the development is determined with the help of calculations of z-scores. The composite scores of the z-score values provided index of development. The formula of the z-score as follows,

Z-score = Xi – X ÷ O

Z = Standard score for observation

Xi = Original value of observation

X = Average of all values of X

O = Standard deviation of X

Tahsil wise composite scores are calculated with the help of following formula

Composite Score = X1 + X2 + X3+ X4+ X5

Results of z-score values and composite scores are shown in the table and development is shown in the map of the study region. Also correlation between agricultural population and development is shown in the regression line.

Regional Pattern of Agricultural Development

Tahsil wise values of z-scores and the composite score are shown in the table no 1.

Table No 1

Amravati District: Z-score and Composite Score of all Indicators

Tahsil Name	X1	X2	X3	X4	X5	Composite Score
Dharani	-0.69	-0.86	0.57	-1.11	-0.67	-2.76
Chikhaldara	-1.81	-0.72	-1.66	0.98	-0.65	-3.87
Anjangaon Surji	-0.24	-0.28	0.05	-0.34	1.30	0.51
Achalpur	0.39	0.36	0.75	0.64	0.07	2.21
Chandur Bazar	0.39	1.10	0.35	0.39	-0.04	2.20
Morshi	1.34	2.77	0.01	2.10	1.95	8.17
Warud	0.93	0.01	-0.89	0.28	2.01	2.34
Tiwasa	0.07	0.38	0.28	-1.10	-0.75	-1.12
Amravati	-0.70	0.27	-0.02	1.10	-0.79	-0.14
Bhatkuli	-0.03	-0.80	0.25	-0.92	-0.76	-2.26
Daryapur	-0.88	0.01	2.51	-0.22	-0.47	0.94
Nandgaon Khandeshwar	-0.23	-0.04	-0.44	0.25	-0.55	-1.01
Chandur Railway	-0.68	0.10	-1.25	-0.75	-0.18	-2.76
Dhamangaon Railway	2.12	-0.62	-0.50	-1.30	-0.48	-0.79

Source: - Calculated by Researcher

The composite score is divided into four groups to determine the level of agricultural development of the region. Composite score below '0' value considered as very low level of agricultural development, values in between 0 to 1 as low development, values in between 1 to 5 as moderate development a and the values more than 5 considered as high level of agricultural development.

Very Low Agricultural Developed Region

In the region total 8 tahsils are included in this category i.e. more than 50% area of the district is till undeveloped in agriculture. Chikhaldara tahsil has found lowest agricultural development because of the rough topography and forest cover. There are no tractors are used in this tahsil for the agriculture pattern. Also technique of agriculture pattern is not developed in yjis tahsil of the district.

Dharani, Chandur Railway, Bhatkuli, Tiwasa, Nandgaon Khandeshwar, Dhamangaon Railway and Amravati tahsils are also included in this category. The instruments of agriculture are not tilled developed and imbalances of all indicators are the main reason for very low development.

Low Agricultural Developed Region

Anjangaon Surji and Daryapur tahsil recorded the values of composite score in between 0 to 1. The agricultural development of these tahsils is low level. The all values of z-scores in Anjangaon tahsil are negative except irrigation. Irrigation percentage of Anjangaon tahsil is good compare to other tahsils in low and very low category of the district.

Numbers of tractors are higher in Daryapur tahsil in the entire district but other indicators are not enough developed. Therefore the agricultural development of this tahsil is found in low category.

Table no 2 shows the four categories and tahsils included in each category,

Table No 2

Amravati District: Level of Agricultural Development (2016-2017)

Composite Score Category	Level of Agricultural Development	Tahsil Names
Below 0	Very Low	Chikhaldara, Dharani, Chandur Railway, Bhatkuli, Tiwasa, Nandgaon Khandeshwar, Dhamangaon Railway, Amravati
0 to 1	Low	Anjangaon Surji, Daryapur
1 to 5	Moderate	Chandur Bazar, Achalpur, Waud
Above 5	High	Morshi

Source: - Calculated by Researcher

Moderate Agricultural Developed Region

The moderate level of agricultural development found in Chandur Bazar, Achalpur and Warud tahsil respectively. The z-score index of irrigation in Chandur Bazar and index of tractor in Warud tahsil is negative. The instruments for agricultural land use pattern are quietly developed in these tahsil compare to the other part of the region.

Irrigation percentage is higher in Warud tahsil in the district. This belt is well irrigation belt in the district and it is positively impact to the regional development of agriculture in the district.

High Agricultural Developed Region

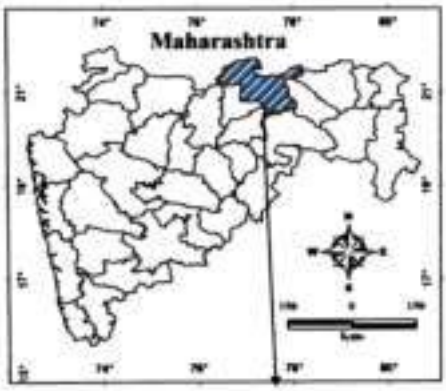
The high pattern of agricultural development found only Morshi tahsil of the district according to the value of composite score.

Number of electric pumps for irrigation and net sown area of this tahsil is higher in the entire district. Also irrigation facilities are quietly higher developed than other tahsils of the region. This belt is also known as orange belt of the district as well as Maharashtra state. The development of indicators for the agriculture is balanced comparatively other part of the district and therefore level of agricultural development is found high in Morshi tahsil (Map No 1).

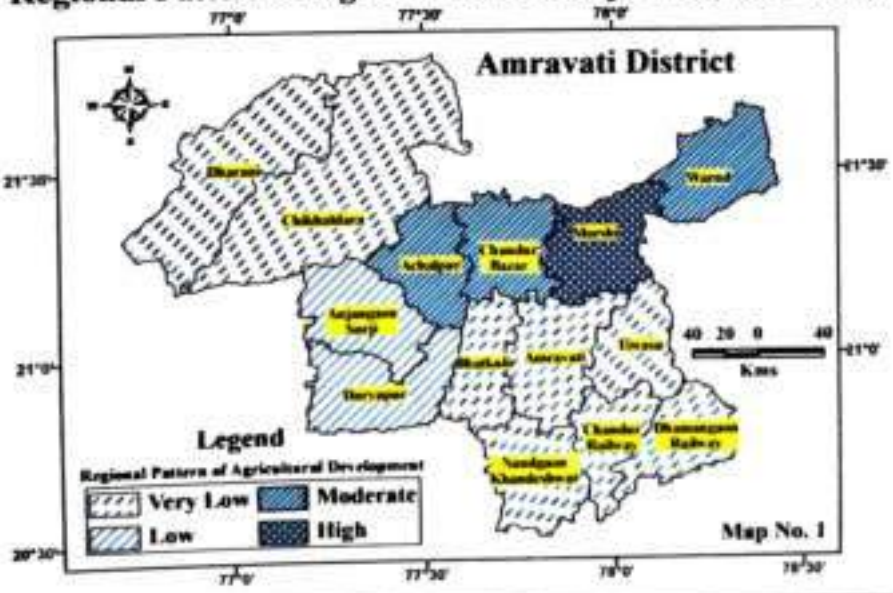
Amravati District

Location and Regional Pattern of Agricultural Development





Regional Pattern of Agricultural Development (2016-2017)

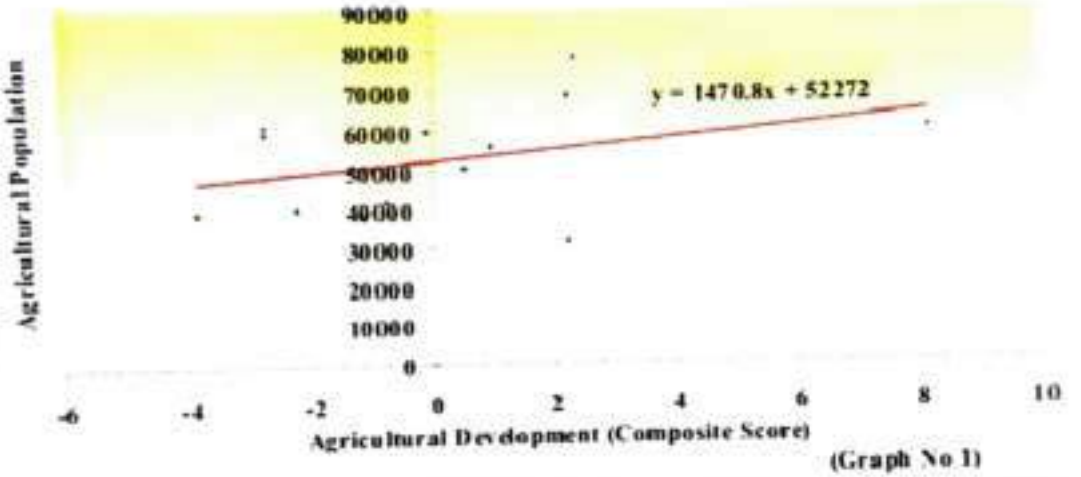


Correlation between Agricultural Population and Regional Pattern of Agricultural Development

The correlation between these two variables is found positive (r = + 0.33) and it is moderate. It means the change and growth of these two variables are in same direction but the in different speed. The growth of agricultural development in the district is slow than the growth of agricultural population.

The development of agriculture is not found according to the agricultural population and therefore the socioeconomic status of the agricultural population in the district is found in poor condition. It is necessary the balanced development of agriculture according to the population of the district (Graph No1).

Amravati District
Correlation between Agricultural Population and Regional Pattern of Agricultural Development



(Graph No 1)

Conclusion and Suggestions

The overall regional development of agriculture found low in the entire district. The physiography of the district is affected on the agricultural development of the region. The agricultural development in Chikhaldara and Dharani tahsil is the lowest in the region. This part is the tribal population and they till engaged in traditional methods for the agricultural land use. There are no uses of tractors found in Chikhaldara tahsil also low development of agricultural instruments and it is directly impact on the agricultural development of this tahsil.

Most of the agriculture production in the district is directly depended on rain water and the percentage of rainfall is low and irregular in the district. Also not even in all over the district. Irrigation facilities are very low developed in the region and it is also impact the agricultural development of the study region.

It is an essential to developed rain water harvesting techniques in all over the region also contribute the work in making of new reservoirs. It will help to improve ground water level and for the irrigation for agriculture.

It is also an important to help fund for the use of modern pattern of agriculture in tribal and below poor line agriculture population region. The overall agricultural development

of the region is uneven due to the imbalance distribution of indicators. Therefore Government should supply basic facilities and instruments for the development of agriculture. The agricultural development of the district will helps to improve socioeconomic status of the region.

References

1) Jadhav M.G., 1997, "Agricultural Development in Maharashtra: A Spatial Interpretation" (Trans. Inst. Indian Geographer).

2) Mishra B.N. & Mishra P., 2004, "Spatial Pattern and Level of Agricultural development in Jaunpur District U.P", Geographical Review of India, Vol No.66, No.2.

3) Pagar S.D., Borse N.B., Suryanwanshi D.S., 2008, "Spatial Pattern and Level of Agricultural Development in The Nashik District, Maharashtra" Maharashtra Bhugolshstra Sanshodhan Patrika, Vol.XXIII, No.1, Jan-June2008, pp.60-71.

4) Sohal K.S., 2004, "Level of Agricultural Development in Punjab", 1961 to 2001. National Geographer, Vol.39 No.1+2 (Jan-June, July-Dec.2004).

ISSN 2278-9820

National Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education

VISION RESEARCH JOURNAL FOR GEOGRAPHY & GEOLOGY

UGC Approved & Peer Reviewed Research Journal

Year - X, Issue - XIX, Vol. I

Impact Factor 6.50
(GRIFI)

Dec. 2020 To May 2021



EDITOR IN CHIEF

DR. JAIDEEP R. BOLUNKE

IMPACT FACTOR
6.50

ISSN 2278-9820

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education

VISION RESEARCH JOURNAL FOR GEOGRAPHY & GEOLOGY

UGC APPROVED,REFERRED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XIX, Vol. - I
Year - X (Half Yearly)
(Dec. 2020 To May 2021)

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Website

www.irasg.com

Contact : - 02382 - 241913
09423346913 / 09637935252
09503814000 / 7276301000

E-mail :
visiongroup@gmail.com
interlinkresearch@rediffmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :
JYOTICHANDRA PUBLICATION
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price ₹ 200/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Jaideep R. Solunke
Dept. of Geography,
Shri Panditguru Pardikar Mahavidyalaya,
Sirsala, Dist. Beed (M.S.)India

EXECUTIVE EDITORS

Dr. O. B. Munde
Head,Dept. of Geography,
Narayanrao Rana College,
Badnera (Rly.), Dist. Amravati (M.S.)

Dr. S. D. Waghmare
Head, Dept. of Geography,
Vasundhara Mahavidyalaya,
Ghatnandur, Dist. Beed (M.S.)

DEPUTY EDITORS

N. M. Rathod
Head, Dept. of Geography,
Shri Panditguru Pardikar
Mahavidyalaya,
Sirsala, Dist. Beed (M.S.)India

D. V. Zinjurde
Dept. of Geography,
Shri Panditguru Pardikar
Mahavidyalaya,
Sirsala, Dist. Beed (M.S.)India

CO-EDITORS

G. R. Zadke
Dept. of Geography,
Vasundhara Mahavidyalaya,
Ghatnandur, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Santosh Kanase
Dept. of Geography,
Janvikas Mahavidyalaya,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Dr. S. S. Tolmare
Dept. of Geography,
Yoganandswami Mahavidyalaya,
Vasmatnagar, Dist. Hingoli (M.S.)

Dr. Hari Waghmare
Head, Dept. of Geography,
Sambhaji Mahavidyalaya,
Murud, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Arun Hange
Head, Dept. of Geography,
Shivaji Mahavidyalaya
Renapur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Pandurang Achole
Head, Dept. of Geography,
Azad Mahavidyalaya,
Ausa, Dist. Latur (M.S.)

Issue - XIX, Vol.- I
VRJFGG
IMPACT FACTOR 6.50
ISSN 2278-9820
Dec. 2020 To May 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Assessment of A Geographical analysis of Rainfall Caractaristics in Paralitehsil **Dr. Jaideep Ramkrishna Solunke, Miss. Megha Martand Kulkarni**	1
2	Impact of COVID-19 on Geographical Diversity **Dr. Santosh H. Kanse**	8
3	To Study of the Population Growth, Density and Sex ratio In Beed district **B. R. Gurude, Dr. V. T. Naik**	13
4	Study of Environmental Education in India **Dr. P. B. Achole**	21
5	A study of average Rainfall amount and Rainy Days in Nanded District, Decade 2010 to 2020 **M. V. Narwade, Dr. S. D.Waghmare**	27
6	लातूर जिल्ह्यातील जनावरांचा बाजार नळेगाव - एक भौगोलिक विश्लेषण **डॉ. नामदेव संपतराव गौंड**	32
7	विदर्भातील जन्मदराचे भौगोलिक विश्लेषण **डॉ. ओमप्रकाश बी. मुंदे**	36
8	जलसिंचन आणि पर्यावरणीय बदल एक भौगोलिक अभ्यास **डॉ. अरुण केशवराव हांगे**	45
9	जालना जिल्ह्यातील शहरीकरणाच्या विकास दराचा अभ्यास **डॉ. देविदास सदाशिव केंद्रे**	53
10	लातूर जिल्ह्यातील भूमी उपयोजन व पिकाखालील क्षेत्र **डॉ. डी.जी. माने**	58
11	प्राणी व वनस्पती यांचे पृथ्वीवरील जैवविविधतेचा भौगोलिक अभ्यास **डॉ. सुर्यकांत लालचंद राठोड**	65
12	लातूर जिल्ह्याचे प्रादेशिक नियोजन आणि बदलती शेती **प्रा. श्रीमंत रघुनाथराव दोरवे**	72

Issue - XIX, Vol. - I
VRJFGG
IMPACT FACTOR 6.50
ISSN 2278-9820
Dec. 2020 To May 2021

7

विदर्भातील जन्मदराचे भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. ओमप्रकाश बी. मुंदे
भूगोल विभाग प्रमुख,
नारायणराव राणा महाविद्यालय,
बडनेरा रेल्वे, जि. अमरावती

Research Paper - Geography

सारांश

कुठल्याही प्रदेशातील जन्मदर हा त्या प्रदेशातील लोकसंख्या नियंत्रणाची स्थिती दर्शवित असतो. ज्या प्रदेशात जन्मदर अधिक असतो, अशा प्रदेशात लोकसंख्योचा भार अधिक आढळतो, तर ज्या प्रदेशात जन्मदर कमी असतो, अशा प्रदेशात लोकसंख्या नियंत्रणात आढळून येते.

विदर्भातील जन्मदर मागील दशकापेक्षा सध्या नियंत्रणात आलेला आहे, परंतू त्याचे प्रमाण सर्व जिल्हयात सारखे नसून त्यात तफावत आढळते. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये मध्ये महाराष्ट्र राज्यात पूर्वेकडे असणाऱ्या विदर्भातील जन्मदराचे जिल्हानिहाय अध्ययन करण्यात आलेले आहे. जनगणना, १९९१ २००१ व २०११ या काळातील एकूण जन्मदर प्रस्तुत संशोधनात अभ्यासण्यात आलेला आहे.

बीजसंज्ञा : विदर्भ, जन्मदर, लोकसंख्या, नियंत्रण, विकास

प्रस्तावना :

सध्या भारतातील जन्मदर हा २०१९ च्या अहवालानुसार दर १००० लोकसंख्येमागे १९ आहे, तर हा जन्मदर २०१८ पेक्षा १.४५ % नी कमी झालेला आढळतो महाराष्ट्र राज्यातील जन्मदर २०१८ च्या अहवालानुसार दर १००० लोकसंख्येमागे १६ असून १९९९ ते २०१८ याकाळात तो नियंत्रणात आलेला आहे.

विदर्भ प्रदेश म्हणजे महाराष्ट्राच्या पूर्वेकडील एकूण ११ जिल्हयांचा समूह आहे. या विदर्भ प्रदेशात देखिल जन्मदर १९९१ आणि २००१ पेक्षा २०११ या काळात नियंत्रणात दिसून येतो. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये विदर्भातील १९९१, २००१, व २०११ याकाळातील जन्मदराचे अध्ययन करण्यात आलेले आहे.

उददीष्टे :—

प्रस्तुत शोध निबंधाचे मुख्य उददीष्टे पुढीलप्रमाणे

१. अभ्यास प्रदेशातील जन्मदराचे जिल्हानिहाय अध्ययन करणे.
२. अभ्यास प्रदेशातील जन्मदरातील १९९१ ते २००१ व २००१ ते २०११ याकाळातील बदलाचा अभ्यास करणे.

माहिती स्त्रोत व अभ्यास पध्दती :—

प्रस्तुत संधोधन हे पूर्णपणे द्वितीय स्त्रोताद्वारे प्राप्त केलेल्या माहितीच्या आधारे पूर्ण केलेले आहे. आवश्यक आकडेवारी ही विदर्भातील जिल्हयांची जनगणना पुस्तीका, १९९१, २००१, २०११ तसेच सामाजीक-आर्थिक समालोचन व महाराष्ट्र राज्य सांख्यिकी गोषवारा यातून संकलीत करण्यात आलेली आहे.

जन्मदर व जन्मदरातील बदल पुढील सुत्राने काढण्यात आलेले आहे.

- **जन्मदर=(एकूण जन्मलेल्या बालकांची संख्या÷एकूण लोकसंख्या)X१०००**
- **जन्मदरातील बदल=चालु दशकातील जन्मदर—मागील दशकातील जन्मदर**

संकलीत केलेली आणि सुत्राच्या सहायाने काढलेली माहिती ही सारणी मध्ये दर्शविण्यात आली असून जनमदराचे वितरण हे नकाशामध्ये दर्शविले आहे तर बदल आलेखाच्या सहायाने दर्शविण्यात आलेला आहे.

अभ्यास प्रदेश :—

विदर्भ प्रदेशात अमरावती व नागपूर विभागाचा समावेश होतो. अमरावती विभागात एकूण ५ जिल्हे असून नागपूर विभागात एकूण ६ जिल्हयांचा समावेश होतो. अशा प्रकारे विदर्भात एकूण ११ जिल्हे असून विदर्भाचे एकूण भौगोलिक क्षेत्रफळ ९७४०९ चौ.कि.मी. असून ते महाराष्ट्र राज्याच्या ३१.६६ % आहे.

विदर्भाचा अक्षांश विस्तार १८°३९'उत्तर ते २१°४३'उत्तर व रेखांश विस्तार ७५°५६' पूर्व ते ८०°५९'पूर्व आहे. विदर्भाची २०११ च्या जणगणनेनुसार एकूण लोकसंख्या २३०१२५५७ असून महाराष्ट्र राज्याच्या २०.४८ % आहे. विदर्भातील अमरावती विभागात अमरावती, अकोला, यवतमाळ, वाशिम, बुलढाणा तर नागपूर विभागात नागपूर, वर्धा, चंद्रपूर, गडचिरोली, भंडारा व गोदिया या जिल्हयांचा समावेश

Issue - XIX, Vol. - I
VRJFGG
IMPACT FACTOR 6.50
ISSN 2278-9820
Dec. 2020 To May 2021

होतो.

जन्मदर (१९९१, २००१ व २०११) :–

जन्मदर हा १००० लोकसंख्येमागे काढला जात असतो. विशिष्ट वेळी त्या प्रदेशातील एकूण एक हजार लोकसंख्येमागे जेवढया बालकांचा जन्म होतो, त्याला जन्मदर असे म्हणतात. सरणी क्र. १ मध्ये १९९१, २००१ व २०११ च्या जणगणनेनुसार विदर्भातील जिल्हयानिहाय एकूण जन्म झालेल्या बालकांची संख्या व जन्मदर दर्शविलेला आहे.

सारणी क्र. १

विदर्भ :– एकूण जन्मदर १९९१, २००१, २०११

जिल्हे	१९९१		२००१		२०११	
	एकूण जन्म झालेली बालके	जन्मदर	एकूण जन्म झालेली बालके	जन्मदर	एकूण जन्म झालेली बालके	जन्मदर
बुलढाणा	४९४२१	२६.२०	४९७८४	२२.३०	५६१२१	२१.७०
अकाला	४८२७१	२१.८०	३६१९१	२२.२०	४१५३८	२२.९०
वाशिम			१५८१३	१५.५०	२१६६८	१८.१०
अमरावती	५८७४१	२६.७०	५७८७८	२२.२०	५३७२५	१८.६०
यवतमाळ	३६९७३	१७.८०	४१७९०	१७.००	५२९५१	१९.१०
वर्धा	२३८०२	२२.३०	२४४८७	१९.८०	१६३८९	१२.६०
नागपूर	७५९३२	२३.१०	७४४३७	१८.३०	५३५१६	११.५०
भंडारा	४६१५७	२१.९०	२६३५८	२३.२०	२१००५	१७.५०
गोंदिया			२७८५६	२३.२०	२२२१८	१६.८०
चंद्रपूर	४८०१९	२७.१०	४१००७	१९.८०	३८३५४	१७.४०
गडचिरोली	१५६६१	१९.९०	२१७३४	२२.४०	२१६७३	२०.२०
एकूण प्रदेश	४०२९७७	२३.१६	४१७३३५	२०.२३	३९९१५८	१७.३५

स्त्रोत : जणगणना अहवाल व महाराष्ट्र राज्य सांख्यिकी गोषवारा

जन्मदर (१९९१) :–

विदर्भ प्रदेशातील संपूर्ण म्हणजेच एकूण जन्मदर १९९१ या [redacted] होता म्हणजेच दर १००० लोकसंख्येमागे सरासरी २३ ते २४ बालकां[redacted]ये आढळून आले. १९९१ या वर्षी ४०२९७७ इतक्या नविन जन्मा[redacted].

झालेली होती.

१९९१ मध्ये चंद्रपूर (२७.१०), अमरावती (२६.७०), आणि बुलढाणा (२६.२०) या जिल्हयात जन्मदराचे प्रमाण अधिक होते. अमरावती व चंद्रपूर जिल्हयात प्रामुख्याने आदिवासी क्षेत्रात हे प्रमाण अधिक असल्याचे आढळते. यवतमाळ (७७.८०) तर गडचिरोली (१९.९०) जिल्हयात एकूण जन्मदराचे प्रमाण हे दर हजार लोकसंख्येमागे सरासरी २० पेक्षा कमी होते तर इतर जिल्हयात हे प्रमाण २१ ते २४ दरम्यान आढळते.

जन्मदर २००१ :—

विदर्भात १ मे १९९९ रोजी अकोला जिल्हयातून वाशिम आणि भंडारा जिल्हयातून गोंदिया हे दोन जिल्हे वेगळे करण्यात आले त्यामुळे प्रदेशात एकूण जिल्हयांची संख्या ११ झाली.

२००१ या वर्षी विदर्भात एकूण जन्मदर हा २०.२३ आढळून आला व तो १९९१ पेक्षा थोडा नियंत्रणात होता. याकाळात भंडारा व गोंदिया या दोन जिल्हयात जन्मदर हा २३.२० होता व तो प्रदेशात सर्वाधिक होता. गडचिरोली जिल्हयात मात्र १९९१ च्या तुलनेत जन्मदर २००१ मध्ये वाढलेला आढळतो. या भागात असलेली कमी साक्षरता हे अनियंत्रीत जन्मदाराचे प्रमुख कारण असल्याचे लक्षात येते. याकाळात वाशिम (१५.५०), यवतमाळ (१७), नागपूर (१८.३०), चंद्रपूर व वर्धा (१९.८०) या जिल्हयातील जन्मदर २० पेक्षा कमी होता तर इतर जिल्हयातील जन्मदर दर हजार लोकसंख्येमागे २० ते २३ आढळून आला.

नकाशा क्र. १, २ व ३ मध्ये १९९१, २००१, २०११ याकाळातील जन्मदर अनुक्रमे दर्शविला आह.

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Peer Reviewed International Research Journal of Geography

Maharashtra Bhugolshastra Sanshodhan Patrika

MBP-Vol-37,No.2, Jul-Dec 2020

(ISSN: 0971-6785) Impact Factor 4.567 Renew(IIFS)

महाराष्ट्र भूगोलशास्त्र संशोधन पत्रिका

Maharashtra Bhugolshastra Parishad

महाराष्ट्र भूगोलशास्त्र परिषद

www.mbppune.org.in

Peer Reviewed International Research Journal of Geography

Maharashtra Bhugolshastra Sanshodhan Patrika

MBP Vol.37 No.2 Jul-Dec 2020

(ISSN 0971-6785) Impact Factor 4.567 Renew(IIFS)

- Sugarcane Production in India: Study on Growth and Instability
  Dr. Rajendra N. Kolekar, Mr. Ramakant Narayan Kanpate
- "Urban Water Consumption : A Micro Level Study of Pimpri Chinchwad"
  Dr. Ramakant Narayan Kanpate
- Pic Index Of Railway Connectivity In Amravati District
  Dr. Gopikash B. Munde
- Road Transportation : "A Journey from mass mobiliser to Mass killer"
  Miss Pradnya A. Deshpande, Dr. Ramesh V. Tidmale
- Assessment of Soil Suitability for Fruits Cultivation in Dhule District (M.S.)
  Dr. More Suresh Chintaman
- Impact of Green Revolution on the Sustainability of rice-wheat Cropping Pattern and Crop Productivity in Ganga basin
  Uzma Parveen, Padmaja Mondal
- Geographical Study of Population Nutritional Density in Ambajogai Taluka, Dist. Beed
  Dr. Landge S.S.
- Dynamics Of Urban Landuse land Cover And Planning For Future Development Of Gokak Town Of Belagavi District, Karnataka
  Dr. (Mrs) Sunanda I. Kattali
- Disparity in Literacy and Sex Ratio of Ahmednagar District
  Dr. Shivram Kerude, Dr. Jyotiram More
- Geographical Study of Changing Population Characteristics in Nashik Administrative Region (2001-2011)
  Manisha Muthal, Dr. Virendra Nagarale
- Spatial Imbalances in Child Sex Ratio with special reference to Ahmednagar District of Maharashtra
  Dr. Sachin N. Pawar, Dr. Vijay P. Gaikwad
- An Overview of Development of Transport Geography in India through Research Articles
  Mrs. Jyoti Sudhir Acharya, Dr. Vilas Tupale
- Rainfall Variability in the Drought Prone Area of Satara District (Maharashtra State)
  Jadhav Pravin Pandharinath
- "A Geographical Analysis of Literacy In Beed District"
  S. R. Gandhale, Dr. M. G. Rajgure, Dr. M.V. Suryawanshi
- A Critical Study of Agricultural Productivity in Lower Sina Basin
  Dr. Arun Sanawane, Mr. Amar Wakale
- A Geographical Analysis of Spatial Pattern in Literacy among the Scheduled Cast and Scheduled Tribe in Rural Areas of Sangli District
  Mr. Anis M. Mali, Dr. S. B. Gaikwad
- Capability of Sugarcane Production in Dindori Tahsil (Nashik District, Maharashtra)
  S. B. Kale

Peer Reviewed International Research Journal of Geography
Maharashtra Bhugolshastra Sanshodhan Patrika
ISSN : 0971-6785 (Impact Factor 4.567 Renew (IIFS)) Vol. 37, No.2, Jul-Dec 2020. pp 11-15

Pie Index Of Railway Connectivity In Amravati District

Dr. Omprakash B. Munde

Abstract

Rail transport has made it possible to transport heavy goods over long distances as well as to carry a large number of passengers at a time. Although the development of railways is less than that of roads, railways make a huge contribution to economic development. More connectivity of railway line is an indicator of development. The Pie index is an effective measure of connectivity that studies both density and connectivity.

In the present research, the tahsil wise pie index of railway line in Amravati district has been studied

Key Words

Pie index, railway network, diameter, and region

Introduction

Today, there is a railway network of about 115000 km across India. India has the first railway network in Asia and the second largest in the world. The railway network in the state of Maharashtra is more than 6000 km long and its development is not uniform.

The railway network in Amravati district is not yet fully developed but still the impact of the railway line is seen on the development. In the present paper, the study of railway line in Amravati district has been done with the help of pie index

Objectives of the Study

The main objective of the present study is to calculate and analysis pie index of railway network in Amravati district in the view of connectivity.

Data Source and Research Methodology

Data source of present research paper is based on the secondary source and complied from Socioeconomic Review of Amravati district, Train at Glance etc.

Diameter of the network is measured in GIS software and Pie index is calculated with the helpof following formula which was suggested by KJ Kansky (1963),

$$\pi = L \div D$$

π – Pie Index,
L – Total Length of Railway Network (Km),
D – Diameter of Network

Calculated values are shown in table also result is presented in the map of the study region.

Study Area

Amravati district is located in Vidarbha region of Maharashtra state. District is conflicts in between 20° 33' N to 21° 47' N latitude and 76° 43' E to 78° 24' E longitudes. Geographical area of the district is 12210 sqkm with total 2888445 populations as per 2011 census. There are total 14 tahsils are included in the district (Table No 1).

Akola district is located towards west, Washim towards southwest, Nagpur towards northeast, Wardha on east, Yavatmal on south, and Buldhana towards northwest of the district.

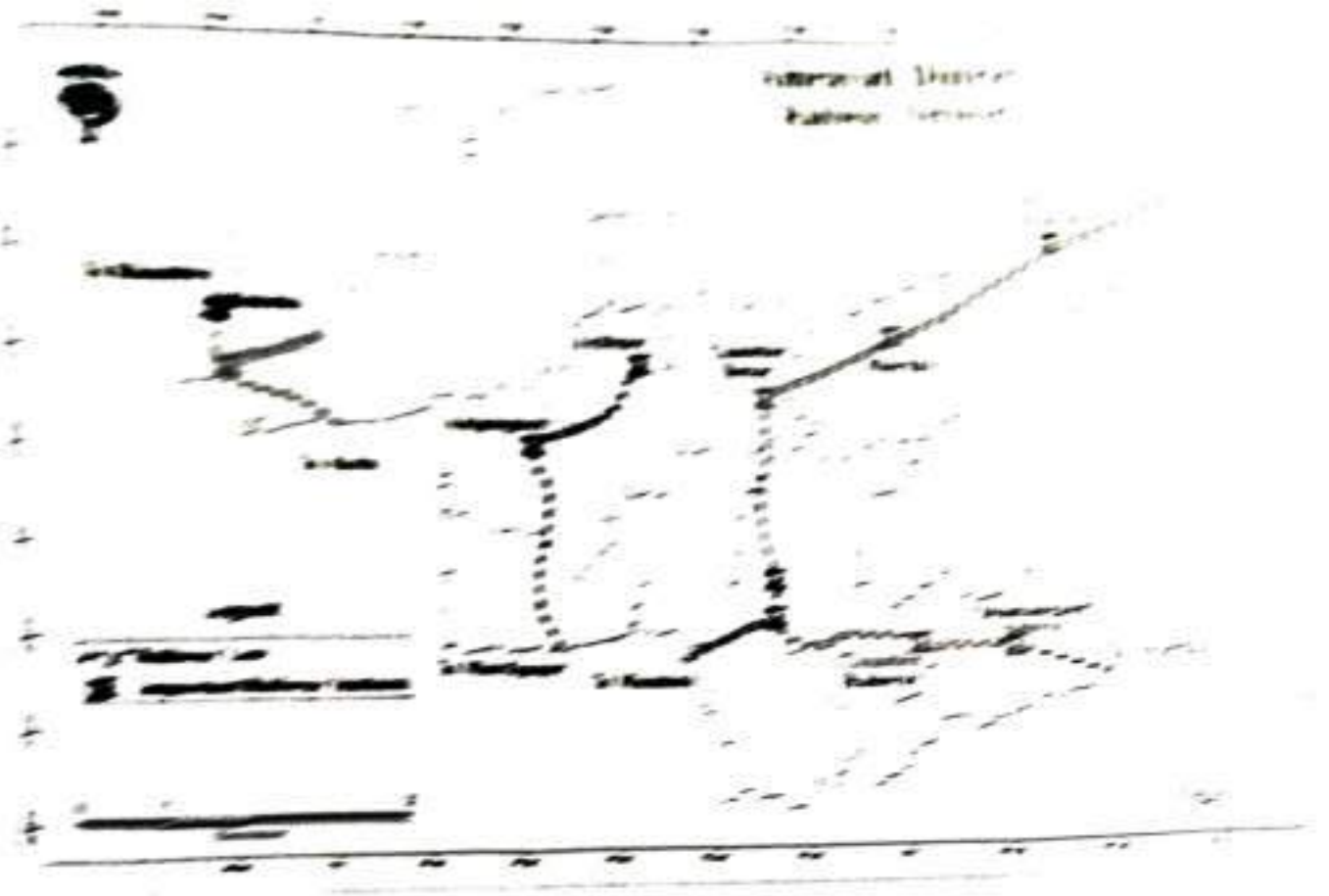


Table No 1
Pie Index of Railway Network in Amravati District

Tahsil	Railway Length (KM)	Diameter (KM)	Pie Index
Dharani	25	71	0.35
Chikhaldara	9	94	0.10
Anjangaon Surji	12	38	0.32
Achalpur	18	37	0.49
Chandur Bazar	16	31	0.52
Morshi	34	39	0.87
Warud	35	41	0.85
Tiwasa	0	37	0.00
Amravati	53	38	1.39
Bhatkuli		39	0.00
Daryapur	23	38	0.61
Nandgaon Khandeshwar	0	35	0.00
Chandur Railway	23	32	0.72
Dhamangaon Railway	24	34	0.71
Total Amravati District	**272**	**173**	**1.57**

Source:- Pie Index is calculated by author

Higher value of pie index shows maximum railway development and low value shows low development. Total district's value is calculated 1.57 and it denote there area 1 to 2 km railway route availability according to the diameter of the district. But compare to the large diameter of the district this railway network is very poor and need to improvement.

The pie index of the region is divided into four categories; zero index is as non development of railway network, 0.01 to 0.50 as very low railway development, 0.50 to 1 as low railway development and above 1 as moderate railway network development. According to the value of pie index maximum value of the region is 1.39 and it found in Amravati tahsil but high railway development is not found in any tahsil of the district.

Non Development of Railway Network

In the district Tiwasa, Bhatkuli and Nandgaon Khandeshwar tahsils are included the non development of railway network. These tehsils are totally dependent on railway services from Amravati.

Very Low Development of Railway Network

Chikhaldara, Anjangaon Surji, Dharani, and Achalpur tahsil has found the very low

development of railway network. Akola to Khandwa broad gauge is passing through Chikhaldara and Dharni boundary region and Dhulghat railway and Talai railway villages in these tahsils have the railway station. Achalpur to Murtijapur narrow gauge is passing through Anjangaon, Achalpur and Daryapur tahsil but the transport from this route is closed last few months.

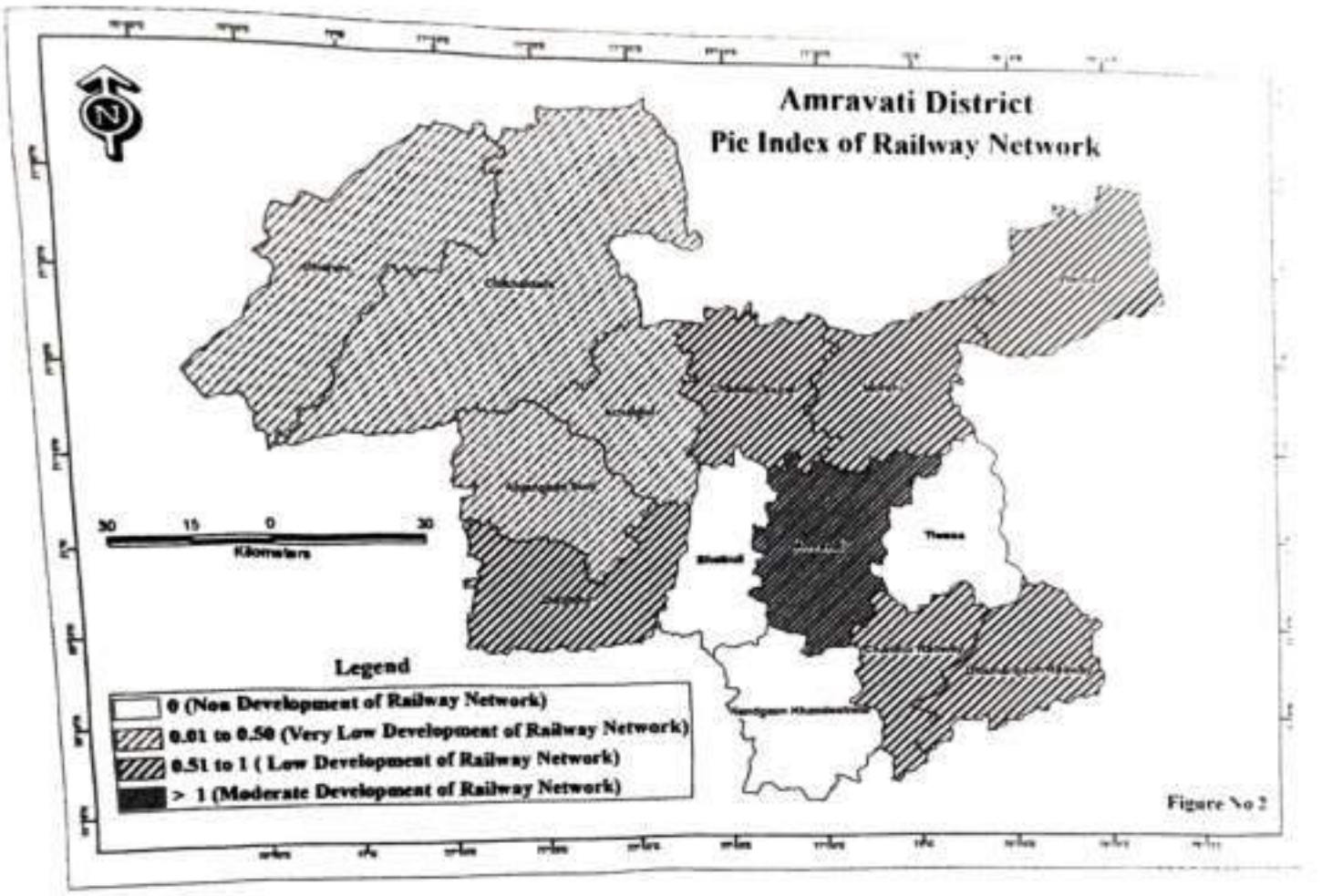


Figure No 2

Low Development of Railway Network

The pie index in between 0.50 to 1 is calculated in Chandur Bazar, Daryapur, Dhamangaon Railway, Chandur Railway, Warud and Morshi tahsil.

Dhamangaon Railway and Chandur Railway are connected to Mumbai to Howrah central railway line. Mail and Express stops at both Dhamangaon and Chandur, so this railway line is an important link for daily commuters to and from Amravati and adjoining areas to and from Chandur and Dhamangaon. Chandur Bazaar, Warud and Morshi are on the Amravati to Narkhed route and most of the trains plying on this route also stop at these places. This railway line is used by traders as well as students coming to Amravati from this tahsil

Moderate Development of Railway Network

Only Amravati tahsil found the pie index value 1.39 and railway development in this tahsil is moderate or satisfactory according to the diameter of the region. There area four railway stations are included in this tahsil and out of four stations three stations are located in Amravati city. Badnera railway station is connected both line, Mumbai to Howrah and Amravati to Narkhed. The maximum railway development in Amravati tahsil is occurred in Amravati city region.

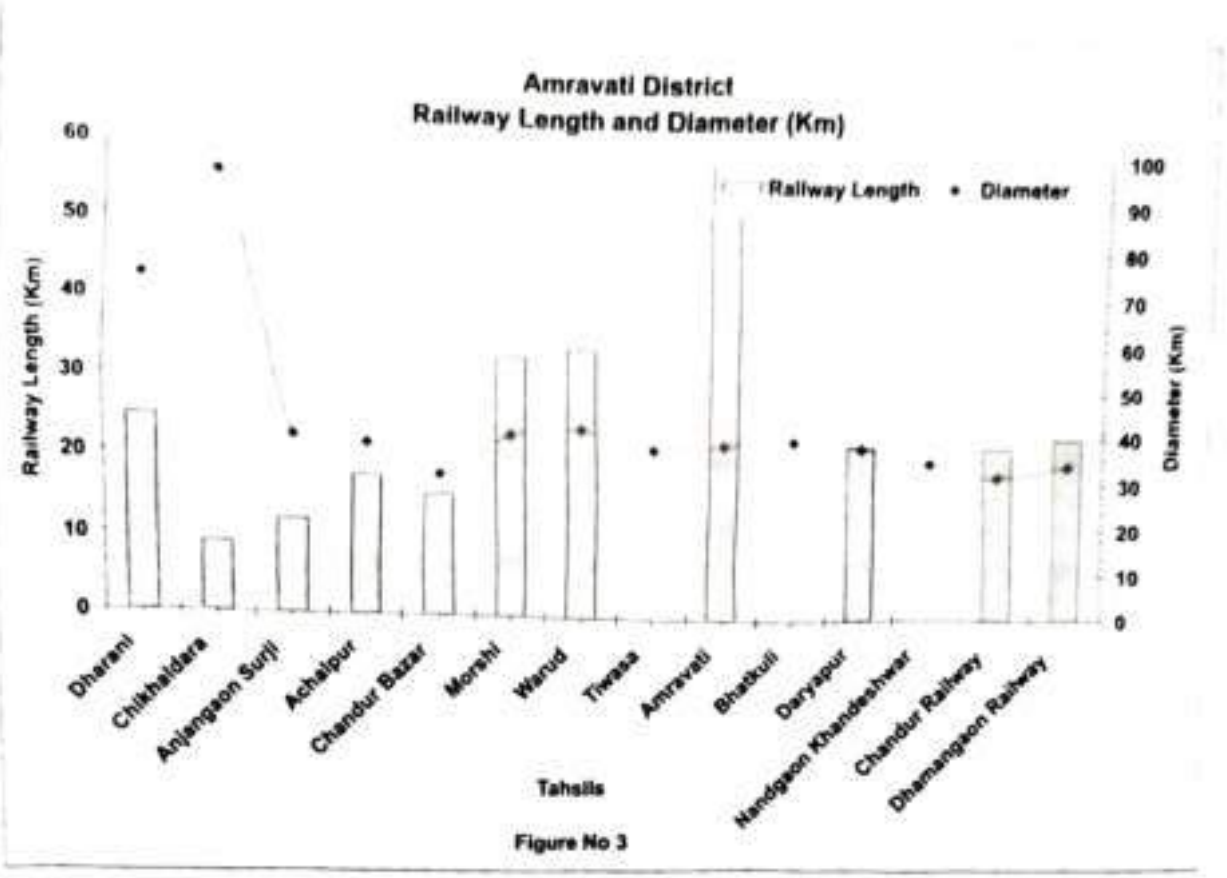


Figure No 3

Conclusion & Suggestion

Railways have played a major role in the development of Amravati district. From Amravati to Mumbai, Pune, Hyderabad, Tirupati, Surat, Jabalpur, etc., there is a direct regular train service.

Only Amravati tahsil in Amravati district has seen satisfactory railway development while other tahsils have very little. But the railway development of any tahsil is not high compared to the diameter of the district.

Although it is not possible to build a new railway line at once, progress can be made on the existing route by increasing the number of main railway stations as well as the number of trains.

References

1) Bamford C.G. & Robinson H (1978), "Geography of Transport, Mcdonald and evens ltd, Estover Playmount

2) Kansky K. J. (1963), "Structure of Transportation Network Relationship between Network and Regional Characteristics" Research Paper No. 84, Depart of Geography, University of Chicago

3) Patil R.P. (2009) - Road Network - A Study of Marathwada Region – Research Analysis and Evaluation, International Referred Research Journal, Vol. III, Issue-2

4) Srivastava R. C. (2006), "Agricultural Markets and Transport Network" Rawat Publications, Jaipur, Page No.196-200.

***Dr. Omprakash B. Munde**
Head, Dept. of Geography,
Narayanrao Rana Mahavidyalya,
Badnera Railway,Amravati

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor - 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

September -2019

SPECIAL ISSUE-CXCVI

EMERGING TRENDS IN HUMANITIES & COMMERCE



Executive Editor:
Prof. Virag S. Gawande
Director,
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Guest Editor
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj Mahavidyalaya,
Walgaon Dist –Amaravti [M.S.] INDIA

Chief Editor
Mr. Dhanraj T. Dhangar.
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

46	*Crop Concentration of Rice in Gadchiroli District – 2015 – 16* **Dr. Vijay P. Gorde**	202
47	Agriculture Production Trends in India: An Overview **Dr.M.S.Suryawanshi**	208
48	Importance of Financial Management in Small Industry **Dr.Mahavir Sadavarte**	212
49	Employee Participation: A Tool of Motivation and High Productivity **Dr.P.N. Ladhe**	218
50	Impact of Health Education on Diet habits, Physical Exercise & Yoga amongst Adivasi Students. **Dr. Poonam Deshmukh**	222
51	Concept of Crimes, Punishments and Victimology **Dr. Manoj N. Bendle**	225
52	Yoga Education **Manik Rastogi**	230
53	Best Practices for College Libraries Preparing for NAAC **Mr. Sudhir More**	235
54	Problems Faced By Members of Co-operative Housing SocietiesIn Chiplun City **Mrs. Rucha Prajakt Khavanekar**	239
55	A comparative study of Birth order and spontaneous decision making **Ms. Ria Nadkarni**	246
56	Symbolism in "Heart of Darkness" by Joseph Conrad **Dr. Laxman Gajanan Kolte**	249
57	Interrelation between Land Use Efficiency and Agricultural Efficiency in Amravati District **Dr. Omprakash B. Munde**	252
58	A Geographical Analysis of Crop Combination and Changing Cropping Pattern in Ahmednagar District **Navnath Laxman Wayal**	257
59	Workers Compensation **Dr.Patil Bhagwan Shankar**	265
60	Career Planning, Management And Development **Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil**	270
61	Study Of Changing Forms Of Styles In Vocal Performance From Ancient To Modern Era ***Dr . Rashmi Shailesh Deshpande***	275
62	Judicial Activism & Indian Judiciary- A Study **Dr. Mahendra Pachadkar**	282
63	Recent Trends in Indian Banking Sector **Rajesh P. Kamble**	287
64	Unemployment Problem of India and Human Resource Development **Rajesh Ramasa Chavan**	290
65	Geomorphological Study Part of Wainganga River using GIS and Remote Sensing Techniques **Dr. Ravindra Sudam Bhagat**	294
66	Impact of electronic banking on traditional banking services **Dr.Ranjeet Atawale**	299
67	India's move towards GenderEquality: Sustainable Development Goal5 **Dr. Suprabha P.Yadgiwar**	302

Principal

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) - 0.676 (2015)
Special Issue
ISSN : 2348-7143
September 2019

Interrelation between Land Use Efficiency and Agricultural Efficiency in Amravati District

Dr. Omprakash B. Munde
Head, Dept. of Geography, Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera

Abstract

The Indian economy is mainly based on the agricultural productions and production is depended the agricultural land use pattern, irrigation, use of fertilizers, physiography of the region etc. The agricultural efficiency and land use efficiency is related with each other and agricultural efficiency is depending on land us efficiency of any region. It all effects on the productivity of the agriculture.

The present paper is based on the analysis of land use efficiency agricultural efficiency of the Amravati district in the year 2014-2015.

Key Words

Land use efficiency index, agricultural land use efficiency index, interrelation, development

Introduction

Land use efficiency is impact on the per yield production of the region and determines the agricultural efficiency of the region. The agricultural land use efficiency and production of the Amravati district is not uniform. Present paper has attempts the tahsil wise analysis of land use efficiency and agricultural efficiency and their interrelation of the study region.

Objectives of the Study

The main objectives of the present study as follows,

i) To calculate the land use efficiency index of the study region
ii) To calculate agricultural efficiency index of the study region
iii) To describe the interrelation between land use efficiency and agricultural efficiency of the study region.
iv) Data Source and Methodology
v) The present research work has been carried out by using the secondary source of data. The related data is compiled from Agriculture District Office, Amravati. The analysis is based on the year 2014-2015.
vi) The land use efficiency is calculated by using Jasbir Singh's method and agricultural efficiency is calculated by using Ganguli's method. The relevant formulas of both methods as follows,
vii) Land Use Efficiency = (Gross Crop Area + Net Sown Area) × 100
viii) $En = (Iyn \times Cn) + 100$

En - Agriculture efficiency,
Iyn - Yield of Crops,
Cn - Crop land share in percentage

The results are shown in the table and map of the study region and their interrelation shows in regression line on scattered diagram.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Study Area

Amravati district is located in Maharashtra state and centre of an India. The district conflicts in between 20^0 33' N to 21^0 47' N latitudes and 76^0 43' E to 78^0 24' E longitudes.

There are total 14 tahsils are included in the district and covered total 12210 sqkm with 2888445 total population according to the census year 2011.

Madhya Pradesh is located on north, Akola district on west Yavatmal on south, Wardha and Nagpur district located on east of the district.

Land Use Efficiency Index

Land use efficiency index is the ratio of gross crop area and net sown area of the region. The maximum index shows higher efficiency and vice versa.

The tahsil wise land use efficiency index found uneven and not so high because the poor ratio between gross crop and net sown area.

The index of total district is calculating 123.24 and it is an average. Tahsil wise values vary from 100.96 to 128.64 and Warud is the lowest and Chikhaldara is the highest in the region.

Chikhaldara tahsil is observed maximum value of land use efficiency index because the maximum difference in between gross crop and net sown area. This tahsil has the rough topography and maximum area under in forest cover, also this region is the part of tribal population in the region. Maximum non forest land is use for the cultivation in this tahsil but due to the rough topography and lack of knowledge about modern agricultural techniques the agricultural efficiency and productivity is very poor. Therefore though the land use efficiency is higher in this tahsil but productivity is very poor.

Table No 1 shows the tahsil wise land use efficiency index and agricultural land use efficiency index of the study region.

Chandur Railway (120.28) tahsil is recorded the second highest index of land use efficiency. Morshi, Dharani, Amravati, Tiwasa and Bhatkuli tahsil recorded the index in between 110 to 120 respectively (Table No 1).

Remaining part of the district found index in between 100 to 110 and Warud tahsil is the lowest in the region. The ratio of gross crop and net sown area is lower in this tahsil but this tahsil is known as the orange belt of the region and irrigation percentage is higher in the region therefore agricultural efficiency is averagely developed (Map No 1).

Table No 1: Land Use Efficiency and Agricultural Land Use Efficiency Index in Amravati District (2014-2015)

Tahsil Name	Land Use Efficiency Index	Agricultural Efficiency Index
Achalpur	108.52	4.65
Amravati	116.98	4.68
Anjangaon Surji	103.36	4.36
Bhatkuli	111.32	6.28
Chandur Bazar	105.63	6.26
Chandur Railway	120.28	6.32
Chikhaldara	128.64	3.22

Principal

Daryapur	106.32	6.85
Dhamangaon Railway	102.58	4.87
Dharani	118.81	4.89
Morshi	119.72	6.31
Nandgaon Khandeshwar	108.43	5.24
Tiwsa	114.37	5.39
Warud	100.96	5.07
District Total	123.24	

Source:- Calculated by Researcher

Agricultural Efficiency Index

Agricultural efficiency is a ratio between the achievement in terms of agricultural production and the actual potential of the land productivity is a physical rather than a value concept and describes the changing relation between output and one of the major inputs like land, capital and labor, https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/32004/11/11_chapter%206.pdf).

Tahsil wise index of agricultural efficiency vary from 3.22 to 6.85 where Daryapur (6.85) is the highest and Chikhaldara (3.22) is the lowest in the district.

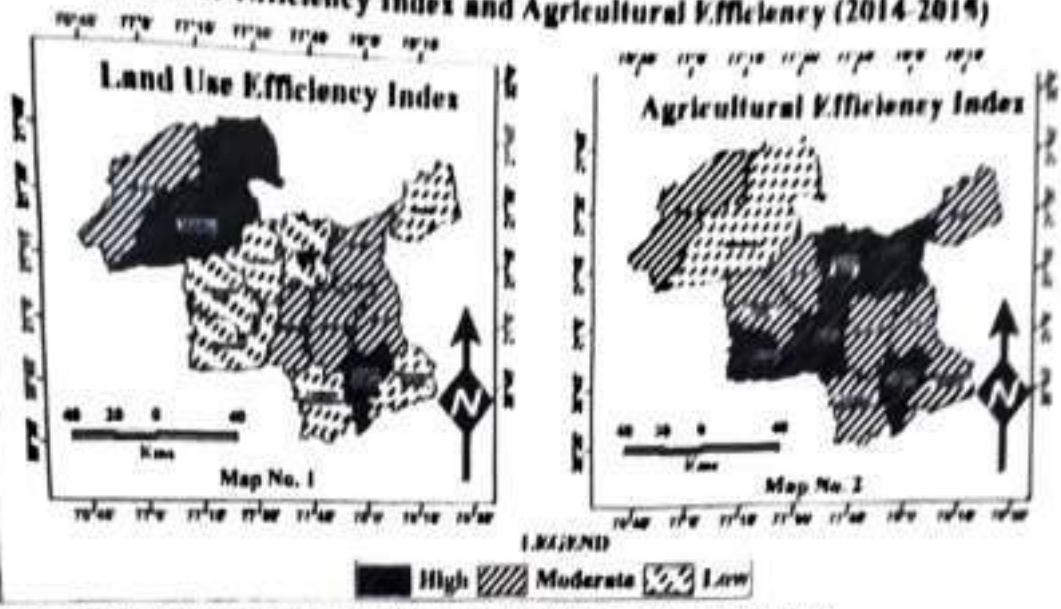
Daryapur tahsil is the belt of cotton and maximum area of this tahsil is in saline zone of Purna river watershed. The land use efficiency is low but efficiency is greater because per yield production is higher than other part of the entire district.

Efficiency index of Daryapur, Chandur Railwy, Bhatkuli, Morshi and Chandur Bazar is greater than 6. Index in Tiwasa, Nandgaon Khandeshwar and Warud tahsil has found in between 5 to 6. Dharani, Dhamangaon Railway, Amravati, Achalpur and Anjangaon Surji tahsil has the index in between 4 to 5 respectively (Map No 2).

Chikhaldara tahsil is the lowest in the region. The disparity found in between land use efficiency and agricultural efficiency in Chikhaldara tahsil due to the unfair physiographic conditions and lack of proper knowledge of agricultural land use.

Amravati District

Land Use Efficiency Index and Agricultural Efficiency (2014-2019)

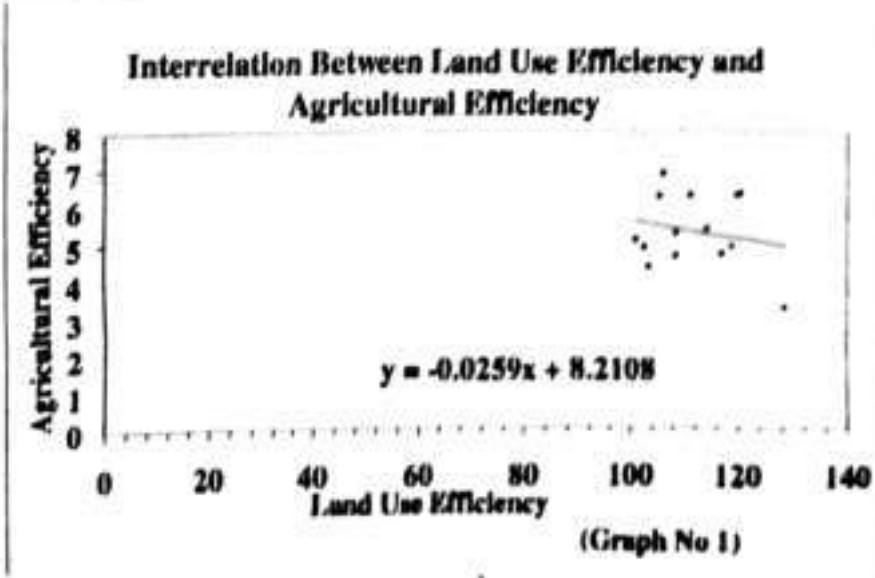


Interrelation between Land Use Efficiency and Agricultural Efficiency

The relationship between these two variables found negative ($r = -0.21$) because of the disparity in land use efficiency and agricultural efficiency. The changes between these two variables are occurred in different ways therefore the correlation between them found negative. Per yield production is poor compare to their ratio of gross crop and net sown area.

Graph No 1 shows the interrelation between land use efficiency index and agricultural efficiency index.

RESEARCH JOURNEY



(Graph No 1)

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue
ISSN : 2348-7143
September 2019

Conclusions and Suggestions

The disparity found in the land use efficiency and agricultural efficiency in entire district. The agricultural efficiency is lower in high land use efficiency region because per yield production is poor compare to the cultivated area.

The negative correlation shows no coordination between land use efficiency and agricultural efficiency i.e. improper management about agricultural land use also traditional methods for the cultivation pattern. Especially in Chikhaldara tahsil, cultivator should cultivate such crops which are suitable for its physiographic conditions and soil structure. The region is suitable for coffee, strawberry and other cash crops but the awareness about is not spread all over the tahsil.

In Warud tahsil land sue efficiency is lower than agricultural efficiency therefore it is necessary to improve land use efficiency and it helps to increases per yield production and efficiency of agriculture in this tahsil.

It is necessary to spread awareness about modern type of agriculture and remain the average ratio between gross crop area and net sown area of the district. It will help to improve per yield production and agricultural efficiency of the district.

References

1) Ganguli, B.N., (1938) Trends of Agriculture and Population in Ganges Valley, London, P 93.
2) Mandal R.B. (1990), "Land Utilization, Theory And Practice" Concept Publication New Delhi P 129.
3) Singh Jasbir (1975), "An agricultural atlas of India". A geographical Analysis Vishal Publication Kurukshetra, India p-139.
4) Huikun Hong , Deti Xie , Heping Liao , Bo Tu and Jun Yang (2017), "Land Use Efficiency and Total Factor Productivity—Distribution Dynamic Evolution of Rural Living Space in Chongqing, China", Sustainability 2017, 9, pp 1-16

RESEARCH JOURNEY

Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

June -2020

ISSUE No-CCXXXIX (239)

Impact of COVID-19 on World: Problems, Challenges and Opportunities

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director

Guest Editor
Dr. Gopal S. Jaiswal
Principal

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyala
Badnera

Editor
Dr. Omprakash B. Mande
HOD, Geography

Executive Editor
Dr. Sangita Bhangdiya (Malani)
HOD, Political Science

Executive Editor
Dr. Sachin L. Holey
HOD, Sociology

Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera,Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	History of Pandemic in India — **Dr. Monali v. Ingale**	1
2	Influence Of Forest Cover On The Distrib ution Of Rainfall In Yavatmal District — **Dr. Omprakash B Munde**	4
3	Changing Pattern of Productivity of Oil Seeds in Amravati District — **Dr. Sagar P Padole**	9
4	"Effects Of Covid-19 Pandemic Lockdown On Avifaunal Diversity Of Ashti City, District-Wardha (M.S) India — **Dr. Ujwala W. Fule**	15
5	Impact of COVID-19 on the Indian Economy — **Dr. Uday S. Kale**	19
6	Globalization, Privatization and Its impact on Society — **Dr.Nilima Dawane**	23
7	Post Covid -19 Pandemic and FDI Policies — **Prof. Sonali Tambuskar**	26
8	Effects Of Covid-19 Pandemic Lockdown On Physico-Chemical Characteristics Ofashti Lake In Wardha District (M.S.) — **S.S.Nimgare**	30
9	Indian and world economy amid covid-19, impact on various indian sectors and rest of the world. — **Samridhi mahajan**	35
10	History of Pandemic in India — **Prof. Madhukar Tukaram Kshirsagar**	41
11	Impact of Covid-19 on Environment. — **Dr.Vina.V.Patil.**	47
12	Impact of Covid-19 on Maharashtra and India's Business and Labour — **Dr.HarshalR.Nimbhorkar**	52
13	The EffectsOf CoronavirusOn Families In Indian Cities — **Jyoti Acharyaa& Dr.Vilas Ugale**	55
14	Effect of corona on the economy, education and cultural aspects — **Dr.Swapnil S. Arsad**	64
15	Effects Of Corona On Higher Education — **Dr.Vaishali S. Pradhan Mr.Gajanan Joshi**	67
16	COVID 19 – Challenges and Opportunities in Indian Tourism Industries — **Prof. Ajinkya G. Deshpande**	71

Influence Of Forest Cover On The Distribution Of Rainfall In Yavatmal District

Dr. Omprakash B Munde
Head, Dept. of Geography, Narayanrao Rana Mahavidyalya, Badnera Railway

Abstract

Forest is a natural resource of any country. Today, the global environment is still safe because of the balance of natural vegetation, but the ongoing deforestation has upset the balance of the environment. Deforestation has a direct impact on the environment and also reduces the average rainfall.

The difference in forest cover is related to the difference in rainfall, which is why rainfall is abundant in a region where there is a lot of natural vegetation. Present paper has attempt the relationship between change in forest cover and change in rainfall in Yavatmal district of Maharashtra state.

Key Words

Forest cover, average rainfall, influence, relationship

Introduction

Today the balance of the environment is deteriorating due to excessive interference in the human environment. Humans have cut down forests on a large scale for their own progress as well as for quick success. Its effect on the environment is being seen today. Today, the average annual rainfall in many parts of India is declining.

The effect of deforestation on average rainfall is also found in the study area. In the present paper, the area under forest and the average rainfall from 2002 to 2012 and its changes have been studied. At the same time, the correlation between forest changes and rainfall changes has also been studied.

Objectives

The specific objectives of the present research paper has follows,

i) To study the tahsil wise forest cover of the study region of the year 2002 and 2012.

ii) To study the tahsil wise distribution of average annual rainfall in the study region of the year 2002 and 2012.

iii) To study the relationship between change in forest cover and rainfall in the study region during the period 2002 to 2012.

Data Source and Methodology

Present work is carried out with the help of secondary source of data. The tahsil wise forest cover is complied from Socioeconomic Review of Yavatmal district and District Census Handbook. The average rainfall data is collected from Socioeconomic Reviews and District Agriculture Office.

The analysis of forest cover and rainfall distribution is based on the year 2002 and 2012. The change is calculated by subtracting the previous value from current value. The influence of change in forest cover to average rainfall distribution is shown by calculation correlation between them. Their relation is presented on the regression line with the help of scattered diagram.

Study Region

Study region is located in Maharashtra state and conflicted in between 19^0 26' N to 20^0 42' N latitude and 77^0 18' E to 79^0 9' E longitude. District covered total 13584 sqkm area with 16 tahsils and having 2772348 total population according to the census year 2011.

Wardha and Amravati districts are located towards north, Washim and Hingoli districts situated on west, Nanded and Telangana state is located towards south of the district. Chandrapur district is located towards east of the study region.

Forest Cover (2002 and 2012)

According to the year 2002 total forest cover of the district was 2295 sqkm and found maximum distribution in Umarkhed tahsil (454 sqkm). Maregaon, Babhulgaon and Ner tahsil has covered less than 50 sqkm area under forest. Yavatmal and Pusad tahsil has covered more than 200 sqkm area under forest and remaining tahsils has found the vegetation cover below 100 sqkm in their geographical area.

According to the year 2012 total forest cover of the district is 2310 sqkm and it is increased than 2002. This year also maximum forest cover occurred in Umarkhed (426 sqkm). But this year the vegetation cover decreased compare to the year 2002.

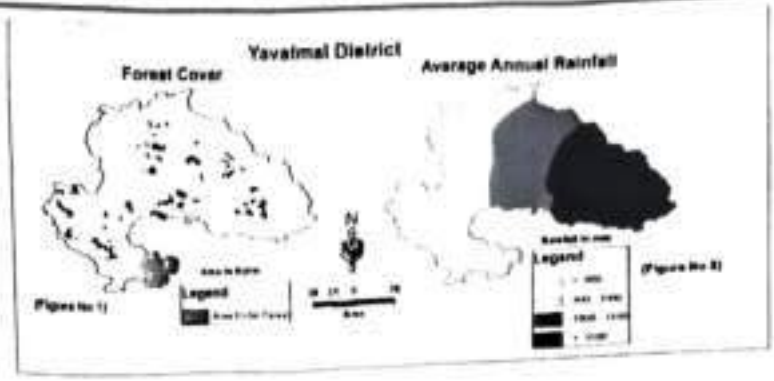
Yavatmal tahsil has 304 sqkm, Kelapur (208 sqkm) forest cover while Ralegaon, Darwha, Maregaon, Digras, ner and babhulgaon tahsil has less than 50 sqkm area under forest. Remaining tahsils has recorded their 100 to 200 sqkm area under forest cover.

Table No 1 represents the tahsil wise forest cover and rainfall distribution in the year 2002 and 2012 of the study region.

Table No. 1 Yavatmal District – Forest Cover and Average Rainfall Distribution

	Forest Cover (Area In Sqkm)		Average Rainfall in mm	
Tahsils	**Year 2002**	**Year 2012**	**Year 2002**	**Year 2012**
Ner	48	39	763.2	760
Babhulgaon	44	16	948.2	942
Kalamb	90	136	947.4	1031.2
Yavatmal	299	304	948.2	954
Darwha	118	78	811.6	805
Digras	112	51	816.6	821.8
Pusad	230	174	790.9	769.92
Umarkhed	454	426	858.4	906.2
Mahagaon	199	103	857.42	828.69
Arni	149	154	816.6	818.3
Ghatanji	137	147	1031.2	1043.6
Kelapur	82	208	1033.24	1042.36
Ralegaon	69	89	1037.6	1039.2
Maregaon	43	65	963.6	983.6
Zarizamani	124	176	963.61	981.3
Wani	97	144	961.6	948.2
Total	**2295**	**2310**	**14549.40**	**14675.40**

Source: - Socioeconomic Review, District Census Handbook of Yavatmal District



Rainfall Distribution (2002 and 2012)

Average annual rainfall in the year 2002 of the district was 14549 mm and found maximum distribution in Ralegaon (1037.6 mm) and then in Kelapur (1033.24) and Ghatanji (1031.2 mm). The average rainfalls in these tahsils were more than 1000 mm.

All tahsils in the district has more than 700 mm annual rainfall and Ner (763.2 mm) and Pusad (790.9 mm) had recorded lowest rainfall compare to other tahsils and remaining tahsils had found rainfall distribution in between 800 to 100 mm in the year 2002.

In the year 2012 the overall distribution of rainfall in the district quite increased and in this year total average rainfall in the district recorded 14675.40 mm. This year also Ghatanji (1043.6 mm), Kelapur (1042.36 mm), Ralegaon (1039.2 mm) and Kalamb (1031.2 mm) tahsil recorded average rainfall more than 1000 mm.

Pusad (760.92 mm) and Ner (760 mm) tahsil found the lowest distribution of average rainfall than remaining tahsils in the district. Other tahsils in the district has found rainfall distribution in between 800 to 1000 mm.

Change in Forest Cover and Average Rainfall

Table No 2 shows tahsil wise changes in forest cover and average rainfall during the year 2002 to 2012.

Table No. 2

Yavatmal District – Change in Forest Cover and Average Rainfall Distribution (2002-2012)

Tahsils	Change in forest Cover (Area Sqkm)	Change in Rainfall (in mm)
Ner	-9	-3.2
Babhulgaon	-28	-6.2
Kalamb	46	83.8
Yavatmal	5	5.8
Darwha	-40	-6.6
Digras	-61	5.2
Pusad	-56	-20.98
Umarkhed	-28	47.8
Mahagaon	-96	-28.73
Arni	5	1.7
Ghatanji	10	12.4
Kelapur	126	9.12

Ralegaon	20	1.6
Maregaon	22	20
Zarizamani	52	17.69
Wani	47	13.4
Total	**15**	**126**

Source:- Calculated by Author

Change in Forest Cover

In the district total 15 sqkm forest cover is increased during the period 2002 to 2012 and increasing ration is not satisfactory. The variations are found in the change of forest cover in the entire district. Maximum positive change occurred in Kelapur tahsil. While maximum forest degradation is found in Mahagaon tahsil. In this tahsil total 96 sqkm forest cover decreased during 2002 to 2012.

Positive changes in vegetation cover i.e. growth is found in Arni, Ghatanji, Ralegaon, Maregaon, kalamb and Wani tahsil but the growth is very poor during this period. In remaining tahsils the vegetation cover is decreased in 2012 comapre to 2002 (Table No 2).

Change in Rainfall Distribution

During the year 2002 to 2012 total average rainfall of the district is increased by 126 mm and this growth is also poor compare to climatic conditions of the entire district.

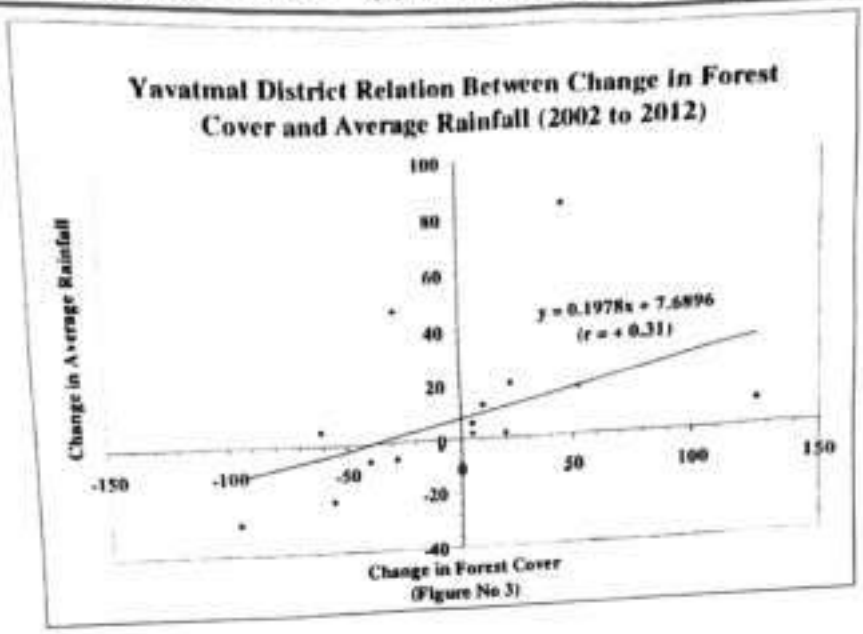
In the maximum tahsil has found growth in average rainfall during this period and highest growth is found in Kalamb tahsil (83.8 mm). The growth in Ralegaon, Arni, Digras, Yavatmal and kelapur tahsil is less than 10 mm. Change in rainfall in Ghatanji, Zarizamani, Maregaon and Umarkhed tahsil is in between 10 to 50 mm during 2002 to 2012.

Maximum negative change in average rainfall occurred in Mahagaon (-28.73 mm) and Pusad (-20.98 mm) tahsil. The forest cover in these tahsil has also decreased in this period.

Relation Between Change in Forest Cover and Average Rainfall (2002 to 2012)

The relationship between these two variables explains the influence of forest cover on the distribution of rainfall in the entire region. The correlation between change in forest cover and average rainfall distribution is calculated positive (r = +0.31) and it is moderate degree level.

It is clear that more or less forest cover in the study area is affecting rainfall. In the tahsils where the forest cover has been reduced, the rainfall has also been reduced. Rainfall has also increased in areas where forest cover has increased. The forest cover is moderately impact on the distribution of rainfall in Yavatmal district. The relationship between these two variables is shown in Figure No 3.



(Figure No 3)

Conclusions and Recommendations

The area under forest is important in land planning of any region as it is the forest that helps in maintaining the ecological balance of the region. Although the area under natural vegetation in the study area has increased over a period of ten years, it is very low, so the rainfall is also found to be low. Large scale deforestation has been reported in many tahsils of the district, resulting in reduced rainfall in those areas.

India is an agricultural country and most of the agriculture is directly dependent on rain water. Agriculture in the study area is also dependent on rain water so it is very important to take care of the forest.

It is necessary to stop illegal deforestation and implement social forestry, just as it is time to implement rainwater harvesting measures everywhere. Strict action must be taken against those who cut down natural plants by protecting them. It is also important for educated citizens to promote it at the local level.

Since Forests are natural and national resource and is suitable for rainfall as well as for the environment, everyone needs to go and protect it.

References

1)
2) Brett M. Bennett and Gregory allen Barton (2018), "The enduring link between forest cover and rainfall: a historical perspective on science and policy discussions", Article. https://www.researchgate.net
3) Michael Sanderson, Monia Santini, Riccardo Valentini and Edward Pope (2012). "Relationships between Forests and Weather". EC Directorate General of the Environment, Met Office, Hadely Center, pp 1-47
4) Socioeconomic Review of Yavatmal District (2002 and 2012), Directorate of Economics and Statistics, Planning Department, Government of Maharashtra, India
5) Yavatmal District Census handbook (2001 and 2011), Office of the Registrar General & Census Commissioner, India, Office of the Registrar General & Census Commissioner, India

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

June -2020
ISSUE No-CCXXXVIII (238)

Impact of COVID-19 on World: Problems, Challenges and Opportunities

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director

Guest Editor
Dr. Gopal S. Vairale
Principal

Editor
Dr. Omprakash B. Munde
HOD, Geography

Executive Editor
Dr. Sangita Bhangdiva (Malani)
HOD, Political Science

Executive Editor
Dr. Sachin J. Holey
HOD, Sociology

Narayanrao Rana Mahavidyalaya,Badnera,Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharjournal.com

Aadhar Publication

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

40	पश्चिम विदर्भातील सातपुडा पर्वतीय व पर्वतपदिय क्षेत्रातील वार्षिक दूध उत्पादन डॉ. राहुल एस. तट्टे / डॉ. एस .बी.आखरे	182
41	कोविड–१९ चा पर्यटन व्यवसायावर परिणाम प्रा. शिवाजी संपत चव्हाण	184
42	भारताच्या अर्थव्यवस्थेवर कोविड–१९ का परिणाम डॉ. दिनेश वा. निचित	187
43	कोरोणाचा भारतीय समाजावरील परिणाम प्रा. राजेश रामधन पाटील	191
44	कोरोणा नंतरचा समाज प्रा. प्रमोद विश्वनाथ खोंड	193
45	महिला सक्षिमीकरणामध्ये आव्हाने आणि संधी गृहअर्थशास्त्र विद्यार्थ्यांसाठी प्रा.कु. सारिका भाग्यवान खोब्रागडे	195
46	लॉकडाउन समयमें पुस्तकों को बनाए अपना साथी डॉ पल्लवी चोपडे	198
47	कोविड –१९च्या प्रादुर्भावाचा तरुण वर्गाच्या शैक्षणिक करियरवर होणाऱ्या परिणामांचा अभ्यास प्रा.डॉ. सीमा बा .आढाऊ	201
48	विदर्भातील संत्रा कृषी हवामान व जमिनीचा परिणाम डॉ.राम अ .खंडार / डॉ.ओमप्रकाश ब. मुंदे	202
49	भारताचे परराष्ट्रीय धोरण आणि कोविड–१९ डॉ..माया वाटाणे	205
50	पर्यावरणावरील प्रभाव –एक अध्ययन प्रा. ए .पी. दोड	209
51	सार्क भारत आणि कोव्हीड १९ अंकुश शरद विजाका	213
52	कोरोना और योगा डॉ.बबीता अ. हजारे	216
53	भारतीय अर्थव्यवस्थापर कोरोना का प्रभाव हेमलता पारस	220
54	कोरोनाव्हायरस का भारतीय अर्थव्यवस्था पर परिणाम प्रा.विनोद एम बडवाईक	224
55	कोविड–१९ भारताच्या विदेश नितीवर होणारा परिणाम प्रा.मिलींद खांदवे	226
56	कोरोना महामारी :शिक्षण व्यवस्था परिणाम व उपाययोजना सौरभ संजय पाटील	231
57	कोविंड –१९ जागतिक प्रभाव ,संधी ,समस्या, आव्हाने व वर्तमान काळात स्वदेशी व आत्मनिर्भरतेची प्रासंगिकता प्रा. सुनिता श्रीखंडे	236
58	केंद्र– राज्य संबंधाचे बदलते स्वरूप (विशेष संदर्भ कोविड–१९ च्या पार्श्वभूमी संदर्भात) प्रा.डॉ.बबिता येवले	238

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO,238 | June,2020

विदर्भातील संत्रा कृषी हवामान व जमिनीचा परिणाम

डॉ.राम अ.खंडार
मु. जावरा पो.जनुना ता.नांदगाव (खं) जि. अमरावती
मार्गदर्शक :–डॉ.ओमप्रकाश ब. मुंदे
(भूगोल विभाग प्रमुख) नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा(रेल्वे)

प्रास्ताविक :–

संत्रा शेतीला आधुनिकतेच्या काळात अनेक प्रकारच्या समस्येला सामोरे जावे लागत आहे. संत्रा शेतीत अभिवृद्धी पद्धत, लागवड, हवा हंगाम ,आंतरमशागत ,रोग ,जलसिंचन , तण ,हवामान, जमीन व आर्थिक ताळेबंद या अनेक प्रकारच्या समस्या आहेत.

प्रस्तुत शोधनिबंधात विदर्भातील संत्रा शेतीत हवामान व जमीन यांचा परिणाम व त्यांचे योग्य नियोजन केले तर संत्रा शेतीचे क्षेत्र व उत्पादन वाढून शेतकरी आकर्षित होतील.

उद्देश :–१) विदर्भातील संत्रा पिकाकरिता उपयुक्त असलेल्या जमिनीचा शोध घेणे.

२)हवामान व जमीन यात योग्य सांगड संत्रा शेतीखालील क्षेत्र वाढविणे हे

अभ्यास क्षेत्र :–

प्रस्तुत अभ्यासासाठी विदर्भ प्रदेश निवडण्याचे कारण म्हणजे महाराष्ट्रातील विदर्भात संत्रा पिकाचे उत्पादन घेतले जाते विदर्भाचे क्षेत्रफळ ९७,४०९ चौरस कि.मी. असून. महाराष्ट्र राज्याच्या एकूण क्षेत्रफळापैकी ३१.६६ %क्षेत्रफळ व्यापलेले आहे.

विदर्भाचा अक्षवृत्तीय विस्तार १८ °३९' उत्तर ते २१ °४३' उत्तर व रेखावृत्तीय विस्तार ७५ °२६' पूर्व ते ८० °५५ ' रेखाशांच्या दरम्यान आहे .यामध्ये ११ जिल्ह्यांचा समावेश आहे. ११९ तहसीलींचा त्यात १३ हजार ६९२ वस्ती असलेले गावे व १०७ शहरे आहेत. या अभ्यास क्षेत्रात तापी, पूर्णा, वैनगंगा व वर्धा या प्रमुख नद्या आहेत.

माहिती स्त्रोत व संशोधन पद्धती :–

प्रस्तुत शोधनिबंध तयार करण्यासाठी आवश्यक असणारी माहिती कृषी विभागीय कार्यालय कृषी विज्ञान केंद्र दुर्गापुर संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ अमरावती ग्रंथालय, भूगोल विषयाच्या झालेल्या संशोधनातून व प्रकाशित झालेल्या साहित्यातून माहितीचा उपयोग प्रस्तुत प्रबंधात करण्याचा प्रयत्न केला आहे. याशिवाय शासनाच्या पुर्व प्रकाशित साहित्यामधून उपयुक्त माहिती घेतली असून त्यामध्ये ११ही जिल्हे गणना अहवाल कृषी विभागीय कार्यालयातून माहिती गोळा करण्यात आली.

विषय विवेचन :–

हवामान :–संत्र्याचे झाड हे काटक असल्यामुळे निरनिराळ्या जमिनीत व वातावरणात वाढते. नागपूर व अमरावती जिल्हे संत्र्यासाठी प्रसिद्ध आहेत. त्याचप्रमाणे सातपुडा पर्वताच्या पायथ्याशी असलेल्या भागातील उदा. सोनाळा (बुलढाणा जिल्हा) परतवाडा व चांदूरबाजार (अमरावती जिल्हा) येथील संत्रा विशेष प्रसिद्ध आहेत.

विदर्भातील उष्ण व कोरडे वातावरण मात्र संत्र्याकरिता पाहिजे तेवढे पोषक नाही. वर्षातून ६ महिने तर प्रखर उन्हाळा असतो. त्यामुळे फळांची गळ होते व एकेका झाडावर असलेली फळांची संख्या कमी असते. पुष्कळशया फळांना उन्हामुळे गर्द पिवळे डाग पडतात त्याला शेतकरी चांदणी लागणे म्हणतात. हे टाळण्यासाठी मत्र्याच्या बागेतील वातावरणात बदल घडवून आणणे आवश्यक आहे.

उन्हाळयाचे उष्ण तापमान ४२° से. एवढे वाढलेले असते या वाढलेल्या तापमानात पानातील अन्नद्रव्य तयार करण्याची प्रक्रिया सकाळी ९ ते १० वाजल्यानंतर थांबलेली असते. म्हणून आद्रता व तापमान योग्य राखण्यासाठी बागेच्या बाजूने उन्हाळयात हिरवी राहणारी पिके जसे मका झाडे लावलेली असावी व १०.३० ते २ वाजेपर्यंत ओव्हर हेड

सिंकलर व मायक्रो सिंकलर नालीतली पाण्यामध्ये गढ हवा तेवता आली तर आक्सिजन वहार टिकविण्याकरिता मदत होऊ शकते.

जमीन :–संत्रा पिकाकरिता चांगली पोषक जमीन मध्यम काळी सुमारे ७५ ते १५० सें मी खोल व त्याखाली कच्चा मुरूम मऊ किंवा जाड वालुका युक्त असलेली असावी. संत्र्याच्या आयुष्यमानासाठी जमिनीत सेंद्रिय पदार्थ मुबलक असावे. विदर्भातील जास्तीत जास्त जमीन चिकन माती युक्त भारी खोल अशान आहेत. विदर्भातील नादुरबाजार, अचलपूर, अजनगाव सुर्जी भागातील (ब्राह्मणवाडा थडी) जमिनी भारी, खोल, चिकन मातीचे प्रमाण ४० ते ६० % आढळते व जमिनीत सेंद्रिय पदार्थ नसल्यामुळे जमीन कडक येते.

भारी खोल जमिनीत पाण्याचा निचरा व्यवस्थित होत नाही .कारण जमिनीत छोट्रे कमी अमलात व काही छोट्रे मातीने बुजतात. सोडिअम हा घटक जमिनीत जास्त असला तर मग हा चिकट पणा वाढतो व पाण्याचा निचरा बंद होतो . म्हणून या जमिनीतील जास्तीचे पाणी शेताबाहेर काढून देणे गरजेचे असते .नाहीतर संत्रा बागेचे खूप मोठे नुकसान होते. मुळे कुजतात. झाड जास्त काळ टिकत नाही ,लवकर खंगते, उत्पादन पाहिजे तसे मिळत नाही विदर्भातील ४०% जागा भारी खोल जमिनीवर आहेत. योग्य काळजी घेतली नाही तर उत्पादन व झाडाच्या आरोग्यावर पुढे विपरीत परिणाम होतात बाग जास्त काळ टिकत नाही. त्याकरिता योग्य जमीन निवडताना खालील बाबी लक्षात घ्याव्या.

१) पाण्याचा निचरा:– पाण्याचा निचरा नसल्यामुळे जमिनीत हवा खेळती राहत नाही. आणि जमिनीत असलेली अन्नद्रव्ये पिकास उपलब्ध होत नाहीत. त्यामुळे जमिनीच्या खालच्या थरातून पाण्याचा निचरा होणे हे संत्रा पिकास जास्त महत्त्वाचे आहे .

२) जमिनीतील चुनखडीचे प्रमाण :–संत्रा लागवड करतांना जमिनीतील चुनखडीचे प्रमाण पाहणे आवश्यक आहे . जमिनीतील चुनखडीचे प्रमाण १०%पेक्षा जास्त नसावे .याचे प्रमाण जास्त असेल तर झाडाला आवश्यक अन्नद्रव्ये झाडास उपलब्ध होत नाही ,तर याचा परिणाम बहार वर होतो .

३) जमिनीची खोली :–संत्रा झाडाच्या आयुष्यमानासाठी अन्नद्रव्ये शोषणासाठी जमिनीच्या खोलीची महत्त्वाची भूमिका आहे. संत्र्याची ५० ते ६० % अन्नद्रव्ये शोषणारी मुळे ही जमिनीच्या पहिल्या ३० सें.मी. मध्ये तर ३० ते ३५ टक्के मुळे त्याखालील ६० से.मी. मध्ये असतात त्यामुळे जमिनीची खोली कमीत कमी १ मीटर असावी. त्याखाली कच्चा मुरूम असावा .४)जमिनीचा स्तामु:– संत्रा पिकाकरिता जमिनीचा स्तामु ६.५ ते ७.५ असल्यास पिकास पोषक असतो.

५)क्षारता :–ज्या जमिनीत एकूण क्षारांचे प्रमाण १००० पीपीएम पेक्षा अधिक असते. अशा जमिनी संत्रा लागवडीची योग्य समजाव्या. क्षारांचे प्रमाण जेवढे कमी तेवढे चांगले.

६) सुपीकता :–जमिनीचा पोत, सच्छिद्रता खोली व रासायनिक घटक ह्यांनी ठरविलेल्या संरचनेवर सुपीकता अवलंबून असते .जमिनीत योग्य प्रमाणात सेंद्रिय पदार्थ, कर्ब असल्यास आवश्यक द्रव्य मुळांना सहज उपलब्ध होतात. तसेच सुपीक जमिनीत ओलावा बरेच दिवस टिकून राहत असल्यामुळे ही मूलद्रव्य मुळे शोषून घेऊ शकतात.

निष्कर्ष :–१) विदर्भात संत्रा पिकावर जमिनीचा परिणाम झालेला दिसतो. कारण गडचिरोली ,भंडारा, गोंदिया या जिल्ह्यात संत्रा खालील क्षेत्र अतिशय कमी आहे .

२) चंद्रपुर जिल्ह्यात उष्ण तापमानामुळे संत्रा पिकाखालील क्षेत्र अतिशय कमी दिसून येते.

३) नागपूर विभागाचे हवामान संत्रा पिकासाठी सर्वात योग्य आहे.

४) जमिनीमध्ये योग्य प्रकारे रासायनिक व यांत्रिक पद्धतीने व्यवस्थापन केले तर उत्पादन क्षेत्रात वाढ होते .

संदर्भ ग्रंथ:–

१) अमिन प. वा (२००१) संत्र्याचे पुस्तक ,दृश्या पब्लिकेशन ,नागपूर
२) अभोरे रमेश (२०१४)"संत्रा पीक उत्पादन व तंत्रज्ञान"
३) साळुंखे विजया (२०१५) "कृषी भूगोल हायमंड पब्लिकेशन" पुणे.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 4, ISSUE 1

EVALUATION OF ROAD DENSITY IN AKOLA DISTRICT OF MAHARASHTRA STATE

DR. OMPRAKASH B. MUNDE
Head, Dept. of Geography,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera Railway **(MS) INDIA**

ABSTRACT

Road is the mean and main in transport network system. It is an important indicator in the development of nation. Road density means the length of road networks in a unit area of particular region. The development of the region is generally influenced by road network system. This paper has reveals the evaluation of road network density by area and population in Akola district of Maharashtra state.
Key Words *Road network, road density, per 100 sqkm, per 1000 population*

INTRODUCTION: -

The density of road network is always found different by area and by population of any region. Density shows the length of road network by area and also length of road by population. Higher road density positively impacts on the overall development of the region. But in most of the region variation are found in the road density by area and population e.g. road density in Mumbai is higher by area but by population the density is very poor.
Present paper is based on the tahsil wise analysis of road density in per 100 sqkm and road density in per 1000 population of Akola district.

Objectives of the Study

The main objectives of the present research has follows,

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

1) To calculate the density of road network in per 100 sqkm region of Akola district
2) To calculate the density of road network in per 1000 population of the study region
3) Evaluate the density of road network in per 100 sqkm and per 1000 population of the study region.

Research Methodology & Data Source

Present research work is completed with the help of secondary source of data. Road data collected from the Socioeconomic Review of Akola District and P.W.D. Office Akola District. Population data is collected from District Census Handbook of Akola District, 2011. The density of road network in per 100 sqkm and per 1000 population is calculated with the help of following formula;

- **Density (Per sq.km.) = Road Length ÷ Geographical Area**
- **Density (Per 1000 Population) = (Road Length ÷ Population) × 1000**

The results are shown in the table and map of the study region

Study Area

Akola district is located in the state of Maharashtra. Akola district lies in between 20^0 16' N to 21^0 11' N latitude and 76^0 38' E to 77^0 33' E longitude. Akola district abounded with total seven tahsils Akola, Balapur, Patur, Akot, Telhara, Barshitakali, and Murtijapur (Map No 1). Total population of the district is 1813906 according to the census year 2011.

Amravati district is situated towards east and north side of the region. Buldhana district towards west and Washim district is located to the south of the district.

Road Network in the District

Total road length of the district is 5663 km and out of them 128 Km length is National highway also length of State highway is 779 Km, District Roads are 3847 Km and length of rural roads are 909 Km.

National Highway No 6 is passing through the district and it passing west to east of the region. It goes towards Mumbai at west and towards Kolkata to the east. Also all tahsil places connected with the State Highways. State Highway Nos 28, 66, 69, 70, 72, 28A and 63A passing through the entire district.

The tahsil wise road length and both densities are shown in table no1.

Road Network Density in Per 100 sqkm

The road density of the total district is 104 in per 100 sqkm area. Highest density of road network in per unit area is recorded in Akola (273) tahsil. Maximum road length is also occurred in Akola tahsil and the ratio of road length and the area is greater than other tahsils of the district. Akola is the main tahsil in the region and length of National highway, State highway and rural roads are higher in this tahsil.

In remaining all over part of the district the road density is below 100 in per 100 sqkm area. Lowest road density is found in Balapur tahsil (55) and the densities of remaining tahsils are in between 57 to 78 Km in per 100 sqkm region.

Barshitakali tahsil has found second highest density of road network in per 100 sqkm area. It is a 100% rural tahsil and having maximum road length after Akola tahsil.

Table No 1
Akola District – Road Density (Per 100 SqKm and Per 1000 Population)

Tahsil Name	Road Length in Km	Density Per 100 sqkm	Density Per 1000 Population
Akola	2831	273	3.86
Akot	531	65	2.08
Balapur	378	55	2.00
Barshitakli	601	78	4.02
Murtizapur	503	64	2.88
Patur	396	57	2.85
Telhara	423	67	2.45
Total	**5663**	**104**	**3.12**

Source:- P.W.D. District Office Akola & Density is calculated by Researcher

Road Network Density in Per 1000 Population

In the entire district only 3.12 km road length is available in per 1000 population. Maximum road density in per 1000 population is recorded in Barshitakali tahsil (4.02) and then in Akola tahsil (3.86). These two tahsils has also recorded maximum density in per 100 sqkm area but compare to their population road density is very low.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

The road density by per 1000 population in all remaining tahsils found 2 to 3 km i.e. 2 to 3 km road are available in per 1000 population. But the density of roads according to the population is poor than area.

Evaluation of Road Density

Variations are found in the tahsil wise density of road network in per 100 sqkm as well as per 1000 population. The density of road network according to the distribution of population is poor compare to the per 100 sqkm area. It is a very difficult task to construct new road according to the growth of population because growth rate of population and growth rate of road network cannot match with each other. But we can control the excess growth of population in the region to the balance road development of the region.

The road density by area found highest in Akola tahsil but the density by population is moderate in this tahsil. This tahsil has covered maximum population and highest road length in the district but compare to the distribution of population road length is not enough.

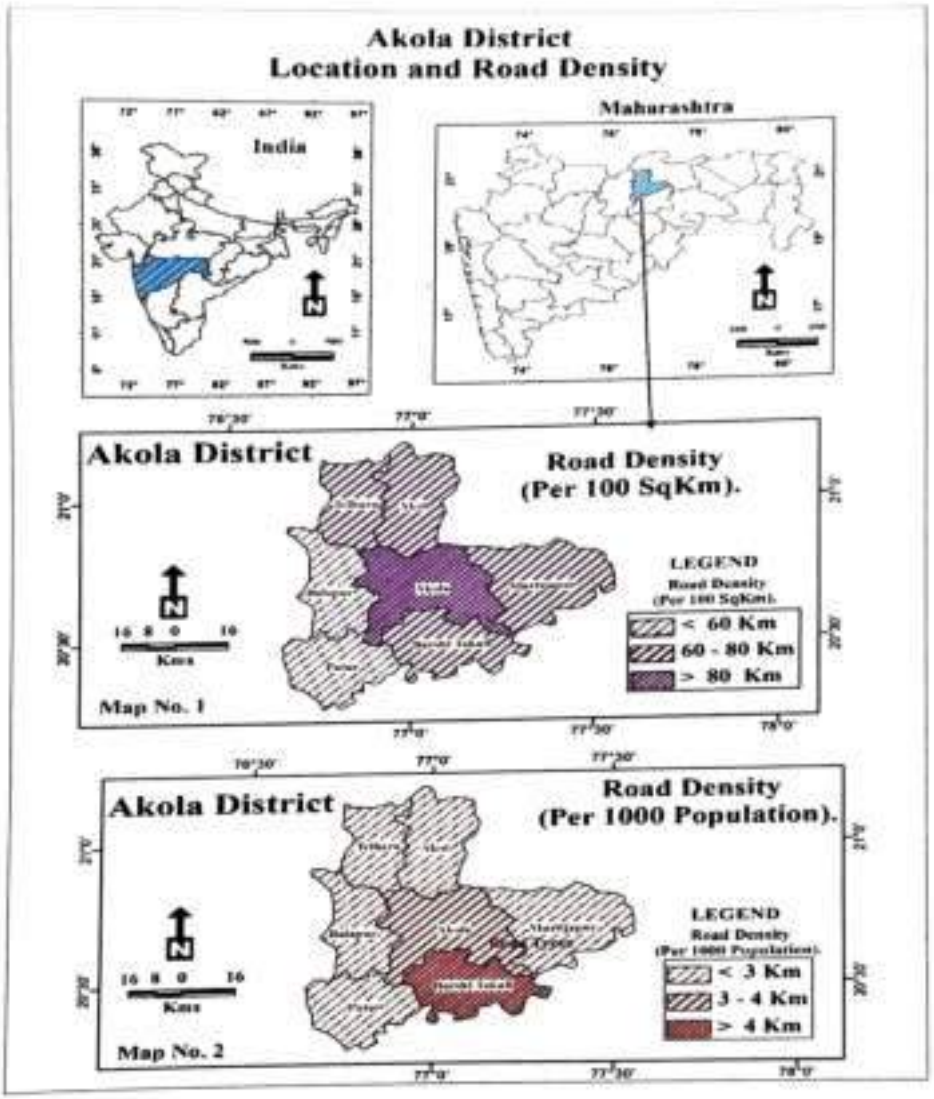
Barshitakali tahsil has moderate density of road network by area and maximum by population in the district. In this tahsil near about more than 4Km roads are available in per 1000 population. The population of this tahsil is totally rural. Patur and Barshitakali tahsil has low distribution of total population in the district compare to other tahsils.

Balapur tahsil recorded lowest road density of both in per 100 sqkm and per 1000 population because the poor development of road length. This tahsil has also found lowest road length in the entire district.

Map No 1 shows the tahsil wise density of road network in per 100 sqkm and Map No 2 shows tahsil wise density of road network in per 1000 population.

Principal

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 4, ISSUE 1



CONCLUSION & SUGGESTION

The road network is tilled not fully developed in all over the district. The road length is uneven in all over the district. The development of road network observed one sided in the district. Only Akola tahsil found the maximum road length and density by area. It is necessary to develop the road network uniformly in all over the region.

Balapur, Patur and Telhara tahsils has found the lowest road network compare to their area and population. Therefore both densities are low in these tahsils.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Disconformities found in the density of road network in per 100 sqkm and per 1000 population. To expand the length of old roads, to construct the new flyovers, subways etc will help to reduce the over traffic and increases the road development of the region. road network is always plays an important role in the development of any region therefore it is necessary to develop more network in advance type and also control the excess population growth in the district for the development of road network according to the population.

REFERENCES

1) Bamford C.G. & Robinson H (1978), "Geography of Transport, Mcdonald and evens ltd, Estover Playmount
2) Obafemi A.A., Eludoyin O.S., Opera D.R. (2011), "Road Network Assement in Trans-Amadi, Port Harcourt in Nigeria Using GIS", International Journal for Traffic and Transport Engineering, 2011, 1(4), Page No. 259.
3) Patil R.P. (2009) - Road Network - A Study of Marathwada Region – Research Analysis and Evaluation, International Referred Research Journal, Vol. III, Issue-2
4) Sriraman S (1998) – Road Transport development in India – Current Science, Vol. 75, No. 8, P. 785

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

5, June -2019

SPECIAL ISSUE- CXCII

CURRENT TRENDS IN HUMANITIES & COMMERCE



Executive Editor:
Prof. Virag S. Gawande
Director,
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Guest Editor
Prof.Dr.Sanjay J. Kothari
Hod & Assistant Professor,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist.Amravati [M.S.]

Chief Editor
Mr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

22	कृषी उत्पन्न बाजार समिती:कार्य व भूमिका डॉ. अश्विनी श्रीधर राऊत	87
23	सम्राट अशोकाची धम्मनिती व मानवाधिकार प्रा.डॉ. अनिल ठाकरे	91
24	वृद्धावस्था : एक समस्या प्रा. वैशाली तुकाराम लोणे	93
25	Physical education and Yoga for overall development **Chapke Bharat Haribhau**	95
26	Comparative Study Of The Leg Strength And Agility Of Thekabaddi And Kho-Kho Players. **Suredra T. Chauhan**	98
27	Depiction of Indian Culture through the selected works of V. S. Naipaul **Subodh Krishna Pagare**	102
28	Victimization Of Children : Causes & Measures **Vikas G. Karmore**	107
29	Myth and legends in Amitav Ghosh's The Hungry Tide **Sachin S.Matode**	112
30	Globalization and the Lifestyle of People **Dr.Anjali Pande**	115
31	Effect Of Swimming Training On Standing Heightof Beginner Swimmers **Dr.Yogesh S. Nirmal**	118
32	Use and User Perception of E-Resources in Jawaharlal Nehru Engineering College, Aurangabad: A Study **Dr. Vilas Ashokrao Kale**	125
33	An empirical study of impact of effective induction training on employee performance and satisfaction In selected manufacturing companie In pune **Mr. Laxmidhar Biswal,/ Dr. Vijay Joshi**	136
34	Need and Importance of Automation in Academic and Public Library **Dr. Rashmi Bakane**	150
35	Effects of Nutrition on Adolescent Girl Students **Dr. Punam Deshmukh**	155
36	Social Realism in 'The Swami and Winston' **Deepmala Patode**	157
37	A Study of Changes in the Standard of Living of the Labourers Due to Migration **Dr. Laxmikant shivdas hurne**	161
38	Productivity Index of Gram Crop in Amravati District of Maharashtra State **Dr. Omprakash B. Munde**	171
39	Manpower planning: a real boon for management in the organization scenario **Dr. Prashant M. Puranik**	176
40	Farmer's Suicides in India **Dr. P. D. Suryawanshi**	180
41	The Role of Finance in Growth and Development of a Country Dr. Rita Deshmukh	185
42	Impact of Goods and Services onIndia Economy **Dr.Kanteshwar Dhoble**	190
43	Participation Of Women Of Amravati City In Schemes Of Maulana Azad Minorities Financial Development Corporation Limited Dr.Prashant J. Katole	194
44	Suicide is a product of sick mind : A legal perspectives **Dr. Manoj N. Bendle**	203

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013) | June 2019
Special Issue
UGC Approved No. 40705

Productivity Index of Gram Crop in Amravati District of Maharashtra State

Dr. Omprakash B. Munde
Head, Dept. of Geography, Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

ABSTRACT

Gram is an important pulse crop in India. It is commonly known as chick pea or Bengal gram. It is a multipurpose use crop in India. Fresh green leaves are used as vegetable while straw of chickpea is an excellent fodder for cattle. It is also used as vegetable.

Present paper has attempts the productivity index and change of gram crop in Amravati district of Maharashtra state.

Key Words

Gram, Chana, Productivity, Change

Introduction

Gram is also very well known as 'Chana' and it is an important food crop in India. It is a rich source of protein and useful part of diet. It contain near about 17 to 20 % of protein. It is mainly September o November and harvested in February month (http://www.commoditiescontrol.com).

Present paper is based on the tahsil wise analysis of productivity index gram crop in the year 2001-2002 and 2011-2012 also the change during this period.

Objectives of the Study

The main objective of the present study is to calculate the productivity index of gram crop and tahsil wise analysis the change in index during 2001-2002 to 2011-2012.

Data Source and Methodology

The data source of the present research work is based on the secondary source of data. The related data of gram crop was collected from the Agriculture District Office, Amravati. The productivity index of gram crop is calculated by Mohammad Shafi's Productivity Method with the help of following formula.

(Y ÷ Yn) ÷ (T ÷ Tn)

Y - Production of unit area,
Yn - Production of total area,
T - Area under crop unit area,
Tn - Area under crop of total area.

The results are shown in the table and map of the study region also change is shown in the graph.

Study Area

Amravati district is situated on east of Maharashtra state. This district is main district of Amravati Division; there are total 14 tahsil included in the district. The district lies between 20^0 33' N to 21^0 47' N latitudes and 76^0 43' E to 78^0 24' E longitudes.

Total geographical area of district is 12210 sq.km and total population is 2888445 according to the census year 2011.

Productivity Index of Gram Crop

Table No shows the productivity index of gram crops in the year 2001-2002 and 20111-2012 and change during this period.

Table No 1 – Productivity Index of Gram Crop in Amravati District (2001-2002 and 2011-2012)

Tahsil Name	2001-2002	2011-2012	Change
Dharani	0.23	1.52	1.29
Chikhaldara	0.36	1.79	1.43
Anjangaon Surji	0.98	2.14	1.16
Achalpur	0.89	2.03	1.14
Chandur Bazar	1.39	1.47	0.08
Morshi	1.37	0.98	-0.39
Warud	0.62	3.12	2.5
Tiwasa	2.36	1.32	-1.04
Amravati	0.54	0.38	-0.16
Bhatkuli	1.45	0.04	-1.41
Daryapur	1.63	0.08	-1.55
Nandgaon Khandeshwar	1.12	1.89	0.77
Chandur Railway	1.32	2.13	0.81
Dhamangaon Railway	1.21	2.02	0.81

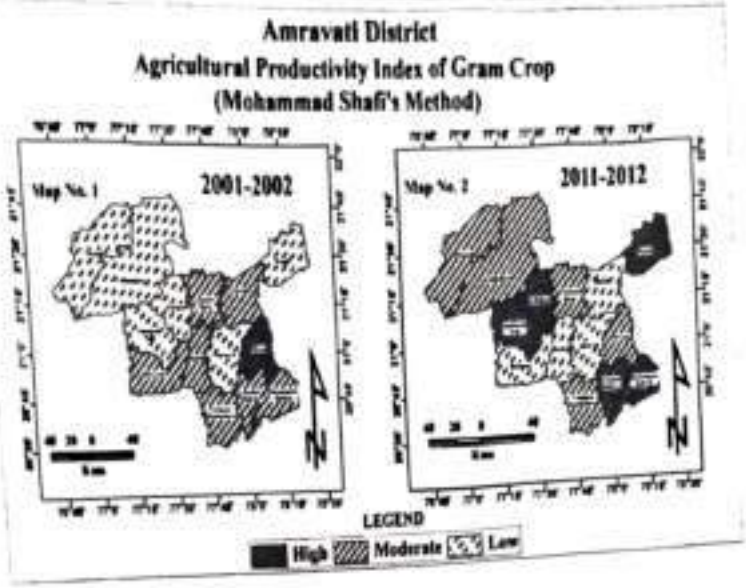
Productivity (2001-2002)

The highest productivity index of gram crop was recorded in Tiwasa tahsil (2.36) in 2001-2002. The per yield productivity of gram is maximum in this tahsil compare to the other part of the district.

The productivity index in between 1 to 2 was found in Daryapur, Bhatkauli, Chandur Bazar, Morshi, Chandur Railway, Dhamangaon Railway and Nandgaon Khandeshwar respectively. Gram is an important crop in pulses in these tahsils in 2001-2002.

The remaining part of the district recorded less than 1 index of productivity. The per yield production of gram crop is lower in this region. Chikhaldara and Dharani was the lowest productivity of this crop in the year 2001-2002 because of the non suitable physical conditions.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya



Productivity (2011-2012)

In this year the picture of productivity of gram crop found totally different than previous year. The main reason is the diversification of food crops in the region.

In this period the maximum productivity of gram crop is found in Warud (3.12) tahsil. The percentage of gram cultivation is reduced in this year but per yield production is increased in Warud tahsil in 20111-2012.

The productivity index more than 2 observed in Anjangaon Surji, Chandur Railway, Achalpur and Dhamangaon Railway tahsil respectively.

The index in between 1 to 2 observed in Nandgaon Khandeshwar, Chikhaldara, Dharani, Chandur Bazar and Tiwasa respectively. Tiwas was the highest in previous year and low moderate in 20111-2012. The cultivation of gram crop is higher in Tiwasa tahsil also harvested area is also increased compare to 2001-2002. Production is also increased of gram crop in Tiwasa tahsil but per yield production is lower and reduced compare to the cultivated area of gram crop in Tiwasa tahsil.

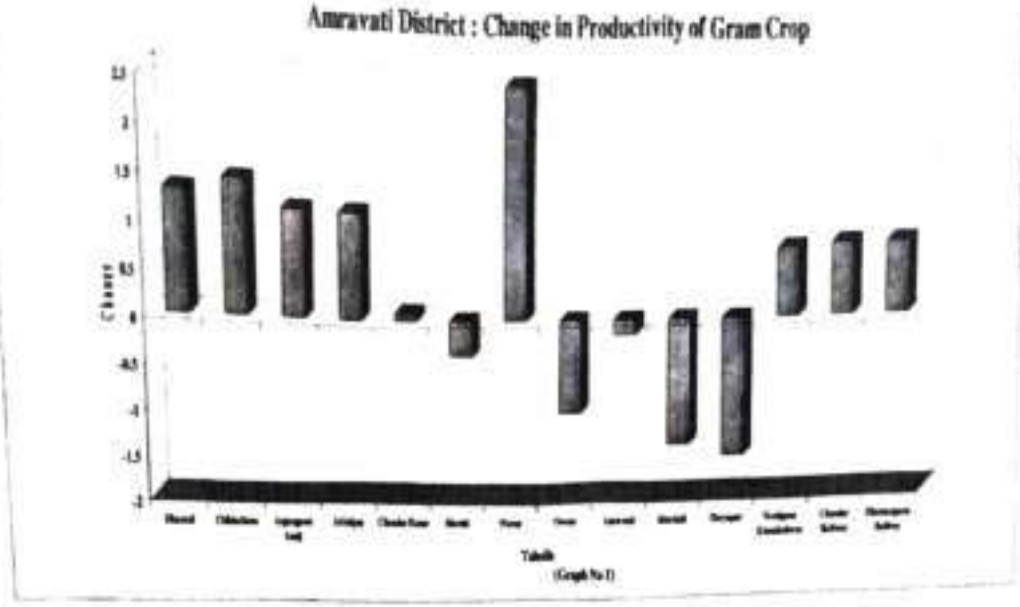
Remaining part of the district found below 1 index of gram crop productivity. Daryapur and Bahtkuli found the lowest per yield production of this crop in the entire region. Bhatkuli and Daryapur were moderate in 2001-2002 but lowest in 2011-2012. The percentage of Gram cultivation in pulses is also increase in both tahsil in 2011-2012 than 2001-2002. Production is also increase but compare to their cultivation per yield production is not sufficient and therefore their productivity found lowest in the district.

Map No1 and 2 shows the tahsil wise productivity index of gram crop in the study region.

Change in Productivity of Gram Crop (2001-2002 to 2011-2012)

The maximum change found in Warud tahsil (+2.5). The cultivation of gram production is reduced in pulses section in 2011-2012 compare to the year 2001-2002 but per yield production is increase in this tahsil and it is higher in the region.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera



The productivity index of gram crop increased in between 1 to 2 in Chikhaldara, Dharani, Anjangaon Surji and Achalpur tahsil respectively.

The index increased less than 1 in Chandur Railway, Dhamangaon Railway, Nandgaon Khandeswar and Chandur Bazar tahsil. The cultivation of gram crop is increased in all these tahsil in 2011-2012 than 2001-2002. In Nandgaon Khandeshwar tahsil Gram is the single pulse crop cultivated in 2011-2012.

The negative changes are observed in Amravati, Morshi, Tiwasa, Bhatkuli and Daryapur tahsil. The growth of per yield production is reduced compare to their cultivation in 2011-2012.

Graph No 1 shows the tahsil wise change of gram crop during the period 2001-2002 to 20111-2012.

Conclusions and Suggestions

The variations are found in the productivity index of gram crop in the study region. The productivity index of gram was higher in Tiwasa tahsil and then Nandgaon Khandeshwar and Bhatkuli tahsil in 2001-2002 but their productivity is decreased in 2011-2012. The cultivated area of gram increased in pulses section but productivity can not be increased due to yhe lack of proper technique of cultivation pattern. Only increasing harvested area is not solution to the growth of production. Proper technique about cultivation, ratio of waste land and cultivation is also an important for the growth of per yield production of any crop.

The atmosphere and surroundings are suitable for the cultivation and production of gram in the study region. Chandur Bazar, Daryapur, Warud, Tiwasa tahsils are the main source of gram production in the district. The proper ratio of cultivation, use of fertilizers and step by step ratio of waste land from cultivated and helps the increasing per yield production of pulses and specially the gram crop in this region.

Principal

References

1) Commen M.A., 1962, Agricultural Productivity Trends in Kerala. Agriculture situation in India vol. no. 17, pp 333-336.
2) Jadhav M.G., 1997, "Agricultural Development in Maharashtra: A Spatial Interpretation" (Trans. Inst. Indian Geographer).
3) Majid Husain (1999): 'Agricultural Geography', Rawat Publication, New Delhi, p. 246.
4) Shafi Mohmmad, 1983, Agricultural Productivity & Regional Embalences" Concept publishing Company New Delhi, pp 172- 155.

PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 2, ISSUE 4

PHYSIOGRAPHY AND SPATIAL DISTRIBUTION OF SETTLEMENTS OF TRIBAL POPULATION IN WARUD TAHSIL IN AMRAVATI DISTRICT

DR. OMPRAKASH B. MUNDE
Head, Dept. of Geography,
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera Railway **(MS) INDIA**

ABSTRACT

Relief features of any region are impact on the distribution of population as well as settlements of that region. Tribal population is generally situated in hilly region but now days some of them are well educated and settled in urban region. The height of the region is positively impact on the distribution of settlements and population of tribal community. This paper reveals the analysis of distribution of settlements and population of tribal community in Warud tahsil of Amravati district.

Key Words *Physiography, tribal population, distribution, settlement*

INTRODUCTION

Warud tahsil is the part of Amravati district and near about 15% population of this tahsil is tribal and out of them more than 85% tribal population situated in rural region. Relief of the tahsil is impact on the location of tribal population. Present paper is based on the distribution and location of settlement and population of tribal community according to the height in Warud tahsil of Amravati district.

Objectives

The main objectives of the present research work as follows,

1) To explain the height of the study region.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

2) To analysis the distribution and density of Scheduled Tribe population according to height of the region.
3) To point out the locations of settlements of tribal population according to the size of their population.
4) To calculate the relationship between physiography and distribution of ST population and their settlements.

Data Source and Methodology

The present research wok has been carried out with the help of secondary source of data and graphical analysis. The population data of tribal community and tahsil map is compiled from District Census Handbook Amravati, 2011. Physical map of the tahsil is created with the help of Survey of India's Toposheet No 55G and 55K.

The location of tribal community according to their size of population is overlapped in physiography map of the study region. The area of each height zone and number of settlements and population is presented in the table. The relationship between physiography and distribution of settlements as well as population is represented on the regression line on scattered diagram.

Study Region

Warud tahsil is located at northeast side of Amravati district in the state of Maharashtra. Study region lies between21^0 21' 33" to 21^0 38' 54" North latitudes and 78^0 1' 54" to 78^0 25' 7" East longitudes. Tahsil covered total 745 sqkm area and total population is 224984 and out of them 33212 is Scheduled tribe according to the census year 2011.

Morshi tahsil is located towards west Madhya Pradesh state towards north, Wardha and Nagpur district towards east and Wardha district towards south of the tahsil.

Tribal Settlements and Population in the Region

In the study region there are total 128 habited settlements and out of them tribal population is distributed in 122 settlements. Only 6 settlements have not contains tribal population. In the study region percentage of tribal population is 14.76% to the total population. Out of total ST population 50.99% are male and 49.01% are females and sex ratio of ST population is 961 according to the 2011 census.

Physiography of the Region

Principal
Narayanrao Rand Mahavidyalaya
Badnera

The height of the region is found in between 350 meters to 750 meters from the above mean sea level. The height of the region declines from north to south. Maximum part of the region is in under 350 to 450 meter height zone.

Physiography and Settlements of Tribal Population

Table No 1 shows height zone, their area and distribution of settlements and population as well as density of the tribal population in the study region. and Map No 1 shows the Population of the region according to the height.

Above 550 Meter Height and Tribal Population

Middle northern narrow part is under in above 550 meter height zone. This zone covered 28.06 sqkm area of the tahsil and it is 3.77% to the total area.

In this zone total 5 settlements are located of tribal population and size of settlements is averagely 500 to 2000. Total 3046 population is situated in this height zone and it is 9.17% to the total ST population. The density of ST population is 609 persons per sqkm in this zone.

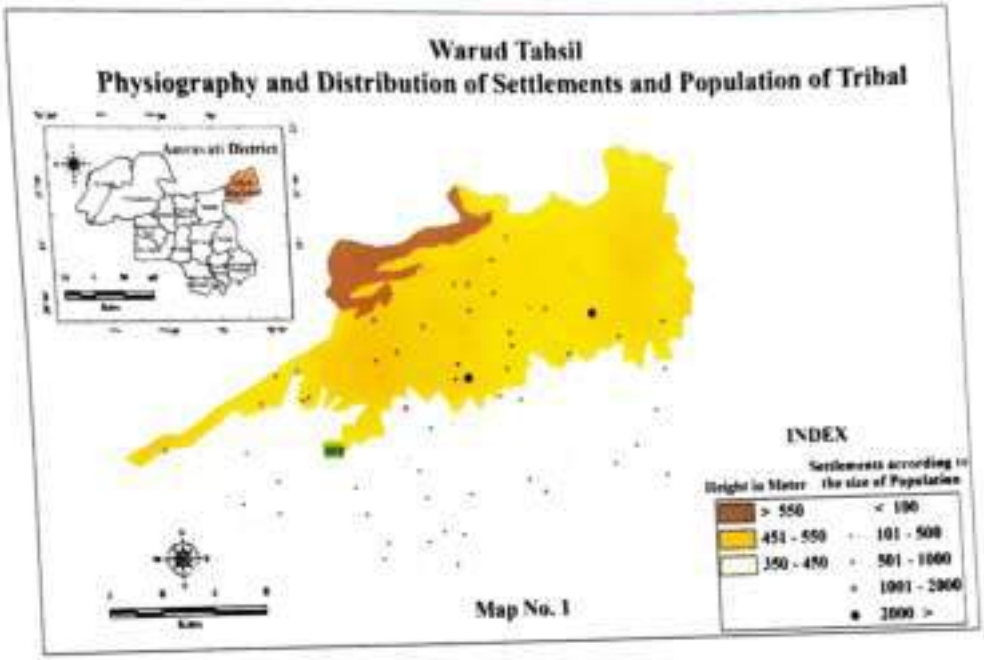
Table No 1: Physiography and Distribution of Settlements, Population and Density of Tribal Community

Height in Meter	Area in Sq.km	No of Settlements	Population	Density of Population (Per SqKm)
Above 550 Meter	28.06	5	3046	609
451 to 550 Meter	328.10	45	17522	389
350 to 450 Meter	388.84	72	12644	176
Total	**745**	**122**	**33212**	**45**

Source: Author

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalay
Badnera

PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL. 2, ISSUE 4



451 to 550 Meter Height and Tribal Population

Northwest boundary narrow part to middle part to east part of the tahsil is in this altitude region. This part covered 328.10 sqkm area of the tahsil and it is 44.04% to the total geographical area of the study region.

In this altitude region total 45 tribal settlements are located and their population in these settlements are 17522 (52.76%) with density 89 persons in per sqkm region.

350 to 450 Meter Height and Tribal Population

South to middle part of the region is found in 350 to 450 meter and covered maximum area of the tahsil. This altitude region occupied 388.84 sqkm area of the tahsil and it is 52.19% to the total geographical area of Warud tahsil.

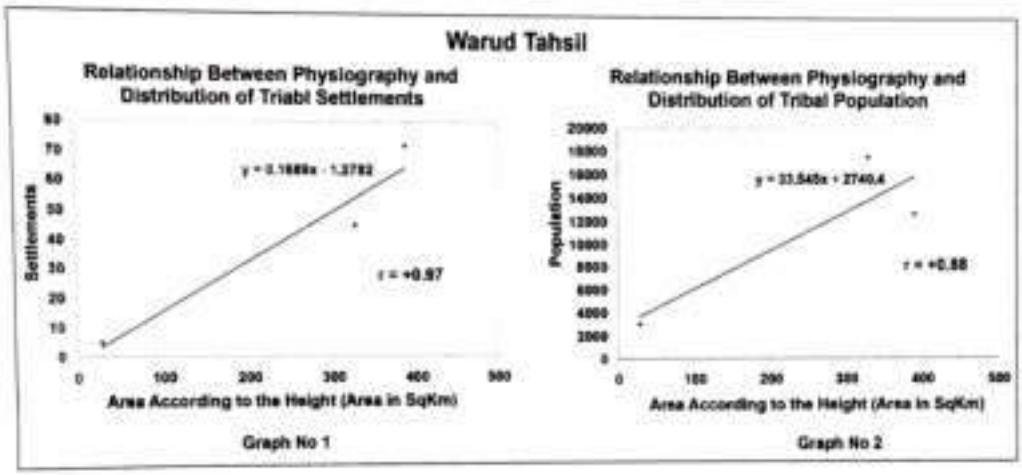
There are total 72 settlements are situated in this altitude region of the tahsil. Total ST Population of this region is 12644 and it is 38.07% to the total ST population of the study region. Density of tribal population in this zone is 176 persons in per sqkm area.

Relationship between Physiography and Spatial Distribution of Settlements of Tribal population

DR. OMPRAKASH B. MUNDE
Principal
Vasantrao Naik Mahavidyalaya

The relationship between the distributions of tribal settlements according to the height is positive and it high degree (r = +0.97). The height of the region is positively impact on the distribution of settlements of tribal population in the region. Maximum settlements are located in 350 to 450 meter height region (Graph No 1).

The relation between height and distribution of tribal population is also positive and it is also high degree (r = +0.88). Physiography of the region is also impact on their distribution of population (Graph No 2).



CONCLUSIONS AND SUGGESTIONS

The variations are found in the distribution of settlements and population of the region. Maximum ST Settlements are located in 350 to 450 meter altitude region but maximum population is located in 451 to 550 meter altitude region. The size of population is high in 451 to 550 meter altitude region therefore maximum population is observed in this zone.

The density and distribution of ST population is also not uniform in the tahsil. The maximum density of population is observed in high altitude region and low population density recorded in low altitude of the tahsil. The population in high altitude region is till backward and engaged in their traditional work. Physiography of the tahsil is positively impact on the distribution of settlements as well as population of tribal in the tahsil.

Middle part of the region is moderate altitude and maximum distribution of population zone but the density is moderate. It is an important to control population size of tribal settlement to the social and economical development of each family. It is also necessary to increase the basic facilities in every tribal settlement because it will help to reduce their migration and control the excess population size.

DR. OMPRAKASH B. MUNDE

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera
Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 2, ISSUE 4

REFERENCE

1) District Census Handbook, Amravati District, 2011, Directorate of Census Operations, Maharashtra.
2) Khandar Dr. S.S and Waindeshkar Amol (2012), "Forest Degradation in Warud Tahsil of Amravati District", Research Nebula, Vol –I, Issue-II, July 2012, pp 28-30
3) Socio-economic Review of Amravati District 2011-2012
4) Survey of India's Toposheet Nos 55G and 55K

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)







AJANTA

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



Volume - X, Issue - I,
January - March - 2021
English

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 : 6.399 www.sjifactor.com



Ajanta Prakashan

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

CONTENTS OF ENGLISH

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Physical Fitness during Pandemic: Building a Human Capital for Atma Nirbhar Bharat **Prof. Dr. Khushal J. Alaspure**	1-7
2	Need and Importance of Financial Literacy in the Context of 'Self Reliant India' **Pallavi Pramod Biyani**	8-12
3	Building Health Infrastructure for Atmanirbhar Bharat **Dr. Shrikant S. Mahulkar**	13-18
4	Self-Reliant India Campaign about Agriculture in India **Dr. Omprakash B. Munde**	19-22
5	Strengthening Mental and Physical Health against Pandemic: A Way towards Atma Nirbhar Bharat **Dr. Sudhir D. Pathare**	23-29
6	Self-Reliant India: The Call for National Independence **Dr. Santosh Shankarrao Pharande**	30-34
7	Aatma Nirbhar Bharat Abhiyan: An Introductory Analysis to New Economic Policy of the Government of India **Dr. Sajoy P. B.**	35-40
8	Plastic Recycling Technology: Suitable for Sustainable Life **Dr. Yashwant H. Ulvekar** **Dr. Prafull P. Vashenikar**	41-44
9	Analytical study of the campaign 'Self Reliant India' in Agriculture Sector with Reference to Agricultural Credit **Dr. Eknath Kundlik Zhrekar** **Arvind Ankush Shirke**	45-57
10	Covid-19 and its Impact on E-Administration, Politcal Stability, Employment, and Migration in the in the Indian Economy **Dr. Channamma M.**	58-67

4. Self-Reliant India Campaign about Agriculture in India

Dr. Omprakash B. Munde
Head, Dept. of Geography, Narayanrao Rana Mahavidyalya, Badnera Railway.

Abstract

Currently, the entire world economy has been disrupted by the Corona epidemic, including in an agricultural country like India. The lockdown was announced by the Hon'ble Prime Minister to prevent the spread of Corona. In this lockdown, along with the working people, farmers, agri-dependent entrepreneurs, etc. suffered a lot. India has a lot of natural resources and those natural resources must be used for India's own development. With this in mind, the Prime Minister announced a self-reliant package to move the people of India towards self-reliance and progress without relying on others. The announcement of the agricultural package was made in the third phase.

The present article briefly discusses the concept of self-reliant and Self-Reliant India Campaign about Agriculture in India.

Key Words - Self-reliant, agriculture, agricultural commodities

Introduction

India is an agricultural country and most of the population of India is dependent on agriculture and its based industries. Agriculture is of paramount importance as India's core economy is dependent on agriculture. The Prime Minister declared a self-sufficient India to offset the losses incurred during the lockdown as well as to strengthen India's economy. The third phase of the Agriculture Package under the Self-Reliance India Mission was announced on 15th April, 2020 to further strengthen India's core business of agriculture and improve the current state of agriculture.

The present article briefly discusses self-reliant India campaign and Indian agriculture.

Objectives of the Study

The main purpose of this article is to discuss the self-reliance campaign about agricultural system in India.

Data Source

The present article is based on daily published papers, news, magazines, previously published information and research articles on related topics as well as the assessment made by reading. In this article, an attempt has been made to present the basic concept of self-reliant India and the role of self-reliant India campaign for agriculture.

Study Area

This article is not about any specific region but refers to the declarations made in the Self-Reliance India Campaign regarding the agricultural system in the whole of India. Therefore, the study area is the whole of India as there is a plan in the whole of India for agricultural management.

Concept of Self-reliant India

Self-reliance means making full use of the resources of the country. The role is not to seek foreign aid, but to rely on foreign goods altogether.

Prime Minister Narendra Modi has announced the 'Self-Reliance India Campaign' for the first time on May 11 against the backdrop of the fight against Covid-19. Self-reliant means self reliant. In short it means that you have to take care of your own needs.

Important Announcements for a Self-Reliant India in Agricultural sector

1. **One Lakh Crore Scheme for Agricultural Infrastructure**

The government will focus on improving the quality and scope of agricultural infrastructure. This will include storage capacity of agricultural commodities related to agriculture, primary agricultural societies, startups etc

2. Assistance to Small Scale Processing Industries

The cluster will be prepared according to the local crop composition in different states as well as emphasis on herbal products, including nutrition and health products. This will benefit two lakh small food companies for which a provision of Rs 10,000 crore has been made.

3. Fishing and Fisheries

Under the Prime Minister's Fisheries Scheme, there is a provision of Rs 20,000 crore for fishing and fisheries and an insurance scheme for fishermen as well as their boats.

4. Vaccination scheme for livestock

Cows, buffaloes, goats, sheep, and other agricultural animals will be vaccinated 100%. A provision of Rs 13,347 crore has been made for this

5. Infrastructure Related to Dairy and Animal Husbandry

Fifteen thousand crore rupees will be allocated for the infrastructure of both these components and private investors will also be attracted. Encouragement will be given for production and processing of dairy products and also for animal feed manufacturing businesses.

6. Promotion of Medicinal Plant Farming

A provision of Rs 4,000 crore will be made for this agribusiness. The cultivation of medicinal and herbal plants on both the banks of the Ganges will be given priority. The government aims to cultivate this in a total area of one million hectares.

7. Bee Keeping Scheme

More incentives will be given to increase the production of natural honey and the government has allocated about five hundred rupees for this.

8. Top to Total Scheme

This scheme is for perishable crops and this scheme is for all types of perishable crops. Under this scheme, subsidy will be given to the farmers, out of which 50% subsidy will be given for transportation of goods and 50% subsidy will be given for storage of goods.

9. It will remove the Difficulties Faced by the Farmers to Sell Their Crops at Reasonable Prices

Facilitation will be provided for sale and supply of interstate goods. It will try to connect the farmer directly to the market. This will enable the farmers to sell not only in the Agricultural Produce Market Committee but all over India where they can get the right price.

10. The Essential Commodities Act will be enforced Only in Case of Emergency

The law will be amended to increase investment in agriculture as well as to provide assistance to agricultural commodities. The law will enable farmers to get export prices and fair prices for agricultural commodities

11. Legal Reforms will be made to ensure a Fair Price for Agricultural Commodities

The farmer is skeptical about the exact price of the crop. Therefore, a system will be set up to get a fair price for his agricultural produce. The Finance Minister has also announced a legal framework to reduce the risks associated with agricultural commodities, as well as to stop the exploitation of farmers related to the prices of agricultural commodities.

Main Aim of the Campaign

The declarations are aimed at making India fully self-sufficient in agriculture. Similarly, the main objective of this campaign is to get the goods produced by the farmers directly to the market and get them at a fair price.

Conclusions and Suggestions

Every plan has some positive and some negative aspects. On the negative side, there is a way out of this, so a self-reliant India and the announcements made for agriculture under it are very much beneficial to the farmers.

Today, India is not self-sufficient in food grains except rice and wheat. This is not the case with self-sufficiency in pulses. On the one hand, the suicide of farmers, the lack of prices for crops are serious issues, on the other hand, the import of agricultural products, our economy is in such a dilemma. At the same time, the share of the service sector in the economy is increasing. Therefore, the government's plans for agriculture in the Self-Reliant India Mission are somewhat beneficial and some thought-provoking.

Advanced technology and investment are required to bring about the most impressive changes in both agriculture and manufacturing.

References

1. **आत्मनिर्भरतेचा अर्थ आणि अनर्थ** https://www.orfonline.org
2. Daily Sakal (Friday-15/May/2020),"**आत्मनिर्भर भारत- ३ : शेती आणि शेतीपूरक व्यवसायांसाठी महत्वाच्या घोषणा**, https://www.esakal.com
3. https://www.bbc.com/

Inter Disciplinary
International Conference

on

Academic Research and Innovation in Teaching

&

Arising Inclination in Professional Education

(ARIT – AIPE 2019)

27th - 28th December, 2019

Conference Proceeding Editors

EDITOR

Prof. R. D. Chandak

Dr. J. M. Chatur

CO-EDITORS

Prof. Y. M. Patil

Prof. S. S. Kane

Prof. U. R. Kantode

Prof. A. S. Kalekar

Prof. H. A. Bharmal

Prof. S. R. Batulwar

Prof. M. P. Shende

Prof. K. S. Panpaliya

Prof. S. S. Malani

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc; Without prior permission.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
Peer Review and Indexed Journal (IMPACT FACTOR 5.707)
ISSN 2349-638x
Special Issue No.61

Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

Principal
Narayanrao [illegible] havidyalaya
[illegible]

Librarian
Rana Mahavidyalaya
Padnera

CHIEF PATRONS

Hon'ble Shri. Prakash Jajoo

President, Harikisan Jajoo Education Sanstha, Yavatmal

Hon'ble Shri. Jagdishji Wadhwani

President, Yavatmal Zilha Vikas Samiti, Yavatmal

PATRONS

Prof. R. D. Chandak

Principal, College Of Management And Computer Science, Yavatmal

Dr. J. M. Chatur

Principal, Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalay, Yavatmal

MENTORS

Hon'ble Shri. Aashish P. Jajoo

Secretary, Harikisan Jajoo Education Sanstha, Yavatmal

CONVENER

Prof. A. K. Shingarwade (IQAC Coordinator),

Dr. N. D. Nalode

CO-CONVENER

Prof. S. N. Velukar **Prof. A. B. Payghan** **Prof. N. D. Autkar**

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Sr. No.	Name of the Researcher	Title of the Paper	Page No.
1.	Shri Arvind Sambhaji Pazare	The Library's Role in Teaching and Learning	1
2	Mr. Yogesh Marotrao Patil Mr. Umesh R.Kantode	Analysis Of 2D Geometric Transformation In Computer Graphics	4
3.	Mr. Husain Anwarali Bharmal	A Study Of Impact Of Demonetisation On Small Medium Entreprize (SME)	9
4.	Mr. Ritesh D. Chandak	A Need Of Financial Literacy For The Success Of Financial Inclusion	12
5.	Uday N. Manjre Vijay V. Pande	Technology Enhance High Performance And Mass Participation In Sports	16
6.	A.K. Shingarwade Dr. P.N. Mulkalwar P. R. Garudi	Product Recommender Systems For E-Commerce And Their Limitations	18
7.	Mrs. Shital Yogesh Patil Mr. Yogesh Marotrao Patil	Need Of Digital Learning In Rural Areas	25
8.	Anurag Mohod Dr. Mahek Iram Qureshi	CSR Initiatives Of Business Enterprises With Special Reference To Amravati City	29
9.	Dr.Prashant.P.Karekar	Critical Evaluation Of Medical Tourism In India. Opportunity And Threats	35
10.	Prof. Pratiksha D. Kawalkar	A Review On Study Of E-Commerce And Its Impact On Market And Retailers' In Yavatmal	41
11.	Komal S. Panpaliya	A Review On Consumer Attitude And Perception Towards Green Product	45
12.	Surbhi M. Darda	A Review On Formulation Of Strategies For Developing E-Enterprises In Today's Era With Reference To Small Town.	49
13.	प्रा. डॉ. सुनिल एन. देरे	विपणनामध्ये ई–वाणिज्य व ई–व्यापाराचे फायदे	52
14.	Prof. Sudhir N. Velukar	Some Applications Of Boolean Algebra In Switching Circuits	55
15.	Dr.G.P.Urkunde	Role Of Libraries In Higher Education In India	61
16.	Dr. Milind B. Ghangare	Information Use Pattern Of Undergraduate Students Of Aniket College Of Social Work Wardha, Maharashtra	64

268.	डॉ. ज्योति जुनगरे डॉ. आशीष बिल्लौरे	क्रीड़ा चिकित्सा : उपचार व शोध का नया क्षेत्र	882
269.	डॉ. सारीका एन.दांडगे (बोदडे)	स्वयंरोजगार : वाढत्या बेरोजगारीवरील एक उपाय	885
270.	Dr. F. N. Mahajan	E-Commerce, E-Business and Recent Trends in Communication Sector	887
271.	Dr. V. K. Mahulkar	Corporate Social Responsibility And Sustainable Development	893
272.	डॉ. अश्रु जाधव	बालकाव्दारे मोबाईल फोनचा गैरवापर	899
273.	Dr.T. K. Kanthale	New Trends in English Language and Literature	902
274.	प्रा. स्वाती सरकटे	ग्रामीण विभाग में शिक्षा एवं सहकारिता का अभाव	905
275.	Dr. Rajesh G. Maske	ESL Teacher's Role In Teaching Of English Language In Rural Area	907
276.	डॉ. दीपक द. कोटुरवार	पर्यावरणाच्या जाणीव जागृतीबाबत विद्यार्थी व शिक्षक यांच्यात रूजवावयाची मूल्य एक अभ्यास	909
277.	Prof. Ms. Deepa Sathe	A Review On Effect Of Online Games On School Students	912
278.	Dr. Nikhilesh Nalode	New Trends In Music	916
279.	Dr. S. P. Nimbhorkar	Usage of Information and Communication Technology In Teaching and Learning and it's Barriers	920
280.	Dr. Rahul R. Dhuldhule	International & National Standard Open Source Digital Library Software's: An Overview	923
281.	Nilesh Digamber Autkar	Recent trends in English Language Teaching and Learning	928
282.	Dr.Dipak Ulemale	Peter Handke's linguistic Ingenuity	932
283.	प्रा. डॉ. संतोष बनसोड	रासायनिक और जैविक युध्द और उसका विश्व की राजनिती, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर परिणाम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	934
284.	Bhavna Wasnik	Scope In Food Science and Nutrition: Innovations and Emerging Technologies	940
285.	Dr.Anjali Chandrakant Pande	Need and Scope of Innovation in Home Economics	942
286.	Ravindra D. Kene Dr. P. N. Mulkalwar	Bank and ATM (Automatic Teller Machine) Security: An overview	944

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

रासायनिक और जैविक युध्द और उसका विश्व की राजनिती, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर परिणाम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड
विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग
श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

विश्वयुध्द के दौरान साम्राज्यवादी, पूँजीवादी, **शोषक** ताकतों ने **बडे** व्यापक **पैमाने पर** रासायनिक एवं जैविक हथियारों का इस्तेमाल किया। जैविक हथियार किसी भी मुल्क की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को बहुत बडी चोट पहुँचा सकते है। और इसका विश्व की राजनिती, अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर जो अत्यंत गहरा प्रभाव पडा। और यह आज तक जारी है। जिससे साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद का आतंकवादी चरित्र उजागर होता है। उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करना प्रस्तुत शोध निबंध का मूल उद्देश है।

दुनियाँ के सभी जंग पूँजीवादी लूट–खसोट के लिये हुए थे। शोषकों ने ही किया रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल!

जर्मन वैज्ञानिक फिट्झ हेबर (Fritz Haber) ने प्रथम विश्वयुद्ध के समय रासायनिक हथियारों की तरक्की में अहम किरदार निभाया। 22 अप्रैल 1915 को बेल्जीयम में उसके साथ लड़ रही फ्रेंच और अल्जिरियन सेना पर जर्मन सेना ने 5730 क्लोरिन गॅस के सिलेंडरों के वॉल्व खोल दिये जिससे 180 टन क्लोरिन गॅस फैली। पहले दो दिनों में 5000 दोस्त मुल्कों की सेना के जवान मारे गए, 10,000 अपाहिज हुए जवानों मे से आधे हमेशा के लिए अपाहिज हुए। 31 मई 1915 को हेबर ने पूर्वी मोर्चे पर रूसियों के खिलाफ क्लोरिन हमला करवाया। ब्रिटिश सेना ने बेल्जियम के लुस नामक जगह पर क्लोरिन गॅस का हमला किया जिसमें 5500 सिलोंडरों का इस्तेमाल किया गया। 14 अक्तूबर 1918 को ब्रिटिश सेना ने मस्टर्ड गॅस का इस्तेमाल जर्मन सेना के वरविक नाम के बेल्जियम के गाँव पर किया। इसमें एक लाख लोग मारे गये और दस लाख जख्मी हुए। ॲल्डॉफ हिटलर इस गॅस के असर में आया और जर्मनी ने फौरन युद्धबंदी लागू कर दी। सन 1919 में जर्मनी ने हेबर को उसके रसायनशास्त्र में योगदान के लिये नोबेल प्राईज का ऐलान किया।

युद्धो में गॅसों की तीन किस्मों का इस्तेमाल हुआ है। (1) Asphyxiants क्लोरिन और फोसजिन (**चिवेहमदम**) फेफडों पर असर करती है, (2) Blistering agent इनमें अलग अलग तरह की मस्टर्ड गॅस शामील है, (3) Blood agents इनमें हायड्रोजन सायनाईड शामिल है जिसे 'प्रुसिक एसिड' या हायड्रो सायनिक एसिड भी कहा जाता है। यह रक्त में ऑक्सिजन को रूकावट करता है। ब्रिटेन ने आरर्सेनिक पर आधारित गॅस "ब।" बनाई। यह गॅस गॅसमास्क से भी छनकर जिस्म में पहुंचकर इन्सान को भयानक दर्द पहुंचाती थी। जर्मनी ने 'वेरफर 1918' नामक गॅस बनाई। अमेरिका ने चमडी पर छाले लाने वाली गॅस "**लेविसाईट**" बनाई। जर्मनी के हेबर ने "पेस्ट कंट्रोल" के प्रयोगों के नाम पर जहरीली गॅसों की खोज जारी रखी। हेबर ने एक ऐसा पदार्थ बनाया जो प्रुसिक ॲसिड गॅस छोडता था। इस पदार्थ को 'झिकलॉन बी' (**zyklon B**) नाम दिया गया।

जर्मन नाजीयों ने इसका इस्तेमाल 20 साल बाद अपने "एक्सटरमिनेशन कॅम्पस" में कत्लेआम के लिये किया। रूस के गृहयुद्ध में जहरीली गॅसों का इस्तेमाल किया गया। ब्रिटेन ने अफगानिस्तान और अपने दिगर उपनिवेशों की जनजातियों की बगावत दबाने के लिये इसका इस्तेमाल किया। जपानियों ने भारी तादाद में मस्टर्ड गॅस और लेविसाईट, रासायनिक बम, सायनाईड गॅस छोडने वाले टँक विरोधी बम, दिगर हथियार और आदमियों के लिये ही नही बल्कि जंग में उनके घोडों, उंटों और कुत्तों के बचाव के उपकरण बनाये।

जर्मन केमिस्ट गेरहार्ड स्च्राडर (ळमतींतक *बीतंकमत) ने दिसंबर 1936 में घातक 'ऑरगॅनो फॉस्फेट कम्पाउंड' (**Organo Phosphate Compound**) बनाया जिसका नाम उसने 'टॅब्युन' (**Tabun**) रखा। जब इसकी एक बुँद नीचे गिर गई और उसकी पुतलियाँ सिकुडकर सुई की नोंक बराबर रह गई और उसे सांस लेने में बेहद दिक्कत हुई। अगर कुछ और बुंदे गिर गई होती तो उसका बचना मुश्किल था। टॅब्युन को 'नर्व्ह गॅस' कहा गया क्योंकि ये 'नर्व्ह सायनॅप्सेस' पर असर करती थी। इसकी बेहद कम तादाद इन्सान की जान लेने के लिये काफी है। गॅस मास्क भी इससे बचाव नही कर पाता क्योंकि यह गॅस चमडी से सोख ली जाती है। सन 1938 में स्च्राडर ने इससे भी खतरनाक गॅस की खोज की जिसे 'सॅरिन' (**Sarin**) के नाम से जाना गया।

Principal

Librarian

इस दौरान इटली ने अपने ॲबिसिनिया (अभी का नाम इथोपिया) की मुहिम में 'मस्टर्ड' गॅस को हवाई जहाजो से गॅस बमों के रूप में इस्तेमाल किया। सन 1937 में जपानियो ने जहरीली गॅसों का चीनियों के खिलाफ इस्तेमाल किया। द्वितीय विश्व युद्ध में चर्चिल ने बडे ही बेमन से रासायनिक हमले की योजना की कुर्बानी दी क्योकि इसके लिये जरुरी हवाई जहाज उसके पास नही थे। हिटलर ने इस डर से रासायनिक हथियारों को इस्तेमाल नही किया कि दोस्त मुल्क उससे भी बडा रासायनिक हमला कर सकते थे।

अमेरिका ने इतने गॅस हथियार पैदा किये जितनों का सभी मुल्कों ने मिलकर प्रथम विश्वयुद्ध में इस्तेमाल तक नही किया था। जर्मनी ने अपने टॅब्युन, सॅरीन और सोमन गॅस के सांकेतिक नाम **GA, GB व GD** रखे थे। ब्रिटिश सेना ने सन 1940 के आखिर मे और 1950 की शुरुवात मे अमेरिका ने बनाई '245टी' नामक फसल को **खत्म करने वाले रसायन का इस्तेमाल मलाया के कम्युनिस्ट विद्रोहियों के खिलाफ किया। ब्रिटिश सेना ने** कम्युनिस्ट विद्रोहियों के इलाकों की सभी वनस्पतियों पर **'245टी'** का विमानों से छिडकाव किया। सन 1960 के दशक में अमेरिका ने ब्रिटेन की मलाया में मिली कामयाबी को देखकर कम्युनिस्टों के खिलाफ बडे पैमाने पर 245टी का इस्तेमाल किया जिससे व्हिएतकांगो को जंगल मे छूपना, जंगल में फसल उगाना नामुमकिन हुआ। इन रसायनों के ड्रमों पर हरा, गुलाबी, सफेद, जामुनी, निला और ऑरेज रंग के संकेत शब्द दिये गये थे। गुलाबी रसायन 245टी और कम तादाद मे डायऑक्सिन **(dioxin)** का मिश्रण था। व्हिएतनाम में सन 1968 में इतना ज्यादा वनस्पती विरोधी रसायन **(herbicide)** इस्तेमाल किया गया कि अमेरिका मे खेती के लिये ओर बेकार पौधों के खात्मे के लिये रसायन कम पड गए। बड़े पैमाने पर ऑरेज रसायन के इस्तेमाल से व्हिएतनामी बच्चों में जन्म से खराबियाँ पैदा हुई। **इस रसायन की जद में आये लोगों मे कॅन्सर पैदा हुआ। अमेरिका ने चमडी पर भयानक** जलन पैदा करने वाले **"CS"** नामक रसायन का इस्तेमाल व्हिएतकांगो को उनके घूपने के ठिकानों से बाहर निकालने के लिये किया।

अमेरिका ने व्हिएतनाम के देहाती इलाके में सन 1961–71 के दौरान 42 मिलियन लीटर जैवरासायनिक पदार्थ छिडके जिसकी वजह से 50 मिलियन व्हिएतनामी नागरिक आज तक प्रभावित है। उनमें से 6 लाख लोग संगीन बिमारियों के शिकार है। अमेरिकी जैविक और रासायनिक कार्यकम के मुताबिक दक्षिण अफ्रिका के काले अवाम के खिलाफ अमेरिका ने जैविक और रासायनिक हमले किये।

केन्ट की इनवायरनमेंटल फाउंडेशन और एज्युकेशनल फाउंडेशन ऑफ अमेरिका के डॉ. सुजेन मार्शल के अध्ययन के मुताबिक अमेरिका के पास चार अहम रासायनिक हथियारों के भंडार है

(1) **मस्टर्ड गॅस या एजन्ट एच** जिससे दम घुट जात है और इससे बच गए लोगों को कॅन्सर हो सकता है।

2) **जीबी या सॉरिन गॅस** जिससे आँखो में तेज जलन, डायरिया, सांस रुकना और फिर अचानक मौत हो जाती है।

(3) **वी.एक्स गॅस** जो सूंघने पर जी.बी. गॅस से दो गुना, मुँह के भीतर जाने पर दस गुना, और त्वचा के छिद्रों से जिस्म में जाने पर 170 गुना ज्यादा जहरीली साबित होती है।

(4) **वी.जेड गॅस** से याददास्त गुम होने और पागलपन से लेकर दिल का दौरा तक पड सकता है।

अमेरिका ने दिये रासायनिक हथियारों का इराक ने इरान के खिलाफ अपने 1980 के दशक की जंग में इस्तेमाल किया। इरान की 1988 मे हार की वजह इराक ने रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल करना था। इरान जंग के बाद सद्दाम हुसैन ने इसका इस्तेमाल कुर्द बागियों के खिलाफ किया जिसमें हजारों कुर्द मारे गए। खुद अमेरिकी सिनेट की 1994 की रिपोर्ट के मुताबिक कम से कम सन 1985 से 1989 तक अमेरिकी कंपनियों ने इराक को अमेरिका ने ही सद्दाम हुसैन को हर तरह के रासायनिक और जैविक हथियार मुहैया कराये थे। धीरे धीरे भयानक मौत देने वाले सामूहिक विनाश के इन हथियारों में (1) बॅसिलस ऐन्थ्रसिस (Bacillus anthracis) जिससे एन्थ्रेक्स होता है। (2) हिस्टोप्लाजमा कॅप्सूलाटाम (Histoplasma Capsulatam) जो फेफडों, मस्तिष्क, स्पाईनल कार्ड (रीढ के मज्जादंड) और दिल पर असर करता है, (3) क्लोस्ट्रिडियम बोटूलिनम (Clostridium botulinum) जो एक टॉक्सिन है। (4) ब्रूसेला मेलिटेन्सिस (Brucella Melitensis) ऐसा जीवाणू है जो जिस्म के अहम अंगो को तबाह करता है, (5) क्लोसिट्रडियम परफ्रिजेन्स (Clostridium Perfringens) बेहद घातक टॉक्सिन है जो खास बिमारी को पैदा करता है, (6) क्लोस्टेडियम टिटॅनी (Clostridium tetani) बेहद घातक टॉक्सिक है, भेजे गए। इसके अलावा इस्चेरिचिया कोली (Escherichia Coli – (E.Coli)), अनुवांशिक पदार्थ (Genetic materials), इन्सानी और जीवाणू डिएनए (Human and Bacterial DNA) और दिगर दर्जनों विषाणू और जीवाणू इराक भेजे गए। सिनेट रिपोर्ट के मुताबिक इन सभी से इनकी दोबारा पैदावार की जा सकती थी। इन जैव–रासायनिक हथियारों की पैदावार और इसके जंग में इस्तेमाल के लिये जरूरी उपकरण भी भेजे गए।

अमेरिकी हिमायत से दक्षिण अफ्रिका की वंशवादी रंगभेद हिमायती सरकार को जैव रासायनिक हथियार बनाकर इसका इस्तेमाल अफ्रिका के काले अवाम के खिलाफ किया। काले सैनिको पर प्रयोग किये गये। इससे काले सैनिकों में स्वाभाविक लगने वाला हार्ट अटॅक पैदा होता था। पानी में विषाणू और जीवाणू को मिलाया गया। तरह तरह की ऐसी गॅसों का इस्तेमाल किया गया जो दक्षिण अफ्रिका और उसके करीब के मुल्कों के दूश्मनों को लकवे का शिकार बनाकर मार डालती है।

शोंषकों ने ही किया जैविक हथियारों का इस्तेमाल!

वंशवादी अमेरिका अन्यों से भी नए–नए जैविक हथियार खरिदने की कोशिशें करता रहा है। नस्लभेद विरोधी कार्यकर्ताओं और उनके हिमायतीयों ने काले लोगों को ठिकाने लगाने के लिए जैविक हथियार जमा किए थे। दक्षिण अफ्रिका की नस्लभेदी सरकार ने जैविक हथियारों को पैदा करने की गुप्त परियोजना 'प्रोजेक्ट कोस्ट' शुरू की थी, जो 1990 के दशक में उजागर हुई थी। डॉन गुसेन को 1981 में प्रोजेक्ट कोस्ट की रूडप्लाट लेबोरेटरी का डायरेक्टर बनाया गया। इस प्रोजेक्ट के मिलिट्री कमांडर वाटर बेसन थे। अक्तूबर 2001 में गुसेन की मुलाकात सीआईए के एक पूर्व एजन्ट डॉन मायस से हुई। उसने गुसेव से कहा कि वह चाहे तो जैविक हथियार और उसके प्रतिरोधक अमेरिका को बेचकर अच्छा पैसा कमा सकता है। गुसेन की शर्त थी कि एफबीआई उसे 50 लाख डॉलर नगद, उसे और उसके 20 साथियों के परिवारों के लिए अमेरिका में बसने की इजाजत दिलाए। एफबीआई को यह कबूल था। मई 2002 में गुसेन ने मायस के हाथों टूथपेस्ट के ट्युब में रखकर घातक ड्राई बॅक्टेरिया के नमुने अमेरिकी गुप्तचर संस्था एफबीआई को भेजे। योजना के मुताबिक डरबन से 600 कि.मी. दूर एक एअर पोर्ट पर अमेरिका का एक प्राईवेट विमान उतरना था, जिसके एक ट्रेलर पर दो कंटेनर लाद दिये जाने थे। इन कंटेनरों में 20 लिटर एंटीसिरम और कांच की 200 बोतलों में ऐसे बॅक्टेरिया थे, जिन्हे मनुष्य और पर्यावरण के लिए बेहद खतरनाक बताया गया था। इसमें इन्टेस्टाईनल बॅक्टेरियम ऐस्केरिकीया कोली की टॉक्सीन प्रोडयुसिंग जीन क्लास्ट्रीडियम परन्फिन्जेन्स से संकरित किया गया था। इसकी वजह से खतरनाक गैस गॅगरेन नामक बिमारी हो जाती है। लेकिन एक गलतफहमी की वजह से एफबीआई के अफसरों ने यह बात दक्षिण अफ्रिका के अफसरों को बता दी जिससे सौदा नही हो सका।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने अपने उपनिवेशों को बढाने के लिये इलाकाई जनजातियों में जिवाणूओं से संकमित ब्लॅकेट और कपडे बाँटे थे। इन जनजातियों में इन रोगों का मुकाबला करने की कुव्वत नही थी इसलिये बडे भारी पैमाने पर उनकी मौतें हुई।

माना जाता है कि सन 1944 में जर्मनी में आलू की पैदावार को जो भारी नुकसान पहुंचा था वह इन जैविक हमलों की वजह से था। उसी तरह सन 1945 में जापान में चॉवल की पैदावार की भारी बर्बादी हुई थी।

जापानियों ने औरों के बराबर आने के लिये और चीन के जिन इलाकों को वे अपनी कॉलनी बनाना चाहते थे वहां के चिनियों का खात्मा करने के लिये जैविक हथियार बनाये। इशिई (**Ishii**) नामक जापानी वैज्ञानिक ने पिंगफॅन इंस्टिट्युट में "जल शुद्धीकरण प्रकल्प 731" की आड में जैविक हथियारों की पैदावार की। इस इन्स्टिट्युड का इलाका तीन स्वेअर किलोमीटर फैला था जिसमें हवाईपट्टी, बैरकें और प्रयोगशालाएं थी।

एन्थ्रॅक्स (**Anthrax**) के जीवाणू बेहद विपरित हालत में भी जींदा रह सकते है और बेहद घातक होते है जिससे शहर की पूरी आबादी को खत्म किया जा सकता है और उस इलाके को पीढीयों तक रहने के लिये नाकाबिल बनाया जा सकता है। प्लेग Yersinia Pestis नामक जीवाणू से फैलता है। इसके जीवाणू तीन तरह के होते है – 1) ब्युबोनिक प्लेग (Bubonic Plague) जो मच्छर इ. उडने परजीवी कीटों के काटने से फैलते है। 2) न्युमोनिक प्लेग (Pneunomic Plague) के जीवाणू में सांस के जरीये से इन्सान के फेफडों में जाते है। 3) सेप्टिसमिक प्लेग Septicemic Plague जीवाणू के ताल्लुकात से फैलता है। गॅस गॅन्ग्रीन (Gas gangren) में जीवाणू Clostridium Perfringens bacterium से जख्म सडने लगते है। तेजी से फैलने वाली ब्रुसेलोसिस (Brucellosis) बीमारी का शिकार इन्सान हप्तों तक नाकाम हो जाता है। ग्लंडर्स (Glanders) बीमारी Bacterium Pseudomonas Mallei नामक जीवाणू से होती है। इसमें नाक और साँस की नली की म्युकस त्वचा को यह जिवाणू खा जाता है और इन्सान की लिम्फॅटिक सिस्टिम (Lymphatic System) पर हमला करता है। Salmonella and Clostridium botulinum bacteri यह दो जीवाणू खाने में बेहद घातक बायोटॉक्सिन छोडते है। बोटुलिजम टॉक्सिन की बेहद कम व्यादाद भी बेहद घातक होती है।

Tularemia खरगोशों और इन्सानों पर असर करता है। इन्सानों को यह कई हप्तो के लिये बीमार बनाता है। प्रोडक्शन युनिट 723 सांस से या मांस के सुप (broth) से भरी ट्रे में इन जीवाणू की पैदावार करते थे। सडे

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

भास की बदबू नाकाबिले बर्दाश्त होती थी। माना जाता है की पिंगफैन प्रयोगशाला में हर महिने कई टन जीवाणू पैदा किये जाते थे।

जापानी अपने प्रयोगों की जांच के लिये चीनी इलाकों में जाकर अमूक महामारी फैली होने का प्रचार करते थे। फिर जापानी सैनिकों की टोलियाँ चीनी इलाकों के कुँओं में और दिगर जलाशयों में जीवाणू डालती थी। बिमारी फैलने के बाद वे मरिजों को बेहोश कर उनके जिस्म से नमूनों के तौर पर जरा सा मांस निकालकर जिस्म को फिर से सी देते थे। मरे लोगो को कुएं में डाल देते थे। जापानी सिपाही संक्रमित गाँवो को जला भी देते थे। ये प्रयोग पूरी गोपनीयता से चीनी कैदियों पर किये गए। जापानियों ने चीनी कैदियों के जिस्म पर ही इन रोगों के जीवाणू की पैदावार करनी शुरू की। जापानीयों का सोचना था कि जो जीवाणू जीन्दा चिनियों के जिस्म की प्रतिरोधी कुव्वत का मुकाबला करते हुए पैदा होगे वे और भी ज्यादा खतरनाक साबित होंगे। 3000 कैदियों का कोटा पूरा करने के लिये कईयों को सडकों पर चलते हुए ही कैद कर लिया गया था। चीनियों को खुले में खंबे से बांधा जाता था। विमान से उनपर जीवाणू छिडके जाते वक्त उन्हे अपनी निगाहें आकाश की ओर करने पर मजबूर किया जाता था। लगातार अध्ययन किया जाता था कि वे किस तरह बिमारी से मर रहे है। कुछ कैदियों को Stakes or panels से बांधकर उसके पास Clostridium Perfringens bacteria को छोडने वाले बमों का विस्फोट किया जाता था। इन कैदियों के घाव ओर जिस्म गैन्ग्रीन से कैसे सड रहे है इसका बाकायदा रिकॉर्ड रखा जाता था। जब उनके जिस्म में इन जीवाणुओं की पैदावार हो जाती तो इन कैदियों की क्लोरोफॉर्म से बेहोश कर उनके जिस्म का सारा खून निकाल लिया जाता था। जब जिस्म से रक्त का प्रवाह धिमा पड जाता तो जापानी सैनिक कैदियों के छाती पर कूदते थे ताकि जिस्म का एक एक कतरा खून भी निकल आए। इस दौरान शेकडों जापानी सैनिक भी जीवाणुओं के असर से मर गए। इसके बावजूद ये प्रयोग जारी रहे। इशीई ने 18 और नए केन्द्र कायम कर लिये। जापानी आत्मसमर्पण के बाद ईशिई ने अपने जैव हथियारों की रिपोर्ट अमेरिकी सरकार के हवाले की। उसे और उसके साथियों को जंग अपराधों के इल्जामों से आजाद किया गया और 'युनिट 371' के काले कारनामों पर पर्दा डाल दिया गया।

लंदन के 'इंम्पैक्ट इंटरनैशनल जर्नल' में यह इल्जाम लगाया गया है कि पश्चिमी गोरे वंशवादियों ने एड्स की महामारी को जैविक हथियार की शक्ल में काले अफ्रिकी लोगों के खिलाफ इस्तेमाल किया है। केन्या के नोबेल शांति पुरस्कार विजेता वांगारी मथाई ने भी इल्जाम लगाया है कि गोरे वंशवादियों ने कालों का जनसंहार करने के लिये एड्स महामारी पैदा की है। एड्स के विषाणुओं को पश्चिम की किसी प्रयोगशाला में पैदा किया गया। पश्चिमी देशों ने यह दलील दी की एड्स का विषाणू सबसे पहले अफ्रिकी मुल्कों मे बंदरों से लोगो में फैला जबकि काले लोग हजारो सालों से बंदरो के बीच रहते आये है। काले लोगों को एड्स के उपचार के नाम पर जो विषाणु दिये गए उनका असर भी किसी महामारी से कम नही है।

सन 1993 के वसंत में इटली में hoof - and - mouth नामक बीमारी से 4000 जानवरों की मौत हुई। बाद में पता चला कि युगोस्लाविया से जो जानवर मंगाये गये थे उनमें इस रोग से ग्रस्त जानवर की वजह से बिमारी फैली थी। युरोपियन कम्युनिटी के बीच "गाय–युद्ध" शुरू हुआ जब उन्होने पूर्वी युरोप के 18 मुल्कों और सोवियत युनियन से गाय जैसे सभी जानवरों से बनी पैदावार पर पाबंदी लगा दी। जैविक हथियार किसी भी मुल्क की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को बहुत बड़ी चोट पहुंचा सकते है। सन 1951 में अमेरिकी वायू सेना के लिये फसल विरोधी जैव हथियारों की पैदावार की गई। अमेरिका ने 30 टन Wheat rusts की पैदावार की जो सारी धरती के गेहूँ को तबाह करने के लिये काफी थी। इसका अहम निशाना सोवियत संघ के उक्रेन की फसलें थी। अमेरिका ने एक टन Rice blast disease के जीवाणूओं की पैदावार की। इसका मकसद चीन की धॉवल की फसलों को बर्बाद करना था।

विश्वयुद्ध के समय इस्तेमाल किये गये हथियार एवं उसका परिणाम :

1) क्लस्टर बम – हर क्लस्टर बम 200–700 छोटे बमों से बना होता है। छोटे बमों का विस्फोट होने पर लगभग 300 फौलादी तुकडे उडते है जिसकी जद में आनेवाला खून के लोथडे में तब्दील हो जाता है। इन्हे लडाकू हवाई पोत से छोडते ही तयशुदा समय पर उसके छोटे बम बाहर फेंके जाते है। हर छोटे बम के साथ एक पैराशुट लगा होता है जिससे उसके नीचे आने की रफ्तार कम हो जाती है जिससे वे दूर दूर तक फैल जाते है और उनके विस्फोट से ज्यादा से ज्यादा इलाके में तबाही होती है। उनके विस्फोट के समय को टाला भी जा सकता है ताकि वे टाईम बम या बमों की खानों के रूप में तब्दिल हो जाए। ऐसे बमों की तादाद लगभग 5–30 फीसदी तक रखी जाती है। मिट्टी, पौधे, या लताएं उगकर इन्हे अपने में छीपा सकती है। कोई बच्चा, इन्सान, जानवर या वाहन उससे टकराते ही उसका जबर्दस्त विस्फोट होता है। जैसे जैसे समय बितता है वे कभी भी फट पडते है। इससे हजारो बच्चे, स्त्री, पुरुष अपनी जान गवा चूके है। लोक डर के मारे उस इलाके में काम नही

करना चाहते जहाँ ये क्लस्टर बम छोडे गये थे। इस तरह क्लस्टर बम फसल और जमीन के इस्तेमाल को अगले कई सालों तक के लिये रोक देते है। अमेरिकी गठबंधन सेना ने युगोस्लाविया, अफगानीस्तान, व्हिएतनाम, लाओस, कंबोडिया आदी मुल्कों मे लाखों की तादाद में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल किया गया। अमेरिकी सरकार बमों की सफाई के आंतर्राष्ट्रीय समझौते पर दस्तखत नहीं करना चाहती क्योंकि ऐसा करने के बाद अमेरिका क्लस्टर बमों का इस्तेमाल नही कर पाएगा।

2) CBU - 72 Fuel - Air Explosive – इस क्लस्टर बम के विस्फोट के बाद भयानक आग फैलती है। घेरे में आये हुए लोग, जानवर और पेड–पोधें जलकर राख हो जाते है और बंकरों में छुपे लोग दम घूटने से मर जाते है। फटते ही वह हवा में ज्वलनशील पदार्थ के बादल को बडी तेजी से फैला देता है। जैसे ही ये धूंए के बादल जमीन पर उतरते है इस बम की प्रणाली उसे "इग्नाईट" कर देती है। जिससे बडा विस्फोट होता है। नागरिक जीन्दा जल जाते है। उनके जिस्म एक बडे इलाके तक कुचले जाते है। जब इसकी चपेट में स्कुटर, मोटर, गाडियाँ आती है तो उनके इंधन का भी विस्फोट होता है।

3) MOAB Massive Ordnance Airburst Bomb – मोआब यह CBU-72 Fuel-Air Explosive बम है। इस बम का असर एक छोटे परमाणु बम जैसा ही है लेकिन इससे रेडिएशन पैदा नही होता। इन क्लस्टर बमों में तीन बडी बॅरलों में ethylene g भरी होती है। हर बॅरल में 100 पाउंड गॅस होती है। हर बॅरल में 75 पाउंड ethylene oxide होता है जिसका व्यावसायिक इस्तेमाल glycol ethylene जैसे बेहद जहरिले पदार्थों को बनाने में होता है। इसका फ्युज 30 फिट की उँचाई पर इसे इग्नाईट कर देता है जिससे बॅरल खुल जाती है और हवा के साथ जहरिले विस्फोटक धुंए के बादल पैदा होते है। बिना इग्नाईट किये भी यह खतरनाक है क्योंकि इसका जहरिला धुंआ अंडरग्राउंड बंकरों के अंदर तक पहुंच सकता है। इस धुंए से फेफडों को नुकसान होता है, सिरदर्द और उल्टीयाँ होती है, सांस लेने में तकलीफ होती है, कॅन्सर और जन्म संबंधी विकृतियाँ भी पैदा हो सकती है। यह बेहद विस्फोटक गॅस है और इसके विस्फोट से हवा के बर्स्ट होने से जो दबाव पैदा होता है वह 30 किलो प्रति स्केअर सेंटिमीटर यानि परंपरागत बमों से 30 गुना ज्यादा है। इससे 2700 डिग्री सेल्सियस गर्मी पैदा होती है जो तीन किलोमीटर प्रति सेकंद की रफ्तार से यानि आवाज की रफ्तार से भी तेजी से फैलती है। इससे ताकतवर हवारहित इलाका (**Vacum**) पैदा हो जाता है जो हवा और खुली पडी चिजे अपनी ओर खींच लेता है। नतीजे में मस्तिष्क हिलने लगता है जिससे अंधापन ओर फेफडों का काम करना बंद हो जाता है, कान के ईअरड्रम और जिस्म के अंदरूनी हिस्से फट जाते है। इसके तुफान में उडती चिजों से इन्सान को चोट पहुंचते रहती है। इसके अलावा **ethylene oxide** फेफंडो में जाने के नतीजे अलग है। इस बम का इस्तेमाल अमेरिका ने सन 2003 में इराकी नागरिकों के खिलाफ किया।

ब्रिटिश सैनिकों के डेपलेटिड युरेनियम (डि;) बमों से पैदा हुई रेडियो एक्टीविटी से कॅन्सर का खतरा पैदा हो गया है। अध्ययन मे बसरा के अबु खासिब में रेडियो एक्टीविटी का स्तर सबसे ज्यादा पाया गया। रेडियो एक्टीव धूल से कॅन्सर और नवजात शिशुओं मे विकृतियाँ पैदा हो गई है।

समग्र रूप से देखा जाए तो विश्वयुध्द के दौरान विश्व के कई देशों ने लाखों की संख्या में जनबल को खोया। इसके अतिरिक्त विश्व की सामाजिक, राजनीतिक एवं अर्थव्यवस्था पर व्यापक परिणाम देखे गए। इसका प्रभाव भारत पर भी हुआ। संक्षेप में कहा जा सकता है कि युध्द के दौरान अर्थव्यवस्था ने कई मायनों में भारत में पूँजीवाद को बढावा दिया। उपरोक्त शोध निबंध साम्राज्यवाद के आतंकवादी चारित्र को उजागर करता है।

Consolidated Bibliograhy :

1. The History of Chemical and Biological Warfare by Greg Goebel.totse.com
2. News From China : Human Rights Record of The United States in 1999.
3. American Corporations Sold Chemical and Biological Weapons Material to Iraq : From Rogue State by William Blum.
4. दैनिक भाष्कर, अप्रैल 21, 2003.
5. Dalit Voice, April, 16-30, 2005.
6. The History of Chemical and Biological Warfare by Greg Goebel.totse.com, Robert P. Kablec : Battlefield of Future; : Biological Weapons For Waging Economic Warfare, www.totse.com
7. नवभारत, दिसंबर 16, 2003.
8. र. F. Haber, The Poisonous Cloud : Chemical Warfare in the First World War Oxford University Press : 1986.
9. Hersh S (1968) : Chemical and biological warfare ; America's hidden arsenal.

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

10. WHO : Health Aspects of Biological and Chemical Weapons.
11. Miller J (2001) – Biological Weapons and America's Secret War. New York : Simon & Schuster. ISBN 978-0-684-87158-5.
12. "Vietnam's war against Agent Orange", BBC News, June 14, 2004. on January 11, 2009. Retrieved April 17, 2010.
13. Orent W (2004). Plague, The Mysterious Past and Terrifying Future of the World's Most Dangerous Disease. New York, NY : Simon & Schuster, Inc. ISBN : 978-0-7432-3685-0.
14. Verdourt B, Trump EC, Church ME (1969), "Common poisonous plants of East Africa", London : Collins : 254.
15. Biological Warfare – National Library of Medicine. Retrieved May 28, 2013.
16. USAMRIID U.S. Army Medical Research Institute of Infectious Diseases.
17. CBWInfo.com (2001) – A Brief History of Chemical and Biological Weapons: Ancient Times to the 19th Century. Retrieved November 24, 2004.
18. Cordette, Jessica, MPH (c) (2003). Chemical Weapons of Mass Destrucion. Retrieved November 29 2004.
19. Croddy, Eric (2001), Chemical and Biological Warfare, Copernicus, ISBN 978-0-387-95076-1.
20. Smart, Jeffery K., M.A. (1997), History of Biological and Chemical Warfare. Retrieved November 24, 2004.
21. United States Senate, 103d Congress, 2d Session. (May 25, 1994). The Riegle Report. Retrieved November 6, 2004.
22. Gerard J Fitzgerald. American Journal of Public Health. Washington : April 2008. Vol. 98, ISS. 4.
23. Official website of the Organisation for the Prohibition of Chemical Weapons (OPCW).
24. Medical Aspects of Biological Warfare. Government Printing Office, 2007, P. 3, ISBN : 978-0-16-087238-9.
25. Croddy E, Wirtz J J (2005), Weapons of Mass Destruction, ABC-CLIO. P.171, ISBN : 978-1-85109-490-5.
26. Franz D. "The U. S. Biologicl Warfare and Biological Defense Programs" (PDF), Arizona University. Archived (PDF) from the 19 February 2018, Retrieved June 14, 2018.
27. Leitenberg, Milton; Zilinskas, Raymond A. (2012). "The Soviet Biological Weapons Program" : A History. Harvard University Press.
28. Mangold T, Goldberg J (1999). "Plague Wars : a true story of biological warfare". Macmillan, London. ISBN : 978-0-333-71614-4.
29. Rule 74. The use of chemical weapons is progibited. – section on chemical weapons from Customary IHL Database, an "updated version of the Study on customary international humanitarian law conducted by the Internation Committee of the Red Cross (ICRC) and originally published by Cambridge University Press."
30. Jirj Janta, Role of Analytical Chemistry in Defense Strategies Against Chemical and Biological Attack, Annual Review of Analytical Chemistry, 2009.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF)
ISSUE No- (CCCXVIII) 318 (A)

ISSN-2278-9308
September-2021

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

Thoughts and Works of Dr. Babasaheb Ambedkar



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director

Editor
Dr. Pramod S. Meshram
I/c Principal,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

INDEX-A

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता आणि सद्यस्थिती — प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड	1
2	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची सिध्दांतवादी सामाजिक चळवळ — डॉ. प्रमोद एस. मेश्राम	7
3	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि दलित साहित्य — डॉ.विकास शंकर पाटील	12
4	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची राष्ट्रवाद संकल्पना — प्रा.श्री. अमोल अरूण कुंभार	16
5	बाबासाहेब आणि वर्तमान काळात धर्मांतराची आवश्यकता — डॉ. अनंता सूर	21
6	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शेतीविषयक विचार व कार्य — अनिल मधुकर केदारे / प्रा.डॉ. सोंडगे तात्याराम परमेश्वर	28
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या चळवळीतील स्त्रीयांचे योगदान — प्रा. डॉ. अनिल आय. थूल	33
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा शिक्षण विषयक दृष्टीकोन– एक नवा दृष्टीक्षेप — डॉ.अनिता शिंदे	38
9	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषीविषयक विचार आणि सामाजिक न्याय — प्रा.डॉ.गव्हाळे बी.व्ही.	42
10	स्वातंत्र्योत्तर कालखंडातील मराठी साहित्यावर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा प्रभाव आणि परिणाम डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे	47
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शेतीविषयक विचार — भिमराव परमेश्वर वाघमारे	53
12	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्रवादविषयक विचार — प्रा. डॉ. चांगुणा विठठल कदम	56
13	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर — एक असामान्य अर्थतज्ज्ञ — चार्वाक आनंदराव खैरे	61
14	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षणविशयक विचार व कार्य — प्रा.चिन्नना एम. चालूरकर	66
15	डॉ. आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार — प्रा.डॉ.डी डी.जोंधळे	70
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे महिलांविषयक विचार व कार्य — प्रा. दिलीप यशवंत बर्वे	76
17	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचा शैक्षणिक दृष्टिकोन — प्रा.डॉ.जाधव दिलीप रामचंद्रराव	82
18	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धम्मविषयक विचार — प्रा. ज्ञानेश्वर भोसले	85

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675, Issue NO, 318 (CCCXVIII) A
ISSN : 2278-9308
September, 2021

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता आणि सद्यस्थिती

प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड
नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.
मो. नं. ८२७५४१८९८६
ई—मेल : bansodsantosh73@gmail-com

पत्रकारिता हा लोकशाहीचा चौथा स्तंभ आहे. लोकशाही चार महत्त्वपूर्ण स्तंभावर उभारलेली आहे. कायदेविभाग, कार्यकारीविभाग, न्यायविभाग आणि पत्रकारिता हे लोकशाहीचे चार आधारस्तंभ मानले जाते. त्या आधारावरच लोकशाही उभी असते. परंतु आज जर देशाची परिस्थिती पाहिल्यास हे तीनही विभाग एकाच ठिकाणी केंद्रित झालेले दिसतात. म्हणजेच ज्या पद्धतीने आपण स्वातंत्र्यपूर्व काळातील म्हणजेच दुसऱ्या महायुद्धापूर्वीची स्थिती पाहिली तर दुसऱ्या महायुद्धाला कारणीभूत ठरलेली परिस्थिती हि तिन्ही विभाग हातात धरून काम करणारे सत्ताधिश जगाच्या पाठीवर उदयास आलेत आणि पर्यायाने त्यांना रोखण्यासाठी अनेक देशांनी आपले आपसी मतभेद, वाद — विवाद विसरुन एकत्र येऊन त्यांचा पराभव केलेला दिसून येतो. द्वितीय महायुद्धानंतर जगाचे चित्र बदललेले दिसते आणि त्याच पद्धतीने आज जर भारतासंदर्भात बघितलं तर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता यावर लिहीत असताना आजच्या वर्तमान स्थितीचा थोडक्यात आढावा घेणे गरजेचे आहे.

आज आपण भारतातील चित्र पाहिले तर कायदेविभाग, कार्यकारीविभाग आणि न्यायविभाग हे तिन्ही विभाग एकाच ठिकाणी केंद्रित झालेले दिसतात. कारण लोकशाहीमध्ये आपण बघतोय की, लोकशाही बद्दल डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी तेव्हा विचार व्यक्त केला होता की "जर लोकशाही टिकवायची असेल, ती यशस्वी करायची असेल तर ती राबविणारे सत्ताधीश मंडळी कशी आहेत त्यांच्यावरच अवलंबून आसते." म्हणून जर आजचे चित्र बघितलं तर ज्यांची सत्ता आहे तेच कायदे बनवितात, तेच अधिकाऱ्यांची नियुक्ती करतात आणि अधिकारी हे कायदे अमलात आणतात. एवढेच नाही तर त्या पदावर आरूढ झालेली मंडळी आपल्या मर्जीतील न्यायाधीशांची नेमणूक करतात. हे चित्र सध्या भारतातील आहे. आणि त्यामुळेच कायदेविभाग कार्यकारी विभाग आणि न्यायविभाग हे तीनही लोकशाहीचे स्तंभ यांचे चित्र कसे आहेत हे आपल्याला दिसते. म्हणून, पत्रकार बघूंकडे आणि मीडियाकडे हा संपूर्ण भारत देश आशेने बघत आहे. मात्र या पत्रकारितेची स्थिती अतिशय वाईट आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी दि. १८ जानेवारी १९४३ तत्कालीन पत्रकारितेच्या संदर्भात अतिशय उत्तम विवेचन केले होते. त्याला आज ७१ वर्ष पूर्ण झालेली आहे. तरीही आज ७१ वर्षा नंतरही १८ जानेवारी १९४३ चे विधान तंतोतंत लागू होत आहे. हे विधान पुढील प्रमाणे आहेत, "भारतीय पत्रकारिता म्हणजे एखाद्या बँडवाल्यांनी बिदागी घेऊन आपल्या नायकाचा गाजावाजा करण्यासाठी ढोल बजविणे होय" आणि आज तशीच परिस्थिती आपल्याला दिसून येत आहे. परंतु सर्वच पत्रकारासंदर्भात हे विधान सत्य नाही. या परिस्थितीला अपवादही आहेत. काही पत्रकार आपले, लोकशाहीचे मूल्य जपून या ठिकाणी अतिशय उत्तम काम करीत आहेत. परंतु हे अल्पप्रमाणात आहे आणि म्हणूनच आज डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणतात त्या प्रमाणे, "भारत नायक पूजकांच्या कैफानी आधळा झालेला आहे" आणि त्याचं ही विधान आजच्या भारतातील परिस्थितीला तंतोतंत लागू आहे.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणायचे, पत्रकाराने कधीही वकीलपत्र घेऊ नये, खोटारडेपणा करू नये, पत्रकारितेच्या निमित्ताने धंदे, वसुली, जातीयतेचे विष पेरू नये, आपापसात भेदभाव पेरू नये एवढेच नाही तर नायक पूजा केली जाऊ नये. अशा प्रकारचे विधान डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी १८ जानेवारी १९४३ रोजी केले होते. ते भारतीय स्थितीला यथास्थितीत ही लागू होत आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पत्रकारितेला तोड देणारा मसीहा आजपर्यंत तरी निर्माण झालेला नाही.डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता ज्यांनी सखोलपणे अभ्यासली असेल, त्यांचे अग्रलेख वाचलेले असेल त्यांचे स्फुटलेखन वाचलेले असेल,त्यांच्या वृत्ताची मांडणी असेल, त्यांचा निर्भीडपणा असेल, त्यांचा अभ्यास आणि कोणतेही वृत्त आणि अग्रलेख लिहिण्यापूर्वी त्यांनी केलेले सखोल अध्ययन,संशोधन याचा विचार केल्यास त्यांच्या अध्ययनपूर्ण आणि संशोधनपूर्ण पत्रकारितेला आजही तोड नाही. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पूर्वी सुद्धा अस्पृश्यांच्या संदर्भामध्ये काही अस्पृश्य सुधारक मंडळी कार्यरत होती. ज्यामध्ये विदर्भातील विशेषता कालीचरण नंदागवळी,किसन फागुजी बनसोडे,गणेश आकाश गवई,यवतमाळचे विठ्ठल दसरथ मकेसर,गोपाळबाबा वलंगकर,शिवराम जानबा कांबळे या सर्व मंडळीनी पत्रकारितेच्या संदर्भामध्ये विचार करून काही तत्कालीन काळात वृत्तपत्र सुरु केले होते.ते म्हणजे सोमवंशीय मित्र, हिंदू नागरिक,विटाळ विध्वंस,मजूर पत्रिका आणि अमरावतीचे गणेश आकाजी गवई यांनी सुरू केलेले बहिष्कृत भारत अशा पद्धतीने तत्कालीन काळातील काही वृत्तपत्र अस्पृश्य चळवळी संदर्भात अस्पृश्यांचा उद्धार करण्यासाठी कसोशीने त्यांनी उभे केले होते. जेणेकरून चळवळीला गती देता येईल. मात्र डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचा पत्रकारितेचा उगमच काही वेगळा आहे. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची तल्लक बुद्धिमत्ता ज्यामुळे आपण बघतोय जगातल्या १०० विद्वानांमध्ये त्यांची गणना होते. त्यामध्ये डॉ.बाबासाहेब हे एक व्यक्तीमत्त्व आहे.डॉ.बाबासाहेबांच्या बुद्धीची गणना आजही करता येत नाही. अशा या डॉ. बाबासाहेबांच्या बुद्धीला पत्रकारीतेने स्पर्श कुठे केला हे बघणे महत्त्वाचे आहे. त्यांच्या पत्रकारितेचा उगम कोठे आहे हे जावून घेणे गरजेचे आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कोलंबिया विद्यापीठामध्ये अमेरिकेला उच्च शिक्षणासाठी गेले होते. त्या ठिकाणी गेले असताना ९ मे १९१६ कोलंबिया विद्यापीठामध्ये मानववंश शास्त्रावर एक परिषद भरली होती. या राष्ट्रीय स्तरावरील परिषदेमध्ये डॉ. बाबासाहेबांनी संशोधक म्हणून सहभाग घेतला. ९ मे १९१६ च्या या परिषदेत डॉ बाबासाहेबांनी एक पेपर सादर केला. "भारतीय जाती घडण, उत्पत्ती आणि विकास" हा विषय घेऊन त्यांनी उत्तम असा पेपर सादर केला आणि या पेपरमध्ये त्यांनी भारतीय जातीव्यवस्था ही ईश्वरनिर्मित नसून मानवनिर्मित आहे. धर्माच्या आधारावर उभी झालेली आहे. वेदाचे संदर्भ देऊन डॉ बाबासाहेबांनी ब्राह्मणी घटकांचे जाती व्यवस्थेची लक्तरे लटकविलेले दिसतात. अतिशय उत्तम असा हा पेपर होता. भारतीय मानववंशशास्त्राच्या संदर्भात कोलंबिया विद्यापीठामध्ये अनेक संशोधक होते, ते परिषदेमध्ये सहभागी झालेले विद्वान होते या सर्वांनी डॉ. बाबासाहेबांचे कौतुक केले. त्याचवेळी अमेरिकेमध्ये निग्रोची चळवळ सुरू होती. तेथील एका विद्यार्थ्याने पेपर सादर केला तो मूळचा निग्रो होता. डॉ. बाबासाहेब त्या पेपरकडे आकर्षित झाले. त्यानंतर त्यांनी अमेरिकेच्या निग्रोची चळवळ नेमकी काय आहे. त्यासंदर्भातील माहिती मिळवून अध्ययन केले. त्याच वेळी अमेरिकेमध्ये हार्लेम रिनायसन्स ही निग्रोची नागरी स्वातंत्र्याची चळवळ मोठ्या प्रमाणात गतिमान झाली होती. ही चळवळ गतिमान करण्यासाठी अमेरिकेमध्ये ज्यांनी फार मोठा आधार दिला, गती दिली, प्रेरणा दिली ती तेथील बुद्धीजीवी वर्गाने, बुद्धिजीवी वर्गाला आकलन आणि मांडणी अवगत असते. अशा दोन्ही वर्गाणी ही चळवळ गतिमान केली होती. नागरी चळवळीच्या या हार्लेम रिनायसन्स या लढ्याला न्याय मिळवून देण्याचे काम तेथील काही वृत्तपत्रांनी केले. ते वृत्तपत्र होते 'द क्रायसेसिस, द शिकागो डिफेन्स, निग्रो वर्ल्ड' हे अमेरिकेतील

तत्कालीन काळातील अतिशय महत्त्वपूर्ण वृत्तपत्र होते. या वृत्तपत्रानेच या सर्वांची कैफियत मांडली त्यामुळेच येथील निग्रोची चळवळ गतिमान झाली. अशा प्रकारे डॉ. बाबासाहेबांनी वृत्तपत्राने महत्व जाणले आणि भारतामध्ये परत आल्यानंतर भारतामध्ये मूकनायक वृत्तपत्र स्थापन केले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी आपल्या सामाजिक कार्याचा प्रारंभ साऊथबरो कमिशनला साक्ष देऊन १९१९ ला केला. साऊथबरो कमिशनमध्ये अस्पृश्यांनी कैफियत मांडण्याचे कार्य डॉ. बाबासाहेबांनी प्रामाणिकपणे केले. मात्र या बातमीचा गवगवा, चर्चा झालेली दिसून येत नव्हती. तत्कालीन काळामध्ये आजच्या सारखे तंत्रज्ञान विकसित नसल्याने माहितीच्या आदान प्रदानासाठी वृत्तपत्र हे एकच प्रभावी माध्यम होते. परंतु डॉ. बाबासाहेबांनी दिलेल्या साऊथबरो कमिशनमध्ये दिलेली साक्ष बऱ्याचश्या वृत्तपत्रांमध्ये प्रकाशित झालेली नव्हती. म्हणून डॉ. बाबासाहेबांनी पत्रकारिता ही एक वैचारिक चळवळ, आंदोलन होते. माणगाव परिषदेपासून डॉ. बाबासाहेबांच्या सामाजिक जीवनाला सुरुवात झाली. परंतु मूकनायक वृत्तपत्र मात्र हे या वैचारिक चळवळीचा आरंभ बिंदू ठरले. डॉ. बाबासाहेबांची पत्रकारीता मूकनायकपासून सुरु झाली ते प्रबुद्ध भारतापर्यंत राहिली. मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता, प्रबुद्ध भारत या सर्व वृत्तपत्रातून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे ध्येयनिष्ठ पत्रकार बनून समोर आलेत.

डॉ. बाबासाहेबांच्या पत्रकारितेचे एक विशिष्ट आणि निश्चित असे ध्येय होते. त्यांच्या समोर असलेल्या ध्येयाला अनुसरून त्यांची पत्रकारिता होती. मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता, प्रबुध्द भारत ही बाबासाहेबांनी आपल्या वृत्तपत्राची ठेवलेली नावे सुद्धा मोठी मार्मिक आहे. या वृत्तपत्रातील नावातूनच त्यांनी कोणता ध्यास घेतला होता हे निश्चित होते. स्वजनदाराचे महत्त कार्य करण्याचे मोठे ध्येय त्यांच्यासमोर होते. एक पत्रकार म्हणून अस्पृश्य समाजाचा उद्धार करण्यासाठी त्यांनी प्रामाणिकपणे प्रयत्न केला. डॉ. बाबासाहेब पत्रकार म्हणून कणखर होतेच तसेच संवेदनशील देखील होते, निर्भीड आणि निर्भय सुद्धा होते. म्हणूनच प्रस्थापित चातुर्वर्ण पद्धतीची कुठलीही तमा न बाळगता, भिड मूरवित न ठेवता त्यांनी पत्रकारिता केली. डॉ. बाबासाहेब मूकनायकातून सुरुवातीला आपले मनोगत व्यक्त करतांनाच त्यांनी चातुर्वर्ण समाजावर प्रहार केले आहेत. माणगाव परिषद आणि परिषदेनंतर आरक्षणाचे जनक, बहुजनांचा राजा राजर्षी शाहू महाराजांच्या आर्थिक मदतीने मूकनायक या वृत्तपत्राचा प्रारंभ ३१ जानेवारी १९२० ला डॉ. बाबासाहेबांनी केला. या वृत्तपत्रांमध्ये तत्कालीन काळात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा संताच्या संदर्भामध्ये त्यांनी जे संतांचे कार्य अभ्यासले होते. त्यामध्ये तत्कालीन काळातील संत शिरोमणी संत तुकाराम महाराज होते आणि म्हणूनच डॉ. बाबासाहेबांनी मुकनायक वृत्तपत्रातील पहिल्याच पृष्ठावर संत तुकारामाच्या ओळी दिलेल्या आहेत. तत्कालीन चातुर्वर्ण पद्धतीला तळा देण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य संत तुकाराम यांनी केलेले आहेत. येथील ब्राह्मणी व्यवस्थेला तडा देण्याचे काम संत तुकारामांनी केले. वेदातील सदोष ज्ञान समाजासमोर मांडण्याचे कार्य संत तुकाराम महाराजांनी केले आणि त्यामुळेच संत तुकारामाचा मृत्यू कशा प्रकारे झाला हे सर्वश्रुत आहे.

संत तुकारामाच्या मुकनायकातील त्या ओळी पुढील प्रमाणे आहेत.

"काय करू आता धरूनिया भीड । निशंक तोंड वाचविले॥ नव्हे जगी कोणी मुकियाचा जाण । सार्थक लाजून नव्हे इथे ॥"

या ओळीवरून डॉ. बाबासाहेबांचा संत तुकारामा संदर्भातील असलेला अभ्यास आपल्याला दिसून येतो. डॉ. बाबासाहेब मूकनायक या वृत्तपत्राच्या संदर्भामध्ये असे लिहितात की, "आमच्या बहिष्कृत लोकांवर होत असलेल्या व पुढे होणाऱ्या अन्यायावर उपाय योजना सुचविण्यास व त्यांची भावी उन्नति करण्याचे मार्ग त्यांच्या खऱ्या स्वरूपाच्या चर्चा होण्यास वर्तमानपत्रा सारखी अन्य भूमीच नाही." अशा प्रकारचे वर्तमानपत्राचे महत्त्व मूकनायकामधून ते विशद करतात.

मुंबई इलाख्यात निघत असलेल्या वृत्तपत्राकडे न्यायाकडून बघितल्यास असे दिसून येते की, "त्यातील बरीचशी वृत्तपत्रे ही विशिष्ट जातीची आहे आणि ती आपल्या जातीचे हितसंबंध जोपासणारे दिसतात. ते इतर बहिष्कृत जातीची कोनतीही पर्वा करीत नाहीत त्यांचे हित जोपासतांना दिसत नाही. त्यामध्ये दीनमित्र, जागृत , मराठा, ज्ञानप्रकाश, विजयी मराठा, सुबोध पत्रिका या सर्व वृत्तपत्रांचा ते समाचार घेतात आणि त्यामध्ये ते म्हणतात की, "बहिष्कृत समाजाच्या प्रश्नाची चर्चा वारंवार होते. परंतु ब्राह्मणेतर या संज्ञेखाली मोडत असलेल्या अनेक जातीच्या प्रश्नाचा खल होतो. परंतु बहिष्कृतांना न्याय दिला जात नाही. त्याकरिता स्वतंत्र वृत्तपत्राची गरज आहे." अशा पद्धतीचे महत्त्व डॉ. बाबासाहेबांनी मूकनायकाच्या पहिल्याच अंकात पटवून दिलेले आहे.

मुकनायकातील डॉ. बाबासाहेबांचे अग्रलेख जर पाहिले तर ते अतिशय निर्भिड स्वरूपाचे आहे. तत्कालीन व्यवस्थेवर कठोर प्रहार करणारे आहेत. तत्कालीन जाती व्यवस्थेवर, समाज व्यवस्थेवर तसेच त्यांनी ब्रिटिशांच्या चुकीच्या धोरणावर सुद्धा प्रहार केलेले आहे. त्यांचे मुकनायकातील लिखाण वाचल्यानंतर त्यांच्या लेखनातील निर्भीडपणा, वस्तुनिष्ठपणा, मूल्यधिष्ठिता आपल्याला दिसून येते. म्हणूनच ते असे म्हणतात की, 'स्वराज्याचे सर सूराज्याला नाही' म्हणजेच भारतीय जे स्वत:चे राज्य निर्माण करेल व शासन अमलात आणेल त्याची कणव त्याचे ब्रिटिश सत्तेला म्हणजेच सुराज्याला नाही. 'हे स्वराज्य नव्हे...' हा त्यांचा अग्रलेख अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत. 'हे तर आमच्यावर राज्य...' या संदर्भामध्ये ते आपल्या अग्रलेखात संपूर्ण चातुर्वर्ण व्यवस्थेवर प्रहार करतात. मानवनिर्मित ही चातुर्वर्ण व्यवस्था इथल्या ब्राह्मणी लोकांनी कशी निर्माण केली. या संदर्भातील अतिशय सुंदर विवेचन त्यांनी या लेखांमध्ये केलेले आहेत. 'स्वराज्यातील आमचे आरोहन...' हा सुद्धा अग्रलेख महत्त्वपूर्ण आहे. 'राष्ट्रातील पक्ष...' या लेखामध्ये तर ते भारतामध्ये जे पक्ष आहे हे विशिष्ट लोकांचा, विशिष्ट समाजाचा स्वार्थ घेऊन त्यांच्याच बाबींचा पाठपुरावा करण्याचे कार्य करतात आणि त्यांच्या हितार्थ कार्य करतात. इतकी निर्भीड मांडणी त्यांनी तत्कालीन काळात केलेली आहे. जी आज पत्रकार बंधु करताना दिसत नाहीत. अपवादात्मक स्थितीमध्ये काही पत्रकार करतात. परंतु त्यांचे प्रमाण खूप कमी आहे. त्यांच्यातील तफावत मोठ्या प्रमाणात दिसून येते. या लेखांची मौलिकता लक्षात घेतली तर डॉ. बाबासाहेबांची मूकनायकातून प्रकट झालेली पत्रकारिता दिसून येते. डॉ. बाबासाहेब विदेशातून शिक्षण घेऊन १९२३ ला भारतामध्ये परत आले आणि त्यांनी मूकनायक या वृत्तपत्राची झालेली वाताहत पाहिली, आर्थिक अडचणीमुळे बंद पडलेले वृत्तपत्र पाहिले आणि नंतर त्यांनी १९२४ ला 'बहिष्कृत हितकारणी' सभेची स्थापना केली. ही त्यांची पहिली सामाजिक संघटना. या संघटनेमार्फत त्यांनी महाडच्या चवदार तळ्याचा सत्याग्रह केला. परंतु तत्कालीन वृत्तपत्रांनी त्याला पाहिजे तशी प्रसिद्धी दिली नाही. म्हणून बाबासाहेबांना हे लक्षात आले की आपले वृत्तपत्र असल्याशिवाय आपली चळवळ व्यापक होणार नाही. त्यामुळे त्यांनी ३ एप्रिल १९२७ 'बहिष्कृत भारत' या वृत्तपत्राची स्थापना केली. आणि पुनश्च: हरिओम... या अग्रलेखात आपले विचार व्यक्त करून पहिल्या अंकाची सुरुवात केली. मूकनायक या वृत्तपत्रात संत तुकारामांच्या चार ओळी वृत्तपत्राचे अग्रभागी दिलेल्या होत्या तर बहिष्कृत भारत या वृत्तपत्रामध्ये ज्ञानेश्वरांच्या चार ओळी दिलेलया आहेत. बाबासाहेबांवर संत कबीरांचा प्रभाव होता. संत ज्ञानेश्वरांनी चातुर्वर्ण पद्धतीवर टीका केली होती. त्याच्या दृष्टीने संत ज्ञानेश्वर हे बंडखोर संत होते, या समाजाला न्याय देणारे, बहुजनांचे कैवारी, त्यांना सोबत घेऊन चालणारे संत होते. म्हणून संत ज्ञानेश्वरांचे महत्त्व बाबासाहेबांना पटले होते.

"आता कोदंड घेऊनी हाती । आरुढ पांडुरंग येथे रथी ॥
देई आलींगण वीरवृत्ती समाधानी । जगी किर्ती स्त्रवो स्वधर्माचा मानु वाढवी ॥

या भारापासून सोडवी मेदिनी । आता पाहता नीसुंखी होईल ॥
या संग्रामाचे चित्त देई । येथे हे वाचून काही बोलं नाही ॥"

संत ज्ञानेश्वरांच्या हया ओळी दि. ३ एप्रिल १९२७ बहिष्कृत भारत वृत्तपत्रातील पहिल्या अंकाच्या अग्रणी नमूद केलेल्या दिसून येतात. या वृत्तपत्रातील अग्रलेख पाहिल्यास येथील महाड येथील धर्मसंगर... वरिष्ठ हिंदूंची जबाबदारी... इंग्रज सरकारची जबाबदारी... आणि अस्पृश्यांची कर्तव्य... हे सर्व अग्रलेख अभ्यासल्यास त्यांनी ब्रिटिश सत्तेवर केलेला कठोर प्रहार आपल्याला दिसून येतो. डॉ. बाबासाहेबांनी आपले विचार स्वतंत्रपणे मांडण्याचे कार्य वृत्तपत्रांमधून केले. अस्पृश्यता निवारणाचा पोरखळ... हा अग्रलेख त्यांचा अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत.

डॉ. बाबासाहेबांनी समता हे वृत्तपत्र शुक्रवार दि. २९ जून १९२७ ला सुरू केले. ते १५ मार्च १९२९ पर्यंत सुरू राहिले. ४ सप्टेंबर १९२७ ला समाज समता संघाची स्थापना केली. या संघाला उद्देशून समता हे वृत्तपत्र सुरु केले. या वृत्तपत्राचे संपादक देवराव नाईक हे जातीने ब्राह्मण होते. परंतु ब्राह्मणी वृत्तीचे नव्हते. या वृत्तपत्राने देखील बाबासाहेबांच्या चळवळीला गती व दिशा देण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य केले. यानंतर डॉ. बाबासाहेबांनी जे वृत्तपत्र सुरू केले ते म्हणजे जनता. हे वृत्तपत्र पंचवीस वर्ष सुरू राहिले. हे वृत्तपत्र २४ नोव्हेंबर १९३० का सुरू केले ते २८ जानेवारी १९५६ पर्यंत चालू राहिले. आंबेडकरी विचारांची धारणा घेऊन काम करणाऱ्या तमाम लोकांची कोणती धरोवर असेल तर ती जनता हे वृत्तपत्र आहे. कारण यामध्ये डॉ. बाबासाहेबांचा पंचवीस वर्षांच्या काळातील संपूर्ण प्रवास नमुद आहे. या मधील त्यांचे अग्रलेख, स्फुटलेख, स्तंभलेख हे अतिशय वाचनीय व समाजाला दिशा देणारे आहेत. वृत्तपत्र हे संपादकाच्या आधारावर मोठे होत असते. म्हणून देवराव नाईक, गंगाधर निळकंठ सहस्वबुद्धे, कमलाकांत चित्रे, भास्कर रघुनाथ कद्रेकर, काशिनाथ मेश्राम, सावधकर ही सारी मंडळी जनता या वृत्तपत्राचे संपादक राहिलेली आहेत. त्यांच्या नावावरूनच त्यांच्या कार्याचे स्वरूप लक्षात येते. जनता या वृत्तपत्राचे नाव बदलून बाबासाहेबांनी ४ फेब्रुवारी १९५६ ला "प्रबुद्ध भारत" हे नाव ठेवले. हे वृत्तपत्र १ डिसेंबर १९५६ पर्यंत चालले. डॉ. बाबासाहेबांना तथागत बुद्धांचे विचार समाजामध्ये रुजवयाचे होते, हिंसा घालून अहिंसा प्रस्थापित करायची होती. तिथला हिंसाचार, इथला वाद, माणसाला माणूस म्हणून जगण्याचा, मानण्याचा ज्या धर्मामध्ये माणसाला माणूस संबोधले जाते असा धर्म सर्व लोकांना द्यायचा होता. यासाठी त्यांनी प्रबुद्ध भारत हे वृत्तपत्र सुरू केले. या वृत्तपत्राचे संपादक दादासाहेब गायकवाड, भैय्यासाहेब आंबेडकर, दादासाहेब रूपवते, घनशाम तळवलकर, शंकरराव खरात, ज. वि. पवार ही सर्व मंडळी तत्कालीन काळात या वृत्तपत्राचे संपादक होते. डॉ. बाबासाहेबांच्या या सर्व गोष्टीचा विचार केला. तर त्यांची पत्रकारिता ही खऱ्या अर्थाने आजच्या काळात सर्व पत्रकारांना आणि संपादकांना दिशा देणारी आहे. त्यांची निर्भीड पत्रकारिता ज्या पत्रकारितेतून खऱ्या अर्थाने समाज घडविला, खऱ्या अर्थाने देशाची बांधणी केली, एवढेच नव्हे तर भारताच्या बांधणीमध्ये ज्यांचे महत्त्वाचे योगदान राहीले, ज्या वृत्तपत्रांमुळे त्यांना आपली चळवळ गतिमान करता आली, लोकांपर्यंत पोचवता आली ती वृत्तपत्रामुळेच. त्यामुळेच भारतातील तमाम मंडळी बाबासाहेबांच्या पाठीशी उभी राहिली. आजही डॉ बाबासाहेबांचे चारही वृत्तपत्रे, त्यांचे अग्रलेख, स्तंभलेख हे सर्व समाजाला दिशा देणारे आणि उपयुक्त आहेत. डॉ. बाबासाहेबांनी आपल्या १९२० ते १९५६ या ३६ वर्षाच्या पत्रकारितेमध्ये त्यांनी कधीही नायक पूजेला थारा दिलेला दिसून येत नाही. म्हणून बाबासाहेबांची पत्रकारिता ही आदर्श होती. भारतामध्ये अशा पत्रकाराची गरज आहे. भारतामध्ये खऱ्या अर्थाने लोकशाही नांदवायची असेल तर या ठिकाणी निर्भीड आणि निर्भय पत्रकाराची समाजाला गरज आहे. त्यामुळे सध्यास्थितीमध्ये जी पत्रकारिता सुरू आहे त्यामध्ये परिवर्तन होणे गरजेचे आहेत. काही अपवादात्मक परिस्थितीत पत्रकार वगळल्यास इतर पत्रकारांनी

आपली नीतिमूल्ये जपून वस्तुनिष्ठ पत्रकारिता स्वीकारणे गरजेचे आहे. त्यासाठी डॉ. बाबासाहेबांच्या पत्रकारितेचा स्वीकार करणे ही काळाची गरज आहे.

संदर्भ ग्रंथ –

१.गायकवाड, शा. का. – "महामानव डॉ. बाबासाहेब रामजी आंबेडकर", राजवंश पब्लिकेशन, नवी मुंबई. २००७.

२.घोरमोडे के. यु., – "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची साफल्यता व कृतिप्रवणता", विद्या प्रकाशन, नागपूर. ऑक्टोबर २०१५.

३.नगराळे, शंकरराव – "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विश्वरत्न कसे?", सुधीर प्रकाशन, वर्धा. ६ मे २०१२.

४.नाईक, देवराव, विष्णू (संपादक) – "जनहित प्रवर्तक पाक्षिक पत्र जनता", मुंबई – २४ नोव्हेंबर १९३०.

५.निगम, प्रा. गौतम – "बहुजन उद्धारक", कौशल्य प्रकाशन, औरंगाबाद. २० मार्च २००७.

६.पानतावणे, गंगाधर – "पत्रकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर", प्रतिमा प्रकाशन, पुणे. द्वितीय आवृत्ती १९९६.

७.भटकर, पांडुरंग नंदराम (संपादक) – "मूकनायक", पाक्षिक, ३१ जानेवारी १९२०.

८.मून वसंत ; नरके हरी (संपा.) – "डॉ. बाबासाहेब आबेडकर लेखन आणि भाषणे" खंड १८ भाग–१, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र प्रकाशन समिती, उच्च आणि तंत्रशिक्षण विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई २००२.

९.रघुवंशी, रमेश – "डॉ. आंबेडकरांची भाषणे", सुगावा प्रकाशन, पुणे १९८०.

१०.हिवराळे, सुखराम – "लोकपत्रकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर", प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर. १९८५.

११.शर्मा, वीरेंद्र – "भारतीय सामाजिक व्यवस्था", पंचशील प्रकाशन, जयपुर २००१.



आमचे प्रेरणास्थान व प्रमुख आधारस्तंभ

मा. श्री. मनोहर हरी खापणे (प्रसिद्ध उद्योगपती)

अध्यक्ष, सह्याद्रि परिसर शिक्षण प्रसारक मंडळ, पाचल

श्री. मनोहर हरी खापणे कला व वाणिज्य महाविद्यालय, पाचल-रायपाटण

मु. पो. रायपाटण, ता. राजापूर, जि. रत्नागिरी

वेबसाईट - www.khapnecollege.com, ई-मेल - mhkcollegepachal@gmail.com

We the Research Organization will do provide help for the following works listed below.

Support for Arts, Commerce & Science all Disciplines

- Research Paper Publication
- Book Chapters for Publications
- ISBN Publications Supports
- M.Phil Dissertations Publish
- Ph.D Thesis in Book Format
- ISSN Journals with Impact Factor (7.675)
- Online Book Publication
- Seminar Special Issues
- Conference Proceedings

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Mobile : 9595560278 /

Aadhar Publications

New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604

Mob- 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com

For Details www.aadharsocial.com

issn

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

ISSUE No- (CCCXVI) 317

September -2021

National E-Conference on

Socio-Religious and Political Movements in the Pre-independence Period and Today



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social Research & Development Training Institute Amravati

Executive-Editor
Dr. Nilima D. Deshmukh
Principal
Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist. Buldana

Executive-Editor
Dr. J. B. Devhade
Principal
Late Pushpadevi Patil Art's and Science College, Risod, Dist.Washim

Editors
Dr.Shrihari pitale
Assist.prof.& HOD Department of History
Late Pushpadevi Patil Art's and Science College Risod Dist.Washim

This Journal is indexed in :
- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar Publications

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyala
Badnera

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Women Pioneers Of India: Their Contribution Towardswomen Education In Social Reform Movement,19th& 20thcenturies Ce — Dr. Indira P	1
2	बुलडाणा जिल्हयातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील : एक आढावा — डॉ. संतोष बनसोड	5
3	सत्यशोधक संपतराव भिवाजी शिंगणे — डॉ.किशोर मारोती वानखडे	8
4	महाराष्ट्रातील आर्थिक व सामाजिक स्थिती सुधारण्यासाठी कामगारांचे योगदान — प्रा.सुनिल मदन मनवर	18
5	राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे सामाजिक कार्य — प्रा. डॉ. एस.एन. तुरुकमाने	23
6	कर्मवीर अण्णांच्या वैचारिक वारसदार : प्राचार्या सुमतीबाई पाटील — डॉ.जाधव संतोष हनुमंत	25
7	स्वातंत्र्य संग्रामातील मातृभूमि वृत्तपत्राचे योगदान(सन १९३१ ते १९४७) — प्रा.डॉ.संतोष गोपाळकृष्ण कुळकर्णी	31
8	मातृभूमिच्या संपादिक प्रमिलाताई ओक यांच्या नेतृत्वातील चले जाव आंदोलन — प्रा.डॉ.भास्कर शा.वझिरे	34
9	सावित्रीबाई फुले यांचे शिक्षण विषयक कार्य: ऐतिहासिक चिंतन — प्रा.डॉ. संदिप व्ही. भुरले	37
10	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील धार्मिक, सामाजिक व राजकिय चळवळी व सद्याची परिस्थिती — प्रा. दिवाकर कांबळे	41
11	भारतीय स्वर्तंत्र्य लढयात स्त्रियाचे योगदान — डॉ.राजाराम पिंपळपल्ले	49
12	विधवांच्या उध्दारांसाठी ब्रिटीश काळातील चळवळी — डॉ.विजय रामदास तिरपुडे	55
13	महीला क्रांतीकारी कनकलता बरूआ यांचे भारतीय स्वातंत्र चळवळीतील योगदान — विनोद उखर्डा धर्माळ	59
14	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील सामाजिक चळवळी आणि आज (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या सामाजिक चळवळी) — प्रा. डॉ. आनंद के. भोयर	62
15	प्रांतिक कौन्सिलच्या खामगाव जळगाव खेडेविभाग मतदारसंघाची १९३७ची निवडणूक – एक विश्लेषण — डॉ श्याम प्रकाश देवकर	67
16	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील महिलांचे योगदान — प्रा. रेखा बडोदेकर	71
17	पुनर्विवाह चळवळीचा इतिहास — प्रा.डॉ. भाऊराव रामेश्वर तनपुरे	76
18	स्वातंत्रपूर्व लढयातील बाबूगेनू सैद याची कामगिरी — स्मिता समिर अंध्याल	80
19	स्त्री जातीचे उध्दारक : महर्शी कर्वे — डॉ.आर.यु.हिरे	83

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, (CCCXVII) 317
ISSN : 2278-9308
September, 2021

बुलडाणा जिल्हयातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील : एक आढावा

डॉ. संतोष बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय,बडनेरा जि. अमरावती.

प्रस्ताविक

महात्मा ज्योतीराव फुले यांनी चातुर्वर्ण्य व्यवस्थेविरोधात महाराष्ट्रात सर्वप्रथम आवाज उठवतांना सांधीकरित्या चळवळ सुरू केली. या चळवळीतूनच मानवाला मानवतेची शिकवण देणाऱ्या सत्यशोधक समाजाची स्थापना पुण्यामध्ये दि.२४ सप्टेंबर १८७३ मध्ये झाली. संपूर्ण महाराष्ट्रात अल्पावधीतच या चळवळीचा प्रसार झाला. सत्यशोधक तत्वज्ञान जनसामान्यां पर्यंत पोहोचविण्यासाठी लोकभाषेचा प्रसार केला. एकोणविसाव्या शतकात दंडार, गवळण यांसारख्या समाजप्रबोधन करणाऱ्या कला पथकांचा आधार घेतांना महात्मा फुले यांच्या कालावधीतच सत्यशोधक जलसे सत्यशोधक समाजाचा गावोगाव प्रसार करू लागले. त्यामुळे अल्पावधितच संपूर्ण महाराष्ट्रात सत्यशोधक चळवळीचा प्रचार व प्रसार झाला. या जलस्यांमध्ये भीमराव महामुनी यांनी केलेले कार्य अत्यंत महत्वाचे आहे त्यांच्या कार्यांची प्रेरणा घेऊन संपूर्ण महाराष्ट्रात असंख्य जलसाकार सत्यशोधक समाजाचा प्रचार प्रसार करू लागले. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये बुलडाणा जिल्हयातील शावजी पाटील या जलसाकाराचे कार्यावर प्रकाश टाकला आहे.

शोधनिबंधाचा उददेश :–

१)बुलडाणा जिल्हयातील सत्यशोधक जलसाकार शावजी रावजी पाटील यांचे कार्याचा अभ्यास करणे.

२)या जलसाकाराने केलेल्या कार्याचा आढावा घेणे.

संशोधन पध्दती :–

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये ऐतिहासिक संशोधन पध्दतीचा आधार घेतला आहे.

शावजी रावजी पाटील – बिरशिंगपूर, जि. बुलढाणा –

इ.स. १९२३ मध्ये बिरशिंगपूर, जि. बुलढाणा येथे शावजी रावजी पाटील यांनी सत्यशोधक जलसा उभारला होता. हा जलसा बुलढाणा जिल्हयात विविध ठिकाणी सत्यशोधक समाजतत्वज्ञानाचे प्रयोग सादर करित असे. चौथा, तांदुळवाडी, दुधा, महिमळ या बुलढाणा जिल्हयातील खेडयांमध्ये या जलशाचे प्रयोग झालेले आढळतात. तसेच चिखली तालुक्यात देखील या जलशाने मोठया प्रमाणावर समाजजागृती केली होती. जिल्हयातील विविध गावांसह बिरसिंगपूर या स्वग्रामामध्ये देखील जागृतीचे जोरदार काम पाटील यांच्या जलशाने पार पाडले होते.

ऑक्टोबर १९२३ मध्ये वऱ्हाड प्रांतातील दौऱ्यामध्ये या जलशाने चिखली तालुक्यातील पांगरखेड, बुलठाणा, सावरगाव, मालगणी, आंभोडा, हातेडी खुर्द, सागवण, कौलघड, शिरपूर, माळवंडी, केसापूर, देऊळघाट, धाड, चिखली वगैरे गावी मोठया प्रमाणावर समाज जागृतीचे कार्य केले होते. त्यावेळी या प्रांतातील किनगावराजा, जांभोरा, राहेरी, अंबासी, कोलरा, एकलारा, खंडाळे, शेंदुर्जन इत्यादी गावी आनंदस्वामी व पंढरीनाथ पाटील यांच्या जाहीर व्याख्यानांच्या बरोबरीने प्रस्तुत जलशाचे प्रयोग झाले होते. चिखली हे पंढरीनाथ पाटील यांचे कर्मभूमी असल्याकारणाने त्या भागात मोठया प्रमाणावर समाजकार्य करण्यात या जलशाला त्यांचे सहकार्य आणि मोलाचे योगदान लाभलेले होते.

दि. २४ सप्टेंबर १९२३ रोजी बुलढाणा सत्यशोधक परिषद मोठ्या थाटाने पार पाडली होती. या परिषदेच्यावेळी रात्री शावजी पाटील यांच्या जलशाने प्रयोग सादर केले होते. जलशा दरम्यान पंढरीनाथ पाटील यांचे भाषण होऊन मातोळेकरांचा जलसाही सादर झाला होता. परिषदेचे स्वागताध्यक्ष आनंदस्वामी तर अध्यक्ष सीताराम नाना चौधरी हे होते. परिषदेस पाच हजार जनसमुदाय उपस्थित होता. तर जलशाच्या प्रयोगावेळी आठ हजार जनसमुदाय उपस्थित होता. अशा प्रकारे परिषदेचे औचित्य साधून या जलशाने आठ हजार लोकसमुदायास ज्ञानाचे अमृत पाजण्याचे बहुमोल कार्य केले होते. या परिषदेबरोबरच धाड(बुलडाणा) या परगण्यातील लोकांची परिषद भागोजी पाटील यांचे अध्यक्षतेखाली पार पडली होती. त्यावेळी बऱ्याच वक्त्यांची भाषणे झाली होती. यावेळीही या जलशाने तिथे प्रयोग सादर करून समाजकार्य पार पाडले होते. बुलढाणा जिल्ह्यातील ब्राम्हणेतरांच्या विविध परिषदा तसेच सत्यशोधक समाजाचे पुढारी आणि महत्वाचे प्रचारक यांच्याशी या जलशाचा घनिष्ठ असा संबंध येऊन गेलेला आढळतो. त्याच्या माध्यातून या जलशाने आपले सत्यशोधक प्रचार कार्य विविध भागात साध्य केले होते.

बुलढाणा जिल्हा परिसर आणि विशेषत: चिखली तालुक्यातील कार्य करणाऱ्या या जलशास चिखली गावातच सनातन्यांच्या विरोधास सामोरे जावे लागले होते. चिखली येथे ही मंडळी जलसा करण्याकरिता गेली असता तेथील पुरोहीत लोकांनी जलसा न होण्याविषयी अतोनात प्रयत्न केले होते. परंतु येथील सरकारी अधिकाऱ्यांच्या सहकार्यामुळे विरोध मोडीत निघून अधिक दोन दिवस जलशांचे सादरीकरण झाले होते. पुरोहितांच्या विरोधी प्रयत्नांचा परिणाम प्रस्तुत जलशांवर कधीच झाला नाही. तसेच जलशाचा हेतू निर्मळ आणि समाजविधायक असल्याचे कर्तव्यतत्पर अधिकाऱ्यांच्या लक्षात येऊन अधिकारी मंडळींनी जलशाची पाठराखण करण्याचे काम केले होते. परिणामी विरोधकांना निरूतर व्हावे लागत होते.

प्रस्तुत जलशाची परिणामकारकता जलशाच्या चिखली येथील कार्यावरून दिसून येते. जलशाच्या चिखली येथील प्रयोगाच्या निमित्ताने तेथील लोकांत मोठ्या प्रमाणावर जागृती होऊन पुरोहितशाहीबाबत तिरस्कार निर्माण झाला होता. त्याचप्रमाणे धाड येथील श्रीमंत शाहू सावरकार कधी तमाशा न पाहणारे असे गृहस्थ या जलशासमयी हजर होते. त्यांच्या मनावर जलशाचा असा परिणाम झाला होता की, भटजी कोणत्याही ठिकाणी त्यांना सापडो, त्या ठिकाणी त्यांची कानउघडणी करावायाची ते सोडीत नसत. तसेच त्या प्रसंगी भटजीकडून कोणत्याही प्रकारचा धर्मविधी करावयाचा नाही. अशा कित्येकांनी शपथा देखील घेतल्या होत्या. अशा प्रकारचे लोकांच्या आचार–विचारांमध्ये बदल घडविणारे आमूलाग्र परिवर्तन प्रस्तुत जलशाव्दारे साध्य झाले होते.

सारांश :–

शावजी रावजी पाटील यांनी महात्मा ज्योतिराव फुले यांना गुरूस्थानी मानून सत्यशोधक समाजाचा जलशाव्दारे प्रचार केला. आनंदस्वामी, पंढरीनाथ पाटील यांचे सोबत बहुजन हितास झटणाऱ्या चळवळीत उत्साहाने सहभागी झाले. इ.स. १९३० चे कालावधीत पंढरीनाथ पाटील, आनंदस्वामी, गणपतराव शिंगणे, संपतराव शिंगणे यांचा जलसा सार्वत्रिक सत्यशोधक समाजाचा प्रसार करित होता. त्यांचे कार्याची प्रेरणा घेऊन शावजी रावजी पाटील यांनी स्वत:चा जलसा स्थापना करून संपूर्ण बुलडाणा जिल्हयात वगाच्या माध्यमातून जनचळवळीचा प्रचार केला. पर्यायाने सत्यशोधक चळवळ तळागाळापर्यंत पोहोचण्यास मदत झाली.

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -7.675 Issue NO, (CCCXVII) 317

ISSN : 2278-9308 September, 2021

संदर्भ साधने :—

१) दैनिक, विजयी मराठा, दि.५ नोव्हेंबर १९२३.

२) दैनिक, दिनमित्र, दि. २९ ऑगस्ट १९२३.

३) भिंगारदिवे डॉ. गजानन, सत्यशोधक जलसे, परंपरा स्वरूप आणि वाटचाल, शब्दशिवार प्रकाशन, सोलापूर, इ.स.२०२१.

४) बनसोड डॉ. संतोष, पश्चिम विदर्भातील सामाजिक चळवळीचे शिलेदार भाग एक, आधार प्रकाशन, अमरावती.

५) चंदनशीव भस्करराव, सत्यशोधकी आणि आंबेडकरी जलसे प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर इ.स. १९९०.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera



Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist Buldana ,

, Pushpadevi Patil Arts and Science college,Risod and Ambedkarite History Congress.

jointly organised One Day Multi-Disciplinary National Level E-Conference

Socio-Religious and Political Movements in thePre-Independence Period & Today

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Prof./Mr./Mrs.....डॉ. संतोष बनसोड.....

of.....इतिहास विभाग प्रमुख नारायणराव राणा महाविद्यालय,बडनेरा जि. अमरावती.....

participated in One Day Multi-Disciplinary National Level E-Conference on topic 'Socio-Religious and Political Movements in thePre-Independence Period & Today' organized on 21th November 2021 by Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon, Dist Buldana,Pushpadevi Patil Arts and Science college,Risod and Ambedkarite History Congress. & B.Aadhar Multi-Disciplinary Peer Reviewed & Index Research Journal, Amravati with Impact Factor 7.675 (SJIF) & ISSN: 2278-9308. He/She presented his/her Research Paper entitled.....बुलडाणा जिल्ह्यातील सत्यशोधक जलसाकार.....

in the Paper Reading Session. This certificate is issued in recognition of publication of the research paper.

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande

Principal
Dr.Nilima D Deshmukh

Principal
Dr. J .B Devhade

Editor
Dr.Pramod R.Chavan

Editor
Dr.Shrihari R.

Bodhi-Path Year 2021 July Issue Volume 21 Page No 40-45

New Chapter of Buddhism in Berar

Dr. Santosh Bansod

'Suman Nivas' , Near LIC Colony,

Ram Nagar, Amravati.

Pin – 444606 MO - 8275418986

email – bansodsantosh73@gmail.com

Buddhism is the real physical path to make our life more prosperous and meaningful. It is the real religion which developed human mind towards physical reality. It encourages human to take any decision with your own mind. One should take in his mind that only physical world is global truth and the problems which human being faces in his daily life is arises from the physical causes so the remedy of that problems must be of physical background. India is always the destination to those who have to learn philosophy of spirituality, Lord Buddha is the lighthouse to them all truthseekers. Lord Buddha's philosophy is balance between spiritual and physical life. All other religious paths are one sided developed towards spiritual life only. But Buddha's path is the answer to all problems of physical and spiritual life. That's why the foreign travelers were attracted towards India ; that attraction is only for Lord Buddha. He was the most inchanting personality; having the solution of all problems of human being. So the attraction towards Buddhism and its literature fetches out the scholors to India.

Berar Region – Berar is Western part of Vidarbha region. The eastern part of Vidarbha called as ***'Zadi'*** and The Western part of Vidarbha called as ***Berar***. The Wardha river divided Vidarbha in above mentioned two parts. The name of Berar developed from the name of ***'Varhad'***. The name of ***'Varhad'*** also developed from the name of 'The Wardha' river. The name developed as ***'Vardatat –Vardatah –***

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyal

Vaarad – Varhad - Barar to Berar'. [1]Todays Berar is made of Amravati revenue division. There are five district in that division and they are Amravati, Akola, Yeotmal, Washim and Buldana.

Buddhism and Berar – About Maharashtra ***'Waghali'*** inscription of Jalgaon District suggest us that the Mauryan empire must spread in Maharashtra. The ***'Supparak'*** (Shurparak or Sopara) was the most important trade city of Buddha era. The '***Thergatha***' Mentioned one trademan named ***'Punna'*** or ***'Purna'*** of Thane. He accepted Buddhism from Lord Buddha at ***'Shravasti'***. He built sandle wooden ***'Vihar'*** at ***'Sopara'***.[2] Lord Buddha was invited by this ***'Purna'*** and Lord Buddha visited the Sopara. This incident mentioned in ***'Papanchsuyani'*** and ***'Sarathyappakarini'*** books. The oldest inscription of Vidarbha from was belong to Ashokan period. This inscription found in Deotek village Districts Chandrapur. This inscription engraved by Mahamatya of Ashoka. They have been engraved religious message of Ashoka. There are many no. of inscriptions was found from Adam and Paoni. Mahakshtrapa Rupiamma Pillar Inscription reported from Paoni. These inscriptions related Sunga-Satvahana period. Chandala, Patur, Mohadi in this rock-cut cave also having inscription. Nashik cave inscriptions also related to Buddhism of Vidarbha. Copper plate inscription related to Vakataka period and later Vakatak period. From this copper plate inscription we got information which is useful for study of Vidarbha Buddhism.[3]This revels that the Buddhism was well settle in Maharashtra from the age of Lord Buddha. Vidarbha also have great heritage of Buddhism. Pavani the famous archilogical site revels that the Buddhism was settle down in Vidarbha far ago of 3rd century BC. Berar also have great heritage of Buddhism. There are many famous archilogical sites which reveals that the Buddhism have great heritage in this region. Some points from which we can

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

verify the facts of Buddhism and we can reinvent the new facts about Buddhism in Berar.

1. **Bhon** – This archiological site is in Sangrampur tahasil district Buldana. There found the 3rd Century BC stupa of Mauryan era. This site is most important through the eyes of Buddhism and Indian heritage. This site show that the Buddhism was settled down in this region far ago of 3rd Century BC. Most amazing fact is that the ***Stupa*** was built with stone and bricks. Bhon must be that spot where famous Chinese traveler Hue – en – tsang have visited. He written about that capital and region named Mo – Ho- La- Cha. So the ***Bhon*** must be game changer archeological site of Berar about the view towards Buddhism.[4]
2. **Coins and Trade route** – There found Roman coins at many archioligical sites of Berar. This archiological proof reveals the traderout towards Pavani via Bhon –Kholapur - Kaundinyapur. These coins found at Kholapur, Tadli, Adam, and Sapegaon. Satvahana coins also found at Bhon and many other sites of Berar.[5] One seal found from Mahurzari excavation and this is related to Buddhism. We can conclude that the trade route of Buddhist trade cities must gone through Berar and that trade route connect the Buddhist archeological sites of that time. The trade route may be Bharuch to Bhon via river route and then Bhon – Kholapur – Kaundinyapur – Pavani. The other trade route must be Bhon – Pimpalgaon Raja- Chandol – Bhokardan- Paithan third one route Bhon – Pimpalgaon Raja – Jaipur – Ajanta.
3. **Caves** – Manjari (Amaravati district), Patur(Akola Disrict), Pipalgaon Raja, Savali (Buldhana district), Kalanb, Nibdyarvha (Yeotmal District) etc. cave of Vidarbha region. We need to study all the sites very minutely. Patur caves are of Buddhist period, there found inscription in

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Dhamm Script over the cave. One other inscription found at the cave pillar and architraves.[6] This cave must be of 3rd century BC. The caves must be ruined by the time or must be demolished by any invader of opposite religious side. ***Salbardi*** Caves of Morshi tahasil in Amravati district is related to Buddhism. But today that cave converted into lord Shiva temple and the cut headed sculpture which worshiped as goddess is actually the idol of Lord Buddha.[7] The sangharama mentioned By Hue en Tsang[8] must be the ***Salbardi*** Cave Sangharam and not of Ajanta Caves. Cisterns from the Mailgad fort of Buldana district must be the Buddhist rock cut caves. Chandol tahasil Buldana District Buldana was the famous Buddhist study center of then time.

4. **Mahavans** – The famous Buddhist religious book ***Mahavans*** reveals the names of preachers which was sent after the 3rd ***'Buddha Sangiti'***.[9] In that book the name of Maharashtra and the preacher which was send to Maharashtra was mentioned in it.[9] The line

   महारठ्ठं महाधम्मरक्खितत्थेर नामकं ।

   suggests that ***'Mahadhammarakkhit'*** was send to ***'Maharattha'*** (Maharashtra) as preacher. This Mahadhammarakkhit spread Buddhism in this region.

5. **Inscriptions** – ***Sanchi*** and ***Bharhut*** Stupa of Madhyapradesh are famous Buddhist Stupas have inscriptions of that stupas. The inscription denotes the names of donationars of various places of Berar[10]. Thas places are Bhatkuli (Amravati – The name of Bhatkuli actually mentioned as Bhijakatak) and Bhogwardhan (Now in Jalna District but it was part of Berar for long time). This reveals that the follower of Buddhism was in major numbers in Berar and also those followers seems to be well established community. Because if any community donating

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

for building the stupas in another region that means that community must be well eastablished or they must be trademan and profit gainer of Budhhist trade routes.

6. **Nagarjuna -** Famous Buddhist philosopher Nagarjuna was friend of Satvahan king Yadnyashri Gautamiputra Satkarni (166 AD to 196 AD). Nagarjuna wrote famous letter cum book to named ***'Suhrullekha'*** to preach to the Yadnyashri Gautamiputra Satkarni. This Nagarjuna was from Vidarbha region. He was teacher at Nalanda Buddhist university.[11] He spread Buddhism in Krushna Besin and was living at ***'Srisailam'*** in todays Andhrapradesh. We can imagine that if a person from Vidarbha teaches at Nalanda and written more than 20 books on Buddhism, that Vidarbha was the thinktank of Buddhism then. His 20 books of Buddhism are found in Chinese language. He was the founder of the ***'Shunyatvavad'*** philosophy. He was also the founder of ***'Madhyamika'*** philosophy.
7. **Kaundinya and Purna –** Kaundinya and Purna was mames of Buddhist monks.[12] The name of them have regional reference from Berar. The origin of these name must be from the geographical name of the place and river from Berar.

Conclusion – *Berar was the most important center of Buddhist period. Buddhism established in Berar in the time of Lord Buddha. Now time have come to reinvent the history of Buddhist Berar with these new chapters and visions.*

References –

1. Jarrett H.S. (Translator), ***'Ain – E- Akbari of Abul Fazl- I – Allami' Vol II***, Second Edition,Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta,1949, Page no 237

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

2. Eugene Burnouf , ***'Introduction to the History of Indian Buddhism'***, Chicago University Press Chicago, Feb 2010, Page no 235 to 270.
3. Zopade Nishant Sunil, ***'Archeology of Buddhism in Vidarbha region'***, A thesis submitted to Vishva Bharti University, Shantiniketan, Bolpur, West Bengal, Page no 7.
4. Deokar Shyam Prakash, ***' Historical Visit of Hue en Tsang to Maharashtra'***, paper submitted to South Indian History Congress, Hydrabad, 2019.
5. Zopade Nishant Sunil, ***'Archeology of Buddhism in Vidarbha region'***, A thesis submitted to Vishva Bharti University, Shantiniketan, Bolpur, West Bengal, Page no 7.
6. Hiralal, ***'Discriptive lists of Inscriptions in the Central Province and Berar'*** The Government Printing Press, Nagpur, 1916, Page no 134 & 135.
7. S. V. Fitzgerald & A. E. Nelson, ***Amraoti District, Vol. A, Central Provinces District Gazetters,***Caxtpm Works, Free Road, Bombay, 1911, Page no. 425.
8. Samuel Beal, ***SI-YU-KI, Buddhist Record of The Western World. Vol. II,*** Trubner & Co Ludgate Hill, London, 1884, Page no 255
9. M. S. More, ***' Maharashtratil Buddha Dhammach Itihas (Marathi)'***, Kaushaly Prakashan, Aurangabad, 2nd Edition 2016, Page no 44.
10. Ebid, Page no 66.
11. Bapat P. V., ***' 2500 years of Buddhism'***, Indian Government, 1956, Page no 194.
12. Sonavane Shivaji, ***' Sopara – Bauddha Sanskrutiche Kendra (Marathi),'*** Sugava Prakashan Pune, First Edition, 2012, Page no 28.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

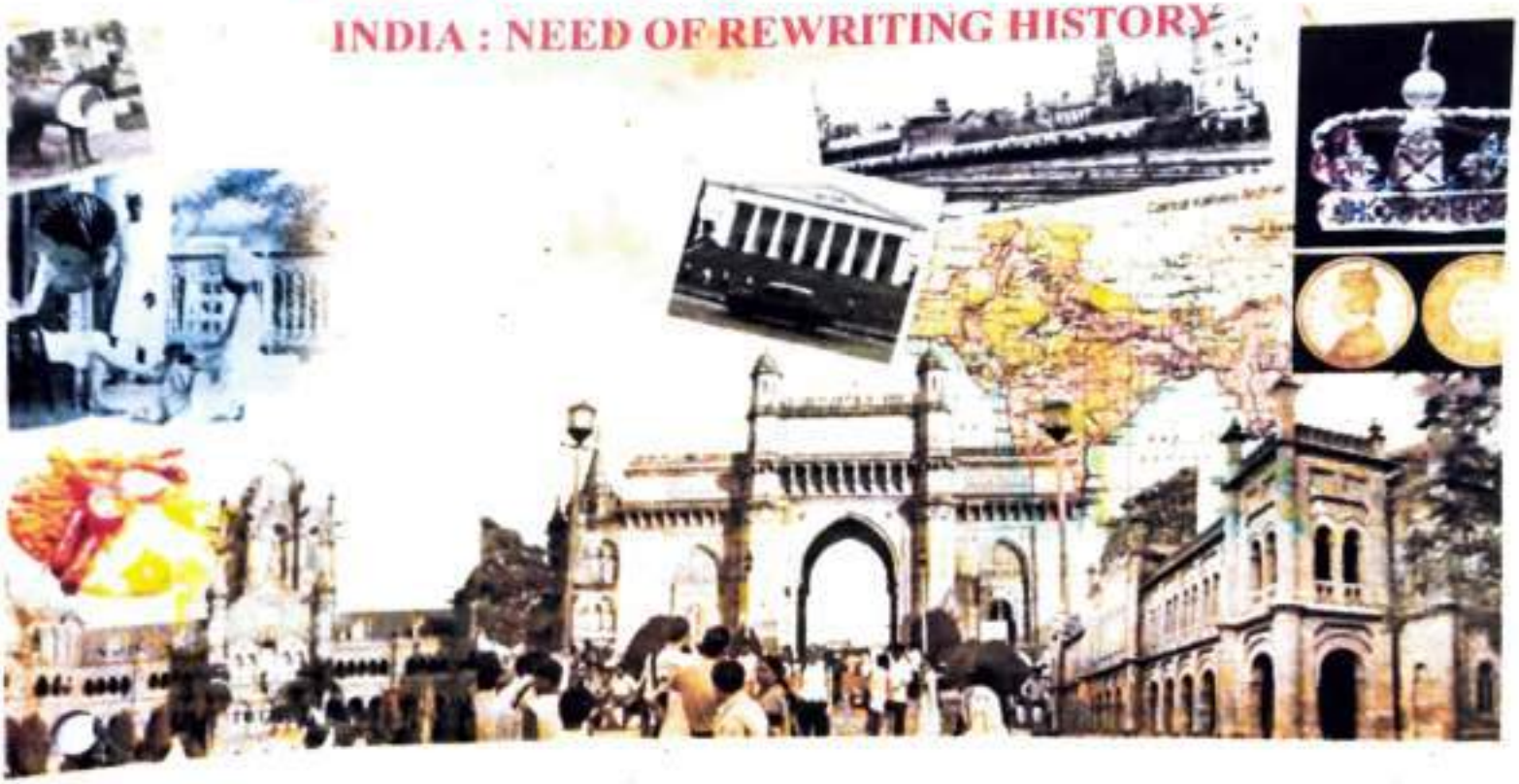
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Bansod,
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

Principal
Narayanrao Rana Mahavidya

'Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675, Issue NO. 321 (CCCXXI)
ISSN : 2278-9308
October, 2021

INDEX-321

Sr. No.	Articles	Page No.
1	ब्रिटिश आक्रमणाचे वऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम — प्रा.डॉ. संतोष बनसोड	1
2	ब्रिटिशराजवटीचे भारतावरील परिणाम — डॉ.उर्मिला क्षीरसागर	4
3	वॉरन हेस्टिंग्ज कालखंडात भारतात झालेल्या बदलाचा ऐतिहासिक आढावा (इ.स. १७७२ - १७८५) — डॉ. शरद गावंडे / पंढरीनाथ पोपट शेजूळ	8
4	वासुदेव बळवंत फडके यांची सशस्त्र चळवळ — डॉ श्रीहरी रंगनाथराव पितळे	11
5	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे सांस्कृतिक जीवनावरील परिणाम — प्रा. अंभोरे अशोक गंगाराम	13
6	भारतातील ब्रिटीश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम — प्रा.सुरेखा रामदास लगड	16
7	भारतावर ब्रिटिश आक्रमणाचे राजकीय जीवनावर झालेले परिणाम एक ऐतिहासिक चिंतनशील अध्ययन — प्रा.डॉ. एन. आर. वर्मा	18
8	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील क्रांतिकारी स्त्रियांचे योगदान — प्रा. डॉ. किशोर शेषराव चौरे	22
9	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे शैक्षणिक जीवनावर झालेले परिणाम — प्रा. डॉ. शरद गावंडे /प्रा. संजय सदाशिव बनकर	25
10	ब्रिटिश कालीन शिक्षण पद्धतीचे भारतीयांवरील परिणाम — डॉ. एस. यु. गावंडे / अमोल विश्वासराव तायडे	28
11	ब्रिटीश कालीन शिक्षणाचे भारतावर झालेले परिणाम — डॉ. प्रमोद ना. घ्यार	31
12	ब्रिटीश साम्राज्यवादाविरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनाची दीर्घकालीन रणनीती — सहा. प्रा. डी.एन. रिठे	37
13	गव्हर्नर जनरल लॉर्ड डलहौसीचे खालसा धोरण एक ऐतिहासिक चिकित्सा १८४८–१८५६ — श्रीकांत पांडुरंग तळेकर / डॉ.शरद गावंडे	40
14	बहिरम यात्रा – एक ऐतिहासिक मागोवा — कु. शिल्पा युगेंद्र अंबळकार	44
15	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव... — डॉ.सोमनाथ लक्ष्मण गुंजकर	47
16	'भारतावरील ब्रिटिश आक्रमण, सामाजिक जीवन व भाषांतर युग' — डॉ.संदीप अर्जुनराव बनसोडे	53
17	ब्रिटिश आक्रमणाने स्त्री जीवनातील सर्वांगावर झालेले परिणाम — प्रा. डॉ. कुसमेद्र गं. सोनटक्के	56
18	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे स्त्री जीवनावरील परिणाम — प्रा. कु. सुषमा जयकुमार फरसोले	58

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO. 321(CCCXXI) | October, 2021

ब्रिटिश आक्रमणाचे वऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम

प्रा.डॉ. संतोष बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख
नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा जि.अमरावती ,मो.नं.8275418986

प्राचीन भारताचा शैक्षणिक इतिहास हा प्रलंभ आहे. मात्र या शिक्षण पध्दतीला सुरवात नेमकी कधी झाली हे सांगणे अत्यंत कठीण आहे. मात्र जेव्हा मानवाने एकत्र अर्थात समुहाने राहण्यास सुरवात केली तेव्हापासुन शिक्षणाला सुरवात झाली. भारताच्या इतिहासाचे कालखंड पाडले गेले आहेत. या कालखंडातील वैदिक कालखंडाचा विचार केला असता या काळातील वर्णव्यवस्थेमध्ये शिक्षणाची मक्तेदारी एका विशिष्ट वर्गाकडे होती. ब्राह्मण हा वर्णच फक्त शिक्षण घेवू शकत होता. इतर वर्ण हे अज्ञानाच्या गर्तेत पडलेले होते. इ. स. पुर्व 6 व्या शतकात मात्र गौतम बुध्दाने सामाजिक क्रांतीच घडवून आणली. येवूनच चातुवर्ण व्यवस्थेला तडा दिला. ब्राह्मणाची शिक्षणावरील मक्तेदारी संपुष्टात आणून सर्वांना शिक्षणाची व्दारे खुली करुन दिलीत. परिणामी सर्वच बौध्द विहार व मठामध्ये शिक्षण दिल्या जावु लागले. या विहार व मठात सर्व समुहातील लोक शिक्षण घेवू शकत होते. यामधील काही बौध्द विहार हे जागतीक दर्जाचे केंद्र ठरलेत. अनेक विहारांमध्ये विद्यापीठांची निर्मिती झाली. या मधील उज्जैयनी, तक्षशिला, नालंदा, सांची, वल्लभी, विक्रमशिला इत्यादी सारखे विद्यापीठ ही नावारुपास आलेत विद्यापीठांमध्ये आशिया खंडातील सर्वच घटकातील विद्यार्थी शिक्षण घेवू शकत होते. मौर्य काळानंतर मात्र शिक्षणावर परत हल्लाबोळ झाला. शुंग काळापासून ही शिक्षण व्यवस्था विशिष्ट समाजाची मक्तेदारी ठरली. वऱ्हाडची स्थिती यापेक्षा वेगळी नव्हती.

वऱ्हाड हा अमरावती, अकोला, यवतमाळ, बुलढाणा व वाशिम या पाच जिल्ह्यांपासुन बनलेला आहे. या वऱ्हाडचे क्षेत्रफळ सुमारे 46090 किमी आहे. या वऱ्हाडच्या पुर्वेस नागपूर विभाग पश्चिमेस नाशिक विभाग उत्तरेस मध्यप्रदेश तर दक्षिणेस औरंगाबाद विभाग वसलेला आहे. 20.56उ. 77.47 पु. 20.93 उ. 77.75 एवढ्या भूभागावर वसलेल्या वऱ्हाडाची 2011 च्या जनगणने नुसार 1,012,066,653 एवढी लोकसंख्या होती. या वऱ्हाडवर मौर्य, शुंग सातवाहन, वाकाटक, राष्ट्रकुट, चालुक्य या प्राचीन घराण्याची सत्ता होती. या काळात सुद्धा शिक्षणाचा फारसा विस्तार झालेला नव्हता. शिक्षणाची मक्तेदारी ही ब्राह्मण वर्गाकडे होती. सुलतानशाही व मुघलकाळात सुद्धा फारसा बदल झालेला दिसत नाही. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी या तत्कालीन समाजवेवस्थेला तडा देवून बंड घडवून आणले. त्यांनी योग्यतेनुसार व्यक्तींना आपल्या स्वराज्य निर्मितीच्या प्रकियेत सामवून घेतले. परिणामी बहीर्जी नाईक सारखा रामोशी हा गुप्तहेर विभागाचा प्रमुख बनला. याचे मुळ कारण हे शिक्षणच अभावे. गुप्त बातम्यांचे खुलासे महाराजापर्यंत पोहचविण्याची किमया शिक्षणानेच केली असावी. ही स्थिती मात्र अपवादात्मक होती. एकंदरीत ब्रिटिश आक्रमणाच्या पुर्वी वऱ्हाडची शैक्षिणिक अवस्था ही दयनिय होती.

ब्रिटिशांच्या आक्रमणानंतर वऱ्हाडच्या शैक्षणिक स्थितीत बदल होत गेला. इ. स. 1827 रिचर्ड जोकिन्स यांच्या नागपूर प्रदेशाच्या अहवालामध्ये नागपूरप्रांतात 46 सार्वजनिक शाळा असल्याचा दाखला मिळतो. या शाळांमध्ये 936 विद्यार्थी शिक्षण घेत होते. वऱ्हाड हा भाग सुद्धा नागपूर प्रांताचाच घटक होता. इ. स. 1854 च्या वुडच्या खलित्याने वऱ्हाडला सुद्धा प्रभावित केले. इ. स. 1866 ला वऱ्हाडात शिक्षण खात्याची स्थापना करण्यात

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

आली. या खात्याअंतर्गत वऱ्हाडात डायरेक्टरच्या अधिकारात दोन इनस्पेक्टर, दोन सबइन्स्पेटर पदांची निर्मिती करण्यात आली. वऱ्हाडचे पहिले डायरेक्टर मि. सिंकलेअर यांनी शिक्षणाला भक्कमपणे चालना देण्याचा प्रयत्न केला. या वऱ्हाडात इ. स. 1886 पर्यंत 30 प्राथमिक, 5 मिडल स्कूल कार्यरत होत्या. या शाळांमध्ये 1871 ला पुढील प्रमाणे विद्यार्थ्यांची स्थिती होती.

अ. क्र.	शाळेचा प्रकार	एकूण शाळा	विद्यार्थी संख्या
1	शासकीय हायस्कूल	02	150
2	शासकीय माध्यमिक शाळा	52	3350
3	शासकीय प्राथमिक शाळा	262	3917
4	अनुदानित माध्यमिक शाळा	01	06
5	अनुदानित प्राथमिक शाळा	02	68
6	शासकीय नॉर्मल स्कूल	01	60
7	शासकीय कन्या शाळा	27	456
	एकूण	347	8007

या नंतर शिक्षणाचा विस्तार होत गेला. सन 1879 ला वऱ्हाडात 712 शाळा कर्यरत होत्या. मात्र महाविद्यालय एकही नसल्यामुळे फक्त 11 विद्यार्थी हे महाविद्यालयीन शिक्षण घेत होते. हंटर कमिशनच्या पूर्वी अर्थात1881 ला वऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती खालीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	शाळेचा प्रकार	शाळांची संख्या	विद्यार्थी संख्या
1	शासकिय शाळा	475	26327
2	अनुदानित शाळा	134	2856
3	विनाअनुदानित शाळा	266	3038
एकूण		875	32221

सन 1882 ला हंटर कमिशनच्या अहवालानुसार शिक्षण व्यवस्थेची पुर्ण:मांडणी करण्यात आली. शिक्षणाला चालना मिळाली समाजात शिक्षण घेतलेल्या अनेक नवतरुणांनी शैक्षणिक प्रबोधन सुरू केले. त्या बरोबर ब्रिटिशांनी सुद्धा अनेक विनाअनुदानित शाळांना अनुदान दिले एवढेच नव्हे तर सन 1992 मध्ये शिक्षकांचा जो पगार 15 रु. होता तो 19 रु. करण्यात आला. 4 वर्षाचा असलेल्या वर्नाक्युलर कोर्स हा 6 ते 10 वर्षापर्यंतच्या मुलांकरिता प्रेरणादायी ठरल. परिणामी वऱ्हाडातील प्राथमिक शिक्षणाची स्थिती ही सुधारलेली दिसून येते. वऱ्हाड हा मध्यप्रांत राज्याचा भाग असल्यामुळे या वऱ्हाड व मध्यप्रांताची 1927 ला शैक्षणिक स्थिती पुढीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	शाळांचे प्रकार	शिक्षकांची संख्या 1916-17			शिक्षकांची संख्या 1926-27		
1	शासकीय	220	268	488	329	297	626
2	स्थानिक बार्ड आणि महापालिका	2670	5129	7799	4454	4553	90007
3	अनुदानित	120	591	711	199	608	807
4	विनाअनुदानित	19	389	408	51	356	407
एकूण		3029	6377	9406	5033	5814	91847

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyala

इ. स. 1923 नंतर वऱ्हाडच्या प्रत्येक जिल्ह्यात प्राथमिक शिक्षण देणाऱ्या अनेक शासकीय, अनुदानित, विनाअनुदानित व खाजगी स्तरावर कार्य करणाऱ्या प्राथमिक शाळा निर्माण झाल्यात.

दि. 24 एप्रिल 1922 ला वऱ्हाड मध्यप्रांताचा शैक्षणिक कायदा करण्यात आल्यामुळे वऱ्हाडातील माध्यमिक शिक्षणाला इ. स. 1922 ला शिक्षणाची गती वाढली परिणामी अनेक ठिकाणी माध्यमिक शाळा स्थापन झाल्यात. उदा. मेहकर जि. बुलढाणा येथे 1905 ला न्यु इंग्लिश हायस्कूलची स्थापना करण्यात आली. इ. स. 1935 ला अकोला येथे दि-बेरार-जनरल एज्यूकेशन सोसायटीची स्थापना करण्यात आली. त्यापूर्वी अमरावती येथे 1923 ला 'किंग्ज एडवर्ड' महाविद्यालयाची स्थापना करण्यात आली. हे वऱ्हाडातील पहिलेच महविद्यालय असल्यामुळे याची भव्य दिव्य इमारत उभारण्यात आली.

ब्रिटिशांनी भारतातील सर्वच घटकातील लोकांना शिक्षणाची समान संधी प्राप्त करून दिली. असली तरीही समाजावर ब्राह्मणी विचारांचा पगडा असल्यामुळे ब्राह्मण व्यतिरिक्त इतर शिक्षण घेण्यासाठी पुढे येत नसत. म्हणूनच इ. स. 1951 च्या जनगननेनुसार वऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती बघितल्यास फारसी समाधान कारक नव्हती. ही स्थिती पुढीलप्रमाणे होती.

अ. क्र.	जिल्हा	साक्षरतेचे प्रमाण
1	अमरावती	24.5
2	अकोला	23.1
3	बुलढाणा	20.8
4	यवतमाळ	14

एकंदरीत ब्रिटिशांच्या आक्रमणापूर्वी वऱ्हाडची शैक्षणिक स्थिती ही अतिशय दयनिय होती. ब्रिटिशांच्या आक्रमनानंतर मात्र या स्थितीत बदल होत गेला. इ. स. 1834 ला लॉर्ड मेकॉलेचा जाहिरनामा प्रसिद्ध झाला. येथूनच भारतात वर्ण विरहित, जातविरहित, शिक्षणपद्धतीचा प्रारंभ झाला. या काळात भारतीय समाज हा अज्ञान, अंधश्रद्धा व अंधारात खितपत पडलेल्या होता या समाजाला प्रकाशात आणण्याचे कार्य हे ब्रिटिशांच्या शिक्षणाने केले. शिक्षित तरुणांना आपल्या संस्कृती रुढी व परंपरेतील अनेक उणिवा स्पष्टपणे जाणवू लागल्यात. परिणामी शिक्षित तरुण समाजप्रबोधनाकरिता पुढे आलेत. या मधूनच समाजप्रबोधनाची चळवळ उभी झाली. या चळवळीतून महात्मा ज्योतिबा फुले यांनी शिक्षणाचा पाया रचला. पुढील काळात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी यावर कळस चढविला. त्यांनी शिक्षणाची मुलभूत अधिकारात तरतुद केली. परिणामी आज वऱ्हाडातच नव्हे तर संपूर्ण भारतात शिक्षणाची प्रगती झालेली दिसून येते. या प्रगतीचे मुळ मात्र हे ब्रिटिशांच्या सुधारणावादी भूमिकेतून उदयास आलेले दिसून येते.

संदर्भ सूची :

1. File of the Boarding House at Akola high school National Archives File No. Home Department education August 1875 No 1820
2. State Archives Mumbai File No. SSN/655-18 March 1959, Sr. No. 2647
3. Kunte, B. G. (Edi.) - Gazetter of India Maharashtra State Gazetteers Amravati District 1978.
4. गुप्त, डॉ. नत्थुलाल - प्राचिन भारतीय शिक्षा और शिक्षासंस्थाएँ, साधा प्रब्लिकेशन्स, दरियागंज नई दिल्ली. 2005
5. वझाणी, प्रा. डॉ. नि. आ. - आधुनिक विदर्भ का इतिहास, प्रकाशक श्री. गणेश प्रकाशन, नागपूर 1985
6. बनसोड, प्रा. डॉ. संतोष - यवतमाळ जिल्ह्याचा इतिहास, आधार पब्लिकेशन, अमरावती 2021
7. बनसोड, प्रा. डॉ. संतोष - यवमाळ जिल्ह्याचे आर्थिक आंदोलन, पायगुण प्रकाशान, अमरावती, 2018

S.No: 2249

IRJIF-Impact Factor-5.010 ISSN 2454-9827

Certificate of Publication

Let It Be Know By This Certificate That

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

NAKSHABANIDIA BRANCH OF SUFISM OF BALAPUR

Was Published In Volume 7 Issue 1 January 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Editor in Chief

A Peer Reviewed Refereed Journal

Date of Issue

01/01/2021

Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com , Website: www.nairjc.com

Narayanrao Rana

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue-1 January-202

Index Copernicus Value: 57.07 DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

NAKSHABANIDIA BRANCH OF SUFISM OF BALAPUR

DR. SANTOSH BANSOD

'Suman Nivas', Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606

In Islam religion Sufism is like Bhakti movement of Hinduism. Sufi means one who ***safa*** from his heart, means plain hearted person. Sufis are so humble that one who meets with them one feel like bending for ***Salam*** and he definitely answer for his ***Salam***. Sufi here are four major types of Sufism school in India. Sufis are described as community living with Hajrat Mohammad Paigambar in the cave named ***Safa***. That's why they named as Sufis.[1] The other opinion says that ***safa*** was woolen blanket and one who used that blanket named as Sufis. Purity of soul and ardent emotional attachment towards Allah is required prerequisite in Sufism.[2] It is philosophy like ***'Aham / Bramhasmi'*** means ***'Anhalak'*** in Sufism. There are four types of Sufism in India. They are Chistis, Surhavardis, Kadris and Nakshabandis. Nakshabandi branch of Sufism entered in India in later sixteenth century. It is the branch of Sufism which lastly came in India. [3]

THE PAST OF INDIAN NAKSHABANDIS – The first flow of Nakshabandis came into Deccan. They established their centre at Burhanpur the gateway of south India. The Nakshabandis branch at Burhanpur flourished in the reign of Shahajahan. The Nakshabandi branch of Burhanpur is one of the major spiritual shrine for not only deccan but also for all Indian Nakshabandis. The first Mughal emperor Babur was the follower of Khawaja Aharar and Babur himself translated the book ***Risala E Walidia*** written by Khawaja Aharar. All the next emperors keep healthy relation with this branch. The southern development of this Nakshabandi shrines also made with the help of Mughal dynasty and the foundation of this development was the Nakshabandi shrine of Burhanpur. The founder of this Nakshabandi Shrine of Burhanpur was Mohammad Kishmi who was origin of Badakshan region.[4]

PAST OF NAKSHABANDI SUFIS OF BALAPUR - Amir Sayyadshah Abdullah Husni Al Husaini migrated from Madina to Bukhara. After him his son Amir Sayyadshah Abdul Rahaman Bukhari Alias Shah Mohammad

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

Khalilullah migrated Bukhara to Khujand and he established Sufi Shrine there. Afterwards Amir Sayyadshaha Abdul Rahim alias Sayyadshah Habibullah and his son Hajrat Muflohuddin and Sayyadshaha Muslohuddin and Sayyadshaha Jahiroddin the heredity went on. After some time Sayyadshaha Jahiroddin with his two son Sayyadshaha Moosa and Shaha Toran migrated in 1445 AD to Emnabad near Lahor in Punjab region. He established Nakshabandi Sufi Shrine there. Here Sayyadshaha Moosa, Sayyadshaha Allahuddin Iladad and Sayyadshah Mohommad Nakshabandi maintained the management of Khankaha/Sufi Shrine. After some time Sayyadshaha Mohommad Nakshabandi migrated to Burhanpur with his two son Shekh ul islam Inayat ullah Nakshabandi and Imad ul Kara Hajrat Sayyadshaha Mohommad Said. Sayyadshah Mohommad Nakshabandi died at Solapur and Sayyadshah Indayat ullah Nakshbandi migrated to Balapur by the order of his spirutual master. He established Sufi Shrine/ Khankah at Balapur in 1649.[5]

SPIRITUAL SUFI SHRINE OF BALAPUR - The Nakshabandi sufi shrine of Balapur is famous spiritual shrine among follower of Nakshabandi branch of sufism. This sufi shrine of Nakshabandi was famous from its establishment. The Nizam of Haidrabad, The Nawab of Elichpur, mughal subhedars and all the officers of that time were follower of Inayat Ullah Nakshabandi. Dr Shyam Deokar written in his thesis about the meeting of Chatrapati Shivaji Maharaj and Inayatullah Nakshabandi. he also coucluded that the opinion of Nile Green about Chatrapati Shivaji Maharaj that 'Chatrapati Shivaji Maharaj was the follower of Inayatullah Nakshabandi' is not seems true. But Chatrapati Shivaji Maharaj visited the khankaha and granted one rupee per day incomed inam land to Khankah. Mugal emperor Aurangzeb also granted inam land to Khankah. Nizam of haidrabad aproved income of Begam Bazar of Haidrabad to this sufi shrine. This sufi shrine was the utmost important political centre of deccan. The shrine was known with all the political incidents of that time becaust all the political officers of that time were the follower of the shrine. The devotee of the shrine was not only muslims but they were from various sects, religions and dynestes.[6]

QUTUBKHANA OF THE SHRINE – The term Qutubkhana means library. The qutubkhana of this shrine was established with the khankaha in 1649 AD. This qutubkhana must be oldest one in the nation. This Qutubkhana is most important Qutubkhana in India and worldwide also. Because one who want to study of Indian Sufism; without taking references of this Qutubkhana is in vain. This is the Qutubkhana which was established with among the first Nakshabandi Sufi Branches which came in India. To study the migration and diaspora of Sufis, their literature, their travel rout and the philosophy of Sufis one should have to take references of this Qutubkhana. The researcher from worldwide have visited to this Qutubkhana to study the Sufi literature and history. The khankah with this Qutubkhana was the political and spiritual center at that time so the literature which was written in that period is the faithful document of that time. One who want to study the medieval period

Berar he must have to refer the documents of this Qutubkhana. One who have to study the social, political, economical, philosophical and Sufi literature of medieval period of Berar ; have to refer the rich primary sources of this Qutubkhana. To study the history of Berar and also of south India one should have to refer the documents from this Qutubkhana. The Khankah got ten Nakshabandi Sufi religious leaders from the family of Hajrat Saiyyadshah Inayatullah Nakshabandi. All those Sufi religious leaders of Khankah wrote many literature of Sufi philosophy and other also. This literature is witness of that period. So this literature is most important for the study of that time. Moreover this literature is in the form of manuscript and till unpublished. There are precious manuscripts available in this Qutubkhana and all of it are unpublished. There are many portrait of the Nawab's, Chavaliers, political and religious leaders. There are many ***Farmans*** of that time available in this Qutubkhana. For the Eastern Muslim Studies the researcher from world wide have visited to this Qutubkhana. The researcher from Bangladesh, Japan, Britain, Austrelia and from other countries have visited to this Qutubkhana. There is registration of those all visitors from India and abroad in the visitors book of this library. The importance of this Qutubkhana has been described in the book 'Modern Asian Studies' written by Nile Green. There are many rare books available in this library. Mr Y. K. Deshpande also write a research paper on this Qutubkhana which was published in Indian Historical Record Commission Proceedings of Meeting, 1941, Barora, XVII. In that paper Y. K. Deshpande says that there are 1000 to 1200 manuscripts are available in this Qutubkhana.[7]

This shrine and Qutubkhana is famous among researchers from all over the world. Researchers from Dhaka, Melbarn, Quoto (Japan), London, America visited the shrine and Qutubkhana for research study.

CONCLUSION

This sufi shrine is not only famous for the spiritual ideology but it is famous for the historical documents, and for Kutubkhana. It is lighthouse for the history student and researchers. Researchers from all over the world visited the Shrine for Eastern Muslim studie.

REFRENCES

1. Wakil Alim, ***'Ekach Pathavaril Don Panth Bhakti ani Sufi'(Marathi)***, First Edition, Nashik, Page no 13.

2. Arberry John, ***'The Doctrine of Sufis'*** , The university Pres Cambridege, 1935, Page no 5.

3. Deokar Shyam, ***'Balapur Shaharatil Eitihasik Vastuncha Abhyas' (Marathi)***, Mother India Publication, 2020, Page no 74.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Nile Green, ***'Indian Sufism Since The Seventeenth Century'***, Routledge Tyylor and Francis Group, Londo and New York, First Edition 2006, Page no.11 & 12.

5. Deokar Shyam, ***'Balapur Shaharatil Eitihasik Vastuncha Abhyas' (Marathi)***, Mother India Publication 2020, Page no 125

6. Deokar Shyam, ***'Qutubkhana Khankah E Nakshabandi of Balapur'***, International Journal of Management and Social Science, Volume 7, Issue 1,January 2019, Page no. 244..

7, ***Ibid,*** Page no 245.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

S.No: 2250

IRJIF-Impact Factor-5.010 ISSN 2454-9827

Certificate of Publication

Let It Be Know By This Certificate That

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

Was Published In Volume 7 Issue 2 February 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Editor in Chief

A Peer Reviewed Refereed Journal

Date of Issue

01/02/2021

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com , Website: www.nairjc.com

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

IRJIF I.F. : 5.010
Index Copernicus Value: 57.07

ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue-2 February-202

DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

DR. SANTOSH BANSOD

'Suman Nivas' , Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606

INTRODUCTION – Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of common people of Berar. He was the aggressive social activist of that time. He stired up the social, religious, political and cultural environment of the Berar. He was the first social reformer and the first voice of the social reconstruction of the Berar. Buldana district was actively involved in any stage and time of social reform of the society. Whenever there was need of whistle blower of the movement of justice the soil of Berar fulfilled the demand. This holy soil of Berar was and is always with the movement of justice. This soil always has the glorious past of standing with the justice. When Mahatma Jotirao Phule waged war against the injustice, inequality, exploitation in religious sector, racial hierarchy, apartheid, untouchability and injustice with women that was the real rise of reason of India. Berar also was with him in his movement of justice. Bapuji Shinde was present at the first meeting of the Satyashodhak Samaj held at Poona. Phuleism was the first ideology which challenged the ascedency of Bramhanism in all sectors. Phuleism not only denied the ideology of Bramhanism, but it established the structural framework to fight against the evils. Phuleism demolished the structure of Bramhanism which set up on the base of injustice. Buldana district was actively involved in the ***'Satyashodhak Movement'***. [1]

TERM OF BERAR – Today's Berar is consist of the five districts of Amravati division. But old Berar was not so little. The old Berar was between Kherla Dist Betul M.P. to Pathri Dist. Parbhani from the north to south. And from West it was from Malkapur to Wardha river to the East. The term Berar comes from the name ***'Varhad'***. And the word ***'Varhad'*** developed from the river Wardha.[2] ***'Vardhatat'*** to ***'Varhad'*** and then in Muslim period it

Principal
Narayanrao Ram Mahavidyalaya
Ellichpur

ecame the ***'Barar'*** afterwards the term 'Berar' emerged from the old name of the region ***'Barar'***. Todays Berar is consist of five district of Amravati division.

EARLY LIFE OF PANDHARINATH PATIL – Pandharinath Patil was born on 20th September 1903 at Amboda tq Nandura Dist Buldana. Afterwards his family moved to Pimpri Adhao tq Malkapur Dist Buldana. His family background was of Warkari sect, so little Pandhari also used to actively involved in Kirtan and Bhajan programmes. The economical condition of his family was not so good, so his primary and highschool education was on the basic of earn and learn. As critical minded he argued with many times with preacher who always visit his village. He with his father was present at the All India Maratha Education Conference held at Khamgaon in 1917.[3] Chatrapati Shahuji Maharaj was the Main speaker of the conferemce. Shahuji Maharaj stimulated the movements of justice of the Berar from this conference. Pandharinath Patil also got inspiration from the conference. His ideological structure was built up by the conference.

SATYASHODHAK MOVEMENT AND PANDHARINATH PATIL – The Satyashodhaki Mahaghat Shastri prepared and cultivated the minds of common Berari people of this region. Pandharinath Patil also got inspiration from Mahaghatshastri and his work in Berar. He listerned stories how Mahaghatshastri defeated Bramhins in Shastrartha from his grandfather. His first speech was arranged at Warkhaed Tq Malkapur to talk about the Satyashodhak Movement. The day was 14th of January 1921, But Sanatanis stopped his speech and disturbed the programme. At 19 November 1921 he was presented at Poona for the programme of opening of statue of Shivaji Maharaj by Prince of Walse. He came in contact of Kesharao Jedhe and other Satyashodhak workers of Maharashtra. He visited and live at Jedhe Mansion the center of Satyashodhak Movement of that time. He arrange the first Satyashodhak Conference of Vidarbha at Warkhed Tq Malkapur where his first speech cum meeting was disturbed by Sanatanis. Afterwards he arranged many Satyashodhak conferences in Berar eg- Savatra Tq Mehakar, Savala Tq. Jalgaon Jamod, Hingane Karegaon Tq Khamgaon, Kinhi Mahdeo Tq Khamgaon, Amraoti, Akot etc. All India Satyashodhak conference was arranged at Amraoti in 1925. He argued with the Shankarachary who invited by the Sanatanis for counter attack on the Satyashodhak movement. The programme was arranged at Deulgaon Raja. He and Anandswami argued with Dr Lingesh Mahabhargav Kurtkoti on the issue of Religious, spiritual, social points. This Dharmparishad was thwarted by Pandharinath Patil and Anandswami. The Shankarachary was dismissed by Chatrapati Shahuji Maharaj for the misbehave. That's why Sanatani arranged his programme to counter the movement. Kurtakoti misbehave in the Dharmaparishad so Satyashodhak conferences held at Dodhra, Mandapgaon, Isrul, Hingne karegaon, Savatra, Kinhi Mahadeo, Shendurjan, MolaMoli, Andhera criticized him for his misbehave and passes the resolutions against his misbehave.[4]

Principal
Narayanrao Patil Vidyalaya
Ekurka

Pandharinath Patil and Anandswamiji was actively involved in the programmes of Jalsas. There are many famous Jalsas of Berar which performing for the Satyashodhak movement. Rajanda Dist Akola, Wadegaon Dist Akola, Birsingpur Dist Buldana, Naygaon Dist Amraoti, Belura Dist Amraoti, Kelwad Dist Buldana, Sawargaon Dist Buldana are some famous Jalsas of Berar.[5] Anandswamiji and Pandharinath Patil guieded the programmes of Jalsas of Berar and Maharashtra. Anandswami gave security to the programmes of Jalsas in Berar. CP & Berar Third Satyashodhak Conference was held at Karodi in 8th of April 1928. Pandharinath Patil was the first writer who wrote the biography of Mahatma Phule. He worked hard for that, he collected documents and references for the biography. That's why he was invited from all over Maharashtra and out of states to talk about Phuleism and Satyashodhak Movement. He was invited at Satara for the birth anniversary of Mahatma Phule in 1947 the date was 17th November. He was processioned with 21 bullock carts in that programme. The procession was leading by the elephant having the Photoframe of mahatma Phule.[6]

POLITICAL LIFE – He faught district council elections in 1923 but he defeated by opponent. But he and his Non Bramhanist Party won the distrist council elections all over the Berar in 1924. The real hero of this victory of Non Bramhanist Party was Pandaharinath Patil and Anandswamiji. He also active in Local Board elections. In the local board election held at 23rd June 1934 he and his Non Bramhinast Pary won 16 seats out of 25. He also faught the legislative assembly election in 1936 and won it. He became MLA from Chikhali-Mehakar constituency. After the Non Bramhanist party's immersion in Congress he became the leader of Congress Party.[7] Afterwards he became MLA and MP from the Congress party. He always faught for the common people eg.- Farmers, workers, deprived casts, social conflict etc.

EDUCATIONAL WORK – He established the primary school and Adult education school at Jambuldhaba in 1921. He also established public library at Pimpalgaon and Buldana. He also helped the Chokhamela Boarding of Chikhli run by Laxmanrao Bhatkar. He established the series of school named Shivaji Highschool which merged afterwards into Shivaji Education society. Buldana, Chikhali, Nandura are the some major institutions among them. He also collected economical help for the Shivaji Education Society established by Panjabrao Deshmukh by arranging the programmes at various places in all over the Berar. Panjabrao Deshmukh with Pandharinath Patil visited to Nizam at Haidrabad for economical help for the Shivaji Education Society. Nizam granted twenty thousand rupees as first instalment for the society. As a council member he established government primary school in every village having 500+ population .[8]

NON BRAMHIN MOVEMENT- He arrange the first CP & Berar Non Bramhin Conference at Morshi in 1923. The President of the conference was Bhaskarrao Jadhao Education Minister of Mumbai Region. Nanasaheb Amrutkar and Bhausaheb Gund was the major host of the conference. One other Non Bramhin Conference was

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

arranged at Buldana in same year. The president was Sitaram Nana Choudhari. At 17th August 1924 the meeting of Bramhanetar Sangh held at Jambhuldhaba dist Buldana. The president of the meeting was Sakharam Patil. The second Majlis of All India Non Bramhin Congress held at Amraoti in 1925. The conference was of three days, 25 to 27 December of 1925. The first conference was held at Belgaon Karnataka. He was the editor of the 'Atmodhar' newspaper of Malkapur edition. This newspaper had been publishing from Jalgaon Khandesh. Pandharinath Patil arranged the Khamgaon Taluka Non Bramhin Conference in Kinhi Mahadeo at 14th January 1928. The President of the conference was Annasaheb Kayande. Near about five thousand people were present for the conference. Pandharinath hosted the conference. Bombay region third Non Bramhin Conference was held in Kalyan at 15th July 1928. Pandharinath Patil was present at that conference.Afterwards many conferences was arranged in Berar by him and other members of Non Bramhin movement of Berar eg- Bhatori Dist Akola, Jastagaon Dist Buldana, Wardha, Elichpur, Amraoti etc.[9]

CONCLUSION - Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of Berar. He was active member of Satyashodhak and Non Bramhin movement of Berar. He also social activist and social cum religious reformer of Berar. He tried to demolished the bad traditions flowed with time in society.

KEYWORDS:-

Bramhanetar Movement *– The movement of demanding justice by the rest of Bramhin communities in 19th century Maharashtra. They oppose the system of* ***'Chaturvarna'*** *of Hinduism and ascedency of Bramhins in all sectors.*

Satyashodhak Movement *– (Truth Seekers' Society) This social reform society was founded by Mahatma Jotirao at Phule on 24th September 1873. This movement ran the movement of social justice which generally known as Satyashodhak Movement.*

REFERENCES

1. Deokar S.P., ***'Analysis Of Dr Ambedkar's View About Jalgaon Jamod Issue'***, Ambedkar History Congress, Mumbai. 2020.
2. Jarrett H.S. (Translator), ***'Ain – E- Akbari of Abul Fazl- I – Allami' Vol II***, Second Edition,Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta,1949, Page no 237
3. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 14 – 24

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Ba...ra

4. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 23 – 50
5. Kharat Sambhaji, ***'Satyashodhak Jalse (Marathi)'***, Loksahitya Publication Aurangabad, First Edition 2015, Page no 111 & 142
6. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 43
7. Ibid Page no 51 – 61
8. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 81-125
9. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 162- 180

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

S.No: 2250

IRJIF-Impact Factor-5.010

ISSN 2454-9827

Certificate of Publication

Let It Be Know By This Certificate That

DR. SANTOSH BANSOD

Manuscript Title

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

Was Published In Volume 7 Issue 2 February 2021 Of

NORTH ASIAN INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Editor in Chief

A Peer Reviewed Refereed Journal

Date of Issue

01/02/2021

Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com , Website: www.nairjc.com

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue-2 February-2021

UIF I.F. : 5.010

Index Copernicus Value: 57.07 DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

PANDHARINATH SITARAM PATIL: LIFE AND WORK

DR. SANTOSH BANSOD

'Suman Nivas' , Near LIC Colony, Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606

INTRODUCTION – Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of common people of Berar. He was the aggressive social activist of that time. He stired up the social, religious, political and cultural environment of the Berar. He was the first social reformer and the first voice of the social reconstruction of the Berar. Buldana district was actively involved in any stage and time of social reform of the society. Whenever there was need of whistle blower of the movement of justice the soil of Berar fulfilled the demand. This holy soil of Berar was and is always with the movement of justice. This soil always has the glorious past of standing with the justice. When Mahatma Jotirao Phule waged war against the injustice, inequality, exploitation in religious sector, racial hierarchy, apartheid, untouchability and injustice with women that was the real rise of reason of India. Berar also was with him in his movement of justice. Bapuji Shinde was present at the first meeting of the Satyashodhak Samaj held at Poona. Phuleism was the first ideology which challenged the ascedency of Bramhanism in all sectors. Phuleism not only denied the ideology of Bramhanism, but it established the structural framework to fight against the evils. Phuleism demolished the structure of Bramhanism which set up on the base of injustice. Buldana district was actively involved in the ***'Satyashodhak Movement'***.[1]

TERM OF BERAR – Today's Berar is consist of the five districts of Amravati division. But old Berar was not so little. The old Berar was between Kherla Dist Betul M.P. to Pathri Dist. Parbhani from the north to south. And from West it was from Malkapur to Wardha river to the East. The term Berar comes from the name ***'Varhad'***. And the word ***'Varhad'*** developed from the river Wardha.[2] ***'Vardhatat'*** to ***'Varhad'*** and then in Muslim period it

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

became the ***'Barar'*** afterwards the term 'Berar' emerged from the old name of the region ***'Barar'***. Todays Berar is consist of five district of Amravati division.

EARLY LIFE OF PANDHARINATH PATIL – Pandharinath Patil was born on 20th September 1903 at Amboda tq Nandura Dist Buldana. Afterwards his family moved to Pimpri Adhao tq Malkapur Dist Buldana. His family background was of Warkari sect, so little Pandhari also used to actively involved in Kirtan and Bhajan programmes. The economical condition of his family was not so good, so his primary and highschool education was on the basic of earn and learn. As critical minded he argued with many times with preacher who always visit his village. He with his father was present at the All India Maratha Education Conference held at Khamgaon in 1917.[3] Chatrapati Shahuji Maharaj was the Main speaker of the conferemce. Shahuji Maharaj stimulated the movements of justice of the Berar from this conference. Pandharinath Patil also got inspiration from the conference. His ideological structure was built up by the conference.

SATYASHODHAK MOVEMENT AND PANDHARINATH PATIL – The Satyashodhaki Mahaghat Shastri prepared and cultivated the minds of common Berari people of this region. Pandharinath Patil also got inspiration from Mahaghatshastri and his work in Berar. He listerned stories how Mahaghatshastri defeated Bramhins in Shastrartha from his grandfather. His first speech was arranged at Warkhaed Tq Malkapur to talk about the Satyashodhak Movement. The day was 14th of January 1921, But Sanatanis stopped his speech and disturbed the programme. At 19 November 1921 he was presented at Poona for the programme of opening of statue of Shivaji Maharaj by Prince of Walse. He came in contact of Kesharao Jedhe and other Satyashodhak workers of Maharashtra. He visited and live at Jedhe Mansion the center of Satyashodhak Movement of that time. He arrange the first Satyashodhak Conference of Vidarbha at Warkhed Tq Malkapur where his first speech cum meeting was disturbed by Sanatanis. Afterwards he arranged many Satyashodhak conferences in Berar eg- Savatra Tq Mehakar, Savala Tq. Jalgaon Jamod, Hingane Karegaon Tq Khamgaon, Kinhi Mahdeo Tq Khamgaon, Amraoti, Akot etc. All India Satyashodhak conference was arranged at Amraoti in 1925. He argued with the Shankarachary who invited by the Sanatanis for counter attack on the Satyashodhak movement. The programme was arranged at Deulgaon Raja. He and Anandswami argued with Dr Lingesh Mahabhargav Kurtkoti on the issue of Religious, spiritual, social points. This Dharmparishad was thwarted by Pandharinath Patil and Anandswami. The Shankarachary was dismissed by Chatrapati Shahuji Maharaj for the misbehave. That's why Sanatani arranged his programme to counter the movement. Kurtakoti misbehave in the Dharmaparishad so Satyashodhak conferences held at Dodhra, Mandapgaon, Isrul, Hingne karegaon, Savatra, Kinhi Mahadeo, Shendurjan, MolaMoli, Andhera criticized him for his misbehave and passes the resolutions against his misbehave.[4]

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Pandharinath Patil and Anandswamiji was actively involved in the programmes of Jalsas. There are many famous Jalsas of Berar which performing for the Satyashodhak movement. Rajanda Dist Akola, Wadegaon Dist Akola, Birsingpur Dist Buldana, Naygaon Dist Amraoti, Belura Dist Amraoti, Kelwad Dist Buldana, Sawargaon Dist Buldana are some famous Jalsas of Berar.[5] Anandswamiji and Pandharinath Patil guieded the programmes of Jalsas of Berar and Maharashtra. Anandswami gave security to the programmes of Jalsas in Berar. CP & Berar Third Satyashodhak Conference was held at Karodi in 8th of April 1928. Pandharinath Patil was the first writer who wrote the biography of Mahatma Phule. He worked hard for that, he collected documents and references for the biography. That's why he was invited from all over Maharashtra and out of states to talk about Phuleism and Satyashodhak Movement. He was invited at Satara for the birth anniversary of Mahatma Phule in 1947 the date was 17th November. He was processioned with 21 bullock carts in that programme. The procession was leading by the elephant having the Photoframe of mahatma Phule.[6]

POLITICAL LIFE – He faught district council elections in 1923 but he defeated by opponent. But he and his Non Bramhanist Party won the distrist council elections all over the Berar in 1924. The real hero of this victory of Non Bramhanist Party was Pandaharinath Patil and Anandswamiji. He also active in Local Board elections. In the local board election held at 23rd June 1934 he and his Non Bramhinast Pary won 16 seats out of 25. He also faught the legislative assembly election in 1936 and won it. He became MLA from Chikhali-Mehakar constituency. After the Non Bramhanist party's immersion in Congress he became the leader of Congress Party.[7] Afterwards he became MLA and MP from the Congress party. He always faught for the common people eg.- Farmers, workers, deprived casts, social conflict etc.

EDUCATIONAL WORK – He established the primary school and Adult education school at Jambuldhaba in 1921. He also established public library at Pimpalgaon and Buldana. He also helped the Chokhamela Boarding of Chikhli run by Laxmanrao Bhatkar. He established the series of school named Shivaji Highschool which merged afterwards into Shivaji Education society. Buldana, Chikhali, Nandura are the some major institutions among them. He also collected economical help for the Shivaji Education Society established by Panjabrao Deshmukh by arranging the programmes at various places in all over the Berar. Panjabrao Deshmukh with Pandharinath Patil visited to Nizam at Haidrabad for economical help for the Shivaji Education Society. Nizam granted twenty thousand rupees as first instalment for the society. As a council member he established government primary school in every village having 500+ population .[8]

NON BRAMHIN MOVEMENT- He arrange the first CP & Berar Non Bramhin Conference at Morshi in 1923. The President of the conference was Bhaskarrao Jadhao Education Minister of Mumbai Region. Nanasaheb Amrutkar and Bhausaheb Gund was the major host of the conference. One other Non Bramhin Conference was

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

arranged at Buldana in same year. The president was Sitaram Nana Choudhari. At 17th August 1924 the meeting of Bramhanetar Sangh held at Jambhuldhaba dist Buldana. The president of the meeting was Sakharam Patil. The second Majlis of All India Non Bramhin Congress held at Amraoti in 1925. The conference was of three days, 25 to 27 December of 1925. The first conference was held at Belgaon Karnataka. He was the editor of the 'Atmodhar' newspaper of Malkapur edition. This newspaper had been publishing from Jalgaon Khandesh. Pandharinath Patil arranged the Khamgaon Taluka Non Bramhin Conference in Kinhi Mahadeo at 14th January 1928. The President of the conference was Annasaheb Kayande. Near about five thousand people were present for the conference. Pandharinath hosted the conference. Bombay region third Non Bramhin Conference was held in Kalyan at 15th July 1928. Pandharinath Patil was present at that conference.Afterwards many conferences was arranged in Berar by him and other members of Non Bramhin movement of Berar eg- Bhatori Dist Akola, Jastagaon Dist Buldana, Wardha, Elichpur, Amraoti etc.[9]

CONCLUSION - Pandharinath Sitaram Patil was the mass leader of Berar. He was active member of Satyashodhak and Non Bramhin movement of Berar. He also social activist and social cum religious reformer of Berar. He tried to demolished the bad traditions flowed with time in society.

KEYWORDS:-

Bramhanetar Movement *– The movement of demanding justice by the rest of Bramhin communities in 19th century Maharashtra. They oppose the system of* ***'Chaturvarna'*** *of Hinduism and ascedency of Bramhins in all sectors.*

Satyashodhak Movement *– (Truth Seekers' Society) This social reform society was founded by Mahatma Jotirao at Phule on 24th September 1873. This movement ran the movement of social justice which generally known as Satyashodhak Movement.*

REFERENCES

1. Deokar S.P., ***'Analysis Of Dr Ambedkar's View About Jalgaon Jamod Issue'***, Ambedkar History Congress, Mumbai. 2020.
2. Jarrett H.S. (Translator), ***'Ain – E- Akbari of Abul Fazl- I – Allami' Vol II***, Second Edition,Royal Asiatic Society of Bengal; 1 Park Street, Calcutta,1949, Page no 237
3. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 14 – 24

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue 2, Feb. 2021

Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 23 – 50

5. Kharat Sambhaji, ***'Satyashodhak Jalse (Marathi)'***, Loksahitya Publication Aurangabad, First Edition 2015, Page no 111 & 142
6. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 43
7. Ibid Page no 51 – 61
8. Dhale Namdeo and Dange Manoj, ***'Pandharinath Patil Rajkiy v Samajik Kary (Marathi)'***, Prashant Publication, Jalgaon, First Edition 2017, Page no 81-125
9. Dandage N. J., ***'Mahatma Phule yanche Adya charitrakar Samajbhushan Pandharinath s. Patil Yanche Charitra (Marathi)'***, Painganga Publication Buldana, First Edition 2005, Page no 162- 180

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya
Buldana

ISSN NO : 2231-4059

विदर्भातील कामगार चळवळीचे ऐतिहासिक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष पी. बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख, नारायणराव कला महाविद्यालय, बडनेरा, जि. अमरावती

प्रस्तावना :

सत्यशोधक चळवळीचे कार्यकर्ते नारायण मेघाजी लोखंडे यांनी महात्मा फुलेंच्या नेतृत्वाखाली गिरणी कामगारांच्या अन्यायाविरोधात आवाज उठवित बॉम्बे मिल हँडस असोशिएशन ही देशातील पहिली कामगार संघटना स्थापना केली. याच संघटनेच्या माध्यमातून आणि 'दिनबंधू' या पत्राच्या माध्यमातून त्यांनी आवाज उठवून कामगारांना साप्ताहिक सुट्टी, दुपारच्या जेवनाची सुट्टी, कामांच्या निश्चित वेळा, सर्वत्र सारखा पगार अश्या विविध मागण्या मान्य करून घेतल्या व कामगारांना त्यांचे अधिकार मिळवुन दिले. जगातल्या युरोपियन देशांच्या तुलनेत भारतातील कामगार चळवळ उशिराच सुरू झाली. भारतात जसाजसा उद्योगधंद्याचा विकास झाला तसतसी कामगारांच्या संख्येतही वाढ झाली. त्यांच्या समस्या सुध्दा वाढत गेल्या आणि त्यातून कामगार चळवळी व संघटन होऊन विविध संघटना निर्माण झाल्या.

कामगार चळवळ ही निषेध चळवळ आहे. भारतातील कामगार चळवळीचा इतिहास हा खऱ्या अर्थाने सुवर्ण अक्षरात लिहीण्यासारखा आहे. प्रथम महायुध्दानंतर जागतिक आर्थिक मंदी आली. त्यावेळी वेतनवाढीसाठी कामगारांमध्ये असंतोष वाढु लागला. याच काळात कामगार वर्ग देशात सुरू असलेल्या स्वातंत्र्य चळवळीशी जोडल्या गेला. पहिल्या महायुध्दानंतर खाणउद्योग, प्लॉटेशन, ज्युट, वस्त्रउद्योग, पोस्टल, संरक्षण या सर्वच क्षेत्रात कामगारांनी बंड केले होते. कामगारांच्या या संघटनांनी भारताच्या स्वातंत्र्य चळवळीलाही मोठी ताकद दिली.

विदर्भ हा कृषीप्रधान प्रदेश आहे. कारण येथील 72 टक्के लोकसंख्या शेतीवर अवलंबून आहे. विदर्भात कापुस जास्त पिकल्यामुळे जिनिंग, प्रेस कापड गिरण्या, विणकर हातमाग उद्योग अस्तित्वात आले. विदर्भात मोठया प्रमाणात असणारी खनिज संपत्ती आणि कापसाचे उत्पादन यामुळे कामगार चळवळीला प्राधान्य मिळाले. विदर्भातील अनेक कामगार नेत्यांनी मजुर आंदोलनाच्या प्रवाहाला राष्ट्रीय आंदोलनाच्या प्रमुख प्रवाहास जोडून राष्ट्रभक्तीच्या भावनेचा परिचय दिला.

शब्दकोश : सत्यशोधक चळवळ, दिनबंधू, विदर्भ, कापूस, खनिज

संशोधनाची उद्दिष्टये :

प्रस्तुत विषयाचा अभ्यास करण्यासाठी संशोधकाने काही उद्दिष्टये निश्चित केली आहेत. त्या उद्दिष्टानुसार प्रस्तुत संशोधन कार्य करण्यात आले असुन ती उद्दिष्टये खालीलप्रमाणे आहेत.

1) स्वातंत्र्यपूर्व काळात विदर्भात उदयास आलेल्या कामगार चळवळीवर क्षेत्रावर प्रकाश टाकणे.
2) विदर्भातील कामगार चळवळीचा उदय, स्थापना व नेतृत्वांच्या कार्याचे विश्लेषण करणे.
3) विदर्भातील महिला कामगारांच्या सहभागाचा व नेतृत्वाचा अभ्यास करणे.
4) विदर्भातील कामगार चळवळीवर झालेल्या परिणामांचा अभ्यास करणे.

संशोधनाची गृहितके :

स्वातंत्र्यपूर्व आणि स्वातंत्र्यानंतर विदर्भातील कामगार चळवळीचा अभ्यास करण्यासाठी जास्तीत जास्त प्राथमिक व दुय्यम साधनांचा वापर करून संशोधनकार्य पूर्ण करण्याचा प्रयत्न केल्यामुळे संशोधनासाठी निश्चित केलेली गृहितके पूर्ण सिध्द झाली असून ही गृहीतके खालीलप्रमाणे आहेत.

1) स्वातंत्र्यूर्व काळात विदर्भात कापूस आणि खनिज संपत्तीचा समृध्द वारसा असल्यामुळे औद्योगिक विकासामुळे कारखानदारीच्या विकासाला गती मिळाली.
2) विदर्भातील अनेक कारखान्याच्या उदयामुळे अनेक शहरांचा विकास होऊन नागरीकरणाला चालना मिळाली व ग्रामीण भागातील असंख्य नागरिक कामगार बनले.
3) विदर्भात कारखानदारीच्या विरोधात अनेक कामगारांची आंदोलने झाली.
4) विदर्भातील कामगार चळवळीत महिलांचा सहभाग होता.
5) विदर्भातील कामगार चळवळीमुळे कामगारांचे हक्क आणि मागण्या बऱ्याच प्रमाणात मान्य झाल्या.

विषयाची व्याप्ती :

विदर्भाला फार मोठा ऐतिहासिक वारसा लाभलेला आहे. प्राचीन, मध्ययुगीन काळात या भागाचा विकास होत गेला. कोळसा, कापड जिनिंग, बिडी कामगार यामध्ये मजुर काम करताना त्यांच्या काही समस्या असतात, त्या सोडविण्यासाठी मालक व मजुर यांच्यात संघर्ष होते. त्यातुन कामगार चळवळीचा उदय झाला. नागपूर, वर्धा, भंडारा, चंद्रपूर, अमरावती, यवतमाळ, अकोला, बुलढाणा या जिल्हयांशी कामगार चळवळी निगडीत आहेत. ही संशोधनाची भौगोलिक व्याप्ती आहे. प्रस्तुत संशोधनात स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्यनंतरची कामगार चळवळ ही कालक्रमाची व्याप्ती ठेवलेली आहे.

संशोधनाच्या पध्दती :

इतिहास हे एक सामाजिक शास्त्र असल्यामुळे सामाजिक शास्त्रातील प्रचलित असलेल्या सर्वच संशोधन पध्दती इतिहास संशोधनासाठी उपयुक्त ठरतात. संबंधीत संशोधनासाठी संदर्भ पध्दत, ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक व सर्वेक्षण पध्दतीचा उपयोग करण्यात आला आहे.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

ISSN NO : 2231-4059

तथ्य संकलन :

तथ्य संकलन ही वैज्ञानिक पध्दतीची पहिली महत्वाची पायरी आहे. प्रस्तुत संशोधनासाठी माहिती संकलनाकरिता प्राथमिक आणि दुय्यम साधनांचा उपयोग करण्यात आला आहे. तसेच सर्व माहिती स्त्रोतांचे अवलोकन करून त्याची पुनःविश्लेषणात्मक चिकित्सा करण्यात आली आहे व प्रस्तुत संशोधन पूर्ण करण्यात आले आहे.

विदर्भातील कामगार चळवळीची वाटचाल :

विदर्भात कापसाच्या उत्पादनाने कायापालट केला आहे. कापूस उत्पादन विदर्भाकरिता वरदान आहे. कापसाच्या पाठोपाठ हळूहळू रूई अलग करण्याचे व्यवसाय तयार झाले. बुलढाणा जिल्हयात 44 जिनिंग फॅक्टरी होत्या. जिनिंग प्रेस बरोबर विदर्भातील नागपूरमध्ये कापड तयार करण्याच्या गिरण्या तयार झाल्या.

नागपूरमध्ये 1877 मध्ये एम्प्रेस मिलची स्थापना, 1870 मध्ये मॉडेल मिल्सची स्थापना, 1885 मध्ये बडनेरा मिल्सची स्थापना, बडनेरा मिल्स स्वातंत्र्यपूर्व काळात 1100 लोकांना रोजगार पुरवित होती. वर्धा जिल्हयात हिंगणघाट व पुलगाव जिल्हयात, अकोला येथे मिल्स स्थापन झाल्या. अशारितीने शेतीप्रधान विदर्भामध्ये औद्योगिकीकरणाला प्रारंभ झाला. औद्योगिक विकास दुसऱ्या महायुध्दांच्या उद्‌भवापर्यंत अतिशय वेगाने घडत होता. नागपूर येथील उमरेड, अचलपूर, अंजनगाव सुर्जी, दर्यापूर, खोलापूर ही गावे विणकरांनी विणलेल्या साडीसाठी प्रसिध्द होती. भंडारा जिल्हयात पवनी येथे हातमागाचे चांगले केंद्र होते. चंद्रपूर व भंडारा जिल्हयात पवनी येथे हातमागाचे चांगले केंद्र होते. चंद्रपूर व भंडारा जिल्हयात सावली व एकोडी या गावात कोसा कापड बनविले जात होते. विदर्भात ठिकठिकाणी खनिज संपत्ती भरपूर प्रमाणात सापडतो. यवतमाळ जिल्हयात वणी तालुक्यात कोळसा सापडतो. त्यावेळी 2100 दश टन कोळसा उपलब्ध असावा असा अंदाज आहे. चंद्रपूर जिल्हयात 1600 चौरस मैलात कोळसा सापडतो. या कोळश्याबरोबर लोखंड सापडते. दररोज 80 टन लोखंड सापडल्याचे उल्लेख सापडतात. विदर्भातील औद्योगिक विकासाला विदर्भातील खनिज संपत्तीने मदत केली आहे. भंडारा जिल्हयात मॅगनिज व लोखंडाचे साठे विपुल प्रमाणात आढळते. काही प्रमाणात नागपूर जिल्हा कोळश्याच्या खाणीसाठी प्रसिध्द आहे.

भारताच्या स्वातंत्र्य चळवळीतून कामगार चळवळ आकारास आलेली दिसते. महाराष्ट्रातील सांस्कृतिक, राजकीय, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रातील बदलाना काही प्रमाणात चालना देण्याचे काम कामगार चळवळीने केले आहे. विदर्भातील गिरणी कामगार स्वातंत्र्य चळवळीत नेहमीच आघाडीवर होते. ज्या ज्या वेळी स्वातंत्र्यलढयात गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, रूईकर जनरल आयारी यांना ब्रिटीशानी तुरूंगात टाकले. त्या त्या वेळी कामगारांनी उत्स्फुर्तपणे संप पुकारला होता. कामगारांना स्वातंत्र्य चळवळीकडे ओढण्याचे काम रूईकरांना जाते. 26 एप्रील 1908 रोजी नागपूरात मिल मजुराची एक सभा भरली. त्यात डॉ. मूंजे, स्वामी शंकरानंद, दत्तोपंत ठेगंडी इत्यादींनी "दारू सोडा व पैसा फंडात पैसा भरा" इत्यादी उपदेशात्मक भाषणे झाली. दत्तोपंत ठेगंडी हे मजुराचे प्रथम पुढारी होते. त्यांनी मजुरांच्या समस्या सोडविण्याचा प्रयत्न केला. त्यानंतर त्यांनी मजुर आंदोलनाचे नेतृत्व रामभाऊ रूईकर यांच्याकडे दिले. रूईकरांचे कार्य इ. स. 1920 पासून सुरू होते. त्यांनी मजुर आंदोलनास मुख्य राष्ट्रीय प्रवाहास जोडले म्हणून त्यांचे नाव विदर्भाच्या मजूर नेत्यांमध्ये प्रसिध्द आहे.

1918 पूर्वी विदर्भात काही कामगार संघटना अस्तित्वात होत्या. परंतू पहिल्या महायुध्दानंतर कामगार चळवळींना खरे उत्तेजन मिळाले. प्रथम महायुध्द काळात कामगारांनी खूप काम केले. त्यामुळे भांडवलदाराच्या पदरात 100 टक्के नफा पडला होता. त्यामुळे कामगारांना 75 टक्के नफा मिळत होता. परंतु युध्दानंतर 20 टक्के बोनस मिळत असे. म्हणून "अखिल भारतीय ट्रेड युनियन कॉंग्रेस" ची स्थापना करण्यात आली. समीउल्लाखान, डॉ. खरे, सर सोराबजी मेहता, सौ. मॉट यांनी विदर्भात संघटना वाढविण्यासाठी खूप प्रयत्न केले. रूईकरांनी 1939 ते 1947 या कालखंडात विदर्भातल्या सर्व गिरणी कामगारांच्या संघटना एकत्रीत आणून गिरणी कामगारांची फेडरेशन बनविली. महागाई भत्यासाठी 1942 ला विदर्भात 40 हजार कामगारांनी संप केला होता.

व्हिटले कमिशन व विदर्भातील नेते :

इ. स. 1928 मध्ये मजुरांची परिस्थिती जाणून घेण्याकरिता भारत सरकारने व्हिटले कमिशन नेमले. या कमिशनवर मध्यप्रदेश शासनाने श्रीमती अनुसयाबाई काळे यांची मध्यप्रदेशतर्फे असिस्टंट कमिशनर म्हणून नेमणूक केली होती. या कमिशनबरोबर काळेनी विदर्भात दौरा काढला. गिरण्यात काम करणाऱ्या स्त्रियांची स्थिती जाणून घेतली. मजुरांची स्थिती सुधारण्याचा प्रयत्न केला. व्हिटले कमिशनसमोर दलित नेते श्री. किसन फागुजी बनसोडे यांनी एकुण मजुरांच्या एकुण स्थितीबद्‌दल निवेदन केलेत. दलित आणि मजुरांची स्थिती सुधारण्याचा त्यांनी प्रयत्न केला. त्यांच्याबरोबर मजुर चळवळीत भाई एन. एम. जोशी, श्री. आंबेकर, रावसाहेब ठवरे आणि श्री. भाऊराव बोरकर यांचा त्यात समावेश होता. नरकेसरी अभ्यंकर यांनी सुध्दा मजुरांच्या प्रश्नात लक्षात घातले होते. परिणामी 1936 मध्ये सरकारकडुन "पेमेंट ऑफ वेजेस ॲक्ट" पारित करण्यात आला. या कायद्याचा मुख्य उद्‌देश मजूर व महिलांना सवलती देण्यात याव्यात यासाठी "मॅटरनिटी बेनिफिट ॲक्ट" पास करण्यात आला.

स्वातंत्र्यानंतर विदर्भातील कामगार चळवळीचे स्वरूप :

कामगारांना प्रत्येक गोष्टीसाठी संघर्ष करावा लागला. त्यातुन कामगार चळवळीला दिशा देण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. मात्र गेल्या काही वर्षात उदारीकरण आणि खाजगीकरणामुळे कामगार चळवळीचे स्वरूप बदलले. आजही कामगार संघटनास संघर्ष करावा लागला. आज कामगार संघटनास संघर्ष करावा लागत आहे. आज कामगार चळवळीचे विघटन झाले. सरकारच्या चुकीच्या धोरणामुळे आज कामगार चळवळीचे नुकसान झाले आहे. विदर्भात असंघटीत कामगारांची संख्या झपाटयाने वाढली आहे. विदर्भाच्या कामगार चळवळीला इतिहास आहे. गिरणी कामगारांचे आंदोलन असो मजुरांचे. त्यावेळी कामगारांचा उठाव होत होता. कामगारांची लढाई कमी झाली असुन ती वाढविण्यासाठी सर्व संघटीत आणि असंघटीत कामगार संघटनानी राजकीय पक्षभेद सारून संघटीत होण्याची गरज आहे तरच कामगार चळवळ टिकेल.

निष्कर्ष :

विदर्भात खाजगीकरणामुळे कामगारांच्या चळवळी कमी झाल्या आहेत. माथाडी कामगार मोठया प्रमाणात असून तो असंघटीत कामगारांमध्ये मोडतो. मात्र त्याची नोंद नाही. त्यामुळे तो विभागला गेला आहे. विदर्भातील सुतगिरण्या कायमच्या बंद झाल्या आहेत. ग्रामीण पंचतारांकीत

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya

ISSN NO : 2231-4059

उद्योगधंद्यांना सुध्दा कच्चाच्या प्रमाणात ब्रेक लागलेला आहे. खान उद्योगातील कामगारांचे लढे सुरू आहे. मात्र स्वरूप थोडे वेगळे आहे. असंघटीत क्षेत्रात प्रमाण वाढल्यामुळे कर्मचाऱ्यांची आवश्यकता भासत नाही. वेकोली, पॉवरग्रीड सारख्या सरकारी उपक्रमातही कंत्राटी कामगार यांची संख्या वाढली आहे. त्यातून त्यांचे सामाजिक, आर्थिक, राजकीय शोषण होते. पुन्हा एकदा कामगार चळवळ निर्माण करणे गरजेचे आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

1 डी खांदेवाले विनिवास विदर्भ राज्य संकल्पना विसा बुक्स, नागपूर
2 डी एकबोटे वि आ आधुनिक विदर्भाचा इतिहास मंगेश प्रकाशन नागपूर
3 प्रा डेरा एन डी विदर्भाची अर्थव्यवस्था मंगेश प्रकाशन नागपूर
4 कोलारकर श गो आधुनिक विदर्भाचा इतिहास श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर
5 डी भोसले नारायण महाराष्ट्र वार्षिकी 2008-2009 ८ युनिक अकॅडमी
6 नाथे संजय विदर्भातील जिल्हे नाथे प्रकाशन नागपूर
7 समाजप्रबोधन पत्रिका डिसेंबर 2010 मार्च 2013
8 साधना जानेवारी 2012
9 लोकसत्ता नागपूर वृत्तांत ९ 2015

Principal
Narayanrao
Latur

Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

October -2020

SPECIAL ISSUE-CCL(250)



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr. Santosh Bansod
Head Dept.of History,
Narayanrao Rana
Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyala
Badnera

This Journal is indexed in :
- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**
- **International Impact Factor Services (IIFS)**

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor – 7.675

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October - 2020

ISSUE No –CCL (250)

Dr. Babasaheb Ambedkar Thought

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. Santosh Bansod
Editor :
Head Dept.of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera (M.S.).

Aadhar International Publications

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem. — Dr. Santosh Bansod	1
2	Dr Babasaheb Ambedkar and Socialism — Dr. Vasant R. Dongare	4
3	स्त्रियांचे मुक्तीदाते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा.डॉ. कल्पना त्र्यं. मेहरे	8
4	An Advocate of Human Society: Dr B. R. Ambedkar — Satish K. Khode,	11
5	Water conservation vision of dr. B.r. Ambedkar — Dr.Harshal R.Nimbhorkar	15
6	दलित पँथर आणि आंबेडकरवाद — प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे	19
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे उच्चशिक्षणा विषयक विचार — प्रा. डॉ. सिध्दार्थ शिवाजी वाठोरे	24
8	महिला व मजदुरो के विकास मे डॉ. आबेडकर की भूमिका — प्रा. डॉ. माधुरी म. पाटील.	27
9	भारतीय कृषी विकास के संदर्भ मे डॉ. बी. आर. अंम्बेडकर के विचारोका ऐतिहासिक विश्लेषण — डॉ. प्रसन्न प्रकाश बगडे	30
10	वर्तमान परिप्रेक्षातून डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांची विदर्भातील भाषणे (पातुर्डा ते अमरावती) — डॉ श्याम प्रकाश देवकर	34
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या सामाजिक चळवळीचा समाजमनावरील प्रभाव :— एक चिकित्सा. — डॉ किशोर मारोती वानखडे.	42
12	समाज क्रांतिकारकबाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय संविधान — जगन्नाथ सावंत	46
13	आंबेडकरी चळवळीतील रावबहादुर सीतारामपंत बोले यांचे योगदान — प्रा. प्रविन एम. राजुरवाडे	52
14	भारतीय स्त्री, पूर्वइतिहास, आजची स्थिती आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर — प्रा.शितल बुधा सोनवणे	56
15	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व योगदान — प्रा. विनय वामनराव तायडे	63
16	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार — प्रा. डॉ. नितिन उल्हासराव सराफ / गोपाल मधुकर राठोड	67
17	संविधानिक दृष्टिकोनातून महिला सक्षमीकरणामध्ये डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका — प्रा. संतोष बन्सीलाल राठोड	72

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 250 (CCL)
ISSN : 2278-9308
October, 2020

Dr Ambedkar's thoughts about Indian foreign policy with special reference to Goa Problem.

Dr. Santosh Bansod
'Suman Nivas' , Near LIC Colony,Ram Nagar, Amravati. Pin – 444606
MO – 8275418986 email – bansodsantosh73@gmail.com

Dr B.R. Ambedkar have solution for all the problems which India was facing at that time. He have that view point by his deeprooted study of each and every subject. He solve all the problems of Indian society, economy, politics and also he also have solution for forgeign policy also. The Indian independence movement was a series of activities whose ultimate aim was to end the British Raj and encompassed activities and ideas aiming to end the east India company rule (1757 – 1857) and the British Raj (1847 – 1947) in the Indian subcontinent. The movement spanned a total of 90 years considering movement against British Empire. The Indian Independence movement includes both protest and militant (peaceful and violent) mechanisms to root out British administration from India. In 1947 India got Freedom from British Government but many states under in Rajeshahi, Nizams, Kashmir under Harising, Goa under Portuguese and many states under local Kings also.

The Portuguese conquest of Goa accurred when the governor of Portugese India Alfonso de Albuquerque Captured the city in 1510. Goa was not among the cities Albuquerque had received orders to conquer. He had only been ordered by the Portuguese king to capture Hormuz, Aden and Malacca.1510 – 1947 Goa under Portuguese government. In 1947 India got freedom from British Government. Many places in India was free but some states under local prince as well as some foreign government like as Goa also. Indian union emerged after the end of British government in India at 1947. The Indian government demanded the Portuguese to hand over their colonies to the Indian union refusal would lead to a conflict.

There had been foreign pockets in India among them was a Goa, ruled by Portuguese government since 1510. The question of talking possessions of Goa was confronting of Indian Political leaders since independence of India. Pandit Javaharlal Neharu being prime minister of India, had made a statement in Loksabha on 25 th August 1954 and expressed basic approach in regard to Goa. Neharuji expressed foreign policies of India in regards to various problems. Neharu and Dr. Babasaheb Ambedkar were emient leaders in India. Sice many years and had their own to settle the problems comforting to India. Gos was such a problem was to be settle using before coming to Dr Ambedkar's foreign policy and view of their eminent members of Rajyasabha. Pandit Neharu mentioned further that British got big part of India and Portuguese got very small part and that was Goa. He considered that Portuguese continued in Goa under shadow of British government otherwise it was impossible to continue for Pandit Neharu also blamed Portuguese that at the time to transfer of power which was going to take place, Hydrabad government and Portuguese government had some discussion between them so that Hydrabad government could get oulets from sea of Goa. As Pandit Neharu rejected the concept of war and believed in peaceful way . He felt

regreated of international observers on occount of it's failure to carry out talks between two countries and should sympathy to the struggle rised by nonGoan people. But advied them not to use any arms.

Now let's come to the foreign policy by the Dr. Babasaheb Ambedkar towards Goa. Which he expressed Rajyasabha during debate on international situations held on 26 th August 1954. He criticize foreign policy of Pandit Neharu and drew the attention of the Rajyasabha members, and suggest policy which gave the proposals to settles the Goa problem. There had been one common fact that both the Pandit Neharu and Dr. Ambedkar wanted Goa to be the part of Indian territory, freedom from Portuguese. Dr. Babasaheb Ambedkar supported Pandit Neharu to get Goa educated. However he recalled this in regard to education of Goa and brought to the notice of prime minister in the debate again. That the question was already brought to the notice of the primeminister. It appears from this thoughts that Dr. Babasaheb Ambedkar would have no objection to adopt the police action against the Portuguese government. If government of India had decided to do so.

Dr. Babasaheb Ambedkar clarified his views towards Goa problems that he did not prefere to accept observers nor did he agree with dominion status to Goa. However he preferred small police action to observers in talking possessions of Goa. Pandit Neharu was found accepted international observers but felt regreated having seen that no meeting was held. It is very important that Pandit Neharu accepted the way which was known as peaceful way. In this context Dr. Ambedkar suggested to valuable method to settle Goa problem. According to Dr. Ambedkar government of Inida and Portugal government would have succeded to settled Goa problem. If the adopted two methods, nobody would have dare to say that the Indian government had adopted any violent way. Thus we became aware of the Dr. Ambedkar's foreign policy towards Goa. That government of India had two ways – first the violent way and that is police action, second to adopt two methods of consisted of purches of Goa or Goa on lease. In said debate 26 th August 1954 held in Rajyasabha members of other mentioned also expressed their thoughts in their respective speeches. We know that Pandit Neharu ruled out the possibility of small police action. He refused this views in speech in Loksabha dated on 26 th July 1955. Pandit Neharu in Loksabha while replying about debate about Goa. Stated about methods to be applied to Goa. He clearly answered to Loksabha members and leaders who present at assembely hall. He ignored till police action or limited war and considerd that small or big actions carries same effect.

The report threw light on Dr. Ambedkar's foreign policy towards Goa. That the scheduled caste federation shall not accept the Satyagraha in Goa. The actrocities of Portugues will not be rulled out by Gandhian satyagraha because it was not applicalble in Goa.

Goa must be assist into India and Portuguese there in must leave Goa immediately , to achieve this aim. There are three solutions-

1) To purchase Goa from Portugal.
2) To take possession of Goa and on lease.
3) To fight war against Portuguese.

If these solutions are not acceptable to government of India, then India must tell the people of India about India's steps to be taken. By these issues Indian

government and Goa government solve the problem in 1961 and Goa became the part of Indian Union.

References –

1) Dongare V.R., *'Dr Babasaheb Ambedkar Ani Itihasmimansa'*, Devyani Prakashan Mumbai, First Edition, 2012.
2) Gaikwad Vijay , *'Dr. Ambedkar's foreign policy and its Relevance'*, Vaibhav Prakasan, Ulhasnagar,First edition 1999.
3) Gaikwad Dnyanraj, *'Mahamanav Dr Bheemrao Ramji Ambedkar'*, Ria Publication, Kolhapur, Fifth edition, 2013.
4) Gajbhiye Sheshraj, *'Dr Babasaheb Ambedkaranche Rajkiy Tatvadnyan' (Marathi)*, S.K. Publication, Nagpur.
5) Kasbe Raosaheb, *'Ambedkar and Marx'*, Sugava Publication, Pune, Second edition, 2006.
6) Moon Vasant (Editor), *'Source Material On Dr Babasaheb Ambedkar and The Movement of Untouchables Volume II'*, Education Department Government of Maharashtra, 1990
7) Nayyar kuldip, *' India : the critical years'*, Vikas publication, Delhi, First edition, 1971.
8) Neharu Javaharlal, *' Indias foreign policy - selected speeches'*, Government of India, August 1961.



Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

SJIFactor Project

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Aadhar Publications For Details www.aadharsocial.com **Price:Rs.500/**
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Mob- 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com

ISSN 0974-2832 1st JUNE-2019, Vol-VI, Issue-125

AN INTERNATIONAL LEVEL PEER REVIEWED REFERRED REGISTERED RESEARCH JOURNAL

Impact Factor-5.901(SJIF)

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

UGC APPROVED
&
LISTED-41004

शोध समीक्षा और मूल्यांकन



Editor
Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ugcjournal.com

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Editor's Office
A- 215, Moti Nagar,
Street No.7
Queens Road
Jaipur- 302021, Rajasthan,
India

Contact - 094 139 70 222
094 600 700 95

E-mail:
www.ugcjournal@gmail.com
dr.kbsingh@yahoo.Com
professor.kbsingh@gmail.Com

मुख्य सम्पादक — डॉ. कृष्णवीर सिंह का मताद्य अंतिम एवं कार्य पूर्णत: अवैतनिक है।
इस शोध पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन एवं मुद्रण में पूर्णत: सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि मानवीय भूल मानी जाये।
शोध पत्र की समस्त जिम्मेदारी शोधपत्र लेखक की होगी। इस सम्बन्ध में सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance **The selection and publication is done after recommendation of subject expert Refree.**
2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper The responsibility of the matter of research paper is entirely of author
3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e. **www.ugcjournal.com**
4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
6. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.
7. The research Journal will be sent by normal post. If the Journal is not received by the author of research paper then it will not the responsibility of Editor and publisher. The amount or registered post should be given by the author of research paper It will be not possible to sent second copy of research journal.

Contents

Law

Procedural Aspect of International
* Vivek Pareek 7-9

Journalism & Mass Communication

डिजिटल हमलों से पूर्व भी भारत एक राष्ट्र था
* डॉ. अंजनी कुमार झा 80-82

मीडिया एक उद्योग के रूप में: एक विश्लेषण
* निशात कुमार ** जय किशन गोस्वामी 94-96

Visual Art

Mandana Art: A Study from Households
* Dr. Nirupama Singh 10-12

Management

A Study of Housing Finance Offered
* Mr. Akhilesh Kumar ** Dr. A.P. Singh 19-20

Marketing

Study of The Effectiveness of Online
* Dr. Anil Tiwari 21-23

Physical Education

Nutritional And Balanced Diet
* Chander Sen Chauhan 33-35

Political Science

उत्तरांचल राज्य की मांग आन्दोलन
* डॉ. सुमित कुमार बंसल 71-72

प्राचीन भारत की न्यायिक व्यवस्था
* कविता महावर 75-76

महासमुद जिले में श्रम पलायन की समस्या
* डॉ. धर्मेन्द्र कुमार साहू 77-79

राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था
* शिवकरण निमल 83-85

2019 का लोकसभा चुनाव और चुनाव सुधार
* डॉ. हरबीर सिंह डागुर 117-118

Geography

Conclusion & Factor That Effect Marital
* Dr Neetu Yadav 44-45

राजस्थान में जलस्वावलम्बन अभियान
* सुनील कुमार ढाका 53-55

History

भारतीय शिक्षा मूल्य की ऐतिहासिक अभिधारणा
* डॉ0 निखिल विक्रम सिंह 48-50

राजे लखुजी जाधवराव – व्यक्ति आणि कार्य
* प्रा.डॉ. शरद आर. डवरे 143-145

पर्यटनाचा इतिहास– एक अभ्यास
* डॉ. एस. पी. बनसोड 146-147

Sociology

Awareness And Practice Regarding
* Sunil Dutt ** Aaradhana Bandhani 30-32

अनुसूचित जाति की महिलाओं की बदलती
* डॉ. सुमित्रा शर्मा 66-68

पंचायत राज और महिला सशक्तिकरण
* जय प्रकाश मीणा 126-127

महाराष्ट्राच्या शैक्षणिक कार्यात राजर्षी शाहु
* उज्वला टेकाडे 141-142

Commerce

Performance of Small Finance Banks
* Sumiran Kumar Rajak 13-15

Activity Based Learning In Commerce
* Dr. Yulendra K. Rajput
*Dr. Madhulika Agrawal 36-39

International Indexed Peer Reviewed, Referred, Research Journal, ISSN-0974-2832 (Print)E-ISSN-2320-5474, Published on 01 June ,2019 ISSUE-125

पर्यटनाचा इतिहास– एक अभ्यास

* डॉ. एस. पी. बनसोड

* सहयोगी प्राध्यापक,नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा

सार : पर्यटनाला प्राचीन इतिहास लाभलेला आहे. पर्यटनाच्या माध्यमातुन विविध ऐतिहासिक शोध लावण्यात मदत होत आहे शिवाय त्यामुळे मनोरंजन आणि शिक्षण ही प्रक्रिया सुध्दा घडीत आलेली दिसते. पर्यटनामुळे पर्यटनाच्या ठिकाणाच्या सोबी सुविधांचा विकास आणि रोजगार संधी निर्माण होतात आणि देशाच्या अर्थव्यवस्थेचा विकास होण्याला सुध्दा पर्यटनाचा हातभार लागत आहे. अशा स्थितीत अधिकाधिक प्रमाणात पर्यटक पर्यटन स्थळी आकर्षित करण्यासाठी त्या पर्यटन स्थळाचा इतिहास काय आहे याचा प्रसार प्रचार होणे काळाची गरज आहे.

प्रवास ही अतिप्राचीन कालापासून चालत आलेली घटना आहे. सुरुवातीच्या काळामध्ये मनात कोणताही उद्देश अथवा जाणीव न ठेवता प्रवास केला जात असे. वर्तमान काळामध्ये प्रवास करतांना विविध पध्दतीचा वापर करावा लागतो अशा पध्दती पूर्वीच्या काळी अस्तित्वात नव्हत्याऋ आजुसध्दा आनंद प्राप्त करण्यासाठी प्रवास करण्यात येतो. प्राचीन काळामध्ये प्रवास करणारे बहुतांश यात्रेकरु नवीन प्रदेशाचा शोध घेण्यासाठी प्रवास करीत असते. याशिवाय व्यापार हा त्या मागील प्रमुख हेतू होता. अशा प्रकारे जगात प्राचीन काळात एका वेगळया हेतूने सांस्कृतीक देवान घेवानीस प्रारंभ झाला.

खिस्तपूर्व 400 मध्ये बॅबीलोनियातील समेरीयानाचा गुप्त खजिन्याचा भोध आणि स्थानिक व दुरच्या ठिकाणची व्यापारातील प्रगती म्हणजे प्रवासाच्या आरंभाचे ऐतिहासिक युग होय. राजशुल्की यांनी या काळात सुरक्षित मार्गाचा विकास करुन प्रवासी व वाटसरु यांच्यासाठी अनेक ठिकाणी विश्रांतगृह बांधली आहेत.

प्रसिध्द कवी होमर यांच्या ओडीसी रचनेत ग्रीकांच्या भटकंती विषयी नोंदी सिध्दनाल. भारत व चीन यांनी केलेला प्रवास व्यापारी स्वरुपाचा होता. तसेच पूर्ण जगातुन पूर्वेकडे झालेले विविध दौरे व्यापारी स्वरुपाचे होते त्यामुळे विविध प्रदेशाचे शोध लागले यानंतर प्रवासाचा हेतू बदलत गेला प्रवास केवळ मनोरंजन म्हणून केला जात असे सर्वप्रथम मनोरंजनासाठी प्रवास करणारे रोमन प्रवासी होय. रोम साम्राज्यातील दळण–दळणाच्या प्रभावी सुविधाच्या उपलब्धतेमुळे पर्यटनास चालना मिळाली विशेषता 18 व्याशतकाच्या मध्यामध्ये युरोम खंडामध्ये भ्रमण करणे, समुद्रात पोहणे इत्यादी कार्यक्रम सुरु झाले असल्यामुळे किनारी भागात विश्रामगृह उभारले गेले व पुढे यातुनच आधुनिक पर्यटन अस्तित्वात आले. 18 व्या शतकात रेल्वे मार्गाचा उदय झाल्यामुळे विविध सेवा सुविधांचा ओघ सुरु झाला. पर्यटनाच्या दृष्टीने रेल्वेस महत्व प्राप्त झाले त्यामुळे नवीन जगाकडे लोकांचा प्रवास अधिक प्रमाणात वाढला. 1869 सुवेझ कालवा, 1914 पनामा कालवा पूर्ण झाल्याने सागरी मार्गाचे महत्व वाढीस लागले तसेच या शतकात इंजीनाचा शोध लागल्यामुळे मोटार व्यवसाय विकसित झाला व पुढे मोटार वाहतुकीमुळे पर्यटनाला चालना मिळाली.

दुस–या महायुध्दानंतर हवाई वाहतुक विकसित झाली त्यामुळे आंतरराष्ट्रीय पर्यटनात झपाटयाने प्रगती झाली. पर्यटन भारतीय संस्कृतीचा अविभाज्य घटक आहे. 'अतिथी देवोभव:' किंवा 'वसुधैव कुटूंबम्' या संकल्पनांचा विकास भारतीय संस्कृतीमध्ये झाला आहे आणि या कल्पनाचा पर्यटनासाठी प्रेरक आहेत. पर्यटन मुख्यत: राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय धार्मिक प्रसार आणि प्रचारावर आधारित आहे. तसेच पर्यटनामुळे आनंद प्राप्ती होते. म्हणुन बहुसंख्य लोक एका ठिकाणाहून दुस–या ठिकाणी भ्रमण करतात. हडप्पा व बॅबीलीयन संस्कृतीत प्रवासाद्ददलचे पुरावे मिळतात. सुमारे 4000 वर्षापूर्वी मानव व्यापारी हेतूने प्रवास करत होता. त्यावेळी जगातील विविध बाबींची माहिती प्रवासाच्या माध्यमातुन प्राप्त केली जात होती.

वंश परंपरागत भारतीय संस्कृतीने दिलेली देणगी म्हणजे पर्यटन होय. प्राचीन भारतात ऋषी व साधूसंत एका ठिकाणी फार काळ वास्तव्य करीत नसत त्यांचे निश्चित थांबण्याचे ठिकाण नव्हते स्थानिक लोकांकडून शिक्षेच्या स्वरुपात अन्न घेत असत व तात्काळ ते ठिकाण सोडुन दुस–या गावी जात असते. हिंदु धर्माचे संस्थापक शंकराचार्य यांनी रामेश्वर बदीनाथ, व्दारकापूरी आणि जगन्नाथपूरी या चार ठिकाणी हिंदू धर्माच्या विकास आणि प्रसारासाठी मठाची स्थापना केली. त्यामुळे हिंदू धर्मातील धार्मिक पर्यटन करण्याची संधी प्राप्त झाली अशाच प्रकारे बौध्द धर्मातील परंपरानुसार भिक्षूक धर्म प्रसारासाठी भारतीय उपखंडात सर्वत्र फिरले त्यामुळे भारताच्या शेजारील देशात धर्म प्रसार झाला. प्राचीन भारतात शिक्षण व ज्ञान घेण्यासाठी जगातुन लोक येत असत त्यात तक्षशिला व नालंदा हे मुख्य केंद्र होते. फहयान व ह्वेनसांग चीनी प्रवासी इबनबतुता व वास्को–द–गामा पार्शियान प्रवासी यानी आपल्या प्रवास वर्णनात अनेक नोंदी केल्या आहेत. भारतीय संस्कृतीमधील अगस्ती ऋषी यांचा प्रवास प्रसिध्द आहे.

अशाप्रकार पर्यटन केवळ मानवामध्येच नाही तर पशू पक्षी आणि जीव जंतु याच्यात सुध्दा दिसून येते कारण वर्तमान काळात सैबेरियन बर्फ प्रदेशातून हिवाळयात पक्षाचे स्थलांतर मध्य आशियाकडे होत असल्याचे दिसून येते. हवामानातील बदलामुळे पुन्हा प्रवास होत असल्याचे दिसून येते. म्हणजेच प्राणी आणि पक्षी याच्यात सुध्दा पर्यटनाची परंपरा दिसून येते. यावरुन

असे दिसून येते की, संपूर्ण जीव जगतात प्राचीन काळापासून पर्यटन परंपरा चालत आलेली आहे.

वास्तविक पर्यटनाचा इतिहास हा मानवाच्या उदय व विकास प्रक्रियेशी जुळलेला आहे. मानव जन्मत: पर्यटक आहे कारण मानव लहान बालकाच्या भूमिकेत असताना निसर्गातील विविध घटनामुळे आकर्षित होतो. यामुळे प्रथमत: घर सोडून बाहेर जाण्यास सतत प्रयत्न करतो. घरासभोवतालच्या वातावरणाचा अनुभव घेतल्यानंतर शिक्षणासाठी मित्रासमवेत विविध खेळ खेळण्यासाठी तसेच आई वडीलासमवेत बाजार, यात्रा, उत्सव व इ विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमात सहभागी होतो. शारिरीक व बौध्दीक विकासाच्या प्रगतीनुसार व आपल्या आवडीनुसार निसर्गाचा आनंद घेण्यासाठी सतत प्रवास करतो. यातुन मंदिर मस्जिद गुरुव्दारा, जलाशय, नदी उद्यान इ. सांस्कृतिक, धार्मिक व नैसर्गिक स्थळापर्यंत पोहचतो. त्यामुळे या घटकांचे ज्ञान झाल्यामुळे त्याचे कुतुहूल वाढते. त्यातुन पुढे पर्वत, पठार, मैदान, गुहा, धबधबे नदीप्रवाह इ. नैसर्गिक घटकांकडे आनंद घेण्यासाठी जातो व त्यातील गुढ शोधण्याचे प्रयत्न करतो.

अनादीकाळापासून मानव जीवन जगण्यासाठी सतत धडपडत आहे अन्न व निवारा यासाठी सतत भटकत आलेला आहे काळाच्या ओघात संस्कृतिचा विकास व मानवाने निसर्गातील विविध घटकांचे ज्ञान घेवुन गरजेनुसार निवारा, मंदिर, मस्जिद इत्यादींची निर्मिती केली व त्यातुन स्थापत्यकला उदयास आली. [illegible] आरोग्यासाठी विविध वनस्पतीचा औशधी म्हणून उपयोग करु लागला त्यामुळे मानवाला वन्यजीवन व उपलब्ध साधनांचे महत्व पटले त्यातुन जगले अभयारण्य, प्राणी संग्रहालय, वृक्ष संग्रहालय, राष्ट्रीय उद्यान इत्यादी निर्माण केले. नैसर्गिक वृक्ष घटकासाठी उद्यान व संस्कृती दृश्य घटकासाठी संग्रहालय, उद्योग व्यवसायाचे महत्व नैसर्गिक साधन उर्जेचे रुप यातुन गरम पाण्याचे झरे, धबधबे इत्यादी व इत्यादी धार्मिक यात्रेचे महत्व निर्माण झाले व त्यातुन पर्यटनाचे मुख्य रुप पुढे आले.

[illegible] पर्यटन विकासात योगदान देणारे महत्वाचे घटक आहे हिंदू बौध्द जैन व शिख धर्म यांचे महत्व देश आहे बौध्द धर्मामुळे श्रीलंका, थायलंड, म्यानमार, इंडोनेशिया, व्हिएतनाम, कोरीया, कंबोडिया इत्यादी देशांची उदरनिर्वाह चालतो आहेत तर हिंदूधर्म हे जगण्याचे तत्वज्ञान म्हणून उदयास येत आहे. हिंदू धर्मात प्रत्येक थोड्या अंतरावर तीर्थ क्षेत्रे आहेत. धार्मिक यात्रेसाठी महत्व असल्यामुळे वेरुळ, वेरुळ, अजिंठा, घारापुरी, [illegible] इत्यादी पर्यटनस्थळे निर्माण झाली. [illegible] किल्ले व स्मारके यांचे विविध प्रकार तसेच पेठा यामुळे पर्यटन विकासाला चालना मिळाली आहे.

संदर्भ ग्रंथ

1. भोसले प्रकाशन प्रवास पर्यटनाचे नवे पैलू, पुणे [illegible]
2. खतीब के. ए. 2016 पर्यटन भूगोल पुणे [illegible]
3. माटे एम एस प्राचीन भारतीय कला
4. Bhatia A. K. Tourism in India. Delhi Sterling Publishers
5. Mahajan L. C. and others, Tourism Business Delhi King Books
6. Anand M. M - Tourism and Hotal Industry in India New Delhi Sterling Publishers
7. Sathyadev T. K and other, Encyclopaedia of Tourism pecific New Delhi Books International
8. Raina A. K. and other, Tourism Destination Management Principles and Practices New Delhi Kanishka Publishers Distributors.
9. www.ugcjournal com






Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:

Dr. N. J. Meshram
Principal
Y.D.V.D. Arts, Commerce &
Science College, Teosa ,
Dist. Amravati.

Executive Editor :

Dr. Kusmendra Sontakke
Head,Deptt.of History
Y.D.V.D. Arts, Commerce &
Science College, Teosa ,
Dist. Amravati.

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalay
Badnera

Shri Shivaji Education Societys Amravati

Y.D.V.D. Arts, Commerce & Science College, Teosa

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

B.Aadhar *International Multidisciplinary Research Journal*
Impact Factor - ((SJIF) -7.675
Special Issue
ISSN : 2278-9308
March 2020

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	The Contribution of Women to the Indian English Novel : A Critical Study	Shrikant Govindsingh Thakur	1
2	The conductometric measurement of [ptcp] and [mtcp] at various molar concentrations	S.O.Mohod[a], D. T. Tayade[b]*, N.J.Meshram, M.S.Lunge.	5
3	Women's Empowerment In India an Analytical Overview	Mr. Chandrakant B. Dhumale.	10
4	Women Empowerment	Dr. Meena K. Rokade	14
5	A Study on Issues and Challenges of Women Empowerment in India	Prof. Rahul G. Mahure.	17
6	Contribution Of Women In Modern Science And Technology	Prof.Suresh N.Gawai	22
7	Role of Libraries on Women Empowerment in Knowledge Society	Ravindra Vijay Patil	28
8	Necessary steps for Empowerment of Women and Girls in India	Dr.Dinesh A. Gundawar	33
9	Women in Development: A New Socio-Economic Perspective	Dr K. R. Nagulkar	36
10	A Study of Self Confidence of Wives and Adult Daughters of Alcoholics	Dr. Mina Kalele	39
11	Women Emporwerment And Co-Operatives	Ku. Ujwala Tekade	43
12	Food Consumption Pattern and Dietary Habits of Overweight Pregnant Women	Sharmila Kubde	46
13	Women Empowerment	Dr. Parag Kukade	50
14	आधुनिक काळात भारतीय कला आणि संस्कृतीत महिलांचे योगदान	प्रा .अमिता मनोज चौधरी	55
15	महाराष्ट्रातील राजकारणातील स्त्री नेतृत्व-दिशा व दशा	प्रा. डॉ.संतोष बन्सोड	59
16	महानुभाव पंथीय आद्य स्त्री आचार्य कमळाऊसा : चरित्र व कर्तृत्व	डॉ. अण्णा वैद्य	62
17	श्रीमति इंदिरा गांधी यांचे भारताच्या विकासातील योगदान एक अध्ययन	प्रा.डॉ. व्ही.जी.वसू	65
18	समाज सेविका मदर तेरेसा	डॉ. विजयसिंग किसनराव पवार	68
19	भारतीय साहित्यातील महिलांचे योगदान	प्रा. विनायक नथुराम तत्रे	70
20	मराठी सिनेसृष्टीतील स्त्री कलावंतांचा सहभाग	प्रा. डॉ. संजय एन. तुरूकमाने	75
21	मराठी विज्ञान कथालेखिकांचे विज्ञान साहित्यात योगदान	डॉ. सुलभा खर्चे / प्रा. रूपा ठाकरे	77

B.Aadhar *International Multidisciplinary Research Journal*
Impact Factor - ((SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
March 2020

महाराष्ट्रातील राजकारणातील स्त्री नेतृत्व-दिशा व दशा

प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड
एल.आय.सी. कॉलनीजवळ, रामनगर

सारांश :

भारतात प्राचीन काळापासून 'स्थानिक संस्था' अस्तित्वात होत्या. मौर्य व गुप्त राजवट तसेच हर्ष कालखंडामध्ये 'ग्रामसभा' व पंचायतीचा विकास झाला. कालांतराने ग्रामसभा व पंचायतीचे रूपांतर गणराज्यात झाले. मुस्लीम कालखंडात पंचायतीराज संस्थांची प्रगती खुंटल्याचे आढळते. १८७० च्या कायद्यानुसार लॉर्ड मेयोने भारतात सर्वप्रथम स्थानिक स्वराज्य संस्था निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला. लॉर्ड रिपन यांना भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा जनक संबोधले जाते. कारण की, ब्रिटीश राजवटीत १८८२ साली केलेल्या ठरावाने भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा कायदा संमत झाला. ब्रिटीश कालखंडात भारतात स्थानिक स्वराज्य संस्थांची केवळ संख्यात्मक वाढ झाली. गुणात्मक झाली नाही. स्वातंत्र्य भारतात बलवंतराव मेहता समितीने लोकशाही सत्तेचे विकेंद्रीकरण केले. १९६२ मध्ये राजस्थानने पंचायती राजचा स्विकार केला. भारतात १९९३ मध्ये महिला राजकीय सबलीकरण करण्याच्या दृष्टीने घटनादुरुस्ती केली. ही क्रांतीकारक घटना होती. यामुळे कधीही उंबरठा न ओलांडणाऱ्या स्त्रिया मोठया प्रमाणात निवडणुका लढवितात. प्रचार करतात राज्य कारभार पाहतात. मात्र लोकसंख्येच्या दृष्टीने महिलांचे राजकारण अल्प प्रमाण आहे.

निसर्गतःच एकुण लोकसंख्येच्या अर्धी लोकसंख्या महिलांची आहे. कायदेशीरदृष्टया त्यांना पुरुषाइतकेच अधिकार असले तरीही वास्तवात त्यांची स्थिती खूप दयनीय आहे. ही स्थिती केवळ आजची नसून प्राचीनकाळापासून महिलांना कनिष्ठ दर्जा देण्यात आला आहे. सामाजिक, आर्थिक, राजकीय दृष्टीकोनातून त्यांचे दुय्यम स्थान परंपरेने आजही दिसल्याचे आढळते. महात्मा फुले, लोकहितवादी, आगरकर, महर्षी कर्वे या समाजसुधारकांनी महाराष्ट्रात स्त्रियांचा दर्जा सुधारण्यासाठी केलेल्या प्रयत्नामुळे मागील शतकाच्या शेवटापासून महिलांना समाजात विशिष्ट स्थान प्राप्त होत आले.

राजकारण हे सर्वसाधारणपणे पुरुषी वर्चस्व असलेले क्षेत्र मानले जाते तरी जागतिक राजकारणात अनेक स्त्री नेत्या प्रसिध्द आहेत. उणीपुरी ७० वर्षांची लोकशाही असलेला भारत देश सुध्दा याला अपवाद नाही. भारतात पंतप्रधान, राष्ट्रपती, मुख्यमंत्री इतकेच नव्हेतर परराष्ट्रमंत्री, संरक्षणमंत्री, अर्थमंत्रीपद भूषविले आहे. अगदी ब्रिटीश कालखंडापासून आधुनिक राजकारणापर्यंत अनेक स्त्रिया अग्रेसर आहेत. त्यांनी घेतलेल्या निर्णयासाठी, धोरणासाठी, नेतृत्व गुणासाठी त्या प्रसिध्द आहेत.

महाराष्ट्रात स्त्री नेतृत्वाची परंपरा आहे. जिजामाता, राणी ताराबाई ते स्वातंत्र्यपूर्व काळापासून समाजसुधारणा चळवळीमध्ये अग्रक्रमाने नाव घेतले जाते. त्या सावित्रीबाई फूले, रमाबाई रानडे, विजयालक्ष्मी पंडित, सरोजीनी नायडू, इंदिरा गांधी, जयंतीबेन मेहता इत्यादी विशेष म्हणजे ज्या काळात स्त्रिया राजकारणात सक्रीय होत्या. त्या काळात स्त्रियांसाठी ३३ टक्के आरक्षण हा विचारही मांडला नव्हता. ७३ व्या व ७४ व्या राज्यघटनेच्या दुरुस्तीनंतर स्त्रियांसाठी ३३ टक्के आरक्षण देण्याची तरतूद केली लोकसभा, विधानसभा आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये हे आरक्षण ५० टक्के असावे या मागणीपर्यंत राजकारण पोहचले. या प्रक्रियेने स्त्रियांना राजकारणात सहभागी होण्याच्या दृष्टीकोनातच केले. पंचायत राज कायद्यामुळे ग्रामीण भागातील राजकीय चित्र बदलु लागले आहे. स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये स्त्रियांचा सहभाग मोठया प्रमाणावर वाढला आहे. ग्रामपंचायतीची सभासद, सरपंच, जिल्हाध्यक्ष, महापौर या पदापासून मंत्री पदापर्यंत महिला पोहचल्या आहेत. आदिवासी दलित स्त्रिया ही राजकारणात सक्रीय सहभागी होत आहेत. गावांचा विकास, पाणी, शाळा, रस्ते, दारूबंदी यासारखे ज्वलंत विषय महिलांनी पुढे आणले आहेत.

शब्दकोष : स्थानिक संस्था, गणराज्य, पंचायत राज, जिजामाता, सावित्रीबाई, आदिवासी, दारूबंदी इत्यादी.

विषयाचे महत्व :

भारतात महाराष्ट्र राज्याची एक वेगळीच छाप आहे. मग ते औद्योगिकीकरण, शैक्षणिक, समाजकारण वा राजकारण असो, सर्वच क्षेत्रात महाराष्ट्र एका उंचीवर आहे. महाराष्ट्रातील स्त्रियांची राजकारणातील घौडदौड महत्वाची आहे. महाराष्ट्रातील सक्षम नेतृत्व म्हणुन योगदान महत्वाचे आहे. मात्र राज्य विधान मंडळात आणि संसदेत त्यांचे प्रमाण नगण्य आहे. ही खरोखरच खेदजनक बाब आहे. प्रस्तुत शोध निबंधातुन वर्तमानकाळातील महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा सहभागाचा शोध व समस्या जाणुन घेण्याचा प्रयत्न केला जाईल.

अध्ययनाचा उद्देश :

१. महिला सबलीकरणाची संकल्पना स्पष्ट करणे.
२. जागतिक पातळीवर भारतीय महिलांचे स्थान अभ्यासणे.
३. महाराष्ट्रातील राजकारणातील महिलांचा सहभागांचा आढावा घेणे.
४. महाराष्ट्रातील ग्रामीण राजकारणातील स्त्रीयांचा सहभाग अभ्यासणे.
५. राजकारणातील महिलांना आपली भूमिका पार पाडतांना अनेक अडचणीला तोंड द्यावे लागते. याचा अभ्यास करणे.

संशोधन पध्दती :

सदर संशोधन महाराष्ट्राच्या राजकारणातील महिलांचा अभ्यास हा विषय आहे. त्यासाठी ऐतिहासिक, नोंदी पध्दती, त्यांच्याविषयी नोंदविलेली मते व नोंदी व माहीती पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

विषय विवेचन :

स्वातंत्र्यपूर्व काळात महात्मा गांधीच्या नेतृत्वाखाली कॉंग्रेसने उभारलेल्या स्वातंत्र्य लढयात महाराष्ट्रातील अनेक मराठी कुटुंबातील स्त्रिया सहभागी झाल्या होत्या. अहिल्या रांगणेकर, मृणाल गोरे, प्रमिला दंडवते, कमल देसाई अश्या अनेक तरूणींनी आधी कॉंग्रेस, नंतर सेवा दल, समाजवादी पक्ष, साम्यवादी पक्ष यांच्या माध्यमातून आपली राजकीय कारकिर्द उभी केली. महाराष्ट्रातील या स्त्रियांनी स्वातंत्र्यानंतर लोकशाहीकरणाच्या प्रक्रियेत भाग घेतला. संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ तत्सम अनेक चळवळीत सहभागी होत्या. या स्त्री नेत्यानी वाढती महागाई, घरांच्या समस्या, पिण्याच्या पाण्याचे प्रश्न, कामगारांच्या समस्या, स्त्रियांचे हक्क, हिंदू कोड बिल, गोवा मुक्तिसंग्राम आणिबाणी अश्या विविध मुद्यांवरती ठोस भूमिका घेऊन लोकचळवळ उभी करण्याचा प्रयत्न केला. भाववाढीविरोधात लाटणे मोर्चा, दलित आदिवासींच्या समस्या सोडविण्याचा प्रश्न असे अनेक मुद्दे या काळात गाजले. महाराष्ट्राच्या राजकारणात स्त्री नेत्यांच्या भूमिकेला महत्व प्राप्त होऊ लागले.

स्वातंत्र्योत्तर राजकारणातील महिलांचा सहभाग :

१९६२ च्या निवडणुकीत ज्यांनी विधी मंडळातील महिलांच्या प्रतिनिधीत्वाची मुहूर्तमेढ रोवली, त्यात देशाच्या पहिल्या महिला राष्ट्रपती श्रीमती प्रतिभाताई पाटील यांचे नाव अग्रक्रमाने घ्यावे लागते. संयुक्त महाराष्ट्र बनल्यानंतर १९६२ ला प्रथम निवडणुक झाली. ती २६४ जागांसाठी होती. ११६१ उमेदवार रिंगणात होते. या निवडणुकीत ३६ महिला उभ्या होत्या. त्यापैकी १३ महिला विजयी झाल्या अशी निवडणुक आयोगाकडे नोंद आहे.

१९६२-६७ विधानसभेत ७ महिला आमदार होत्या. १९७२ मध्ये एकुण २८ महिलांनी आमदार निवडून येण्यात उच्चांक गाठला. पुढे महिला आमदारांची संख्या कमी झाली. २००४-०९ मध्ये अवघ्या ११ महिला विधानसभेत निवडुन आल्या. राज्यसभा आणि विधानपरिषदेत ५ आमदार आहेत. एकुण ग्रामपंचायती २७,८९३ आहेत. त्यापैकी महिला सरपंच ९,३२५ ऐवढे आहेत. ३५१ पंचायत समित्यापैकी ११६ महिला अध्यक्ष आहेत. ३३ जिल्हा परिषदेत एकुण ७७ महिला अध्यक्ष आहेत.१९७० च्या नंतर राजकारणातील स्त्रियांचे नेतृत्व आणि कौतुक कमी झाले. महाराष्ट्रातील सहकारी चळवळी स्थळझाल्या.

सामाजिक चळवळी व राजकारण भिन्नता :

राजकारणातील महिलांचा सहभाग आपल्याला तिहेरी पध्दतीने मांडता येते. एक म्हणजे प्रत्यक्ष निवडणुकामध्ये उभे राहणे, निवडुन येणे, दुसरे राजकीय पक्षांमधील, राजकीय घडामोडीबद्दल त्यांचा सहभाग आणि तिसरे म्हणजे प्रत्यक्ष मतदानातील सहभागी भागीदारी आहे. गेल्या काही वर्षात अनेक सामाजिक संघटनांनी राजकारणातील महिलांचा सहभाग संख्यात्मक तसेच गुणात्मक वाढण्यासाठी प्रयत्न केलेले आहे. महिला मतदारामध्ये जाणीवजागृती वाढली आहे. सर्व क्षेत्रात सहजपणे वावरणारी स्त्री-राजकारण-निवडणुका हे माझे क्षेत्र नाही या मानसिकतेतून बाहेर पडली आहे. ती अधिक सजग झाली आहे. स्वत:चे निर्णय घेण्याची क्षमता वाढली आहे. लोकशाहीला अधिक समृध्द आणि परिपक्व करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न करीत आहे.

राजकारणात पैसा आणि गुंडागर्दी वाढल्यामुळे सहकारी साखर कारखाने महाराष्ट्रातील राजकीय सत्तेचे आधार झाल्यामुळे स्त्रियांच्या सहभागाला मर्यादा येऊ लागल. राज्यपातळीवर सहकारी, कामगार चळवळी, शेतकरी चळवळी, संरक्षण, परराष्ट्र व्यवहार पुरुषप्रधान क्षेत्रे मानली जाऊ लागली. स्त्रियांच्या राजकारणातील सहभाग स्त्री प्रश्नापुरता केंद्रीत झाला.

सामाजिक चळवळी व राजकारण हळूहळु वेगळे पडत गेले. महाराष्ट्रातील १९८०-९० दशकात राजकारणाची दिशा बदलली. शेती, गिरणी, कामगार, विकास, दळणवळण, वेगळा विदर्भ, बेळगांव हे ठोस उत्तर नसणारे प्रश्न निवडणुकीच्या काळात मांडले जाऊ लागले. या प्रश्नाच्या बुरख्याआड जाती-धर्माचे प्रश्न पुढे आले. या राजकीय बदलाच्या

काणखंडात स्त्रियांच्या प्रश्नाला, मताला व भूमिकेला स्थान नव्हते. पुढे महाराष्ट्राच्या राजकारणात पंचायत राजव्यवस्थेसाठी स्त्रियांसाठी ५० टक्के आरक्षण लागु झाले. ग्रामीण व शहरी भागातील राजकारणाचा चेहरा-मोहरा बदलला.

महाराष्ट्रातील वर्तमानकालीन स्त्री नेतृत्व :

सध्याच्या महाराष्ट्रात तरूण स्त्री नेतृत्व पुढे आले. सुप्रिया सुळे, पंकजा मुंडे, पूनम महाजन, हीना गावीत, रक्षा खडसे, भावना गवळी, प्रीतम मुंडे, प्रिया दत्त, प्रणिती शिंदे आहेत. परंतु त्यांची राजकारणातील ओळख मर्यादित आहे. त्याचबरोबर रजनीताई पाटील, अनिता चव्हान, डॉ. निलम गोरे, प्रा. फौजिया खान, विमल मुंदडा, मुन्निला मोराळे, मीरा रेंगे, सुर्यकांता पाटील, यशोमती ठाकूर, नवनीत राणा, पुष्पा आत्राम यातील बऱ्याच स्त्रियांची ओळख पद, पक्ष आणि घराण्यापुरतीच आहे. एक स्वतंत्र स्त्री म्हणून ओळख तयार झाली नाही. निवडणुकीत मिळविलेले यश हीच त्यांची ओळख आहे. सक्षम नेतृत्व देण्याची क्षमता अशी ओळख आहे. सक्षम नेतृत्व देण्याची क्षमता अशी ओळख तयार व्हायची आहे.

महाराष्ट्रातील राजकीय क्षेत्रातील महिलांच्या सहभागाचा विचार केल्यास महिलांचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. सध्या डॉ. शोभा बच्छाव, रंजना कुल, कमल ढोले पाटील, शोभा फडणवीस, रेखा खेडकर या धडाडीने काम करीत आहेत. राजकारणासारख्या डावपेचाच्या क्षेत्रात यशस्वीपणे वाटचाल करीत आहे. त्यांनी आपल्या कर्तुत्वाने महाराष्ट्राच्या राजकारणात एक वेगळे स्थान प्राप्त केले आहे.

निष्कर्ष :

१. देशाच्या व राज्याच्या राजकारणात महिलांचा सहभाग वाढला आहे.
२. महाराष्ट्राच्या राजकारणात महिला प्रस्थापित राजकीय नेत्याच्या वारसदार आहेत.
३. सर्वसामान्य महिला नेतृत्व पुढे आले नाही.
४. सर्वसामान्य महिलांचा राजकीय सहभाग वाढविणे गरजेचे आहे.
५. देशाच्या प्रगतीसाठी महिला सक्षम झाला पाहीजे यासाठी प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.
६. महिलांना राजकीय सबलीकरणाकरिता जनजागृती कायदे, प्रसारमाध्यमाव्दारे जागृती, कायद्याव्दारे संरक्षण व विकास करणे गरजेचे आहे.
७. ग्रामीण भागातील सर्वांगीण सदस्यांची सोडवणुक महिलांच्या नेतृत्वामुळे शक्य झाली आहे.

सारांश :

आधीच्या काळातील स्त्री नेतृत्व समाजकारणाकडून राजकारणाकडे तर आताचे स्त्री नेतृत्व राजकीय नाम मिळविण्यासाठी समाजकारण करते. त्यामुळे त्यांचा प्रवास सोयीस्कररित्या राजकारणातून समाजकारणाकडे जाताना दिसत आहे. पुर्वीच्या स्त्री नेतृत्वाने विचारप्रणाली, तत्व, धारणा यांच्या आधारावर राजकारणात प्रवेश केला तर आधुनिक नेतृत्वासाठी पक्षप्रणाली हीच विचारप्रणाली आहे आणि पक्षाची उद्दिष्टये साध्य करणे हाच त्यांच्या राजकारणाचा हेतू दिसतो. परिणामी समाजाचा विचार हा दुय्यम ठरतो. वेगवेगळया पातळीवर काम करीत असतांना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करण्यापेक्षा केंद्रामध्ये संसद सदस्य म्हणून किंवा महिला विकास, बालकल्याण असे खाते मिळविणे हेच उद्दिष्टये आहे. निवडणुकीतील यशामुळे प्रसिध्दी मिळालेल्या या स्त्रिया राजकारणातील पद आणि त्यांच्या घराण्याची किंवा पक्षाची सत्ता गेली तर कदाचित विस्मरणाच्या पडद्याआड जातील हाच खरा धोका आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

१. माधवी, कवी : महिला कल्याण आणि विकास, विद्या प्रकाशन, नागपूर २००८.
२. भागवत विद्युत : स्त्री प्रश्नांची वाटचाल, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे ३०.
३. रानडे, प्रतिभा : एकोणिसाव्या शतकातील स्त्री प्रश्नांची चर्चा, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे २००५.
४. मुळे, अंजली, गिताली वि. म. : स्त्री चळवळ आणि राजकारण, समतेसाठी सत्तासंघर्ष, लोकवाङ्मय गृह मुंबई.
५. गोखे, निलीमा : समाज आणि महिला, पद्मगंधा प्रकाशन पुणे.
६. देवळाणकर, शैलेन्द्र : समकालीन जागतिक राजकारण, विद्या बुक्स पब्लीकेशन, औरंगाबाद, तिसरी आवृत्ती, २०११.
७. पळसुले, वैभवी : २०१९ स्त्री नेतृत्वाच्या बदलत्या दिशा, चतुरंग (लोकसत्ता), २९ ऑक्टो. २०१९.
८. बडे, विलास : महिला राज, दैनिक लोकसत्ता, १९ मार्च २०१०.

तुमच्या Ph.D. प्रबंधाचे पुस्तकात रूपांतर करून मिळेल, व ते जगभर पोहोचेल...

More Details – 9595560278,





Scientific Journal Impact Factor

CERTIFICATE OF INDEXING (SJIF 2020)

This certificate is awarded to

Bahujan Aadhar
(ISSN: 2278-9308)

The Journal has been positively evaluated in the SJIF Journals Master List evaluation process
SJIF 2020 = 7.675

SJIF (A division of InnoSpace)

Principal
Narayanrao Ram Mahavidyalaya
Baloora

Aadhar Publications For Details www.aadharsocial.com **Price:Rs.500/**
New Hanuman Nagar, In Front Of
Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S) India Pin- 444604
Mob– 9595560278, Emial: aadharpublication@gmail.com

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Special Issue- February- 2020
(Vol- 05

Sahakar Maharshi Late Bhaskaarrao Shingne
Smruti Arogya and Shikshan Prasarak Mandal's

SAHAKAR MAHARSHI LATE BHASKARRAO SHINGE ARTS COLLEGE,

KHAMGAON, DIST.BULDHANA (M.S.)

(Affilliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati.)



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

• Organizes •

One Day Inter Disciplinary National Conference on

HUMANITIES, CULTURE AND SOCIETY

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue-05, February 2020

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne
Smruti Arogya And Shikshan Prasarak Mandal's

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College,

Khamgaon, Dist.Buldhana

Organizes

One Day Interdisciplinary National Conference On

Humanities, Culture And Society

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

14) Culture and Language: Implications for Second Language Learning
Dr. Pravin R. Waghmare, Akola ||60

15) Voice of the Subaltern in Literature
Rahul P Ghuge, Akola ||65

16) Humanism In Tagore's Literary Work
Rupesh Prakash Rede, Wardha ||67

17) Traumatic Impact of Social Turmoil of the Late 1960 on Black Community ...
Shyam M. Gedam, Amravati ||69

18) Agrarian Crisis In Maharashtra And Its Social Effect
Dr. Chetana Vishwanathrao Donglikar, Beed ||73

19) Mahesh Dattani as a Social Critic with Reference to Play 'Seven Steps ...
Dimple D. Mapari, Akola ||77

20) Subaltern Historiography in Indian Context
Dr. Ashwinkumar Rathod, Buldhana ||80

21) Spiritual Humanism of Tagore: An Influence of Upnishadas
Dr. jagruti S. Vyas, Amravati ||84

22) Knowledge Management System In College Library
Dr. V. P. Ubhale, Wanoja ||88

23) Knowledge Management in Academic Libraries
Pravin Anantrao Joshi, Buldana ||93

24) Mahasweta Devi's Draupadi As A Symbol Of Subaltern Aggression
Shrikant Govindsingh Thakur, Ujjain ||97

25) अनुसूचित जातीच्या महिला व मानवाधिकार
डॉ. दिपक रायोजी दामोदर, वाशीम ||101

26) राजा राममोहन रॉय यांचे सामाजिक चळवळीतील कार्य
डॉ. मंजुषा ह. धापुडकर, अमरावती ||103

27) ब्रिटिशांचे आर्थिक धोरण व त्याचा भारतावर झालेला प्रभाव : एक अध्ययन
प्रा. डॉ. संतोष वनसोड, अमरावती ||105

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27

ब्रिटिशांचे आर्थिक धोरण व त्याचा भारतावर झालेला प्रभाव : एक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड
विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग,
श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय,
बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी सरकारच्या काळात आर्थिक क्षेत्रात व व्यापार क्षेत्रातील अनिर्बंध व्यापाराच्या धोरणाने भारतीय उद्योगधंद्याचा नायनाट झाला व औद्योगिक भांडवलशाहीचे वित्तीय भांडवलशाहीत जे रूपांतर झाले आणि ब्रिटिशांनी भारताचे केलेले अमानुष आर्थिक शोषण व यामुळे भारताची ढासळलेली अर्थव्यवस्था व त्याचा आधुनिक भारतावर झालेला प्रभाव याचे विश्लेषणात्मक अध्ययन करणे प्रस्तुत शोध निबंधाचा मुळ उद्देश आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे खालीलप्रमाणे आहेत-

१. भारतातील आधुनिक साम्राज्यवादाचे स्वरूपाचे अध्ययन करणे.
२. आधुनिक काळातील भारतातील साम्राज्यशाहीच्या गतिमान कारणांचे विश्लेषण करणे.
३. औद्योगिक भांडवलशाहीचे वित्तीय भांडवलशाहीत झालेले रूपांतर, त्याची जडणघडण व तिचे परिणाम समजावून घेणे.
४. ब्रिटिशांनी भारताचे केलेले आर्थिक शोषण व त्याचा भारतीय बाजार अर्थव्यवस्थेवर झालेल्या परिणामांचे विश्लेषण करणे.
५. अनिर्बंध व्यापार व औद्योगीक भांडवलशाही ह्यांच्या शोषणाचा आधुनिक भारतावर झालेल्या परिणामांचे विश्लेषण करणे.

शासन आणि शोषण हे सहप्रवासी असतात.
लॉर्ड कर्झन, १९०५

भारताची एकोणिसाव्या शतकात स्पष्टपणे औद्योगिक भांडवलाच्या साहाय्याने जे शोषण केले जात होते, त्यात जुन्या प्रत्यक्ष लूटमारीच्या मार्गांचा समावेश होताच, फक्त ते अधिक प्रभावी करण्यात येऊन त्यांचे रूपांतर करण्यात आले. सरकारी अधिकारी जिला 'देणगी' म्हणून म्हणत, तिच्या रूपाने लाखो रुपये भारतातून इंग्लंडला पाठवले जात होते व कधी तिला 'घरचा खर्च' (Home Charge) म्हणून नाव देत तर कधी खासगी शिल्लक म्हणून ती पाठवली जाई व तिच्या मोबदल्यात इंग्लंडमधून भारतात काहीच येत नसे. हा कार्यक्रम एकोणिसाव्या शतकात सातत्याने व्यापाराबरोबर चालू होता. विसाव्या शतकात व्यापार थोडा कमी झाला होता तरी लुटीची गती वाढली होती.

१८४८ साली पश्चिम व पूर्व इंडिजमधील साखर व कॉफी ह्यांच्या लागवडीसंबंधात हाऊस ऑफ कॉमन्सने नेमलेल्या सिलेक्ट कमिटीसमोर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे एक डायरेक्टर कर्नल साइवस ह्यांनी वरील 'देणगी' ही दरसाल एक्केचाळीस लाख पौंड असते, असे सांगितले. आयातीपेक्षा निर्यात जास्त असल्याकारणानेच भारत एवढी देणगीची रक्कम देऊ शकला. त्याचप्रमाणे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचा एक व्यापारी एन. अलेक्झांडर याने सिलेक्ट कमिटीला असे निवेदन केले की, इ.स. १८४७ पर्यंत भारताची आयात साठ लाख पौंडांची होती, तर निर्यात नव्वद लाख पौंडांची होती. ह्या दोहोंतील फरक म्हणजे जवळजवळ चाळीस लाख पौंड देणगीच्या स्वरूपाने कंपनीने भारतातून आणले.

१८५१ ते १९०१ ह्या काळात कंपनीच्या अधिकाऱ्यांनी खासगी रीतीने इंग्लंडला पाठविलेले पैसे सोडून, 'घरचा खर्च' म्हणजेच इंग्लंडचा खर्च म्हणून जे पैसे पाठविले ते २.५ दशलक्ष पौंडांवरून १७.३ दशलक्ष पौंडांवर गेले होते, म्हणजेच सातपट वाढले होते. त्यांपैकी दोन दशलक्ष पौंड माल खरेदीच्या नावाने राखण्यात होते. १९१३ ते १९१४ च्या सुमारास ही रक्कम १९.४ दशलक्ष पौंडांवर पोहोचली होती. त्यांपैकी फक्त १.५ दशलक्ष पौंड माल खरेदीकरिता दाखवले होते. १९३३-३४ मध्ये सरकारी हिशोबात इंग्लंडमधील खर्च म्हणून २७.५ दशलक्ष पौंड दाखवण्यात आले होते. त्यांपैकी १.५ दशलक्ष पौंड माल खरेदीसाठी होते. रुपयाच्या हुंडणावळीत झालेला फरक आणि भारतातील वस्तूंच्या किमतीत झालेला सुमार ह्यांचा समन्वय घातल्यावर भारतावर जो बोजा पडला, तो १९१४ च्या किमतीत, तीस दशलक्ष पौंडांचा होता.

१८५१ ते १९०१ ह्या काळात भारताच्या निर्यातीतील वाढ तिप्पट झाली म्हणजेच ती ३.३ दशलक्षांवरून अकरा दशलक्ष पौंडांवर गेली. त्यात मालाच्या किमतीतील वाढ ७.२ दशलक्ष पौंडांवरून २७.४ दशलक्ष पौंड एवढी झाली. तथापि विसाव्या शतकात ही वाढ फार मोठ्या प्रमाणात जलदीने होऊ लागली. १९०१ ते १९१३-१४ ह्या काळात ही वाढ अकरा दशलक्ष पौंडांवरून १४.२ दशलक्ष

पौंडांवर गेली. १९१३-१४ हे वर्ष नेहमीच्या मानाने उताराचे ठरले. लढाईपूर्वीच्या पाच वर्षांचा सर्वसाधारण आढावा घेतला तर वार्षिक जादा निर्यात २२.५ दशलक्ष पौंडांची दिसते. म्हणजेच त्या दहा वर्षांत १९०१ च्या पातळीच्या मानाने दुप्पट भरते.

१९३३-३४ ह्या सालात भारताच्या निर्यातीची वाढ ६९.७ दशलक्ष पौंडांवर पोहोचली. ह्यांपैकी २६.८ दशलक्ष पौंड मालाच्या रूपाने आणि ४२.९ दशलक्ष पौंड पैशाच्या रूपाने पाठवले गेले. ही शेवटची प्रचंड रक्कम भारतातील सोन्याच्या रूपाने इंग्लंडमधील पौंडाच्या किंमतीतील स्थिरता सांभाळण्यासाठी नेण्यात आली. सोपी तुलना करायची तर १९३१-३२ ते १९३५-३६ हा काळ तुलनेसाठी घेऊ. ह्यावरून आयात-निर्यातीतील फरक ५९.२ दशलक्ष पौंड होतो, म्हणजे महायुद्धपूर्व काळातील (१९१०-१४) फरकाच्या तीनपट भरतो आणि १९०१ च्या मानाने पाचपट भरतो.

एकोणिसाव्या शतकाच्या मध्यापासून भारताचे इंग्लंडला दिलेल्या प्रत्यक्ष देणगीतील ही वाढ (ह्यांतून भारतीय निर्यात व आयात ह्यांच्या किमतीच्या पातळीतील फरकामुळे होणारी पिळवणूक सोडून) खाली तक्त्याच्या रूपात दिली आहे, त्यावरून आपल्याला चटकन दिसून येते की, इंग्लंडने आधुनिक काळात भारताच्या पिळवणुकीच्या कार्यक्रमात किती झपाट्याने प्रगती केली. एवढे असले तरी, इंग्लंडने एकूण लुटमार किती केली तिच्या एखाद्या भागापेक्षा अधिक भागाचा अंदाज येत नाही.

भारताकडून इंग्लंडने घेतलेल्या देणगीतील वाढ

(दशलक्ष पौंडांत)

वर्षे Year	१८५१	१९०१	१९१३-१४	१९३३-३४
घरचा खर्च (Home Charge)	२.५	१७.३	१९.४	२७.५
भारतीय निर्यात वाढ (Excess of Indian Exports)	३.३	११.०	१४.२	६९.७

किंवा दर पाच वर्षांचे व्यापाराचे संबंध विचारात घेतल्यास

(दशलक्ष पौंडांत)

पाच वर्षांचा काळ	१८५१-५५	१८९७-१९०१	१९०९-१० ते १९१३-१४	१९३१-३२ ते १९३५-३६
जादा निर्यात	४.३	१५.३	२२.५	५९.२

वरील तक्त्यावरून लूटीत पैशाच्या दृष्टीने किती वाढ झाली ह्यापेक्षा पिळवणुकीची चढती कमान सहज स्पष्ट दिसते. त्यावरून पिळवणुकीच्या पद्धतीतील व तिच्या गुणवत्तेतील फरक उघड होतो.

एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात भारताने इंग्लंडला दिलेल्या देणगीत प्रचंड वाढ झाली आणि ह्या वाढीतूनच विसाव्या शतकातील वाढीचा पाठपुरावा केला गेला. तथापि एकोणिसाव्या शतकातील खुल्या व्यापाराच्या तत्त्वाच्या गोंडस पांघरूणाखाली पिळवणुकीची ही नवीन तंत्रे दबा धरून बसली होती.

एकोणिसाव्या शतकातील खुल्या व्यापारी भांडवलाच्या गरजेसाठी ब्रिटिशांच्या भारतातील धोरणाला नवीन वळण देणे भाग पडले.

पहिली गोष्ट म्हणजे, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी बंद करून कंपनी सरकारऐवजी, ब्रिटिश भांडवलदारांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या ब्रिटिश सरकारचे शासन-यंत्र भारतात चालू करणे भाग पडले. १९३३ च्या चार्टर ॲक्टप्रमाणे हा बदल बऱ्याच प्रमाणात घडवून आणण्यात आला. तथापि त्याची अंमलबजावणी १८५८ मध्ये करण्यात आली. दुसरे असे की, वाणिज्यिक घुसवणुकीसाठी भारताचे मुक्त द्वार संपूर्णतया खुले करणे अगत्याचे होते. ह्यासाठी भारतात रेल्वेमार्गांचे जाळे तयार करणे जरूरी होते. त्याचप्रमाणे रस्त्यांची वाढ व ब्रिटिशांच्या राजवटीत ज्या पाटबंधाऱ्यांकडे संपूर्णपणे दुर्लक्ष केले गेले होते त्यांची सुधारणा करणे, ह्या गोष्टी आवश्यक ठरल्या. त्याचप्रमाणे विद्युतप्रवाहावर चालणारी तारायंत्रे व एक पद्धतीच्या पोस्टाच्या व्यवस्थेची गरज होती. शासनाला लेखनिकांची व दुय्यम दर्जाच्या अधिकाऱ्यांची गरज भासणार होती म्हणून इंग्रजी पद्धतीचे शिक्षण देण्याची व्यवस्था करणे ओघानेच आले. पाश्चिमात्य धर्तीवर बँका उघडणेही भाग पडले.

खरोखर आशिया खंडातील मोठ्या सरकारला सार्वजनिक हिताच्या दृष्टीने ज्या सुधारणा करणे अत्यंत अगत्याचे होते त्यांची जवळजवळ शंभर वर्षे हेळसांड करण्यात आली होती, तथापि पिळवणुकीच्या तंत्राला त्या आवश्यक ठरल्याबरोबर त्यांची योजना करणे अटळ झाले. तरी सुद्धा ज्या सुधारणा करण्यास सुरूवात केली गेली होती, तीसुद्धा एकमार्गी व विषमतोल स्वरूपाची होती. परकीय घुसवणुकीला वाणिज्यिक व राजकीय दृष्टीने अत्यावश्यक एवढ्याच बेताने त्या सुधारणा कार्यवाहीत आणल्या गेल्या आणि त्यासाठी सुद्धा लोकांवर जबरदस्त आर्थिक बोजा टाकण्यात आला.

१८५३ साली भारतीय रेल्वेसंबंधात लॉर्ड डलहौसी याने सादर केलेली टिप्पणी उद्बोधक आहे. तिच्या अनुरोधानेच भारतातील रेल्वेमार्गांच्या वाढीला उत्तेजन देण्यात आले. त्यात ब्रिटिशांच्या तयार मालासाठी भारताची प्रगत बाजारपेठ तयार करणे व ब्रिटनला कच्च्या मालाचा सातत्याने पुरवठा करणे शक्य व्हावे, हे व्यापारी उद्दिष्ट स्पष्ट करण्यात आले होते.

"ह्या सुधारणा करण्यात आल्या तर भारताचा आर्थिक व व्यापारी दृष्टीने एवढा प्रचंड फायदा होईल की, त्याची मला कल्पनाच

करता येत नाही. आज भारत जो सर्वसाधारण कापूस तयार करून इंग्लंडला पुरवतो, त्याची ब्रिटिश व्यापारी वाहवा करतात, तथापि भारतीय कापसाला उत्कृष्ट बंदरे व वाहतुकीची साधने उपलब्ध करून देण्यात आली तर प्रचंड प्रमाणात व उत्कृष्ट दर्जाचा कापूस भारत सहज निर्माण करू शकेल. व्यापारासाठी आवश्यक असलेली प्रत्येक गरज भागवण्यात आली व त्यामुळे भारतात दूरवर पसरलेल्या बाजारपेठांतून सुद्धा युरोपमध्ये तयार झालेल्या मालाला प्रचंड प्रमाणात मागणी येऊ लागली. जगाच्या ह्या भागात नवीन नवीन बाजारपेठा आपणासठी उघडत आहेत व त्यांचा फायदा किती होईल याची शहाण्या लोकांना सुद्धा अंधुक कल्पना करता येणार नाही, मग भविष्यकाळात त्याची किती वाढ होईल, ते कल्पनेनेच ठरवलेले बरे."

तथापि ह्या सुधारणा करण्याच्या कार्यक्रमाचा-विशेषत: रेल्वेमार्गांची वाढ करण्याच्या धोरणाचा- मुख्य हेतू म्हणजे भारतात औद्योगिक भांडवलाची वाणिज्यिक क्षेत्रात घुसवणूक करता यावी, हा होता. त्याचप्रमाणे लोखंड, पोलाद व यांत्रिक मालाला मोठी बाजारपेठ उपलब्ध करून घ्यावी असा त्यात बेत होता, त्यातून एक नवीन योजना निर्माण झाली ती म्हणजे, भारतात ब्रिटिश भांडवलाच्या गुंतवणुकीचा विकास, ही होय.

साम्राज्यशाहीच्या विकासपद्धतीत त्या धोरणाला भांडवली-निर्यात असे म्हणतात. तथापि भारताच्या बाबतीत ह्या घटनेला भांडवली-निर्यात म्हणून संबोधने हा शब्दच्छल ठरेल. कारण ब्रिटनने प्रत्यक्षात जे भांडवल निर्यात केले ते अगदीच थोडे होते. १९१४ पर्यंतच्या काळात फक्त १८५६-६२ हा सात वर्षांचाच काळ असा गेला की नेहमीच्या जादा निर्यातीची जागा जादा आयातीने घेतली व त्यामुळे ब्रिटनला २२.५ दशलक्ष पौंडांचे भांडवल सात वर्षांत निर्यात करावे लागले. १९१४ पर्यंत ब्रिटनने भारतात केलेल्या एकूण ५०० दशलक्ष पौंडांच्या भांडवली गुंतवणूकीच्या मानाने वरील भांडवल-निर्यात फार मोठी नव्हती. वरील काळात जे ब्रिटिश भांडवल कितीतरी पटीने जास्त होते. ह्या कार्यक्रमात ब्रिटिश भांडवल म्हणून ज्या पैशाची भारतात गुंतवणूक करण्यात आली ते भांडवल म्हणजे ब्रिटिशांनी भारतीयांची केलेली लूट होती, तिला 'ब्रिटिश भांडवल' (British Capital) असे नाव देऊन त्याचे कर्जात रूपांतर करण्यात आले व कर्जाचे व्याज व लाभांश (डिव्हिडंड) म्हणून दरवर्षी देणे सुरू झाले. भारतात गुंतवलेल्या ब्रिटिश भांडवलाला लोक ऋण म्हणून समजले जाई. ब्रिटिश अल्पाधिपक्षाचा (ऑलिगार्की) भारतीयांना लागलेला तो गळफासच होता. १८५८ साली ब्रिटिश सरकारने जेव्हा भारतीय शासनव्यवस्था आपल्या हातात घेतली तेव्हा त्यांनी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीकडून सत्तर दशलक्ष पौंडांचे कर्जही आपल्याकडे घेतले. भारतीयांच्या मते ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीने देणगीच्या नावाखाली १५० दशलक्ष पौंडांची लूट नेली होती. ह्याशिवाय भारताबाहेर अफगाणिस्तान, चीन वगैरे देशांबरोबर ब्रिटनने केलेल्या युद्धांचा खर्च म्हणून जो पैसा नेला, तो निराळाच. ह्या सर्व देवघेवींचा साकल्याने विचार करता, ब्रिटन, भारताचे कर्ज देणे लागत होते. तथापि त्यामुळे कर्ज अंगावर घेऊन तो आकडा फुगवण्यास ब्रिटनला काहीच अडचण नव्हती.

ब्रिटिशांच्या शासनात हे लोक-ऋण (पब्लिकेटेड) अठरा वर्षांत सत्तर दशलक्ष पौंडांवरून एकशेचाळीस दशलक्ष पौंडांवर गेले म्हणजेच दुप्पट झाले. १९०० सालापर्यंत ते २२४ दशलक्ष पौंडांवर गेले. १९१३ मध्ये तो आकडा २७४ दशलक्ष पौंड झाला. द्वितीय महायुद्धाच्या वेळी १९३९ मध्ये ते ११७९० दशलक्ष रुपयांवर गेले. अशा रीतीने ब्रिटिशांच्या प्रत्यक्ष शासनाच्या ७५ वर्षांच्या अमदानीत, लोक-ऋण बारापटीपेक्षा जास्त वाढले.

इंग्लंडमधील पौंडाच्या रूपाने ह्या लोक-ऋणात झालेली वाढ भयंकर होती. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीच्या अखेरीस म्हणजे १८५६ मध्ये इंग्लंडमधील कर्ज चार दशलक्ष पौंडाखाली होते. १८६० च्या सुमारास हा आकडा तीस दशलक्ष पौंडांवर गेला. १८८० मध्ये तो ७१ दशलक्ष पौंड झाला. १९०० मध्ये १३३ दशलक्ष पौंड, १९१३ मध्ये १७७ दशलक्ष पौंड आणि १९३९ मध्ये ३५१८ दशलक्ष पौंड झाला.

ह्या लोक-ऋणाची मूळ सुरुवात, लढायांसाठी झालेल्या व इतर खर्चांतून झाली आणि त्यानंतर रेल्वेमार्गांची उभारणी व सामाजिक बांधकामे (PWD) ह्यांवर सरकारने जो खर्च केला, त्याची भर पडली. सुरुवातीचे सत्तर दशलक्ष पौंडांचे लोक-ऋण लॉर्ड वेलस्ली ह्याने केलेल्या लढाया, पहिले अफगाण युद्ध, शिखांबरोबरील युद्ध व १८५७ चा उठाव दडपण्यासाठी झालेला खर्च, ह्यासाठी ब्रिटिश सरकारने उभे केले. त्यानंतरचे सत्तर दशलक्ष पौंडांचे लोक-ऋण, जे ब्रिटिशांनी अठरा वर्षांत दुप्पट फुगविले, त्यापैकी फक्त चोवीस दशलक्ष पौंड सरकारी रेल्वेमार्गांची उभारणी व पाटबंधाऱ्यांची कामे यांवर खर्च झाले होते. बाकीचे सर्व लोक-ऋण ब्रिटिशांनी जे निर्माण केले त्याचा खराखुरा भारताशी काडीएवढाही संबंध नव्हता. कारण ह्यात असल्या अघमनून खर्च दाखविण्यात आले होते की, त्यात भारताचा संबंधही नव्हता. उदाहरणार्थ, लंडनमध्ये तुर्कस्तानच्या सुलतानच्या स्वागतासाठी केलेला खर्च, चीन व पर्शिया येथे स्थापन केलेल्या ब्रिटिश वकिलातींसाठी झालेला खर्च, ॲबिसीनियाबरोबरील झालेल्या युद्धाचा खर्च किंवा भूमध्य समुद्रातील

नाविक दलावर झालेल्या खर्चापैकी काही भाग वगैरे. भारतावर अशा प्रकारचे लोक-ऋण सोयीस्करपणे लादण्यात यावे हा गोष्ट लांछनास्पद आहे आणि अशा किती गोष्टी नमूद कराव्या? भारतातील उठावाचा खर्च; कंपनीचे हक्क ब्रिटिश पार्लमेंटकडे सुपूर्द करण्यात आले, त्यासाठी झालेला खर्च; चीन आणि अॅबीसिनिया ह्यांच्यावरांवर एकाच वेळी केलेल्या युद्धांचा खर्च; ज्याचा भारताशी दुरान्वयेही संबंध नाही असा लंडनमध्ये केलेला खर्च, उदा. इंडिया ऑफिसमधील घरकामासाठी ठेवलेला बायकांचा खर्च किंवा जी लढाऊ जहाजे युद्धात भाग घेण्यासाठी पाठविली होती; पण ज्यांना भाग घ्यावा लागला नाही, अशा युद्धनौकांवर झालेला खर्च, किंवा ज्या भारतीय पलटणी युद्धावर पाठविण्यासाठी त्यांना सहा महिने प्रशिक्षण देण्यात आले त्यांचा खर्च- हे सर्व खर्च, ज्या भारताला प्रतिनिधित्वही नव्हते अशा भारताच्या नावावर लादण्यात आले. तुर्कस्तानच्या सुलतानाने १८६८ साली लंडनला सरकारी भेट दिली, त्याच्या सन्मानार्थ इंडिया ऑफिस (लंडन) येथे नृत्याचा कार्यक्रम सरकारी खर्चाने आयोजित केला होता, त्याचा खर्च भारताच्या नावेच दाखवण्यात आला. इथिंगमधील वेड्याच्या इस्पितळाचा खर्च, झांझिबारच्या शिष्टमंडळाला दिलेल्या देणग्या, चीन व पर्शिया येथील ब्रिटिश वकिलातींचा खर्च, भूमध्य समुद्रावरील नाविक दलाच्या कायम खर्चापैकी काही भाग, आणि इंग्लंड व भारत ह्यांमध्ये टाकण्यात आलेला टेलिग्राफ लाइनचा संपूर्ण खर्च, ह्या सर्व खर्चांचा बोजा भारतीय खजिन्यावर १८७० पूर्वी टाकण्यात आला होता. ब्रिटिश सरकारने भारताचे शासनयंत्र आपल्या ताब्यात घेतल्यापासून पहिल्या तेरा वर्षांत भारतीय महसूल, वर्षाला ३३ दशलक्ष पौंडांवरून ५२ दशलक्ष पौंडांवर गेला, ह्यात आश्चर्य करण्यासारखे काहीच नाही आणि १८६६ ते १८७० मधील तुटीचा आकडा ११.५ दशलक्ष पौंडांवर गेला. १८५७ ते १८६० ह्या दरम्यान भारताला ब्रिटनने कर्ज म्हणून ३०,०००,००० दशलक्ष पौंडांचा आकडा दाखवण्यात आला, आणि हा कर्जाचा बोजा हळूहळू वाढत गेला. त्याचबरोबर भारतीय हिशोबात कावेबाजपणे हातचलाखी करून काटकसर व वित्तीय कौशल्य दाखवल्याबद्दल ब्रिटिश मुत्सद्यांची वाहवा झाली.

रेल्वेमार्गांची वाढ काही सरकारी खर्चाने तर काही खासगी कंपन्यांच्या सहकार्याने करण्यात आली. पुढे पुढे तर ती संपूर्ण सरकारी पैशाने करण्यात आली. ह्यामुळे लोक-ऋण प्रचंड प्रमाणात वाढले. रेल्वेच्या विकासासाठी अशी योजना आखली होती की, ब्रिटिश भांडवलदार जे भांडवल ह्या कामात गुंतवतील त्यांना त्यावर पाच टक्के व्याज मिळावे. ह्याचा परिणाम असा झाला की, पैशाची उधळपट्टी करण्यात आली. १८७२ पर्यंत जो पहिला सहा हजार मैलांचा रेल्वेमार्ग तयार करण्यात आला त्याला शंभर दशलक्ष पौंड खर्च झाला ह्याचाच अर्थ दर मैलाला सोळा हजार पौंड खर्च आला. १८७२ साली भारतीय वित्तव्यवस्थेवर (इंडियन फायनान्सवर) विचार करण्यासाठी पार्लमेंटची जी चौकशी समिती नेमण्यात आली होती, तिला रेल्वेच्या माजी लेखापरीक्षकाने (ऑडिटरने) असे स्पष्टपणे सांगितले की, "आर्थिक गुंतवणूक करणाऱ्या इंग्लिश भांडवलदारावर कडक नियंत्रणे घातली जाणार नाहीत, असे सरकार व भांडवलदार ह्यांच्यामध्ये ठरले होते. हिशोबाचे कागद तयार होईपर्यंत, किती पैसा खर्च झाला, ह्या गोष्टीची कोणालाही कल्पना नव्हती." ह्याच चौकशी समितीला एल्व्यू. एन. मॅसे ह्या भारताच्या माजी अर्थमंत्र्यांने सांगितले की, "प्रचंड रकमांची उधळपट्टी करण्यात आली. कंत्राटदाराला काटकसर करण्याचा इच्छाच नव्हती. सर्व पैसा इंग्लिश भांडवलदारांकडून येत होता आणि जोपर्यंत त्याला, त्याने पुरविलेल्या भांडवलावर पाच टक्के व्याज देण्याचे सरकारने आश्वासन दिले होते, तोपर्यंत, ह्याचे भांडवल हुगळी नदीत फेकले जात होते, किंवा त्याच्या साह्याने बांधकाम केले जात होते, ह्या गोष्टीची त्याला काहीच पर्वा नव्हती. मला वाटते, आजपर्यंत कधीही झाली नसेल अशी उधळपट्टी करून ही कामे केली गेली."

एकोणिसाव्या शतकाच्या अखेरीपर्यंत रेल्वेवर २२६ दशलक्ष पौंड खर्च करण्यात आले त्यामुळे फायदा होण्याऐवजी चाळीस दशलक्ष पौंडांचे नुकसान झाले आणि ते भारतीय अर्थसंकल्पावर (बजेटवर) पडले. विसावे शतक सुरू झाल्यावर रेल्वेमधून फायदा काढण्यात आला आणि १९४३-४४ पर्यंत, पौंडांच्या रूपात रेल्वेला असलेले कर्ज जेव्हा इंग्लंडला परत करण्याचे ठरले, तेव्हा ते दरवर्षी दहा दशलक्ष पौंड ह्या प्रमाणात परत केले गेले. जेव्हा रेल्वे, व चहा, कॉफी आणि रबर यांचे मळे सुरू झाले तेव्हापासून म्हणजे एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात ब्रिटिश भांडवल भारतात झपाट्याने येऊ लागले. ह्याच सुमारास, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे प्रभुत्व संपुष्टात आल्यावर व बँकिंगवरील निर्बंध उठल्यावर, खासगी ब्रिटिश बँकांची भारतात प्रगती होऊ लागली. १८७६ च्या प्रेसिडेन्सी बँक्स ॲक्टमुळे तीनही प्रेसिडेन्सी बँकांना सरकारी संरक्षण मिळून त्यांच्या व्यवहारांना व्यवस्थितपणा आणण्यात आला व पुढे १९२१ मध्ये 'इंपिरियल बँक ऑफ इंडिया' ह्या प्रचंड बँकेत वरील तीनही बँकांचे विलीनीकरण करण्यात आले. भारताबाहेर प्रमुख केंद्र असणाऱ्या चलनविनिमय बँकांचा (एक्सचेंज बँका) व्यवहार वाढीस लागला. चार्टर्ड बँक ऑफ इंडिया, ऑस्ट्रेलिया आणि चीन ह्यांना १८५३ साली सनद (चार्टर) मिळाली. ह्याच साली मर्कंटाईल बँक ऑफ इंडियाला सनद मिळाली. नॅशनल बँक ऑफ इंडिया व हाँगकाँग अॅंड शांघाय बँकिंग कॉर्पोरेशन ह्यांनी भारतात बँकिंगचे व्यवहार वाढवले. त्यांनी प्रेसिडेन्सी बँकांशी सहकार्य करून ब्रिटिश संरक्षणाखाली वित्तव्यवस्था (फायनान्स),

नाविक दलावर झालेल्या खर्चापैकी काही भाग वगैरे भारतावर अशा प्रकारचे लोक-ऋण सोयीस्करपणे लादण्यात यावे हा गोष्ट लांछनास्पद आहे आणि अशा किती गोष्टी नमूद कराव्या? भारतातील उठावाचा खर्च; कंपनीचे हक्क ब्रिटिश पार्लमेंटकडे सुपूर्द करण्यात आले, त्यासाठी झालेला खर्च; चीन आणि अॅबीसिनिया ह्यांच्यावरोबर एकाच वेळी केलेल्या युद्धांचा खर्च; ज्याचा भारताशी दुरान्वयेही संबंध नाही असा लंडनमध्ये केलेला खर्च, उदा. इंडिया ऑफिसमधील घरकामासाठी ठेवलेला वायकांचा खर्च किंवा जो लढाऊ जहाने युद्धात भाग घेण्यासाठी पाठविली होती; पण ज्यांना भाग घ्यावा लागला नाही, अशा युद्धनौकांवर झालेला खर्च, किंवा ज्या भारतीय पलटणी युद्धावर पाठविण्यासाठी त्यांना सहा महिने प्रशिक्षण देण्यात आले त्यांचा खर्च- हे सर्व खर्च, ज्या भारताला प्रतिनिधित्वही नव्हते अशा भारताच्या नावावार लादण्यात आले. तुर्कस्तानच्या सुलतानाने १८६८ साली लंडनला सरकारी भेट दिली, त्याच्या सन्मानार्थ इंडिया ऑफिस (लंडन) येथे नृत्याचा कार्यक्रम सरकारी खर्चाने आयोजित केला होता, त्याचा खर्च भारताच्या नावेच दाखवण्यात आला. इंग्लिशमधील वेड्याच्या इस्पितळाचा खर्च, झांझिबारच्या शिष्टमंडळाला दिलेल्या देणग्या, चीन व पर्शिया येथील ब्रिटिश वकिलातींचा खर्च, भूमध्य समुद्रावरील नाविक दलाच्या कायम खर्चापैकी काही भाग, आणि इंग्लंड व भारत ह्यांमध्ये टाकण्यात आलेला टेलिग्राफ लाइनचा संपूर्ण खर्च, ह्या सर्व खर्चाचा बोजा भारतीय खजिन्यावर १८७० पूर्वी टाकण्यात आला होता. ब्रिटिश सरकारने भारताचे शासनयंत्र आपल्या ताब्यात घेतल्यापासून पहिल्या तेरा वर्षांत भारतीय महसूल, वर्षाला ३३ दशलक्ष पौंडांवरून ५२ दशलक्ष पौंडांवर गेला, ह्यांत आश्चर्य करण्यासारखे काहीच नाही आणि १८६६ ते १८७० मधील तूटीचा आकडा ११.५ दशलक्ष पौंडांवर गेला. १८५७ ते १८६० ह्या दरम्यान भारताला ब्रिटनने कर्ज म्हणून ३०,०००,००० दशलक्ष पौंडांचा आकडा दाखवण्यात आला, आणि हा कर्जाचा बोजा हळूहळू वाढत गेला. त्याचवरोबर भारतीय हिशोबात काबेदाजपणे हातचलाखी करून काटकसर व वित्तीय कौशल्य दाखवल्याबद्दल ब्रिटिश मुत्सद्यांची वाहवा झाली.

रेल्वेमार्गांची वाढ काही सरकारी खर्चाने तर काही खासगी कंपन्यांच्या सहकार्याने करण्यात आली. पुढे पुढे तर तो संपूर्ण सरकारी पैशाने करण्यात आली. ह्यामुळे लोक-ऋण प्रचंड प्रमाणात वाढले. रेल्वेच्या विकासासाठी अशी योजना आखली होती की, ब्रिटिश भांडवलदार जे भांडवल ह्या कामात गुंतवतील त्यांना त्यावर पाच टक्के व्याज मिळावे. ह्याचा परिणाम असा झाला की, पैशाची उधळपट्टी करण्यात आली. १८७२ पर्यंत जो पहिला सहा हजार मैलांचा रेल्वेमार्ग तयार करण्यात आला त्याला शंभर दशलक्ष पौंड खर्च झाला ह्याचाच अर्थ दर मैलाला सोळा हजार पौंड खर्च आला. १८७२ साली भारतीय वित्तव्यवस्थेवर (इंडियन फायनान्सवर) विचार करण्यासाठी पार्लमेंटची जी चौकशी समिती नेमण्यात आली होती, तिला रेल्वेच्या माजी लेखापरीक्षकाने (ऑडिटरने) असे स्पष्टपणे सांगितले की, "अर्थिक गुंतवणूक करणाऱ्या इंग्लिश भांडवलदारावर कडक नियंत्रणे घातली जाणार नाहीत, असे सरकार व भांडवलदार ह्यांच्यामध्ये ठरले होते. हिशोबाचे कागद तयार होईपर्यंत, किती पैसा खर्च झाला, ह्या गोष्टीची कोणालाही कल्पना नव्हती." ह्याच चौकशी समितीला एन्ड्यू. एन. मॅसे ह्या भारताच्या माजी अर्थमंत्र्यांने सांगितले की, "प्रचंड रकमांची उधळपट्टी करण्यात आली. कंत्राटदाराला काटकसर करण्याची इच्छाच नव्हती. सर्व पैसा इंग्लिश भांडवलदारांकडून येत होता आणि जोपर्यंत त्याला, त्याने पुरविलेल्या भांडवलावर पाच टक्के व्याज देण्याचे सरकारने आश्वासन दिले होते, तोपर्यंत, ह्याचे भांडवल हुगळी नदीत फेकले जात होते, किंवा त्याच्या साहाय्याने बांधकाम केले जात होते, ह्या गोष्टीची त्याला काहीच पर्वा नव्हती. मला वाटते, आजपर्यंत कधीही झाली नसेल अशी उधळपट्टी करून ही कामे केली गेली."

एकोणिसाव्या शतकाच्या अखेरीपर्यंत रेल्वेवर २२६ दशलक्ष पौंड खर्च करण्यात आले त्यामुळे फायदा होण्याऐवजी चाळीस दशलक्ष पौंडांचे नुकसान झाले आणि ते भारतीय अर्थसंकल्पावर (बजेटवर) पडले. विसावे शतक सुरू झाल्यावर रेल्वेमधून फायदा काढण्यात आला आणि १९४३-४४ पर्यंत, पौंडांच्या रूपात रेल्वेला असलेले कर्ज जेव्हा इंग्लंडला परत करण्याचे ठरले, तेव्हा ते दरवर्षी दहा दशलक्ष पौंड ह्या प्रमाणात परत केले गेले. जेव्हा रेल्वे, व चहा, कॉफी आणि रबर यांचे मळे सुरू झाले तेव्हापासून म्हणजे एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात ब्रिटिश भांडवल भारतात झपाट्याने येऊ लागले. ह्याच सुमारास, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनीचे प्रभुत्व संपुष्टात आल्यावर व बँकिंगवरील निर्बंध उठल्यावर, खासगी ब्रिटिश बँकांची भारतात प्रगती होऊ लागली. १८७६ च्या प्रेसिडेन्सी बँक्स ॲक्टमुळे तीनही प्रेसिडेन्सी बँकांना सरकारी संरक्षण मिळून त्यांच्या व्यवहारांना व्यवस्थितपणा आणण्यात आला व पुढे १९२१ मध्ये 'इंपिरियल बँक ऑफ इंडिया' ह्या प्रचंड बँकेत वरील तीनही बँकांचे विलीनीकरण करण्यात आले. भारताबाहेर प्रमुख केंद्र असणाऱ्या चलनविनिमय बँकांचा (एक्सचेंज बँका) व्यवहार वाढीस लागला. चार्टर्ड बँक ऑफ इंडिया, ऑस्ट्रेलिया आणि चीन ह्यांना १८५३ साली सनद (चार्टर) मिळाली. ह्याच साली मर्कंटाईल बँक ऑफ इंडियाला सनद मिळाली. नॅशनल बँक ऑफ इंडिया व हाँगकाँग ॲंड शांघाय बँकिंग कॉर्पोरेशन ह्यांनी भारतात बँकिंगचे व्यवहार वाढवले. त्यांनी प्रेसिडेन्सी बँकांशी सहकार्य करून ब्रिटिश संरक्षणाखाली वित्तव्यवस्था (फायनान्स),

वाणिज्य (कॉमर्स) आणि उद्योगधंदे ह्यांवर आपली हुकुमत ठेवली. ईंडियन जॉइन्ट स्टेट बँकेने वरील बँकांना मागे टाकण्याचा प्रयत्न केला तथापि तो यशस्वी झाला नाही. कारण ह्या परदेशी बँकांना काही खास सवलती होत्या. १९१३ च्या सुमारास प्रेसिडेन्सी बँकस् व एक्सचेंज बँक्स ह्या परकीय बँकांकडे एकूण बँकांच्या ठेवींच्या २/३ हिस्सा जमा झाला होता. याउलट ईंडियन जॉईट स्टॉक्स बँक्सकडे १/४ पेक्षाही कमी ठेवी होत्या.

१९९१ साली रॉयल स्टॅटिस्टिकल सोसायटीत सर जॉर्ज पैश ह्यांनी एक लिखाण (पेपर) वाचून दाखवले. त्यात त्याने भारत आणि सिलोन ह्या देशांत १९०९-१० सालांत ब्रिटिशांची भांडवली गुंतवणूक ३६५ दशलक्ष पौंड होती, असे म्हटले आहे. त्या गुंतवणुकीचे तपशीलवार स्वरूप खाली दिले आहे.

(भांडवली गुंतवणूक)	(दशलक्ष पौंडांत)
गव्हर्नमेंट अँड म्युनिसपल	१८२.५
रेल्वेज	१३६.५
प्लँन्टेशन्स् (टी, कॉफी, रबर) (मळे)	२४.२
ट्रेम वेज् (ट्रेम्वा)	४.१
माइन्स (खाणी)	३.५
बँका	३.४
ऑईल (तेल)	३.२
कमीशियल अँड इंडस्ट्रियल (वाणिज्यिक व औद्योगिक)	२.५
फिनेन्स, लँड अँड इनव्हेस्टमेंट (वित्तव्यवस्था, शेती व गुंतवणूक)	१.८
मिसलॅनियस (संकीर्ण)	३.३

वरील माहितीपूर्ण यादीवरून एवढे स्पष्ट होते की, ब्रिटिश भांडवलाच्या भारतातील गुंतवणुकीमुळे, भारतातील आधुनिक उद्योगधंद्यांचा विकास झाल्याचे दिसत नाही. १९१४ च्या महायुद्धापूर्वी भारतात ज्या ब्रिटिश भांडवलाची गुंतवणूक करण्यात आली, त्यापैकी ९७ टक्के सरकार, वाहतुकीची साधने, मळे आणि वित्तीय व्यवस्था ह्यांसाठी खर्च करण्यात आले.

ह्याचाच अर्थ भारतात वाणिज्यिक घुसवणुकीला पूरक अशा क्षेत्रात गुंतवण्यात आले. ह्या मार्गाने कच्च्या मालाचा पुरवठा करणारे एक प्रचंड साधन व तयार ब्रिटिश मालाला एक मोठी बाजारपेठ म्हणून भारताचा उपयोग व्हावा, हा त्यामागील हेतू होता. त्यात भारतातील उद्योगधंद्यांचा विकास व्हावा असा हेतू मुळीच नव्हता.

सर जॉर्ज पैश ह्याने केलेले विधान भीत भीत केलेले होते. त्याने काही सहज न कळणाऱ्या गोष्टी उजेडात आणल्या नव्हत्या. १९१४ पूर्वी भारतात इतर क्षेत्रांत झालेली ब्रिटिश भांडवली गुंतवणूक विचारात घेता एकूण भांडवलाचा आकडा ४५० दशलक्ष पौंडांपर्यंत जातो. आणि 'इकॉनॉमिस्ट'च्या म्हणण्याप्रमाणे तो आकडा ४७५ दशलक्ष पौंड झाला होता, असे दिसते.

आधुनिक भारतात बहुराष्ट्रीय कंपन्यांच्या माध्यमातून भारताचे आर्थिक शोषण दिसून येते. इतिहासाची पुनरावृत्ती होऊ नये याची काळजी घेतली पाहिजे. तरच आर्थिक शोषणाला पायबंद घालता येईल.

उपरोक्त शोध निबंध वरील उद्दिष्टांचे पूर्तता करते.

Consolidated Bibliography :

१. "India Today", Rajani Pam Datt, Trans. Y. N. Devdhar (Indian Council of Historical Research, Delhi.) ISBN : ८१-८९७२४-००-२. Edition : First. २००६, Diamond Publication, Pune-४११०३०.

२. "Report Of The Indian Fiscal Commission" : १९२२, P. २०

३. "Minute On Railways", १८५३. Lord Dalhousie, Governor General of India. १८४८ to १८५६)

४. "The Migration of British Capital to १८५७", L. H. Jenks, P. २२३-२४

५. "Journal of The Royal Statistical Society", Vol. ७४, Part-I, January, १९११, P.१८६.

६. "India and The Gold Standard", १९११. H E. Harvard.

७. Article Titled by the "Our Investment Abroad" Published in "The Economist", on February २०, १९०९.

८. "History of Modern India & Indian Culture", Chief Editor : J. K. Chopra Punjab University, Chandigarh, Edition : २००८, Unique Publishers, M-५१, Lajpat Nagar-II, New Delhi-११००२४. ISBN : ८१-८३५७-०६०-७

९. R. C. Dutt and Dadabhai Naoroji cited the "Drain of Wealth Theory". Naoroji brought it to light in his book "Poverty And Un-British Rule in India". R.C. Dutt blamed the British policies for "Economic History of India"

१०. "COLONIALISM AND INDIAN ECONOMY", In review, by Amiya Kumar Bagchi. Oxford University Press.

❑❑❑

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College, Khamgaon established in the year 2000, caters predominantly to students from rural areas around khamgaon. Accredited with C grade by NAAC in 2016, we realized the need to take up quality enhancement initiatives in all aspects of our institutlional life. Committed to our vision for providing employability skills to students, the college has also started UGC approved vocational degree courses B.VOC affiliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati. Besides UG & PG Course in Library Science, The college has recognized research centers in English & History.





Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh, Tq Dist Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

ISSN 2319 9318

Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History

17-18 January 2020 Special Issue - 101 Vol. II

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors
Dr. B. G. Gaikwad
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Balasaheb Shankarrao Kshirsagar
Head, Department of History
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Sandeep G. Londhe
Department of History
Shivaji College, Hingoli (MS)

Shri Shivaji Shikshan Prasarak Mandal, Hingoli

SHIVAJI COLLEGE, HINGOLI - 431513 (MS)

NAAC Accredited with 'B' Grade

Affiliated to - Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

Organized by - DEPARTMENT OF HISTORY

Sponsored by - ICSSR, New Delhi

TWO DAY NATIONAL SEMINAR

on

CHANGING RELIGIOUS MOVEMENTS IN PRE-MEDIEVAL INDIAN HISTORY

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badn

Certificate

This is to certify that **Dr.Bansod Santosh** Narayanrao Rana College, Badnera has participated in Two Day National Seminar on **Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History** organized by Department of History, Shivaji College, Hingoli Tq.Dist.Hingoli, Maharashtra, India on 17-18 January 2020. He presented research paper entitled **तथागत बुध्द की सामाजिक क्रांती और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासीक, सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन**

Dr.Balasaheb S. Kshirsagar

Dr.Sandeep G. Londhe
Co-convener

Dr.B. G. Gaikwad
Principal

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal			ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139	Special Issue -101 ,Vol. II	Jan. 2020	Peer Reviewerd

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 101 Vol. II

Title of the issue :

Changing Religious Movements in Pre-Medieval Indian History

SHAURYA PUBLICATION

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 300/-

PRINTED BY
Shaurya Offset
Old MIDC , kalamb Road, Latur

EDITION :
17-18 Jan. 2020

PRICE : 300 /-

या अंकाचे सर्व अधिकार प्रकाशकांनी स्वतःकडे राखून ठेवलेले आहेत. लेखाचे प्रकाशन व पुनप्रकाशनाचे अधिकार प्रकाशक आणि संबंधित लेखकाधीन समान असून शोध निबंधातील मते ही संबंधित लेखाच्या लेखकांची वैयक्तिक मते आहेत त्या मताशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139 | Special Issue -101 ,Vol. II | Jan. 2020 | Peer Reviewerd

प्रा.डॉ. शिंदे अनंत नामदेवराव
39. वीर शैव संप्रदाय आणि म. बसवेश्वर — 102
प्रा. आसेगांवकर कैलास कमलाकर
40. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सामाजीक सुधारणा चळवळ — 104
प्रा.डॉ.शिवाजी गाढे
41. मुस्लीम सुफी संतांचे मराठी लेखन — 107
डॉ.शत्रुघ्न जाधव
42. महिलांच्या मानव अधिकाराच्या संवर्धनासाठी करण्यात आलेले अधिनीयम व न्यायालयीन — 109
सक्रीयता : एक अभ्यास
डॉ. डी.ए. पाईकराव
43. जैनधर्म आणि तत्वज्ञान — 112
प्रा.डॉ. नितीन बावळे
44. भारतीय स्वातंत्र्याचे स्वप्न दाखविणारे आद्यक्रांतीकारक - उमाजी नाईक — 115
प्रा.डॉ.गणेश गोविंदराव माने
45. सुफी पंथावर भक्तीमार्गाचा प्रभाव — 117
प्रा.डॉ.अशोक गंगाराम साबणे
46. महात्मा बसवण्णांची धर्मक्रांती : एक चिकित्सा — 119
डॉ. अनिता व्यंकटराव शिंदे
47. संत साहित्याचे धार्मिक चळवळीत योगदान — 121
प्रा. डॉ. श्रीराम मारोतराव कऱ्हाळे
48. मध्यपुर्व काळातील कर्तृत्ववान स्त्रिया — 124
संशोधक. सिंधु लोणकर
49. ऐतिहासिक भक्ती आन्दोलन द्वारा समाज उत्थान — 127
प्रा.वाय.एस.राजपूत
50. "मध्ययुगीन कालखंडातील साहित्य आणि लोकप्रबोधनात्मक जागृती एक — 130
ऐतिहासिक अध्ययन"
डॉ. एन. आर. वर्मा
51. "भक्ति आन्दोलन और महाराष्ट्र धर्म" — 132
डॉ.विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण
52. भारतातील समाज सुधारणांमध्ये विविध संतांचे योगदान : ऐतिहासिक अभ्यास — 137
प्रा.डॉ. नितीन उल्हासराव सराफ
53. संस्कृती संघर्ष- श्रमण और ब्राम्हण — 139
डॉ. मोहन भिसाळ
54. तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक — 142
विश्लेषणात्मक अध्ययन
प्रा. डॉ. संतोष बनसोड

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) - 7. 139 | Special Issue - 101 ,Vol. II | Jan. 2020 | Peer Reviewerd

तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रा. डॉ. संतोष बनसोड
विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग,श्री. नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा (रेल्वे), अमरावती.

ढाई हजार वर्ष पूर्व 563 ईसा पूर्व में सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का उदय भारत की इस पवित्र भूमी पर हुवा। उन्होंने निर्वाण का जो मार्ग मानव मात्र को सुझाया था, वह आज भी प्रासंगिक है। म. बुद्ध का धम्म मानव-मानव के बीच के संबंधों को दर्शाता है, न की ईश्वर और मानव के। गौतम बुद्ध ने तत्कालीन रूढियों और अन्धविश्वासों का खंडन कर एक सहज मानव धर्म की स्थापना की।

बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को नकारा, बुद्ध ने आत्मा के अस्तित्व को नकारा, बुद्ध ने वेद, कर्मकांड इ. को नकारा। बुद्ध ने चमत्कार इ. अलौकिक शक्ती को नकारा। बुद्ध ने वर्णव्यवथा को ध्वस्त किया और प्रज्ञा, शील, करुणा, स्वातंत्र्य, समानता, बंधुत्व, सामाजिक न्याय इ. तत्वों का प्रचार समस्त जीवन भर किया।

483 ईसा पूर्व में 80 वर्ष की आयु में म. बुद्ध का कुशीनारा (उ.प्र.) में महापरिनिर्वाण हुवा। बुद्ध की सही शिक्षा का विश्लेषण करना प्रस्तुत शोध निबंध का मूल उद्देश है।

तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति

ऐतिहासिक दृष्टि से यदि देखा जाएं तो बुद्ध ने कभी भी जाति व्यवस्था के विरोध मे लडाई नहीं लडी। यह बात लोगों को चौकाने वाली हो सकती है, मगर यह सच है। बुद्ध ने कभी भी जाति व्यवस्था के खिलाफ लडाई नहीं लडी क्योंकि बुद्ध के समय जाति व्यवस्था ही नहीं थी। बुद्ध के समय वर्ण थे, वर्ण व्यवस्था थी। लिखित इतिहास उपलब्ध है जो यह दर्शाता है कि बुद्ध की समुची लडाई वर्ण व्यवस्था के खिलाफ में थी। इस इतिहास को भी जानने की जरूरत है कि बुद्ध गणतंत्र प्रणाली की पैदाइश थे।

बुद्ध गणप्रथा और परंपरा की पैदाइश थे। गणतंत्र और गणप्रथा वर्ण व्यवस्था को मान्यता नहीं देते थे। गणतंत्र को माननेवाले जो लोग थे, वो लोग भी वर्ण व्यवस्था को मान्यता नही देते थे। बुद्ध पर आरोप किया जाता है कि बुद्ध क्षत्रिय थे, मगर बुद्ध वास्तव में क्षत्रिय नहीं थे। जो गणतंत्र और गणप्रथा वर्ण व्यवस्था को मान्यता नही देती थी उस गणतंत्र की पैदाइश बुद्ध क्षत्रिय थे, यह किस आधार पर कहा जाएं?

बुद्ध मूलत: वर्ण व्यवस्था के क्यों विरोधी थे? क्योंकि बुद्ध के पहले जो गणतंत्र था उसकी विरासत बुद्ध ने आगे बढाई। वर्ण व्यवस्था का विरोध बुद्ध का नहीं गणतंत्र का है। गणतंत्र की विरासत को बुद्ध ने आगे बढाया। इतिहास यही कहता है। इसलिए यह समझना बहुत जरूरी है कि बुद्ध का संघर्ष जाति व्यवस्था के विरोध में इसलिए नहीं था क्योंकि बुद्ध के समय में 'जाति' थी ही नहीं। बुद्ध के समय में 'वर्ण व्यवस्था' थी इसलिए बुद्ध की समस्त लडाई वर्ण के खिलाफ में थी और वर्ण व्यवस्था के खिलाफ जो लडाई बुद्ध ने लडी उसके आधार पर बुद्ध ने वर्ण व्यवस्था को ध्वस्त किया और देश में **सामाजिक क्रान्ति** हुई।

सामाजिक क्रान्ति का परिणाम

वर्ण व्यवस्था के विरोध में बुद्ध ने जो सामाजिक क्रान्ति की इस सामाजिक क्रान्ति ने भारत के इतिहास में तीन महत्त्वपूर्ण बातें निर्माण की। 1) ज्ञान और विज्ञान में क्रान्ति हुई, 2) जिन्हें वर्ण व्यवस्था ने शूद्र घोषित किया था, नीच घोषित किया था, उन्होंने अपने अंदर राजा और राज्य पैदा किया। मौर्य सम्राट और साम्राज्य इसी क्रांति के तहत पैदा हुआ। 3) स्त्रीयों को पूर्णत: आजाद किया गया। यह तीन बातें सबसे बडे पैमाने पर बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति ने पैदा की। और इस क्रान्ति की वजह से दुनिया के इतिहास में पहली बार इस देश में विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ।

ज्ञान और विज्ञान भारत में पैदा हुआ। शून्य का शोध भारत में लगा। शून्य भारत से अरब में गया और अरब से युरोप में गया। युरोप ने शून्य को आधार बनाकर गणित शास्त्र विकसीत किया। और उस गणित शास्त्र को हमने युरोप से भारत में लाया। आज की जो तकनिकी है वो गणित शास्त्र पर खडी है। बहुत सारे लोगों को लगता है कि शून्य का कोई महत्त्व नही है। मगर उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो अगर शून्य के पहले एक रखो तो कहना पडेगा दस। इसका मतलब जो एक आप ने बाद में रखा उसकी किमत नऊ हो गई।

उस एक की किमत नऊ उस शून्य की वजह से हुई। यह बात जानने और समझने की है कि बुद्ध की जो सामाजिक क्रान्ति हुई उस क्रान्ति की वजह से भारत सारे विश्व में सबसे समृद्ध और शक्तिशाली बन गया था।

बाबा आम्बेदकर ने **"बुद्ध और उनका धम्म"** नामक ग्रंथ (अंग्रेजी में) लिखकर बुद्ध की सही शिक्षा प्रस्तुत की है जो संक्षेप में निम्नप्रकार से है।

बुद्ध के अनुसार हर चीज परिवर्तनशील है। प्रत्येक परिवर्तन का कोई न कोई कारण जरूर होता है। सृष्टी स्वयं भी उत्क्रांत अवस्था से गुजर रही है इसलिये सृष्टी स्वयं भी परिवर्तनशील है। सृष्टी में होने वाला परिवर्तन कैसा होगा यह सृष्टी के घटकों के बीच विद्यमान कार्य-कारण (Cause & effect) संबंधों के अध्ययन से समझा जा सकता है। मनोविज्ञान ने मानसिक घटकों के कार्य-कारण संबंधो को समझकर जीवन के कई क्षेत्रों जैसे शिक्षा, व्यापार, व्यक्तित्व-विकास, असामान्य व्यवहार का उपचार, बच्चों की परवरिश इ. क्षेत्रों में जीवन को बेहतर बनाया है। उसी तरह समाज घटक प्रक्रियाओं के बीच के कार्य-कारण संबंधों को समझ कर समाज को इच्छित दिशा

देकर बहुजनों के समाज-जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। शोषित-बहुजनों के हित और मन के सच्चे सुख को हासिल करना ही धम्म है। "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के सिवा बुद्ध का **'धम्म'** कुछ भी नहीं है। बुद्ध के अनुसार दुख के कारण है इसलिये दुख है। दुख के कारणों को दुर करने से दुख दुर किये जा सकते है। **लालच तथा आसक्ति न सिर्फ शोषण कि मानसिक बुनियाद है बल्की वह दुखों का मुल कारण भी है।**

बुद्ध के अनुसार ये आसक्तियाँ तीन वर्गों मे रखी जा सकती है।

1) लालच, सुख के पीछे भागने की वृत्ति तथा अनावश्यक लगाव। **2)** अज्ञान, अंधविश्वास, झुठी धारणाओं, भ्रमों को अपने मन में पनाह देना, तथा निबुद्धता। **3)** अनिष्टकारी भावनायें जैसे घृणा, क्रोध, चिड़चिडाहट, या किसी के प्रति असहनीयता की भावना।

मन के सच्चे सुख का अपार धन से कोई संबंध नहीं है। एक छोटा बच्चा मिट्टी के खिलौने से खेलकर अपार खुशी हासिल करता है। आपसी प्रेम, विश्वास, सहयोग और त्याग की भावना तथा मानवी मुल्यों को मन में विकसित करके, समाज को समृद्ध करनेवाले जीवन-दर्शन को अपनाकर ही सबको सच्ची खुशी हासिल होती है। इसके विपरीत अपने बीवी-बच्चों, मित्रों, रिश्तेदारों इ. के प्रति अतार्किक अपेक्षायें रखना, उनपर अपनी इच्छा-अपेक्षायें थोपना, उन पर गैरजरूरी अधिकार जताना इ. आसक्ति के प्रकार है जिनसे अंततः दुख ही निर्माण होता है। आसक्ति के पीछे भागने वाला व्यक्ति अंततः अपनी आसक्ति का गुलाम बन जाता है क्योंकि लालच और आसक्ति कम होने की बजाये लगातार बढ़तेही जाती है। इन्सान अपने पास क्या है इसे पहचानने की बजाये अपने पास क्या नहीं है, दुसरे के पास क्या है यही सोचते हुये अभाव में जीता है। प्रतिस्पर्धा करते हुये रातों की नींद और मन का चैन खो देता है।

अपनी आसक्तियों को समझकर उनपर नियंत्रण हासिल करना ही निर्वाण (सच्ची खुशी) को हासिल करना है। इसका मतलब दरिद्रता को निमंत्रण देना या शरीर को प्रताडित करना नही है। बुद्ध के अनुसार शरीर की आवश्यकताओं को पुरा करने जितनी संपत्ति को अर्जित करना हम सबका कर्तव्य है क्योंकि स्वास्थ्य अच्छा रखकर ही आप अपने मन और शरीर को दृढ, मजबूत तथा मस्तिष्क में ज्ञान की ज्योति को सदा जलाये रख सकेंगे।

लालच और आसक्ति "शोषण-व्यवस्था" को जन्म देती है। लालची व्यक्ति इच्छित चीजों को जैसे भी हो हासिल करना चाहते है। शोषक यह तर्क देते है कि वे सक्षम है इसलिये औरों पर हुकुमत (शोषण) करने के हकदार है। जब प्रकृति में अपने आपको जिन्दा रखने के लिये दुसरों का खुन बहाना जरूरी था तब तो **"Survival of the fittest"** इस नियम की सार्थकता थी लेकिन आज संसाधनों की प्रचुरता के युग में इस नियम की कोई सार्थकता नहीं है क्योंकि शोषित मेहनतकश जनता ने ही सुख सुविधा की सारी वस्तुयें बनायी है।

नैतिकता का उद्देश्य तथाकथित "शोषक सबल-सक्षम" लोगों पर मेहनतकश बहुजन जनता के हित में अंकुश लगाना है। इसलिये प्रजातांत्रिक मुल्यों पर आधारित नैतिकता को समाज में विकसित करना बुद्ध के धम्म का मुल उद्देश्य है। जनतंत्र यह सामाजिक व्यवस्था से भी बडी चीज है, वह मन की वृत्ति तथा जीवन-दर्शन है। शिक्षित और संगठित तो शोषक भी है लेकिन शोषक बहुजन समाज को उनके हक देने का नहीं बल्कि उनके हक छिनने का काम करते है। तेज बुद्धी और अच्छे चरित्र का व्यक्ति निरूपद्रवी इन्सान जरूर हो सकता है लेकिन जरूरी नहीं की वो औरों के काम आये ही। अच्छे चरित्र तथा इन्सानियत का दर्द (करुणा) होने वाला व्यक्ति सेवाभावी बन सकता है लेकिन जरूरी नहीं की उसमें जुल्म को मिटाने की सलाहियत होगी ही। **इसलिये प्रज्ञा, शील और करुणा इन तीनों के विकसित हुये बिना नैतिकता खोखली साबित होती है। इन्ही गुणों के विकास से "सामाजिक प्रजातंत्र" विकसित होता है।** हमारे मुलभुत अधिकार कानून द्वारा नहीं बल्कि अधिकारों के अनुरूप नैतिक मुल्य समाज में विकसित होने से ही सुरक्षित होते है। हमारे मुलभुत अधिकारों का विरोध खुद समाज द्वारा किया जाये तो देश का कानुन, संसद और न ही न्याय-व्यवस्था उन अधिकारों को सुरक्षित रख सकती है। मुलभुत अधिकारों का अमेरिका के निग्रो समुदाय को, तथा भारत के अछुतों को क्या उपयोग हुआ है?

इसलिये हर शोषक अपने शोषण के अनुकुल अंधविश्वास समाज में निर्माण करते रहे है। **शोषक की राजकीय सत्ता को भले ही आप नष्ट कर दे लेकिन उनके द्वारा विधाकत किये समाज में बहुजनवाद, या सच्चे सामाजिक लोकतंत्र के बीज उग ही नही सकते।** इसलिये केवल शोषक बदलते रहे है, शोषकों के चेहरे बदलते रहे है लेकिन आम लोगों का शोषण समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि होने वाले परिवर्तन केवल उपरी सतह के रहे है।

जैसी हमारी सोच बनती है वैसा ही हमारा व्यवहार होता है। हमारा मन मस्तिष्क ही हमे अच्छा या बुरा बनाता है इसलिये बहुजन समाज के हितों की बातों को कायम करने के मकसद के प्रति अपने मन मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना ही सदाचार की ओर पहला कदम बढाना है। **इसलिये बुद्ध के अनुसार तर्क से विकसित समझ (प्रज्ञा), अच्छा चरित्र (शील) तथा इन्सानियत के दर्द की अनुभूति (करुणा) इन तीनों का समाज में विकसित होना जरूरी ही नहीं बल्कि यह अनिवार्य है तभी बहुजन समाज के हर घटक को उसका अधिकार मिलने की नैतिक अनिवार्यता समाज में विकसित की जा सकती है। ऐसे ही लोगों से न बिकने वाला, न झुकने वाला और सबके साथ न्याय करने वाला "बहुजन समाज" बन सकता है।**

हमारे मन की भावनाओं के असर से हमारा माहौल कभी अछुता नहीं रह सकता। इसलिये सही दृष्टिकोण रखना, सही उद्देश्य कायम करना, सही संभाषण करना, जीवनयापन का सही तरीका अपनाना, सही दिशा में प्रयत्न करना, सही मानसिकता निर्माण करना, और सही एकाग्रता रखना 'अष्टांग मार्ग' है जिसका पालन करने की सीख बुद्ध ने दी है। अष्टांग मार्ग से जीवन-यापन करना ही निर्वाण (सच्चा सुख) प्राप्त करना है। बुद्ध का उद्देश्य आम इन्सान को सिर्फ शोषण से मुक्त कराना ही नहीं बल्कि उन्हे एक परिपूर्ण जीवन जीने के लिये हर किस्म की जंजीरों से आजाद करना है। बुद्ध ने हमारी आपके इन्सानों का सपना साकार करने की कोशिश की है। बुद्ध ऐसी समाज व्यवस्था चाहते

देकर बहुजनों के समाज-जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। शोषित-बहुजनों के हित और मन के सच्चे सुख का सामंजस्य करना ही धम्म है। "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" के सिवा बुद्ध का **'धम्म'** कुछ भी नहीं है। बुद्ध के अनुसार दुख के कारण है इसलिये दुख है। दुख के कारणों को दुर करने से दुख दुर किये जा सकते है। **लालच तथा आसक्ति न सिर्फ शोषण कि मानसिक बुनियाद है बल्की वह दुखों का मुल कारण भी है।**

बुद्ध के अनुसार ये आसक्तियाँ तीन वर्गों मे रखी जा सकती है।

1) लालच, सुख के पीछे भागने की वृत्ति तथा अनावश्यक लगाव। 2) अज्ञान, अंधविश्वास, झूठी धारणाओं, भ्रमों का अपने मन में पनाह देना, तथा निबुद्धता। 3) अनिष्टकारी भावनाये जैसे घृणा, क्रोध, चिड़चिड़ाहट, या किसी के प्रति अमंगलोपना की भावना।

मन के सच्चे सुख का अपार धन से कोई संबंध नही है। एक छोटा बच्चा मिट्टी के खिलौने से खेलकर अपार खुशी हासिल करता है। आपसी प्रेम, विश्वास, सहयोग और त्याग की भावना तथा मानवी मुल्यों को मन में विकसित करके, समाज को समृद्ध करनेवाले जीवन-दर्शन को अपनाकर ही सबको सच्ची खुशी हासिल होती है। इसके विपरीत अपने बीवी-बच्चों, मित्रों, रिश्तेदारों इ. के प्रति अनावश्यक अपेक्षायें रखना, उनपर अपनी इच्छा-अपेक्षायें थोपना, उन पर गैरजरूरी अधिकार जताना इ. आसक्ति के प्रकार है जिनसे अंततः दुख ही निर्माण होता है। आसक्ति के पीछे भागने वाला व्यक्ति अंततः अपनी आसक्ति का गुलाम बन जाता है क्योंकि लालच और आसक्ति कम होने की बजाये लगातार बढतेही जाती है। इन्सान अपने पास क्या है इसे पहचानने की बजाये अपने पास क्या नहीं है, दुसरे के पास क्या है यही सोचते हुये अभाव में जीता है। प्रतिस्पर्धा करते हुये रातों की नींद और मन का चैन खो देता है।

अपनी आसक्तियों को समझकर उनपर नियंत्रण हासिल करना ही निर्वाण (सच्ची खुशी) को हासिल करना है। इसका मतलब दरिद्रता को निमंत्रण देना या शरीर को प्रताडित करना नही है। बुद्ध के अनुसार शरीर की आवश्यकताओं को पुरा करने जितनी संपत्ति को अर्जित करना हम सबका कर्तव्य है क्योंकि स्वास्थ्य अच्छा रखकर ही आप अपने मन और शरीर को दृढ, मजबूत तथा मस्तिष्क में ज्ञान की ज्योति को सदा जलाये रख सकेंगे।

लालच और आसक्ति "शोषण-व्यवस्था" को जन्म देती है। लालची व्यक्ति इच्छित चीजों को जैसे भी हो हासिल करना चाहते है। शोषक यह तर्क देते है कि वे सक्षम है इसलिये औरों पर हुकुमत (शोषण) करने के हकदार है। जब प्रकृति में अपने आपको जिन्दा रखने के लिये दुसरों का खून बहाना जरूरी था तब तो **"Survival of the fittest"** इस नियम की सार्थकता थी लेकिन आज संसाधनों की प्रचुरता के युग मे इस नियम की कोई सार्थकता नहीं है क्योंकि शोषित मेहनतकश जनता ने ही सुख सुविधा की सारी वस्तुयें बनायी है।

नैतिकता का उद्देश्य तथाकथित "शोषक सबल-सक्षम" लोगों पर मेहनतकश बहुजन जनता के हित में अंकुश लगाना है। इसलिये प्रजातांत्रिक मुल्यों पर आधारित नैतिकता को समाज में विकसित करना बुद्ध के धम्म का मुल उद्देश्य है। जनतंत्र यह सामाजिक व्यवस्था से भी बडी चीज है, वह मन की वृत्ति तथा जीवन-दर्शन है। शिक्षित और संगठित तो शोषक भी है लेकिन शोषक बहुजन समाज को उनके हक देने का नही बल्कि उनके हक छिनने का काम करत है। तेज बुद्धी और अच्छे चरित्र का व्यक्ति निरूपद्रवी इन्सान जरूर हो सकता है लेकिन जरूरी नही की वो औरों के काम आये ही। अच्छे चरित्र तथा इन्सानियत का दर्द (करुणा) होने वाला व्यक्ति सेवाभावी बन सकता है लेकिन जरूरी नही की उसमें जुल्म को मिटाने की सलाहियत होगी ही। **इसलिये प्रज्ञा, शील और करुणा इन तीनों के विकसित हुये बिना नैतिकता खोखली साबित होती है। इन्ही गुणों के विकास से "सामाजिक प्रजातंत्र" विकसित होता है।** हमारे मुलभुत अधिकार कानून द्वारा नही बल्कि अधिकारों के अनुरूप नैतिक मुल्य समाज में विकसित होने से ही सुरक्षित होते है। हमारे मुलभुत अधिकारों का विरोध खुद समाज द्वारा किया जाये तो देश का कानुन, संसद और न ही न्याय-व्यवस्था उन अधिकारों को सुरक्षित रख सकती है। मुलभुत अधिकारों का अमेरिका के निग्रो समुदाय को, तथा भारत के अछुतों को क्या उपयोग हुआ है?

इसलिये हर शोषक अपने शोषण के अनुकुल अंधविश्वास समाज में निर्माण करते रहे है। **शोषक की राजकीय सत्ता को भले ही आप नष्ट कर दे लेकिन उनके द्वारा विधाक्त किये समाज में बहुजनवाद, या सच्चे सामाजिक लोकतंत्र के बीज उग ही नही सकते।** इसलिये केवल शोषक बदलते रहे है, शोषकों के चेहरे बदलते रहे है लेकिन आम लोगों का शोषण समाप्त नही हुआ है क्योंकि होने वाले परिवर्तन केवल उपरी सतह के रहे है।

जैसी हमारी सोच बनती है वैसा ही हमारा व्यवहार होता है। हमारा मन मस्तिष्क ही हमे अच्छा या बुरा बनाता है इसलिये बहुजन समाज के हितों की बातों को कायम करने के मकसद के प्रति अपने मन मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना ही सदाचार की ओर पहला कदम बढाना है। **इसलिये बुद्ध के अनुसार तर्क से विकसित समझ (प्रज्ञा), अच्छा चरित्र (शील) तथा इन्सानियत के दर्द की अनुभूति (करुणा) इन तीनों का समाज में विकसित होना जरूरी ही नही बल्कि यह अनिवार्य है तभी बहुजन समाज के हर घटक को उसका अधिकार मिलने की नैतिक अनिवार्यता समाज में विकसित की जा सकती है। ऐसे ही लोगों से न बिकने वाला, न झुकने वाला और सबके साथ न्याय करने वाला "बहुजन समाज" बन सकता है।**

हमारे मन की भावनाओं के असर से हमारा माहौल कभी अछूता नही रह सकता। इसलिये सही दृष्टिकोण रखना, सही उद्देश्य कायम करना, सही संभाषण करना, जीवनयापन का सही तरीका अपनाना, सही दिशा में प्रयत्न करना, सही मानसिकता निर्माण करना, और सही एकाग्रता रखना 'अष्टांग मार्ग' है जिसको पालन करने को तथागत बुद्ध ने कहा है। अष्टांग मार्ग से जीवन-यापन करना ही निर्वाण (सच्चा सुख) प्राप्त करना है। बुद्ध का उद्देश्य आम इन्सान को सिर्फ शोषण से मुक्त कराना ही नही बल्कि उसे एक परिपूर्ण जीवन जीने के लिये हर किस्म की जंजीरों से आजाद करना है। बुद्ध ने हमेशा आजाद इन्सान का सपना साकार करने की कोशिश की है। बुद्ध ऐसी समाज व्यवस्था चाहते

Narayanrao Bapu Mahavidyalaya

थे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति खुद में जो भी क्षमतायें है उनका विकास करके **"स्व"** के वास्तविकिकरण का आनन्द **(Self Actualization)** अनुभव करेंगे। इसलिये अशोक इ. बौद्ध सम्राटों के शासन में हर व्यक्ति के गुण-कौशल्य को उभारने तथा सामाजिक जीवन को समृद्ध बनाने के प्रयास किये गये, इसलिये अशोक के काल में हर तरह की कलायें विकसित हुई।

दुख की तकलीफ से बचने की प्रेरणा है इसी लिये हम दुख से बचने के लिये सदा प्रयत्नशील रहते है। दुख की संभावना हो न हो तो कुछ भी करने की प्रेरणा नही रहेगी। नेकी-बदी, प्यार-नफरत इ. परस्पर विरोधी चीजों के कारण ही हमारा जीवन परिवर्तनशील है। **वर्चस्व-वृत्ति, शोषण-प्रवृत्ति, मतलब परस्ती, आलस, डर, इ. जन्म से पायी जानेवाली मुलभुत प्रवृत्तियाँ है। जिस तरह हम रोज नहाकर मैल गंदगी से छुटकारा पाकर तरोताजा होते है उसी तरह तर्क की सहायता से सदैव आत्मनिरीक्षण करके हम अपने मन की शोषण-वृत्ती इ. मुलभुत प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रख सकते है, अन्यथा मन में इन समाज-विरोधी वृत्तियों को बढते देर नही लगेगी।** इसलिये बुद्ध ने अपनी बुद्धी-तर्क से अपने मस्तिष्क की आसक्ति, मस्तिष्क में डाले गये धार्मिक - गैरधार्मिक, अंधविश्वासों, अतार्किक प्रेरणा, आसक्तियों, धारणाओं को खोज-समझकर उन्हे त्यागने और खुद में नेक अखलाख (अच्छा चरित्र), इन्सानियत का दर्द, और तर्क से विकसित समझ **(Insight)** विकसित करने को जरूरी बताया है।

सिग्मंड फ्राइड ने भी मनोविश्लेषकों को खुद की अतार्किक अचेतन प्रेरणाओं को समझने की अनिवार्यता जतायी है ताकि वे मनोरोगियों का उपचार करते करते कहीं खुद ही अपनी भावनाओं में उलझ न जाये।

प्रकृति की प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। जब कारण और परिणाम करीब-करीब होते है तब हम उन दोनों के बीच के संबंधो को स्पष्ट रूप से पहचान कर सकते है जैसे आग का जलना और धुयें का निकलना। लेकिन **जब घटना का कारण हमारी नजरों से ओझल रहता है तब हमे वह घटना अद्‌भुत या दैवी शक्ति से घटित हुई जान पडती है।** मानव ने अपनी बुद्धि के सहारे आज तक प्रकृति के अनेक रहस्य खोले है जो हमें कभी अद्‌भुत लगते थे। इसलिये बुद्धि-तर्क के इस्तेमाल से कभी न कभी हम उस घटना का कारण भी जान लेंगे जो आज हमे अचंभित करती है। जादुगरी का व्यवसाय करने वाले जादुगर के कारनामे हमे हैरत में डाल देते है लेकिन जैसे ही उसकी "ट्रीक" (चालाकी) का पता चलता है हमारी हैरानी खत्म हो जाती है। **इसलिये किसी स्पष्ट कारण के अभाव में किसी घटना के पीछे किसी दैवी शक्ति की व्यर्थ ही कल्पना करके उसपर विश्वास कायम करना यानि अपने मन में अंधविश्वास कायम करना है।** जिस चीज को हम सिद्ध ही नही कर सकते उसकी व्यर्थ ही कल्पना करके उसको सच नही मानना चाहिये। इसलिये **ईश्वर पर आधारित धर्म "कल्पना" पर आधारित धर्म है, ऐसे धर्मो ने अंततः अंधविश्वासों की ही निर्मिती की है।**

ईश्वर को किसने बनाया इस का किसी के पास जवाब नही है। सब यह मानकर चलते है कि ईश्वर पहले से ही अस्तित्व में है। जमीन, पथ्थर, आकाश, तारे इ. आप को नजर आते है इसलिये सृष्टि के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये तो आपको कोई भी कठिनाई नही है। **ईश्वर पहले से है ऐसी कोरी कल्पना करने की बजाय "यह सृष्टि पहले से ही अस्तित्व में है" यह बात ज्यादा तर्कपुर्ण लगती है। ज्यादा से ज्यादा कोई इतना ही कह सकता है कि सृष्टि के अस्तित्व का कारण फिलहाल कोई खोज नही पाया है।**

हमें अपनी आँखो से आकाश में जितने तारे दिखायी देते है वह हमारी गॅलेक्सी का मामुली सा हिस्सा मात्र है। हमारी गॅलेक्सी में कई तारे सूर्य से कई गुणा बडे और उससे कई हजार गुणा प्रकाशमान है। प्रकाश की किरण एक वर्ष में जितनी दुरी तय कर सकती है उतनी दुरी को एक प्रकाश वर्ष कहते है। एक प्रकाश वर्ष की दुरी **5,865,696,000,000** मील की होती है। सूर्य गॅलेक्सी के केंद्र मे स्थित है यह मानकर हमारी अपनी गॅलेक्सी के एक छोर से दुसरे छोर का अंतर **60,000** प्रकाश वर्ष में आता है। **(30,000)* 2 = 60,000**यानी हमारी गॅलेक्सी के एक छोर से दुसरे छोर का अंतर **351941760000000000** मील है। एक हजार मील प्रती घंटे की रफ्तार वाले रॉकेट से हमे हमारी गॅलेक्सी के एक छोर से दुसरे छोर तक पहुँचने में **40176,000,000** वर्ष यानी **चालीस हजार एक सौ छहत्तर लाख वर्ष** लग जायेंगे। जैसे सारा समंदर असंख्य रेत के कणों से भरा पडा है उसी तरह सारी कायनात (सृष्टि)असंख्य गॅलेक्सियों से भरी पडी है। जब हमारी गॅलेक्सी एक रेत के कण जैसी है तब आप अन्दाजा लगा सकते है की सारी कायनात कितनी विशाल है? उसकी तुलना में पृथ्वी और उस पर रहने वाले इन्सानों की हैसियत कितनी मामुली है?

इतनी नगण्य हैसियत रखने वाले इन्सानों से मान्यता हासिल करने के लिये, उनसे अपने अस्तित्व को मनवाने के लिये धर्म - ग्रंथों का तथाकथित काल्पनिक ईश्वर इतना परेशान क्यों है? इतना असहाय क्यों है? इससे भी यह साबित हो जाता है की ईश्वर काल्पनिक अंधविश्वास के सिवा कुछ नही है। इसे कई तरह से साबित किया जा सकता है।

हर धर्म का विश्वास है की ईश्वर ने सारे जीव जन्तुओं का निर्माण किया है लेकिन **हकीकत मे जीव जन्तुओं का निर्माण ईश्वर के कारण नही बल्कि प्रकृति में जीव निर्मिती के लिये आवश्यक घटकों तथा विशेष परिस्थितीयों का मौजुद होना है।** दुध को गर्म करके या बहुत अधिक दुध में किंचित सा सोडा डाल देने से दुध फटता ही नही यानी उसमें विशिष्ट जीव-किटाणुओं का विकास होकर दही बन ही नही पाता। दुध में कब जीवन निर्मिती होगी यह ईश्वर के नही आपके हाथ में है क्योंकि आपको इसका **"कार्य-कारण"** संबंध मालुम हो चुका है। **कार्य-कारण** संबंध स्पष्ट होने से ही आजकल अंडों पर बैठने का काम मुर्गियों से नही कराया जाता बल्कि मशीन अंडों से कुछ ही मिनिट में चुजों का निर्माण कर देती है। गर्भ धारण करने में अक्षम स्त्री के अंडकोष को अलग टेस्ट ट्युब में पुरुष शुक्राणु से फलित करके बाद में उसे स्त्री गर्भाशय में पहुँचाकर बच्चे पैदा हो रहे है। पहले पेड-पौधे बीजों से पैदा होते थे। इन्सान ने न सिर्फ पहले पेड को आलों के कलम बनाकर पेडो को उगाना शुरू किया, फिर एक ही पेड पर तरह तरह के गुलाब उगाये, एक ही पेड से तरह तरह के आम उगाये, **"Tissue Culture"** पद्धती से छोटी सी कलम की पोशाक से असंख्य पेड पैदा किये हो। जेनेटिक

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidiciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139 | Special Issue - 101 ,Vol. II | Jan. 2020 | Peer Reviewerd

विज्ञान पैदा होने वाले बच्चे के गुणधर्म तक निर्धारित कर सकता है। समगुणधर्मिय प्रतिरूपी बछडों **(Clones)** को वैज्ञानिक पैदा कर ही चुके है।

इसी तरह जब अनुकूल परिस्थिती और आवश्यक भिन्न-भिन्न रसायनिक घटक उपलब्ध हुये तो अलग-अलग प्रकार के असंख्य एकपेशिय जीवों की निर्मिती हुई है। रोग के जंतुओं को हमारा शरीर प्रतीरोध करता है। लेकिन हमारे पेट में असंख्य कीटाणुओं की बस्ती है। हमारा शरीर इन कीटाणुओं का इसलिये प्रतीरोध नही करता क्योंकि ये कीटाणु हमारे शरीर के लिये आवश्यक विटामिन पैदा करते है। इस तरह जीव यंत्रणा उत्क्रांती की कई यंत्रणाओं से जुडी है। प्रतिकुल माहोल से तालमेल के प्रयासों से शरीर में परिवर्तन होते गये और जीवों की शरीर-यंत्रणा और जटील होती गयी। मानव शरीर-यंत्रणाजटिलतम मानी जाती है।यह जटिलता लाखों-करोडों सालों की उत्क्रांती का नतीजा है। शरीर की प्रणालियों को अपने निरीक्षण और तर्क से समझने के कारण ही मानव ने दिल मे कृत्रिम वाल्व लगाकर, धमनियों के अवरोधों को दुर करके, गुर्दे का प्रत्यारोपण इ. सैकडों तरीकों से शरीर की प्रक्रिया को मौत की बजाय जीवन की ओर मोड दिया है।

अलौकिक शक्ति को नकारने के बुद्ध के तीन उद्देश्य थे। 1) इन्सानों को वे तार्किक-बुद्धि के रास्ते पर लाना चाहते थे, 2) वे इन्सानों को सत्य की खोज के लिये स्वतंत्र करना चाहते थे, 3) उनका मकसद मन के अंधविश्वास को ही समाप्त करना था क्योंकि अंधविश्वास इन्सान की "जानने-समझने" की मुल-प्रवृत्ति की हत्या कर देता है। बौद्धिक-तर्कवाद के सिवा बुद्ध धम्म की शिक्षा में कुछ भी नही बचेगा।

म. ज्योतिराव फुले का मानना है कि मानवता पर आधारीत सारे धर्म ग्रंथ जनता के दुखों के प्रति संवेदनशिल भले इन्सानों ने बनाये है। किसी ईश्वर ने धर्मग्रंथ इ. नही भेजे है। ऐसे भले इन्सानों ने अपनी अभुतपूर्व कामयाबी देखकर कईयों को लगने लगा कि उससे यह सब ईश्वर ही करा रहा है। वह तो जरीया या ईश्वर-दुत मात्र है।

बुद्ध के अनुसार ईश्वर मे विश्वास कायम करना यानि पुजा-अर्चना मे विश्वास कायम करना है जिससे पुजारी वर्ग ही शक्तिशाली होकर उभरता है। पुजारी ही वह धुर्त वर्ग है जिसने अंधविश्वासों की निर्मिती करके व्यक्ति के तार्किक विकास को नष्ट किया है। इसलिये "कल्पनाओं पर आधारित विश्वास" सही रास्ता नही है।

बुद्ध के अनुसार 'आत्मा' के अस्तित्व पर विश्वास करना ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने से भी अधिक खतरनाक है क्योंकि इससे न सिर्फ पंडे पुरोहितों का वर्ग निर्माण होकर अंधविश्वासों की निर्मिती होती है बल्कि आत्मा की कल्पनायें व्यक्ति को जन्म से मृत्यू तक पंडो-पुजारियों के नियंत्रण में कर देती है। इसलिये प्रत्येक धर्म का पुजारी लोगों को बिना कोई तर्क किये आत्मा, ईश्वर इ. के अस्तित्व को मान लेने की शर्त रखता है। स्वर्ग, नर्क, आत्मा पर विश्वास करना याने मन में अंधविश्वास कायम करना है। बुद्ध किसी भी धार्मिक प्रथाओं, उत्सवों तथा कर्म-कांडों के सख्त खिलाफ थे क्योंकि ये कर्मकांड अंधविश्वास के घर या आश्रयस्थान है।

व्यक्ति के स्वभाव मे होने वाले बुनियादी परिवर्तन **(Basic Changes)** से व्यक्ति पुरी तरह बदल जाता है इसलिये यह परिवर्तन व्यक्ति का पुनर्जन्म (बुनियादी परिवर्तन) है। इसमे आत्मा जैसी किसी चीज का प्रश्न ही उपस्थित नही होता। प्रज्ञा, शील, करुणा के विकास के कारण व्यक्ति में होने वाले पुर्ण परिवर्तन को बुद्ध ने पुनर्जन्म माना है **।शरीर और मस्तिष्क के कारण ही हम विभीन्न संवेदनाओं को ग्रहण करते है, विचार, तर्क करते है। मृत्यू के बाद शरीर और मस्तिष्क भी नष्ट हो जाता है। इसलिये मृत्यू के उपरांत किसी भी अनुभूती के होने का प्रश्न ही उपस्थित नही होता। मरने के बाद शरीर के नष्ट होते ही व्यक्ति का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।**

डॉ. आम्बेदकर के अनुसार **मानवता का उद्देश्य पशु-प्रवृत्तियों जैसे कही भी खाना, पीना, सोना, गुस्सा आने पर हिंसा करना, जबरन संभोग करना, दुसरों की वस्तुयें छीनना इ. पर नियंत्रण रखने के लिये नैतिकता, प्रजातांत्रिक मुल्यों पर आधारित व्यवस्था को कायम करके समाज को खुशहाल और समृद्ध बनाना है।** प्रज्ञा, शील और करुणा के विकास से व्यक्ति अपनी पशु प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कायम कर सकता है। समाज को समृद्ध बनाने के लिये यह भी जरूरी है कि हर व्यक्ति को उसके गुणों का विकास करने के लिये उचित खाली समय यानी फुर्सत हासिल हो। ताकि वे अपने उन व्यक्तित्व गुणों और खुबीयों का विकास कर सके जो औरों के काम आते है और समाज को समृद्ध बनाने में मदद देते है। मशीनों के उपयोग से खाली समय उपलब्ध हो सकता है। प्रत्येक जनतांत्रिक समाज का यह कर्तव्य है कि वह अपने हर सदस्य के लिये पर्याप्त खाली समय उपलब्ध कराये।

दरअसल शोषकों ने मशीनों को शोषण और मुनाफाखोरी के साधन के रूप मे इस्तेमाल किया है। इसमे दोष मशीनों का नही बल्कि मशीनों के सामाजिक इस्तेमाल का है। मशीन से काम अगर जल्दी होता है तो कर्मचारी के वास्तविक काम के घंटे कम करके (क्योंकि उत्पाद में तो कमी नही हुयी है) उन्हे अपनी उन खुबीयों के विकास का अवसर देना चाहिये जिससे समाज समृद्ध होता है।

बुद्ध हिंसा के विरोधी थे लेकिन वे न्याय के समर्थक थे और अपने बुनियादी हकों की रक्षा करने, या न्याय प्राप्त करने के लिये जब हिंसा ही एक रास्ता बचा हो तो उन्होने हिंसा को जायज माना है। बुद्ध के अनुसार हमने कभी दुष्ट ताकतों के आगे आत्म-समर्पण नही करना चाहिये फिर चाहे हमे युद्ध ही क्यों ना करना पडे। मगर किया जाने वाला युद्ध व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये नही होना चाहिये।

कठोर दंड या दमनकारी नियमों से समाज में आवश्यक परिवर्तन नही लाये जा सकता। दंड या दमन के डर से व्यक्ति भले ही गलत काम न करें लेकिन जैसे ही उसे गलत काम करके दंड से बचे रहने का अवसर मिलता है वह अपने आपको गलत काम करने से नही रोक पाता। यही हमेशा होता रहा है। **इसलिये शक्ति का उपयोग तत्कालीन होता है। कुछ समय के लिये किसी का दमन भले ही किया जाये**

लेकिन दमन से दोबारा दमन करने की संभावना समाप्त नही होती।धम्म के माध्यम से ही व्यक्ति में मानवतावादी संस्कारो तथा तात्विक मुल्यों को विकसित किया जा सकता है।

वील डुरन्ट के अनुसार बुद्ध के समय राजाओं द्वारा पारंपरिक में रखे गये बड़े बड़े पारितोषिक जीतने के लिये विद्वानों तथा दार्शनिकों में कड़ी प्रतियोगितायें हुआ करती थी जिसमें बाल की खाल निकालने में माहिर विद्वान भाग लेते थे। एक जगह से दुसरे जगह पर घुमते रहने वाले इन लोगों ने अपनेतर्क-कुतर्क से किसी भी बात को सिद्ध करने को अपना पेशा बनाया हुआ था। इसलिये बुद्ध के अनुसार किसी भी शिक्षा को प्रमाण मानने का यह आधार नही है कि उस शिक्षा को किसी धार्मिक किताब से लिया गया है, न ही हमने तर्क की बारीकियों से प्रभावित होना है, न ही उपरी दिखावे से प्रभावित होना है,न ही देखना है कि वे कितने स्वीकार्य है, न ही इस बात पर जाना है कि बतायी जाने वाली बातें सच्ची प्रतीत हो रही है न ही इस बात पर जाना है की बातों को कहने वाले व्यक्ति का ओहदा क्या है। **बल्कि यह देखना है कि बताये जा रहे विश्वास या दृष्टिकोन आम बहुजनों के लिये उपयोगी है या उससे उनका नुकसान होने वाला है?** यानी **"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय"** की कसौटी से बातों की उपयोगिता को जांचना-परखना है।

शोधकों का मकसद शोषण-व्यवस्था को कायम रखना है। सारा शब्दों का जाल, सारा धार्मिक, गैर-धार्मिक दर्शन, तर्कों और कुतर्कों का ताना बाना इसलिये बुना जाता है ताकि बहुजन इसी में उलझकर अपने हकों की बातें भुल जाये। इसका तोड यही है की आप उन्हे अंततः यही सवाल करे कि : "हमारे छीने गये अधिकार हमे वापस करो, हमारा शोषण बन्द करों"। इस बात पर सारा भ्रमजाल टूट जाता है क्योंकि बहुजन अपने हकों की बात अपने दिमाग और ओठों पर नही लाये यही तो उनके इस "ताने-बाने" का मकसद होता है।

बुद्ध के अनुसार किसी सिद्धान्त को मनवाने के लिये उसके निर्माता के नाम के प्रभाव का उपयोग करना पड़े तो वह सच्चा सिद्धान्त या सच्ची सीख नही है। उन्होने खुद की शिक्षा को मानव द्वारा मानव को दिया जाने वाला संदेश बताया और अपना कोई उत्तराधिकारी भी नियुक्त नही किया।

उपरोक्त शील द्वारा नियंत्रित शक्ती ही समाज में नैतिकता स्थापित कर सकती है और इसीसे सच्चा सामाजिक, राजनितिक लोकतंत्र कायम हो सकता है तथा समाज सुखी, समृद्ध और शक्तीशाली बन सकता है।

इसलिये वर्तमान समय में बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति की बहुत जरूरत है।

Consolidated Bibliography

1 Ambedkar, Dr. B. R. "The Buddha And His Dhamma"; Buddha Bhoomi Publication, Nagpur. (Reprinted by The Corporate Body of The Buddha Educational Foundation 11th Floor, 55, Hang Chow S. Rd. Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C. (ENO79-1141.)
2 Encyclopedia of Religion & Ethics, Vol. X.
3 वामन, मेश्राम. "जाति समाज को तोड़ने का वास्तविक हथियार", पृष्ठ क्र.03-05, संस्करण चौथा, प्रकाशक, मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट, 4765/46, तीसरी मंजिल, रैगरपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-05.
4 लभाने, म. वि. आवृत्ती (1982). "बौद्ध तत्त्वज्ञान काळाची गरज", त्रिरत्न प्रकाशन, कृष्ण नगर, नागपूर-27.
5 Ambedkar, Dr. B. R. Vol. 5, P-137.
6 Ibid, P-249-251.
7 Ibid, P-137, 119, 117.
8 David Bergamini.
9 महात्मा फुले. P-501-202.
10 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 11, P-254-255.
11 Ibid, Vol. 11, P-259, 261.
12 Ibid, Vol. 11, P-254.
13 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 9, P-283-284.
14 Ibid, Vol. 11, P-346, Vol. III, P-451.
15 Ibid, Vol. III, P-453.
16 Will Durant, P-417-418.
17 Ambedkar, Dr. B. R., Vol. 11, P-278.
18 The Pali Tripitaka, Pali Texts.
19 Stanford Encyclopedia of Philosophy.
20 Gethin, Rupert, 1998, The Foundations of Buddhism, Oxford University Press.
Access to Insight, Readings in Buddhism.

Principal
Narayanrao [illegible] Mahavidyalaya

Peer Reviewed Referred and UGC
Listed Journal (Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA





Volume-IX, Issue-I
January - March - 2020
Marathi Part - III

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Ajanta Prakashan

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

AJANTA

Volume - IX, Issue - I, January - March - 2020
ISSN - 2277 - 5730
Impact Factor - 6.399 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

प्रा. डॉ. [illegible]

In Recognition of the Publication of the Paper Entitled

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Ajanta Prakashan, Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 8390984760 Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta5050@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor : Vinay S. Hatole

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

MARATHI PART - III

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2019 - 6.399

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

Princ
Narayanrao

CONTENTS OF MARATHI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२५	राष्ट्रसंताच्या खंजरी भजनांद्वारे समाजप्रबोधन **प्रा. गजानन एम. लोहटे**	९५-९७
२६	वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज : एक जीवप्रवास **प्रा. डॉ. हरिचंद्र नांगसू नरेटी**	९८-१००
२७	वंदनीय राष्ट्रसंतानी स्त्रीशक्तीचा घेतलेला शोध व बोध **प्रा. डॉ. कोकिळा अनंतराव गावंडे**	१०१-१०५
२८	राष्ट्रसंतांच्या साहित्यातून डोकावणारी जीवनमूल्ये **सहा. प्रा. डॉ. रमेश एम. राठोड**	१०६-१०९
२९	मराठी साहित्यातील अक्षरलेणे ग्रामगीता **प्रा. रेखा दिगबंर अडाव**	११०-११२
३०	वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे संगीत चिंतन **डॉ. अनिरुध्द खरे**	११३-११५
३१	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी **प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड**	११६-११९
३२	राष्ट्रसंताची भाषा व साहित्यविषयक दृष्टीकोन **प्रा. कार्तिक रामदास पाटील**	१२०-१२३
३३	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांची ग्रामस्वराज्य संकल्पना **प्रा. किशोर चौरे**	१२४-१२८
३४	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे दलित चळवळीतील योगदान **प्रा. प्रफुल एम. राजुरवाडे**	१२९-१३२
३५	तुकडोजी महाराजांचे जीवन शिक्षण **विशाल शिवाजी इंगळे**	१३३-१३७
३६	राष्ट्रसंतांचे स्त्री सबलीकरण व महिलोन्नती विषयक विचार **प्रा. साजिद के. शाह**	१३८-१४३

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

३१. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज व महात्मा गांधी

प्रा. डॉ. संतोष बन्सोड

सारांश

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज एक युगद्रष्टये संत होते. जनमानसात राष्ट्रधर्माची ज्योत पेटविली. त्यानी सर्वसामान्य माणसाच्या वैयक्तिक भावनांना धक्का न लावता त्यांचे मतपरिवर्तन करण्याचा प्रयत्न केला. त्यांच्यात देशभक्तीची प्रेरणा जागृत केली. स्वातंत्र्याच्या चळवळीतील विमुर, आष्टी, यावली, बेनोडा या गावाचा इतिहास यांची साक्ष आहे.

1920 ते 1948 हा कालखंड गांधीयुग म्हणून ओळखला जातो. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजावर गांधीजीच्या सत्य, अहिंसा, समता, मानवता, प्रेम, वैज्ञानिक दृष्टीकोनाचा प्रभाव होता. त्यांच्याच विचाराने 1936 ते 1942 पर्यंत राष्ट्रसंतानी लोकजागृती कार्याला वाहून व पारतंत्र्यात पडलेल्या समाजाला जागृत केले. लोकांना, देशाला स्वातंत्र्य मिळवुन देण्यासाठी प्रेरीत केले. राष्ट्रसंताची भजने युगसंवाद साधणारी होती. राष्ट्रसंत दररोज हजारों लोकांना आपल्या भजन भाषणातून राष्ट्रीयत्वाची दिक्षा देत होते. राष्ट्रसंताचा भजन प्रभाव स्वातंत्र्यापूर्वी होता तसाच स्वातंत्र्यानंतरही होता. प्रत्यक्ष रणांगणार जावून आपल्या खंजिरी भजनाने जवानात जोश निर्माण करणारे राष्ट्रसंत तुकडोजी एकमेव संत होते. राष्ट्रसंतानी आपली ईश्वरभक्ती राष्ट्रभक्तीकडे वळविली. म्हणून त्यांच्या मुखातून राष्ट्रगिते बाहेर येऊ लागले. त्या काळात विदर्भात संत गाडगेबाबांचा 'खराटा' डॉ. पंजाबराव देशमुखांचा शिक्षा विस्तार करणार 'खडू' आणि राष्ट्रसंताची 'खंजेरी' असे समाजजीवनाचा महामंत्र देऊन गेले.

अल्बर्ट आईनस्टॉईन नावाचा तत्वनेता महात्मा गांधीजीबद्दल असे म्हणत असे की, असा हाडामासाचा माणूस या पृथ्वीतलावावर होऊन गेला यावर पुढील पिढयांचा विश्वास बसणार नाही. गांधीजीचे मोठेपण केवळ शब्दात मांडण्याइतके ते मोठे नव्हते तर एकंदर भारताच्या सामाजिक, राजकीय, आर्थिक क्षेत्राच्या जडणघडणीत गांधीजीचे स्थान एकमेव व्दितीय होते.

Keyword : युगदृष्टये, राष्ट्रधर्म, मानवता, खंजिरी भजन, ईश्वरभक्ती, आईन्स्टीन.

महात्मा गांधी व सत्पुरुषसंताचे विचारातील स्थळे

महात्मा गांधीजीवर जॉन रस्कीन यांच्या 'अन्टू द लास्ट' या पुस्तकांचा आणि रशियन विचारवंत टॉलस्टॉय यांचा प्रभाव कायम होता. ग्रामगितेतील 'भू वैकुंठ' या 39 व्या अध्यायात राष्ट्रसंत तुकडोजी लिहीतात, ग्रामराज्याचे रामराज्य। स्वावलंबन हेचि स्वराज्य। बोलिले महात्मा विश्वपूज्य। विकास त्यांचा सुंदर हा– ग्रामगीता.

गरीब–श्रीमंत दारिद्रय रोगराई, पंथ, पक्ष, जातिभेदविरहीत समाजरचना जेथे परकेपनाची भावना नाही. अशी ग्रामरचना असलेले ग्रामराज्य तुकडोजींना अपेक्षीत होते. त्यासाठी त्यांनी परखड व प्रखर विचार मांडले. अन्न, वस्त्र, निवारा, आरोग्य, शिक्षण यासहीत सर्व जीवनाश्ययक वस्तूंची निर्मिती गावातच झाली पाहीजे. यासाठी ग्रामराज्य ही संकल्पना तुकडोजी महाराजांनी मांडली. त्यानी "चल चल अपुल्या गावाला। राहु नको शहराला।" असा संदेश दिला.

Principal
Narayanrao Ranit Mahavidyalaya

गांधीजीने सुध्दा खेडयाकडे चला असा संदेश दिला. त्यासाठी व्यक्तीगत, आध्यात्मिक आणि राजकीय स्वातत्र्याचा विचार मांडून गांधीजीनी रामराज्य संकल्पना मांडली. सत्याग्रह आणि उपोषण या शस्त्राचा वापर आयुष्यभर त्यांनी केला. सर्व कुटुंब ग्राम–राज्य–राष्ट्र विश्वांचे हित ज्यामध्ये अपेक्षीत आहे. त्यासाठी जबाबदारीने वागण्याची अपेक्षा करतात. गांधीजीनी सुध्दा सर्वोदयवादी विचार मांडला. सर्वानी सर्वासाठी झटावे। सर्वाच्या हितात स्वहित पाहावे। हाच सर्वोदयवादी विचार राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज मांडतात. या दोन महापुरूषांचे विचार प्रत्यक्ष अवलंब केल्यास ग्रामराज्य येऊ शकते. सामुदायिक प्रार्थनेच्या माध्यमातून दोन्हीही महापुरूषांनी सर्वधर्मसमभावाची व प्रेमधर्माची चळवळ जनमाणसात रूजविली. प्रेम आणि मानवता हेच दोन श्रेष्ठ धर्म आहे असे त्यांनी सांगितले. आपण 02 ऑक्टोंबर गांधीजीचा जन्मदिवस आंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस तर 30 एप्रील हा तुकडोजीचा जन्मदिवस ग्रामजयंती म्हणून साजरा केला जातो. कारण गाव हा 'विश्वाचा नकाशा' हे महाराजाना अभिप्रेत होते.

गांधी गितांजली नावाच्या पुस्तकात तुकडोजी महाराजांनी गांधीजीच्या जीवनावर 150 भजने लिहून गांधीजीच्या चौफेर व्यक्तीमत्वाचा चौफेर वेध घेतला आहे. गांधीनी आपल्या उभ्या आयुष्यात सत्य, अहिंसा, समता, सत्याग्रह या मूल्यांचा पुरस्कार करून स्वत: जसे निःस्पृह व निःस्वार्थ जीवन जगले. गांधीजीच्या याच मूल्यांचा संदर्भ देत 'सत्य अहिंसा पर मर मिटने। दे निर्भयता मन में। जग–जग चालक पालकदाता' अशी आळवणी करतात. अन्याये पीडा न होवो कोणास। न व्हावा मुंगीलाही त्रास। या गांधीजीच्या हिंसाविषयक मूल्यांचा ग्रामगितेत पुनरूच्चार करत समर्थन करतात.

सेवाग्राम आश्रम व राष्ट्रसंत तुकडोजी

अमरावती गांधीजींना भेटायला म्हणून तुकडोजी महाराज सेवाग्राममध्ये आले आणि महिनाभर राहीले. या दोघाच्या स्नेहांच्या धाग्यातून राष्ट्रभक्तीचे पवित्र वस्त्र विणले गेले.

अमरावती जिल्हयात मौशी तालुक्यात सातपुडा पर्वताच्या पायथ्याशी सालबर्डी नावाचे प्रसिध्द तिर्थक्षेत्र आहे. तिथे महाराजांनी 5 मार्च 1935 ला महायज्ञ केला. प्रचंड प्रतिसाद मिळाला. त्यानंतर तुकडोजी महाराजांची माहिती बापूना देण्यात आली होती. त्यातूनच बापू आणि राष्ट्रसंताच्या समक्ष भेटीचे नियोजन झाले होते. महात्मा गाधीना संतवचनाविषयी आदर होता. संत तुकाराम महाराजांचे काही अभंग त्यांनी इंग्रजीत भाषांतर केले होते. त्यावेळी तुकडोजी महाराजांचे भजन लोकप्रियतेच्या शिखरावर होते. अवघ्या 27 वर्षाचा तरूण राष्ट्रसंत सेवाग्राम आश्रमात दाखल झाला. 14 जुलै 1937 जमनालाल बजाज हे वीर बाबूराव हरकारे, नारायणराव बोडखे अशी मंडळी घेऊन सेवाग्राम आश्रमात दाखल झाली. जमनालाल बजाज यांनी गाधीना राष्ट्रसतांविषयी माहिती दिली. तुम्ही आमच्यासोबत आदिनिवासात थाबा असे सुचविले.

राष्ट्रसत तुकडोजी महाराज सरहदद गाधीसोबत राहीले. सेवाग्राम आश्रमात ते 13 ऑगस्ट 1936 पर्यंत होते. त्यांची ओजस्वी मूर्ती उर्ध्वदृष्टी सेवावृत्ती सोबत एकतारीवर तल्लीनतेने गायीली जाणारी भजने गाधीना मोहीत करून गेले. महात्मा गाधी त्यांना 'बुवा' म्हणायचे. अनेकजन राष्ट्रसताच्या भेटीला यायचे साहजिकच गाधीकडे लोक विचारत असत. तेव्हा गाधीजी लोकाना सागायचे. "बुवा एखादे देहात मे ग्रामसफाई करते होगे" तुकडोजी महाराजाचा मितव्यय, अपरिग्रह, भजनात तल्लीन होणारी वृत्ती सेवावृत्ती पाहुन गाधीनी त्याचा मुक्काम वाढविला. राष्ट्रसंत

Principal

सेवाग्राम आश्रमात सूतकताई करीत होते. त्यांची देवभक्तीला देशभक्तीची दिलेली जोड, स्वावलबी आचरण गांधीना प्रभावीत करून गेली.

राष्ट्रसंतानी सेवाग्राम आश्रमात राहुन समाजसेवा, सहभोजन, सहकार्य, जातपात न मानने, ग्रामसफाई, सर्वधर्मसमभावाने नित्यकम त्यांनी सुरू केले. त्यांच्यातील अशी लक्षणे पाहुन हा एक आपल्याच मार्गावर चालणारा जनकल्याण करणारा अवलिया संत आहे हे गांधीजीनी ओळखले. एकदा राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज भजन तन्मयतेने गात असताना गांधीजीचे मौन व्रत तुटले होते. भजन होते "किस्मत से राम मिला जिनको, उसने यह जगह पायी" राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांच्या भजनाची मोहिनी जबरदस्त होती. गांधीजी त्यांना म्हणत होते की, "महाराज इस भारत देश में सिर्फ धर्म की भाषा करनेवाले बहुत साधु संत है। लेकीन पंथ, पक्ष और सभी संप्रदायको इक्कठा करने का मानवता को आवाज देनेवाला कार्य आपही मन से कर रहे है। ऐसा विश्वास ही गया।" महात्मा गांधीच्या भेटीला येणाऱ्या देश–विदेशातील लोकांना 'ये हमारे तुकडोजी महाराज है। असा परिचय करून देत असत. राष्ट्रसंताचा गांधीनी डॉ. राजेंद्रप्रसाद, पं. नेहरू, सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री, मौलाना आझाद अशा नामवंत व्यक्तीचा परिचय करून दिला.

सेवाग्राम आश्रमात राज प्रार्थना, भजन योग, जनप्रबोधनात्मक कार्य महाराजांनी केले. "लहर की बरखा" हे पुस्तकही लिहीले. एक महिण्याचा कालावधी संपला. या काळात महात्मा गांधी आणि त्यांच्यातील सहवासाच्या स्नेहसंबंधाची गाठ बळकट होत गेली. महाराज मोझरीत गेले. तेथील भाविकांनी भव्य स्वागत केले. तुकारामदादा, मारोतराव कडींकर, शामराव दादा मोकदम मंडळी हजर होती. गांधीजींच्या सहवासातील सर्व वृत्तांत महाराजांनी त्यांना सांगितला. गांधीजी त्यांच्याविषयी म्हणत "गजब का बूवा है, भजन की ही नही, आचरण सहित की भी मोहनी छोड गया। 30 जानेवारी 1948 मध्ये महात्मा गांधीवरती एका माथेफिरूने गोळया झाडल्या. त्यांच्या स्मृतीला अभिवादन करण्यासाठी त्यांच्या राजघाट या स्मृतीस्थळासमोर भजन म्हटले. ते भजन होते "पूरी करो कामना बापू को। तबही किरत बढे आपकी।। त्यांनी अनेक भजनाची मालीका लिहीली. आकाशवाणीच्या कार्यकमात अनेक भजन म्हटले.

निष्कर्ष

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांनी ग्रामविकास ग्रामोध्दार आणि स्वावलंबनाचा मूलमंत्र समाजाला दिला. तर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यांनी स्वच्छता स्वदेशी आणि गावातून विकासाचा मंत्र देत विदर्भाच्या भूमितून स्वराज्याच्या अहिंसक यज्ञाला सुरूवात केली. या दोन्ही महापुरूषांचे विचार समकालीन वाटतात. दोन्ही महापुरूषांनी देशाला महान मूल्ये दिली. या मूल्यांची जपणुक आणि संवर्धन करता आली पाहीजे. नागपूर येथील गांधीबागला ऐतिहासिकता आहे. देशात जेव्हा तणावाचे वातावरण होते. तेव्हा राष्ट्रसंत आठवडाभर येथे मुक्कामी होते. शांतता प्रस्थापित करण्यासाठी वातावरण निर्माण केले. 30 जानेवारी 1953 ला राष्ट्रसंतानी गांधीजीच्या स्मृतीदिनी नागपूरात स्वच्छता केली आहे. 1500 स्वयंसेवकाच्या मदतीने हा तलाव स्वच्छ केला. या ठिकाणी गांधीपुतळा असावा अशी महाराजांची इच्छा होती. वर्तमानात ही इच्छा पूर्ण होताना दिसते.

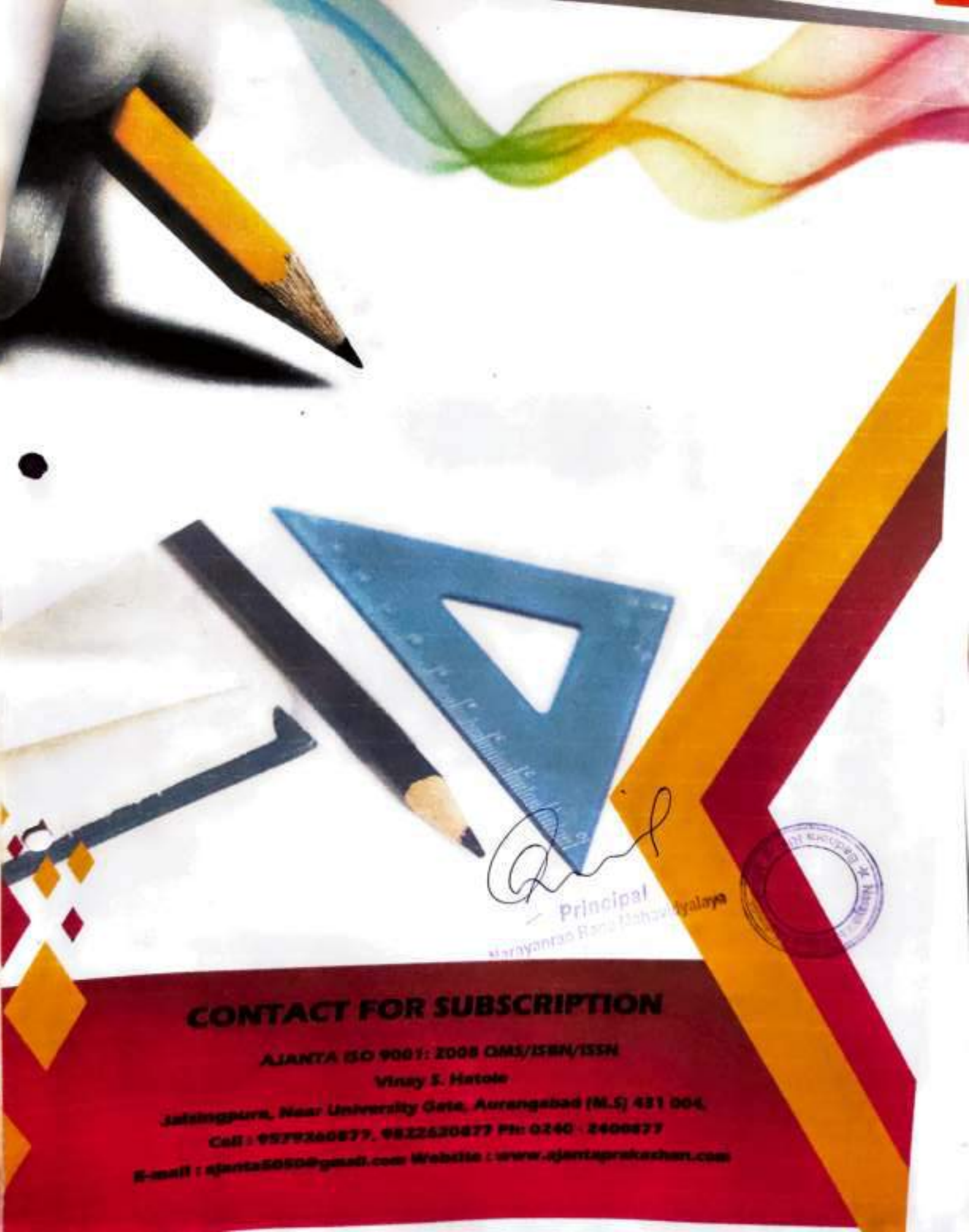
Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

संदर्भ ग्रंथ

1. सिंह ब्रिजेश (संपा) : महाराष्ट्र आणि महात्मा गांधी, माहिती जनसंपर्क, महाराष्ट्र शासन, मंत्रालय मुंबई, 2018.
2. गवाणकर रोहिणी : 1942 च्या आंदोलनातील गांधी मार्गातील तरूण, प्रभात प्रकाशन, मुंबई.
3. शिखरे दा. न. : महाराष्ट्रात महात्माजी भाग 10, महाराष्ट्र गांधी स्मारक निधी, पूणे.
4. रक्षक ज्ञानेश्वर : जनक्रांतीच्या पाऊलवाटा, नाथे प्रकाशन, नागपूर 2017.
5. श्री गुरूदेव : श्री गुरूदेव प्रकाशन विभाग, अमरावती, जानेवारी 2016.
6. रक्षक ज्ञानेश्वर : राष्ट्रसंताची जनचेतना, नाथे प्रकाशन, नागपूर 2001.
7. श्री गुरूदेव (मासिक पत्रिका) : पुण्यतिथी दिवाळी विशेषांक, श्री गुरूदेव प्रकाशन विभाग, अमरावती, 2014.
8. कामडी, खुशालदास : मानवतेचे महान पुजारी : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, वत्स विनायक प्रकाशन नागपूर 2016.
9. पिंजरकर, सुलभा : वंदनीय राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे शैक्षणिक तत्वज्ञान, नम प्रकाशन, अमरावती 2016.



Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Ekona



Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN

Vinay S. Hatole

Jaltimgpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004.

Call : 9579260877, 9822520877 Ph: 0240 - 2400877

E-mail : ajanta2050@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS / OCT-DEC(2018)/VOL-5/ISS-4/A16PAGE NO.88-91
ISSN: 2348- 4349WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

भारतीय संस्कृतीमधील मुलभूत तथ्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन

[1]डॉ. एस. पी. बनसोड
[1]सहयोगी प्राध्यापक,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती महाराष्ट्र

ReceivedNovember05th, 2018; Revised November 25th, 2018; Accepted December30th, 2018

सारांश :

प्रस्तुत संशोधनामध्ये भारतीय संस्कृतीमधील आधारभूत तथ्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन करण्यात आले आहे. भारतीय संस्कृती अनेक प्रकारच्या मुलभूत तथ्यांचे एकत्रीकरण आहे आणि ही तथ्य आज सुध्दा आपल्या संस्कृतीमध्ये दिसून येतात. कालानुरूप संस्कृतिक प्रतिगमनाची प्रवृत्ती समाजव्यवस्थेमध्ये दिसून येते अपरिहार्य असले तरी ज्या मुलभूत तत्त्वावर भारतीय संस्कृतीची निर्मिती झाली ती तत्त्वे आजसुध्दा दृष्टीगोचर होतांना दिसून येतात. शिवाय ज्या बाबी नामशेष होण्याच्या मार्गावर असतांना समाजाच्या बदलत्या जीवनमूल्यामुळे निर्माण झालेल्या समस्यांची सोडवणूक करण्यासाठी या प्राचीन संस्कृतीक तत्त्वांना पुन्हा प्रस्थापित करण्यात येत आहे ही बाब भारतीय संस्कृतीच्या सवंर्धनासाठी महत्वाचा पैलू आहे.

संस्कृती व्यापक स्वरूपामध्ये ज्ञान, कला, साहित्य, विचारधारा, सामाजिक धार्मिक प्रथा, नियम आणि अन्य क्षमता आणि सवयी यांचे मिश्रीत रूप आहे. या सर्व बाबी व्यक्ती आपल्या समाजामध्ये अर्जित करतो. संस्कृती ही एक प्रकारे सामूहिक ज्ञान प्रणाली आहे जी व्यक्तीमध्ये संस्काराची रचना करण्यास मदत करते. आणि या संस्काराच्या माध्यमातुन व्यक्ती आपल्या व्यक्तिगत आणि सामाजिक जीवनामध्ये आदर्श निर्माण करतो.

प्रत्येक व्यक्तीचा आपला एक सामाजिक सांस्कृतिक परीप्रेक्ष्य असतो ज्यामध्ये तो आपला विकास साध्य करतो. व्यक्ती ज्या समाजामध्ये आणि परिवेशामध्ये जीवन जगत असतो ते त्याचे सांस्कृतीक पर्यावरण असते आणि हे संस्कृतीक पर्यावरण व्यक्तीच्या विकासामध्ये महत्वाची भूमीका पार पाडत असते.

संस्कृती ही समाजाचा आत्मा आहे ती व्यक्तीच्या सामाजिक जीवनाचा प्राण आहे यामध्ये मानवी जीवनाचे विविध क्रियाकलाप, आचार विचार तसेच जे महत्वपूर्ण बाबी ज्या मानव समाजामध्ये सार्वत्रिक स्वरूपात असल्या तरी एका विशिष्ट समाजामध्ये त्या विशिष्ट स्वरूपामध्ये दिसून येतात. त्या विशिष्ट समाजामधील व्यक्ती आपल्या जीवनामध्ये त्या उदात्त गुणांवर सर्वाधिक भर देतात कारण हे गुण त्यांच्या समाजाची अमूल्य बाब आहे.

संस्कृती व्यक्तीला संस्कारीत करते आणि या संस्कारामुळे व्यक्ती सामान्य कडून असामान्याकडे वाटचाल करीत असतो. व्यक्ती आणि समाजाचा सर्वांगीण विकास त्यांच्या संस्कृतीमध्ये निहित असतो आणि ही संस्कृती त्यांच्या विकासाची ओळख असते.

संस्कृती आणि संस्कार हे दोन्ही शब्द परस्पर संबंधित आहेत. संस्कृतीला साध्य आणि संस्काराला साधन मानल्या जाते. संस्कृतीमुळे जीवनाच्या पूर्णत्वाच्या बोध होतो. संस्कार एक विधी आधि विधान आहे, जे मनुष्य जीवनाला पूर्णत्वाकडे घेऊन जाते. यावरुण स्पष्ट होते की, संस्कृती ही संसकारांचे संगठन आहे.

यासंदर्भात डॉ. विद्यानिवास मिश्र यांचे विधान महत्वपूर्ण आहे त्यांच्या मते, *"संस्कृति एक प्रकार की संसकारात्मक परिणति है वस्तु हो, मनुष्य हो, मनुष्य का कोई*

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

व्यवहार हो, सबका विशिष्ट उद्देश्य से जब परिष्कार किया जाता है या परिष्कार की संकल्पना की जाती है, तो वह वस्तु, वह मनुष्य या उसका व्यवहार सभी सुसंस्कृत हो जाते है" संस्कृतीची रचना व्यक्तीकडून होते हे जेवढे सत्य आहे तेवढेच संस्कृती व्यक्तीची रचना करते ही बाब सुध्दा सत्य आहे.

संस्कृतीची संकल्पना :

संपूर्ण विश्वामध्ये ज्या बाबी सर्वोत्तम म्हणून ओळखल्या जातात त्या सर्वोत्तम बाबीशी व्यक्तीचा परिचय करून देणे म्हणजे संस्कृती होय. संस्कृती शारीरिक आणि मानसिक क्षमतांचे प्रशिक्षण, दृढीकरण आणि विकास अथवा त्यामुळे निर्माण झालेली अवस्था आहे. जी मन, आचार आणि आवडीची परिष्कृती आहे. सामान्यता समाजामधील सर्व प्रकारचे साहित्यीक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक, अध्यात्मिक तसेच कलात्मक विचार आणि कार्यकलाप यांना संस्कृतीच्या अंतर्गत सहभागी करण्यात येते.

व्यक्ती एक सामाजिक प्राणी असुन व्यक्तिगत आणि सामाजिक प्रगतीसाठी तो सतत प्रयत्न करीत आसतो तसेच आपल्या विचाराच्या माध्यमातुन तो स्वतःला, परिवाराला, समाजाला, समुदायाला, देशाला आणि संपूर्ण विश्वाला कल्याणाच्या मार्गाकडे अग्रेसर करण्याचा प्रयत्न करतो. त्याचे नविन विचार आणि शोध भौतिक आणि अभौतिक जगाची निर्मिती करण्यासाठी प्रवृत्त करतात. इतिहासाच्या आरंभापासूनच व्यक्ती या कर्तव्याचे पालन करून स्वस्थ परंपरांची निर्मीती करीत आला आहे. व्यक्तीचे विचार आणि त्यांव्दारे स्थापित करण्यात आलेली परंपरा, विशिष्ट संस्कृतीला जन्म देते आणि त्याचा विकास करते. थोडक्यात कोणत्या देशातील, समुदायातील, अथवा समाजातील विशिष्ट पुरूषांचे विचार, कार्य, आचार, व्यवहार आणि त्यांच्याकडून स्थापित परंपरा त्या देशाच्या संस्कृतीची निर्मीती करत असते. सामान्यता भौगोलिक दृष्टीने विविध प्रदेशामध्ये राहणा-या व्यक्तींच्या प्रवृत्तीमध्ये सुध्दा एक प्रकारची समानता असते. या प्रदेशामध्ये राहणा-या व्यक्तीमध्ये प्रवृत्तीची ही एकता दिसून येते.

संस्कृतीचे मुलभूत तत्त्व सर्व ठिकाणी आणि कालखंडामध्ये समान भावनांच्या माध्यमातुन अनुप्रित होतात परंतु कालखंड आणि ठिकाण यांच्या विभीन्नतेमुळे त्यांच्यामध्ये भिन्नता दिसून येते. अशा प्रकारे संसकृतीमध्ये वैशम्य दिसून येते विभिन्न देश आणि समुहांचे राहणीमान आणि आचार विचार विभिन्न सांस्कृतीक परंपरांना स्थापित करीत असते. तात्पर्य कोणत्याही देशातील समुदाय अथवा समाजामधील विशिष्ट व्यक्तीचे विचार, आचार व्यवहार, कार्य आणि त्यांच्याकडून स्थापित परंपरा ही त्या देशाची आणि समाजाची संस्कृती होय.

संस्कृतीमधील आधारभूत तथ्य :

- व्यक्ती आपल्या आवडी निवडी सामाजिक आवडी निवडी नुसार निश्चित करतो यावरून स्पष्ट होते की, संस्कृती व्यक्ती आणि समाज यांच्यामधील सर्वकालीन परस्पर संबंध आहे.
- संस्कृती ही मानवी वृत्ती, व्यक्तीचे राहणीमान, आचार विचार, शिष्टाचार, परंपरागत संस्कार आणि जीवन पध्दतीचे एकत्रित प्रतीक आहे.
- संस्कृतीचा संबंध व्यक्तीच्या भूतकाळाशी, त्यांच्या वर्तमानाशी आणि भविष्यकालीन जीवन पध्दतीशी असतो. याला व्यक्तीच्या श्रेष्ठ परंपराशी असलेली त्यांची निष्ठा सुध्दा म्हणतो येते जी व्यक्तीच्या वर्तमान व्यवस्थेला अनुशासित करते आणि भविष्यकाळाला सर्वमंगल भावनांच्या माध्यमातुन अनुप्राणित करते.
- संस्कृतीचा निर्माता मनुष्य आहे आणि मनुष्याची रचना संस्कृती करत असते. मनुष्य आपल्या महान रचनात्मक कार्य आणि विचारांच्या माध्यमातुन सामाजिक परिप्रेक्ष्यामध्ये संस्कृतीच्या तत्त्वाची वृध्दी करत असतो. मनुष्याच्या या योगदानाला समाज आपली स्वीकृती आणि श्रध्दा अर्पन करत असतो. अशाप्रकारे मनुष्य संस्कृती आणि समाज यांचा नियमित संबंध आहे त्यांचा विकास परंस्परांवर निर्भर आहे.
- संस्कृतीचे प्रथम आणि अंतिम ध्येय जीवनाच्या विकासाकरीता आणि प्रगतीकरीता अनुकुल वातावरण निर्माण करणे आहे. ही सार्वजनीक हिताची मानवीदृष्टी आहे जी राष्ट्रीय जीवनाची निर्मीती करत असते.
- संस्कृतीचा सामाजिक जीवनाशी घनिष्ठ संबंध आहे. जेव्हा मनुष्याचा एक समूह अथवा समाज एकाच पध्दतीने काही करीत असेल, एकाच बाबीवर विश्वास ठेवत असेल, एकाच प्रकारचे आदर्श समोर ठेवत असेल, आपल्या पूर्वजांच्या कार्याचा आदर करीत असेल आणि त्यांच्या कार्याचा गौरव करीत असेल तर या बाबी संस्कृतीमध्ये रूपांतरीत होतात. यामुळेच संस्कृतीला मनुष्याच्या सामाजिक जीवनाचा प्राण म्हणून संबोधण्यात आले आहे.

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.com

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

- संस्कृती ही समाजाच्या वैचारीक, सैध्दांतीक आणि व्यवहारीक जीवन शैलीचा असा आरसा आहे ज्यामध्ये आम्ही स्वत:ला पाहू शकतो आणि हा आरसा आमच्या संपूर्ण कार्यामध्ये व्याप्त आहे.

भारतीय संस्कृतीमधील ऐतिहासिक तथ्याचे विश्लेषण :

- भारतीय संसकतीला विशिष्ट असे आधारभूत तत्त्व आहेत जे संस्कृतीच्या स्वरूपाला आणि वैशिष्टयांना प्रतिपादीत करण्याचे कार्य करतात. प्राचीन विद्वनांनी मानवाच्या व्यक्तीगत आणि सामाजिक विकासाकरीत अनेक नियम आणि परंपरांचे निर्धारण केले आहे. त्यांचा उद्देश मानवी जीवनाच्या प्रत्येक अंगाचा त्यामध्ये मानव शरीर, मन आणि आत्म्याचा विकास त्यामाध्यमातुन व्हावा. मानवी जीवनाचा एकांगी अथवा एकपक्षीय विकास त्यांना मान्य नव्हता. त्यांनी एकीकडे भौतिक प्रगतीला प्रोत्साहन दिले त्यामध्ये एकीकडे शरीराचा विकास करण्यासाठी आणि परिवारीक सुखाचा उपभोग घेण्यासाठी विविध साधनांना प्राप्त करण्याचे निर्देश दिले तसेच दुसरीकडे अध्यात्मिक प्रगती आणि धर्म व मोक्ष यांच्याचीही अनिवार्यता सुध्दा प्रतिपादीत केली. भारतीय समाज व्यवस्थेमधील आश्रम व्यवस्था त्याचे उत्तम उदाहरण आहे.
- भारतीय संस्कृतीमध्ये व्यक्तिगत प्रगती आणि विकास याला अंतिम महत्व देण्यात आलेले नाही, तर यांच्याबरोबरच सामूहिक प्रगतीवर सुध्दा भर देण्यात आला आहे. सामूहिक आणि सामाजिक हितासाठी व्यक्ती आणि समूहाचा त्याग यालाही महत्व देण्यात आले आहे. समाजामधील प्रत्येक व्यक्तीला संपूर्ण समाजाच्या भावनाच्या सामूहिक हिताच्या दृष्टीने कार्य केले पाहिजे. परंस्पर सदद्भाव ठेवण्यात यावा. वस्तुत: सामाजिक समानता, सदद्भावना आणि परस्पर विश्वास भारतीय संस्कृतीमधील ऐतिहासिक आधाभूत तथ्य आहेत.
- भारतीय संस्कृती जगातील सर्वात प्राचीन अशी संस्कृती आहे आणि वर्तमान व्यवस्थेमध्ये या संस्कृतीमधील बरी तथ्य सर्वपरी परिचीत आहेत. जगातील अन्य प्राचीन संस्कृतीमध्ये मिस्त्र, बेबीलोन, स्पार्टा, रोम, एथेन्स या देशांची संस्कृती वर्तमान व्यवस्थेमध्ये केवळ इतिहास म्हणून शिल्लक राहलेली आहे. परंतु भारतीय संसकृती आजसुध्दा जिवंत आहे आणि बहुतांश प्रमाणात व्यक्तीच्या आचरणामध्ये व्यवहारामध्ये तीचा प्रत्यय आम्हाला येतो. वर्तमान व्यवस्थेमध्ये मूळ भारतीय संस्कृतीमधील काही तत्त्वाचे अपभ्रंशीकरण झाले आहे त्याठिकाणी पाश्चात्य संस्कृतीला प्रस्थापित करणारा एक वर्ग निर्माण झाला आहे तरी सुध्दा बहुतांश प्रमाणात भारतीय संस्कृतीचा पाया मजबुत आहे आणि दिवसेनदिवस भारतीय संस्कृतीमधील प्राचीन तत्त्वाचे नुतन स्वरूप जगासमोर येते आहे.
- भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये विविध धर्म, जाती, संप्रदाय, वेशभुषा, राहणीमान, प्रथा परंपरा आहेत भौगोलिकदृष्टया सुध्दा त्यामध्ये विविधता आढळून येते असे असतांना सुध्दा विविधतेमध्ये एकता या संस्कृतीमध्ये दिसून येते.
- प्राचीनकाळापासून भारतातील रहिवाश्यांमध्ये एकता विद्यमान होती. परंतु दळणवळण साधनांची मर्यादा आणि त्यांचा अभाव यामुळे संपूर्ण भारतीय परिवेशामध्ये राजिकीय एकता स्थापित झाली नाही परंतु अशोक, समुद्रगुप्त, अल्लाउद्दीन खिलजी, अकबर, औरंगजेब यांनी संपूर्ण देश जिंकुण राजकीय एकता स्थापित करण्याचा प्रयत्न केला. प्राचनीकाळामध्ये भारतीय राजांची इच्छा दिग्विजय करूण चक्रवर्ती सम्राट बनण्याची होती आणि चक्रवर्ती सम्राट तोच होऊ शकत होता ज्याचे साम्राज्य हिमालयापासून समुद्र तटापर्यंत होते. वास्तविकता हीच आहे की, इतके मोठे साम्राज्य भारतीय इतिहासामध्ये केवळ इंग्रजच स्थापित करू शकले आणि इंग्रजांची ही निती आज भारताला प्राप्त झाली यावरूण स्पष्ट होते की, भारतीय हे प्राचीन राजकीय एकतेच्या वातावरणात राहून आलेले आहेत.
- प्राचीन काळापासून भारतीय विचारवतांनी संपूर्ण भारताला एक भौगोलक घटक मानले आले. भारताचा भूखंड उत्तरेपासून हिमालय पर्वत, दक्षिणेपासून कन्याकुमारी, पूर्वेमध्ये बंगालची खाडी आणि पश्चिमेमध्ये अरबी समुद्र या नेसर्गिक सीमामध्ये घेरलेला आहे. पौराणीक कथानुसार प्रसिध्द सम्राट भारत यांच्या नावावरूण या भूभागाचे नाव भारत पडले आहे याव्यतीरीक्त भारतामध्ये राहणा-या सर्व मनुष्यांच्या विचारामध्ये आणि बुध्दिमध्ये एकता दिसून येते जी अत्यंत स्पष्ट आहे.
- प्राचीन भारतीयांनी समाजाची अशी व्यवस्था स्थापित केली ज्यामुळे भारतीय समाजामध्ये एकता टिकून राहील. आश्रम व्यवस्था त्याचे उत्तम उदाहरण आहे

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.com

Principal Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya Narayanrao Rana Mahavidyalaya

ज्यामुळे भारतीय समाजामध्ये अराजकता आणि अव्यवस्था निर्माण झाली नाही संयुक्त परिवाराच्या संकल्पनेने भारतीय समाजाला संगठित ठेवण्याचे कार्य केले आहे ते वाखाण्याजोगे आहे.

- भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये प्राचीन काळापासून अनेक धर्म आणि विचार आहेत या धर्मांची आणि विचारांची विचारधारा यामध्ये परस्पर मतभेद आहे परंतु सर्व धर्म आणि सर्व विचार कर्म सिध्दांतावर विश्वास ठेवतात. या धार्मिक मतभेदानंतर सुध्दा त्यांच्यामध्ये काही प्रमाणात का होईना एकता होती.
- भारतीय समाजव्यवस्थेच्या संपूर्ण इतिहासामध्ये सामाजिक आणि सांस्कृतिक एकता टिकून राहलेली आहे याच एकतेमुळे भारतामध्ये वेळोवेळी होणारे राजकीय परिवर्तनामुळे भारतीय संसकृती अप्रभावीत राहलेली आहे शिवाय जी प्रजाती विदेशामधून भारतामध्ये आली ती सुध्दा भारतीय संस्कृतीमध्ये काही प्रमाणात समाविष्ट झालेली आहे.

निष्कर्ष :

भारतीय संस्कृतीमध्ये प्राचीन काळापासून विविध मुलभूत स्वरूपाची तथ्ये होती या तथ्यांच्या आधारावरच भारतीय संस्कृतीचा सतत विकास होत गेला परंतु संसकृतीच्या विकासाबरोबरच काही प्राचीन बाबी नामशेष झाल्या आहेत आणि काही होण्याच्या मार्गावर आहे याला भारतीयांचा जगाशी आलेला संपर्क, दळणवळणांच्या साधनांचा मोठ्या प्रमाणात झालेला विकास, मिडीयाच्या माध्यमातुन जवळ आलेले जग या बाबी जबाबदार आहेत त्यामुळे निर्माण झालेली भारतीय संसकृतीमधील दरी आणि त्याचे वर्तमान भारतीय समाजव्यवस्थेवर पडत असलेले प्रभाव याची प्रचिती आज समाजाला दिसून येत आहे. एकेकाळी आयुर्वेदाच्या माध्यमातुन होणारे उपचार त्यासाठी लागणार वेळ विचारात घेऊन अॅलोपॅथीला महत्व आले परंतु नंतर अॅलोपॅथीचे शरीरावरील दुष्परीणाम विचारात घेता आज भारतीय समाज पुन्हा आयुर्वेदाकडे वळला आहे. अशा किती तरी बाबी आहे ज्या काळाच्या ओघात नामशेष होण्याच्या मार्गावर असतांना त्यांना नवसंजिवनी या आधुनिक युगामध्ये प्राप्त झाली आहे. तात्पर्य हेच की, भारतीय संस्कृती ही अत्यंत प्राचीन अशी अभेद्य संस्कृती असुन या संस्कृतीच्या माध्यमातुन समाजीक कल्याण, सामाजिक विकास, आणि वैश्विक शांती आणि वैश्विक कल्याणाला हातभार लावण्यात महत्वाची भूमीका आहे अशा स्थितीत भारतीय संस्कृतीमधील प्राचीन मूलभूत तथ्यांचे संगोपन करणे ही वर्तमान व्यवस्थेची गरज निर्माण झाली आहे त्यासाठी समाजामधील प्रत्येक घटकाने त्याकडे विशेष लक्ष देण्याची नितांत गरज आहे.

संदर्भ :

सिंह, दिनकर रामधारी. संस्कृति के चार अध्याय. इलाहाबाद

सिंह एवं यादव. प्राचनी भारतीय कला एवं संस्कृती. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.

कृष्णकुमार. भारतीय संसकृती के आधार तत्त्व. दिल्ली : मिनाक्षी प्रकाशन.

दुबे एच. एन. भारतीय संस्कृती. इलाहाबाद

विद्यालंकार' सत्यकेतु. भारतीय संस्कृती और उसका इतिहास. दिल्ली.

Principal
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rane Mahavidyalaya
Badnera

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

KIJAHSV6 (2019) 129-132

Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences
(A Refereed Blind Peer Review Journal)

प्राचीन भारतीय सामजिक मूल्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन

[1]डॉ. एस. पी. बनसोड
[1]सहयोगी प्राध्यापक,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती महाराष्ट्र

Received: Feb 09, 2019; Revised: Feb 28, 2019; Accepted: Mar 25, 2019

Article Info

ISSN: 2348-4349
Volume -6,Year-(2019)
Issue-01
Article Id:-
KIJAHS 2019/V-6/ISS-1/A26

© 2019 Kaav Publications.

Abstract

प्रस्तुत संशोधनामध्ये प्राचीन भारतीय सामाजिक मूल्यांचे ऐतिहासिक अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्याच्या संदर्भात करण्यात आले आहे. सामाजिक मूल्य हे समाजाच्या गरजा आणि आवश्यकता यांच्या आधारावर समाज स्वतः त्याचा स्विकार करीत असतो यासंदर्भात नियम अथवा कायदा याचा आधार घेऊन कोणतेही सामाजिक मूल्य रूजवता येत नाहीत त्याकरीता समाजाच्या अंतर्मनाची तयारी आवश्यक असते. कोणत्याही समाजाची सामाजिक व्यवस्था ही मूल्य आधारीत आहे नियम आणि कायद्याच्या आधारावर व्यक्तीच्या वर्तनाला लगाम घालता येत असला तरी त्यामध्ये जोरजबरजस्ती करून सामाजिक मूल्यांचे रोपन करता येत नाही ही वस्तुस्थिती आहे. प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्थेपासुन ही सामाजिक मूल्य एका पिढीकडून दुस-या पिढीकडे हस्तांतरीत होत आलेली आहेत. आजच्या आधुनिक भारतीय समाजामध्ये सुध्दा आमच्या प्राचीन भारतीय समाजामधील काही सामाजिक मूल्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षरीत्या दृष्टीगोचर होतांना दिसून येतात आणि या सामाजिक मूल्यांच्या आधारावर आजची समाज व्यवस्था टिकून आहे.

सामाजिक मूल्य व्यक्तीच्या वर्तन व्यवहारावराला प्रभावित करतात. सामाजिक मूल्यांच्या अनुसारच व्यक्ती व्यव्हार करतांना दिसून येतात. सामाजिक मूल्य हे व्यक्ती आणि समाजाच्या व्यवहाराला नियंत्रीत करीत असतात. ज्यामध्ये आई-वडिलांचा आदर हे गुण प्राचनी काळापासून आजतयागत भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये दिसून येत आहेत. अशाच प्रकारची कार्य हे सामाजिक मूल्य होत जे व्यक्ती आणि समाजाच्या व्यवहाराला निर्देशित आणि नियंत्रित करीत असतात. परंतु समाजामधील प्रत्येक व्यक्ती सामाजिक मूल्यांच्या अनुरूपच कार्य करेल असे म्हणता येणार नाही कारण प्राचीन काळापासूनच समाजामध्ये विविध प्रकारचा विरोधाभास दिसून येतो परंतु सामाजिक मूल्य सामाजिक नियंत्रणाचे महत्वपूर्ण कार्य करते हे सुध्दा तेवढेच खरे आहे.

समाजामधील स्वीकृत व्यवहार ज्यांना सर्वाधिक महत्व दिल्या जाते त्यांना सामाजिक मूल्य म्हणून सबोधण्यात येते. सामाजिक मूल्य हे समाजाचे आदर्श आहे त्यावर समाजामधील सदस्य विश्वास ठेवतात, या मूल्यांच्या प्रती श्रध्दा ठेवतात आणि या मूल्यांच्या अनुरूप कार्य करण्यासाठी तत्पर राहतात. कधी कधी ही सामाजिक मूल्यांच्या संदर्भातील तत्परता निर्धारित सिमेच्या पुढे जाऊन व्यक्ती या सामाजिक मूल्यांचे संरक्षण करण्यासाठी आपल्या प्राणाची आहुती देण्यास सुध्दा तयार होतात प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्थेमध्ये

 Copyright 2019 Kaav Publications

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

अशा प्रकारचे संदर्भ दृष्टिगोचर होतात. यावरून स्पष्ट होते की, प्रत्येक व्यक्ती आणि समाजासाठी सामाजिक मूल्यांचे सर्वाधिक महत्व आहे.

सामाजिक मूल्यांमध्ये व्यक्ती अथवा समाजाची अनुभुती, विचार, क्रिया, गुण, विषय, व्यक्ती, समाज, उद्देश आणि साधने यांचा समावेश होतो. प्राचीन भारतामध्ये विविध कालावधीमध्ये वेगवेगळे मूल्य राहलेले आहे. त्यामध्ये ऋग्वैदिक काळामध्ये संयुक्त कुटुंब प्रणाली, एक वर्णीय समाज व्यवस्था होती परंतु उत्तर वैदिक काळामध्ये वर्णव्यवस्थेचा उदय झाला आणि कालांतरणे जाती प्रथा, अस्पृश्यता या बाबींनी समाजामध्ये प्रवेश केला. मुस्लिक आक्रमनानंतर पर्दाप्रथा आणि बाल विवाह या बाबी उदयास आल्या.

प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये आश्रम व्यवस्थेपासून बाल विवाहा पर्यंत अनेक सामाजिक मूल्य विद्यमान होते या मूल्यांचे त्या विशेष काळामध्ये महत्व राहले असेल कारण कोणत्याही मूल्याला महत्वहीन संबोधणे योग्य होणार नाही तात्कालीन परिस्थितीनुसार ती मूल्य अस्तित्त्वात आली आणि टिकून राहली ती सदासर्वकाळ तशीच टिकून राहतील आणि त्याचे महत्व सर्वकालावधीमध्ये सारखेच राहील हे म्हणता येत नाही अशा स्थितीत कोणत्याही सामाजिक मूल्याची सार्वभौमिकता स्थापित करणे योग्य होणार नाही कारण कोणतेही एक सामाजिक मूल्य ज्याला आपण सर्वाधिक प्रमाणात मान्यता देतो परंतु काही कालावधीनंतर सामाजामध्ये या मूल्यांचे तेवढेच महत्व राहील याची शाश्वती देता येणार नाही. परंतु सामाजिक मूल्य ही एक विस्तृत संकल्पना आहे आणि मूल्यांचा आदर्शाशी घनिष्ठ संबंध असतो. त्यामुळे प्राचीन भारतामध्ये विद्यमान सामाजिक मूल्य तात्कालीन सामाजिक सरंचनेचे निर्णायक तत्त्व राहलेले आहेत.

प्राचीन भारताच्या प्रमुख सामाजिक मूल्यामध्ये संयुक्त कुटुंब व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, जाती व्यवस्था, संस्कार, पुरूषार्थ आणि धर्म यांना प्रामुख्याने सहभागी केलेले आहे आणि या मूल्यांपैकी अपवादात्मक परिस्थितीत काही मूल्यांच्या व्यतीरीक्त अन्य मूल्यांना वर्तमान भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये काही आवश्यक परिवर्तनाच्या स्वरूपात लागु करूण पाहता येते. मानवाची मानसशास्त्रीय आणि सामाजिक गरज विचारात घेऊन या मूल्यांची आरंभ करण्यात आला असेल आणि त्यांचा उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था आणि संगठण यामध्ये स्थापित्व प्रस्थापित करणे होते. यामुळे समाजाची प्रगती झाली आणि त्यामुळेच आर्थिक व्यवस्था सुध्दा संदृढ झाली त्यामुळे समाज समृध्द होण्यास मदत झाली. सामाजिक मूल्यामुळेच साहित्य आणि संस्कृतीची सुरक्षा झाली आणि तीच्या प्रगतीला हातभार लागला आहे.

प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये विद्यमान सामाजिक मूल्यांना पुढीलप्रमाणे वर्गीकृत करण्यात येते. त्यामध्ये प्रामुख्याने आर्थिक मूल्य, नैतिक मूल्य, कला विषयक मूल्य, धार्मिक मूल्य आणि तार्किक अथवा सैध्दांतीक मूल्य यांचा समावेश होतो.

प्राचीन भारतातील प्रमुख सामाजिक मूल्य :

वर्ण व्यवस्था भारतीय संस्कृतीचा सामाजिक मुलाधार आहे. वर्णव्यवस्था हिंदू सामाजिक जीवनाच्या दोन व्यवस्थेचे नाव आहे त्यामध्ये प्रथम वर्ण व्यवस्था आणि व्दितीय आश्रम व्यवस्था. यामध्ये वर्णव्यवस्थेच्या अंतर्गत वर्णासाठी निर्धारित आश्रम व्यवस्था. आपल्या वर्णाच्या नियमाचे पालन करणे या बाबी महत्वाच्या होत्या. सामाजिक व्यवस्थेला प्रभावीपणे कार्यन्वीत होण्यासाठी श्रम विभाजन करणे आवश्यक मानल्या जाते आणि योग्य प्रकारचे श्रम विभाजन नैसर्गिक स्वरूप, गुण आणि प्रवृत्ती या आधारवरच शक्य आहे. यासंदर्भात पी. वी काणे यांनी स्पष्ट केले की, प्राचनी काळामध्ये वर्ण शब्दाचा उपयोग रंग भेदाला स्पष्ट करण्यासाठी केला जात होता. त्यानंतर वर्णाचे विभाजन प्रमुख चार भागामध्ये करण्यात आले आणि हे वर्ण सामाजिक व्यवस्थेचे स्तंभ बनले. तात्कालीन सभ्यता आणि संस्कृतीमध्ये कार्य विभाजनाची निर्मिती झाली आणि त्यामुळे विविध जातीची उत्पत्ती झाली होती.

सामाजिक विकासाच्या संतुलनासाठी सामाजिक संगठणाच्या अंतर्गत आश्रम व्यवस्थेची निर्मिती करण्यात आली होती. त्यामध्ये चारही पुरूषार्थाची पूर्तता करण्यासाठी अशी व्यवस्था करण्यात आली होती. त्यामध्ये ब्रम्हचार्यामध्ये ज्ञानार्जन, गृहस्थाआश्रमामध्ये गृहस्थ जीवन जगणे, वानप्रस्थ आश्रमामध्ये अलिप्त राहणे आणि सन्यासामध्ये वैराग्यी होणे अशी व्यवस्था होती. तात्कालीन परिस्थतीमध्ये आश्रम व्यवस्था आणि त्यामधील नियमांचे पालन करणे हे सामाजिक मूल्य होते. परंतु समाजाचा जसजसा विकास होत गेला दळणवळणाच्या साधनांचा विकास होत गेला आणि पाश्चात्य संस्कृतीच्या प्रभावामुळे आश्रम व्यवस्थेमधील सामाजिक मूल्यांच्या ठिकाणी नवीन व्यवस्थेच्या अनुशंगाने सामाजिक मूल्यांचे [illegible] झाली आहे.

Copyright 2019 Kaav Publications
Librarian Narayanrao Rana Mahavidyalaya Badnera

मानव जीवनाला संगठित, अनुशासित आणि सुसंस्कृत करण्यासाठी संस्कारांची व्यवस्था करण्यात आली होती त्यामुळे व्यक्ती समाजामध्ये राहून सखमय जीवन व्यतीत करू शकेल यामुळे व्यक्ती आणि समाज या दोहोचे हित साध्य होत होते ही परंपरा आजसुध्दा अस्तित्त्वात आहे. आज सुध्दा संस्कारांचे रोपन करण्यासाठी विविध माध्यमांचा वापर आधुनिक समाज व्यवस्थेमध्ये होतांना दिसून येतो. त्यामध्ये प्रामुख्याने बालकाच्या जल्मापूर्वीचे संस्कार, बाल्यावस्थेमधील संस्कार, अभ्यासाच्या संदर्भातील संस्कार, गृहस्थ आश्रमामधील संस्कार, वानप्रस्थ संस्कार, सन्यासाश्रम संस्कार आणि अंतिम संस्कार यांचा समावेश होतो यापैकी बहुतांश संस्कार आजसुध्दा अवलंबले जातात प्रत्येक सामाजिक व्यवस्थेमध्ये त्याचे स्वरूप मात्र भिन्न आहे.

परिवार ही एक सामाजिक संस्था म्हणून हळू हळू तीचा विकास झालेला आहे व्यक्तीच्या सामाजिक आणि मानसशास्त्रीय गरजांची पूर्तता करणे हे प्रमुख कार्य परिवाराच्या माध्यमातुन होते. याशिवाय विविध धार्मिक आणि सामाजिक कार्य हे सुध्दा त्याचे कार्य आहे. प्राचीन भारतीय व्यवस्थेमध्ये मुख्यतः संयुक्त कुटुंब पध्दती होती परंतु प्रत्येक काळामध्ये या कुटुंब व्यवस्थेची वेगळी वैशिष्टे दिसून येतात. प्राचीन आर्य व्यवस्थेमध्ये संयुक्त कुटुंब प्रथा होती तीचा संकेत वैदिक युगाशी असल्याचे दिसून येते. पूर्व वैदिक काळामध्ये पितृसत्ताक कुटुंब प्रणाली होती परंतु उत्तर वैदिक काळामध्ये पितृसत्ताकाचे अधिकार कमी होऊन संयुक्त कुटुंबाच्या विघटनाचे काही पुरावे मिळतात या विघटनाचे प्रमुख कारणे म्हणजे आर्य समुदायाचा प्रसार झाला त्यामुळे कुटुंबातील विविध सदस्य देशातील विविध भागामध्ये गेले तसेच कौटुंबिक भांडणे यामुळे कुटुंबातील सदस्य संपत्तीचे विभाजन करून स्वतंत्र राहणे पसंत करीत होते. प्रामुख्याने हिंदू कुटुंब हे पितृसत्ताक होते कुटुंबामध्ये अधिकार, जबाबदारी आणि आदर यामध्ये सर्वाधिक महत्वाचे स्थान वडिलांना होते. वडिल कुटुंबाच्या प्रती आपल्या कर्तव्यांचे पालन करीत असे पालन पोषण करीत असे शिक्षण आणि विवाहाची व्यवस्था करीत असे अशाप्रकारे वडिलाबरोबरच आईचे सुध्दा भारतीय कुटुंब व्यवस्थेमध्ये महत्वाचे स्थान राहलेले आहे. कुटुंबाचा प्रारंभ विवाहाच्या माध्यमातुन होतो आणि विवाहाचे मुख्य कारण संतान उत्पत्ती आहे. भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये मुलाचे स्थान सर्वाधिक होते त्यामध्ये तीन ऋणाच्या उत्पत्तीनेसुध्दा मुलाला महत्व दिले आहे. कुटुंब व्यवस्थेच्या संदर्भातील बहुतांश सामाजिक मूल्य आजसुध्दा दिसून येतात काही कौटुंबिक सामाजिक मूल्यांमध्ये काळानुरूप बदल झालेले असले तरी त्याचे महत्व आधुनिक भारतीय समाजामध्ये दुर्लक्षित होऊ शकत नाही.

भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये विधवा स्त्रीयांची सामाजिक स्थितील प्राचीन काळामध्ये इतकी वाईट नव्हती जीतकी ती नंतरच्या काळामध्ये निर्माण झाली. विधवा स्त्री आपल्या इच्छेनुसार आजीवन विधवा राहून संयम आणि सदाचाराचे जीवन व्यतीत करू शकत होती. ती पुनर्विवाहाच्या प्रथेचा आश्रय घेऊन पुन्हा विवाहित होऊन जीवन व्यक्तीत करू शकत होती.

भारतीय परिवेशामध्ये प्राचनी काळापासून चरीत्र निर्माणामध्ये शिक्षणाला सर्वाधिक महत्व दिलेले आहे. त्यासाठी विशेष शिक्षण प्रणाली आणि शिक्षण संस्थांची योजना प्राचीन काळामध्ये होती. आश्रम व्यवस्थेमध्ये राहून ब्रम्हचार्याचे पालन करून या शिक्षण संस्थामध्ये आणि विद्यापीठांमध्ये राहून शिक्षण प्राप्त केले जात होते. ज्ञानाची प्रापत करण्यासाठी शिक्षण याव्यतीरीक्त चारीत्र्य निर्माणासाठी शिक्षण याला सर्वाधिक महत्व देण्यात आले आहे. शिक्षणाला प्राचीन काळापासूनच प्रकाशाचा स्त्रोत म्हणून संबोधण्यात येत होते ज्यामुळे व्यक्ती विविध क्षेत्रामध्ये सत्य मार्गाचे प्रदर्शन करेल. प्राचीन भारतीय विद्यार्थ्यांना प्राचीन भारतीय शिक्षणाचे अध्ययन करणे आवश्यक होते. शिक्षण प्राचीन भारतीय संस्कृतीचा आत्मा मानला जात होता. वैदिक काळामध्ये प्रत्येक व्यक्तीला वैदिक शिक्षण दिले जात होते. या काळामध्ये स्त्री शिक्षणावर विशेष भर देण्यात येत होता. शिक्षणाच्या वेळी मुला सोबतच मुलीचा सुध्दा उपनयन संस्कार होत असे. सुत्रकालावधीमध्ये पुस्तकीय शिक्षणाचे प्रचलन नव्हते विद्यार्थी गुरूगृही राहूनच विद्याभ्यास करीत असत. भारतातील प्रमुख भारतीय शिक्षण संस्थामध्ये तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, विक्रमशिला, काशी, ही शिक्षण केंद्र प्रसिध्द होती.

निष्कर्ष :

प्राचीन काळापासून भारतीय समाज व्यवस्थेला सामाजिक मूल्यांची जोड लाभलेली आहे. व्यक्तीचा सर्वांगीण विकास करण्यासाठी सामाजिक व्यवस्थेच्या अंतर्गत विविध प्रकारच्या संस्थांची स्थापन प्राचीन समाज व्यवस्थेमध्ये झालेली आहे या व्यवस्थेच्या माध्यमातुन विशिष्ट सामाजिक मूल्यांचा विकास व्यक्तीमध्ये करावा जेणेकरून सामाजिक व्यवस्था योग्य पध्दतीने कार्यन्वीत होऊ शकेल हा त्यामागील हेतू होता

Copyright 2019 Kaav Publications

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

तोच हेतू आजच्या सामाजिक व्यवस्थेमध्ये सुध्दा आम्हास दिसून येते आजच्या सामाजिक व्यवस्थेमध्ये सामाजिक मूल्यांच्या अंतर्गत प्राचीन काही सामाजिक मूल्यांचा अंतर्भाव झालेला आहे आज भारतीय व्यवस्थेमध्ये सामाजिक मूल्यांचा आधारा भारतीय संविधान आहे तरी सुध्दा ज्या बाबी लिखीत स्वरूपामध्ये नाही अथवा त्यासंदर्भात काही नितीनिर्देश नाहीत तरी सुध्दा प्रत्यक्षामध्ये ती मूल्य अमलात आणली जातात त्या प्राचीन मूल्याच्या आधारावर आजची समाज व्यवस्था टिकून आहे.

संदर्भ ग्रंथ :

१. काणे पी. वी., धर्म शास्त्र का इतिहास भाग १ ते ५ लखनऊ

२. पांण्डेय विमलचंद्र, (१९६०), भारत वर्ष का सामाजिक इतिहास, इलाहाबाद

३. शर्मा रामशरण, (१९७५), पूर्वमध्यकालीन भारत मे सामाजिक परिवर्तन, दिल्ली.

४. अवस्थी शशि, (१९९३), प्राचीन भारतीय समाज, दिल्ली.

५. मिश्र जय शंकर, (२००६), प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पटना

६. नयन राजीव, (२००५), भारतीय समाज और संस्कृती, वाराणसी.

७. जैन के. सी. प्राचीन भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाएँ, भोपाल.

८. अहिरवार रामकुमार (२००५), सामाजिक सरंचना के विविध चरण, जयपूर

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Librarian
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED & MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Volume V
Issue II

ISSN : 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR : 4.205

February 2018

A Galaxy of Scholarly Written Research Papers/Articles

IJMMS

Cosmos

Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera

Chief Editor
Dr. V. H. Mane

Executive Editor
Prof. M. P. Shaikh

www.ijmms.in | Email : ijmms14@gmail.com

VOLUME-V, ISSUE-II

ISSN (Print): 2394-207X
IMPACT FACTOR: 4.205

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES



INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Editors: Dr. V. H. Mane, Prof. M. P. Shaikh

Language: Multilingual

Published by

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

Sneh Apartment,
Flat No. 001, Samarth Nagar, New Sangvi,
Pune- 411027

Copyrights: Editors 2014

All rights reserved

ISSN: 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR: 4.205

VOLUME-V, ISSUE-II

February -2018

VOLUME-V (II) Impact Factor: 4.205 ISSN (Print): 2394-207X
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

अनुक्रमणिका

अ.क.	शोध निबंधाचे नाव	नाव	पान नंबर
1.	शिवकालीन आरमार व्यवस्था	प्रा. चारुशिला उत्तम लोखंडे	1-5
2.	शिवकालीन समाज व्यवस्था — प्रोसेसुरल प्रतिमानानुसार अन्वयार्थ	प्रा. डॉ. जाधव बबन भिवसेन	6-12
3.	हिंदवी स्वराज्य स्थापनेत शहाजी भोसले यांचे योगदान	प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड	13-15
4.	सातारचे प्रतासिंह महाराज व ग्रँट डफ संबंध	प्रा.डॉ.आर.व्ही.ढेरे	16-18
5.	छत्रपती शिवाजी महाराजांची लष्करव्यवस्था	प्रा. लबडे अर्चना बाळासाहेब	19-20
6.	मराठेकालीन जमीन महसूल पद्धती : एक अभ्यास	प्रा. देवकाते बी. एन.	21-24
7.	रामचंद्र गणेश कानडे १७६८ ते १७८०	गाभणे हेमा गजानन	25-29
8.	मराठा सरदार ग्वाल्हेरचे शिंदे	प्रा.डॉ.रघुराज मुगुटराव कुरुमकर	30-31
9.	अलिबागचे आंगे घराण्याचा मराठा आरमारातील विकास व विस्तार	कविता कारभारी मते	32-34
10.	फलटणचे लोकदैवत श्रीराम मंदिराचे ऐतिहासिक महत्व	प्रा.डॉ.संतोष तुकाराम कदम	35-38
11.	सरलष्कर सिदोजी नाईक निंबाळकर यांच्या मोहिमा	प्रा.डॉ.एस.पी.शिंदे	39-41
12.	'स्वराज्य स्थापनेत मराठा सरदारांचे योगदान'—पवार घराणे	प्रा. सौ. श्रेया संजीव दाणी	42-43
13.	शिवकालीन व्यवसाय व व्यापार	श्री. जगताप बा.भि.	44-46
14.	शिवाजी महाराजांच्या न्यायनितीचे गुणविशेष– एक अभ्यास	प्रा.तानाजी जाधव	47-49
15.	छत्रपती शिवाजी महाराज आणि सिद्दी	सौ. कविता सु. पाटील	50-52
16.	सरदार गोदाजी जगताप व सरदार सूर्यराव काकडे यांचे स्वराज्य स्थापनेतील योगदान	प्रा.डॉ.देविदास वायदंडे	53-55
17.	स्वराज्य स्थापनेत गुप्तहेर खात्याचे योगदान	[1]प्रा.डॉ.संजय जिभाऊ पाटील [2]प्रा.संजय बाबुराव शिंगाणे	56-58
18.	शिवकालीन मंत्रिमंडळ व मंत्रालय	प्रा. श्री. आर. के. सुर्यवंशी	59-64
19.	मराठेकालीन आरमार : एक अभ्यास	प्रा.डॉ.अशोक कहुभाऊ कानडे	65-67
20.	मराठा सरदार इंदूरचे मल्हारराव होळकर	प्रा.डॉ.मनिषा माणिकराव जगदाळे	68-69
21	स्वराज्य निर्माण कार्यातील बहिर्जी नाईक व त्यांच्या गुप्तहेर खात्याचे योगदान	प्रा. निळे एस व्ही.	70-73
22	स्वराज स्थापनेत मराठा सरदारांचे योगदान	प्रा.महेश वसंत कुलकर्णी	74-75
23	मराठेकालीन तोफखाना व तोफगोळयांच्या अभ्यास	डॉ.नंदकुमार ज्ञानोबा जाधव	76-78
24	मराठी आरमारी सत्तेचा जनक—छत्रपती शिवाजी महाराज	डॉ.विरुदेव महादेव कोकरे	79-82

VOLUME-V (II)
Impact Factor: 4.205 ISSN (Print): 2394-207X
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

हिंदवी स्वराज्य स्थापनेत शहाजी भोसले यांचे योगदान

प्रा. डॉ. संतोष पां. बनसोड
इतिहास विभाग प्रमुख,
नारायणराव राणा महाविद्यालय, बडनेरा जि. अमरावती

भारतातील हिंदवी स्वराज्याची निर्मिती ही मराठी मुलखाचीच नव्हे तर अखिल भारतीय हिंदूना प्रेरणास्थान राहीली आहे. यादव घराण्याच्या पतनानंतर भारतात हिंदूची स्वतंत्र अशी सत्ता नव्हती. सर्वत्र मुस्लिम सत्तेचा अमंल होता. मुळात भारत हा हिंदूचा देश असला तरी २४ जुन १२०६ ला स्वतंत्र मुस्लिम सत्तेची स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक याने केली. इ. स. १२०६ ते १५२६ या ३२० वर्षांच्या कालखंडात अनेक घराण्यांनी शासन केले. याच दरम्यान स्वतंत्र हिंदूची सत्ता विजयनगर येथे स्थापन झाली. या राज्यात हिंदू माणूस सुखावला होता. त्याच्या घरात आर्थिक सुबत्ता होती. स्त्रीया सुदधा मनसोक्त संचार करीत होत्या. मात्र या राज्याच्या पतनानंतर मराठी मानसांची अतिशय वाताहात झाली.

संपुर्ण भारतात मुस्लिम सत्तेचा अमंल असतांना या कठिण व प्रतिकुल परीस्थितीत शिवाजी महाराजांनी हिंदवी स्वराज्याची स्थापना केली. या करीता त्यांना अतिशय कष्ट करावे लागलेत. त्यांनी निर्माण केलेले हिंदवी स्वराज्य हे सामान्य जनतेच्या कल्याणसाठी अतिशय उपयुक्त ठरले. त्यांनी आपल्या स्वराज्यात वतनदार अथवा जहांगिरदार यांच्या सुख–समृध्दीचा विचार केला नाही. त्यांनी साडेतीनशे वर्षांपूर्वी आपल्या साम्राज्यातील प्रशासनात निर्माण केलेले दंडक हे आज भारत लोकशाही प्रधान असतांना सुदधा प्रेरणादायी व आदर्शभूत वाटतात. त्यांच्या या हिंदवी स्वराज्य स्थापनेच्या प्रक्रियेत शहाजी भोसले यांचे महत्वपूर्ण योगदान राहीलेले आहे.

शहाजी राजे भोसले हे छत्रपती शिवाजी महाराजांचे वडील होते. त्यांच्या जन्म दिनांकाबाबत विद्वानांमध्ये मतभेद असले तरी सर्वसाधनांचा अभ्यास केल्यास दि. १८ मार्च १५९४ हा त्यांचा जन्म दिनांक निश्चित होता. या भोसल्यांचे मुळगाव वेरूळ होय. वेरूळ हे मराठवाडयातील औरंगाबाद शहरापासून खुलताबाद–दौलताबाद मार्गे अवघ्या २७ किलोमीटर अंतरावर आहे. २० उत्तर अक्षांश आणि ७५.२० पूर्व रेखाशांवर वेरूळ वसलेले आहे. येथिल शिल्परत्न हे जगप्रसिध्द आहे. शहाजी राजे यांच्या घराण्याचा थेट संबंध हा मेवाडच्या शिसोदे घराण्याची जोडला जातो. शहाजी काळातील जयराम पिंण्डे यांनी आपल्या राधामाधवविलासचंपू या ग्रंथामध्ये शहाजीचे कुळनाम भोसले असल्याचे स्पष्ट उल्लेख केला आहे. तसेच वंशनाम हे शिसोदे असल्योच दर्शविले आहे. या घराण्यातील भोसाजी यांच्या नावावरून त्यांच्या वंशजाना महाराष्ट्रात भोसले हे कुलनाव प्राप्त झाल्याचे मांडलेले आहे.

शहाजीचे वडील मालोजी भोसले यांचा इंदापूरच्या लढाईत मृत्यू झाला. त्यानंतर निजामशहाने २ ऑगस्ट १६०६ रोजी शहाजी राजांना पंचहजारी मनसबदारी दिली. वयाच्या १२ व्या वर्षी त्यांना मनसबदारीची सुत्रे हातात मिळाल्याने त्यांना लहानपणीच राज्य कारभाराची ओळख झाली. एवढेच नव्हे तर ते लष्करी व राजकारण यामध्ये निष्णात झालेत. परीणामी निमाजशाहीचा वजीर मलिक अंबर याने मालोजीची जहागिरी शहाजीकरीता कायम ठेवली. मलिक अंबरचा हा विश्वास शहाजीने कायम ठेवला. कारण मोगलांनी निजामशाहीवर आक्रमण केले असता, भातवडी या ठिकाणी घनघोर युध्द झाले. झालेल्या लढाईत शहाजी राजे यांनी विशिष्ट प्रकारची व्युवरचना करून आदिलशाही व मोगलशाहीचा दारूण पराभव केला. परीणामी शहाजी भोसले यांची प्रतिष्ठा वाढली. त्यानंतर त्यांनी नवरसपूरचा संपुर्ण विध्वंस केला. सोलापूरला वेढा दिला. त्यानंतर त्यांनी आदिलशाही व मोगलशाहीमध्ये सुद्धा चाकरी केली. त्यामुळे त्यांना शिवाजीच्या या तिन्ही शत्रूंचा जवळून अभ्यास करता आला. या अभ्यासाचा फायदा हा शिवाजीला निश्चितच झाला असावा. मलिक अंबर याच्या मृत्यूनतर शहाजीने आदिलशाही सोडून परत निजामशाहीत प्रवेश केला. यावेळेस त्यांना सुपे, पूणे, इंदापूर परगणे व मावळचा काही भाग जहागीर

म्हणून प्राप्त झाला. त्यानंतर त्यांनी कर्नाटकामध्ये आपला जम बसविला. या कर्नाटकामध्ये सुद्धा त्यांना २५ नोव्हेंबर १९३७ रोजी च्या फर्मानानूसार कर्नाटक, कन्हाड व वाई परगण्यातील निम्मेगांवाचा पंचहजारी संरजाम मिळाला.

शहाजी भोसली यांनी कर्नाटक व महाराष्ट्रात जहांगिरी प्राप्त केल्यानंतर शिवाजी महाराजांच्या हिंदवी स्वराज्य स्थापनेकरीता महत्वपूर्ण योगदान दिले. त्यानूसार सर्व प्रथम त्यांनी शिवाजीला शिक्षण दिले. या शिक्षणाकरीता दादोजी कोंडदेव यांची नियुक्ती केली. लष्करी व शैक्षणिक दृष्टया शिवाजीला परिपूर्ण केल्यानंतर अनेक भाषांचे ज्ञान दिले. योग्य असे संस्कार दिलेत. त्यामुळे शिवाजीच्या व्यक्तिमत्वास आकार आला. परिणामी शिवाजी राजे भोसले यांनी शहाजीच्या ९० मैल लांब, १२ ते १४ मैल रूंद अशा जहांगीरीची योग्य अशी राखण केली.

शिवाजी महाराजांनी आपल्या स्वराज्याचा श्रीगणेशा हा १६४३ ला मुरूबंगड जिंकून केला. त्यानंतर तोरणा किल्ला ताब्यात घेतला. त्यांच्या या कार्याने आदिलशाही नाराज झाली. परंतू त्यांनी शिवाजी विरोधात कार्यवाही केली नाही. याचे मुळे कारण आदिलशहास शहाजी राजे भोसले यांची भिती वाटत असावी. त्यानंतर १६४७ ला शिवाजीने आदिलशहाचा पुरंदरचा किल्ला मिळविला. या पुरंदरचा किल्लेदार हा महादजी निळकंठराव सरनाईक हा होता. महादजी सरनाईक व शहाजी राजे भोसले यांचे अतिशय स्नेहाचे संबंध होते. त्यामुळेच महादजी निळकंठराव सरनाईक यांनी पुरंदरचा किल्ला शहाजी पुत्र शिवाजी यास हिंदवी स्वराज्य स्थापनेकरीता दिला असावा. परीणामी आदिलशहावर शहाजीराजांवर संतप्त झाला आणि शहाजी बेसावध असतांना २५ जुलै १६४८ रोजी कैद केले.

शिवाजीचा बंदोबस्त करण्याकरीता आदीलशहाची पत्नी बडी बेगम साहेब हिने अफजलखान यास १०००० सैन्य घेवून शिवाजीवर पाठविले १० नोव्हेंबर १६५९ ला अफजलखानाचा वध करण्यात आला. या मोहीमेमध्ये शिवाजीला शहाजीराजांची फौज घेवून सवराज्यावर झाला तेव्हाच शहाजी भोसले यांनी सतरा हजाराची फौज घेवून सिमेवर कडा पहारा दिला. जेणेकरून अफजलखानाच्या मदतीला आदिलशाहीने आणखी सैन्य पाठवू नये. त्यामुळेच अफजलखानाचा वध होताच शहाजी राजे आपली फौज घेवून पुढील स्वारीवर गेलेले दिसून येतात.

शिवाजी महाराजांच्या जिवनातील मोठया संकटापैकी पन्हाळयाचा वेढा हा प्रसंग अत्यंत महत्वाचा आहे. आदिलशाहीचा सरदार सिददी जोहर या हबशी सरदाने शिवाजी बंदोबस्ताची मोहीम स्वत:हून स्विकारली. या स्वारीचा वृत्तांत हा ९१ कलमी बखरी च्या कलम ३६, ३७, ३८, ३९, ४० मध्ये दिलेला आहे. तसेच इंग्रजाच्या १० जून व १६ डिसेंबर १६६० च्या पत्रव्यवहारात सुद्धा दिसतो. या नूसार सिददी जोज या हबशी अॅबेसिनिसन गुलामासोबत शहाजी भोसले यांचे अत्यंत स्नेहाचे संबंध होते. त्याने शहाजीच्या सल्ल्यानूसारच कर्नाटकातील कर्नुल येथिल जहांगिरी जबरदस्तीने हडप केली होती. आपण आदिलशाहीच्या विरोधात केलेल्या बंडखोरीमुळे आदिलशाही सैन्य कर्नुल घेण्यास निश्चित येईल याची त्याला खात्री होती. याच परीस्थितीत आदिलशाही हि प्रचंड अडचणीस होती. अशा अडचणीच्या समयी आदिलशाहीस मदत केल्यास आपल्या कर्नुल येथिल जहागिरीस आदिल शाही मान्यता देईल असे त्यास वाटत असावे. याचवेळी आदिलशाहीकरीता बंडखोर सरदार म्हणून शहाजी भोसले हे सुद्धा चर्चेत होते. या दोन्ही बंडखोर सरदारांचा कर्नाटकातील मुक्काम, त्यानंतर सिददी जोहरचा पन्हाळा किल्ल्यास वेढा व शिवाजीची वेढयातून सुटका हया बाबी अनेक प्रश्न उपस्थित करतात.

मोगली सरदार शाहीस्तेखान हा स्वराज्यावर चाल करून आला असतांना, सिददी जोहर याने २ मार्च १६६० रोजी पन्हाळा किल्यास वेढा दिला. या किल्यावर शिवाजी महाराज असल्यामुळे स्वराज्यावर आलेले हे फार मोठे संकट होते. या संकटावर मात करतांना शिवाजीस शहाजीची निश्चितच मदत झाली. पन्हाळा किल्यावरील जनावरांचे वैरण संपले होते. अन्नधान्याच्या टंचाईमुळे लोक, अडचणीत आले होते.

त्यामुळे शिवाजीने सिद्दी जोहरकडे दूत पाठविले, नजराणा पाठविला. त्यानंतर शहाजी महाराजाच्या मदतीने बोलणी सुद्धा केली असावी. कारण १३ जुलै १६६० ला अंधाऱ्या रात्री भर पावसामध्ये शिवाजी महाराजांनी किल्यातून सुटका करून विशाळगडाकडे प्रयान केले. शिवाजी महाराज पन्हाळा किल्ल्यावरून एकटे बाहेर पडले नाहीत तर सोबत १००० शिपाई १५ उमदे घोडे व दोन पालख्या घेवून बाहेर पडलेले होते. याची कल्पना सिद्दी जोहर यास येवू नये हि अशक्य बाब आहे. तसेच शिवाजीच्या सुटकेनंतर अफजलखान पुत्र फाजलखान याने सिद्दी जोहर यानेवर केलेले आरोप, तसेच आदिलशहाने सिद्दी जोहर याचेवर विश्वासघाताचा केलेला आरोप तथा विजापूरवरून स्वत: आदिलशहा सिद्दी जोहर यास शिक्षा देण्यास पन्हाळा किल्याकडे येणे. हया सर्व बाबी शहाजी व सिद्दी जोहर यान्यातील समझोत्याकडे अंगुलीनिर्देश करतात. त्यानूसार शहाजी भोसले यांनी सिद्दी जोहर यांच्याशी संधान साधून त्यास कर्नाटकातील त्याच्या जहागिरीस संरक्षणाची हमी देवून तथा आगाबूना प्रदेश जिंकण्याची खात्री देवून शिवाजीची सुटका केली असावी. त्यामुळे या स्वारीत शहाजीची अतिशय महत्वपुर्ण मदत ही शिवाजीस झाल्याचे स्पष्ट होते.

शिवाजी महाराजाच्या स्वराज्य निर्मिती मध्ये शाहीस्तेखानाची स्वारी ही फार मोठे स्वराज्यावरील संकट होते. कारण भारतातील मोगली सत्तेचे ते आव्हान होते. याचवेळी शिवाजी महाराज पन्हाळा किल्यावर अडकले होते. या पन्हाळा किल्यावरून शहाजींच्या मदतीने शिवाजीची सुटका झाली. त्यानंतर शिवाजीने लाल महालावर ५ एप्रिल १६६३ रोजी छापा टाकण्याचे ठरविले होते. या छाप्याच्या वेळी पुण्याच्या सिंहगड मार्गावर मोगल सरदार जसवंतसिंह हा १०००० सैन्य घेवून तैनात होता. मात्र त्याने यावेळी शिवाजीचा पाठलाग केला नाही किंवा शिवाजीला विरोध सुद्धा केला नाही. तर तो शाहीस्तेखानाचा हितशत्रू सुद्धा नव्हता. या सर्व बाबींचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, शहाजी भोसले यांनी जसवंतसिंहाशी संधान साधून शिवाजीच्या शहिस्तेखान छापा मोहीमेकरीता जसवंतसिंहास शांत केले असावे. या संदर्भात कोणतेही पुरावे उपलब्ध नसले तरी तत्कालीन सर्व प्रसंग व घटनाक्रमावरून हे अगदी स्पष्ट होते.

शिवाजीचे शिक्षण, बालपण, लाहनपणातच आपल्या जहांगीरीची सोपविलेली जबाबदारी, कर्नाटक व महाराष्ट्रातील जहागिरीचा वारसा, अफजलखानानी स्वारी, सिद्दी जोहरचा पन्हाळा वेढा, शाहीस्तेखान स्वारी व लाल महालावरील छापा या सर्व बाबींचा सुक्ष्मपणे अभ्यास केल्यास एक बाब स्पष्ट होते की, शिवाजी महाराजांच्या हिंदवी स्वराज्य निर्मितीमध्ये एक मराठा सरदार व वडील म्हणून शहाजी भोसले यांचे योगदान अतिशय महत्वाचे ठरते.

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. Duff, Grant-The History of the Marathas, commonwealth publisher Delhi, 2002

२. Pagadi, Setu Madhavrao - Chhatrapati Shivaji, Contlene - Pune 1974

३. Sarkar, J.N.-Fall of the Mughal Empire, Vol. I publiorient Blockswas, Delhi, 1991

४. कुटे, भ. ग. — अहमदनगरची निजामशाही, अनुवाद बुऱ्हाणे मासिरी या फारसी ग्रंथाचा मराठी अनुवाद, १९६२

५. देशमुख, विजय — शककर्ते शिवराय, छत्रपती सेवा प्रतिष्ठान नागपूर २०१०

६. देशमुख, पी.एन. — मराठयांच्या इतिहासाचा मागोवा, पुर्वार्ध, ब्रम्हा प्रकाशन, नागपूर २००१

७. बेंद्रे,वा. सी.—मालोजी राजे आणि शहाजी महाराज, पार्श्व पब्लिकेशन कोल्हापूर २०१३

८. सरदेसाई, गो. स. — मराठी रियासत शहाजी राजे भोसले, दुसरी आवृत्ती मुंबई १९७५

९. हेरवाडकर, र. वी. — श्री. शिवछत्रपतीचे सप्तप्रकरणात्मक चरीत्र, मल्हार रामराव चिटणीस विरचित बदलापूर, ठाणे १९६७

१०. ९१ कलमी बखर — शिवछत्रपतीची ९१ कलमी बखर, वि. स. वाकसकर, विविध ज्ञान विस्तार, ऑगस्ट १९२९ ते सप्टेंबर ऑक्टोबर १९३०

ISSN: 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR : 4.205

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES



- Published by -
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES
Sneh Appartment, Flat No. 001,
Samarth Nagar, New Sangvi, Pune- 411027.
Mobile No. 9197660761 43/919766751104,
Email: ijmms14@gmail.com
Website: www.ijmms.in